CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी
आगत क्रमांक ...५५६०

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

mk5
L5910

सरिता

क्षु भवन वेद वेदाङ्ग पु तकालय,
अस्सी, वाराणसी ।

6

क्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी ।
आगत क्रमांक ...२५६०...
दिनांक .....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रवरी (द्वितीय) 1970

आपके बच्चे को ज़्यादा शक्ति देता है,
उसे आगे रखता है...
कोको-स्वादिष्ट बोर्नविटा!

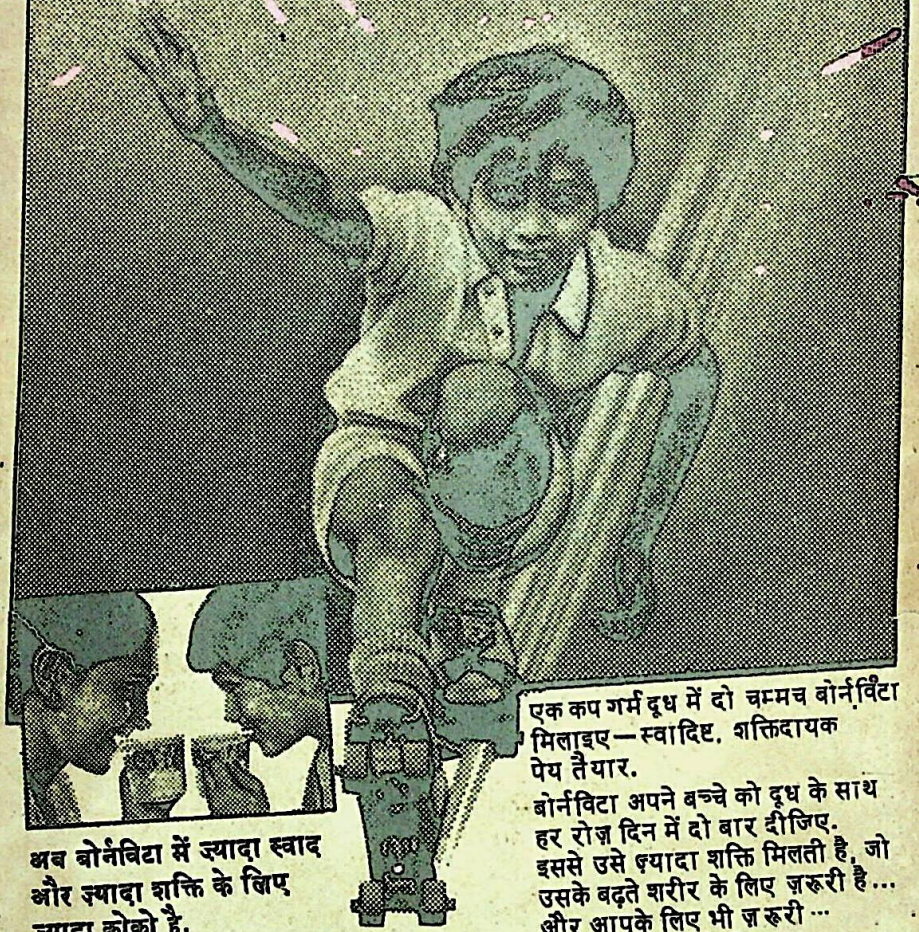

अब बोर्नविटा में ज़्यादा स्वाद और ज़्यादा शक्ति के लिए ज़्यादा कोको है.
इसके अलावा बोर्नविटा माल्ट, दूध और शक्कर के पौष्टिक तत्वों से भरपूर है.

एक कप गर्म दूध में दो चम्मच बोर्नविटा मिलाइए—स्वादिष्ट, शक्तिदायक पेय तैयार.
बोर्नविटा अपने बच्चे को दूध के साथ हर रोज़ दिन में दो बार दीजिए.
इससे उसे ज़्यादा शक्ति मिलती है, जो उसके बढ़ते शरीर के लिए ज़रूरी है...
और आपके लिए भी ज़रूरी...
उसका साथ देने के लिए!

कैडबरीज
बोर्नविटा
ज़्यादा कोको, ज़्यादा स्वाद, ज़्यादा शक्ति!

पैसे बचाइए

पैसा बचाने वाला ५०० ग्राम का रीफ़िल पैक लाइए.
ख़ास बात:
ये पैक खोलते ही इसे फ़ौरन बोर्नविटा के टिन में उलट दीजिए, ताकि इसकी फ़ैक्टरी वाली ताज़गी बनी रहे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डायमंड पॉकेट बुक्स में

समीर और मोक्षदर्शी

की अपार सफलता के बाद एक उभरती हुई लेखिका चेतना का भावनापूर्ण सामाजिक उपन्यास

कुर्बानी

पृष्ठ २४०
मूल्य रु० ४.००

कुर्बानी एक नारी के अमर बलिदान की एक ऐसी कहानी है जिसे पढ़कर आपकी आंखों में बरबस आंसू आ जायेंगे। नारी मन की कोमल भावनाओं को चेतना ने किस सुन्दरता से प्रस्तुत किया है यह आपे उपन्यास पढ़कर ही जान पायेंगे। चेतना के प्रथम उपन्यास 'कुर्बानी' पढ़ने के बाद आप चेतना के अगले उपन्यास की बेसब्री से प्रतीक्षा करेंगे।

समीर का दाग

पृष्ठ २४०
मूल्य रु० ४.००

मोक्षदर्शी का प्यार की प्यास

पृष्ठ २४०
मूल्य रु० ४.००

साथ ही हास्य कविताओं के दो अनुपम संग्रह :

गोपाल प्रसाद व्यास	बूढ़ों ने किया कमाल यार	३/-
हुल्लड़ मुरादाबादी	हुल्लड़ का हंगामा	३/-

निकट के बुक स्टाल से खरीदें या हमें लिखें !

डायमंड पाकेट बुक्स

२७१५, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शबनम में नहाये महकते फूलों की ताज़ी महक
आपका मन चुरा लेगी

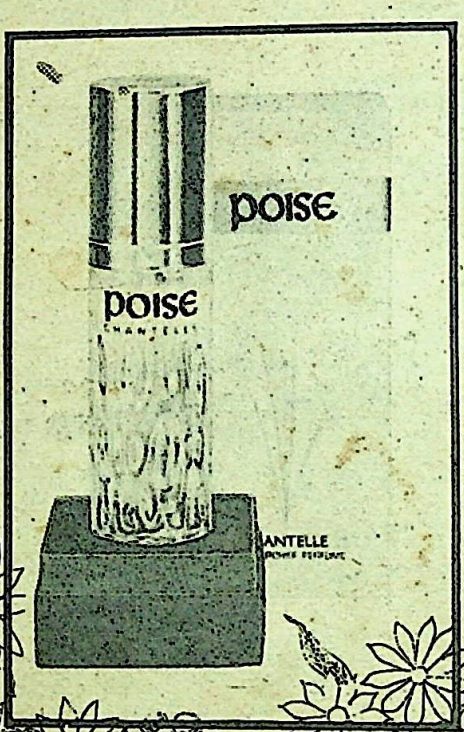

पॉयज़
शॉन्टॅल
परफ़्यूम

U-PCP-1 hin

विक्रेता : रैलीज़ इण्डिया लिमिटे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंक : 572 फरवरी (द्वितीय) 1979

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक विश्वनाथ

अंक : फरवरी 1979

कथा साहित्य

जंजीर भैरव — डा. अब्राहम कोवूर 44
टूटता चक्रव्यूह — नरेंद्र चतुर्वेदी 54
खोया हुआ सुख — भागीरथ मेघवाल 62
कौन दूर? — पुष्पा अग्रवाल 76
वादियों के घेरे — शारदा त्रिवेदी 83
देर आयद दुरुस्त आयद — शकुंतला शर्मा 126
भक्त शिरोमणि औंधे मुंह — गोविंद शर्मा 139
लौटे कदम — निरंजन सिंह 149
यक्ष के प्रश्न — रोशनलाल सुरीरवाला 164

लेख

दिल्ली नगर कर परेशान — कस्तूरचंद जैन 23
बृजलाल वर्मा... — मृदुला हालबे 31
यदा यदा हि धर्मस्य — डा. रामसरूप 37
खट्टेमीठे बोल — लिली जन 69
हिंदू समाज और दयानंद — विजय वर्मा 89
बच्चा छोटा है! — ममता खरे 99
बरतनों की सफाई — ऊषा सैनी 104
शंखों का शोपीस — हेमलता शृंगी 107
इन से बच कर रहिए — मीरा सक्सेना 111
रह न जाए बात आधी — शोभा प्रभात 118
साड़ियां — ... 122
वृद्ध महिलाओं की... — र. राजीवन 133
ताश का चक्कर — कमला सपोलिया 143
फिल्मी संगीत 1978 — दिलीप गुप्ते 169

कविताएं

पलकों की छांव — अदील मुस्तेहसन 51
कंचन की काया... — पूरन सरमा 66
एक चेहरा — विकल 81
तुम न होते तो — सुभाष नीरव 154

स्तंभ

आप के पत्र — xi
सरित प्रवाह — 19
बात ऐसे बनी — 67
जीवन की मुसकान — 75
बच्चों के मुख से — 98
नए पकवान — 105
देशप्रदेश की भाषा — 113
यह भी खूब रही — 114
विनवहाड़े — 117
पाठकों की समस्याएं — 125
मुझे शिकायत है — 137
पासा पलट गया — 148
शून्यकाल का शून्यालाप — 157
हमारी बेड़ियां — 163
चंचल छाया — 179

सरिता शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है. सरिता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस समाचार पत्र द्वारा सुरक्षित हैं. इसलिए बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है. ©दिल्ली प्रेस समाचार पत्र, 1979.

दिल्ली प्रेस समाचार पत्र के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स. प. प्रा. लि., गाजियाबाद में मुद्रित.

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : 3-ई, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055.
एक प्रति 2.50 रु., वार्षिक : 50 रु., विदेश में (समुद्री डाक से) : 120 रु.
आवरण : रु. सत्यमूर्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

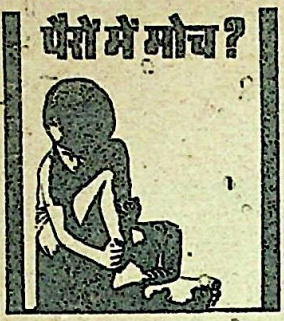

आयोडेक्स मलिए,
जो पीड़ा हरे, अच्छा करे

दूसरे बाम पीड़ा से आराम भले पहुंचाएं, आयोडेक्स आराम पहुंचाने के साथ साथ अच्छा भी करता है. क्योंकि इसमें आयोडीन मिली है.

जोड़ों और मांसपेशियों की पीड़ा के लिए एकमात्र बाम—आयोडेक्स.

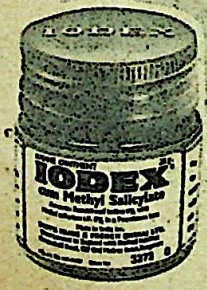

आयोडेक्स मलिए — काम पर चलिए

लिंटास-IODEX. 3-1810 Hi

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो जेब को भाए
वही अब नज़रों को ललचाए

बिन्नी ड्रेस मटीरियल्स।
अब रंगारंग प्रिंट्स की शोखी से भरपूर।

बिन्नी के नज़ारे अब क्या कहने। कपड़ों में एक नई नज़ाकत, डिज़ाइनों में एक नई बहार— ज़्यादा रंगीन, ज़्यादा दमदार। और यह सब बिन्नी वस्त्रों की चिरपरिचित मरोसेमंदी के साथ।

आइए, बिन्नी के सूती और पॉलिएस्टर मिले शर्टिंग व ड्रेस मटीरियल्स की बिल्कुल नई नवेली श्रृंखला बस देखते ही बनती है।

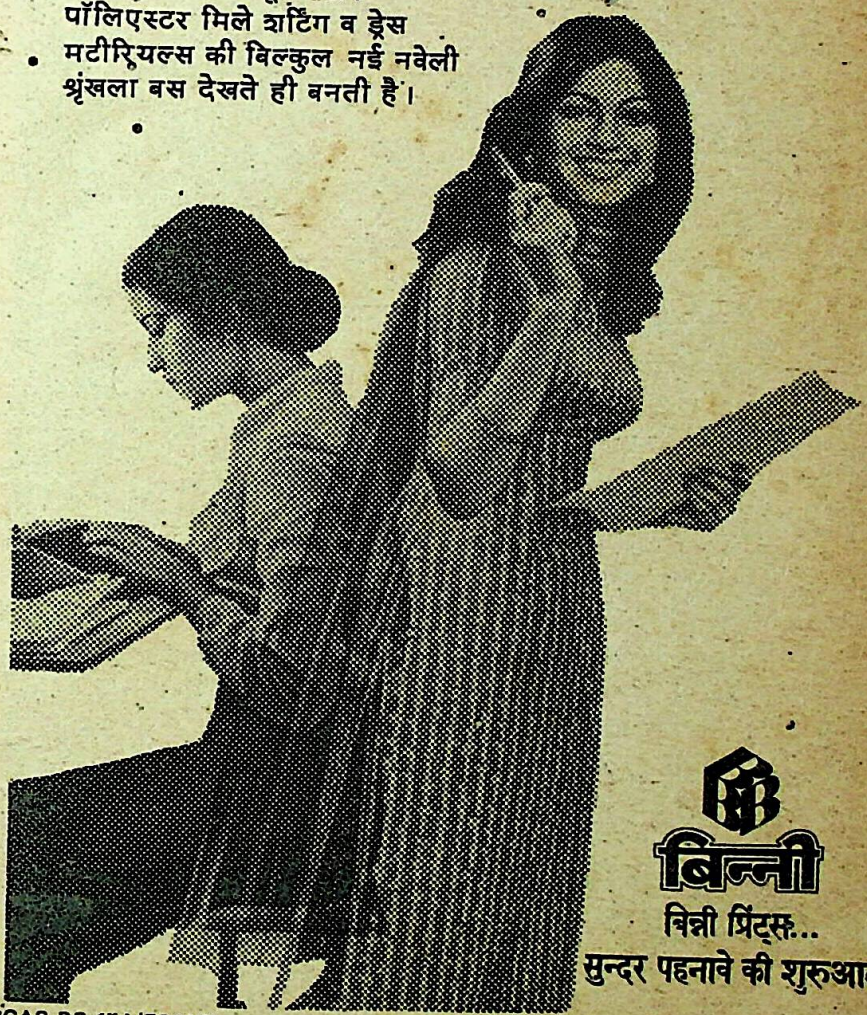

बिन्नी

बिन्नी प्रिंट्स...
सुन्दर पहनावे की शुरुआत

CAS BC 15A/79.HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक सुकुमार साथी कोमल और मुलायम सेनिटरी टावेल

आखिर कॉम्फिट सेनिटरी टावेल ही दुनिया में सबसे ज़्यादा लोकप्रिय क्यों है? क्योंकि यह सेनिटरी टावेल बहुत ही मुलायम है और इसमें सोखने की भी ज़्यादा क्षमता है. साथ ही यह हल्का भी इतना है कि आपको बिल्कुल महसूस ही नहीं होता. सबसे बड़ी बात यह है कि कॉम्फिट हर तरह की साफ़-सफ़ाई के साथ और स्वास्थ्यप्रद वातावरण में बनाए जाते हैं, इसलिए पूरी तरह उपयोगी और स्वास्थ्यानुकूल हैं. कारण, ये भारत के अत्याधुनिक और ऑटोमेटिक प्लांट में बनते हैं, जिसे स्वीडन के क्रिस्टीन होडन का सहयोग प्राप्त है.

कॉम्फिट को अपनी पसंद बनाइए. सुकुमार सुरक्षा, कॉम्फिट की ज़िम्मेदारी है.

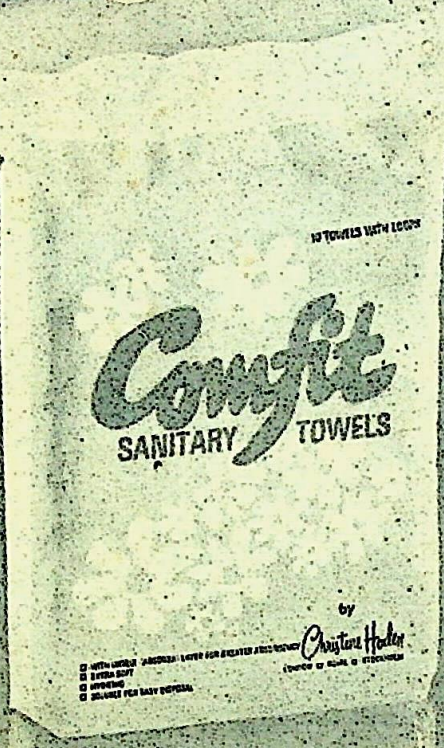

कॉम्फिट आपकी हिफाज़त करे

Dazzal
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अप्रतिम सुसंवादी

हेगड़े और गोले की ओर से

हेगड़े और गोले की हर घड़ी में लाजवाब खूबसूरती और बेमिसाल कारीगरी का अनोखा तालमेल नज़र आता है. दो शानदार परंपराओं के संगम से ही इतनी बेहतरीन घड़ियां बनती हैं.

एशिया के सबसे बड़े व सुसंगठित घड़ी कारखाने में, इलेक्ट्रॉनिक सर्किट बोर्ड के भारत के अग्रणी निर्माता— हेगड़े की कुशलता और क्वार्ट्ज़ किस्टल इलेक्ट्रॉनिक घड़ियों के आविष्कारक-प्रमुख स्विस तंत्रज्ञ कंपनी गोले एस.ए. के सहयोग का ही यह परिणाम है.

और इसीलिए साधारण पिन लीवर से लेकर जटिल क्वार्ट्ज़ किस्टल तक हर घड़ी अपने आप में अनोखी होती है.

हेगड़े और गोले की विस्तृत श्रेणी	*ग्राहकों के लिए कीमत रु. पै. रु. पै.
श्री शैल	६४-६० से ११४-०३
सिद्धार्थ (क्रोम, स्टेनलेस स्टील, गोल्ड)	१३०-६० से २०१-०५
पल्लवी (क्रोम, गोल्ड, डॉलक्स)	१४६-५८ से २६६-२३
आरती (क्रोम, गोल्ड, डॉलक्स)	१६५-६४ से २०६-३२
तेजस (स्टेनलेस स्टील, गोल्ड)	२४७-१० से २६६-४६
µ क्वार्ट्ज़ एल सी डी (५ फंक्शन्स, १२ फंक्शन्स गोल्ड, क्रोम)	४१५-०० से ६१८-००
µ क्वार्ट्ज़ एनालॉग (स्टेनलेस स्टील)	७५० ०० से ८००-००

*हर शहर में विविध मांडलों और स्थानीय करों व अन्य करों के अंतर की वजह से कीमतों में फरक होना स्वाभाविक है.

Asia's Largest integrated watch complex

Hegde & Golay Limited

SUCCESSORS TO Bernard Golay S.A. SWITZERLAND

Committed to time and technology

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Mod HG 20 Hin D-78

सिमॅक

हाथ-बुनाई मशीन

आपको बुनाई की कला में नवीनतम तॅकनिक से परिचित कराती है। देखने में शानदार, वज़न में हलकी और क़ीमत में किफ़ायती। सूती, ऊनी, नायलॉन तथा अन्य सिंथेटिक धागें– सभी के लिए उपयुक्त है।

आकर्षक पुलओवर, ओवरकोट, मौंड़े, स्वेटर, बच्चों के कपड़े तथा पूरे साइज़ के दूसरे कपड़े विभिन्न प्रकार के डिज़ाइनों और रंगों में बुनिए।

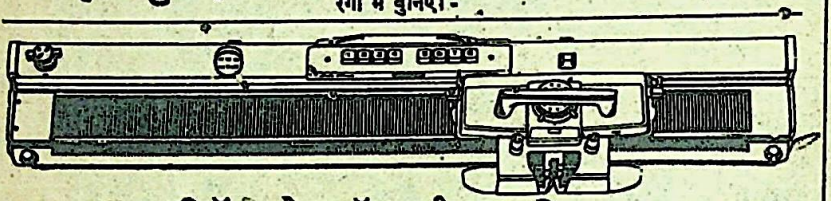

सिमॅक घरेलू मॉडल डीएक्स-२०००

विशेष विवरणे: नीडिल– २००, नीडिल पिच– ४.५ मि.मी., वज़न– १०.७ किलो

सिमॅक घरेलू मशीन मॉडल डी-एक्स २०००

इसमें हमारे मॉडल डी एक्स-२००० जैसी ही खूबियाँ हैं लेकिन इनमें ऑटोमैटिक नीडल सेलेक्टिंग डिवाइस (अपने आप सुई चुनने की व्यवस्था), पैटर्न स्लाइडिंग डायल, पुश बटन डिज़ाइन सेलेक्शन तथा टक लिवर नहीं हैं। यह मशीन सीखने वालों तथा कम खर्च कर सकनेवालों के लिए ठीक रहेगी।

विशेष गुण: सुइयाँ: २०० नं. सुई का पिच: ४.५ मि.मी.(नेट) सही वजन: १०.७किलोग्राम

"दुनिया भर में अनेक घरों की चहेती"

सिमॅक ग्रुप (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

गुप्ता भवन, ४, गायवाडी इंडस्ट्रियल एस्टेट, एस. वी. रोड, गोरेगांव (पश्चिम) बम्बई ४०० ०६२. भारत

3 BROTHERS

आपके लिए भारत के प्रतिष्ठित निर्यात उत्पादन

बिक्री एवं मरम्मत के लिए संपर्क करें : मैसर्स. सिंगर सिलाई मशीन कं., 207, डा. डी. एन. रोड बंबई-400001.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जनवरी (प्रथम) अंक के 'सरित प्रवाह' के अंतर्गत आकाशवाणी से प्रसारित क्रिकेट कमेंट्री की स्पष्ट रूप से की गई आलोचना के लिए बहुतबहुत बधाई. देश का कोई भी अखबार इस बेहूदा चीज की आलोचना करने की हिम्मत नहीं रखता. जब क्रिकेट की कमेंट्री चलती रहती है तब देश के सभी दफ्तर, स्कूल व कालिज खुले रहने पर भी बंद रहते हैं. स्कोर की उत्सुकता इतनी अधिक रहती है कि कामकाज ठप हो जाता है. हमारा नौजवान तबका इस नामुराद कमेंट्री की वजह से खेल खेलने या देखने के स्थान पर खेल सुनने का आदी हो गया है.

नई सरकार से उम्मीद थी कि इस बेहूदा बकवास को बंद करेगी, लेकिन ये तो पिछली सरकार के पिछलग्गू हैं. आशा है क्रिकेट कमेंट्री की तरह ही जनता की मांग पर सूचना मंत्रालय टी. वी. पर ब्लू फिल्में भी दिखाएगा.

—आई. सी. मिश्र

✦

जनवरी (प्रथम) अंक के 'सरित प्रवाह' के अंतर्गत तिरुपति मंदिर के अधिकारियों द्वारा भगवान वेंकटेश्वर के सोनेहीरे के गहनों की चोरी के बीमा करवाने के बारे में पढ़ा. मैं आप की इस बात से सहमत हूं कि जो भगवान स्वयं अपनी ही रक्षा नहीं कर सकता वह किसी दूसरे की रक्षा क्या कर सकता है.

मैं यह भी बताना चाहता हूं कि हमारे पड़ोसी दिसंबर के दूसरे सप्ताह में 'माता वैष्णो देवी' के दर्शन करने के लिए गए थे. लेकिन उन को दर्शन किए बगैर ही वापस आना पड़ा. कारण यही था कि वहां भीड़ बहुत थी. जो भक्त वहां के पंडेपुजारियों को पचास से ले कर सौ रुपए तक की दक्षिणा (रिश्वत) देता था वह तो तीनचार घंटे बाद ही दर्शन कर लेता था और जो भक्त दक्षिणा (रिश्वत) नहीं देते थे उन्हें तीनचार दिन तक इंतजार करने के बाद भी बारी मिल पाने की संभावना नहीं होती थी.

—प्रशोत्तम महाजन

✦

जनवरी (प्रथम) अंक में 'सरित प्रवाह' के अंतर्गत रेल दुर्घटनाओं पर आप की टिप्पणी पढ़ी. वास्तव में इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न करने के लिए हमारा बोगस कानून जिम्मेदार है. अदालतें तुरंत निर्णय नहीं कर सकतीं और कुछ हद तक जनसाधारण भी जिम्मेदार है जो कि अपने नेताओं के क्रियाकलापों पर व उन के वक्तव्यों पर विरोध करने का साहस नहीं जुटा पाता.

यदि इस प्रकार के समाज विरोधी कार्यों को रोकना है तो जनसाधारण को जागृत हो कर अपना हक मांगना होगा. अपनी संपत्ति की सुरक्षा का कर्तव्य स्वयं को निभाना होगा. तभी यह संभव हो सकता है.

—पवन खत्री 'वैरागी'

✦

जनवरी (प्रथम) अंक में सरिता के रचनात्मक आंदोलन में 'सरिता और हिंदू समाज' शीर्षक के अंतर्गत आप के विचारि पढ़े. धर्म के खोखलेपन को बेनकाब करने के लिए सरिता को बधाई. वास्तव में आडंबर का हथियार कुंद कर दिए जाने के कारण ये धर्मकांडी बौखला उठते हैं. वास्तव में गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को आत्मप्रशंसा के वाग्जाल में उलझा रखा है. कहीं से भी देखिए, एक ही आवाज मिलेगी—जो हूं मैं हूं. पर कैसे हूं, इस का कोई भी ऐसा प्रमाण नहीं, जो गले से उतर सके जैसे—

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति.
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्. 7/21
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते.
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्. 7/22.

अर्थात जो सकामी भक्त जिसजिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है. उसउस भक्त की मैं उस ही देवता के प्रति श्रद्धा स्थिर करता हूं तथा वह पुरुष उस श्रद्धा से इच्छित भोगों को प्राप्त होता है.

पुनः

येऽप्यन्य देवता भक्ता यजन्ते श्रद्धायाऽन्विताः
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम्. 9/33.

अर्थात—हे अर्जुन, यद्यपि श्रद्धायुक्त जो भक्त दूसरे देवता को पूजते हैं, वे भी मेरी ही पूजा करते हैं, किंतु उन का यह पूजना अविधिपूर्वक है.

लीजिए, एक ओर आप दूसरे देवताओं की पूजा को सकार रहे हैं तो दूसरी ओर उसे अविधिपूर्वक भी कह रहे हैं. कुछ इसी तरह की दोमुंही बातों से गीता भरी है.

अपि चेत्सु दुराचारो भजते मामनन्यभाक्,
साधुरेव से मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः. 9/30.

अर्थात अति दुराचारी भी मेरे को अगर निरंतर भजता है तो वह साधु मानने के ही योग्य है. यानी दुराचार करते जाइए और कृष्ण को भजते जाइए. आप साधु ही रहेंगे. आप के सभी दुष्कर्म क्षमा.

अंत में, यद्यपि इस तरह की बातों से गीता भरी पड़ी है, तथापि मैं आप की इस बात से सहमत नहीं हूं कि 9/32 में कृष्ण ने स्त्री, वैश्य और शूद्रों को पापयोनि कहा है क्योंकि—

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः,
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्. 9/32

अर्थात—

हे पार्थ, स्त्री, वैश्य, शूद्र तथा पापयोनि यानी चांडाल आदि भी मेरी शरण में आ कर परम गति प्राप्त करते हैं.

आप से यही आशा है कि सिर्फ हिंदू समाज पर ही नहीं बल्कि हर उन गलत बातों का विरोध करते रहेंगे, जो राष्ट्रीयता के दृष्टिकोण से हमारे पुनरुत्थान में बाधक हैं.

—मानवेंद्रकुमार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवंबर (प्रथम) अंक में रचनात्मक आंदोलन के अंतर्गत 'समाजवाद—सरकारवाद— गुलामवाद' शीर्षक के अंतिम दो पैराग्राफ में यह सही लिखा है कि 'नियंत्रण सरकार का पर सरकार पर किस का नियंत्रण?'

शायद नियंत्रण उन चंद नेताओं का है जो कि चोला बदल कर अपनी थैली भरने में लगे हुए हैं और समाजवाद के नाम पर सरकारीकरण की आड़ में वे अपनी सुखसुविधाओं के लिए निगमों का गठन करते हैं, वातानुकूलित कार्यालयों में बैठते हैं और घूमने-फिरने को मोटर व विदेश यात्राओं का आनंद लेते हैं.

—हरीकृष्ण तायल

✦

बैंक कर्मचारियों की हड़ताल की वजह से होने वाली परेशानी सर्वविदित है. खूबी की बात यह है कि बैंक कर्मचारियों को अन्य सरकारी कर्मचारियों के वेतन से पहले ही बहुत अधिक वेतन मिलता है और उन का काम भी अन्य सरकारी कर्मचारियों से कहीं कम होता है. इस पर भी ये लोग समयसमय पर हड़ताल और 'धीरे काम करो' की धमकियां दे कर जनता को परेशान करते हैं.

सरकार को चाहिए कि जिस दौरान ये लोग हड़ताल करें, उस समय उन की जगह नए कर्मचारियों को भरती कर के हड़तालो कर्मचारियों की सेवाएं समाप्त कर दी जाएं. वैसे भी भारत में बेकारी बहुत बढ़ गई है और ये लोग, जिन्हें काम नहीं मिल रहा, इस से 100 रुपए कम वेतन पर भी काम करने को तैयार हो जाएंगे. इस से उन बेकारों की सहायता भी हो जाएगी और सरकार को भी आर्थिक लाभ होगा.

—भीमसैन गर्ग

✦

'सरिता' पढ़ कर अनायास ही मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली की यह बात याद आई. 'कौम के सच्चे शुभचिंतक तो वे हैं जो उस की कमियों और खामियों को महसूस कर उन्हें बिलाखौफ कबूल करते हैं और उन्हें दूर करने की कोशिश करते हैं, न कि वे, जो उन्हें नकारते हैं और छिपाते हैं.' इस पर आप की पत्रिका सौ फीसदी से ज्यादा खरी उतरती है, क्योंकि आप समाज में फैली खामियों को न सिर्फ कबूल कर दूर कर रहे हैं बल्कि बहुत तेज मुहिम इस के खिलाफ छेड़े हुए हैं.

—कमरुद्दीन नियारगर

✦

दिसंबर (द्वितीय) अंक के 'चंचल छाया' स्तंभ के अंतर्गत फिल्म 'घर' की समीक्षा में मैं समीक्षक की इस बात से असहमत हूं कि फिल्म में गीत बोझ प्रतीत होते हैं. 'घर' के गीत संगीतप्रेमी दर्शकों द्वारा ही नहीं, वरन आम दर्शकों द्वारा भी सराहे गए हैं.

—कल्पेश जानी

✦

दिसंबर (प्रथम) अंक में 'विस्फोटक सत्य' (कहानी : कुसुम गुप्ता), 'पुरस्कार' (कहानी : सुषमा माथुर) तथा 'मशीन' (कहानी : कांता सक्सेना) सर्वोत्तम लगीं. पर 'मशीन' में लेखिका ने मां के प्रति बेटों का कटु व्यवहार एवं तिरस्कार कुछ बढ़ाचढ़ा कर दिखाया है. बेटों की शादी के बाद तो मां के प्रति भिन्नता अधिकांशतः आ जाती है, लेकिन शादी से पूर्व मां के प्रति इस प्रकार का व्यवहार कुछ प्रतिशत ही सही माना जा सकता है. फिर भी लेखिका ने इस कहानी द्वारा आज के नवयुवकों का ध्यान माता-पिता के प्रति अपने कर्त्तव्य की ओर दिलाया है.

राजनीतिक दृष्टि से आप का संपादकीय 'सरित प्रवाह' एवं लेख 'अखाड़ा चिकमगलूर का' (श्रीशचंद्र मिश्र) रोचक लगे.

—नरेंद्रकुमार गुप्ता

✦

नवंबर (द्वितीय) अंक में 'हिंदी फिल्मों की हिंदी' (लेखः मिथिलेश सिन्हा) पढ़ा. दुख की बात है कि अपनी राष्ट्र भाषा हिंदी की हिंदी फिल्मों के माध्यम से अवमानना की जा रही है. हिंदी फिल्मों में जब कभी भी शुद्ध हिंदी का प्रयोग किया गया है तो उसे पूर्णतः व्यंग्य के तौर पर व मजाक के लहजे में ही प्रस्तुत किया गया है.

शुद्ध हिंदी को हास्य के सांचे में ढालना कहां तक न्यायसंगत है? यह तो सरासर हिंदी का ही नहीं, अपना और राष्ट्र का भी मखौल उड़ाना है.

—पांडेय अजयकुमार सिन्हा

सरिता के लेखक

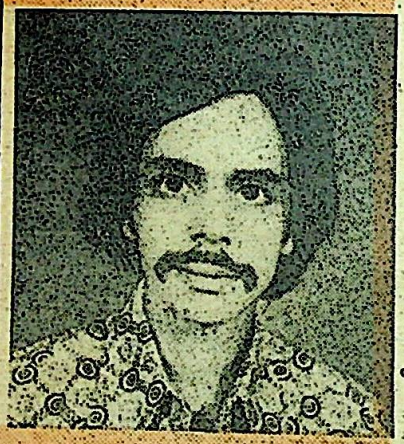

र. राजीवन

इसी अंक में प्रकाशित लेख 'वृद्ध महिलाओं की देखभाल' के लेखक र. राजीवन युवा पत्रकार हैं. समस्या प्रधान विषयों के साथ-साथ रूढ़ियों के विरोध में लेख और कहानियां लिखने में विशेष रुचि है. पत्रपत्रिकाएं पढ़ने का शौक है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ना..ना..ना
रेज़र आपके लिए नहीं...

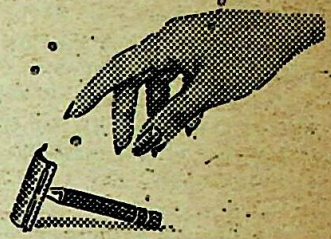

आपके लिए है
मखमल मुलायम
एन् फ्रेंच हेयर रिमूवर क्रीम!

भला रेज़र आपके किस काम का?
इसे पुरुषों तक ही रहने दीजिए!

ये तो त्वचा के ऊपर-ऊपर से ही बाल काटता है, और फिर अधकटे, भद्दे बाल भी तो छोड़ जाता है. लेकिन एन् फ्रेंच हेयर रिमूवर क्रीम बालों की जड़ों तक असर करता है, जहां रेज़र की पहुंच नहीं. इसीलिए आपकी त्वचा हफ़्तों मुलायम रहती है.

ये इस्तेमाल में भी आसान है. बस, क्रीम लगाइये, थोड़ी देर इंतज़ार कीजिए और फिर पोंछ डालिए. देखा, अनचाहे बाल गायब! आपकी त्वचा हफ़्तों मुलायम.

अनचाहे बालों को हटाने का मनचाहा क्रीम

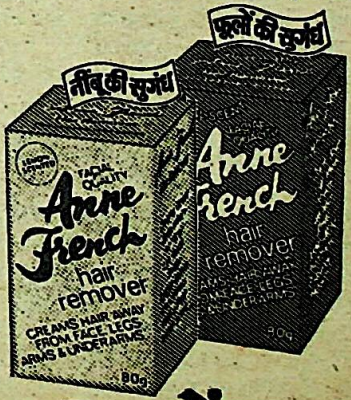

एन् फ्रेंच हेयर रिमूवर
अब दो सुगंधों में

200 HR-172 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवंबर (द्वितीय) अंक में 'वैवाहिक जीवन में सेक्स निषेध' (लेखः के. एस. भटनागर) में केवल पत्नी पक्ष के बारे में ही लिखा गया है और उन कारणों पर प्रकाश नहीं डाला गया, जिन के कारण पतिपत्नी के बीच सेक्स निषेध पैदा होता है: अधिक कामुकता इस का एक बड़ा कारण हो सकता है. लेख में केवल पत्नी को दोषी ठहराया गया है जो ठीक नहीं भी हो सकता. —नवीनकुमार

✦

(नवंबर (द्वितीय) अंक में 'नया जीवन' (कहानीः विश्वभारती) में एक्सरे का बदल जाना बिलकुल नहीं भाया. क्या नायिका को हर हाल में बचाना आवश्यक था?

इस कहानी में अगर डाक्टर व साधना मिल कर अच्छी साजिश करते तो कहानी स्वाभाविक लगती. —अनिल शर्मा

✦

नवंबर (द्वितीय) अंक में 'भारतीय दर्शन में ईश्वर' (लेखः सखा बोरड़) में ईश्वर की आड़ में भ्रष्टाचार करने वाले लोगों का अच्छा पर्दाफाश किया गया है.

हम आज जो इतने पिछड़े हुए हैं उस का कारण भी हमारा मानसिक चिंतन ही है. —मेघराज खटेड़

✦

दिसंबर (द्वितीय) अंक में 'यह भीषण अपराध लहरी' (लेख शंभु चतुर्वेदी) में बढ़ते हुए अपराधों का प्रशंसनीय विवेचन है. लेखक की यह मान्यता सही है कि पूरी प्रशासनिक व्यवस्था ऐसी हो गई है कि जनता की आवाज सरकार तक नहीं पहुंच पाती.

जिस सरकारी तंत्र में काफी बड़ी धनराशि वेतनों, भत्तों और सुविधाओं के रूप में व्यय की जाती हो और कर्मचारी सरकार को (या दूसरे शब्दों में जनता को) 'ब्लैकमेल' करने के लिए हड़तालें आदि करते रहते हों, वह न तो जनता के प्रति निष्ठावान हो सकता है, न सरकार के प्रति. जन सेवाओं से संबंधित सरकारी विभागों में कोई भी कार्य बिना भेंट पूजा (रिश्वत) के नहीं बनता और सरकारी कर्मचारी एहसान जताते हुए ही अपना कर्त्तव्य करता है. दूसरी ओर प्रतिवर्ष प्रदत्त बजट की बची हुई (या बचा ली गई) धनराशि 31 मार्च को बराबर कर दी जाती है. ऐसी व्यवस्था में केवल त्रास मनोवृत्ति और भ्रष्टाचार ही उपज सकता है.

जनता सरकार को और सरकार जनता को पराया समझती है, यह खाई भी व्यवस्था की ही देन है. लोकतंत्र में जनता की आवाज़ सरकार तक पहुंचाने का माध्यम पत्रपत्रिकाएं समझी जाती हैं. जब से जनता पार्टी सत्तारूढ़ हुई है, सरकार इन जन मंचों की तरफ भी ध्यान नहीं दे रही है. —कमलेश क. सक्सेना

✦

दिसंबर (द्वितीय) अंक में 'यह भीषण अपराध लहरी' सचमुच आज की कानून व्यवस्था पर एक सटीक लेख है.

अंग्रेजों ने भारत में पुलिस का गठन उन नियमों और अधिनियमों की नींव पर किया था, जिन का मात्र उद्देश्य भारत और उस के निवासियों को सांस तोड़ देने तक कुचल देना था. किंतु स्वतंत्रता के 31 वर्ष बाद भी देश की पुलिस उसी नक्शे कदम पर है और आज भी ऐसे ही कानून हैं जो पुलिस के निरंकुश होने में सहायक हैं. देश में तीसरी आजादी कब आएगी? —नरेंद्र जैन

✦

दिसंबर (द्वितीय) अंक में 'अवतारवाद' (लेखः चैतन्य भट्ट) पसंद आया. लेख बहुत ही सरल व स्पष्ट भाषा में लिखा गया है. इस से पहले भी मैं कई बार संतोषी मां, हरिद्वार के पंडे व अन्य कई विषयों पर आप के विचार पढ़ चुका हूं.

यह पढ़ कर बहुत ही आश्चर्य हुआ कि गीता में स्वयं कृष्ण से यह कहलवाया गया है कि 'वैदिक अनुष्ठान, यज्ञ आदि करने वाले स्वर्ग में शुभ कर्मों का फल भोग कर पुनः जन्ममरण के चक्कर में पड़ते हैं जब कि कृष्ण भक्तों का पुनरागमन नहीं होता.'

आप से अनुरोध है कि कृपा कर यह भी स्पष्ट करें कि राम व कृष्ण की कैसे मृत्यु हुई तथा उन्होंने एकदूसरे के प्रति क्या कहा. —वेदप्रकाश

राम व कृष्ण की मृत्यु कैसे हुई, इस विषय पर शीघ्र ही लेख प्रकाशित किए जाएंगे. वैसे आप पढ़ना चाहें तो राम की मृत्यु के बारे में वाल्मीकि रामायण उत्तरकांड 109 सर्ग पढ़ लें और कृष्ण की मृत्यु का वर्णन महाभारत मौसल पर्व में है. दोनों ही अपने जातिधर्म के अनुसार रणभूमि में मृत्यु प्राप्त नहीं हुई. दोनों ने घोर दुख, अशांति व निराशा में स्वयं प्राण त्यागे. —संपादक

✦

दिसंबर (द्वितीय) अंक में 'अवतारवाद' विषय की समीक्षापूर्ण जानकारी से युक्त होने के कारण अच्छा लगा. सचमुच तथाकथित अवतारों के जीवन के कुछ अनैतिक प्रसंग उन के 'भगवान' या 'ईश्वरावतार' होने पर प्रश्नचिह्न लगा देते हैं. —स्नेहलता गुप्ता

✦

दिसंबर (द्वितीय) अंक में 'जोरू का गुलाम' (कहानीः कृष्णा गर्ग) बेहद पसंद आई. यह कहानी उन नवयुवतियों के लिए शिक्षाप्रद है जो ससुराल को जेल समझती हैं, जेठजिठानी, ननद आदि के दुलार को नहीं समझ पातीं और सदैव अपने पीहर के गुणों का ही बखान करती रहती हैं.

ऐसी कहानी के लिए लेखिका को बधाई. —कौशल्या देवी

✦

जनवरी (प्रथम) अंक में 'मातापिता' (लेखः सावित्रीदेवी वर्मा) पढ़ कर मन को बड़ी सांत्वना मिली. इस लेख में लेखिका ने वर्तमान समाज की वस्तुस्थिति को बहुत ही सुंदर ढंग से अंकित किया है. —श्याम रानोलिया 'प्रीतम' ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुरक्षा और सुन्दरता का अनोखा संगम !

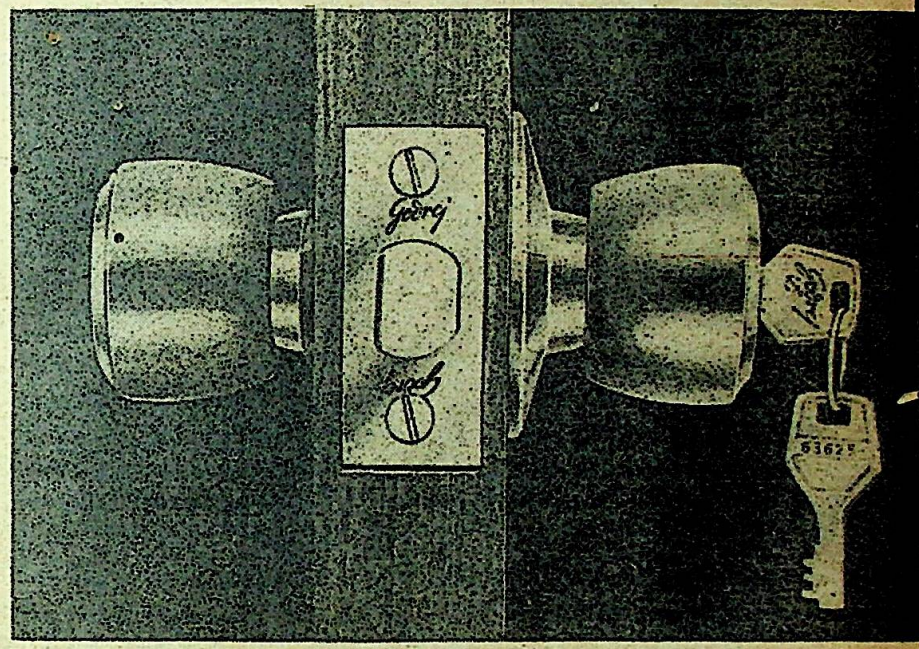

लाजवाब ट्यूब्युलर लॅच

गोदरेज की ओर से पेश है—एक आधुनिक और बेहतर लॅच— ट्यूब्युलर लॅच, जिसकी क्वालिटी गोदरेज की शानदार परंपरा के अनुरूप है. दिखने में लाजवाब. बेहतरीन काम. होटल, ऑफ़िस और घरों के लिए पूरी सुरक्षा का वादा. ये दो तरह के हैं : एक बिना चाबीवाला, अन्दर का नॉब घुमाने पर, अन्दर और बाहर दोनों तरफ से बन्द हो जाता है या खुल जाता है. दूसरा है चाबीवाला. अगले दरवाजों के लिए विशेष रूप से बना. यह नॉब घुमाने पर अन्दर की ओर से खुल जाता है और बन्द हो जाता है, लेकिन बाहर की ओर से सिर्फ चाबी लगाने पर ही खुलता है.

Godrej®

गोदरेज ट्यूब्युलर लॅच

गोदरेज क्वालिटी की शानदार परंपरा के अनुरूप

U-G-TL-1/8 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गांवों और ग्रामीणों की समस्याएं उठाने में भूभारती सदैव अग्रणी रही है. साथ ही यह उन के लिए उद्देश्यपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन व शिक्षाप्रद पाठ्य सामग्री भी प्रस्तुत करती आ रही है.

भूभारती

अब वर्ष में 12 के बजाए 24 अंक

ग्रामीण नवजागरण की पत्रिका अब पाक्षिक

भूभारती मात्र एक पत्रिका न हो कर भारतीय ग्रामों के उत्थान का आंदोलन बन चुकी है. पाठकों की काफी अरसे से मांग चल रही थी कि भूभारती का प्रकाशन पाक्षिक कर दिया जाए ताकि ग्राम उत्थान के कार्यक्रम में गति आ सके.

हमें हर्ष है कि अब हम अपने पाठकों की यह मांग पूरी करने में समर्थ हो गए हैं. जनवरी 1979 से भूभारती का प्रकाशन पाक्षिक किया जा रहा है और उस का वार्षिक मूल्य 25 रुपए होगा जब कि एक प्रति का मूल्य 1.25 रुपए रहेगा. पाक्षिक होने पर इस में पाठकों की रुचि की अन्य सामग्री प्रस्तुत करना भी आसान हो जाएगा, जो सामान्यतः मासिक प्रकाशन में संभव नहीं है.

दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्साह भरे जीवन
के लिये
नेस्कैफे®

दुनिया भर में सबसे
ज़्यादा बिकने वाली
इन्स्टैन्ट कॉफी

एकमात्र इन्स्टैन्ट कॉफी
जो १००% शुद्ध कॉफी से बनी है

NS/CAS-2/79 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैक्स फ़ैक्टर लिप-ग्लॉस

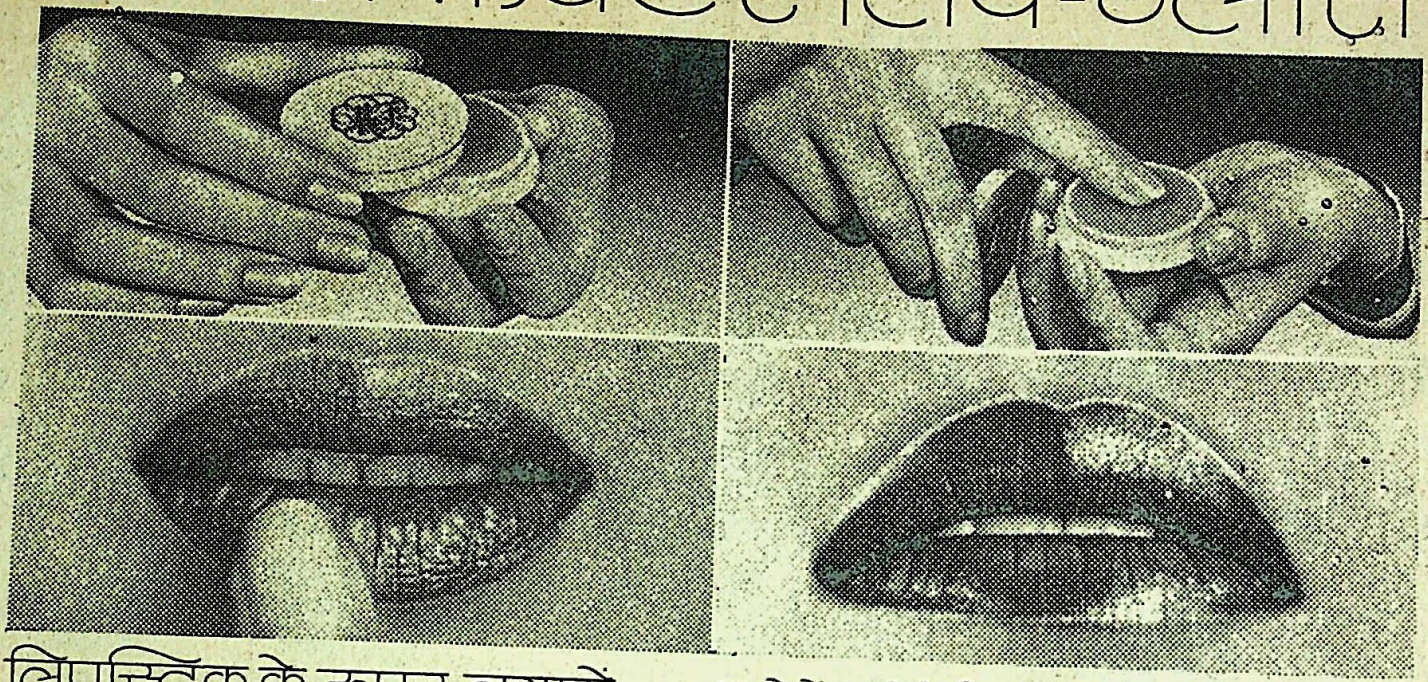

लिपस्टिक के ऊपर लगायें
लिपस्टिक के नीचे लगायें

या होठों पर ऐसे ही लगायें; उन्हें चमकायें, दमकायें

जगप्रसिद्ध सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माता मैक्स फ़ैक्टर की देन!

SHILPI-DM 56A/8

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अरित प्रवाह

हमारे संसद सदस्य देश के लिए कानून बनाते हैं और साधारण नागरिकों द्वारा इन की अवहेलना करने पर खूब चीख-पुकार मचाते हैं. उदाहरण के लिए प्रायः हर मास संसद में यह प्रश्न पूछा जाता है कि कितना आयकर वसूल किया जाना बाकी है जब कि यह सर्वविदित है कि आयकर अधिकारी बजाए कोई इनकम टैक्स बिना वसूल किया छोड़ने के उलटा अधिक से अधिक वसूल करने के लिए कटिबद्ध रहते हैं. और जहां तक कानून से अधिक वसूल किया हुआ टैक्स वापस (रिफंड) करने का सवाल होता है, हर प्रकार से आनाकानी करते हैं. तभी तो सरकार को हर वर्ष 'रिफंड सप्ताह' मनाना पड़ता है जिस अवधि में आयकर अधिकारी सिर्फ रिफंड के मामले देखते हैं. वैसे भी सरकार जब भी बकाया आयकर के आंकड़े संसद में पेश करती है तब वह यह कभी नहीं बताती कि सरकार को करदाता को कितना रिफंड देना बाकी है. शायद इसलिए कि यह रकम इतनी अधिक होगी कि सब को चौंका देगी.

खैर, यह तो रही सरकारी टैक्स की बात. अभी हाल में नई दिल्ली नगरपालिका ने बतलाया है कि वर्तमान व भूतपूर्व संसद सदस्यों को एक लाख साठ हजार से अधिक रुपया पानी व बिजली के बिलों का देना बाकी है जो बारबार याद दिलाए जाने पर भी वसूल नहीं हो पा रहा है.

इन के अतिरिक्त समयसमय पर यह आरोप लगाए जाते रहे हैं कि बहुत से सांसदों ने अपने सरकारी क्वार्टर किराए पर दे दिए हैं जिस से वे काफी आमदनी प्राप्त करते हैं. संसद में भी पिछले दिनों इस विषय पर सवालजवाब हुए थे. पर अंत में नतीजा क्या निकला, पता नहीं. शायद यह प्रश्न सर्वथा पर्दानशीन है.

संसद सदस्यों को सरकारी रुपए की अदायगी में मिसाल कायम करनी चाहिए तभी इन की प्रतिष्ठा बनी रह सकती है.

✦

दक्षिणपूर्वी एशिया में वियतनाम ने कंबोडिया में अपनी सेना उतार कर उस देश में एक कठपुतली सरकार स्थापित कर दी है. ये दोनों देश कम्यूनिस्ट हैं और दोनों के पीछे जो बड़ी शक्तियां—रूस और चीन—हैं, वे भी कम्यूनिस्ट हैं. इस प्रकार कम्यूनिस्टों का यह दावा गलत साबित हो गया है कि केवल पूंजीवाद ही साम्राज्यवादी हो सकता है और वही युद्ध का समर्थक व पोषक होता है.

वियतनाम को प्रारंभ से ही रूस का पूरा समर्थन मिलता रहा है और उसी के बल पर वह संसार के सब से शक्तिशाली देश अमरीका को धूल चटा सका था. कंबोडिया की पीठ पर चीन का हाथ था, पर न जाने क्यों चीन कंबोडिया को खुल कर पूरी मदद नहीं दे सका. नतीजा यह हुआ कि थोड़ी सी लड़ाई के बाद ही कंबोडिया की पोल पोट सरकार का पतन हो गया. इस हार में सरकार द्वारा अपने नागरिकों पर किए गए अमानुषिक अत्याचार भी एक बहुत बड़ा कारण रहे हैं. पिछले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो वर्षों में कंबोडिया के सत्तारूढ़ दल ने कई लाख कंबोडियावासियों की बेरहमी से हत्या कर दी और लाखों को शहरों से जबरदस्ती गांवों में पटक कर भूखा मार दिया. इस से जनसाधारण का सरकार को किसी प्रकार का सहयोग मिलना असंभव हो गया था.

कंबोडिया पर वियतनाम के कब्जे से दक्षिणपूर्व एशिया में असुरक्षा की स्थिति उत्पन्न हो गई है. चीन का आरोप है कि रूस अपने इस वियतनामी प्यादे की मारफत इस क्षेत्र में अपना दबदबा बढ़ाएगा—वैसे ही जैसे वह क्यूबा के माध्यम से अफ्रीका में अपने पांव जमा रहा है.

इस समय अमरीका इस स्थिति में नहीं है कि वह दक्षिणपूर्वी एशिया के इस क्षेत्र में कुछ कर सके. अब तो सारी बात चीन के रुख पर निर्भर है.

◆

समाचारों के अनुसार अब जनता सरकार रेडियो व टेलीविजन को पूरी स्वतंत्रता देने के पक्ष में नहीं है, चाहे वर्गीज आयोग की सिफारिश इस के विपरीत हो. जनता पार्टी ने चुनावों के घोषणापत्र में कहा था कि इंदिरा गांधी द्वारा रेडियो टीवी के दुरुपयोग जैसी स्थिति को दोबारा आने से रोकने के लिए वह इन दोनों को पूरी आजादी देने के पक्ष में है ताकि वे सरकारी भोंपू बन कर ही न रह जाएं और वास्तविक रूप में जनता का प्रतिनिधित्व करें.

लगता था शायद जनता पार्टी के राजनीतिबाज अपनी बात को पूरा करेंगे. पर वे भी अन्य राजनीतिबाजों की तरह साबित हो रहे हैं. कोई भी राजनीतिबाज अपनी शक्ति, अपना प्रभाव कम नहीं करना चाहता. इसलिए रेडियो टीवी जैसे असाधारण शक्तिशाली साधन कैसे छोड़े जा सकते हैं?

भारत के अधिकांश नागरिक पढ़लिख नहीं सकते. इसलिए समाचारपत्रों द्वारा उन्हें प्रभावित नहीं किया जा सकता. इन के पास रेडियो द्वारा ही पहुंचा जा सकता है. टीवी अभी प्रारंभिक दशा में है, पर आगे बढ़ने पर, जैसा कि पश्चिमी देशों में हो रहा है, जनमत को हिला देने वाला इस से अधिक कोई और साधन उपलब्ध नहीं हो सकता. ऐसी स्थिति में बैठेबिठाए कौन सरकार रेडियो टीवी को स्वतंत्रता दे सकती है?

इस का एक दूसरा पहलू भी है. यदि सरकार ईमानदार भी हो और रेडियो टीवी को स्वतंत्रता देना भी चाहे तो देगी कैसे? रेडियो टीवी का संचालन कौन करेगा? सरकारी कर्मचारी व अधिकारी? इन के कारनामे, इन की जनहित को ताक में रख कर स्वार्थ साधन की प्रवृत्ति, इन की अपनी आय व सुविधाओं पर किसी प्रकार आंच न आने देने की चाहना, क्या इन्हें इस योग्य बना देते हैं कि इन्हें रेडियो टीवी मनमरजी करने के लिए सौंप दिए जाएं? फिर यदि ऐसा कर भी दिया जाए तो क्योंकि सरकारी कर्मचारी गृह मंत्रालय के अधीन होता है, वह क्या सरकारी नीति के विरुद्ध जा सकता है?

दूसरा विकल्प यह है कि इस के लिए एक ट्रस्ट बना दिया जाए जिस में कुछ विशिष्ट नागरिक नियुक्त कर दिए जाएं. पर जो इन नागरिकों को नियुक्त करेगा क्या वह अपनी नीति नहीं मनवा सकेगा? फिर क्या जरूरी है कि ये ट्रस्टी जनहित ही में रेडियो टीवी चलाएंगे? और क्या वे दैनिक कार्यक्रमों पर नियंत्रण रख सकेंगे? यदि वे पूरे समय के लिए नियुक्त किए जाएंगे तो उन में और सरकारी अधिकारियों में क्या अंतर होगा?

रेडियो टीवी का सरकार दुरुपयोग न कर सके, इस का एक ही उपाय है—रेडियो टीवी को नागरिक क्षेत्र के लिए भी खोल देना, जिस से सरकारी रेडियो टीवी के लिए एक प्रतिस्पर्धा पैदा हो जाए और एकदूसरे पर आंख रख सकें. इस प्रकार न सरकार जनता को उल्लू बना सकेगी, न

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नागरिक क्षेत्र के रेडियो-टीवी जनता को गलत राह पर ले जा सकेंगे, बल्कि दोनों जनता का विश्वास और संरक्षण पीने के लिए होड़ लगाए रहेंगे.

ब्रिटेन जैसा जनतांत्रिक समाज आज इस संसार में कोई नहीं है. वहां भी अब तक सरकारी बी. बी. सी. का एकाधिकार था जो अब नहीं रहा है, और नागरिक क्षेत्र में भी रेडियो टीवी चल रहे हैं. इस से बी. बी. सी. के कार्यक्रमों की गुणवत्ता व प्रभाव बढ़ा है, कम नहीं हुआ है. भारत में ऐसा क्यों नहीं हो सकता?

✦

कहावत है कि अकसर बुद्धिमान दुश्मन से कहीं अधिक मूर्ख मित्र हानि पहुंचाता है. लगभग यही बात श्री चरणसिंह और अपने को उन का हनुमान कहने वाले श्री राजनारायण के साथ हो रही है. श्री चरणसिंह का केंद्रीय मंत्रिमंडल से निकाला जाना और दस महीने पश्चात ही उन का वापस लौटना बहुत कुछ श्री राजनारायण की मेहरबानी का नतीजा है. श्री राजनारायण अटपटी बातें करने वाले जोकर अधिक हैं, जिम्मेदार नेता व राजनीतिबाज कम. उन की हरकतों व बेहूदी बातों से जनता पार्टी व श्री चरणसिंह को बहुत हानि हुई है.

जब श्रीमानजी केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री थे, तब भी हर रोज नया शगूफा छोड़ते थे, जिस से उन के मंत्री पद की और इस प्रकार सारे मंत्रिमंडल की जगहंसाई होती थी. कभी वह हनुमान चालीसा के पाठ को हर बीमारी का अचूक इलाज बताते थे तो कभी चालीसपचास रुपए मासिक वेतन पर नियुक्त दवाई की पेटियां लिए अनपढ़ व अधकचरे युवकों के हाथ गांव वालों का जीवन सांपने की योजना बना रहे थे. अब बाहर रह कर प्रतिदिन उन का पहला काम यही होता है कि अपने आका चरणसिंह की प्रशंसा में और मोरारजी देसाई के विरुद्ध कोई नया नारा लगाएं. इस बात की उन्हें कोई चिंता नहीं रहती कि इस से स्वयं उन का और उन के आका का सम्मान कितना घटता जाता है.

राजनारायणजी के पक्ष में यह अवश्य है कि उन्होंने श्रीमती इंदिरा गांधी को दो बार बड़ी करारी हार दी. पर इस का लाभ आखिर वह कब तक उठाते रहेंगे?

✦

जनरोष से कुछ प्रभावित हो कर एकाधिकारी जीवन बीमा निगम के अध्यक्ष ने अफसरों की एक समिति बनाई है जो इस बात की जांच करेगी कि बीमे की प्रीमियम की दरों में कितनी कटौती संभव है. पर साथ ही उन्होंने अपना निश्चित मत भी प्रकट कर दिया कि दर घटने की कोई संभावना नहीं है, क्योंकि निगम के खर्च बहुत बढ़े हुए हैं और इस से कम आमदनी पर निगम को घाटा होगा.

जब अध्यक्ष महोदय इस बात का स्पष्ट संकेत कर रहे हैं कि प्रीमियम की दरें घटाने की संभावना नहीं है तो उन के मातहत अफसर भला वह बात क्यों कहेंगे जिस से निगम की आय में किसी प्रकार की कमी हो? कर्मचारियों व अफसरों का तो लाभ इसी में है कि (बिना मेहनत किए) खूब आमदनी बढ़ाओ (ताकि उन्हें और अधिक वेतन व सुविधाएं मिल सकें), चाहे इस के लिए जनता को क्यों न चूसना पड़े.

प्रीमियम की दरें कम हो सकती हैं या नहीं, इस का असली पता तो तभी चल सकता है जब निगम का एकाधिकार और जनशोषण बंद कर के देश में पांचदस बीमा कंपनियां हों जो आपस में जनता की पालिसियों के लिए प्रतिस्पर्धा करें. तब तो जो कंपनी कम दरें रखेगी, अपने खर्च पर नियंत्रण करेगी, जनता को अधिक सुविधाएं देगी, वही पनपेगी और वर्तमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकाधिकारी निगम को भी लाचार हो कर अपनी ढर्रा बदलना होगा. पर खेद है कि भारत सरकार के वित्त मंत्री इस विषय में अजीब चुप लगाए बैठे हैं.

श्री हीरूभाई मूलजीभाई पटेल जब केंद्रीय वित्त मंत्री बने थे, तो आशा थी कि वह भारत सरकार की वित्त नीतियों में आवश्यक परिवर्तन करेंगे, विशेषतः इस लिए कि वह स्वतंत्र पार्टी के एक प्रमुख सदस्य थे और जनसाधारण पर सरकारी नियंत्रण और एकाधिकार को कम या समाप्त करने के आंदोलन में अग्रणी रह चुके थे. पर लगता है कि वह यह सब भूल कर अपने पुराने अफसरी माहौल में (वह पुराने आई. सी. एस. अफसर हैं) इतने घुलमिल गए थे कि उन्हें सरकारी नियंत्रण कहीं भी कम करना गवारा नहीं था. उन की नीतियां बिलकुल वही रहीं जो पिछले 30 वर्षों में कांग्रेस की रही हैं यानी देश का सब कुछ—संपत्ति, आदमी, सोच-विचार—सरकार की मिलकियत है, सरकार के लिए है, सरकार की कृपा पर निर्भर है. यह सर्वविदित है कि यह नीति देश को समृद्ध करने, बेरोजगारी दूर करने, स्वावलंबी बनाने में सर्वथा असमर्थ रही है.

श्री पटेल की जगह अब श्री चरणसिंह वित्त मंत्री बन गए हैं. आशा की जानी चाहिए कि श्री चरणसिंह इस महत्त्वपूर्ण विषय में जनहित को ध्यान में रखते हुए शीघ्र निर्णय लेंगे और जीवन बीमा निगम का एकाधिकार समाप्त कर देंगे.

इस सिलसिले में एक बहुत आसान तरीका है, जिस के लिए कोई विशेष कानून भी नहीं बनाना होगा. जनरल (विविध) बीमा कारपोरेशन की चार कंपनियां आग, पानी, दुर्घटना, चोरी आदि का बीमा बड़े सुचारु रूप से कर रही हैं. सर्वप्रथम इन चारों कंपनियों को जीवन बीमा करने का लाइसेंस दे दिया जाए और चाहें तो जीवन बीमा निगम को विविध बीमा करने की छूट दे दी जाए. इस से अवश्य ही देश में जीवन बीमा का क्षेत्र बढ़ेगा, प्रीमियम कम होगा, पालिसी होल्डरं को राहत मिलेगी और सरकारवाद पर भी कोई आंच नहीं आएगी.

भारत सरकार के सूचना मंत्रालय के एक प्रभाग, फिल्म डिवीजन को पिछले साल बहुत बड़ा घाटा हुआ है (इस की पूर्ति तो खैर नए टैक्स लगा कर ही की जाएगी.) यह प्रभाग भारत सरकार के लिए प्रचार फिल्मों का निर्माण करता है, और ये फिल्में देश के हर सिनेमाहाल को अपनी जेब से रुपया दे कर, मजबूरन दिखानी पड़ती हैं. पर क्या कोई भी सरकारी काम मुनाफे पर कभी चल सकता है? आश्चर्य की बात है कि इस बंधीबंधाई मोटी आमदनी के बावजूद इस प्रभाग को घाटा होता है.

यह प्रभाग समाचार रील (न्यूज रील) भी बनाता है, पर वह केवल सरकारी विभागों व मंत्रियों की प्रशस्ति से भरी होती है, समाचारों से कम.

जनता सरकार नागरिक स्वतंत्रता में विश्वास रखने का दावा करती है, इसलिए कांग्रेस सरकारों के जमाने से चली आ रही इस प्रचार सामग्री को दर्शकों पर जबरदस्ती थोपने की प्रणाली पर सरकार को पुनर्विचार करना चाहिए.

इस जबरदस्ती से एक और नुकसान हुआ है—इस से गैर सरकारी निर्माताओं द्वारा एकदो रील की वृत्त फिल्में बनाना बिलकुल बंद हो गया है और इस क्षेत्र में सरकारी एकाधिकार हो गया है. सिनेमाओं के पास इस प्रकार के वृत्त चित्र व समाचार रील दिखाने का समय बहुत सीमित होता है. जब सरकारी चित्र दिखाना मजबूरी हो तो दूसरों के चित्र कैसे दिखाए जा सकते हैं? यह एकाधिकार समाप्त होना चाहिए. फिल्म डिवीजन को खुले मैदान में आ कर अपनी योग्यता दिखानी चाहिए.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिल्ली नगर निगम की कार्य प्रणाली इतनी पेचीदा है कि दिल्ली कारपोरेशन को 'कर परेशान' नाम दे डाला गया है. यह नाम कहां तक सार्थक है, इस की कुछ बानगियां प्रस्तुत हैं...

लेख • कस्तूरचंद जैन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आम भाषा में दिल्ली वाले दिल्ली नगर निगम को 'कर परेशान'—कारपोरेशन का अपभ्रंश—कहते हैं. वैसे तो आज भारत सरकार या राज्य सरकारों के प्रत्येक कार्यालय व विभाग में भ्रष्टाचार का राज्य है, पर ये (अव) गुण दिल्ली नगर निगम में कुछ अधिक ही मात्रा में हैं. दिल्ली नगर निगम में ये इसलिए भी अधिक लग सकते हैं क्योंकि दिल्ली के प्रत्येक नागरिक को—चाहे वह मकान मालिक हो या किराएदार, बिड़ला की तरह बड़ा उद्योगपति हो या श्रमजीवी, केंद्रीय मंत्रिमंडल का सचिव हो या चपरासी—किसी न किसी कारण से नगर निगम से पाला पड़ता ही रहता है.

वैसे तो नगर निगम का हर विभाग ही भ्रष्टाचार का गढ़ है और इस के लिए केवल अधिकारी वर्ग ही दोषी हो, जनता नहीं, ऐसी बात नहीं. पर सत्ताधारी का भ्रष्टाचार अधिक खतरनाक होता है. एक बार कुछ सरकारी अधिकारियों के साथ गपशप हो रही थी. बात भ्रष्टाचार पर चल पड़ी. अपनी आदत से मजबूर वे व्यापारी तथा जनता को भ्रष्टाचार का मूल बताने लगे.

मैं ने उन से एक प्रश्न का उत्तर मांगा— यदि मैं उन्हें बिना ब्याज दस लाख रुपए की पूंजी इन शर्तों के साथ दूं कि (1) वे जो व्यापार या उद्योग करेंगे भारत में ही करेंगे, (2) अपना लाभ पहले निर्धारित कर लेंगे. उस के बाद एक पैसा भी अनुचित नफा नहीं कमाएंगे तथा (3) वे एक पैसा भी रिश्वत का नहीं देंगे तो उस दस लाख की पूंजी पर केवल एक सौ रुपए शुद्ध लाभ अर्जित करने के लिए उन्हें कितना समय चाहिए?

सब ने बिना रिश्वत दिए आज की व्यवस्था में एक पैसा लाभ कमाना भी आकाश कुसुम तोड़ने जैसा असंभव कार्य बताया. उन का तर्क था कि आज की इस महंगाई में यदि सरकारी बाबू रिश्वत न ले तो भूखा ही मर जाए.

मेरा कहना था कि सरकारी बाबू को तो फिर भी 100-200 रुपए वेतन मिलता है, जिस में वह भाड़ का भुना चना खा कर, कुएं का पानी पी कर तथा मसजिद में सो कर कम से कम जिंदा तो रह सकता है, पर व्यापारी को तो भाड़ का भुना चना खरीदने के लिए भी रिश्वत का सहारा लेना पड़ेगा.

दिल्ली नगर निगम पर इस महानगर के अधिकांश क्षेत्र की समस्त नागरिक सेवाओं का भार है. पानी, बिजली, सफाई, शिक्षा नगर निगम का दायित्व है. और कुछ समय पूर्व तो परिवहन भी था. शिक्षा को ही लीजिए. अधिकांश स्कूलों के भवन शामियाने हैं. शिक्षकों द्वारा छात्रों से प्रायः ही जायज-

नगर निगम के किसी भी विभाग में चले जाइए, कर्मचारी काम के समय गप्पें मारते ही मिलेंगे.

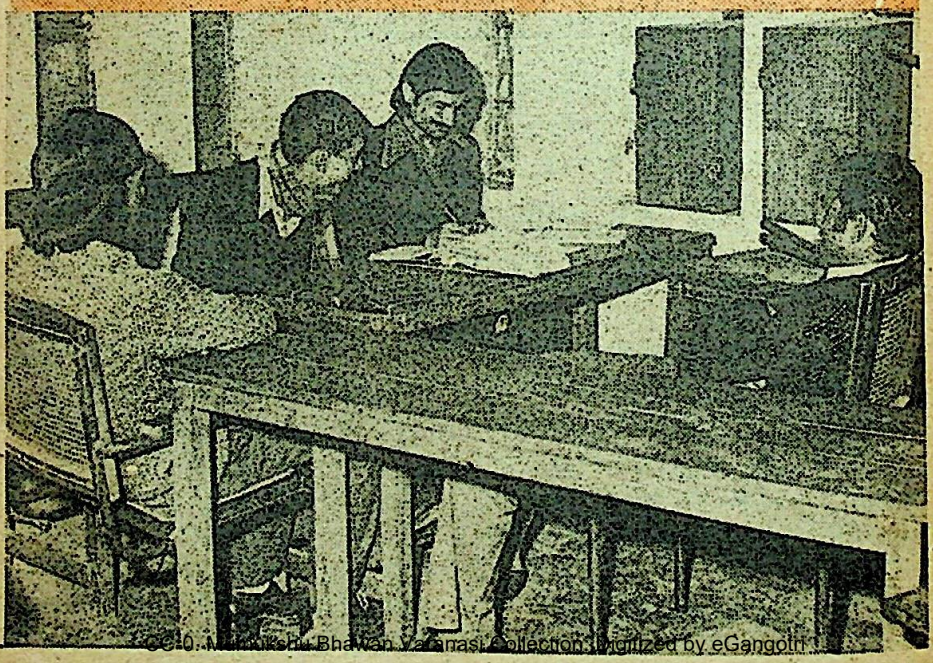

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पानी, बिजली व सफाई कर का भुगतान करने आने वाले लोगों को भुगतान करने के लिए कईकई चक्कर लगाने पड़ते हैं.

नाजायज तरीके से विभिन्न चंदों की उगाही, ट्यूशन के लिए जोरजबरदस्ती आदि की शिकायतें प्रायः ही अखबारों में छपती रहती हैं. जरा सा भी समर्थ व्यक्ति यही कहता है कि निगम के मदरसे में अपने बच्चे को पढ़ाने के बजाए उसे बेपढ़ा रखना बेहतर है.

गंदगी ही गंदगी

सड़क जमादार का यह हाल है कि यदि आप बीचबीच में उसे चाय के पैसे न दें तो गली का सारा कूड़ा आप के दरवाजे के सामने ढेर कर गाली चालीसा पढ़ना शुरू कर देगा. टाउन हाल के पाखानों और पेशाबघरों—निगम हस्पताल व दवाखानों की बात तो छोड़ ही दीजिए—में बदबू, पान की पीक की चित्रकारी और रुकी हुई मोरियों के कारण पेशाब का तालाब बना रहता है.

सड़कों पर छःछः इंच गहरे गढ़े पड़े हुए हैं. बरसात में नालों की सफाई न होने के कारण गंदा पानी सड़कों पर बहता है.

अभी दो वर्ष पूर्व किसी 'कर्त्तव्य-परायण' अधिकारी की निष्ठा के फलस्वरूप जनकपुरी के इलाके में पीने के पानी के पाइप के साथ मैले का पाइप जुड़ गया था और सैकड़ों निवासियों को जीवन रक्षा के लिए चिकित्सकों की शरण लेनी पड़ी थी. यह घटना कुछ वर्ष पूर्व उस पीलिया महामारी से अलग है, जिस में गंदे पानी के कारण सारे शहर में सैकड़ों व्यक्ति अकाल मृत्यु के शिकार हो गए थे.

एक बार किसी काम से क्षेत्र के जल अधिकारी के पास जाना पड़ गया. मेरे से पहले वहां एक सज्जन बैठे उस अधिकारी को खरीखोटी सुना रहे थे. उन की शिकायत यह थी कि चारपांच वर्ष पूर्व उन के मकान का विभाजन हो गया था. मकान का एक भाग उन के साझेदार के पास चला गया था. मकान में पानी के दो कनैक्शन थे. दोनों उन्हीं के नाम से थे. विभाजन के फलस्वरूप एक कनैक्शन उन के साझेदार के भाग में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चला गया था और उन्होंने बाकायदा उस कनैक्शन को साझेदार के नाम करने के लिए आवेदन दे दिया था. पर इस के बावजूद निगम ने उस पर कोई काररवाई नहीं की और बिल भी उन्हीं के नाम भेजता रहा और भुगतान न होने के कारण कुर्की आदि की धमकी देता रहा.

निगम अधिकारी का कहना था कि यदि वह सज्जन तुरंत भुगतान न करेंगे तो कनैक्शन काट दिया जाएगा. उन का कहना था कि कनैक्शन साझेदार का है. उन्हीं को बिल भेजो और उन्हीं से भुगतान वसूल करो. जहां तक उन का ताल्लुक है, वह कनैक्शन कल की जगह आज कट जाए.

इस पर उस अधिकारी ने एक कर्मचारी को बुला कर तुरंत कनैक्शन काट आने के लिए कहा. उन सज्जन ने उस कर्मचारी से कहा, "मेरे पास गाड़ी है. यदि चाहो तो मेरे साथ चले चलो."

कर्मचारी बोला, "बाबूजी, बीस रुपए लगेंगे. वरना जब हमें फुरसत होगी तब आएंगे."

सीधा व साफ मतलब था कि काम कराना अर्थात नल कटवाना चाहते हो तो रिश्वत दो वरना मजे करो. उन सज्जन ने उस अधिकारी को यह बात बताई. पर अधिकारी ने बजाए उस कर्मचारी के खिलाफ कोई काररवाई करने के कर्मचारियों के संगठन के सामने अपनी तथा अन्य उच्चाधिकारियों की असहायता का रोना रोया और परोक्ष रूप से उन्हें उस कर्मचारी की नाजायज मांग को पूरा कर अपना काम करवा लेने की सलाह दी. वह बोले, "बीस रुपए तो आप के यहां आने के दो चक्करों में ही फुंक जाएंगे और आप के कीमती वक्त की तो कीमत आंकी ही नहीं जा सकती."

पानी, बिजली, गैस आदि के नए कनैक्शन लेने के लिए तो घूस देनी पड़ती है—ऐसा कई बार देखा व सुना है. पर कटवाने के लिए भी नगर निगम के कर्मचारी को चढ़ावा देना पड़ता है, यह मेरा पहला ही अनुभव था. पर यह बात तो मुझे भी माननी पड़ी कि निगम के कर्मचारी 'समदृष्टि' हैं. रिश्वत लेने के मौकों पर वे भेदभाव नहीं करते. यहां तक कि निगमबोध (श्मशान) घाट पर भी उन्होंने धंधा बना लिया है.

श्मशान घाट पर भी रिश्वत

रोजरोज तो किसी को श्मशान जाने की आवश्यकता पड़ती नहीं कि उसें वहां के सारे नियमकानून व तौरतरीके मुखस्थ हो जाएं. दुर्भाग्य से कभीकभार जाना भी पड़ता हैं तो शोकातुर सगेसंबंधी शवदाह कर जल्दी से जल्दी घर लौटना चाहते हैं. अव्वल तो अधिकांश को मृत्यु प्रमाणपत्र की कभी आवश्यकता पड़ती ही नहीं, और जिन को पड़ती भी है तो कुछ सप्ताह बाद पड़ती है जब मृतक के बीमे की रकम का दावा करना हो अथवा उस की संपत्ति को ले कर कोई विवाद खड़ा हो जाए.

उस समय वह भागाभागा निगमबोध घाट के निगम कार्यालय पहुंचता है. जब मृत्यु का रिकार्ड रखने वाले बाबू उसे बताता है कि उस के पास तो उस के संबंधी की मृत्यु की कोई सूचना ही नहीं है और जन्ममरण की तत्काल सूचना न देना कानूनी अपराध है तो हाथपांव फूल जाते हैं. फिर कुछ देर बाद माथा खुजला कर कुछ सोचने का अभिनय करते हुए बाबू उसे बताता है कि वह जरा जलाने की लकड़ी के बिक्री रजिस्टर की और पड़ताल कर ले, क्योंकि "जब आप कहते हैं कि मृतक का दाहसंस्कार यहीं हुआ था तो आप ने लकड़ी तो अवश्य खरीदी होगी," तब उसे मुकदमा जीतने की आशा पुनः बंधती है और वह बाबू को अपना सच्चा हमदर्द मानने लगता है.

जाहिर है कि लकड़ी के रजिस्टर में नाम मिल जाता है. तब बाबू आगंतुक को बताता है कि उस ने मृतक के मरने की रिपोर्ट न कर कितना बड़ा अपराध किया है. बहरहाल, अब उसे एक आवेदन तथा एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हलफनामा आदि देना पड़ेगा और वह (बाबू) अपने बड़े साहब से कह कर कम से कम जुर्माना करवाने की चेष्टा करेगा.

कायदे के अनुसार बाबू का कर्तव्य है कि जैसे ही कोई श्मशान पहुंचता है, वह तुरंत उस का इंदराज कर मृत्यु प्रमाणपत्र जारी करे. कम से कम उस के कार्यालय की बगल (सामने लगा रहने से तो हर आने-जाने वाला आसानी से पढ़ लेता.) में लगे सूचनापट पर तो यही लिखा है. एक बार डेढ़दो घंटों की इंतजार में मैं ने वहां हलफनामा लिए 'मियाद निकल जाने के बाद' की रिपोर्ट दर्ज कराने वालों का तांता लगा देखा. अपने इस कटु अनुभव के बाद मेरे एक परिचित की मृत्यु हो गई. मुझे पता था कि उन का बीमा है. इसलिए मैं ने उन के भाई को परामर्श दिया कि जब वह निगमबोध कार्यालय में रिपोर्ट दर्ज कराने जाएं तो लगे हाथ मृत्यु का प्रमाणपत्र भी जरूर ले लें. बाद में मुझे पता लगा कि उन्हें यह प्रमाणपत्र नहीं दिया गया—कम से कम उसी समय.

विगत पंदरह वर्षों से मैं पड़ोसी के पास प्रति वर्ष बिना मीटर पानी के कनैक्शन का एक बिल आता है. पड़ोसी के यहां उस नंबर का कोई कनैक्शन नहीं है. शुरुशुरु में एक अच्छे नागरिक की तरह उस ने निगम के जल विभागाधिकारी, महापौर, आयुक्त आदि को अपनी जेब से डाकखर्च कर लिखा कि वह उस कनैक्शन का मालिक नहीं है. पर बिल आने बंद नहीं हुए. दोतीन बार कनैक्शन काटने वाले जरूर आए पर कनैक्शन न पा कर निराश चले गए.

इस से निगम को एक लाभ अवश्य हुआ है. बिल की राशि प्रति वर्ष बढ़ती चली जा रही है. निगम अधिकारी अब शपथपूर्वक यह कह सकते हैं कि दिल्ली महानगर में ऐसे अनागरिक भी मौजूद हैं जो पानी इस्तेमाल कर के भी शुल्क नहीं चुकाते. और क्योंकि मौजूदा कानून उन से बिल का भुगतान वसूल करने में असमर्थ साबित हुआ है, इसलिए कानून को और सख्त बनाया जाए और अधिकारियों को अधिक अधिकार दिए जाएं.

दिल्ली नगर निगम के श्रम कल्याण केंद्र के बाहर इंतजार में खड़े लोगों की भीड़.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक सज्जन ने पड़ोस में एक मकान खरीदा और निगम के संपत्ति कर विभाग को सूचित कर दिया. कुछ दिन बाद उन के घर निगम के एक अधिकारी तशरीफ ले आए और एक लंबी और टेढ़ी फैलावट करने के बाद बोले कि संपत्ति कर का पुनर्निधारण होगा और कर की राशि पांच सौ रुपए वार्षिक से बढ़ कर चार हजार रुपए हो जाएगी. हां, यदि मालिक चाहे तो कर की राशि कम की जा सकती है, पर दो हजार रुपए लगेंगे.

पड़ोसी ने सौदेबाजी कर 500 रुपए में फैसला किया और बोले अब कर की राशि पुरानी राशि से अधिक नहीं होनी चाहिए. उन्हें उत्तर मिला कि यह तो नियम विरुद्ध होने के कारण असंभव है. निगम के उस अधिकारी का कानून के प्रति यह सम्मान देख कर दिल बागबाग हो उठा. जब तक ऐसे कर्त्तव्यनिष्ठ अधिकारी निगम में हैं, मैं संपूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूं कि निगम का घाटा कभी पूरा न हो सकेगा.

विद्युत विभाग में धांधलेबाजी

आज से लगभग तीनचार वर्ष पूर्व बिजली के कनैक्शन अपनी माताजी के नाम से अपने नाम कराए थे. अपने नाम कराने से पूर्व नई धरोहर राशि भी जमा कराई थी और बिजली कार्यालय के अधिकारी ने आश्वासन दिया था कि माताजी की धरोहर राशि एक सप्ताह के अंदरअंदर माताजी को लौटा दी जाएगी. पर कई स्मरणपत्रों के बावजूद वे धरोहर की राशियां अभी तक नहीं मिली हैं.

इसी सिलसिले में जब एक बार बिजली कार्यालय गया तो वहां एक परिचित चेहरा नजर आया. लगा कि यह अधिकारी मेरे मदरसे के सहपाठी हैं. नए सिरे से परिचय किया. एक दिन जब वह अकस्मात मेरे यहां पधारे तो आंतरिक प्रसन्नता हुई. चाय की चुसकियां लेते हुए उन्होंने मेरे सामने सुझाव पेश किया कि इलाके में मेरी जानपहचान काफी विस्तृत है. यदि किसी का बिजली संबंधी कोई काम कराना हो तो मैं उसे उन के पास ले आऊं. जो भी मिलेगा, बांट लेंगे.

बंदरबांट

बांट लेने की बात पर एक और घटना याद आई जो मेरे एक परिचित ने सुनाई थी. एक दिन संपत्ति कर विभाग में उन की मुलाकात एक बाबू से हुई जो हाल ही में बदली हो कर उस विभाग में आया था. यह जान कर कि मित्र जायदाद की दलाली करते हैं, उस बाबू ने उन को एक सुझाव दिया, "आप जायदाद के खरीदारों को फांस कर मेरे पास लाइए, बाकी काम मेरा. जो मिलेगा बराबरबराबर बांट लेंगे."

ऐसा नहीं कि मित्र काम कराने के लिए पैसा न देते हों, पर इस तरह की साझेदारी का प्रस्ताव उन्हें नागवार गुजरा. उन्होंने उस बाबू के खिलाफ उच्च अधिकारियों को शिकायत लिख दी. आज कई वर्ष बाद भी मित्र तो उस शिकायत की पहुंच का इंतजार कर रहे हैं और वह बाबू पदोन्नति पा और भी अधिक दायित्वपूर्ण कुरसी पर पहुंच गया.

एक मित्र के मकान में बिजली के दो कनैक्शन थे—एक बत्ती पंखे का और दूसरा घरेलू पावर का. क्योंकि मित्र का परिवार छोटा था तथा घरेलू पावर का इस्तेमाल जाड़े में पानी गरम करने के लिए ही होता था, उन को प्रति बार न्यूनतम गारंटी बिल चुकाना पड़ता था. एक दिन मित्र जब लौटे तो उन्हें बताया गया कि बिजली कार्यालय के कोई साहब आए थे और कह गए हैं कि उन्होंने अपने बिलों का भुगतान नहीं किया है इसलिए उन की बिजली काट दी जाएगी. बेहतर होगा मित्र उन से कल उन के कार्यालय में मिल लें.

मित्र ने अपना हिसाब देखा, कोई बिल बाकी नहीं था. अगले दिन वह इंस्पेक्टर साहब की खिदमत में पेश नहीं हुए. कुछ दिन बाद ही उन को विद्युत संस्थान का रजिस्ट्रीशुदा पत्र मिला कि क्योंकि वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह कौन सा तरीका है! काम छोड़ कर धूप में बैठना इन का रोजमर्रा का काम बन गया है.

घरेलू पावर का औद्योगिक कार्य में दुरुपयोग कर रहे हैं, इसलिए उस की दर विगत तीन वर्ष से बढ़ा दी गई है और बढ़ी दर से पिछले तीन वर्ष का बकाया राशि का बिल भुगतान हेतु संलग्न है. अतिरिक्त बिल की राशि लगभग पचास रुपए थी.

बात यह थी कि कुछ दिन पहले मित्र एक कारीगर को बुला कर अपने फर्नीचर की मरम्मत करा रहे थे. वह समझ गए कि बिजली कर्मचारी के आदेश की अवहेलना अपना रंग दिखा रही है. उन्होंने उत्तर लिख दिया कि वह अपने घर में कोई उद्योग नहीं चला रहे. उन का तो बिजली का उपयोग ही नहीं तो दुरुपयोग कहां से होगा.

कुछ दिन बाद मीटर काटने वाले आ धमके. किसी तरह उन को समझाबुझा कर विदा किया और अब वह पेट पकड़े पकड़े बिजली के सहायक वित्त अधिकारी के पास पहुंचे. अधिकारी ने बहुत सहानुभूति व्यक्त की. कर्मचारियों को उन की अकर्मण्यता और लापरवाही के लिए बुराभला कहा और सलाह दी, "आप हमारे मुख्य निरीक्षक से मिलिए. मेरा नाम ले कर कहिए कि वह किसी एक इंस्पेक्टर को तैनात कर दे कि मौका देख आए."

तीनचार चक्कर बाद मुख्य निरीक्षक मिले और इतने ही फेरों के बाद निरीक्षक. स्कूटर पर बैठा कर निरीक्षक को घर लाए और फिर वापस उस के कार्यालय छोड़ कर आए. जब 15-20 दिन बाद फिर सहायक वित्त अधिकारी के पास गए तो पता लगा कि इंस्पेक्टर साहब का तबादला हो गया है और उन्होंने अपने निरीक्षण की कोई रिपोर्ट भी दाखिल नहीं की है.

बहरहाल इस बार स्वयं मुख्य निरीक्षक मौका देखने उन के साथ गए. सप्ताह बाद जब मित्र अधिकारी से मिले तो पता लगा कि वैसे तो इंस्पेक्टर साहब की रिपोर्ट है कि बिजली का फिलहाल कोई दुरुपयोग नहीं हो रहा, पर भविष्य की संभावनाओं को नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता. अंत में मित्र ने गलत बिल चुकाना ही अधिक सस्ता समझा.

अंगरेजी में एक कहावत है—'सावधानी इलाज से बेहतर विकल्प है.' यदि हमारी अदालतों में बिजली अधिकारी बैठा दिए जाएं तो महानगर के समस्त छोटेबड़े व्यक्तियों को इसलिए जेल भेज दें कि कहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भविष्य में वे कोई अपराध न कर बैठें. और यह बात हम सब को स्वीकार करनी ही पड़ेगी कि तब यहां एक भी अपराध न होगा.

एक अन्य परिचित की, जो नगर निगम में ही एक अधिकारी हैं, आदत थी कि वह एक बार में पचास रुपए बिल के भुगतान में जमा कर देते थे और जब वह रकम समाप्त होने को होती तो फिर पचास रुपए जमा कर देते. इस प्रकार उन्हें प्रत्येक बिल का भुगतान करने या बिल भुगतान की आखिरी तारीख याद करने की जहमत से छुटकारा मिल जाता था. एक बार जब उन के हिसाब से बिजली कार्यालय में उन के पचास से भी अधिक रुपए जमा होने चाहिएं थे, उन पर पिछला बकाया निकाला हुआ बिल आ गया. वह अपना हिसाब ले कर विद्युत प्रदाय के क्षेत्रीय कार्यालय गए और वहां के एक अधिकारी से मिले. अधिकारी का उत्तर था, "आप का हिसाब तो मुख्य कार्यालय में है, आप वहां जाइए."

मित्र एक ही घाघ थे. बोले, "मैं पहले वहां ही गया था. उन्होंने मुझे आप के पास भेज दिया. मैं फिर वहां चला जाता हूं. पर आप मेहरबानी कर के यह लिख कर दे दीजिए, जिस से वहां वाले यह न समझें कि यहां आया ही नहीं."

अधिकारी ने उन्हें सिर से पैर तक घूर कर देखा. यदि वह दुर्वासा होते तो मित्र निश्चित रूप से भस्म हो जाते. अंत में मित्र के कनैक्शन का हिसाब वहीं मिल गया और मित्र का हिसाब भी ठीक पाया गया. अब मित्र ने अपना परिचय दिया. बिजली अधिकारी ने मित्र द्वारा जमा कराई राशि को मुजरा करना तो स्वीकार लिया पर मियाद में भुगतान करने के कारण मिलने वाली छूट को देने में असमर्थता प्रकट की.

एक और परिचित हैं. उन की अपनी कोठी है, पर संपत्ति कर का बिल चुकाना वह फिजूलखर्ची में शुमार करते हैं. उन की ओर संपत्ति कर की तीन साढ़े तीन हजार की रकम खड़ी हो गई. संपत्ति कर विभाग के एक अधिकारी के परामर्श के अनुसार उन्होंने लगभग हजार रुपए बेहिसाबी खर्चे. परिणाम यह हुआ कि जब एक सज्जन ने चार हजार का एक चेक अपने संपत्ति कर के रूप में जमा कराया तो वह रकम उन के खाते में जमा न हो कर परिचित कर वंचक के खाते में जमा कर दी गई.

अगले वर्ष जब उन कर दाता सज्जन के पास बिल पहुंचा तो उस में उन के द्वारा पिछले वर्ष चुकाई राशि भी बकाया दिखाई गई थी. बहुत भागदौड़ के बाद और क्योंकि उन पर उस राशि की रसीद मौजूद है— उन से बकाया की उगाही तो 'अंतिम निर्णय' न होने तक रोक दी गई है और चालू राशि का भुगतान लिया जा रहा है. पर आज तीनचार वर्ष बाद भी निगम ने मामले में अंतिम निर्णय नहीं किया है और न ही यह पता चला पाया है कि वह राशि किस के खाते में जमा हुई.

लेख लिखने और लेख भेजने के दौरान मुझे दो और सज्जन ऐसे मिल गये हैं, जिन्होंने अपना संपत्ति कर चुकाया पर वह रकम उन के खाते में जमा न हो कर किसी अन्य के खाते में जमा हो गई है. एक साहब की तो राय है कि इस प्रकार का गलत जमा खर्च तो संपत्ति कर विभाग ने एक रैकेट बना लिया है.

कर परेशान निगम की ये कुछ बानगियां भर हैं.

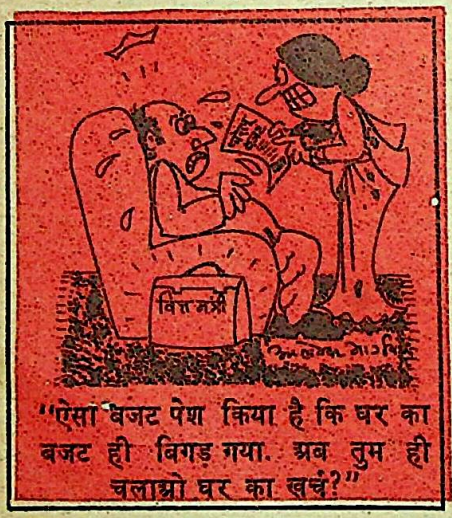

"ऐसा बजट पेश किया है कि घर का बजट ही बिगड़ गया. अब तुम ही चलाओ घर का खर्च?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्तमान सरकार कितनी सफल, कितनी असफल,
मंत्री और मंत्री पत्नी की नजर में.

संचार मंत्री बृजलाल वर्मा
और
श्रीमती नीरेंद्री वर्मा

भेंटवार्ता • मृदुला हालन

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के एक कमरे में दिल का एक मरीज लेटा हुआ था. यह बीमार व्यक्ति राजनीतिक बंदी था. जेल में दिल का दौरा पड़ा तो हस्पताल पहुंचा दिया गया. दूर, मध्यप्रदेश के एक गांव में बंदी के परिवार के पास बीमारी की सूचना पहुंची तो पत्नी दिल्ली के लिए चल पड़ी. कभी अकेली दिल्ली आने का अवसर नहीं मिला था. पर इस बार अकेले आना ही पड़ा.

ऊहापोह के भंवर में फंसी वह किसी तरह हस्पताल पहुंच ही गई...तनिक आश्वस्त हुई. सर्दियों के दिन थे, जल्दी ही अंधेरा घिर आता था. तब तक दिन ढल चुका था. एक दफा वहां पहुंच जाने पर कम से कम रास्ते का भय तो जाता रहा. पर भविष्य भी उतना सहज नहीं था, जितना वह समझ बैठी थी.

उस का पति था राजनीतिक बंदी और दिन थे आपातस्थिति के. वहां तो आज्ञा के

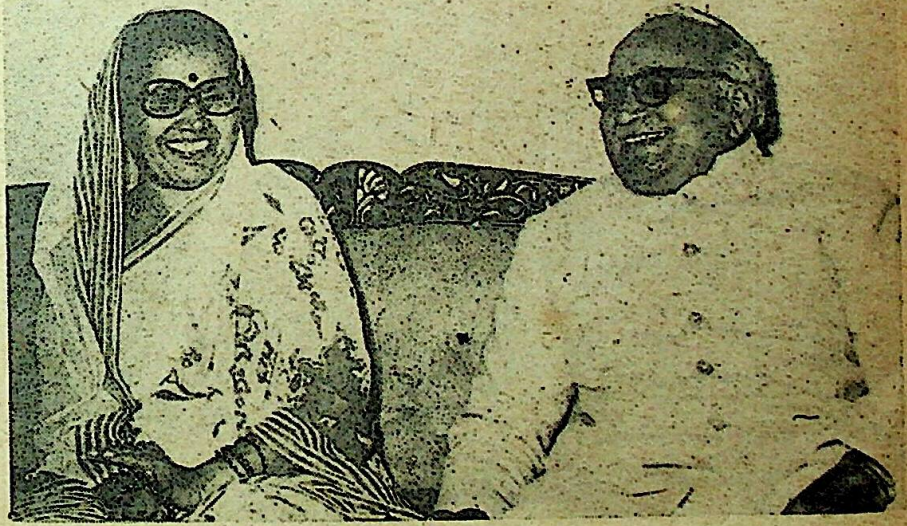

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना पंछी भी पर नहीं मार सकता था. फिर यह तो जीतीजागती नारी थी. उसे किसी भी हालत में उस कमरे में ठहरने नहीं दिया गया.

"...जाड़ों की रात, मैं यहां किसी को जानती नहीं...कहां जाऊंगी?...बस रात भर ठहरने दो." स्त्री की सारी गिड़गिड़ाहट व्यर्थ गई. मरती क्या न करती. पूरी रात कमरे के बाहर पड़े बेंच पर बैठ कर गुजार दी.

"...उस रात के अपमान, दुख, लज्जा व पीड़ा को याद कर के आज भी दिल कांप उठता है. आंखें भर आती हैं." कहतेकहते श्रीमती नीरेंद्री देवी सचमुच रो पड़ीं. आंचल से आंखें पोंछते हुए वह बोलीं, "दिल्ली बहुत बड़ा शहर है. मैं वैसे भी घर से बाहर कम निकलती हूं. ऐसी हालत में आप सोच सकती हैं मुझ पर क्या बीती होगी. छःसात गज की दूरी पर दिल के दौरे से पीड़ित मेरे पति लेटे पड़े थे और मैं उन की कोई मदद नहीं कर सकती थी."

रायसीना रोड पर स्थित एक विशाल कोठी के भीतरी ड्राइंगरूम में बैठे हम बातचीत कर रहे थे. संचार मंत्री श्री बृजलाल वर्मा की पत्नी नीरेंद्रीजी पुरानी यादों को बेनकाब करती जा रही थीं, "वैसे हमें इन की गिरफ्तारी की आशंका पहले से ही थी. मैं ने तो इन का सूटकेस तक पहले से तैयार कर के रख छोड़ा था. 26 जून को गिरफ्तार कर के इन्हें रायपुर जेल ले जाया गया. वहां तबीयत खराब हुई तो 16 जुलाई को हस्पताल में दाखिल हुए. वहां से सिवनी जेल, जबलपुर जेल, तिहाड़ जेल होते हुए मेडीकल इंस्टीट्यूट पहुंचे."

श्री बृजलाल वर्मा के चेहरे पर राजनीतिक जीवन के अनुभवों का स्पष्ट छाप दिखाई पड़ती है.

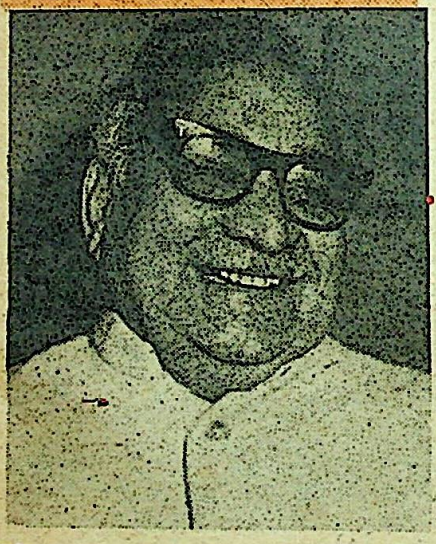

राजनीति का शौक

वर्माजी की गिरफ्तारी के बाद उन को या उन के परिवार को किसी तरह तंग तो नहीं किया गया? पूछने पर उन्होंने बताया कि ऐसा कुछ नहीं हुआ. "हमारे पूरे गांव का वातावरण बिलकुल सामान्य रहा. रोजमर्रा की जिंदगी में कोई बदलाव नहीं आया. आम आदमी को किसी तरह की तंगी नहीं हुई. मेरे पति की बात और थी. वह राजनीतिक मामला था. मेरी ससुराल में तो दो पीढ़ियों से राजनीति का बोलबाला है. इन को यह शौक विरासत में ही तो मिला है," कहतेकहते वह मुस्करा दीं.

"आप तो आपातस्थिति के पक्ष में थीं न?" मैं ने पूछ लिया.

"पक्ष या विपक्ष की बात नहीं है. साधारण सी बात है कि उन दिनों की योजनाएं आम आदमी के फायदे की थीं. कुछ लोगों ने अधिकार और कानून अपने हाथ में ले लिए...और बस...यों भी इन चीजों का दुरुपयोग तो प्रत्येक देशकाल में भयंकर ही होता है...कल भी..आज भी...और आने वाले कल में भी," कहते हुए वह पल भर को रुकीं फिर सहसा ही बहुत तेजी से स्पष्टीकरण दिया. "...मेरी ये बातें राजनीति से किसी भी तरह संबंधित नहीं हैं. मैं तो एक राजनीतिक व्यक्ति की बिलकुल गैरराजनीतिक बीवी हूं." और बात समाप्ति के साथ ही हम लोगों का ठहाका वहां गूंज उठा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस दिन शाम साढ़े चार बजे जैसे ही मैं रायसीना रोड की 10 नंबर कोठी के स्वागतकक्ष में पहुंची कि सामने मेज पर रखे फोन की घंटी टनटना उठी. श्री बृजलाल वर्मा के निजी सहकारी ने लपक कर चोंगा उठा लिया, "जी हां, आई हुई हैं. अंदर भेज दूं? जी, अच्छा."

फोन वर्माजी का ही था. अंदर से संकेत मिलते ही पी. ए. ने मुझे कोठी के ड्राइंगरूम में पहुंचा दिया. गलीचे, सोफासेट से सुसज्जित बड़ा सा कमरा, ठीक सामने सोफे पर वर्माजी बैठे थे. मक्खन सा सफेद चूड़ीदार पाजामा...बंद गले का कुरता. अधेड़ावस्था को छूती सी उम्र.. .चेहरे पर राजनीतिक जीवन के अनुभवों की स्पष्ट छाप....मुझे लगा मानो मैं सामंतवादी युग के किसी व्यक्ति से साक्षात्कार कर रही हूं. शायद यह उन के व्यक्तित्व का प्रभाव रहा होगा.

नीरेंद्रीजी का सौम्य व्यक्तित्व

अभिवादन का क्रम समाप्त होते ही भीतरी द्वार का परदा उठा कर एक नारी ने वहां प्रवेश किया. "मेरी पत्नी," वर्माजी ने परिचय दिया. नमस्कार की मुद्रा में बंधे मेरे हाथ तनिक चौकन्ने हो गए. पति-पत्नी के व्यक्तित्व में कितना अंतर था! सीधीसादी वेशभूषा...चेहरे पर किसी तरह के अहम की छाप नहीं. बस, लगा जैसे पड़ोस की मौसी, मामी मेरे सामने खड़ी हों. उन्हें देखते ही औपचारिकता का बोझ मन से स्वतः ही उतर गया. और बहुत ही सहज सामान्य भाव से हम बातचीत में व्यस्त हो गए.

वर्मा परिवार के विषय में जानना चाहा तो तत्काल वर्माजी कह उठे, "इन को देख कर बताओ." इशारा नीरेंद्रीजी की तरफ था.

मैं समझ नहीं पाई. जिज्ञासावश उन की ओर देखने लगी तो उन्होंने स्पष्ट करते कहा, "अरे भई, इन को देख कर अंदाजा लगाओ कि इन की कितनी संतानें होंगी."

नीरेंद्रीजी को राजनीतिक चकाचौंध से दूर अपने गांव में रहना ज्यादा अच्छा लगता है.

मैं हतप्रभ रह गई. संभवतः इस उत्तर के लिए मैं तैयार नहीं थी. कभी वर्माजी और कभी उन की पत्नी की ओर देखने लगी. तभी वर्माजी ने स्वयं ही अपने प्रश्न का उत्तर भी दे दिया, "सात...सात बच्चे हैं इन के (तीन पुत्र, चार पुत्रियां). इन को देख कर लगता है ऐसा? नहीं न?" और हम दोनों को ही अजीबोगरीब मनःस्थिति में छोड़ कर वह जोर से हंस पड़े.

पहले मैं ही संभली. "वास्तव में यह अपनी उम्र से कम लगती हैं," मैं ने कहा.

"यही तो...यही तो मैं भी कहता हूं," परम उत्साह से कह कर वर्माजी एक दफा फिर खुल कर हंस दिए ...गहरी संतुष्टि की हंसी.

श्री वर्माजी साढ़ेपांच बजे तक मीटिंग में जाने वाले थे. उन्होंने सुझाव रखा कि मैं पहले उन्हीं से सवाल पूछ लूं. उन की पत्नी से बात उन के जाने के बाद भी हो सकती है. सुझाव उचित था. नीरेंद्रीजी उठ कर भीतर चली गईं और गृहिणी की सी तत्परता से चाय बनवा कर बाहर भिजवा दी.

श्री बृजलाल वर्मा का संबंध अनेक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजनीतिक दलों से रहा है. अपने परिवार का अनुसरण करते हुए उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन का प्रारंभ कांग्रेसी कार्यकर्ता के रूप में किया. अनेक वर्ष तक कांग्रेस में रहने के बाद 1950 में वह आचार्य कृपलानी के दल में शामिल हो गए. उस से असंतुष्ट हुए तो 1971 में जनसंघ में शामिल हो गए. जनसंघ को वह एकमात्र वामपंथी दल मानते हैं.

1952 से 1972 तक विधान सभा के सदस्य रहे. 1977 में चुनाव जीत कर केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल हो गए.

बृजलालजी की शिक्षादीक्षा रायपुर से बाहर हुई, क्योंकि वहां स्कूल नहीं थे. होशंगाबाद, वाराणसी में पढ़ने के बाद नागपुर से आप ने वकालत पास की. फिर लौट कर रायपुर आ गए और वहीं वकालत शुरू की. 1952 का साल बृजलालजी के जीवन का महत्त्वपूर्ण साल है. इसी वर्ष में उन्होंने जीवन में पहला चुनाव लड़ा और इसी वर्ष उन्हें नीरेंद्रीजी जीवनसंगिनी के रूप में मिलीं.

"हम गांव में जन्मे, पले और बड़े हुए. वही प्रभाव स्थायी रूप से हम पर है और मैं...उसे पसंद भी करता हूं," वर्माजी बता रहे थे.

मुख्य संघर्ष

अपने राजनीतिक जीवन में आप का मुख्य संघर्ष किन मुद्दों के लिए था? यह पूछने पर वह फौरन बोले, "खेती और खेतिहर. भारत एक कृषिप्रधान देश है. पर दुर्भाग्य हमारा ऐसा कि वही अन्नदाता किसान सदियों से उपेक्षित, पीड़ित और शोषित रहा है. औरों की जमीन पर अपने श्रम से सोना उगा कर भी वह खुद भूखानंगा ही बना रहा...आज तो विज्ञान ने कृषि जगत में भी आधुनिक उपकरणों को ला जुटाया है. गरीब किसान उसे खरीद नहीं सकता..तो ...मैं शुरू से ही इस बात के लिए लड़ा हूं कि किसान को सरकारी प्रश्रय मिले, उसे ज़मीन पर कब्जा मिले, आधुनिक उपकरणों की उपलब्धियों के लिए उसे सरकारी अनुदान मिले."

बोलतेबोलते वह रुक गए. पल भर दम लिया ही था कि अचानक जैसे कुछ याद आ गया, "हां, एक बात और. गांवों में स्कूल नहीं थे. महिलाओं की शिक्षा का प्रबंध नहीं था. मैं ने आवाज उठाई कि यह गलत है. शिक्षा सभी के लिए अनिवार्य है, चाहे लड़का हो या लड़की. और आज हमारे गांवों में स्कूल हैं, प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम भी शुरू हो चुका है."

"वर्माजी, आज देश की संचार व्यवस्था आप के हाथ में है. आधुनिक जीवन की आधारशिला ही संचार साधन है. पर इस विभाग की कार्य अक्षमता और उदासीनता सर्वविदित है. ऐसा क्यों?" मैं ने प्रश्न किया.

"मैं तो ऐसा नहीं समझता. हमारे यहां सभी लोग अपनेअपने काम के प्रति सतर्क हैं."

"और स्थानों को फिलहाल छोड़ दें, तो भी सिर्फ दिल्ली में ही दो लाख व्यक्ति टेलीफोन कनेक्शन की प्रतीक्षा में हैं. इतने सालों से विकास कार्य हो रहा है पर इस हालत में कोई संतोषजनक सुधार नहीं हुआ है. इस का क्या कारण है?"

"अरे भई," वर्माजी बताने लगे, "दिल्ली के अलावा गांवों को भी तो हमें देखना है. वहां तो संचार व्यवस्था बहुत ही अस्तव्यस्त है. टेलीफोन की बात जाने दें, तो डाकखाने तक नहीं हैं. अब, इस एक साल में हम ने गांवों में 65,000 नए डाकखाने खोले हैं. कहींकहीं टेलीफोन भी लगवाए हैं. तो ...काम चल ही रहा है. पूरा होने में वक्त तो लगेगा न? सब हो जाएगा धीरेधीरे... सब हो जाएगा."

"कड़े प्रशासन के अभाव में डाकतार विभाग कर्मचारी नित्यप्रति के काम के प्रति लापरवाह होते जा रहे हैं. आम आदमी इस अवस्था से पीड़ित है. अगर 'सरप्राइज चैक' किए जाएं तो सभी सतर्क रहेंगे. क्या यह संभव नहीं?" मेरा प्रश्न था.

"नहीं...नहीं", वर्माजी ने तेजी से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

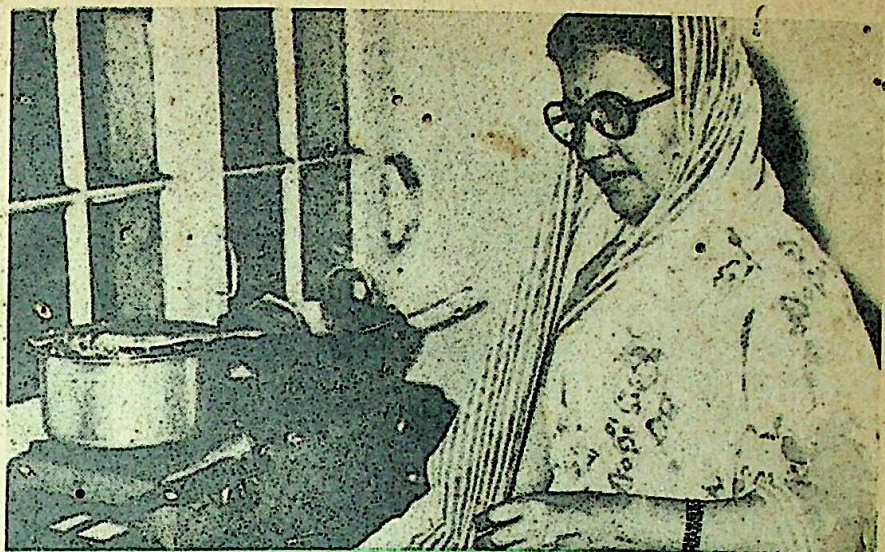

सामान्य गृहिणी की तरह रसोईघर में व्यस्त श्रीमती नीरेंद्री देवी.

जवाब दिया, "ऐसी बात नहीं है. कोई अपने काम के प्रति लापरवा नहीं है. यह सब गलत प्रचार है. और दफ्तरों में अफसर अपनी पूरी ड्यूटी पर रहते हैं. वे 'सरप्राइज-विजिट' देते रहते हैं. कहीं कोई दिक्कत नहीं है."

"अच्छा, एक बात बताइए. जनता सरकार दिल्ली को 'स्टेटहुड' दिलाने के लिए वचनबद्ध है. प्रयास भी जारी हैं. इस से फायदा किस को होगा? जनता को या नेताओं को?" मैं ने पूछा.

सुन कर वह तनिक गंभीर हो उठे. फिर एक दार्शनिक की सी मुद्रा में बोले, "क्या फर्क है दोनों में? दोनों एक ही तो हैं."

"मैं आप का अभिप्राय समझी नहीं," मैं ने कहा तो उन्होंने उसी मुद्रा में तनिक मुसकरा कर जवाब दिया, "अरे भई, कैसी जनता और कैसे नेता? नेता ही जनता है, जनता ही नेता है. दोनों में कोई फर्क नहीं है. स्टेट बन जाने से सभी को फायदा होगा. कहतेकहते वह अचानक सतर्क हो गए और दूर कोने में सोफे पर बैठे व्यक्ति से पूछा, "क्यों, मीटिंग कितने बजे है?"

उस व्यक्ति ने पूरी तत्परता से कार्यक्रम की सूची देख कर बताया; "सर, साढ़े पांच बजे." फिर दीवार घड़ी में समय देख कर बोला, "अब चलने का वक्त हो गया है, सर."

"ठीक है, अभी चलते हैं," कह कर वर्माजी मुझ से बोले, "आज तो इतना ही हो सकेगा."

मैं ने जल्दी से कहा, "बस, एक आखिरी सवाल."

वह हंसते हुए बोले, "अच्छा, कहिए."

"यह जो जनता पार्टी का आंतरिक संघर्ष है, दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा है. इस बात को ले कर सरकार के प्रति असंतोष भी जन्म ले रहा है. क्या यह सरकार की पराजय नहीं है?"

"पराजय! कैसी?" उन्होंने कहा, "विभिन्न दलों के एक साथ मिल कर काम करने से थोड़ीबहुत विचार विभिन्नता तो स्वाभाविक ही है. मैं तो इसे 'स्वस्थ संकेत' मानता हूं. इस छोटेमोटे आंतरिक संघर्ष से सरकार को कोई खतरा नहीं है. मोरारजी भाई के कुशल नेतृत्व में उसे कोई खतरा हो ही नहीं सकता. उन को बहुमत का समर्थन प्राप्त है. सब ठीक चल रहा है."

वर्माजी को जाना ही था, अतः मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंदर नीरेंद्रीजी के पास पहुंचा दिया गया. यहां भी ड्राइंगरूम था, पर इस की और बाहर वाले कमरे की सज्जा में 'औपचारिकता' और 'अनौपचारिकता' का सा अंतर था.

नीरेंद्रीजी राजनीतिक चकाचौंध से दूर, दिल्ली की चहलपहल से विरक्त, अपने गांव के वातावरण में ही खोई रहती हैं. वह बोलीं, "यहां आ कर मुझे लगता है जैसे मैं किसी अजनबी जगह आ गई हूं. यहां की तेज रफ्तार के साथ दौड़ सकने की न तो इच्छा है न ही शक्ति. हमें तो अपना रायपुर ही अच्छा लगता है. यहां क्या करें? यहां तो ढेर के ढेर काम मेरी इंतजार में रहते हैं. हां, छोटे बच्चे भी यहीं पढ़ रहे हैं.

"बड़ी लड़की की शादी हो गई है. दामाद वायुसेना में फ्लाइट लेफ्टिनेंट है. आजकल दिल्ली में ही उस की पोस्टिंग है. मैं ने उन्हें इसी घर में बुला लिया है. इतना बड़ा घर है. खाली ही पड़ा रहता है. मैं तो अकसर रायपुर ही रहती हूं. बेटी, दामाद यहां रहते हैं तो वर्माजी को भी घर में अकेलापन महसूस नहीं होता. हां, एक छोटा नाती भी है. उसी से घर में रौनक रहती है," नीरेंद्रीजी ने अपनी पारिवारिक झांकी प्रस्तुत कर दी.

वर्तमान सरकार की उपलब्धियों, उस के आंतरिक संघर्ष, वादों को भूल जाने आदि पर उन की प्रतिक्रिया अपने पति से एकदम भिन्न थी.

"इतने लंबेचौड़े वादे कर के ये लोग आए थे, अभी तक तो कुछ भी पूरा नहीं हुआ है. हो कैसे? आपस में लड़ने से ही फुरसत नहीं मिलती. बहुत गलत है यह. अव्वल तो आपसी असंतोष होना ही नहीं चाहिए था, थोड़ाबहुत होता भी तो उस का इतना प्रचार करने की क्या जरूरत थी? इन बातों से लोगों के मन में सरकार की इज्जत कम होती है."

बढ़ती कीमतों से भी संचार मंत्री की पत्नी एक सामान्य गृहिणी की तरह ही चिंतित दिखाई दीं. बोलीं, "अरे बाबा, कीमतें कहां से कहां पहुंच गई हैं... यहां गांव में तो इतना पता नहीं लगता...घर की सब्जी, अनाज सब होता है...यहां आ कर तो सब्जीभाजी, तेल, घी मंगातेमंगाते परेशान हो जाती हूं. कैसे गुजारा हो?"

उन की यह साफगोई कहीं से दिल को छूने वाली थी. जो सत्ता में हैं, वे बढ़चढ़ कर अपनी नीतियों का गुणगान ही करते रहते हैं, पर नीरेंद्रीजी अपवादस्वरूप ही साबित हो रही थीं. फिर भी मन के कौतूहल को रोक नहीं पाई. मैं ने कहा, "वर्माजी तो मंत्री हैं. उन्होंने सरकारी नीतियों के समर्थन में ही बात कही है. आप जो महसूस करती हैं, कभी उन से इस का जिक्र नहीं किया?"

"मैं पहले भी कह चुकी हूं कि राजनीति से मेरा कोई वास्ता नहीं. मैं एक गृहिणी हूं, मात्र गृहिणी. जो महसूस करती हूं, आप को बता दिया."

ठीक उसी समय भीतरी कक्ष से वर्माजी वहां आ गए. एकदम तैयार, मीटिंग में जाने को तत्पर. काफी तेजी से दूसरे दरवाजे की ओर बढ़ते हुए उन्होंने पत्नी को संबोधित किया. "अरे भई, इन्हें कुछ खिलाओ पिलाओ तो. ऐसे मत भेज देना." और बाहर चले गए. वातावरण हलका हो गया.

चिकमगलूर के चुनाव परिणाम के विषय में नीरेंद्रीजी की प्रतिक्रिया भी स्पष्ट थीं बोलीं, "यह परिणाम इसी बात को स्पष्ट करता है कि लोग सरकार में विश्वास खोने लगे हैं. अब इंदिरा जी लोकसभा में आ गई हैं तो इन लोगों को बहुत सतर्क रहने की जरूरत है. इस में तो कोई शक नहीं कि वह अत्यंत बुद्धिमान महिला हैं. इन लोगों की कमजोरियां उन से छिपी नहीं हैं और वह उन पर से परदा उठाने का कोई मौका हाथ से चूकने वाली नहीं हैं."

तनिक रुक कर फिर वह बोलीं, "दुख बहुत दुख होता है अपने देश का हाल देख कर. मैं तो चाहती हूं कि सरकार कोई भी हो, पर जो भी हो, लोगों की भलाई के लिए काम करे. आपसी झगड़ों में उलझ कर लोग के प्यार, धन, विश्वास और समय को बर्बाद न गंवाए."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • डा. रामसरूप 'रसिकेश'

यदा यदा हि धर्मस्य

श्रीकृष्ण में जहां अनेक शक्तियां थीं, वहीं मानवसुलभ दुर्बलताएं भी कम न थीं. फिर भी उन्हें अवतार क्यों माना गया?

8. श्रीकृष्ण अवतार

निस्संदेह श्रीकृष्णजी एक युगपुरुष थे. शारीरिक बल, शस्त्रविद्या, योगविद्या, राजनीति, रणचातुरी, व्यवहारकुशलता आदि विषयों में वह अद्वितीय थे. युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में अग्रपूजा के पात्र वह इन्हीं कारणों से समझे गए. अघासुर, बकासुर, नरकासुर, कंस, जरासंध आदि अनेक दुष्टों का उन्होंने विनाश किया. उन असुरों के हाथों व्यथित सहस्रों लोगों का उन्होंने परित्राण किया. उन के इन असाधारण कार्यों को देख स्वतः एवं मन में संदेह उठता है कि कहीं वह अवतार तो न थे? किंतु हमें यहां उन के गुणों पर प्रकाश नहीं डालना है, क्योंकि वह तो पहले ही पर्याप्त प्रकाशमान हैं. हमें तो यही दिखाना है कि ऐसे गुणसागर व्यक्ति के विषय में भी इतिहासपुराणों में कुछ ऐसी बातें लिखी हुई हैं, जिन के कारण उन्हें अवतार मानना असंभव है.

(क) परवशता

यद्यपि गीता में उन्होंने अनेक बार अपने को भगवान तथा अवतार कहा है तथापि देवीभागवतपुराण में विष्णुजी का कथन है:

न कस्यापि प्रियो लोके
तिर्यग्योनिषु संभवः,
नाभवं स्वेच्छया वांहं
वराहादिषु योनिषु.
(दे. भा. 1/4)

'संसार में कोई भी पशुपक्षी आदि की योनि में जन्म नहीं चाहता. मैं ने भी शूकर

पिछले अंक में आप मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, श्रीराम अवतारों के अविश्वसनीय प्रसंगों के साथसाथ उन की समीक्षाएं भी पढ़ चुके हैं. अब प्रस्तुत हैं अन्य अवतारों के विवरण...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आदि योनियों में जन्म अपनी इच्छा से नहीं लिया.' इस के बाद वह कहते हैं कि 'मैं उसी शक्ति का सदा ध्यान करता हूं, जिस के अधीन हूं.'

(ख) शापवश जन्म

विष्णुजी ने भृगु को उन के यज्ञ की रक्षा का वचन दिया था, परंतु विष्णुजी भृगु के यहां तो गए नहीं, इंद्र के पास चले गए.

विष्णु के अभाव में दैत्यों ने भृगु के यज्ञ को नष्टभ्रष्ट कर दिया. इसी कारण से कुपित भृगु ने विष्णु को मृत्युलोक में दस बार जन्म लेने का शाप दिया. (पद्म. भू. 121). इस प्रकार वह दुष्ट संहार के लिए नहीं, दंड भुगतने को भूमि पर आए.

(ग) श्रीकृष्ण किस के अवतार थे?

इस विषय में इतिहासपुराण आदि सहमत नहीं हैं. महाभारत के आदिपर्व के छठे अध्याय के अनुसार श्री हरि ने अपने दो बाल उखाड़े—सफेद और काला. सफेद बाल रोहिणी के शरीर में प्रविष्ट हो कर बलराम बन गया तथा काला बाल देवकी की देह में प्रविष्ट हो कृष्ण. एक अन्य स्थल पर श्रीकृष्ण को पार्वती का अवतार कहा गया है :

पुंरूपेण जगद्धात्री प्राप्तायां कृष्णतां त्वयि,
वृषभानोः सुता राधा स्वरूपाहं स्वयं शिवे.
(डा. श्रीराम आर्य : अवतार रहस्य, पृ. 44).

शिवजी ने पार्वती से कहा, 'हे जगत को धारण करने वाली, जब तू पुरुष रूप से कृष्ण बन गई तब मैं ने वृषभानु दुलारी राधा का रूप ग्रहण कर लिया.'

महाभारत में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं :

नरस्त्वमसि दुर्धर्ष हरिनारायणो ह्यहम्,
काले लोकमिमं प्राप्तौ नरनारायणावृषी.
(महा. वन. 12/46)

'हे दुर्जय, तू नर है और मैं नारायण हरि हूं. हम पुराने नरनारायण ऋषि ही उचित समय पर इस लोक में आए हैं.' दोनों ऋषि बद्रिकाश्रम में रहा करते थे. (भागवत 11/4/7). उक्त विभिन्न मतों को पढ़ यही पता लगता है कि श्रीकृष्ण न काले केश के अवतार थे, न पार्वती के और न नारायण ऋषि के. उन्हें अवतार बनाने के लिए ही ये कल्पनाएं कर ली गई हैं.

(घ) गर्भवास का दुःख

पुराणपाठ से पता लगता है कि लोकविश्वास के विपरीत श्रीकृष्णजी ने गर्भवास में भी कष्ट झेले और जन्म के बाद भी. उन्होंने शिवजी के सम्मुख स्वीकार किया :

सम्प्राप्य मानुषं जन्म खिन्नोऽहं दुःखनाशन,
गर्भवासे महद्दुःखं प्राप्तं मदनदाहक.
(देवी भागवत 4/25/43-44)

'हे दुःखनाशक, मनुष्य जन्म पा कर मैं दुखित हूं. हे कामदाहक, गर्भवास में मैं ने भारी दुख उठाया है.'

(ङ) भीत व त्रस्त कृष्ण

प्राचीन शास्त्रों में भगवान को—भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्—'भयों का भय और भयंकरों का भयंकर' कहा गया है. किंतु श्रीकृष्ण तो मनुष्यों के समान कहीं भयंकर हैं तो कहीं भीतत्रस्त. पूर्वोक्त असुरों के संहार के समय में वह भयंकर थे तो जरासंध के भय के कारण उन्हें मथुरा छोड़ कर द्वारिका में जाना पड़ा. इस तथ्य को उन्होंने युधिष्ठिर के सम्मुख यों स्वीकारा :

वयं चैव महाराज जरासन्धभयात् तदा,
मथुरां संपरित्यज्य गता द्वारवतीं पुरीम्.
(महाभारत. सभा. अ. 14/67)

'हे महाराज, तब हम जरासंध के भय से मथुरा को छोड़ द्वारिकापुरी में चले गए थे.' इस के बाद जब जरासंध वहां भी जा पहुंचा, तब श्रीकृष्ण प्रवर्षण पर्वत में जा छिपे. जरासंध वहां आग लगा कर लौट आया, परंतु श्रीकृष्ण जैसेतैसे बच निकले.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बुद्ध अवतार

(च) संध्यावंदन तथा वरयाचना

श्रीराम के समान श्रीकृष्ण भी संध्या, जपादि करते तथा इष्टदेव से अभीष्ट वर मांगते थे. नारदजी ने श्रीकृष्ण के महल में पहुंचने पर देखा कि :

क्वापि संध्यामुपासीनं जपतं ब्रह्म वाग्यतम्.

'वह संध्या कर रहे हैं तथा वेदमंत्रों का मौन जप कर रहे हैं.'

एक बार श्रीकृष्ण शिवजी के पास जा कर बोले, 'हे शिवशंकर, रुक्मिणी को संतानवती और अपने को निस्संतान देख कर जाम्बवती ने मुझे पुत्रप्राप्ति के लिए तप करने को कहा. वह तो मैं ने कर लिया है और अब आप से पुत्रसुख की कामना करता हूं.'

(देवी भागवत: स्कंध 4/25)

(छ) मांस, सुरा, जुआ

आज हम किसी धार्मिक व्यक्ति से आशा नहीं करते कि वह उक्त तीनों वस्तुओं का सेवन करता होगा. पर पुराणों में श्रीकृष्ण द्वारा भी इन का सेवन लिखित है. श्रीकृष्ण और उन की पत्नियों द्वारा सुरापान भविष्य पुराण, ब्रह्म पर्व, अ. 73 तथा उत्तरखंड अ. 111 में वर्णित है. श्रीकृष्ण का अनेक प्रकार के मांस खाना महाभारत में लिखित है. (अवतार रहस्य, पृ. 54). उद्धव तथा प्रिया के साथ श्रीकृष्ण का पासों से खेलना श्रीमद्भागवत (10/70/20) में देखा जा सकता है.

(ज) बहु विवाह

बहु विवाह की प्रथा अति निंदनीय है. श्रीराम ने तो इस विषय में उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया था, परंतु पुराणों में श्रीकृष्ण की सहस्रों पत्नियों का उल्लेख है और उन की संतानसंख्या तो और भी अधिक है. धर्म संहिता के दसवें अध्याय में लिखा है कि त्रेता युग में श्रीराम की सीता से तृप्ति नहीं हुई, इसलिए उन्होंने कलियुग के आरंभ में गोपियों से लाख बालकों को जन्म दिया. तत्पश्चात रुक्मिणी से विवाह के बाद नरक नाम के दैत्य को मार कर उस की सोलह सहस्र स्त्रियों से नब्बे सहस्र बच्चे उत्पन्न किए. श्रीकृष्णजी की कुछ पत्नियों के नाम ये हैं—रुक्मिणी, जाम्बवती, सत्यभामा, कालिंदी, मित्रविन्दा, सत्या, भद्रा, कैकेयी, लक्ष्मणा. इन में से कई एक का उन्होंने हरण कर उन से विवाह किया था.

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि जहां श्रीकृष्ण में अनेक शक्तियां थीं, वहां मानवसुलभ दुर्बलताएं भी थीं. ऐसी अवस्था में उन्हें महापुरुष ही कहना उचित है, भगवान वा उस का अवतार नहीं.

9. बुद्ध अवतार

महात्मा बुद्ध के वंश, जीवन, शिक्षाओं आदि से पाठक भली भांति परिचित हैं ही. इसलिए उन का वर्णन अनावश्यक लगता है. उन्होंने अपनी जीवनचर्या व उपदेशों से संसार को शांति, प्रेम, दया, करुणा, अहिंसा आदि का जो पथ दिखाया, वह वस्तुत: स्तुत्य है. उन के प्रति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृतज्ञता प्रकट करने और उन के महात्मापन में विश्वास रखते हुए भी हम यहां विचारने का यत्न करेंगे कि उन्हें अवतार माना जा सकता है या नहीं.

आइए, देखें, पुराण इस विषय में क्या कहते हैं :

महामोहस्वरूपोऽसौ
शुद्धोदनसुतोऽभवत्,
मोहयामास दैत्यांस्तान्
त्याजिता वेदधर्मकम्.

(अग्निपुराण 16/2)

'शुद्धोदन का पुत्र (बुद्ध) महामोहस्वरूप था. उस ने दैत्यों को मोह में डाल दिया और उन से वैदिक धर्म छुड़वा दिया.'

तात्पर्य यह कि पहले दैत्य भी वैदिक धर्म के अनुयायी थे. महात्मा बुद्ध ने उन्हें मोह में मग्न कर वैदिक धर्म से विमुख कर दिया.

अग्निपुराण तो बुद्ध के कार्य का वर्णन बीती हुई घटना के रूप में करता है, परंतु श्रीमद्भागवतपुराण उस का निर्देश भावी घटना के रूप में :

ततः कलौ संप्रवृत्ते
संमोहाय सुरद्विषाम्,
बुद्धो नाम्ना जिनसुतः
काकटेषु भविष्यति.

(भागवत 1/3/24)

'तब कलियुग के आरंभ हो जाने पर असुरों को मोहमग्न करने के लिए 'जिन' का बेटा बुद्ध कीकट (मगध) देश में पैदा होगा.'

इतनी बात में तो दोनों पुराण सहमत हैं कि देवताओं के दुश्मन दैत्यों को मोह में डालने के लिए बुद्ध ने जन्म लिया वा आगे जन्म लेंगे. परंतु अग्निपुराण यह भी कहता है कि उन्होंने दैत्यों से वैदिक धर्म भी छुड़वा दिया. अब प्रश्न यह है कि प्रायः तो यही कहा जाता है कि अवतार धर्म की संस्थापना के लिए होता है और यहां यह कहा गया है कि उन की प्रेरणा से दैत्यों ने वेद धर्म को तिलांजलि दे दी. तब यह धर्म की संस्थापना हुई या उत्पाटना (उखाड़ना)?

हमारे विचार में तो जब श्रीकृष्ण ने धर्म संस्थापना की बात कही थी तब उन का उद्देश्य वैदिक धर्म की स्थापना का ही था, न कि बौद्ध धर्म की स्थापना का. कारण उस समय तो बौद्ध, जैन आदि धर्म थे ही नहीं, विदेशी धर्मों का तो कहना ही क्या?

यहां प्रसंगवश इस बात का संक्षिप्त उल्लेख उचित प्रतीत होता है कि महात्मा बुद्ध ने किनकिन वैदिक मान्यताओं का खंडन किया. उस से यह पता लग जाएगा कि जिन बुद्धजी को हम अवतार मानते हैं, उन के विचार तो वेद के प्रतिकूल थे.

(क) ईश्वर

वैदिक धर्म एक सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, जगत के कर्ता, धर्ता व संहर्ता ईश्वर में विश्वास रखता है, परंतु बौद्ध धर्म नहीं.

(ख) आत्मा

वैदिक धर्म आत्माओं में विश्वास रखता है, जो न जलती हैं, न मरती हैं और कर्मानुसार ईश्वरीय प्रेरणा से अनेक शरीरों से संयुक्तवियुक्त होती रहती हैं. बौद्ध धर्म पुनर्जन्म में विश्वास रखता हुआ भी जन्ममरणयुक्त नित्य आत्मा में विश्वास नहीं रखता.

(ग) वेद

वैदिक धर्म में वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा पाई जाती है, बल्कि उन्हें ईश्वरीय वाणी तक कहा जाता है, किंतु बौद्ध धर्म वेदों का खंडन करता है.

(घ) यज्ञ

वैदिक धर्म में यज्ञों को बहुत महत्त्व दिया जाता है और उन्हें स्वर्ग की सीढ़ियां समझा जाता है, परंतु बौद्ध धर्म में यज्ञ की भर्त्सना है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

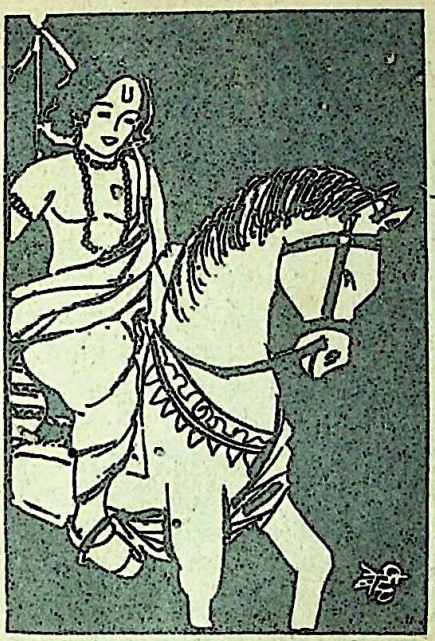

कल्कि अवतार

(ङ) अहिंसा

वैदिक धर्म में अहिंसा व हिंसा दोनों का अपनाअपना स्थान है. भगवद्गीता का उद्देश्य ही युद्ध द्वारा अर्जुन को उस का अधिकार दिलाना था. परंतु बौद्ध धर्म में अहिंसा परम धर्म कही गई है. प्राचीन क्षत्रिय अश्वमेध, युद्ध, शिकार आदि किया करते थे, परंतु महात्मा बुद्ध ने प्राणि-हिंसा सर्वथा मना कर दी.

(च) आश्रम व्यवस्था

वैदिक धर्म में मानव जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व संन्यास, इन चार आश्रमों में विभाजित किया गया है और गृहस्थ को सर्वोत्तम आश्रम माना गया है. बौद्ध धर्म में संन्यास ही सर्वोत्तम है.

(छ) संसार

वैदिक धर्म में 'अयं लोको प्रियतमो देवानामपराजितः' कह कर इस लोक को अत्यंत प्रिय कहा गया है, परंतु बौद्ध धर्म में संसार को दुःखमय व त्याज्य.

इस प्रकार हमारे विचार से तो महात्मा बुद्ध ने लोगों को वैदिक धर्म से विमुख ही किया. तब ऐसे व्यक्ति को हिंदू धर्म में अवतारों में कैसे गिन लिया गया? इस का उत्तर संभवतः यह है कि न सामान्य जनता को निराकार ईश्वर समझ में आता था, न वेद, न पशु-यज्ञ अच्छे लगते थे. न जन्ममूलक वर्णभेद. इसलिए लोगों ने महात्मा बुद्ध के सरल सीधे, सदाचार संबंधी उपदेशों को ग्रहण कर वैदिक धर्म से विमुख होना आरंभ कर दिया. यह देख कर विप्रवर्ग चौंक उठा और उस ने महात्मा बुद्ध को भी अवतार मान लिया ताकि लोग हिंदू धर्म से दूर न हट जाएं. जैसे आजकल राजनीतिक क्षेत्र में एक बलबदलू नेता के पीछे सहस्त्रों अनुयायी भी दल बदल लेते हैं. वैसे ही उन दिनों भी हुआ होगा. क्रमशः बुद्ध मूर्तियों की पूजा भी विष्णु व शिव की मूर्तियों के समान होने लगी. इस प्रकार दिलों की दूरी होती गई और रहीसही कसर स्वामी शंकराचार्य व कुमारिल भट्ट के शास्त्रार्थों ने पूरी कर दी. सो, यह हमारे पूर्वजों की सुनीति का ही सुपरिणाम है कि आज बौद्ध हमें बेगाने नहीं नजर आते.

10. कल्कि अवतार

इन के संबंध में कहा गया है कि इन का आविर्भाव कलियुग के अंत व सत्ययुग के आरंभ में होगा. ज्योतिष के अनुसार कलियुग की समाप्ति में अभी कोई 4,27,000 वर्ष शेष हैं. तो भी इन के विषय में पुराणों में बड़ी रोचक भविष्य वाणियां की गई हैं, जिन का सार यह है:

जब अधिकतर राजा लुटेरे बन जाएंगे, तब युगसंधि के समय संभल ग्राम के वासी विष्णु यशस ब्राह्मण के घर में यह अवतार जन्म लेंगे.

(भागवत: 1/3/25)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह देवदत्त नाम के घोड़े पर बैठ कर लंबी तलवार से अधर्मी व म्लेच्छों का संहार करेंगे. इस शुभ्र कार्य में पराशर गोत्री अदृश्य सेना इन की सहायक होगी. तत्पश्चात इन की समाधि से योगाग्नि उत्पन्न होगी तथा नए सिरे से कर्मभूमि व वर्णोत्पत्ति होगी. इस के बाद :

कल्किरूपं परित्यज्य
हरिः स्वर्गं गमिष्यति.
ततः कृतयुगं नाम
पुरुवत् संभविष्यति.
(अग्निपुराण 1/6/6)

'विष्णुजी कल्कि रूप का त्याग कर के स्वर्ग को चले जाएंगे और तब पहले के समान फिर सत्ययुग आरंभ होगा.'

लाखों वर्ष बाद होने वाले इस अवतार का आलोचनाकार्य उन के किसी समकालिक व परवर्ती आलोचक पर छोड़ कर हम इस निबंध के उपसंहार का यत्न करते हैं.

उपसंहार

यद्यपि दस प्रसिद्ध अवतारों की संक्षिप्त आलोचना हम यथास्थान करते आए हैं, तथापि अंत में दोचार शब्द लिखना उचित ही जंचता है. ऐसे लगता है कि वैदिक युग से हमारे पूर्वज दो प्रधान वर्गों में विभाजित थे—एक वर्ग तो निराकार, सर्वव्यापाक, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान ईश्वर का उपासक था और दूसरा वर्ग इंद्र, प्रजापति, विष्णु, मित्र, वरुण आदि चेतन देवों का. निराकार ईश्वर का विस्तृत वर्णन प्राचीन दसबारह उपनिषदों में किया गया और ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र का पुराणों में. चूंकि निराकार ईश्वर न धर्म स्थापना करते हुए दिखाई देता था, न दुष्टदलन करते हुए. इसलिए उचित यही समझा गया कि किसी आकाशीय देवता को उक्त कार्य करते हुए दिखाया जाए, ताकि लोग नास्तिकता से बच जाएं. ब्रह्माजी तो सृष्टि रच कर स्वकार्य से निवृत्त हो गए थे और शिवजी के प्रलय कार्य में अभी बहुत देर थी इसलिए यह उचित ही हुआ कि धर्म संस्थापन आदि का कार्य जगद्धात्री विष्णुजी को सौंपा गया.

विष्णुजी नौ अवतार ले चुके हैं जिन में से प्रथम पांच और दसवां (कल्कि) काल्पनिक हैं. शेष चार—परशुराम, राम, कृष्ण और बुद्ध ऐतिहासिक व्यक्ति थे, जिन्हें हमारे पूर्वजों ने उन के विशेष गुणों के कारण अवतार बना दिया. हमारे विचार में तो महापुरुषों को महापुरुष रहने देना ही अच्छा है ताकि हम लोग उन्हें महामानव मानते हुए उन के चरणचिन्हों पर चलने का यत्न कर सकें. परंतु, जब हमें यह बताया जाता है कि वह तो साक्षात भगवान व उन के अवतार थे, तब हमारे उत्साह पर पानी फिर जाता है और हमारी वैसा बनने की उमंग मिट्टी में मिल जाती है.

समय की दृष्टि से देखें तो भी अवतारवाद पर आस्था नहीं टिकती. अधिक अवतार उस समय में होने चाहिए, जब पाप अधिक हों. परंतु यह कहा गया है कि प्रथम चार अवतार सत्ययुग में हुए, बाद के तीन त्रेता में, एक द्वापर में और एक कलियुग में. साथ ही यह भी माना जाता है कि सत्ययुग में धर्म के चारों चरण होते हैं. त्रेता में तीन, द्वापर में दो और कलियुग में एक. इस दृष्टि से सत्ययुग में एक, त्रेता में दो, द्वापर में तीन और कलियुग में चार अवतार होते तो न्यायसंगत होता. अस्तु, क्रम व संख्या बदलने का अधिकार न आप को है न हमें, वह तो जैसा है, है.

वर्ण की दृष्टि से विचार करें तो पिछले पांच अवतारों में से परशुराम व कल्कि का संबंध विप्रवंश से है. परशुरामजी ने ब्राह्मण कुल में जन्म ले कर क्षत्रियों का संहार किया और विप्रवंशी कल्कि भी उन्हीं के चरणचिह्नों पर चलेंगे. राम और कृष्ण ने क्षत्रिय कुल में जन्म लिया और सत्ययुग [illegible] संबंधियों—सीता, वसुदेव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्जुन आदि के हित के लिए ही रावण, कंस, कौरवों आदि को मारा व मरवा डाला. महात्मा बुद्ध ने जन्म तो लिया क्षत्रिय कुल में, पर धंधा (धर्म प्रचार) अपनाया ब्राह्मणों का. उन्होंने लोगों को ईश्वर वेदवेद से विमुख ही किया, न कि धर्म संस्थापन. विष्णुजी ने किसी वैश्य वा शूद्र के घर में जन्म लेना क्यों उचित नहीं समझा?

देश की दृष्टि से देखें तो भी भगवान समदर्शी नहीं दीखते. क्या धर्म का नाश व अधर्म की वृद्धि भारत में ही होती है, और कहीं नहीं? क्या सज्जन व दुर्जन हमारे ही देश में रहते हैं, जिन के 'परित्राण' और 'विनाश' के लिए भगवान यहां अवतार लेते हैं ?

इस प्रकार निष्कर्ष यही निकलता है कि अवतारवाद का आरंभ वैदिक साहित्य की काल्पनिक कथाओं से हुआ और बाद में उक्त चार महापुरुषों को भी श्रद्धावश अवतार बना दिया गया. परंतु संख्या चार तक ही सीमित नहीं रही. रामायण व महाभारत के अनेक पात्र भी अवतार जैसे बना दिए गए. हनुमान व भीम को पवनपुत्र बना दिया गया, बाली व अर्जुन को इंद्रपुत्र, सुग्रीव व कर्ण को सूर्यपुत्र, युधिष्ठिर को धर्मपुत्र तथा नकुल, सहदेव को अश्विनीकुमारों के पुत्र. और तो और श्रीराम के सहायक वानरों और रीछों को भी देवताओं का अवतार मान लिया गया, जो युद्ध में धराशायी होने के बाद रामकृपा से पुनः वास्तविक स्थान (स्वर्ग) में जा पहुंचे.

इस के अतिरिक्त एक ही व्यक्ति को अनेक देवताओं का अवतार बना डाला गया. जैसे अर्जुन को हरिवंश पुराण में इंद्र का अवतार कहा गया है तो महाभारत में 'नर' का, लक्ष्मण व बलराम को प्रायः तो शेषनाग का अवतार कहा गया है, किंतु श्रीराम व श्रीकृष्ण के भाई होने के कारण विष्णु के भी. इसी प्रकार सीताजी लक्ष्मीजी का अवतार बना डाली गईं.

वस्तुतः उक्त सभी व्यक्ति अनेकानेक गुणों से संपन्न होते हुए भी सर्वथा निर्दोष न थे, अतः महामानव होने के नाते हमारे सम्मान्य होते हुए भी वे भगवान के अवतार न थे. सो हमारे विचार में तो उचित यही है कि हम इस अवतारवाद नाम के मिथ्यावाद का परित्याग करें, एक ही सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान ईश्वर में आस्था रखें और अपने वीर व धार्मिक पूर्वजों का यथोचित सम्मान करें. ●

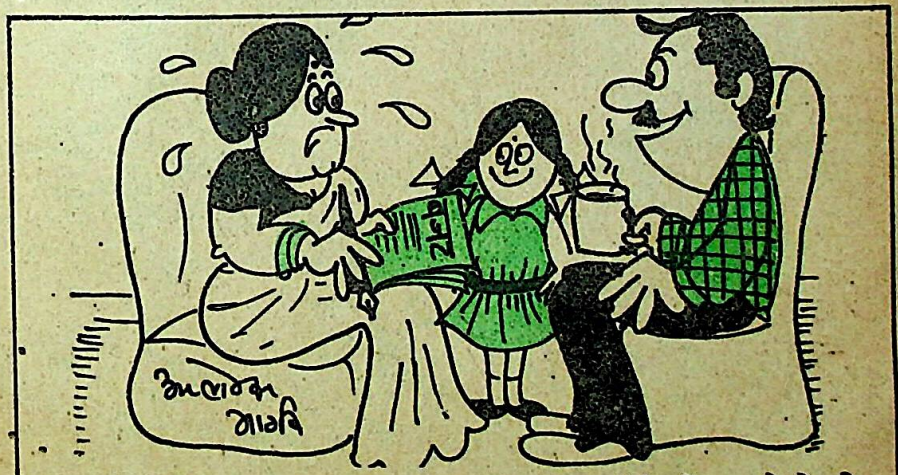

"अपने बजट में अगले सरकारी बजट में बढ़ने वाले करों के लिए पहले से ही प्रबंध कर लेना।"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • डा. अब्राहम कोवूर

जंजीर भैरव

जाफना के दक्षिण में श्रीलंका के मुख्य द्वीप से हट कर एक छोटा सा टापू है मंडयित्तीवु. यहां कुछ किसानों और थोड़ेबहुत मछुआरों को छोड़ कर और लोग नहीं रहते. श्रीलंका की मुख्य भूमि से यह द्वीप केवल चार मील दूर है. फिर भी यहां के लोग बाहरी संसार से बिलकुल अलगथलग हैं. ये लोग विशेषकर स्त्रियां और बच्चे जाफना के नल्लू कंदशामी (स्कंदस्वामी) मंदिर के वार्षिकोत्सव को बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा किया करते हैं, क्योंकि उन के लिए शहर की रौनक देखने का यही एकमात्र अवसर होता है.

1932 की बात है. अप्रैल की छुट्टियों में मैं समुद्र के खारे पानी में उगने वाली वनस्पतियों के कुछ नमूने इकट्ठे करने के लिए इस द्वीप में गया. मैं ने अपने ठहरने का प्रबंध सुप्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री नेविस शेल्वदुरै

मार्कंड से भूत सुंदरी के बारे में कई घटनाएं सुनने के बाद मैं सोच में डूब गया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के मकान में किया. मकान का अगला भाग समुद्र की ओर था. समुद्र तट और वहां से थोड़ी दूरी पर स्थित मूंगे की चट्टानों के बीच का हिस्सा काफी छिछला था. अतः वहां लोग नहाते और कभीकभी मछलियों आदि का शिकार भी करते थे.

पूर्वाह्न का सारा समय मैं अपनी पत्नी और बेटे के साथ समुद्र में बिताता था. दोपहर की नींद के बाद उन्हें मकान में छोड़ कर मैं द्वीप के कई भागों में घूमफिर कर कौतुक की वस्तुएं देख लेता था. इस बीच वहां के एक अध्यापक से मेरा परिचय हो गया. उस सारे द्वीप में कमीज पहनने वाला वही अकेला व्यक्ति था. मार्कंड उस का नाम था. उस द्वीप के निवासियों के सामाजिक जीवन के बारे में हम दोनों के बीच देर तक बातचीत हुई थी. उस के बाद मार्कंड कई बार हमारे निवास स्थान पर आया और हमारे बीच मित्रता का नाता जुड़ गया.

एक दिन जब वह आया तो उस के पास चंदा इकट्ठा करने की रसीद बुक थी. उस ने कहा कि पिछले कई महीनों से उस द्वीप के लोगों को सताने वाले एक भूत को भगाने के लिए नल्लू मंदिर के आसपास रहने वाले लोग एक योगी को बुला कर यज्ञ कराना चाहते हैं और इसी लिए चंदा इकट्ठा किया जा रहा है. इस भूत को लोगों ने कई जगहों पर भिन्नभिन्न रूपों में देखा है. कभीकभी मोहिनी नारी के रूप में भी उसे देखा गया है.

मार्कंड ने बताया, "एक रात एक औरत रसोईघर से निकल कर अपने आंगन में अभी खड़ी ही हुई थी कि उस ने थोड़ी दूर नारियल के पेड़ के नीचे एक अनजान

भूतप्रेतों को भगाने के नाम पर नारियल के छिलके के ऊपर सीपियां चलाने, उबलते तेल में हाथ डालने जैसे कारनामे दिखा कर योगीराज ने द्वीपवासियों से काफी रकम ऐंठी थी पर जब मैं ने मुफ्त में उन्हें वे सब कारनामे कर दिखाए तो उन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

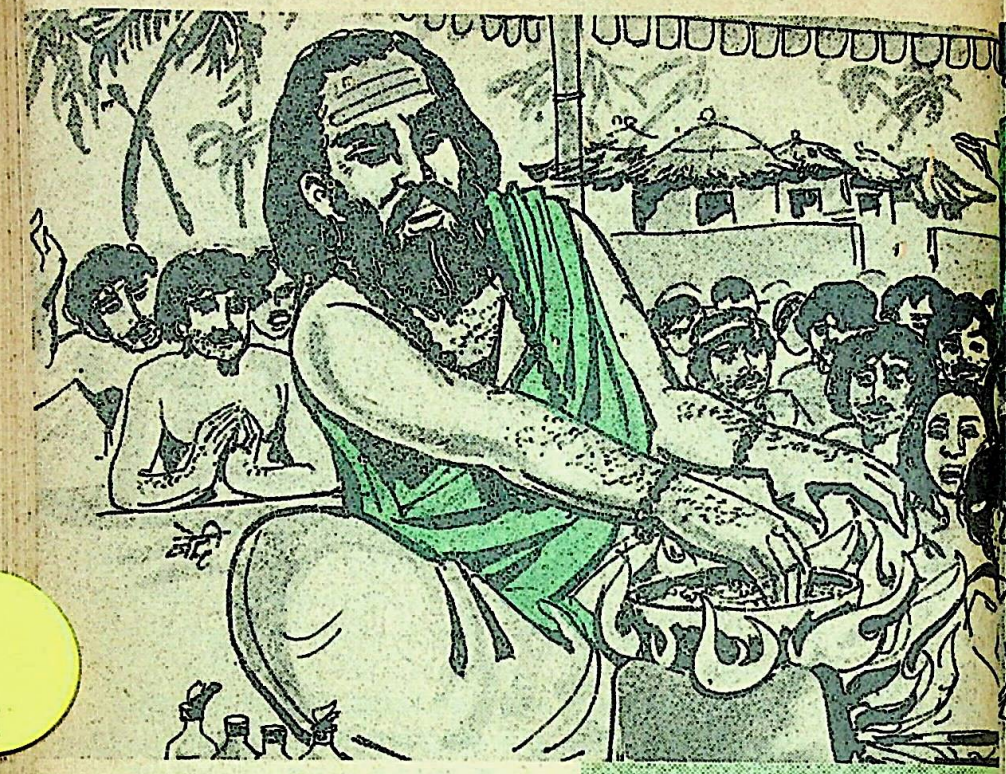

योगीराज ने पहले तो उबलते हुए तेल को छू कर ही देखा लेकिन बाद में अपना पूरा हाथ तेल में डुबो दिया. यह देख कर दर्शक स्तब्ध रह गए.

औरत को खड़े देखा. उसे देखते ही वह अपनी सुधबुध खो गई. वह उस नवागता के पीछे-पीछे चलने लगी. थोड़ी दूर जाने पर वह अनजान महिला अचानक अदृश्य हो गई. उस के पीछेपीछे जाने वाली औरत पूरे तीन दिन बाद होश में आई. लेकिन उस दिन से उस पर भूत सवार है. वह भूत की आवाज में ही बोलती है. उस का रंगढंग भूतों जैसा है."

मार्कंड को और भी कितनी ही घटनाएं याद थीं. उस ने बताया कि एक दिन तंबाकू के खेत से घर लौटते हुए एक युवक ने एक तंग गली में एक अत्यंत रूपवती नारी को देखा. उस ने युवक से कहा कि वह रास्ता भूल कर वहां आई है, इसलिए वह उसे उस के घर पहुंचा दे. वह युवक उस सुंदर महिला की सहायता के लिए तैयार हो गया.

दोनों बातें करते हुए थोड़ी दूर ही चले थे कि वह युवती एकाएक आंखों से ओझल हो गई. लेकिन उस की आवाज उस के बाद भी सुनाई दे रही थी. युवक को लगा कि वह किसी भूतनी के जाल में फंस गया है. मारे डर के वह घर की ओर भागा. घर पहुंच कर वह हायतौबा करने लगा. अचानक वह बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ा और अगले दिन सवेरा होने पर ही उस की बेहोशी दूर हुई.

एक अन्य किस्सा सुनाते हुए उस ने कहा, "एक सात वर्षीया बालिका ने एक दिन अपने आंगन में एक काले कुत्ते को देखा. जब उस ने उस पर पत्थर मारा तो वह जंजीर भैरव का रूप धारण कर वहां से भाग गया. जंजीर भैरव की जंजीर की झन-झनाहट सुन कर लड़की बेहद डर गई. फलस्वरूप उस दिन से उस की बोलने की शक्ति नष्ट हो गई है.

"द्वीप के वयोवृद्ध लोगों ने एक सभा बुला कर यह निर्णय किया है कि नल्लू मंदिर के आसपास रहने वाले एक योगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को बुला कर यज्ञ कराया जाए. बड़ी अद्भुत शक्ति वाले यह योगी साल में छह महीने ही नल्लू में रहते हैं, शेष दिन वह शिवनडिपदम (आयम मुडि), कट्टार, गया और तिरुकेकतीश्वरम आदि स्थानों में जा कर तप करते रहते हैं."

मैं ने मार्कंड से कहा, "मैं इन काल्पनिक भूतप्रेतों को भगाने के लिए किए जाने वाले यज्ञ के नाम पर एक कौड़ी भी खर्च करने के पक्ष में नहीं हूं. फिर भी यदि मेरे मंडयित्तीवु से चले जाने से पहले यज्ञ हुआ तो मैं देखने के लिए उत्सुक हूं."

अगले हफ्ते मार्कंड ने आ कर कहा कि आगामी रविवार को यज्ञ करने की तैयारियां हो रही हैं और योगीश्वर को बुला लाने के लिए तीन आदमी जाफना गए हैं.

अगले रविवार को दोपहर का भोजन जरा जल्दी ही कर के मैं उस घर में पहुंचा, जहां यज्ञ होने वाला था. वहां बहुत से लोग जमा हुए थे, जिन में स्त्रियां और बच्चे भी थे. लंबी दाढ़ी वाले एक योगीराज यज्ञ के लिए अलग से खड़े किए गए शामियाने के अंदर बैठे थे. पीला कफड़ा, रुद्राक्ष की माला और भस्म से रंगे ललाट से वह पहली नजर में ही एक संन्यासी से लगते थे.

उन के सामने पीतल के दो दीए और बहुत से छोटेछोटे बरतन रखे हुए थे, जिन में अनाज और फूल थे. दाईं और तीन पत्थरों के ऊपर एक बड़ा कटोरा रखा हुआ था, जिस के पास कुछ नारियल, घी, नारियल का तेल, मूंगफली का तेल, नीम का तेल और एक अन्य तेल (इलुण) से भरी हुई पांच बोतलें रखी हुई थीं.

तमिल और संस्कृत में जाप करते हुए योगीराज पूजा करने लगे. यह क्रम एक घंटे तक चला. उस के बाद योगीराज आंखें बंद कर ध्यानमग्न हो गए. उन के सहायक ने काफूर की एक टिकिया जला कर योगी की जीभ में रख दी. तुरंत उन के मुंह से आग की लपटें बाहर आईं. आग के बुझ जाने पर अपनी जीभ पर काफूर का बचा हुआ हिस्सा उन्होंने पास रखे एक कटोरे में थूक दिया.

इस प्रकार तीन बार योगी की जीभ पर काफूर जलाया गया. महफिल में बैठे हुए लोग उस समय 'हरेहरे' कह भगवान का स्मरण कर रहे थे.

इस प्रदर्शन के बाद योगीराज गहरे ध्यान में निमग्न हो गए. आसन लगा कर बैठे हुए योगीराज अपने दोनों हाथों से अपने पैरों की उंगलियों को जोर से पकड़े हुए थे. चंद मिनट बाद योगीराज ने मार्कंड को अपने पास बुलाया और उस से उन की नब्ज देखने को कहा. मार्कंड बोला, "स्वामीजी, आप की नाड़ी तो रुकी हुई है."

उस के बाद एक बूढ़े आदमी ने भी नाड़ी को देखा और कबूल किया कि उन की नाड़ी रुक गई है. मैं ने भी जा कर उन की नब्ज देखी. मैं ने अनुभव किया कि उन की नाड़ी का स्पंदन बहुत क्षीण होता जा रहा है और आखिर में वह बिलकुल बंद हो गया. मैं थोड़ी देर और परीक्षा करता रहा और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखा कि पांच मिनट बाद वह फिर से चालू हो गई.

इस के बाद योगी के सहायक ने आवेश दिया कि चूल्हा जलाया जाए. बोतलों में रखे हुए पांचों तरह के तेल उस कटोरे में डाल दिए गए. नारियल के छिलके जलने लगे. योगीराज ने तीन नींबू लिए और मंत्रोच्चारण के साथ उन्हें काटकाट कर तेल में डाल दिया. अब बरतन का तेल उबलने लगा तो उन्होंने लोगों को संबोधित कर कहा, "जो लोग जंजीर भैरव के उत्पीड़न से मुक्ति पाना चाहते हों, वे आगे आएं."

यह सुनते ही वहां उपस्थित सब से बूढ़े आदमी ने उन के सामने आ कर घुटने टेक दिए. योगीराज ने उबलते हुए तेल को धीरे से छू कर देखा. लगा मानो उन का हाथ झुलस गया हो. उन्होंने अपना हाथ तेल से झट खींच लिया और दूसरे हाथ से उस तेल को पोंछ डाला. यह क्रिया उन्होंने दोएक बार दोहराई.

उस के बाद बरतन से तेल ले कर उसे बूढ़े के माथे पर लगाया. फिर मुझे छोड़ कर वहां उपस्थित सभी लोगों के माथे पर तेल लगाया गया. पहले तो योगीराज ने उबलते हुए तेल को छू कर ही देखा, लेकिन बाद में उन्होंने अपना पूरा हाथ तेल में डुबो दिया. कहना न होगा कि यह दर्शकों को चौंकाने वाली बात थी.

आग बुझाई गई. योगीराज ने थैली से खूब पालिश किया हुआ नारियल का एक बड़ा छिलका बाहर निकाला, जिसे उन्होंने अपने सामने औंधा रखा. साथ ही एक शीशी, जिस में पानी भरा था और सात सीपियां भी बाहर निकालीं. नारियल के छिलके पर एक सीपी बीच में और बाकी छः सीपियां उस के चारों ओर सजा कर रख दी गईं.

इस के बाद उस योगी ने वहां उपस्थित लोगों से कहा, "मैं ने पता लगा लिया है कि इस जगह पर एक नहीं, बल्कि सात भूत लोगों को सता रहे हैं. उन में से कुछ पुरुष हैं और कुछ स्त्रियां. उन सब को मैं ने इन सातों सीपियों में बंद कर दिया है. जब इन के अंदर पवित्र जल डाल कर मंत्रों का उच्चारण करने लगूं तो जो भूत यह ही छोड़ देने को तैयार होंगे वे सब नीचे जाएं. अगर कोई नीचे नहीं आया तो समझ लेंगे कि वह इस द्वीप से जाना नहीं चाहता. ऐसी हालत में बिना विलंब इस से भी एक महा यज्ञ करना होगा."

इतना कह कर उन्होंने हर सीपी के अंदर पवित्र जल की कुछ बूंदें डाल दीं. बूंदें डालते ही सभी सीपियां हिलनेडुलने लगीं और नीचे गिरने लगीं. जब सातों सीपियां नीचे गिर चुकीं तो योगीराज ने कहा कि सभी भूत इस द्वीप से भाग गए हैं.

रात के दो बजे यज्ञ समाप्त हो गया. द्वीप के निवासियों की ओर से मार्कंड ने उन्हें रुपयों की एक थैली भेंट की. भूत को भगा कर मंडयित्तीवु में शांति कायम करने पर मार्कंड ने उन्हें धन्यवाद दिया. दूसरे दिन जाफना लौटने से पहले योगी ने कई लोगों को दर्शन दिए.

अगले दिन मार्कंड मेरे पास आया. उस का चेहरा विजयोल्लास से खूब चमक रहा था.

"अब तो आप ने समझ लिया होगा कि योगियों की दिव्य शक्ति कैसी होती है," मार्कंड ने कहा, "इस का विज्ञान क्या स्पष्टीकरण दे सकता है? नारियल के छिलके के ऊपर से चलती हुई सीपियों को देखने पर क्या यह स्पष्ट नहीं हुआ कि भूत तो हैं ही, उन में सभी चीजों को चलाने की सामर्थ्य भी है? क्या आप अपने विज्ञान के सहारे उबलते हुए तेल में अपना हाथ डाल सकेंगे? उस योगी की भांति कोई भी अपना नाड़ी स्पंदन रोक सकेगा? आप तो अद्भुत घटनाओं की जांचपड़ताल करने वाले हैं, मेरा विचार है कि कल के अनुभव से भूतप्रेतों के बारे में आप का अविश्वास दूर हो गया होगा."

मेरे पूछने पर मार्कंड ने बताया कि योगी को दी गई थैली में 501 रुपए की राशि थी. मैं ने कहा, "योगविद्या के नाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर दिखाए गए तीन मामूली दांवपेचों के लिए इतनी बड़ी रकम देना बेवकूफी थी. योग तो तनमन दोनों को अच्छा प्रशिक्षण देने की विद्या है. उसे प्रदर्शित करने के लिए किसी दिव्य शक्ति की आवश्यकता नहीं है. आप यज्ञ कराने वालों में से चारपांच प्रमुख व्यक्तियों को बुला लाएं तो आप सब के सामने मैं योगीश्वर की दिखाई हुई सभी करामातें मुफ्त में कर दिखाऊंगा."

मार्कंड ने मेरी बात मंजूर कर ली.

दूसरे दिन मैं ने नौकर से नारियल के एक कड़े छिलके के ऊपर के सारे रेशे निकाल कर उसे रेगमार से खूब चिकना करने को कहा. मैं स्वयं समुद्र के किनारे जा कर सात सीपियां बटोर लाया और उन का निचला भाग रगड़ कर चमका लिया. फिर काफूर की एक पुड़िया और तीनचार नींबू भी मंगवाए.

शाम के पांच बजे मार्कंड और चारपांच किसान मेरे घर आए. योगीराज की भांति मैं भी फर्श पर आसन लगा कर बैठ गया. अपने सामने एक मोमबत्ती जला कर रख दी. अपने दाईं ओर एक स्टोव, अलमीनियम का एक बड़ा कटोरा और नारियल के तेल का एक बरतन भी रख लिया. एक शीशी में एक अन्य द्रव भी रखा हुआ था.

जलते हुए काफूर की टिकिया को अपनी जीभ पर रखते हुए मैं ने अपना प्रदर्शन आरंभ किया. कुछ देर तक मुंह से आग की लपटें निकलती रहीं. मैं ने भी यह प्रदर्शन तीन बार किया. फिर मार्कंड से मैं ने अपनी नब्ज देखने को कहा. पांच मिनट के लिए मैं ने अपनी नाड़ी का स्पंदन रोक लिया. मार्कंड और उस के साथ आए किसानों ने मेरी नब्ज देखी और उन्हें उस के बंद होने का विश्वास भी हो गया.

उस समय मेरा नौकर स्टोव जला रहा था. कटोरे में नारियल का तेल डाल कर उसे स्टोव पर रख दिया गया. तेल गरम होने पर मैं ने नींबू काट कर उस में डाल दिए. थोड़ी देर में तेल उबलने लगा. मैं ने अपने बाएं हाथ से उबलते हुए तेल को छू लिया और बाएं हाथ से उस पर लगे तेल को पोंछ दिया. इसे कई बार दोहराने के पश्चात मैं ने अपना हाथ ही तेल के अंदर डाल दिया.

इस प्रदर्शन के बाद चमकाया हुआ नारियल का छिलका मैं ने अपने सामने

"क्रिकेट के मैदान में चौका लगाना कौन सी शेखी की बात है... कभी घर में चौका लगाओ तो जानूं..."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औंधा रख दिया. सात सीपियां भी सजा कर रख दीं, जैसे कोई सुनार कर्णफूल में रत्न जड़ देता है. फिर शीशी में बंद द्रव की कुछ बूंदें हर सीपी में डालीं. इस से सीपियां हिलडुल कर नीचे की ओर आने लगीं.

मार्कंड और उस के साथी दंग रह गए. उन्होंने शायद समझा होगा कि मैं भी कोई योगी हूं. लेकिन मैं ने उन्हें समझाया कि ये सब मामूली करामातें हैं. इस के लिए कोई दिव्य शक्ति अपेक्षित नहीं है. सीपियों में मैं ने जो डाला था वह नींबू का रस था. योगी ने भी पवित्र जल कह कर यही डाला होगा या फिर सिरका. सीपी तो कैल-सियम कार्बोनेट है. नींबू के रस का सिट्रिक एसिड पड़ने पर उस से कार्बन डाइआक्साइड के बुलबुले निकलने लगते हैं. हजारों बुल-बुलों के एक साथ बाहर आने पर वे सीपियों को नारियल के छिलके से अवश्य ऊपर उठा लेंगे और वे सीपियां भूमि के गुरुत्वाकर्षण से नीचे आ जाएंगी. उबलते हुए तेल में हाथ डालना, नब्ज रोकना और मुंह से आग की लपटें निकालना आदि भी ऐसे ही कुछ वैज्ञानिक तरीके हैं.

यह घटना इस बात का एक ज्वलंत उदाहरण है कि अज्ञान में डूबे हुए लोगों को धोखा देने के लिए कुछ लोग आधुनिक विज्ञान का कैसा दुरुपयोग कर रहे हैं. उबलते हुए तेल का तापमान इतना ऊंचा है कि कोई उस में हाथ डाल कर उसे जलाए बिना बाहर निकाल नहीं पाएगा. लेकिन उबलते हुए तेल का तापमान चाहे वह एक ही तेल हो या अनेक तेलों का मिश्रण, जब तक उस में नमी रहेगी तब तक वह 100 डिगरी सेंटीग्रेड से ऊपर नहीं उठ सकता, हां शर्त यह है कि बरतन को खुला रहने दिया जाए.

नींबू के टुकड़े जिन में जल की पर्याप्त मात्रा है, तेल के तापमान को 100 डिगरी सेंटीग्रेड से ऊपर नहीं उठने देंगे. इस के अलावा तेल की सतह पर जहां पानी बड़ी तेजी से भाप बनता रहता है उस का ताप-मान 100 डिगरी सेंटीग्रेड से भी कम हुए बिना नहीं रह सकता. तेल में हाथ डुबो देने से पहले भाप को फूंक कर हटा देने के कारण तापमान उसी पल में और भी कम हो जाता है.

हां, तेल अब भी गरम होगा, यहां तक कि उसे अनुभव किया जा सकेगा और दर्द भी होगा. पर वह इतना गरम नहीं होगा कि उस में जल्दी हाथ डाल कर जल्दी हटा देने से हाथ जल या झुलस जाए. साथ ही उतनी शीघ्रता से बाएं हाथ से तेल पोंछ डालने से अधिक पीड़ा अनुभव नहीं होगी. अगर तेल में नींबू के टुकड़े न होते तो न योगी अपना हाथ सुरक्षापूर्वक बाहर खींच सकता था, और न मैं.

काफूर तो बहुत ही चुलबुली चीज है जो द्रव हुए बिना हवा में उड़ जाती है. इस चुलबुलाहट के कारण ही काफूर में एकदम आग लग जाती है. जलते हुए काफूर को अपनी गीली जीभ में रखने से पहले योगी और मैं दोनों ने ही अपने होंठों को लार से गीला कर लिया था और लंबी सांस भी खींच ली थी. जलते हुए काफूर के जीभ में रहने के उस छोटे अरसे में ही हम ने एक ही उच्छ्वास में लपटों को बाहर फूंक दिया था और उसी दम काफूर के बचे हुए टुकड़ों को भी थूक दिया था. इस प्रक्रिया में पल भर के लिए ही सही, यदि हम ने भूल से श्वास को अंदर खींच लिया होता तो परि-णाम अत्यंत खतरनाक होता.

अब रही नब्ज रोकने की करामात. यह सब से सरल कार्य है. इस के लिए नींबू के आकार की कपड़े की एक गेंद चाहिए. गेंद को बगल में कमीज के अंदर सी कर छिपा लिया जाता है. जब कभी नब्ज रोकनी हो तो सिर्फ इस गेंद को बगल से दबा देने से नब्ज धीरेधीरे क्षीण होती जाएगी और अंत में पूर्ण रूप से बंद हो जाएगी. पश्चिमी देशों में वैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग कर चोरी, लूटमार, हत्या आदि की जाती है. अज्ञानियों को बहकाने के लिए वैज्ञानिक सिद्धांतों का दुरुपयोग करना भी एक प्रकार की लूटमार ही है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पलकों की छांव

पलकों की छांव, रूप में ढलने भी दीजिए,
आंचल से अपने, धूप निकलने भी दीजिए.

मुरझा न जाए, देखिए ये घास मखमली,
साए को अपने, राह में चलने भी दीजिए.

बादल जो काले, आप के काजल से छा गए,
मौसम बदल गया तो बदलने भी दीजिए.

आ जाएं आप प्यार के गुलशन की छांव में,
पेड़ों के साए धूप में जलने भी दीजिए.

ये दीप हैं जलेंगे कभी गम की रात में,
पलकों पे आंसुओं को मचलने भी दीजिए.

ठुकरा दिया है कितनों को दुनिया की भीड़ ने,
जो गिर गए हैं उन को संभलने भी दीजिए.

—अदील मुस्तेहसन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुमीत से गृहिणियां हैरान

"ये पूरी की पूरी किचन मशीन है – अब तो ये और भी आश्चर्यजनक है, क्योंकि ये और भी कई नए काम करने लगी है!"

सुमीत भारत में अपनी तरह की पहली मशीन है। ये धोने में आसान एक साफ़सुथरे स्टेनलेस स्टील के जार से युक्त है, जिसके साथ आता है एक एक्रिलिक ढक्कन...ताकि आप अंदर देख सकें कि सुमीत कितनी आसानी, कुशलता से काम करती है.

अनेक कामों को ज़्यादा जल्दी और ज़्यादा आसानी से करने के लिए इसमें है ४ ब्लेड असेम्ब्ली : भीगी/सूखी पिसाई के लिए, फेंटने, मिलाने, घोलने के लिए, और अब गोश्त का कीमा बनाने और सब्जियां काटने के लिए भी. एक विशेष आटा गूंथने वाला हिस्सा, जो चपाती, पूरी और पापड़ के लिए भी बड़ी बढ़िया लोइयां बनाता है, केक मिश्रण मिलाने के लिए एक विशेष हुक भी! और सुमीत में है एक हेवी-ड्यूटी मोटर जो बिना रुके पूरे ३० मिनट तक चल सकती है. आइए, और सुमीत का काम देखिए!

सुमीत एक किफायती पैक में बिना आटा गूंथने वाले हिस्से के भी मिलती है, सुमीत डोमेस्टिक. आप आटा गूंथने वाला हिस्सा अलग से भी खरीद सकती हैं.

नई! गोश्त का कीमा बनाने वाली/सब्जियां काटने, पिसने वाली अनोखी मशीन – भारत में अपनी तरह की पहली!

एक सीधासादा, फिर भी काम में बड़ा तेज़ ब्लेड जो स्टेनलेस स्टील जार के साथ आता है. सुमीत बनाने वालों की ओर से विशेष रूप से विकसित! ताकि १ मिनट में गोश्त का कीमा बनाए... सेकेण्डों में गाजर, प्याज, नारियल, काजू, बादाम वगैरह बारीक काटे, घिसे, पलक मारते इससे बर्फ़ भी टुकड़े टुकड़े. कमाल की चीज़ है ये. नीचे की चीज़ें पढ़ के सोच लीजिए ये आपके किचन में कितने तरह के काम कर सकती है...

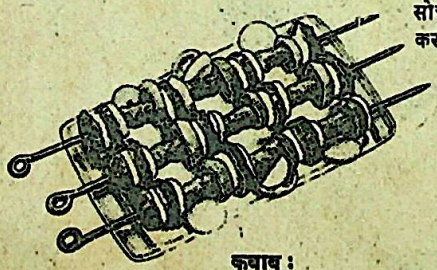

कबाब :
मसाले के साथ गोश्त का कीमा बनाती है—एक बार के चलने में. और स्वादिष्ट, स्वाभाविक, कीमती रस की बरबादी भी नहीं. सीक कबाब, हैम्बर्गर, कीमा वगैरह के लिए कमाल.

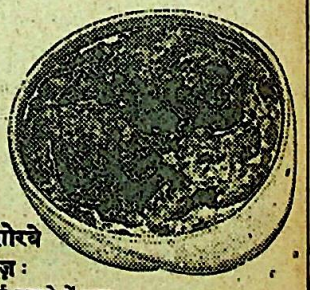

प्याज़ के शोरबे और सासेज़ :
मुगलाई रसोई पकाने में काम आने वाले गाढ़े, मजेदार शोरबे और सासेज के लिए प्याज़ घिसती है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखिए आप सुमीत से और क्या क्या कर सकती हैं

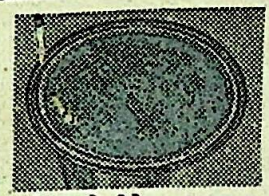

सूखे मसाले पीसे
३½ मिनटों में

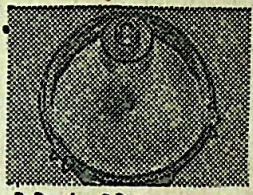

भीगी दाल पीसे
३½ मिनटों में

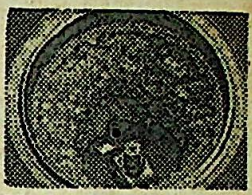

सेकेण्डों में गाजर काटे

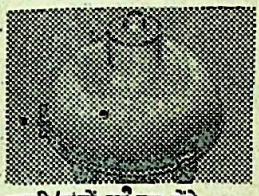

लस्सी/फलों का रस फेंटे
सिर्फ १ मिनट में

चटनी पीसे २ मिनटों में

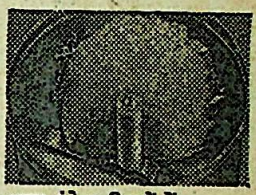

आटा गूंधे २ मिनटों में
केक मिश्रण मिलाए ३½ मिनटों में

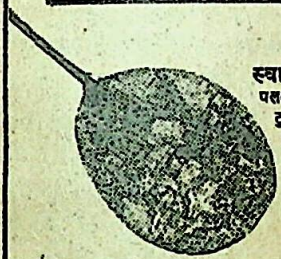

स्वादिष्ट बर्फ़ :
पलक मारते बर्फ़ के टुकड़े टुकड़े कर देती है, जिन्हें देखते ही मुँह में पानी आ जाय, कई कई स्वादों में मिलाइए, काकटेल के लिए भी बर्फ़ घिसती है.

नारियल की बर्फी :
आपकी मनपसंद चीज़ों के लिए नारियल सेकेण्डों में घिस देती है, गाजर का हलवा बनाना हो या काजू, अखरोट, बादाम की चीजें – इसका काम बराबर वैसा ही.

सुमीत®

पूरी की पूरी किचन मशीन

मुफ़्त प्रदर्शन : हमारे अवसरों की राह देखिए और सुमीत का काम !

सभी हिस्से पेटेन्टेड हैं

OBM/2233 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृढ़ता चक्रव्यूह

कहानी • नरेंद्र चतुर्वेदी

हां, सचमुच ही सोमप्रभु की लाड़ली कन्या की यह भूल थी. सुप्रिया, यही तो नाम था उस का.

रात उत्सव भवन से लौटते समय जब वह मणिमेखला से बातें कर रही थी, तभी उसे श्रेष्ठी वत्सराज का पुत्र पुलिंद मिल गया था.

"बधाई हो, देवी! सचमुच आप का गीत गायन बहुत ही श्रेष्ठ था. निर्णायकों से भला भूल कहां हो सकती है. और काव्य-रसिक भी इस से सहमत हैं."

"सच." सुप्रिया चहकी.

"हां, और नहीं तो क्या."

यह उन दोनों की पहली मुलाकात नहीं थी. इस से पूर्व भी पुलिंद सुप्रिया मिल कर अपने अनुराग को प्रकट करने चेष्टा कर चुका था.

तब तक वहां आर्य सोमप्रभु भी गए. उन्हें पुलिंद का वहां खड़ा रहना नहीं आया. अपने मनोभाव अव्यक्त उन्होंने सामान्य स्वर में सुप्रिया से "चलो, घर चलें. बहुत देर हो गई है."

जब तक वे लोग आंखों से ओझल हो गए, पुलिंद उन्हें देखता ही रहा.

किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा विचारों में खो स्मृति पटल पर छा गई उस दिन की एक बात. उस दिन सुप्रिया आचार्य रघुकुल आश्रम से लौट रही थी. मणिमेखला

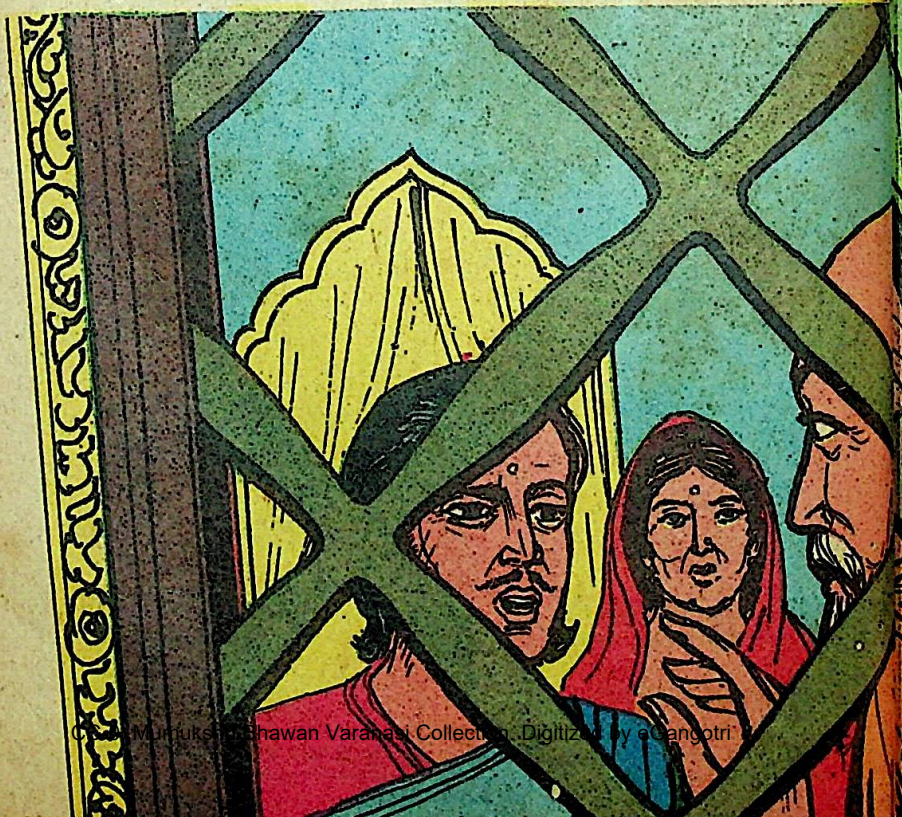

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आचार्य रघुकुल ने सुप्रिया को हिरण्मयी बना कर उस का रूप और नाम तो बदल डाले पर वह उस के मन को कहां बदल पाए?

उस के साथ थी. तभी तेज वर्षा शुरू हो गई थी. वह पीपल के वृक्ष के नीचे खड़ी हो कर किसी प्रकार उस तेज वर्षा से बचना चाह रही थी. पर एक तो तेज हवा, और उस पर बौछारें, वह लगभग भीग ही गई थी.

"अरे, आप!" उस के मुख से विस्मय-पूर्ण स्वर निकला और वह अपने रथ को उस के पास ले गया. सुप्रिया कुछ बोले, इस से पहले ही उस ने उसे खींच कर अपने रथ के अंदर कर लिया था. मणिमेखला भी कूद कर अंदर बैठ गई थी.

"आप तो बहुत भीग गई हैं. लीजिए, मेरे इस उत्तरीय को ओढ़ लीजिए. वह उधर आप के समीप ही तो रखा है."

सहसा उस की तंद्रा टूटी. उस ने देखा,

सुप्रिया ने आचार्य रघुकुल की मांग सुनी तो उसे लगा जैसे धरती ही हिल गई है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास में खड़ा अनुराग हंस रहा था. और सुप्रिया, वह उस रात सो नहीं पाई. उसे सब कुछ याद था. उस का अंतर बुदबुदा रहा था. 'इतने स्वप्न...हां, इतने स्वप्न कभी नहीं आए थे.'

लगता, जैसे मन यहां, वहां सब जगह हो आया था. और हृदय, अब उस का नहीं रहा. जाने किस का हो गया था. वह हमेशा एकदूसरे ही रंग में रंगा रहता. अगली सुबह ही तो दासी सुभद्रा हंसती हुई आई थी. कहती थी, "लाओ, तुम्हारा उबटन कर दूं. क्या पता, कब ससुराल चली जाओ.."

"हट...रातदिन एक ही बात कहती है."

"नहीं, नहीं. हाय...मेरी बिटिया तो यहीं रहेगी." और तभी वह बांह पर पड़े उस हलके से नील को देख कर खिलखिला कर हंस पड़ी थी.

"अरी, यह क्या? कौन था वह?"

"हट," वह बोली, "कोई नहीं."

"हां, मैं ने भी देखा था. कस कर रथ पर चढ़ाया होगा. सुबह से पथ पर तीन चक्कर लगा गया है. मुझ से नहीं रहा गया. तो आना पड़ा. यह ले," अपने आंचल के कोर में बंधा हुआ कागज निकालते हुए बोली.

पत्र पाते ही सुप्रिया को लगा, जैसे उस के पंख लग गए हैं.

"अब बोल," सुभद्रा पट को बंद करते हुए बोली, "मुझे तो यह श्रेष्ठि वत्सराज का पुत्र पुलिंद भला ही लगा."

पर सुप्रिया का मन अब वहां कहां था? वह तो इस प्रातः की उजास भरी भोर में भी वर्षा में भीगता फिर रहा था. लग रहा था, एकएक क्षण जैसे उस ने फिर जिया हो.

उसी संध्या को आचार्य रघुकुल पधारे थे. पूरा परिवार ही उन की अभ्यर्थना में जुट गया था.

आचार्य सूर्य के उपासक थे. उन की उत्कट आकांक्षा थी घरघर में सूर्यदेव के प्रतिष्ठापन की. वह मानते थे कि सूर्य पासना से ही प्राणिमात्र का कल्याण संभ है. वह 'सूर्यकुल' की संरचना में कृत संक थे. उन के शिष्यगण घरघर प्रचार प्रसार लगे हुए थे. इस दिशा में उन्होंने कई ग्रं की रचना भी की थी.

वह भागीरथी के तट पर एक आश्र की स्थापना कर उस में कन्याओं का गुरुकु चलाना चाह रहे थे. साथ ही उन योजना थी, सुयोग्य कन्याओं को दीक्षा कर, उन्हें संस्कारित कर देवकन बनाने की. उन देवकन्याओं से जनप में सूर्यकुल की स्थापना का प्रचारमस तो होता ही, साथ ही उन के सहयो से वह नारी जाति की उन्नति एवं उन कल्याण का पथ प्रशस्त करना चाहते और इसी उद्देश्य से वह आर्य सोमप्रभु घर पधारे थे.

स्वागत सत्कार के बाद जब आ सोमप्रभु के सम्मुख उन्होंने अपनी यह मां रखी कि वह सुप्रिया को देवकन्या बना चाहते हैं, तो सारा घर स्तब्ध रह ग

"देवकन्या..." आर्य सोमप्रभु बु बुदा उठे.

"क्या सोच रहे हो, सोमप्रभु, जनप में आर्य जाति का जो पतन हो रहा उसे रोकने में यह सहायक होगी. सूर्य का प्रचार लोगों में ज्ञान का आलो लाएगा."

"पर मैं तो इस के विवाह के लि सोच रहा था."

"जन्म, युवावस्था, विवाह और मृ यही क्या जीवन है? सोमप्रभु घर का य एक भी प्राणी धर्म कार्य में जीवन दे दे है तो उस से पूरे कुल का उद्धार हो जाता सुप्रिया में गुण हैं, संस्कार हैं. वह सूर्यदेव वाणी बनेगी, यह मेरा विश्वास है."

सुप्रिया ने जब यह सुना तो ल धरती ही हिल गई है. उस का अंतर आं लित हो उठा, "नहीं, नहीं." वह कटी हु छिन्नभिन्न लता की तरह बिखर गई, "नहीं यह नहीं होगा." रहरह कर आंखों में पुलि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की छवि तैर जाती, उस के अधरों पर यह शब्द बारबार गूंज उठते, "नहीं, नहीं... कभी नहीं."

दासी सुभद्रा उस के पास यह समाचार लाई थी. उसे नीचे अतिथि कक्ष में बुलाया गया था.

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगी. जा, मेरे लिए थोड़ा सा विष ला दे."

"हिस्स, कैसी गंदी बात...देवकन्या होना तो युगयुग के सत्कर्मों का फल है. हजारों स्त्रीपुरुष आएंगे, जयजयकार करेंगे. आरती होगी. सच इस जीवन से तो वही जीवन अच्छा है. काश, मुझ से कोई कहता..." वह बोली.

तब तक द्वार पर सेवक अनंग ने आ कर पुनः वही बात दोहराई थी.

सिसकती हुई सुप्रिया जब नीचे उतरी तब वह बारबार गिरतेगिरते बची. हर बार कदम लड़खड़ाते से पड़ रहे थे.

"पुलिंद, मैं...अवश...हूं..." इस से आगे सुप्रिया कुछ न बोल सकी और वह सिसकती हुई पुलिंद की बांहों में सिमट गई.

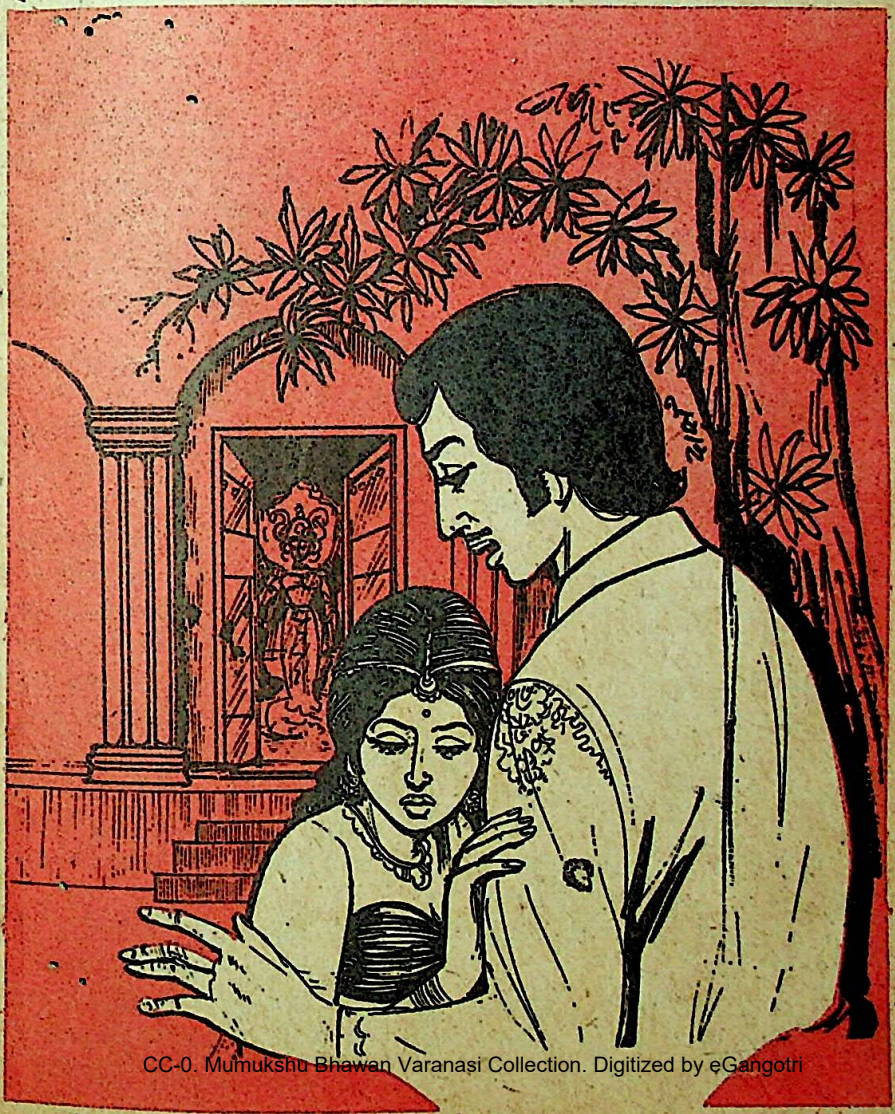

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पासपड़ोस के घरों तक यह सूचना पहुंच गई थी. आचार्य रघुकुल के रथ के चारों ओर भीड़ लग गई थी.

जब सुप्रिया उन के साथ बाहर आई, तब उस ने सुना, आचार्य के साथसाथ उस की भी जयजयकार हो रही थी.

तभी सुभद्रा ने सूचना दी, पूज्य पिता की आज्ञा है कि वह कुलदेवी के दर्शन कर ले.

भवन के पीछे आम्र वाटिका में कुलदेवी का मंदिर था. वह जब वहां पहुंची तो उस ने देखा, वहां पुलिंद खड़ा था.

"पुलिंद, मैं...मैं अवश..." आगे वह कुछ बोल न सकी. उस के स्वर हिचकियों में डूब चले. सिसकती हुई वह पुलिंद की बाहों में सिमट गई.

"मुझे कहीं ले चलो, पुलिंद," वह बोली.

पुलिंद के अधर उस के अधरों पर झुक आए थे. बाकी जो कुछ वह कहना चाह रही थी उसे निरर्थक ध्वनियां स्पष्ट करती रहीं.

"सुप्रिया, मैं तुम्हारा हूं. बस, तुम्हारा. मैं अपहरण विवाह नहीं करूंगा. मैं हर दिन, हर क्षण तुम्हारी प्रतीक्षा में रहूंगा, सुप्रिया."

तभी सुभद्रा घबराई हुई आ कर बोली, "आर्य, आचार्य भी इधर ही आ रहे हैं."

पुलिंद अवश भाव से सुप्रिया को अपने से अलग कर जाने लगा. पर मन नहीं माना, वह अचानक फिर मुड़ा और सुप्रिया को बांहों में भर कर बोला, "सुप्रिया! मैं आऊंगा, जरूर आऊंगा. तुम मेरी प्रिया हो. तुम्हें सुखी देखना ही ही कर्म है." और वह बुदबुदाता हुआ मंदिर के पिछवाड़े के सघन आम्र कुंजों में विलीन हो गया.

तब तक आचार्य रघुकुल ने आ कर कहा, "कुलदेवी का आशीर्वाद ले लिया, बेटी? आओ, चलें." और वह भी

कुलदेवी की पूजा कर, सुप्रिया को सा ले मंदिर से बाहर निकल गए.

सुप्रिया को कुछ होश नहीं थ जैसे, वह तेज नदी के प्रवाह में तिनके तरह बहती चली जा रही थी.

आश्रम में आते ही उस का कायाक हो गया. वस्त्र बदल गए. हलके पीले में डूबे परिधान, माथे पर केसर का तिल और गले में रुद्राक्ष की माला. यही प्रक सोपान था उस के त्यागमय जीवन

सुबह उठते ही मानसिक पू निर्विकल्प मन की ज्योतिर्बिंदु पर एकाग्र उपनिषदों, पुराणों का पठनपाठन सूर्य उपासना में नियमित यज्ञ एवं भज पूजन यही दिनचर्या थी, उस देवक की.

सुप्रिया बदल गई. दीक्षा होते नाम भी बदल गया. वह अब हिर हो गई थी. चंद्रप्रभा के उत्सव पर उस ने पहली बार जगत को निस्सार पर आसन ग्रहण किया तो जनता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

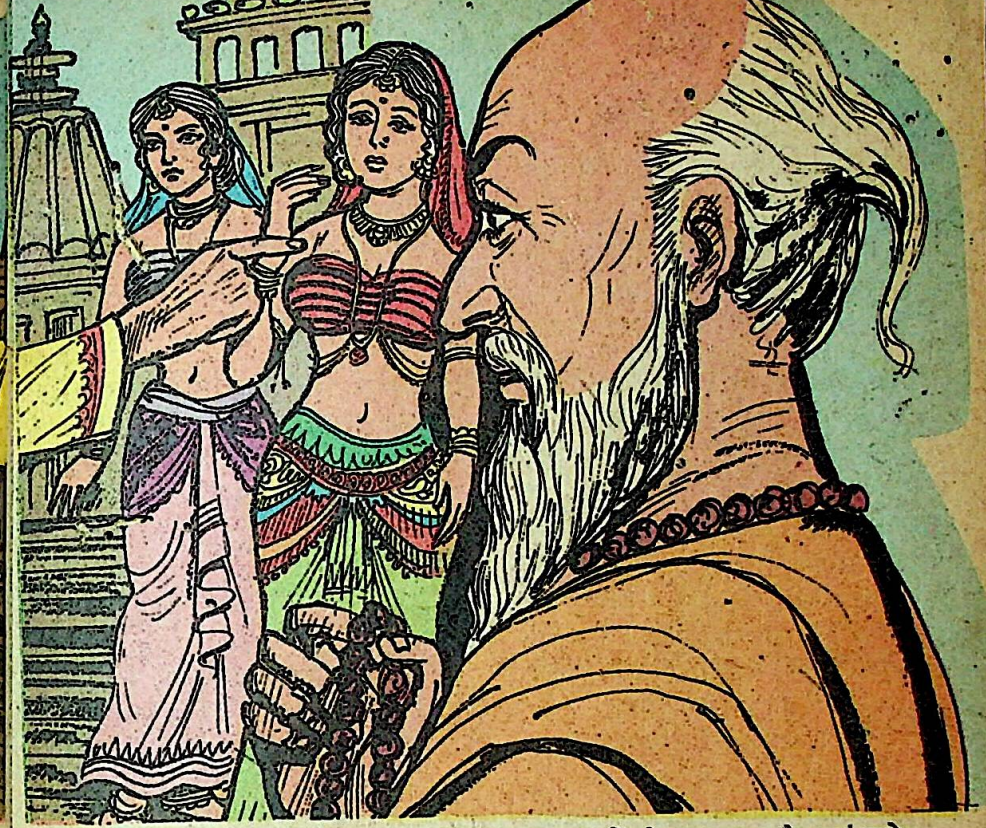

मुग्ध सी रह गई. धाराप्रवाह वाणी बहती रही. बीचबीच में शुद्ध संस्कृत के श्लोक और उन की व्याख्याएं, छोटीछोटी कहानियां, जनता उठने का नाम ही न लेती थी.

आचार्य रघुकुल बोले, "गार्गी का अवतरण है यह. यह एक दिन स्वयं ऋचाएं लिखेगी...हिरण्यमयी सूर्यपुत्री है."

हिरण्यमयी और उस की सखियां, अब देवकन्या बन गई थीं. प्रभास पर्व के मेले में जब वह आचार्य के साथ पहुंचीं तो जनता ने उन के रथ से अश्व खोल दिए. उमड़ पड़ा अपार जन कोलाहल, "हम खींचेंगे इन का रथ. ये देव कन्याएं हैं, देवलोक से आई हैं." जयघोष से गगन गूंज उठा.

देवकन्याएं सूर्यदेव की उपासना का महत्त्व समझा रही थीं. नारी जाति के पुनर्जागरण की घोषणा कर रही थीं.

पर उस दिन जब हिरण्यमयी से सुप्रिया ने पूछ ही लिया, "क्यों, अब तो सुखी है?"

हिरण्यमयी अवाक रह गई. सुप्रिया यहां कैसे...? उस के आते ही हिरण्यमयी हार गई. सुप्रिया अशांत...वह भीड़ से बचना चाहती थी. और इसी लिए सब से दूर था उस का निवास. कोलाहल से दूर, थकीहारी जब अपनी कुटिया में लौटती, तब पाती, वह नितांत अकेली है.

उस रात जब वह श्रीमद्भगवद्गीता के शंकरभाष्य को पढ़तेपढ़ते सो गई थी, तब उसे लगा, उस के भीतर से कोई औरत बाहर निकल कर परेशान सी इधरउधर भाग रही है. चारों ओर वन ही वन है. भागतेभागते जब वह किनारे तक पहुंचती है तो दिखता है, चारों ओर गहरी खाई, और फिर बीहड़ वन.

"नहीं, नहीं." वह चीख उठी.

"तुम्हें जो कुछ कहना है, स्वयं कहो, इन के यौवन को वाहन तो मन बनाओ," पुलिंद बोला.

"क्या है, हिरण्ममयी?" पास में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेटी नई देवकन्या ने पूछा.

"शायद सपना था."

"हां, तुम बहुत डर गईं. पसीने में नहा गई हो," वह बोली.

उस रात हिरण्यमयी सो नहीं पाई, सुप्रिया जो बन गई थी.

नंदेश्वर का उत्सव था.

आचार्य रघुकुल की भी टोली उत्सव में भाग लेने गई थी. हिरण्यमयी के उपदेशों की चर्चा चारों तरफ फैल गई थी. जब वह मंच पर आई तो उस ने देखा चारों ओर जनसमुद्र उमड़ पड़ा था. आचार्य रघुकुल बोल रहे थे और वह दूर मंच पर बैठी हुई थी. तभी अचानक उस की दृष्टि भीड़ को चीरती हुई दाएं पार्श्व पर गई, और घनी काली दाढ़ी में से झांकती दो आंखों पर जा कर ठहर गई.

लगा, सम्मोहन सा हो गया है.

और तभी उसे लगा, जाने क्या है, जो उसे मथे डाल रहा है. हिरण्यमयी डूबती चली जा रही थी, और सुप्रिया अपने अनुरागी नेत्रों से झांक रही थी.

लगा, वह मंच पर ही गिर जाएगी.

आचार्य रघुकुल ने देखा तो उन्होंने अन्य देवकन्याओं को संकेत दिया. वे उसे सहारा दे कर नीचे ले गईं.

कुछ ही देर बाद जब सभा समाप्त हुई तो उस ने पाया कि उस की कुटिया के पास ही कोई है, जिसे ले कर अन्य देवकन्याएं विवाद कर रही हैं.

"मैं एक बार आर्या हिरण्यमयी से मिलना चाहता हूं."

"कह तो दिया, उन से मिलना मना है. आचार्यजी की अनुमति के बिना आप यहां कैसे आए?"

"मैं...मैं बस एक बार उन्हें देखना चाहता हूं."

"उन का स्वास्थ्य ठीक नहीं है."

"तभी तो मैं आया हूं."

"पर देवकन्या के लिए किसी पुरुष से एकांत में बातें करना वर्जित है."

"जो स्वयं देवता है, वह इस हाड़मांस के पिंजर से भयभीत है," वह हंसा, "विचित्र विडंबना है, देवता को आत्मसंयम पर भरोसा नहीं रहा."

और इस के बाद...हिरण्यमयी सो गई. सुप्रिया जाग गई. वे दोनों काली आंखें उसे जगाने ही तो आई थीं.

वह दरवाजे पर खड़ा बोल रहा था, "क्षमा चाहता हूं, देवकन्या, नहीं... सुप्रिया. आज तुम्हें देखा तो लगा सचमुच मैं अपनेआप को भूल गया हूं."

"पर...तुम?"

"मैं पुलिंद."

"पर,...मैं..." वह अवश भाव से कातर स्वर में बोली.

"सुप्रिया, विगत का वह तुम्हारा दान बलात था. अब तुम वयस्क हो. तुम्हें वरण का अधिकार है...और मुझे भी. सच कहो, क्या तुम प्रसन्न हो?"

सुप्रिया चुप...कहती भी क्या?

"यह रहा वह, वह रहा वह." शोर मचाती हुई देवकन्याएं आचार्य रघुकुल को वहां ले आईं.

"युवक,..कौन हो? क्या तुम्हें अधर्म से लज्जा नहीं आती?"

"अधर्म?" पुलिंद हंसा, "आचार्य, सूर्योपासना के नाम पर श्रेय और प्रेय कमाना कर्म कब से हो गया है?... वणिक धर्म संभव है?"

"क्या?" आचार्य चीखे.

"हां, जो स्थितप्रज्ञ है, वहां अहंकार का अभाव है. यह तुम्हारा अहंकार ही है, जो तुम इन कन्याओं को बलात देवकन्या बना कर इन का जीवन अस्वाभाविक बना रहे हो. क्या शास्त्रों ने यही कहा है?"

"तुम मुझे शास्त्र पढ़ाओगे?"

"चाहो तो. मैत्रेयी याज्ञवल्क्य की पत्नी थी, देवकन्या नहीं. प्रचार वहीं जन्म लेता है, जहां अहंभावना विराट होती है. तुम्हें जो कुछ कहना है, स्वयं कहो. इन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के यौवन को वाहन तो मत बनाओ."

और फिर वह सुप्रिया की ओर देख कर बोला, "मैं ने तुम्हें वचन दिया था, आज आया हूं. मेरे पास देवलोक का साम्राज्य तो नहीं है. पर एक छोटा सा घर अवश्य है. मैं तुम्हें पत्नी बनाना चाहता हूं. यही संकल्प तुम्हें दे सकता हूं."

"हिरण्यमयी, इस पामर से कह दो, यहां से चला जाए," आचार्य रघुकुल चीखे.

पर तभी कुटिया का द्वार अचानक बंद हो गया.

"पुलिंद, देख लो...मेरी देवकन्या तुझ पामर के प्रलोभन में नहीं आएगी. जा, अपना मुंह कहीं और काला कर."

पुलिंद का मुख तमतमाया था. उस ने अपने इर्दगिर्द की अन्य देवकन्याओं की ओर देखा. वे सकपका गई थीं.

"इन्हें क्या देखता है? जा, जा... या बुलाऊं द्वारपालों को?"

तभी अचानक कुटिया का द्वार खुला. आचार्य रघुकुल अवाक रह गए. सामने सुप्रिया खड़ी थी. हिरण्यमयी कहीं खो गई थी. वह अपनी उसी पुरानी साड़ी में, जिसे वह पहली बार पहन कर आश्रम में आई थी, बाहर निकली.

"पुलिंद...." बाकी सब सिसकियों में डूब गया.

"मैं ने कहा था न, मैं आऊंगा. मैं न्यायपंडित से मिल आया हूं. तुम वयस्क हो गई हो. आचार्य तो क्या, अब तुम पर किसी का कोई अधिकार नहीं. अपने जीवन भविष्य के ऊंचनीच की निर्माता तुम स्वयं हो. उस दिन तुम ने कहा था, मुझे कहीं ले चलो. तब सुप्रिया, यह संभव नहीं था. आज तुम्हें लेने आया हूं. मुझे आश्रय दोगी?"

सुप्रिया चुप. आंखों में आंसू ही आंसू. आनंद क्षण...

"दोगी न, सुप्रिया! बड़ी दूर से चल कर मांगने आया हूं तुम से स्नेह संबल," पुलिंद ने फिर कहा.

"हां, पुलिंद," कहती हुई सुप्रिया उस की बांहों में सिमट गई. बड़ी देर बाद सिसक कर बोली, "मैं देवकन्या नहीं, सुप्रिया बनी रहना चाहती हूं...प्रिया, मेरे प्रियतम!" अधर शब्दों को अपने भीतर सुरक्षित सहेजते चले गए थे. ●

बाढ़ की विभीषिका

हर साल आने वाली बाढ़ों से करोड़ों रुपयों का नुकसान हो जाता है. बाढ़ की चर्चाएं ही अखबारों की सुर्खियां बन जाती हैं. सैकड़ों बाढ़ राहत समितियां सक्रिय हो जाती हैं. पर बाढ़ का प्रकोप कम होते ही सब चुप. आखिर बाढ़ की यह विभीषिका हर साल जनजीवन और संपत्ति को नष्ट कर के क्यों चली जाती है? बाढ़ के कारण और उन से बचाव के स्थायी वैज्ञानिक उपाय...

मुक्ता के फरवरी (द्वितीय) 1979 अंक में पढ़ें.

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

मुक्ता पढ़िए आगे बढ़िए.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • भागीरथ सेघवाल

खोया हुआ सुख

न जाने क्यों रेखा अपने वर्तमान को अतीत पर न्यौछावर करने की गलती करने पर तुली थी...

नितिन ने कमरे में प्रवेश किया. रेखा अनमनी सी सुहागसेज पर बैठी थी.

उस के सुंदर गोरे मुख पर थकान और विरक्ति स्पष्ट झलक रही थी. सजे हुए कमरे में फैली बेला की मादक गंध के बीच यह क्लांत चेहरा नितिन को विचित्र सा लगा.

"लगता है आप रेलगाड़ी के लंबे सफर से काफी थक गई हैं."

"नहीं, मैं ठीक हूं," रेखा ने ठंडे और बेजान स्वर में जवाब दिया.

"क्या तबीयत ठीक नहीं है? लाओ, देखूं तो," नितिन ने रेखा का हाथ थाम कर देखा, बुखार तो नहीं है. प्रथम स्पर्श की रेखा पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई. किसी तरह के कंपन, लाज अथवा रोमांच की कोई अनुभूति नहीं.

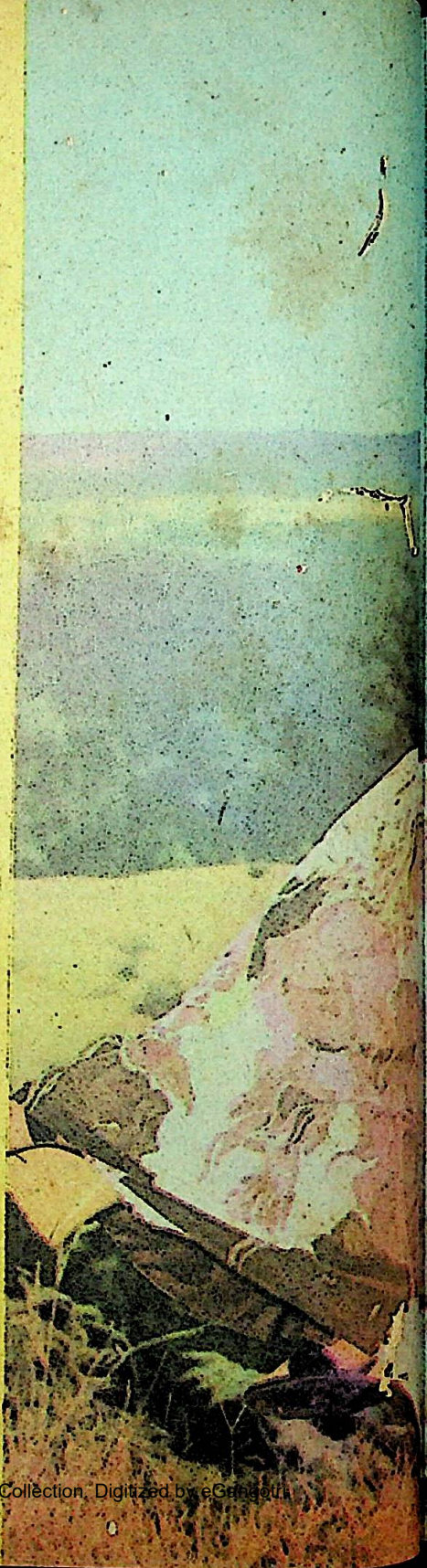

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

wan Varanasi Collection. Digitized

रेखा का व्यवहार नितिन की समझ में नहीं आ रहा था. प्रथम मिलन के समय सहज स्वाभाविक लज्जा, संकोच, उल्लास, उत्कंठा, रोमांच जैसा कुछ भी उस के व्यवहार में नहीं था. कुछ थी तो एक अभेद्य जड़ता.

"जब मैं ने आप को देखा और पसंद किया था तब मैं ने आप की इच्छा भी जाननी चाही थी. उस समय आप मौन रहीं. उस चुप्पी को मैं ने आप की 'हां' समझा था. लेकिन आप के इस व्यवहार से लग रहा है कि मैं ने गलत समझा था," नितिन हंसते हुए बोला.

"नहीं तो," रेखा की तरफ से एक ठंडा सा अनपेक्षित उत्तर मिला.

"तो यह रात ऐसी ही बातें करने के लिए होती है?"

"जो बातें की जाती हैं, उन के लिए मैं ने आप को मना तो नहीं किया है."

रेखा के इस व्यवहार से नितिन का स्वाभिमान आहत हो उठा. वह कब तक धैर्य रखता?

"ठीक है, आप सो जाइए," कहता हुआ वह कमरे से बाहर निकल गया.

रेखा का मन हुआ कि वह जाते हुए नितिन को बांहों में बांध कर रोक ले, पर एक भयंकर आशंका बेड़ी बन कर पांवों में पड़ी रही और वह निश्चेष्ट सी बैठी रह गई.

यह थी रेखा की सुहागरात. उसे पता नहीं उस रात नितिन कहां सोया, सोया भी या नहीं. वह स्वयं भी कहां सो पाई थी. देर रात तक अपने अतीत की पुस्तक के धुंधले पृष्ठ उलटतीपलटती रही थी और तकिए को अपने आंसुओं से भिगोती रही थी.

रेखा के पिता बनारसीदास सेठ बुलाकीराम के यहां एक मामूली मुनीम थे. वह एक सीधेसादे आदमी थे. उन का वेतन इतना कम था कि घर का खर्च भी मुश्किल से चलता था. ऊपर से एकएक कर के पांच लड़कियां पैदा हो गई थीं. रेखा उन सब में बड़ी थी. उस की मां गरीबी में लंबेचौड़े परिवार का भार ढोतेढोते टूट चली थी और अकसर बीमार रहती थी. इस कारण बचपन से ही रेखा पर घरगृहस्थी का भार आ पड़ा था और वह आठवीं से आगे नहीं पढ़ पाई थी.

छोटी उम्र में ही रेखा जिंदगी के दो धुवों को नजदीक से देख चुकी थी. एक ओर उस के घर में गरीबी का तांडव था तो दूसरी ओर सेठ बुलाकीराम की कोठी पर सुखसुविधाओं का अंबार लगा था. सेठ की लड़की तारा की अंतरंग सखी होने के कारण आए दिन उसे थोड़ी देर के लिए उस की झलक देखने को मिल जाती थी.

वह मन ही मन सोचती, 'जिंदगी तो इन की है. हम तो कोल्हू के बैल की तरह जिंदगी का बोझ ढोए जा रहे हैं.'

गरीब के घर जन्मी रेखा रूप की धनी थी. चंपा के फूल जैसा उस का रंग और सांचे में ढली देह को बांहों में बांध कर तारा कहती, "मैं यदि लड़का होती तो तुझ से ही शादी करती, चाहे मुझे उस की कितनी ही कीमत क्यों न चुकानी पड़ती."

तारा सच कहती थी. अपनी काया पर खिले यौवन के वसंत का मोहक रूप देख कर रेखा स्वयं भी मुग्ध हो जाती थी. दूसरों की ललचाई नजरों का स्पर्श अपने अंगों पर महसूस करतेकरते उसे पता चल गया था कि एक धन अवश्य उस के पास है और वह है रूप और यौवन का धन. पर वह यह सोच कर उदास हो जाती कि किसी गरीब की बीवी बन कर उसे रातदिन घरगृहस्थी में खटना पड़ेगा और उस के मुंह से दीर्घ निःश्वास निकल जाती, 'काश वह तारा की जगह होती.'

तारा का विवाह हुआ. विवाह इस शान से हुआ कि रेखा की आंखें देखती ही रह गईं. कपड़े, जेवर और सुखसुविधा का इतना सामान दिया गया था कि जिंदगी भर वह कुछ न खरीदे तो भी काम चल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेखा पूरे मन से नितिन की सेवा करती, उस की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखती पर जब नितिन उस के मन की थाह लेना चाहता, वह पत्थर की मूर्ति बन जाती.

जाए. दो महीने बाद जब तारा ससुराल से लौटी तो उल्लास और सुख की आभा से उस का चेहरा चमक रहा था.

एकांत के क्षणों में तारा ने उसे अपनी बाहों में भर कर ढेर सारी अंतरंग बातें बता दी थीं. विवाह, हनीमून और सुहागरात की रोमांचक बातें. महीने भर तक दोनों ने श्रीनगर, शिमला, मसूरी और नैनीताल जैसी जगहों में भी सामीप्य का सुख भोगा था. उस समय की ऐसी कितनी ही बातें तारा ने अपनी सखी को निस्संकोच बता दी थीं. मानव मन की सहज प्रकृति के अनुसार तारा ने तो भोगे हुए सुख को अभिव्यक्त कर के अपार सुख पाया था. पर बेचारी रेखा को तो यह सब सुन कर अपनी गरीबी पर रोना ही आया था.

तारा के भाई विनोद पर रेखा के रूप-यौवन का ऐसा जादू चला था कि वह उसे चाहने लगा था. रेखा का कोठी पर आनाजाना था. विनोद ने अपने मन की बात पहले आंखों ही आंखों में कही, फिर जबान से भी. विनोद स्वस्थ युवक था. रेखा की दमित इच्छाएं अपनी राह बह निकलीं. विनोद ने उसी से विवाह करने की कसम खाई थी. भोलीभाली रेखा सेठ बुलाकीराम की पुत्रवधू बनने के सपने देखने लगी. यह सपना उस के मन में सतरंगा इंद्रधनुष बन कर खिल उठा.

रेखा सपनों की दुनिया में ऐसी खोई कि उसे यथार्थ का भान भी न रहा. वे दोनों चोरीचोरी मिलते. मिलन में समय पंख लगा कर उड़ जाता पर तृप्ति नहीं होती. कुछ समय तक वे शारीरिक मर्यादाओं में बंधे रहे, पर बाद में तो वे भी टूट गईं, उत्तेजना में आकंठ डूब कर वे सब कुछ भूल जाते.

सपनों के शीशमहल पर यथार्थ की एक ठोकर लगते ही रेखा ने स्वयं को सब ओर से घिरा पाया. वह मां बनने वाली थी. विनोद को जब उस ने अपनी स्थिति बताई तो उस का सारा साहस फुर्र हो गया. उस ने रेखा को समझाया, "तुम किसी तरह इस से मुक्ति पा लो. शादी एकदम तो हो नहीं सकती और किसी तरह यदि हो भी गई तो लोग तरहतरह की बातें करेंगे. कितनी बदनामी होगी."

"आप को यह सब पहले सोचना चाहिए था."

"लेकिन अब जो स्थिति बन गई है, उस से निपटो."

विनोद द्वारा मंझधार में छोड़ देने पर उस ने आत्महत्या करनी चाही, पर उस में सफल नहीं हो सकी. मांबाप ने बचा लिया. उन्होंने गर्भपात करवा कर उसे मुक्ति दिलाई. फिर शादी के लिए दौड़धूप शुरू कर दी. संयोग से उन्हें नितिन जैसा योग्य और कमाऊ लड़का मिल गया और उन्होंने उस से रेखा का विवाह कर दिया.

और कोई चारा न देख रेखा ने विवाह स्वीकार तो कर लिया, पर उसे जीवन से विरक्ति हो चुकी थी. साथ ही अपने किए अपराध का बोध भी उसे पुनः सामान्य स्थिति में लौटने नहीं दे रहा था. वह इस बात को ले कर भयभीत थी कि कहीं उस के कलुषित अतीत का कच्चा चिट्ठा नितिन जान गया तो उस का क्या होगा. यही सोच कर वह नितिन से बची रहना चाहती थी. पर वह यह सोच कर व्यथित भी थी कि वह उसे बिना किसी अपराध के बहुत बड़ी सजा दे रही है.

यही सब सोचती हुई भीतर ही भीतर घुटती वह देर रात तक सुहागसेज पर

(शेष पृष्ठ 189 पर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कंचन की काया में...

कंचन की काया में
रुपहली गंध है.
मौसम तो आप की
जुल्फों में बंद है.

हौले से बोल बोले
खुशियों के फूल झरे.
जहांजहां दृष्टि गई
हो गए मैदान हरे.

शहनाइयां बजने लगीं
प्रीतम के गांव में.
होंठों पे गीत आए
पीपल की छांव में.

रूप से तुम्हारा तो
कोई अनुबंध है.
मौसम तो आप की
जुल्फों में बंद है.

दर्पन सा धुलाधुला
रूप का खजाना.
मुट्ठी में आप की
कैद है जमाना.

यौवन के हिंडोले में
झूल रहा मन.
उपवन सा खिल रहा
प्रीत का आंगन.

भौंरों और तितली को
बांहें पसंद हैं.
मौसम तो आप की
जुल्फों में बंद है.

—पूरन सरमा

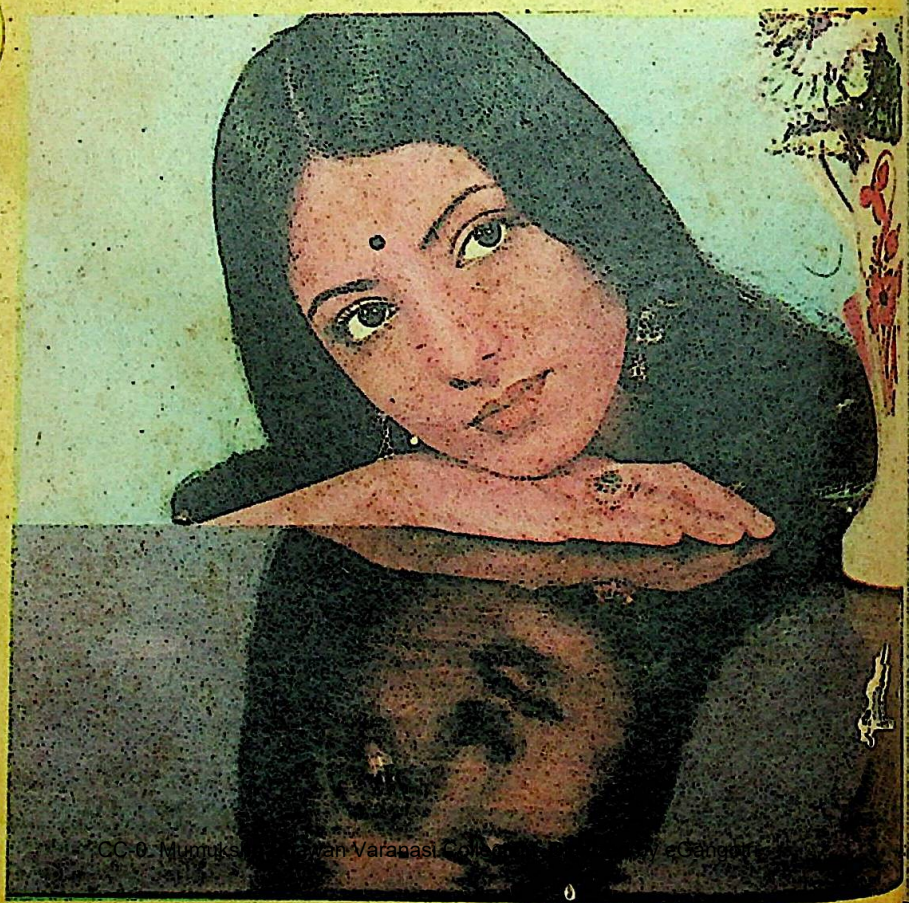

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात ऐसे बनी

मेरा एक दोस्त हम लोगों को किसी न किसी तरह चाय पिलाने के लिए राजी कर लेता था. लेकिन अपनी बारी में पैसे न होने आदि का बहाना बना कर बच निकलता था.

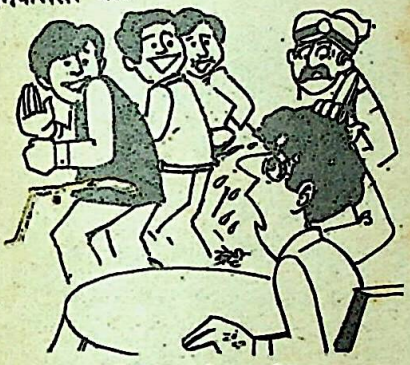

एक रविवार को हम ने एक योजना बनाई. हम लोग उस मित्र के साथ एक रेस्तोरां में गए और सब ने अपनी अपनी पसंद की चीज खाई.

इसी बीच एक दोस्त ने कहा, "क्यों न हम बेरे को उल्लू बनाएं. एक कहेगा, बिल मैं चुका दूंगा. दूसरा कहेगा, नहीं बिल मैं चुकाऊंगा. और इस तरह बहुत देर तक उस को बेवकूफ बनाएंगे."

उस मित्र को यह बात बहुत जंची. एकदो लड़कों के बाद उस का नंबर आया. वह बड़ी शान से बोला, "बिल मैं चुकाने वाला हूं."

"बहुत अच्छा," हम में से एक ने कहा और हम सब बाहर आ गए. अब तो उस की सूरत देखने लायक थी.

—मनोज पांडेय

✦

मेरी एक सहेली शादी के दो साल बाद ही विधवा हो गई. वह ससुराल में रहती है. उस की एक विधवा ननद है. वह भी उसी के पास रहती है. मेरी सहेली की सास बहुत झगड़ालू है और जब भी उस से झगड़ती है तो हमेशा यही ताना देती है, "मेरे बेटे को तो खा गई, अब हमें खा रही है."

इन कड़वी बातों को सुन कर बेचारी दिल ही दिल में रोती है. उस की ननद दिल से बहुत अच्छी है. वह हमेशा उस का पक्ष लेती है और अपनी मां को इन बुरी बातों को कहने के लिए मना करती है.

एक दिन फिर सासबहू में झगड़ा हुआ और सास ने जब लड़के को खा जाने वाली बात कही तो तुरंत मेरी सहेली की ननद बोली, "मां, मैं भी तो तुम्हारे दामाद को खा गई और अब तुम्हें खा रही हूं."

उस का इतना कहना था ही सास का चेहरा फीका पड़ गया और उस दिन से उस की लड़नेझगड़ने की आदत छूट गई.

—इंदुमती दुपारे
(सर्वश्रेष्ठ)

✦

मेरे पिताजी कोई भी गलती हो जाने पर कभी नहीं डांटते. जब भी कोई चीज टूट जाती है अथवा खो जाती है तो वह यही कहते हैं, "कोई बात नहीं, बेटा, नई ले देंगे."

एक बार मेरे छोटे भाई की हाथ की हड्डी टूट गई. पिताजी रात के समय घर आए. जब वह उपन्यास पढ़ने में व्यस्त थे तो छोटा भाई उन के पास गया और बोला, "पिताजी, मेरी बाजू टूट गई है."

वह पढ़ने में इतने मस्त थे कि उन्होंने बिना सुने ही जवाब दिया, "कोई बात नहीं बेटा, नई ले देंगे." उस के बाद जब उन्होंने अपनी बात पर ध्यान दिया तो बहुत शर्मिंदा हुए.

—रमा बजाज ●

इस स्तंभ के लिए अपने संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने वाले प्रत्येक संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें दी जाएंगी.

अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: स्तंभ विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या

एन्फ़ील्ड-200

ख़रीदना शादी करने जैसा है ?

कई लोग यही मानते हैं. देखिए ना···

"एन्फ़ील्ड-२०० सुंदर, सलौनी है. सजीले जवान इसके सौंदर्य पर रीझते हैं — फिर इसके साथ, गुणों और काम का आनंद पाते हैं. अधिकतर, यह प्रेम-विवाह बनता है, और दूसरे इस मर्द से ईर्षा करते हैं. अक्सर, स्नेही माता-पिता यह संजोग बिठाते हैं. कभी-कभी, कुछ इंतज़ार होता है — जैसे सगाई के दिन हों."

आपका क्या ख़्याल है ? ज़रा इस सलौनी को देखिए, टटोलिए, सवारी कर देखिए. सदा के लिए इसके सुखी मालिक बन जाएंगे !

एन्फ़ील्ड-२००:
शुरू से डीलक्स

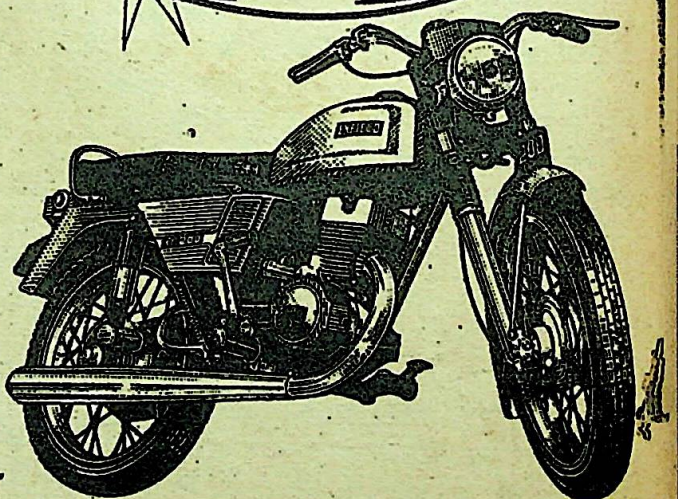

ADWAVE/EIM/960 HIN

दि एन्फील्ड इंडिया लिमिटेड.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख : लिली जैन

खट्टे मीठे बोल

मीठा बोलने वाला व्यक्ति हर क्षेत्र में सफलता पाता है. सफलता की यह कुंजी आप के पास भी है या नहीं?

मेरी रिश्ते में एक भाभी हैं. स्वभाव की वह काफी अच्छी हैं, पर उन के बात करने का ढंग तथा लहजा कुछ ऐसा होता है कि सुनने वाले का मन खट्टा हो जाता है. एक दिन उन की रसोई में से बड़ी अच्छी गंध आ रही थी. मैं ने अंदर जा कर देखा तो वह बैठी हुई थाली में स्वादिष्ट व्यंजन सजासजा कर रख रही थीं. पूछने पर मालूम हुआ कि उन का छोटा भाई आया हुआ है. थोड़ी देर में वह अपने भाई के सामने थाली रखते हुए बोलीं, "ले, खा ले पेट भर."

"मैं ने चौंक कर उन की तरफ देखा. उन का चेहरा बिलकुल भावहीन तथा सपाट था. चेहरे पर मुसकान की कोई किरण तक न फूटी थी. पर बेचारे भाई की सूरत खिसियानी सी हो गई थी. फलस्वरूप वह आधा पेट भोजन कर के ही उठ गया.

इस के विपरीत मेरी एक पड़ोसिन हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो ज्यादा पढ़ीलिखी नहीं हैं. देखने में भी बस ठीक ही हैं. घरगृहस्थी चलाने की भी ज्यादा परवा नहीं करतीं. फिर भी उन के परिचितों का दायरा बहुत बड़ा है. महल्ले में वह काफी प्रसिद्ध हैं. कारण यही है कि वह हर किसी से मुसकरा कर बोलती हैं. कोई पासपड़ोस का भी घर पर आ जाए तो चायनाश्ता कराए बिना जाने नहीं देतीं.

मैं ने उन से उन की इस आदत की तारीफ की तो वह शरमा कर बोलीं, "बहन, इस दुनिया में और है ही क्या? जरा सा किसी से हंस कर दो शब्द बोल लिए तो अपना बना लिया. कौन सा हमें सारी उम्र इन पड़ोसियों के बीच साथसाथ रहना है?"

घर वालों को शुरू से ही उन की यह आदत बहुत पसंद है. उन के पति भी उन से बहुत खुश रहते हैं, क्योंकि शाम को जब वह थकेमांदे दफ्तर से लौटते हैं तो उन्हें प्यार से खाना खिलाने वाली वही होती हैं. पति का कहना है कि उन की थकान तो पत्नी से बातें कर के ही उतर जाती है.

कटु बातें क्यों?

एक सहेली का विवाह था. घर पर सब नजदीकी रिश्तेदार आए हुए थे. उस के एक चाचाजी बहुत हंसोड़ तबीयत के हैं, पर मजाक करतेकरते वह प्रायः इतनी कटु बातें भी करने लग जाते हैं कि पल भर पहले दिल खोल कर हंसने वाला व्यक्ति दूसरे ही क्षण दिल खोल कर रोने लगता है.

चाचाजी अपनी मंडली जोड़े बातें बनाबना कर लोगों को हंसा रहे थे. तभी उन की भाभी ने आ कर कहा, "अरे भैया, तुम यहां बैठे बातें बना रहे हो. भतीजी की शादी है. बरात आने वाली है. चलो, उठ कर काम में हाथ बंटाओ."

चाचाजी अपने मुंहफट अंदाज में बोले, "भाभी, लड़की आप की है. आप अपने सिर का बोझ उतार रही हैं. अब काम भी आप ही करिए, मैं तो नहीं करता."

मेरी भावुक सहेली वहीं बैठी थी, वह 'बोझ' शब्द सुन कर अंदर भाग कर चली गई और फूटफूट कर रोने लगी.

मीठा बोलने वाला व्यक्ति हर क्षेत्र में सफलता पाता है. एक बार मैं ट्रेन से सफर कर रही थी. वहां मुझे दो बिलकुल विरोधी स्वभाव वाले व्यक्तियों से मिलने का इत्तफाक हुआ. मेरे सामने वाली सीट पर काफी जगह खाली थी, जिसे दो व्यक्ति आराम से घेर कर बैठे थे. एक अधलेटा हो कर उपन्यास पढ़ने में व्यस्त था तो दूसरा पैर ऊपर कर के आराम से सोने के मूड में था.

इतने में कहीं से वातावरण को चीरती हुई आवाज आई जिस ने सारे डब्बे में हलचल मचा दी. "ऐसे पैर पसारे पड़े हैं जैसे ट्रेन इन के बाप की हो." एक नौजवान पास आ कर जोरजोर से बोलने लगा था. "आखिर हम ने भी तो टिकट ले रखा है. चलिए, हटाइए अपने पैर, हम भी बैठेंगे."

यह सुन कर उन में से एक व्यक्ति भी जिद में आ कर ऊंची आवाज में बोलने लगा और उस नौजवान को बैठने नहीं दिया. हार कर वह दूसरे डब्बे में चला गया.

अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकी तो एक प्रौढ़ सज्जन डब्बे में चढ़े. हमारे सामने वाली ही बर्थ पर जगह देख कर वह नम्रता से उस पर बैठे व्यक्ति से बोले, "भाई साहब, थोड़ी सी जगह दीजिएगा. देखिए दुबलापतला सा तो हूं ही और फिर अगले ही स्टेशन पर उतर जाऊंगा."

हम लोग इसी प्रतीक्षा में थे कि फिर कुछ झगड़ा होगा. मगर उस व्यक्ति ने बड़े प्यार से और शालीनता से पैर समेटते हुए कहा, "हां...हां, क्यों नहीं. आप भी आराम से बैठिए."

पड़ोस में नयानया मकान बना था. मकान बनवाने के लिए पड़ोसी ने कर्ज भी काफी ले लिया था. अपना खुद का मकान देखने के उन के जो सपने थे, उन्होंने अथक परिश्रम से पूरा कर लिया. उन्होंने अपने रहने के लिए पर्याप्त स्थान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोड़ कर किराए पर तीन कमरे देने के लिए भी निकाल दिए.

कुछ समय पश्चात उन्हें एक किराएदार भी मिल गया. पड़ोसी इस बात से खुश थे कि चलो धीरेधीरे कर्ज भी उतर जाएगा. किराएदार भी अच्छा व्यक्ति मालूम पड़ता था. वह ट्रक में भर कर अपना सामान ले आया. सामान धीरेधीरे अंदर आने लगा. मजदूर अलमारी, बड़े बक्स आदि भारीभारी सामान सावधानी से ले जाने के बजाए उसे खींच कर जल्दीजल्दी रख रहे थे. जबतब बक्स दीवारों से टकरा गए, जिस से दीवारों का प्लास्टर नयानया बना होने के कारण एकदो जगह से टूट गया.

पड़ोसी अपनी नईनई दीवारों और फर्श आदि की दुर्गति देख कर बहुत बेचैन और दुखी हो रहे थे. वह कुछ देर तो सहन करते रहे. फिर जब उन से न रहा गया तो वह किराएदार से बोले, "भई, जरा मजदूरों से कह दो कि सामान संभाल कर रखें. सब फर्श और दीवारें खराब हो रही हैं."

किराएदार उन की बात सुन कर भड़क उठा और बोला, "आप को किराया तो दे दिया है, फिर इतना परेशान क्यों हो रहे हैं?"

पड़ोसी का मुंह उतर गया. पर इस घटना के बाद वह किराएदार जब तक रहे, पड़ोसी के मन से यह बात निकल न सकी. अगर वह सज्जन मजदूरों को समझा देते तो संबंधों में कटुता न आती.

साधारणतया नौकरी में भी, चाहे वह सरकारी हो या किसी दुकानदार की,

"नहीं, हमारे घर में हीटर नहीं है...मेरी पत्नी बहुत गरम मिजाज की है... इसलिए सारा घर गरम रहता है."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब एक नये पैकेट में आपकी स्पेशल चाय!

ब्रुक बॉंड स्पेशल

रेड लेबल चाय

यह रही आपकी स्पेशल चाय एक खूबसूरत नये पैकेट में। ऐसी बढ़िया चाय, जो मेहमानों को भा जाय। और कीमत ऐसी कि घर में हर रोज, पीने में भी किफ़ायत। सचमुच एक बढ़िया चाय, पीकर देखिये।

क्वालिटी चाय पिलाइये, किफ़ायत भी पाइये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झूठ

झूठ को इज्जत दे कर जितना ऊंचा उठाया जाता है, उतनी ग्लानि, उतना ही कीचड़, उतना ही अनाचार इकट्ठा होता है.

—शरतचंद्र

मृदु स्वभाव उन्नति की एक बहुत प्रभावशाली सीढ़ी है. मृदु वाणी होने का अर्थ चाटुकारिता से नहीं है, और न ही अत्यधिक कमजोरी से.

मेरे एक परिचित हैं. उन की कपड़े की दुकान है. पांच साल पहले वह एक पतली सी गली में अपनी छोटी सी दुकान लगाए बैठे रहते थे. उन की विशेषता यही है कि हर ग्राहक से चाहे वह गांव वाला हो या शहरी सूटबूट वाला, हमेशा मुसकरा कर बोलते हैं. फलस्वरूप ग्राहक अनजाने ही उन की दुकान की ओर खिंचा चला आता है. यही कारण है कि आज उन की गिनती शहर के प्रमुख व्यापारियों में की जाती है. पर अब भी उन के मृदु स्वभाव में कोई तबदीली नहीं आई है.

कुछ अधिकारी इस बात में विश्वास करते हैं कि अपने मातहत कर्मचारी से तभी काम लिया जा सकता है, जब उस के साथ कठोरता से पेश आया जाए. ऐसे अधिकारी अपने कर्मचारियों से तो क्या, अपने कनिष्ठ अधिकारी से भी इतनी अभद्रता से व्यवहार करते हैं कि व्यक्ति यह सोचने को विवश हो जाता है कि क्या अधिक अनुभव और ज्यादा अधिकार असभ्य व्यवहार के पर्यायवाची हैं.

एक परिचित उच्च अधिकारी हैं. वह अपने मातहत कर्मचारियों से बहुत असभ्यता और कटुता से पेश आते थे, वह उन से अकसर कहा करते थे, "देखो, इसी तरह से काम निकलते हैं."

उन का यह कथन कर्मचारियों में दिनोंदिन बढ़ती अनुशासनहीनता के कारण सही लगता था. पर उन के अपने काम में भी कई कमियां थीं. लेकिन अपने मातहत कर्मचारियों की गलतियां बताने के चक्कर में वह अपनी ओर ध्यान नहीं दे पाए. नतीजा यह हुआ कि कुछ ही महीनों बाद उन के खिलाफ गुमनाम शिकायतें शुरू हो गईं और उन का स्थानांतरण किसी दूरस्थ इलाके में कर दिया गया. मातहत कर्मचारियों को अगर दृढ़ तथा मृदु शब्दों में यह बता दिया जाए कि अमुक कार्य होना आवश्यक है तो साधारणतया कार्य हो जाता है, क्योंकि अधीनस्थ भी समझ जाता है कि बिना कार्य पूर्ण कराए अधिकारी चैन से न बैठेगा, न बैठने देगा.

अधीनस्थ कर्मचारियों में भी अधिकारियों के प्रति अभद्र व्यवहार करने तथा कटु भाषा का प्रयोग करने की प्रवृत्ति बढ़ गई है. कुछ कर्मचारी नेता तो अपनी गद्दी इसी बात से सुरक्षित समझते हैं कि अपने समकक्ष लोगों के समक्ष अधिकारी से तेजतर्रार हो कर बात की जाए. नेताओं का यह व्यवहार उन के साथ काम करने वालों को भी अनुशासन की परिधि से बाहर ले जाने को उकसाता है. परिणाम यह होता है कि न ये कर्मचारी उन्नति कर पाते हैं और न ही देश प्रगति करता है.

मीठे बोल मधुर संबंधों की सुदृढ़ नींव होते हैं. इन से मनुष्य को सुख में राहत मिलती है. डाक्टर का मरीज से अच्छी तरह से बोलना, उस की बीमारी को ध्यान से देख कर, सुन कर प्यार से उस की गलतियां समझाना मरीज की आधी बीमारी समाप्त कर देता है. जो काम अथक परिश्रम तथा भागदौड़ से नहीं हो पाता उसे मीठे बोल बोल कर चुटकी में किया जा सकता है. प्रत्येक व्यक्ति के कान रस भरे शब्द सुनने को व्याकुल रहते हैं. बस जरूरत इस बात की है कि जिह्वा को नियंत्रण में रखा जाए, जिस से कटु वचन न फूटें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मसूड़ों में तकलीफ़ की पहली निशानियाँ

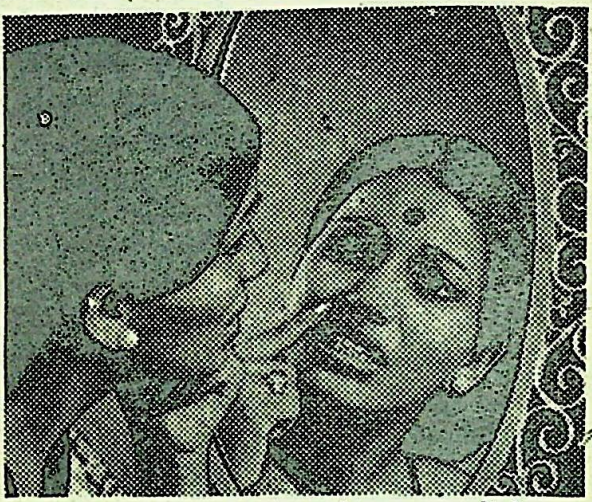

प्लाक (Plaque)
दाँतों और मसूड़ों पर हमेशा जमती रहनेवाली अदृश्य परत, जिसे साफ़ न किया जाय तो प्लाक के कारण टारटार जम जाता है।

टारटार (पपड़ी)
दाँतों की जड़ की ओर जमी हुई पपड़ी से मसूड़ों में सूजन और तकलीफ़... बाद में मसूड़ों व हड्डियों के सिकुड़ने से दाँत गिर भी सकते हैं।

मसूड़ों से खून
कमज़ोर और खोखले मसूड़ों को ब्रश से साफ़ करते समय खून निकल सकता है। इससे दर्द भले ही न हो फिर भी कई गंभीर समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

दाँतों के डॉक्टर कहते हैं:

नियमित रूप से, ब्रश से दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश कीजिए; मसूड़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न से दूर रहिए.

दाँतों की सही देखभाल के लिए हर रात और सवेरे अपने दाँतों की सही ढंग से सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश के लिये फोरहॅन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल कीजिये। साथ ही फोरहॅन्स डबल-एक्शन टूथब्रश इस्तेमाल कीजिये क्योंकि यह दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश के लिये ख़ास तौर से बनाया गया है।

मसूड़े ख़राब तो तन्दुरुस्ती ख़राब

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूड़ों की रक्षा" दाँतों की देखभाल सम्बन्धी रंगीन सूचना-पुस्तिका। डाक-खर्च के लिये २० पैसे के टिकट साथ भेजकर इस पत पर लिखिये: फोरहॅन्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बॅग नं. ११४६३, डिपार्टमेंट P-169-180 बम्बई-४०० ०२०। अपनी पसंद की भाषा अवश्य लिखिये।

फोरहॅन्स
दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

180F-17

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन की मुसकान

मेरे दोस्त की बहन की शादी थी. शादी के लिए सोने के कुछ गहने बनवाने के लिए एक सुनार को दिए थे. एक दिन मैं और मेरा दोस्त सुनार के पास गए और गहने ले आए. इस के अलावा हमें दोतीन काम और करने थे. सब काम निपटा कर हम घर लौट ही रहे थे कि रास्ते में केले की रेहड़ी को देख दोस्त कहने लगा, "आओ, केले खाएंगे."

मेरे मना करने पर भी वह जबरदस्ती मुझे रेहड़ी वाले के पास ले गया. हम दोनों ने केले खाए और घर को चल पड़े. मेरा घर पहले आता था. इसलिए मैं अपने घर चला गया और दोस्त बैग ले कर अपने घर चला गया. घर जा कर परिवार वालों को जेवर दिखाने के लिए जैसे ही उस ने बैग खोला तो देखा उस में गहनों का लिफाफा नहीं है. उस ने कई बार बैग झाड़ा मगर उस में लिफाफा नहीं मिला. वह दौड़ादौड़ा मेरे पास आया. मैं भी हैरान था. पांचछः हजार की बात थी. हम जहां-जहां गए थे वहां जा कर सब जगह पूछताछ की मगर कुछ पता नहीं चला.

हम निराश हो कर वापस आ रहे थे कि किसी ने हमें आवाज लगाई, "बाबूजी, यह आप अपना लिफाफा लेते जाइए."

हम ने देखा, यह वही रेहड़ी वाला था, जिस से हम ने केले खाए थे. वहां किसी कारण से बैग खोलने से वह लिफाफा बाहर गिर गया था. दोस्त उस की ईमानदारी पर खुश हो कर उसे 100 रुपए का नोट निकाल कर देने लगा, पर रेहड़ी वाले ने नहीं लिया.

—चंद्रप्रकाश चावला

✦

एक बार मैं मथुरा से अलीगढ़ जाने के लिए बस में बैठा सरिता पढ़ रहा था. थोड़ी देर बाद एक सज्जन ने मुझ से सरिता मांगी और बड़ी तल्लीनता से पढ़ने लगे. मैं सो गया और अलीगढ़ पहुंच कर ही मेरी नींद खुली. दफ्तर जाने की जल्दी के कारण मैं जल्दी से बस से उतरा और दफ्तर की ओर चल दिया. वहां पहुंचने पर मैं कार्य में संलग्न हो गया और सब कुछ भूल गया.

शाम को हमारे क्लब के अध्यक्ष व सचिव को पूछते हुए एक सज्जन आए. क्योंकि मैं ही क्लब का सचिव था, इसलिए वह मेरे पास ही चले आए. उस समय मुझे याद आया कि यह वही सज्जन हैं जो सुबह बस में मिले थे. वह मुझे मेरी पत्रिका लौटाने आए थे.

उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने मेरी काफी तलाश की थी और मेरे न मिलने पर निराश हो कर घर चले गए थे.

उन की पत्नी ने "जीवन की मुसकान" नामक स्तंभ पढ़ा था. वह चाहती थीं कि पत्रिका उस के मालिक को लौटा दी जाए. ढूंढ़ने पर उन्होंने पत्रिका के कोने पर पंजाब नेशनल बैंक, स्टाफ क्लब, अलीगढ़ की मुहर लगी हुई देखी. उन्होंने अपने पति को तुरंत पत्रिका लौटाने की सलाह दी. वह सरिता फट गई थी, अतः वह नई सरिता मुझे लौटाने आए थे.

इस प्रकार आप के प्रेरक शीर्षक "जीवन की मुसकान" के कारण मुझे मेरी खोई हुई सरिता वापस मिल गई.

—रमेशचंद्र गुप्ता
(सर्वश्रेष्ठ) ●

इस स्तंभ के लिए अपने व अपने मित्रों के रोचक संस्मरण भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : स्तंभ विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौन दूर ?..

कहानी • पुष्पा अग्रवाल

बाहर बरामदे में वीणा मूढ़े पर दीवार का सहारा लिए बैठी थी. घुटनों पर भाभी का आया पत्र रखा हुआ था. तीन बार वह इस पत्र को पढ़ चुकी थी, पर वह कोई निर्णय नहीं ले पा रही थी. एक बार फिर हाथ में पत्र ले कर वह उस की लाइनें दोहराने लगी :

"बीबीजी, बच्चों की छुट्टियां शुरू होने वाली हैं. आप को आए साल भर हो गया है. अब आप कुछ दिनों के लिए यहां आ जाइए. अम्मांजी भी आप को बहुत याद करती हैं."

वैसे इन लाइनों में ऐसा कुछ भी नहीं लिखा था, जो किसी को अन्यमनस्क कर दे और वीणा तो हमेशा ही इस तरह के पत्र का इंतजार उत्सुकता से करती आई थी. पत्र मिलने के बाद उस के चेहरे पर कितना उल्लास आ जाता था. वह जल्दी से अम्मां से मिलने के लिए मायके आने का प्रोग्राम बनाने लगती थी.

वीणा की शादी को आठ साल हो गए थे. शादी के बाद शुरूशुरू में वह जल्दीजल्दी आगरा जाया करती थी. पर जब से विनी स्कूल जाने लगा था, वह साल में एक या दो बार ही जा पाती थी. इधर दो साल से उस का जाना बिलकुल नहीं हो पाया था. अपनी मां की इकलौती बेटी होने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से दोनों भाई उस से बहुत प्यार करते थे.

पर पता नहीं क्यों इस बार ऐसा पत्र पा कर उसे खुशी नहीं हो रही थी. पांच साल पहले उस के भाई की शादी हुई थी, भैयाभाभी बहुत अच्छे थे. हरदम उस का ध्यान रखते थे. भाभी उसे प्यार भी बहुत करती थी और सारे दिन उस के आगेपीछे घूमा करती थी. पर अम्मां की बातें इतनी बुझीबुझी होती थीं कि भाभी का मन उदास हो जाता था. बहुतेरा वह मुसकरा कर भाभी को हंसाना चाहती, पर यह बनावटी हंसी चेहरे की मलिनता को दूर नहीं कर पाती थी. भाभी का पत्र वीणा को एक साल पीछे खींच ले गया था.

हर समय उठतेबैठते अम्मां का उस के प्रति प्यार झलकाना और बहू को उलाहने देना ननद और भाभी के बीच की दूरी को और बढ़ा देता. वीणा को ऐसा महसूस होता जैसे वही इस खाई के पाटों को चौड़ा करती जा रही है. पहले उसे कुछ महसूस नहीं

वीणा अपनी मां की बीमारी का पत्र पा कर एक बार तो चिंतित हो उठी पर अचानक उसे न जाने क्या हुआ कि वह बीमार मां के पास जाने के बजाए पति के साथ नैनीताल की सैर पर चल पड़ी.

होता था पर उम्र के साथसाथ अब वह भाभी की भावनाओं को समझने लगी थी.

उसे याद आया, पिछले साल जब वह आगरा में थी तो वहां पहुंचने के दो दिन बाद ही शाम को गेंद से खेलते हुए बिट्टू और भाभी का तीन वर्षीय पुत्र रिंकू झगड़ पड़े थे. दोनों ही उसी गेंद को लेने की जिद कर रहे थे. अभी वह उन दोनों को शांत कराने की सोच ही रही थी कि अम्मां ने एकदम रिंकू के कान खींच लिए थे और चिल्ला कर बोली थीं, "क्यों, बिट्टू से झगड़ा कर रहा है? गेंद उस को दे दे."

फिर वह बहू की ओर मुखातिब हो कर बोली थीं, "बहू, इस बच्चे को तमीज भी नहीं सिखाती? दो दिन के लिए लड़की और दोहता आया है, वे भी तुम्हें नहीं सुहाते?"

"अम्मां, तुम भी क्या बेकार की बातें करती हो. बच्चे तो ऐसे ही लड़ते रहते हैं. यह तो थोड़ी देर बाद आपस में मिल कर फिर खेलने लगेंगे. तुम भाभी को बुराभला क्यों कह रही हो." वीणा ने बीचबचाव करते हुए धीरे से अम्मां को समझाना चाहा. पर अम्मां पर कुछ असर नहीं हुआ और वह भाभी व रिंकू पर बरसती रहीं.

वीणा को याद आया कि पिछले वर्ष जब वह मां के पास थी तो उस का बेटा बिट्टू और भाभी का बेटा रिंकू झगड़ पड़े थे और तब मां ने रिंकू और उस की मां को कितना डांटा था.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस दिन फिर भाभी का मन कितना खराब हो गया था. पहले दिन भाभी ने सिनेमा के लिए प्रोग्राम बनाया था पर फिर वह प्रोग्राम भी रद्द हो गया और भाभी बुझीबुझी सी अपने काम में लग गई थी.

यही नहीं वीणा कुछ भी काम करने की कोशिश करती तो अम्मां मना कर देतीं, "क्यों कर रही है, वीणा? बहू कर लेगी. तू रहने दे काम. चार दिन के लिए आई है तो क्या काम करने के लिए?"

"पर अम्मां, बैठेबैठे मन भी तो नहीं लगता है, और फिर कितनी गरमी पड़ रही है. रसोई में ज्यादा देर खड़े रहने से जी घबराता है. भाभी अकेली कब तक करेंगी?"

"बसबस, तू सीख मत दे. हम ने क्या जिंदगी भर काम नहीं किया? सासससुर के अलावा अपने तीनतीन देवर थे. मैं सभी के लिए खाना बनाती थी. बरतन भी खुद ही मांजती थी और पानी भी भरती थी. अब तो पटरानी के लिए नल, बिजली, महरी सभी कुछ है. अपने को तो घूंघट निकाल कर चूल्हे पर खाना बनाना पड़ता था. अब तो गैस पर खाना बनने लगा है..." अम्मां का एकदम भाषण शुरू हो जाता. कहीं बात न बढ़ जाए इसलिए वह चुप हो जाती.

उसे वह दिन याद है जब भैया के क्लब में मेला लगने वाला था. पहले दिन ही भैया ने अम्मां को कह दिया था कि अगले दिन सब मेले में जाएंगे. भाभी सुबह से ही काम में लगी हुई थी. महरी उस दिन नहीं आई थी. वीणा ने एकदो काम करने के लिए उठना चाहा, पर अम्मां ने रोक दिया.

भाभी रसोई में बरतन साफ करने चली गई थी. अम्मां नहा कर पूजा घर में चली गई थीं. वीणा ने मौका देख कर धीरे से झाड़ू लगा दी थी. फिर वह अपने सब बच्चों के कपड़े धोने बैठ गई थी.

इतनी देर में अम्मां आ गई थीं. उसे कपड़े धोते देख कर उन का पारा चढ़ गया था. जल्दी से उसे कपड़ों पर से हटा कर पर नाराज होते हुए बोली थीं, "बहू दिख नहीं रहा है, बेचारी ने पहले तो लगाई और अब कपड़े धो रही है."

भाभी ने यह कह कर प्रतिवाद करना चाहा था, "अम्मांजी, मैं ने इन को नहीं कहा यह चुपचाप कर दें तो मुझे कैसे पता लगे पर नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन आती. और बात वहीं खतम नहीं हुई सारे दिन उठतेबैठते अम्मां यही कहती रहीं, "आज तो वीणा थक गई होगी काम करतेकरते."

भैया के सामने भी यही किस्सा चल रहा था. सारे दिन का हंसीखुशी से बना गया मूड एकदम काफूर हो गया था. न वीणा के मन में कोई उत्साह रहा था न भाभी के मन में.

अभी वीणा ये सब पुरानी बातें ताजा कर ही रही थी कि हाथ में फल लिए हुए विनय आ गया.

"क्या अम्मां का पत्र लिए बैठी हो आ गया बुलावा?"

हंस कर विनय ने पत्र लेते हुए कहा "हां मेमसाहब, बच्चों की छुट्टियां हो नहीं कि तुम्हारी आगरा जाने की तैयारी शुरू हो गई."

पर विनय की बात का वीणा ने कोई उत्तर नहीं दिया.

"क्या बात है, डार्लिंग. आज खोईखोई सी क्यों बैठी हो? कहो तो आज ही टिकट कटा दूं?" वीणा को झकझोरते हुए विनय बोला.

"नहीं, यह बात नहीं है. मैं सोच रही हूं, इस बार अम्मां के पास न जा कर कहीं हिल स्टेशन क्यों न चलें?"

"यह हुई न कोई बात. हम तो हर बार ही चलने को कहते हैं, पर तुम्हें तो अम्मां के बिछोह से ही पेट में दर्द होने लगता है. पर हां, यह तो बताओ इस बार यह उलटी गंगा कैसे बही? कहीं भैयाभाभी से झगड़ा कर तो नहीं आई थीं."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"वीणा, तुम चाहती हो न, अम्मां और भाभी की दूरी किसी प्रकार कम हो जाए? उस के लिए यही मौका है," विनय ने वीणा को समझाते हुए कहा था.

"नहीं, नहीं, मेरे भैयाभाभी तो बहुत अच्छे हैं, पर मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं वहां जा कर अम्मां और भाभी की दूरी को और बढ़ा देती हूं. अम्मां हर बात में मेरा पक्ष ले कर भाभी की अवहेलना करती हैं, जो भाभी को अंदर तक छेद देती है."

"चलो जी, तुम में भी अब कुछ समझ आई. वास्तव में अब तो अम्मां को तुम्हें पराया समझना चाहिए और बहू को अपना. पर अपने यहां भी कैसा रिवाज है कि जो लड़की अपने मांबाप को छोड़ कर दूसरे को अपनी मां बनाती है, वही उसे आलोचनात्मक दृष्टि से देखती है," भावुकता में भरते हुए विनय ने कहा.

वीणा की उदासी देख कर बात बदलते हुए विनय ने फिर कहा, "अच्छा तो इस बार नैनीताल का प्रोग्राम पक्का है. मैं भी छुट्टी की अर्जी कल ही दे दूंगा. अब मैडम जरा इस मूढ़े को आराम दो और मुझे एक कप चाय पिला दो."

वीणा को एकदम हंसी आ गई.

एक सप्ताह बाद बच्चे घर में खूब उछलकूद कर रहे थे. अगले दिन नैनीताल जो जाना था. इसलिए सब के दिलोदिमाग पर खुशी छाई हुई थी. वीणा और विनय सामान बांध रहे थे, तरहतरह के मनसूबे बना रहे थे कि अचानक डाकिया चिट्ठी ले आया.

भाभी का ही पत्र था. लिखा था, "बीबीजी, कल रात अम्मांजी के पेट में बहुत दर्द उठा. डाक्टर को दिखाने पर उस ने अपेंडिक्स का दर्द बताया. तीन दिन बाद आपरेशन होगा. आप कब तक आ रही हैं सो लिखना. अम्मांजी आप को बहुत याद कर रही हैं."

पत्र पढ़ते ही वीणा एकदम विचलित हो गई. उस की आंखों के सामने अम्मां घूम गईं. नैनीताल जाने का प्रोग्राम रद्द कर वह जल्दी से जल्दी आगरा पहुंचना चाहती थी. विनय भी सोच में पड़ गया, फिर वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकाएक बोला :

"वीणा, तुम चाहती हो न, अम्मां और भाभी की दूरी किसी प्रकार कम हो जाए? उस के लिए यही मौका है. इस समय बीमारी में तुम जाओगी तो तुम अम्मां के और नजदीक आ जाओगी और भाभी फिर दूर पड़ जाएगी. तुम्हें मन को कड़ा तो करना पड़ेगा, पर इस बार तुम अम्मां की बीमारी भाभी को ही संभालने दो और तुम नैनीताल घूम आओ. नैनीताल से आने के बाद फिर दस दिन के लिए रह आना. फिर देखना तुम परिवर्तन."

विनय की बात सुन कर एक बार तो वीणा को बहुत बुरा लगा. पर फिर उस की बातों का तथ्य समझ कर वह भी इस बात के लिए राजी हो गई.

अम्मां का आपरेशन हुए चार दिन हो गए थे. वह हस्पताल से घर आ गई थीं. शरीर में काफी कमजोरी लग रही थी. छत की ओर ताकती हुई वह वीणा के बारे में सोच रही थीं कि एकाएक बहू चाय ले कर आई.

"अम्मांजी, अब कैसी तबीयत है? लीजिए चाय पी लीजिए." मृदु स्वर में बोलते हुए बहू ने अम्मांजी को सहारा दे कर बैठा दिया और स्वयं प्लेट से चाय पिलाने लगी. दोनों बच्चे भी 'अम्मांजी, अम्मांजी' करते उन के आगेपीछे घूम रहे थे. जिस दिन उन्हें आपरेशन के लिए ले जाया जा रहा था तब रिंकू कितना रो रहा था और हस्पताल में भी कितनी देर तक उन के सिरहाने बैठा रहता था. बेटा भी आफिस से आने के बाद उन्हीं के पास बैठ कर उन का मन बहलाता था.

'वीणा को तो उसी दिन चिट्ठी लिखवा दी थी. पर वह मुझे भूल कर नैनीताल जा बैठी है. यदि बहू नहीं होती तो मेरा क्या होता? बेचारी दिनरात एक कर के मेरी सेवा कर रही है. जरा भी मुझे अकेला नहीं छोड़ती है. झटपट काम खत्म कर मेरे पास आ कर बैठ जाती है. दो साल हो गए इसे पीहर गए. इस बार अपनी मां से मिल कर आने की सोच रही थी, पर मेरे कारण ही अपना जाना रद्द कर दिया.' अम्मांजी पलंग पर पड़ी सोच रही थीं.

अम्मांजी को अपने बेटे महेश के कहे शब्द याद आए :

"मां, तुम कुछ मत सोचो. जब तक तुम्हारी तबीयत बिलकुल ठीक नहीं होगी, तब तक रमा अपनी मां से मिलने नहीं जाएगी." बेटे के शब्द याद कर उन की आंखें नम हो गईं.

बहू को खाना लाते हुए देख कर वह विह्वल स्नेह स्वर में बोलीं, "कब से काम में लगी है, जा अपना खाना ले आ. दोनों साथ ही खाएंगे."

"बहन, मैं अपने बच्चों को हमेशा ही अच्छे काम करना सिखाया करती हूं."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

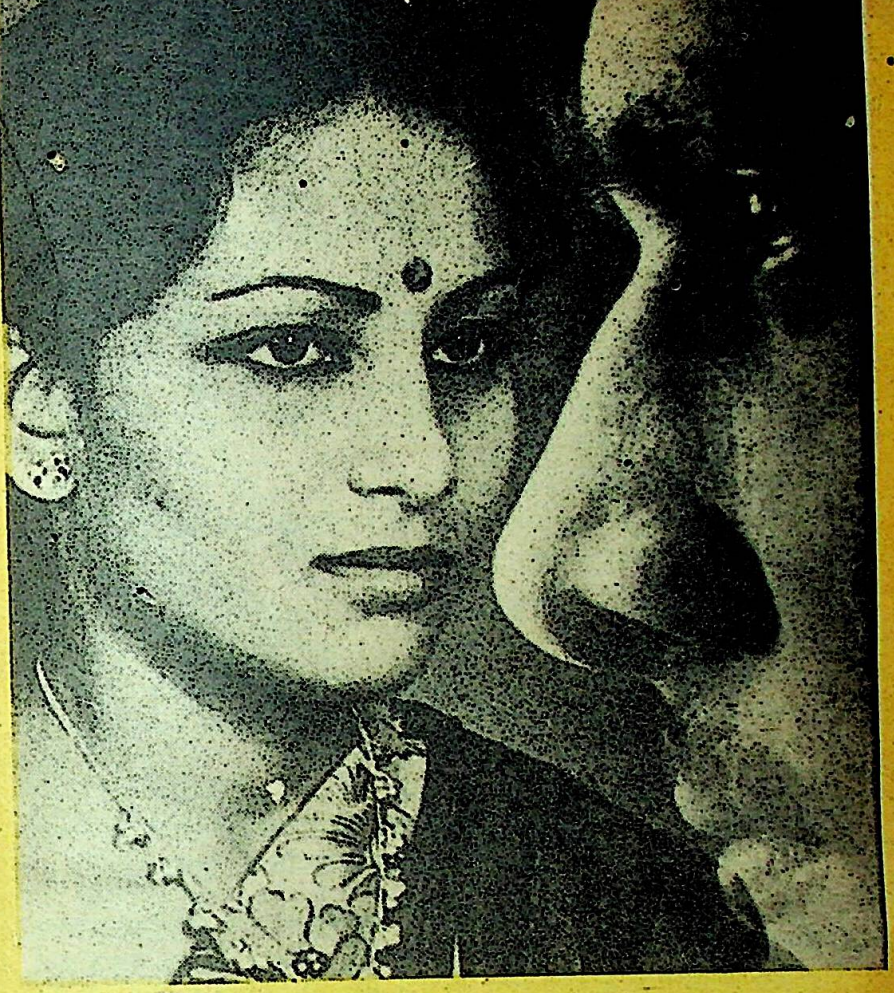

एक चेहरा...

मैं हर रोज नए चेहरे लगा लेता हूं,
दिल पै पाबंदियां और पहरे लगा लेता हूं.

एक चेहरा है, जो झूमता है, गाता है,
जिंदगी में हर कदम पै कहकहे लगाता है.
एक चेहरा हरदम उदास रहा करता है,
जिंदगी में हर गम चुपचाप सहा करता है.

एक चेहरा सिर्फ ख्वाब देखा करता है,
कांटे नहीं, सिर्फ गुलाब देखा करता है.
एक चेहरा हकीकत की खबर रखता है,
गुलों के साथ कांटों पै नजर रखता है.

एक चेहरा जिसे संस्कारों ने पाला है,
उस के इर्दगिर्द आदर्शों का जाला है.
उसूलों और ईमान की बातें किया करता है,
हर वक्त ज्ञान की बातें किया करता है.

विद्रोह पनपता है एक चेहरे में,
एक आग सुलगती है कहीं गहरे में.
जो सारी परंपराओं को तोड़ना चाहती है,
हवाओं का रुख मोड़ना चाहती है.

यदि इन में से कोई चेहरा तुम्हें भाया है,
तो वो मैं नहीं हूं, सिर्फ मेरा साया है.
मैं तो हर रोज नए चेहरे लगा लेता हूं,
दिल पै पाबंदियां और पहरे लगा लेता हूं.

—विकल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप पढ़ेलिखे हैं, सोचविचार कर सकते हैं, कामधंधे में लगे हैं, अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाए हैं, पर...

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

क्या देश का जिम्मा केवल भ्रष्ट राजनीतिबाजों का है?

आप पूछ सकते हैं—मैं क्या करूं?

आप अपना और अपने बच्चों का वर्तमान और भविष्य भ्रष्ट राजनीतिबाजों के हाथों सौंपने के बजाए इतना तो कर ही सकते हैं :

● जो भी काम आप के जिम्मे हो, उसे पूरा करें. अगर आप अपना काम पूरी लगन से करते हैं तो स्वयं अपनी क्षमता बढ़ा रहे हैं, अपनी उन्नति कर रहे हैं, चाहे उस का पूरा पैसा मिले या नहीं. आज हर क्षेत्र में कर्मनिष्ठ व्यक्ति की बहुत मांग है. अगर वर्तमान संस्था में आप को अपनी मेहनत का पूरा मुआवजा नहीं मिलता तो दूसरी संस्था देगी.

● न अन्याय सहें, न अन्याय करें. आप समाज की महत्त्वपूर्ण इकाई हैं. समाज की प्रगति के लिए आवश्यक है कि उस की हर इकाई अन्याय के विरुद्ध हो.

● अपनी गली, महल्ले, नगर के प्रबंध में दिलचस्पी लें. उसे दूसरों के भरोसे न छोड़ दें. कुप्रबंध और दुर्व्यवस्था के विरुद्ध संबंधित अधिकारियों को पत्र लिखते रहें. हो सकता है, आप के दोचार पत्रों का कोई असर न हो पर वे आप की पूर्ण अवहेलना नहीं कर सकते. स्थानीय दैनिक पत्रों के संपादकों को भी पत्र लिखें. (वे स्थानीय समस्याओं से संबंधित पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं.) अपने क्षेत्र के निगम सदस्य, विधायक या संसदसदस्य को भी पत्र लिखें और उन से महल्ले के व्यक्तियों के साथ मिलते रहें. कल इन्हें आप के पास ही वोट लेने आना है. इस बात का फायदा उठाएं और जब तक दुर्व्यवस्था ठीक न हो जाए चैन से न बैठें.

● अपना फालतू समय किसी स्थानीय समाजसेवी संस्था में लगाएं—पुस्तकालय, स्कूल, चिकित्सालय सभी जगह निःस्वार्थी व्यक्तियों की आवश्यकता है. असंतुष्ट हो कर बैठे रहने से न आप बदल सकेंगे, न समाज, न देश.

रोजीरोटी का प्रबंध तो भिखारी, आवारा पशु और गली के कुत्ते भी कर लेते हैं. पर आप पढ़ेलिखे हैं, सोचविचार कर सकते हैं, कामधंधे में लगे हैं, अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाए हैं, इसी लिए यह आवश्यक है कि आप अपने आप से पूछें कि—

आप देश के लिए क्या कर रहे हैं?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

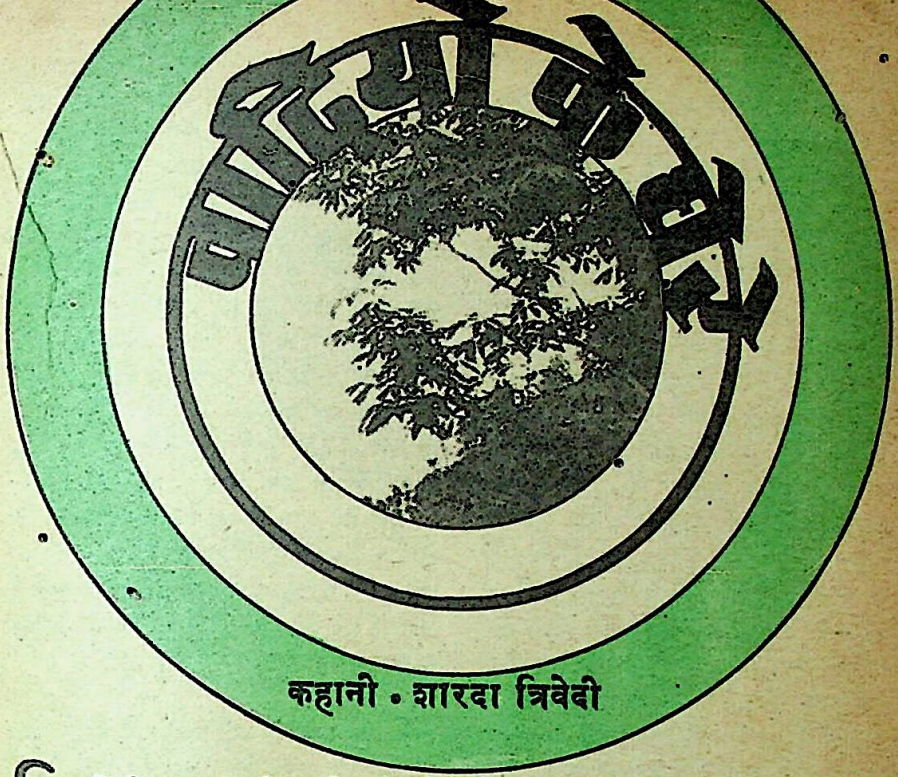

कहानी • शारदा त्रिवेदी

मिलिट्री हस्पताल की सब से बड़ी नर्स इला नए आए घायलों की देखरेख और पट्टी करने में व्यस्त थी. इला अपने कार्य को इतनी लगन और कुशलता से करती थी कि हस्पताल के सभी लोग मानने लगे थे कि उस का हाथ लगते ही घाव भरना शुरू हो जाता है. कई घायलों की मरहमपट्टी के बाद अंत में जो घायल उस के सामने लाया गया, उसे देख कर वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ सी रह गई और हाथ में पट्टी का सामान लिए वह उसे अपलक देखती ही रह गई.

वही नुकीली नाक, वही भोलाभाला मासूम चेहरा. अचेतनता की अवस्था में भी होंठों पर वही चिरपरिचित मुसकान फैली हुई थी. उस से इस स्थिति में मुलाकात की तो इला ने कभी कल्पना भी न की थी. उसे इस रूप में सामने देख कर हजारों प्रश्न इला के मस्तिष्क में कौंध गए और वह बारीबारी से सुख और दुख की अनुभूतियों में खो गई. तभी छोटी नर्स ने उस का ध्यान भंग करते हुए कहा, "सिस्टर, पट्टी कीजिए. सामान तैयार है."

इला ने भूषण को भुलाने के लिए ही अपना जीवन, मानवता की सेवा में अर्पित करने का निर्णय लिया था पर उसे क्या पता था कि सेना के घायलों के बीच भूषण भी उस के सामने आ जाएगा...

इला ने तुरंत अपने को संयत करते हुए बड़ी सावधानी से उस घायल की पट्टी कर दी. सिर में गहरी चोट आ जाने के कारण वह बेहोश पड़ा था. रात भर सब घायलों की देखभाल करते हुए न जाने क्यों इला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बारबार उसी घायल के पलंग के पास आ कर बैठ जाती और अतीत के सारे चित्र उस की आंखों में साकार हो उठते.

भूषण एक होनहार, सौम्य और विनयी स्वभाव का युवक था. वह इला के बाबूजी से पढ़ने आया करता था. बाबूजी उसे पढ़ाया करते थे तो इला भी प्रायः पास आ कर बैठ जाती थी. भूषण की प्रखर बुद्धि, उस के सरल स्वभाव से प्रभावित हो कर मन ही मन इला उस का आदर करने लगी थी. बाबूजी भी भूषण को उस के सद्गुणों के कारण बहुत स्नेह करते थे.

भूषण जब मनाली के माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट से वापस लौटा तो अत्यंत प्रसन्नता और उल्लास से भरा हुआ था. उस ने इला को अपनी यात्रा का शुरू से अंत तक मनोरम विवरण सुनाया था. चारों ओर ऊंची बर्फ से ढकी पहाड़ियों से घिरा मनाली का छोटा सा नगर, देवदार के घने लंबे पेड़, नगर के किनारे से बहती व्यास नदी, नदी का कल-कल निनाद, कहीं नदी का पाट चौड़ा, कहीं पतला. इतना पतला कि नदी का कहीं पता ही न चले. केवल कलकल ध्वनि से नदी होने का आभास मिलता.

सोलंग चोटी पर गिरी बर्फ की मोटी तह, पहाड़ों के बीच हरीभरी घाटियों में फैलता घना कोहरा, रहला जलप्रपात से अनेक पतली धाराओं में हो कर गिरता हुआ झरना, सब कुछ सुन कर इला को लगा था कि वह किसी कल्पनालोक में विचरण कर रही है.

अगले ही दिन इला ने भूषण से सुना हुआ मनाली का वर्णन अपनी तूली और रंगों से चित्रित कर के उस के आगे रख दिया था. चित्र को देख कर भूषण उस की इस चित्रकला पर सुखद आश्चर्य से भर कर बोला था, "इला, तुम ने इस चित्र में कुल्लू घाटी की वह अपूर्व मादकता चित्रित कर दी है, जिसे मैं शब्दों से नहीं बता पाया था. सचमुच तुम अद्भुत हो."

भूषण से ही इला ने जाना था कि नदी के बोल्डर यानी गोल पत्थर कैसे बनते हैं. नदी की गार्ज यानी तंग घाटी किसे कहते हैं. जाने कितनी ही सुखद आश्चर्यजनक बातों का परिचय उस ने जाना था. वह सोच बैठी थी, काश ये सब जगह भूषण के साथ वह कभी देख पाती!

परीक्षा में प्रथम आने पर भूषण बाबूजी के पांव छू कर बड़ी विनम्रता से बोला था, "बाबूजी, मेरी सफलता आप के ही आशीर्वाद और परिश्रम का फल है."

उस की सफलता पर गदगद होते हुए बाबूजी ने उसे ढेरों आशीर्वाद दे डाले थे और भरे हुए गले से बोले थे, "बेटा, अब तो तुम मेरे पास से जा रहे हो. हो सके तो इला के लिए कोई योग्य वर ढूंढ़ने की चेष्टा करना. मैं गरीब अध्यापक दहेज तो नहीं दे सकता, पर इला को मैं ने यथायोग्य निपुण बनाने का पूरा प्रयास किया है."

इस पर भूषण ने बड़े संकोच से थोड़ा रुक-रुक कर कहा था, "बाबूजी, यदि आप ठीक समझें तो मुझे इला के लिए स्वीकार कर लें."

सुनते ही बाबूजी ने गदगद हो कर भूषण को अपने हृदय से लगा लिया था और बोले थे, "बेटा, तुम जैसा वर इला को मिले तो मेरा परम सौभाग्य है. पर अपने पिता से तो पूछ देखो कि वह बिना दहेज लिए तुम्हारा विवाह करने को तैयार भी हैं या नहीं?"

पत्र लिखने को कह इला से आंखों ही आंखों में विदा ले कर भूषण अपने घर चला गया था. लेकिन जाने के बाद भूषण का कोई पत्र नहीं आया था और कुछ दिन बाद ही इला ने सुना था कि भूषण का विवाह किसी बड़े व्यवसायी की लड़की से होना निश्चित हो गया है. दहेज के अभाव में बाबूजी इला का विवाह किए बिना ही दुनिया से चल बसे थे.

भूषण के इस प्रकार चले जाने से इला के हृदय को इतनी ठेस लगी थी कि उसे विवाह के नाम से ही घृणा हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गई थी. अपने दर्द को भुलाने के लिए उस ने मानवता की सेवा में अपना जीवन अर्पित कर देने का निर्णय ले लिया था और तभी से वह यहां घर से दूर मिलिट्री हस्पताल में नर्स हो गई थी.

अपनी कर्त्तव्यपरायणता और मृदु व्यवहार के कारण वह आज हस्पताल की सब से प्रतिष्ठित नर्स थी और डाक्टर भी हर आपरेशन में उस की सहायता की अपेक्षा करते थे. इला ने कभी सोचा भी न था कि इसी हस्पताल में सेना के घायलों के बीच भूषण भी कभी घायल हो कर अचेतन अवस्था में उस के सामने आ जाएगा.

अगले दिन भी इला भूषण के पलंग के पास ही स्टूल पर बैठी थी कि तभी उसे थोड़ाथोड़ा होश आया. आंखें खोल कर उस ने धीमी आवाज में पानी मांगा. इला को सामने देख कर वह एकटक उसे निहारता ही रह गया. कुछ बोलने के लिए उस ने होंठ हिलाए तो इला ने उसे लेटेलेटे ही पानी पिला दिया.

पानी पी कर भूषण ने आंखें मूंद लीं. बीचबीच में वह आंखें खोल कर इला को देख लेता और फिर आंखें मूंद लेता. थोड़ी देर में ही उसे नींद आ गई थी. सुबह होते ही इला घर चली गई थी. आज उस की ड्यूटी नहीं थी. फिर भी घर पर उस का मन न लगा और वह गुलाब के फूलों का छोटा सा गुच्छा ले कर भूषण के पास लौट आई.

भूषण जाग चुका था और उसे देखते ही बोला, "तुम कहां चली गई थीं? मैं कब से तुम्हारी राह देख रहा हूं." फिर वह बड़े स्नेह से आगे बोला था, "अब कहीं मत जाना."

इला के बैठ जाने पर भूषण ने बताया कि उस के बाबूजी ने अपनी जिद

परीक्षा में प्रथम आने पर जब भूषण बाबूजी के पांव छूने आया तो उन्होंने ढेरों आशीर्वाद देने के बाद कहा था, "बेटा, हो सके तो इला के लिए कोई योग्य वर ढूंढ़ने की चेष्टा करना."

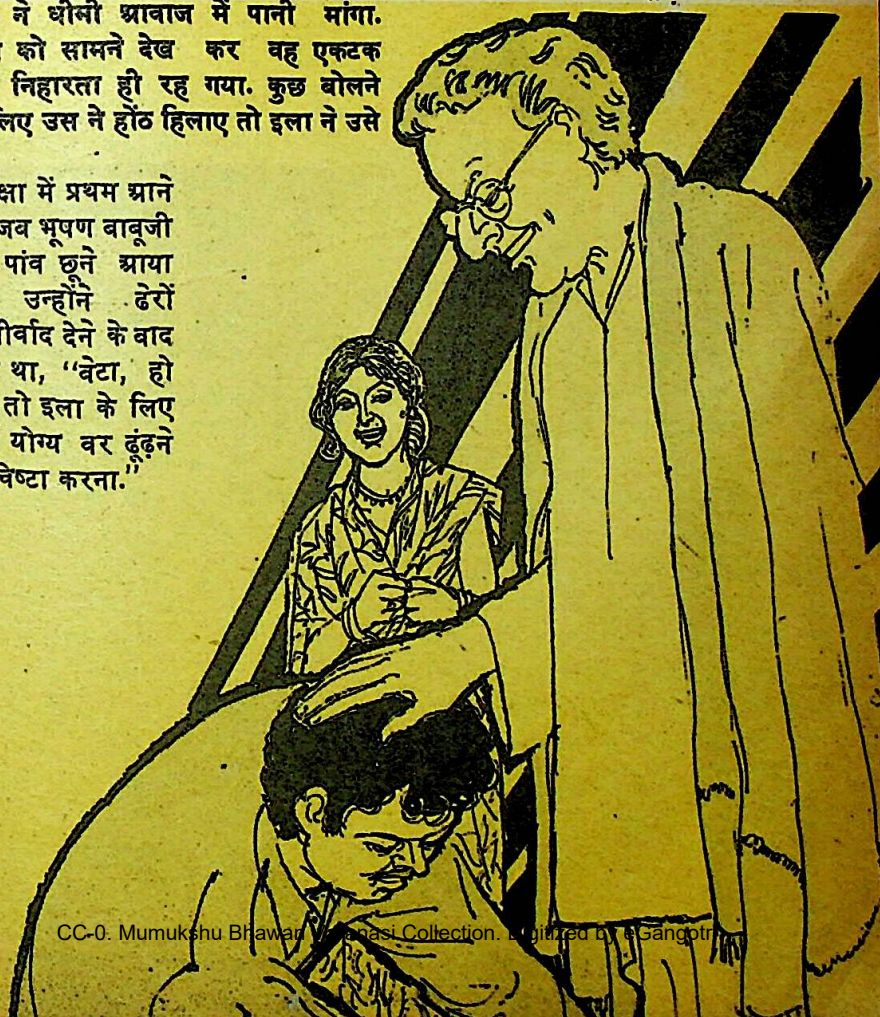

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

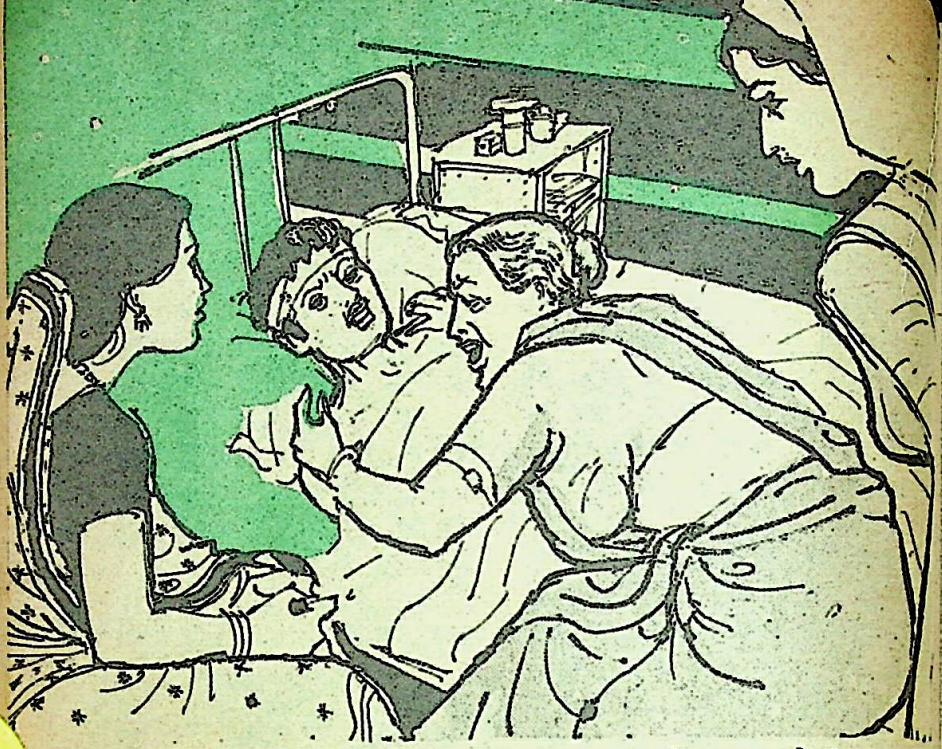

में आ कर, भारी दहेज के लालच में उस का रिश्ता एक मूर्ख, अशिक्षित लड़की से तय कर दिया था.

वह अपनी बात पूरी करे, इला से कुछ कहेसुने इस से पहले ही एक वृद्धा और एक युवती तेजी से आ कर उस के पलंग के पास खड़ी हो गईं. वह वृद्धा रोते हुए 'मेरे बेटे, मेरे लाल' कहती हुई भूषण से लिपट गई. वह युवती हलका सा घूंघट किए पलंग के पास ही बैठ गई थी.

भूषण के घर वालों के आ जाने के कारण तथा रात की अपनी ड्यूटी होने के कारण इला हस्पताल से कुछ देर आराम करने के लिए अपने घर लौट आई. पर घर आ कर उसे तनिक भी नींद न आई. उस की विचारधारा तेजी से दौड़ रही थी. उस ने अनुमान लगाया कि वह वृद्धा भूषण की मां होगी तथा वह युवती उस की पत्नी. वह बारीबारी से भूषण और उस की पत्नी की तुलना करते हुए सोचने लगी, दोनों देखने में एकदूसरे से कितने विपरीत लग रहे थे.

भूषण इला से कुछ कहने ही जा रहा था कि एक वृद्धा और एक युवती उस के पलंग के पास आ पहुंचीं और वृद्धा 'मेरे बेटे, मेरे लाल' कहती हुई भूषण से लिपट गई.

रात को इला हस्पताल में आने पर सब से पहले भूषण को देखने गई. उस ने भूषण के घर से आई युवती को सचेत किया कि रोगी अभी स्वस्थ नहीं है. अतः उस के पास रात भर जागने की आवश्यकता होगी. थोड़ी देर बाद जब इला फिर आई तो भूषण कमजोरी के कारण धीमी आवाज में पानी मांग रहा था और वह युवती कुरसी पर अधलेटी बैठी खर्राटे भर रही थी. इला ने जग से पानी निकाल कर भूषण को लेटेलेटे ही पिला दिया. तब भूषण बोला, "इला, अगर हो सके तो कुछ देर के लिए यहीं बैठी रहो."

इला एक स्टूल ले कर भूषण के पलंग के पास ही बैठ गई और ममता से भर उस से पूछने लगी, "क्या तुम्हें नींद नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

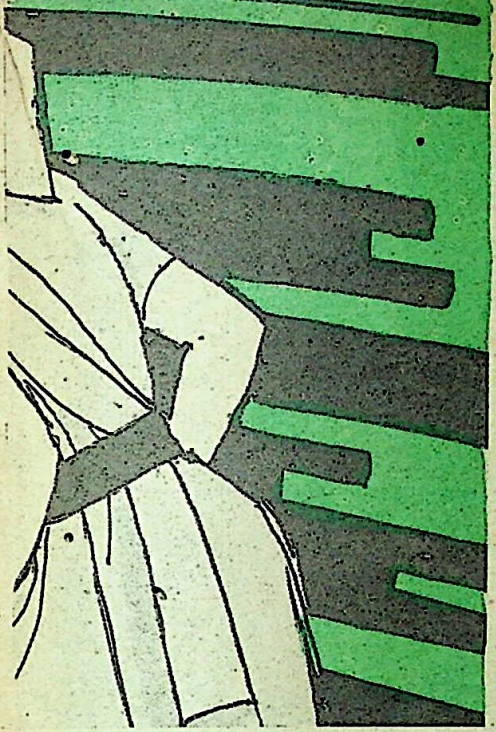

आ रही है? सिर में दर्द है क्या?"

तभी वह युवती जाग पड़ी और भूषण का सिर दबाने लगी. एकदो बार माथे पर हाथ फेर वह पुनः कुरसी की टेक लगा कर खर्राटे भरने लगी. भूषण ने आंखें खोल कातर दृष्टि से इला की ओर ताका. थोड़ी ही देर में, वह गहरी नींद में सो गया.

सुबह होने पर भूषण स्वस्थ दिख रहा था. इला उसे गुलाब का एक छोटा सा फूल दे कर उस से विदा हो घर चली आई. रात की ड्यूटी में इला प्रतिदिन अधिकांश समय भूषण के पलंग के पास ही बैठती और उस के शीघ्र स्वस्थ हो जाने की कामना करती रहती.

हस्पताल से छुट्टी मिलने वाले दिन भूषण बोला, "इला, मुझे तुम से क्षमा पाने का अधिकार तो नहीं, पर तुम जानती हो कि मैं सदा का संकोची और कायर तुम्हारे लिए और अपने लिए पिता से विद्रोह न कर सका और अब जीवन भर उसी का अभिशाप भोगने को जी रहा हूं."

"भूषण, मैं तुम्हें अच्छी तरह से जानती हूं. मैं तुम्हें कभी गलत नहीं समझ सकती. मैं तुम से नाराज थी ही कब? मेरी स्मृतियों को तो अब भी तुम्हारे बनाए हुए कुल्लू की वादियों के घेरे घेर लेते हैं."

भरे हुए गले से भूषण बोला, "इला, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि पिछले एक सप्ताह की तरह हम तुम सदा साथ बने रहते." उस की आंखें छलक आईं.

इला की आंखों की कोरों से आंसू बह निकले. अपने को संयत कर उस ने अपने जूड़े में से निकाल कर गुलाब का एक छोटा सा फूल भूषण को देते हुए कहा, "तुम्हें फूल बहुत पसंद है न? लो इसे रख लो."

गहरी सांस खींचते हुए भूषण भारी मन से इतना ही बोल सका, "पसंद तो मुझे तुम भी बहुत हो, पर बताओ तुम्हें कैसे ले चलूं?"

इला गंभीर होते हुए बोली, "नहीं, भूषण, अपनी पत्नी के होते हुए तुम्हें ऐसी बात नहीं सोचनी चाहिए. अब तो जो होना था वह तो हो चुका."

तभी भूषण मुसकराते हुए बोला, "किस की पत्नी? कैसी पत्नी? ओह, अब समझा, कहीं गलतफहमी हुई है. अरे, वह तो मेरी भाभी है."

इला झेंपते हुए बोली, "पर उस दिन तुम बता रहे थे कि..."

बीच में ही बात काटते हुए भूषण बोला, "पर उस दिन तुम्हें पूरी बात बता कहां पाया था? बाबूजी द्वारा मेरा रिश्ता तय कर देने पर मैं दहेज ले कर विवाह न करने की कसम ले कर मिलिट्री में चला आया था."

"सच, भूषण! तब तो तुम मेरे लिए पहले से भी अधिक बड़े और श्रद्धेय हो गए हो."

बांह फैलाते हुए भूषण बोला, "आओ चलो, इला, वादियों के घेरे हमें पुकार रहे हैं." ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुपर ७७७

मैल की शामत, सफ़ेदी की ताक़त

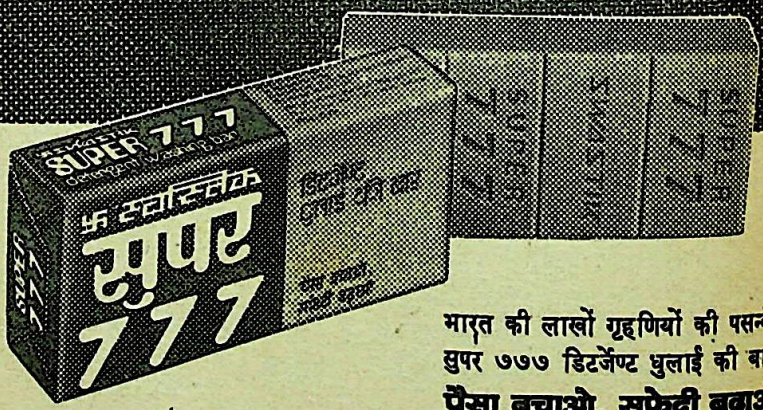

भारत की लाखों गृहणियों की पसन्द
सुपर ७७७ डिटर्जेण्ट धुलाई की बार
पैसा बचाओ, सफ़ेदी बढ़ाओ

Shilpi dm. 15 A/78 Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • विजय वर्मा

हिंदू समाज स्वामी दयानंद और आज की चुनौती

वक्त का तकाजा है कि व्यर्थ की तकरार छोड़ कर हिंदू समाज के सुधार के लिए ठोस कदम उठाया जाए...

मध्ययुग के बाद से पिछले एक हजार साल का इतिहास हिंदू धर्म व समाज के पतन का इतिहास रहा है. यह पतन सभी क्षेत्रों में था लेकिन इस का मूल धर्म में था. हिंदुओं में हमेशा से पुरोहित व धर्म का बड़ा महत्त्व रहा है. समृद्धि के युग में पुरोहित का महत्त्व और भी बढ़ गया. शनैःशनैः पुरोहितों ने अपने स्वार्थवश धर्म को कर्मकांड से बोझिल कर दिया और हिंदू धर्म के मूल स्वरूप व मूल ग्रंथों को पीछे ढकेल कर नई पद्धतियों व नए ग्रंथों की रचना की और चूंकि हिंदुओं के सभी कार्यकलाप धर्म से अनुशासित थे, इसलिए यह मिलावट जीवन के सभी क्षेत्रों में फैल गई. धर्म के कूप से रोग के कीटाणु सारी बस्ती में पहुंच गए.

इसी लिए जब मुसलमान भारत में आए तो हिंदू जाति उन के सामने टिक न सकी और उस की शक्ति रणक्षेत्र में पराजित हो कर देश के सुदूर कोने में सिमट गई. फिर इस पराजित जाति को पुरोहितों ने पलायनवादी और परलोकवादी बना दिया और उस को सामाजिक बुराइयों से जकड़ दिया. अनेक महान योद्धा, धर्म प्रचारक, संत और लेखक हुए लेकिन कुल मिला कर हिंदू समाज की गति नीचे की ही ओर रही.

आसनों की मूर्तिकला, शृंगार की

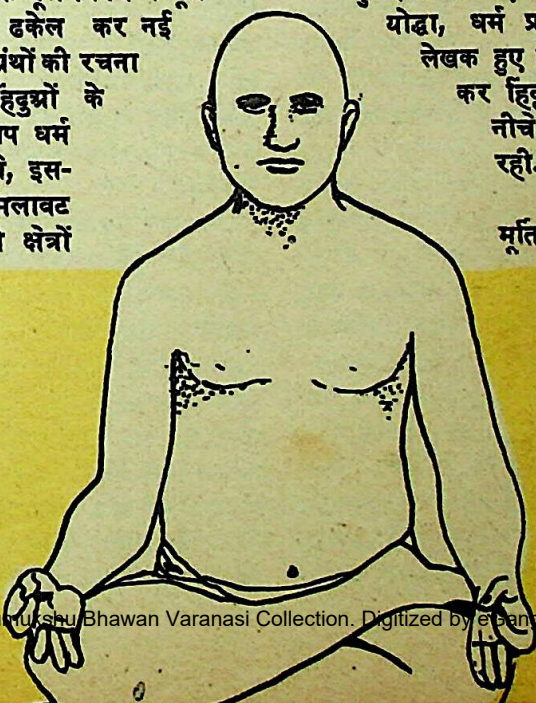

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कविता, रासलीला और चीरहरण जैसी धर्मकथाएं, कसीदे से भरी टीकाएं, स्त्री शिक्षा का निषेध, बाल विवाह, बहु विवाह, सती प्रथा और परदा तथा स्त्रियों का गिरा हुआ दरजा, समुद्र यात्रा व विदेशियों से संपर्क का निषेध, मंदिरों में व्यभिचार व देवदासियों का प्रादुर्भाव, वाममार्ग व तांत्रिक पंथों का उद्भव, छूतछात व परलोकवाद के प्रति अंध आस्था—ये सब इसी व्यापक पतन के परिचायक हैं. यहां तक कि मध्ययुग के भक्ति आंदोलनों का मूल स्तर भी सौरय, समझौतावादी और पलायनवादी था न कि क्रांतिकारी, विद्रोही और सुधारवादी जैसा कि समर्थ रामदास का था.

वैसे भी इन संतों और प्रचारकों के पीछे उन के अनुयायियों ने नईनई धार्मिक जागीरें बना लीं और जो कूड़ाकरकट साफ करने गए थे उन के नाम पर एकएक घूरा और बढ़ गया. कुल मिला कर इस पूरे काल में हिंदू जाति के कंधों पर पुरोहित वर्ग सिंदबाद के बूढ़े की तरह सवार रहा और उस की आंखों पर रूढ़ियों और कर्मकांड की काली पट्टियां चढ़ी रहीं. धर्म, कर्मकांड में सिमट आया और सामाजिक जीवन रूढ़ियों में. हिंदू समाज आत्मसुरक्षा के लिए एक खोल में बंद हो कर शायद विनाश और विघटन से बच गया लेकिन उस के विकास के रास्ते रुक गए.

यही कारण है कि जब मुगलों का पतनकाल आया और राजपूत, मराठे और जाट शक्तिशाली हुए तो वे इस अवसर का तनिक भी लाभ न उठा सके. मराठा कृषकों का उद्भव महाराष्ट्र के पंडितों से नहीं देखा गया. उन के शासनकाल में कला और संस्कृति के नाम पर कुछ भी न हो सका. और जब अंगरेज आए तो एकएक कर के ये सभी हिंदू शक्तियां पराजित होती गईं. इस का कारण भी हमें हिंदू समाज व धर्म की उसी व्यापक गिरावट में ढूंढ़ना पड़ेगा जिस के चलते सेनाओं द्वारा जीती गई लड़ाइयां केवल क्षणिक महत्त्व रख सकती हैं, वे साम्राज्यों की आधारशिलाएं नहीं बन सकतीं.

अंगरेजी शासन में पहला दौर ईसाई मत का चला. अंगरेज और स्वयं हिंदू भी यह मान कर चलते थे कि भारत में रखने जैसा कुछ भी नहीं है. ब्रह्म समाज इसी अस्वीकार के दौर की चीज थी. हालांकि वह भी बाद में कई मनोवृत्तियों में से गुजरा. उस के बाद स्वयं अंगरेजों ने हिंदू धर्म और संस्कृति की छिपी हुई महानताओं का अन्वेषण शुरू किया और स्वयं हिंदुओं के आत्मगौरव ने उन्हें ललकारा. तब सुधार वाले कई आंदोलन उठे जिन्होंने बुराइयों को भगाते हुए भी मूल रूप में हिंदुत्व को स्वीकार कर के उसे गौरव और आदर दिया.

समाज सुधार का मंत्र

रामकृष्ण संत थे लेकिन उन के शिष्य विवेकानंद ने जागृति व समाज सुधार का मंत्र फूंका. ऐनी बीसेंट ने थियोसाफी के जरिए हिंदुत्व को लगभग पूर्ण स्वीकृति दी और हिंदुओं को अपने धर्म पर गर्व करने के लिए कहा. स्वामी दयानंद ने इन दोनों से ही आगे बढ़ कर पुरोहितवाद व कुरीतियों पर सीधा प्रहार किया और संपूर्ण विकृतियों को फलांगते हुए सीधे वैदिक शुद्धता को आधार बना कर आर्य समाज का प्रचंड सुधारवादी आंदोलन चलाया.

स्वामी दयानंद संत नहीं थे, बल्कि योद्धा थे, क्रूसेडर थे. उन का व्यक्तित्व इन्हीं कारणों से आधुनिक इतिहास में अकेला है. हिंदू धर्म उन से पहले बराबर संकुचित होता आया था, दबता गया था. स्वामी दयानंद ने इस दैन्य और पलायन को ठोकर मार कर मुसलिम और ईसाई धर्मप्रचारकों को ललकारा और उन दिनों की भूली हुई याद ताजा की जब हिंदू धर्म इतना जीवंत था कि शक और हूण और सीथियन सभी इस में मिल कर हिंदू बन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गए थे और जब उस ने भारत की सीमाओं के बाहर जा कर रोम, मिस्र, हिंदचीन और इंडोनेशिया तक अपनी सभ्यता और व्यापार के परचम लहराए थे.

सौम्य और दब्बू समझे जाने वाले हिंदू से ऐसी आशा किसी को न थी और इसी कारण जीवन भर दूसरे धर्मों के प्रचारकों ने स्वामी दयानंद को बदनाम किया और अंगरेज इतिहासकारों ने उन के महत्त्व को भरसक कम कर के दिखाने की कोशिश की.

आधुनिक युग के पहले हिंदू

वक्त आ गया है कि स्वामी दयानंद के क्रांतिकारी व्यक्तित्व और कार्यों का सही मूल्यांकन किया जाए. स्वामी दयानंद आधुनिक युग के पहले हिंदू थे जिन्होंने हिंदुत्व के ध्वस्तप्राय गौरव को सहारा दिया, हिंदी भाषा के महत्त्व को पहचाना और बाद में चलने वाले राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए वातावरण तैयार किया.

उन की जो बातें आज हमें कुछ अजीब लगती हैं उन के निश्चित कारण थे. हिंदू समाज पर पुरोहितवाद, उस के रचे ग्रंथ व कर्मकांड इस कदर हावी हो गए थे कि बिना सीधी लड़ाइयों और शास्त्रार्थों के, बिना वैदिक शुद्धता का नारा उठाए और बिना एक भिन्न प्रकार का कर्मकांड रचे हतज्ञान और आत्मगौरवहीन, सुप्तप्राय हिंदू समाज का ध्यान एक ओर पंडों, पुजारियों, रासलीलाओं और पुराणों से और दूसरी ओर इसलाम तथा ईसाई मत के प्रचारकों और अंगरेजियत की चकाचौंध व उस के अनुसरण से मिलने वाले इनामों के लालच से हटा पाना असंभव था. कुरीतियों के रेगिस्तान में तेज और सीमित बह कर ही सुधार की धारा दूर तक जा सकती थी.

स्वामी दयानंद की मृत्यु के बाद भी आर्य समाज ने उन के कार्य को जारी रखा. स्त्री उद्धार, अछूतोद्धार और शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने ऐतिहासिक भूमिकाएं अदा की हैं. उस ने देश को व स्वतंत्रता

स्वामी विवेकानंद, जिन्होंने हिंदुओं में जागृति व समाज सुधार का मंत्र फूंका था

संग्राम को अनेक महान विचारक, नेता और योद्धा दिए हैं और विशेषकर विभाजन के पूर्व के पंजाब में उस का बड़ा महत्त्व था.

लेकिन इस सब के बावजूद कोई भी तटस्थ प्रेक्षक यह कहे बिना नहीं रह सकता कि संपूर्ण हिंदू समाज के संदर्भ में राममोहन राय से ले कर गांधीजी तक के इन महापुरुषों और ब्रह्म समाज से ले कर साधु समाज तक के सुधार आंदोलनों को केवल आंशिक सफलता ही मिली है. आज भी हिंदू समाज गिरा हुआ और टुकड़ों में बंटा हुआ है और निरंतर विघटन के मार्ग पर अग्रसर है.

सच पूछें तो उस की स्थिति विचित्र है. एक ओर तो वे लोग हैं जो सोचनेसमझने वाले और साधन संपन्न हैं तथा अच्छी शिक्षा प्राप्त हैं. इन लोगों में हिंदुत्व के प्रति न तो कोई लगाव है न चिंता, बल्कि अपने को हिंदू मानने व कहने में और हिंदू समाज की कठिनाइयों के बारे में सोचने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मित्रता

सच्ची मित्रता में उत्तम से उत्तम वैद्य की सी निपुणता और परख होती है, अच्छी से अच्छी माता का सा धैर्य और कोमलता होती है.

—रामचंद्र शुक्ल

या बोलने में भी इन्हें शरम लगती है.

दूसरी ओर जो विशाल जनसमुदाय है वह धार्मिक स्तर पर अब भी पंडेपुजारियों के चंगुल में है और सामाजिक आचरण के क्षेत्र में अब भी पुरानी रूढ़ियों से ग्रस्त है.

स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में जो हमारी प्रगति अपेक्षित तेजी से नहीं हुई है और जो आज हम जनजीवन को विविध व्याधियों से ग्रस्त पाते हैं उस के मूल में भी हिंदू समाज व धर्म की यही दुखद स्थिति है क्योंकि अंततः यह स्पष्ट है कि हिंदुस्तान कमोबेश वैसा ही बनेगा जैसे उस के हिंदू होंगे.

यहां हम एक और भी आधारभूत प्रश्न उठा सकते हैं: क्या कारण है कि वैचारिक स्तर पर अपनी तमाम उपलब्धियों के बावजूद हिंदू जाति आज गिरी हुई, टूटी हुई है? कारण यही है कि पिछले लगभग एक हजार वर्षों के शतनकाल के दौरान हमारे सिद्धांतों और हमारे आचरण के बीच एक खाई खुदती गई है. बातें तो हम करते रहे सातवें आसमान की लेकिन हमारे कर्म रहे रसातल के.

यही वजह है कि जो पश्चिमी जातियां संस्कृति और दर्शन में हम से कहीं पीछे थीं वे अपने अपेक्षाकृत स्वस्थ, सामाजिक आचरण व व्यवहार के कारण हम पर हावी हो गईं. हमारी व्यावहारिक बुराइयां हमारे सारे ऊंचे आदर्शों पर भारी पड़ीं. सिद्धांत रूप से हम ने नारी को पूजनीय माना, पर व्यवहार में हम ने उस को दासी और भोग्या बना दिया. सिद्धांत में हम ने हर मनुष्य को ईश्वर का रूप माना, व्यवहार में हम ने अछूतों को अपने से अलग कर दिया और उन्हें मुसलमान और ईसाई बनने पर मजबूर कर दिया.

और जो लोग आज भी हिंदुत्व के मूल सिद्धांतों और उस की किताबों का ढिंढोरा पीट रहे हैं वे आज भी वही अफीम चाट रहे हैं, जिसे चाटचाट कर हमारी यह हालत हुई है. अंततः मनुष्य, उस का व्यवहार, उस के कार्यकलाप महत्त्वपूर्ण होते हैं न कि किताबें और सिद्धांत. और आज हम से अगर कोई पूछे कि हजरत, यह कैसा धर्म और कैसी नैतिकता है जिस के चलते समाज में चोरबाजारी, मिलावट, घूसखोरी और दुराचरण पनप रहे हैं, अनुशासनहीनता और अमर्यादित आचरण बढ़ रहे हैं, तो हम क्या जवाब दे सकते हैं? कोई भी धर्म उतना ही अच्छा होता है जितने उस के अनुयायी.

अस्तु इस संदर्भ में देखें तो और सुधार आंदोलनों की तरह आर्य समाज की सफलता महत्त्वपूर्ण होते हुए भी संपूर्ण हिंदू समाज के संदर्भ में आंशिक ही मानी जाएगी. उस ने अधिकतर पंजाब और पश्चिमी भारत के मध्य वर्ग को ही प्रभावित किया और इस का कारण, जैसा सरदार क. न. पानिक्कर ने कहा है, यह था कि उस का आधार बहुत सीमित रहा और वह वहीं पनप पाया जहां पारंपरिक हिंदू धर्म कमजोर पड़ गया था.

केवल वेदों को ले कर और पुराणों, रामायण इत्यादि को नकार कर बहुत दूर तक जाना संभव नहीं था. शिक्षा के क्षेत्र में भी गुरुकुल प्रणाली आगे नहीं बढ़ी है और आर्य समाज के स्कूलकालिज अपना विशिष्ट व्यक्तित्व खो कर अन्य शिक्षण संस्थाओं जैसे बनते जा रहे हैं. पंजाब के दो विभाजनों में भी आर्य समाज ने बहुत कुछ खोया है.

असल में आज प्रश्न अमुक आंदोलन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

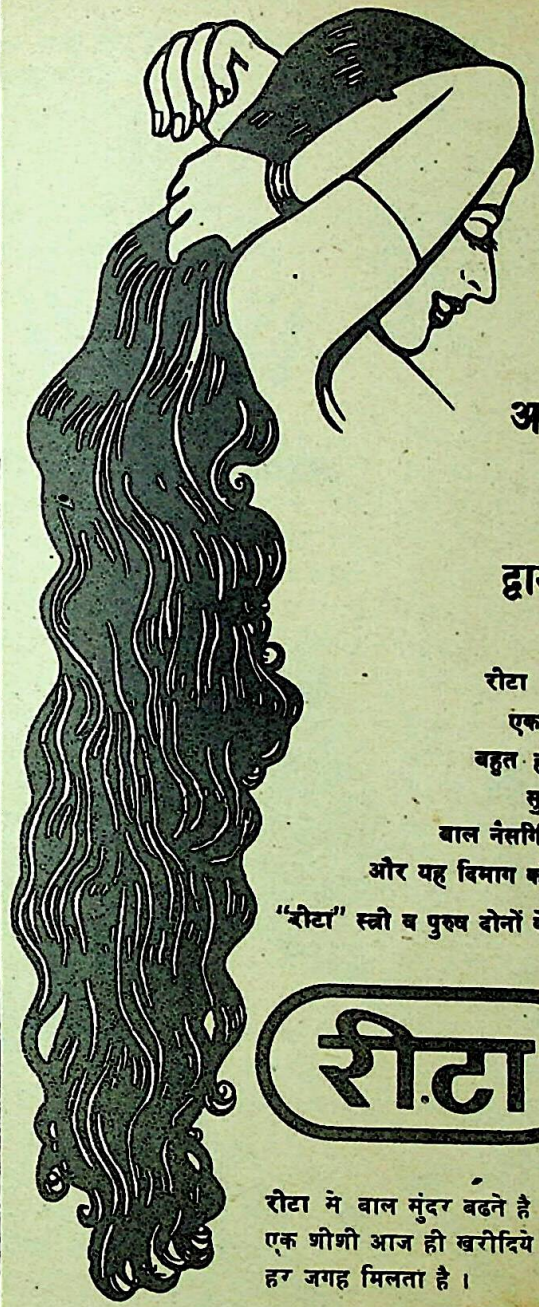

आपके बालों को
जरूरत है
"रीटा"
द्वारा देखभाल की

रीटा बालों को सँवारने का
एक उत्तम साधन है, जो
बहुत ही गाढ़ा और मोहक
सुगंधवाला है। इससे
बाल नैसर्गिक रूप से घने बढ़ते हैं
और यह दिमाग को ठंडक पहुँचाता है।
"रीटा" स्त्री व पुरुष दोनों के लिए श्रेष्ठ तेल है।

रीटा

रीटा में बाल सुंदर बढते है।
एक शीशी आज ही खरीदिये।
हर जगह मिलता है।

२१ मि.लि. और १०० मि.लि. सैजों में मिलता हैं।

वीटो कंपनी
१६, खोत स्ट्रीट, मद्रास-६०० ००१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

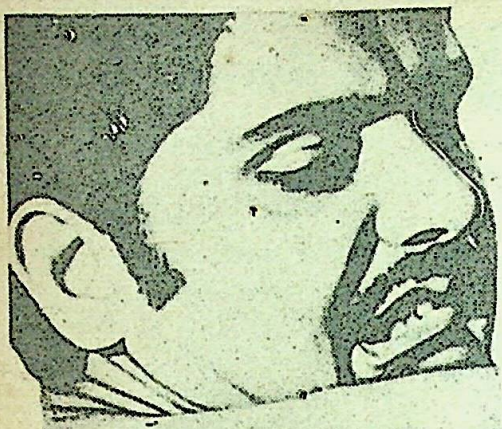

गहराई तक असर करनेवाला अमृतांजन डर्मल ऑइंटमेंट आपकी त्वचा की दाद, खाज, खुजली और अन्य चर्म-रोगों से बखूबी हिफाज़त करता है. आज ही एक डिबिया खरीदें!

अमृतांजन डर्मल ऑइंटमेंट

अमृतांजन लिमिटेड,
१४/१५ लज़ चर्च रोड,
मद्रास ६०० ००४.

चमड़ी के रोगों से बचिए

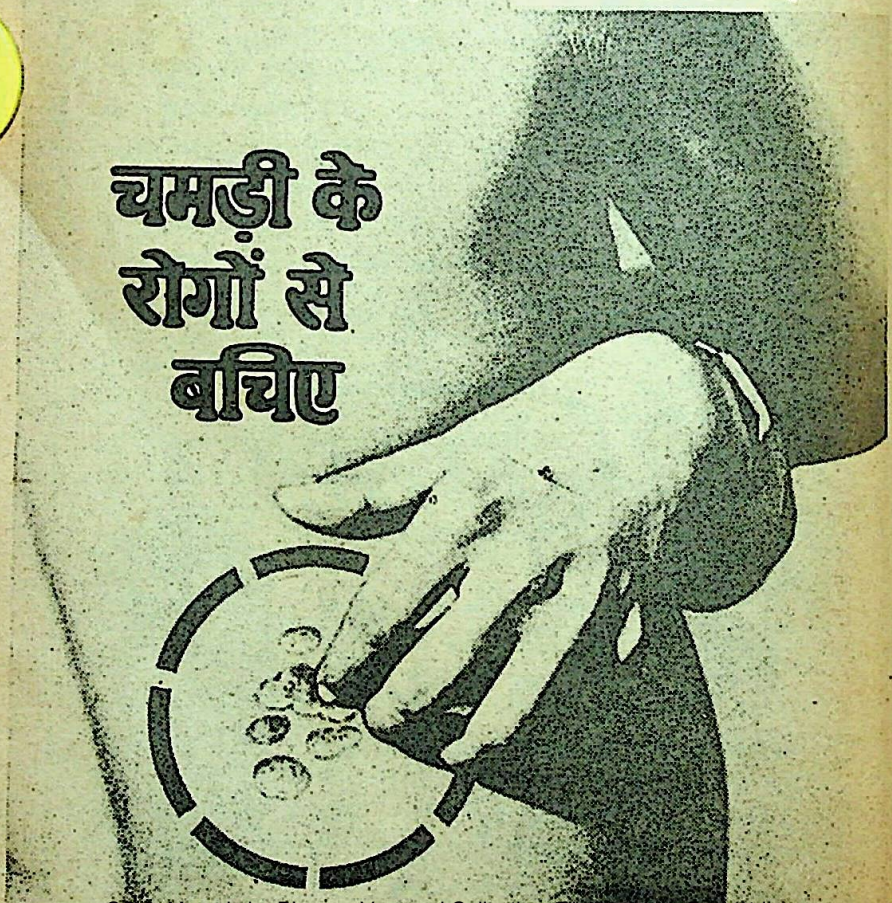

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

SAA/AM/1905 HN

की सफलताअसफलता आंकने मात्र का नहीं है. आज जो प्रश्न उपस्थित है वह संपूर्ण हिंदू समाज के जीवनमरण का प्रश्न है. आज न तो हमारे पास कोई मंत्र है, न नारा, न सामाजिक क्रांति का कोई सर्वमान्य कार्यक्रम. पुरानी पीढ़ी अपने व्रतउपवासों में मग्न है. नई पीढ़ी को धर्म और समाज की चिंता नहीं है और वह हिंदू समाज के आसन्न खतरे से अपरिचित है. और जो संपन्न हैं, जो वैचारिक स्तर पर क्रांति के अग्रदूत बन सकते थे, वे दूसरी बातों में व्यस्त हैं.

कुरीतियों और रूढ़ियों के शिकंजे में

अपनीअपनी ढपली अपनाअपना राग हिंदू समाज के सभी संप्रदाय और मत बजा रहे हैं. कुछ थोड़े से पढ़ेलिखे व मध्यवर्ग के लोग सुधारवादी आंदोलनों से प्रभावित हैं. लेकिन हिंदू समाज का विशाल थका हुआ पुराना मर्मस्थल, हतपिंड, अब भी वैसा ही गफलत में पड़ा हुआ है, कुरीतियों, रूढ़ियों और संज्ञाशून्यता के शिकंजे में है.

एक और भी बात है. औद्योगिक क्रांति और समाजवाद की नई चुनौती का भी हिंदू धर्म के पास कोई जवाब नहीं है. हिंदू समाज का गठन घटकों या ग्रुपों के आधार पर था. ये ग्रुप थे परिवार, गांव और पेशा या उद्योग. औद्योगिक क्रांति व शहरी सभ्यता इन सभी इकाइयों को छिन्नभिन्न कर रही है और हिंदू मात्र को एक नए माहौल में अकेला, निस्सहाय खड़ा कर रही है.

मशीनी सभ्यता और इस अकेलेपन से घबरा कर यह अकेला हिंदू कहीं आर्य समाज, कहीं मंदिर और कहीं रामकृष्ण मिशन में जाता है या भीड़ में शामिल हो कर हरिद्वार, गया, पुरी और काशी भागता है. लेकिन उस की चेतना में संपूर्ण हिंदू समाज शायद ही आता हो और दूसरे हिंदुओं से उस का तादात्म्य शायद ही बैठता हो.

यदि मात्र सुधार और क्रांति का नारा

माप

धनवानों के हाथ में माप ही एक है. वह विद्या, सौंदर्य, बल, पवित्रता और तो क्या हृदय भी उसी से मापते हैं.

—जयशंकर प्रसाद

उठाते हैं तो अपनेआप को अकेला पाते हैं. यदि सब के साथ चलते हैं तो अपनेआप को पैंदे में छेद वाले, मस्तूलहीन जलयान का मुसाफिर पाते हैं.

यह स्थिति श्रेयस्कर नहीं है, शुभ नहीं है न हिंदू धर्म के लिए, न भारत के लिए क्योंकि चाहे जो हो हिंदू समाज की निर्यात से भारत की नियति का घनिष्ठ संबंध है. आज हिंदू समाज अपनी जीवंतता को खो चुका है. प्रसार और प्रचार तो दूर की बातें हैं, वह उन को भी अपने साथ रखने में असमर्थ सिद्ध हो रहा है, जो कल तक हिंदू थे और जिन्हें हिंदुत्व का गौरव था.

इतिहास बड़ा निर्मम है, निःसंग है. वह भावना से नहीं, भौतिकता व स्थूल आधारों से बनता है. हिंदू समाज से पहले भी बहुत से बड़े और सुसंस्कृत मानव संगठन हुए हैं जो अपनेआप को जगत के गुरु समझते थे. लेकिन वक्त आ गया और वे कहीं के न रहे, उन का नामोनिशान मिट गया. हिंदू धर्म और समाज में भी कोई निरालापन नहीं है. हम नहीं चेते, हम ने अपनेआप को बचने लायक नहीं बनाया तो हम भी काल की स्लेट पर अपने दस्तखत छोड़ कर भूतकाल में समा जाएंगे.

वक्त आ गया है कि सभी सुधारवादी आंदोलन मिल कर एक अधिकतम स्वीकार के आधार पर एक कार्यक्रम बनाएं. यह कार्यक्रम सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक तीनों स्तरों पर हो. उस में से उन बातों को छोड़ दिया जाए तो मात्र सैद्धांतिक,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटी और विग्रह की जनक हैं. लेकिन उन सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जम कर आवाज उठाई जाए जिन्होंने हिंदू समाज को निर्वीर्य और श्रीहीन किया है.

हो सकता है कि इस कार्यक्रम, इस आंदोलन में से हमें उन मठाधीशों और पुरोहितों को छोड़ना पड़े जिन की रोटी-रोजी विग्रह, मतवाद और अंधविश्वास से चलती है. लेकिन कोई वजह नहीं कि हम केवल वेद के नारे पर अड़े रहें या केवल सिद्धांत की खातिर इस सुधारवादी आंदोलन से कटे हुए और अलग रहें. वैसे भी यह दुराशा मात्र है कि संपूर्ण हिंदू समाज शिव, ब्रह्मा, दुर्गा इत्यादि को और पूजाउपासना की अन्य पद्धतियों को त्याग कर केवल अदिति और वायु और संध्या और हवन को अपना लेगा और न ऐसा उस का पुनरुत्थान के लिए जरूरी है.

वक्त का तकाजा है कि व्यर्थ की तकरार छोड़ कर सुधारवादी व प्रबुद्ध लोग हिंदू समाज की पुनःरचना व सुधार के महत्कार्य में एक संपूर्ण कार्यक्रम बना कर जुट जाएं. नव हिंदुत्व का नारा उठाएं और एक देशव्यापी आंदोलन चलाएं. इस काम में अनेक दयानंदों, अनेक विवेकानंदों की जरूरत है.

यह कार्य आसान नहीं है लेकिन बहुत जरूरी है. देर हो चुकी है लेकिन अब भी समय है. वे सब जो हिंदू समाज के भविष्य के प्रति चिंतित हैं, वे सब जो सुधार चाहते हैं, आगे आएं, वक्त की पुकार सुनें और इस कार्य में सक्रिय योग दें.

"धंधे के हद से ज्यादा बढ़ जाने के कारण मुझे बैंक में खाता खुलवाना पड़ा."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह है आपके परिवार के लिए चुस्ती फुर्ती से भरपूर स्वास्थ्य और अधिक शक्ति!

वॉटरबरीज़ विटामिन टॉनिक महत्वपूर्ण तत्वों का एक संतुलित फ़ार्मूला है। जिसमें वृद्धि और शक्ति के लिए विटामिन और खनिज़ पदार्थ, स्वस्थ रक्त के निर्माण के लिए लोहा, तथा भूख बढ़ाने के लिए भूख-उत्तेजक तत्व मिले हैं। और स्वाद लाजवाब।

अपने परिवार के लिए वॉटरबरिज़ विटामिन टॉनिक ख़रीदिये— आज ही।

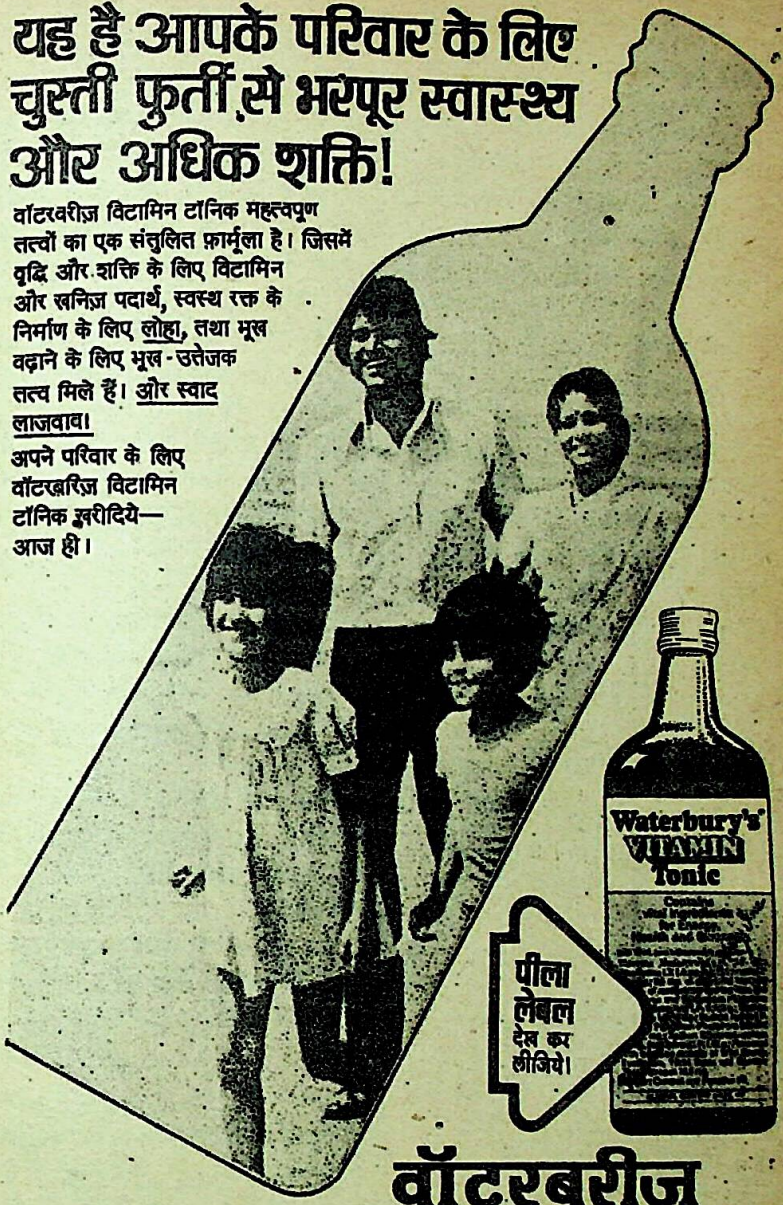

वॉटरबरीज़ विटामिन टॉनिक

पूरे परिवार के लिए सर्वथा परिपूर्ण टॉनिक

Grant.11.HN (R)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों के मुख से

मेरी चार वर्षीया बहन बड़ी पेटू है. एक बार वह ताईजी के पास जा कर बोली, "हम को खाना दे दो." ताईजी ने गुस्से में कहा, "अपने पेट पर पट्टी बांध लो."

थोड़ी देर बाद वह पेट पर फ्राक की पेटी बांध कर ताईजी के पास गई और बोली, "देखो, मैं ने बांध ली है. अब मुझे खाना दे दो." —राजेश गुप्ता

✦

मेरे मामाजी की साढ़े तीन वर्षीया लड़की मिक्की बहुत ही बातूनी है. एक दिन मैं ने उस से कहा, "अच्छा, मिक्की, तुम्हारा घर का नाम तो 'मिक्की' है पर स्कूल का क्या नाम है?"

वह झट से मुंह बनाती हुई बोली, 'सेंट्रल स्कूल.' —अशोक सागर

पंद्रह अगस्त को हम सब परिवार के सदस्य टेलीविजन पर लाल किले में आयोजित स्वतंत्रता दिवस का सीधा प्रसारण देख रहे थे. जब टेलीविजन में उपस्थित जनसमूह का दृश्य दिखाया गया तो उस में लोग गरमी के कारण कागज, गत्ते या रूमाल हिलाहिला कर पंखा करते दिखाई दिए. यह देख कर मेरी छः वर्षीया भतीजी अनु बड़े भोलेपन से बोली, "चाचा, जरा पंखा टेलीविजन की तरफ कर दो न देखो सब को कितनी गरमी लग रही है."

—कृष्णमोहन गुप्ता

मेरे छः वर्षीय भाई बबलू को टेलीफोन पर आवाज बदल कर दूसरों के नाम से बात करने में बहुत मजा आता है. एक बार पापा के किसी दोस्त का टेलीफोन आया.

इस से पहले कि मैं आगे बढ़ कर फोन उठाता, बबलू ने दौड़ कर रिसीवर को कानों से लगा लिया. वह कुछ देर तो दूसरी ओर की आवाज सुनता रहा, फिर आवाज को भारी बनाने की कोशिश करता हुआ बोला, "हलो, हां, हां, मैं पापा ही बोल रहा हूं."

उस का यह कहना था कि मेरी और टेलीफोन पर पापा के दोस्त की एक जोरदार हंसी गूंज उठी. बेचारा बबलू भौंचक्का सा कभी टेलीफोन को तो कभी मुझे, घूरने लगा.

—राजू भुतोड़िया

✦

मेरे बड़े भाई साहब बिहार सरकार के कर्मचारी हैं. वह घर में हमेशा केंद्रीय महंगाई भत्ते की चर्चा करते हैं और कहते हैं कि उस के मिल जाने पर नईनई चीजें खरीदेंगे.

एक दिन मेरे पांच वर्षीय भतीजे अभिनव ने उन से पैंसिल खरीदने के लिए कहा. भाई साहब बोले, "ठीक है, दें, खरीद दूंगा."

यह सुन कर अभिनव तपाक से बोला, "क्या पैंसिल भी महंगाई भत्ता मिलने पर ही खरीदेंगे?" —रामबहादुर सिंह

(सर्वश्रेष्ठ)

इस स्तंभ के लिए आप अपने बच्चों, मित्रों व संबंधियों के बच्चों के मुख से कही गई बातें भेज सकते हैं, प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें : स्तंभ विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • ममता खरे

सावधान बच्चा छोटा है!

छोटे बच्चों के प्रति कुछ ज्यादा ही सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है. आप की जरा सी लापरवाही से बच्चे की जान खतरे में पड़ सकती है...

"राधा, मुन्ने को अंदर ले आओ. उस के दूध पीने का समय हो गया है," बुनाई करतेकरते सोमा ने आवाज लगाई. राधा घर के पिछवाड़े दूसरे नौकरों के साथ गप्पें लड़ा रही थी. मालकिन की आवाज सुन कर उस में कर्त्तव्यबोध जागा. उस ने उठ कर इधरउधर देखा. दूसरे नौकरों से भी पूछा, पर मुन्ना कहीं नहीं दिखाई पड़ा. भय से सिहर कर वह मुन्ने को ढूंढ़ने बाहर दौड़ी. सामने लान पर एक नजर डालती हुई वह सड़क की ओर बढ़ गई. दसरे नौकर भी डर गए.

सोमा जब दोतीन आवाजें लगा चुकी और किसी की आवाज नहीं सुनाई दी तो उठ कर बाहर आई. वहां से पिछवाड़े पहुंची और यों ही एक बार झांक लेने के इरादे से जहां गाय बंधती थी उधर चली गई, वहां पहुंचते ही वह चीख पड़ी. मुन्ना गाय के अगले पांव के पास औंधा बेहोश पड़ा था. उठाते ही उस का बायां पांव लटक गया जो गाय की कृपा से टूट गया था. नन्हे बच्चे को यह सजा किस कारण मिली? सोमा का नौकरानी पर बच्चे को छोड़ कर निश्चित हो जाना ही तो इस का एक कारण नहीं था?

सोमा किस्मत वाली थी, इसलिए बच्चा बच गया. किंतु किरण, नीलिमा तथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिजली के स्विच तक पहुंचने की यह कोशिश किसी दुर्घटना का कारण बन सकती है (ऊपर). बच्चे एक जगह चैन से कब बैठते हैं. ऐसी स्थिति में उन के सोने का यह प्रबंध कितना खतरनाक है. (नीचे)

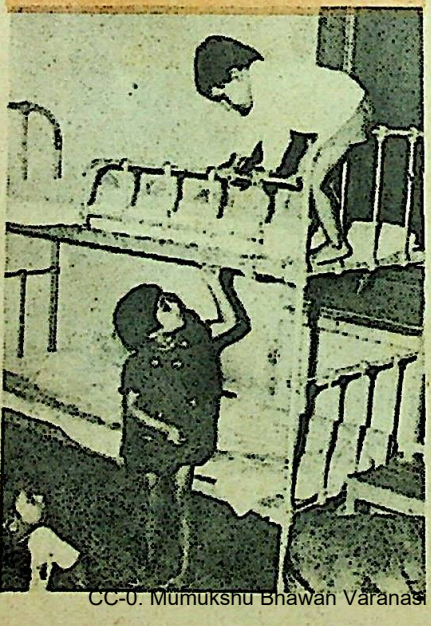

बिमला क्या कभी अपने को क्षमा कर सकेंगी?

किरण का बच्चा विभोर अभी साल भर का ही था. एक दिन किरण उसे कुछ खिलौने दे कमरे में बैठा कर नहाने चली गई. बाहर का दरवाजा बंद था, इसलिए वह निश्चिंत थी.

लगभग बीस मिनट बाद वह नहा कर गुनगुनाती हुई बाहर निकली, फिर आंगन में कपड़े फैलाए, दूसरे कमरे में जा कर बाल संवारे, चोटी गूंथी, सिंदूर की बिंदी लगाई, फिर विभोर के लिए एक संतरा ले कर कमरे में आई. पर विभोर को वहां न पा कर घबरा उठी. एकाएक उस की नजर कमरे के एक कोने की ओर गई. वह जोर से चीख पड़ी. विभोर कमरे में नीचे हीटर के लिए लगे स्विचबोर्ड से चिपका पड़ा था. उस की नन्ही उंगलियां प्लग पाइंट में घुसी हुई थीं.

मां की लापरवाही

इसी तरह नीलिमा अपने घुमक्कड़ स्वभाव के कारण अपने छः माह के बच्चे से हाथ धो बैठी. वह प्रायः सोते हुए बच्चे को घर में अकेला छोड़ कर पड़ोसिन से बातें करने लग जाती थी. टुन्नू स्वस्थ और देर तक सोने वाला बच्चा तो था, पर सभी बच्चों की तरह सोते में अपनी जगह से खिसक जाता था. नीलिमा की अनुपस्थिति में वह उस दिन भी खिसका और सीधे पलंग से नीचे जा गिरा. सिर के बल गिरने से उस के सिर में गहरी चोट आई और नन्ही की गरदन टूट गई. थोड़ी देर बाद ही शायद उस के प्राणपखेरू उड़ गए.

बिमला के घर की दुर्घटना तो कम भी हृदय विदारक थी. अचानक घनघोर मूसलाधार वर्षा शुरू हो गई थी. बड़े अंदर बैठ कर गप्पें लड़ाने और गरमागरम पकौड़ियां खाने में लगे हुए थे. बिमला के दो लड़के बरामदे में थे. बड़ा सौभाग्य कोई देर बाद अन्य बच्चों के साथ पानी में खेलने लगा. छोटा अभी घुटने चलना या फिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीज को पकड़ कर खड़े होना सीख रहा थी, इसलिए वह बैठाबैठा बच्चों का खेल देखदेख कर किलक रहा था.

अचानक छोटू न जाने कब पानी में उतर गया और वहां जा पहुंचा जहां घर की छत से पानी की मोटी धार तेजी से गिर रही थी. पानी की ताकत के आगे उस की एक न चली. वह बह कर सामने की नाली में जा फंसा.

बड़ी देर बाद बिमला का ध्यान छोटू की ओर गया और फिर खोज शुरू हो गई. अंधेरा हो चुका था. हर घर में, सड़कों पर, इधरउधर ढूंढ़ने के बाद पुलिस चौकी में रिपोर्ट लिखाई गई. बिमला रोतेरोते बेहोश हो गई. पर किस घर की दिनचर्या रुकी है? सुबह उस के पति दूध लेने घर से निकले तो उन की नजर सामने नाले की ओर गई. थोड़ी देर बाद वह लौटे तो उन के हाथों में छोटू की अकड़ी हुई लाश थी.

इन दुर्घटनाओं पर ध्यान देने से पता चलता है कि लापरवाही ही इन का कारण है. हर माता जानती है कि बालक स्वभावतः हर चीज में रुचि लेता है और उस को अपनी बुद्धि से जांचतापरखता है. बाल स्वभाव की इन आदतों से माताएं यदि सावधान रहें तो संभवतः ऐसी भयंकर दुर्घटनाएं कभी न होने पाएं.

मोनिका की तीन साल की बेटी बबली बड़ी चंचल है. उस दिन जब मोनिका सब्जी काट रही थी तो उस के पति ने आवाज लगा कर शेव का पानी मांगा. मोनिका हंसिया वहीं छोड़ कर गरम पानी ले कर जैसे ही चौके से बाहर गई कि बबली वहां जा पहुंची. कोई रोकने वाला तो था नहीं, वह झट आसन पर बैठ कर आलू काटने लगी. पर आलू की जगह उस की उंगली ही कट गई. खून देख कर बबली चीख मार कर रोने लगी और मोनिका अपनी भूल पर पछताने लगी.

बच्चों के साथ घटने वाली हर छोटीबड़ी घटना का बड़ा महत्त्व है. मातापिता या अभिभावक का उन की ओर से उदासीन

ऐसी खतरनाक सीढ़ियां और बच्चे अकेले उतर रहे हैं. बच्चों को सीढ़ियों पर अकेला न छोड़ें. (ऊपर). कुत्ता चाहे पालतू ही क्यों न हो, छोटे बच्चों को उस के पास अकेला न छोड़ें. (नीचे).

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहना या उन्हें गलत बढ़ावा देना कभीकभी कितना घातक सिद्ध होता है, इस का ज्ञान तो बाद में ही होता है.

पड़ोस के एक मुसलिम परिवार का इकलौता बेटा असलम मौका पाते ही किसी न किसी की साइकिल उठा लेता और उसे चलाने की कोशिश करता. सीट पर वह बैठ नहीं पाता था. पर थोड़े से प्रयास के बाद वह साइकिल के फ्रेम में से एक पैर निकाल कर खड़ेखड़े पैडल चलाने लग गया. कोई देख न ले या साइकिल छिन न जाए, इस डर से वह सड़क पर साइकिल चलाया करता था. कई लोगों ने बच्चे को टोका और मांबाप से भी कहा. पर वे लोग हंस कर टाल गए, "अरे जनाब, चलाने दीजिए, इसी तरह तो सीखेगा. थोड़ीबहुत चोट के डर से बेकार क्या टोकें."

मुक्ता

नए अंकुर

कहानी प्रतियोगिता

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समय-समय पर नए अंकुर कहानी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती रही हैं. अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दिया गया है.

प्रतियोगिता में वे सभी नए लेखक कहानियां भेज सकते हैं, जिन की कोई कहानी अब तक कहीं प्रकाशित नहीं हुई.

पूर्ण विवरण के लिए मुक्ता का नया अंक पढ़ें.

मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055.

नतीजा यह हुआ कि असलम बेफ्रिक हो गया. और एक दिन वह सामने से आते हुए एक ट्रक के नीचे आ गया. ट्रक के चक्के उस के पैरों पर से चले गए. जान बच गई पर असलम जिंदगी भर के लिए पंगु हो गया.

आज असलम के मांबाप रोरो कर सब से कहते हैं, "असलम उम्र भर के लिए बोझ बन गया." कोई बताए कि बोझ बनाने की जिम्मेदारी किस की है?

एक हद दर्जे के लापरवा परिवार ने अपना घर ही फुंकवा डाला. हर तरह की जरूरी, गैरजरूरी, खतरनाक, गैरखतरनाक चीजें फेंके रखना उन दंपती का स्वभाव था. एक दिन उन के पांच साल के बेटे को दियासलाई मिल गई. उस ने खाट पर बैठ तीलियां जलाजला कर फेंकना शुरू कर दीं. नतीजा यह हुआ कि सारा घर जल गया. एक कतरन तक नहीं बची. फायर ब्रिगेड आया, पड़ोसी इकट्ठे हो गए, पर सब बेकार.

इतनी बड़ी दुर्घटना के बाद भी वे अपनी जिम्मेदारी को कभी स्वीकार नहीं करते. उलटे अपनी लापरवाही पर पर्दा डालते हुए कहते हैं, "भाग्य में यही लिखा था. भला हम उन्हें क्या बचा सकते थे. जीवनमरण तो ईश्वर के हाथ है."

कुछ लोग ऐसी बातों के लिए अपने पिछले जन्म के कर्मों को दोष देते हैं. पर वे यह कभी स्वीकार नहीं करते कि यह दुखद घटना उन की मौजूदा लापरवाही से हुई है. अपने को कसूरवार न मान कर ऐसी दुर्घटनाओं को ईश्वर नाम की अदृश्य सत्ता के मत्थे मढ़ देना हमारी एक आदत बन गई है.

कुछ तो हम अपने से बच्चे की तुलना कर के भी उसे खतरे में डाल देते हैं. गरमी मौसम बदलने पर खुद को गरमी लग रही है तो बच्चे को भी स्वेटर नहीं पहनाया जाता या उसे पंखे के नीचे बैठा दिया जाता है. उस वक्त हम भूल जाते हैं कि बच्चे के लिए मौसम नया है. उस का शरीर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोटे बच्चों का इस तरह समुद्र के किनारे अकेले खेलना उन्हें किसी खतरे में डाल सकता है.

शरीर उसे बरदाश्त न कर सकेगा. बच्चा बीमार पड़ गया तो डाक्टर के चक्कर लगाने लगते हैं, लेकिन अपनी गलती आसानी से नहीं मानते हैं.

इसी तरह मईजून के महीनों में स्वयं तो खस की टट्टी या कूलर में पड़े खर्राटे भरते हैं और बच्चा बाहर जा कर दोपहर भर खेलता रहता है. उसे लू लग गई तो हम आश्चर्य से सोचने लगते हैं, ऐसा कैसे हो गया?

मुझे याद है जब मैं बच्ची थी तो मेरे डाक्टर ताऊजी के पास एक युवा पति-पत्नी अपनी बच्ची को ले कर आए और घबरा कर बोले, "डाक्टर साहब, हमारी बच्ची ने पैसा खा लिया है. अब क्या होगा? इसे किसी प्रकार बचा लीजिए."

ताऊजी ने उन्हें पैसों को इधरउधर पड़े रहने पर खूब डांटा था.

बच्चों को दुर्घटनाओं से बचाने के लिए यह जरूरी नहीं है कि आप उन के सिर पर दिनरात सवार रहें या उन्हें अपनी आंखों से दूर न होने दें. ऐसा भी ठीक नहीं कि रातदिन हर बात के लिए उन्हें डांटते रहें और 'यह करो,' 'यह न करो' का निरंतर आदेश देते रहें. इस से उस की शक्तियों का विकास नहीं हो पाता. उस की बुद्धि कुंठित हो जाती है. वह जिद्दी और ढीठ हो जाने के साथ ही आप से नफरत भी करने लगता है.

बच्चा जब तक छोटा रहता है, आप सावधान और सतर्क रह कर उस की देखभाल कीजिए और प्यार से समझा कर उसे अच्छेबुरे तथा खतरनाक चीजों का ज्ञान कराइए. बड़ा होने पर उसे सही रास्ता दिखाइए. किसी चीज की उपयोगिता समझाते हुए उस की खराबियों को भी बताइए, जिस से उस का प्रयोग वह सोच समझ कर करे.

खतरनाक चीजों से वह न खेले, इस बात का आप फिर भी ध्यान रखिए. कुछ मांबाप बच्चे की गलती पर उसे मार या भयंकर दंड दे कर मानो अपना हरजाना वसूल करते हैं. यह सरासर मूर्खता है. बच्चा अगर अच्छेबुरे का ज्ञान ही रखता होता तो ऐसी बात क्यों करता? आप उसे छूट भी दीजिए पर अपने कर्त्तव्यों, अपनी जिम्मेदारियों को ध्यान में रख कर.●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बरतनों की सफाई कैसे करें ?

अकसर देखा गया है कि बहनें खाना पकाने और खाने के बाद बरतन एक ओर पटक देती हैं. इस से मक्खियां और मच्छर गंदगी फैलाना शुरू कर देते हैं. जूठन बरतनों पर ही सूखने लगती है. गंदे बरतनों में पकाया हुआ खाना न केवल स्वाद में खराब होता है, बल्कि सेहत को भी नुकसान पहुंचाता है. रसोईघर के बरतनों को साफ रखने और उन के जरिए छूत का रोग न होने देने के लिए नीचे दी गई सलाह काम में ला सकते हैं :—

1. काम में आ चुकने के बाद बरतन में उसी समय पानी डाल दीजिए या उस बरतन को पानी से भरी बालटी में डाल दीजिए.

जिस बरतन में आटा गूंधा गया हो या दूध उबाला गया हो, उस में ठंडा पानी ही डालिए. गरम पानी डालने से बरतन में लगे आटे या दूध को उतारने में मुश्किल होती है.

2. बरतन साफ करते समय खुरचिए नहीं क्योंकि इस से बरतन में मैल रह जाती है और मैल में कीटाणु पलते हैं.

3. बरतनों में से प्याज की उन में आलू उबालने से दूर की जा है.

4. स्टील की छुरियों पर धब्बे दूर करने के लिए इन्हें बार पाउडर और कच्चे आलू से मलिए.

5. अलमीनियम के बरतनों भी तेज पाउडर या सोडा नहीं चाहिए. धोने के बाद इन्हें सूखे साफ कर लेना चाहिए. गीले से बरतन खुरदरे और खराब हो हैं. इन में कोई चीज राड़ कर जाए तो उस में प्याज उबालिए.

6. स्टील के बरतनों को रखिए और उस में खुरचने के लि पड़ने दीजिए. धोने के बाद सुखा लीजि

7. कलई किए हुए बरतनों के बाद अच्छी तरह सुखा लीजिए जंग न लगने पाए. कपड़े से पोंछ कर जगह में खड़े कर के रखिए. अगर के बाहर का हिस्सा पीतल का कभीकभी नींबू के छिलके से रगड़ —उषा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विभिन्न व्यंजन बनाने की विधियां

मिल्क पाउडर का बिना अंडे वाला केक

सामग्री : डेढ़ कटोरी मैदा, एक कटोरी मिल्क पाउडर, पौन कटोरी शक्कर, एक छोटा चम्मच वनीला एसेंस, एक कटोरी मलाई, एक कटोरी दूध, एक छोटा चम्मच बेकिंग पाउडर, आधा छोटा चम्मच मीठा सोडा, एक छोटा चम्मच मिल्क मसाला या औरेंज का शरबत, थोड़ा सूखा मेवा.

विधि : मैदा, मिल्क पाउडर, बेकिंग पाउडर, सोडा व सूखा मेवा (पीस कर) आटे की छलनी में डाल कर दोतीन बार छान लें व छलनी पर बचे मेवे को अलग रख लें.

अब एक चौड़े बरतन में मलाई व शक्कर डाल कर खूब फेंटें. जब शक्कर व मलाई एक हो जाए तो वनीला एसेंस, शरबत व दूध धीरेधीरे फेंटते हुए मिलाएं. उस में मैदे वाला मिश्रण थोड़ाथोड़ा कर के डालें व एक जान होने तक फेंटती जाएं. फिर केक के टिन को चिकना कर के उस के आकार के अनुसार चिकनाई लगा कागज उस में बिछा दें और मिश्रणयुक्त घोल चम्मच की सहायता से उस में उंड़ेल दें.

ऊपर से सूखा मेवा बुरका दें. अब पहले से गरम ओवन में रख कर पहले मध्यम व फिर मंदी आंच पर उसे सेक लें. आधे घंटे बाद चख कर के देखें. फिर तैयार हो जाने पर उसे ओवन से निकाल कर ठंडा होने के लिए रख दें.

—शांति वापना

स्टीम्ड चाकलेट केक

सामग्री : 120 ग्राम मक्खन, चार बड़े चम्मच शक्कर, दो अंडे, एक कप दूध, आधा कप मैदा, चार छोटे चम्मच बेकिंग पाउडर, 10 ग्राम कुकिंग चाकलेट, चौथाई छोटा चम्मच नमक व चार कप पानी.

विधि : मक्खन व शक्कर को इतना फेंटिए कि मलाई की तरह बन जाए. अंडे, मैदा व नमक फेंट कर अलग रख लीजिए. अब मक्खन व शक्कर को फेंटते जाइए और उस में धीरेधीरे अंडे, मैदा व नमक मिलाते रहिए. इस प्रकार यह सारा मिश्रण तैयार कर लीजिए. चाकलेट को दूध में अच्छी तरह पका कर मिश्रण में डाल दीजिए. कुकर के डब्बे को चिकना कर के मिश्रण डाल दें और उसे ढक्कन से बंद कर दें.

कुकर में जाली रखें और उस में दो कप पानी डाल कर चाकलेट के मिश्रण का डब्बा उस पर रख दें. कुकर का ढक्कन बंद कर दें, लेकिन उस पर वेट न लगाएं. अब कुकर को आंच पर रख कर बीस मिनट तक गरम करें फिर ढक्कन खोल लीजिए और कुकर में दो कप पानी डाल कर उसे वेट के साथ बंद कर दें. आंच तेज कर के कुकिंग प्रैशर आन कर दें. फिर आंच मध्यम कर तीस मिनट तक रहने दें. उस के बाद कुकर को आंच से उतार कर स्वयं ठंडा होने दें. फिर उसे खोलें और क्रीम के साथ गरमगरम परोसें.

मावा पुडिंग

सामग्री : आधा लिटर दूध, 100

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्राम मावा, चार बड़े चम्मच शक्कर, तीन अंडे, 20 ग्राम छिला हुआ पिस्ता, आधा पैकेट अनन्नास के फ्लेवर वाला कार्नफ्लोर और दो कप पानी.

विधि : दूध को उबाल कर ठंडा होने के लिए रख दें. उस में मावा, शक्कर, कार्नफ्लोर मिला कर हिलाएं और अंडों को अच्छी तरह फेंट कर उस में दूध को मिला दीजिए. कुकर के डब्बे को चिकना कर, मिश्रण को उस में डाल कर ऊपर से बारीक कटा पिस्ता डाल दें.

अब कुकर में दो कप पानी डाल कर उस में जाली रख दें और उस पर दूध के मिश्रण का डब्बा ढक कर रख दें. कुकर का ढक्कन बंद कर दें और आंच को तेज कर के एक बार कुकिंग प्रेशर आने दें, फिर उसे मध्यम आंच पर 20 मिनट तक पकने दें. उस के बाद कुकर को स्वयं ठंडा होने दें. फिर कुकर का ढक्कन खोलें. उस में से पुडिंग निकाल कर उसे ठंडा होने के लिए रख दें. फिर उस पर चांदी के वरक सजा कर परोसिए. —उर्मिला सहदेव

वेजीटेबल अंडा

सामग्री : 250 ग्राम पनीर, एक चम्मच नमक, तीन चम्मच अरारोट, थोड़ा सा पीला रंग (खाने वाला), दो कड़छी घी.

विधि : पनीर को कद्दूकस कर के उस में नमक व थोड़ा सा अरारोट मिला कर तब तक मसलें जब तक वह नरम न हो जाए. फिर थोड़े से पनीर में पीला रंग डाल दें व छोटीछोटी गोलियां बना लें. बाकी पनीर के अंडे के आकार के गोले बना लें और उन के बीच में एकएक पीली गोली रख दें. अब इन अंडों को अरारोट के घोल में (जो न अधिक गाढ़ा हो न पतला) लपेट कर घी में धीमी आंच पर तल लें. इसे पोदीने की चटनी या टमाटर के सास के साथ परोसें. अत्यंत स्वादिष्ट लगेंगे.

इसी की सब्जी भी बन सकती है. प्याज, लहसुन, टमाटर का मसाला बना कर इन अंडों को बीच में छोड़ दें. दो कप पानी डाल दें, गाढ़ा होने पर पूरी के साथ गरम परोसें. —रेनू बंदेल

दाल के पापड़

सामग्री : आधा किलो धुली मूंग, आधा किलो धुली उड़द की दाल, दो बड़े चम्मच नमक, दो बड़े चम्मच खाने का सोडा, 100 ग्राम काली मिर्च (स्वाद अनुसार कम ले सकती हैं), 100 ग्राम जीरा, आधी कटोरी सरसों का तेल.

विधि : दोनों दालों को मिला कर उन्हें मैदा जैसा बारीक पीस लें. उस में थोड़ा सा सूखा आटा अलग रख लें. फिर सोडा व नमक को मिला कर अंदाज से पानी डाल कर गरम करें. अब दाल के आटे में अंदाज से उस गरम पानी से सख्त गूंध लें. ध्यान रहे कि आटा काफी सख्त हो. फिर तेल का हाथ लगा कर दाल को अच्छी तरह मल कर नरम कर लें. गुंधे आटे की छोटी छोटी लोइयां काट लें. फिर चकले को तेल का हाथ लगा कर लोइयों को बेल लें. पर पापड़ करने के लिए दाल का थोड़ा सूखा आटा लगा कर बेल सकती हैं. इस प्रकार सारे पापड़ छोटेबड़े जैसे चाहें बेल लें. आप देखेंगी कि एक किलो में ठीक आटे के कम से कम 130-140 पापड़ बनेंगे. —अनूप डोगरा

इस स्तंभ के लिए स्वादिष्ट और नए पकवान बनने की विधियां लिख कर भेजें. प्रकाशित होने पर पचीस रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पकवानों की विधियां इस पते पर भेजें : स्तंभ विभाग, सरिता नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

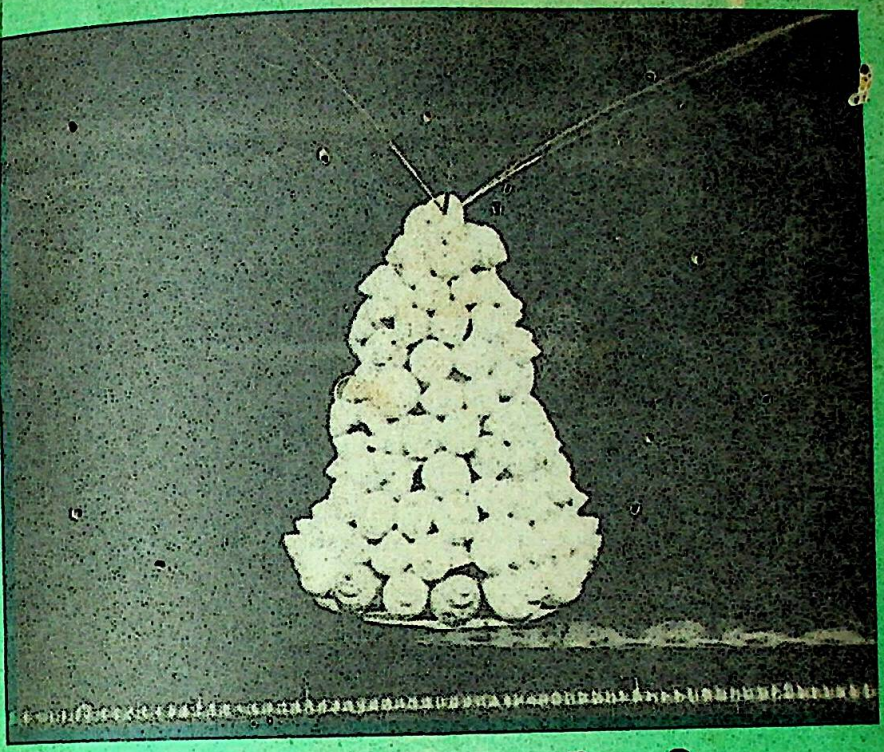

शंखों का शोपीस

छोटेछोटे शंखों को जोड़ कर बनाए गए इस अनूठे शोपीस को आप स्वयं तैयार कर सकती हैं.

यह चित्र रेत में पाए जाने वाले छोटे-छोटे शंखों का है. यह देखने में अनूठा, नाजुक व सुंदर 'शोपीस' है, जिस से अगरबत्ती स्टैंड का भी काम लिया गया है.

इसे बनाना बहुत मुश्किल नहीं है. (चित्र) नीचे जो आधार दिखाई दे रहा है वह 10 सेंटीमीटर व्यास के लगभग वृत्ताकार गत्ते का है. शंखों को इस पर गोल घेरे में फेविकोल की सहायता से लगाया गया है.

चित्र में यह उत्तरोत्तर एक टीले की शक्ल में है. यह शक्ल देने के लिए इन शंखों के अंदर एक कड़े कागज (ड्राइंग-शीट) की कीप लंबी नुकीली टोपी की तरह बना कर लगाई गई है, उस कीप के चारों ओर वृत्ताकार गत्ते पर फेविकोल लगा कर शंख लगाए हैं.

इस तरह सब से नीचे वाला घेरा बनेगा. जब यह सूख जाए तब इस पर दूसरा घेरा, शंखों से फेविकोल लगा कर बनाएं. इस के ऊपर तीसरा. बस इसी तरह आप एकदम टाप पर आ जाएंगे.

अब एक शंख जो अभी तक लगाए शंखों में सब से बड़ा हो, इस टीले के टाप पर आड़ा लगाइए. खुला मुंह ऊपर रहे ताकि उस में अगरबत्तियां लगाई जा सकें.

—हेमलता शृंगी ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(यदि आपके पास प्रेस्टिज या प्रीत प्रेशर कुकर हो तो इस विज्ञापन को काटकर के अपने पास रखिए.)

शुभ सूचना

प्रेस्टिज नेशनल सर्विस सेन्टर

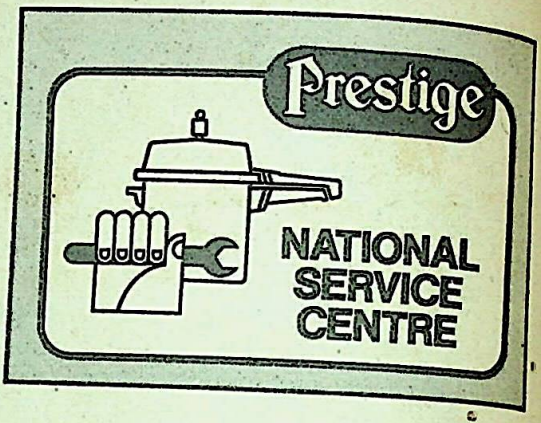

अपने प्रेस्टिज से अधिकतम सेवा प्राप्त कीजिए

प्रेस्टिज प्रेशर कुकर बिना किसी तकलीफ के जीवन भर आपकी से करते रहने के लिए बना है. हम चाहते हैं कि प्रेस्टिज आपने आ २० साल पहले ही क्यों न खरीदा हो, आज भी आप उससे अच्छ अच्छी सेवा प्राप्त करते रहें. प्रेस्टिज इस्तेमाल करनेवाले आप हो जैसे बीस लाख से भी अधिक लोगों को शीघ्र व कुशल सेवाएँ प्रदान करने के लिए, बैंगलो स्थित कंपनी के मुख्यालय में स्थापित प्रेस्टिज नेशनल सर्विस सेन्टर हमारी नयी योजना एक अंग है.

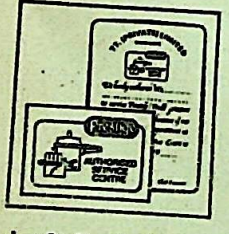

देशभर में फैले ३५० सर्विस सेन्टर

आज देशभर में प्रेस्टिज के ३५० से भी अधिक अधिकृत सर्विस से मौजूद हैं. इसलिए सर्विस के लिए आपको ज़्यादा दूर जाने की ज़ नहीं. इन सभी अधिकृत सर्विस सेन्टर्स में आपको यह अधिकार प्रमाणपत्र दिखाई देगा. इस प्रमाणपत्र पर प्रेस्टिज सर्विस का प्रती चिन्ह नजर आएगा. यह निशान, नियंत्रित दरों पर, असली पुर्ज़ों, कंपनी में प्रशिक्षित तकनीशियनों और विश्वसनीय सेवा की गॅरंटी है. सेन्टर में प्रेस्टिज सर्वि दर-सूची भी देखी जा सकती है.

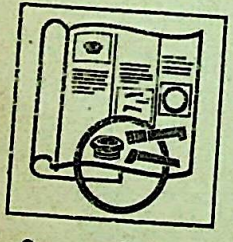

प्रेस्टिज के असली पुर्ज़े ही लगाइये !

यह बहुत ज़रूरी है कि आप प्रेस्टिज के असली पुर्ज़े जैसे-आइ एस के निशानवाला नया रबर गास्केट और नया मेटल सेफ्टी वाल्व आदि इस्तेमाल करें. प्रेस्टिज़ के सभी पुर्ज़े बेहतरीन क़िस्म के कच्चे माल बनाये जाते हैं और ज़्यादा दिन चलने व उच्चतम कार्यक्षमता के क्वालिटी नियंत्रण के कड़े परीक्षणों से होकर गुज़रते हैं. उदाहरणार्थ पूरी सावधानी के साथ इस्तेमाल किये जाने पर प्रेस्टिज का असली गास्केट कम से कम दो तक चलता है. इसीलिए असली पुर्ज़ों के लिए प्रेस्टिज के अधिकृत सर्विस सेन्टर में ही जाना चाहि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

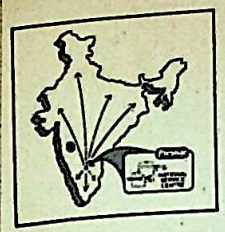

नेशनल सर्विस सेन्टर आपकी सेवा कैसे करेगा?

अपने ९ सर्विस सैन्टर्स के सहयोग से, प्रेस्टिज नेशनल सर्विस सेन्टर अपने ३५० अधिकृत सेन्टर्स के सेवा-प्रयासों को बढ़ावा देते हुए एक सहयोगी व सूचना इकाई के रूप में कार्य करेगा यदि आप यह तय नहीं कर पा रहे हों कि प्रेस्टिज के असली पुर्ज़ों व विश्वसनीय सेवा के लिए किससे संपर्क किया जाए तो आप हमें लिखिए— हम आपकी मदद करेंगे.

हमें लिखिए—
हम आपकी सेवा में हाज़िर हैं!

नेशनल सर्विस सैन्टर, आपके नज़दीकी सर्विस सैन्टर का पता बताने के अलावा आपकी और भी मदद करेगा. अपने प्रेस्टिज से अधिकतम सेवा प्राप्त करने और अपने क्षेत्र के अधिकृत सर्विस सेन्टर्स की सूची के लिए निचले कूपन को अलग करके आज ही हमें भेज दीजिए. अपनी समस्याओं व सुझावों से भी हमें अवगत करायें. व्यक्तिगत रूप से आपकी हर तरह की सेवा करने में हमें अत्यंत खुशी होगी.

ग्राहक सेवा प्रबंधक
प्रेस्टिज नेशनल सर्विस सेन्टर
टी.टी.(प्राइवेट) लिमिटेड
दूरवाणीनगर, बैंगलोर-५६० ०१६

नाम .....

पता .....

SR 2 .....

.....

बॅच नंबर .....

(ढक्कन के भीतर देखकर लिखें)

कौन से वर्ष में खरीदा था .....

अपने प्रेस्टिज से अधिकतम सेवा प्राप्त कीजिए

Prestige

इस कूपन को इस पते पर भेजिए:-
ग्राहक सेवा प्रबंधक
प्रेस्टिज नेशनल सर्विस सेन्टर
टी.टी.(प्राइवेट) लिमिटेड
दूरवाणीनगर
बैंगलोर-५६० ०१६

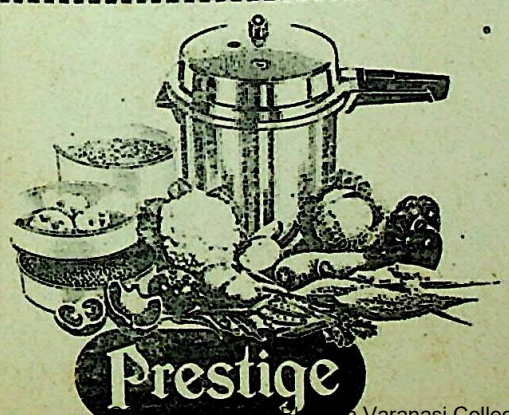

प्रेस्टिज
भारत का सर्वप्रथम तथा सर्वव्यापक रूप से इस्तेमाल किये जाने वाला प्रेशर कुकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोलोन ताज़गी की तरंग... कोलोन खुशबू की उमंग,
जो आपको सारा दिन महकाए.

गोल्ड मिस्ट. इसकी अनोखी ताज़गी
और खुशबू आपके बदन से लिपट जाए.
हर गोल्ड मिस्ट साबुन का वज़न (१०० ग्राम) जैसे
अनमोल सोने की तोल. इसकी जितनी कीमत वाले
कई दूसरे साबुन वज़न में इससे कहीं कम.

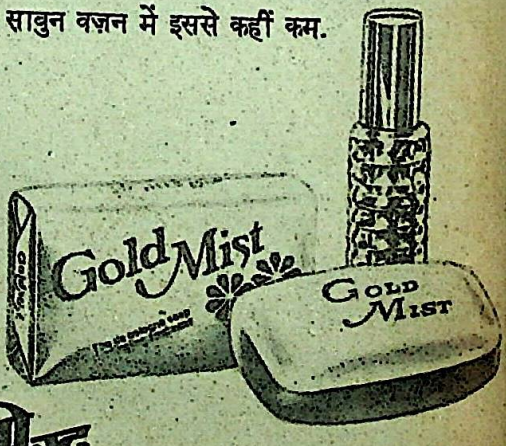

टाटा उत्पादन गोल्ड मिस्ट एकमात्र कोलोन साबुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत से पड़ोसी ऐसे होते हैं जो हमदर्दी की आड़ में आप को ठगने के चक्कर में रहते है...

सावधान, इन से बच कर रहिए

लेख • मीरा सक्सेना

यों तो आप ने अकसर ही ठगों के किस्से सुने होंगे. कोई साधु के वेश में जेवर ले भागा तो कोई किसी कंपनी का एजेंट बन कर रुपएपैसे ले कर रफूचक्कर हो गया. पर मैं जिस से ठगी जा रही थी, वह मेरी ही एक पड़ोसिन है. जी हां, चौंकिए मत. आप को बिलकुल सच्ची घटना सुना रही हूं ताकि आप भी ऐसी पड़ोसिनों से सावधान हो जाएं.

तो सुनिए, मेरे पड़ोस में एक महिला रहती हैं. यहां मैं उन का नाम नहीं लेना चाहूंगी. वह अच्छी पैसे वाली औरत हैं. देखने में साधारण, व्यवहार बहुत मधुर किंतु शिक्षा शायद पांचवींछठी जमात तक. मुझ को उन के पड़ोस में रहते हुए लगभग छःसात माह गुजर चुके थे, पर अभी हम लोगों में सिर्फ दुआसलाम ही थी. एक दिन अचानक मन में खयाल आया कि उन से परिचय बढ़ाना चाहिए. परदेश है, कभी कोई काम पड़ जाए तो सहारा ही रहेगा और अकेलापन भी खत्म होगा. मैं भी उत्तर प्रदेश की हूं और वह भी. इस के अलावा दोनों हमउम्र भी हैं.

यह सोच कर मैं एक दिन उन के घर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जा पहुंची. वह काफ़ी मिलनसार लगीं. जब चलने लगी तो मैं उन को अपने घर आने का निमंत्रण दे आई. दूसरे ही दिन वह मेरे घर आईं. बहुत देर तक बातचीत होती रही. फिर वह अपने घर चली गईं. इस तरह हम लोगों का एकदूसरे के घर आनाजाना शुरू हो गया. अकसर हम लोग साथ ही शापिंग को जाते. कभी मैं बाजार न जा पाती तो वही मेरा भी सामान ले आतीं.

ठगी का तरीका

हमारी इस मित्रता को अभी दो माह ही हुए होंगे कि एक दिन वह मेरे घर आईं और बोलीं, "अकेली क्या कर रही हैं यहां? चलिए मेरे यहां. मैं ने कुछ साड़ियां खरीदी हैं, आप को दिखलाऊं."

साड़ी का नाम सुन कर तबीयत फिसल गई. जिज्ञासा हुई कि चलो, देख ली जाएं. मैं उन के साथ चली गई. उन्होंने अपनी अलमारी से पांचछः साड़ियां निकालीं, जिन में दो सिल्क की, एक साटन की और दो सूती थीं. सभी साड़ियां अच्छी थीं. मैं ने देख कर कह दिया, "बहुत अच्छी हैं."

वह कहने लगीं, "आप को पसंद हैं तो आप ले लीजिए."

मैं ने कहा, "मैं अभी इस स्थिति में नहीं हूं."

वह पीछे पड़ गईं. बोलीं, "रुपयों की जल्दी नहीं है. आप थोड़ेथोड़े कर के देती रहिए." और साटन की साड़ी (जो उन्होंने इंपोर्टेड बतलाई थी और जिस का भारतीय मुद्रा में 250 रुपए मूल्य बताया था.) एक लिफाफे में डाल कर दे दी.

मैं अजीब उलझन में थी, पर वह फिर कहने लगीं, "मैं बड़े प्यार से दे रही हूं. आप मना न करिएगा, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा."

मैं उस समय तो साड़ी ले कर चली आई, किंतु परेशान थी कि कैसे इस के दाम चुकाऊंगी. जुलाई का आरंभ था. बच्चों का दाखिला कराना था. इस से कुछ ही दिन पहले मेरे देवर की मृत्यु हो चुकी थी. वहां भी काफी पैसा उठ गया था. इस समय मैं कुछ भी फिजूल खर्च नहीं चाहती थी. तभी एक विचार मैं आया. दूसरे दिन मैं उन के यहां साड़ी ले कर गई और बोली, "मेरे पति को साड़ी पसंद नहीं आई. इसलिए वापस कर रही हूं. बुरा न मानिएगा."

उन्होंने वह साड़ी तो रख ली, दूसरी सूती साड़ियां निकाल लाईं और बोलीं, "इन में से जो भी पसंद हो, ले लीजिए. बहुत सस्ती पड़ेंगी आप को. आजकल सूती कपड़ा तो बड़ा महंगा है. यह हर आप को केवल 60 रुपए में मिल जाएगी. वैसे बाजार में इस का दाम 70-75 रुपए है. मैं ने किसी जानपहचान वाले से ली है."

मैं फिर फंस गई. धोती ले कर आ गई और अभी पहली ही तह खोली थी कि मेरी नजर मूल्य चिट पर पड़ी (वह शायद उतारना भूल गई थीं), जिस पर 40 रुपए लिखा हुआ था.

मैं फिर भाग कर गई. दिखाया तो कुछ सकपकाईं. फिर संभल कर बोलीं "बात यह है कि मैं ने ये साड़ियां अपनी जेठानी से मंगवाई थीं. मैं ने उस को 100 रुपए दिए थे. वह ये दोनों धोतियां दे गई थीं. इन में से एक 60 रुपए की है तो दूसरी 40 रुपए की. अरे बहनजी, मैं आप से कोई ज्यादा रुपए थोड़े ही लूंगी. यह धोती 40 रुपए की ही होगी. फिर भी मैं उन से पूछ लूंगी, तभी आप पैसे देना. जल्दी क्या है. आप कहीं भाग कर तो जा नहीं रहीं हैं और न ही मैं."

मैं इस चक्कर में अच्छी फंसी. किसी तरह सीधेसीधे इस से निकल ही नहीं पा रही थी. फिर लौट आई घर.

शाम को जब मेरी महरी काम करने आई तो उन की सारी कलई खुल गई. वह महरी उन के यहां भी काम करती थी और उन के बहुत मुंहलगी थी. उसी के साथ बाजारहाट होता था. किसी बात पर वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ा झगड़ा हो गया और उस ने उन का काम
ोड़ दिया. जब वह मेरा काम कर चुकी तो
मरे में मुझ से कहने आई कि मैं जा
ही हूं. उस समय मैं वही साड़ी लिए
ड़ी पसोपेश में बैठी थी. सोच रही थी,
ाम को पतिदेव के आने पर लेक्चर
ुनने को मिलेगा. उन को यह सब बहुत
ापसंद है.'

साड़ी देख कर वह मुझ से बोली,
ए बीबीजी, यह साड़ी बड़ी सुंदर है. ऐसी
ो सामने वाली बीबी की जेठानी लाई
ीं. तुम ने कितने की ली यह साड़ी?"

मैं ने कहा, "चालीस रुपए की. तू
ता, वह कितने की लाई?"

वह तपाक से बोली, "तब तो आप
गी गईं. वह तो 35 रुपए में लाई हैं."
फिर अपनेआप ही कहने लगी, "मेरे साथ
उन्होंने तीनचार साड़ियां खरीदी थीं."

मेरी उत्सुकता जगी. मैं ने उस से
ूछा, "वे सब साड़ियां तेरे साथ लाई हैं
ो तुझे दाम भी पता होंगे. जरा बता तो
साटन वाली पीले काले फूलों की साड़ी
कितने की आई?"

वह बोली, "सवा सौ की. अरे बीबी-
जी, यह औरत..."

आगे वह चुप हो गई. मैं ने भी अधिक बात नहीं की और अपने काम में लग गई. अगले दिन मैं वह धोती भी वापस कर आई और उस के बाद फिर मैं ने कभी उन के घर की तरफ मुंह भी नहीं किया. शायद वह भी असलियत को अच्छी तरह से समझ चुकी थीं, इसी लिए वह भी फिर कभी मेरे घर नहीं आईं.

अब सोचती हूं कि साड़ी खरीदने का इतना आग्रह क्यों था. धीरेधीरे मेरी महरी ने ही बताया कि सारे महल्ले में ही उन की इस तरह की खरीदफरोख्त चलती रहती है. किसी को डालडा मिला कर देसी घी बेचती हैं तो किसी को राशन का चावल. मुझ से भी चावल लेने की बात की थी, किंतु मैं तो संभल चुकी थी.

सच तो यह है कि पड़ोसियों को एक-दूसरे का हमदर्द होना चाहिए न कि इस तरह विश्वास पैदा कर के उन्हें ठगना चाहिए. असलियत कभी न कभी तो खुल ही जाती है.

यह किस देशप्रदेश की भाषा है?

इस स्तंभ में जनजीवन से दूर, उलझी हुई कठिन भाषा के नमूने प्रकाशित किए जाते हैं, ताकि हिंदी को बेजान व किताबी भाषा बनने से रोका जा सके. प्रकाशित उद्धरणों पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. —संपादक

"इस दृष्टि से 'आत्मकथ्य' अंश में शंबूक के मानसिक विकास और समाजगत संघर्ष का चित्रण काव्य की प्रासंगिकता के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है. नई कविता की प्रकृति के अनुकूल मिथकीय काव्य एक दार्शनिक भावभंगिमा की सृष्टि करते रहे हैं. 'शंबूक' में सामान्य और विशिष्ट के बीच द्वंद्व में तर्कयुक्त आवेशजनित प्रवाह है. इस प्रकार हम देखते हैं कि भावप्रवण गीतात्मकता के रचनात्मक संदर्भ में वैचारिक द्वंद्व का सामाजिक आशयसंपन्न सर्जनात्मक दृष्टिकोण 'शंबूक' को एक सार्थक रचना के रूप में प्रस्तुत करता है."

—डा. विनय : शंबूक, समीक्षात्मक लेख (धर्मयुग, 26 नवंबर, 1978)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह भी खूब रही

एक बार गरमियों के दिनों में मुझे अपने छः माह के बच्चे को साथ लिए बुआजी के लड़के की शादी में गिरिडीह जाना पड़ा. घर में खूब शादी की चहलपहल थी. शाम को बड़ी धूमधाम से बरात निकाली गई. मैं भी इस दृश्य को देखने में मग्न थी. मुझे खयाल भी नहीं रहा कि घंटे भर पहले अपने बच्चे को सुला कर आई हूं. उसे दूध पिलाने का वक्त निकल चुका था. इतने में एक बूढ़ी महरी ने आ कर मुझे मेरा रोता हुआ बच्चा दिया. मैं उसे गोद में लिएलिए दूध पिलाने दूसरी मंजिल पर रसोईघर में चली गई.

चूल्हे के पास बैठे महाराजजी बड़े प्रेम से पूरियां तलने में व्यस्त थे. मैं दूसरे चूल्हे पर दूध गरम कर रही थी कि तभी नीचे से किसी महिला की आवाज आई, "महाराजजी, जरा जल्दी से धनिए की रोटी बना देना."

मुझे इस आवाज पर आश्चर्य हुआ. धनिए की रोटी! गेहूं, चना, मकई, जौ बाजरा आदि की रोटी तो देखी थी पर यह धनिए की रोटी कैसी? मैं ने शर्म से महाराजजी से पूछा नहीं. पर इस धनिए की रोटी सीखने के लालच से बच्चे को दूध पिलाने के बहाने वहीं बैठी रही. महाराजजी ने पूरियों का काम खत्म कर कुछ रोटियों का भी ढेर लगाया.

बच्चा दूध पी कर सो चुका था. महाराजजी मेरी ओर आश्चर्यभरी दृष्टि से देख कर बोले, "गरमी बहुत है, मुन्ना सो गया है. इसे नीचे ले जा कर लिटा दो."

मैं ने बहाना किया कि अभी उठाऊंगी तो उल्टी कर देगा और मैं सामने पड़ा पंखा उठा कर बच्चे पर हवा करने लगी. मेरा ध्यान महाराजजी के तवे पर ही था.

लेकिन महाराजजी ने ढेर सारी पूरियां, ढेर सारी रोटियां एक बड़े से भगोने में ठीक कर के रख दीं. ऊपर से एक थाली ढक दी और अपना गमछा उसे घुमाते हुए बाहर को जाने लगे.

मैं भी ऊब कर अपने बच्चे को में उठा कर बाहर निकलने को ही कि एक बूढ़ा नौकर सीढ़ियां चढ़ घर की ओर चला आ रहा था. महाराजजी ने आवाज लगाई, धनिया, तेरी रोटी कब से बनी तू खाता क्यों नहीं?"

महाराजजी की इस आवाज चौंकी और श्रीमान धनियाजी अपनी बेवकूफी पर हंसे बिना न सकी.

—सत्यभामा

(सही

मेरी ताईजी कुछ पढ़ी हुई हैं. एक चार साल के भतीजे ने स्कूल कर उन से कहा कि उसे स्कूल में मिली है. वह समझीं शायद इस का इनाम मिलना होता होगा. उन्हों पहले तो खूब प्यार किया. मिठा के लिए पैसे भी दिए और फिर अपनी सहेलियों को भी यह 'खुश सुना आईं.

जब शाम को ताऊजी घर ताईजी ने उन को भी यह 'खुश बड़े गर्व के साथ सुनाई. इस पर बोले, "अरी भागवान, पनिशमेंट का सजा होता है." उस समय ताईजी चेहरा देखने लायक था.

—डौली

इस स्तंभ के लिए अपने संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने वाले प्रत्येक संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: स्तंभ विभाग, सरिता, दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होली के त्योहार को एक नया रंग देने के लिए प्रस्तुत है

सरिता

होली विशेषांक

मार्च (द्वितीय) 1979

● होली का रंगारंग कार्यक्रम ● पारिवारिक छेड़छाड़ और छींटाकशी ● कचोटने वाले व्यंग्य ● हंसाहंसा कर लोटपोट करने वाले हास्य ● सभी विशेष सामग्री इंद्रधनुषी रंगों में.

इन सब के अतिरिक्त राजनीतिक, सामाजिक तथा पारिवारिक विषयों पर 12 से अधिक लेख, 10 कहानियां, मर्मस्पर्शी कविताएं तथा सभी स्थायी स्तंभ.

इतनी अधिक सामग्री इतनी कम कीमत में कहीं और नहीं मिलेगी.

पृष्ठ 220 मूल्य 2.75 रु.

अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लॅक्मे
वैनिशिंग क्रीम
कितनी मृदु, कितनी स्वाभाविक...
मेकअप के लिए आदर्श बेस...
लॅक्मे वैनिशिंग क्रीम

लॅक्मे - जिन्हें मालूम है, त्वचाको क्या चाहिये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिनदहाड़े

एक दोपहर को जब हम सब खाना खाने बैठे ही थे कि किसी ने दरवाजा खटखटाया. मैं ने उठ कर दरवाजा खोला. एक सांवला सा व्यक्ति अपने कंधे पर सुंदर डिजाइन का झोला लटकाए खड़ा था.

पूछने पर पता चला कि वह दरी व चादर बेचने वाला है. उस दिन पिताजी भी घर पर ही थे. पिताजी ने उसे अंदर बुला लिया. वह बड़े आदर भाव से बातें कर रहा था.

उस ने अपने बैग से दो मोटीमोटी फाइलें निकालीं, जिन में बड़े ही आकर्षक डिजाइन की चादरों व दरियों के छोटेछोटे टुकड़े चिपकाए हुए थे. उस के बहुत आग्रह करने पर पिताजी ने दो चादरें और एक दरी

पसंद कर ली. उस ने बिल बनाया और कहने लगा, "आप को दो दिन बाद चादरें मिल जाएंगी. अभी आप अस्सी रुपए दे दीजिए, बाकी के पैसे चादरें मिलने के बाद दे दीजिएगा."

उस के बहुत यकीन दिलाने पर पिताजी ने उसे साठ रुपए दे दिए. पर आज तक वह दरीचादरें ले कर नहीं आया. उस के बिल पर छपा पता भी गलत था.

—वीरेंद्र वर्मा

मैं किसी कार्य से अलीगढ़ गया था. दिन भर काम करने के बाद इधरउधर घूमता रहा. रात गुजारने के लिए मैं रेलवे स्टेशन पहुंचा. प्लेटफार्म पर पहुंच कर एक बेंच पर बैठ गया. मुझे नींद आ रही थी. थोड़ी देर बाद एक सिपाही भी मेरी बेंच पर आ कर बैठ गया. वह संदिग्ध निगाहों से मुझे घूरने लगा. मैं मन ही मन में डर गया. उस ने मुझ से पूछा, "कहां जाओगे?" मैं ने डरते हुए कहा, "बरेली."

मेरे पास सामान भी नहीं था और आगरा बरेली पैसेंजर रात के बारह बजे बरेली जाती थी. फिर उस ने एक साथ कई उलटेसीधे प्रश्न पूछ डाले, जिन का मैं संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाया.

जब सिपाही ने देखा कि मैं बहुत परेशान हूं तो वह मुझ से धीरे से बोला, "दस रुपए निकालो और यहां से भाग जाओ."

मैं ने कहा, "मेरे पास दस रुपए नहीं हैं. मेरे पास केवल पांच रुपए हैं."

मैं ने जेब से पांच रुपए निकाले. सिपाही ने मेरे हाथ से पांच रुपए झपट कर अपनी जेब में डाल लिए और मुझ से बोला, "भाग जाओ."

मैं वहां से लंबेलंबे डग भरता हुआ चल दिया और प्लेटफार्म से बाहर निकल कर ही मैं ने राहत महसूस की.

—अजयकुमार
(सर्वश्रेष्ठ) ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 15 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : स्तंभ विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

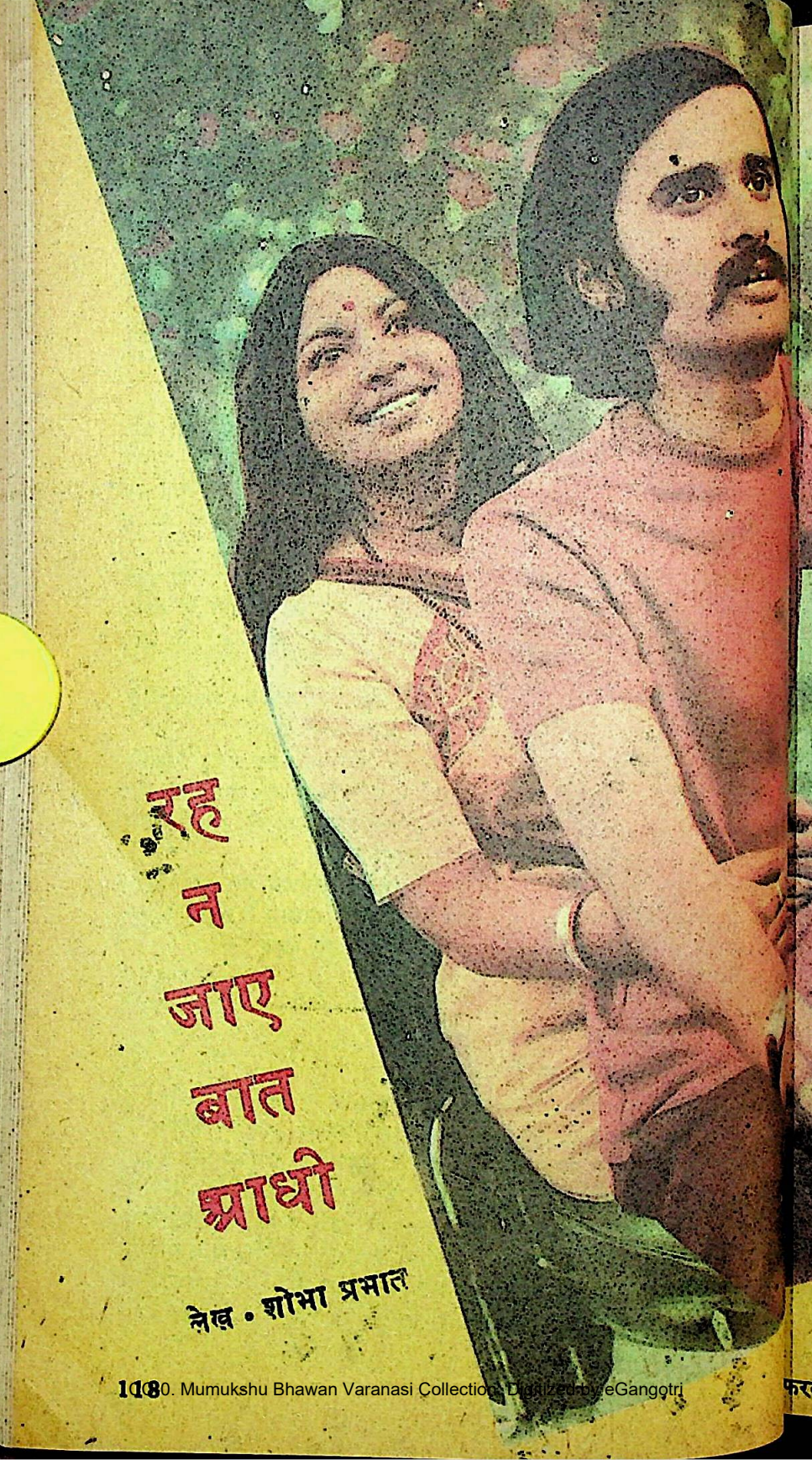

108. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन दिन पहले ही रीता की शादी हुई थी. दो दिन ससुराल में रह कर वह मायके आई थी, और एक दिन वहां रह कर पति के साथ स्कूटर से ससुराल लौट रही थी.

एक दिन में ही हजारों बातें इकट्ठी हो गई थीं. वह जल्दी से जल्दी सारी बातें पति को बता देना चाहती थी. मां की चाची ने पति की तारीफ में क्याक्या कहा. और फूफी ऐसा सुंदर पति मिलने पर कैसे जलभुन रही थीं और मौसी ऐसा ही लड़का अपनी लड़की के लिए ढूंढ़ देने के लिए किस तरह मां की चापलूसी कर रही थी.

वह पति की कमर को बांहों में घेरे आगे झांकझांक कर बता रही थी. और पति महोदय पीछे मुड़ कर मुसकरामुसकरा कर अपनी तारीफ सुन रहे थे. इस में उन का दोष भी नहीं था. वैरागी से ले कर छोटे से बच्चे तक की यह कमजोरी है.

कहीं ऐसा न हो कि बातें करने के चक्कर में आप खुद किसी दुर्घटना का शिकार हो जाएं या किसी राह चलते की जान को खतरा पैदा कर दें...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तभी जोर से ब्रेक लगी. बात को ही नहीं, एक बस को भी, स्कूटर को भी. रीता पल भर तो बेहोश सी रही. जब होश आया तो देख कर सन्न रह गई. पति बस के पहिए के नीचे कुचले पड़े थे. स्कूटर का अगला भाग भी पहिए के नीचे था, और वह खुद पहिए से मुश्किल से एक फुट की दूरी पर गिरी थी. यह सब कैसे हुआ, उस की समझ में कुछ न आया. पर क्या हो गया, उसे यह समझने में देर न लगी. दृश्य देख कर वह उसी क्षण बेहोश हो गई.

उस अधूरी बात को वह आज तक पूरा न कर पाई. इस जिंदगी में शायद कर भी न पाएगी. उस के मन में एक अपराधभावना घर कर गई थी, 'अपने पति की मृत्यु की जिम्मेदार वह खुद है.'

लापरवाही की सजा

उसे दुख इस बात का था कि जरा सी बात, जरा सी लापरवाही की उसे इतनी बड़ी सजा मिली थी.

मन में बारबार यह विचार आते, यदि वह बातें न करती तो शायद वह दुर्घटना न होती. पर इस सोचने से अब कोई लाभ न था.

यह घटना केवल रीता के साथ ही नहीं, वरन अनेक पत्नियों एवं नवविवाहिताओं के साथ घट चुकी है, और वे जीवन भर पछतावे की इसी आग में जलती रही हैं. उन की मदद कोई नहीं कर सकता. उन का दुख दूर करने में चिंताएं उन के काम न आईं.तब इन घटनाओं से एक नसीहत अवश्य मिली कि भविष्य में भावी पत्नियां व प्रेमिकाएं यदि सतर्क रहें तो ऐसी परिस्थितियों से बच सकती हैं. हो सकता है कि कोई जरूरी बात हो जो घर जाने से पहले ही अपने पति को बतलाना जरूरी हो, तो इस के लिए चाहिए कि वे अपने पति को स्कूटर रोकने को कहें, फिर बात करें. उस के बाद स्कूटर पर बैठ कर घर जाएं.

यह जरूरी नहीं कि लोग वाहनों पर बैठ कर कोई जरूरी बात ही करते हों, भले ही वह बातचीत पतिपत्नी के बीच। अकसर मुझे इंडिया गेट से कनॉ आना होता है. रास्ते में दो महिलाएं हैं. शायद दोनों कामकाजी महिलाएं भी कम नहीं, काफी प्रौढ़ हैं. पर उन्हें देखती हूं वे स्कूटर पर जाती करते ही मिलती हैं. उन की बातें से ही नहीं, बल्कि हाथ आदि हिला होती हैं. कभीकभी सोचती हूं, रो कर भावी खतरे की आशंका से दूं. पर वे बुरा न मान जाएं, यह रुक जाती हूं. कभी इसलिए भी समझती कि वे मेरी आवाज पर न जाएं और कोई दुर्घटना न हो जाए दिन लगातार अगर नजर नहीं आ सोचती हूं कि कहीं एक्सीडेंट तो गया...जरूरी नहीं कि ये बातें करती हों और ये बातें केवल स्कूट होती हों. अनेक पुरुषों में भी यह होती है कि वे चुप रह ही नहीं सक चाहे कैसा भी हो, सामने वाला कोई भी हो.

हमारे एक बुजुर्ग रिश्तेदार दिनों के लिए हमारे पास ठहरे। "दिल्ली दिखाओ." उन के साथ टैक्सी या तिपहिए स्कूटर पर जाना था. टैक्सी आदि में बैठते ही सब सवाल होता. "सुनाओ, सरदारजी के रहने वाले हो, लाहौर के?"

"नहीं जी, रावलपिंडी के."

"रावलपिंडी! वाह, बहुत शहर है. हमारे मामा की ससुर रावलपिंडी में ही हैं."

और यों ही बातों का सिलसि हो जाता था. ड्राइवर चुप रहना नहीं रहने देते थे. कई बार दुर्घटना बची. एक बार तो एक बच्चा टकरा कर गिर भी पड़ा था. पर सावधानी से वह बच गया.

जरूरी नहीं कि टैक्सी या स्कूटर का ड्राइवर उन के इलाके एक बार जिस स्कूटर पर हम बैठे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ड्राइवर हरियाणा का था. जैसे ही उन्हें पता चला. बोले, "सुनाओ, आप के बंसीलालजी के क्या हालचाल हैं?" और इस तरह राजनीति पर बहस छेड़ देते.

जब आप किसी वाहन पर सवार हों तो यह जरूरी नहीं कि आप की जान को खतरा होता है. आप से छोटे वाहन या पैदल वालों की जान भी आप के हाथ में होती है. जरा सी बात पर न चाहते हुए भी किसी की हत्या कर देने से क्या आप की मानसिक सुख-शांति भंग नहीं होती? और फिर यदि सजा हो जाए तो? और आजकल तो सजा भी सात साल तक हो गई है. किराए के वाहन वाले अपनी रोजीरोटी भी खो देते हैं.

कुछ लोग दूसरों से ही नहीं, खुद से ही बातें करते चलते हैं. मुंह से चाहे न बोलें पर मन ही मन वे कुछ न कुछ सोचते रहते हैं. इस के साथ ही उन के होंठ व हाथ भी उसी मुद्रा में हिलते रहते हैं.

पिछले दिनों दिल्ली के रिंग रोड पर महारानी बाग के पास ऐसा ही हादसा हुआ था. उस के बारे में मेरा निश्चित विचार है कि वह ऐसी ही स्वगत बातचीत का परिणाम था.

हुआ यह कि एक कार आश्रम की ओर से रिंग रोड पर आ रही थी. उसे महारानी बाग की ओर दाहिने मुड़ना था. ड्राइवर ने हाथ दे कर कार मोड़ी. पर सामने से ही दोतीन लोग पैदल बातें करते हुए उस सड़क को पार कर रहे थे. वे अपनी बातों में मग्न थे. ड्राइवर के हार्न देने पर भी उन्होंने नहीं सुना. ड्राइवर कार सीधी ले जाता तो एक्सीडेंट जरूर हो जाता. खतरे की आशंका से ड्राइवर ने कार सड़क के बीचोंबीच आड़ी खड़ी कर फिर हार्न दिया. इस से पहले कि वे लोग हार्न की आवाज सुनते और कार के लिए रास्ता छोड़ते, एक स्कूटर सीधा आ कर कार के अगले दरवाजे से टकराया. स्कूटर सवार उछला, बोनट पर गिरा और फिर धरती पर आ लुढ़का. उस के सिर से खून निकला.

यह एक्सीडेंट असंदिग्ध रूप से बातों के कारण ही हुआ था. यदि पैदल चलने वाले बातों में व्यस्त न होते तो ड्राइवर कार आगे ले जाता और स्कूटर वाला बिना बाधा के निकल जाता. पर लगता है कि स्कूटर वाला भी स्वगत मौन वार्ता में डूबा था. यदि ऐसा न होता तो उस ने ब्रेक जरूर लगाई होती. क्योंकि ब्रेक लगाने का मौका था.

सुख या दुख का जब भी कभी ऐसा मौका आए, जब आप अपने को मानसिक रूप से पूर्णतः स्वस्थ व संतुलित महसूस न कर रहे हों तो कभी भी खुद गाड़ी न चलाएं. किसी दूसरे को चलाने को कहें या किसी किराए के वाहन पर चले जाएं. यदि ऐसा कोई व्यक्ति न मिले तो थोड़ी देर इंतजार करें. जब मन शांत हो जाए तभी चलाएं. जब तक वाहन से उतर न जाएं सजग रहें. अपनेआप पर काबू रखें, कम से कम सोचें क्योंकि रास्ते में तो आप कोई काम कर नहीं सकते. गंतव्य स्थान पर पहुंच कर ही कुछ करेंगे. अन्यथा कहीं ऐसा न हो कि जिस काम को आप करने जा रहे हैं वह बीच में ही रह जाए और आप हस्पताल या थाने में निस्सहाय पड़े हों. ●

शराब छोड़ देने से दिमाग क्षतिग्रस्त होने से बच सकता है

अभी तक यह समझा जाता था कि शराबी व्यक्ति के दिमाग के 'टिशु' (ऊतक) सूख जाते हैं, जो फिर कभी ठीक नहीं हो सकते. पर कनाडा के वैज्ञानिकों ने परीक्षणों से सिद्ध किया है कि शराब छोड़ने के बाद सूखे हुए 'टिशु' फिर से कार्य प्रारंभ कर देते हैं. इस प्रकार शराब छोड़ देने से शराबी व्यक्ति का दिमाग क्षतिग्रस्त होने से बच सकता है.

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नई साड़ियां नए अंदाज

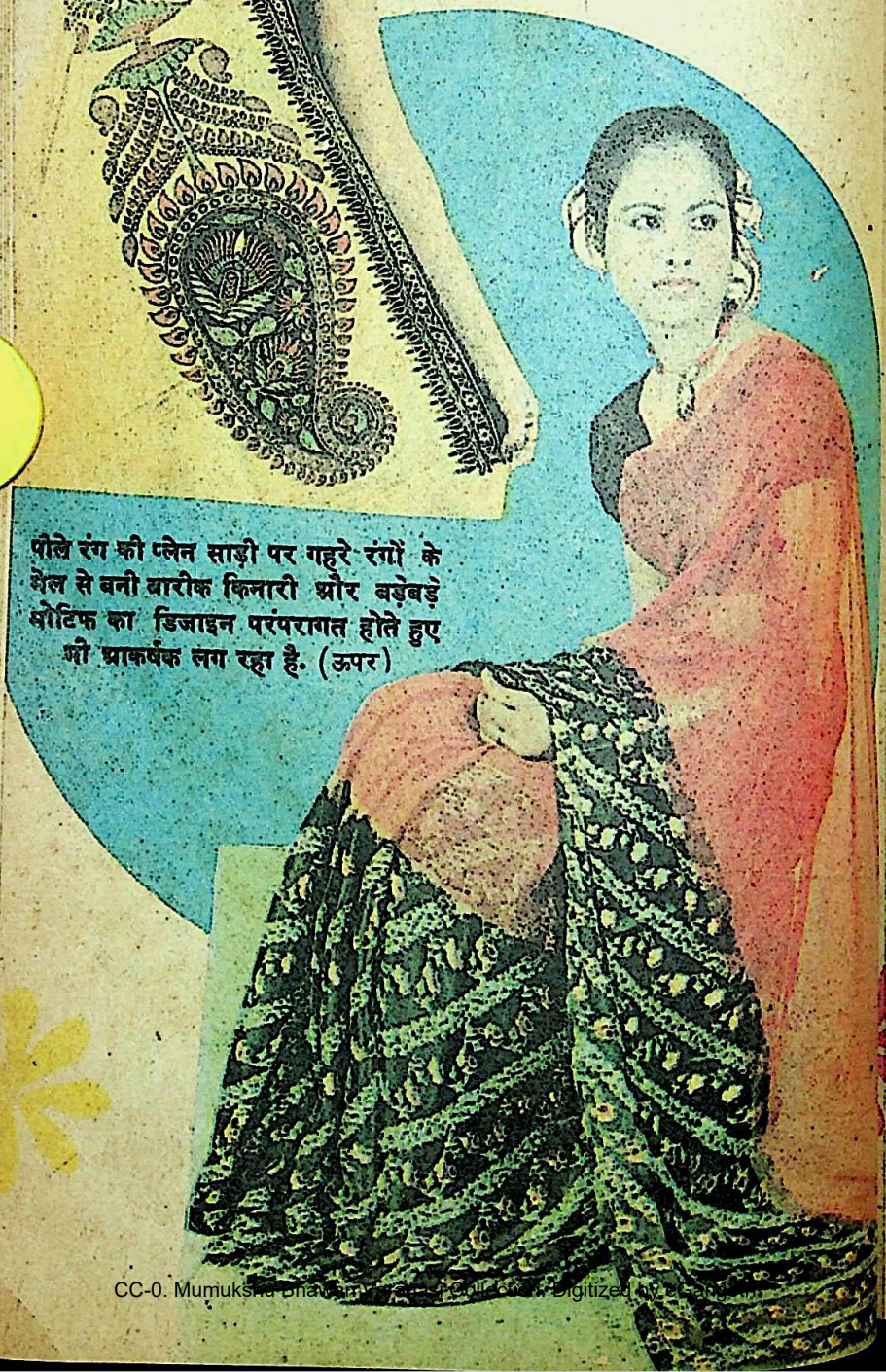

पीले रंग की प्लेन साड़ी पर गहरे रंगों के मेल से बनी बारीक किनारी और बड़ेबड़े बोटिफ का डिजाइन परंपरागत होते हुए भी आकर्षक लग रहा है. (ऊपर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साड़ी के आधे हिस्से में संतरी रंग अपनी छटा दिखा रहा है और आधे हिस्से में गहरे हूरे रंग की पृष्ठभूमि पर तिरछा प्रिंट आकृष्ट कर रहा है. (बाएं नीचे)

गुलाबी और काले रंग के मनोहारी मेल वाली इस साड़ी में डिजाइन की नवीनता देखने लायक है. बार्डर और पल्ले पर फूलों का डिजाइन है और बीच के हिस्से में बिंदियों का (नीचे).

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कोई ऐसा तेल जो स्वादिष्ट भोजन पकाए और अच्छा स्वास्थ्य भी बनाए?

जीहां, मार्वो

गुडहेल्थ रिफ़ाइन्ड तेल

ठोस बचत!
१ किलो
सिर्फ़
रुपए २२.५७
(टैक्स अलग)

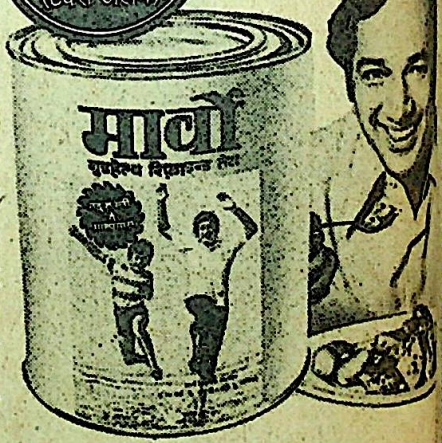

कैसे? मार्वो पूर्णतया शुद्ध है—
इसमें पके खाने में सही स्वाद है—
यानी ज़ायकेदार!

सिर्फ़ यही नहीं, इसमें प्राकृतिक तत्व
पॉलिअनसेचुरेट्स है—
जो नसों में चर्बी का जमाव घटाता
है; खून के प्रवाह को बनाए रखता है.

याद रखिए: रोज़ाना कसरत और
मार्वो गुडहेल्थ रिफ़ाइन्ड तेल में
पका खाना पूरे परिवार को स्वस्थ
और चुस्त रखता है.

विश्वसनीय हिन्दुस्तान लीवर की गारंटी के साथ.

लिंटास-MGO. 8-1810

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं 40 वर्षीया विधवा हूं. मेरे चार बच्चे हैं. मैं ने बड़ी मेहनत कर के पढ़ाई की और अब नौकरी करती हूं. इसी बीच मेरा परिचय एक 45 वर्षीय व्यक्ति से हो गया. वह मेरी हर बात मानता है. वह अपनी पत्नी से संतुष्ट नहीं है.

मुझे उस से प्यार हो गया है. वह अपने परिवार वालों को कोई कष्ट नहीं देना चाहता. वह उन पर पैसा व्यय करता है पर मेरे लिए कभी कुछ ला कर नहीं देता. इसलिए कभीकभी झगड़ा भी हो जाता है. फिर भी मैं उस के लिए बेचैन रहती हूं. बताइए, मुझे क्या करना चाहिए.

यदि बिना किसी बंधन व खर्च के किसी विवाहित पुरुष को दूसरी स्त्री का साथ मिल जाए तो कौन छोड़ेगा? यह ऋष को देखना है कि वह वास्तव में आप से प्रेम करता है या यह सब महज यौनाकर्षण है. आप उस पुरुष को मित्र मानिए और न उस से कोई आशा करें और न मित्रता से अधिक उसे दें. इस के अलावा आप दोनों के निजी मामले से भी कहीं ऊपर आप दोनों की अपनेअपने परिवारों के प्रति जिम्मेदारियां भी हैं. आप को उन जिम्मेदारियों के प्रति सतर्क रहना चाहिए.

✦

मेरी उम्र 27 वर्ष है और मेरी पत्नी की 25 वर्ष. हमारी शादी हुए छः वर्ष हो चुके हैं, हमारे दो बच्चे हैं. हमारी गृहस्थी बड़ी सुखी थी. किंतु पिछले कुछ माह से मेरी पत्नी मेरे एक मित्र से प्यार करने लगी.

एक दिन मेरी पत्नी का प्रेम पत्र मेरे हाथ लग गया. मेरी पत्नी ने मुझे सब कुछ साफसाफ बता दिया और यह भी बताया कि उस का यह प्यार केवल पत्रों तक ही सीमित रहा है. मैं ने उसे माफ कर दिया. लेकिन मेरे मन में शंका है कि वह फिर मुझे धोखा न दे दे. इसी कारण मैं कभीकभी उस की खूब पिटाई करता हूं. वैसे मैं आज भी उसे बहुत चाहता हूं किंतु उस की बेवफाई की बातें याद आते ही दिल तड़प उठता है. कृपया कोई उचित सलाह दें.

भूल किसी भी व्यक्ति से हो सकती है और जो अपनी गलती को सुधार ले उसे माफ कर देना चाहिए. आप अपनी पत्नी को प्यार करते हैं तो आप को उसे दिल से माफ भी कर देना चाहिए तथा उस को भलाबुरा कह कर व मारपीट कर उस का अपमान नहीं करना चाहिए. उसे कम से कम एक मौका जरूर देना चाहिए. आप को अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास कर के फिर से पुराने संबंध कायम करने चाहिएं. इस प्रकार आप देखेंगे कि आप का जीवन फिर से खुशियों से भर जाएगा और आप की बसीबसाई गृहस्थी उजड़ने से बच जाएगी.

✦

मैं एक विवाहित युवक हूं. मातापिता ने मेरा छोटी उम्र में विवाह कर दिया था. मेरे दो बच्चे भी हैं. जब मैं 20 वर्ष का थी तो एक लड़की से मेरा प्यार हो गया. उस की भी शादी हो गई है और दो बच्चे हैं. उस का पति शराबी है. उस ने अपने पति को त्याग दिया है और अब वह नौकरी करती है.

मुझे उस की हालत देख कर बहुत दुख होता है. मैं पुनः उस से मिलने लगा हूं. अब वह मेरे साथ रहना चाहती है. लेकिन मेरी पत्नी तेज मिजाज की है. बताइए, मैं क्या करूं?

कानूनी तौर पर आप दो पत्नियां नहीं रख सकते. एक को सुख पहुंचाने के लिए आप अपनी पत्नी को क्यों दुखी करना चाहते हैं? अब आप की सब से बड़ी जिम्मेदारी अपनी पत्नी व बच्चों के प्रति है. आप को चाहिए कि आप अपने परिवार की ओर ध्यान दें. उस लड़की को भी दूसरों की गृहस्थी न उजाड़ कर अपने बच्चों का भविष्य संवारने की चिंता करनी चाहिए. जीवन में प्यार से बढ़ कर वे सामाजिक जिम्मेदारियां हैं जिन्हें आप ने पैदा किया है व जिन को निभाना आप का परम कर्त्तव्य है.

✦

मैं हाई स्कूल का छात्र हूं. मेरी दो बड़ी बहनें हैं. सब से बड़ी बहन की शादी को दो वर्ष हो चुके हैं. लेकिन इधर कुछ दिनों से मेरे जीजा के मेरी छोटी बहन के साथ गलत संबंध हैं. मैं अपने मातापिता को भी बता चुका हूं. लेकिन वे मेरी कुछ नहीं सुनते. हमारी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है और जीजाजी हमारी मदद करते हैं. इसलिए मेरे मातापिता जान कर भी अनजान बने रहते हैं. कृपा कर के इस समस्या का कोई समाधान बताइए.

आप की समस्या का सब से बड़ा समाधान आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता है. आप के पत्र से यह तो मालूम नहीं हुआ कि आखिर मातापिता के होते हुए भी ऐसी कौन सी समस्या है जो आप को ये सब अत्याचार सहने पर मजबूर कर रही है. इस के समाधान के लिए आप अपनी छोटी बहन को समझा सकते हैं. आवश्यकता पड़ने पर कानूनी सहायता भी ले सकते हैं.

✦

मैं जयपुर का रहने वाला हूं और आप की पत्रिकाओं के लिए माडलिंग करना चाहता हूं. कृपया बताएं कि इस के लिए किस प्रकार आवेदन करना होगा.

हमारी पत्रिकाओं में प्रायः महिला माडल ही ली जाती हैं और केवल दिल्ली के माडलों को ही लिया जाता है, दिल्ली से बाहर वालों को नहीं. माडलिंग करने के अवसर दिल्ली, बंबई जैसे बड़े शहरों में ही मिल सकते हैं. जहां से पत्रपत्रिकाएं प्रकाशित होती हों या विज्ञापन एजेंसियां हों. ●

इस स्तंभ के अंतर्गत आप की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान किया जाता है.

अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : स्तंभ विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • शकुंतला शर्मा

देर आयद दुरुस्त आयद

"दीदी, जीजाजी आए हैं," छोटे भाई ने आ कर बताया तो निमिषा एक क्षण को सिहर उठी.

"आप लोगों ने अपने को समझ क्या रखा है? एक महीने में लड़की को अधमरा कर के रख दिया. अब मेरी बेटी तुम्हारी दहलीज पर कभी पैर नहीं रखेगी," तभी पिताजी का क्रोध भरा स्वर सुनाई पड़ा.

"मैं कुछ देर के लिए निमिषा से मिलना चाहता हूं. मैं मानता हूं कि जो कुछ हुआ गलत हुआ, पर जराजरा सी

"एक तो भिगमंगों ने कुछ दिया नहीं, उस पर ये तेवर तो देखो," मां दुखी स्वर में बोली.

बातों के लिए हम दोनों अपना जीवन बर्बाद करें, यह कहां की समझदारी है? मैं निमिषा को अपने साथ ले जाना चाहता हूं," राकेश ने कहा.

राकेश का स्वर सुनते ही निमिषा उठ खड़ी हुई कि शायद पिताजी उसे बुलाएं.

"सुनो, बरखुरदार, यह बात किसी और की करना. मेरा नाम चौधरी प्रतापसिंह है. तुम्हारे पिता ने मेरी बेटी को इस तरह घर से निकाल कर मेरी जो हेठी की है, उस का बदला लिए बिना मुझे चैन नहीं मिलेगा. मेरी बेटी अब तुम्हें से अदालत में ही मिलेगी."

पिता का क्रोधपूर्ण स्वर सुन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निमिषा कांप उठी.

"मैं ने कहा न मैं निमिषा से मिलना चाहता हूं. वह मेरी पत्नी है. मैं उसे लेने आया हूं. आप दोनों आपस में लड़ते रहिए, पर हम क्यों उस का फल भुगतें?" राकेश भी उतने ही उत्तेजित स्वर में बोला.

"तुम जितने ऊंचे स्वर में बोल रहे हो, क्या तुम यह समझते हो वह सुन नहीं रही होगी? यदि कुछ भी शर्म बाकी है तो तुम चुपचाप यहां से चले जाओ, नहीं तो जूतों से पिटवा कर बाहर निकलवा दूंगा," चौधरी प्रतापसिंह बोले.

राकेश क्रोध में भर कर न जाने क्या कह बैठता, पर वह वहां गली में कोई तमाशा खड़ा करना नहीं चाहता था. अतः चुपचाप चला आया.

'यह सच है कि चौधरी प्रतापसिंह के साथ उस की बातचीत जितने ऊंचे स्वर में हो रही थी, उस से निमिषा ने उसे अवश्य सुना होगा. फिर वह बाहर क्यों नहीं आई?' यह प्रश्न राकेश के मन को मथ रहा था.

"कहो, लौट आए न अपना सा मुंह ले कर," वह घर पहुंचा तो उस के

राकेश व निमिषा के तलाक का केस उन दोनों के पिता के प्रयत्नों से अदालत में पहुंच चुका था और वे दोनों इस अनचाहे निर्णय को मानने के लिए मजबूर थे...

पिता लालेलाल आंखों से उसे देखते हुए बोले.

राकेश उत्तर में चुप ही रहा और मां के पास जा कर बैठ गया.

"क्या हुआ, लाया नहीं बहू को?" उस के क्रोधित मुख को देख कर मां ने पूछा.

"नहीं. वह कहते थे कि उन का नाम चौधरी प्रतापसिंह है. वह अपने अपमान का बदला अवश्य लेंगे. अब मुझ से निमिषा की मुलाकात अदालत में ही होगी," राकेश एक ही सांस में बोल गया.

"एक तो भिखमंगों ने कुछ दिया नहीं, उस पर यह तेवर तो देखो. हमारी तो तकदीर ही खोटी है. एक प्यारेलालजी हैं, बेटा कुल तीन सौ रुपए का नौकर है, पर कितना दहेज मिला है. उस पर भी मजाल क्या कि लड़की की सुसराल वाले एक शब्द भी बोल दें," मां दुखित स्वर में बोली.

"इन सब बातों से क्या लाभ है, मां? मेरा तो इन उलटीसीधी बातों से दिमाग खराब हो गया है. पर आप को उस से क्या, आप के लिए अपनी झूठी शान के सामने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरी किसी वस्तु की कीमत ही नहीं है, भला निमिषा को घर से निकालने की क्या आवश्यकता थी?" राकेश परेशान हो कर बोला. उस की दशा सांपछछूंदर जैसी हो रही थी.

"अरे, तो कौन सी मुसीबत आ गई. प्यारेलालजी के यहां करवाचौथ पर पूरे हजार रुपए का सामान आया था. हमारे यहां सौ रुपए दे कर छुट्टी पा ली," मां बोली.

"वाह, तो आप ने उसे सामान ले कर आने के लिए घर से निकाल दिया?" राकेश व्यंग्य से बोला.

"तू तो लेने गया था, फिर ले क्यों नहीं आया," मां भी व्यंग्य से बोली.

"अब तो उन से अदालत में ही भेंट होगी," राकेश का स्वर सपाट था.

"अरे, तो यहां अदालत से कौन डरता है, हम भी देख लेंगे, वह कितने पानी में है. वहां कुछ खर्च भी तो करना पड़ेगा," पिताजी चीख कर बोले.

"आप जो चाहें करते रहिए, मैं तो कल ही मुजफ्फरनगर चला जाऊंगा. कुल दो दिन की छुट्टी ले कर आया था," राकेश खीझ कर बोला.

राकेश व निमिषा दोनों के पिता ताल ठोंक कर अदालत रूपी अखाड़े में कूद पड़े थे. उन दोनों की लड़ाई में राकेश व निमिषा का बुरा हाल था.

जब राकेश के पक्ष का वकील निमिषा पर चरित्रहीनता के आरोप लगाते हुए अजीबोगरीब प्रश्न पूछता, गवाहियां पेश करता तो निमिषा शर्म, अपमान व क्षोभ से पानीपानी हो जाती. जिस दिन उस के मुकदमे की तारीख होती, उस से कई दिन पहले से ही उस के मस्तिष्क पर अजीब सा भय छाने लगता. कभीकभी तो उसे लगता कि इस मानसिक तनाव से कहीं वह पागल ही न हो जाए.

ठीक वैसी ही दशा राकेश की थी. उसे देखते ही पड़ोसियों, आफिस व मित्रमंडली में खुसुरफुसर प्रारंभ हो जाती थी. यद्यपि राकेश मरसक सहज बना रहता था, किंतु उस का अस्तित्व जैसे हवा के साथ भाप बन कर उड़ने लगता था.

उस दिन निमिषा बहुत परेशान थी. सुबह वकील साहब घूमते हुए उस के घर की ओर आ निकले थे, और बड़ी प्रसन्नता पूर्वक बता रहे थे कि अगली तारीख को तलाक मिल जाएगा.

"अजी, हम ने क्या कम मेहनत की है केस पर," वकील साहब अपनी प्रशंसा करते हुए फूले नहीं समा रहे थे.

उन के शब्द निमिषा के कानों में हथौड़े की तरह चोट कर रहे थे. इस केस के बाद वकील साहब की फीस को चार चांद लग जाएंगे. उस के लि

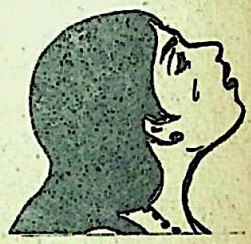

अपनी सफलता पर फूले नहीं समा और शायद राकेश के घर वाले भी ख ही होंगे. पर उस का क्या होगा?

पिता उस के दूसरे विवाह की करते थे. पर दूसरा विवाह क्या इ सरल था? पहले विवाह में ही इतना हुआ था कि परिवार की स्थिति अ नहीं संभली थी. फिर पहले विवाह इतने कटु अनुभव के बाद निमिषा में इ साहस ही कहां बचा था कि वह अपने पुनर्विवाह के लिए तैयार कर सके. बात पर घर में अब तक किसी ने ध्य नहीं दिया था कि पहले बातबात में खिला कर हंसने वाली निमिषा घर व हरी के चक्कर में कब की गुम हो थी.

दूसरे दिन निमिषा कुछ अधिक तक बिस्तर पर पड़ी अपने भविष्य के

 CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में सोचती रही. तभी मां की तीक्ष्ण आवाज सुन कर उठ बैठी. उस दिन उसे अपनी असमर्थता का एहसास बड़ी तीव्रता से हुआ, और पहली बार उस ने अनुभव किया कि धीरेधीरे घर का प्रत्येक कार्य उसी के कंधों पर आ टिका था.

उस ने शीघ्रता से चाय बना कर सब को पिलाई और नाश्ते की तैयारी करने लगी. जब नाश्ता करने के बाद पिता दफ्तर तथा भाईबहन स्कूलकालिज चले गए तो वह भी झटपट नहाधो कर तैयार हो गई.

"कहां जा रही है, निम्मी?" मां उसे तैयार देख कर बोली.

"सविता के घर जा रही हूं, मां. बी. ए. की तैयारी कर रही हूं, कुछ नोट्स ले आऊंगी."

जाने वाली बस सामने आ कर खड़ी हो गई.

विचारों में एक स्फूर्ति आई. विश्वासों को बल मिला, 'जो होगा देखा जाएगा.' फिर तो उस ने किस प्रकार टिकट लिया और कब बस में बैठ कर मुजफ्फरनगर पहुंची, उसे कुछ पता ही नहीं चला.

बस से उतरने पर वह फिर असमंजस में डूब गई. किंतु वहां तक पहुंच कर राकेश से मिले बिना लौटना अब उचित नहीं था.

रिक्शा वाले को पता बता कर वह रिक्शा पर बैठ गई. यद्यपि विवाह के बाद वह एक बार राकेश के पास आई थी, किंतु काफी दिन हो जाने से मार्ग अब बिलकुल याद नहीं था.

निमिषा ने इतना बड़ा निर्णय तो ले लिया था पर कदम उठाते हुए उस का शरीर कांप रहा था.

"अच्छा, जा. जब तक मैं पूजा कर रही हूं तब तक लौट आना, नहीं तो खाने में देर हो जाएगी," मां ने कहा.

"हां मां, जल्दी ही आ जाऊंगी," कहती हुई निमिषा घर की सीढ़ियां उतर गई. कंधे से एक पर्स लटक रहा था, जिस में उस की कुल जमापूंजी तथा कुछ गहने थे. वह कहां जा रही थी, इस बारे में वह स्वयं भी नहीं जानती थी.

बस स्टैंड पर पहुंच कर वह काफी देर तक विचार करती रही. इस प्रकार का कदम उठाते हुए उस का पूरा शरीर कांप रहा था. सदा मातापिता रूपी वटवृक्ष के नीचे पलने वाली लड़की कोई निर्णय लेते हुए घबराए, यह स्वाभाविक ही था.

तभी मुजफ्फरनगर की ओर

रिक्शा वाले को अधिक चक्कर नहीं काटने पड़े. एकदो जगह उतर कर पूछा और निमिषा को ठीक स्थान पर उतार दिया.

लेकिन यह क्या? द्वार देख कर तो निमिषा ठगी सी रह गई. दरवाजे पर ताला लटक रहा था. तभी उसे खयाल आया. इस समय राकेश अपने आफिस में होगा. उसे स्वयं पर क्रोध आने लगा कि इतनी सी बात उस की समझ में पहले क्यों नहीं आई.

और कोई उपाय न देख कर उस ने पड़ोस का द्वार खटखटाया.

"कहिए?" द्वार खुलते ही एक महिला स्वर उभरा.

"जी, मैं..."

"देखिए, यदि आप कपड़े धोने या बरतन साफ करने का पाउडर, पापड़,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बंड़ियां या तेल, मंजन आदि बेचने आई हैं तो कृपया क्षमा करें. महीने का अंतिम सप्ताह है और घर में दुनिया भर का काम पड़ा है."

महिला इस अंदाज में बोली कि निमिषा मुसकरा उठी. फिर क्षण भर बाद बोली, "जी नहीं, मैं आप के पड़ोसी राकेश बाबू के संबंध में पूछ रही थी?"

"यह राकेश बाबूजी... इन के संबंध में क्या पूछती हैं? छड़ों का भी कुछ पता-ठिकाना होता है? अभी तो दफ्तर में होंगे. वहीं से घूमने निकल जाएंगे और रात के आठनौ बजे घर में घुसेंगे," महिला बोली.

"रात के आठनौ...पर अभी तो ग्यारह बजे हैं."

"क्यों, आप क्या कहीं बाहर से आई हैं?" महिला ने फिर पूछा.

"जी हां, मेरठ से," निमिषा ने उत्तर दिया.

"आप उन की कोई रिश्तेदार हैं?"

"जी हां, मैं उन की पत्नी हूं," शीघ्रता से बोली.

"पत्नी....पत्नी से तो सुना है ही नहीं. कुछ केसवेस भी चल रहा इसी से तो मैं मिलने आई हूं."

"अच्छा, समझी; सुलह करने हो, समझदार मालूम पड़ती हो," रुक कर वह महिला फिर बोली, जहां दो बरतन होंगे आवाज तो होगी अब मुआ यह न जाने क्या फैशन चल है कि जरा सी बात हुई और चल तलाक लेने."

निमिषा समझ गई कि महिला लगातार बोलने की आदत है, पर उस उस की बातें सुन कर खामोश रह

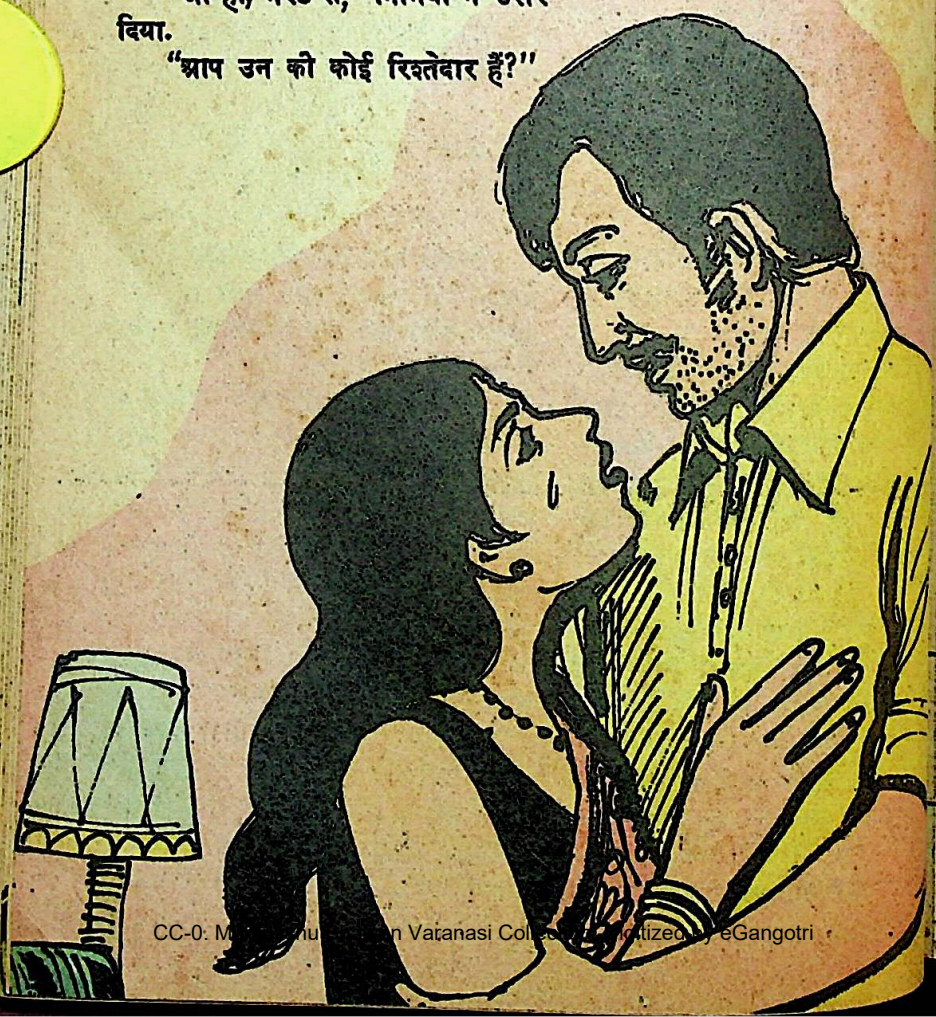

CC-0. M... Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिवा उस के पास और कोई चारा भी नहीं था.

"आओ, अंदर आओ. यहीं बैठ कर इंतजार करो. तुम तो हमारी पड़ोसिन हुईं. राकेश बाबू का नौकर कलुआ अभी तो यहीं था. कहीं चला गया होगा. कुछ देर में आ जाएगा. घर की मालकिन के बिना तो यह मुए नौकर भी बस, मालिक बन बैठते हैं," बोलते हुए वह महिला रसोईघर में जा कर उस के लिए चाय बनाने का उपक्रम करने लगी.

निमिषा ने चाय समाप्त की ही थी कि राकेश का नौकर कलुआ आ गया.

उस से निमिषा का परिचय कराते हुए महिला ऐसे व्यंग्य से मुसकराई कि निमिषा के दुखी हृदय को और चोट पहुंची.

निमिषा आ कर राकेश के ड्राइंगरूम में बैठ गई. बैठेबैठे दिन ढलने लगा. यहां तक कि अंधेरा घिर आया, किंतु राकेश अब तक नहीं आया था. दिन भर के मानसिक तनाव व थकान के कारण जब बैठना कठिन हो गया तो वह वहीं सोफे पर लेट गई.

सोफे पर लेटेलेटे न जाने कब उस की पलकें मुंद गईं. कुछ देर बाद अचानक राकेश का स्वर सुन कर उस की आंखें खुलीं. राकेश दूसरे कमरे में कलुआ से उस के संबंध में पूछताछ कर रहा था. एक अजीब से भय से हड़बड़ा कर वह उठ बैठी.

"ठीक है, दो कप चाय और कुछ नाश्ता ले आओ और कुछ खानेपाने का प्रबंध करो," कहते हुए राकेश ने ड्राइंगरूम में प्रवेश किया.

"कब आईं?" निमिषा को जगा देख कर उस ने पूछा.

"निमिषा, यदि तुम्हें आना ही था तो पहले क्यों नहीं आईं? इतनी देर क्यों की?" राकेश बोला.

"आज सुबह ग्यारह बजे," निमिषा बोली.

"यदि तुम्हें आना ही था तो पहले क्यों नहीं आईं? इतनी देर क्यों की, निमिषा. पिछले तीनचार वर्षों में जितना संताप मैं ने झेला है, तुम सोच भी नहीं सकतीं. अब जब मैं ने मन को समझा लिया था तो अचानक तुम यहां कैसा झंझावात ले आई हो?" राकेश बोला.

"मानसिक यातना क्या आप ने अकेले ही झेली है? देर से ही सही पर बिना किसी को बताए इस तरह आना कोई सरल काम तो नहीं था मेरे लिए. अब मैं सब कुछ छोड़ कर आप के द्वार पर खड़ी हूं, आशा है आप मुझे ठुकराएंगे नहीं. अब तो यही घर मेरी नियति है," कहतेकहते निमिषा रोने लगी.

"कैसी बातें करती हो, निमिषा. तुम्हारे लिए मेरे मन में आज भी वही स्थान है," उसे चुप कराते हुए स्वयं राकेश की आंखें भर आईं.

"अब तुम्हें मेरे जीवन से निकालने का साहस कोई नहीं कर सकता," राकेश ने आंसू पोंछते हुए निमिषा को सीने से लगा लिया.

तभी उसे दो दिन पूर्व आए पिता के पत्र की याद आई, जिस में कुछ ही दिनों में तलाक मिलने की बात लिखी थी और उसे शीघ्र विवाह के लिए लड़की देखने मेरठ बुलाया गया था.

राकेश सोचने लगा, कल ही पिताजी को सब बातें विस्तार से लिख कर पत्र डालना होगा.

साथ ही यह भी लिखना होगा कि उसे न अब तलाक की आवश्यकता है, न विवाह की. जब निमिषा ने इतने साहस का परिचय दिया है, तो वह पीछे क्यों रहे.

तब तक कलुआ आ कर चाय रख गया और दोनों चाय की चुसकियां लेते हुए एकदूसरे को देख कर संतोष से मुसकरा पड़े. ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मासिक-धर्म की समस्या का हल छः रूपये में

फ्रीडम
सैनिटरी नैप्किन्स

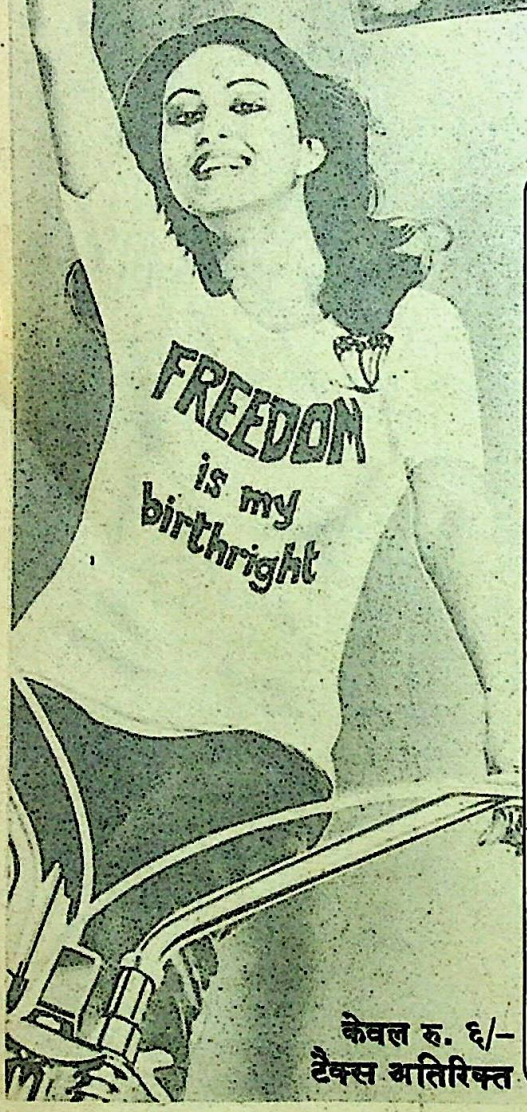

केवल रु. ६/-
टैक्स अतिरिक्त

बहुत ही कम मूल्य में अपूर्व गुण

फ्रीडम—जिसका भारतीय नारी को जाने कब से इन्तज़ार था। विश्व-विख्यात क्वालिटी, और दाम इतने कम कि हर नारी आसानी से दे सके। यह कमाल है इनके कार्यक्रम निर्माण का— जिससे गुण ज्यों का त्यों, फिर भी लागत में कटौती सम्भव हो सकी है।

हंस के परों के समान सफ़ेद फ्रीडम नैप्किन्स, विदेशों से आयात किये गये यंत्रों द्वारा, स्वास्थ्य-रक्षा के अनुकूल वातावरण में निर्मित किये जाते हैं। नर्म-नर्म फ्रीडम से आपके लिए सम्पूर्ण संरक्षण। अपने अगले मासिक-धर्म का संरक्षण आप फ्रीडम को सौंप दें, इसके बाद आप हमेशा फ्रीडम ही इस्तेमाल करना चाहेंगी।

विशेष सुरक्षात्मक शील्ड : चौड़ी प्रोटेक्टा शील्ड (रबर) के कारण आपके फ्रीडम नैप्किन्स में से द्रव पार नहीं हो सकता, और न ही साथ के वस्त्र निकलने का कोई डर रहता है।

उत्तम सामग्री : रेयन की छिद्रयुक्त परत, जिसमें अपूर्व ग्रहण क्षमता है। नर्म और कोमल रेयन की गद्दी—न मुड़े, न अनुचित हो।

मज़बूत पकड़ के लिये लम्बे सिरे : चाहें तो इन्हें बांध कर तूप भी बना सकती हैं।

मुक्त फ्रीडम बैल्ट ये आसानी से फेंके जा सकते हैं; स्वास्थ्य-रक्षक, और पूर्ण रूप से कीटाणु-रहित

आपके लिए फ्रीडम का २० नैप्किन्स का किफ़ायती पैक और १० नैप्किन्स का रेगुलर पैक मिलता है।

हर्बर्टसन्स लि.
२२-होर्मी मोदी स्ट्रीट, बम्बई ४०० ०२१ भारत

daCunha/HL/F-1/Hi

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

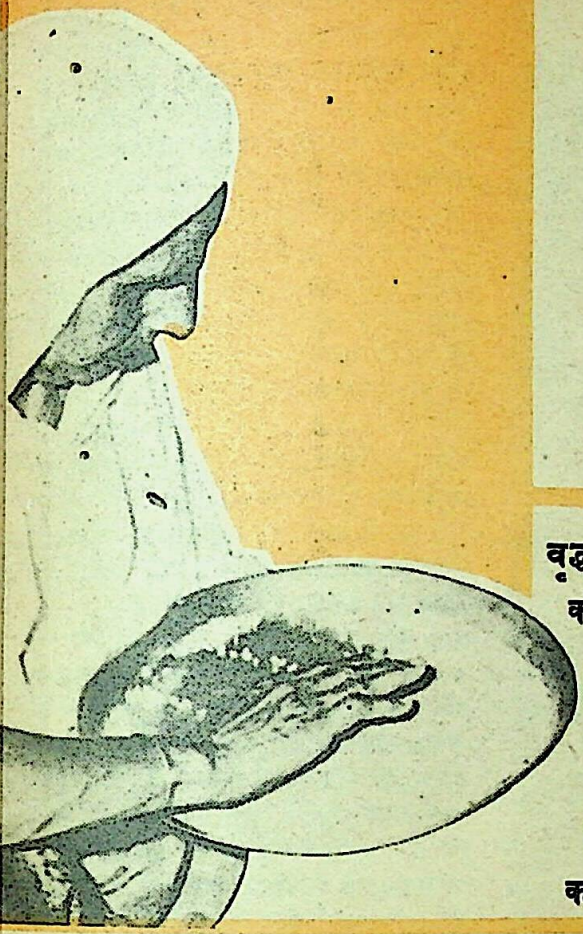

• लेख • र. राजीवन

वृद्ध महिलाओं की देखभाल

वृद्ध महिलाओं की देखभाल की जिम्मेदारी उन के बच्चों पर अवश्य है पर स्वयं उन्हें भी कुछ ऐसे काम करने चाहिए, जिन से परिवार में उन का महत्त्व बना रहे.

हमारे देश में स्त्रियों की एक बहुत बड़ी कामना यह रहती है कि वे पति की गोद में ही प्राण त्यागें अर्थात उन्हें वैधव्य का मुंह न देखना पड़े. यदि गहराई से विचार किया जाए तो इस कामना के पीछे एक बड़ा ठोस कारण रहा है.

अभी कुछ वर्ष पहले तक हमारे भारतीय समाज में धनसंपत्ति पर पुरुषों का अधिकार होता था. पति के देहांत के बाद उस पर पत्नी का अधिकार न हो कर पुत्रों का अधिकार हो जाता था. लिहाजा जो औरत पति के जीवित रहते घर की मालकिन होती थी, वह पति की मृत्यु के तुरंत बाद बेटों और उन से भी बढ़ कर बहुओं पर आश्रित हो जाती थी.

अब बहू को अपनी सास से बदला लेने का अवसर मिलता था और बूढ़ी, अशक्त, शिथिल और काफी हद तक रूढ़िवादी सास को जीवन बिताना दूभर हो जाता था. घर के किसी कोने में ही उस की शेष जिंदगी बीतती थी.

संभवतः इसी लिए वैधव्य को स्त्री जीवन का सब से बड़ा अभिशाप कहा जाता था. यदि पतिपत्नी दोनों बूढ़े होते थे, तब बूढ़े ससुर को तो कुछ सम्मान मिल भी जाता था, पर बूढ़ी सास को नहीं, शायद इसलिए कि धनसंपत्ति तब भी उसी के नाम होती थी.

मोटे तौर पर हमारे गांवों में आज भी यही स्थिति है. यद्यपि आधुनिक सभ्यता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृद्ध महिलाएं अपनेआप को किसी न किसी काम में व्यस्त अवश्य रखें, ताकि उन का समय भी आसानी से कट सके और परिवार के लोग उन्हें बेकार समझ कर उन का तिरस्कार न करें.

के विकास के साथसाथ विशेषकर शहरों में स्थिति में कुछ परिवर्तन आया है, पर उसे बद से बदतर ही कहा जा सकता है. इस का कारण खोजना कुछ कठिन नहीं है. भौतिक सभ्यता के विकास के साथसाथ हमारी मान्यताएं भी बदली हैं. खासकर गांवों में पहले बड़ेबूढ़ों का दबदबा होता था. छोटे उन के आगे बात तक नहीं करते थे. यहां तक कि मां भी अपनी संतान से बात करते हुए शरमाती थी.

छोटों की देखभाल का, लाड़प्यार का काम दादी का होता था. पारिवारिक प्रतिष्ठा और सामाजिक लेनदेन का काम भी सास के जिम्मे होता था. इस से जीवन में उस का रस काफी हद तक बना रहता था.

अधिक बूढ़ी होने पर स्थिति बदल जाती थी, क्योंकि तब वह अपनी उपर्युक्त जिम्मेदारियां नहीं निभा पाती थी और उस की अपनी बहू भी सास बन चुकी होती थी. तब बूढ़ी दादी का काम चरखा कातना तथा पोतीपोतों को कहानी सुनाना रह जाता था. घर में खानेपीने की तथा कपड़े की कमी न होने के कारण बुढ़िया का कोने में पड़े रहना किसी को खलता न था. चरखा उस की काफी मदद करता था.

पर भारत में आधुनिक सभ्यता के प्रवेश के कारण पहले वाली बात न रह गई है. गांव और शहर की सभ्यता में जमीन आसमान का अंतर है. रहनसहन के पुराने और नए तरीकों तथा मान्यताओं में बड़ा अंतर है. इसी लिए नई और पुरानी पीढ़ी के विचारों में कोई तालमेल बैठना मुश्किल हो जाता है. पुरुष तो घर भी घर से बाहर रहते हैं इसलिए वे अपने विचार बदल लेते हैं, पर बूढ़ी स्त्रियों के लिए यह अत्यंत कठिन होता है.

इस के अतिरिक्त शहरों में न तो मकान इतने बड़े होते हैं कि बूढ़े मांबाप को साथ रखा जा सके और न ही उन के लिए भोजनादि की व्यवस्था करना सरल होता है. यदि बच्चे अपनी बूढ़ी मां को कर्त्तव्यवश अपने साथ रख भी लें तो भी उस का मन नहीं लगता, क्योंकि उस का जीवन उसे निरुद्देश्य लगता है, जहां उस के पास कोई काम नहीं होता.

उस के पोतेपोतियों को घिसीपिटी राजारानी की कहानियां पसंद नहीं आतीं. बूढ़ी मां की सुबह उठने की आदत होती है तो बाकी सब लोग देर से सो कर उठते हैं. खानदान के तौरतरीकों में भी फर्क होता है, जिस के कारण वह घर के कामों में भी हाथ नहीं बंटा पाती. धार्मिक अनुष्ठानों का उस के जीवन में कितना महत्त्व होता है, जब कि नई पीढ़ी उन का मजाक उड़ाती है. इसलिए जब बूढ़ी मां को स्नेह की जगह कर्त्तव्यवश अपने पास रखा जाता है तो उस से कलह को ही प्रश्रय मिलता है.

उन्नत देशों में कई ऐसे संगठन हैं जो परोपकारी समूह हैं जिन्होंने वृद्धों की सेवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाल का दायित्व अपने जिम्मे ले रखा है. ये सामाजिक कार्यकर्त्ता वृद्धों के कल्याण पर भी उतना ही ध्यान देते हैं, जितना वे बालकल्याण, महिला कल्याण, और असहायों व निराश्रितों के पुनर्वास पर देते हैं. ये संगठन वृद्धों के रहने और खानेपीने की समुचित व्यवस्था करते हैं.

लेकिन वहां भी देखा यह गया है कि इन वृद्ध सदनों में उन का मन नहीं लगता. उन की स्वाभाविक इच्छा अपने पोतेपोतियों, नातीनातिनों के साथ रहने की, उन से लाड़प्यार करने की होती है. पर इन सब से उन्हें वंचित रहना पड़ता है. करने को उन के पास कोई काम नहीं होता. दिनरात वहीं पड़े रहने के कारण जीवन में कोई ताजगी और नयापन नहीं आ पाता. इन सब का नतीजा यह होता है कि उन्हें अपना जीवन निरुद्देश्य और नीरस लगने लगता है जिस से वृद्धावस्था खलने लगती है.

अन्य देशों के अनुभव से लाभ उठाते हुए कहा जा सकता है कि भारत में वृद्धगृह खोल कर इस समस्या का हल नहीं किया जा सकता. इस समस्या का हल यही है कि वे ऐसे वातावरण में रहें जो उन के लिए पराया न हो, जहां पर वे किसी काम में व्यस्त रह सकें. नातीपोतों से बूढ़ी स्त्रियों का विशेष लगाव होता है. इसलिए यदि वे अपनी संतान के साथ रहें तो उन से उन का तालमेल ठीक बैठना चाहिए. आर्थिक दृष्टि से भी उन्हें अपनी संतान पर आश्रित नहीं होना चाहिए. तभी वे अपना जीवन सुख और शांति के साथ बिता सकेंगी.

अपने बच्चों के साथ तालमेल बिठा कर रहना दो बातों पर निर्भर करता है. पहली बात तो यह है कि वे किस तरह वृद्धावस्था में प्रवेश कर रही हैं. क्या वे एकाएक बूढ़ी हो गई हैं या शनैः शनैः हो रही हैं. यदि किसी स्त्री का स्वास्थ्य अच्छा है तो बूढ़ी होने पर भी वह किसी दूसरे की मुहताज न हो कर अपना काम अपने हाथ से करती रहेगी. ऐसी दशा में संतान उसे अपने ऊपर भार नहीं समझेगी और उस का जीवन शांतिपूर्वक बीतने की संभावना बढ़ जाएगी. एकाएक बूढ़ी होने पर अवश्य कठिनता पैदा हो जाती है.

वृद्ध रूढ़िवादी न हों

स्वास्थ्य के बाद दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वे रूढ़िवादी न हों. सास या दादी जितनी जल्दी नए विचारों को अपना लेंगी, उतनी ही वे सुखी रहेंगी. उन्हें इस बात को समझना चाहिए कि जमाना बदल रहा है और उसी के अनुरूप उन्हें भी बदलना चाहिए. यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि वे शुरू से कैसे समाज में रही हैं, उन का पारिवारिक वातावरण कैसा था, उन का पड़ोस कैसा था, आदि. यदि वे नहीं बदलती हैं तो घर में कलह और झिकझिक का वातावरण बना रहेगा.

आज के पैसाप्रधान युग में यह बात भी आवश्यक है कि वृद्ध महिला पूरी तरह अपनी संतान पर आश्रित न हों. इस के दोतीन उपाय हो सकते हैं. एक तो ऐसी

वृद्धावस्था में महिलाओं की स्वाभाविक इच्छा अपने नातीपोतों के साथ रहने की, उन से लाड़प्यार करने की होती है और नन्हेमुन्हे बच्चों के साथ उन का अच्छा समय कट जाता है.

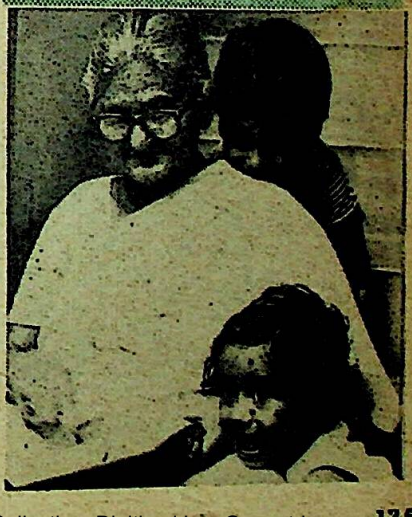

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तर प्रदेश
जहाँ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति आज भी सुरक्षित है—

उत्तर प्रदेश अद्भुत सौन्दर्य का वह चित्र है जिसमें आधुनिकता एवं भारतीय परम्परा के रंगों का एकाकार है। यहाँ के मन्दिरों, तीर्थस्थानों भवनों एवं स्मारकों में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति आज भी न केवल सुरक्षित है बल्कि एक नूतन परिवेश में सजी है। आइये···आप भी संस्कृति, सभ्यता एवं आधुनिकता के इस अनुपम संगम को देखिये···अनुभव कीजिए।

सच! उत्तर प्रदेश की इस सुखद अनुभूति को आप कभी न भूल पायेंगे।

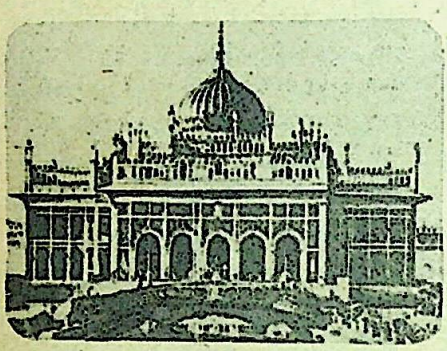

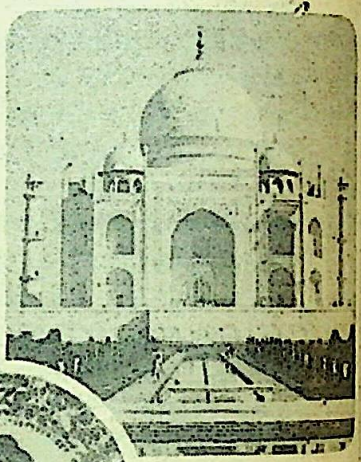

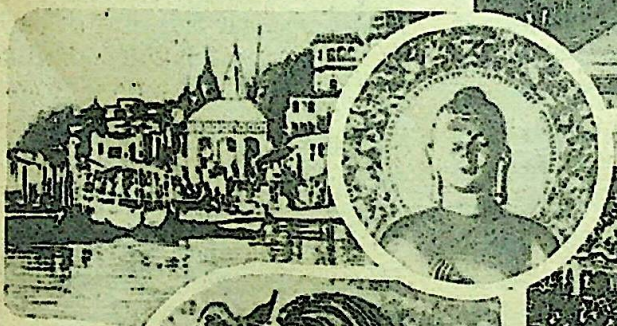

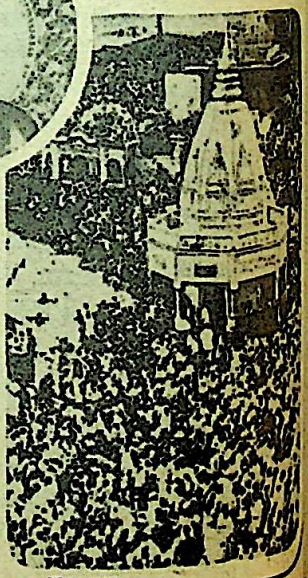

उ

उत्तर प्रदेश पर्यटन

21 विधान सभा मार्ग लखनऊ 226001

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायदाद हो जिस से उसे बंधी आमदनी मिल सके या बैंक अथवा डाकघर में इतना पैसा जमा हो जिस से निश्चित रकम मिलती रहे. वृद्धावस्था में पेंशन भी एक बड़ा सहारा होती है. ऐसी बूढ़ी मां या सास की उपेक्षा नहीं होती.

अब प्रश्न उठता है कि जहां संतान के साथ रहना संभव न हो, वहां क्या किया जाए.

भारत में 60 वर्ष से अधिक उम्र के पुरुषों एवं स्त्रियों की संख्या लगभग साढ़े तीन करोड़ है. देश की आर्थिक स्थिति को देखते हुए इतने अधिक लोगों के लिए वृद्धगृह खोले ही नहीं जा सकते. यदि वे अपनी संतान के साथ नहीं रह सकते तो सर्वोत्तम बात यही होगी कि वे ऐसे वातावरण में रहें जो उन का पूर्व परिचित हो, जहां उन्हें परायापन अनुभव न हो, जहां का पासपड़ोस उन्हें अपना दिखाई दे और उन्हें लगे कि वहां के सामाजिक जीवन में उन का भी स्थान और महत्त्व है.

उन के पास कोई ऐसा काम भी होना चाहिए जिस में वे अपनेआप को व्यस्त रख सकें. ऐसा वातावरण उन्हें अपने गांव में ही मिल सकता है. इसलिए उन की वृद्धावस्था यदि गांव में ही कटे तो अधिक अच्छा होगा. यह कहने की आवश्यकता नहीं कि गांव में भी उन्हें खानेपहनने और रहने की चिंता से मुक्त रहना चाहिए. इस दिशा में उन के सगेसंबंधी हाथ बंटा सकते हैं, उन के गुजारे की व्यवस्था कर के तथा सरकार भी वृद्धावस्था पेंशन की व्यवस्था कर के उन्हें सहारा दे सकती है.

गांव में रहते हुए उन्हें कभीकभी पर्यटन का और अपने नातीपोतों से मिलने का भी अवसर मिलते रहना चाहिए. कभीकभी नातीपोतों के पास जाने से बेटे और बहू उन की उपेक्षा नहीं करेंगे. इस से आपस में प्यार ही बढ़ेगा और यही प्यार उन की वृद्धावस्था का संबल होगा. ●

मुझे शिकायत है

मुझे शिकायत है उन तांगे वालों से, जो घोड़े को चाबुक मारते समय इस ढंग से घुमाते हैं कि वह अकसर पास से गुजरने वाले साइकिल या स्कूटर वालों के लग जाता है.

—अटल दीपक

✦

मुझे शिकायत है उन लोगों से जो फिल्म समाप्त होने से पूर्व ही हाल छोड़ कर जाने लगते हैं, जिस से अन्य दर्शक अंतिम दृश्य को अच्छी तरह नहीं देख पाते.

—म. ल. कश्यप

✦

मुझे शिकायत है उन 'आधुनिक' रूढ़िवादी लोगों से जो हर नए व्यक्ति से उस के नाम के माध्यम से उस से जाति पूछते हैं.

—रामकिशोर

✦

मुझे शिकायत है उन सरकारी अधिकारियों से जो अपने घरों पर चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों से बंधुआ मजदूरों की तरह काम लेते हैं और न करने पर परेशान करते हैं.

मुझे शिकायत है उन सरकारी कर्मचारियों से जो अपनेआप को जनता का सेवक नहीं, शासक समझते हैं और देश की गरीब, अशिक्षित व असहाय जनता से इस तरह पेश आते हैं, जैसे किसी जानवर से पेश आ रहे हों.

मुझे शिकायत है उन सरकारी कर्मचारियों से जो उस व्यक्ति से भी रिश्वत लेने में नहीं चूकते, जिस के तन पर पूरा कपड़ा, पेट में भोजन और बच्चों के इलाज के लिए धन नहीं.

—विष्णुप्रसाद हेम

✦

मुझे शिकायत है उन नर्सों से जो हमेशा मरीजों को डांटा करती हैं जिस से उन का हस्पताल में रहने का मन नहीं करता.

—रेमिश जोजोवार ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"काश मेरा चेहरा भी साफ़ और बेदाग़ होता !"

ज़रूर हो सकता है.

अब नयी चार्मिस वैनिशिंग क्रीम के इस्तेमाल से आपका चेहरा साफ़ और बेदाग़ हो सकता है. और आपका मेक-अप घंटों भर वैसा का वैसा बना रहता है.

चेहरा बेदाग़, निखरा हुआ
अब नयी चार्मिस वैनिशिंग क्रीम त्वचा के छोटे-छोटे दाग़ों को छिपाने में मदद करती है और बिना मेक-अप के ही आपके चेहरे को और भी निखरा और बेदाग़ बना देती है.

मेक-अप वैसा का वैसा रहता है
मेक-अप करते समय चार्मिस वैनिशिंग क्रीम कुछ और ही कमाल दिखाती है. यह महीन है, इसलिए चेहरे पर पावडर की तह एक सी लगती है जिससे आपका मेक-अप घंटों भर वैसा का वैसा बना रहता है.

अपने स्वाभाविक सौंदर्य में निखार लाइए. नयी चार्मिस वैनिशिंग क्रीम इस्तेमाल कीजिए. चेहरे को दिन-ब-दिन बेदाग़ व निखरता हुआ देखिए.

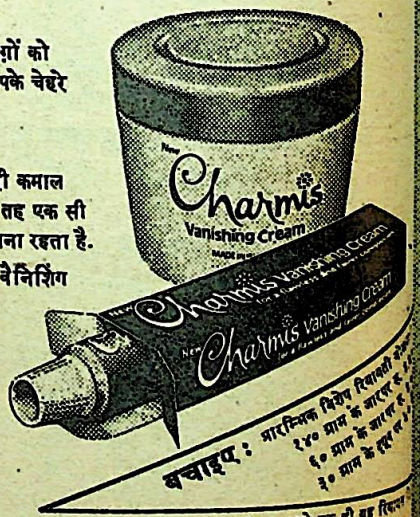

चार्मिस वैनिशिंग क्रीम आपके चेहरे की आप जैसी ही देखभाल करती है.

*माल रहने तक ही यह रियायत

CVC.G. I HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यंग्य • गोविंद शर्मा

भक्त शिरोमणि औंधे मुंह

ऐसा लगने लगा कि अब देवी किसी पर प्रसन्न न होंगी और निराश भक्त वापस लौटने लगे. तभी मंदिर में एक ऐसे भक्त ने प्रवेश किया जिस के हाथ में एक सर्वथा नई चीज थी.

उस दिन मैं देवी के मंदिर में था. वह दिन देवी के स्वैच्छिक प्रकटन का था. भक्त लोग वर प्राप्त करने के लिए अपनीअपनी भेंटें ले कर आ रहे थे. लेकिन उस दिन देवी रूठी हुई थी और यह माने बैठी थी कि जो भी भक्त बहुमूल्य दुर्लभ भेंट चढ़ाएगा, केवल उसे ही वर देंगी. उस के अलावा अन्य भक्तों की भेंटें स्वीकार भी नहीं करेंगी.

मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

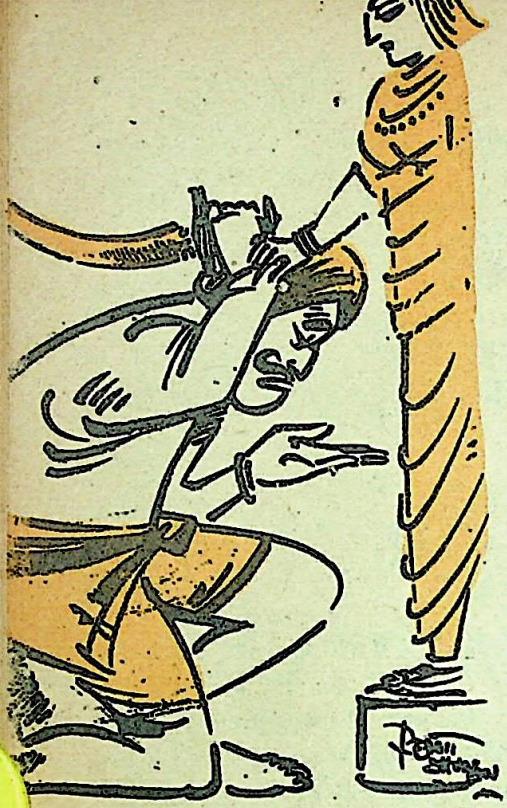

देवी ने भक्त का हाथ पकड़ लिया और बोली, "आत्महत्या करने के लिए तुझे यही जगह मिली?"

था. मैं मंदिर के एक कोने में बैठ गया. इतने में एक सेठजी आए. प्रणाम की मुद्रा में झुके और कुरते के भीतर की जेब से नोटों की गड्डी निकाल कर देवी को चढ़ाई. पास खड़े पुजारी की आंखों में हजार वाट का बल्ब जल गया. पर अचानक देवी प्रकट हो गई और बोली, "अरे सेठ, आयकर अधिकारी के डर से यह काला धन तू मुझे चढ़ाने आया है? मैं हरगिज स्वीकार नहीं करूंगी. चला जा यहां से. उठा ले जा अपना धन."

सेठजी मांमां करते हुए नोटों की गड्डी के साथ मंदिर से बाहर हो गए. देवी लुप्त हो गई और पुजारी की आंखों की रोशनी के बल्ब फ्यूज हो गए.

इस के बाद एक भक्त आया और अपनी जीभ काट कर चढ़ाने के लिए उस ने एक हाथ से जीभ पकड़ी और दू से चाकू. इतने में देवी प्रकट हो गई बोली, "यह क्या मामूली सी जीभ तू चढ़ा रहा है. आज इमरजेंसी लग तो यह जीभ दो कौड़ी की भी न भाग यहां से."

इस के बाद एक बड़ा भक्त और तलवार से अपनी गरदन काट चढ़ाने के लिए उद्यत हुआ ही था देवी ने उस का हाथ पकड़ लिया बोली, "आत्महत्या करने के लिए यही जगह मिली? भाग यहां से मुझे और मेरे पुजारी को गवाहियां के लिए वर्षों तक अदालत के चक्कर पड़ेंगे."

मैं निराश हो गया. सोचने आज देवी किसी पर प्रसन्न होगी, पर इतने में एक नेताजी वाहों कुरसी को थामे मंदिर में आए. देवी आगे झुके और प्रार्थना करने लगे-

"मां, तुझे चढ़ाने के लिए मेरे मुरगी, बकरा, बैल सब कुछ है. मेरे काला धन भी है. लेकिन मैं जानता वर्षों से तुम्हें ये चीजें चढ़ाई जाती एक ही तरह के स्वाद से तुम बोर हो होगी. इसलिए आज मैं तुम्हारे चरणों सर्वथा एक नई चीज चढ़ाने आया संसार के इतिहास में संभवतः मेरे कोई भक्त न हुआ होगा, क्योंकि मैं ऐसी चीज चढ़ाऊंगा जो नेताओं से कम छूटती है. मां, तुम्हें कुरसी चढ़ा रहा

नेताजी ने अपनी कुरसी देवी प्रतिमा के सामने रख दी. कुरसी देख देवी एकदम सशरीर प्रकट हो और गदगद होती हुई बोली, "भक्त तेरा कल्याण होगा. तुझ सा भक्त मिल बड़ा ही मुश्किल है. आज से तू भक्तशिरो मणि हुआ. इस दुनिया में तेरे जैसे दो ही भक्त और हैं. वे भी मेरे भक्त हैं. वे एक दूसरी देवी इंदिरा के भक्त उन का नाम है चंद्रगौडा और स्टीफ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठाकरसी ब्लेंड लाया...
नया ज़माना, नया तराना

हिंदुस्तान स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि., १६, बम्बई समाचार मार्ग, बम्बई ४०००२३

Dattaram HM-8J HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"इन दोनों भक्तशिरोमणियों ने अपनी देवी के सामने अपनीअपनी कुरसियां रख दी थीं. फलस्वरूप पहले भक्त को शीघ्र ही उस देवी के पुजारी द्वारा मंत्रीपद दे दिया जाएगा या दे दिया होगा. दूसरे भक्त की कुरसी अभी उस देवी ने स्वीकार नहीं की है, कर भी नहीं सकती थी, क्योंकि जैसे ही वह इस लायक हुई कि विपक्ष के नेता की कुरसी पर बैठ सके, लोक सभा ने उसे सदन की अवमानना के आरोप में निष्कासित कर दिया. फिर भी वह अपने दूसरे भक्त का किसी न किसी तरह कल्याण करेगी. भक्त, मैं उसी इंतजार में हूं. मैं देखूंगी कि वह देवी अपने भक्त का कितना कल्याण करती है. उस से दोगुना तेरा कल्याण करूंगी."

यह सुन कर नेताजी का चेहरा सफेद हो गया, भरभराए कंठ से बोले, "मां, यह तुम क्या कह रही हो? तुम उस देवी का अनुसरण करोगी? जगदंबे, शास्त्रों के अनुसार उस देवी ने अपने भक्तों का ऐसा कल्याण किया है कि भक्तों ने दोबारा पानी नहीं मांगा. शास्त्रों के अनुसार राज ने उस देवी को बहुत बड़ी कुर्सी चढ़ाई थी, द्वारिकाप्रसाद मिश्र ने कूटनीति सिखाई थी, देवकांत बरुआ ने सुबह शाम उस के नाम की जय बुलाई थी. जिस जनता ने देवी को प्रबल समर्थन दिया उस जनता को देवी ने इमरजेंसी दिखाई थी.

"बताओ, उस देवी ने अपने भक्तों को धोखे और धक्के के सिवा क्या दिया था? अगर चंद्रगौडा और स्टीफन के साथ भी वही बीती तो क्या मेरे साथ भी तुम वही सलूक करोगी?"

"मैं भला देवी परंपरा से कैसे हट सकती हूं?" कहते हुए देवी कुरसी के साथ ही लुप्त हो गई. कुरसी को हाथ से जाते देख भक्तशिरोमणि नेताजी औंधे मुंह गिर पड़े.

काला धन अस्वीकार करने के कारण पुजारीजी तो देवी से नाराज हो कर पहले ही चले गए थे. बेहोश पड़े भक्तशिरोमणि को हस्पताल मुझे ही ले जाना पड़ा.

सरिता

पर्यटन अंक 1979

हर वर्ष की तरह सरिता का मई प्रथम, 1979 अंक पर्यटन अंक होगा. इस अंक में देश भर के पर्यटन स्थलों के बारे में नई से नई जानकारी दी जाएगी ताकि आप गर्मियों की छुट्टियां नए स्थानों पर जा कर मना सकें.

इस बार इस अंक के लिए हम पाठकों के अनुभव भी आमंत्रित कर रहे हैं. यदि आप के पिछली यात्रा में कोई खट्टे, मीठे या उपयोगी अनुभव हुए हैं, जिन से अन्य पर्यटक लाभ उठा सकते हैं, तो कृपया हमें लिख कर भेज दीजिए.

प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर समुचित पारिश्रमिक दिया जाएगा. टिकट लगा लिफाफा होने पर ही अस्वीकृत रचनाएं वापस की जा सकेंगी.

कृपया अपने अनुभव 30 मार्च, 1979 तक स्तंभ विभाग, सरिता, झंडेवाला नई दिल्ली-110055 को भेज दें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

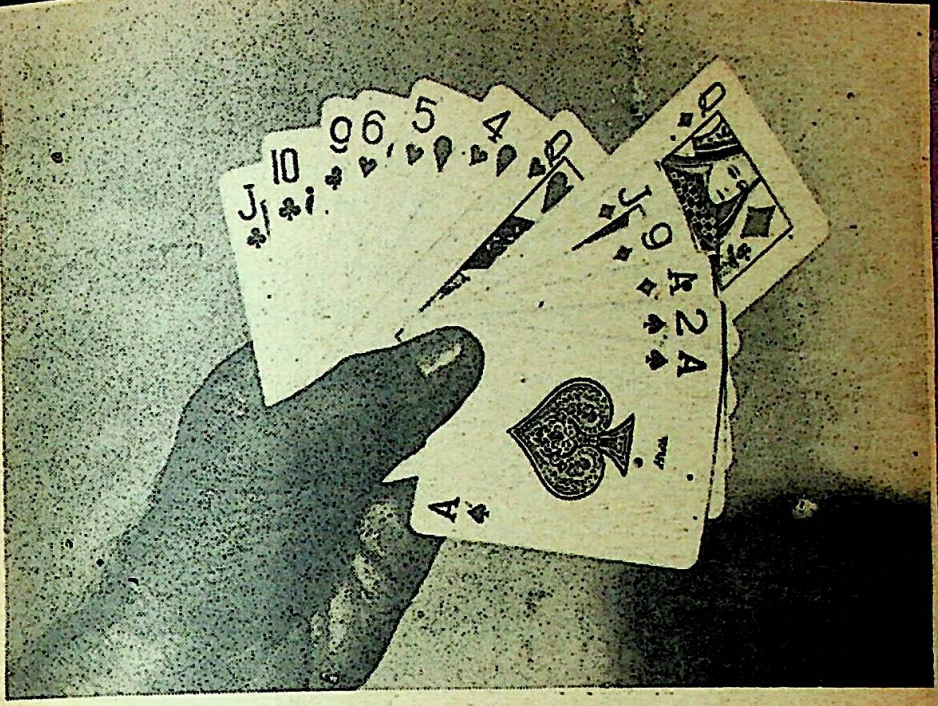

ताश का चक्कर

इस चक्कर में फंस कर कहीं आप अपना जीवन तो बरबाद नहीं कर रहे?

निर्मला जब भी मुझ से मिलती है, कहती है, "ताश खेलना शुरू कर दो, कमला, वक्त मजे में कट जाएगा."

सुन कर मैं मुसकरा देती हूं. कहती कुछ नहीं, क्योंकि मैं जानती हूं ताश खेलना क्या होता है. मैं इस कुचक्र में फंस चुकी हूं.

पठानकोट में कालोनी की महिलाओं ने ग्रुप बना रखा था. रोज पांचछः घंटे ताश खेलना उन का काम था. हमारा तबादला वहां हुआ तो मुझे भी खेलने के लिए बुलाया गया. लेकिन मैं नहीं गई. पर ताश खेलने वाले छोड़ा नहीं करते. उन्हें तो हर वक्त साथियों की जरूरत होती है. इसी लिए मुझे भी निमंत्रण और संदेश आते रहे. यह देख कर मेरा मन कुछ बेईमान हो गया. सोचा, चलो सप्ताह में एक दिन खेल लेते हैं. इतने से क्या बिगड़ जाएगा. सुबह जल्दी काम खत्म कर लूंगी. नौकरों को हिदायतें दे जाऊंगी और समय रहते घर लौट आऊंगी.

पहले सप्ताह मैं ने सोमवार को खेला. बाकी के दिन घर में बैठी रही. अगली बार सोमवार को खेला तो मंगल को भी खेलने को मन किया और फिर बुधवार को भी. सोम, मंगल और बुध को खेला तो बाकी के दिन भला क्यों रुकते? देखते ही देखते मैं

लेख • कमला सपोलिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताश खेलने में ऐसी उलझी कि मुझे घर-बाहर की कोई खबर न रही. हर वक्त दिल और दिमाग पर ताश छाई रहती थी. सुबह जल्दी से काम खत्म कर ताश खेलने दौड़ पड़ती.

तीनचार महीने मेरी यही हालत रही. घर का बुरा हाल हो गया. किसी काम के लिए मेरे पास समय न था. कपड़ों पर से सिलाई खुलती थी तो खुली रहती थी. जो चीज जहां पड़ी होती, वहीं पड़ी रहती. मन हर समय उखड़ाउखड़ा सा रहता था.

फिर अचानक एक दिन मुझे होश आया और अक्ल भी आई. उस दिन मैं ने दृढ़ निश्चय किया कि मैं कभी ताश नहीं खेलूंगी. इस निर्णय से मुझे बहुत लाभ हुआ. मैं घर में दिलचस्पी लेने लगी. जल्दी ही घर की हालत बदलने लगी और सब कुछ व्यवस्थित हो गया.

लोगों को जरूर आश्चर्य हुआ कि अचानक मुझे क्या हो गया. उन्हें यह विश्वास ही नहीं होता था कि ताश खेलने वाले कभी खेलना छोड़ भी सकते हैं. वे समझ नहीं पा रहे थे कि मुझ में यह कायापलट हुई कैसे. मैं ने उन्हें कुछ समझाने की कोशिश भी नहीं की.

ताश का असर

समझाना व्यर्थ था, क्योंकि ताश खेलने वाले कुछ समझा नहीं करते. उन्हें तो ताश में कोई बुराई नजर नहीं आती, बल्कि उन का कहना है कि ताश जैसी कोई चीज नहीं. खेल में आदमी इतना मस्त होता है कि उसे किसी के बारे में सोचने की फुरसत तक नहीं होती. यह बात शत-प्रतिशत सही है. इसी लिए तो ताश खेलने वाले किसी के सुखदुख में सम्मिलित नहीं होते. उन के तो बगल वाले घर में भी कोई मर रहा हो तो उन्हें खबर नहीं होती.

बहुत लोगों का खयाल है कि ताश खेलने से बड़ा सुकून मिलता है. काम से थकटूट कर खेलने बैठो तो झट थकान दूर हो जाती है. दिमाग समस्याएं भूल जाता है. लेकिन कब तक? उतनी ही देर न कि देर कोई ताश की मेज पर बैठा हो. उस के बाद तो समस्याएं फिर से ताजा खड़ी होती हैं. बाकी तो अपने मन को देने वाली बात है.

सतीश बहुत ताश खेला करता। इंदु से मेरी बहुत दोस्ती थी और मैं उस पास काफी जाया करती थी. पहले सतीश घर पर नहीं होता था तो मैं समझती थी कि वह काम से कहीं होगा.

एक दिन मैं इंदु के पास बैठी थी अचानक सतीश आ गया. बदहवास बोला, "जल्दी करो. मुझे दो सौ रुप दो."

सुन कर इंदु बोली, "दो सौ रुपए से दें? अभी तो सारा महीना सिर पर है. खर्च कैसे पूरा होगा?"

उस की बात से सतीश तैश में आ बोला, "बहस न करो. पैसे निकालो. जल्दी है. मैं बहुत हार गया हूं और पैसे होंगे तो मैं हारे हुए रुपए वापस जीत सकूंगा." और सतीश रुपए ले कर गया.

अगले दिन इंदु आई तो बहुत उ थी. बोली, "आज तो मैं अपने दिल का हलका करने आई हूं, कमला." और कर इंदु ने बताया कि सतीश को जुए इतनी लत है कि उस के कारण घर में पैसे पूरे नहीं होते. इसी लिए इंदु को में तीन सौ रुपए की नौकरी करनी प यह देख कर सतीश और भी गैरजिम्मे हो गया और अपने वेतन में से पहले कम पैसे देने लगा. इंदु हर तरह से तंग कर गुजर करती रही. लेकिन कब तक वक्त के साथसाथ घर की हालत बिगड़ती चली गई.

उधर जुए के साथसाथ सतीश शराब और सिगरेट का खर्च भी बढ़ गया. क्लब का बिल कभी चुकता नहीं होता घर में सारा दिन झगड़ा रहने लगा. जीवन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहले तो केवल पुरुष ही ताश खेलते थे लेकिन अब महिलाएं भी घर और बच्चों की उपेक्षा कर के ताश के चक्कर में पड़ने लगी हैं.

से मानो चैन ही उड़ गया था. बच्चों पर इन बातों का बुरा असर होने लगा. इंदु की बातें सुन कर मुझे बड़ा अफसोस हुआ कि सतीश कितना स्वार्थी है. अपनी ऐश के लिए पत्नी और बच्चों को कष्ट के दलदल में फंसाए हुए है. सोचने और समझने की उस की सारी शक्ति ताश के पत्तों में फंस कर नष्ट हो गई है.

रमेश भी वर्षों से ताश के चक्कर में ऐसा पड़ा हुआ है कि कभी घर में पैसा पूरा नहीं हुआ. रिटायर हुआ तो ग्रेच्युटी की सारी रकम साल भर में उस ने ताश की मेजों पर लुटा दी. पत्नी ने बहुत कहा कि फिक्स्ड डिपाजिट में डाल दो, लेकिन रमेश ने उस की एक न सुनी और देखते ही देखते सारा रुपया जुए की नजर हो गया. अब हालत यह है कि बेटियों की शादियां करने के लिए उन के पास बिलकुल पैसा नहीं है.

दोनों लड़कियां शिक्षा समाप्त कर के नौकरियां करने लगी हैं. लेकिन उस से भी क्या होता है? घर में दुख के बादल तो वैसे ही घिरे रहते हैं. हर एक के चेहरे पर उदासी छाई रहती है.

ताश का चक्कर ही कुछ ऐसा होता है कि इनसान अपना धर्म और ईमान तक भूल जाता है, इनसानियत से गिर जाता है.

पिछले साल चंडीगढ़ में वायु सेना के एक अफसर ने दूसरे अफसर की पत्नी का खून कर दिया. उस के कुकर्मों से परेशान हो कर उस की पत्नी और बच्चे पहले ही अलग रहते थे. कहते हैं, वह इतना जुआ खेलता था कि उस पर बहुत सा ऋण हो गया.

ऋण वाले तो अपना पैसा मांगा ही करते हैं और फिर जुआरी से तो खासकर. वह तो किसी का भी विश्वास नहीं करते. कर्ज देने वालों ने उस अफसर से पैसे मांगे. उसे डराया धमकाया तो वह घबरा गया. यहां तक कि उस की अक्ल मारी गई. एक सुबह अपने दो आदमियों के साथ मिल कर एक साथी अफसर के घर जा कर उस ने उस की पत्नी का गला दबा दिया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़की एक महीना पहले ब्याह कर आई थी और उस के पास काफी गहने थे जिस के लालच में उस आदमी ने इतना गिरा हुआ काम किया.

इसी लिए कहते हैं कि कोई बुरा काम नहीं करना चाहिए. एक करो तो दूसरा करने पर आदमी मजबूर हो जाता है. उस का चरित्र गिर जाता है. उसे भलेबुरे का खयाल नहीं रहता. उस के घर के लोग दुखी हो जाते हैं. पैसों के लिए तंग रहते हैं. उन्हें आम जरूरत की चीजों के बिना गुजर करना पड़ता है. इतनी ज्यादा परेशानियों को मोल लेने से तो बेहतर है कि आदमी इन ऐबों से दूर ही रहे.

स्त्रियां भी कम नहीं

लेकिन आजकल ऐसा नहीं होता. ताश का जोर तो कुछ ज्यादा ही हो गया है. पुरुष तो खेलते ही थे, स्त्रियां भी कुछ जरूरत से ज्यादा ताश के चक्कर में पड़ने लगी हैं. क्लबों में खेलती हैं. घरों में भी उन्होंने अपने ग्रुप बना रखे हैं और घंटों ताश के प्रोग्राम में मशगूल रहती हैं. कोई चिंता नहीं कि घर उजड़ रहा है. बच्चे उपेक्षित हैं और जहां एक रुपया खर्च होना होता है, वहां पांच बरबाद होते हैं.

जानपहचान की एक महिला बड़े गर्व से कहती है, "मैं तो सब कुछ रेडीमेड खरीदती हूं. सिलाईबुनाई के लिए किसे फुरसत है? और दरजी तो मेरे जैसों के सिर पर जीते हैं."

उस का कहना भी ठीक है. जो सारा दिन दोनों हाथों में ताश के पत्ते पकड़ कर बैठा रहे, वह और काम कैसे कर सकता है? लेकिन इस तरीके से घर कितना बरबाद होता है, यह उस ने शायद कभी नहीं सोचा. दरजी नए कपड़े बना कर दे सकता है, पुराने कपड़ों की मरम्मत तो नहीं कर के देता. बटन टूट जाए तो वह उन्हें नहीं टांकेगा. यह काम तो घर पर ही किए जाते हैं. जहां एक टांके की जरूरत हो वहां उसे समय पर न लगाया जाए तो कपड़े की जिंदगी एक चौथाई रह जाती है. इस का मतलब यह हुआ कि कपड़े पूरे करने के लिए चौ गुना खर्च करना पड़ेगा. ऐसे में घर की कि कितनी भी आमदनी हो, पैसा कभी पू नहीं होगा.

ताश खेलने वाली इन महिलाओं घरों में नौकर भी ऐश करते हैं. कुछ खा हैं, कुछ लुटाते हैं. बच्चों की देखभाल करने वाला भी कोई नहीं होता. क्योंकि बच्चे रहना कुदरत का तरीका है. बच्चे गिरते पड़ते बढ़ते हैं. वे न कोई नियम सीखते न कोई तौरतरीका. तमीज और सभ्य का तो वे मतलब ही नहीं समझते. उन बुरी आदतें पड़ जाती हैं. वे लड़ाईझगड़ और गालीगलौज करना सीख जाते पढ़ाईलिखाई में ध्यान नहीं लगाते. मनमान करते हैं और ढीठ हो जाते हैं.

ताश खेलने में कितनी बुराइयां यह जानते हुए भी लोग खेलते हैं क्यों जुआरी निर्बल चरित्र के होते हैं. वे छोड़ने का प्रयत्न भी नहीं करना चाहते, बल्कि यह बहाना बनाते हैं कि एक बार ताश खेलना शुरू कर दो तो कमबख्त छूटता नहीं. लेकिन दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं जो न चाहने पर भी करना पड़े. बस निश्चय दृढ़ होना चाहिए. फिर कोई कारण नहीं कि ताश के चक्कर से बचा न जा सके.

एक दंपती को ताश खेलने का बहुत ज्यादा शौक था. एक वक्त रोटी के बिना उन की गुजर हो जाती थी, लेकिन ताश के बिना नहीं. स्वाभाविक था कि घर और बच्चों की बुरी हालत हो. उन की दिनचर्या में अव्यवस्था इतनी ज्यादा थी कि यह पता नहीं लगता था कि वे आ रहे हैं या जा रहे हैं. और साहब, घर का यह हाल कि चाहे जिस कोने में भी रात अंडे रख दें, उसी कोने में सुबह आप को चूजे चींचीं करते मिल सकते थे.

बच्चे फटे कपड़े पहने चारों तरफ नंगे पांव घूमते रहते थे. एक दिन रात को मांबाप नित्य की तरह क्लब में ताश खेलने गए हुए थे कि लड़के को बुखार आ गया. वे उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के फ्लैट में रहते थे. चूंकि जाते समय माता-पिता बाहर के दरवाजे पर ताला लगा कर जाते थे इसलिए बच्चे किसी से सहायता लेने बाहर न निकल सके. छोटे भाई को रोते देख कर बहन घबरा गई. कहीं से दो सफेद गोलियां उठा कर उस ने अपने भाई को खिला दीं. जितनी उस की दस वर्ष की अक्ल क़हती थी उतनी उस ने कर दी.

गोलियां नींद की थीं. रात के बारह बजे मांबाप के आने तक लड़के का बुरा हाल हो गया. बच्चे की हालत देख कर वे घबरा गए और जल्दी से कार में डाल कर उसे हस्पताल ले गए. सारी रात वे बच्चे के साथ बैठे रहे. खुशकिस्मती से बच्चा बच गया. उस दिन उस के मातापिता ने ताश से तौबा कर ली.

ताश की खातिर उन से कितनी गलतियां हुई थीं. कोई विश्वासी नौकर या घर का अन्य सदस्य न होने पर उन्हें छोटेछोटे बच्चों को अकेले छोड़ना पड़ता था. फिर दरवाजे पर ताला लगा होता था, जिस से न कोई बाहर आ सकता था, न कोई अंदर जा सकता था. और सब से बड़ी गलती यह थी कि नींद की गोलियां घर में ऐसे खुली पड़ी थीं. लेकिन देखा जाए तो ताश खेलने वालों को इतनी बारीकी से सोचने का समय ही कहां होता है?

लेकिन इस दंपती के बारे में एक बात जरूर कहनी पड़ेगी कि उस दिन की घटना के बाद उन्होंने ताश को हाथ नहीं लगाया. आज चार साल हो गए. बच्चे कुछ बड़े भी हो गए हैं. लेकिन फिर भी मांबाप समय असमय बाहर नहीं जाते. उन्होंने घर ही में अपनी रुचियां बना ली हैं. पिता ने लिखना शुरू कर दिया है और नियमित रूप से लेख व कहानियां लिखता है. मां हस्तकला में निपुण थीं. अब उस ने वही काम शुरू कर दिया है और हर तीन महीने के बाद अपने घर में सेल लगाती हैं. दोनों का कहना है कि उस दिन को याद कर के वे आज भी कांप उठते हैं. दोबारा ऐसा न हो, इसलिए उन्होंने दृढ़ निश्चय कर के ताश को हमेशा के लिए तिलांजलि दे दी है.

उन दोनों को देख कर यह विश्वास हो जाता है कि अगर कोई चाहे तो वह हर ऐब से छुटकारा पा सकता है. जो ऐसा नहीं कर सकते, उन की कोशिश में कहीं कमी होती है, वे कमजोर होते हैं. वे बेकार के बहानों की आड़ में ऐसा करना चाहते हैं, जो उन्हें बरबादी की तरफ ले जाते हैं. ●

महेश योगी

बीस वर्ष तक छोटी सी कुटिया में रहने वाले ब्रह्मचारी महेश आज अथाह संपत्ति के मालिक हैं. इस अथाह संपत्ति को जोड़ने में महेश योगी को क्याक्या पापड़ नहीं बेलने पड़े. योग की आड़ में भोग का जीवन जीने वाला यह योगी अब देश के साथ विदेशों में भी भारत की प्रतिष्ठा नीलाम कर रहा है. इस योगी के एकएक प्रचार कार्यक्रम पर लाखों रुपए खर्च हो जाते हैं, जिन का कोई हिसाब नहीं है. इसी महेश योगी के अबरूनी जीवन की एक झांकी...

मुक्ता के फरवरी (द्वितीय) 1979 अंक में पढ़ें.

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

खरीदना न भूलें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पासा पलट गया

चोरी चाचीजी के यहां एक व्यक्ति आया और बोला, "मैं आप के गांव से आया हूं. मैं आप के भानजे को चिट्ठी लाया था पर रास्ते में जेब कट जाने से वह भी निकल गई."

थोड़ी देर बाद वह फिर बोला, "मैं आप से पैसे नहीं मांग रहा हूं, लेकिन मुझे एक दिन के लिए जगह चाहिए. मैं अभी भाई को तार किए देता हूं, वह कल तक पैसे ले कर आ जाएगा." चाचाजी को थोड़ा शक तो हुआ पर पैसे न मांगने की वजह से उन्होंने उसे अंदर बुला लिया.

अपने भानजे का हालचाल पूछने के बाद उन्होंने उस की पत्नी का हालचाल पूछा और कहा, "उस के क्या हाल हैं. उस के बच्चे नहीं होते थे. अब कोई बच्चा हुआ या नहीं?"

आगंतुक ने बड़े अफसोस के साथ कहा, "उन के तो अभी तक कोई बच्चा नहीं हुआ है. अब क्या पता आगे वंश चलता भी है या नहीं."

चाचीजी ने यह सब आगंतुक की असलियत जानने के लिए पूछा था, जब कि उन के भानजे के कई बच्चे हैं. अब उन का शक पक्का हो चुका था.

चाचीजी आगंतुक को बड़े सम्मान से मेहमानों के कमरे में ले गईं और बोलीं, "अब आप आराम कीजिए. सफर में थक गए होंगे."

जब वह निश्चिंत हो कर सो गया तो उन्होंने पड़ोस के नौजवानों को बुलवा कर उस आगंतुक को पकड़वाया और पुलिस के हवाले करने का डर बता कर उस की योजना जान ली.

वह ठग इसी प्रकार किसी के भी जा कर शरण ले लेता था और रात घर का दरवाजा खोल कर अन्य सा की सहायता से चाकू की नोक पर सामान ले कर चंपत हो जाता था.

चाचीजी की सूझबूझ के कारण का घर लुटने से बच गया.

—अवधेशकुमार

❖

मैं अपने मामा के यहां गया हुआ उन के पड़ोस में शादी थी. रात बरात आई और लड़के वालों ने ही दहेज के रूप में कार की मांग की. मांग पर लड़की वाले बड़े परेशान हो

उन्होंने बहुत मिन्नतें की कि फिर कभी दे देंगे लेकिन लड़के वाले माने. आखिरकार लड़की वालों को उपाय सूझा. उन्होंने बरात में आई औरतों को एक रस्म पूरी करने के क कमरे में बुलाया और सब को कमरे बंद कर दिया.

अब लड़की वालों ने लड़के वालों कहा, "अब तक हमारी लड़की की शादी 25,000 रुपए खर्च हो चुके हैं. आप 25,000 रुपए दे दीजिए."

लड़के वालों ने उन्हें 25,000 दे कर बरात में आई औरतों को छुड़ा और उन्हें बिना दुलहन के ही वापस लौट पड़ा.

—जितेंद्र वर्मा
(सर्वश्रेष्ठ)

इस स्तंभ के लिए अपने व अपने मित्रों के रोचक संस्मरण भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें तथा सर्व श्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: स्तंभ विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लौटे कदम

चित्रा ने नौकरी कर के अपनी घरगृहस्थी ही चौपट कर डाली थी. लेकिन जब उस के कदम सही राह पर आए तो बड़ी देर हो चुकी थी.

अनिल ने चेहरे पर साबुन लगा, बुरुश नीचे रख, सेफ्टी रेजर हाथ में उठाया ही था कि एक हाथ में पर्स पकड़े और दूसरे से साड़ी संभालती, दरवाजे की ओर लपकती हुई चित्रा ने उसे देख लिया, "अरे, अभी आप शेव ही बना रहे हैं! मुझे भी रोज ही देर हो जाती है. पप्पू को मैं ने नहला दिया है. अभी पानी गरम हुआ जाता है, जरा गुड्डी को आप नहला देना. खाना अपने साथ ही उन्हें खिला देना. देखिए, कहीं उन्हें स्कूल को देर न हो जाए."

और वह दरवाजा खोल बाहर निकल गई. अनिल रेजर चलाने लगा. उस की दाढ़ी पर ही नहीं, मन में भी एक रेजर चल रहा था.

चित्रा को एक्सचेंज में नौकरी करते एक साल से ऊपर हो गया था. नौ बजे से उस की ड्यूटी शुरू होती थी. अतः साढ़े आठ बजे ही वह भागती सी घर से निकल जाती. कभी पप्पू को, कभी गुड्डी को और कभी दोनों को ही वह बिना नहलाए छोड़ जाती. अनिल को उन्हें नहलाना पड़ता था. उन के कपड़े ढूंढ़ने और पहनाने पड़ते थे. और कभीकभी तो ठीक अंतिम समय पर कपड़ों में बटन भी टांकने पड़ते थे. स्वयं भी नहाना और दफ्तर जाने के लिए तैयार होना होता था. सुबह उठने से ले कर दफ्तर जाने तक जैसे उस के लिए कामों की दौड़ लगी रहती थी.

सहसा ही वह चिहुंक उठा. कान के पास रेजर चलाते समय चूक जाने के कारण थोड़ा कट गया था. कटे हुए स्थान पर फिटकरी लगा वह पुनः रेजर चलाने लगा.

उस दिन संध्या को दफ्तर से लौटते हुए वह एक नई बंदूक खरीद लाया था. चित्रा कितनी प्रसन्न होगी उसे देख कर. सुरक्षा भी रहेगी और छुट्टियों में वह उस से शिकार करने जाया करेगा.

क्या मनोरंजन का यह साहसिक साधन उस के पौरुष का प्रतीक नहीं था?

चित्रा को उस पर गर्व होना चाहिए था, पर हुआ उलटा. चित्रा उस बंदूक को ले कर बहुत कुछ कह गई, "इस के लिए कारतूस आएंगे. शिकार के लिए आप बाहर जाएंगे, जंगल में शिकार करने की फीस भरेंगे. मुफ्त में चालीसपचास रुपए प्रति मास का खर्च. सिगरेट पीते हैं, सिनेमा देखते हैं.

कहानी • निरंजन सिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पासा पलट गया

दोपहरी चाचीजी के यहां एक व्यक्ति आया और बोला, "मैं आप के गांव से आया हूं. मैं आप के भानजे को चिट्ठी लाया था पर रास्ते में जेब कट जाने से वह भी निकल गई."

थोड़ी देर बाद वह फिर बोला, "मैं आप से पैसे नहीं मांग रहा हूं, लेकिन मुझे एक दिन के लिए जगह चाहिए. मैं अभी भाई को तार किए देता हूं, वह कल तक पैसे ले कर आ जाएगा." चाचाजी को थोड़ा शक तो हुआ पर पैसे न मांगने की वजह से उन्होंने उसे अंदर बुला लिया.

अपने भानजे का हालचाल पूछने के बाद उन्होंने उस की पत्नी का हालचाल पूछा और कहा, "उस के क्या हाल हैं. उस के बच्चे नहीं होते थे. अब कोई बच्चा हुआ या नहीं?"

आगंतुक ने बड़े अफसोस के साथ कहा, "उन के तो अभी तक कोई बच्चा नहीं हुआ है. अब क्या पता आगे वंश चलता भी है या नहीं."

चाचीजी ने यह सब आगंतुक की असलियत जानने के लिए पूछा था, जब कि उन के भानजे के कई बच्चे हैं. अब उन का शक पक्का हो चुका था.

चाचीजी आगंतुक को बड़े सम्मान से मेहमानों के कमरे में ले गईं और बोलीं, "अब आप आराम कीजिए. सफर में थक गए होंगे."

जब वह निश्चिंत हो कर सो गया तो उन्होंने पड़ोस के नौजवानों को बुलवा कर उस आगंतुक को पकड़वाया और पुलिस के हवाले करने का डर बता कर उस की योजना जान ली.

वह ठग इसी प्रकार किसी के भी जा कर शरण ले लेता था और रात घर का दरवाजा खोल कर अन्य सा की सहायता से चाकू की नोक पर सामान ले कर चंपत हो जाता था.

चाचीजी की सूझबूझ के कारण का घर लुटने से बच गया.

—अवधेशकुमार

❖

मैं अपने मामा के यहां गया हुआ उन के पड़ोस में शादी थी. रात बरात आई और लड़के वालों ने ही दहेज के रूप में कार की मांग की. मांग पर लड़की वाले बड़े परेशान हो

उन्होंने बहुत मिन्नतें की कि फिर कभी दे देंगे लेकिन लड़के वाले माने. आखिरकार लड़की वालों को उपाय सूझा. उन्होंने बरात में आई औरतों को एक रस्म पूरी करने के ब कमरे में बुलाया और सब को कमरे बंद कर दिया.

अब लड़की वालों ने लड़के वालों कहा, "अब तक हमारी लड़की की शादी 25,000 रुपए खर्च हो चुके हैं. आप 25,000 रुपए दे दीजिए."

लड़के वालों ने उन्हें 25,000 दे कर बरात में आई औरतों को छुड़ा और उन्हें बिना दुलहन के ही वापस लौ पड़ा.

—जितेंद्र वर्मा
(सर्वश्रेष्ठ)

इस स्तंभ के लिए अपने व अपने मित्रों के रोचक संस्मरण भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ संस्मरण पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने संस्मरण इस पते पर भेजें: स्तंभ विभाग, सरिता, दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लौटे कदम

चित्रा ने नौकरी कर के अपनी घरगृहस्थी ही चौपट कर डाली थी. लेकिन जब उस के कदम सही राह पर आए तो बड़ी देर हो चुकी थी.

अनिल ने चेहरे पर साबुन लगा, बुरुश नीचे रख, सेफ्टी रेजर हाथ में उठाया ही था कि एक हाथ में पर्स पकड़े और दूसरे से साड़ी संभालती, दरवाजे की ओर लपकती हुई चित्रा ने उसे देख लिया, "अरे, अभी आप शेव ही बना रहे हैं! मुझे भी रोज ही देर हो जाती है. पप्पू को मैं ने नहला दिया है. अभी पानी गरम हुआ जाता है, जरा गुड्डी को आप नहला देना. खाना अपने साथ ही उन्हें खिला देना. देखिए, कहीं उन्हें स्कूल को देर न हो जाए."

और वह दरवाजा खोल बाहर निकल गई. अनिल रेजर चलाने लगा. उस की दाढ़ी पर ही नहीं, मन में भी एक रेजर चल रहा था.

चित्रा को एक्सचेंज में नौकरी करते एक साल से ऊपर हो गया था. नौ बजे से उस की ड्यूटी शुरू होती थी. अतः साढ़े आठ बजे ही वह भागती सी घर से निकल जाती. कभी पप्पू को, कभी गुड्डी को और कभी दोनों को ही वह बिना नहलाए छोड़ जाती. अनिल को उन्हें नहलाना पड़ता था. उन के कपड़े ढूंढ़ने और पहनाने पड़ते थे. और कभीकभी तो ठीक अंतिम समय पर कपड़ों में बटन भी टांकने पड़ते थे. स्वयं भी नहाना और दफ्तर जाने के लिए तैयार होना होता था. सुबह उठने से ले कर दफ्तर जाने तक जैसे उस के लिए कामों की दौड़ लगी रहती थी.

सहसा ही वह चिहुंक उठा. कान के पास रेजर चलाते समय चूक जाने के कारण थोड़ा कट गया था. कटे हुए स्थान पर फिटकरी लगा वह पुनः रेजर चलाने लगा.

उस दिन संध्या को दफ्तर से लौटते हुए वह एक नई बंदूक खरीद लाया था. चित्रा कितनी प्रसन्न होगी उसे देख कर. सुरक्षा भी रहेगी और छुट्टियों में वह उस से शिकार करने जाया करेगा.

क्या मनोरंजन का यह साहसिक साधन उस के पौरुष का प्रतीक नहीं था?

चित्रा को उस पर गर्व होना चाहिए था, पर हुआ उलटा. चित्रा उस बंदूक को ले कर बहुत कुछ कह गई, "इस के लिए कारतूस आएंगे. शिकार के लिए आप बाहर जाएंगे, जंगल में शिकार करने की फीस भरेंगे. मुफ्त में चालीसपचास रुपए प्रति मास का खर्च. सिगरेट पीते हैं, सिनेमा देखते हैं.

कहानी • निरंजन सिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चित्रा बंदूक देखते ही कह उठी, "इस
आप बाहर जाएंगे, जंगल में शिकार
पचास रुपए प्रति

अखबार और पत्रिकाएं खरीदते हैं. आखिर आप अपने पर कितना खर्च करेंगे? कभी बच्चों की ओर भी देखा है? न उन के कपड़े ढंग के हैं, न जूते साबुत. घर पर जो मिल जाता है, खा लेते हैं, कभी उन्हें जेब खर्च के लिएं भी दोचार आने दिए हैं? मैं अपनी बात नहीं करती, किंतु कल पप्पू को कालिज में पढ़ाना है, गुड्डी की शादी करनी है— इन सब के लिए भी तो कुछ बचाना है."

इतना कहतेकहते उस की आंखों में आंसू आ गए थे. अनिल को अपनी बंदूक का यह स्वागत अच्छा न लगा. विशेषकर चित्रा के यह कहने पर कि केवल अपने पर ही सब व्यय करना चाहते हो, तो पहले इस बंदूक से अपने बच्चों का ही शिकार कर डालो, अनिल को अत्यंत रोष हुआ. क्रोध में उस ने कहा था कि क्या वह केवल कमाने की एक मशीन है? उस की अपनी इच्छाएं और शौक क्या कुछ नहीं हैं? यदि बच्चे ही बाधक हैं, तो चित्रा उन्हें समुद्र में डुबो आए.

बंदूक को अलमारी में बंद कर, फफक-फफक कर रोती चित्रा को कमरे में छोड़ वह बाहर समुद्र की ओर हवा खाने चल दिया था.

शेव बन चुका था. उस ने तौलिए से चेहरे का साबुन पोंछा और शीशे को चेहरे के निकट ला किसी छूटे हुए बाल को खोजने लगा. कोई बाल नहीं छूटा था, किंतु अपने गालों पर उस की निगाह ठहर गई. लगा, जैसे दोनों गाल बैठ गए हों. उंगली से दाहिना गाल दबाया. तनिक से दबाव से ही वह अंदर दाढ़ से छू गया. आंखों के नीचे गड्ढे साफ दिखाई पड़ रहे थे. गले की हड्डियां उभर आई थीं. उस ने शीशे को नीचे रख दिया. बुरुश और रेजर को नल के नीचे धो कर रैक पर रख दिया. रैक पर बहुत सी क्रीम की शीशियां और पाउडर के डब्बे रखे थे.

चेहरे पर क्रीम मलतेमलते उस ने ध्यान दिया कि चित्रा ने चेहरे के प्रसाधन उपकरणों से रैक प्रायः पूरा भर दिया था.

गुड्डी को नहला कर अनिल उस की फ्राक ढूंढ़ रहा था. खूंटी पर चित्रा का नया सिला चेस्टर लटक रहा था. पास ही हैंगर में टंगे भिन्नभिन्न डिजाइनों के तीन जनाने स्वेटर लटक रहे थे. उधर दूसरी ओर स्वयं उस का सूट लटक रहा था. इस सूट को बनवाए चार साल हो चुके थे. गुड्डी की फ्राक उसे कहीं नहीं दिखाई दी. अतः एक के पश्चात एक कर के उस ने तीनचार ट्रंक खोल डाले. वे भी चित्रा की साड़ियों और ब्लाउजों से भरे थे. उस ने अपना ट्रंक भी खोल डाला. उस में पप्पू की एक बुशर्ट मिली. गुड्डी की फ्राक वहां भी नहीं थी. हार कर एक मैली सी फ्राक बाहर अलगनी पर टंगी मिली. वही उस ने गुड्डी को पहना दी.

पप्पू और गुड्डी के पीछेपीछे अनिल बस से उतरा और उन्हें साथ ले उन के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्कूल की सड़क पर बढ़ गया. स्कूल के दरवाजे के पास पहुंच उस ने पूछा, "पप्पू बेटा, तुम्हें मम्मी ने खेल की छुट्टी में आइसक्रीम खाने के लिए पैसे दिए हैं?"

"पहले देती थीं, पर अब तो बहुत दिन हो गए, मांगने पर भी नहीं देतीं," पप्पू ने बताया.

"क्या कहती हैं?"

"रोज कह देती हैं—कल दूंगी."

"अच्छा. यह लो रुपया, तुम दोनों के लिए है," कहते हुए अनिल ने जेब से निकाल कर एक नोट पप्पू की ओर बढ़ाया. नोट ले कर पप्पू और गुड्डी दोनों ही पिताजी के मुंह की ओर देखने लगे. अनिल झेंप गया.

के लिए कारतूस आएंगे, शिकार के लिए करने की फीस भरेंगे, मुफ्त में चालीस-माह का खर्च."

शीघ्रता से नोट पप्पू के हाथ में खोंस कर वह अपने दफ्तर की ओर बढ़ गया. आज उस ने और दिन की भांति बच्चों से टाटा भी नहीं की थी.

चित्रा के नौकरी कर लेने से घर में क्या अंतर आ गया है? उस दिन बंदूक की बात को ले कर जो हुआ, उस के एक सप्ताह उपरांत चित्रा ने एक्सचेंज आपरेटर की नौकरी कर ली थी. घर पर काम करने और खाना बनाने के लिए एक नौकर रख लिया गया था. घर सदैव गंदा बना रहता था और खाने से कभी पेट भरता प्रतीत नहीं होता था. बच्चों को तैयार कर, स्कूल छोड़ दफ्तर पहुंचने में वह स्वयं लेट हो जाता था.

चित्रा को मिलता भी क्या है? यही एक सौ सत्तर रुपए प्रति मास. उस में से नौकर को वेतन देना है. एक्सचेंज आने-जाने का बस का किराया है, दोपहर का खाना वह कैंटीन में खाती है और शाम को चार बजे चाय भी पीती है. नित्य बाहर जाना पड़ता है, अतः कपड़े भी उसे अच्छे और कुछ अधिक ही चाहिए. प्रश्न था कि उस के लिए इतनी परेशानियां खड़ी कर, उस से और बच्चों से दिन प्रति दिन दूर होती हुई चित्रा अपने बैंक बैलेंस में कितनी वृद्धि कर रही होगी?

अनिल यही सब सोच रहा था कि हठात जनरल मैनेजर की लाल रंग वाली कार खड़ी देख उस की विचार तंद्रा टूट गई. वह दफ्तर के अहाते में प्रवेश कर चुका था. झट कलाई आंखों के सामने कर उस ने घड़ी देखी—सवा दस.

मैनेजर उस से नित्य ही देर से आने का कारण पूछता था. क्या चित्रा को भी सिवा अनिल के किसी दूसरे का यों डर बना रहता होगा? क्या उसे भी किसी अन्य की कटु बातें सुननी पड़ती होंगी?

कलेजे में एक नई ही प्रकार की दर्द-पूर्ण अनुभूति लिए, गरदन झुकाए, वह अपनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुरसी पर जा बैठा और फाइलों में उलझ गया.

दफ्तर से लौट अनिल घर पहुंचा ही था कि चित्रा ने पूछा, "यही फ्राक बच रही थी गुड्डी को पहना कर स्कूल ले जाने के लिए," कोने में पड़े धोबी के यहां से आए कपड़ों के गट्ठर की ओर इशारा करती हुई आगे बोली, "यह इतना बड़ा गट्ठर भी आप को नहीं दिखाई दिया."

खोईखोई सी आंखों से अनिल गट्ठर की ओर देखता रहा. अभ्यस्त हाथ गले के पास खोलने के लिए टाई की गांठ खोज रहे थे कि चित्रा चिहुंक पड़ी, "क्या खोल रहे हैं आप? टाई बांधी भी थी आज?"

अनिल के मुंह से निकला, "हूं." और उस ने गरदन झुका छाती पर निगाह डाली. सचमुच आज उस ने टाई बांधी ही नहीं थी.

चित्रा ने और बच्चों ने चाय पी ली थी. अकेले चाय पीते हुए अनिल डर रहा था कि कहीं कोई बच्चा घूमने चलने के लिए न कह दे. हुआ भी ऐसा ही. पप्पू कह रहा था, "मम्मी, बाहर चलो न?"

"अब तुम्हारे साथ बाहर घूमने चलूं, जैसे मैं सारे दिन घर पर ही बैठी थी," कहती हुई चित्रा ने व्यंग्य भरी दृष्टि से अनिल की ओर देखा.

अनिल चुपचाप बच्चों को साथ ले बाहर चल दिया. राह में उस ने पूछा, "पप्पू, आजकल मम्मी तुम्हें अंगरेजी में क्या पढ़ा रही हैं?"

"कुछ भी नहीं."

"क्यों?"

"वह तो स्कूल में दिया हुआ गणित का कोई प्रश्न पूछने पर भी कहती हैं कि कल अपने मास्टरजी से ही पूछ लेना."

"हूं." अनिल चुप हो गया. उस में और बच्चों में और कोई बात न हो सकी.

घर लौटने पर देखा, सारे घर में अंधेरा था. केवल एक कमरे में मोमबत्ती जलाए चित्रा निढाल सी आरामकुरसी पर पड़ी थी.

"क्यों, क्या आज बिजली खराब हो गई?" अनिल ने पूछा.

"बिजली का बिल जो चुका आए थे आप," चित्रा ने कहा.

बिल आए आज महीना हो गया था, पर वह उसे कोट की जेब में रख कर भूल गया था. इस से पूर्व चित्रा ही बिजली के दफ्तर में बिल चुका कर आती थी. संभवतया इसी लिए बिजली की लाइन काट दी गई थी. अनिल का मन इतना खराब हुआ कि वह खाना खाए बिना ही जा कर चारपाई पर लेट गया. बच्चों को खिला चित्रा भी भूखी ही लेट गई.

देर तक दोनों करवट बदलते रहे, किंतु नींद किसी को भी न आ रही थी. बहुत देर बाद एक करवट ले कर अनिल बोला, "चित्रा, जाग रही हो?"

"हूं." बराबर के पलंग से आवाज आई.

"पप्पू छमाही परीक्षा में तीन विषयों में फेल है."

चित्रा चुप.

"पप्पू बता रहा था कि तीनचार दिन पूर्व एक लड़की ने खेल के घंटे की छुट्टी में दहीबड़े का दोना गुड्डी के मुंह पर दे मारा. पप्पू कहता है कि उस लड़की ने ठीक किया. गुड्डी रोज ही भिखमंगिन की भांति उस लड़की के खाते समय सामने जा खड़ी होती थी."

चित्रा चुप.

"मुझे आज दफ्तर पहुंचने में फिर देर हो गई. मैनेजर ने चेतावनी दे दी है और कह दिया है कि भविष्य में दो दिन लेट होने पर मेरी एक अनुपस्थिति लिख दी जाएगी."

चित्रा इस बार भी चुप रही. हार कर अनिल ने करवट बदली और कुछ ही समय में उसे नींद आ गई.

पर चित्रा जाग रही थी. पुलिस वालों की एक आवश्यक ट्रंककाल डिले होने से सुपरवाइजर ने उसे बड़े साहब के समक्ष पेश कर दिया था. असावधानी के लिए पांच दिन के वेतन का जुरमाना हो गया और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भविष्य के लिए चेतावनी दे दी गई. यह वही अधिकारी था, जिस ने कुछ दिन पहले ड्यूटी समाप्त कर घर लौटने को तैयार चित्रा को अपनी कार में बैठने को निमंत्रित करते हुए कहा था कि घर लौटने की ऐसी क्या जल्दी है. क्यों न वे दोनों कार में थोड़ा घूम कर कहीं एकएक कप काफी पी लें. बाद में वह उसे घर छोड़ आएगा.

वैसे अपनी समझ में उस ने आज शीघ्र ही उस काल को मिला दिया था. यदि पूना वाले अपने सब्सक्राइबर को उसी समय लाइन पर न ला सके थे, तो उस में भला उस की क्या गलती थी? काश, वह यह सब अनिल से कह सकती. पर अनिल सो चुका था.

कैसी खोईखोई सी निगाहों से आज अनिल कपड़ों की उस गठरी को देख रहा था...टाई लगाना तक उसे याद न रहा... और यह गुड्डी...और दहीबड़े. पैसे दे कर स्वयं उस ने उस की आदत बिगाड़ दी थी. हाथ तंग होने के कारण कुछ दिनों से वह उन्हें जेबखर्च न दे पाई थी. पप्पू तीन विषयों में फेल. कितने दिन हो गए थे उसे पप्पू की पढ़ाई के विषय में कोई बात किए.

धीरेधीरे चित्रा को नींद ने अपनी गोद में भर लिया.

अगले दिन हजार प्रयत्नों के उपरांत भी जब अनिल दफ्तर पहुंचा तो वह सात मिनट लेट था. उसी समय छुट्टी का आवेदनपत्र लिख बड़े बाबू को दे, दफ्तर से बाहर आ, वह सीधा घर पहुंचा. अलमारी से बंदूक निकाल बाजार में ले गया और उसे आधे दामों में जहां से खरीदी थी, वहीं बेच दी. बेचने की रसीद लिखा कर जेब में डाली. उन पैसों से बच्चों के लिए कपड़े और चित्रा के लिए एक साड़ी खरीद जब वह घर पहुंचा तो पांच बज चुके थे.

चित्रा अब आने ही वाली होगी.

स्कूल से बच्चे आ गए. अनिल ने उन्हें चाय पिला दी. छः बज गए, पर चित्रा अभी तक नहीं आई. अनिल ने एक सिगरेट सुलगाई और कुरसी पर बैठ कर उस की प्रतीक्षा करने लगा. पढ़े हुए अखबार के पन्ने उलटते हुए उसे लग रहा था, जैसे काफी समय हो गया हो.

किंतु अभी सवा छः ही हुए थे. साढ़े छः बजने तक अनिल काफी व्यग्र हो चुका था. उठ कर पता लगाने के लिए वह बाहर जाने ही वाला था कि दरवाजा खोल चित्रा ने घर में प्रवेश किया. पप्पू और गुड्डी की ओर देख कर हैलोहैलो करते हुए वह सीधी अनिल के पास आई, "माफ करना, अनिल, भविष्य में कभी देर से न आने के लिए ही मैं आज अंतिम बार देर से आई हूं."

अपना पर्स उस ने टेबल पर रख दिया और एक दूसरे डब्बे को अनिल की गोद में

अपहरण और बलात्कार

क्यों होते हैं? इन्हें कैसे रोका जा सकता है? क्या अपहरण और बलात्कार केवल अपराधी की दबी हुई वासना के कारण होते हैं? अपहरण और बलात्कार जैसे हिंसात्मक और गंभीर अपराधों के मनोवैज्ञानिक पहलू का विश्लेषण और इन अपराधों की कानूनी प्रक्रिया बहुत सुलझे हुए रूप में...

मुक्ता के फरवरी (द्वितीय) 1979 अंक में पढ़ें.

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डाल वह उस की कुरसी के पीछे आ खड़ी हुई. उस के बालों में धीरेधीरे दोनों हाथों की उंगलियां चलाते हुए उस ने कहा, "देखो तो भला. इस डब्बे में मैं तुम्हारे लिए क्या लाई हूं?"

पर अनिल ने डब्बा खोलने का कोई प्रयत्न नहीं किया. इस पर चित्रा ने स्वयं ही डब्बा खोल अनिल के सामने कर दिया.

"बंदूक के कारतूस!" कहते हुए अनिल ने मुंह ऊपर उठाया और चित्रा के चेहरे पर अपनी आंखें टिका दीं.

बहुत दिनों से खोई हुई शरारत भरी मीठीमीठी मुसकराहट चित्रा के होंठों पर नाच रही थी. तनिक और निकट आ वह बोली, "मैं ने आज नौकरी से इस्तीफा दे दिया है."

कुरसी से उठ खड़े हुए अनिल की कमीज के बटनों से खेलती, नीचे फर्श पर देखती हुई वह प्रतीक्षा करती रही कि अनिल कुछ बोले. अनिल मौन. हार कर चित्रा ने अपना मुंह ऊपर उठाया. अनिल की आंखें उस की आंखों में कुछ ढूंढ़ रही थीं और वह थी कि फुसफुसा रही थी, "अनिल, कल से मुझे मेरे पुराने कार्य पर नियुक्त..."

सहसा उस का गला रुंध गया. वह आगे कुछ कहती कि अनिल ने अपनी जेब से एक कागज निकाला और उस की ओर बढ़ा दिया. दाहिने हाथ से बटनों को छेड़ते हुए उस ने कागज ले लिया. अनिल कह रहा था, "यह रहा तुम्हारा नियुक्तिपत्र."

यह बंदूक बेचने की रसीद थी. पढ़ कर चित्रा ने अपना मुंह अनिल की छाती में छिपा लिया और सुबकने लगी. अनिल ने अपनी ठोढ़ी उस के बाएं कंधे पर टिका दी और दोनों हाथों से चित्रा को अपने अंक में समेट लिया.

न जाने वे कब तक ऐसे ही रहते, यदि कुछ गरमगरम टपक कर चित्रा की पीठ पर न पड़ता. अपने को छुड़ा चित्रा बोली, "छिः तुम रोते हो, अनिल."

दोनों हाथों से चित्रा के गालों को दबाते हुए अनिल ने उस का मुंह ऊपर उठा दिया. जिस झील में चित्रा की आंखें तैर रही थीं, उसी में डुबकी लगाता हुआ वह कह रहा था, "तुम बड़ी हंस रही हो, जो ये मोती ढुलकाए जा रही हो."

तुम न होते तो...

तेरी बांहों का जो न सहारा होता,
मेरी किश्ती से बहुत दूर किनारा होता.

मैं अपनी ही राहों में भटक जाता साथी,
तुम ने प्यार से जो न पुकारा होता.

तुम हो तो मुसकराने लगी हैं बहारें,
तुम न होते तो उजड़ा सा नजारा होता.

तुम्हीं से तो बंधी है, उम्मीद जीने की,
वरना दुनिया में अपना न गुजारा होता.

कैसे आता मैं तुम्हारे करीब इतना,
तुम्हारी आंखों का जो न इशारा होता.

—सुभाष नीरव

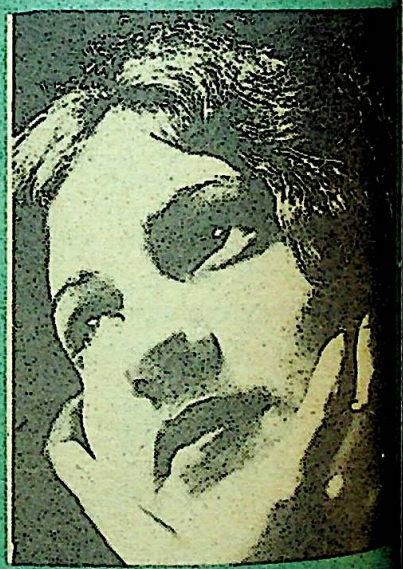

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

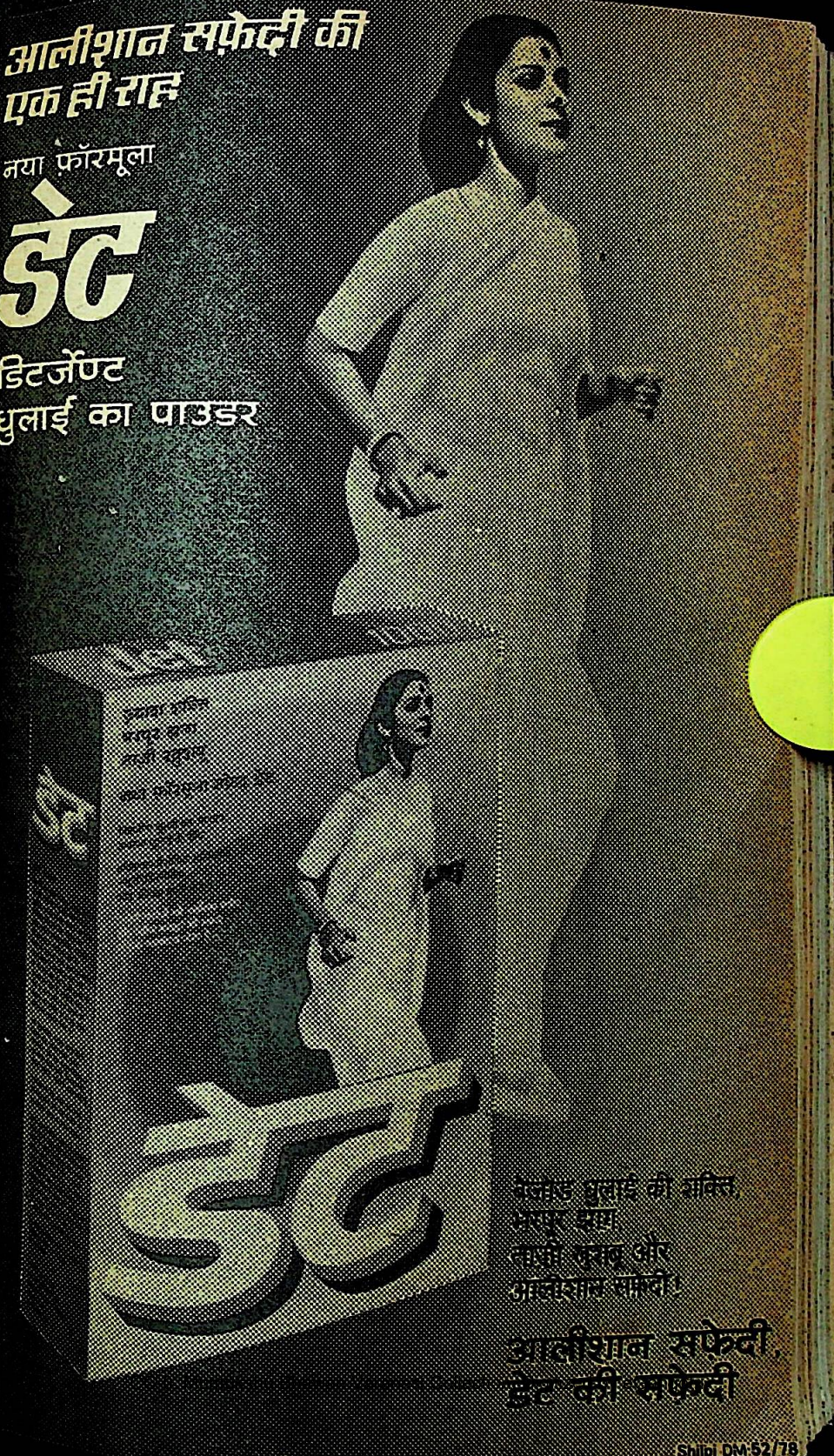

Shilpi DM:52/78

कमज़ोर रहने पर खाँसी-सर्दी आपका पीछा नहीं छोड़तीं

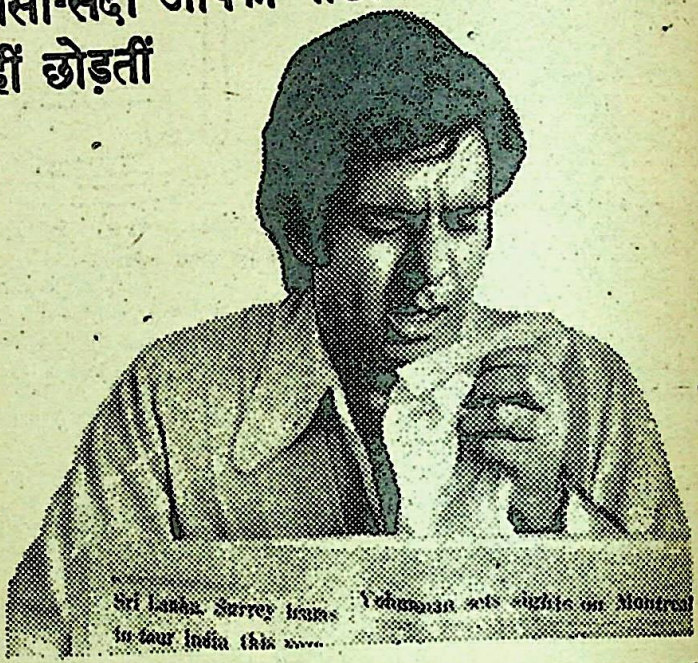

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड लाल लेबल प्रतिरोधक शक्ति पैदा करने के साथ-साथ आराम भी देता है.

* स्थायी आराम पहुँचाने के लिए इसमें क्रियोसोट और गायकॉल मिले हैं.
* इसके अलावा इसमें कई ऐसे अनोखे टॉनिक उपादान मिले हैं जो लंबे अरसे तक प्रतिरोधक शक्ति बनाए रखते हैं
* बार-बार होनेवाली खाँसी-सर्दी से आपको बचाता है.
* स्वास्थ्य और शक्ति बहाल करता है.

खाँसी-सर्दी का सबसे विश्वसनीय इलाज

9027A

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड लाल लेबल

वार्नर-हिन्दुस्तान का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शून्यकाल का शून्यालाप

इंदिरा गांधी के निष्कासन से सरकार को क्या लाभ मिला

तथा अन्य प्रश्न...

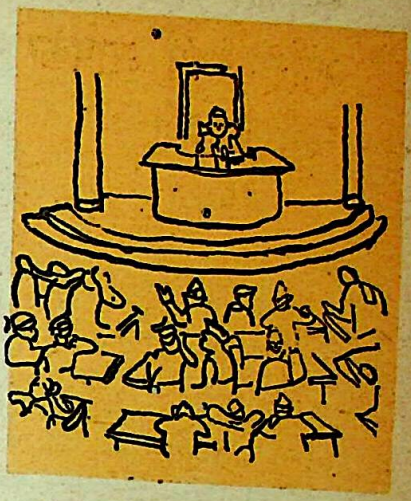

सदस्य : क्या श्रीमती इंदिरा गांधी को लोकसभा द्वारा दंडित किया जाना प्रतिशोधात्मक काररवाई नहीं है?

मंत्री : बिलकुल नहीं. न ही इस से कोई दूषित परंपरा शुरू होगी. यह अजीब इसलिए लग रहा है कि पहली बार एक राजनीतिबाज को उस के दोषों का दंड मिला है. इस से सभी राजनीतिबाज सावधान रहेंगे. अब तक होता यह रहा है कि राजनीतिबाज चाहे वह पक्ष का हो या विपक्ष का, दंड से बचता रहा है. अब यदि वर्तमान सत्ताधारी कोई गलती करेंगे तो भविष्य की सरकार बेझिझक उन्हें सजा दे सकेगी.

सदस्य : आप को पता है इंदिरा गांधी की सहानुभूति में जनता ने कितना जबरदस्त प्रदर्शन किया है? आज तक किसी नेता को जेल से छुड़ाने के लिए विमान का अपहरण हुआ है?

मंत्री : आप ठीक कहते हैं. तोड़फोड़, हत्याएं और आगजनी के मामलों में इंदिराजी के समर्थकों का कोई मुकाबला नहीं कर सकता, विशेषकर उन प्रदेशों में जहां इंदिरा कांग्रेस की सरकारें हैं. दुनिया में आज तक किसी राजनीतिक नेता को जेल से छुड़ाने या विधिवत निर्वाचित सरकार से इस्तीफा मांगने के लिए विमान का अपहरण कभी नहीं हुआ है.

आज तक जितने अपहरण हुए हैं वे या तो धन के लिए किए गए हैं या गुंडों द्वारा पेरिस, लंदन, जापान, इजरायल और पश्चिमी जरमनी की जलों में बंद अपने सरदारों या गुंडा साथियों को छुड़ाने के लिए हुए हैं. इस तरह के अपहरणों द्वारा कई अराजकतावादी जेलों से मुक्त भी हुए हैं. इंदिरा समर्थकों ने इंदिराजी को जेल से छुड़ाने के लिए विमान का अपहरण कर इंदिराजी को किस श्रेणी का नेता साबित किया है, यह आप समझ लें.

सदस्य : जनता पार्टी ने इंदिराजी को सजा देने से पहले अन्य पार्टियों से विचार-विमर्श क्यों नहीं किया? उन के सदन से

संसद में प्रतिदिन 12 बजे आधे घंटे के लिए ऐसा समय होता है जब बिना नोटिस दिए मंत्रियों से प्रश्न पूछे जा सकते हैं. इसे 'जीरो आवर' या 'शून्यकाल' कहा जाता है. इस स्तंभ में कुछ ऐसे प्रश्न प्रस्तुत हैं जो संसद में पूछे नहीं गए, पर पूछे जाने चाहिए थे. उन के संभावित उत्तर भी साथ दिए गए हैं, वे उत्तर जो दिए जाने चाहिए थे, पर दिए नहीं गए. —संपादक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निष्कासन से सरकार को क्या लाभ हुआ?

मंत्री : आप कैसे कहते हैं कि जनता पार्टी ने दूसरे दलों से विचारविमर्श नहीं किया? लोकसभा से निकाले जाने के मामले पर बहस से पहले ही कांग्रेस (इ) ने इंदिराजी को निकाले जाने का समर्थन कर दिया था.

कांग्रेस (इ) ने अपने संविधान में संशोधन कर लोकसभा और राज्यसभा के अपने सदस्यों के नेताओं के ऊपर चेयरमैन के पद का निर्माण किया था और वह इंदिरा गांधी को सौंपा था. उस संशोधन में यह व्यवस्था है कि चेयरमैन कोई गैर-सदस्य भी बन सकता है. बताइए, यह व्यवस्था किस के लिए थी? इंदिरा गांधी के होते उन की पार्टी में कोई चेयरमैन बन सकता है क्या? इस तरह कांग्रेस (इ) ने तो पहले ही उन के लोकसभा से निकाले जाने की कल्पना कर ली थी.

इस से सरकार को कुछ आर्थिक लाभ हुआ है. लोकसभा सदस्य बनने से पहले उन्हें अपने मकान का किराया 2800 रुपए महीना देना पड़ता था. सदस्य बनते ही यह किराया 300 रुपए के लगभग हो गया. अब फिर पुराना किराया उन्हें देना पड़ेगा.

सदस्य : अगर समस्तीपुर और फतेहपुर में कांग्रेस (इ) जीत जाती तो आप का क्या बनता?

मंत्री : हमारा तो कुछ नहीं बनता, पर आप की पार्टी का नाम बदल जाता. आजमगढ़, चिकमगलूर से आप की पार्टी की महिला सदस्याएं जीती थीं. समस्तीपुर से भी यदि श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा जीत जातीं तो लोग आप की पार्टी को कांग्रेस (इ) के बजाए कांग्रेस लुगाई कहने लग जाते.

सदस्य : विदेश मंत्री ने असमय ही पाकिस्तान को आक्रमण न करने की चेतावनी क्यों दी? क्या इस से हमारे सुधरते संबंधों पर बुरा असर नहीं पड़ेगा.

मंत्री : यह चेतावनी पाकिस्तान के हित में है. हमारे देश में व्यक्तिपूजा की बड़ी बीमारी है. जवाहरलाल नेहरू के मरने से कुछ समय पहले ही यह सवाल उठा दिया गया था कि 'नेहरू के बाद कौन?' ऐसे सवाल तभी उठते हैं जब यह समझा जाए कि अमुक एक व्यक्ति के सिवा देश में कोई योग्य नहीं है. पाकिस्तान ने भी यह समझ लिया था कि भारत में नेहरूजी के सिवा कोई लड़ाका नहीं है. इसलिए उन के मरने के कुछ ही समय बाद उस ने लड़ाई छेड़ दी थी. वह उस के लिए उलटी पड़ी. अब भी कुछ लोग 'देश की नेता इंदिरा गांधी' के नारे लगाते हैं. इंदिराजी सरकार में हैं नहीं, पाकिस्तान भारत को कमजोर समझ कर लड़ न बैठे, इसलिए विदेश मंत्री ने यह चेतावनी दी है.

सदस्य : ईरान में शाह और लोकतंत्रवादियों के बीच लड़ाई हो रही है. क्या शाह के भागने से वहां लोकतंत्र स्थापित हो जाएगा?

मंत्री : शाह के विरुद्ध लड़ाई में दो मुख्य तत्व हैं—मुल्लामौलवी और कम्युनिस्ट. शाह के हटने से लोकतंत्र आ जाएगा, इस में संदेह है क्योंकि उक्त दोनों तत्व लोकतंत्र के दुश्मन होते हैं.

सदस्य : अब फिर गोरक्षा के नाम पर विनोबाजी ने अनशन की धमकी दी है. क्या पहली धमकी बेकार गई थी?

मंत्री : जिस समय पहले धमकी दी थी उस समय देश में आपातकाल था. तत्कालीन सरकार को यह खतरा था कि आगामी चुनाव से पहले जनसंघ गोरक्षा के नाम पर कुछ बावेला जरूर मचाएगा और लाभ उठाएगा. इसलिए तत्कालीन सरकार का वह भय समाप्त करने के लिए विनोबाजी ने अनशन की धमकी दी थी. तब सरकार ने प्रचार किया और आंकड़े उपलब्ध करवाए कि देश में गोरक्षा हो चुकी है. विनोबाजी ने तब ऐसा मान लिया था, इसलिए अनशन की नौबत नहीं आई.

जहां तक उन की ताजा धमकी का सवाल है, लोगों का कहना है कि यह मोरारजी भाई को झुकाने के लिए है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विभिन्न रुचि, विभिन्न आहार लेकिन सबका मनभावन निलॉन्स अचार

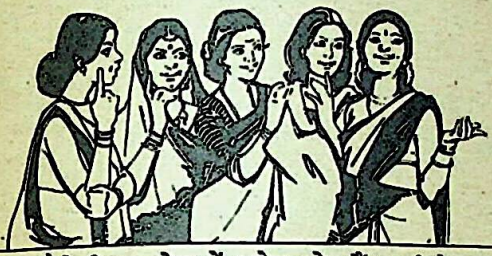

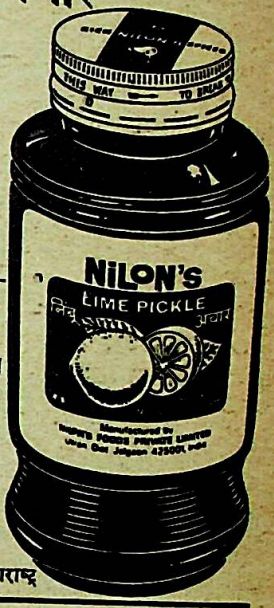

भारत जैसे विशाल देश में अनेक लोग हैं। सभी के आहार की पसंद अलग-अलग होते हुए भी सभी की एक ही चाहत है— निलॉन्स अचार! जैसी आपकी पसंद, वैसे ही सुरुचिपूर्ण अचार।

- जायकेदार—आम का अचार
- चटपटा, मज़ेदार—नींबू का अचार
- हल्का-तीखा—मिर्च का अचार
- स्वादपूर्ण—मिश्र अचार

निलॉन्स अचार
—सभी के मनभावन अचार

निलॉन्स फूडस्स प्राइवेट लिमिटेड, उतरान, जलगांव-४२५००१, महाराष्ट्र

3 BROTHERS

INTRODUCING

iraa

DE-LUXE 2-SPEED

GRINDER MIXER

With One Litre Jar

ONE YEAR GUARANTEE

Sethi Sales (P) LTD.

240—KAMLA MARKET ASAF ALI ROAD.

NEW DELHI PHONE : 261004

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

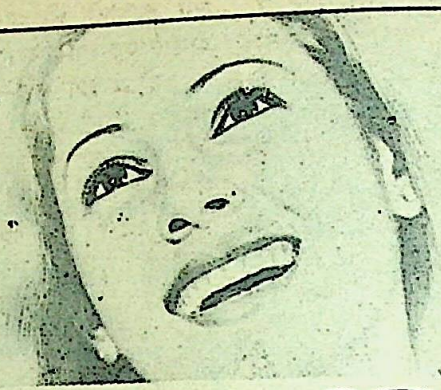

ताज़गी महसूस कीजिये सुबूत अपनी आँखों से देखिये

पानी से भरी तश्तरी में थोड़ा सा कोयले का चूरा छिड़किये। अब थोड़ा सा बिनाका टॉप पानी में मिला लीजिये और इस घोल की एक बूँद तश्तरी के बीचों-बीच टपकाइये। अब देखिये बिनाका टॉप कितनी तेज़ी से चारों तरफ फैलता है.... मैल को दूर करता है और पानी की सतह को बिल्कुल साफ़ कर देता है।

बिल्कुल इसी तरह बिनाका टॉप का विशेष फैलने वाला तत्व आपके मुँह के हर कोने में फैल कर दातों में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणुओं का नाश करता है और साँस की दुर्गन्ध को रोकता है। बिनाका टॉप आपके मुँह की पूरी रक्षा करते हुए उसे ताज़गी से भर देता है।

बिनाका टॉप
टूथपेस्ट

मुँह की पूरी रक्षा के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब इंदिराजी प्रधान मंत्री थीं, उन से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए जाती रहती थीं. मोरारजी भाई प्रधान मंत्री बनने के बाद एक बार भी उन से मिलने नहीं गए. उन से मिलने क्या जाते, जयप्रकाश नारायण ने इन्हें प्रधान मंत्री बनाया था, उन से भी एक बार भागते हुए से मिल कर आए हैं. गोरक्षा के लिए अनशन की धमकी का असर हुआ और मोरारजी भाई विनोबाजी से मिलने के लिए तैयार हो गए.

सदस्य : मोरारजी भाई का कहना है कि वह किसी विशेषज्ञ को देश का प्रधान मंत्री बनाने के पक्ष में नहीं हैं क्योंकि विशेषज्ञ किसी की सुनते नहीं हैं. आप का क्या कहना है?

मंत्री : हमारे देश में जो कोई प्रधान मंत्री बन जाए वह अपनेआप को विशेषज्ञ समझने लग जाता है. आज तक किसी भी प्रधान मंत्री ने दूसरों की बात बहुत कम सुनी है.

सदस्य : स्वर्णसिंह कांग्रेस के कुछ लोगों के दिलों में कभी इंदिराप्रेम उमड़ पड़ता है तो कभी वह ठंडा पड़ जाता है. यह क्या चक्कर है?

मंत्री : जैसे ही इंदिराजी चिकमगलूर में विजयी हुईं, सरदारजी ने समझ लिया कि वह अब दोचार दिन में प्रधानमंत्री बनने ही वाली हैं. इसलिए वह आत्मसमर्पण की तैयारियों में जुट गए. अब इंदिराजी से संसदसदस्य की कुरसी छिन गई तो उन का भय कुछ दूर हो गया है. इसलिए एक बार तो इंदिराप्रेम ठंडा पड़ ही गया है.

सदस्य : चौधरी चरणसिंह ने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र देने के अपने कारणों पर बयान छः महीने के बाद क्यों दिया?

मंत्री : बयान देने से क्या होता है? कुरसी जो छिन गई सो छिन गई, बयान देने से वापस तो मिलती नहीं. इतने दिन तक वह इंतजार करते रहे कि किसी तरह कुरसी से समझौता हो जाए, पर हुआ नहीं. उन के और मोरारजी भाई के बीच लड़ाई का मुद्दा यह था कि तुम मेरे बेटे पर लगे आरोपों को भूल जाओ, मैं तुम्हारे दामाद पर लगे आरोपों को भूल जाऊंगा.

दोनों अपनेअपने रिश्तेदारों पर लगे आरोप भूलने के लिए तैयार थे, दूसरे के नहीं. इसलिए समझौता न हो सका. यह गुण तो किसीकिसी राजनीतिज्ञ में ही होता है. जब तक बिगड़ी नहीं, कांग्रेसी नेता भूलते रहे कि जगजीवनराम ने दस साल तक आयकर नहीं चुकाया. बाबूजी भी भूलते रहे कि इंदिराजी तानाशाह हैं और गरीबों की दुश्मन हैं. भूले रहे इसलिए दोनों वर्षों तक कुरसीसुख भोगते रहे.

सदस्य : राष्ट्रपतिजी ने यह क्यों कहा कि वह राष्ट्रपति भवन में कैदी की तरह रह रहे हैं?

मंत्री : हो सकता है ऐसा कह कर उन्होंने देश की जेलों में रहने वाले कैदियों के प्रति सहानुभूति जताई हो. वैसे हमारे यहां के कुरसीधारी कुरसी को बड़े त्याग के साथ ग्रहण करते हैं.—गोविंद शर्मा

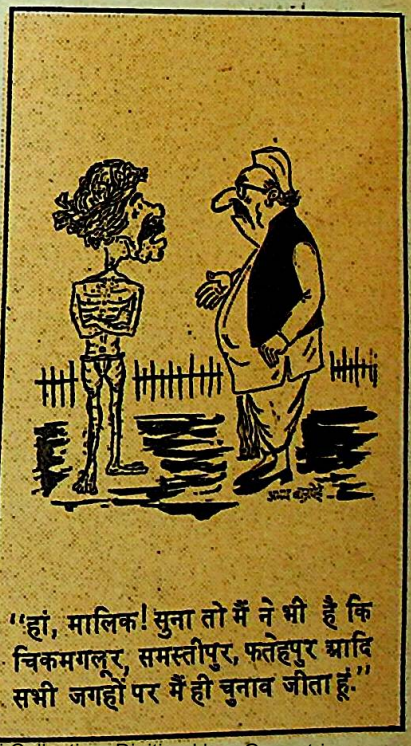

"हां, मालिक! सुना तो मैं ने भी है कि चिकमगलूर, समस्तीपुर, फतेहपुर आदि सभी जगहों पर मैं ही चुनाव जीता हूं."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

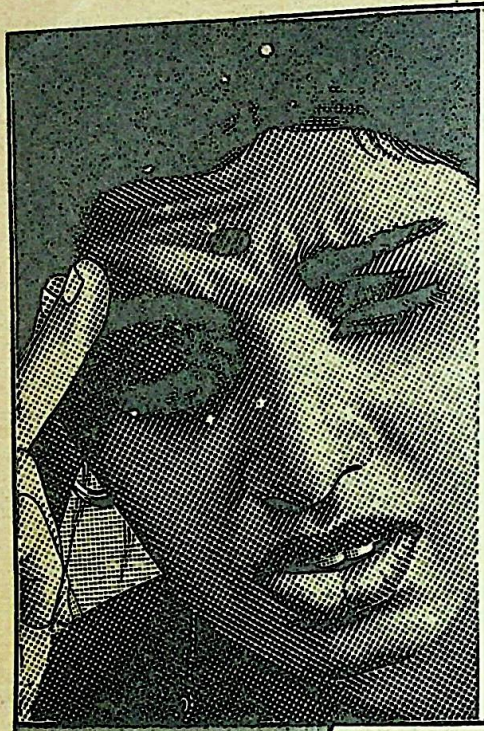

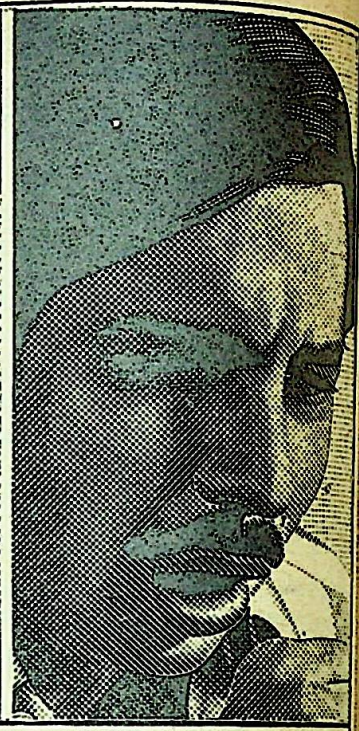

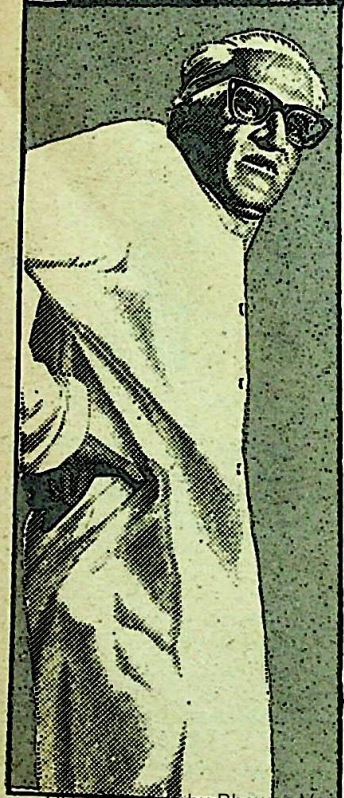

अमृतांजन

दर्द, सर्दी-ज़ुकाम और मोच के लिये एक बहुपयोगी घरेलू दवा

दर्द, सर्दी-ज़ुकाम और मोच की जगहों पर थोड़ा-सा अमृतांजन लगाकर मालिश कीजिये। कुछ ही मिनटों में आप इसके प्रभावकारी दस दवाओं का असर अनुभव करेंगे और आपको जल्द आराम भी पहुँचेगा।

अमृतांजन — जार, शिशियों और कम कीमतवाली टिन की डिबियों में मिलता है।

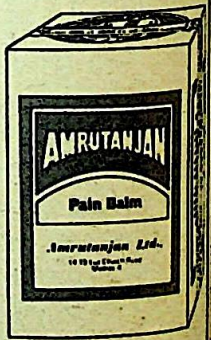

अमृतांजन ८० साल से अधिक समय से एक निर्भरयोग्य घरेलू दवा

अमृतांजन लिमिटेड

AM 1910

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारी बेड़ियां

हमारे पड़ोस में एक परिवार रहता था. तीज के दिन उन के घर पर कोई लड़की या औरत अन्नजल ग्रहण नहीं करती थी. उसी दिन उन की छोटी बच्ची गंभीर रूप से बीमार हो गई. डाक्टर ने उसे हस्पताल में भरती करने की सलाह दी. दवाई देने को भी कहा पर उस परिवार की बुजुर्ग स्त्रियों ने उसे कुछ भी देने के लिए मना कर दिया. उस लड़की की हालत निरंतर बिगड़ती जा रही थी. पर उन औरतों ने उसे कुछ भी खाने नहीं दिया. नतीजा यह हुआ कि उस अंधविश्वास ने उस मासूम बच्ची की जान ले ली. —राजेंद्र माणके

मैं अपने गाजियाबाद में रहने वाले एक मित्र के यहां गया. रात अधिक हो जाने के कारण वहीं ठहरना पड़ा. मेरे दोस्त के नाना भी, जो 70 या 75 वर्ष के होंगे, वहीं ठहरे हुए थे. उन की कमर में हमेशा दर्द रहता था. इसलिए वह कसी हुई चारपाई पर ही सोते थे. जब वह सोने लगे तो खाट कसी हुई नहीं थी. मेरे दोस्त व उस के घर वालों के बहुत समझाने पर भी वह नहीं माने और बोले, "रात को चारपाई कसने से लड़कियां होती हैं."

यह सुन कर मुझे समझ में नहीं आया कि रात में चारपाई कसने का लड़कियां होने से क्या संबंध है. वह उसी चारपाई पर सो गए. कमर की बीमारी ने अचानक भयंकर रूप धारण कर लिया और वह सदैव के लिए कमर के रोग से परेशान हो गए. पर अब भी वह मानने को तैयार नहीं हैं.

—संजय भटनागर

✦

मैं मौनी अमावस्या पर नानीजी के यहां गई थी. इस दिन गंगा स्नान के बाद ही मौन तोड़ते हैं. अतः गंगा स्नान की यहां बड़ी महत्ता है. परिवार के सदस्यों के साथ मुझे भी स्नान को जाना पड़ा.

पौ फटते ही सब घर से निकल पड़े. रास्ते में थोड़ी दूरी पर एक वृद्धा अकेली जा रही थी. थोड़ी देर बाद एक आदमी उस के साथ चलने लगा. कुछ दूर चलने के बाद वह वृद्धा के गले का हार खींच कर भागने लगा. मुझे कुछ संदेह हुआ. अतः हम ने शोर मचाना शुरू कर दिया शोर के कारण चोर भाग गया.

जब हम उस महिला के पास पहुंचे तो इशारे से उस ने बताया कि चोर उस के गले का हार ले गया है. हम ने सोचा कि बेचारी गूंगी है, इसलिए शोर भी नहीं मचा सकी. खैर गंगा के किनारे पहुंच हम सभी स्नान में व्यस्त हो गए. तभी किसी के रोने की तेज आवाज आई. पास जा कर देखा तो वही महिला, जिस का हार रास्ते में छिन गया था, रो रही थी. चूंकि मौनी अमावस्या थी अतः स्नान के बाद वह शोर मचा रही थी कि चोर उस का हार ले गया.

—नीलम प्रभा
(सर्वश्रेष्ठ) ●

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 15 रुपए की पुस्तकें तथा सर्वश्रेष्ठ अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें : स्तंभ विभाग, सरिता, नई दिल्ली-110055.

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यक्ष के प्रश्न

व्यंग्य • रोशनलाल सुरीरवाला

सोचतेसोचते युधिष्ठिर भी प्यास से प्रेरित हो कर जलाशय में उतरने लगे. इतने में वही वाणी सुनाई दी, "सावधान,तुम्हारे भाइयों—नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीम ने मेरी बात न मान कर पानी पिया था. इसी कारण तालाब के किनारे निष्प्राण पड़े हैं. तुम भी वही भूल न करना. यह तालाब मेरे अधीन है. मेरे प्रश्नों के उत्तर दो और फिर तालाब में उतर कर प्यास बुझाओ."

युधिष्ठिर ने ताड़ लिया कि कोई यक्ष बोल रहा है. उन्होंने बात मान ली और बोले, "आप प्रश्न कर सकते हैं."

यक्ष ने प्रश्न किया, "सूर्य किस की आज्ञा से प्रतिदिन उगता है?"

"मेरी तो आंख ही नौ बजे से पहले नहीं खुलती. मेरे सामने उगे तो बताऊं."

"मनुष्य का सदा साथ कौन देता है?"

"जूता या रिश्वत."

"ऐसा कौन सा शास्त्र है जिस के अध्ययन कर मनुष्य बुद्धिमान बनता है?"

"ऐसा कोई शास्त्र नहीं है. धूर्त लोगों की संगति से ही मनुष्य बुद्धिमान बनता है."

"भूमि से भारी चीज क्या है?"

"मुकदमे की मिसिल. पीढ़ियां बीत जाने पर भी इधर से उधर नहीं होती."

"आकाश से ऊंचा कौन है?"

"आकाश सेल्स टैक्स आफिस का एक बदमाश क्लर्क है. उस से तो सभी ऊंचे हैं."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"युधिष्ठिर, सभ्य भाषा में शिष्टता के साथ उत्तर दो. बताओ, भारत में सब से महंगा फल कौन सा है?"

"यक्षराज, मध्यमा पास किए मुझे बीसियों वर्ष बीत गए. फिर भी कोशिश करता हूं. भारत में चुनाव फल सब से महंगा है. इस में देश की विपुल धनराशि तो व्यय होती ही है, जाति, संप्रदाय, धर्म और दलों के आधार पर अपहरण, दंगे और हत्याएं भी हो जाती हैं. लंबे वैर के बीज भी इसी समय पड़ जाते हैं."

"आज का सब से बड़ा झूठ क्या है?"

"यह कहना कि आपातकाल में देश ने तरक्की की. यदि ऐसा होता तो कांग्रेस इस बुरी तरह न हारती."

"हर हालत में कौन खुश रहता है?"

"चमचा. चूल्हे पर जो भी पतीला चढ़ा होता है, उसी में पैठ जाता है और जो भी पतीले में होता है उसी को परोसने

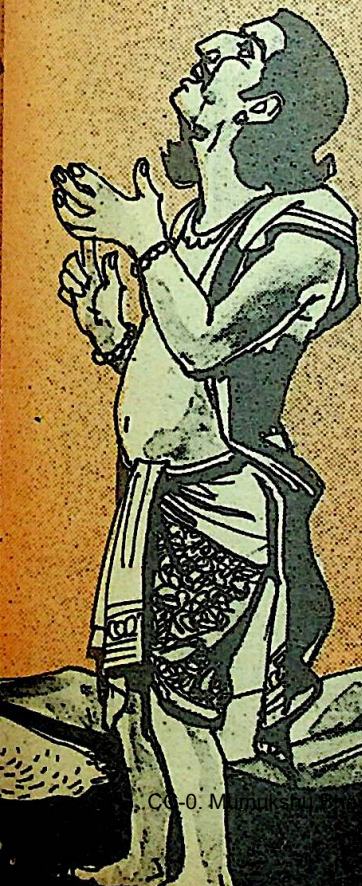

युधिष्ठिर ने जिस फुर्ती और चतुराई से प्रश्नों के उत्तर दिए, उसे देख कर यक्ष भी उस का लोहा मान गए...

लगता है. वह अपने अस्तित्व के लिए अपने व्यक्तित्व को मिटा देता है."

"जनतंत्र में सब से बड़े आश्चर्य की बात क्या है?"

"कितने ही मंत्रियों को पराजित अथवा अपदस्थ देख कर भी शेष मंत्री कुरसी पर हमेशा बने रहना चाहते हैं, यही महान आश्चर्य की बात है."

"हार गया तब सब को भाया,
जीत गया कुछ काम न आया.
तीन पैर से भरे छलांग,
अचरच यही ऊंट पै टांग.
बताओ कौन है?"

"यक्षराज, नारायण भजिए. मैं इस प्रश्न को चौइस पर छोड़ता हूं."

"वाह! किस चतुराई से नाम ले गए. बताओ, दुख क्या है?"

"दुख वह चीज है जो दूसरों के सुखी होने पर स्थित है."

"किस चीज को गंवा कर मनुष्य धनी बनता है?"

"ईमान को गंवा कर."

"मूर्ख कौन है?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारी शस्त्र

स्टेप लिपिस्टिक और नेल एनामेल के
अनोखे लुभावने रंगों की विविध श्रेणी के
आगे आप भी हथियार डाल देंगी
लुभावने रंगों की विस्तृत श्रेणी.
प्लेन, फ्रोस्टेड, पीयरलाइज्ड
आइये और स्टेप से अपने चेहरे पर
निखार लाइये.

Step®
नेल एनामल
और लिपस्टिक

Step® कॉस्मेटिक्स
थाणे (बम्बई) 400 601.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

SWASTIKA SC 925 HIN

"जो अपने को बुद्धिमान समझे."

"सुखी कौन है?"

"जिसे उधार न चुकाना पड़े."

"क्या छोटे में बड़ा समा सकता है?"

"जी हां, जैसे आत्मा में महात्मा और राष्ट्र में महाराष्ट्र."

"क्या एक में अनेक समा सकते हैं?"

"क्यों नहीं, जैसे एक नेता में कई अभिनेता और एक राष्ट्र में सौराष्ट्र."

"शत प्रतिशत निष्पक्ष कौन है?"

"जुकाम. पहले यह स्थान सूर्य और चंद्र का था."

जानवरों के डाक्टर

एक बार एक पशुचिकित्सक ने राजनीति में प्रवेश किया. एक बहस में उन का प्रतिपक्षी उन की बेतुकी दलीलों से तिलमिला कर बकने लगा, "क्या यह सच है कि तुम असल में जानवरों के डाक्टर हो?"

"बिलकुल सच है, लेकिन आप बीमार हैं क्या?" पशुचिकित्सक ने पूछा.

"क्या चीज खो जाने से दुख होता है?"

"ग्राहक खो जाने से दुख होता है. पहले चरित्र खो जाने से दुख होता था."

"गुरु का गुरु कौन है?"

"शिष्य. वही आज अपने गुरु को पाठ पढ़ा रहा है."

"दशानन के ऊपर गधे का सिर क्यों है?"

"यह बताने के लिए कि प्रकांड विद्वान भी किस सीमा तक मूर्ख हो सकता है."

"क्या समय से पहले भी मनुष्य स्वर्ग पहुंचता है?"

"जी हां, वाया सरकारी हस्पताल."

दो क्षण यक्षवाणी ठहरी, मानो विश्राम करना चाहती हो. युधिष्ठिर भी आराम की मुद्रा में आ गए. सहसा यक्ष ने प्रश्न किया, "सब से बढ़चढ़ कर कौन बोलता है?"

युधिष्ठिर सावधान हो गए. फिर एक क्षण रुक कर बोले, "नया पैसा."

"वह क्या चीज है जो बेचने पर भी ग्राहक को नहीं दी जाती."?

"लड़का यानी वर."

"रोगी को चिंता सब से अधिक किस को होती है?"

"कर्ज देने वाले को."

"पुस्तकालय किस काम आते हैं?"

"किताबें रखने और बरात ठहराने के लिए."

"शूकरभोज्य को भी मनुष्य कब नहीं छोड़ता?"

"जब अंगूर के बीच रखा होता है."

"युधिष्ठिर, निश्चित रूप से बताओ कि वर्तमान अधिकारियों के रहते क्या हाकी में भारत कभी जीत सकता है?"

"हां, अगर विपक्षी टीम मुकाबले को न उतरे, मैदान कठोर न हो और तकदीर साथ दे तो शायद एकाध गोल से भारत जीत सकता है."

इसी प्रकार यक्ष ने अनेक प्रश्न किए और युधिष्ठिर ने उन सब के ठीकठीक उत्तर दे दिए.

अंत में यक्ष बोला, "राजन, मैं तुम्हारे भाइयों में से किसी एक को जिला सकता हूं. तुम जिस को चाहो, वही जीवित हो जाएगा."

युधिष्ठिर ने पल भर सोचा. फिर खुशी से उछल पड़े, "मैं किसी को जिलाना नहीं चाहता. द्रौपदी अब केवल मेरी पत्नी रहेगी."

उन्होंने सिनेमा के शौकीन रिकशे वाले की तर्ज पर एक लंबी सीटी मारी और 'द्रौपदी...द्रौपदी' पुकारते हुए पलट कर भागे. किंतु तभी मृत अर्जुन ने पड़ेपड़े टंगड़ी मार दी. युधिष्ठिर धड़ाम से औंधे मुंह गिर पड़े और उन के सभी दांत टूट गए. ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकी वसन्त की सैर की जगहें कुछ ही घन्टों की दूरी पर हैं

भारत का हर कोना आपका मन अथाह खुशियों से भर देगा। कुछ ही घन्टों में आप मनपसन्द जगह जा सकते हैं। विमान से।

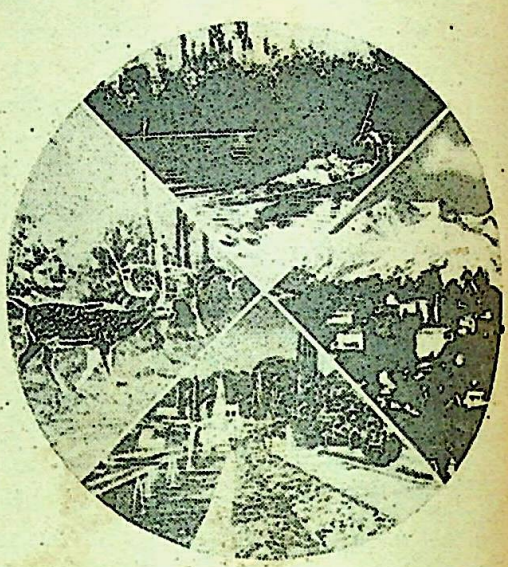

उत्तर

कश्मीर, मनोरम फूलों से भरी घाटी—पृथ्वी का स्वर्ग। मछली पकड़िए, पैदल घूमिए, कश्मीर की चित्ताकर्षक झीलों या झेलम में नाव चलाइए, पर्वतारोहण कीजिए... सभी सुविधाएं हैं... विमान अड्डा, श्रीनगर।

मथुरा, भगवान कृष्ण की भूमि। यहाँ होली की रंगरेलियाँ मनाइये। समीपस्थ हवाई अड्डा, दिल्ली।

अमृतसर, फसल कटाई और वैसाखी के अवसर पर आयोजित जोरदार भाँगड़ा नृत्य देखिए। हवाई अड्डा शेष भारत से जुड़ा है।

दक्षिण

कोडाइकनाल, पर्वतों के मध्य, जहाँ जंगली फूलों का गलीचा बिछा है। वातावरण में शहद की सुगंध। समीपस्थ हवाई अड्डा, मदुरै।

तिरुचिरापल्ली, 800 मीटर ऊंची चट्टान पर स्थित शिला मन्दिर के लिए प्रसिद्ध। समीप में कावेरी के मध्य में श्रीरंगम का मनोरम मन्दिर।

वृन्दावन उद्यान, मनोहारी फव्वारों और रंगीन रोशनी से जगमगाते सीढ़ीनुमा उद्यान। समीपस्थ हवाई अड्डा, बंगलोर।

पूर्व

दार्जिलिंग, कंचनजुंगा की विस्मयकारी हिमाच्छादित चोटी के नयनाभिराम दृश्य के लिए। विश्व का सबसे अधिक ऊँचा रेस कोर्स। समीपस्थ हवाई अड्डा, बागडोगरा।

पटना, प्राचीन मगध साम्राज्य की राजधानी और तेजी से विकसित हो रही एक आधुनिक नगरी। शेष भारत से जुड़ा हवाई अड्डा।

काजीरंगा, वन्य जन्तु अभयारण्य जहां आप हाथी पर चढ़ कर गेंडों की तस्वीरें ले सकते हैं। समीपस्थ हवाई अड्डा, जोरहाट।

मानस, प्राकृतिक परिवेश में वन्य जन्तुओं की सबसे शानदार और अधिक जातियों का आश्चर्यजनक संग्रह। समीपस्थ हवाई अड्डा, गुवाहाटी।

पश्चिम

कान्हा, राष्ट्रीय उद्यान में शेरों, हिरनों, सांबरों और बाइसनों (गवलों) को स्वतंत्रता से विचरते देखिए। समीपस्थ हवाई अड्डा, रायपुर।

कर्नाला, पक्षियों का अभयारण्य पक्षी जीवन को निकट से देखने के लिये पक्षी प्रेमियों का स्वर्ग। समीपस्थ हवाई अड्डा, बम्बई।

द्वारिका, भगवान कृष्ण की प्राचीन नगरी, जो आज एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थान है। समीपस्थ हवाई अड्डा, जामनगर।

कहीं से भी बैठिए कुछ ही देर की उड़ान।

इंडियन एयरलाइन्स अपने देश एवं आधुनिक बेड़े और देश व्यापी सम्पर्कों की सहायता से आपको हर जगह ले जाती है। आपके ट्रेवल एजेन्ट आवश्यक व्यवस्था करने में आपकी सहायता करेंगे।

जहां चाहिए इंडियन एयरलाइन्स

विमानों से जाइये

इंडियन एयरलाइन्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • दिलीप गुप्ते

फिल्म संगीत 1978

संगीत की दृष्टि से इस वर्ष ने क्या सिर्फ निराश ही किया है या कुछ नई उपलब्धियां भी हुईं?

सन 1978 के फिल्मी संगीत ने उस से पिछले साल की असफलता को धोने की कोशिश की है. पर जहां संगीतकारों ने काम किया, वहीं गीतकार मोचें से हट गए. आवाजों में दो पुरानी आवाजें फिर सुनाई दीं जिन में एक तो काफी पुरानी थी. एकदो नई आवाजें भी आईं. लक्ष्मीकांत प्यारेलाल दो सौ फिल्मों पर पहुंच गए. कल्याणजी आनंदजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राहुलदेव बर्मन पौने दो सौ के आसपास रहे. बाजार पूरी तरह से युवा संगीतकारों के हाथ में आ गया.

लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने 1978 में भी सब से ज्यादा फिल्मों में संगीत दिया. कुल चौदह फिल्मों में हर तरह का संगीत दिया—अच्छा, साधारण और बुरा. वर्ष की शुरुआत ही एक बुरी फिल्म 'आशिक हूं बहारों का' से हुई. संगीत की दृष्टि से भी यह फिल्म घटिया साबित हुई.

'दिल और दीवार' उन की 200वीं फिल्म थी लेकिन इस फिल्म में उन्होंने कतई मेहनत नहीं की. हां, 'मैं तुलसी तेरे

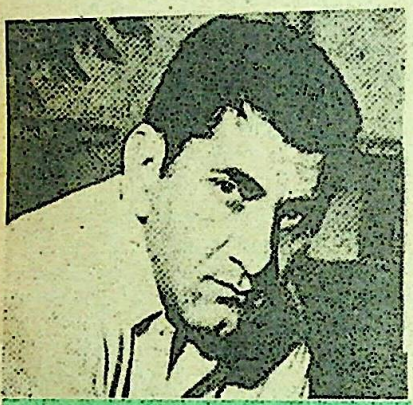

आनंद बख्शी ने 'सत्यम शिवम सुंदरम' की पृष्ठभूमि का ध्यान न रखते हुए नायिका से शुद्ध उर्दू गीत गवाया है.

आंगन की' में जरूर कुछ गंभीर धुनें दीं, लेकिन खिड़की वाला गीत चालू धुनों में बांधा. 'पलकों की छांव में' में गीतों के मुकाबले संगीत हलका रहा. हलकेफुलके गीतों की आदत जो पड़ गई है. 'अपनापन' और 'नाच उठे संसार' की तर्ज बेशक मधुर थीं. 'अपनापन' का एक हलका गीत तो सिर्फ तर्ज के कारण ही लोकप्रिय हुआ.

और अब चर्चा करें उस फिल्म की जिस के बारे में कहा जा रहा है कि उस के एक लाख रिकार्ड प्रदर्शन से पहले ही बिक गए. कहां गए वे रिकार्ड? 'सत्यम शिवम सुंदरम' का संगीत धूम मचा देने वाला है ही नहीं. दरअसल संगीत की दृष्टि से यह राज कपूर की कमजोर फिल्मों ('कल आज और कल', 'धरमकरम') में से है. जहां फिल्म के शीर्षक गीत को गंभीर बनाने की कोशिश की है वहीं अपने सीमित ज्ञान के सहारे 'सुनी जो उन के आने की आहट' में अपनी असली स्थिति में आ गए. जैसे पूरी फिल्म में तर्क नहीं है वैसे ही संगीत में भी तारतम्य नहीं है.

कभी भजन है तो कभी नात. पूरी फिल्म में नायिका अपने जरा से दाग को ढकने के लिए अपना बाकी सारा शरीर निर्वस्त्र कर देती है. उसी तरह जरा सी

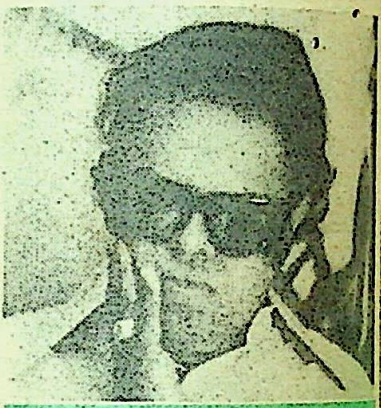

रवींद्र जैन ने सिर्फ ताराचंद बड़जात्या की फिल्मों में ही अच्छी धुनें दी हैं. बाकी में तो टाला ही है.

पंक्तियों के लिए ढेर सारे साजिंदे इकट्ठा कर लिए गए हैं.

एक ही गीत तीन बार बजाया गया है. 'भोर भए पनघट पे' गीत जितनी बेहयाई से फिल्माया गया है उतनी ही घटिया उस की धुन है. फिल्म के सब से लोकप्रिय गीत 'यशोमति मैया से' में संगीतकार का कोई योगदान नहीं है. इस फिल्म में निर्देशक ने 'आवारा' के स्वप्न दृश्यों की टक्कर लेनी चाही और संगीतकारों ने भी, लेकिन दोनों ही बुरी तरह असफल हुए. दोनों ने ही अपने हाथों से अपना नाम मिटाना चाहा है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्याणजी आनंदजी (13 फिल्में) जाने क्यों यह माने हुए हैं कि सांप्रदायिक एकता के लिए गीत के बीच में अजान की आवाज ठूंसना जरूरी है. 'गंगा की सौगंध' फिल्म का शीर्षक गीत वैसे भी बेदम है. उस में फिर अजान की भयानक आवाज. 'हिमालय से ऊंचा' में भी दिल को दहला देने वाली ऐसी आवाज इस्तेमाल की और असफल हुए. उसी की हूबहू नकल यहां भी की है.

'तृष्णा' में विषयवस्तु को पकड़ने की कोशिश की तो बेमतलब ठूंसी गई कव्वाली के कारण ढेर हो गए. 'फंदेबाज' (इसे कम-

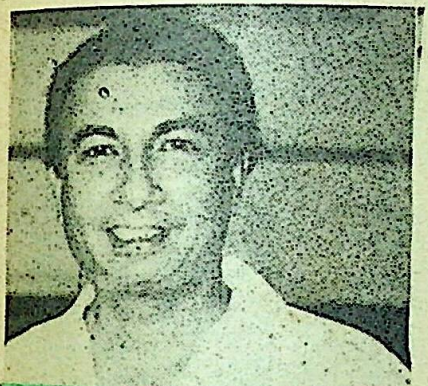

साहिर ने 'त्रिशूल' में 'गापुचीगापुची... लिख कर अपनेआप को किशोरों का गीतकार सिद्ध करने की कोशिश की.

अकल लोगों ने फांदेबाज नाम दिया है) के एक गीत की शुरुआत एकदम नौशाद शैली में की है. 'डान' का संगीत कमजोर कहा जाएगा, भले ही इस के दोनों गीत काफी बजे हों. इस का श्रेय शायद गायक और गीतकार को जाता है. 'अनजाने में' का संगीत ताजा था. 'नसबंदी' में हास्यानुकृतियां (पैरोडी) थीं लेकिन इस क्षेत्र में महारत हासिल होने के बावजूद कुछ नहीं कर पाए. बाकी फिल्में सिर्फ नाम की थीं.

राहुलदेव बर्मन (आठ फिल्में) ने संतोषजनक कार्य किया. 'चला मुरारी हीरो बनने' का एक गीत साफसाफ नैयर शैली में बांधा गया. जाने क्यों? जहां 'आजाद' ने निराश किया वहीं 'हीरालाल पन्नालाल' में मनपसंद धुनें दीं. लेकिन इस का मतलब उच्च कोटि की धुनें हरगिज नहीं है.

हेमंतकुमार के गाए गीत की धुन भी शायद उन्होंने ही बनाई है. 'किताब' के गीत सभी को भाए. एक बहुत पुरानी आवाज राजकुमारी को ले कर संगीतकार ने साहस किया है. बर्मन गुलजार की धुनों गीतों का ढर्रा ही अलग है. 'घर' में भी 'आंधी' की प्रतिध्वनि सुनाई देती है.

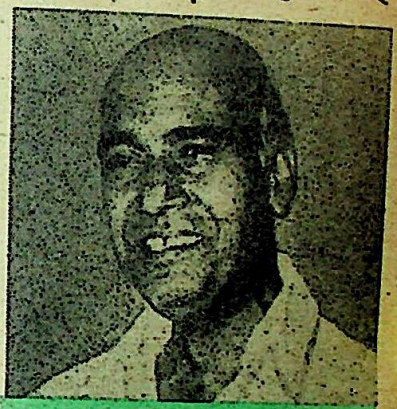

खय्याम को इस वर्ष 'त्रिशूल' ही मिली लेकिन कोई खास सफलता नहीं मिली.

'कसमे वादे' में यदि गीत कम होते तो संगीत का महत्त्व बढ़ जाता. 'आती रहेंगी बहारें' गीत सिनेमाघर के बाहर भी गुनगुनाया गया.

वर्ष के अंत तक महत्त्वाकांक्षी फिल्म 'शालीमार' (स्टीरियोफोनिक ध्वनि) के गीत बाजार में आ गए. न तो संगीत में ही कोई दम मालूम होता है और न ही ध्वनि संयोजन में. 'हम बेवफा हरगिज न थे' गीत के बोल भले ही दुख के हों लेकिन तर्ज किसी हास्यगीत की मालूम होती है. क्या यह कोई नया प्रयोग है? ऊषा अय्यर के गाए गीत से कई गुना अधिक उत्तेजक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीत तो 'यादों की बारात' और 'हम किसी से कम नहीं' में दिए हैं.

रवींद्र जैन ने सिर्फ राजश्री ('अंखियों के झरोखे से,' 'पहेली') के लिए ही अच्छी धुनें दीं. शेष में टाला है. 'सफेद हाथी' में काफी गुंजाइश थी, लेकिन 'शिकारी राजा आया रे' जैसा घटिया गीत दिया. 'पतिपत्नी और वो' में तो अति ही हो गई. दरअसल हम हास्य और फूहड़ता में फर्क नहीं कर पाते हैं.

राजेश रोशन ने अपनी पिछली असफलताओं से कुछ सीख लिया है. बस, एक कमी अखरती है और वह है

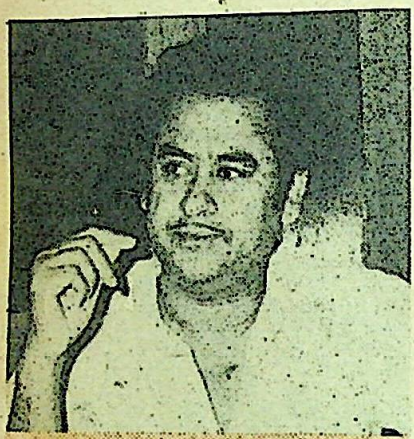

किशोरकुमार ने कुछ फिल्मों को छोड़ कर बाकी में शोर मचाया है.

गद्यनुमा तर्जें. या तो शब्द लंबे हैं या धुनें छोटी हैं. कहां से शुरू होंगी, कहां खत्म होंगी, कैसे होंगी. इस का अंदाज नहीं. चाहे 'चरणदास' हो या 'खट्टा-मीठा' या 'एक ही रास्ता' या 'दूसरा आदमी.' राजेश ने 'एक बाप छः बेटे' में जहां फिल्म के स्तर को देखते हुए संगीत दिया, वहीं 'जनता हवलदार' में एक नए गायक अनवर को रफी का स्थानापन्न बना कर प्रस्तुत किया.

'देस परदेस' में आधे गीतों में अपनी गद्यनुमा तर्जों की कमजोरी बरकरार रखी है. 'नजराना भेजा है किसी ने प्यार का' इसे गीत कहा गया है, इसलिए विवाद करना ठीक नहीं वरना संगीत में तर्ज नाम की कोई चीज नहीं है.

शीर्षक में पार्श्व संगीत और आर्केस्ट्रा पर काफी ध्यान दिया गया. 'नजर लगे न, साथियो' की पंजाबी धुन में अपना ही रंग है, अपनी ही मस्ती है. 'आप कहें और हम न आएं' उन के पिता रोशन की याद दिलाता है. स्वरों का उतारचढ़ाव, ठहराव सभी रोशन से प्रभावित दीखे. 'जैसा देस वैसा भेस' भी अच्छा बन पड़ा.

भप्पी लाहिड़ी ने 'कालिज गर्ल' में

इस वर्ष मुहम्मद रफी को भी पर्याप्त सफलता मिली.

अच्छी धुनें दीं, लेकिन सचिन जैसे ताजादम अभिनेता के लिए किशोरकुमार की आवाज जंचती नहीं. यहां बरबस रवींद्र जैन की याद आ जाती है जो नए गायकों को मौका देता है. 'खून की पुकार' में उस ने कल्याणजी आनंदजी बनने की कोशिश की. 'हैवान' में एक अच्छा मौका हाथ से गंवा दिया.

हेमंत भोंसले ने 'जादूटोना' में कुछ मेहनत जरूर की लेकिन 'दामाद' में अपनी पहली फिल्म 'टैक्सीटैक्सी' की धुनें दोहराईं. पता नहीं यह नौजवान संगीतकार सारी सुविधाओं के बावजूद सहित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चमक क्यों नहीं पा रहा है.

सोनिक ओमी ('अपना खून,' 'भूख'), श्यामजी घनश्यामजी ('नियाज और नसीब'), सी. अर्जुन ('नवाब साहब') और शंकर जयकिशन ('दुनियादारी') ने क्या किया? नए संगीतकार बाबूजी ('परमात्मा') नया कुछ भी नहीं दे पाए.

हां, एक गुमनाम संगीतकार का उल्लेख करना जरूरी है. इस ने सिर्फ एक ही फिल्म दी और उस में सिर्फ एक ही लोकप्रिय गीत दिया. 'कितने दूर कितने पास' में संगीतकार चांद परदेसी ने हेमलता से 'मेरे महबूब शायद आज नाराज हैं मुझ से'

हेमंतकुमार की आवाज अब भी मधुर है.

गीत एकदम लता शैली में गवाया है. लेकिन यह बहुत ही दुख की बात है कि इस का एकएक स्वर पुरानी फिल्म ('बावरे-नैन,' संगीतकार रोशन) के गीत 'तेरी दुनिया में दिल लगता नहीं' की नकल है.

नकल को असल से अधिक लोकप्रियता मिली. लेकिन यह प्रवृत्ति फिल्म संगीत के लिए घातक है. अभी तक तो संगीतकार नकल करने में थोड़ी सी अकल भी लगाते थे, लेकिन इस गीत की लोकप्रियता संगीतकारों को चोरी करने और नकल पर उकसाएगी.

आनंद बख्शी चला तो खूब मगर उस की कलई खुलती जा रही है. वह विशुद्ध व्यापारी है. सामाजिक दायित्व या नैतिकता से उसे कुछ लेनादेना नहीं है. वह फिल्मी गीतों में साहित्य को अछूत मानता है. उसे मालूम नहीं कि आज से दस साल बाद भी श्रोता शैलेंद्र, शकील और नीरज को याद करेंगे, उसे नहीं.

'सत्यम शिवम सुंदरम' में पृष्ठभूमि देखते हुए जहां पंडित नरेंद्र शर्मा ने नायिका से संस्कृत के श्लोक बुलवाए हैं, वहीं आनंद बख्शी ने अपने बहुत ही सीमित ज्ञान के सहारे उस से चालू किस्म का गीत गवाया

नितिन मुकेश इस वर्ष एकदो फिल्मों में सफल भी रहे.

है : 'सुनी जो उन के आने की आहट, गरीबखाना सजाया हम ने.'

फिल्म में नायिका शिवलिंग से लिपटलिपट कर गाती है. वहीं उस से दूर होते ही कृष्ण के शृंगारिक गीत गाने लगती है. शृंगार रस के लिए कृष्ण से बढ़ कर सुपात्र कौन होगा? उस के नाम पर अश्लीलता भी धार्मिक भावना बन जाती है. वैसे कोई गीतकार 'चोली' शब्द का इस्तेमाल करे तो वह अश्लील होगा लेकिन जहां कृष्ण किसी की चोली खोलेगा तो वह रहस्यवाद हो जाएगा—सांसारिक बंधन तोड़ने के संदर्भ में.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस गीतकार को रामायण का कितना ज्ञान है यह 'आहुति' का गीत बताएगा. चूंकि इस में तीन नायक थे इसलिए एक गीत लिखा, 'भरत का भाई लक्ष्मण, लक्ष्मण का भाई राम.' यदि दो ही नायक होते तो गीतकार या तो भरत को गोल कर जाता या लक्ष्मण को. 'मैं तुलसी तेरे आंगन की' में 'ये खिड़की,' लिख कर आखिर अपना स्तर बता ही दिया. एक सुसंस्कृत समझे जाने वाले परिवार का लड़का एक लोफर जैसा गीत गाए यह कल्पना सिर्फ आनंद बख्शी ही कर सकता है.

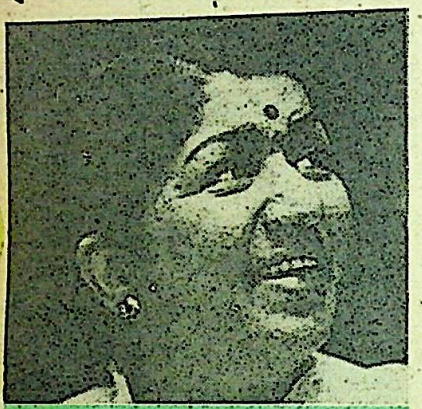

लता मंगेशकर भी काफी सफल रहीं. 'सत्यम शिवम सुंदरम' में 'यशोमति मैया से...' गीत उन्होंने बखूबी गाया.

'शालीमार' के एक गीत का मुखड़ा 'आईना वही रहता है,' एक पुरानी फिल्म 'प्यार किया तो डरना क्या' (गीतकार शकील बदायूंनी) के एक गीत 'शीशा तो वही रहता है मगर तसवीर बदलती रहती है.' की नकल मात्र है.

मजरूह सुलतानपुरी में अभी भी दमखम है. 'नाच उठे संसार' के तीनों लोकप्रिय गीत काफी सुंदर लिखे गए हैं. 'जनता हवलदार,' 'इनकार,' 'एक बाप छः बेटे' में संगीतकारों का खूब साथ दिया.

राजेंद्र कृष्ण भी जवान हैं. 'फूल खिले हैं गुलशन गुलशन' के गीतों की लोकप्रियता में इस गीतकार का ही बड़ा हिस्सा है. 'मन्नू भाई मोटर चली,' बच्चों ने काफी पसंद किया. दरअसल आनंद बख्शी की महामारी के सामने सिर्फ ये दो गीतकार ही सीना ताने खड़े हैं.

साहिर ने 'त्रिशूल' में 'गापुची गापुची गम गम' लिख कर अपनेआप को किशोरों का गीतकार जताने की कोशिश की है. लेकिन इसी गीत में 'साथ रहें जनमजनम' लिख कर अपनी उम्र जाहिर कर दी. 'मुहब्बत बड़ी बेकार चीज है' में पुराना साहिर झलक मारता है. 'जा री बहना जा' अच्छा गीत है लेकिन फिल्म में वह

आशा भोंसले 'अनजाने में' व 'कसमे वादे' आदि फिल्मों में युवा गीत गाने में अधिक सफल रहीं.

रखा गया.

गुलजार के गीतों की कीमत आंकने वाले संगीतकार बहुत कम हैं. इसी लिए 'पलकों की छांव में' का 'डाकिया डाक लाया' नया प्रयोग होने के बावजूद हलके संगीत के कारण चोट खा गया. 'किताब' का 'मास्टरजी की आ गई चिट्ठी' अनुकूल होने के बावजूद गेय है, अर्थपूर्ण है.

अनजान ने 'डान' में काफी सफलता पाई, 'खाई के पान बनारस वाला...' और 'ई है बंबई नगरिया...' ने भैयन लोगों की मानसिकता का परिचय दिया है. पंजाबी लोकगीतों के बाद हमारे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीतकारों को सिर्फ पुरबैया लोकगीत ही आते हैं. वैसे अनजान ने 'गोदान' में रविशंकर के लिए उच्च कोटि के लोकगीत लिखे हैं. जैसा संगीतकार वैसा गीत. 'गंगा की सौगंध' में उखड़ेउखड़े रहे. 'मुकद्दर' और 'अतिथि' में कोई कमाल नहीं दिखाया.

योगेश ने 'खट्टा मीठा' में मनोरंजन जरूर किया लेकिन 'मम्मी ओ मम्मी, तू कब सास बनेगी' लिख कर अच्छा नहीं किया.

अमित खन्ना ने 'देस परदेस' में काफी लोकप्रियता पाई. राजेश रोशन के

'अखियों के झरोखे से' में हेमलता ने अपना स्वर अलग रखने की कोशिश की है.

साथ उस की जोड़ी जमती है. लेकिन बस वही कमजोरी अखरती है. रोटी बड़ी, थाली छोटी. शब्द बड़े धुनें, छोटी. इस फिल्म में एक गीत शराब की प्रशंसा में लिखा गया. उसे ठंडक के दिनों में गरम कोट की उपाधि दी और गरमी में ठंडक पहुंचाने वाला कहा गया. दोनों बातें कैसे संभव हैं? यदि गरमी में पी जाने वाली शराब को हम बीयर मान भी लें तो पियक्कड़ लोग इसे शराब थोड़े ही मानते हैं.

गुलशन बावरा ने 'कसमे वादे' में अच्छे गीत लिखे. 'फांसी' में 'जब आती होगी याद मेरी' गीत आनंद बख्शी के तथाकथित प्रयोगवाद से बेहतर है. वर्मा मलिक नहीं जमे. रवींद्र जैन ने गीत लिखने में भी सिर्फ राजश्री की फिल्मों की ही तरफदारी की.

नरेंद्र शर्मा ने 'सत्यम शिवम सुंदरम' में साहित्य और फिल्म का अनूठा संगम किया. 'यशोमति मैया' की लोकप्रियता में इन का बड़ा हाथ है. शीर्षक गीत की दुर्गति बहुत बुरी मालूम हुई. इसी फिल्म में विट्ठलभाई पटेल (व्यापारी और राजनीतिबाज) ने 'रंग महल के दस दरवाजे' लिख कर रहस्यवाद का भोंपू बजाया,

सुलक्षणा पंडित को इस वर्ष काफी फिल्मों में गाने के अवसर मिले और साथ ही सफलता भी मिली.

लेकिन बाद में बंबईया स्टाइल का सहारा लिया.

इसी वर्ष एक भूला बिसरा गीतकार हमें छोड़ कर चला गया. प्यारे लाल संतोषी उर्फ पी. एल. संतोषी. हलकेफुलके गीतों के जनक के रूप में उन्हें हमेशा याद किया जाएगा. हालांकि इसे ले कर उन पर काफी हमले (शाब्दिक) भी हुए, लेकिन वास्तव में उन की हास्य की समझ अच्छी थी. 'मेरी जान संडे के संडे,' 'मेरे पिया गए रंगून' (दोनों 'शहनाई') को मात्र हास्यगीत कह कर नहीं टाला जा सकता. इस में सामाजिक परिस्थिति पर व्यंग्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है जो आज के गीतकार नहीं कर सकते.

गाए चला जा

भूतपूर्व संगीतकार चितलकर रामचंद्र ने ठीक ही कहा है कि आज का नायक मारामारी करेगा तो मीठे गीत क्या गाएगा. परदे पर अमिताभ हमेशा नथुने फुलाए, हाथ में पिस्तौल लिए नजर आता है. वह क्या खा कर मधुर गीत गाएगा? लिहाजा किशोरकुमार चिल्लाता है 'खाई के पान बनारस वाला...'

'घर' और 'त्रिशूल' के अलावा 'कसमे वादे' को छोड़ दिया जाए तो किशोर ने शोर ही मचाया है.

सांप्रदायिकता के इलजाम से बचने के लिए पिछले वर्ष सरकार ने रफी को एक निहायत वाहियात गीत 'क्या हुआ तेरा वादा' ('हम किसी से कम नहीं') के लिए पुरस्कृत किया. इस से रफी प्रेमियों में खुशी की लहर दौड़ गई. इस में दो मत नहीं हैं कि रफी किशोर से कई गुना अच्छा गायक है लेकिन हवा अभी भी किशोर की ही है.

'अपनापन,' 'नाच उठे संसार,' 'फंदेबाज' और 'मैं तुलसी तेरे आंगन की' में रफी काफी अच्छा रहा.

हेमंतकुमार काफी समय बाद 'हैवान' और 'हीरालाल पन्नालाल' में आए. 'हीरालाल पन्नालाल' से यह मालूम होता है कि उन की आवाज में अभी भी कोमलता है. वह अभी भी सफल हो सकते हैं.

मन्ना डे 'सत्यम शिवम सुंदरम' और 'मीनू' में काफी उखड़ेउखड़े रहे. महेंद्र कपूर को ('पति पत्नी और वो') गाने और चिल्लाने में अंतर सीखना होगा. यशुदास पीछे चले गए.

मनहर, भूपेंद्र, अमित और नितिन मुकेश आगे आए हैं. मनहर ('देस परदेस') ने मुकेश की नकल छोड़ी तभी नया जोश आया. भूपेंद्र मन्ना डे की जगह ले सकता है बशर्ते कि शास्त्रीय संगीत फिल्मों में लौट आए.

अमित तो पिता की कार्बन कापी है. नितिन भी अब मुकेश की छाया से दूर हो रहा है. 'सत्यम शिवम सुंदरम' और 'त्रिशूल' में वह सफल रहा है. हां, खुद मुकेश का अंतिम गीत 'शीतल चंचल' ('सत्यम शिवम सुंदरम') आर्केस्ट्रा में डूब गया.

नया गायक सुरेश वाडकर ('पहेली') से उम्मीदें की जा सकती हैं. लेकिन अनवर ('जनता हवलदार') को रफी की प्रतिध्वनि बनने का मोह छोड़ना होगा. आवाज की समानता जुदा बात है और शैली की समानता जुदा.

राहुलदेव बर्मन ने 'किताब,' 'हीरालाल पन्नालाल' में गाया है. 'किताब' में सिर्फ दो ही पंक्तियां समझ में आती हैं. 'हीरालाल पन्नालाल' में खुद का गला फाड़ कर दूसरों के कान के परदे फाड़ने की पुरजोर कोशिश की है.

गायिकाओं में इस बार आशा भोंसले की अपेक्षा लता मंगेशकर अधिक सफल रहीं. 'यशोमति मैया से...' ('सत्यम शिवम सुंदरम') गीत बखूबी गाया है. लेकिन अधिक सफलता बालपन के गीत को मिली है. प्रौढ़ा नायिका के होंठों पर आवाज जमी नहीं है. 'त्रिशूल' और 'सत्यम शिवम...' में नितिन मुकेश के साथ भी जम गई है. 'देस परदेस' का गीत 'आप कहें और हम न आएं' बहुत ही तरन्नुम में गाया है.

आशा ने युवा गीत सफलता के साथ गाए हैं. 'अनजाने में,' 'कसमे वादे,' 'हीरालाल पन्नालाल' में उस के गाए गीत बहुत अच्छे हैं.

सुलक्षणा पंडित को काफी फिल्में मिलीं और साथ ही सफलता भी. पता नहीं क्यों अचानक ही रेडियो पर उस के गीत बंद हो गए. 'अपनापन' के 'सोमवार को हम मिले' में उस की मासूम आवाज काफी अच्छी मालूम होती है. 'जनता हवलदार' 'एक बाप छः बेटे' और 'फांसी' में उस ने आकर्षित किया.

शुमांगी ('किताब'), अनुराधा ('आहुति', 'पहेली'), अंतरा चौधरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर चुस्की में ताज़ा चुस्ती

लिपटन रिचब्रू चाय से ताज़गी मिले, तबीयत खिले

तन जगाए, मन खिलाए ... लिपटन रिचब्रू.
गहरा गाढ़ा रंग, जानदार शानदार स्वाद.
मन आगे आगे, तन में ताज़गी जागे...
जैसे आपको उमंगों में बहा ले जाय !

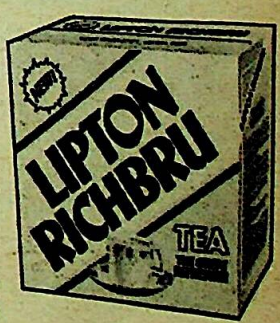

रिचब्रू... 'जग जगाता' स्वाद

लिंटास-LRB. 7-1810 HI (R)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

('मीनू') से काफी उम्मीदें हैं. ये सभी अपनी ताजगी भरी आवाज से श्रोताओं को राहत पहुंचाएंगीं. कम से कम बाल गीत तो इन्हीं से गवाना चाहिए.

हेमलता को 'कितने दूर कितने पास' में एकदम लता मंगेशकर बना कर पेश किया गया है. गीत जरूर लोकप्रिय हुआ लेकिन ऐसी लोकप्रियता सुमन कल्याणपुर को कहां ले गई? 'पहेली,' 'अंखियों के झरोखे से,' में हेमलता ने अपना स्वर अलग रखने की कोशिश की है. अब हर संगीतकार रवींद्र जैन जैसा मेहनती और ईमानदार तो नहीं हो सकता.

राजकुमारी ('किताब') की भूली बिसरी आवाज बीसपचीस साल बाद सुनाई दी. उम्र के असर के बावजूद आवाज में कसक है. शोभा गुर्टू ('मैं तुलसी तेरे आंगन की') ने फिल्मों में बहुत ही कम गाया है लेकिन उस की शैली परंपरागत होती जा रही है. वैसे उसे फिल्मों में रुचि भी नहीं है. उषा अय्यर ('शालीमार') के बारे में भी यही कहा जाएगा.

यह उक्ति कि योग्य व्यक्ति ही चलता है, 1978 में बहुत सटीक बैठी. जो युवा संगीतकार आज के संदर्भ में योग्य हैं, वे ही चले. पुरानों में सिर्फ खैयाम ('त्रिशूल') को ही बड़ी फिल्म मिली, लेकिन निराशा हाथ लगी. 'कभी कभी' के बाद ऐसे संगीत की उम्मीद नहीं थी.

दो साल पहले की तरह 1978 में भी नए स्वर उभरे हैं. जो भी योग्य हैं, वे चमकेंगे. नकल करने वाले जल्द ही बाहर हो जाएंगे. उन्हें सी. एच. आत्मा, सुरेंद्र, सुमन कल्याणपुर को सामने रख कर नकल न करने का निश्चय करना चाहिए. गीतकारों को आनंद बख्शी से घबराना नहीं चाहिए, वह अधिक नहीं चलेगा.

संगीत की दृष्टि से 1978 नई उपलब्धियां भले ही न लाया हो लेकिन निराश भी नहीं किया है.

"सर, आप को पता नहीं, इस शहर में एक फिल्म की शूटिंग हो रही है."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

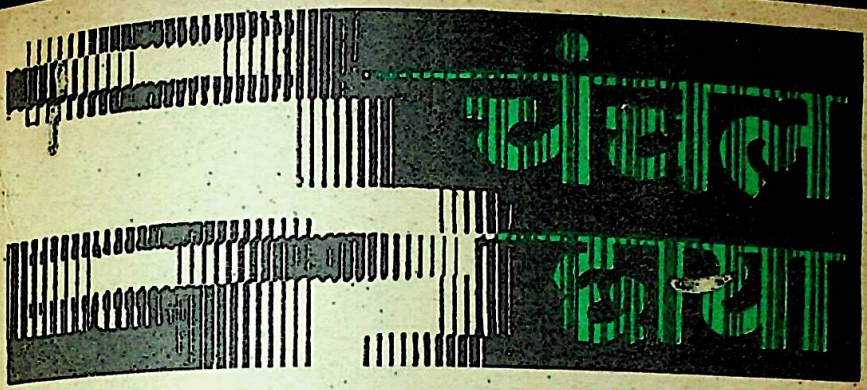

★★★★अति उत्तम ★★★उत्तम ★★मध्यम ★साधारण ○बेकार

★ शालीमार

निर्माती: लक्ष्मी जगसन प्रोडक्शंस
निर्देशक: कृष्ण शाह
कहानी: स्टेनफोर्ड शेरमन और कृष्ण शाह.
मुख्य कलाकार: धर्मेंद्र, जीनत अमान, रैक्स हैरीसन, सिल्विया माइल्स, जान सेक्सन, अरुणा ईरानी, प्रेमनाथ, ओम-प्रकाश रल्हन, शम्मी कपूर.

निर्मातानिर्देशक कृष्ण शाह हालीवुड में फिल्मों का निर्माण करते रहे हैं. जब उन्होंने अमरीकाभारत सहयोग से 'शालीमार' फिल्म बनाने की घोषणा की तो दर्शकों को लगा कि अवश्य ही कोई अच्छी फिल्म देखने को मिलेगी.

फिल्म निर्माण से पूर्व ही 'शालीमार' लोगों की चर्चा का विषय बन चुकी थी. क्योंकि कृष्ण शाह बड़ेबड़े कलाकारों, विदेशी तकनीशियनों की सहायता ले कर कई करोड़ रुपए व्यय कर के फिल्म बना रहे थे, लेकिन जब दर्शक फिल्म देख कर बाहर निकले तो सभी के मस्तिष्क में एक ही प्रश्न था, इतना धन व्यय कर के एक हीरे को चुराने के लिए कुछ चोरों के ऊल-जलूल करतब ही दिखाने थे तो पहले से बन रही, मारपीट, गोलीबारी की हिंदी फिल्में क्या बुरी हैं.

'शालीमार' ने दर्शकों को निराश ही किया. अनेक फिल्मों में हीरा चुराने की कहानी दिखाई जा चुकी है. फिल्म पटकथा में भी ऐसी घटनाएं नहीं जो दर्शकों को आकर्षित कर सकें. यही नहीं, कृष्ण शाह भी इस फिल्म में नायकवाद के शिकार हुए हैं. उन का नायक (धर्मेंद्र) चोर नहीं बल्कि किसी दूसरे चोर का निमंत्रण पत्र चुरा कर शालीमार की चोरी में शामिल होता है. फिर भी सफल वही होता है. चोरों का सरगना सर जान (रैक्स हैरीसन) को उस की चालाकी का पहले ही पता चल जाता है फिर भी वह उसे चोरी की दावत में शामिल कर लेता है.

यही नहीं, एक बार धर्मेंद्र सर जान को मारने के लिए झपट पड़ता है, लेकिन फिर भी वह शांत रह जाता है. शायद निर्देशक ने उसे नायक को मारने के लिए मना कर रखा था.

निर्देशक कृष्ण शाह ने शालीमार चुराने की कहानी को इतना फैलाया है कि घटनाएं नहीं होने से तेज गति होने पर भी फिल्म आकर्षित नहीं करती. कुछ चोरों की हरकतों से फिल्म एक नाटक प्रतीत होती है. चोरों का सरगना सर जान (रैक्स हैरीसन) हिंद महासागर में स्थित सेंट डिस्मान द्वीप पर दुनिया के कुछ प्रसिद्ध चोरों को 135 करोड़ रुपए का शालीमार हीरा चुराने की दावत देता है.

उस हीरे को चुराने के लिए श्रीलंका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिल्म 'शालीमार' में जीनत अमान और धर्मेंद्र : हीरे की चोरी के लिए करोड़ों रुपए का अपव्यय.

से रामास्वामी (ओमप्रकाश रल्हन), यूरोप की एक सरकस कंपनी में काम करने वाली औरत काउंटेस (सिल्विया माइल्स), एक मुसलिम वेशधारी शम्मी कपूर और यूरोप का एक प्रसिद्ध चोर कोलंबस (जान सेक्सन) आते हैं. हमारा नायक कुमार (धर्मेंद्र) भी वहां पहुंचता है. ताकि उस के इर्दगिर्द फिल्म बनाई जा सके.

शालीमार को सर जान ने विद्युत धाराओं, बारूद की सुरंगों और आधुनिक शस्त्रों से सज्जित आदिवासियों की सेना की सुरक्षा में एक किले में रखा है. जान सेक्सन और सिल्विया चुराते हुए मारे जाते हैं, लेकिन अंत में कुमार शालीमार पाने में सफल होता है. सर जान को भी आदिवासी मार देते हैं.

शालीमार के प्रति चोरों और दर्शकों को आकर्षित करने के लिए हीरे के साथ एक काल्पनिक इतिहास जोड़ा गया है. 1215 कैरेट वजन के हीरे का मूल्य 135 करोड़ रु. बताया गया है. सर जान टेलीविजनों पर देखता रहता है कि चोर उसे कैसे चुराते हैं, यही नहीं, वह वहीं बैठेबैठे उन की सफलता को भी असफल बनाता रहता है. अगर कोई चोर उस हीरे तक पहुंच जाता है तो आदिवासी रक्षक उसे गोलियों से भून देते हैं. फिल्म को रोमांचक बनाने के प्रयास में निर्देशक अधिक बोझिल और अविश्वसनीय बनाता गया है.

निर्देशक ने आदिवासी लोगों को आधुनिक शस्त्रों से सज्जित किया है तो दूसरी ओर उन्हें इतना अशिक्षित व अंध-विश्वासी दिखाया है कि जान सेक्सन के मरने पर उसे अपना देवता मान कर पूजने हैं. आदिवासी शालीमार को भी अपने एक देवता का एक रूप मान कर पूजा करते हैं.

निर्माता ने फिल्म को अधिक से अधिक भव्य बनाने के लिए विशाल किले में बिजली धाराओं, बड़ेबड़े सेट और खूब गोले बारूद का विस्फोट दिखाया है ताकि दर्शक उस की चकाचौंध में खोते रहें.

शालीमार की चोरी होने पर आदिवासी सर जान की भी हत्या कर देते हैं. क्या सर जान को मारना इतना आसान था? यदि ऐसा तो कोई भी चोर उस की हत्या कर सकता था. शालीमार का वारिस ढूंढ़ने की सर जान की योजना भी अजीबोगरीब लगती है. क्योंकि उस किले में सर जान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चे का पहला ठोस आहार जिसमें
आसानी से हज़म होने वाले चावल के साथ
11 पोषक विटामिन और लौह तत्व मिले हुए हैं

नेस्टम

बेबी सिरियल
क्रीम ऑफ़ राइस

जब आप अपने बच्चे को ठोस आहार देना शुरू करें तो उसे ऐसा आहार दें जो पौष्टिक हो, फिर भी बच्चे की कोमल पाचन प्रणाली के लिए हल्का हो। डाक्टर यह मानते हैं कि सबसे आसानी से हज़म होने वाला अनाज चावल ही है। इसीलिए हमने नेस्टम क्रीम ऑफ राइस बनाया है। इसमें बिल्कुल सही मात्रा में विभिन्न विटामिन और लौह तत्व हैं जो बच्चे के स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक हैं।

तीन महीने का होते ही आप बच्चे को यह दे सकते हैं। और जैसे जैसे बच्चा बढ़ता जाय उसे फल, सब्ज़ी, दाल और साग के साथ नेस्टम दीजिए। इससे उसे तरह तरह का नया स्वाद मिलेगा।

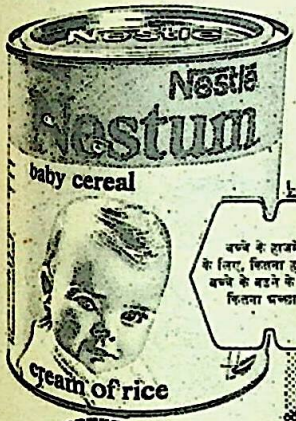

अधिकतम मूल्य
रु. ७.००
स्थानीय कर
अतिरिक्त

दूध में मिलाकर हल्का और पूर्ण पौष्टिक आहार बनाइए।

उबाला हुआ दूध लीजिए

उसमें नेस्टम मिला दीजिए

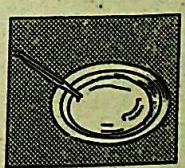
बच्चे को खिला दीजिए

NESTLÉ

SAA/FSL/H/1134

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुक्ता

हास्य विशेषांक

मार्च (द्वितीय) 1979

आपके साथ ला रहा है हास्य व्यंग्य से भरपूर अनेक रचनाएं.

सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक समस्याओं पर व्यंग्य के तीखे प्रहार करने वाली कहानियां.

ऐसे व्यंग्य लेख जिन्हें पढ़ कर आप हसेंगे भी और कुछ सोचने पर भी मजबूर हो जाएंगे.

आपके मनचाहे सभी स्थायी स्तंभों के साथ मुक्ता इस बार होली के अवसर पर विशेष सजधज के साथ एक नए रूप में आ रही है.

मूल्य केवल 2.75 रुपए. आज ही अपने अखबार वाले से कह कर अपनी प्रति सुरक्षित करा लें.

जनवरी 1979 में प्रकाशित नवीन पुस्तकें

पुस्तक का नाम	लेखक	
नए भारत की खोज	भगवान श्री रजनीश	4.00
भूतनाथ की संसार यात्रा	जनप्रिय लेखक ओमप्रकाश शर्मा	3.00
अग्नि परीक्षा	आचार्य चतुरसैन	4.00
लता के दर्द भरे गीत	संकलन कर्ता राकेश	3.00
विवाहित आनंद	डा. आर. पी. सेठी	5.00
घरेलू इलाज	आचार्य चतुर सैन	4.00
योगासन (चित्रों सहित)	योगाचार्य मिठ्ठन लाल	4.00
साधना इंगलिश स्पीकिंग कोर्स		6.00

साधना पाकेट बुक्स
39, यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007

शैतान राजू को

चंपक

राजा बेटा बनाएगा

आप राजू को सजा देंगे तो वह और भी ढीठ बन जाएगा. उसे चंपक की सूझबूझ वाली कहानियां, जानकारी बढ़ाने वाले लेख और मनमोहक कविताएं पढ़ने को दीजिए, फिर देखिए...

चंपक — बच्चे संतों को सुशील और समझदार बनाने वाली पत्रिका.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेमा मालिनी फिल्म 'दिल्लगी' में : नायिकनायिका की दिल्लगी दर्शकों के लिए मनोरंजन.

चोरों को धोखे से मार देता है. यदि इस के पीछे सर जान का उद्देश्य सभी प्रसिद्ध चोरों को समाप्त करना अधिक विस्तृत रूप में दिखाया जाता तो फिल्म कुछ अधिक रोचक बन सकती थी. विश्व प्रसिद्ध चोर इतनी आसानी से शत्रु के गढ़ में पहुंच गए, क्यों गए, यह भी अस्पष्ट है.

फिल्म के कलाकार नाटक के पात्र ही अधिक लगते हैं. चोरों की तरह बारीबारी से अपने करतब दिखाते हैं. रैक्स हैरीसन के लिए निर्देशक ने कादर खान की आवाज उपयोग की है. इस से बीमार सर जान की तरह उस का अभिनय भी बेजान लगता है. ऐसे ही निर्देशक ने बेसिरपैर की एक प्रेम कहानी भी ठूंस दी है. शीला (जीनत अमान) कुमार (धर्मेंद्र) से प्रेम करती है और वही हीरा चुराने में उस की सहायता करती है. लेकिन प्रेम कहानी फ्लैशबैक में है और टुकड़े करकर के है. इस कारण कुछ स्पष्ट भी नहीं हो पाता.

जीनत अमान जब धर्मेंद्र पर अपना क्रोध प्रकट करती है तो उस का अभिनय एकदम नाटकीय हो जाता है. धर्मेंद्र भी कहीं प्रभावित नहीं कर पाता. सिल्विया माइल्स का चेहरा बहुत विकृत है और सुंदरता की देवी के स्थान पर खूसट बुढ़िया ही लगती है. शम्मी कपूर इतना स्थूल है कि उस के चोर होने पर भी भ्रम होता है. ऐसे ही ओमप्रकाश रत्नहन चोर कम हास्य कलाकार अधिक दिखाई देता है.

आनंद बख्शी के एकदो गीत अच्छे हैं पर उन का भी चित्रण ठीक नहीं हो सका. राहुलदेव बर्मन ने विदेशी धुनों का ही प्रयोग किया है. कादर खान के संवादों में दम नहीं है. फिल्म का मुख्य आकर्षण हारवे जोन किस का छायांकन है, पर वह भी कहींकहीं ही प्रभावित करता है.

★ दिल्लगी

निर्माता : विक्रम फिल्म्स
निर्देशक : बासु-चटर्जी
कहानी : बिमल कर
मुख्य कलाकार : हेमा मालिनी, धर्मेंद्र, मिट्ठू मुखर्जी, असरानी, उर्मिला भट्ट, प्रीति गांगुली.

बासु चटर्जी हलकेफुलके विषय को ले कर हास्य के माध्यम से मनोरंजक फिल्म बनाने में काफी लोकप्रिय हैं. इस बार 'दिल्लगी' में साधारण सी प्रेम कहानी ले कर, हास्य संवादों और प्रसंगों के सहारे दर्शकों का मनोरंजन करने का प्रयास किया है. संस्कृत के कुमारसंभव और अभिज्ञान शाकंतुलम की घटनाओं को ले कर नायक नायिका के मिलन का रोचक चित्रण किया है. लेकिन सारी फिल्म अत्यधिक अस्वाभाविक है.

स्वर्ण कमल (धर्मेंद्र) को लड़कियों के एक कालिज में संस्कृत का प्राध्यापक नियुक्त किया जाता है. वह उसी कालिज की रसायन शास्त्र की प्राध्यापिका फूल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेणु (हेमा मालिनी) से प्यार करने लगता है, लेकिन अपने पर मां और भाई का भार होने के कारण प्रारंभ में फूल रेणु उस से बचने की कोशिश करती है. लेकिन कुछ नाटकीय परिस्थितियों के बाद अंत में दोनों का विवाह हो जाता है.

बिमल कर की कहानी में अधिक घटनाएं नहीं. पटकथा में भी इस कमी को पूरा नहीं किया जा सका, फिर भी निर्देशक ने हास्य प्रसंगों के सहारे दर्शकों को कुछ सीमा तक बांधे रखा है.

फिल्म में यह बात सैद्धांतिक रूप से कुछ ठीक नहीं लगती कि एक कक्षा के प्राध्यापक की आवाज दूसरी कक्षा की प्राध्यापिका और छात्रों को इतना अधिक परेशान करे कि वे कुछ नहीं पढ़ पाएं. निर्देशक ने इस प्रसंग को कुछ हास्य रूप में उपयोग किया है, लेकिन अश्लील विषय होने से कुछ अखरता है. और यही नहीं, नायिका को कुछ जबरदस्ती आकर्षित करने के लिए निर्देशक ने इसी प्रसंग को कई बार दोहराया है. ऐसे प्रसंग जब एक प्राध्यापिका को इतना विचलित कर सकते हैं तो छात्राओं का क्या हाल होगा?

फिल्म में संस्कृत के प्राध्यापक से लड़कियां मन ही मन प्यार करती लेकिन ऐसा कम होता है क्योंकि में कुर्तेपाजामे वाले संस्कृत के को तो लड़कियां पोंगापंडित मान का मजाक ही बनाती हैं.

इन के अतिरिक्त कुछ अन्य भी उभर कर सामने आती हैं, लेकि हास्य के कारण दबीदबी रह हैं.

हेमा मालिनी रसायन शास्त्र प्राध्यापिका नहीं लगती, फिर भी उ चेहरे पर भय और सिहरन के भाव बन पड़े हैं. धर्मेंद्र भी अपनी भूमिका आकर्षक है. असरानी अधिक नाट लगता है. उर्मिला भट्ट और मिट्ठू मु बस, खानापूरी करते हैं.

योगेश के गीत अच्छे हैं, लेकिन रो रोशन ने उन्हें अपनी पुरानी ही धु बांधा है. फिल्म में पार्श्व संगीत में धुन बारबार बजाई है.

केवल हास्य संवाद ही फिल्म आकर्षण बनाए रखते हैं. गोलीबारी, डाकू और तस्करों की आम हिंदी फि की लीक से हट कर 'दिल्लगी' से दर्शकों कुछ राहत मिलती है.

गुलाबी रोशनी में थिरकते पांव

सिर्फ मनोरंजन के लिए देखे जाने वाला कैबरे उच्च वर्ग के जीवन का आवश्यक अंग बन चुका है. इस के अलावा हमारी युवा पीढ़ी को गुमराह करने में भी नग्न कैबरे नृत्य काफी जिम्मेदार हैं. लेकिन इस तसवीर का एक दूसरा पहलू भी है. शायद ही कभी किसी दर्शक ने इन नर्तकियों के अंदरूनी जीवन के विषय में गहराई से सोचा हो. एक कैबरे नर्तकी के निजी जीवन की एक रोमांचकारी झलक...

मुक्ता के फरवरी (द्वितीय) 1979 अंक में पढ़ें.

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

अपनी प्रति आज ही खरीदें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेहतरीन बॉलपेन,
जिसका कोई जवाब नहीं.

कैमलिन सुप्रीम

मज़बूत बनावटवाला
नोज़ल. पतला,
आकर्षक, आधुनिक
और चाँदी जैसा
चमकीला— बेहतरीन
जॉटर पेन.

कैमलिन 121 जॉटर

लाखों लोगों की पसंद के
मुताबिक कई रंगों में
मिलता है.
इतनी ही कीमतवाले
अन्य बॉलपेनों में
सबसे बेहतर !

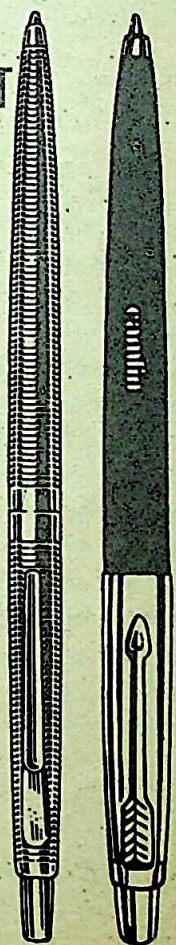

VISION 783 HIN

HINDUSTAN

HINDUSTAN WASHING MACHINE

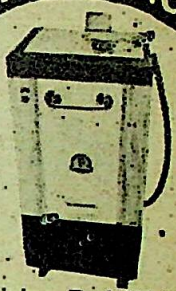

Aluminium Tank With Side Impellor. Rust Proof Matchless In Quality Matchless In Price

HINDUSTAN TRADERS CO.
32, South Patelnagar 589546, 583261
R-5, Green Park 669768, 663755
B-10/12, Rajagarden 588238, 96, Panchkuin Road
(Near Lady Harding Hospital 310247

FACIAL HAIR

GET RID OF INFERIORITY COMPLEX
BY PERMANENTLY REMOVING
UNWANTED HAIR
DO NOT INCREASE WITH
WAXING, PLUCKING & THREADING.
GET CURED PERMANENTLY WITH A COURSE OF
ELECTROLYSIS BY SHORT WAVE DIATHERMY
TREATMENT DONE BY
GARKALS OF TAO CLINIC, LONDON

DELHI ELECTROLYSIS & BEAUTY CLINIC
40, HANUMAN ROAD, NEW DELHI
PHONE : 311297

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सत्येन कप्पू, सुजीतकुमार और निरूपा राय फिल्म 'नालायक' में : राम का भाई लक्ष्मण नालायक कैसे हो सकता है?

○ नालायक

निर्माता : वीना फिल्म्स
निर्देशक : पद्म नाभ
कहानी : के. ए. नारायण
मुख्य कलाकार : जीतेंद्र, लीना चंद्रावरकर, असरानी, सत्येन कप्पू, निरूपा राय, मास्टर राजू, संजना, सुजीतकुमार.

हिंदी फिल्मों के नायक में कितनी ही बुराइयां क्यों न हों, चाहे वह रात को जुआ खेले, किसी से मारपीट करे या बाजारू औरतों के साथ शराब पिए, लेकिन निर्माता, निर्देशक फिल्म के अंत में उस को शरीफ आदमी घोषित कर ही देते हैं. निर्माता जगदीश शर्मा ने अपनी फिल्म 'नालायक' में कुछ बाक्स आफिस फार्मूलों में हत्या का एक रहस्य डाल कर अंत में नालायक नायक को जबरदस्ती लायक बनाया है.

रामनारायण (सत्येन कप्पू) अपने छोटे भाई लक्ष्मण (जीतेंद्र) को उस की बुरी आदतों से तंग आ कर घर से निकाल देता है. प्रेम (सुजीतकुमार) अपने बड़े भाई का बदला लेने के लिए रामनारायण को एक गवन और एक बदचलन लड़की (बिंदु) की हत्या के इलजाम में फंसा देता है. रामनारायण को फांसी की सजा होती है. अंत में कुछ नाटकीय घटनाओं के बाद लक्ष्मण वास्तविक अपराधी को पकड़ कर अपने बड़े भाई को बचा लेता है.

नालायक भी परिवार के लिए लायक सिद्ध हो सकता है. इस बात को सिद्ध करने के लिए फिल्म के पात्रों के नाम भी लक्ष्मण और सीता रखे हैं. रामायण में चक्रव्यूह होने के बाद लक्ष्मण नालायक नहीं हो सकता था. इसी लिए सारे दोषों के बावजूद भी उसे अंत में लायक बना ही लिया.

इस बार निर्माता, कहानी लेखक गलत उद्देश्य ले कर चले हैं. 'जिंदगी भी तो एक जुआ है,' नायक के मुंह से ऐसे संवाद बुलवा कर खूब उलटीसीधी, अश्लील, मारपीट, अपहरण की घटनाएं दिखाई गई हैं. जुआ खेलने को बहुत प्रोत्साहित किया है.

के. ए. नारायण ने फिल्म में वास्तविकता का ध्यान नहीं रखा है. पटकथा में भी ऐसी घटनाएं हैं, जिन पर विश्वास नहीं किया जा सकता. फिल्म में पुलिस की कानून के खोखलेपन का अच्छा चित्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ है. झूठे सबूतों पर पुलिस किसी निर्दोष को अदालत में घसीट सकती है और अदालत भी आंखें बंद किए उसे फांसी की सजा दे देती है. और यही नहीं, ऐसे ही झूठे सबूत बना कर लक्ष्मण अपने भाई को छुड़ा लेता है.

निर्देशन की कमजोरी बहुत अखरती है. निर्देशक पद्मनाभ और कहानी लेखक की सब से बड़ी कमजोरी यह है कि वे जिन घटनाओं को रहस्य मान कर चलते हैं, दर्शक उस के अंत को पहले ही जान लेते हैं. इस से फिल्म में कोई आकर्षण नहीं रहता, संपादन में भी ऐसी कमजोरी को दूर नहीं किया जा सकता है.

जीतेंद्र ले अभिनय के नाम पर उछल-कूद ही दिखाई है. लीना चंदावरकर इतनी स्थूल हो गई है कि किसी रूप में नहीं जंचती. नाचनेगाने में तो उस की स्थूलता बहुत अखरती है. सत्येन कप्पू और निरूपा राय कुछ आकर्षित करते हैं. बिंदु ने अंग-प्रदर्शन ही किया है. असरानी नाटकीय होते हुए भी हंसाता है.

वर्मा मलिक की तुकबंदी (गीतों) को कल्याणजी आनंदजी ने सभी पुरानी धुनों में बांधा है. फिल्म में गति तेज होने से कुछ आकर्षण बना रहता है, वरना नालायक में मारपीट, उछलकूद और अश्लील हरकतों के अतिरिक्त कुछ नहीं.

○ दादा

निर्माता : जुगल कंबाइन प्रिजेंट
निर्देशक : जुगल किशोर
मुख्य कलाकार : विनोद मेहरा, बिंदिया गोस्वामी, शशि पुरी, अमजद खां, जीवन, राजेंद्रनाथ, सत्येन कप्पू.

मारपीट, गोलीबारी की फिल्मों में अपराधी कितने ही अपराध और हत्याएं करे, किसी होटल में घुस कर दर्जनों गुंडों को मार भगाए लेकिन निर्माता, निर्देशक अंत में बेकार की घटना के सहारे बड़े

पिछले बारह महीनों में

★★★ घरौंदा, घर.

★★ आनंद आश्रम, अपनापन, दामाद, पति पत्नी और वह, तृष्णा, मैं तुलसी तेरे आंगन की.

★ मस्ताना दादा, भूमिका, बंदी, खट्टामीठा, तुम्हारी कसम, फांसी, पलकों की छांव में, त्रिशूल, पहेली, कसमे वादे, अंखियों के झरोखों से, वेस परदेस, आजाद, सफेद झूठ, राहुकेतु, मुकद्दर का सिकंदर, अतिथि, अनपढ़, प्रेम बंधन.

○ दुनियादारी, दरिंदा, विश्वनाथ, डाकू और महात्मा, नसबंदी, आखिरी डाकू, फिर जन्म लेंगे हम, शतरंज के खिलाड़ी, खेल किस्मत का, कालिज गर्ल, बेशरम, अलीबाबा मरजीना, सिक्का, दरवाजा, आहुति, अगर, काला आदमी, चोर हो तो ऐसा, सत्यम शिवम सुंदरम, मृगया, खून की पुकार, प्रेमी गंगाराम, डान, सवा लाख से एक लड़ाऊं, फंदेबाज, मुकद्दर, परमात्मा, अनजाने में, यारों का यार, पुराना पुरुष, नया दौर, शाही लुटेरा, गंगा की सौगंध, मेरा रक्षक, अपना खून, जादूटोना, नवाब साहब, राम कसम, चलता पुर्जा, दिल और पत्थर, अमर शक्ति, दिल और दीवार, सफेद हाथी, देवता, खून का बदला खून, गंगा-सागर, सोने का दिल लोहे के हाथ, चोर के घर चोर, कर्मयोगी, डाकू और जवान, चौकी नं. 11, सरकारी मेहमान.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जय श्री टी. और अमजद खान फिल्म 'दादा' में : वही पुरानी मारपीट और गोलीबारी के अलावा क्या?

नाटकीय रूप में ऐसे अपराधी का हृदय परिवर्तन दिखा कर उसे भी एक शरीफ आदमी सिद्ध कर देते हैं. 'दादा' फिल्म में ऐसे ही अपराधी के हृदय परिवर्तन की कहानी बहुत ही बचकाने ढंग से प्रदर्शित की गई है. निर्माता जुगलकिशोर ने फिल्म का निर्देशन भी स्वयं किया है. इस से अविश्वसनीय घटनाओं की भरमार और ऊलजलूल मारपीट, गोलीबारी के कारण फिल्म और भी निराश करती है.

जीतू (विनोद मेहरा) अली (राजेंद्रनाथ) की मोटर वर्कशाप में काम करता है. अचानक एक दिन उसे पता चलता है कि उस के पिता नगर के बहुत बड़े रईस (सत्येन कप्पू) हैं तो वह उन के पास जाता है, लेकिन परिस्थितियां उसे अपनी प्रेमिका कामिनी (बिंदिया गोस्वामी) के भाई (रमेश देव) की हत्या के इलजाम में फंसा देती हैं. बड़े नाटकीय रूप में एक बदमाश फ़जल दादा (अमजद खां) अपना अपराध स्वीकार कर के जीतू को बचाता है.

मारपीट, गोलीबारी से भरी इस [illegible] फिल्म में आम फिल्मों की तरह अपराधी अदालत में पहुंचा कर उसे बेगुनाह सि के लिए सारा दोष समाज और कानू थोपा है ताकि दर्शकों की निगाह में राधी को बेगुनाह दिखाया जा सके.

विनोद मेहरा ने कहीं अपने अभि से आकर्षित नहीं किया. बिंदिया गोस्व एकदो नाचगाने के अलावा कुछ नहीं ऐसी भूमिका उस के भविष्य को भी कर सकती है.

अमजद अपनी भूमिका में कीय अधिक लगता है. शेष कलाक साधारण ही हैं.

ऊषा खन्ना के संगीत में एकदो अच्छे लगते हैं, पर उन का चित्रण नहीं हो पाया. छायांकन साधारण है. पीट, गोलीबारी के कारण फिल्म गति खाई देती है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खोया हुआ सुख

(पृष्ठ 65 का शेषांश)

करवटें बदलती रही और जाने कब थक कर सो गई थी.

रेखा और नितिन का विवाह हुए दो वर्ष बीत गए थे. रेखा घर के सारे काम करती. नितिन के लिए पूरे मनोयोग से भोजन बनाती. उस की पूरी सेवा करती. उस की सुखसुविधा का पूरा ध्यान रखती. पर जब भी सेज की संगिनी बनने का संयोग होता या नितिन उस के मन को छू लेना चाहता, वह पत्थर की मूर्ति बन जाती. नितिन उस के मन की बात जानने का प्रयास करता तो वह रोने लगती.

नितिन को रेखा के शरीर का सामीप्य तो मिलता था पर मन का नहीं. वह इस बात को ले कर दुखित तो था, पर रेखा के प्रति विशेष प्रेम रखने तथा केवल एक बात को ले कर अपने वैवाहिक जीवन में किसी तरह की मलिनता पैदा करना वह ठीक नहीं समझता था.

नितिन कालिज से लौटा तो तारा भी उस के साथ थी.

"देखो, रेखा, कौन आया है."

"तारा, तुम यहां!" रेखा आश्चर्य-चकित थी.

"हां, मैं आज ही नितिनजी के कालिज में व्याख्याता बन कर आई हूं. यह तो भला हो नितिनजी का कि उन्होंने प्रथम परिचय में ही बहुत सी बातें पूछ डालीं. और उसी पूछताछ में पता चला कि तुम यहां इन की स्वामिनी बनी बैठी हो. कमाल है, तुम ने शादी कर ली और हमें पता तक नहीं."

"लेकिन तुम्हें यह नौकरी करने की क्या जरूरत आ पड़ी?"

"वह भी बताऊंगी, पहले कुछ खिला-एगोपिलाएगी भी या केवल पूछताछ ही करेगी?"

बरसों बाद मिली दोनों सहेलियों को जब एकांत मिला तो तारा ने उसे बता दिया कि उसे नौकरी करने की जरूरत क्यों पड़ी. तारा की सास अपने बेटे के विवाह के साल भर बाद ही पोते का मुंह देख लेना चाहती थी, पर जब दो वर्ष बाद भी तारा मां न बनी तो सास ने उस से पूछताछ की. फिर डाक्टर को दिखाया तो यह बात सामने आई कि तारा कभी मां नहीं बन सकेगी.

यह जान लेने के बाद सास ने बेटे का दूसरा ब्याह रचाने की ठान ली. तारा ने भी कटु सत्य को स्वीकारते हुए स्वयं पति से तलाक ले कर उसे दूसरे विवाह की स्वीकृति दे दी. तलाक के बाद उस ने नए सिरे से जीवन जीने का निश्चय कर लिया. उस का यहां व्याख्याता बन कर आना उसी नए जीवन का आरंभ था.

रेखा भी अपनी आपबीती तारा को सुना कर हलकी हो गई. तारा बोली, "पगली, जीवन जीने के लिए होता है, रोने और घुटने टेकने के लिए नहीं. बीते हुए को भुला दे. उसे नितिनजी को बताने की गलती भी कभी मत करना. यदि दुर्भाग्य से उन्हें कभी ज्ञात हो भी जाए तो उस समय जैसी परिस्थितियां हों उस के लिए और भविष्य के लिए स्वयं को तैयार अवश्य रख.

"सुख तो मन की वस्तु है. उस का गरीबीअमीरी से कोई विशेष संबंध नहीं है. पूरे उत्साह और पूरी तन्मयता से जीवन जीने का अपना एक सुख है, एक अलग आनंद है. तूने अपने जीवन के दो अनमोल वर्ष यों ही खो कर अपने और नितिनजी के साथ अन्याय किया है."

तारा के कथन और आचरण ने रेखा के मन में नागिन सी कुंडली मारे बैठी पाप-बोध, आशंका और जड़ता की गांठें खोल कर रख दीं. जीवन का एक नया सवेरा उस की प्रतीक्षा कर रहा था. उस रात नितिन को बांहों में भर कर रेखा ने उस के तनमन में अपने जीवन का सुमधुर संगीत भर दिया था. ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वधू के लिए

36 वर्षीया, उत्तरप्रदेशीय, पंजाबी अरोरा, एम. ए. बी. एससी. बी. एड., शासकीय शिक्षिका हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7739, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, यादव, एम. ए. (फाइनल), 162 सें. मी., गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7740, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18½ वर्षीया, शिवहरे, 157 सें. मी., स्लिम, बी. ए. छात्रा, गौरवर्ण, अति सुंदर, सुशील, गृहकार्य निपुण कन्या हेतु वैश्य (अग्रवाल, शिवहरे आदि), योग्य, सुखी, उच्च सेवारत अथवा उच्च व्यवसायरत वर चाहिए. निस्संतान विधुर विचारणीय. लिखें: वि. नं. 7741, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, बीसा ओसवाल मारवाड़ी, गौरवर्ण, एम. ए. साइक्लोजी फर्स्ट क्लास फर्स्ट कन्या के लिए सजातीय वर चाहिए. शीघ्र शादी के लिए लिखें: वि. नं. 7742, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रथम श्रेणी अधिकारी की 18 वर्षीया, हैहय क्षत्रिय शिवहरे, बी. ए. अध्ययनरत, सुंदर, गौरवर्णीय, 160 सें. मी., आकर्षक कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, अफसर, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7743, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, बी. ए. बी. एड., एवं 19 वर्षीया, बी. ए. द्वितीय, गृहकार्य में दक्ष ब्राह्मण कन्याओं हेतु मासिक वेतन चार अंकीय पाने वाले डाक्टर, इंजीनियर वर चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि. नं. 7744, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, बीसा अग्रवाल, सुशिक्षित, छोटे व सुखी परिवार की बी. ए. आनर्स, 160 सें. मी., 44 कि., इकहरी, गेहुआं रंग, आकर्षक तीखे नाक-नक्श, गृहकार्य, सिलाई, कढ़ाई में प्रवीण कन्या हेतु सुसंस्कृत परिवार से योग्य, उच्च सेवारत (सरकारी या गैरसरकारी), सजातीय वर चाहिए. केवल दिल्ली या कलकत्ता के नजदीक या इस के बीच के ही सज्जन संपर्क करें. पिता लिमिटेड कंपनी में उच्च अधिकारी. लिखें: वि. नं. 7745, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया; ब्राह्मण, स्नातकोत्तर, दिल्ली में कार्यरत कन्या हेतु शाकाहारी वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7746, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, दिगंबर जैन, एम. ए., 150 सें. मी., सुशील, गृहकार्य में निपुण कन्या के लिए सजातीय वर की आवश्यकता है. लिखें: वि. नं. [illegible] सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, बंगाली कायस्थ-परिवार की सुशील, कार्यरत कन्या के लिए सजातीय वर चाहि लिखें: वि. नं. 7748, सरिता, नई दिल्ली-110

28 वर्षीया, गुरु सिख (खत्री), स्नातक, स्ल सुशील कन्या हेतु वर चाहिए. शीघ्र विवाह. लि वि. नं. 7749, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 160 सें. मी., सिंघल गोत्र अग्रवाल, एम. ए., राजस्थानी संभ्रांत परिवार सुंदर, गृहकार्य में दक्ष एवं सर्विस में लगी कन्या लिए योग्य वर की आवश्यकता है. शीघ्र बहुत ज्य शादी करने के इच्छुक. कृपया लिखें: वि. नं. 77 सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, कायस्थ, एम. ए. अध्ययन 152 सें. मी., सुंदर, आकर्षक, स्मार्ट, गृहकार्य चित्रकला, संगीत कला व गृहकार्य में दक्ष कन्या लिए सुयोग्य, सुशिक्षित वर की आवश्यकता है. दह बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7751, सरिता, दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, राजपूत, कॉन्वेंट शिक्षित, ए., सुंदर, सुशील, स्लिम, 152 सें. मी., गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु योग्य, सजातीय वर चाहिए. ऐसे इच्छुक पत्रव्यवहार न करें. लिखें: वि. नं. 77 सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, अग्रवाल गोयल गोत्रीय, एम. (फाइनल) अध्ययनरत, गौरवर्ण, सुंदर, दक्ष, स्मार्ट, 154 सें. मी., प्रतिष्ठित परिवार कन्या हेतु सजातीय, कार्यरत, डाक्टर, इंजीनि उच्च पदाधिकारी, स्व व्यवसायी वर चाहिए. उत्तम शादी. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. 7753, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, मैडिको, सरकारी मैडिकल अफसर, 152 सें. मी., सुंदर कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 77 सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, गर्ग बीसा अग्रवाल, एम. ए. एड., साफ रंग, 160 सें. मी., मृदुभाषी, गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु स्वावलंबी वर शीघ्र एवं उत्तम विवाह. पूर्ण विवरण सहित वि. नं. 7755, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, हिंदू, प्रतिष्ठित परिवार की ए. प्रथम वर्ष अध्ययनरत, सिलाई, कढ़ाई निप्ण होल्डर गृहकार्य में दक्ष अविवाहित कन्या हेतु वि विरोधी, कार्यरत वर की आवश्यकता है. कोई द नहीं. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें: नं. 7756, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीया, डबल एम. ए. एम. एड., सेवर मासिक आय 1400, प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु सजातीय, सुशिक्षित वर चाहिए. वि. नं. 7757, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

27 वर्षीया, माहेश्वरी, मध्यमवर्गीय परिवार, एम. ए., गौरवर्ण, 160 सें. मी., कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7758, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, पंजाबी ब्राह्मण, हायर सैकंडरी पास, 165 सें. मी., गेहुआं रंग, गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत वर की आवश्यकता है. जाति बंधन नहीं. दहेज के इच्छुक कृपया पत्र व्यवहार न करें. लिखें: वि. नं. 7759, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, कायस्थ, स्नातक, गौरवर्ण, इकहरा बदन, शासकीय सेवारत, मासिक वेतन 500 रुपए कन्या हेतु योग्य वर की आवश्यकता है. शासकीय सेवारत को प्राथमिकता. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 7760, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, अग्रवाल, एम. ए. फाइनल अध्ययनरत, 160 सें. मी., अत्यधिक सुंदर, सुशील, निस्संतान परित्यक्ता कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7761, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, गोरी, सुंदर, आकर्षक, 157 सें. मी., बी. एससी. बी. एड., एम. एससी. छात्रा, लेखिका, मैट्रि क्षत्रिय (स्वर्णकार) कन्या के लिए योग्य, राजपत्रित पदाधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर या प्रोफेसर वर की आवश्यकता है. लिखें: वि. नं. 7762, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, सिंहल अग्रवाल, ग्रेजुएट, गौरवर्ण, स्वस्थ, निस्संतान विधवा कन्या के लिए कार्यरत, ग्रेजुएट वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7763, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, दिल्ली के सुशिक्षित व प्रतिष्ठित बौसा अग्रवाल परिवार की अंडर ग्रेजुएट, 143 सें मी., गोरी, इकहरी, सरल स्वभाव, कानूनन तलाकशुदा, निस्संतान कन्या हेतु वर चाहिए. जाति व प्रांत बंधन नहीं. साधारण व शीघ्र विवाह. विवरण सहित लिखें: वि. नं. 7764, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, राजपूत, एम. ए. (अर्थशास्त्र), कद 150 सें. मी., गेहुआं रंग, आकर्षक, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुशिक्षित, योग्य वर चाहिए. अच्छा विवाह. लिखें: वि. नं. 7765, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35½ वर्षीया, प्रतिष्ठित पंजाबी अरोड़ा परिवार की नान मैट्रिक किंतु व्यवहार कुशल, साधारण रंगरूप की 155 सें. मी. कन्या हेतु सुस्थापित वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7766, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, खत्री, बी. ए. पास, एम. ए. में अध्ययनरत, कद 155 सें. मी., सुंदर कन्या के लिए सरकारी सेवारत पदाधिकारी अथवा व्यापाररत वर की आवश्यकता है. जाति बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 7767, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, अरोड़ा, एम. ए. पास, एलएल. बी. अध्ययनरत, कद 160 सें. मी., सुंदर कन्या के लिए सरकारी सेवारत उच्च पदाधिकारी अथवा व्यापाररत वर की आवश्यकता है. जाति बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 7768, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 व 27 वर्षीया, क्रिश्चियन, कद 160 सें. मी., क्रमशः स्टाफ नर्स व महाविद्यालय में लेक्चरार शासकीय सेवारत, मासिक आय 900 व 800 कन्याओं हेतु सुयोग्य, स्मार्ट वरों की आवश्यकता है. बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7769, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, हिंदू, कुरग (कर्नाटक) की, सुंदर, कालिज में अध्ययनरत, विधवा हेतु वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7770, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, खंडेलवाल दिगंबर जैन, एम. ए. अध्ययनरत, 145 सें. मी., गौरवर्ण, गृहकार्य दक्ष, सुशील, मृदुभाषी कन्या हेतु सुसंपन्न, सुसंस्कृत, सजातीय, योग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7771, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, अग्रवाल गोयल, बी. ए. बी. एड., सेवारत, 158 सें. मी., गेहुआं वर्ण, बहेज विरोधी, शिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7772, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, मैट्रिक, गौरवर्ण, गृहकार्य दक्ष, राजपूत कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य, स्वावलंबी, बहेज विरोधी वर चाहिए. आदर्श विवाह. विधुर विचारणीय. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 7773, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, बोहरा, बी. ए. अध्ययनरत, गोरा रंग, कद 160 सें. मी., गृहकार्य में दक्ष, सुशील कन्या हेतु इंजीनियर, प्रोफेसर, सेना अधिकारी या अन्य कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7774, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, केसरवानी, वैश्य, पीएच. डी., क्लीनिकल बॉयोकेमिस्ट पद पर कार्यरत, 148 सें. मी., गेहुआं रंग, आकर्षक, गृहकार्य कुशल, सर्वगुण कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, सी. ए. या उच्च पदस्थ वर चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं. 7775, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, अग्रवाल, ग्रेजुएट, संभ्रांत परिवार, स्वस्थ, गृहकार्य में निपुण, विधवा (6 वर्षीया पुत्री) के विवाह हेतु 35-40 वर्षीय, सेवारत, सुशिक्षित, कुलीन हिंदू विधुर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7776, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, राजपूत, एम. ए. (फाइनल) अध्ययनरत, सुंदर, 164 सें. मी., मृदुभाषी, गृहकार्य दक्ष, जिस का सीधे हाथ का अंगूठा व इंडेक्स उंगली के नाखून बचपन में ही कट गए हैं, कन्या के लिए उच्च शिक्षित, सुंदर, कार्यरत, सुयोग्य, बहेज विरोधी,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सजातीय वर चाहिए. अच्छा व शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 7777, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, सक्सेना, ग्रेजुएट, निस्संतान तलाकशुदा हेतु कायस्थ, अविवाहित या विधुर वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7778, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, श्रीवास्तव, एम. ए. (प्रथम श्रेणी), लेक्चरर, शोधकार्य एवं कानून में अध्ययनरत, 159 सें. मी., गौरवर्ण, सुंदर कन्या के लिए डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर या उच्च सेवारत, सजातीय वर चाहिए. पिता अवर न्यायाधीश. लिखें: वि. नं. 7779 सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, सक्सेना कायस्थ, कद 160 सें. मी., सांवली, सुंदर, सुघड़, बी. ए. एलएले. बी. कन्या हेतु स्वजातीय, कुमाऊं वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7780, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, 157 सें. मी., माथुर वैश्य, बी. ए., सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, गौरवर्ण, सुशील कन्या हेतु सम्मानित वैश्य परिवार के प्रशासकीय सेवारत, व्यापाररत, इंजीनियर, डाक्टर सुयोग्य वर की आवश्यकता है. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. उत्तम विवाह. पिता उच्च प्रतिष्ठित सरकारी प्रबंधक. प्रथम बार में ही संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 7782, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, कायस्थ, पोस्ट ग्रेजुएट, 150 सें. मी., शाकाहारी कन्या हेतु उपयुक्त वर की आवश्यकता है. लिखें: वि. नं. 7784, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीया, हाई स्कूल, निस्संतान तलाकशुदा, खातेपीते परिवार की सुदर्शनी कन्या हेतु कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7830, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वर के लिए

28 वर्षीय, सक्सेना कायस्थ, कद 170 सें. मी., सांवले, उच्च शिक्षित, प्रतिष्ठित साप्ताहिक पत्र के संपादक, मासिक आय 500 वाले युवक हेतु सुशिक्षित, स्वजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 7781, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23½ वर्षीय, 170 सें. मी., माथुर वैश्य, एम. काम., उत्साही, व्यावसायिक, मासिक आय चार अंकों में, स्मार्ट नवयुवक के लिए स्मार्ट, शिक्षित, गोरी वधू की आवश्यकता है. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. प्रथम बार में ही संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 7783, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, शांडिल्य ब्राह्मण, पोस्ट ग्रेजुएट युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. केवल ब्राह्मण, कायस्थ, क्षत्री और वैश्य ही लिखें. घरजवाई बनाने वाले को वरीयता. लिखें: वि. नं. 7785, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, समृद्ध, प्रतिष्ठित, अग्रोतरी परिवार के मैकेनिकल इंजीनियर, मांगलिक युवक हेतु सुंदर, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील वधू चाहिए. लिखें: 7786, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, सिंचाई विभाग सेवारत, विधुर (दो संतानें) हेतु सजातीय वधू चाहिए. बाल विधवा स्वीकार्य. लिखें: वि. नं. 7787, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, वैश्य, एकाकी, कवि, राजकीय प्रतिष्ठित पद पर सेवारत, आय 600, अविवाहित हेतु लिए 35-40 वर्षीया, शिक्षित, अविवाहित अथवा निस्संतान विधवा/तलाकशुदा चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7788, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, डिग्री कालिज के प्रोफेसर, तलाकशुदा (पहली पत्नी मानसिक रूप से विकृत) हेतु जीवनसंगिनी चाहिए. निस्संतान विधवा अथवा तलाकशुदा भी स्वीकार्य. गरीब और बेसहारा को प्राथमिकता. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7789, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, पुरबार, सुंदर, स्वस्थ, कद 168 सें. मी., बी. ए. एलएल. बी., मासिक आय चार अंकों में युवक के लिए अति सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. दहेज बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 7790, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, कश्यप कहार, एम. ए. उत्तीर्ण वर हेतु सुंदर, सजातीय, बी. ए. वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 7791, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, कुर्मी, सुंदर, मासिक आय 1100 रुपए, राजपत्रित अधिकारी हेतु अति सुंदर, गौरवर्ण, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 7792, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, गर्ग अग्रवाल, इंजीनियरिंग डिप्लोमा पास, राजस्थान राजकीय सेवारत, 500, संपन्न परिवार, इकहरा बदन युवक हेतु सजातीय, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 7793, सरिता, नई दिल्ली-110055.

39 वर्षीय, गौड़ ब्राह्मण, 170 सें. मी., गौर रंग, स्वस्थ, रेलवे सेवारत, मासिक 500, तलाक (तीन बच्चे) हेतु सुयोग्य जीवनसंगिनी चाहिए. विधवा, तलाकशुदा, बांझ स्वीकार्य. लिखें: वि. नं. 7794, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, संपन्न, अग्रवाल, बंसल गोत्र, 17 सें. मी., राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यरत, गौरवर्ण, स्मार्ट सुंदर, स्मार्ट युवक हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित, कुशल गृहकार्य में दक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 7795, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, कानपुर निवासी, चमार इंजीनियर के लिए सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 7796, सरिता, नई दिल्ली-110055.

46 वर्षीय, सरयूपारी ब्राह्मण, सेवारत, 300 अविवाहित हेतु सजातीय, विधवा, परित्यक्ता,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवनसाथी चाहिए. लिखें : वि. नं. 7797, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, इंजीनियरिंग में डाक्टरेट, 157 सें. मी., दिल्ली वरिष्ठ ग्रेड I अफसर, सभी सुविधाएं, आय 2000, युवक हेतु शिक्षित, गोरी, सुंदर, स्लिम कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7798, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तव, 25, स्नातक, बैंक कार्यरत, दिल्ली, 700 रुपए, निजी आवास, आकर्षक, गौरवर्ण नवयुवक हेतु विशेषरूपेण सौंदर्य युक्त, गोरी वधू वांछनीय. लिखें : वि. नं. 7799, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, एम. ए. बी. एड., हाथपैर कुछ कमजोर युवक हेतु स्वस्थ कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7800, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, माहेश्वरी, मैकेनिकल इंजीनियर हेतु सुंदर, सुयोग्य जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें : वि. नं. 7801, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, बंगाली ब्राह्मण, कद 148 सें. मी., इंटरमीडिएट युवक हेतु साधारण पढ़ीलिखी, गृहकार्य में निपुण, छोटे कद की कन्या चाहिए. जाति, प्रांत बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें : वि. नं. 7802, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, डिग्री कालिज लेक्चरर, तलाकशुदा हेतु अति सुंदर कुमारी चाहिए. लिखें : वि. नं. 7803, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35 वर्षीय, पंजाबी खत्री, सरकारी सेवारत, 700 रुपए हेतु कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7804, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, अग्रवाल गर्ग, 163 सें. मी., 58 कि., इंटरमीडिएट, सुंदर, निजी व्यापार, आय चार अंकों में युवक हेतु वैदिक परिवार की सुंदर, शिक्षित, गृहकार्य दक्ष वधू चाहिएं. लिखें : वि. नं. 7805, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, वैश्य, ग्रेजुएट, निजी मकान, सरकारी सेवारत, मासिक आय 500/- परित्यक्त हेतु जीवनसाथी चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7806, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, सुंदर, स्वस्थ, गोयल (अग्रवाल बोसा), 168 सें. मी. लंबाई, निजी लोहे के व्यापार में रत, मासिक आय चार अंकों में संभ्रांत परिवार के युवक हेतु सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 7807, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, पंजाबी खत्री, यू. पी. में निजी कार्य, आय चार अंकों में, कद 183 सें. मी., युवक के लिए वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 7808, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37 वर्षीय, हिंदू ब्राह्मण, यूनिवर्सिटी प्रोफेसर, मासिक वेतन 1500 अविवाहित हेतु सुंदर, शिक्षित, लंबी, मुसलमान वधू चाहिए. धर्म परिवर्तन नहीं होगा. सिविल मैरिज. गुजरात, महाराष्ट्र तथा लखनऊ निवासी को प्राथमिकता. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7809, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, प्रतिष्ठित आर्य परिवार के मित्तल गोत्रीय, स्वस्थ, सुंदर, सुशिक्षित, बाहिने पैर में बचपन से पोलियो का मामूली प्रभाव (देखने व चलने में खास महसूस नहीं), पारिवारिक आय स्पत अंकों में, युवक के लिए स्वस्थ, सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. बिलकुल सादा विवाह. लिखें : वि. नं. 7810, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, सिंगल गोत्रीय, स्वस्थ, सुंदर, डबल मांगलिक, बी. एं. बी. एल. बी., हरियाणा के निवासी व अब कलकत्ता में स्थित, सुप्रसिद्ध गुप्ता परिवार के, परिवहन एवं चाय के थोक व्यापार में संलग्न, पारिवारिक आय लगभग सात अंकों में, युवक के लिए अति सुंदर, सुशिक्षित, विनयशील कन्या की आवश्यकता है. दान दहेज की कोई आकांक्षा नहीं. केवल उच्च श्रेणी की कन्या के लिए विज्ञप्त. संपर्क करें. लिखें : वि. नं. 7811, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, ग्रेजुएट, कार्यरत, राजपूत युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 7812, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, पंजाबी धीमान, सुंदर, बी. काम., कद 173 सें. मी., अपना कारोबार, संपन्न परिवार के युवक हेतु सुंदर, गोरी पढ़ीलिखी कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें : वि. नं. 7813, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, संपन्न, अग्रवाल जैन बंसल गोत्र, निजी जायदाद, 167 सें. मी., हायर सैकंडरी, निजी व्यापार, मासिक आय उच्च चार अंकीय, गौरवर्ण, स्वस्थ, सुंदर, स्मार्ट युवक हेतु गौरवर्ण, सुंदर, प्रतिभावान, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7814, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, सारस्वत ब्राह्मण, ग्रेजुएट, इंजीनियर युवक के लिए सुंदर, सुशील, शिक्षित कन्या चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 7815, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यू. पी. के दो खत्री भाइयों, बड़ा, 58 वर्षीय, देखने में 45 वर्ष से कम, सुंदर, अच्छे स्वभाव का, एल. आई. सी. अफसर, मासिक 1700 रुपए, निस्संतान तलाकशुदा तथा छोटा, 52 वर्षीय, जनरल इंशोरेंस से लगभग 500 रु. पाने वाले तथा किराए की आमदनी, अविवाहित के लिए अच्छे स्वभाव की घरेलू जीवनसंगिनी चाहिए. 1½ लाख की कावल शहर में संपत्ति में दोनों भाइयों का हिस्सा. विधवा को प्राथमिकता. दहेज नहीं. शीघ्र सादा विवाह. लिखें : वि. नं. 7816, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, विश्वकर्मा, एम. एससी., एकाकी, सरकारी संस्थान में कार्यरत, वेतन 900 रुपए युवक हेतु सुंदर वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. अति सादा विवाह. लिखें : वि. नं. 7817, सरिता, नई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन पद पदार्थ पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी

दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, अग्रवाल, डाक्टर, एम. बी. बी. एस. डी. सी. एस. नवयुवक हेतु सुंदर, मैडिको, अग्रवाल वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 7818, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, संपन्न जैन परिवार के राजस्थान राज्य सेवा में कार्यरत, डाक्टर युवक के लिए मैडिको वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 7819, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, अति सुंदर, स्पोर्ट्स मैन, सक्सेना, म. प्र. में राजपत्रित अधिकारी, मासिक आय 1250, इलैक्ट्रिकल इंजीनियर के लिए उच्च घराने की अति सुंदर वधू चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7820, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, अग्रवाल बंसल, ग्रेजुएट, स्मार्ट, व्यापाररत, मासिक आय चार अंकीय, विधुर (तीन पुत्र आत्मनिर्भर) हेतु वधू चाहिए. निस्संतान विधवा विचारणीय. दहेज नहीं. लिखें: वि. नं. 7821, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, गर्ग अग्रवाल, एकाउंटेंट एवं जीवन बीमा एजेंट, मासिक आय 2500 ससंतान विधुर हेतु निर्धन, वयस्क कुमारी, निस्संतान विधवा/परित्यक्ता, सजातीय गुणवती जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि. नं. 7822, सरिता, नई दिल्ली-110055.

44 वर्षीय, सनाढ्य ब्राह्मण, प्रतिष्ठित, पी. डब्ल्यू.डी. में सब इंजीनियर एवं निजी व्यापार, विधुर हेतु गृहकार्य में निपुण, सुशील, सुंदर, मधुरभाषी, अविवाहित, निस्संतान विधवा, परित्यक्ता वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 7823, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, वैश्य, इलैक्ट्रोनिक्स इंजीनियर, सुंदर, कद 177 सें. मी., निजी व्यवसाय से मासिक आय चार अंकों में, वर हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. शीघ्र सविवरण लिखें: वि. नं. 7824, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, पोस्ट ग्रेजुएट, शासकीय सेवारत, मासिक आय 1200 रुपए, कद 175 सें. मी., आकर्षक, अविवाहित युवक हेतु गौरवर्ण, सुंदर, अविवाहित कन्या चाहिए. जिन्हें जाति, धर्म बंधन नहीं वे ही पूर्ण विवरण के साथ लिखें: वि. नं. 7825, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, प्रशासनिक पद पर नियुक्त, मासिक 800, नेत्रहीन युवक के लिए कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 7826, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीय, अविवाहित, अग्रवाल, इंजीनियर कार्यरत युवक के लिए सजातीय, सुशील, सुंदर, निपुण, अच्छे घर की मध्य प्रदेश निवासी युवती चाहिए. लिखें: वि. नं. 7827, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, सुन्नी मुसलिम, मर्चेंट नेवी में कार्यरत, मासिक वेतन 1300 रुपए युवक हेतु सुगृहणी, कम शिक्षित, सुंदर, मुसलिम कन्या चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7828, सरिता, नई दिल्ली-110055.

[illegible] वर्षीय, एम. ए. एलएल. बी., एम.बी. बी. एस., प्रतिष्ठित राजपूत परिवार के सुंदर, युवकों हेतु उच्च परिवार की सुंदर, ग्रेजुएट राजपूत [illegible] वधुएं चाहिए. लिखें: वि. नं. 7829, सरिता, नई दिल्ली-110055.

[illegible] वर्षीय, स्टेट कारपोरेशन अफसर, [illegible] चार [illegible] य, स्मार्ट युवक हेतु सुंदर वधू चाहिए. [illegible] एवं [illegible] बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7833, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, हलवाई, एम. एससी., [illegible] 173 सें. मी., बिहार निवासी, वेतन 800 रुपए, डिमोंस्ट्रेटर के लिए सुशिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. दहेज नहीं. लिखें: वि. नं. 7834, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38 वर्षीय, सिंगल बीसा अग्रवाल पंजाबी अति उच्च कोटि के धनाढ्य ससंतान विधुर हेतु संभ्रांत परिवार की परित्यक्ता, विधवा चाहिए. अविवाहित भी विचारणीय. प्रथम पत्र में पूर्ण विवरण लिखें. वि. नं. 7709, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

भवन निर्माण व देखरेख के लिए अनुभवी ओवरसियर चाहिए. मासिक वेतन 750/- से आवेदन करें: वि. नं. 7584, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बुनाई, कढ़ाई, सिलाई, हस्तकलाओं आदि में कुशल महिलाओं की आवश्यकता है. दिल्ली में पार्ट टाइम कार्य. आवेदन करें: वि. नं. 7587, सरिता, नई दिल्ली-110055.

घर की देखभाल के लिए 40-50 वर्ष की निस्संतान, बेसहारा, स्वस्थ, ईमानदार, होशियार हिंदी भाषी, शाकाहारी, साधारण शिक्षित परिचारिका की आवश्यकता है. अनुभवी नर्स को प्राथमिकता. भोजन, वस्त्र तथा उचित वेतन उपलब्ध. पूर्ण विवरण सहित स्वीकार्य वेतन लिखें: वि. नं. 7705, नई दिल्ली-110055.

घर, बच्चों की देखभाल हेतु 28-30 वर्ष की महिला चाहिए. सुविधाएं उपलब्ध. विवरण शीघ्र लिखें: वि. नं. 7831, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रोजगार चाहिए

क्या आप एक ईमानदार, चरित्रवान, विश्वसनीय योग्य ड्राईविंग एवं टाईपिंग करने वाले ग्रेजुएट [illegible] युवक की खोज में हैं जो आप के सहायक के रूप में [illegible] तथा बाहर मदद कर सके. उचित वेतन लेकर लिखें: वि. नं. 7832, सरिता, नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफ़ेदी ऐसी चकाचौंध कि जो भी देखे, वो बोले...

यह है

डेट

डिटर्जेण्ट टिकिया की धुलाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

R.N. 625/57
Regd. No. D-(C)-106

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

नन्हे मुन्ने
प्यार चाहते, प्यार मिले तो बढ़ते जा
प्यार का उपहार
पारले ग्लुको
स्वाद में निरा
शक्ति से भरपू
दूध, गेहूं, शक्कर और
ग्लूकोज़ के स्वाद और पौष्टिक
गुणों से भरपूर.
पारले
ग्लु को
भारत के सबसे ज़्यादा बिकनेवाले बि
—वर्ल्ड एवार्ड विजेता.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंक : 557 जुलाई (प्रथम) 1978

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक

संपादक व प्रकाशक

विश्वनाथ

कथा साहित्य

बा की बेटी	कुसुम नांदे	51
प्रेरणा	सुषमा माथुर	56
सेनानी	कुसुम गुप्ता	63
देवलोक में आधुनिकी...	मनमोहन नवाब	[illegible]
स्टैंडर्ड	साधना चतुर्वेदी	131
अपने लोग	योगींद्र द्विवेदी	138
सलाह लीजिए	सरल जैन	151
विचित्र धंधा	सत्यकुमार	154
पप्पा फार सेल	छाया श्रीवास्तव	164

लेख

आगरा में हिंसा	विशेष प्रतिनिधि	23
उ. प्र. में पंचायती राज	अजेयकुमार गोयल	31
क्या वेदों में इतिहास...	रामसरूप शास्त्री	37
कर्म और फल	देवकीनंदन टिबरेवाल	45
हमारी कानून व्यवस्था	हेमंत नायक	47
रणकपुर	प्रदीप सोनी	84
कंबीनेशन सूट	...	94
क्या आप का बच्चा	नरेंद्र म. आहलुवालिया	98
केशों की संवार	रानी वग्गा	103
समय की पुकार	रामानुज गिल्डा	110
छोले भटूरे	मंजु नागोरी	115
आप की सिलाई मशीन	आलोक मिश्र	119
मद्रास	लक्ष्मीकांत सरस	124
अच्छे गुलाब कैसे...	कृष्णदास चौधरी	145
सफर के दौरान सावधान	कुलजीतसिंह	147
हिंदी फिल्मों को अपना...	बद्रीप्रसाद	177

कविताएं

विरोधाभास	अशोककुमार कुमठ	44
लोग	तारादत्त निर्विरोध	69
आषाढ़ी बादल	हेमंत	83

स्तंभ

आप के पत्र	11
सरित प्रवाह	19
हमारी बेड़ियां	36
जीवन की मुसकान	50
यह भी खूब रही	61
ये पति	79
ये पत्नियां	82
श्रीमतीजी	90
पासा पलट गया	93
मुझे शिकायत है	102
नए पकवान	116
पाठकों की समस्याएं	144
बच्चों के मुख से	162
इन्हें भी आजमाइए	176
चंचल छाया	183

सरिता शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है. सरिता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस समाचार पत्र द्वारा सुरक्षित हैं. इसलिए बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रेस समाचार पत्र के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स. प. प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

प्रकाशनार्थ भेजी गई रचनाओं की सुरक्षा के लिए कार्यालय उत्तरदायी नहीं है. टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएं लौटाई जाएंगी.

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : 3-ई रानी झांसी रोड, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055

एक प्रति : 2.20 रु. वार्षिक : 42 रु. विदेशों में : एक वर्ष (समुद्री डाक से) : 80 रु.

आवरण : जगमोहन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

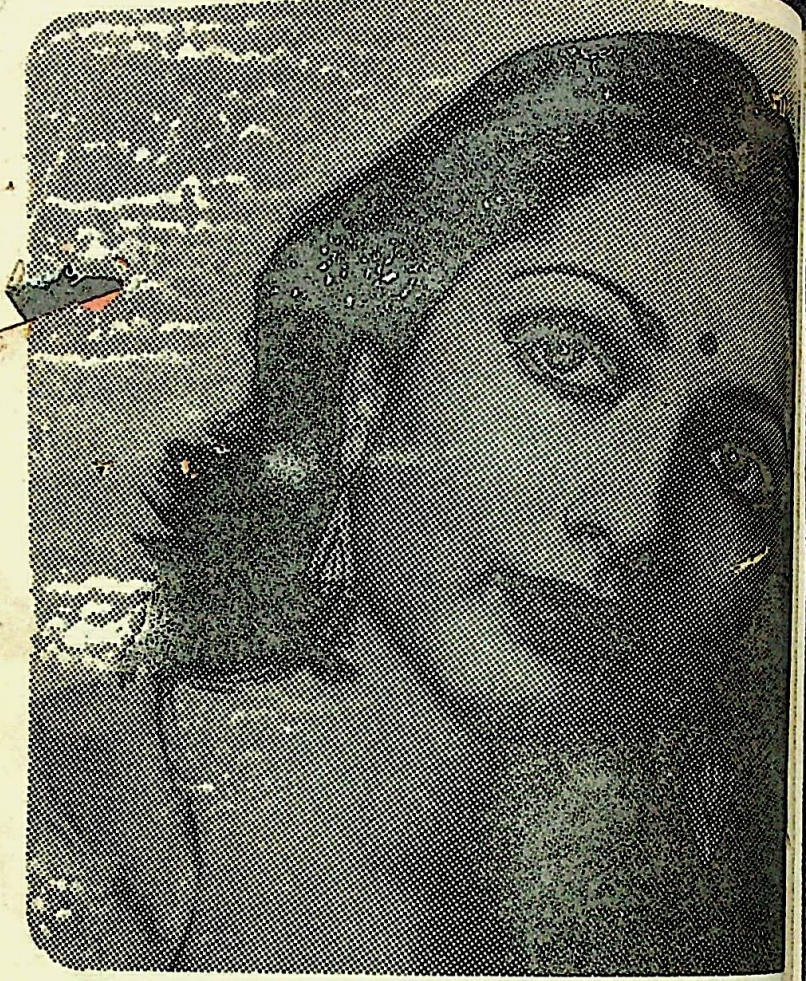

क्या आपकी त्वचा आपकी परेशानी का कारण है

बोरोलीन

ऐन्टिसेप्टिक सुगन्धित क्रीम इस परेशानी को दूर करने
आपकी मदद करेगी। बोरोलीन जाड़े में त्वचा की सूख
और गर्मी में सुखी-तपी त्वचा का सुरक्षा करती है। छोटे-मो
घावों और फोड़े-फुन्सियों को ठीक करने में सहायता पहुँ
है। नियमित इस्तेमाल से बोरोलीन आपकी त्वचा को स्व
और हर तरह की परेशानी से मुक्त रखती है। त्वचा की
सुरक्षा के लिये हर मौसम में इस्तेमाल कीजिये बोरोलीन

जी॰डी॰ फार्मास्यूटिकल्स लि॰, बोरोलीन हाउस, कलकत्ता-900

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक सुकुमार साथी कोमल और मुलायम सेनिटरी टावेल

आखिर कॉम्फिट सेनिटरी टावेल ही दुनिया में सबसे ज़्यादा लोकप्रिय क्यों है? क्योंकि यह सेनिटरी टावेल बहुत ही मुलायम है और इसमें सोखने की भी ज़्यादा क्षमता है, साथ ही यह हल्का भी इतना है कि आपको बिल्कुल महसूस ही नहीं होता. सबसे बड़ी बात यह है कि कॉम्फिट को तरह की साफ़-सफ़ाई के साथ और स्वास्थ्यप्रद वातावरण में बनाए जाते हैं, इसीलिए पूरी तरह उपयोगी और स्वास्थ्यानुकूल हैं. कारण, ये भारत के अत्याधुनिक और आधुनिक प्लांट में बनते हैं जिसे स्वीडन के किम्बरली होडन का सहयोग प्राप्त है.

कॉम्फिट को अपनी पसंद बनाइए. सुकुमार सुरक्षा, कॉम्फिट की जिम्मेदारी है.

कॉम्फिट आपकी हिफ़ाज़त करे

Dazzal
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिसकी दो-चार बूंदे, किटाणुओं का नाश कर दें.

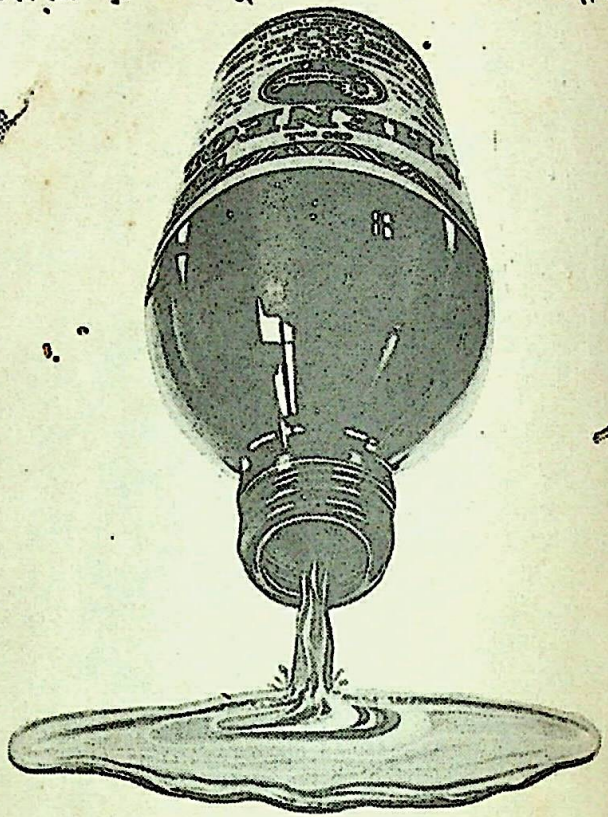

बंगाल केमिकल का
लैम्प ब्राण्ड

फिनियल

- घना किटाणुनाशक : कुछ बूंदे ही (बाल्टीभरे पानी को सफेद कर देने में सक्षम) लाखों किटाणुओं का नाश कर देती हैं. कम से कम खर्च में अधिक फायदा.
- इसकी तीव्र गंध से तिलचट्टे, मक्खियां, चीटियां एवं अन्य घरेलू कीड़े-मकोड़े तुरन्त दूर भागते हैं. दुर्गंध को भी काटती है.
- घरों, हस्पतालों, क्लिनिक, जनसुविधाओं, कार्यालयों, कल-कारखानों और अन्य औद्योगिक प्रतिष्ठानों में आदर्श उपयोगी.
- ४५० मि०लि० की बोतलों और ४ व २० लिटर के डिब्बों में उपलब्ध.

ASP/BC-1/78

बंगाल केमिकल का फिनियल
—समय की परीक्षा पर खरा उतरनेवाला घना किटाणुनाशक.

बंगाल केमिकल एन्ड फार्मेस्युटिकल वर्क्स लि०
(भारत सरकार के उद्योग मंत्रालय के अधीन)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Styles and Stars
Styles and Stars

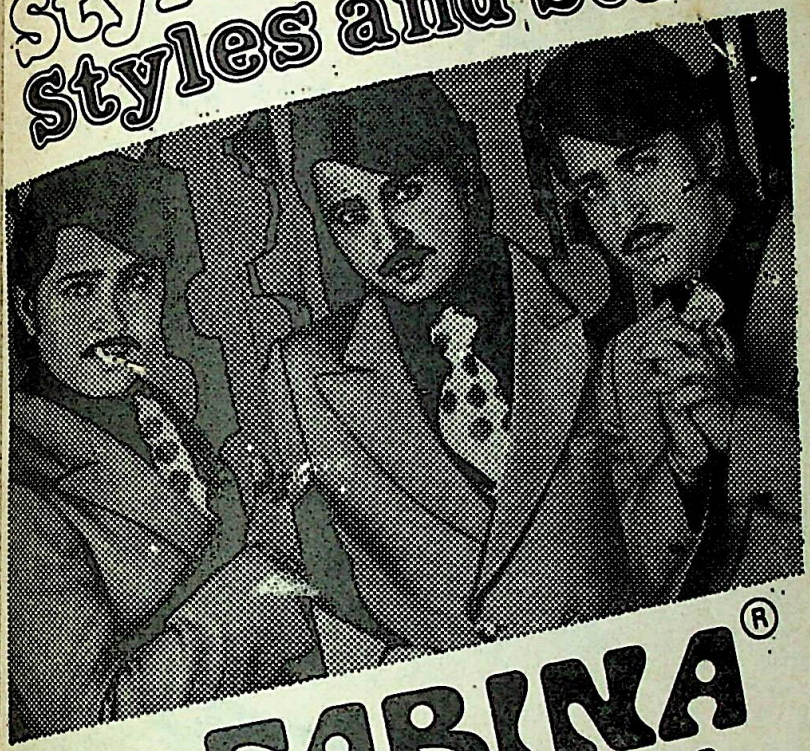

FABINA®

सूटिंग्स और शर्टिंग्स

फैशन की नयी दुनिया में आगे चलनेवाले लोग हमेशा पसंद करते हैं—FABINA क्योंकि फेबीना की क्वालिटी लाजवाब है और इसकी अनोखी शान बेमिसाल है—४०० डिजाइनों, और टेक्स्चर में से चाहे जो पसंद कीजिए। हकीकत तो यह है कि आज इसकी माँग इतनी बढ़ गई है कि अब तक फेबीना ने लाखों मीटर कपड़ा बनाया है—जिससे सारी दुनिया को घेरा जा सकता है।

JAISONS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नये कोलगेट ट्रायगार्ड टूथब्रश से अपने दांतों की तीन प्रकार से पूरी रक्षा कीजिए

कोलगेट ट्रायगार्ड आपके दांतों की तीन प्रकार से पूरी रक्षा के लिए खास तौर से बनाया

1 दांतों के एनेमल की रक्षा

दंत एनेमल खाद्य अम्ल और कैविटी आपके दांतों की रक्षा करते हैं। कोलगेट ट्रायगार्ड टूथब्रश बिना नुकसान पहुंचाए सतह को साफ करता है।

2 दांतों पर जमी परत से संक्रमण

दांतों पर जमी परत से दुर्गन्ध व मसूड़ों के रोग हो सकते हैं। कोलगेट ट्रायगार्ड टूथब्रश के सही आकार के नोक दांतों पर जमी परत को पूरी तरह निकालने में मदद करते हैं।

3 मसूढ़ों की रक्षा

मसूढ़ों को स्वस्थ बनाये रखने के लिए सौम्य मालिश की जरूरत पड़ती है। कोलगेट ट्रायगार्ड टूथब्रश के मृदु आपके मसूढ़ों की बिना क्षति पहुंचाए करते है।

CTB.G-16 HN

आपके परिवार हरेक के लिए म द किस्मों

कोलगेट
ट्रायगार्ड
दांतों के डाक्टर कहते हैं
एक अच्छे टूथब्रश
तीन गुण होते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मई (द्वितीय) अंक के 'सरित प्रवाह' में निजी जीवन में बढ़ते हुए सरकारी हस्तक्षेप पर संपादकीय टिप्पणी प्रशंसनीय है किंतु क्या सरकारी छंटनी द्वारा भ्रष्टाचार समाप्त हो जाएगा? निजी प्रतिष्ठान भी भ्रष्टाचारमुक्त नहीं हैं. न्यूनतम वेतन नियमों को कितने मानते हैं? अधिकांश व्यक्ति तो बिना लिखापढ़ी के ही काम करने को तैयार हो जाते हैं.

जब बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप में खड़ी है तो सरकारी छंटनी इस समस्या को और अधिक बढ़ाएगी.

जटिल नियमों को सरल करने और भ्रष्ट लोगों को पकड़ने से भ्रष्टाचार की समस्या किसी सीमा तक सुधर सकती है. सरकारी कर्मचारी यदि काम नहीं करते तो उत्तरदायित्व प्रशासन का है, जिस में वास्तविक भ्रष्ट व्यक्ति अपवाद रूप में ही दंडित होते हैं. —कमलेश के. सक्सेना

✦

एक ओर जहां 'सरिता' समाज में फैले अंधविश्वासों एवं बुराइयों को दूर करने तथा व्यक्तिगत चरित्र को निखारने में सहायक है वहीं दूसरी ओर अप्रैल (द्वितीय) अंक के 'सरित प्रवाह' के अंतर्गत 'नशाबंदी' के साथसाथ लाटरी का भी धंधा बंद कराने के लिए सरकार से प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि असली टिकट वाला (लाटरी की) सरकारी दफ्तरों के धक्के खाता रहता है, शायद कभीकभी मुश्किल से 'नवग्रह की पूजा' के बाद इनाम का कुछ अंश उसे मिल पाता हो. इस कथन से स्पष्ट है कि शायद अभी भी संपादक अंधविश्वासों से पूर्णरूपेण स्वतंत्र नहीं हैं तभी तो उन्होंने 'नवग्रह की पूजा' को इनाम पाने के लिए महत्त्वपूर्ण या फलदायक बताया है.

—राज. आर. शिरंगी

यहां 'नवग्रह की पूजा' का प्रयोग व्यंग्य के रूप में किया गया है, जिस का अर्थ है रिश्वत देना.

—संपादक

✦

अप्रैल (द्वितीय) अंक में इसी स्तंभ के अंतर्गत नरेशचंद्र शुक्ल का पत्र पढ़ा. उन्होंने लिखा है कि नशाबंदी के लिए भी जन जागृति जरूरी है, लेकिन यह नहीं स्पष्ट किया कि यह जागृति किस प्रकार लाई जाए. —हरीशकुमार अवस्थी

✦

अप्रैल (द्वितीय) अंक के 'सरित प्रवाह' में फिलिस्तीनियों के विरुद्ध रवैया पक्षपातपूर्ण एवं द्वेषपूर्ण लगता है. वास्तविकता तो यह है कि फिलिस्तीनी, जिन्होंने विभिन्न अरब देशों में शरण ली है, दक्षिणी लेबनान में सब से अधिक संख्या में रहे हैं. यह राज्य भी इजराइल की कुदृष्टि का शिकार बन गया. मानवता का ढिंढोरा पीटने वाला अमरीका आज भी फिलिस्तीनियों को दरदर का भिखारी बनाए रखने में इजराइल की सहायता कर रहा है.

—मोतीलाल

✦

अप्रैल (द्वितीय) अंक में 'सरित प्रवाह' के अंतर्गत निवारक नजरबंदी विधेयक पर दिए गए तर्क से मैं सहमत नहीं हूं. आज के युग में एक चपरासी से काम लेना भी बहुत कठिन है क्योंकि वह अच्छी तरह जानता है कि केवल सरकारी नौकरी में पहुंचना तो दूभर है, पर उस के बाद तो ऐसा कोई नियम नहीं कि उसे कोई नौकरी से निकाल सके, हालांकि नियमों को सरल करने का अर्थ कर्मचारियों को सभी सुविधाएं उपलब्ध करवा कर अधिक कार्यक्षम बनाना है.

—मोहनलाल

इस के लिए मीसा कानून नहीं, श्रम कानून में परिवर्तन की आवश्यकता है. प्रबंधक को अधिकार होना चाहिए कि वह किसी भी कर्मचारी के विरुद्ध उचित अनुशासनिक कार्यवाही कर सके. जिस प्रकार किसी कर्मचारी को यह हक प्राप्त है कि वह जब चाहे नौकरी छोड़ सकता है, प्रबंधक को भी यही अधिकार होना चाहिए कि वह जब चाहे उचित नोटिस दे कर अयोग्य, अकर्मण्य और उद्दंड कर्मचारी को बरखास्त कर सके. इस के लिए बिना मुकदमा चलाए जेल भेजना आवश्यक नहीं.

—संपादक

✦

मई (प्रथम) अंक में 'भूलें और प्रायश्चित्त' (कहानी : मंजुल अग्रवाल) बहुत ही रोचक और रचनात्मक लगी. प्रस्तुत कथा में पुरुष को जितना सहनशील बताया गया है पत्नी को उतना घमंडी. पत्नी एक सुसंस्कृत परिवार से है. क्या ऐसा भी हो सकता है कि मातापिता के घर के एक भी अच्छे संस्कार की छाप बच्चों पर न पड़े? फिर भी कहानी में काफी प्रवाह है. यदि इसी प्रकार की सामाजिक व पारिवारिक कहानियां तथा लेख पढ़ने को मिलते रहें तो पाठकों को अपनेआप को सुधारने की प्रेरणा मिलती रहेगी.

—शंकरलाल अग्रवाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अप्रैल (द्वितीय) अंक में 'डूबती पतवार' (कहानी : शारदा छाबड़ा) में गृहस्थ जीवन के मनमुटाव का सजीव चित्रण किया गया है. इस कहानी को पढ़ कर ऐसी सभी स्त्रियां अपना गृहस्थ जीवन सुखी बना सकती हैं जिन्हें अमीर पति नसीब नहीं हुए हैं. वैसे भी भारतवर्ष में अमीर कम तथा मध्यम वर्गीय व गरीब अधिक हैं. यदि प्रत्येक स्त्री धनाढ्य की ही पत्नी बनना चाहे तो भारत में लगभग नब्बे प्रतिशत लड़कियां विवाह से वंचित रह जाएं.

विवाह के उपरांत प्रत्येक पत्नी को अपने पति द्वारा दी गई सुविधाओं में ही संतुष्ट रहना चाहिए. लेखिका ने ठीक ही कहा है कि लड़की को अपने गृहस्थ जीवन पर मायके वालों का अधिक प्रभाव नहीं पड़ने देना चाहिए.

—द्वारकानाथ मल्होत्रा

✦

'डूबती पतवार' काफी प्रेरणास्पद और प्रभावपूर्ण लगी. वास्तव में पत्नी को न तो इतना सहनशील होना चाहिए कि पति को परस्त्री रखने में जरा भी भय न हो और न ही उसे इतना कर्कश और अक्खड़ स्वभाव का होना चाहिए कि पति को बुरा रास्ता अपनाने को मजबूर होना पड़े. —सत्यप्रकाश गुप्त

✦

अप्रैल (द्वितीय) अंक में 'एक और भूल' (कहानी : लीला रूपायन) ने समाज के एक अंधकारपूर्ण पहलू का वास्तविक चित्र उजागर कर दिया है. कहानी के पात्र गौरी और रामदास जैसे कितने ही मांबाप अपनेआप को जिंदा रखने के लिए आरती जैसी बेटियों की खुशियों व उमंगों को बेरहमी से कुचल देते हैं.

—विनोदकुमार वर्मा

✦

अप्रैल द्वितीय अंक में 'हड़ताल' (कहानी : रमेशशंकर सक्सेना) हृदयस्पर्शी तथा शिक्षाप्रद लगी. हड़ताल की बीमारी हर जगह दीमक की तरह लगी हुई है.

कालिज, स्कूल, हस्पताल, बिजलीघर तथा अन्य सरकारी दफ्तरों में जहां देखो हड़ताल ही दिखाई देती है. लेकिन हड़ताल करने वाले यह नहीं सोचते कि उन के हड़ताल करने से दूसरों का कितना नुकसान होता है. —योगेश गोयल

✦

अप्रैल (द्वितीय) अंक में 'फिल्मों के बेतुके दृश्य' (लेख : श्रीशचंद्र मिश्र) में एक सही स्थिति पर प्रकाश डाला गया है. वास्तव में हिंदी फिल्मों के निर्देशक हमेशा ही बेतुके दृश्य फिल्मा कर दर्शकों का मनोरंजन करते हैं और ये निर्देशक नामीगिरामी होते हुए भी उलटासीधा कुछ भी ठूंस कर फिल्म बना डालते हैं.

'अमर अकबर एंथोनी' का ही एक दृश्य है. अंधी निरूपा राय के पीछे खलनायक पड़ी हैं. निरूपा राय भागतेभागते उस स्थान पर पहुंचती है जहां ऋषि कपूर साईं बाबा की मूर्ति में कव्वाली गा रहा है. वहां पहुंचते ही निरूपा राय की आंखों में रोशनी आ जाती है. है न वैज्ञानिकों के लिए जबरदस्त चुनौती? और जीवन तथा रंजीत जैसे पहुंचे हुए खलनायक भी (निर्देशक के आदेश पर) सिर्फ, एक लाठी को देख कर वहां से भागने को मजबूर हो जाते हैं.

और तो और फिल्म 'मेरे सजना' का एक दृश्य तो बहुत ही 'उच्चकोटि' का है. राखी, नवीन निश्चल की पत्नी है. करवा चौथ का व्रत रखे हुए है और पति की आरती उतारते हुए गीत गा रही है. लेकिन वाह रे निर्देशक! तेरा का कैमरा बारबार पूनम के चांद पर केंद्रित हो रहा है. अब आप कहें कि 'करवा चौथ' के लिए यह पूरा चांद कहां से आया?

—शैलेंद्रकुमार सिंह

✦

अप्रैल (प्रथम) अंक में 'दर्पण' (कहानी : कुसुम ठकार) पढ़ कर लगा कि शायद लेखक कल्पना के आकाश में उड़ान भरने लगे हैं. कहानी कोरी कल्पना पर आधारित है. वास्तविकता तो यह है कि लोग गुणों की अपेक्षा सुंदरता को अधिक महत्त्व देते हैं. अविनाश जैसा युवक लेखिका की कल्पना में ही आ सकता है, किसी गुणवान व सीधीसादी लड़की के जीवन में नहीं. —नीलिमा मित्र

✦

पश्चिम बंगाल सरकार ने अमरीकी पद्धति का अनुसरण कर के 1,50,000 युवकों को 500 रुपए बेरोजगारी भत्ता देने की योजना पेश की है. लगता है कि आंखों पर सत्ता मद की पट्टी बांध कर ऐसी नीति का प्रतिपादन किया गया है. अमरीका में भारत की अपेक्षा बेरोजगारी कम है. वहां बेरोजगारी भत्ता युवा शक्ति का हृास नहीं करता, जब कि भारत में इस से युवाओं को कर्म विमुख करने और अपने फर्ज से दूर ले जा कर अंत में राजनीतिक दलों के चंगुल में फंसाने की कोशिश की जा रही है. वे वर्तमान शासकों के शतरंजी मोहरे बन जाएंगे, क्योंकि बिना काम वाली धन राशि उन नौजवानों की जबान पर ताला डाल देगी जो प्रतिभा संपन्न हैं और हुनर कर गुजरना चाहते हैं.

इस की अपेक्षा यदि सरकार पानी, बिजली आदि की सुविधाएं दे कर गांवों में कृषि व उद्योग के अधिक कामधंधे खोल दे तो युवा शक्ति का कुछ न कुछ उपयोग किया जा सकेगा.

—शुकदेवनारायण [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्री रामास्वामी को एक ऐसी योजना की तलाश थी जो उनकी बड़ी हो रही लड़की की बढ़ती हुई आर्थिक आवश्यकताएँ पूरी कर सके

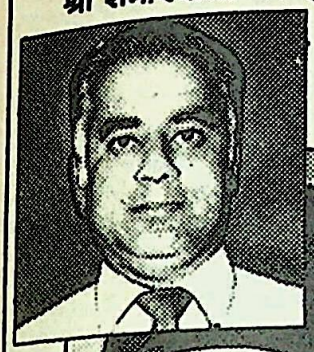

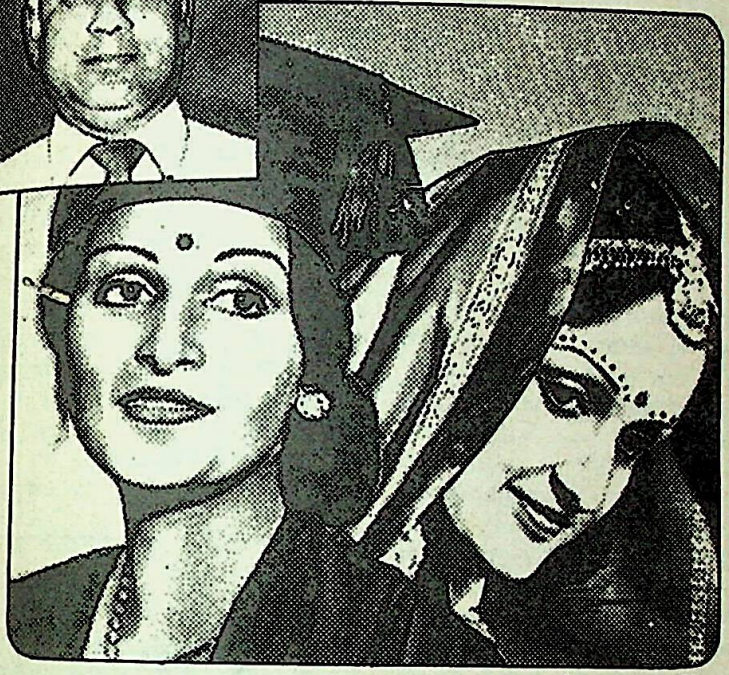

यह योजना मिली आन्ध्र बैंक से–उनकी महिलाओं के लिए सामाजिक सुरक्षा योजना। यह योजना उनकी बिटिया की शिक्षा, शादी और अपना ही व्यवसाय चलाने की आर्थिक आवश्यकताएँ पूरी करेगी।

श्री रामास्वामी के लिए तो आंध्र बैंक की महिलाओं के लिए सामाजिक-सुरक्षा योजना, बचत के लिए बनी-बनायी योजना मिल गयी। ऐसी बचत जो उनकी बिटिया की उम्र के साथ साथ बढ़ती जाय। जैसे जैसे बचत बढ़ेगी, उनकी लड़की की आर्थिक आवश्यकताएँ भी पूरी होती जाएंगी। उसकी शिक्षा, उसकी शादी और अगर उसमें साहस और सूझ है तो उसकी अपना ही व्यवसाय करने की योजना भी पूरी हो जायगी।

आंध्र बैंक के पास लगभग ५५ वर्षों का बैंक संबंधी अनुभव देशभर में ६०० से अधिक शाखाएँ तथा और भी कई योजनाएँ हैं, जैसे कल्पतरू, भाग्यलक्ष्मी, किसी बैंक, संरक्षा, संक्षेम, जनसहाय, कृषक सहाय, और गृहकल्प योजना। साथ ही, उद्योगों तथा कमजोर वर्गों समेत प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को अग्रिम राशि देने की व्यवस्था भी।

हर योजना आपकी आवश्यकता-अनुरूप सुनियोजित है।

आंध्र बैंक – आपको आवश्यकताएँ पूरी करने में सहायक बैंक

दि आन्ध्र बैंक लिमिटेड

पंजी. व केंद्रीय कार्यालयः
सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-५०० ००१

चेयरमेनः जी. स्वामीनाथ रेड्डी

KIRON/AB/78/12 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसी भी ऐतिहासिक उपन्यास में जब तक इतिहास को सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत नहीं किया जाता तब तक वह एक प्रभावशाली एवं उल्लेखनीय उपन्यास नहीं बन सकता. इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो जनवरी (प्रथम) अंक से सरिता में धारावाहिक रूप से प्रस्तुत 'तुंगभद्रा के आंसू' (उपन्यास : डा. प्रभात त्यागी) एक सशक्त ऐतिहासिक उपन्यास है. लेखक ने वैभवशाली विजय नगर राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में भारत के गौरवमय इतिहास व संस्कृति को निरूपित करने का प्रयास किया है.

सारे पात्र सजीव हो कर आंखों के आगे चलतेफिरते हैं : नंगल, काल निरपेक्ष भाव से भारतीय नारी की विडंबनाओं, विवशताओं और साथ ही विद्रोह का प्रतिनिधित्व करती है. इस लिए यह उपन्यास केवल उस काल का ही नहीं, आज का भी है.

लेखक ने मध्यकालीन पात्रों के जरिए आज की स्थितियों का तर्कसंगत विश्लेषण करने में दक्षता का परिचय दिया है. उपन्यास की प्रत्येक किस्त सरिता के आगामी अंक की प्रतीक्षा करने को बाध्य कर देती है. —संतोष व्यास

✦

मजदूरों के शोषण का उत्तरदायित्व स्वयं मजदूरों पर है. जब मालिक नेताओं की बात मानने को राजी हो जाता है तो मजदूर नेता अपना उल्लू सीधा करने से नहीं चूकते. मजदूरों को कानोंकान खबर नहीं लगती कि नेता वर्ग ने मालिकों के साथ मिल कर कौन सी खिचड़ी पकाई. नौबत यहां तक आ जाती है कि ऐसे नेता लोग अपना प्रभुत्व दोनों तरफ जमा लेते हैं. एक तरफ मालिक मुट्ठी में है तो दूसरी तरफ वे मजदूरों पर हावी रहते हैं.

यही नहीं, जिस यूनियन को एक बार मान्यता मिल जाती है, उसे बाद में मजदूर न चाहें तो भी हर मसले में उस यूनियन का हस्तक्षेप जरूरी समझा जाता है.

अभी तक भारत में जितने भी उद्योग बंद हुए हैं उन में कहीं न कहीं ऐसे नेताओं के ही हाथ रहे हैं. इन का तो कुछ नहीं बिगड़ता लेकिन बेचारे मजदूर रोजीरोटी से हाथ धो बैठते हैं.

—श्रीराम मालवीय

✦

'पाखंड महायज्ञ' पढ़ कर आश्चर्यचकित रह गया. धर्म के नाम पर लाखों रुपया पानी में बहा देने वाले इन लुटेरों का सामाजिक बहिष्कार किया जाना चाहिए. भारत जैसे विशाल देश में करोड़ों लोग भूखे रह रहे हैं और दूसरी ओर यज्ञों में लाखों रुपयों का अन्नादि जलाया जा रहा है. इस का जम कर विरोध होना चाहिए. असल में धर्म की आड़ में इन के आयोजक लाखों रुपए कमा रहे हैं. हवन कुंडों में [illegible] लाखों रुपयों को स्वाहा करने के बजाए [illegible] भारत के उन सैकड़ों गांवों में, जहां लोग [illegible] की सुविधा से वंचित हैं, कुएं खुदवा दिए [illegible] अथवा हैंडपंप लगवा दिए जाते तो वह [illegible] सही यज्ञ होता. —अरुणकुमार [illegible]

✦

'पाखंड महायज्ञ' अंधविश्वास व पाखंड [illegible] ज्वलंत उदाहरण है. हाल ही में हमारे दुर्ग [illegible] में भी 'गायत्री महायज्ञ' आरंभ हुआ है. [illegible] लकों के नाम में डाक्टरों के नाम देख कर [illegible] दुख हुआ. आज पढ़ेलिखे डाक्टर ही जब [illegible] प्रकार के अंधविश्वासों के जाल में आ गए [illegible] अनपढ़ ग्रामीण इस जाल से कैसे बच सकते [illegible]

यज्ञ ही नहीं, रामनवमी व दुर्गापूजा [illegible] त्योहार भी बड़े धूमधाम से मनाए [illegible] जिन में धन पानी की तरह बहा दिया जाता [illegible] समझ में नहीं आता कि लोग राम की पूजा [illegible] करते हैं, उन्हें देवता क्यों मानते हैं. उन्होंने [illegible] तो अन्य मनुष्यों की तरह जन्म लिया और [illegible] गए. उन के अच्छे कार्यों से प्रेरणा व सीख [illegible] जाए, यह तो ठीक है लेकिन उन की पूजा [illegible] की बात समझ में नहीं आती.

—डी. सत्यनारायण राव [illegible]

✦

सरिता के लेखक

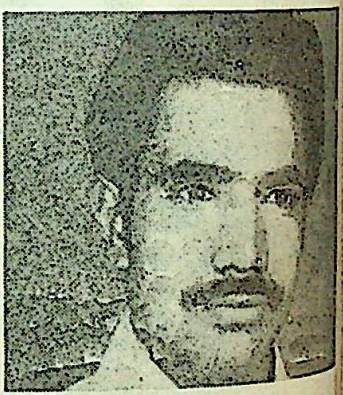

मनमोहन नवाब

इस अंक में प्रकाशित व्यंग्य [illegible] लोक में आधुनिकीकरण' के लेखक मनमोहन नवाब प्रमुखतः व्यंग्यकार ही [illegible] इस के अतिरिक्त ऐतिहासिक और [illegible] नीतिक विषयों में आप की रुचि [illegible] आजकल आप जनस्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, जोधपुर में कार्यरत हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब लीजिए स्वास्थ्यप्रद, स्वादिष्ट तरह तरह की चीज़ों के लिए ब्राउन एण्ड पोल्सन कस्टर्ड पाउडर.

झटपट तैयार होनेवाली चीज़ें हर रोज़ बनाइए...
सबसे पूछिए, तब कहीं बताइए!

इसे जमाइए. ब्राउन एण्ड पोल्सन कस्टर्ड पाउडर जमाइए और बड़ा मज़ेदार ब्लामांज तैयार. काजू, फलों या और किसी चीज से सजाइए!

ऊपर से डालिए. गाढ़ा···बढ़िया···पूरी तरह मिलाया हुआ. फलों या जेली पर ठण्डा डालिए. सादे स्पंज केक पर गर्मागर्म उड़ेलिए. मज़ा आ जाएगा.

चीज़ों को इससे गाढ़ी बनाइए. जब भी आप फालूदा, खीर, रबड़ी, आइस-क्रीम या पूरी और लड्डू भी बनाइए, थोड़ा ब्राउन एण्ड पोल्सन कस्टर्ड पाउडर मिलाइए—इन्हें ज़्यादा गाढ़ा, ज़्यादा मज़ेदार बनाइए!

ब्राउन एण्ड पोल्सन कस्टर्ड पाउडर अब २०० ग्राम के पैक में भी मिलता है

इसमें अण्डा बिल्कुल नहीं है.

ब्राउन एण्ड पोल्सन **कस्टर्ड पाउडर**

ज़्यादा क्रीमभरा, ज़्यादा मुलायम, ज़्यादा स्वादिष्ट

कार्न प्राडक्ट्स कं. (इण्डिया) लि.

OBM-8549 R/HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केयरफ़्री* संरक्षण

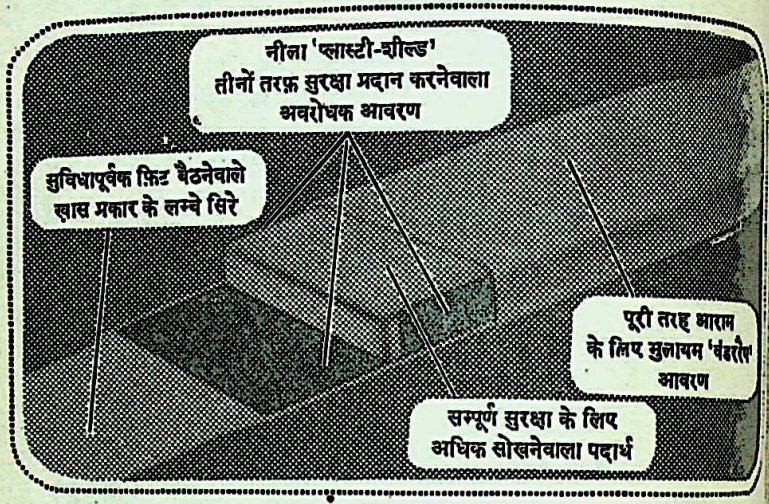

मतलब पूरी सुरक्षा
और आप इसके लिए जितनी भी रकम खर्च करती हैं केयरफ़्री सुरक्षा उससे कहीं ज़्यादा मान रखती है।

हर महीने मासिक धर्म के पाँच दिनों में महिलाओं के शरीर को एक विशेष प्रकार की सुरक्षा की ज़रूरत होती है, जिस पर वह पूरी तरह भरोसा कर सकें: और वह है केयरफ़्री संरक्षण। सैनिटरी-संरक्षण के क्षेत्र में संसार भर में अग्रणी जॉन्सन एण्ड जॉन्सन द्वारा तैयार किये जाने वाले केयरफ़्री में वे सारे गुण और बेमिसाल ख़ूबियाँ हैं जो महिलाओं को पूरी सुरक्षा प्रदान करती है।

विशेष 'वंडररैप' आवरण

इसके कारण केयरफ़्री का आकार वैसा का वैसा बना रहता है ... साधारण नैपकिनों की तरह मुड़ता या ऐंठता नहीं। यह अपनी भीतरी तहों में सारी नमी सोख लेता है। अत: आपकी त्वचा हमेशा सूखी रहती है और आप बहुत ही आराम महसूस करती हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीला 'प्लास्टी-शील्ड' अवरोधक
सिर्फ़ सामने की सतह को छोड़कर केयरफ़्री की बाकी तीन सतहों पर (नीचे तथा अगल-बगल) सुरक्षापूर्ण पोलिथिन का एक स्तर लगा रहता है, जिसके कारण न तो स्राव के बह निकलने का डर रहता है, न आपके कपड़ों पर दाग पड़ने का ख़तरा।

अधिक सोखनेवाला पदार्थ
अच्छी तरह सारी नमी सोख लेता है और पूरे विश्वास के साथ सुरक्षा प्रदान करता है।

सुविधापूर्वक फ़िट बैठनेवाले लम्बे स्ट्रिप: सिर्फ़ केयरफ़्री नैपकिन ही एक ऐसी एडजस्टेबल लम्बाई में उपलब्ध हैं, जो आपके शरीर पर अच्छी तरह फ़िट बैठते हैं। हर पैक में एक केयरफ़्री बेल्ट मुफ़्त मिलती है।

फ़्लश करने में आसान
केयरफ़्री को आसानी से फ़्लश किया जा सकता है...इस तरह सफ़र करते समय जब आप घर के बाहर रहती हैं, यह आपके लिए वरदान-स्वरूप है।

केयरफ़्री संरक्षण: वे महिलाएँ जो महीने के उन पाँच दिनों में अपने आपको पूर्ण सुरक्षित और आरामदेह रखना चाहती हैं, इसका महत्व समझती हैं।

केयरफ़्री:
आपकी पूरी सुरक्षा और संरक्षण के लिए।

*सैनिटरी नैपकिन्स का ब्रांड। केयरफ़्री और जॉन्सन एण्ड जॉन्सन, ये जॉन्सन एण्ड जॉन्सन, यू.एस.ए. के ट्रेडमार्क हैं।

Johnson & Johnson*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुक्ता

जुलाई (प्रथम) 1978

- **क्या संजय की गिरफ्तारी एक नाटक थी?**
  भूतपूर्व युवराज की गिरफ्तारी और रिहाई की अंतरंग रिपोर्ट.
- **पढ़ें डाक्टरी बेचें तेल.**
  क्या गांवों में जाने वाले डाक्टरों के बारे में यह बात सच है? गांवों में डाक्टरों की दुर्दशा पर विशेष लेख.
- **पंतनगर में आग और खून की होली.**
  पुलिस की बर्बरता की मर्मांतक रिपोर्ट.
- **कला सिर्फ कला के लिए?**
  कला को सफल व्यवसाय बनाने के लिए जरूरी सुझाव.
- **धर्मेंद्र बनाम अमिताभ.**
  नए व दिलचस्प दृष्टिकोण से उन के अभिनय की समीक्षा.
- **फिल्म सेंसर : कितना सफल**
  भारतीय फिल्म सेंसर अपने कर्त्तव्यों को कहां तक पूरा कर रहा है?
- **हम लोगों के झगड़े निपटाती हैं...**
  महिला प्रतिरक्षा मंडल की जानकारी उस की संचालिका की जबानी.

साथ ही, आठ रोचक उद्देश्यपूर्ण कहानियां, हर उम्र के पाठकों के लिए जानकारीपूर्ण लेख. सरस कविताएं और सभी स्थायी स्तंभ.

अपनी प्रति आज ही खरीदें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरित प्रवाह

पिछले दिनों रेलमंत्री श्री मधु दंडवते ने रेल टिकट देने व सीट रिजर्वेशन में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए बजाए पुरुष बुकिंग क्लर्कों के महिलाओं को लगाया था. उन का विचार है कि महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा कम भ्रष्ट होती हैं. कम से कम इतना तो है ही कि बजाए किसी पुरुष द्वारा लट्ठमार 'नहीं है' सुनने के, यात्री किसी महिला की महीन मधुर आवाज में 'नहीं' सुनना अधिक पसंद करते हैं.

पर इन कुछ ही दिनों के परीक्षण से यह सिद्ध हो गया कि महिलाओं की नियुक्ति के बावजूद रेल टिकटों के देने व स्थान आरक्षण के भ्रष्टाचार में कोई कमी नहीं आई. इस के लिए रेल मंत्री ने सभी रेल प्रशासनों को विशेष सतर्कता दस्ते गठित करने का आदेश दिया है. ये दस्ते टिकटघरों पर एकाएक छापे मार कर जांच करेंगे और पकड़े जाने पर दोषी व्यक्तियों को संक्षिप्त मुकदमे चला कर तत्काल दंडित किया करेंगे.

लेकिन रेल मंत्री यहां भी सफल हो पाएंगे, इस में संदेह है. यदि ये विशेष दस्ते ही अपना हिस्सा तय कर लें और नाम बदनाम पूरी कर लें तो? यह पूरी तरह संभव है—ऐसा सीमा शुल्क (कस्टम्स) व उत्पादन शुल्क (एक्साइज) महकमे में तो मामूली सी बात है, जैसा कि अभी हाल में इन महकमों के अधिकारियों की एक सभा में दिए प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई के भाषण से प्रकट है.

उधर मद्रास में पुरुष टिकट व आरक्षण क्लर्कों ने धमकी दी है कि यदि उन की जगह महिलाओं की नियुक्ति कर के उन्हें (पुरुषों को) बदनाम करने का प्रयत्न किया गया तो वे हड़ताल कर देंगे.

जिस देश में हर काम कराने के लिए पैसा देना पड़ता हो, नवग्रह की पूजा करनी पड़ती हो, वहां यदि किसी को मजबूरी में यात्रा करनी ही हो और वह पैसा दे कर किसी न किसी प्रकार सीट ले लेता हो तो आश्चर्य की क्या बात है? अंतर केवल 'चढ़ावे' की रकम के कम बढ़ती होने का है—'परसाद' सवा रुपए का हो या पांच रुपए का, ग्यारह रुपए का हो या इक्कीस रुपए का.

✦

12 जून को सरकारी बैंकों के अफसरों ने देशव्यापी सांकेतिक हड़ताल की. इन अफसरों की हड़ताल से किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए. जब साधारण कर्मचारी हड़ताल कर के, जनता को सता कर, उस का दैनिक कार्य अस्तव्यस्त कर के अपनी मांगें मनवा सकते हैं तो अफसर लोग भी क्यों न हड़ताल या सीधी कारवाई करें?

कुछ समय पहले तक अफसर मालिकों या प्रबंधकों के साथ होते थे और निचले कर्मचारियों की हड़ताल, दंगे इत्यादि के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समय ग्राहकों के कामकाज को निपटाया करते थे. पर बहती गंगा में कौन हाथ नहीं धोना चाहता? कौन आता धन व सुविधाएं ठुकराता है? कौन इस 'चूहों की दौड़' में पीछे रहना चाहता है? गनीमत यह है कि यह हड़ताल केवल सरकारी बैंकों में हुई, नागरिक क्षेत्र के बैंक इस से बचे रहे. यदि देश का सारा कामकाज सरकारी क्षेत्र में होने लगे तो क्या हाल होगा, इस का अंदाजा लगाना कठिन नहीं है.

✦

सरकारी कर्मचारी किस प्रकार जनता को अधिक से अधिक असुविधा व कष्ट पहुंचा कर, सार्वजनिक संपत्ति को नष्ट कर के अपनी बात मनवाना चाहते हैं, इस का नया उदाहरण पिछले महीने केरल व राजधानी नई दिल्ली में हुई बिजली कर्मचारियों की हड़ताल व व्यापक तोड़फोड़ से मिलता है. केरल में बहुत बड़े क्षेत्र कई दिन तक बिना बिजली रहे और बिजली सप्लाई के अनेक खंभे (टावर) व ट्रांसफारमर तोड़ दिए गए. नई दिल्ली में भी बड़े पैमाने पर तोड़फोड़ हुई और कई दिन कामकाज ठप रहा. अंत में जब सेना के टेक्नीशियन व इंजीनियर बुलाए गए और यूनियन नेताओं की गिरफ्तारियां हुईं, तब जा कर हालत कुछ ठीक हुई.

ये हड़तालें व तोड़फोड़ यह जानते-बूझते हुई कि बिजली आजकल शहरी जीवन की एक अनिवार्य आवश्यकता है जिस के बिना सब कुछ ठप हो जाता है. झगड़ा या मांगें कुछ रुपयों की होती हैं, पर उस से कहीं अधिक मूल्य की संपत्ति नष्ट की जाती है और करोड़ों का उत्पादन, व्यापार उद्योग समाप्त हो जाता है.

समाचार है कि केंद्रीय सरकार अध्यादेश निकाल कर अनिवार्य सेवाओं में हड़ताल गैरकानूनी करार कर देगी. पर हड़तालों, तोड़फोड़ व घेरावों के विरुद्ध तो पहले से कानून मौजूद हैं. इन का प्रयोग क्यों नहीं किया गया या किया जाता? कहा जा रहा है, नई दिल्ली की हड़ताल में सारे मंत्रियों व उच्च अधिकारियों की भी बिजली कट गई, इसलिए अब बार हड़तालों के विरुद्ध ठोस कदम जाएंगे. अन्यथा जनसाधारण के मंत्रियों व अधिकारियों को क्या चिंता तो सब कर्मचारियों को अधिक से संतुष्ट करने में लगे रहते हैं. उन रोज नएनए कानून बनाते रहते हड़ताल के शिकार उद्योगपतियों अनुसार पूंजीपति व प्रतिक्रियावादी हैं जो बेचारे मजदूरों का शोषण रहते हैं. इसलिए हड़तालें समाजवाद लाने में सहायक अपने पर बीतती है, तभी पता

✦

आज की परिस्थिति में घेरावों व तोड़फोड़ का कोई नहीं है. कर्मचारियों की मांगें रुपएपैसे से खरीदी जाने वाली की होती हैं जिन का निर्णय पैसे के मामलों की तरह होना क्या लेनदार या दावेदार को कि वह देनदार के साथ मारपीट उस के बीवीबच्चों को घर में बंद उस की रोटी, पानी, बिजली फिरना बंद कर के पैसा वसूल दीवानी मामले को दीवानी तरह निपटाया जाना चाहिए. भी फौजदारी करने का हक नहीं

यदि कुछ कर्मचारी यह कि उन्हें उन के काम का उचित वजा नहीं मिल रहा है तो यह अधिकार है कि वे काम न करें उन्हें अधिक वेतन व सुविधाएं जा कर नौकरी कर लें.

बिजली, पानी, डाक, तार सब सेवाएं आज सरकारी हैं पूंजीपतियों द्वारा शोषण का नहीं उठाया जा सकता. क्या कम्यूनिस्ट सरकार व नई दिल्ली पालिका पूंजीपतियों, या खुद के संस्थान हैं?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित 34 विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के क्षेत्रीय सम्मेलन में यह सिफारिश की गई है कि अगले पांच वर्षों में कोई नया विश्वविद्यालय न खोला जाए.

यह सिफारिश बहुत उचित है. देश में इस समय 100 से अधिक विश्वविद्यालय हैं. उन में से अधिकांश की हालत खस्ता है. न उन के यहां अच्छे पुस्तकालय हैं, न भवन ही हैं. इन में धन की कमी और कुप्रबंध के कारण पढ़ाई भी ठीक नहीं होती—ये केवल विद्यार्थियों पर डिगरी का ठप्पा लगा देते हैं. वह उस डिगरी के योग्य होता है या नहीं, इस की किसी को परवा नहीं.

वैसे भी जब देश की 65 प्रतिशत जनसंख्या नितांत निरक्षर हो, वहां विश्वविद्यालयों पर इतना जोर और साक्षरता की उपेक्षा कहां तक उचित है? यह ठीक है कि उद्योग, व्यापार, प्रशासन इत्यादि के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त स्नातकों की आवश्यकता होती है, पर इस समय तो स्नातक टके सेर बिक रहे हैं या फिर उन का कोई खरीदार नहीं है. केवल क्लर्की के काम के लिए स्नातक होने की कोई आवश्यकता नहीं है जब कि एक कालिज विद्यार्थी पर सरकार का लगभग 1,000 रुपया मासिक खर्च बैठता हो.

इस के अतिरिक्त विश्वविद्यालय आजकल उपद्रवों के केंद्र बने हुए हैं—100 में से अधिकांश विश्वविद्यालय विद्यार्थी आंदोलनों के कारण बंद पड़े हैं. यहां शिक्षकों को अब आई.ए.एस. अफसरों जितना वेतन और उन से चौगुनी छुट्टियां मिलती हैं और केवल एक चौथाई काम करना पड़ता है. फिर भी न विद्यार्थी पढ़ते हैं, न शिक्षक उन्हें ठीक से पढ़ाने में रुचि रखते हैं. शिक्षकों का अधिक ध्यान अपना वेतन व छुट्टियां बढ़वाने और विद्यार्थियों का ध्यान परीक्षाएं आगे सरकवाने में लगा रहता है.

समय की आवश्यकता है कि विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़ाने के बजाए इन की गुणवत्ता (क्वालिटी) बढ़ाई जाए. इन में केवल उन्हीं विद्यार्थियों को भरती किया जाए जो न केवल उच्च शिक्षा के लायक हों, बल्कि जो उस का लाभ उठा सकें, जिन को उसी की आवश्यकता हो. बी. ए., एम. ए. डिगरियां केवल दफ्तरों में कलम घिसने या सेल्समैनी करने के लिए क्यों उपलब्ध कराई जाएं?

✦

लखनऊ में 4 जून को उत्तर प्रदेश जनता पार्टी के विधायकों की एक बैठक में मुख्यमंत्री श्री रामनरेश यादव ने कुल 388 सदस्यों में से 273 का समर्थन प्राप्त कर के अपनी स्थिति बहुत मजबूत कर ली है. यह विश्वास का प्रस्ताव इसलिए पास करना पड़ा, क्योंकि लगभग 100 विधायक काफी देर से शोर मचा रहे थे कि श्री रामनरेश यादव ऊपर से थोपे गए हैं और जनता पार्टी के विधायकों का बहुमत उन के विरुद्ध है. यह मामला और भी गंभीर हो गया, जब दो महीने पहले यादवजी ने असंतुष्ट वर्ग के नेता श्री सत्यप्रकाश मालवीय को मंत्री पद से अचानक हटा दिया था.

विश्वास या अविश्वास का यह मामला जनता पार्टी के केंद्रीय नेताओं की आपस में अनबन का भी प्रतीक था. श्री चंद्रशेखर व उन के साथी नहीं चाहते थे कि उत्तर प्रदेश सरकार पर श्री चरणसिंह का प्रभुत्व कायम रहे. श्री रामनरेश यादव श्री चरणसिंह के ही मोहरे माने जाते हैं, इसलिए यदि श्री चरणसिंह को केंद्र में शक्तिहीन करना है तो पहले राज्यों में उन की जड़ें काटनी होंगी.

सब से पहले हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री देवीलाल के विरुद्ध अभियान चलाया गया और फिर उत्तर प्रदेश में. हरियाणा में श्री देवीलाल जीत गए और उत्तर प्रदेश में श्री रामनरेश यादव. इस प्रकार श्री चरणसिंह की स्थिति पर कोई आंच नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आई है और चंद्रशेखर गुट को दुबक कर अपने जख्मों की मरहमपट्टी करनी पड़ेगी.

लखनऊ की इस जीत के बाद केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री राजनारायण ने श्री चंद्रशेखर के विरुद्ध खुल्लमखुल्ला लड़ाई छेड़ दी है. वह साफ तौर पर मांग कर रहे हैं कि श्री चंद्रशेखर जनता पार्टी की केंद्रीय कार्यकारिणी सहित त्यागपत्र दे दें. पर इस में संदेह है कि जनता पार्टी के नेता इस मांग को सिवा एक बेलगाम सिरफिरे की बहक के अलावा कुछ और समझेंगे.

जनता पार्टी में जो इस समय शक्ति संतुलन है वह श्री चंद्रशेखर को निकालते ही बिगड़ जाएगा और जनता पार्टी की जो थोड़ीबहुत वामपक्षी आभा है, वह भी जाती रहेगी. वैसे इस में कोई संदेह नहीं कि जिस प्रकार श्री चंद्रशेखर ने पूरे एक वर्ष काम किया है, न वह उल्लेखनीय है न सराहनीय. यदि जनता पार्टी आगे चल कर कभी टूटती है तो इस में श्री चंद्रशेखर की निष्क्रियता और संगठनशक्ति का अभाव काफी जिम्मेदार होगा.

✦

साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री उमाशंकर जोशी ने पिछले महीने कहा कि न तो मैं अकादमी द्वारा पुस्तकों पर पुरस्कार देने की प्रक्रिया से संतुष्ट हूं, न यह कह सकता हूं कि जिन ग्रंथों को अब तक पुरस्कृत किया गया है वे सभी अपने कालखंड के श्रेष्ठ ग्रंथ थे.

लगभग यही बात भारत सरकार के सूचना मंत्रालय द्वारा दिए गए फिल्मों पर पुरस्कारों पर लागू होती है.

इन पुरस्कारों का निर्णय किस प्रकार होता है, इन की समितियों के सदस्यों में किस प्रकार खींचतान और आपसी लेनदेन तय होता है, इस का आभास कभीकभी समाचारपत्रों में मिल जाता है. पर यदि कोई विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित हो तो वह शायद अपराध, रहस्यरोमांच पत्रिकाओं की कहानियों से कम सनसनीदार नहीं होगी.

गोवा सरकार ने शराब के [illegible] के विज्ञापनों पर प्रतिबंध [illegible] है. अब सड़कों के किनारे, समाचारपत्र सिनेमा में शराब के विज्ञापन नहीं [illegible] देंगे.

इसी प्रकार सिगरेट के विज्ञापन भी देशव्यापी प्रतिबंध की आवश्यकता आज यह सब स्वीकार कर रहे हैं सिगरेट मानव स्वास्थ्य के लिए कैसा खतरा है. यद्यपि इस पर शराबबंदी प्रतिबंध तो लगाना कठिन है, पर [illegible] की खपत बढ़ाने के सारे प्रयासों प्रतिबंध आवश्यक है.

आजकल कानूनी तौर पर हर रेट विज्ञापन के नीचे यह लिखना हो गया है कि 'सिगरेट स्वास्थ्य हानिकारक है.' पर इस से क्या जब यह चेतावनी चींटी जितने लिखी जाए और 'कश का मजा लीनार जैसे अक्षरों में? आवश्यक यह है कि यह दूषित प्रचारप्रसार बंद हो.

साथ ही एक बात यह भी है कि जिस प्रकार सार्वजनिक यहांवहां थूकना, नाक साफ करना त्यागना असामाजिक या गैरकानूनी हार समझा जाता है, क्योंकि इससे फैलती है और दूसरों में बीमारी आशंका होती है, उसी प्रकार स्थानों में सिगरेट व बीड़ी का लना असामाजिक व अभद्र व्यवहार जाए. डाक्टरों के अनुसार यह धुआं सिगरेट न पीने वालों के घुल कर उन्हें सिगरेट पीने वालों ही नुकसान पहुंचाता है.

घरों में भी सिगरेट पीने कमरों में, जहां बच्चे बैठतेउठते रेट का धुआं नहीं उगलना चाहिए प्रौढ़ों की अपेक्षा बच्चों पर इस कहीं अधिक हानिकारक असर और यदि पिता सिगरेट (या पीता है तो बच्चे प्रारंभ ही से आदी बन जाते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

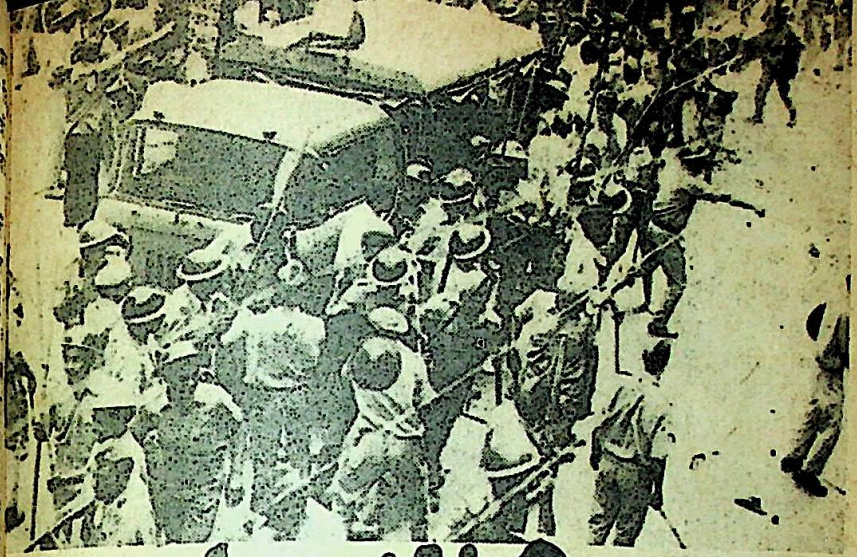

आगरा में हिंसा के लिए जिम्मेदार कौन?

लेख • विशेष प्रतिनिधि

राजनीतिबाज कब तक जनता की जातीय व धार्मिक भावनाएं भड़का कर अपना उल्लू सीधा करते रहेंगे?

मुगल, बादशाहों की प्रारंभिक राजधानी आगरा को विश्वविख्यात ताजमहल के कारण तो प्रसिद्धि मिली ही, यहां का चमड़ा उद्योग भी अपनी उच्चस्तरीयता व श्रेष्ठता के कारण भारत भर में लब्ध प्रतिष्ठित है. भारतपाक विभाजन के समय तक यहां का जूता उद्योग प्रसिद्धि के शिखर पर था, पर विभाजन के उपरांत अनेक व्यापारियों व कुशल कारीगरों के पाकिस्तान चले जाने के कारण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

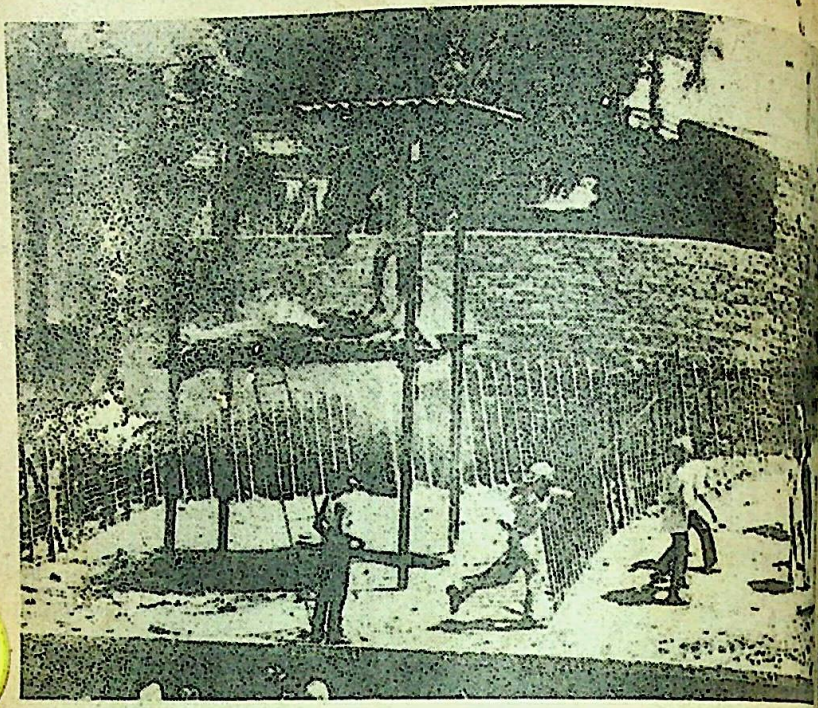

आगजनी की शुरुआत : रेल लाइन के पास बने एक केबिन को जलाने की तैय

यह उद्योग कुछ मंदा सा पड़ गया.

अब भी आगरा की जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग चमड़ा उद्योग पर ही आश्रित है. आगरा नगर की नौ लाख आबादी में लगभग आधे हरिजन व आधे स्वर्ण परिवार हैं. आधे हरिजनों में लगभग 1 लाख 10 हजार चमार हैं, जिन्हें 'जाटव' कहा जाता है. अधिकांश जाटव केवल चमड़ा व जूता उद्योग से ही संबंधित हैं. यह जाति आर्थिक रूप से दूसरे हरिजनों से अधिक सुदृढ़ है. जाटव कुशल कारीगरी के कारण अच्छा पैसा कमा लेते हैं.

आगरा शहर के एक बड़े भाग में जाटवों का आधिपत्य है, वे शहर की 20 विभिन्न बस्तियों व महल्लों में फैले हुए हैं. जाटवों के लिए वर्ष में दो अवसर बड़े महत्त्व के होते हैं. एक है 14 अप्रैल का दिन, जब डा. भीमराव अंबेडकर का जन्म दिवस मनाया जाता है और दूसरा, राम-नवमी. हालांकि इन दोनों अवसरों पर होने वाले विभिन्न आयोजनों में स सभी नागरिक भाग लेते हैं पर तथा कुछ दूसरे हरिजन इन में दिलचस्पी लेते हैं.

1957 में 14 अप्रैल के दि पहली बार जलूस निकाला गया. इस में एक हाथी पर डा. अंबेडकर की विशाल प्रतिमा रख कर उसे शहर के प्रत्येक महल्ले में से निकाला गया इस जलूस में आगरा के विभिन्न आसपास के कस्बों व आगरा कैंट की जाटव फौजी भारी संख्या में भाग इस वर्ष यह जलूस पिछले वर्ष अधिक जोशोखरोश से निकला.

यों तो आगरा के जाटवों में कभी झगड़ा नहीं हुआ, दोनों में अधिकांश लोग एक ही उद्योग पर हैं, पर अंबेडकर जयंती के दि को रावतपाड़ा से निकालने पर लगा सदैव एतराज करते हैं. अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाति के सदस्य मानने वाले सवर्णों के विरोध का कारण है—रावतपाड़ा महल्ले में मनकामेश्वर (गणेश) मंदिर का होना. सवर्ण नहीं चाहते कि हाथी जैसी शाही सवारी पर किसी निम्न जाति के व्यक्ति का जलूस उन के मंदिर के सामने से हो कर निकले. इसे सवर्ण हिंदू अपना घोर अपमान समझते हैं.

स्मरणीय है कि डा. अंबेडकर ने हरिजनों को समाज में ऊंचा उठाने के लिए बहुत कार्य किया था और अनुसूचित जाति के लोग उन्हें अपना भगवान मानते हैं. इस बात का प्रमाण आगरा के प्रायः प्रत्येक जाटव परिवार में डा. अंबेडकर की तसवीर का होना है.

अंबेडकर जयंती के दिन हाथी वाले जलूस पर पिछले अनेक वर्षों से रावतपाड़ा महल्ले में कुछ छतों पर से पत्थर फेंके जाते रहे. सवर्ण अपने विरोध को इन पत्थरों व ईंटों से प्रकट करते हैं, पर पिछले दोएक वर्षों में, जब जलूस रावतपाड़ा से निकला तो कोई विशेष घटना नहीं हुई. इस का कारण स्थानीय जाटव नेताओं के अनुसार यह था कि आगरा शहर के पिछले दो जिलाधिकारी स्वयं जाटव थे और वह जलूस के मामले में विशेष उत्साह दिखाते थे.

इस वर्ष 14 अप्रैल के दिन जब यह जलूस अपने नियत मार्ग से जा रहा था तो रावतपाड़ा स्थित मनकामेश्वर मंदिर के पास पहुंचते ही उस पर पत्थरों व ईंटों की बौछार हुई.

जलूस के आगे हाथी पर रखी बाबा अंबेडकर की मूर्ति खंडित कर दी गई. जलूस थम गया. जलूस के साथ तैनात पुलिस ने पत्थर फेंकने वाले सवर्णों के विरुद्ध जब कोई कार्यवाही नहीं की तो जाटवों के कुछ युवकों को जोश आ गया और वे सवर्णों की दुकानों में घुस कर तोड़फोड़ करने लगे. पुलिस ने हलका

23 अप्रैल को मौन जलूस निकाला गया. छीपी टोला से गुजरता जलूस.

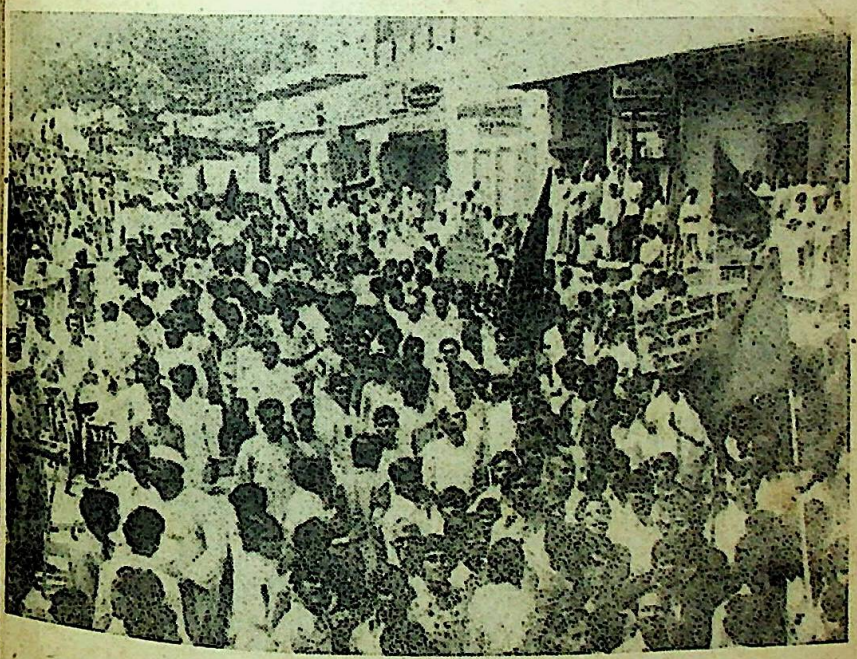

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

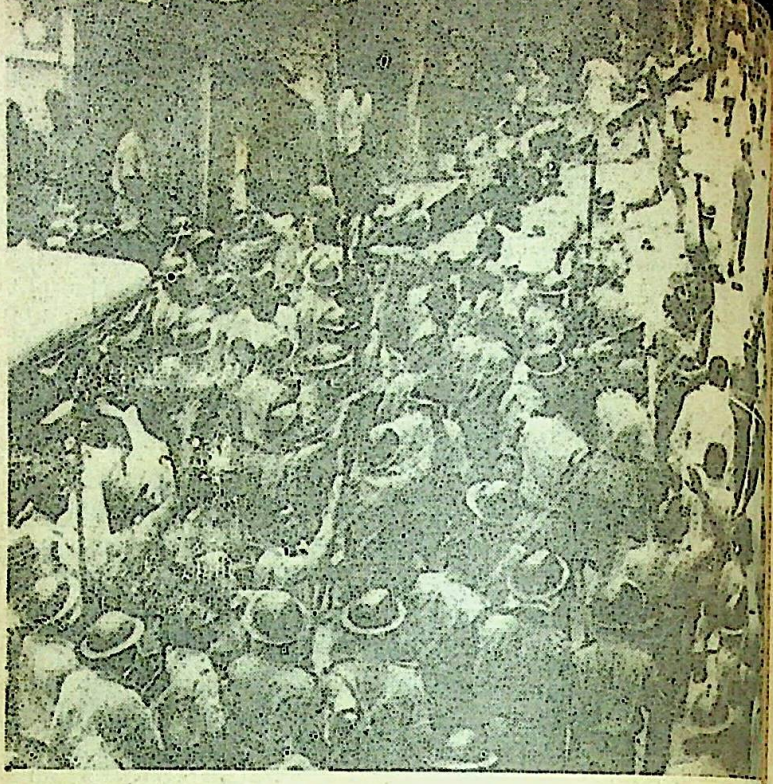

जब जलूस जौहरी बाजार को बजाए रावतपाड़ा से गुजरने लगा तो पुलिस
लाठी चार्ज करना पड़ा.

लाठी चार्ज कर भीड़ को तितरबितर कर दिया, लेकिन इस घटना से जाटवों के दिलों में सवर्णों के प्रति घृणा के बीज अंकुरित हो गए.

उधर दूसरे दिन रावतपाड़ा तथा पीपलमंडी के निवासियों व दुकानदारों ने हड़ताल रख कर जिलाधिकारी के निवास पर प्रदर्शन किया तथा उक्त वार्षिक जलूस को मंदिर के सामने से निकलने की अनुमति न देने की मांग की.

अधिकारी वर्ग का कहना है कि 14 अप्रैल के दिन जाटवों ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने के बजाए मामले से खुद ही निपटना चाहा और उन्होंने दुकानों व घरों में घुस कर लूटमार आरंभ कर दी, जब कि सवर्णों ने एक दर्जन से ऊपर रिपोर्टें दर्ज कराईं.

जेल में बंद जाटवों के प्रमुख नेता श्री दयाशंकर जरारी का कहना है, "हम मानते हैं कि हम ने रिपोर्ट दर्ज नहीं पर यह भी सच है कि हम में से भी हिंसा, तोड़फोड़ या लूटमार में नहीं लिया. हम पर फरजी थोपे गए हैं. पुलिस को पत्थर फेंकने को गिरफ्तार करना चाहिए था."

श्री जरारी ने सवर्ण हिंदुओं के विशेष पर आरोप लगाते हुए कहा चमार कह कर अपमानित किया और संभवतया अंबेडकर जयंती के जलूस को देख कर उन के दिलों में उत्पन्न होती है.

14 अप्रैल को अंबेडकर जयंती में जाटव समुदाय के मुख्य नेताओं सभा में फैसला किया गया कि को शहर की मुख्य गलियों से एक जलूस निकाला जाए. पुलिस से ले ली गई. यह भी मांग की गई अप्रैल का दिन सार्वजनिक छुट्टी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में घोषित किया जाए.

23 अप्रैल को डा. अंबेडकर के 15-20 हजार अनुयायियों ने जाटवों की सब से बड़ी बस्ती जगदीशपुरा से मौन जलूस आरंभ किया. प्रशासन की शर्त थी कि जलूस मंदिर की ओर से नहीं जाएगा.

जलूस करीब एक बजे रावतपाड़ा महल्ले से पहले जौहरी बाजार आ कर रुका.

जलूस जौहरी बाजार की ओर से हो कर गुजरने ही वाला था कि तभी कुछ नेता मंदिर की ओर से जाने के लिए लोगों को भड़काने लगे. नारे लगाए गए 'लाठीगोली खाएंगे, रावतपाड़ा जाएंगे' और 10 हजार आदमियों का जलूस फिर मौन रूप से मंदिर के रास्ते आगे बढ़ने लगा.

पुलिस अधिकारियों द्वारा घोषणा की गई कि आगे खतरा है, मत जाओ लेकिन भीड़ उस तरफ मुड़ चुकी थी. तूफान की लहर की तरह जलूस उस बाजार से निकलने लगा. इस पर पुलिस ने लाठी-चार्ज किया. भीड़ की उत्तेजना बढ़ गई, सवर्णों ने भी पूरी तरह से तैयारी कर रखी थी. उत्तेजित भीड़, पुलिस और साथ ही सवर्ण लोगों के बीच संघर्ष उग्र होता चला गया.

मनकामेश्वर मंदिर के साथ एक अखाड़ा है, जिस में पचासों पहलवान दंड पेलते रहते हैं. क्षण भर बाद सारे पहलवान बाहर आ गए और भीड़ पर भूखे शेर की तरह पिल पड़े. इस संघर्ष में अनेक लोगों को चोटें आईं, जिन में जाटव नेता श्री जरारी, श्री बिप्पल, श्री कोरियाल व श्री खड्ग सिंह भी थे. लगभग 300 लोगों को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया. कुल पांच सौ आदमी घायल हुए.

अराजक तत्वों द्वारा जलूस पर हमले व हरिजन नेताओं की गिरफ्तारी के विरोध में अगले दिन 24 अप्रैल को शांतिपूर्ण सत्याग्रह आरंभ हुआ. 29 अप्रैल तक 308 लोगों ने अपनी गिरफ्तारियां दीं.

गोलीकांड व आगजनी की शुरुआत

14 अप्रैल से 30 अप्रैल तक की घटनाओं से जाटवों का क्रोध बढ़ता चला गया. अभी तक तो घटनाएं सामान्य रहीं.

एक मई का दिन इस घटनाचक्र का सब से उग्र दिन था. सुबहसुबह 10 बजे जाटव जाति के दो हजार से अधिक स्त्री-पुरुष, जिन में युवकों की संख्या अधिक थी, जिलाधिकारी के कार्यालय कलक्टरी को घेर चुके थे. 'जिलाधीश इस्तीफा दो,' 'गिरफ्तार लोगों को रिहा करो,' 'पत्थर फेंकने वालों को सजा दो,' आदि नारों से आकाश गूंज उठा. पुलिस व राज्य सुरक्षा दल के जत्थे अभी तक शांत थे. तभी एक विस्फोट हुआ—एक पुलिस वाले ने जाटवों की भीड़ के एक दल को 'चमार' कह कर संबोधित किया.

जाटवों का क्रोध चरम सीमा पर पहुंच गया. कुछ लोग कलक्टरी के अंदर घुस गए. उन्होंने फर्नीचर उलट दिया, खिड़कियों के शीशे तोड़ दिए. अतिरिक्त जिलाधिकारी के साथ गालीगलौज की. कोर्ट के एक क्लर्क पर भयानक हमला किया. ●

जाटवों के प्रमुख नेता श्री दयाशंकर जरारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुलिस ने लाठियां बरसाईं पर भीड़ तितरबितर नहीं हुई, उलटे पुलिस पर हमला बोल दिया गया. भीड़ ने पास से गुजरती रोडवेज की एक बस में आग लगा दी और अब पुलिस दल पर ईंटें बरसानी आरंभ कर दीं. एक प्रदर्शनकारी ने एक पुलिस इंस्पेक्टर पर गोली चला दी. इंस्पेक्टर ने आत्मरक्षा के लिए उस व्यक्ति को गोली से उड़ा दिया.

इस घटना की खबर सारे शहर में आग की तरह फैल गई. थोड़ी ही देर में बिजलीघर, छीपीटोला, चक्कीपाट, नौबस्ता, लोहामंडी, जगदीशपुरा, मोती कटरा, औलिया रोड, काजी पाड़ा, शाहगंज, रावली और दयाल बाग आदि शहर का हर हिस्सा हिंसा, तोड़फोड़, आगजनी व लूटमार की घटनाओं से दहल उठा. लोग एकदूसरे के खून के प्यासे हो गए. पुलिस पर न केवल पत्थर बल्कि मिट्टी के तेल और सोल्यूशन भरे अग्नितीर फेंके गए और पिस्तौलों व देसी तमंचों से गोलियां दागी जाने लगीं.

जाटवों ने चमड़ा जोड़ने का सोल्यूशन, जो हर घर में भारी मात्रा में उपलब्ध था, तीरों पर लगा कर उन में आग लगा कर उन्हें पुलिस इमारतों पर छोड़ा. यह अग्नितीर अत्यंत घातक सिद्ध हुए. मोतीकटरा क्षेत्र का एक डाकघर जल कर भस्म हो गया. सात बसों और अनेक छोटेबड़े वाहनों में आग लगा दी गई. लोहामंडी के पास बिजली के खंभे व तार जल कर राख हो गए.

स्थिति काबू से बाहर हो चली तो पुलिस ने गोलीबारी आरंभ की. ईदगाह स्टेशन के पास तेल के बारह टैंकरों में भीड़ ने आग लगाने की कोशिश की पर पुलिस की सफल व जबरदस्त नाकेबंदी ने भीड़ को काबू में रखा. अगर इन टैंकरों में आग लग जाती तो आगरा शहर का कोनाकोना सुलग उठता. जिलाधीश द्वारा स्थिति असामान्य होते देख फौज को बुला लिया गया. पुलिस व सेना ने मिल कर एक पैट्रोल डिपो व बिजलीघर को अग्नि की भेंट चढ़ने से पूर्व ही बचा लिया.

घरों की छतों से इतनी भारी मात्रा में ईंटें बरसाई गईं कि घटना के चौबीस घंटे तक आगरा की अनेक गलियां व सड़कें ईंटों व पत्थरों के एक फुट के ढेर से ढकी पड़ी थीं. उत्तेजित भीड़ रात के नौ बजे तक तोड़फोड़ की कार्यवाहियां करती रही. शहर के विभिन्न इलाकों में कर्फ्यू लगा दिया गया.

हिंसा के इस नंगे नाच के परिणामस्वरूप दस व्यक्तियों की जानें चली गईं. एक व्यक्ति हस्पताल में मरा. अनेक पुलिस वाले भी घायल हुए और कई लापता पाए गए.

राजनीतिक हाथ

ऐसा विश्वास किया जाता है कि इस गंभीर व आकस्मिक कांड के पीछे एक सुनियोजित षड्यंत्र काम कर रहा था तथा भोलेभाले गरीब लोगों को, जो सुबहशाम रोटी जुटाने में ही लगे रहते हैं, मोहरा बनाया गया था. आगरा के कई गण्यमान्य नागरिकों का विचार है कि इस घृणित, शर्मनाक व दंडनीय कांड में भूमिका कुछ छुटभैये व सस्ती लोकप्रियता के भूखे नेताओं ने तैयार की. उन्होंने लोगों की भावनाओं को उभार कर तथाकथित सत्याग्रह के नाम पर हिंसा के लिए वातावरण तैयार किया.

एक मई के बाद जब कर्फ्यू हटा दिया गया और सेना ने स्थिति को संभाल लिया तो छुटभैये नेता इस शांति को सह न सके. विश्वस्त सूत्रों के अनुसार उन्होंने दोपहर बाद विभिन्न इलाकों में घूम कर लोगों की भावनाओं को पुनः भड़काना आरंभ कर दिया, जिस का परिणाम यह हुआ कि में कई स्थानों पर आगजनी व हिंसा की पुनरावृत्ति हुआ. जगदीशपुरा, जो हरिजन व जाटवों की सब से अधिक आबादी का क्षेत्र है, सुलग उठा. जब लोगों ने पुलिस के जीपों पर गोलीबारी आरंभ कर दी तो पुलिस को भी आत्मरक्षा के लिए [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

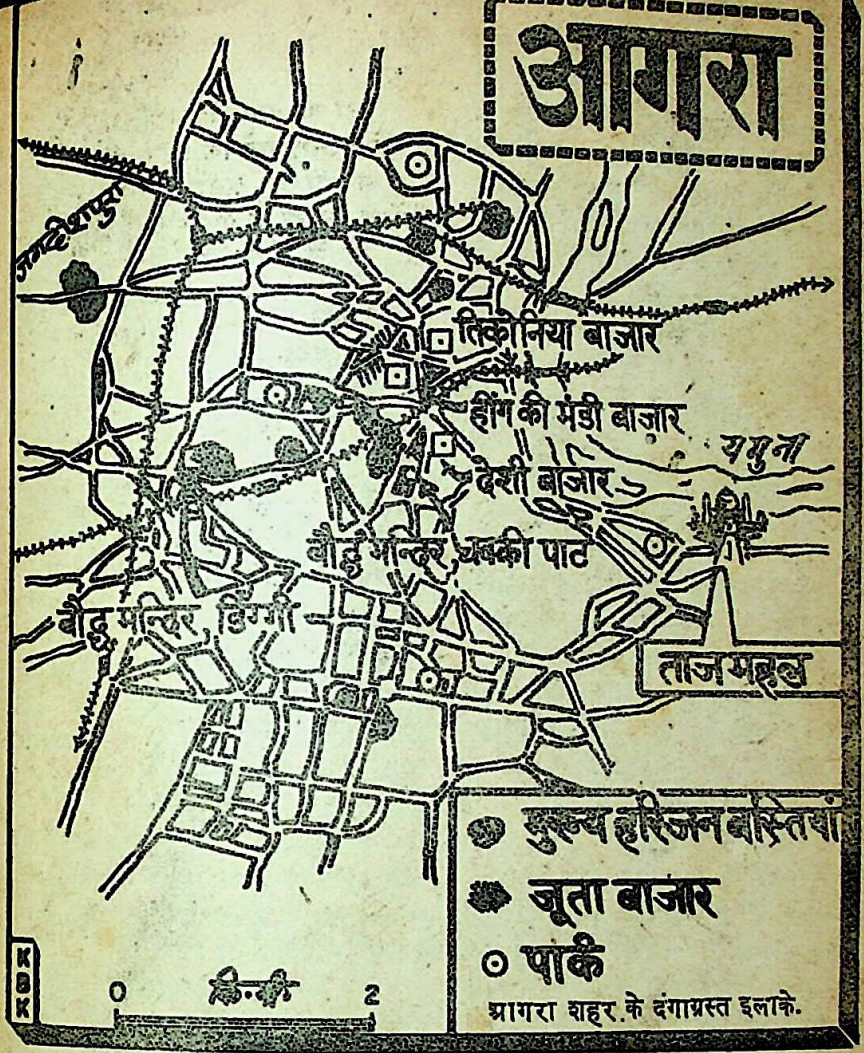

चलानी पड़ी.

इस प्रकार के दंगों व तोड़फोड़ से गुंडा तत्वों को सुनहरी अवसर मिल जाते हैं. यही पुनरावृत्ति आगरा में भी हुई. पुलिस, जाटव व दूसरी जाति के लोग, सब आपस में एकदूसरे से लड़े. लोगों ने एकदूसरे के घर लूट लिए, एकदूसरे की संपत्ति को नुकसान पहुंचाया, औलिया रोड के एक जाटव रिक्शा वाले ने संवाददाता को हरिजनों के टूटे मकान व पुलिस के अत्याचारों से पीड़ित परिवारों की झलक दिखाई. एक स्थानीय हरिजन नेता ने, जिन के सिर पर दंगों के कारण पट्टी बंधी थी, इस संवाददाता को बताया कि पुलिस के जवानों ने घरों में घुसघुस कर उन की बहूबेटियों के साथ दुर्व्यवहार किया और बलात्कार की शिकार अनेक युवतियां व महिलाएं दिखाईं.

कुल मिला कर इस दंगे से असामाजिक व गुंडा तत्वों ने भरपूर लाभ उठाया. साथ ही सस्ते स्तर के नेता भी इन हिंसात्मक दंगों से सस्ती लोकप्रियता पाने से बच नहीं सके.

कुछ स्थानीय बुद्धिजीवियों ने अपना मत प्रकट करते हुए बताया कि कुछ लोगों की निगाहें आने वाले नगर महापालिका चुनावों पर हो सकती हैं. जातीय संघर्ष को हवा देने वाले लोग, इधर के हों या उधर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

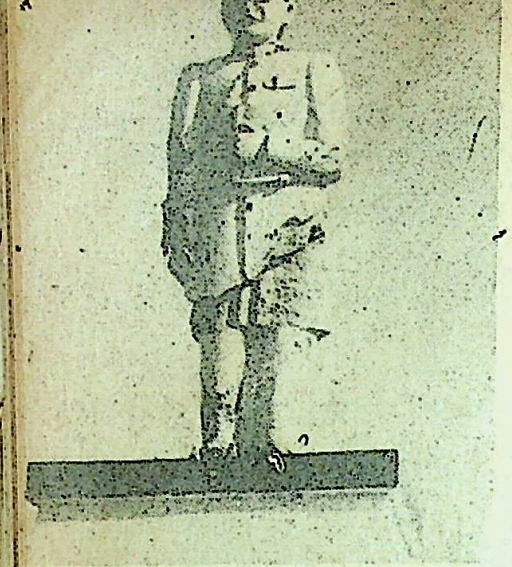

डा. अंबेडकर की प्रतिमा, जिसे सवर्णों ने 3 मई को खंडित कर दिया.

के, अपने राजनीतिक खेल के लिए गरीबों के खून से होली खेल रहे हैं. वे असामाजिक तत्त्वों को लूट का अवसर दे रहे हैं.

सरकार का नकारात्मक रवैया

आगरा निवासियों का खयाल है कि 14 अप्रैल की पथराव की घटना से यदि प्रशासन चुस्त हो जाता और दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध ठोस कार्यवाही करता तो शायद एक मई की घटना न होती.

5 मई को जब मुख्य मंत्री श्री रामनरेश यादव ने कहा कि वह आगरा की घटनाओं की न्यायिक जांच की कोई आवश्यकता नहीं समझते तो यहां के लोगों में और भी रोष फैल गया. मुख्य मंत्री ने शहर के दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा करने की भी कोई आवश्यकता नहीं समझी. वह हवाई अड्डे से सीधे एटा के लिए रवाना हो गए, जहां उन्हें चुनाव सभाओं को संबोधित करना था.

इस घोषणा से क्रुद्ध एक जाटव नेता ने कहा, "हम अपनी लड़ाई आप लड़ेंगे. अगर दोषी अधिकारियों के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई तो हम उन्हें दिखा देंगे कि आगरा में किस तरह से प्रशासन

किया जाता है."

एक मई को जब आगरा जातीय [illegible] में सुलग रहा था, जनता में आक्रोश व्याप्त था, पुलिस लगभग निष्क्रिय सी हो गई थी, उस समय लखनऊ में प्रदेश पुलिस के उच्चाधिकारी 'पति दिवस' मनाने में व्यस्त थे, जिस कारण उन का आगरा के स्थानीय पुलिस से संपर्क स्थापित नहीं हो पाया.

प्रदेश पुलिस की लापरवाही ने आगरा में दंगे फसादों, गोलीवर्षा, लूट और आगजनी चार की आग में घी का काम किया.

हमें स्वतंत्रता प्राप्त हुए 31 वर्ष हो चुके हैं पर अभी तक हमें सांप्रदायिक व जातीय दंगों से मुक्ति नहीं मिली है. प्रश्न उठता है कि सत्ता प्राप्ति और सत्ता बचाने की आड़ में कब तक नेता लोग इस देश की जनता को आपस में खून की होली खेलने के लिए मजबूर करते रहेंगे और कब तक उन की जातीय व धार्मिक भावनाएं उभार कर अपना उल्लू सीधा करते रहेंगे.

यद्यपि इन हिंसक वारदातों में नष्ट हुई संपत्ति का स्पष्ट अनुमान नहीं लगाया जा सका है, फिर भी यह राशि करोड़ों से ऊपर जा पहुंची है.

सब से बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि हिंसा व अराजकता की स्थिति समाप्त करने के साथ ही लोगों के दिलों में घर कर चुकी जातिवाद की भावना, घृणा आदि को समाप्त कर सद्भावपूर्ण वातावरण बनाया जाए तथा निरीह जनता को छुटभैये व सस्ती लोकप्रियता वाले के लोभी नेताओं के चंगुल से छुड़ाया जाए. इन तथाकथित नेताओं ने जनता को प्रतिबंधित मार्ग से ले जाने की ऐसी बात को अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए जातिवाद के रूप में उछाल कर प्रतिष्ठा का प्रश्न बना कर एक गंभीर मसला बना दिया.

इस का शिकार हुआ आगरा का [illegible] तबका, जिस का पूरा समय दो जून [illegible] कमाने में ही निकल जाता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंचायती राज व्यवस्था में हर साल जनता का लाखों रुपया खर्च किया जाता है, फिर भी जिस ग्रामणी के लिए यह व्यवस्था बनी है, उस की हालत में कोई सुधार नहीं हो पाता. क्यों?

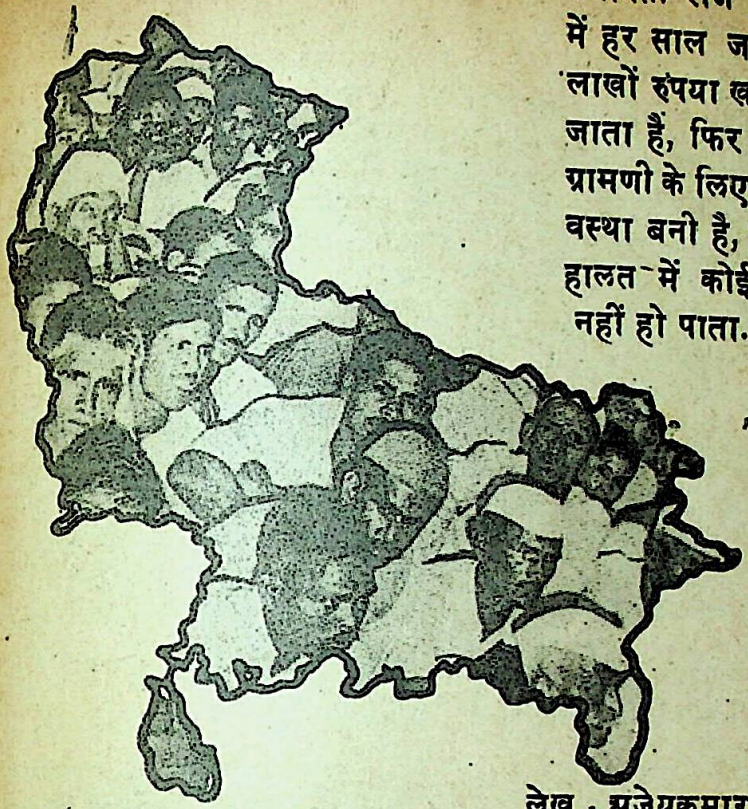

लेख · अजेयकुमार गोयल

उत्तर प्रदेश में पंचायती राज

संविधान के अनुच्छेद 40 में लिखा है—"राज्य ग्राम पंचायतों का संगठन करने के लिए अग्रसर होगा तथा उन को ऐसी शक्तियां प्रदान करेगा, जो उन्हें स्वायत्त शासन की इकाइयों के रूप में कार्य करने के योग्य बनाने के लिए आवश्यक हों."

पर वक्त की करवट को ध्यान में रखते हुए संविधान में यह व्यवस्था राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत के रूप में ही की गई थी. आज जब कि जनता सरकार ग्रामीण विकास पर बहुत जोर दे रही है, यह व्यवस्था बहुत महत्त्वपूर्ण है.

पंचायत व्यवस्था का भविष्य क्या हो; इस पर विचार करते हुए यह आवश्यक है कि एक निगाह पिछले 30 वर्षों में बिगड़तेसंवरते पंचायत राज पर डाल ली जाए.

उत्तर प्रदेश में पंचायत राज व्यवस्था 15 अगस्त, 1949 को लागू की गई थी. इस के पांच मुख्य उद्देश्य थे—

1. सामाजिक परिवर्तन,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामाजिक परिवर्तन के नाम पर ग्राम पंचायतें कुछ भी नहीं कर पाई हैं. आज भी पंडे, मुल्ला गांवों में भगवान हैं.

2. आर्थिक विकास,
3. प्रजातांत्रिक विकास,
4. जनता के लिए सुविधाएं तथा कल्याणकारी कार्यक्रम, व
5. न्याय पंचायतों के माध्यम से न्याय का वितरण.

सामाजिक परिवर्तन के नाम पर ग्राम पंचायतें कुछ भी नहीं कर पाई हैं. आज भी पंडे, मुल्ला गांवों के भगवान हैं. कोई भी प्रधान, कोई भी प्रमुख ग्रामीणों को धार्मिक गोरखधंधे से निकालना नहीं चाहता क्योंकि इस से तो चुनाव का एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा ही हाथ से जाता रहता है. अधर्मी होने का इल्जाम चुनाव में करारी हार दिलाने के लिए काफी है.

छुआछूत व ऊंचनीच बाकायदा बरकरार है. आज भी कुएं व घाटों का बंटवारा है, चिलम भरने व भरवाने की परंपरा जारी है. जातिवाद के आधार पर चुने गए पंचायत अधिकारी तो इसे स्वयं बढ़ावा देते हैं, ज्यादातर निर्णय जाति को ध्यान में रखते हुए ही किए जाते हैं.

उत्तर प्रदेश की 72,853 ग्राम सभा में से एक ने भी अंधविश्वास को दूर का कोई प्रयत्न नहीं किया. गांव में ग की अहमियत झाड़फूंक व गंडेतावीज बेपढ़ेलिखे व्यक्ति से कम ही है.

आर्थिक विकास के नाम पर तो पं यतों ने गांवों को खोखला करने के कुछ भी नहीं किया है.

1960 से गांवों के प्रयोग की गांवों में ही बनाने के उद्देश्य से पंच उद्योगों की स्थापना की गई. मई, तक प्रदेश के 878 विकास खंडों में पंचायत उद्योग स्थापित थे.

55 जिलों के 414 क्षेत्रों में 1975 में पंचायत उद्योगों ने कुल 92,23 रुपए का उत्पादन किया व इसे 92,65 रुपए में बेच कर करीब 40 रुपए का लाभ कमाया. पर आश्चर्य इस बात का है कि इस कार्य में उधार 29,15,053 रुपए का व देनदा 24,67,936 रुपए की हो गई.

406 उद्योग ऐसे हैं, जिन का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्पादन चार हजार रुपए से भी कम है. इस 40 हजार के लाभ में 68 पंचायत निरीक्षकों (उद्योग) की तनख्वाह एवं भत्ते शामिल नहीं हैं.

इस प्रकार ये पंचायत उद्योग निहायत ही घाटे का सौदा हैं. इन को अच्छी योजना व उपयोगिता दे कर चलवाना होगा या एकदम समाप्त करना होगा.

कर वसूली में भी हालत खराब है. 1975-76 में लगभग आठ लाख की छूट के बावजूद 31 लाख रुपए के कर की वसूली नहीं हो पाई. 1976-77 में और भी बढ़ोतरी हुई और लगभग 40 लाख रुपए का कर नहीं वसूला जा सका.

1974-75 में न्याय पंचायतों द्वारा लगाए गए 1,93,210 रुपए के जुर्माने को वसूलना था. इस से वर्ष के अंत तक कुल 26,082 रुपए की रकम ही वसूली जा सकी.

1977 के अंत में पंचायतों के 69,82,858 रुपए के ऋण की वसूली होनी थी, जिस में से सिर्फ 30,47,027 रुपए की ही वसूली हो पाई.

ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि आर्थिक दृष्टिकोण से पंचायत राज के सभी विभाग सिर्फ घाटा देने के लिए ही बने हैं. इन के माध्यम से आर्थिक उत्थान के बजाए पतन ही हो रहा है.

प्रजातांत्रिक गतिविधियों का केंद्र ग्रामीण भाषा में जाति, शराब एवं लट्ठ में ही निहित है. प्रधान के छोटे से चुनाव में जाति के आधार पर एकएक वोट तोला जाता है.

इन चुनावों में न तो जनसभाएं होती हैं, न ही आम वादे. ऐसे नेताओं में जनसभाओं को संबोधित करने की क्षमता भी नहीं होती. यहां तो प्रभावशाली लोगों से चीनी, सीमेंट के कोटे का वादा होता है, बैंकों से ऋण दिलाने की कोशिश की जाती है, घर के सामने का हिस्सा पक्का करने की बात होती है.

चुनाव लड़ते हैं वे लोग जो जरा भी

जिस ग्रामीण के लिए सरकार इतना लंबाचौड़ा हुजूम खड़ा करती है, उस को तो चुनावों के बाद कोई याद भी नहीं करता.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पढ़ेलिखे नहीं होते, जिन्हें पंचायत राज के संगठन का क ख भी पता नहीं.

फिर, पंचायत चुनाव इतने छोटे स्तर पर होते हैं कि सिवा आपसी छीछालेदर के और कुछ हो ही नहीं सकता.

पंचायत के चुनाव ब्लाक स्तर से नीचे नहीं होने चाहिए ताकि उम्मीदवार एक निश्चित कार्यक्रम में जनता का सहयोग मांग सकें. जिस आदमी का चुनाव बाद में प्रधान करते हैं, उन का चुनाव सीधे जनता द्वारा होना चाहिए.

जनता को सुविधाएं देने वाली पंचायत राज व्यवस्था का ढांचा इतना महंगा है कि जिस ग्रामीण के लिए यह व्यवस्था बनी है वह कहीं नजर ही नहीं आता.

लखनऊ में पंचायती राज का एक पृथक मंत्री होता है, जिस पर जनता का लाखों रुपए साल का खर्च किया जाता है.

उस के निजी सचिव आदि के अलावा मंत्री महोदय की सहायता के लिए सचिवालय स्तर पर सचिव, विशेष सचिव, संयुक्त सचिव, उपसचिव आदि होते हैं. विभागाध्यक्ष स्तर पर निदेशक, उपनिदेशक, मुख्यालय अधिकारी, प्रकाशन अधिकारी आदि का रोब मेला होता है. अकेले लखनऊ निदेशालय में 90 तृतीय व 25 श्रेणी के कर्मचारी हैं.

जनपद स्तर पर प्रत्येक जनपद में जिला पंचायत राज अधिकारी होता है. प्रदेश के 878 विकास खंडों में 878 सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) हैं. राज्य में 8792 पंचायत सेवक व 68 पंचायत निरीक्षक (उद्योग) हैं.

राज्य में 72,853 प्रधान, 878 प्रमुख व 55 जिला परिषद अध्यक्ष हैं. प्रमुख जीपों में व अध्यक्ष कारों में घूमते हैं. सरपंचों की संख्या 8791 है.

हजारों नेताओं की यह भीड़ अपने स्वार्थों तथा कुरसी के लिए तार राजनीतिक तिकड़मबाजी में रहती है तथा हारे हुए नेता टांगें

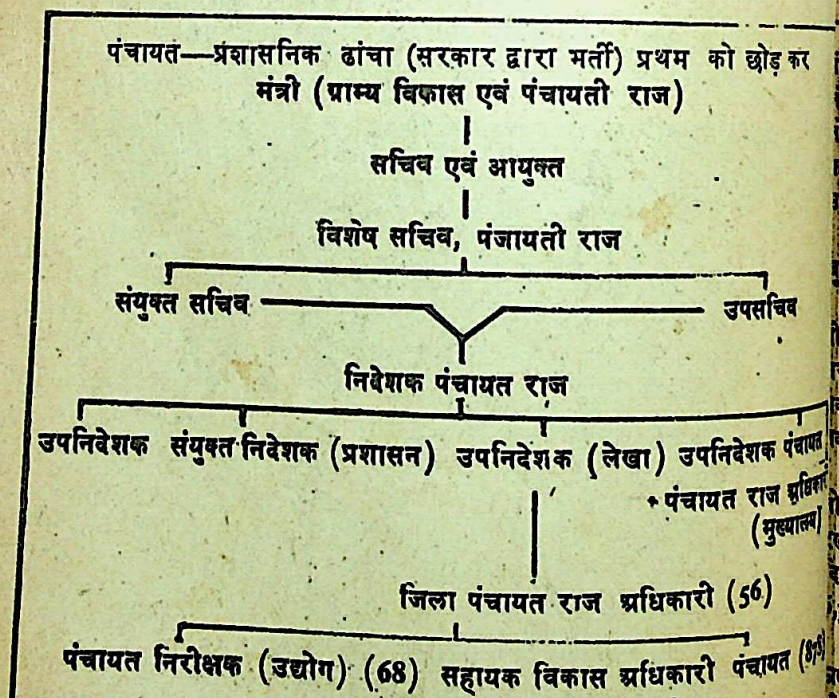

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

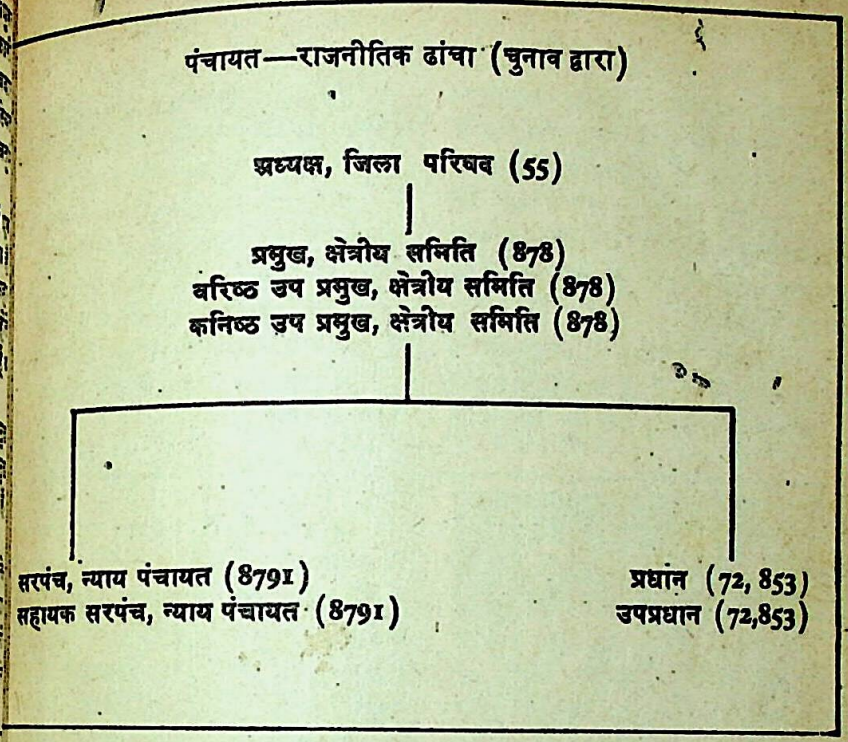

. जिस ग्रामीण के लिए सरकार इतना बाचौड़ा हजूम खड़ा करती है, उस को ो चुनावों के बाद कोई भी याद नहीं करता और न ही इस सारी व्यवस्था में उस का कहीं व्यक्तित्व ही नजर आता है.

न्याय पंचायतों के बारे में तो जितना चुप रहा जाए उतना ही भला.

न्याय पंचायतें दीवानी व फौजदारी तीनों ही प्रकार के कुछ मामूली पर अक्र होने वाले मुकदमे सुनती हैं. इन्हें वकील पेश नहीं करते हैं व 100 रुपए क का दंड न्याय पंचायत दे सकती है.

1950 में जब न्याय पंचायतें बनीं ी पंच परमेश्वर के सिद्धांत को ध्यान में खते हुए ग्रामीणों ने बहुत उत्साह दखाया था तथा एक ही वर्ष में 35,502 मुकदमे दायर हुए थे.

पर शीघ्र ही ये न्याय पंचायतें भी भ्रष्टाचार के गढ़ बन गईं, पंच परमेश्वर ी रिश्वत खाने लगे. जिस के पास लाठी ोती, वही भरी पंचायत में से भैंस हांक कर ले जाता.

इस का परिणाम यह हुआ कि लोगों का पंच व पंचायतों पर से विश्वास उठ गया. 1950 के मुकाबले 1976-77 में 8791 न्याय पंचायतों में सिर्फ 22,249 मुकदमे दायर हुए. इस प्रकार पूरे साल में औसतन एक न्याय पंचायत में तीन मुकदमे भी दायर नहीं हुए.

न्याय पंचायतों द्वारा दंडस्वरूप लगाई गई राशि का 10 प्रतिशत भी वसूल नहीं हो पाता क्योंकि ग्रामीणों की इन में कोई आस्था नहीं है.

इस प्रकार से अपने पांचों मुख्य उद्देश्यों में पंचायतें पूरी तरह से असफल रही हैं.

उधर, पंचायत राज के संस्थापक इस व्यवस्था को अंगरेजों के कलक्टर वाली प्रशासन व्यवस्था के विकल्प के रूप में लाए थे. पर विकल्प के स्थान पर यह व्यवस्था पूर्वव्यवस्था की दास हो गई. प्रत्येक न्याय पंचायत में प्रत्येक ग्राम सभा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से दोदो पंच जिला मजिस्ट्रेट द्वारा मनोनीत किए जाते हैं. जिला पंचायत राज अधिकारी, सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) आदि सभी जिला मजिस्ट्रेट के नीचे कार्य करते हैं. पंचायत अधिकारियों को उन के पद से हटाने की शक्ति भी सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट में निहित है. यहीं हाल वह न्याय पंचायत के अधिकारियों का भी कर सकता है.

इस प्रकार पंचायतें तो प्रशासन के एकदम चंगुल में रहती हैं. प्रायोगिक रूप में भी जिस प्रकार जिला प्रशासन चाहता है पंचायतों का मुंह मोड़ देता है और मानें तो उन्हें तोड़ देता है.

पंचायती व्यवस्था आज ग्रामीण आर्थिक जीवन पर एक भारी बोझ गांवों की दुश्मनी का मुख्य कारण

आज जब जनता सरकार इस पर पुनर्विचार कर रही है तो यह नहीं होना चाहिए कि पंचायतों को प्रकार और मजबूत बनाया जाए तो इस तथ्य पर होना चाहिए कि ग्रामीणों के लिए बनती है या पंचा लिए ग्रामीण?

हमारी बेड़ियां

जून का महीना था. एक ग्रामीण युवक कुछ बरातियों सहित दुलहन को अपने गांव ले जा रहा था. दुलहन डोली में बैठी थी, जिस के चारों तरफ मोटे परदे लगे हुए थे. विदाई के समय दुलहन काफी देर तक जोरजोर से रोती रही.

कुछ दूर जाने पर दुलहन के रोने की आवाज बंद हो गई. और जब डोली गांव के निकट पहुंची तो बहुत से बच्चे व औरतें दुलहन को देखने के लिए आतुर हो गए. घर पहुंचने पर दुल्हे की बहन ने सर्वप्रथम मुंह देखने की रीति पूरी करने के लिए जैसे ही डोली का परदा हटाया तो देखा कि दुलहन डोली के साथ सिर टिकाए बेहोश पड़ी है. तुरंत ही वैद्य को बुलाया गया. उस ने उसे तुरंत डोली से बाहर खुली हवा में निकालने का आदेश दिया और बताया कि इस को हवा, पानी नहीं मिला. इस कारण यह बेहोश हो गई है. अगर चंद घंटे और इसी प्रकार बीतते तो शायद ही यह जीवित रहती.

—निर्मल अलंग

हमारे पड़ोसी नव वर्ष के में मनाई गई पार्टी के बाद सुबह घर पहुंचे तो सर्दी के कारण उन को बुखार हो गया और शाम तेज हो गया. हमारे बहुत समझाने उन्होंने बच्चे को न तो किसी को दिखाया और न उस को दी. उन का विचार था कि सात दिन ही दवाइयों और डाक्टरों में पड़ गए तो सारा साल बीमारी कटेगा.

बच्चे की हालत चिंताजनक गई और दूसरे दिन जब उसे में दाखिल करवाया गया तो के बहुत प्रयत्न के बावजूद बचा सका.

—कृष्ण कांता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

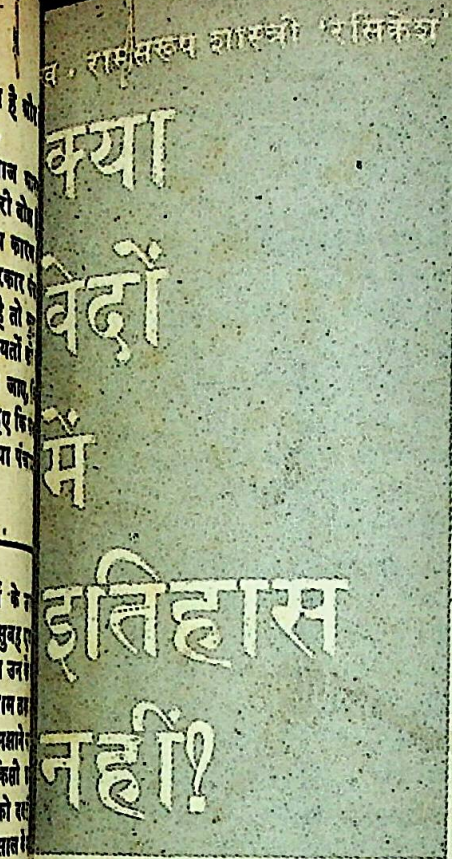

वेद प्राचीन ग्रंथ होने के कारण विश्व साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं. यह देख कर हर्ष होता है कि इतनी प्राचीन पुस्तकों में भी ऐसी सुंदर शिक्षाएं विद्यमान हैं, जो मानव जाति के कल्याण के लिए आज भी उपयोगी हैं. पर आश्चर्य की बात तो यह है कि आज भी करोड़ों लोग यह समझ बैठे हैं कि ज्यों ही भगवान ने इनसान को पृथ्वी पर पैदा किया, त्यों ही उस ने मनुष्यों की शिक्षा के लिए चार ऋषियों द्वारा वेद प्रकट कर दिए. चूंकि ये सृष्टि के आरंभ में प्रकट किए गए, इसलिए इन में किसी राजा, ऋषि आदि का नाम व इतिहास नहीं है.

परं हमें तो इन के पठन से ऐसा प्रतीत होता है कि अन्य धर्मों के ग्रंथों के समान इन में भी पर्याप्त इतिहास विद्यमान है. प्रस्तुत लेख में हम अपने इसी विचार के समर्थन का यत्न करेंगे और कुछ ऐसे व्यक्तियों के संक्षिप्त वृत्तांत देंगे जो वेदों में वर्णित हैं.

सिंधुपति स्वनय भाव्य

सिंधु देश के इस राजा का उल्लेख ऋषि कक्षीवान ने किया है. जब दीर्घतमा ऋषि के पुत्र कक्षीवान अध्ययन की समाप्ति पर घर लौट रहे थे, तब मार्ग में उन की भेंट स्वनय से हुई. जब राजा को विदित हुआ कि कक्षीवान दीर्घतमा के पुत्र हैं, तब उस ने इन्हें गायें, घोड़े आदि दिए. राजा की इस उदारता का वर्णन कक्षीवान ने ऋग्वेद (I-12-6) के कई मंत्रों में किया है. उदाहरणार्थ कक्षीवान कहते हैं—

अमन्दान् स्तोमान् प्रप्रे मनीषा सिंधावधि
क्षियतो भाव्यस्य.
यो मे सहस्रमसिमीत सवानतूर्तो राजाश्वः
इच्छमानः. (ऋग्. I-112-6)

अर्थात "सिंधु नदी पर रहने वाले भाव्य (भवपुत्र स्वनय) राजा के लिए मैं (कक्षीवान) अपनी बुद्धि द्वारा बढ़िया स्तोत्र प्रस्तुत करता हूं. उस अजय राजा ने मेरे लिए सहस्र यज्ञ किए."

इस के बाद के मंत्रों में उन घोड़ों, गायों, रथों आदि की संख्या वर्णित है, जो राजा ने कक्षीवान को दक्षिणा में दिए. ध्यान देने की बात है, इसी स्वनय राजा का वर्णन शांखायन श्रौत सूत्र में (16-11-5) भी उपलब्ध होता है.

कक्षीवान ने ऋषि अश्विनीकुमार नाम के युगल देवों के संबंध में कई सूक्तों (मंत्र समूहों) की रचना की है. इन सूक्तों (ऋग्. I-116-120) में कक्षीवान ने

जिन वेदों को 'ब्रह्मवाणी' माना जाता है वे वास्तव में कोई अलौकिक कृतियां नहीं हैं. उन में भी अन्य धर्मग्रंथों की तरह ऐतिहासिक तथ्य हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियों का उल्लेख किया है, जिन्हें अश्विद्वयों ने धन, स्वास्थ्य दीर्घायु, पत्नी, पुत्रादि दिए थे. उदाहरणार्थ कुछेक का संक्षिप्त वृत्त दिया जाता है.

ऋषि विमद

ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर विमद का उल्लेख अश्विद्वयों के कृपापात्र के रूप में मिलता है. इस की कथा का सार यह है कि वैदिक राजा पुरुमित्र की पुत्री कमद्यू ने अपने पिता की इच्छा के विरुद्ध विमद को पति रूप में वर लिया था. इस पर अन्य राजाओं ने बिगड़ कर विमद पर आक्रमण कर दिया. ऐसे विकट समय में अश्विद्वयों ने विमद की सहायता की और कमद्यू को अपने रथ पर बैठा कर विमद के घर पहुंचा दिया. इस विषय के एकदो वेदमंत्र दृष्टव्य हैं—

ना सत्याभ्यां बर्हिरिव प्र वृञ्जे स्तोमां इयर्म्यश्विनेव वातः.
यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहतू रथेन. (ऋग्वेद I-116-1)

अर्थात "मैं (कक्षीवान) सत्यवादी अश्विद्वयों के लिए स्तोत्र ऐसे तैयार करता हूं, जैसे यजमान यज्ञार्थ कुशा को. उन्होंने अपने तीव्रगामी रथ से युवक विमद के पास उस की पत्नी को पहुंचा दिया था."

अब देखना यह भी चाहिए कि इस घटना का संकेत और भी कहीं मिलता है या नहीं. ऋग्वेद में ऋषि वसुकरण कहते हैं—

"हे अश्विद्वयो, तुम ने भुज्यु को संकट से पार किया था. तुम ने वधिमती को पुत्र प्रदान किया था. तुम ने कमद्यू को विमद के पास पहुंचा दिया था. तुम ने विश्वक ऋषि को विष्णापु नाम का पुत्र दिया था."

(ऋग्. 10-65-12ο).

राजा भुज्यु

तुग्र के पुत्र राजा भुज्यु की कथा का संकेत वेदों में कई स्थलों पर मिलता है. कथासार यह है कि तुग्र ने पुत्र भुज्यु को किसी द्वीपवासी शत्रु पर आक्रमण के लिए भेजा. नौका भंग से भुज्यु संकट में गया. उस समय अश्विद्वयों ने भुज्यु की की और उसे तीर पर सुरक्षित दिया. कक्षीवान ने इस घटना का यों किया है—

तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघे रयिं न न्यमृक्षां अवाहाः.
तमूहथुर्नौभिरात्मन्वतीभिरन्तरिक्षप्रुद्भिः पोदकाभिः. (ऋग्वेद I-116

अर्थात "हे अश्विद्वयो, तुग्र ने भुज समुद्र में ऐसे त्याग दिया, जैसे कोई व्य सन्न मनुष्य धन को. तुम ने उसे लहराती हुई, निश्छिद्र नौकाओं द्वारा पहुंचा दिया."

इस घटना का उल्लेख कक्षीवा समान अन्य वैदिक ऋषियों ने भी है. इस से सिद्ध है कि यह वेद पूर्व प्रसिद्ध घटना थी. ऊपर विमद के प्र भी इस की ओर संकेत हो ही चु तो भी एक मंत्र और लीजिए. घोषा ने कहा है, "हे अश्विद्वयो, तुम ने भुज्यु, वश, शिंजार और उशना का किया था. दानी व्यक्ति ही तुम्हारी पा सका है. मैं तुम्हारी रक्षा से सुखों की कामना करती हूं."

ऋषि विश्वक

विश्वक ऋषि का निर्देश ऋग्वे कई स्थलों पर किया गया है. ऋषि वान ने इस के विषय में यह लिखा अश्विद्वयों ने इस के खोए हुए पुत्र को मिला दिया था. वेद मंत्र इस प्रकार युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय विष्णापवे थो विश्वकाय.
घोषायै चित्पितृषदे दुरोणे पतिं जू अश्विनावदत्तम्. (ऋग्वेद I-11

अर्थात "हे नेता अश्विनौ तुम दोनों ने कृष्ण के पुत्र वि विश्वक को उस का पुत्र विष्णापु था. तुम ने पिता ही के घर में बू हुई घोषा को पति प्रदान किया था.

कक्षीवान ने इस घटना का ऋग्वेद (I-116-22) में तथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऋषि ने ऋग्. (10-65-12) में किया है, जो ऊपर उद्धृत किया जा चुका है. स्मरण रहे कि विश्वक ऋषि द्वारा रचित कुछ मंत्र ऋग्. (8-86) में विद्यमान हैं.

काक्षीवती घोषा

ऋषि कक्षीवान की पुत्री होने के कारण ही घोषा 'काक्षीवती' कही जाती है. इस ने कई वेद मंत्रों की रचना की जो ऋग्वेद (10-39-40) में देखे जा सकते हैं. चूंकि यह चर्मरोग से पीड़ित थी, इसलिए इस का विवाह 60 वर्ष की आयु तक न हो सका और यह पिता के घर में ही बूढ़ी होती गई, अंततः अश्विदेवों के अनुग्रह से इस का रोग दूर हो गया और पति भी प्राप्त हो गया (ऋग्. 10-39). इस के पुत्रों के नाम थे—घोष और सुहस्त्य. सुहस्त्य भी ऋषि बना और उस ने भी कुछ वेद मंत्र रचे, जो ऋग्. (10-41) में द्रष्टव्य हैं. घोषा ने स्वसौभाग्य प्राप्ति पर अश्वियों को यों धन्यवाद दिया—

अमाजूरश्विद् भवथो युव भगोऽनाशोश्विदवितारापमस्य चित्.
अन्धस्यांचन्नासत्या कृशस्य चित् युवामिदा हुर्भिबिजा रुतस्य चित्. (ऋग्. 10-393)

अर्थात "हे अश्वियो, घर में बूढ़ी होती हुई कन्या के लिए तुम सौभाग्यदाता हो. तुम मंद गमन के कारण पिछड़ने वाले के सहायक हो. हे सत्यवादियो, तुम अंधों, दुर्बलों तथा टूटी हड्डी वालों के रोग दूर करते हो."

ध्यान देने की बात है कि पिता कक्षीवान के समान घोषा ने भी अश्वियों का गुणगान करते हुए स्वरचित सूक्तों में अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियों का उल्लेख किया, जैसे—

युवा च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः.
निष्टौग्रयमूहथुरदभ्यस्परि विश्वेत्ता वां सवनेषु प्रावाच्या. (ऋग्. 10-39-4).

अर्थात "हे अश्वियो, तुम ने वृद्ध च्यवान (च्यवन) ऋषि को ऐसा जवान बना दिया, जैसे पुराना रथ मरम्मत द्वारा पुनः चलने योग्य बना दिया जाता है. तुम ने तुग्रपुत्र (भुज्यु) को जल (समुद्र में डूबने) से बचा लिया था. तुम्हारे ये सब काम यज्ञों में बखान के योग्य हैं.

ऋषि च्यवन

वृद्ध ऋषि च्यवन के पुनः जवान बनने का इतिहास भारत में इतना विख्यात है कि यौवनदायक प्रसिद्ध रसायन का नाम ही 'च्यवनप्राश' (च्यवन का भोजन) रख दिया गया. ऋग्वेद में तो नाम 'च्यवान' है पर ब्राह्मण ग्रथों तथा परवर्ती साहित्य में 'च्यवन' हो गया है. संभवतः यह परिवर्तन जनसाधारण के उच्चारण की सुविधा के कारण हो गया होगा. ब्राह्मण ग्रंथ तो यह भी बताते हैं कि यह इतने बूढ़े व कुरूप हो गए थे कि जब यह गांव से बाहर बैठते थे तो बच्चे इन्हें पत्थर मारा करते थे. महाभारत (आदि पर्व, 4-6) में इन के जन्म व पुनः यौवन प्राप्ति का विवरण इस प्रकार दिया गया है—

बंधी मुट्ठी

एक बार एक विदेशी मित्र गांधीजी से मिलने आए. वह हस्तरेखा देखने में बड़े कुशल थे. उन्होंने गांधीजी से अपना हाथ दिखाने को कहा.

हाथ दिखाने से इनकार करते हुए गांधीजी ने कहा, "मैं ने किसी के सामने आज तक अपनी मुट्ठी कभी खोली नहीं है, इसे बंधी ही रहने दीजिए."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

च्यवन भृगु व पुलोमा के पुत्र थे. एक बार जब भृगु स्नानार्थ नदी पर गए हुए थे, तब दमन राक्षस ने पुलोमा का अपहरण कर लिया. अपने अपहरण से पुलोमा इतनी त्रस्त हुई कि गर्भस्थ च्यवन पथ में ही गिर पड़े. इस अकाल च्यवन (गिरने) के कारण ही इन का नाम च्यवन रख दिया गया. बड़े होने पर ये प्रकांड पंडित व महातपस्वी बने. एक बार राजा शर्यात की कन्या सुकन्या ने ध्यानमग्न च्यवन के नेत्र भूल से छेद दिए. परिणामस्वरूप उसे इन से विवाह करना पड़ा. उस की प्रार्थना पर अश्वियों ने इन्हें पुनः यौवन प्रदान किया.

कक्षीवान तथा घोषा के अतिरिक्त अन्य वैदिक ऋषियों ने भी च्यवन की यौवन प्राप्ति का उल्लेख किया है. उदाहरणार्थ पौर आत्रेय ऋषि का यह मंत्र देखिए—

प्रच्चावानाज्जुजुरुषो वव्रिभत्कंन मुंचथः .
युवा यही कुथः पुनरा काममृण्वे वध्वः .
(ऋग्. 5-74-5)

अर्थात् "हे अश्वियो, तुम वृद्ध च्यवन की (पुरानी) त्वचा को कवच के समान हटा देते हो. जब तुम उसे पुनः जवान बना देते हो, तब वह पत्नी का प्यारा बन जाता है."

विश्पला

राजा खेल के संग्राम के संदर्भ में विश्पला नाम की नारी का उल्लेख कक्षीवान, घोषा आदि कई ऋषियों ने ऋग्वेद में किया है. आचार्य सायण बताते हैं कि जब युद्ध में विश्पला की टांग टूट गई, खेल के पुरोहित अगस्त्य की प्रार्थना अश्वियों ने एक ही रात में उसे स्वस्थ दिया और वह पुनः संग्राम में सम्मिलित होन में समर्थ हो गई. इस प्रसंग के मंत्र द्रष्टव्य हैं—

चरित्रं हि वैरिवाच्छेदि पर्ण
खेलस्य परितक्म्यायाम् .
सद्यो जंघामायसीं विश्पलायै
हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम् .
(ऋग्. I-11

अर्थात "जब रात के समय संग्राम में विश्पला की टांग पखेरू के समान टूट गई, तब हे अश्वियो दोनों ने विश्पला को लोहे की टांग लगा दी ताकि युद्ध आरंभ होने पर चलफिर सके."

इसी विश्पला की ओर कुत्स ऋषि ने भी ऋग्वेद में यों संकेत है—

"हे अश्वियो, जिन रक्षा साधनों तुम ने धन की इच्छुक विश्पला को धन देने वाले संग्राम में जाने में समर्थ था, जिन साधनों द्वारा ऋषि अश्व वश की रक्षा की थी, उन्हीं रक्षा से संपन्न हो कर हमारे समीप
(ऋग्. I-11

प्रसंगवश यह भी कह दें कि अश्व के पुत्र वश की रक्षा का उल्लेख ऋषिका ने भी किया है और का अर्थ राजा भुज्यु के इतिहास दिया जा चुका है. इसी वश ऋग्वेद 8-46 की रचना की थी, इस ने राजा पृथश्रवा के दान की की है.

ऊपर हम ने कुछ ऐसे ही ऐतिहासिक व्यक्तियों का संक्षिप्त वर्णन किया जिन का वेद मंत्रों में उल्लेख उल्लेख वैदिक ऋषियों ने प्रायः की क्रियाओं में किए हैं. इस से सिद्ध है कि ये व्यक्ति उन से पूर्व हो चुके हिंदी के कवियों ने भी अपने इष्ट गुणगान करते हुए इसी प्रकार के

कुसेवा

"यदि यह अनुभव न हो कि सेवा कैसे की जाए, तो सेवा के बजाए कुसेवा ही होती है."

—वल्लभ भाई पटेल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वरचनाओं में दिए हैं, जैसे सूरदास का एक पद है—

प्रभु तेरौ वचन भरोसौ सांचो.
जब गजराज ग्राह सौ अटक्यौ, बली बहुत दुख पायौ.
नाम लेत ता ही छिन हिरजू, गरुड़हिं छांड़ि छुड़ायौ.
दुस्सासन जब गही द्रौपदी, तब तिहिं बसन बढ़ायौ.
'सूरदास' प्रभु भक्तवछल हैं, चरन सरन हौं आयौ.

जैसे उक्त पद से स्पष्ट है कि सूरदास-जी गजमोचन तथा द्रौपदी चीरहरण की कथाओं को ऐतिहासिक सत्य मानते थे, वैसे ही अनेक वैदिक ऋषियों के सैकड़ों मंत्रों से सिद्ध होता है कि वे भी प्राचीन घटनाओं को ऐतिहासिक सत्य ही समझते थे. इस के अतिरिक्त यह भी भूलना न चाहिए कि सायण आदि प्राचीन वेद भाष्यकार भी वेदों में इतिहास स्वीकारते हैं.

स्वामी दयानंद और वेद

यहां प्रश्न उठता है कि जब वेदमंत्रों में प्राचीन ऐतिहासिक व्यक्तियों का उल्लेख है और प्राचीन वेदभाष्यकार भी वेदों में इतिहास मानते हैं तो स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों में इतिहास क्यों नहीं माना? इस का उत्तर यह है कि कुछ एक वैदिक ऋषियों ने इनेगिने वेद मंत्रों में यह भी लिख दिया था कि वेद ईश्वर द्वारा प्रकट हुए हैं, उदाहरणार्थ :

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे .
छंदांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तस्मादजायत.

'उस यज्ञरूप परम पुरुष से ऋचाएं, साम, छंद तथा यजु उत्पन्न हुए.'

(ऋग्. 10-90-9; यजु. 31-7; अथर्व. 19-6-13).

ध्यान रहे कि यह मंत्र ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद नाम के तीन संग्रहों में रख दिया गया है. तीनों ही वेदों में

ढोंग

"जागता हुआ सोने का ढोंग करे तो उस के कान में ढोल बजाने से भी क्या होगा."

—मो. क. गांधी

इस का ऋषि (रचयिता) 'नारायण' है और देवता 'पुरुष'. यहां नारायण ऋषि नारायण देवता से सर्वथा भिन्न है. इस प्रकार जब वेदों में ही ऐसे मंत्र डाल दिए गए, जिन में वेदों को ईश्वरचित कहा गया है, तब इस के विपरीत कुछ कहना पाप सा समझा गया. इसी कारण बाद के साहित्य में भी उन्हें प्रायः प्रभु प्रणीत ही लिखा जाता रहा, पर यह भी ध्यान रहे कि उन्हें ईश्वर रचित मानते हुए भी उन में इतिहास को स्वीकारा गया, उदाहरणार्थ—

युगांतेऽन्तर्हितान् वेदान् सेतिहासान् महर्षयः
लेभिरे तपसा पूर्वमनुज्ञाताः स्वयम्भुवा .
(वेदांत दर्शन, शांकर भाष्य, 1-3-29)

अर्थात "युग के अंत में लुप्त, इतिहास-युक्त वेदों को महर्षियों ने भगवान की अनुज्ञा से तप द्वारा पूर्व काल में प्राप्त किया". उपर्युक्त श्लोक को श्री शंकराचार्य ने महर्षि वेदव्यासकृत माना है, अतः स्पष्ट है कि वेदव्यास वेदों में इतिहास मानते थे. इस प्रकार वैदिक काल से वेदों को ईश्वरचित मानने की जो बात चली आ रही थी, उसे नकारना सरल न था. इसी कारण महर्षि दयानंद ने भी वेदों को ईश्वर प्रणीत तथा सृष्टि के प्रारंभ में प्रकटित मान लिया.

एक अन्य समस्या

अब स्वामी दयानंद के सामने एक समस्या खड़ी हो गई. वह यह कि यदि वेद सृष्टि के आरंभ में प्रकट किए गए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया! अमूल का माल्ट-कोको पेय

न्यूट्रामूल

हर कप देता शक्ति अपा

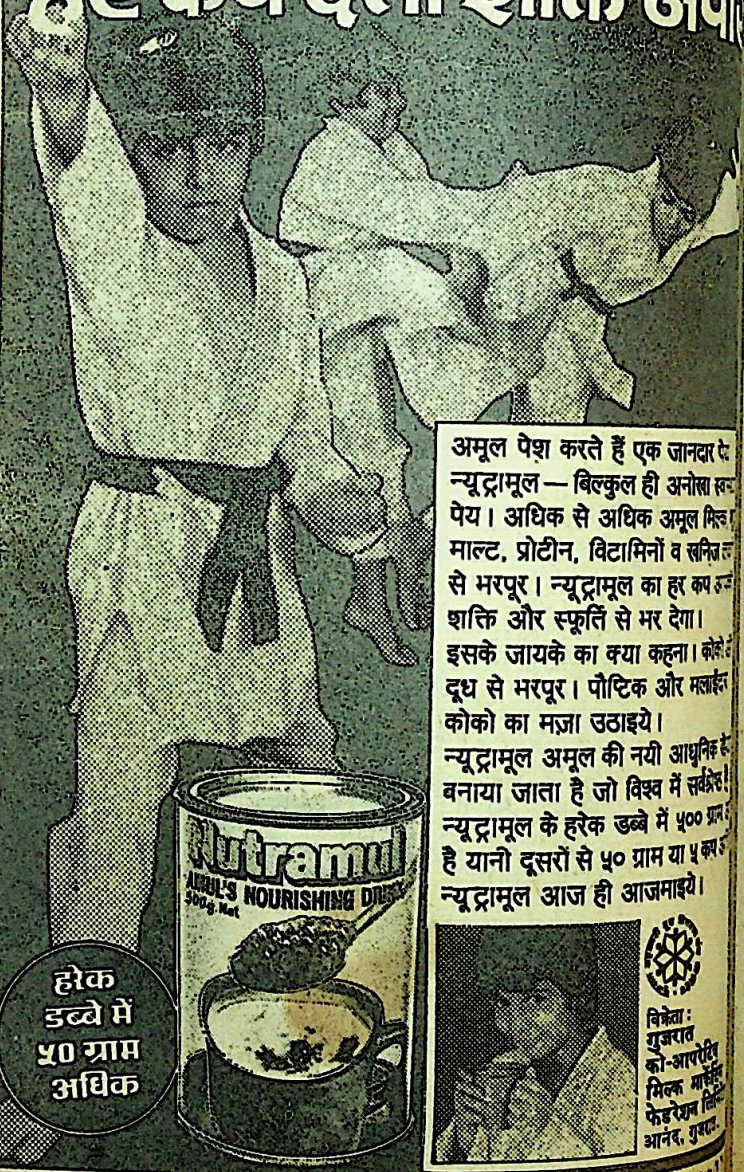

अमूल पेश करते हैं एक जानदार पे
न्यूट्रामूल — बिल्कुल ही अनोखा स्वा
पेय। अधिक से अधिक अमूल मिल्क
माल्ट, प्रोटीन, विटामिनों व खनिज ल
से भरपूर। न्यूट्रामूल का हर कप ज
शक्ति और स्फूर्ति से भर देगा।
इसके जायके का क्या कहना। कोको
दूध से भरपूर। पौष्टिक और मलाईदा
कोको का मज़ा उठाइये।
न्यूट्रामूल अमूल की नयी आधुनिक
बनाया जाता है जो विश्व में सर्वश्रेष्ठ
न्यूट्रामूल के हरेक डब्बे में ५०० ग्राम
है यानी दूसरों से ५० ग्राम या ५ कप
न्यूट्रामूल आज ही आजमाइये।

Nutramul
AMUL'S NOURISHING DRINK
500g. Net

हरेक डब्बे में ५० ग्राम अधिक

विक्रेता :
गुजरात को-आपरेटिव मिल्क मार्केटिंग फेडरेशन लिमि
आनंद, गुजरात.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब उन में ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम नहीं होने चाहिए, परंतु जैसा कि ऊपर दिखाया जा चुका है, वेदों में च्यवन, विमद, तुग्र, भुज्यु आदि सैकड़ों व्यक्तियों के नाम विद्यमान हैं. पुराने भाष्यकारों ने इस शंका का समाधान यों किया कि च्यवन, विमद, आदि व्यक्ति प्रत्येक कल्प में होते हैं. इस प्रकार वेदों में इतिहास है तो सही, परंतु वह नित्य इतिहास है, जो प्रत्येक सृष्टि में दोहराया जाता है. इस प्रकार वेदों को ईश्वरकृत भी मान लिया गया और नित्य इतिहास से युक्त भी. पर स्वामी दयानंद को यह युक्ति नहीं जंची, इसलिए उन्होंने तुग्र, भुज्यु आदि व्यक्तिवाचक नामों के अर्थ धातुओं के अर्थ के आधार पर और के और कर दिए. उदाहरणार्थ, उन्होंने 'तुग्र' का अर्थ 'शत्रुहिंसक सेनापति' कर दिया और उस के पुत्र 'भुज्यु' का अर्थ 'राज्यपालक व सुखभोक्ता'. यह बात ऐसी ही है जैसे कोई कहे कि रामायण में 'दशरथ' का अर्थ कोई भी 'दस रथों वाला' व्यक्ति तथा राम का अर्थ कोई भी रमने वाला मनुष्य है.

कठिनाई यही नहीं थी, एक और भी थी—साहित्य में अतीत की घटनाओं को प्रायः भूतकालिक क्रियाओं द्वारा प्रकट किया जाता है, यह स्वाभाविक ही है. वैदिक ऋषियों ने भी इसी प्रकार अश्वियों आदि के अनुग्रहपूर्ण कार्यों का वर्णन प्रायः भूतकाल में किया है. उन क्रियाओं से स्पष्ट सिद्ध होता है कि ऋषि पुराने इतिहासों का वर्णन कर रहे हैं. स्वामी दयानंद ने भूतकालिक क्रियाओं का अर्थ वर्तमान काल विधिलिंग आदि में कर दिया है. इस प्रकार उन का लक्ष्य यह था कि वैदिक इतिहास न रहे, उपदेश बन जाए, जिन से पाठकों को शिक्षा मिले.

निःसंदेह उद्देश्य प्रशंसनीय था, पर सचाई यह है कि जहां सत्य अर्थ को छोड़ कर अभीष्ट अर्थ किए जाते हैं, वहां पाठकों के पल्ले कुछ नहीं पड़ता. यही कारण है कि स्वामी दयानंद तथा अन्य आर्यसमाजी विद्वानों के वेदभाष्य न एक दूसरे के अनुरूप हैं न परंपरागत वेदभाष्यों के. इस कथन को स्पष्ट करने के लिए हम आप का ध्यान ऋग्वेद के उस मंत्र (युवं. दत्तम्, ऋग्. I-117-7) की ओर आकर्षित करते हैं जो अर्थ सहित पीछे, विश्वक के प्रसंग में दिया जा चुका है.

स्वामी दयानंद ने इस का अर्थ यों किया है—

"हे (नरा) सब कामों में प्रधान और (अश्विनौ) सब विद्याओं में व्याप्त सभा सेनाधीशों (युवम्) तुम दोनों, (कृष्णियाय) खेती के काम को योग्यता रखने वाले और (स्तुवते) सत्य बोलने वाले (पितृषदे) जिस के समीप विद्या विज्ञान देने वाले स्थित होते (विश्वकाय) और जो सभी पर दया करता है उस राजा के लिए (दुरोणे) घर में (विष्णाप्वम्) जिस पुरुष से खेती के भरे हुए कामों को प्राप्त होता, उस खेती करने वाले पुरुष (ददथुः) देवो (चित्त और जूर्यन्त्या बुड्ढेपन को प्राप्त करने वाली (घोशायै) जिस में प्रशंसित शब्द व गौ आदि (जूर्यन्त्या) के रहने के विशेष स्थान हैं, उस खेती के लिए (पतिम्) स्वामी अर्थात उस की रक्षा करने वाले को (अदत्तम्) देओ."

(स्वामी दयानंद : ऋग्वेदभाष्य, तृतीयावृत्ति)

हमारे मित्र आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री ने इसी मंत्र का अर्थ यों किया है—

"हे सब के नेता राजा और पुरोहित ! आप स्तुतिशील कृषक के पुत्र विशिष्ट योग्यता वाले मनुष्य के लिए विशेष ज्ञान एवं क्रियाकौशल देते हैं. हे अश्विनो, पिता के घर में वृद्धावस्था को प्राप्त करती हुई घोषा विवाहिता विधवा स्त्री को आप पुनः पति प्रदान करते हैं."

(वैदिक इतिहास विमर्श, पृ. 218)

अब पं. जयदेव शर्मा कृत अर्थ पर दृष्टि डालिए—

"(नरा) है नायक पुरुषो? (युवम्) आप (स्तुवते) यथार्थ उपदेश करने में समर्थ (कृष्णियाय) बीजवपन के समान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिष्य, भूमियों में ज्ञानवपन में कुशल (विश्वकाय) सर्वोपकारक पुरुष को (विष्णाप्वम्) विशेष स्नातक पद (ददथुः) प्रदान करो. हे विद्वान स्त्रीपुरुषो! आप लोग (पितृषदे) पालक पिता के आश्रय पर रहने वाली, अति उत्तम वेद की विदुषी स्त्री के लिए (दुरोणे) गृह बसाने के निमित्त (जूर्णन्त्या) वृद्धावस्था तक पहुंचने के लिए (पतिम्) योग्य पालक पुरुष (अदत्तम्) प्रदान करो.

(पं. जयदेव शर्मा, ऋग्वेद भाष्य, पंचमावृत्ति. पृ. 767)

सचाई यह है कि अश्विनीकुमार दो देवता हैं, जो सूर्यदेवता तथा अश्विनी के पुत्र हैं, परंतु स्वामी दयानंद ने इन का अर्थ सभापति और सेनापति, पं. वैद्यनाथ ने राजा और पुरोहित तथा पं. जयदेव ने विद्वान स्त्रीपुरुष कर दिया है. घोषा, कक्षीवान ऋषि की पुत्री थी, परंतु स्वामी दयानंद ने उस का अर्थ खेती, पं. [illegible] ने विधवा स्त्री व पं. जयदेव ने वेद [illegible] कर दिया है.

इसी प्रकार 'ददथुः' व [illegible] दोनों क्रियाएं भूतकाल की वाचक [illegible] उक्त महानुभाव उन के अर्थ दो [illegible] हैं—प्रदान करो, कर दिए हैं. यह [illegible] उलटफेर इस कारण करना पड़ा कि [illegible] में इतिहास सिद्ध न हो जाए.

अंत में नम्रतापूर्वक, हम यही [illegible] चाहते हैं कि निष्पक्ष वेदाध्ययन से [illegible] सिद्ध होता है कि वेद हमारे [illegible] श्रद्धेय ऋषियों द्वारा प्रणीत ग्रंथ [illegible] में प्रार्थनाओं व उपदेशों के [illegible] ऋषिमुनियों, राजाओं आदि का [illegible] भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है. जब [illegible] हम उन्हें ऐसा न मानेंगे तब तक [illegible] वास्तविक अर्थ समझने में सर्वथा [illegible] रहेंगे.

विरोधाभास

कपड़े की एक मिल ने
वस्त्रों की रिकार्ड बिक्री हेतु
एक नया तरीका अपनाया
मांडल बनी सुंदरी को
एक भी वस्त्र नहीं पहनाया.

स्वतंत्रता

औरतों के समूह ने
सामाजिक विद्रोह कर के कहा,
"हम पुरुषों की गुलामी नहीं करेंगी
अब हम आजाद हो गईं."
और वे सभी आफिसों में
'स्टेनोग्राफर' हो गईं.

—अशोककुमार [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख देवकीनंदन टिबड़ेवाल

कर्म और फल

फल की आशा छोड़ कर कर्म करने वाली बात आज के वैज्ञानिक युग में खोखली प्रतीत होती है. फिर पुरानी गाथाओं का ढिंढोरा पीटते जाना कहां तक उचित है?

आज के प्रगतिशील कहे जाने वाले युग में ऐसे लोगों का अभाव नहीं है, जो किसी न किसी बहाने भाग्य को ही हर घटना का जिम्मेदार समझते हैं. इन में एक वर्ग तो उन का है, जिन्हें हम पूर्ण भाग्यवादी की संज्ञा दे सकते हैं. ऐसे व्यक्ति बातबात पर 'होइहि सोइ जो राम रचि राखा' की गुहार लगा कर हमें अकर्मण्यता का पाठ पढ़ाते रहते हैं. पर ऐसे लोग तुरंत पहचान लिए जाते हैं और उन का प्रभाव अशिक्षितों तक ही सीमित रह जाता है. दूसरा वर्ग उन व्यक्तियों का है, जो कर्मवादी होने का ढोंग तो करते हैं, पर वास्तव में किसी भी प्रकार प्रथम वर्ग से पृथक नहीं हैं. ऐसे व्यक्ति वास्तव में कर्म में विश्वास करने वालों के लिए आस्तीन के सांप हैं. अपने सिद्धांत के समर्थन में ये लोग 'कर्मण्ये-वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:' का राग अलापा करते हैं.

आप समझ चुके होंगे कि मेरा इशारा किस तरफ है. मुश्किल यह है कि इन्हें पहचानना प्रायः कठिन होता है और ये धीरेधीरे अपना प्रभाव डालते रहते हैं. अपने को कर्मवादी बताते हुए ये कहा करते हैं, "भाई, हम तो कर्म में विश्वास करते हैं, परिणाम जो भी हो क्योंकि कर्म का फल तो अपने हाथ में है नहीं." इस प्रकार अपनी असफलताओं की जिम्मेदारी जहां अदृश्य शक्ति अर्थात भाग्य पर डाल देते हैं, वहीं अपने कथन के दो अंशों में विरोधाभास पैदा कर देते हैं. कुछ व्यक्ति तो अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए कुछ घटनाओं की जिम्मेदारी पूर्वजन्म के कर्मों पर डालने से भी नहीं चूकते तथा इस के बावजूद वे अपने को कर्मवादी कहते हैं.

वास्तव में, देखा जाए तो 'कर्म में विश्वास करने' और 'कर्म का फल अपने हाथ में न होने' में कहीं कोई सामंजस्य है ही नहीं. दोनों कथन एकदूसरे के विरोधी हैं. कर्म के फल को नियंत्रण से परे मान कर क्या कर्म में विश्वास किया जा सकता है? अगर किसी छात्र को समझाया जाए कि परीक्षाफल पर उस के अध्ययन का कोई असर नहीं पड़ने वाला है तो क्या वह उत्साहपूर्वक अध्ययन कर सकेगा? कोई भी विचारशील व्यक्ति इस प्रश्न का उत्तर नकारात्मक ही देगा.

कहने का तात्पर्य यह है कि कर्म में विश्वास करने का अर्थ ही है कर्म के फल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में विश्वास करना. किसी घटना विशेष में आशानुकूल फल प्राप्त न हो तो इस की जिम्मेदार हैं हमारी त्रुटियां, जिन्हें हमें खोज निकाल कर दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए अथवा हमारी अतिरंजित आशा. उदाहरणस्वरूप अगर कोई अध्ययनशील छात्र असफल रहता है तो इस के संभावित कारण हैं— पाठ्यक्रम की अपेक्षा बाहरी विषयों का अधिक अध्ययन अथवा प्रश्नों के उत्तर लिखने में बरती गई किसी प्रकार की असावधानी.

अगर संबंधित छात्र को विश्वास है कि उस की कोई त्रुटि नहीं है, बल्कि वह अन्य व्यक्ति अथवा व्यक्तियों की गलती का शिकार हुआ है तो उसे आवाज उठानी चाहिए क्योंकि उस की असफलता का कारण अन्याय है न कि भाग्य. उचित प्रयत्न करने पर कोई कारण नहीं कि अंततः उसे उचित फल प्राप्त न हो.

कर्मण्येवाधिकारस्ते... का यह जुमला अपराधी मनोवृत्ति के प्रसार में भी कम सहायक नहीं है. इस से अपराधी की यह धारणा बनती है कि उस के अपराध करने से दंड मिलने का कोई संबंध नहीं है. अपराधों पर नियंत्रण के लिए प्रत्येक व्यक्ति के मन में अपराधी को मिलने वाले

अगर कोई अध्ययनशील छात्र परीक्षा में असफल रहता है तो इस का कारण उस की अपनी त्रुटियां हो सकती हैं, भाग्य नहीं.

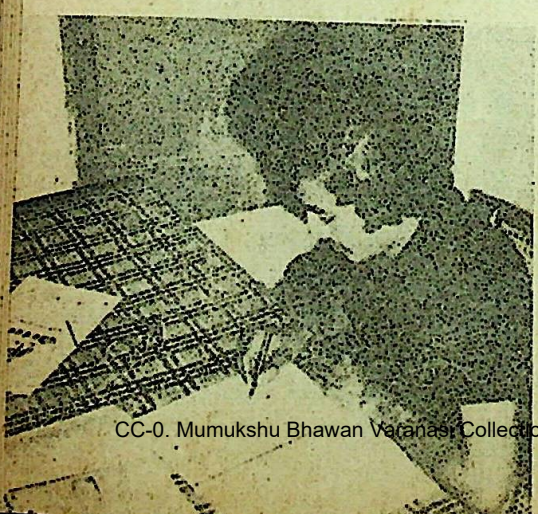

दंड की अनिवार्यता का एहसास
यह एक तथ्य है कि अपराधी
अवश्य मिलता है. मैं किसी
की बात नहीं कर रहा हूं. जो
कानून की नजरों से बच जाते हैं,
में वे क्या बच पाते हैं? हमेशा
नजर में आ जाने के भय से वे
सिक प्रक्रिया से गुजरते हैं,
प्रकार भी दंडित अपराधी को
वाली प्रताड़ना से कम नहीं कहा
और फिर उन के बचने का
हमारे और आप के भ्रष्ट कर्मों
होता है.

अपराध कर के भी सम्मानि
पोश जीवन बिताने वालों के
प्रायः इस विचारधारा के समर्थन
जाते हैं. पर इन अपराधियों
वाला सम्मान और समृद्धि
अपने कर्मों का फल है? नहीं,
में हमारी, हमारे समाज की
का फल है. अकर्मण्यता भी वास्तव
अपराध कर्म है. जानते हुए भी
राधी को पकड़ने में कानून की
करते. स्वयं झमेले में पड़ने के
नहीं बढ़ते. समाज के इन
सम्मानित कर स्वयं को गौरवान्वि
सूस करते हैं. इन अकर्मों के
हमारा प्राप्य हम से छिन जाता
प्राप्त होता है किसी अनाधिकारी

अतः हमारा कर्त्तव्य है कि
गलत भावना को प्रश्रय न दें और
प्रकार समझ लें कि हमारे
परिणाम हमें अनिवार्य रूप में
है और बिना फल की आशा
काम किया जा सकता है और
ही है. क्या अर्जुन ने महाभारत
बिना जीतने की इच्छा से
केवल मारकाट के लिए, अपने
को बेकार नष्ट करने के लिए?
जीतने की इच्छा नहीं थी तो
अर्जुन व कृष्ण के पक्ष ने
मानियां, दगाबाजियां और
सुनी?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

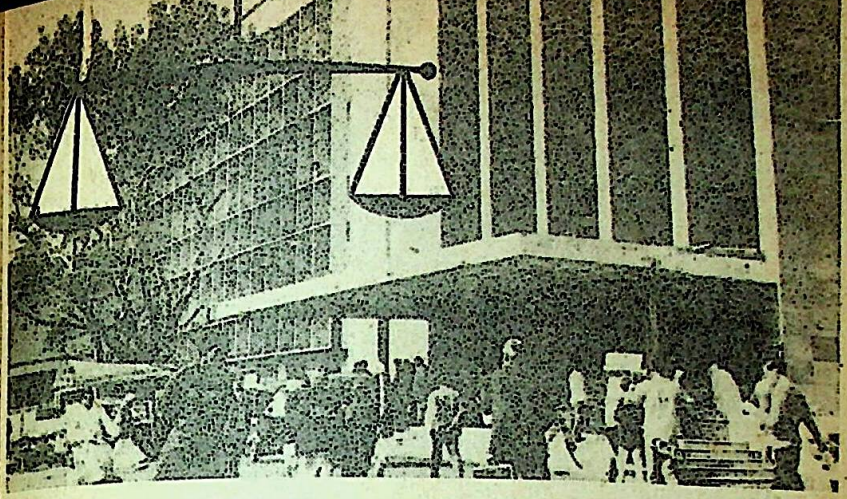

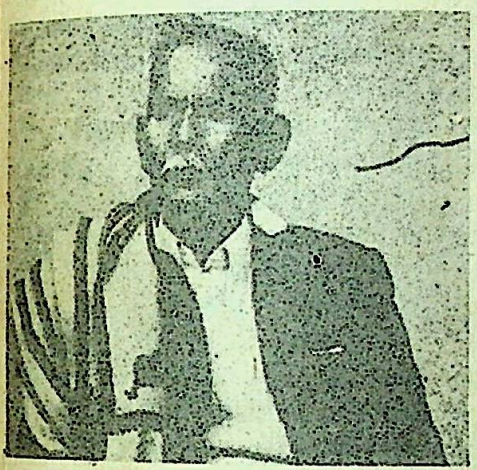

लेख • हेमंत नायक

हमारी कानून व्यवस्था

इतनी पेचीदा क्यों है?

सीताराम शर्मा नगरपालिका डबरा में हेडक्लर्क थे. आपातकाल के दौरान नगरपालिका के अध्यक्ष नाथूराम गुप्ता ने मीसा की धौंस दे कर उन से इस्तीफा लिखा लिया और कहा कि जब तक वह उन के मौखिक आदेशों का पालन करता रहेगा तब तक वह इस्तीफे को अपने पास रखे रहेगा और उसे उपयोग में नहीं लाएगा.

अध्यक्ष को हेडक्लर्क से यह भय था कि वह उस के अवैध कार्यों का भंडाफोड़ न कर दे. इस से उस ने हेडक्लर्क से मौका देख कर इस्तीफा लिखा लिया. ताकि हेडक्लर्क उस से दबा रहेगा और कोई गड़बड़ करने का साहस नहीं करेगा. अगर करेगा तो इस्तीफा पास में है, नौकरी से छुट्टी.

हेडक्लर्क ने भी यह सोचा कि नाथूराम गुप्ता कांग्रेस का माना हुआ नेता है और प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का सदस्य है. आपातकाल में यहां इस की बहुत चल रही है. नगरपालिका में बहुमत दल का नेता है और नगरपालिका का अध्यक्ष है. जिले का जिलाध्यक्ष उस के इशारे पर चलता है, वैसे भी इस ने तमाम लोगों को जिलाध्यक्ष से कह कर मीसा में बंद करवा दिया है, जो बेचारे अभी तक नहीं छूटे हैं और उन के बच्चे भूख से तड़प रहे हैं. सुनने वाला कोई नहीं है. इस भय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से हेडक्लर्क ने अध्यक्ष की इच्छानुसार इस्तीफा लिख कर उसे दे दिया.

समय ने करवट बदली. आपातकाल का अंत हुआ, जिस से हेडक्लर्क का भय दूर हो गया. लेकिन इस स्थिति से अध्यक्ष का भय बढ़ गया. इस से उस ने अपने दल के ही सदस्य और नगरपालिका की स्थायी समिति के चेयरमैन बाबूलाल राजौरिया से वह इस्तीफा मंजूर करा दिया. जब कि नियमानुसार वह इस्तीफा स्वीकार नहीं कर सकते थे. मगर इस्तीफा स्वीकृत कर के हेडक्लर्क को सेवा से पृथक कर दिया गया.

हेडक्लर्क ने न्यायालय की शरण ली. बहुत दिनों तक मुकदमा चला. मामले में हेडक्लर्क का तमाम रुपया खर्च हुआ. उस के बच्चों को परेशानी उठानी पड़ी क्योंकि नौकरी से हट जाने से कोई आमदनी नहीं थी. उस पर वकीलों का खर्चा. नगरपालिका का भी मुकदमे में भारी खर्चा हुआ क्योंकि एक प्रकरण से अनेक प्रकरण अपीलों के रूप में फूट पड़े. मगर जीत हेडक्लर्क की ही हुई. जहां भी निर्णय हुआ न्यायालय ने हेडक्लर्क को हटाए जाने के आदेश को अवैध बताया.

नगरपालिका ने उसे फिर नौकरी पर ले लिया. वेतन के रूप में हजारों रुपया नगरपालिका को हेडक्लर्क को देना पड़ा और दोतीन हजार रुपया नगरपालिका का भी मुकदमे में खर्च हुआ. मगर ऐसी गलती करने वाले ज्यों के त्यों हैं. न उन्हें कोई सजा ही मिली न उन से कोई क्षतिपूर्ति ही वसूल हुई.

जिला भिंड मध्य प्रदेश के जिलाधीश मिश्रा ने वहां के पुलिस अधीक्षक के कहने से एक व्यक्ति को शहर निकाले का आदेश दे दिया. शहर से निकाले हुए व्यक्ति पर यह आरोप लगाया गया कि वह अशांति फैलाने वाला है.

जिलाधीश के आदेश के विरुद्ध उस व्यक्ति ने उच्च न्यायालय में रिट दायर की.

उच्च न्यायालय ने जिलाधीश के आदेश को अविवेकपूर्ण तथा [illegible] अधिकारों को हनन करने वाला [illegible] और शहर बदर करने वाले आदेश [illegible] निरस्त कर दिया.

दुखित व्यक्ति का उच्च न्यायालय [illegible] रिट करने तथा प्रकरण के निपटा[illegible] तक कम से कम एक हजार रुपए से [illegible] ही खर्च हो गया. बदनामी हुई सो [illegible] निर्णय तक मानसिक स्थिति भी [illegible] रही. इतना होने पर भी अधिकारियों [illegible] कोई सजा नहीं हुई क्योंकि कानून [illegible] ऐसे अधिकारियों द्वारा गलत कार्य [illegible] पर उन्हें सजा देने का प्रावधान नहीं [illegible] यह हमारा प्रजातंत्र है, हमारी [illegible] व्यवस्था है.

एक पुलिस के दीवान ने मेरे [illegible] एक टैंपो वाले से 10 रुपए रिश्वत ले [illegible] लेकिन टैंपो वाले ने घूस देने से इनकार [illegible] दिया. इस पर उस दीवान ने उस का [illegible] कर दिया. इस की शिकायत वह [illegible] करने गया. वहां भी उसे दो बेंत पड़े [illegible] उसे भगा दिया गया.

पांच वर्ष बाद वह मुझे मिला. [illegible] उस से पूछा कि तुम्हारे उस चालान [illegible] क्या हुआ. तब उस टैंपो वाले ने [illegible] बताया कि बाबूजी, मैं ने न्याय के लिए [illegible] केस न्यायालय में लड़ा. एक अच्छा [illegible] किया. पूरे तीन साल वह चला. उस में [illegible] जीत गया. दीवानजी ने जो चालान [illegible] था वह न्यायाधीश ने अपने निर्णय में [illegible] बताया. मगर मेरे उस दस रुपए के [illegible] दस सौ रुपए खर्च हो गए. पर उस [illegible] का गलत काम करने पर भी कुछ [illegible] हुआ. तब से मैं ने कान पकड़ लिए [illegible] अब ईमानदारी के चक्कर में नहीं पड़ूंगा.

ग्राम बेहसारी में एक व्यक्ति की [illegible] हुई. पुलिस ने दो व्यक्तियों को गिरफ्तार [illegible] किया. दोनों को हथकड़ी और [illegible] डाल कर जेल भेज दिया गया. फिर [illegible] अदालत में सौंपा गया.

मेरे दिमाग में एक बात बड़ी [illegible] से कौंधी कि हत्या आज हो गई. [illegible] 10 दिन बाद पकड़े गए और अब [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्यायालयों में तारीखें भुगतने वालों की भीड़—लेकिन न्याय होतेहोते परिस्थितियां ही बदल जाती हैं.

बाद निर्णय होगा कि इस के मारने वाले यही लोग हैं अथवा नहीं. यह कौन सी न्याय प्रणाली है.

खैर, छोड़ो इस बात को. काफी दिनों तक अपराधी हथकड़ी और बेड़ी लगा कर अदालत में आता रहा. फिर उन पर अपराध सिद्ध नहीं हुआ और अभियुक्तगण न्यायालय से बरी हो गए. आप यह बतलाइए कि आदमी का आदमी मर गया, अपराधी का पता नहीं चला और जो पुलिस ने पकड़े उन्हें व्यर्थ में ही शारीरिक, मानसिक यातनाएं दी गईं.

इस मामले में हमारा कानून मौन है और ऐसे मारकाट, लूटपाट, बलात्कार तथा हत्याओं के प्रकरणों में अपराध करता है कोई, पकड़ा जाता है कोई. देखने वाला होता है कोई, तो गवाही देने वाला होता है कोई.

न्याय कहां से हो. फिर पुलिस जो मौके पर नहीं होती है वह जांच करती है. क्या जांच करेगी? फिर उस की जांच तो दुनिया में प्रसिद्ध है. उस पर कागजों में बंधा हुआ न्यायाधीश क्या निर्णय देगा, हमआप सब समझते हैं.

न्यायालय की सीढ़ियों पर बैठाबैठा एक आदमी रो रहा था. उस का बुढ़ापा देख कर मेरा मन पिघल गया. मैं ने उस से पूछा, क्यों, क्या बात है? तब उस ने बताया कि मेरी जमीन मेरे गांव के लोगों ने दबा ली है. मुकदमा चलतेचलते दसबीस साल हो गए मगर एक न्यायालय से मामला नहीं निबटा. मुकदमा लड़तेलड़ते बचीखुची जमीन और बिक गई तो भी वकील तारीख पेशी पर नहीं आ रहा. कहता है रुपया और ले आ. अब मैं कहां से लाऊं.

इस तरह के मामलों को देख कर ऐसा लगता है कि क्या मिलता होगा मुकदमा लड़ कर.

अरे! अधिक से अधिक जमीन पांचछः हजार रुपए की होगी. गांव अगर न्यायालय से पचाससाठ मील पर हुआ तो 10 साल में तो बस का किराया ही इतना खर्च हो गया होगा. फिर वकील लेते कुछ हैं तो रसीद कुछ की देते हैं. न्यायालय के अहलकार हर तारीख पर अजगर की तरह मुंह फाड़ते हैं. अगर हिसाब लगाया जाए तो क्या मिलता है न्यायालय से थकान और उदासी. रुपए का हिसाबकिताब बराबर.

अब आप स्वयं अंदाजा लगा लीजिए कि हमारी कानून व्यवस्था कैसी है. इस विषय में अब मुझे कुछ कहने की जरूरत नहीं रही है. ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन की मुसकान

हम लोग अपना मकान बनवा रहे थे. एक मिस्तरी तथा दो बेलदार काम पर थे. काम शुरू हुए अभी पंद्रह दिन ही हुए थे कि एक दिन सीमेंट न होने के कारण आधे दिन ही काम करवा कर छुट्टी कर दी गई. बेलदारों का पूरे घर में आनाजाना हो रहा था और हम लोग बिना निगरानी रखे ही पूर्ण विश्वास के साथ काम करवा रहे थे.

उस दिन एक बेलदार नजर बचा कर टेबल पर रखी घड़ी उठा कर चल दिया. आधे दिन की छुट्टी पा कर मिस्तरी और बेलदारों ने पिक्चर देखने का प्रोग्राम बनाया. बेलदार के जेब से पैसे निकालते समय मिस्तरी की नजर जेब से निकल रहे घड़ी के पट्टे की ओर चली गई. तब उस ने डांट कर बेलदार से घड़ी के बारे में पूछ-ताछ की तो बेलदार ने मान लिया कि उस ने वह घड़ी हमारे यहां से चुराई है. मिस्तरी ने वह घड़ी बेलदार से ले कर हमें वापस कर दी.

—शैलोज कुमार

✦

कुछ विदेशी मित्रों को ले कर मैं पुष्कर घूमने गया था. जैसे ही हम कार से उतरे, एक नौजवान लड़का मेरे पास आया और अंगरेजी में बोला, "क्या, मैं आप लोगों का गाइड बन सकता हूं?"

मैं ने फीस के बारे में पूछा तो वह बिना उत्तर दिए ही हमारे आगेआगे चलने लगा. रास्ते में एक हलवाई की दुकान से माल-पुए खरीद कर मेरे हाथों में संभालते हुए बोला, "विदेशी मेहमानों को यहां की मशहूर चीज खिलाइए, वे भी क्या याद रखेंगे."

मुझे उस पर गुस्सा आया क्योंकि ये सारे पैसे मुझे ही देने थे.

तीन घंटे घूमने के बाद बिदाई लेते वक्त जब मैं उस युवक को बस का नोट देने लगा तो वह बड़ी गंभीरता से बोला, 'रहने दीजिए, आखिर ये लोग मेरे तो मेहमान हैं, बस यों समझिए भारत मेहमान हैं."

इस के पश्चात उस ने हिंदी में कहा ताकि विदेशी न समझ सकें, "यहां के पंडे जरा सी बात में झगड़ा कर अशोभनीय व्यवहार दिखाते हैं, विदेशी मेहमानों के सामने यह कैसा अच्छा दिखाई देता है? मैं फुरसत में इसी लिए विदेशी मेहमानों का स्वा करने के लिए गाइड बन गया.

—चंद्रकांत त्रिवे

एक बार मुझे किसी कार्यवश हि से बाहर जाना था. मैं कश्मीरी गे अंतर्राज्यीय बस अड्डे की ओर पैदल चल दिया. रास्ते में डाकघर पर पड़ते ही मुझे अपनी जेब में रखे पत्र याद आई. मैं ने जेब से पत्र निकाल लेटर बाक्स में डाला और आगे बढ़ ग

अभी लगभग सौ कदम भी न चला कि बाईं ओर से एक जीप आ कर सामने रुक गई. उस के ड्राइवर ने इशारे से अपने पास बुलाया और "भाई साहब, आप के पैसे तो नहीं गिरे मैं ने तुरंत अपनी जेब में हाथ डाला तो का नोट नहीं था, जिसे मैं ने बस का लेने के लिए बाहर की जेब में पत्र के ही रख लिया था.

उस ने मुझे पांच का नोट देते बताया, "जब आप लेटर बाक्स में डाल रहे थे तो उसी समय यह नोट गिर गया था." यह जीप डाकतार वि की थी. उस में डाक विभाग के अधिकारी भी बैठे हुए थे.

—नेगराम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदांग पुस्तकालय
अस्सी, वाराणसी।

बा की बेटी

कहानी • कुसुम तांबे

सचमुच बापू की तरह बा ने भी लक्ष्मी को इस तरह अपना लिया कि जैसे वह उन की अपनी बेटी हो...

कस्तूरबा आज बहुत बेचैन थीं. सारा कोचरब आश्रम निद्रादेवी की गोद में विश्राम कर रहा था, पर बा की आंखों में नींद कहां? निद्रादेवी तो मानो उन से रूठ गई थीं. सच पूछा जाए तो आज की रात तो उन्हें सुख की गहरी नींद सोना चाहिए था, क्योंकि जिस हरिजन परिवार के कारण पिछले कई दिनों से उन के और बापू के बीच संघर्ष चल रहा था, यहां तक कि पिछले कुछ दिनों से बा ने भोजन भी छोड़ रखा था, वह हरिजन परिवार कल आश्रम छोड़ कर वापस अपने घर

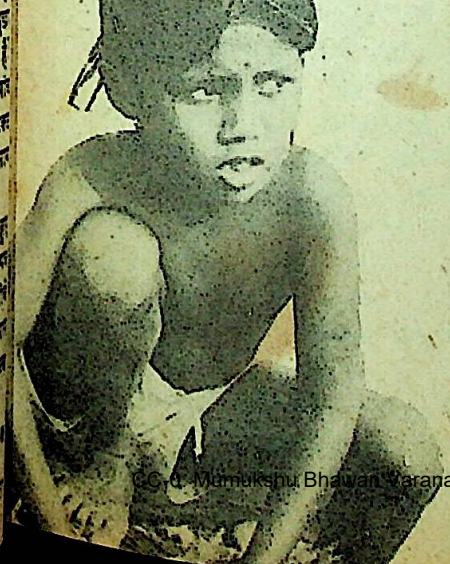

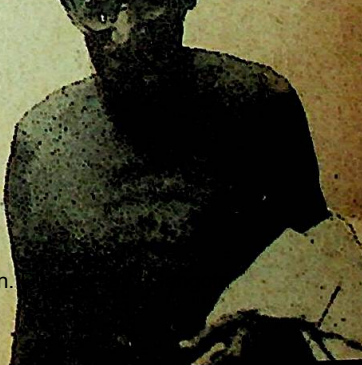

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

जा रहा था. बा की यह एक प्रकार से बहुत बड़ी विजय थी लेकिन फिर भी बा अशांत थीं.

उन दिनों यानी सन 1915-16 में बा और बापू दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश लौट कर अहमदाबाद के पास कोचरब आश्रम की स्थापना कर उस में रहते थे. यह आश्रम क्या था, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह जैसे महान सिद्धांतों को प्रत्यक्ष जीवन में उतारने का बापू का अनोखा प्रयोग था. बापू के कई मित्र तथा संबंधी इस प्रयोग में सहयोग देने उन के साथ आश्रम में रहने लगे थे.

आश्रमवासियों के हृदय से छुआछूत की भावना मिटाने के लिए बापू अछूतों को भी उस आश्रम में रखना चाहते थे. वैसे तो एक पंचम जाति का युवक अफ्रीका से ही उन के साथ आश्रम में आया था. उस के पिता का दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह में देहांत हो गया था, इसी लिए बापू की तो उस पर विशेष कृपा थी ही पर बा को भी उस से सहानुभूति थी. लेकिन फिर भी जब ठक्कर बापा बापू की इच्छा के अनुसार सौराष्ट्र के एक अच्छे हरिजन परिवार को दूदाभाई, दानीबेन तथा उन की छोटी सी बेटी लक्ष्मी को आश्रम में ले आए तो वहां मानो भूचाल सा आ गया.

बापू के वैष्णव संस्कारों में पले संबंधियों को यह बात असह्य लगी. उन में से कुछ तो आश्रम छोड़ कर चले गए. जो नहीं गए वे बा से कहते, "देखो कस्तूरबाई, इस समय बापू को समझाना-बुझाना तुम्हारा काम है. भई, परदेस की बात और है. वहां तुम कुछ भी करो. कौन देखने जाता है? किंतु यहां अपने देस में यदि तुम अछूतों को अपने घर में रखोगी उन के हाथ का खाओगीपिओगी तो लोग तुम्हें क्या कहेंगे? कल को कोई जातबिरादरी वाला तुम्हारे घर अपनी बेटी नहीं ब्याहेगा. समझीं?"

कस्तूरबा ने जब यह बात बापू से कही तो उन्होंने हंस कर उत्तर दिया, "अरे कस्तूरबाई, हमें कौन अपनी बेटी से बहुएं लानी हैं? हमें तो ऐसी चाहिएं जिन के आचारविचार मेल खाएं. तुम अभी से इस की चिंता मत करो."

इस पर बा चुप हो गई थीं. को छूने में या साथ रखने में आपत्ति नहीं थी, क्योंकि उन के इतनी तैयारी तो अफ्रीका में ही हो पर जब बापू ने इन अछूतों को के काम में भी साथ रखने का किया तो यह बात बा के लिए हो उठी. उन्होंने बापू से कहा, "ज्ञातपांत न मानो ऊंचनीच पर तो मानोगे? सलीका तो मानोगे की आदतें तो देखो, कैसी गंदी हैं बार समझाया कि खाना परोसते

जब दूदाभाई और दानीबे का निर्णय लिया तो बा सचमुच ही अपने घरेलू का और बापू के झगड़े को

कड़छी या चम्मच थाली से छू वह जूठा हो जाता है, उसे मांजने में रखो. पर नहीं. थाली से चम्मच और वही जूठा चम्मच सब्जी के में डाल देंगे. मुंह से गिलास लगा पिएगें और वही जूठा गिलास से धोएमांजे पनियारे पर रख देंगे. कैसा गंदापन है यह? और तुम इन को रसोई के काम में साथ बाबा ना. मुझ से तो यह बिलकुल नहीं मैं साफ बताए देती हूं, यदि तुम को रसोईघर में लाओगे तो मैं नहीं खाऊंगी. हां."

पर इस धमकी के बावजूद अपने निश्चय पर अटल रहे और सचमच ही खाना छोड़ दिया. देखादेखी और भी कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहनों ने भोजन छोड़ दिया. वे केवल फलाहार पर रहने लगीं. बापू ने इन सब को समझाने की बहुत कोशिश की पर बा भी अपनी जिद की पक्की थीं, न वह झुकीं न बापू झुके. पता नहीं बात कहां तक बढ़ती परंतु उसी समय दूदाभाई और दानीबेन ने अपने कुछ पारिवारिक कारणों से आश्रम छोड़ कर घर चले जाने का निर्णय लिया और सारे आश्रम ने मुक्ति की सांस ली, 'चलो, अच्छा हुआ. न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी.'

परंतु बा मन में सोचने लगीं, 'क्या, ये लोग सचमुच ही अपने घरेलू कारणों से घर जा रहे हैं? या उस की वजह से, उस के और बापू के झगड़े को मिटाने के लिए आश्रम छोड़ रहे हैं? बा को कल की बात याद आई, जब वे लोग बा से विदा लेने

आश्रम छोड़ कर घर चले जाने में सोचने लगीं, 'क्या, ये लोग से घर जा रहे हैं? या उस के के लिए आश्रम छोड़ रहे हैं?'

आए थे. दूदाभाई और दानीबेन ने बा के पांव छू कर गदगद स्वर में कहा था—

"बा, हमारे कारण आप को बहुत कष्ट हुए. हम क्षमा चाहते हैं. आप हमें हमेशा अच्छी बातें सिखाती रहीं किंतु हम ठहरे गंवार, हम कुछ नहीं सीख सके. अब तो बस एक ही प्रार्थना है, बा, हमारा तो जो होना था हो गया, किंतु यह लक्ष्मी बिटिया यदि आप की छाया में पल जाए तो उस का जीवन बन जाए. क्या इसे अपने पास रखेंगी, बा?"

"यह, क्या कहते हो, भाई. इतनी छोटी सी लड़की भला अपने मांबाप को छोड़ कर रह सकेगी?"

"बड़े मजे में रहेगी, बा. वह तो बापू के पीछे दीवानी है. पूछो उस से." यह कह कर दानीबेन ने लक्ष्मी से पूछा, "क्यों बिटिया, हमारे साथ चलेगी या बापू के पास रहोगी?"

"हम तो बापू के पास रहेंगे. बापू तो बहुत अच्छे हैं."

नन्हीं लक्ष्मी के इस निश्छल प्यार से भरे तुतले बोलों को सुन कर तथा उस का प्यार से उद्दीप्त भोला मुखड़ा देख कर क्षण भर तो बा को भी उसे उठा कर चूम लेने की इच्छा हुई परंतु वह चुपचाप बैठी रहीं.

तब से रहरह कर एक ही बात उन के मन में उठ रही थी—'क्या लक्ष्मी को बापू से अलग कर के वह सही काम कर रही हैं?' बापू को भी लक्ष्मी से कितना लगाव हो गया है. विद्यार्थियों को कक्षा में गणित, संस्कृत पढ़ाते समय भी यदि कहीं से लक्ष्मी का रोना सुनाई दिया तो वह बेचैन हो कर देवदास या प्रभुदास को दौड़ाते हैं—'जा तो देख, लक्ष्मी क्यों रो रही है? उसे मेरे पास ले आ.' और वह लड़की भी बापू के पास आते ही चुप हो जाती है. तब क्या लक्ष्मी के जाने से बापू के हृदय को ठेस नहीं पहुंचेगी? बहुत ठेस पहुंचेगी. इसी कारण तो वह कल से ऐसे उदास हैं. यदि वह चाहते तो क्या लक्ष्मी को उस के सारे परिवार को ही बा की इच्छा के विरुद्ध जबरदस्ती रोक नहीं सकते थे? बा को 15-16 साल पहले की डरबन की वह रात याद आई जब उन के और बापू के बीच इसी कारण से झगड़ा हुआ था.

उन दिनों डरबन में बा बापू के घर में एक पंचम जाति का ईसाई कारकुन रहने आया था. घर में अलग से मोरियां नहीं बनी थीं, हर कमरे में अंगरेजी पद्धति के पेशाब के बर्तन रखे रहते थे. इन बर्तनों को घर वालों को ही साफ करना पड़ता था. और लोग तो अपना मूत्रपात्र स्वयं साफ करते थे परंतु इस नए ईसाई युवक को यह बात अभी तक ठीक से समझ में नहीं आई थी. अतः कई बार उन का पेशाब का बर्तन बा या बापू को ही साफ करना पड़ता था.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस रात भी बापू उस का बेशाव का बर्तन उठाने जा रहे थे. बा से यह देखा नहीं गया और उन्होंने खुद ही वह बर्तन उठा लिया. उन्होंने बर्तन उठा तो लिया परंतु उस समय उन का हृदय असह्य क्रोध, ग्लानि और अपमान से फटा जा रहा था. उन का मुंह गुस्से से लाल हो गया था, आंखों से टपटप मोती से आंसू झर रहे थे और मूक आग्नेय दृष्टि मानो बापू को उलाहना दे रही थी, 'तुम ने मेरी यह क्या गत बना डाली ? ऊंचे वैष्णव कुल में जन्म पा कर एक पंचम जाति के ईसाई का मैला मैं साफ कर रही हूं. छिः छिः इस से अच्छा तो मैं मर जाती.'

बापू का पौरुष इस मूक धिक्कार से तिलमिला उठा. उन्होंने गरज कर कहा, "यह क्या तमाशा मचा रखा है? देखो जी, यह सब रोनाधोना यहां नहीं चलेगा. यहां, मेरे घर में रहना है तो हंसीखुशी से काम करने पड़ेंगे. समझीं?"

ये वचनबाण बा के हृदय को बींध गए. वह भड़क उठीं, "तुम्हारा घर? ऐं? तो ले संभालो अपना घर, मैं चली."

"अच्छा, यह अकड़? ये तेवर? अभी दिखाता हूं तुझे. चल, निकल जा मेरे घर से. अभी, इसी वक्त निकल जा." यह कहते हुए क्रोध से अंधे बापू कस्तूरबा को घसीट कर दरवाजे के पास ले गए और उन्होंने दरवाजा भी आधा खोल डाला परंतु तभी में कस्तूरबा कह उठीं, "अरेअरे! यह क्या करते हो? कुछ तो शरम करो. इस रात के समय घर से निकल कर मैं कहां जाऊंगी? यहां कौन मेरे मांबाप बैठे हैं, जो मैं उन के पास जाती? यहां परदेस में मुझे अकेली असहाय जान कर ही तुम ऐसा जुल्म कर रहे हो न? मैं तो ठहरी हिंदू औरत, घर

"यह लीजिए सुईधागा, अपना बटन आप ही टांकिए. मुझे तो महिला मंडल की सभा में जाना है."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो हर हालत में तुम्हारा साथ निभाना है, परंतु लोग क्या सोचेंगे? बच्चों के मन पर क्या असर होगा? कुछ तो सोचो. बस, अब जल्दी दरवाजा बंद करो वरना हम दोनों की ही फजीहत होगी."

बा के ये वचन सुन कर बापू होश में आए. मन ही मन वह शरम से पानीपानी हो गए थे. उस समय तो वह कुछ नहीं बोले पर बाद में उन्होंने बा से क्षमा मांग कर उन्हें आश्वासन दिया था कि अब आगे वह कभी बा के साथ इस प्रकार की जोरजबरदस्ती नहीं करेंगे. इस वचन का बापू पूरी तरह प्रतिपालन कर रहे थे. वह कितने बदल गए थे! वरना क्या आज भी वह बूदाभाई और उन के परिवार को रोक न लेते? क्या वह बा को समझाने की जीजान से चेष्टा करते? कल वह कैसे उदास हो ठक्कर-बापा से कह रहे थे, "बापा, बा को यह बात समझाना मुश्किल है. मैं तो हार गया."

उस के बाद गंभीर हो कर, शून्य में दृष्टि गढ़ा कर कुछ सोचते हुए उन्होंने कहा था, "इतने पर भी मुझे जन्म-जन्मांतर के लिए अपना साथी पसंद करना हो तो मैं बा को ही पसंद करूंगा." इस स्मृति ने बा को व्याकुल बना दिया.

वह सोचने लगीं, 'अहा! कैसा प्रगाढ़ प्रेम है बापू को उन से. वह स्वयं भी तो बापू को हृदय से चाहती हैं. तब क्यों वह उन का विरोध कर उन के हृदय को ठेस पहुंचा रही हैं? और फिर बापू क्या कोई गलत काम कर रहे हैं? तो फिर क्यों वह लक्ष्मी को नहीं अपना पातीं? जब वह स्वयं अपने परंपरागत संस्कारों के बंधन तोड़ कर इन अछूतों को अपनाने में असमर्थ हैं तब वह उन्हें उन की गंदी आदतों के लिए दोषी क्यों ठहराती हैं? आखिर उन के भी तो ये संस्कार ही हैं? बापू को तो देखो, कितने सच्चे हृदय से उन्होंने इन अछूतों को अपनाया है. किस प्रकार वह इन अमानवीय भेदभाव के संस्कारों को मिटा कर ऊपर उठने की कोशिश कर रहे हैं. क्या तुम पतिव्रता हो कर उन का साथ नहीं दोगी? क्या तुम उन के मार्ग का रोड़ा बन कर उन के पैर पीछे ही खींचती रहोगी?' बा स्वयं से पूछने लगीं, 'नहीं, नहीं, ऐसा नहीं होगा. मैं भी संस्कारों के बंधन तोड़ कर अपने महान पति का साथ दूंगी. मैं भी छुआछूत के भाव को हृदय से मिटा कर लक्ष्मी को अपना लूंगी.'

इतने में रसोईघर से थालीबेलन की टनटन की आवाज सुन कर वह चौंक पड़ीं, 'अरे! वह तो बापू हमेशा की तरह आश्रमवासियों को जगाने के लिए थालीबेलन बजा रहे हैं. तो क्या सवेरे के चार बज गए? बा झट से उठ कर बापू के पास जा कर कहने लगीं—

"सुनो, हम लक्ष्मी को गोद ले लेंगे. मैं उसे पालूंगी."

"क्या कह रही हो, कस्तूरबाई?" बापू ने आश्चर्य से प्रश्न किया.

"हां, हां, बिलकुल सच. तुम बूदाभाई और बेन से कह दो."

"जब तुम कह रही हो तो अवश्य उसे कर के ही रहोगी. आज से लक्ष्मी हमारी बेटी हो गई." बापू ने हर्षित हो कर कहा.

बापू का यह विश्वास पूरी तरह सच निकला. इस घटना के कई वर्षों बाद 1930 में, जब डा. सुशीला नायर पहली बार साबरमती आश्रम में कुछ दिन रह कर घर लौटीं तो किसी ने उन से पूछा था—"क्यों सुशीला, महात्माजी के पास गई थी न? तो वहां वह भंगी की लड़की तुम्हारी सहेली बनी या नहीं?"

"कौन भंगी की लड़की?" सुशीला ने आश्चर्य से पूछा, "वहां तो कोई भंगी की लड़की नहीं है. वहां तो सिर्फ लक्ष्मी है—बा और बापू की बेटी."

सचमुच ही बापू की तरह बा ने भी लक्ष्मी को ऐसा पूरी तरह अपना लिया था कि जैसे वह वास्तव में उन की अपनी बेटी हो. बाद में तो कस्तूरबा केवल लक्ष्मी की ही नहीं बल्कि बापू के समस्त हरिजनों की सच्ची बा, सच्ची मां बन गई थीं. ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेरणा

कहानी • सुषमा माथुर

नीरद की आंखें पिता के मकान पर लगी थीं, लेकिन पिता के मृत्यु के बाद जब उस ने वसीयत देखी तो उस के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई...

"मांजी, अब जब पिताजी रिटायर हो गए हैं तो आप दोनों को रहने की क्या आवश्यकता है? हमारे पास बंबई आ कर रहिएगा."

बहू श्रंगार के मुंह से ये शब्द सुन कर सास सीता गद्गद हो उठी. बोली, "मैं तो खुद इन से यही कह रही थी परंतु न जाने इन की मत कैसी है? कहते हैं, इतने शौक से मकान किराए पर देने के लिए थोड़ी बनवाया था."

"मैं तो पिताजी से कह रहा था कि आप दो जनों के लिए इतने बड़े मकान की क्या आवश्यकता है. कुछ स्थान अपने पास रख बाकी किराए पर दे दें. मेरा मित्र राकेश कह रहा था कि कम से कम तीन हजार में यह मकान किराए पर उठेगा," नीरद बोला.

"अरे बेटा, इतने पैसे का हमें क्या करना है. दो पतिपत्नी ही तो हैं. ईश्वर की कृपा से हमारे सारे कर्तव्य पूरे हो गए. अब किस लिए पैसे की चिंता करें? मकान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरीर चलाने के लिए हमारे पास अब भी आवश्यकता से अधिक है. यह तो यही कहते हैं कि हमारे जीवन का स्वर्णिम काल तो अब आरंभ हुआ है. किसी की चिंता नहीं. बेटियां अपने पतियों के पास प्रसन्न हैं, तुम्हारे सुखदुख का ध्यान रखने वाली बहू है." सीता के स्वर में गर्व का पुट था.

श्रृंगार और नीरद ने एकदूसरे की ओर देखा. नीरद को चुप देख श्रृंगार बोली, "मांजी, मानती हूं कि आप को इस से अधिक धन की आवश्यकता नहीं परंतु धन का महत्त्व तो इस से कम नहीं हो जाता. दोतीन हजार रुपए मासिक आय को हम अनदेखी नहीं कर सकते? फिर सोचिए ना, हम लोगों का बंबई में कितना खर्चा है. दोनों पतिपत्नी सर्विस करते हैं, फिर भी पूरा नहीं पड़ता. दोनों बच्चों की पढ़ाई के ऊपर ही चार सौ रुपए महीना खर्च हो जाता है और अपनेआप अच्छा खाओ या ना खाओ, बच्चों को तो खिलाना ही पड़ता है. नहीं खाएंगे तो स्वास्थ्य कैसे ठीक रहेगा? उस के ऊपर आया की तनख्वाह."

"हम तो सोचते थे, तुम दोनों बड़े सुख में रहते होगे. दोनों पतिपत्नी की इतनी अच्छी आय है और दो ही बच्चे हैं," सीता ने आश्चर्य से कहा.

"यही तो आप को भ्रम है. बंबई में आइए तो आप को मालूम चले. दिन गिनगिन कर माह समाप्त होता है. चाहते हैं, मकान जरा बड़ा ले लें परंतु किराए सुन कर ही दिल दहल जाता है."

"अच्छा? तुम ने पहले जिक्र नहीं किया वरना हम यहां से तुम्हारी कुछ सहायता कर देते."

"तभी तो मैं कह रही हूं, आप हमारे साथ चलिए. यहां के जो किराए के रुपए आएंगे, उस से हम जरा बड़ा घर ले लेंगे."

बहू के बंबई बुलाने का कारण जान

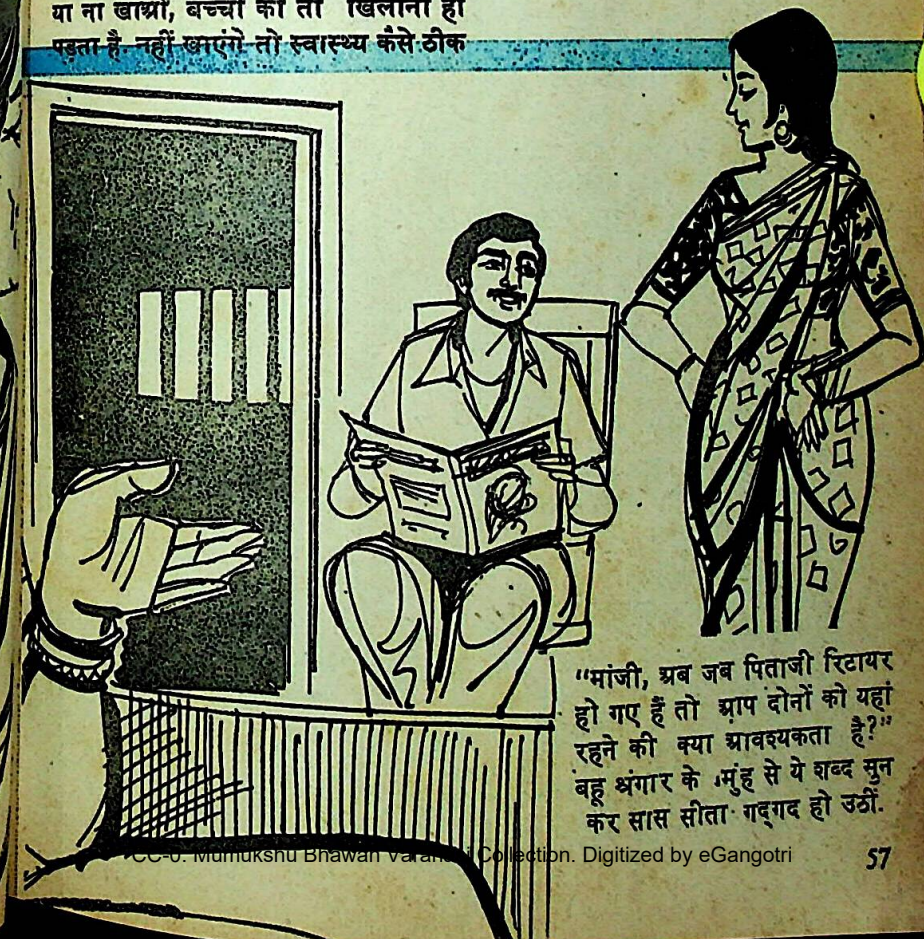

"मांजी, अब जब पिताजी रिटायर हो गए हैं तो आप दोनों को यहां रहने की क्या आवश्यकता है?" बहू श्रृंगार के मुंह से ये शब्द सुन कर सास सीता गद्गद हो उठीं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीता का उत्साह कुछ कम हो गया. मनोभाव छिपा कर बोली, "देखो, इन से बात कर देखूंगी. अगर तुम लोग कष्ट में हो तो अब से हम प्रति माह तुम्हारे लिए कुछ भेज दिया करेंगे. आखिर यह सब तुम्हारे लिए ही तो है."

कुछ देर और श्रृंगार और नीरद सीता को इतना बड़ा घर रखने की हानियां समझाते रहे. सीता का मन क्षोभ से भरता जा रहा था. अपने को स्थिर करने के लिए उस ने वहां से उठना ही ठीक समझा. रसोई की ओर जाते हुए बोली, "चलूं, देखूं, भोलू क्या कर रहा है? यह आने वाले हैं, आते ही चाय के लिए शोर मचाएंगे."

सीता उठ कर चली गई तो नीरद श्रृंगार से बोला, "तुम मां से बंबई चलने को बारबार क्यों कह रही हो. यहां पर इन का अपना समाज का दायरा है, संबंधी हैं, मित्र हैं, मन लगा रहता है. वहां इन का मन कैसे लगेगा? फिर हम लोगों का जीवन भी बिलकुल दूसरी प्रकार का है. सुबह से शाम तक आफिस में रहना और आफिस से आ कर या तो स्वयं कहीं जाना या किसी का घर पर सत्कार करना. दोनों जने बोर हो जाएंगे. हां, थोड़े दिन के लिए जाने की बात है तो ठीक है."

"आप भी कमाल करते हैं, थोड़े दिनों के लिए ले जाना ठीक है. इतने से घर में कहां रखोगे? मैं तो इसलिए कह रही हूं कि यहां के मकान का किराया आएगा. और जब दोनों मातापिता वहां रह रहे होंगे तो किराया हमारे हाथ में ही तो आएगा. उस से हम एक अच्छा मकान ले सकते हैं. कितनी शर्म आती है उस मकान में जब मेरी सहेलियां आती हैं."

"तुम क्या अपना घूमनाफिरना बंद कर सकोगी?"

"ओफ्फ हो! आप बात क्यों नहीं समझते? घूमनेफिरने में तो तब और सुविधा हो जाएगी. आया के पास बच्चे छोड़ने में आप हमेशा कतराते रहते हैं. आया की तनख्वाह के रुपए भी बचेंगे."

"क्या बात कर रही हो? मां से का काम कराओगी?" नीरद उत्तेजित हो कर बोला. श्रृंगार को हुआ कि वह एक बहुत ही नातजु से बात कर रही है. समझाते हुए, शब्द पर जोर देते हुए बोली, "इस क्यों सोचते हैं? यह कहिए कि काम उन का मन लगा रहेगा. बच्चे भी प्रसन्न रहेंगे, बल्कि मैं तो सोच रही बंटी और स्वीटी के टीचर को हटा दूंगी. आखिर आप के पिता ने लोगों को पढ़ाया है, तो क्या पोतेपोते नहीं पढ़ा सकते?"

नीरद विस्फारित नेत्रों से श्रृंगार ओर देखता रह गया. वह उस की आत्मसात करने का प्रयत्न कर रहा

कैलाशनाथ का पत्र पा कर नीरद और श्रृंगार बड़े खुश हुए. 'चल खूब आमदनी होगी," नीरद ने से बोला.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आ, तब ही बाहर पिता कैलाशनाथ की आवाज सुन दोनों सतर्क हो गए. श्रंगार कमरे से रसोई की ओर जाते हुए फुसफुसा कर बोली, "बंबई चलने के लिए पटा लेना."

कैलाशनाथ के कमरे में प्रवेश करते ही नीरव बोला, "पिताजी, आप ने आज बहुत देर लगा दी घूमने में. हम लोग चाय के लिए कब से आप की प्रतीक्षा कर रहे हैं."

"मैं तो कह कर गया था, मेरी प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है. अरे, बेटा, सारा जीवन मैं ने घड़ी की सुइयों की ओर देख कर व्यतीत किया है. अब सोचता हूं, बाकी का जीवन समय से स्वतंत्र हो कर बिताऊंगा. जब इच्छा होगी खाऊंगा, जब इच्छा होगी आराम करूंगा."

"यह बात तो आप की हमारे पास निभ जाएगी. हम दोनों तो सारा दिन घर से बाहर रहते हैं और बच्चे भी स्कूल चले जाते हैं. आप अपनी सुविधा और इच्छानुसार दिन बिता सकते हैं."

कैलाशनाथ हंस दिए.

"हां. अब तो फुरसत ही फुरसत है, बंबई भी आएंगे पर तुम तो कहते हो तुम्हारा मकान छोटा है. भई, देखो हम तो हमेशा से खुले में रहे, अब इस वृद्ध अवस्था में अपनी आदतें बदलनी जरा कठिन लगती हैं."

"पर, पिताजी, जब आप हमारे पास रहेंगे तो हम बड़ा मकान ले लेंगे."

कैलाशनाथ फिर हंस दिए.

"अरे नहीं, चार दिन के लिए तुम क्यों हमेशा के लिए खर्चा बढ़ाओ. तुम्हीं लोग छुट्टियों में आया जाया करो. इतना बड़ा मकान मैं ने इसी लिए तो बनवाया था कि हमारी दोनों पुत्रियां और पुत्र अपने परिवारों सहित आ जाएं तब भी किसी को कष्ट न हो."

"पर, पिताजी, मैं तो आप को स्थायी तौर पर अपने पास आने के लिए कह रहा हूं. इतने बड़े मकान को दो जने रोके रखें, कहां तक उचित है? आप के बच्चे अपने-अपने परिवारों में खुश हैं. किसी को कहां अवकाश है कि यहां रहने के लिए आए. इस समय भी हम बड़ी कठिनाई से आ पाए हैं."

"नहीं...नहीं, मैं दिल्ली नहीं छोड़ सकता. मेरे सारे मित्र यहां हैं. कभी अकेलापन नहीं अनुभव होता."

तभी श्रंगार ने हाथ में चाय की ट्रे लिए कमरे में प्रवेश किया. नीरव उस की ओर देख बोला, "श्रंगार, पिताजी मेरे से तो राजी हो नहीं रहे. कहते हैं, इन का मन दिल्ली से बाहर नहीं लग सकता."

श्रंगार ने मुसकराते हुए ट्रे मेज पर रख दी और बोली, "पिताजी को अपने बच्चों से अधिक अपने मित्र प्यारे हैं."

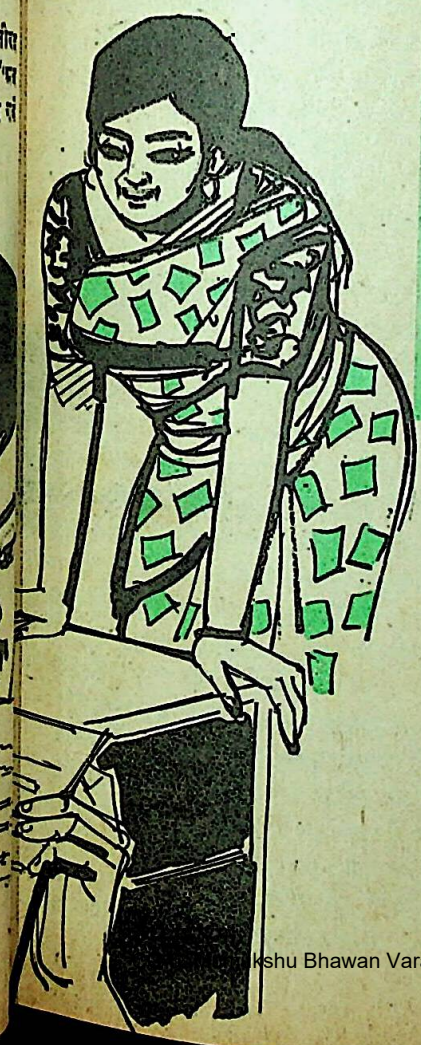

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैलाशनाथ अप्रतिभ से हो बोले, "नहीं बहू, कैसी बातें करती हो. मैं तो इसलिए कह रहा था कि तुम दोनों तो सारा दिन बाहर रहोगे. हम घर में कैसे अकेले अपना मन बहला सकेंगे. यहां तो पासपड़ोसी बरसों से साथ रह रहे हैं, कभी भी वह हमारे पास आ जाते हैं, कभी हम उन के पास चले जाते हैं. सब की मनोवृत्तियों को सब समझते हैं, इसलिए कभी किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं होती. हमें पूर्ण विश्वास है कि हमें किसी समय भी आवश्यकता पड़े तो सब हमारी सहायता करने को तत्पर हैं. अब एक नई जगह जा कर किसी से कैसे इतनी आत्मीयता हो सकती है?"

"आप के पोतापोती तो स्कूल से बारह बजे ही आ जाते हैं. उन्हें पढ़ाइएलिखाइए, आप का समय व्यतीत हो जाएगा. किसी बाहरी आदमी की क्या आवश्यकता है? बच्चे भी किसी योग्य हो जाएंगे."

कैलाशनाथ कुछ देर चुप हो बेटेबहू का मुंह देख उन का आशय समझने का प्रयत्न करते रहे, फिर दृढ़ स्वर में बोले, "नहीं, बिटिया, मैं अपना घर नहीं छोड़ सकता और चाय तुम क्यों लाईं, भोलू क्यों नहीं लाया? तुम्हारी सास क्या कर रही है?"

"पिताजी, यह आप का भोलू तो बिलकुल बेकार का नौकर है. सारा काम तो मांजी को करना पड़ता है. यह तो मुफ्त की खाता है."

"हां, पिताजी, इसे हटा क्यों नहीं देते. बंबई आप ना भी आएं तो दो प्राणियों का काम ही कितना होता है जो नौकर रखा जाए," नीरद बोला.

"नीरद, तू जानता है, तब भी ऐसी बात कहता है. भोलू मेरे पास पच्चीस साल से है. तुम सब को बड़ा करने में इस का हाथ है. जब स्वयं यह आठनौ वर्ष का था तब मेरे पास आया था. मैं इसे नौकर नहीं, घर का एक सदस्य मानता हूं और अभी तक मैं यही समझता आया था कि तुम भी ऐसा ही मानते हो."

नीरद पिता का कटाक्ष [illegible] अप्रतिभ हो चुप रह गया. श्रृंगार संभालने के प्रयत्न में कहा, हमारा यह तात्पर्य नहीं था कि से संपर्क तोड़ लें. अब हम आप हुए भी क्या आप से अलग नहीं फिर मांजी काम में लगी रहेंगी अपने बुढ़ापे और असहायता का नहीं होगा और तभी हम कह आप इतना बड़ा मकान ना रखें, पर दे दें. थोड़ा स्थान होगा काम होगा."

कैलाशनाथ पुत्र और पुत्रवधू को रहे थे, जैसे आज पहली बार हों. अब तक सीता भी कमरे में पति की ओर चाय का प्याला बोली, "बहू और नीरद ठीक रहे हैं." अब कैलाशनाथ

"तुम समझतीं क्यों नहीं, ने यह मकान इस प्रकार का नहीं है कि इस के हिस्से किए

सीता कुछ बोलती, इस श्रृंगार बोली, "क्यों, मांजी क्या भाग में नहीं रह सकतीं? इतना है. पूरी खुली छत है. नीचे का किराए पर दे दें."

कैलाशनाथ को लगा, बहू शारीरिक प्रहार किया है. सीता भी तड़प उठा. कुछ संयत स्वर नाथ बोले, "अच्छा, मैं सोचूंगा, इतनी जल्दी क्यों कर रहे हो?"

"पिताजी, हमें कल सुबह हमारे जाते ही आप लापरवा

"नहीं, अब मैं लापरवा नहीं फिर बहू की ओर देख मुसकरा "अच्छा हुआ, बहू तुम ने हमें ही सचेत कर दिया, नहीं तो में पश्चात्ताप करना पड़ता." मुसकरा उठी और गर्व भरी पति की ओर देखा.

कुछ दिन पश्चात बंबई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्र पहुंचा तो श्रंगार चिहुंक उठी. पति बताया, "पिताजी ने लिखा है कि ान का निचला भाग उन्होंने पेंशन - ता लोगों के लिए निवासस्थान व मैस रूप में परिवर्तित कर दिया है. जिन वृद्ध ों के घर पर उन की देखभाल के लिए ई नहीं है, वे वहां रहेंगे. भोलू सब के ए खाना इत्यादि बनाएगा."

"अरे वाह, पिताजी ने तो कमाल कर ा. यह तो एक प्रकार का होटल गया. खूब आमदनी होगी." नीरद से पत्नी से बोला, "आखिर पिता किस है."

श्रंगार हंस कर बोली, "हां, आप तो ा श्रेय पिता को ही दोगे. प्रेरणा तो ने दी थी."

पिता की मृत्यु का समाचार सुन नीरद श्रंगार दिल्ली पहुंचे. दोनों बहनें व बहनोई भी ठीक समय पर पहुंच गए थे. सब काम समाप्त होने पर नीरद ने पिता की वसीयत देखनी चाही. मां का शोक से बुरा हाल था, बोलीं, वह कुछ नहीं जानती. जिस वकील से लिखवाई थी उस का नाम बता दिया.

शाम को वकील साहब आए. बहनोई भी सतर्क थे परंतु जब वसीयत सुनी तो तीनों जोड़े स्तंभित रह गए. मकान और उस की आय के लिए कैलाशनाथ ट्रस्ट बना गए थे. अपनी पत्नी और भोलू के लिए वहां आजीवन रहने की सुविधा थी. कुछ नकद धनराशि वह तीनों बच्चों तथा पत्नी में बराबर बांट गए थे. अंत में लिखा था कि उन की पत्नी की मृत्यु के बाद मकान का वह भाग उन के पुत्र व पुत्रियों के लिए सुरक्षित रहेगा. क्या मालूम किसे उस की आवश्यकता पड़ जाए. ●

यह भी खूब रही

ट्रेन अपनी रफ्तार से आगे बढ़ रही उसी रफ्तार से कंपार्टमेंट में भरे लोगों राजनीतिक सरगर्मी भी जोर पकड़ थी. कुछ लोग कांग्रेस के पक्ष में बोल थे तो कुछ लोग जनता पार्टी के पक्ष में, बीच समाजवाद और कम्यूनिज्म की चल पड़ी.

दो सज्जनों में बहस चल रही थी, सज्जन बोले, कम्यूनिज्म आएगा, सज्जन बोले, कम्यूनिज्म नहीं जवाद आएगा.

इसी तरह दोनों में बहस चल रही थी ऊपर की बर्थ पर लेटे हुए सज्जन, जो में थे, हड़बड़ा कर बोले, "भाई साहब, राबाद कब आएगा? नसीराबाद आ तो कृपया उठा देना." इतना कह कर फिर सो गए.

—सत्यनारायण नाग

शीला के पति को सप्ताह में एक बार शिक्षक बनने का दौरा पड़ता है. जिस दिन वह पढ़ाते हैं, उस दिन बच्चों की शामत आ जाती है. इसी प्रकार एक रविवार को वह अपनी छोटी लड़की को पढ़ाने लगे. लड़की दूसरी कक्षा में पढ़ती थी. पिताजी उर्दू पढ़े हुए थे. उन्होंने भीषण गर्जना करते हुए लड़की से कहा, "17 और 18 को जमा करो." लड़की ने घबरा कर हासिल जमा नहीं किया और उत्तर 25 लिख दिया.

पिताजी एकदम गरज पड़े, "हासिल कहां है?"

लड़की को हासिल का अर्थ पता नहीं था क्योंकि उसे स्कूल में 'हासिल' की जगह 'बाकी' पढ़ाया जाता था. लड़की कांपती हुई बोली, "पापा, मुझे नहीं पता, राजू से पूछो." पिताजी लड़की की पिटाई करते हुए बोले, "अजी, सुनती हो, इसे तो हासिल का भी नहीं पता, इसे कौन से स्कूल में भेजती हो." लड़की की मम्मी बोली, "तो क्या इसे मार डालोगे. हासिल नहीं मिलता तो स्वयं ढूंढ़ लो. क्यों दिमाग चाट रहे हो."

—सोमनाथ ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरिता साहित्य पुरस्कार योज
10,000 रुपए का पुरस्कार

सरिता ने सदैव ही प्रेरक और सार्थक साहित्य को नई दिश
और प्रतिभाशाली कथाकारों को अपना स्थान बनाने का अवसर
है. इसी अभियान के अंतर्गत दूसरी मौलिक उपन्यास प्रतियोगिता
उपन्यास आमंत्रित हैं.

नियम व शर्तें

1. उपन्यास सर्वथा मौलिक, अप्रकाशित और अप्रसारित होने चाहिए. प्रकाशित
पर विचार नहीं किया जाएगा.

2. उपन्यास राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति की प्रगति व चरित्रनिर्माण
होना चाहिए. कथानक उद्देश्यपूर्ण, मनोरंजक और प्रेरणादायक हो तथा पाठकों
सोचनेसमझने तथा अपने परिवार, समाज व देश के प्रति कर्त्तव्य निभाने में
सके. असफल प्रेम, जासूसी, तस्करी, मारधाड़, वेश्यावृत्ति आदि पर आधारित
विचार नहीं किया जाएगा.

3. पांडुलिपि फुलस्कैप आकार के कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर
होनी चाहिए. शब्द संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है, पर अनावश्यक रूप से
होने चाहिए.

4. पुरस्कार योजना के लिए भेजे गए उपन्यास को निर्णय घोषित होने
विचारार्थ नहीं भेजा जाना चाहिए.

5. सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार को 10,000 रुपए के पुरस्कार से सम्मानित किया जाए

6. अन्य उपन्यासों को भी उन के स्तर के अनुसार उपयुक्त पुरस्कार/पारि
जा सकता है.

7. पुरस्कृत उपन्यासों के सर्वाधिकार (कापीराइट) सरिता के पास सुरक्षित

8. रचनाओं के संबंध में सरिता संपादक मंडल का निर्णय अंतिम और मान्य

9. यद्यपि पांडुलिपि की यथासंभव देखभाल की जाएगी, फिर भी कार्यालय
के खो जाने, फट जाने या नष्ट हो जाने अथवा लेखक या उस की कृति को
हानि पहुंचने के लिए उत्तरदायी नहीं होगा.

10. असफल पांडुलिपियों की वापसी के लिए पांडुलिपि के साथ ही टिकट
लिफाफा, जिस में पांडुलिपि आ जाए, आना आवश्यक है अन्यथा उन्हें वापस नहीं

11. प्रतियोगिता के लिए भेजे गए उपन्यासों के संबंध में पत्रव्यवहार करना संभव

12. प्रत्येक पांडुलिपि के साथ यह प्रमाणपत्र आना आवश्यक है कि
मौलिक रचना है, किसी अन्य रचना पर आधारित नहीं है और पहले कहीं
में प्रकाशित, प्रसारित नहीं हुई है तथा लेखक को रचना के विषय में सरिता
का निर्णय स्वीकार होगा. पांडुलिपि के साथ पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ सहित
का संक्षिप्त परिचय आना भी आवश्यक है.

अपनी पांडुलिपि 31 अक्तूबर, 1978 तक निम्न पते पर भेजें :

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना,
दिल्ली प्रेस भवन, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रजनी

• कुसुम गुप्ता

मैं कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि रज्जो जीवित होगी या उस से कभी भेंट होगी. लेकिन हमेशा की तरह उस बार भी रजनी ने मुझे गलत सिद्ध कर दिया...

अपनी पत्रिका के लिए विज्ञापन जुटाने के लिए मैं बंबई गया था. प्रबंधकों ने दो लाख रुपए का लक्ष्य रखा था और मैं ने इस की प्राप्ति का दृढ़ निश्चय कर लिया था.

बंबई पहुंचने के तीसरे दिन की बात थी. मैं एक व्यापारिक संस्थान के प्रचार विभाग में गया. उस का प्रचार अधिकारी सर्वेश मेरा मित्र था. मैं जब भी उस के पास गया, उस ने दोतीन पृष्ठ के विज्ञापन मुझे अवश्य दिए.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस बार भी उस ने उत्साहपूर्वक मेरा स्वागत किया. बाजार के विषय में साधारण चर्चा के पश्चात उस ने मुझे तीन पृष्ठ दे दिए. आवश्यक कार्यवाही के लिए उस ने इंटरकाम पर फोन कर के अपने किसी सहयोगी को बुलाया.

"गुड मार्निंग, सर" अगले दो मिनट में सर्वटे के केबिन का दरवाजा खुला और मेरी पीठ के पीछे यह जलतरंगीय स्वर गूंज गया.

"मिसेज रजनी, आप हैं मि. नरेन, राजधानी ग्रुप आफ जर्नल्स के प्रतिनिधि..."

सर्वटे मेरा परिचय कराता रहा, मिसेज रजनी को कुछ आदेश देता रहा, पर मैं ने जैसे ही गरदन मोड़ कर पीछे देखा तो बस, स्तंभित सा देखता रह गया.

एक सुखद आश्चर्य! मुझे विश्वास नहीं हो रहा था अपनी आंखों पर. यह वास्तविकता थी या भ्रम या स्वप्न?

"रजनी, तुम?" अनायास मेरे मुंह से निकल गया. अचकचा कर मैं खड़ा हो गया और उसे घूर कर देखता रह गया.

हां, वह रज्जी ही थी—रजनी, जो अब मिसेज रजनी बन चुकी थी. एक समय था, जब वह एक पतलीदुबली, मरियल सी लड़की थी जिस के दोनों कंधों और गालों की उभरी हड्डियां उस के अपेक्षाकृत सुंदर रूप को वीभत्स सा बनाती हुई चीखती रहती थीं—हमें गायब करो और फिर देखो इस रूप का लावण्य.

निश्चय ही वे उभरी हड्डियां मांस के सागर में डूब चुकी थीं. रज्जी आकर्षक लग रही थी. उस ने सादे कपड़े पहने थे और हलका सा मेकअप किया हुआ था.

"तुम दोनों परिचित हो?" सर्वटे ने घोर आश्चर्य से पूछा.

मैं ने तो जैसे उस का यह प्रश्न सुना ही नहीं...मैं ने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि रज्जी जीवित होगी अथवा उस से अब भविष्य में कभी भेंट होगी. कुछ बीत गया था उन बातों का.

रज्जी देर तक अविश्वास घूरती रही, फिर उस ने झुका ली—अपराधिनी जैसी विजयी सम्राज्ञी की भांति.

सर्वटे के कहने पर हम ऐसी अप्रत्याशित भेंट और कल्पनातीत परिस्थितियों से अभी उभर भी नहीं पाया मुखरित हो गई, "नरेन, आए? कहां हो? क्या मिल गया?"

एक साथ ढेरों प्रश्न. स्वाभाविक थी, किंतु इतने कैसे दोहराता सारा अतीत. उसे देखता हुआ बस, सोच

लंच में हम दोनों स्कूल मिले तो अनायास ही स्वर में बोली, "नरेन जिंदगी से तो भगवान तो अच्छा है."

संभवतः रज्जी ने जिंदगी से लिया है और वह शालीनता हो गई है. प्रतिकूल परिस्थि से टूट कर बिखर जाने की रज्जी के व्यक्तित्व पर हमेशा थी, वह नष्ट हो चुकी थी.

कुछ क्षणों तक सर्वटे पूर्ण मौन व्याप्त रहा. फिर उस तिलिस्मी भरे मौन कहा, "सर, नरेन और मैं पत्रकारिता का कोर्स एक साथ

"ओह, आई सी. तो कलासफेलो थे," सर्वटे का रहित हो गया और वह बोला, "मिस्टर नरेन को तो मिसेज रजनी."

"वेरी वेल, सर," कह ओर मुड़ी और उस ने पूछा कब तक हो?"

"यही, दोतीन दिन और, घर अगर पसंद करोगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

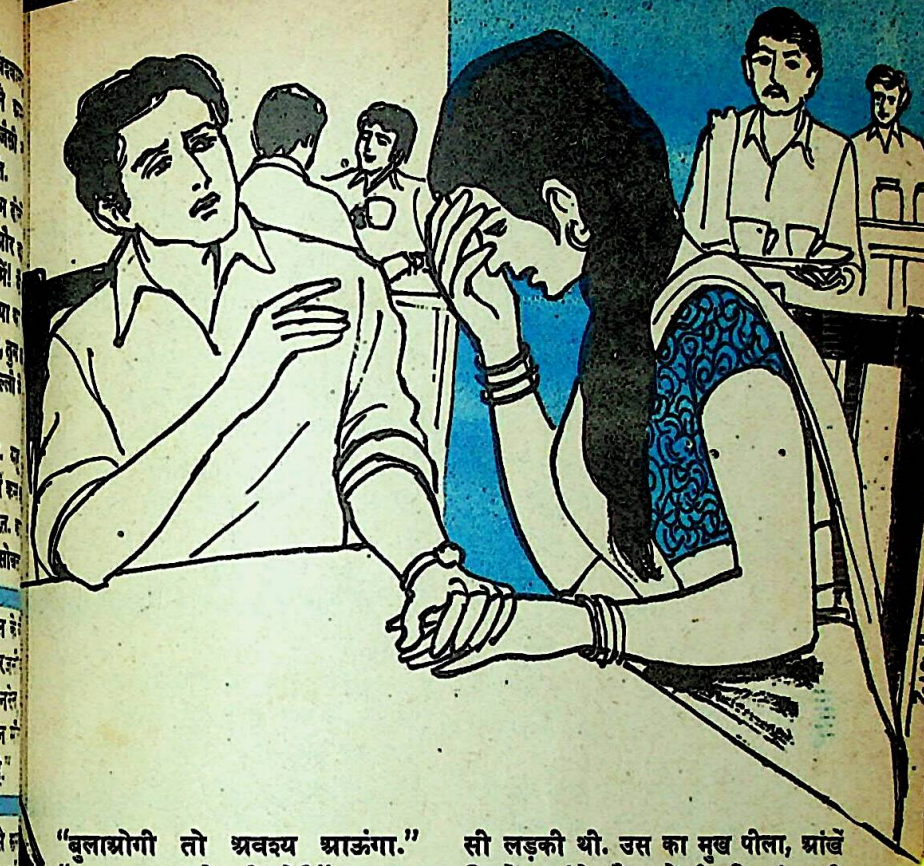

"बुलाओगी तो अवश्य आऊंगा."

"आज शाम को फ्री हो?"

"नहीं, आज तो मैं मैं पब्लिसिटी के डिप्टी को मयूर होटल में पार्टी दे रहा हूं. अगर तुम्हें कल शाम को सूट करे तो..."

"ठीक है, मैं यह लेटर अपने साथ ले जाऊंगी."

मैं सर्वेंट को धन्यवाद दे कर आ गया. सारा दिन काम में व्यस्त रहा. रज्जी से अकस्मात भेंट अवचेतन मन की झील को उद्वेलित कर गई. पार्टी में खापी कर अपने होटल लौटा और बिस्तरे में लेटा तो अवचेतन मन की झील का पानी चेतन मन तक आ चुका था. अतीत की स्मृतियां हरी होने लगी थीं—

मैं ने बी. ए. किया और पत्रकारिता के कोर्स में दाखिला ले लिया. प्रारंभ से ही मुझे इस में रुचि थी.

रजनी की सीट मेरे पास थी. कोर्स प्रारंभ होने के तीन दिन बाद वह आई थी. उस समय वह एक दीमार, दुबली-पतली सी लड़की थी. उस का मुख पीला, आंखें निस्तेज, कंधे और गले की हड्डियां उभरी हुई थीं. उस का संपूर्ण व्यक्तित्व टूटाटूटा सा था. वह बेहद चिंतित और दुखी सी लग रही थी.

दोतीन दिन तो वह गंभीर और चुप रही, किंतु तीसरे दिन मिस्टर राजदान के लेक्चर के बाद दस मिनट के ब्रेक में रजनी के मौन की बर्फशिला पिघल गई. उस ने धीमे से 'हलो' कहा और एक फीकी सी मुसकान उस के होंठों पर सज उठी.

"हलो!"

"आप का शुभनाम?"

"नरेन पसरीजा."

"यह पसरीजा क्या चीज है?"

"मेरा सरनेम है."

"बड़ा विचित्र है."

"ड्राप करने की सोच रहा हूं."

"इस सोचने की प्रक्रिया को जल्दी ही पार कर डालिए."

प्रथम वार्तालाप में मुझे लगा, यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़की अंदर से फास्ट है पर ऊपर से गंभीरता और तटस्थता का मुखौटा पहने रहती है. किंतु शीघ्र ही रजनी ने मेरी प्रथम प्रक्रिया को गलत सिद्ध कर दिया. वह वास्तव में शांत, सुसंस्कृत, सरल स्वभाव की लड़की थी. केवल वार्तालाप के समय ही वह थोड़ी चपल और मुंहफट हो जाती थी, जिस से उस के फास्ट होने का अहसास होता था.

अगले कुछ महीनों में हम दोनों एक-दूसरे से लगाव महसूस करने लगे थे. वह शेष सब लड़कों से बोलतीचालती किंतु आत्मीयता का प्रदर्शन मुझ से ही करती. मुझे ऐसी ही अनुभूति हुई.

किंतु एक दिन रजना ने मेरी इस अनुभूति को भी झुठला दिया. स्कूल के नोटिस बोर्ड पर रजनी का नाम आ गया था. उस ने तिमाही फीस नहीं दी थी. यदि अगले तीन दिन में फीस नहीं जमा हुई तो उस का नाम काट दिया जाएगा.

मैं ने उस की फीस जमा करा दी और रसीद उस को पकड़ा दी. बड़ी विचित्र, प्रतिकूल प्रतिक्रिया हुई उस पर. शायद उस का अहं आहत हुआ था? तभी तो उस ने रसीद पर दृष्टि जमाए, मुझ से रूखे स्वर में कहा था, "नरेन, यह तुम ने अच्छा नहीं किया."

"क्यों, मैं ने ऐसा क्या किया है?"

"मैं भिक्षा नहीं चाहती."

मैं हतप्रभ रह गया. क्षण भर भी आया पर मैं अपनेआप को गया और शांत स्वर में बोला, "करीब रहा है?"

"जिस ने मेरी फीस जमा है."

"कितनी कलुषित तुम्हारी. एक साधारण सा संवेदना का प्रदर्शन भी तुम्हारे

"मिस्टर पसरीजा!" रजनी स्वर ने मुझे संबोधित किया और दृष्टि से मुझे घूरने लगी. उपेक्षा, अपमान सभी कुछ था में.

"तुम मुझे सिर्फ नरेन कहो हो क्योंकि मैं ने अपना सरनेम दिया है."

"इस सब से मुझे कोई पड़ता. विशुद्ध मानवीय संवेदना मेरे गले से नीचे नहीं उतरती इसी की आड़ में पुरुष नारी की का अनुचित लाभ उठाता रहा है."

बात खरी थी और सच्ची तमाचे जैसी लगी. अंतर कोने में जो पशु छिपा था, वह से मर गया. सच है, इनसान की मजबूरी से लाभ उठाना काम है. अतः मैं ने कहा, "शायद कह रही हो, रजनी, किंतु अपवाद होते हैं."

"नरेन, मेरी जिंदगी को इन ने नष्ट किया है," उस के स्वर भूत पीड़ा थी.

मैं समझ गया कि रजनी के अवश्य कोई व्यथाकथा जुड़ी है आर्थिक संकट और स्वामित्व प्रतिष्ठा की भावना एक साथ मैं उलझ गया था.

समय बीतता रहा, रजनी समीप आती गई. मैं कई बार घर ले गया परंतु उस ने एक

ख्वाबों में

जो रात भर तेरे
ख्वाबों में घूमता होगा,
वो मैं नहीं मेरी
सूरत का दूसरा होगा.
—नाजिश अंसारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे अपने घर निमंत्रित नहीं किया. शायद इस का कारण उस की खराब आर्थिक दशा तथा अभिभावकों का पुरातनपंथी होना था.

एक दिन उस ने मुझ से पूछा भी था कि "क्या इस कोर्स को करने के बाद जाब मिल जाएगा?" मैं ने कह दिया था, "यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है. कुछ भी निश्चत रूप से नहीं कहा जा सकता."

मुझे रजनी की एक बात सख्त नापसंद थी. यदि परिवार की आर्थिक दशा खराब है तो उस के लिए हर समय रोनी सूरत बनाए रहना कहां की बुद्धिमानी है?

एक दिन कलास खत्म होने के बाद, बस स्टैंड की ओर जाते हुए मैं ने उस से पूछ ही लिया, "रज्जी, तुम ने अपने परिवार के विषय में कभी नहीं बताया."

"बताने के लिए कुछ हो तब न."

"तुम्हारे पापा क्या करते हैं?"

"एक प्राइवेट कंपनी में अच्छे पद पर हैं."

"और मम्मी?"

"वह एक स्कूल में टीचर हैं."

"और कोई भाईबहन?"

"नहीं, मैं अकेली हूं."

रजनी ने एक बार फिर मुझे गलत सिद्ध कर दिया था—सीमित परिवार, मातापिता दोनों कार्यशील,—फिर यह आर्थिक संकट क्यों? मैं ने उत्सुक हो कर पूछ लिया, "तिस पर भी तुम हर समय उदास और चिंतित रहती हो, आखिर क्यों?"

रजनी ने तुरंत कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया. वह थोड़ी और ज्यादा उदास हो गई. अनायास उस की आंखें सजल हो आईं. वह भर्राए स्वर में बोली, "मत पूछो, नरेन."

"खुल जाने से मन हलका हो जाता है, रज्जी," मैं ने अतिरिक्त स्नेह से कहा. मैं जानता था, रज्जी की पीड़ा ही है उस का अंतर्मुखी होना.

वादा

लगता है हम से मिलने के
वादे की शक्ल में,
वो बाट जोहने का
हमें काम दे गए.
—जहीर कुरेशी

बस स्टैंड आ गया था. हम दोनों उसे पार कर के आगे बढ़ गए. पहली बार मैं ने रजनी को भावावेश में कांपते देखा. उस के होंठ थरथरा रहे थे और शायद वह अपने को अभिव्यक्त करने के लिए स्वयं को संयत कर रही थी.

फिर भी वह नहीं बोली तो मैं ने कहा, "ठीक है, यदि तुम मुझे गैर समझती हो तो बात अलग है."

"नहीं नरेन, यह बात नहीं है."

"फिर...?"

"मेरे मम्मीपापा में स्वेच्छा से संबंध-विच्छेद हो गया है," वह उत्तेजित हो कर बोली.

तो रज्जी विभाजित होने की पीड़ा से आक्रांत थी.

"मैं पापा के पास हूं. मम्मी के पास जाने की सख्त मनाही है मुझे. मम्मी के पास जा नहीं सकती और पापा के पास हर समय मेरा दम घुटता रहता है."

"आखिर क्यों?"

"इसलिए कि...," रजनी पल भर को ठिठकी, फिर उत्तेजित हो कर बोली,..."पापा एक स्वच्छंद प्राणी हैं, नैतिक मूल्यों से परे, इसी कारण मम्मी की उन से कभी नहीं पटी. और अब तो वह खुल कर खेलने लगे हैं."

उस दिन रजनी एकदम खुल गई थी. टहलते और बातें करते हुए हम लोग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंडिया गेट के समीप पहुंच गए थे.

मैं ने नोट किया था, कई बार रजनी की आंखों में आंसू छलछला आए थे पर वह अपने को संयत कर गई.

सचमुच वह एक धर्मसंकट में फंसी हुई थी. शैशवकाल के पश्चात जब से उस में विवेक जागा और उसे समझ आई, उस ने मम्मीपापा को लड़तेझगड़ते देखा. उस का निश्छचल अंतर इस स्थिति को स्वीकार नहीं कर पाता था—आखिर वे दोनों पतिपत्नी की भांति, सुख और प्यार से क्यों नहीं रह सकते?

फिर हुआ दोनों में संबंधविच्छेद. अंदर से वह मम्मी के पक्ष में थी. उसे लगता था कि पापा अन्यायी हैं और मम्मी पर अत्याचार करते हैं. किंतु बंटवारे में वह पापा के पास आ गई, जो उस की इच्छा के विरुद्ध था. वह जाना चाहती थी मां के पास, किंतु पापा की हठधर्मी, जिद तथा बल प्रयोग ने उसे परास्त कर दिया.

रजनी परेशान थी और उस की यह पीड़ा काल्पनिक नहीं, वास्तविक थी. मैं उस की परिस्थितियों से इतना विचलित हो गया कि अपना विवेक खो बैठा और उस से अनायास कह गया, "रज्जी, तुम्हारी समस्या का एक ही समाधान है."

"वह क्या?"

"विवाह."

"जिस प्रकार की मेरी पारिवारिक पृष्ठभूमि है, उसे जान कर मेरे साथ कौन विवाह करेगा?"

"मैं!" अनायास मेरे मुंह से निकल गया.

चलतेचलते रजनी ठिठकी. उस ने मुझे नजर भर कर देखा, कुछ पिघली, पर बोली कुछ नहीं. उस शाम वार्तालाप उसी बिंदु पर समाप्त हो गया था.

कुछ दिन तक यूं ही सामान्य सी दिनचर्या चलती रही. कोई विशेष घटना नहीं घटी. तभी चार दिन तक रजनी नहीं आई. पांचवें दिन वह आई तो मैं उस के उतरे हुए पीले मुख को देख कर गया कि कोई विशेष घटना घटी

लंच में हम दोनों स्कूल के कैफे में तभी उस ने बताया कि उस ने एक महिला को घर में रख लि उपपत्नी बना कर. उसी से झगड़ा था, फिर उसे बुखार हो गया.

कैसे दमघोंटू और विषाक्त में वह जी रही थी. मैं ने उस की माध्यम बनना स्वीकार कर लि किंतु रजनी की परिस्थितियां...?

"नरेन, इस जिंदगी से तो मौत दे दे तो अच्छा है," अनायास कातर स्वर में बोली. वह इस जा कर टूट चुकी है, इस का मुझे नहीं था. मैं ने उसे सांत्वना दी. प्रति आस्था उत्पन्न करने का प्रयास अपने पूर्व प्रस्ताव को दोहराया.

वह उखड़ कर बोली, "मैं ने तुम्हारे विषय में चर्चा की थी, चुड़ैल..."

"मैं कुछ समझा नहीं...?"

"पापा की यह जो नई है न, शादी किसी और के साथ करना है...एक बार उस लड़के को बुला वह बिना पढ़ालिखा है...शराब है, तुतलाता है...मैं मर जाऊंगी के साथ..." रजनी के शेष शब्द गले में ही दबघुट कर रह गए.

"धैर्य रखो, रज्जी, सब जाएगा."

"फिलहाल तो ऐसा नहीं क्या है, दुश्चरित्र, शराबी और तत्वों का अड्डा बन गया है."

"प्रतिकूल परिस्थितियों से जीवन है, रज्जी. मैं तुम्हारे साथ जब चाहो..."

"नरेन, तुम न होते तो मैं मर गई होती."

बस, यही अंतिम बात मुझ से कही थी. तभी मुझे लगा मेरे और ज्यादा समीप आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लोग

अपनी ही दुनिया में खोए—
सोए से रहते हैं लोग.
इस बस्ती में जगे हुए भी
सोए से रहते हैं लोग.

जाने इन पर क्या गुजरी है
जाने क्या दुविधा है साथ?
खुशियों की घड़ियों में भी अब
रोए से रहते हैं लोग.

जितने बाहर भरेपुरे हैं
उतने ही रीते हैं आज,
मन के कोने में कलमष ही
बोए से रहते हैं लोग.

कोई मतलब नहीं किसी को
चाहे लगे कहीं पर आग,
काले अंधियारे पंथों को
जोए से रहते हैं लोग.

—तारावत 'निरोध'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं, यह कह कर वह लगभग एक मास बाद मुझ से दूर चली गई, इतनी दूर कि मैं उसे तलाश भी नहीं कर पाया. कोर्स लगभग समाप्त होने वाला था. अंतिम परीक्षा होने वाली थी, तभी रजनी गायब हो गई. उस के घर से पता चला कि वह भाग गई है और उन लोगों ने पुलिस में रिपोर्ट कर दी है.

दो सप्ताह बीते और मुझे विश्वास हो चला कि रजनी अब इस संसार में जीवित नहीं है. किंतु उस बार भी रजनी ने मुझे गलत सिद्ध कर दिया.

मुझे घर के पते से उस का एक पत्र मिला, जिस में उस ने लिखा था, "प्रिय नरेन, चिंता मत करना. जीवित हूं और रहूंगी. क्षमा करना, तुम्हारे पास नहीं आई घर से भाग कर. तुम्हारे पास आ सकती थी, किंतु उस चुड़ैल और उस के गुरगे ने तुम्हें मार डालने की धमकी दी थी. मैं नहीं चाहती थी कि तुम्हारा कोई अहित हो. बस."

एक संक्षिप्त सा पत्र. रजनी ने अपना पता नहीं लिखा था. शायद वह चाहती थी कि मैं उसे तलाश न करूं. ठीक ही था. मैं ने पत्र पर डाकखाने की अस्पष्ट मोहर पढ़ने की कोशिश की. तब लगा था, पत्र बंबई से पोस्ट किया गया है.

रजनी खो गई थी अथवा टूट कर बिखर गई थी अथवा वह पुनर्निमार्ण में जुट गई थी, मुझे कुछ नहीं पता था. मेरे लिए तो वह परिच्छेद सदैव के लिए समाप्त हो चुका था. मैं ने पत्रकारिता में डिप्लोमा प्राप्त कर लिया, राजधानी ग्रुप आफ जर्नल्स में जाब भी मिल गया. विवाह कर लिया और दो बच्चे भी हो गए. एक सपाट और सामान्य जिंदगी जी रहा था मैं अब. कल...इस तरह रजनी से भेंट?

अगले दिन रजनी मुझे अपने घर ले गई. रास्ते भर वह मेरे अतीत को कुरेदती रही, अपने संघर्ष का वर्णन करती रही. उस ने बताया कि वह दिल्ली से भाग कर सीधी बंबई आ गई. अपनी एक [illegible] के यहां टिकी. उसी के माध्यम से [illegible] नौकरी मिली और फिर शरद से भेंट [illegible] शुरू में शरद ने उसे एक 'फास्ट [illegible] समझा, परंतु बाद में जब उसे रजनी [illegible] संघर्षमय अतीत के विषय में पता [illegible] तो शीघ्र ही दोनों विवाहबंधन में बंध [illegible]

हम घर पहुंचे, साधारण रूप से [illegible] घर. चारपाई पर लेटे एक पुरुष को [illegible] कर मैं चौंका. रजनी ने परिचय कराया [illegible] वह शरद था, पर चारपाई पर [illegible] मैं ने पूछा तो रजनी तटस्थ स्वर में [illegible] "दो मास पूर्व लकवे का दौरा पड़ा [illegible]

"ओह गाड!" मेरे मुख से अनायास [illegible] निकल गया. क्या जीवन के सारे [illegible] रजनी के हिस्से में ही आए हैं?

"नरेन, मैं खुश हूं, बेहद खुश. [illegible] ने मुझे नया जीवन दिया था, एक निराश्रित [illegible] को आश्रय दिया...मेरा समझौता [illegible] करने की लड़ाई में मेरा साथ दिया. [illegible] मैं जो कुछ भी हूं वह तुम दोनों के [illegible] ही हूं."

शरद के मुख पर प्रसन्नता का [illegible] उभर आया.

मैं वहां देर तक रुका, रात का [illegible] वहीं खाया. हम तीनों के बीच खुल [illegible] लगीं. चलने को हुआ तो रजनी ने [illegible] की कुछ सूचनाएं दीं. एक मास पूर्व [illegible] के पापा की हृदयगति रुक जाने से [illegible] हो गई थी. अगले सप्ताह वह अम्मा [illegible] मिलने दिल्ली जाने वाली थी.

"फिर तो तुम मेरे यहां जरूर आना. संध्या तुम से मिल कर बहुत खुश होगी," मैं ने उत्साह में भर कर कहा.

"किस रूप में मेरा परिचय कराओगे, अपनी पत्नी से?"

"एक सेनानी के रूप में, जो [illegible] भर मूल्यों के लिए लड़ा और अंतिम [illegible] जीत गया," मैं ने श्रद्धा से भर कर [illegible]

"इतना ऊंचा मत उठाओ, [illegible] मैं तो एक तुच्छ प्राणी हूं."

"तुच्छ, किंतु महान!" [illegible] टिप्पणी थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • मनमोहन नवाब

देवलोक में आधुनिकीकरण

पृथ्वीवासियों की प्रगति से प्रभावित हो कर भगवान विष्णु ने भी देवलोक का आधुनिकीकरण करना चाहा पर बहुत जल्दी उन्हें मानना पड़ा कि पृथ्वीवासियों की बराबरी करना अगर कठिन नहीं, तो सरल भी नहीं है...

सृष्टि के रचयिता भगवान विष्णु शेषशय्या पर चिंतित से अधलेटे पड़े थे. अर्धांगिनी चंचला लेटीलेटी करवट बदल रही थी. शायद वह स्वामी के सोने की प्रतीक्षा कर रही थी. उस ने एक बार फिर स्वामी से सोने का अनुरोध किया. चिंता की दीवार मध्य में होने से अनुरोध उन तक नहीं पहुंच पाया. फलतः वह विष्णु को झकझोरने लगी.

"नहीं, प्रिये, तुम सो जाओ. जब तक मेरी समस्या का समाधान नहीं होता मेरे लिए सोना पाप है," विष्णु ने प्राणप्रिये को समझाते हुए कहा.

"ऐसी कौन सी समस्या है जो आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुधबुध खो बैठे हैं? मुझे भी तो बताएं. शायद मैं उसे हल करने में कुछ सहयोग दे सकूं," आत्मीयता से चंचला ने पूछा.

पहले तो विश्वकर्मा ने बतलाना उचित न समझा, मगर जब चंचला ने अपना अधिकार मांगा तो उन्हें त्रियाहठ के सामने झुकना ही पड़ा. वह बोले, "प्रिये, समझ में नहीं आता, मनुष्य ने इतनी उन्नति किस प्रकार की है. जब मानव को धरती पर उतारा गया तो वहां पथरीली जमीन व जल के अलावा कुछ भी न था और आज पृथ्वी की काया ही पलट गई है. एक हम हैं, जहां पहले थे वहीं अब भी हैं. कुछ खोया नहीं पाया भी नहीं. शरम से सिर झुका जा रहा है. मेरे हृदय में हीन भावना आधिपत्य जमा रही है. मेरे ही निर्मित मानव, जिसे निस्सहाय पृथ्वी पर उतारा गया था, आज निस्सहाय न होकर दूसरों का आश्रयदाता बना हुआ और हम..."

"प्रभु, आप व्यर्थ ही परेशान हो रहे हैं. आप से मनुष्य की कोई क्रिया छिपी हुई थोड़े ही है. आप तो प्रजापति व्यर्थ की इस समस्या को मस्तिष्क से निकाल फेंकिए. रात का दूसरा पहर व्यतीत होने को है. निश्चित हो कर मेरा आलिंगन कीजिए," चंचला ने जम्हाई लेते हुए कहा.

"नहीं प्रिये, मानव बहुत चतुर चालाक हो गया है. उस के बहुत से ऐसे कार्य भी, जो असंभव प्रतीत होते हैं, पूर्ण हो जाते हैं. और मुझे उन का पहले

ब्रह्मा ने विष्णु से बदला लेने के लिए कार्त्तिकेय, हनुमान, यमराज और इंद्र को ले कर एक अलग दल बना लिया.

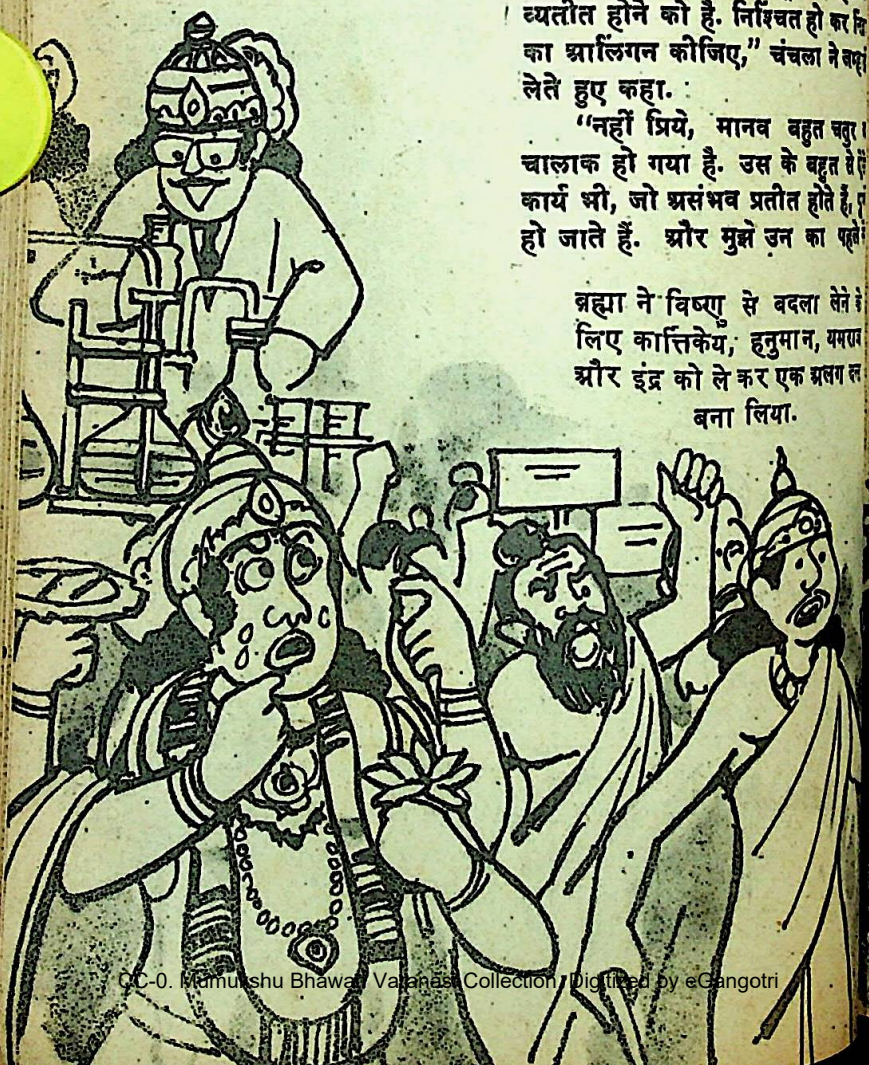

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तनिक भी भान नहीं हो पाता."

"अभी आप विश्राम कीजिए. कल सभा में इस समस्या पर विचार कीजिए. शायद कोई सूत्र हाथ लग जाए," चंचला ने व्यर्थ की माथापच्ची से छुटकारा पाने की गरज से कहा.

विष्णु ने इस सुझाव का स्वागत किया और चंचला की बगल में लेट गए.

भोर की प्रथम किरण के संग ही सभी महत्त्वपूर्ण देव पुरुषों को सभा का न्योता दे दिया गया. फलस्वरूप नियत समय पर सभी देव उपस्थित हो गए. श्रेष्ठ होने के नाते स्वयं विष्णु ने सभापति का आसन ग्रहण किया. सरसरी दृष्टि से उन्होंने सभी देवों को देखा. मेनका पर दृष्टि पड़ते ही वह चौंके. फिर फुंकारते हुए बोले, "देव पुरुषों की सभा में नारी का आगमन!" इस से पूर्व कि वह कुछ और बोलें, इंद्र ने उठ कर जवाब दिया, "श्रीमन, मैं ही इसे बलपूर्वक ले आया हूं. सोचा, किसी का तप भंग करना हो तो..." अपनी समझ पर सीना तानते हुए इंद्र ने कहा.

"देख रहा हूं इन दिनों तुम प्रत्येक कार्य अपनी मरजी से करने लगे हो. मेनका तुम्हारी अर्धांगिनी क्या हो गई है तुम्हारी समझ पर परदे पड़ गए हैं और..." गुस्से में कांपते हुए विष्णु बोले और फिर न जाने क्या सोच कर बात अधूरी छोड़ दी.

यह सुनना था कि मेनका इंद्र को सभा से उठा ले गई. भरी सभा में उस से अपना और अपने स्वामी का अपमान सहा नहीं गया.

दोनों को इस तरह जाते देख, नटखट कृष्ण अपनी चंचल प्रवृत्ति को रोक न पाए. उन के श्रीमुख से यह वाक्य निकल ही गया, 'साला...जोरू का गुलाम.'

इतना सुनना था कि भोलेनाथ को छोड़ सभी खिलखिला कर हंस पड़े. फिर उन के शांत होते ही विष्णु ने अपनी समस्या उन के सम्मुख रखी तथा अपने-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने विचार व्यक्त करने को कहा.

सभी एकदूसरे का मुंह ताकने लगे. क्या विचार व्यक्त करें? उन में से किसी ने ऐसा सोचा भी नहीं था. या यों कहिए, ऐसा सोचने का अवसर ही नहीं मिला था. सब अपनेअपने भोग में लिप्त रहते थे. एक क्षण के लिए भी उस से विमुख न होते थे.

सब को चुप्पी साधे देख विष्णु ने कहना आरंभ किया, "हमारे लिए यह बड़े शरम की बात है कि हमारे ही द्वारा रचित मानव, जिसे हम ने पृथ्वी पर उतारा था, आज चांद पर पहुंच गया है. इस में शंका नहीं कि कल वह शायद मंगल ग्रह पर भी विजय प्राप्त कर ले. आप ऐसा कदापि न सोचिए कि मैं उन की उन्नति से ईर्ष्या में जल रहा हूं. कहने का तात्पर्य यह है कि क्या सा वातावरण हम यहां नहीं बना सकते ये बल खाती नदियां, ये लहलहाते तारकोल की सड़कें, क्या इन का नि हमारे यहां नहीं हो सकता? जब द्वारा निर्मित मानव यह सब कर है, तो क्या हम यह नहीं कर सकते?

"आप जैसे सहयोगियों को देख मेरा सिर शर्म से झुक जाता है. ही वातावरण में रहते हुए अल्लाह होने लगी है. अगर यही स्थिति रही वह दिन दूर नहीं, जब अपनी स्थिति भी खराब हो जाएगी. याद रखो, सूरज की सभी पूजा करते हैं. ऐसा कि मानव हम से भी आगे निकल मैं स्पष्ट देख रहा हूं, लोगों की हमारे आस्था दिनोंदिन कम होती जा रही विज्ञान के प्रति उन का लगाव उत्तरो बढ़ता जा रहा है. कुछ समय के लिए भी अपनी तिलिस्मी शक्ति को ताक रख, उन का आश्रय छोड़ अपने हाथों सहारा लेना चाहिए. आप महानुभ की क्या राय है?"

इतना कह कर विष्णु उपस्थि देवों की मुखमुद्रा पर होने वाली क्रिया को समझने का प्रयत्न करने

कुछ क्षणों तक देवों में कानाफूसी होती रही. फिर शिव को छोड़ सभी स्वर में बोल पड़े, "हमें आप का मंजूर है."

विष्णु ने शिव की ओर गरदन हुए कहा, "भोलेनाथ, तुम्हारी लगता है कि तुम इस कार्य के सहमत नहीं."

"महाप्रभु, मेरे विचार में हमारा कार्य है, वही श्रेयस्कर है. हम जिस में हैं, वही हमारे लिए अनुकूल है, नीय है. यह कार्य मानव के लिए है देवपुरुषों के लिए नहीं. रही विज्ञान बात, सो आप भूल रहे हैं कि मानव विज्ञान प्रतिदिन विनाश की ओर बढ़

सकुशलता

एक कालिज के छात्र ने अपने घर खत लिखा 'मेरे प्यारे मम्मी-डैडी, एक महीना पहले आप का समाचार आया था. कृपया अब एक चैक भेज दीजिए जिस से मुझे यह जानकारी हो सके कि आप सकुशल हैं.'

✦

बड़ा न्यायालय

बहुत से वकील किसी महत्त्वपूर्ण मुकदमे पर बहस कर रहे थे कि एक वकील का बेटा रोता हुआ आया और बोला, "पापा, मुझे मम्मी ने मारा है."

उस के पिता ने डांटते हुए कहा, "बड़े बेवकूफ हो, एक वकील के बेटे हो कर इतना भी नहीं समझते कि बड़े न्यायालय के विरुद्ध नीची अदालत में रिपोर्ट दायर नहीं की जाती."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है. मेरे तीसरे नेत्र से स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि मानव के हृदय में एक प्रलयंकारी, विनाशकारी लावा जन्म ले चुका है जो शीघ्र ही फूट कर निकलने वाला है. इस का सारा उत्तरदायित्व विज्ञान पर होगा."

एक बार फिर विष्णु के चेहरे से क्रोधाग्नि बरसने लगी, "देख रहा हूं, भोलेनाथ, जब से तुम ने जितेंद्रियों का खिताब जीता है, तुम्हारा मस्तिष्क सातवें आसमान पर रहने लगा है. गरूर की मात्रा तुम में बढ़ती जा रही है. कहीं तुम्हारा गरूर तुम्हें..."

"आदरणीय, आप तो व्यर्थ ही क्रोधाग्नि में जल रहे हैं. मैं ने तो मात्र सुझाव दिया है. इस पर विचार करना आप का काम है. सभा का सदस्य होने के नाते मुझे भी कुछ कहने का अधिकार है. मैं ने उसी अधिकार का प्रयोग कर अपना सुझाव दिया है," विष्णु की बात को बीच में ही काटते हुए शिव ने कहा.

खैर, प्रस्ताव पास कर दिया गया. अब समस्या यह थी कि उसे कार्य रूप में कैसे परिणत किया जाए. तभी विष्णु के चेहरे पर हर्षोल्लास की लहर एक आभा ले कर प्रकट हुई. शायद कोई युक्ति निकल आई थी. वह कृष्ण को संबोधित करते हुए बोले, "क्यों, कृष्ण, तुम तो द्वापर युग में पृथ्वी पर अवतार ले चुके हो. तुम्हें तो ध्यान होगा कि मानव ने किस प्रकार इतनी उन्नति की थी. वे किस कार्य का प्रारंभ कहां से और कैसे करते हैं?"

"क्षमाप्रार्थी हूं, प्रभु, पृथ्वी पर मेरे अवतार का उद्देश्य धर्म के विनाश को रोकना, अत्याचारियों को उचित दंड देना था—मुझे यही आदेश दिए गए थे. और आप जानते ही हैं, जितना कार्य मुझे सौंपा जाता है उतना ही करता हूं, उस से कम या ज्यादा नहीं."

"हूं, जानता हूं, देवलोक में ईमानदार, निष्ठावान एक तुम्हीं हो. धर्म के विनाश को रोकने, अत्याचारियों का खात्मा करने के आदेश के साथसाथ गोपियों से रासलीलाएं रचाने का आदेश भी क्या हम ही ने दिया था?" विष्णु ने व्यंग्य से कहा.

कृष्ण क्या उत्तर देते, उन्होंने चुपचाप सिर झुका कर खड़े रहने में ही अपनी कुशल समझी.

कुछ समय तक सभा में सन्नाटा छाया रहा. तत्पश्चात विष्णु ने राम को संबोधित किया :

"तुम तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम कहलाते हो. तुम्हारे नाम से ही ऐसा भान होता है कि तुम ने पृथ्वी पर अवश्य ही मनुष्य के क्रियाकलाप को देखा है, उसे समझा है. संभव है तुम ने हाथों से

राजनीति और भाषण

अध्यापक : राजनीति मर्मज्ञ कौन होता है?

छात्र : जो स्थानस्थान पर जा कर भाषण देता है.

अध्यापक : यह ठीक है लेकिन इस में एक सुधार करना होगा. मैं भी कभीकभी भाषण देता हूं. लेकिन मैं राजनीति में मर्मज्ञ नहीं हूं.

छात्र : जी, मैं जानता हूं राजनीति मर्मज्ञ वह होता है जो अच्छे भाषण देता है.

✦

चाय

पति : आज शाम की चाय बाहर पी जाए तो कैसा रहे?

पत्नी : क्यों, क्या तुम्हें यह लगता है कि मैं चाय बनाते तंग आ गई हूं?

पति : नहीं, मगर मैं कपप्लेट धोतेधोते तंग आ गया हूं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी कार्य किया हो. हमें विस्तार से मनुष्य के क्रियाकलाप की विधि को समझाओ."

"भगवन, आप तो जानते ही हैं, पृथ्वी पर मेरा जन्म मध्यम परिवार में न हो कर राजघराने में हुआ था. किसी भी राज्य के कानून में कहीं भी ऐसा उल्लेख नहीं है कि राजघराने के लोग अपने हाथों से कुछ भी कार्य करें. फिर मेरे साथ तो बड़ी दुर्घटना रही. बाल्यावस्था तो नादानी में बीती, तरुणावस्था में पांव रखते ही मुझे बनवास भोगना पड़ा. बनवास के चौदह वर्ष में कुछ सीख सकने का अवसर था मगर उस दुष्ट रावण ने मेरे मस्तिष्क को असंतुलित कर दिया. चौदह वर्ष पश्चात, जब मैं ने अयोध्या में प्रवेश किया तब तक मैं भगवान रामचंद्र बन चुका था. भगवान का कार्य आशीर्वाद देना है और कुछ नहीं. कृष्ण की भांति मैं भी क्षमादान पाने का अधिकारी हूं," इतना कह कर राम चुप हो गए.

इस तरह सभी देवों ने नकारात्मक सिर हिला दिया. शिव से किसी प्रकार की आशा नहीं की जा सकती थी. सभी विचारने लगे, अब क्या किया जाए?

पृथ्वीवासी संकट में हनुमान संकटमोचन का पाठ किया करते हैं. उसी भांति देवलोकवासी संकट में नारद संकटमोचन का सहारा लिया करते है. सभी ने एकजुट हो कर नारद संकटमोचन का पाठ किया. ध्यान करने की देरी थी. नारायण-नारायण का उच्चारण उन के कानों में रस घोलने लगा. सब ने एक साथ नेत्रपट खोले, देखा साक्षात नारद खड़े हैं. देवों ने उन का अभिवादन किया.

नारद ने पहले विष्णु को प्रणाम किया, फिर बोले, "अंतर्यामी, किस सोच में हैं? ऐसी कौन सी समस्या आ खड़ी हुई है, जो सभी महानुभाव मुंह लटकाए बैठे हैं? मुझे भी बोध कराएं."

क्या बताएं, नारद. ये जो...

विष्णु ने नारद को अपनी व्यथा

"नारायण, नारायण, भोले हो
होते हुए आप इस तुच्छ सम
परेशान हैं?" नारद ने उलटे
सवाल किया.

"यह भोलेनाथ हमें सहयोग
बजाए हम से ज्ञान की बात कर
जाने अपनेआप को क्या समझता
दिन..."

इस से पहले कि विष्णु अपनी
रखते, नारद ने कहा, "प्रभु,
अपने मस्तिष्क से सोचता है,
काम लेता है. इन दोनों के बीच
है. हमारी आप की भांति वे
शक्ति का प्रयोग नहीं करते
कर के खूनपसीना एक करते हैं,
जा कर उन्हें सफलता हासिल होती
उन की उन्नति का सब से बड़ा
यदि आप भी यहां पृथ्वी सा
उत्पन्न करना चाहते हैं तो
तिलिस्मी शक्ति को त्यागना
मस्तिष्क से सोचना होगा, हाथों
देना होगा, तब कहीं जा कर हमें
हाथ लगेगी."

"मस्तिष्क से सोचना,
कष्ट देना, हमारे कोमलांगों से
संभव होगा?" कहते हुए विष्णु
वाचक दृष्टि से नारद की ओर

"जब आप द्वारा निर्मि
असंभव को संभव बना सकता
आप के लिए क्या असंभव है?"
उकसाते हुए कहा.

विष्णु कुछ क्षणों तक विचा
फिर वह नारद को साथ ले
पास पहुंचे. धर्मराज चित्रगुप्त
बिठाए, उन के द्वारा तैयार
जीवों के कर्मों के गुप्त चित्रों
कर, एकएक जीव को गोपनीय
आधार पर स्वर्ग व नरक में
अलाट कर रहे थे. विष्णु को
दोनों आदर भाव से उठे.

विष्णु ने धर्मराज से, पृथ्वी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके दुलारे बच्चे–खूब मज़े में इन्क्रिमिन* टॉनिक से बढ़ते

अधिक आहार से अधिक बढ़ाये– स्वाया पिया अंग लगाये!

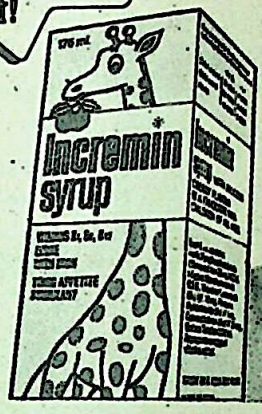

Lederle का उत्पादन अमेरीकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

Sista's-INC-915B/77 HIN.

सुरक्षा

और मजबूती के लिए आधुनिक एवं सुन्दर

प्लाज़ा® ताले

पेड लॉक | मोरटिस लॉक | शटर लॉक | फर्नीचर लॉक

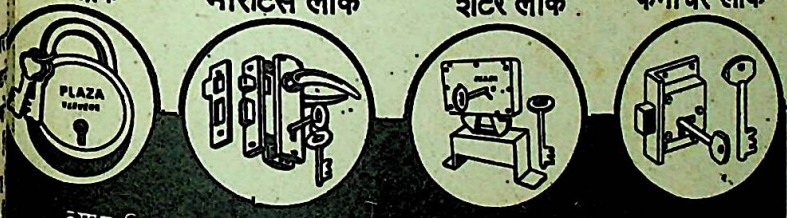

व्यापारिक पूछताछ के लिए

भारत लॉक हाऊस

5140-41, गांधी मार्किट, सदर बाजार,

दिल्ली-110006 फोन : 517436 अलीगढ़ उ. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तक का मानव इतिहास' नामक
ग ले कर अपने निवास स्थान की ओर
स्थान किया. बहुत दिनों तक विष्णु
ष्टि के इतिहास में डूबे रहे और एक
न उन्होंने यह उद्घोषणा की— .
"भविष्य में कोई भी देवलोकवासी
तिलिस्मी शक्ति का उपयोग नहीं करेगा.
हे विकट से विकट स्थिति हो, चाहे
ौर से गंभीर समस्या हो, वह हर स्थिति
सामना अपने कौशल से करेगा. कहीं
देवलोकवासी अपनी तिलिस्मी शक्ति
उपयोग करता पाया गया तो उस की
शक्ति छीन ली जाएगी."
कुछ ने उन्मुक्त भाव से, कुछ ने अन-
ने भाव से इस आदेश को स्वीकारा.
लोकवासियों में अप्रत्याशित परिवर्तन
ने लगे. पहले जहां देवगण बड़ेबड़े यज्ञ
रते, हवनकुंडों में आहुतियां देते, वहां
व वे नित नए प्रयोग करने लगे. यज्ञ-
ाला को प्रयोगशाला में परिणत कर
या गया. यज्ञ करने वाले देवगण वैज्ञा-
निक बन गए और जो घंटों अपने इष्ट
की आराधना में लगे रहते थे, वे साहित्य-
कार बन गए. 'आराम हराम है' की
लोकोक्ति को चरितार्थ करते हुए सब
कामों में लग गए.

देखते ही देखते देवलोक का आधु-
निकीकरण होने लगा. देवलोक में उन
सभी चीजों का निर्माण होने लगा, जो
पृथ्वी पर पाई जाती हैं. मनुष्यों की श्रेणी
में पहुंचने का प्रयास करते हुए विष्णु के
मुख पर एक नई आभा दीप्तिमान होने
लगी. देववासियों का जीवन व्यस्त जीवन
हो गया.

किंतु विष्णु की यह प्रसन्नता क्षण-
भंगुर रही.

देवलोक में होने वाले इस परिवर्तन
से सब से अधिक प्रसन्नता ब्रह्मा को हुई.
ब्रह्मा को विष्णु का पुराना हिसाब
चुकाना था. (विष्णु के कारण ही पृथ्वी
पर ब्रह्मा की पूजा नहीं होती) जो तिलि-
स्मी शक्ति के रहते हुए असंभव था. ब्रह्मा

ये पति

मेरे जीजाजी वक्त के बहुत पाबंद
और दीदी उतनी ही लापरवा. दीदी
भी वक्त पर तैयार नहीं होतीं, कोई
काम वक्त पर नहीं करतीं. दीदी जब
कहीं जाती हैं तो गप्पों में व्यस्त हो
जाती हैं और जीजाजी पूरे रास्ते स्कूटर
पर बैठेबैठे उन्हें डांटना शुरू कर देते हैं.

एक बार दीदी हमारे यहां आई
हुई थीं. वह मां से बातों में लग गईं.
वक्त का खयाल उन की आदत नहीं, सो
वापस घर पर सही वक्त पर नहीं पहुंच
पाईं. इसी बीच मेरे डाक्टर जीजाजी
अपने घर पहुंचे और घर पर ताला देख
कर बड़बड़ाते हुए मां के यहां पहुंच गए.

सब के सामने तो वह कुछ बोले
नहीं मगर दीदी से कुछ कड़क आवाज
में कहा कि घर चलो. दीदी ने धीरे से
मुंह से कहा, "आज तो खूब डांट पड़ेगी."

मैं ने दीदी को सलाह दी कि आज आप
की जगह मैं स्कूटर पर बैठ जाती हूं. उन्हें
मेरा प्रस्ताव जंच गया. जीजाजी ने
जैसे ही स्कूटर स्टार्ट किया, मैं पीछे बैठ
गई. उन्होंने अस्सीनब्बे की स्पीड से
बोलना चालू कर दिया. "जब देखो तब
निकल जाती हो, घर की परवा ही
नहीं. यह भी नहीं सोचा कि भूखाप्यासा,
थकाहारा घर लौटूंगा, तो कम से कम
वक्त पर घर पहुंच जाऊं. मांबाप सब के
होते हैं पर ऐसे नहीं जैसे तुम्हारे हैं और
तुम्हारी बहनें...वे तो कोई बस बातें
करने वाला मिल जाए, छोड़ती ही नहीं.
जवाब क्यों नहीं देतीं? उन्होंने इतना
ही कहा था कि घर आ गया.'

घर आते ही स्कूटर रुका तो जीजाजी
मुझे देख कर बुरी तरह झेंप गए. उसी
समय मेरे पापा भी दीदी को ले कर
पहुंच गए. बाद में जब मैं ने दीदी व
मम्मीपापा को रींनग कमेंट्री सुनाई तो
हमारा हंसी के मारे बुरा हाल था.

—स्वर्ण लता शर्मा 'गन्नो'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने सोचा, 'बदला लेने के लिए इस से अच्छा सुअवसर हाथ आने वाला नहीं.'

ब्रह्मा ने देवसेनापति कार्त्तिकेय, राम-भक्त हनुमान तथा यमराज व इंद्र को ले कर अपना एक अलग दल बनाया. दल को गुप्त रूप से शंकर का नेतृत्व प्राप्त हो गया. ब्रह्मा के लिए यह सोने में सुहागा था. यह दल विष्णु का विरोध करने लगा.

ब्रह्मा ने सभा को संबोधित करते हुए कहा, "मित्रो, मुझे आप से इतना ही कहना है कि यह विष्णु हमें पंगु बनाने की फिराक में है. यह हमें पंगु बना समूचे देवलोक में अपना एकछत्र राज्य स्थापित करना चाहता है. हमें नर की श्रेणी में लाना चाहता है. यदि ऐसा हो गया तो नर व नारायण में क्या अंतर रहेगा? हमें कौन पूजेगा?"

हनुमान ने कहा, "आप देवलोक की बात करते हैं, मैं ने पृथ्वी पर अवतार लिया, तब भी अपनी तिलिस्मी शक्ति का प्रयोग किया. यदि ऐसा न करता तो मेरी साख मिट्टी में मिल जाती. राम कदापि विजयी नहीं होते. नर को शक्ति से नहीं, धोखे से ही जीता जा सकता है. इतिहास साक्षी है, प्रत्येक देवता ने नर को छल-कपट से जीता है, आत्मबल से नहीं."

यम ने कहा, "मैं आज से आमरण अनशन करता हूं. जब तक हमें अधिकारों का उपयोग नहीं करने दिया जाएगा, मैं मृत्युलोक से एक भी जीव नहीं लाऊंगा. मेरा कोई दूत कार्य नहीं करेगा."

देवसेनापति कार्त्तिकेय ने कहा, "आज तक मेरी सेना राक्षसों का मुकाबला करती आई है. निकट भविष्य में हमारी मांगें स्वीकार न की गईं तो मैं इसी सेना से विष्णु के निवास स्थान पर धावा बोलूंगा."

इधर ब्रह्मा विष्णु के खिलाफ षड्यंत्र रच रहे थे, उधर बहुत से कार्यकर्त्ता अपने कार्य की सफलता के मद में चूर हो रहे थे. वे विष्णु को नगण्य समझने लगे. उन के मस्तिष्क से भय निकल चुका था. अब वे स्वयं की स्वतंत्र शक्ति संगठित करने में लगे थे. विष्णु के आदेशों का कोई असर नहीं होता था.

उधर नरक में यातना भोग को जब इस बात का पता तिलिस्मी शक्ति को ताक पर गया है, यमदूत अनशन पर हैं से निकल स्वर्ग में प्रवेश करने के जीवों के साथ बदसलूकी कई स्वर्गवासियों को तो नरक यातना भी देने लगे.

देवलोक में हाहाकार मच किसी की ओर ध्यान नहीं देता अपनीअपनी ढपली अपनाकर अलापते थे. स्वर्गवासी दुखी हो पास अपनी फरियाद करने पृ

"यह स्थान हमारे कर्मों कठोर साधना, कठिन तपस्या हम ने यह स्थान प्राप्त किया आनंद प्राप्ति के लिए आए हैं, तड़ तने के लिए नहीं. आप नरक हमारी रक्षा कीजिए या फिर पृथ्वी पर भेज दीजिए, यों यहां निठल्ले बैठे कुंठा गए चाहिए, आराम नहीं."

नरकवासी बोले, "स्वर्ग का हमारा भी हक है. हम आए जीव हैं. हमारी पृथ्वी पर का कोई भेदभाव नहीं है. समानता प्राप्त है. हर प्राणी विचर सकता है. वहां कोई हमें भी आप पृथ्वी पर

विष्णु क्या कहते. वह किए पर पश्चात्ताप कर रहे गए, प्राणी की बराबरी नहीं तो सरल भी नहीं है. प्राणी के प्रति प्रेमभाव, की भावना और कहां देवताओं का आपसी द्वेष, अपमानित करने की उत्सुकता लाते देवता हैं पर असल गए गुजरे हैं.

और विष्णु पुनः स्थिति में लौट आए.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'मेरा शिशु दुनिया के मुकाबले पर तैयार'

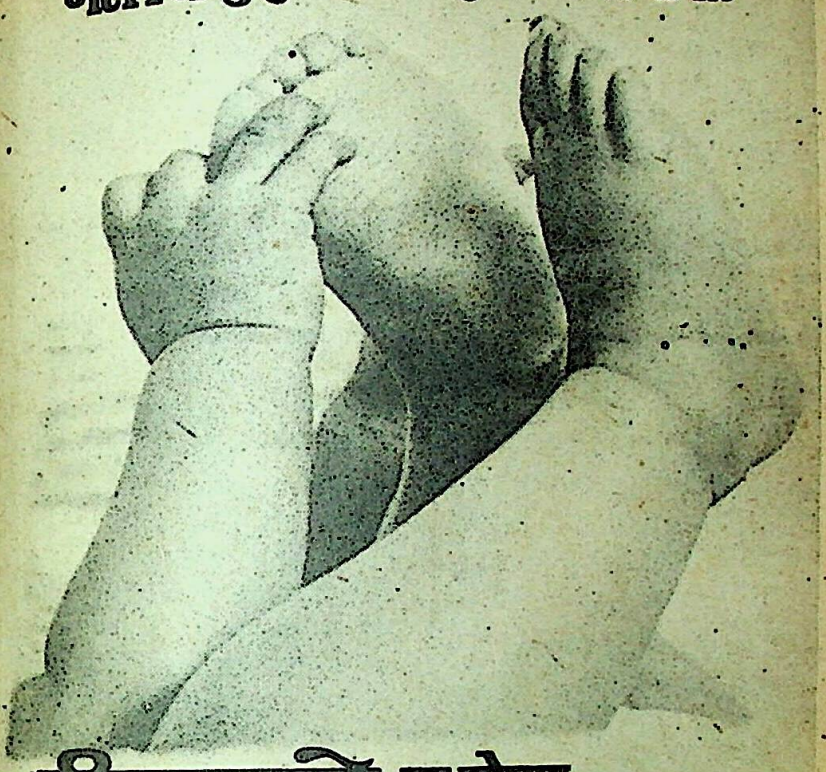

लीवरस्प्रे का पोषण
और सुरक्षा उसके साथ

आपके शिशु को आपकी देखभाल और उसकी सारी शक्ति आगामी महिनों और बरसों में चाहिए जब उसकी हड्डियां, दांत और रक्तकोप बनते हैं. लीवरस्प्रे उसे किसी भी अन्य शिशु आहार से अधिक यह सुरक्षा दे सकता है.

आप शिशु को भरपूर प्यार दें. लीवरस्प्रे उसे सुरक्षा और पोषण देकर एक कदम और आगे ले जाता है. लीवरस्प्रे में सोडियम आयोडाइड्ड विटामिन बी-१२, फोलिक एसिड के साथ कैलशियम और फास्फोरस भी है, इससे यह आपके शिशु को अधिक से अधिक सुरक्षा देता है ताकि वह स्वस्थ रहे और बीमारियों का मुकाबला कर सके.

अपने दुलार के साथ लीवरस्प्रे भी दीजिए, यह शिशु के आनेवाले विकास के वर्षों की सभी ज़रूरतें पूरी करता है.

लीवरस्प्रे वर्षों की खोजबीन का परिणाम है इसलिए यह शिशु के विकास के लिए ज़रूरी है.

अब स्प्रे-ड्राइड विधि से बनाया जाता है जो मिलाने में आसान है.

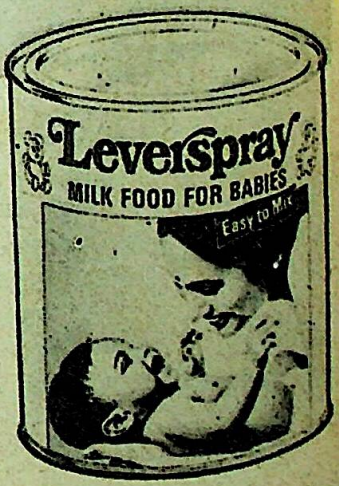

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिंटास-LS. 2-1819 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ये पत्नियां

एक बार मुझे पिताजी के लिए कुछ कपड़े दिल्ली से आगरा भेजने थे. डाक द्वारा भेजने में लगभग आठ रुपए की टिकटें लगानी थीं. जब मैं ने अपने कार्यालय से अपनी पत्नी को फोन पर बताया कि डाक द्वारा भेजने से आठ रुपए लगते हैं तो उस ने तपाक से उत्तर दिया, "मेरी सहेली के जीजाजी आज ही टूंडला जा रहे हैं. क्यों न यह पार्सल उन्हें दे दिया जाए, जिस से वह इसे टूंडला जा कर डाकघर से आगरा पोस्ट कर दें. इस में बहुत कम पैसे लगेंगे क्योंकि आगरा टूंडला से केवल 30 किलोमीटर दूर है."

यह सुन कर मैं अपना माथा ठोक कर बैठ गया और समझाया कि डाक दरें दूरी पर निर्भर नहीं करतीं.

—सूर्यपाल सिंह

मेरे एक मित्र अपनी पत्नी के कामों में बहुत मीनमेख निकालते थे. वह प्रति वर्ष अपनी पत्नी से एक स्वेटर बुनवाते थे. लेकिन उस में कुछ न कुछ कमी भी जरूर निकालते थे. मित्र की इस आदत से परेशान हो कर उन की पत्नी को सर्दियां आते ही उन के लिए स्वेटर बनाने का बुखार चढ़ना शुरू हो जाता था.

एक बार जब उन्होंने पत्नी को नया स्वेटर बुनने के लिए कहा तो उन की पत्नी ने सलाह दी कि इस बार वह अपना स्वेटर बाजार में मशीन पर बुनवा लें क्योंकि स्वेटरों में एक सुंदर डिजाइन चला है जिस को सिर्फ मशीन पर ही हो सकती

मित्र को पत्नी की यह नेक उचित व तर्कसंगत लगी. अगले ही वह पड़ोस की एक दुकान पर बुनने के लिए कह आए. स्वेटर होने के बाद जब उन्होंने उसे कर देखा तो अपनी पत्नी पर बर "क्या ऐसा स्वेटर बुनवाने के लिए मुझ से इस के डिजाइन और की तारीफ कर रही थी? जरा गले व बगल से फिटिंग तो देखो. अच्छा तो तुम ही बुन लेती हो."

पत्नी ने बहस करना समझा और दो घंटे के अंदर ही का गला व बगल ठीक कर के दे दिया. बाद में पता चला कि स्वेटर बुनाने वाली अपनी सहे मिल कर स्वयं उन की पत्नी ने घोटाला कराया था. अब मेरे इ की हालत यह है कि उन की पत्नी भी स्वेटर बुन कर देती है, चुपचाप पहन लेते हैं.

—सीताराम

✧

मेरी शादी हुए अभी कुछ हुए थे. मेरा स्वभाव कुछ गंभीर का है और मेरी पत्नी कुछ बोलती थी. नईनई शादी होने से कुछ कहते हुए झिझकता था.

एक दिन मैं एक रोचक पढ़ रहा था और मेरी पत्नी अपनी कहती जा रही थी. आखिर मैं ने कर बोल ही दिया, "तुम इतना हो कि जब तुम मेरे सामने होतीं तब भी तुम्हारी बकबक दिमाग में गूंजती रहती है."

इस पर मेरी पत्नी ने बड़ी मियत से जवाब दिया, "खाली तो आवाज गूंजती ही है." यह मुझ से कुछ भी कहते न बन पड़ा.

—कृष्णकुमार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आषाढ़ी बादल...

तन में आग लगा दी तुम ने,
मन में आग लगा दी तुम ने,
अब ज्वाला को तुम्हीं बुझाओ
बन कर सघन आषाढ़ी बादल.

पहले तुम ने लौ दिखला कर,
बुझे दिए को पुनः जलाया,
तब से यह जल रहा आज तक.
मगर न तुम ने साथ निभाया.
यह जल राख हुआ जाता है
इस का आज थाम लो आंचल.

छोड़ न जाए बीच सफर में
कुछ ऐसी सौगंध पिला दो,
मंडराता ही रहे भ्रमर सा
रूप रंग की गंध पिला दो.
इसी धुरी पर चाक सरीखा
तब से घूम रहा यह पागल.

इस के इस जीवन कानन में
सन्नाटा है और निराशा,
बहुत दिनों से बाट जोहते
इस की टूट गई है आशा.
इस के वियावान जीवन में
भर दो मधुरमधुर कोलाहल.

—हेमंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

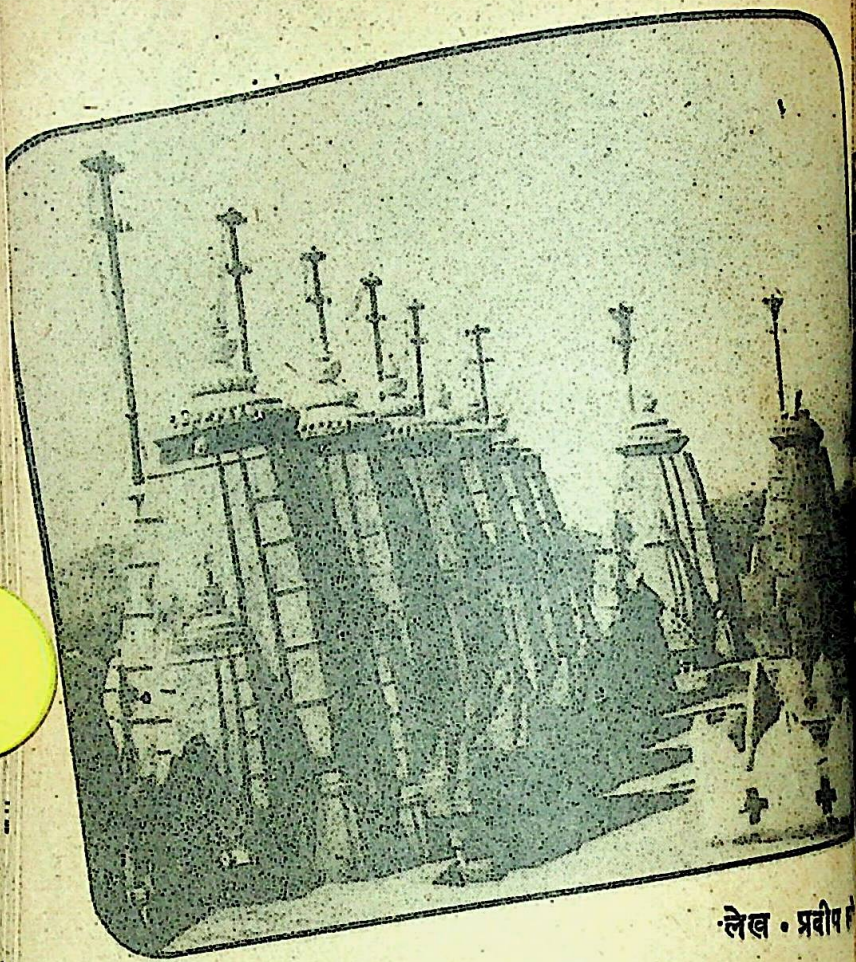

लेख • प्रदीप

रणकपुर

शिल्पकला में बेजोड़ यहां का जैन मंदिर पर्यटकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता है.

रणकपुर—एक निरक्षर किसान दीपाकारित का एक संगमरमरी स्वप्न, जिसे साकार महाराणा कुंभा के चतुर व मंत्री धरणाशाह ने.

रणकपुर संगमरमर की एक अ कलाकृति है जो रणकपुर के ने नाम से विश्व प्रसिद्ध है. यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

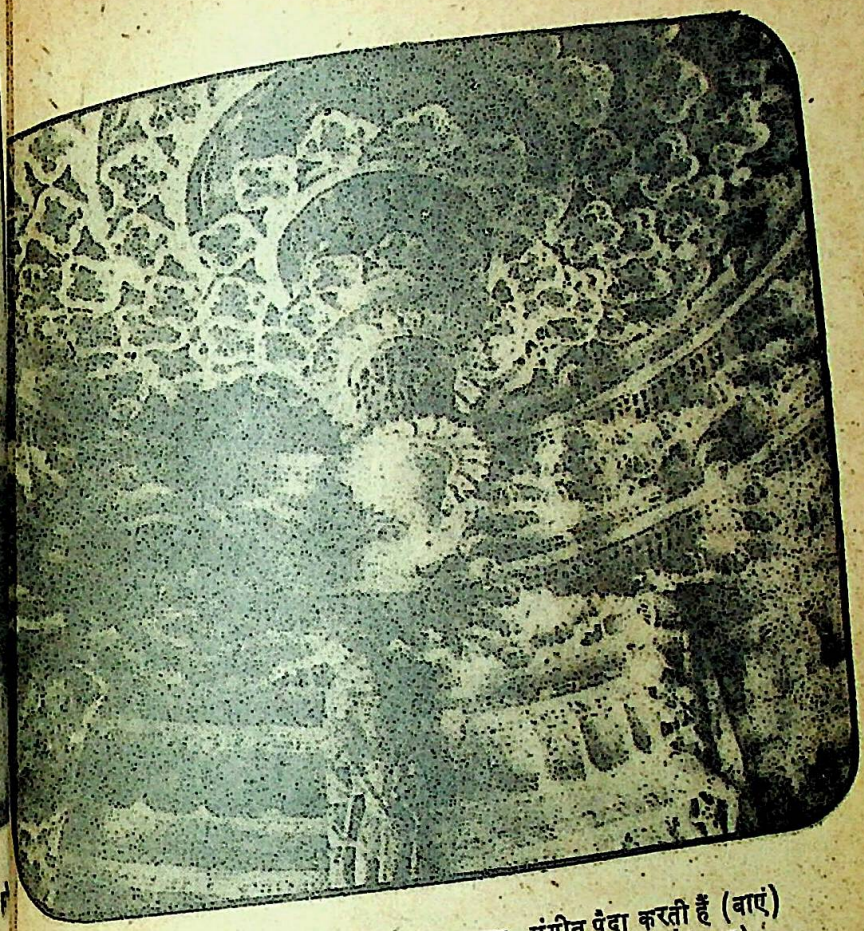

मंदिर के गुंबदों पर लगी घंटियां बड़ा मधुर संगीत पैदा करती हैं (बाएं) मंदिर की छत पर अंकित नक्काशी का एक खूबसूरत नमूना (ऊपर).

लगभग 170 किलोमीटर दूर पश्चिमी वे के फालना जंकशन पर पहाड़ियों से रा और हरियाली से भरा और एक ोहारी गांव है.

अरावली पहाड़ियों की रमणीक एवं त पश्चिमी घाटी में स्थित रणकपुर का मंदिर भारतीय कलाशिल्प का तीय कीर्ति स्तंभ है. संगमरमर पर गई विचित्र नक्काशी विश्व की किसी कलाकृति से टक्कर लेने के लिए अपना ंत मस्तक उठाए हुए दूर से ही पर्यटकों पुकारती हुई प्रतीत होती है.

जैनियों के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव को समर्पित इस जैन मंदिर में मोमबत्तियों से ही उजाला किया जाता है. यहां बल्ब जलाना पूर्णतः निषिद्ध है. शायद इसलिए कि बेजबान कीड़ेमकोड़ों की हत्या कम हो.

आरती के समय दो विशालकाय घंटे, जिन में से एक पुल्लिंग व दूसरा स्त्रीलिंग के नाम से जाना जाता है, बजाए जाते हैं. इन से निकली ध्वनियां और हजारों प्रतिध्वनियां आसपास की पहाड़ियों से टकरा कर फिर अगणित प्रतिध्वनियां उत्पन्न करती हैं, जिन का निनाद लगभग पांच किलोमीटर तक सुनाई देता है. प्रत्येक घंटे का वजन 160 किलोग्राम है. रात्रि में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

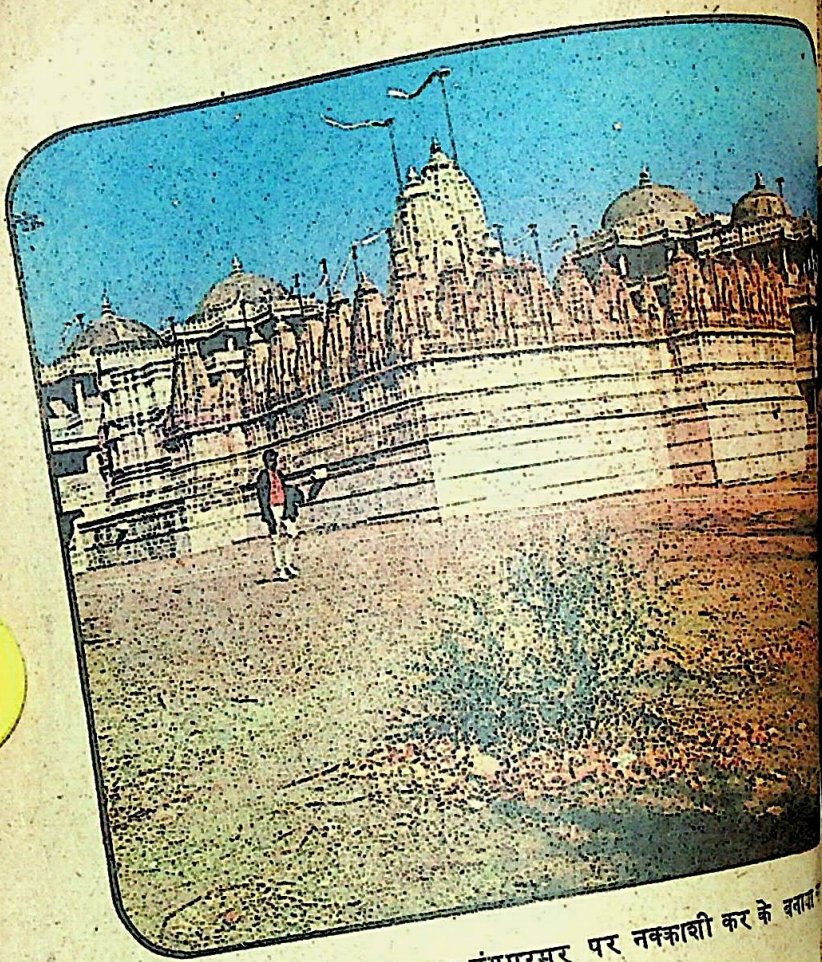

रणकपुर मंदिर का पूरा भवन संगमरमर पर नक्काशी कर के बनाया

मोमबत्तियों के हिलते हुए प्रकाश में मंदिर की छटा अत्यंत मनमोहक लगती है. यद्यपि मोमबत्तियों की कलरव करती हुई धीमी लौ में प्रतिमाओं पर लुटाई हुई कला स्पष्ट दृष्टिगोचर नहीं होती, फिर भी उन की श्रेष्ठता का अहसास हुए बिना नहीं रहता.

जब मंदिर के गुंबदों पर पीतल की जंजीरों की सहायता से लटकी सैकड़ों घंटियां व नूपुर हवा के झोंकों से बजते हैं तो ऐसा लगता है मानो कोई ग्रामीण बाला घुंघरू बांध कर कत्थक नृत्य कर रही हो.

यह मंदिर चौमुखा है तथा इस का निर्माण श्रद्धालु पोखाल जैन द्वारा सं. 1433 में प्रारंभ किया ऋषभदेव का मुख्य मूर्ति दिशाओं के सम्मुख है. सारा चबूतरे पर बना हुआ है. की ओर 76 कोठरियां हैं जो कला का नमूना है. हर कोने एक हलकी और सुंदर घुमटी की बड़ी कतार के पीछे, ओर मंदिर पर पांच

रणकपुर के इस जैन फल लगभग 48,400 वर्ग में 84 बड़े कमरे हैं. इन तथा इन सभी में कोई भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संगमरमर में तराशी गई मूर्तियां ऐसे लगती हैं जैसे अभी बोल पड़ेंगी.

कार के नहीं हैं. मंदिर का मुख्य द्वार
चिम में है तथा चारों दिशाओं में चार
वाजे हैं. यह मंदिर संगमरमर का बना
जिस के नीचे तहखाने हैं. इस की नींव
फुट गहरी है जो सप्तधातु से भरी गई
जिस से भूकंप आदि का इस पर कोई
ाव नहीं हो सकता. मंदिर का भवन
सीढ़ियों की ऊंचाई पर तीन मंजिलों
है. यह मंदिर 198 फीट लंबा व 205
ट चौड़ा है. मंदिर का क्षेत्रफल 59
घा है.

इस का निर्माणकार्य संवत 1433
लाई (प्रथम) 1978

में प्रारंभ हो कर 65 वर्षों तक चलता रहा. सिद्धहस्त कारीगरों द्वारा बेहतरीन नक्काशी व मूर्तियां तराशने का काम किया गया है. संवत 1498 में प्रथम तीर्थंकर की मूर्ति की स्थापना कर के इस मंदिर में प्राण फूंके गए. कहा जाता है कि इस के निर्माण कार्य के लिए 1,500 कारीगरों व 2,700 श्रमिकों ने प्रतिदिन कार्य किया. इस के निर्माण में कुल 99 लाख स्वर्ण मुद्राएं काम आई जो आज 15 करोड़ रुपए के बराबर हैं. यह तब की बात है जब दैनिक मजदूरी दो पैसे से अधिक नहीं थी.

यह मंदिर जैन व हिंदू शिल्पकला का अनूठा संगम है. इस मंदिर के प्रवेशद्वार पर राम और कृष्ण की लीलाएं अंकित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

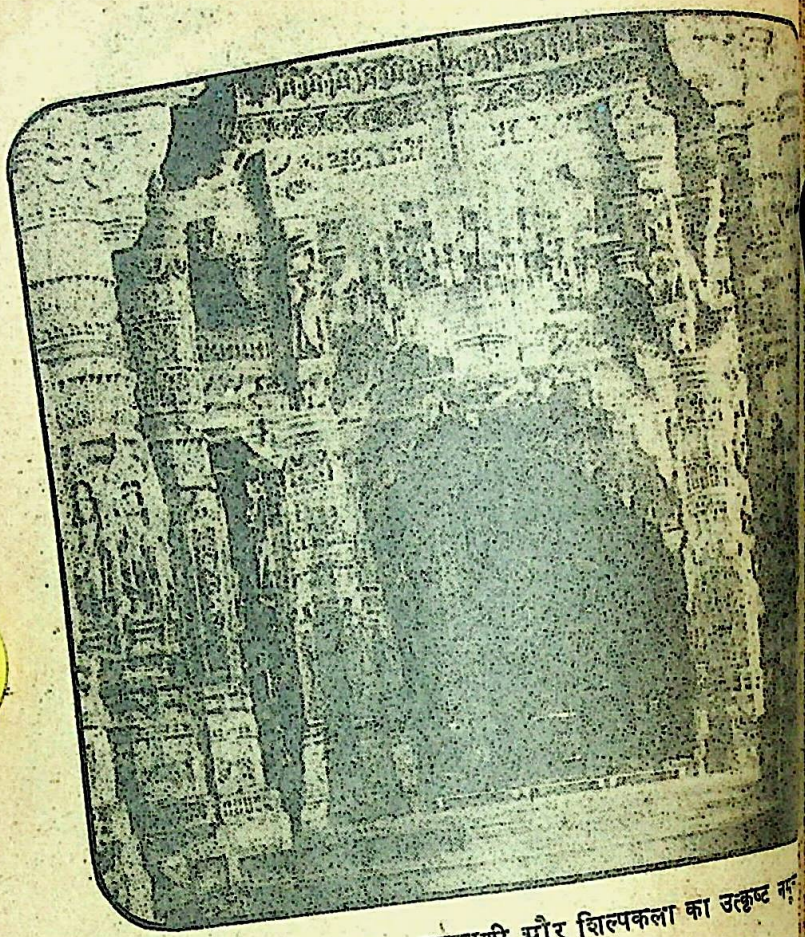

मंदिर का विहंगम दृश्य—नक्काशी और शिल्पकला का उत्कृष्ट नमू

हैं. इस के अतिरिक्त अनेक प्रतिमाओं की कामोत्तेजक भंगिमाएं खजुराहो की प्रस्तर कला व मैनाल के शिव मंदिर का स्मरण कराती हैं. हर प्रतिमा के अपने अलग हावभाव हैं. कभी महसूस होता है कि मूर्ति के होंठ हिल रहे हों तथा वह अपनी कहानी आप को सुनाना चाहती है. कोई लज्जावश पलकें झुका कर आप को आकर्षित करती है. कोई नृत्य की विशिष्ट मुद्रा में आप को राक एंड रोल के लिए आमंत्रित करती हुई प्रतीत सी होती है. छत पर तराशा हुआ संगमरमर कल्पवृक्ष के पत्ते के रूप में छत पर अधर लटका हुआ है. छत की छटा देखते ही बनती

पास ही के खंभे पर एक अप्स रण मूर्ति बनी हुई है जिस के नीचे 'दीपाकारित'. यह वही भवत मस्तिष्क ने इस मंदिर का नक्श किया था. किंवदंती है कि दिपा कारित ने अपने आराध्यदेव स्वप्न में मिली प्रेरणा से इस स्थल कला की दृष्टि से एक अद्वितीय बनाने के लिए किया. दीपाकारित स्वप्न को साकार करने के लिए कुंभा के जैन मंत्री धरणाशाह ने धन उपलब्ध करा कर एक सुंदर कर पूरा किया. यही कारण रूप से जैन मंदिर होते हुए भी देवताओं के भी दर्शन होते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

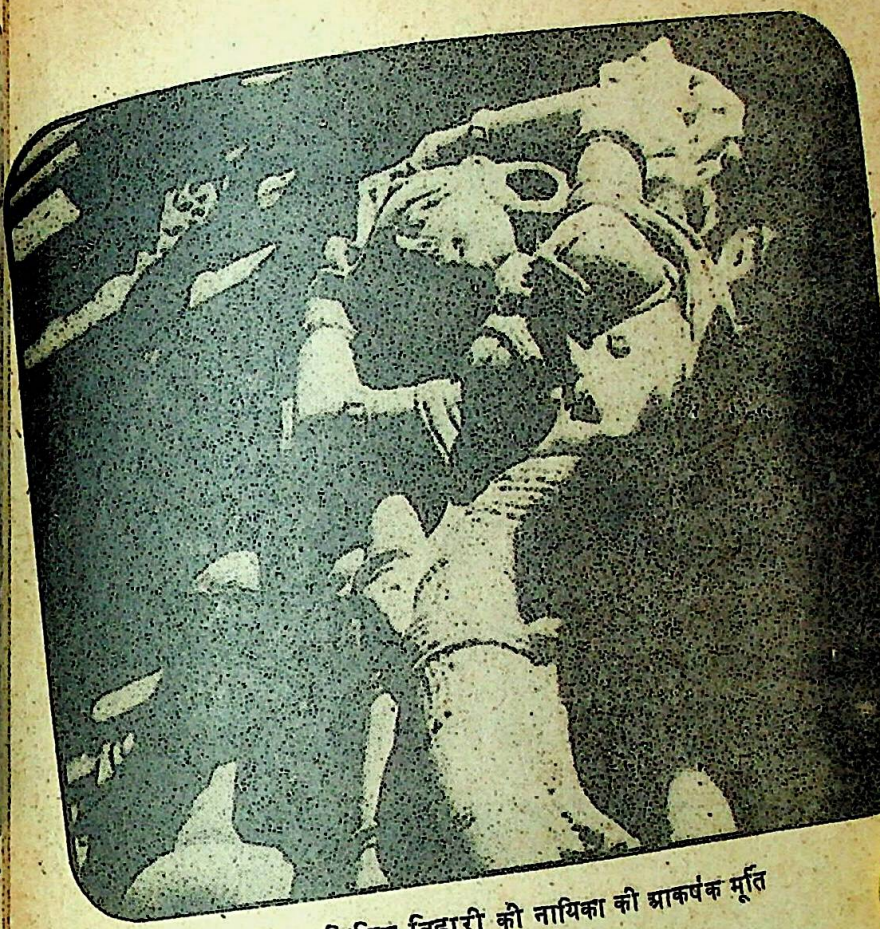

मंदिर की दीवारों पर चित्रित बिहारी की नायिका की आकर्षक मूर्ति

इस मंदिर की प्रमुख मूर्ति ऋषभदेव की है. खंभों की बहुलता के उपरांत मूर्ति के दर्शन किसी भी स्थान पर खड़े हो कर बिना किसी बाधा के किए जा सकते हैं.

राजस्थान के प्रसिद्ध रीतिकालीन शृंगार रस के महाकवि बिहारी के काव्य में वर्णित नायिकाओं की आकर्षक भाव-भंगिमाएं यहां प्रस्तर पर चित्रित हैं.

शृंगार करते हुए, आभूषण सजाते हुए, पायल उतारते हुए, पांव से कांटा निकालते हुए, पक्षियों से बात करते हुए, शिशु के संग क्रीड़ा में लीन, प्रिय संग उल्लसित आदि सभी मूर्तियों में कलाकारों का कोमल भाव व कठोर श्रम स्पष्टतः झलकता है. जालियों और झरोखों की नक्काशी तो अपनी उत्कृष्ट सीमा से भी परे है. कलाकारों ने मंदिर निर्माण में, कलाकौशल में कतई ढील नहीं बरती, चाहे वह स्तंभों पर नक्काशी का काम रहा हो या पथरीली देह में प्राण फूंकने का अथवा द्वार पर जाली बनाने का.

वास्तुकला की विविधता, स्तंभों की सुंदर शैली, प्रकाश छाया के आगमन की रीति तथा छत एवं स्तंभों की धनी शिल्प कला देख कर हर व्यक्ति स्तब्ध हो जाता है. वह कला के इस विराट स्वरूप में सदा-सदा के लिए खो जाना चाहता है. ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

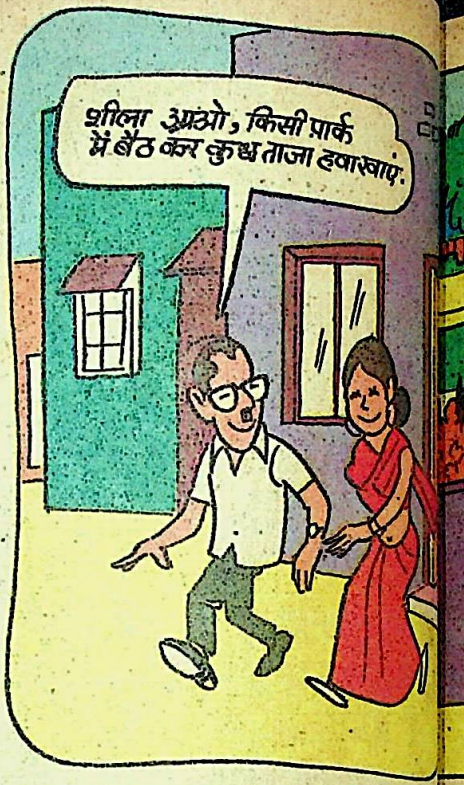

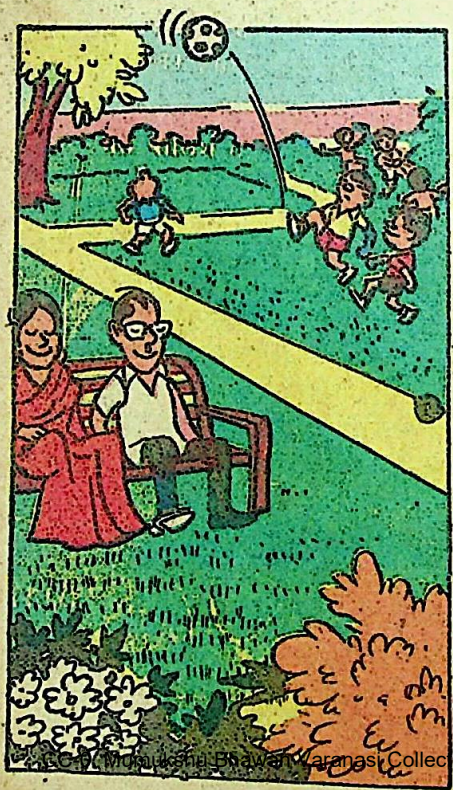

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगमग

धुलाई के लिए

555

स्पैशल साबुन —•— डिटरजेंट पाउड

निर्माता : गौरामल हरीराम

39, नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-15 फोन : 565715, 583235 टेलेक्स

चंपक बाल साहित्य की नई भेंट

आदमी की कहानी

शुरुशुरु में आदमी बंदर की तरह पेड़ों पर रहता था और समझबूझ में भी वह बंदर से अधिक नहीं था. मगर आज वह बिलकुल बदल गया है. उस ने खाना-पीना, कपड़े पहनना, पशुपालन, खेती करना आदि कैसे सीखा? .....आदमी की उन्नति की सारी कहानी इस मनोरंजक बाल उपन्यास में सरल रोचक भाषा में बताई गई है.

मूल्य रु. 2.50

विश्वविजय प्रकाश

प्राप्य : दिल्ली बुक कंपनी
एम-12 कनाट सरकस,
नई दिल्ली-110001

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पासा पलट गया

फैजाबाद जिले के कहुवा ग्राम में मेरी फुफेरी बहन का विवाह संपन्न हो रहा था. कलेवा की रस्म आने पर वर मुंह फुला कर बैठ गया. जब उस से पूछा गया कि उसे और क्या चाहिए तो उस ने कहा कि वह पेट्रोल से चलने वाली कोई चीज लेगा, तभी कलेवा करेगा. यह सुन कर वधू पक्ष के लोग सन्न रह गए. मेरे फूफा की इतनी बड़ी हैसियत न थी कि वह कोई कार अथवा स्कूटर आदि दे सकते.

तभी मेरे पिताजी ने वर से पूछा, "अच्छा, क्या आप पेट्रोल से चल ने वाली चीज ले कर खाना खा लेंगे?"

"जी हां."

वर का यह उत्तर सुन कर पिताजी ने तुरंत एक लाइटर वर के सामने रखते हुए कहा, "अब आप अपना वादा पूरा कीजिए."

वर ने चुपचाप भोजन शुरू कर दिया.

—अरुण पांडेय

✧

मेरे मित्र के आफिस के एक अधिकारी मिस मिश्रा नाम की एक लेडी टाइपिस्ट पर आसक्त थे.

संयोगवश मेरा मित्र भी मिश्रा है और वह भी टाइपिस्ट है. एक दिन अधिकारी ने चपरासी के हाथ कुछ कागजात मिस मिश्रा के लिए यह कह कर भिजवाए कि अर्जेंट हैं. उन्हीं कागजात में एक पर्ची टाइपिस्ट के नाम भी लिखी थी, "मिश्रा, यदि तुम्हें शक्कर की आवश्यकता हो तो मेरे घर से ले जाना, मेरे पास एक कार्ड एक्स्ट्रा है." नीचे अधिकारी महोदय के दस्तखत थे.

उस समय मिस मिश्रा सीट पर नहीं थी. अतः चपरासी ने अर्जेंट कार्य समझ कर कागजात मेरे मित्र श्री मिश्रा को दे दिए. कागजों में उन्हें वह पत्र भी मिल गया. मिश्रा को मामला समझते देर नहीं लगी और वह अपने अन्य मित्रों की सलाह से दूसरे दिन सवेरे ही दो बड़े-बड़े झोले ले कर अधिकारी महोदय के घर पहुंच गए.

अधिकारी ने जब आने का कारण पूछा तो मेरा मित्र बड़े भोलेपन से बोला, "सर, शक्कर के लिए आप ने बुलाया था न..."

अब तो अधिकारी महोदय का चेहरा फीका पड़ गया. पर उन्होंने इस डर से कि किसी को शक न हो पाए कि पत्र गलत जगह आ गया है, मेरे मित्र को पांच किलो शक्कर दिलवा दी और मेरे मित्र अपने दोस्तों में कहकहे लगाते हुए शक्कर लिए आफिस पहुंच गए.

—अनिल गुप्ता

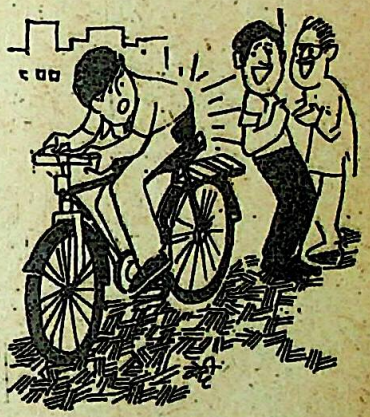

एक बार बरसात के दिनों में एक सज्जन साइकिल ले कर हमारे घर आए. छोटे भाई को शरारत सूझी. जब वह मुझ से गप्पें लड़ाने में मशगूल थे तो उस ने उन सज्जन की साइकिल के स्पंज वाले फटे सीट कवर में एक लोटा पानी डाल दिया और उन के जाने का इंतजार करने लगा.

कुछ देर बाद पास के चौराहे से एक जलूस गुजरा. अपनी शरारत भूल उस ने झट से साइकिल उठाई और बोला, "मैं अभी देख कर आता हूं."

सीट पर बैठते ही उस की सफेद पैंट गंदी हो गई. अब उस की हालत देखने लायक थी.

—मोहन वर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप के मुन्ने के लिए

कंबीनेशन सूट

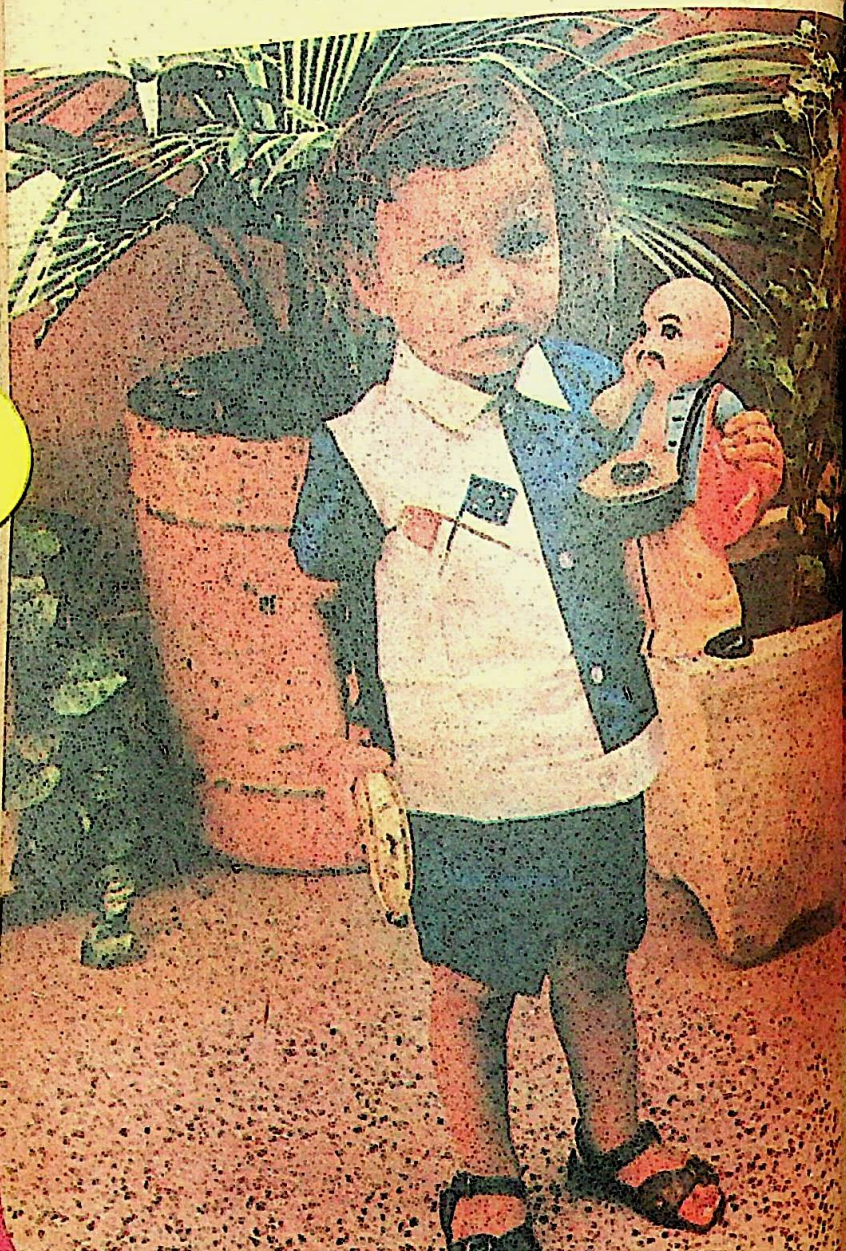

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

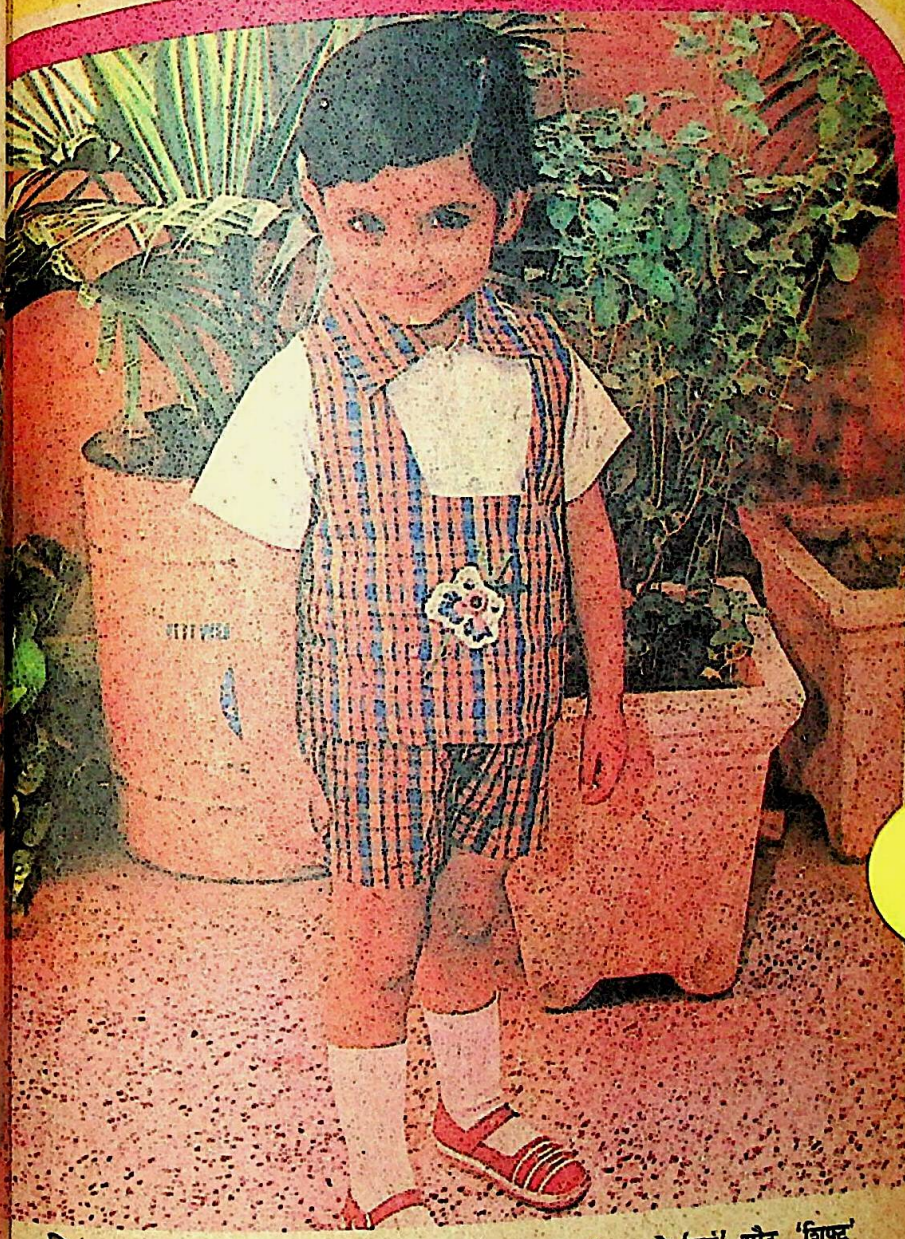

दो रंग के कंबीनेशन बाबा सूट के दो नमूने दिए जा रहे हैं. नेकर दोनों की समान है. शर्ट की कालर और बांहें भी एक जैसी हैं, पर नंबर एक सूट में जहां ऊपर की 'बुशशर्ट' में दो रंग का कपड़ा लगा कर डिजाइन बनाया गया है, वहां नंबर दो सूट के 'शर्ट' और 'शिफ्ट' में दो रंगों का प्रयोग अलगअलग किया गया है.

सूट नं. 1

काट के लिए साथ का ड्राफ्ट देखिए. नाप का हिसाब भी साथ ही दिया गया है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रंग योजना में नेकर नीले रंग की है. बुशर्ट का पिछला भाग पूरा सफेद रखा गया है. सामने के भाग में आधा हिस्सा नीला है, आधा सफेद. नीला कपड़ा ठीक मध्य में कालर की नोक के नीचे से ले कर घेर की पट्टी के ऊपर तक व बगल तक पूरा लिया गया है. इस के बाद बांहें नीली और कालर सफेद लगाई गई है. (चित्र देखिए). इस के बाद सज्जा के लिए बुशशर्ट के सफेद वाले भाग पर 'थोक' बना कर एक टुकड़ी नीली व एक लाल, ऊपर, से 'पैच' कर दी गई है. इसे के बाद नीले किनारे पर सज्जा के लिए बटन टांक दिए गए हैं. पहनाने के लिए बटन पट्टी पीछे की ओर है.

सूट नं. 2

नेकर और शिफ्ट का कपड़ा डिजाइन में व शर्ट का सफेद लिया है. नेकर व शर्ट का सफेद लिया नेकर व शर्ट की काट नंबर एक सूट ही कीजिए. शर्ट की लंबाई लंबाई से 4 सें. मी. कम होनी शर्ट में कालर चैक कपड़े की 'शिफ्ट' की काट यहां अलग से उसी के अनुसार काट कर तैयार फिर सामने के भाग पर सफेद 'पैच' कढ़ाई का एक 'मोटिफ' सज्जा के बना दीजिए. यह सूट लड़के, (तीन साल तक आयु की) दोनों के उपयुक्त रहेगा.

कंबीनेशन बाबा सूट की काट (दो नमूने)

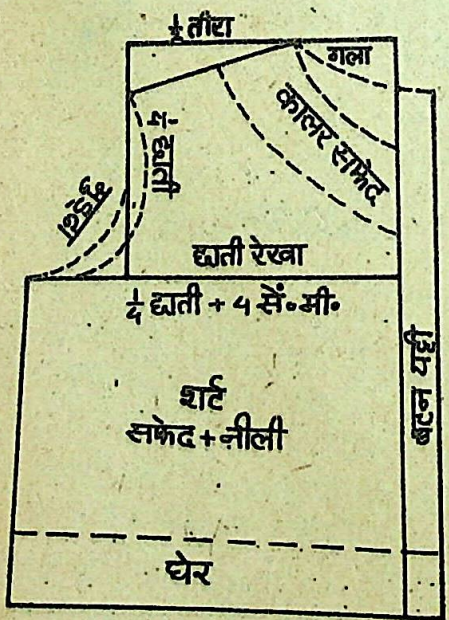

शिफ्ट की काट सूट नं. 1

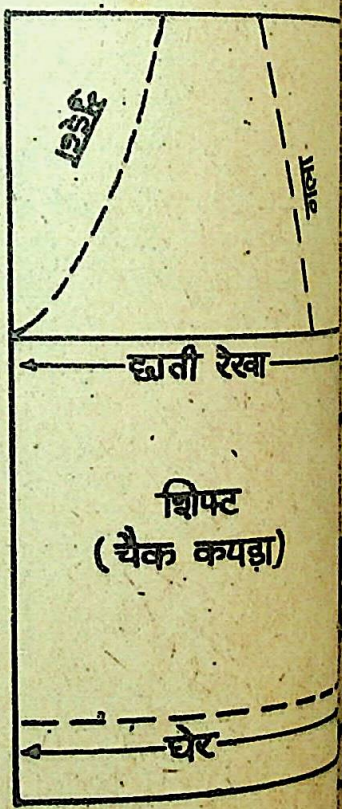

शिफ्ट की काट सूट नं. 2

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

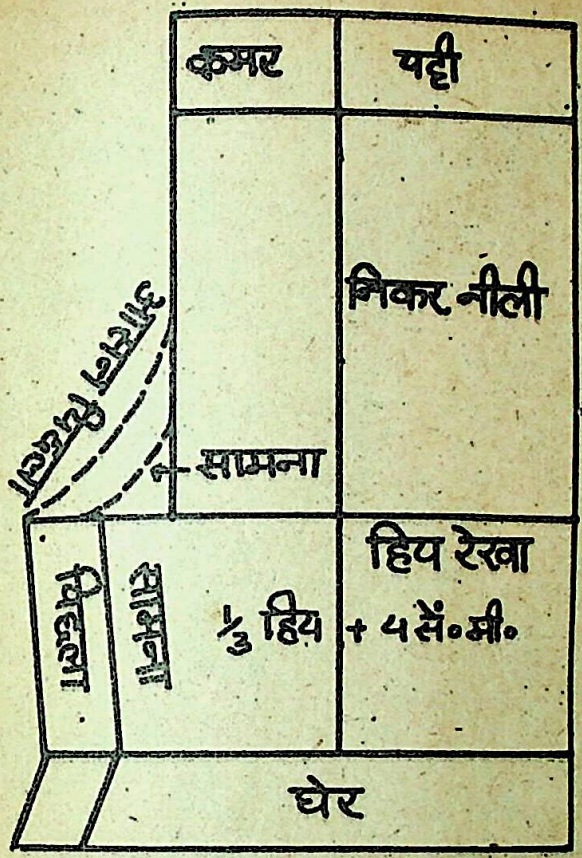

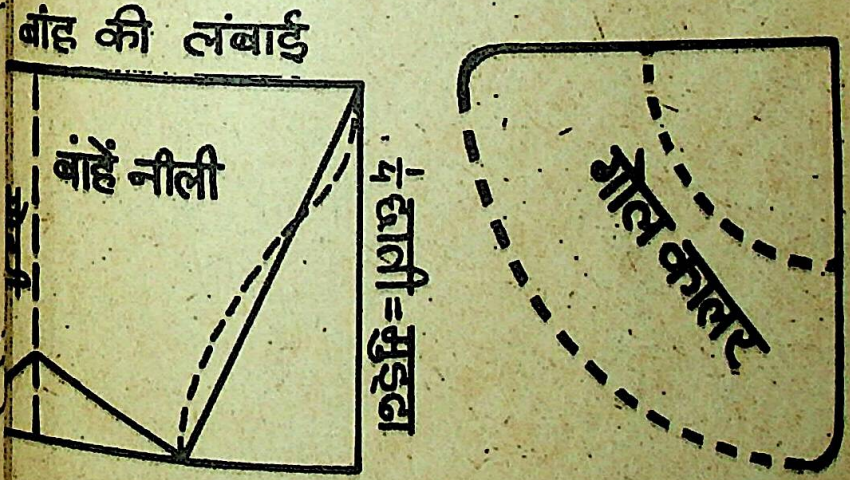

निकर, कालर और बांहों की काट (दोनों सूटों के लिए एक जैसी)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • नरेंद्र म. आहरवा

क्या आप का ब संकोची हैं

बच्चों का संकोच दूर करने के लिए बचपन से ही उन्हें ऐसी आदतें सिखाएं कि वे बड़े हो कर दूसरों पर निर्भर न रहें...

छोटे बच्चे कुम्हार की गीली मिट्टी के समान होते हैं. हम उन्हें जैसा चाहें बना सकते हैं. यदि पका हुआ बरतन टेड़ा है तो टेड़ा ही रहेगा. मातापिता तथा अध्यापक बच्चों को अच्छा बना सकते हैं. अच्छी आदतों तथा अच्छे विचारों का संस्कार बचपन से ही पड़ता है. अच्छे संस्कारों वाला बालक ही आगे चल कर आदर्श व्यक्ति बनता है. बच्चे का मनमस्तिष्क इतना कोमल होता है कि उस पर हर बात अपनी अमिट छाप छोड़ जाती है. इस आयु में बालक जो कुछ भी सीखेगा, अपनेआप को उन्हीं के अनुरूप ढालने का प्रयास करेगा.

लेकिन आज भी कई घरों में ऐसा पाया गया है कि बच्चों को आजादी नहीं दी जाती. कुछ दिन पहले हम को साथ ले कर एक मित्र उस मित्र के बच्चे भी हमारे उमर के हैं. हमें बैठे कुछ देर कि मैं ने पूछा, "क्या बच्चे हैं? दिखाई नहीं देते."

जवाब में उन्होंने मुसकरा "वे अंदर कमरे में हैं. क्या ही बड़े संकोची स्वभाव के हैं"

हार कर मैं ही अपने बच्चों ले गई और उन का परिचय बच्चे आपस में खेलने लगे आ गई और हम सब इतमीनान करने लगे. बातोंबातों में इन बताया कि उन की पत्नी बेटे अकेले नहीं जाने देती, यहां तक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ीस में भी भेजना पसंद नहीं करती. , घर से स्कूल और स्कूल से घर, यही की जिंदगी है. उस बच्चे का भविष्य ा होगा, क्या यह भी कभी सोचा है के मातापिता ने.

मेरी एक दूसरी सहेली का लड़का लड़के का सहपाठी है. एक दिन मेरा का मेरी सहेली के लड़के को साथ ले बाजार जाना चाहता था लेकिन मेरी ली ने यह कह कर मना कर दिया नहीं, अकेले इतनी दूर बस में नहीं ने दूंगी. इसलिए मेरे बेटे को अकेले ही में बाजार जाना पड़ा. उन की बेटी मेरी बेटी की ही उमर की है, लेकिन घर तक अकेली नहीं आ सकती. नी मां या आया के साथ ही आती है किन मेरी बेटी अकेली ही उन के घर जाती है.

जरा सोचिए, जो बच्चे घर में अकेले ते हैं और जिन के मातापिता उन्हें ीं अकेले नहीं जाने देते, उन का भविष्य ा होगा? वे कैसे प्रगति करेंगे, वे कैसे त्मनिर्भर हो सकेंगे?

कई माताएं स्वयं संकोची स्वभाव की होती हैं और जब वे खुद ही अकेली कहीं आतीजाती नहीं, स्वयं ही मिलनसार नहीं तो बच्चों को क्या सिखाएंगी? उन्हें बच्चों का स्वतंत्रता से आनाजाना, सब से बोलना (विशेषकर लड़कियों का) बिलकुल पसंद नहीं होता.

लेकिन कई माताएं ज्यादा आधुनिक होती हैं. वे अपनेआप को कुछ ज्यादा ही समझती हैं. उन्हें ऐसा महसूस होता है कि उन के जैसा कोई नहीं. उन्हें कोई पसंद नहीं आता और वे ऐसा सोचती हैं कि उन का बच्चा किसी के घर न जाए, किसी की बुरी आदत न ले, किसी के पास उठेबैठे नहीं और अपने घर के ही सीमित वातावरण में रहे. लेकिन यह तरीका बिलकुल गलत है. ऐसा करने से बच्चे का भविष्य कभी उज्ज्वल नहीं हो सकता. ऐसी माताओं का अंकुश बच्चे पर बुरा प्रभाव डालता है.

भले ही बच्चों को घर में कितना भी प्यार या सुख सुविधाएं मिलें, तो भी उन्हें स्कूल के अतिरिक्त हमउमर साथियों

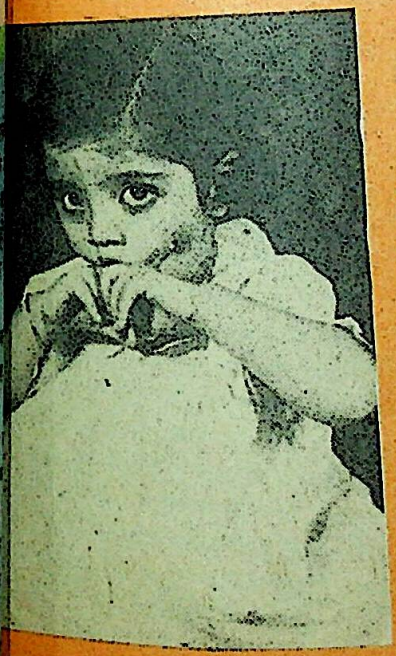

माताएं अकसर अपने बच्चों को दूसरे के घर भेजना पसंद नहीं करतीं और बच्चे अपने घर अकेले बैठे रहते हैं.

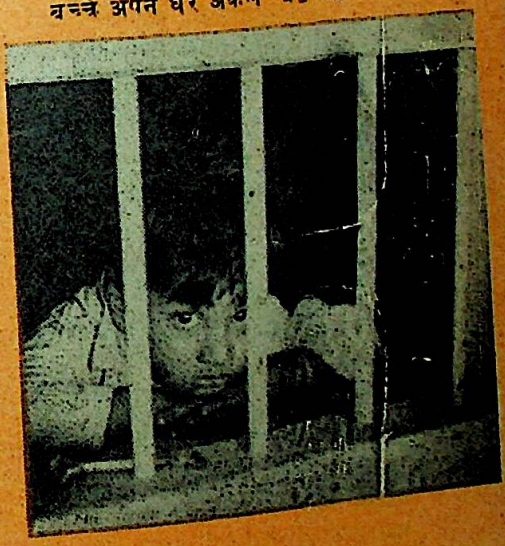

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का साथ मिलना बहुत जरूरी है. इस अवस्था में उन्हें घर की परिधि छोटी लगने लगती है, घर से बाहर निकल कर खेलने से बच्चों का अधिक बौद्धिक विकास होता है.

बच्चों का संकोची स्वभाव दूर करने के लिए बचपन से ही उन्हें ऐसी आदतें सिखानी चाहिए जिस से वे बड़े हो कर बिना रोकटोक स्वच्छंद घूम सकें. बचपन से ही उन्हें सब के साथ बोलना, घूमना आदि सब सिखाना चाहिए. छोटे बच्चों को आप शाम को बगीचे में ले जाती हैं न? क्यों? इसलिए न कि बच्चा बाकी बच्चों के साथ घुलमिल कर खेले, तोतली जबान में एकदूसरे से बात करे. फिर जब वह और बड़ा हो जाए तो उसे अकेले शाम को खेलनेघूमने जाने दें ताकि वह आजादी से अपने दोस्तों के साथ खेल सके और फिर आहिस्ताआहिस्ता अपने छोटे-मोटे काम कराएं. बाद में जैसेजैसे बच्चा बड़ा होता जाए, उसे बाहर जाने की भी आजादी दीजिए.

जरा आप अपने बच्चे से बाजार के छोटेमोटे काम करवा के देखिए. बच्चे को कितनी खुशी होगी और उस के मन को भी शांति मिलेगी. ऐसे ही वह धीरेधीरे आत्मनिर्भर हो जाता है. बड़े हो कर उसे अपने छोटेमोटे कामों के लिए दूसरों का सहारा नहीं लेना पड़ेगा और कोई काम करते हुए उसे संकोच भी नहीं होगा. बेझिझक वह कहीं भी आजा सकेगा. यदि घर में चार मेहमान आ गए तो बिना संकोच सब से बातचीत कर सकेगा. यदि किसी ने बच्चे से कुछ पूछा तो बिना संकोच जवाब दे सकेगा. इधरउधर किसी का मुंह नहीं देखेगा.

हमें बच्चों को स्वतंत्रता देनी चाहिए पर सीमा के अंदर. उन पर निगरानी भी रखनी चाहिए. यह नहीं कि बच्चा सुबह से बाहर निकला हुआ हो और शाम को घर आए. स्वतंत्रता की भी सीमा होनी चाहिए. यह भी ध्यान रहे कि आजादी कहीं बच्चे की बरबादी न बन जाए.

कई मांतापिता बच्चों अधिक रोकटोक करते हैं उमर में तो बच्चे दबते रहे जैसे बड़े हो जाते हैं, उन्हें लगती है और वे अपना बच्चों से करते हैं तो उन के भावना पैदा होने लगती है के दिलोदिमाग पर बुरा प्रभा आगे चल कर इन्हीं कारणों आदतों के शिकार हो जाते हैं

बच्चे संकोची क्यों होते हैं?

आगे चल कर ऐसे बच्चे हो जाते हैं. उन के दिल में का एक भय सा समा जाता है मन की बात घर के बजाए शुरू कर देते हैं. वे घर वालों कर बुरी बातें भी करते हैं पिता से कोई लगाव नहीं अपनेआप को अकेला ही समझ बात की ओर मातापिता को ध्यान देने की आवश्यकता है कि बच्चा संकोची स्वभाव का

जिस प्रकार बच्चे अपने की नकल करते हैं, उसी प्रकार साथियों की भी नकल करते हैं बच्चों को अपने आसपड़ोस लिए कभी नहीं रोकना चाहिए सी नईनई और अच्छीअच्छी साथियों और पड़ोसियों से हीं कुछ प्रवृत्तियां एवं सहज आयुवृद्धि के साथसाथ आवरण से ही प्राप्त होती हैं दूसरा लड़का पढ़ाई में अच्छा तो उसे देख कर आप का बच्चा में ज्यादा अच्छा होने की कोशिश लेकिन हमें इस बात का पूरा चाहिए कि हमारे बच्चों के चुने हैं क्योंकि बच्चे के ऊपर भी काफी प्रभाव पड़ता है का चुनाव गलत भी हो सकता ऐसा हो तो मातापिता को बच्चे को समझाबुझा कर उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पप्पू फीडर की श्रेष्ठता का सबूत आपकी नजर

U-P-8

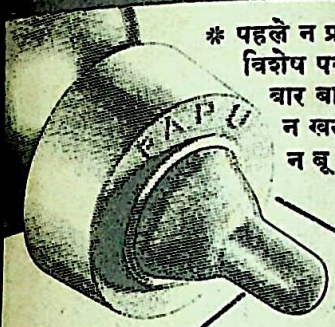

* पहले न प्रयोग किये गये विशेष पदार्थ का बना ढक्कन। बार बार उबालने पर भी न खराब होता है, न बू आती है।

* एकदम नये रबर से बना 'खास' आकार का निपल, जिसके कारण एकसी धार रहती है।

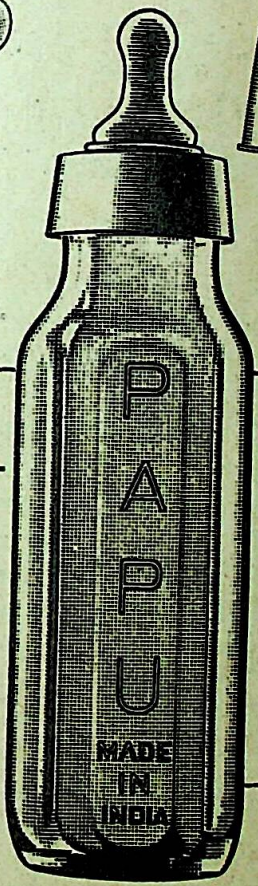

* साथ में निपल कवर मुफ्त! स्वास्थ्य के लिए अच्छा।

* क्षमता: खुराक की सुझायी मात्रा २२५ मि.ली. (८ औंस) न कि २०० मि.ली. (७ औंस) जैसा कुछ दूसरे फीडरों में।

* ऊंचे दर्जे के काँच से बना— ज्यादा टिकाऊ, साफ व सुरक्षात्मक।

मुस्कराते बचपन का साथी

पप्पू

फीडर और निपल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे शिकायत है

मुझे शिकायत है उन व्यक्तियों से जो विवाह में निमंत्रण कार्ड छपवाते हैं तो केवल अपने परिवार के लड़कों का नाम देते हैं, लड़कियों का नहीं."

—सुरोतमा त्रिपाठी

✦

मुझे शिकायत है उन बस कंडक्टरों से जो टिकट देते समय बकाया पैसे टिकट के पीछे लिख, देते हैं और अपने आप देने का नाम ही नहीं लेते. इस से यात्रियों को बाद में नाहक परेशानी होती है.

—रजनीश जैन

✦

मुझे शिकायत है उन अध्यापिकाओं से, जो पढ़ातेपढ़ाते अपनी साड़ी ठीक करने लगती हैं और अपने घर के किस्से सुनाने लगती हैं. इस से विद्यार्थियों का ध्यान बंट जाता है.

—वितुल जैन

✦

मुझे शिकायत है ऐसे पतियों से जो हर समय हर जगह अपनी पत्नियों को तिरस्कृत तथा अपमानित करते हैं. ऐसा करने से नारियों का पतन तथा जीवन नीरस हो जाता है और उन में हीनता की भावना घर कर जाती है.

—अलका रस्तोगी

✦

मुझे शिकायत है उन परीक्षकों से जो परीक्षा देते हुए विद्यार्थियों के पास खड़े हो कर उन के पेपर पढ़ने लगते हैं. इस से विद्यार्थी लिखने में झिझकता है.

—गीतल वर्मा

✦

मुझे शिकायत है उन अध्यापिकाओं से जो स्कूल में पढ़ने वाले छोटेछोटे बच्चों से डिजाइन उतारने के लिए उन के स्वेटर कोटियां आदि ले लेती हैं तथा महीनों अपने पास रख छोड़ती हैं.

—कृष्णा अवस्थी

से दूर कर दें. बच्चों में अच्छी आने में देर लगती है लेकिन बुरी सीखने में देर नहीं लगती.

बच्चों का मनोविज्ञान

कुछ घरों में देखा गया है कि स्वयं ही घर से बाहर जाना पसंद करते. कुछ मातापिताओं की यही यत है कि हम बोलबोल कर हार पर क्या करें बच्चे कहीं बाहर नहीं. इस का क्या कारण है? इस कारण हो सकते हैं. कभीकभी बच्चे बाहर सड़क पर कोई लड़ देख लेते हैं तो उन के मन में एक समा जाता है जिस से वे डर कभी कुछ भयानक दृश्य देख कर हैं या कभी शुरू में मातापिता हैं कि बाहर न जाना वहां बड़ा कुत्ता है, बाहर दाढ़ी वाला बूढ़ा रहा है, वह थैली में डाल कर ले

या उन को सिखाया जाता है घर में मेहमान आएं तो अपने रहो, बाहर नहीं आओ, उधम मत शोर न करो, यहां न बैठो, वहां सो बचपन की आदतें और मजबू जाती हैं और वे डरपोक या जाते हैं. मेहमान के आने पर मातापिता बुलाने पर भी नहीं आते. समझाने का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ता. मनोवैज्ञानिक की सलाह लें तो स्वभाव में परिवर्तन लाया जा सकता ऐसे दब्बू बच्चों को देख कर तो बड़ी दया आती है और उन के कार्यकलाप से ऐसी प्रतिक्रिया है कि कस कर एक थप्पड़ लगाने करता है. ऐसी अवस्था में डाक्टर की सलाह लेना आवश्यक

जिस बचपन की ओर ध्यान नहीं देते, वही बचपन कर मनुष्य के जीवन पर महत्वपूर्ण डालता है. मातापिता की बंदिशों बच्चों में हीनता की भावना होने पाए? इस के लिए जरूरी है को आत्मप्रदर्शन का अवसर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सलुएट ब्यूटी पार्लर', नयी दिल्ली
मिस जेनी ली
क मानी हुई हेअर ड्रेसर हैं।
का कहना है:

"हर स्त्री के बाल
अलग प्रकार के
होते हैं, इसी लिए
मुझे अपनी सब
ग्राहकों के लिए
ग्लीम पर पूरा
भरोसा है। कई
तरह के ग्लीम
शॅम्पू तरह-तरह के
बालों की देखभाल
के लिए ही तैयार किये गये हैं।"

G-47

हरएक ग्लीम शॅम्पू अपने विशेष संघटकों और भरपूर झाग से
बालों पर पूरा काम करता है। आप के जैसे बाल हों, वैसे
ग्लीम शॅम्पू से वे पूरी तरह निखर उठते हैं, फ़्रांसीसी सुगन्ध से
पहरों महकते रहते हैं— और निहायत किफ़ायती ढंग से!

ग्लीम
रेग्यूलर

सामान्य, स्वस्थ बालों को रेशम की तरह निखार कर, मनचाहे ढंग से सँवारने योग्य बनाता है

ग्लीम
एग

कमज़ोर बालों को ख़ालिस प्रोटीन से एक नयी शक्ति दे कर स्वस्थ और घना बनाता है

ग्लीम
टॉनिक

सिर की ख़ुश्की, पपड़ी और खुजली को दूर कर के, समस्या वाले बालों को पूरी तरह निखार देता है

ग्लीम शॅम्पू

प्रमुख हेअर ड्रेसर्स
कि सिफ़ारिश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Godfrey Manners & Co. Ltd.

लेख • रामानुज गिल्डा

समय की पुकार

समय बदल रहा है. बदलते समय के साथसाथ मनुष्य का स्वभाव, रूढ़ियां, रीतिरिवाज, सामाजिक गतिविधियां आदि भी बदल रही हैं. परिवर्तन समय की मांग है. यदि मनुष्य को अपने जीवन में प्रगति करनी है, समाज में अपना अस्तित्व टिकाए रखना है तो उसे समय की मांग पूरी करनी ही होगी, अन्यथा वह समय से जूझतेजूझते टूट जाएगा. समय को आज तक कोई जीत नहीं सका है.

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है. वह समाज की एक इकाई है. उस का महत्त्व उसी समय तक है, जब तक वह सामाजिक गतिविधियों तथा समाज से अनुबंधित रहता है. अतः समय की और समाज की पुकार में अपनी आ मिलाना हर मनुष्य का कर्त्तव्य होगा.

आज महंगाई का कैंसर हर के मन में घर कर चुका है. आज सामने अनेक समस्याएं हैं. बच्चों पढ़ाई, घर का खर्च, लड़केलड़कियों विवाह आदि अन्य अनेक ऐसी आव कताएं हैं, जिन्हें पूरा करना ही पड़ता आज की ऐसी महंगाई में घर आवश्यकताओं को पूरा करने में ही आ टूटता चला जा रहा है. ऐसी अवस्था उसे अपनी लड़की का विवाह करना तो उस की हालत वैसी होगी आकाश से गिरा और खजूर में अट

एक ही मंडप के नीचे एक साथ कई वर अपनी नियोजित वधुओं के साथ परि सूत्र में बंध रहे हैं.

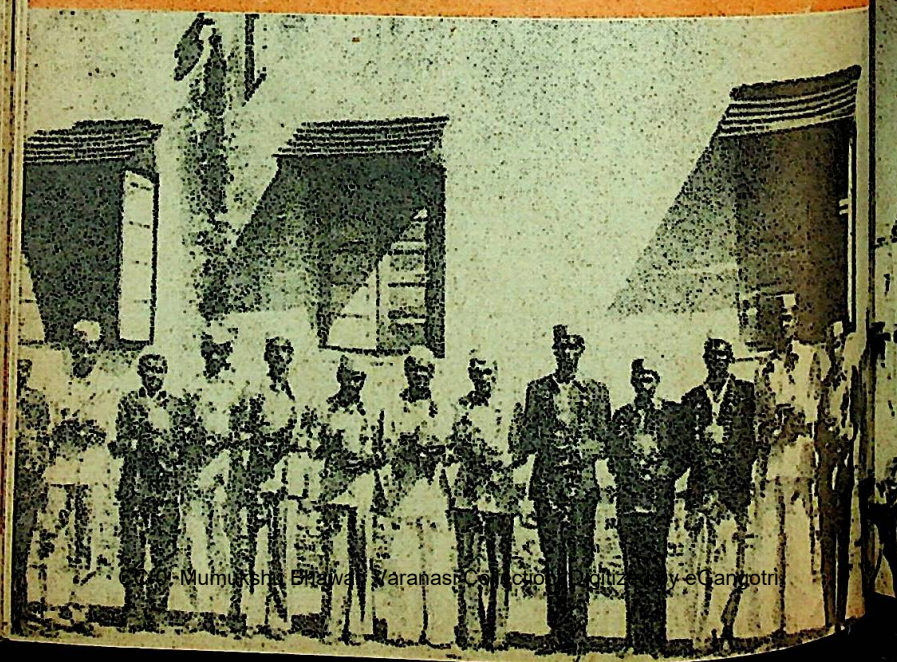

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विवाह के रीतिरिवाज आज आम आदमी के दिन का चैन व रात की नींद हराम कर देते हैं. इस का हल है सामूहिक विवाह पद्धति...

विवाह का प्रश्न जब मुंह बाए खड़ा हो जाता है तब उस आदमी के दिन का चैन और रात की नींद हराम हो जाती है. दहेज, कपड़ा, विवाह का खर्च, अनाज का खर्च, साधनों की कमी आदि ऐसी अनेक समस्याएं उस के मन में तूफान मचाती रहती हैं. इतना भारी खर्च वह वहन नहीं कर सकता, अतः वह विवाह की बात टालने लगता है. पर विवाह की बात टालने से लड़की की उम्र तो कम नहीं होती. लड़कियां जवान हो जाती हैं और फिर किसी तरह प्रौढ़ व्यक्ति या विधुर आदि से उस का विवाह मजबूरन कर दिया जाता है अथवा ऐसा होता है कि जवान लड़कियां घर में ही बैठी रहती हैं. इन लड़कियों का भविष्य कैसा होगा?

यह तो एक छोटा सा चित्र है. इस से भी भयानक अवस्था उन पिताओं की होती है, जिन के घर में दो से अधिक लड़कियां होती हैं तथा कमाने वाला वह खुद अकेला होता है. वेतन भी वाजिब होता है.

मतलब यह है कि ऐसी अवस्था मध्यम स्थिति के लोगों की ही है. हमें आज उच्च वर्ग के लोगों के बारे में सोचना नहीं है. हमें सोचना है तो उन लोगों के बारे में जो महंगाई तथा झूठी प्रतिष्ठा के चक्कर में कर्ज में डूबते चले जा रहे हैं. ऐसे लोगों के सामने जो वैवाहिक

अब इन लड़कियों को किसी प्रौढ़ या विधुर से विवाह करने के लिए मजबूर नहीं होना पड़ेगा.

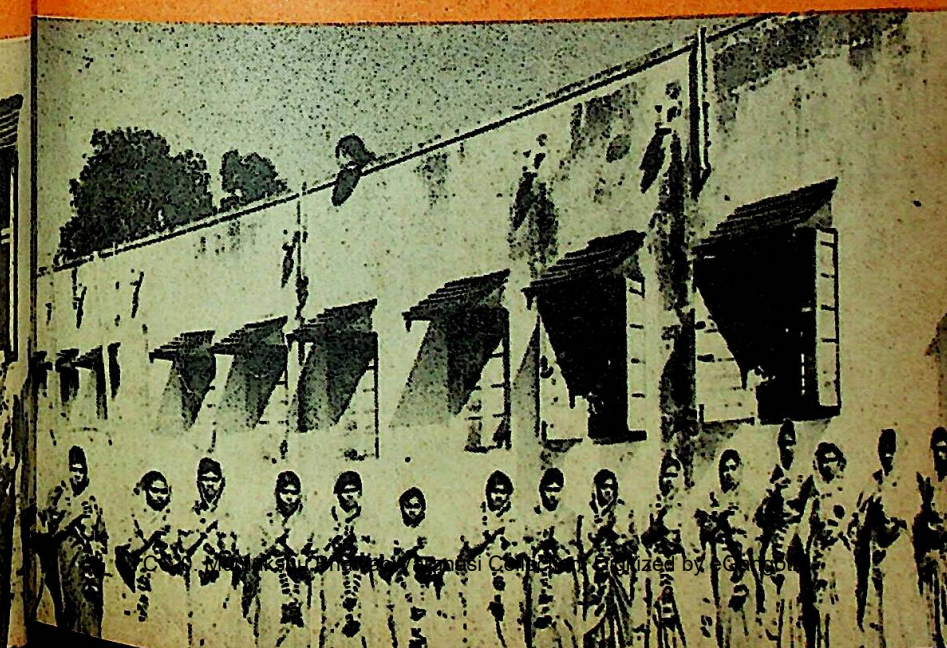

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समस्याएं हैं, उन की समस्याओं का हल है—सामूहिक विवाह. इस योजना से जो व्यक्ति देहातों तथा दूर अंचल में बसे हुए हैं, जिन का समाज से मानो संपर्क टूट सा चुका है, वे समाज से संपर्क बढ़ाने को बाध्य होंगे तथा उन की समस्याएं सुलझाने में समाज को भी कटिबद्ध होना ही होगा. उन्हें कर्ज लेने की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी तथा विवाह के जिन साधनों की आवश्यकता होती है उन की पूर्ति हो ही जाएगी. किसी प्रकार की असुविधा से बरातियों के रूठने का प्रश्न भी पैदा नहीं होगा तथा सारा समाज उन के काम में हाथ जुटाने को तत्पर रहेगा.

समाज का कर्त्तव्य

देश की विकट परिस्थिति को मद्दे-नजर रखते हुए कम खर्च करना हमारा, हर व्यक्ति तथा हर समाज का कर्त्तव्य है. सामूहिक विवाह में सम्मिलित हो कर हम एक पंथ दो काज कर सकते हैं. एक तो अपनी समस्याओं का हल, कम खर्च में विवाह, कर्ज से छुटकारा, अयोग्य रूढ़ियों तथा परंपराओं का खंडन तथा दूसरा, राष्ट्रीय कर्त्तव्य को पूरा करना. अतः समय की मांग को पूरा करना समाज का प्रथम कर्त्तव्य है.

सामूहिक विवाह सामाजिक योजना है. समाज की परंपरागत रूढ़ि में परिवर्तन लाना है. समाज की परंपरागत रूढ़ियों में जबजब परिवर्तन लाने की कोशिश की गई है, तबतब उस का स्वागत भी हुआ है और विरोध भी, लेकिन नई रूढ़ियां कार्यान्वित हो जाने पर विरोधक भी समर्थक बन गए हैं.

इस योजना के अंतर्गत भी ऐसा हो सकता है. आज भी इस के कई विरोधी हैं, लेकिन इन सब के लिए समय सब से ज्यादा जालिम इलाज है. समय के फेर में इन विरोधकों को भी समर्थक बनाते देर नहीं लगेगी. मध्यम वर्ग के मन में हिचक है कि सामूहिक विवाह में सम्मिलित होने से लोगों की नजरों में गिर जाएंगे, अपना स्तर गिर जा लेकिन जिस योजना को समाज ने कार्यान्वित किया है, समाज ही पीछे है तो मन में इस प्रकार हिचक

इतिहास इस बात का साक्षी ऐसी सामाजिक परंपराओं के लि के लिए आदर्श की आवश्यकता जब तक समाज के सामने किसी ष्ठित एवं संपन्न घर द्वारा (सामूहिक विवाह में) नहीं रखा तब तक समाज ऐसी योजना की आकृष्ट नहीं होगा, लेकिन इस के अभी समय लगेगा.

हमारे महाराष्ट्र में राज्य समाज द्वारा सोलापूर, लातूर, औरंगाबाद, अमरावती, नांदेड, आदि शहरों में 'सामूहिक विवाह योजना को कार्यान्वित हुए तीनचार हो चुके हैं. समाज का हर सवयुवक व्यक्ति, हर स्त्री निष्काम भाव से तथा सामाजिक कर्त्तव्य समझ कर युक्त योजना को सफल बनाने में मग्न हैं. इस योजना की सराहना राष्ट्र के मान्यवर व्यक्तियों ने तत्कालीन मुख्य मंत्री, प्रधान मंत्री विधायकों ने भी की है.

यह तो विदित ही है कि राज्य समाज में शादीब्याह का खर्च अं होता है. एक वर या वधू के विवाह कम से कम 10 से 15 हजार रुपए होते हैं. जब कि इस योजना के अं डेढ़ से दो हजार रुपए खर्च होते हैं में भोजन, वैवाहिक कार्यक्रम, पानी आदि पर होने वाला खर्च सम्मिलित है.

इस योजना के अंतर्गत अब तक महाराष्ट्र में लगभग 150 लड़कों लड़कियों के विवाह कराए जा चु जिन के कारण लगभग डेढ़ करोड़ की बचत हुई है, इस के अतिरिक्त तथा श्रम की बचत हुई सो अलग.

रूढ़ीवादी समाज पहले तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योजना में विश्वास नहीं रखता, लेकिन लगभग 150 लड़केलड़कियों ने इस योजना में सम्मिलित हो कर, सिर्फ उन के ही नहीं अपितु सारी जातियों के समाज के सामने एक आदर्श रखा है, समाज को प्रेरणा दी है, समाज को सोचने के लिए बाध्य किया है.

महाराष्ट्र के छोटेछोटे कस्बों में सामूहिक विवाह का आंदोलन शुरू हो चुका है. इस आंदोलन का प्रचार एवं प्रसार, भारत के विभिन्न प्रांतों के शहरों और गांवों में होना आवश्यक है, जिस के फलस्वरूप वैवाहिक समस्याओं से त्रस्त वरवधू पिताओं को राहत मिलेगी, साथ ही विवाह की समस्याओं का निराकरण होगा.

इस प्रकार हम एक पंथ दो काज करेंगे. एक तो आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों की अर्थात गरीबों की गरीबी हटाने का थोड़ा सा प्रयास करेंगे. दूसरा कार्य होगा सामाजिक तथा राष्ट्रीय कर्त्तव्य की पूर्ति. यदि सारे देश भर में यह योजना कार्यान्वित हो गई तो प्रति वर्ष करोड़ों रुपयों की बचत होगी. ●

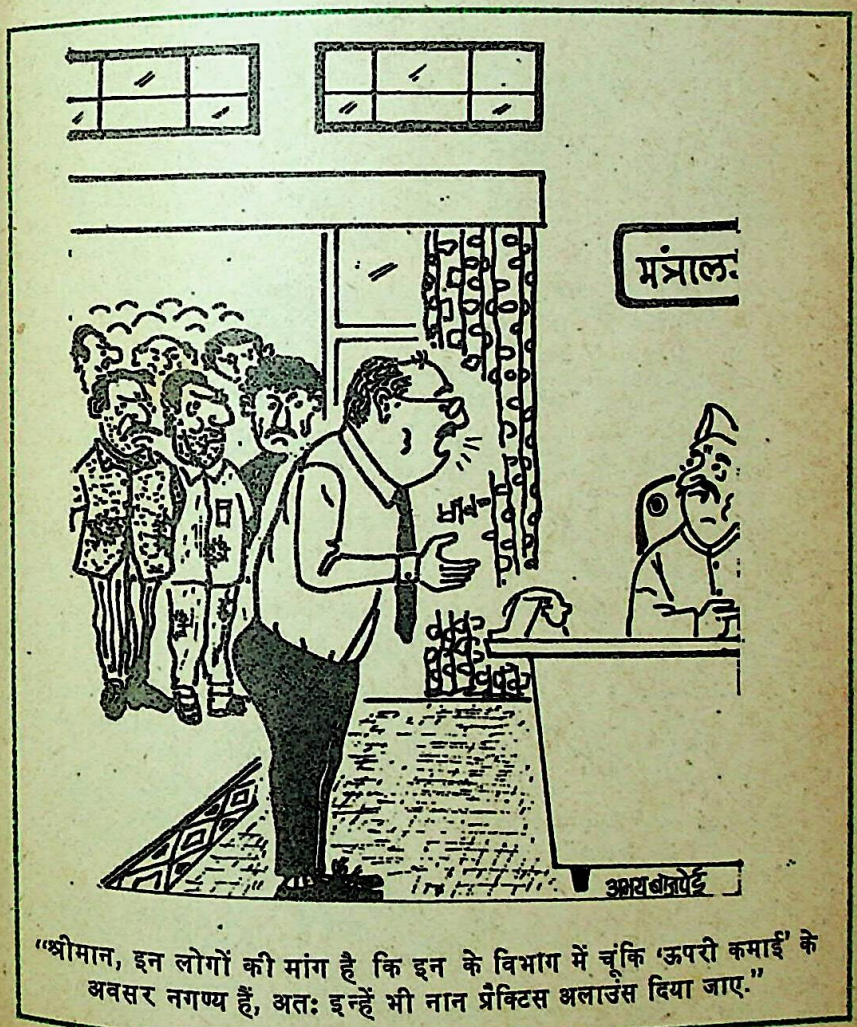

"श्रीमान, इन लोगों की मांग है कि इन के विभाग में चूंकि 'ऊपरी कमाई' के अवसर नगण्य हैं, अतः इन्हें भी नान प्रैक्टिस अलाउंस दिया जाए."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की बदबू रोकिये... दंतक्षय का प्रतिकार कीजिये

हर भोजन के बाद अपने दांत कोलगेट से साफ़ कीजिये। यह ठीक उसी तरह दांतों की रक्षा करता है, जैसे दुनियाभर के दंत विशेषज्ञ कहते हैं।

दांतों में छुपे हुए अन्नकणों में कीटाणु बढ़ते हैं। इनसे सांस में बदबू पैदा होती है, और बाद में दांतों में सड़न।

इसीलिए, हमेशा भोजन के फ़ौरन बाद कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ कीजिये। यह सांस को ताज़ा, दांतों को सफ़ेद और दांतों की सड़न रोकने में असरदार साबित हो चुका है।

अधिक तरोताज़ा सांस और अधिक सफ़ेद दांतों के लिये दुनियाभर में ज़्यादा से ज़्यादा लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट टूथपेस्ट ही खरीदते हैं।

देखिये, कोलगेट के भरोसेमंद फ़ॉर्मूले का काम:

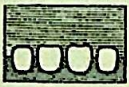

दांतों में छिपे हुए अन्नकणों में सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करने वाले कीटाणु बढ़ते हैं।

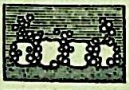

कोलगेट का अनोखा, असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों को और कीटाणुओं को निकाल देता है।

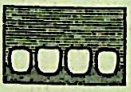

नतीजा: आपके दांत आकर्षक सफ़ेद, आपकी सांस तरोताज़ा और दंतक्षय की रोकथाम।

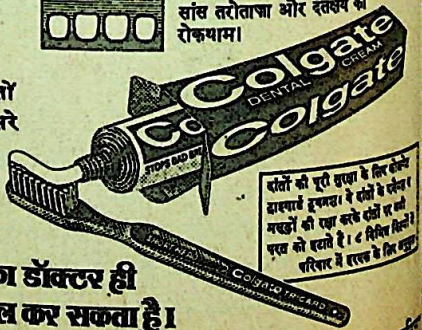

सिर्फ़ एक दांतोंका डॉक्टर ही इससे बेहतर देखभाल कर सकता है।

DC.G.64 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चे तीन से कम पैदा कीजिए, पेड़ पांच से अधिक लगाइए.

भारत की सब से बड़ी समस्या गरीबी है, और इस का बहुत बड़ा कारण है जनसंख्या का बेलगाम बढ़ते जाना.

सारे धर्म ग्रंथों में लगभग हर चौथे पृष्ठ पर यह लिखा होने पर भी कि अमुक राजा या व्यक्ति अमुक पुरुष के वीर्य से, अमुक स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ, जनता को यही भुलावा दिया जाता रहा कि संतान भगवान की देन है, कोई स्त्री बांझ है तो भगवान के कोप से, किसी के दर्जनों हैं तो भगवान की कृपा से.

जब तक आधुनिक विज्ञान और पश्चिमी चिकित्सा पद्धति भारत में नहीं आई थी, गरीबी, भुखमरी, अकाल और अनेक महामारियों के कारण जनसंख्या सीमित रहती थी. परंतु आज इन सब पर आधुनिक विज्ञान ने काबू पा लिया है और मृत्यु दर लगातार घटती जा रही है. जहां पहले 100 बच्चों में से मुश्किल से 5-10 बच पाते थे, आज 60-70 से अधिक जीवित रहते हैं. प्लेग, मलेरिया, हैजा, चेचक, तपेदिक इत्यादि बड़ी संख्या में मारने वाली बीमारियां प्रायः स्वयं मर सी गई हैं.

इस सब के कारण जनसंख्या में भीषण वृद्धि हो रही है और इस व्याधि को भगवान और भाग्य के भरोसे छोड़ना सामूहिक आत्महत्या के सिवाय से कम नहीं है. 'भगवान जिसे दो हाथ देता है, उसे खाना भी देगा,' यह सिद्धांत पहले भी सही नहीं था, आज तो बिलकुल ही गलत और भ्रामक है.

यदि आप अपनी, अपने परिवार की और देश की गरीबी रोकना चाहते हैं तो बच्चे कम पैदा कीजिए. यह बिलकुल आप के हाथ की बात है, भगवान का इस में कोई दखल नहीं है. यदि गर्भ निरोधक सही प्रकार से प्रयोग में लाए जाएं, यानी पुरुष का वीर्य स्त्री के गर्भाशय में न जाए, तो भगवान भी लाख सिर पटक कर किसी स्त्री के संतान उत्पन्न नहीं कर सकते.

आज का युग मशीनी युग है. सैकड़ों व्यक्तियों का काम एक मशीन हजार गुना गति से पूरा कर देती है. आज वही व्यक्ति शक्तिशाली व धनी हो सकता है, जिस को ऊंचे दर्जे की शिक्षा और प्रशिक्षण मिला हो. इन सब के लिए धन चाहिए. जितने अधिक बच्चे होंगे, उतना ही धन प्रति बच्चा कम होता जाएगा. नतीजा यह होगा कि जिन के बच्चे कम होंगे, वे उन्हें अच्छा, महंगा प्रशिक्षण दे सकेंगे. आप के बच्चे यदि ज्यादा हैं तो वे पीछे रह जाएंगे.

जहां जनसंख्या सीमित करनी है, वहां देश में अधिक से अधिक पेड़ उगाने की भी आवश्यकता है. क्योंकि बाढ़ें अधिक आ रही हैं, नदियों और बांधों में मिट्टी भरती जा रही है, सूखा पड़ता जा रहा है, रेगिस्तान फैलता जा रहा है. लकड़ी कम और महंगी होती जा रही है.

इसलिए आप अपने बच्चों का मोह अधिक वृक्ष उगा कर पूरा कीजिए. यह निश्चय कीजिए कि अपने जीवन में आप कम से कम पांच वृक्ष अवश्य लगा कर बड़े करेंगे. आप को इन से भी बच्चों से कम खुशी नहीं प्राप्त होगी. बच्चे बड़े हो कर विश्वासघात कर सकते हैं, आप को कष्ट पहुंचा सकते हैं, परंतु वृक्ष सदा आप के प्रति वफादार रहेंगे, वे आप को बराबर हर वर्ष अपनी शक्ति के अनुसार फलफूल देंगे, छाया देंगे, मौसम की बदलती आंखों से आप के घर की रक्षा करेंगे.

हो सकता है आप किराए के मकान या फ्लैट में रहते हों, और आप की कोई जमीन नहीं हो. यदि आप निचली मंजिल में रहते हैं तो वहां भी पेड़ लगा सकते हैं—और इस पर लागत दसबीस रुपए से अधिक नहीं आती. यदि आप केवल ऊपरी मंजिलों में रहते हैं तो वहां गमलों में पौधे लगाइए, सब्जी बोइए, बेलें चढ़ाइए और अन्यथा जहां भी मौका मिले पेड़ लगाइए. अपनी जमीन न हो तो किसी सार्वजनिक स्थान में—स्कूल, अस्पताल, बगीचा, सड़क, धर्मशाला आदि में, प्रबंधकों से अनुमति ले कर वृक्ष लगाइए. ज्योंज्यों वे बढ़ते जाएंगे, आप को एक अपूर्व संतोष, शांति और परिपूर्ति का उत्तरोत्तर अनुभव हो जाएगा.

आज ही निश्चय कीजिए :

बच्चे दो या तीन—पेड़ पांच से पचीस.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू का हमला और उस का मुकाबला आप के लिए कुछ ज़रूरी बातें

"मैंने एनासिन को बहुत गुणकारी पाया है," नर्स एंजेला फ़र्नान्डेस का बयान है।

इन्होंने यही देखा है कि एनासिन सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू की पीड़ा से जल्द आराम दिलाने के लिए काफ़ी तेज़ असर है।

सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू कैसे होते हैं?
ये छूत से फैलने वाले उस विष से होते हैं, जो इन रोगों में ग्रस्त लोगों से हवा में फैलता है। आम तौर से शरीर में उस के मुकाबले की शक्ति होती है। परन्तु ज़्यादा मेहनत या कम ख़ूराक के कारण शरीर में कमज़ोरी आ जाती है और रोग के मुकाबले की शक्ति कम हो जाती है।

रोग लक्षण क्या हैं?
बदन का दर्द, सर का भारीपन, आँखें और नाक बहना, जिस के साथ अक्सर छूटती है, बेचैनी महसूस होती है और आता है। उस के बाद खाँसी, गले की भूख की कमी और थकावट की शिकायत सकती है।

क्या इस से और तकलीफ़ें भी हो सकती हैं?
यदि लापरवाही बरती जाय तो निमोनिया साँस की ऊपरी नाली में छूत का हमला सकता है।

एनासिन कैसे सहायक होती है?
एनासिन सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू की पीड़ा आराम दिलाती है। एनासिन तेज़ असर क्योंकि इस में वह दर्द-निवारक दवा है जिस की दुनिया-भर के डॉक्टर हर रोज़ सिफ़ारिश करते हैं। एनासिन पर लाखों को विश्वास है—क्योंकि यह आप के डॉक्टर दवा की तरह दवाओं का नपा-तुला है। सर्दी-ज़ुकाम या फ़्लू के पहले लक्षण ही दिन में चार बार एनासिन लीजिए।

आप को और क्या करना चाहिए?
- उबाला हुआ पानी, सन्तरे या मौसंबी और पीने के दूसरे पदार्थ काफ़ी
- पौष्टिक आहार खाइए।
- पूरा आराम कीजिए।
- पानी में ऐंटिसेप्टिक दवा या नमक
ग़रारे कीजिए।
- कमरों को हवादार रखिए।

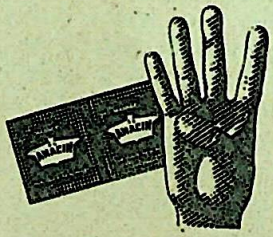

तेज़ असर और विश्वसनीय
मॅनर्स
एनासिन

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा
जेफ्री मॅनर्स के एनासिन विभाग की ओर से

A 16-4/77

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • आलोक मिश्र

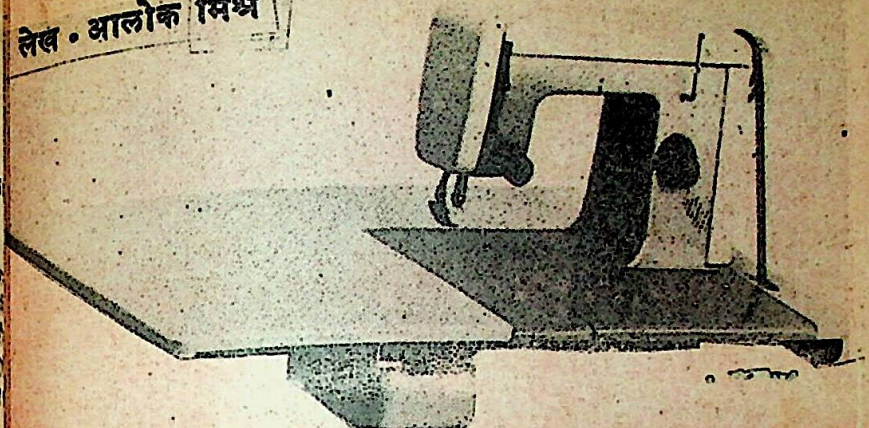

आप की सिलाई मशीन

सिलाई मशीन के अधिकांश दोष छोटेछोटे कारणों से होते हैं जिन्हें आप बिना किसी मैकेनिक की सहायता से स्वयं ही ठीक कर सकती हैं.

उपयोगिता की दृष्टि से सिलाई की मशीन मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए अब एक आवश्यकता बन चुकी है. लेकिन सिलाई के दौरान कई ऐसे मौके भी जरूर आए होंगे, जब इस मशीन ने आप को बहुत परेशान किया होगा. कभी बारबार धागा टूट जाता होगा तो कभी टांकों का आकार अपने आप घटबढ़ जाता होगा. कभी टांकों में फंदे पड़ने लगते होंगे तो कभी सुई ही धोखा दे जाती होगी. इन खीझ भरे क्षणों में आप को तुरंत किसी मैकेनिक की जरूरत महसूस हुई होगी. लेकिन वास्तव में मशीन के ये सब दोष बहुत छोटे-छोटे कारणों से होते हैं, जिन्हें आप बिना किसी मैकेनिक पर अपना समय और धन खर्च किए स्वयं ही ठीक कर सकती हैं. जरूरत सिर्फ इस बात की है कि आप अपनी मशीन के रखरखाव और उस की सामान्य गड़बड़ियों के बारे में कुछ मोटीमोटी बातें ध्यान से समझ लें.

सब से पहली बात तेल की ली जाए. यह सही है कि मशीन के हलके चलने के लिए उस में पर्याप्त तेल लगा होना चाहिए लेकिन आप को यह जान कर आश्चर्य होगा कि मशीन की बहुत सी गड़बड़ियों का कारण भी उस में गलत तेल का प्रयोग ही होता है.

मैं ने देखा है कि घर में मशीन का तेल न होने पर अकसर महिलाएं सिर में डाले जाने वाले तेल को मशीन के पुर्जों में लगा कर काम चला लेती हैं. यह व्यवस्था उस समय तो काम दे जाती है लेकिन यहीं से आगे के लिए समस्याओं का मार्ग खुल जाता है. मशीन में केवल वही तेल डालिए जो विशेष तौर पर उस के लिए बनाया गया है, दूसरे तेलों का प्रयोग यथासंभव मत कीजिए, विशेषकर जाड़ों के दिनों में नारियल का तेल तो कभी भी मशीन में नहीं डालना चाहिए.

पूरी मशीन पर अंधाधुंध तेल लेपने की कोई आवश्यकता नहीं. आवश्यकता से अधिक मात्रा में डाले गए तेल से मशीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

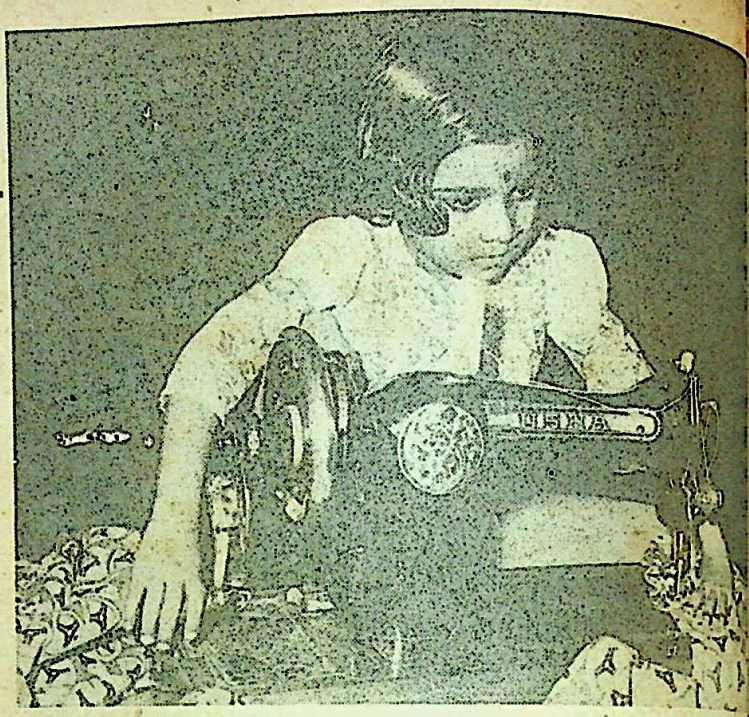

आप की सिलाई मशीन एक कीमती उपकरण है. इसे बच्चों के हाथ का खिलौना बनने से बचाइए.

की कार्यक्षमता में तो कोई अंतर नहीं आएगा. हां, इस से सिलाई करते समय कपड़े पर धब्बे जरूर पड़ जाएंगे.

मशीन में तेल डालने के लिए छोटे-छोटे छेद बने होते हैं, तेल सिर्फ उन्हीं में डालना चाहिए. इस के अलावा मशीन के निचले भाग में सिर्फ उन्हीं पुर्जों पर हलका तेल लगाना चाहिए जो मशीन के चलने पर गति करते हैं. यदि आप की मशीन लगभग रोज ही प्रयोग में आती है तो सप्ताह में दो बार तेल डालना काफी होगा.

साधारणतया सिलाई मशीन में जितनी भी गड़बड़ियां होती हैं उन में सब से पहली गड़बड़ी मशीन के भारी चलने की होती है. इस के तीन कारण हो सकते हैं. एक तो तेल की कमी होने पर आप की मशीन भारी चलेगी और उस की आवाज में परिवर्तन आ जाएगा.

दूसरे, यदि आप ने पहले कभी किसी दूसरे प्रकार के तेल का प्रयोग मशीन में किया होगा तो यह भी हो सकता है हवा में उड़ने वाली गर्द और मि इस तेल के साथ मिल कर एक प्र पेस्ट सा बना लिया हो और वह पुर्जों की स्वतंत्र गति में बाधा उत्प

तीसरा कारण यह हो सक 'शटल रेस' में पुराने धागों के टू कपड़ों के रेशे जमा हो गए हों. इस भी मशीन भारी चलेगी और 'शट 'शटल रेस' के बीच धागा बारबा जाएगा.

इन तीनों दोषों का निवारण की सफाई से हो सकता है. सफाई बाद थोड़ा सा सिलाई की मशीन डाल दीजिए. मशीन बिलकुल हल्की लगेगी.

बारबार धागा टूटना

कई बार ऐसा होता है कि चार टांकों के बाद धागा टूट इस के भी कई कारण हो सकते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप सब से पहले धागे की ओर ध्यान दीजिए. यदि धागे में गांठें होंगी तो यह बारबार टूटेगा. ये गांठें बहुत महीन होती हैं और काफी गौर से देखने पर ही नजर आती हैं. इस प्रकार के धागे से सुई भी खराब हो सकती है. इसलिए सदैव अच्छे धागों का ही प्रयोग करें. यदि धागा गांठ-विहीन हो और फिर भी बारबार टूट रहा हो तो दूसरे कारणों की ओर ध्यान दीजिए.

अगर ऊपरी धागा टूट रहा हो तो इस के चार कारण हो सकते हैं. 1. मशीन में धागा ठीक रूप से डाला न गया हो या बीच में कोई स्थान खाली छूट गया हो. 2. धागे को देखते हुए सुई का छेद काफी छोटा हो. 3. सुई टेढ़ी हो या 'शटल प्लेट', 'प्रैसर फुट' से रगड़ खा रही हो. 4. धागे का तनाव बहुत अधिक हो या रील अपने स्थान पर स्वतंत्रता से घूम न पा रही हो.

ये सभी दोष बहुत साधारण हैं. रील से ले कर सुई तक धागे के मार्ग को देख जाइए. यदि कोई स्थान छूट गया हो तो उसे भी शामिल कर लीजिए. सुई जिस 'स्क्रू' से संबद्ध होती है उसे "क्लैंप स्क्रू' कहते हैं. इस के माध्यम से सुई की दिशा सुधारी जा सकती है.

इसी तरह निचले धागे के टूटने के भी चार कारण संभव हैं. 1. 'बौबिन' अपने स्थान पर ठीक से न बैठी हो. 2. बौबिन में धूल के कण या पुराने धागों के रेशे मौजूद हों. 3. बौबिन में आवश्यकता से अधिक मात्रा में धागा भर दिया गया हो या धागा किसी ओर अधिक लिपटा हुआ हो और किसी ओर कम. 4. सुई टेढ़ी हो.

इन दोषों को दूर करना भी कोई मुश्किल नहीं है. सब से पहले सुई की हालत देखिए, सुई के बिलकुल ठीक होने की दशा में नीचे से बौबिन निकाल लीजिए और उस के 'केस' की अच्छी तरह से साफ कर लीजिए. अगर बौबिन में धागे की मात्रा बहुत अधिक हो तो कुछ धागा कम कर लीजिए. बौबिन को कभी हाथ से मत भरिए. मशीन में लगे पहिए के बाईं ओर एक और छोटा सा पहिया लगा होता है.

कपड़ा सीने वाली सिलाई मशीन से यदि आप चमड़ा सिलेंगी तो आप की मशीन खराब हो सकती है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह व्यवस्था बौबिन में सही प्रकार से धागा भरने के लिए ही की गई है. इस का लाभ उठाइए.

टांके का बराबर न होना

टांकों के बराबर न होने के मुख्य कारण दो ही हैं. या तो प्रैशर फुट (जो सुई के पास कपड़े को दबा कर रखता है) का दबाव सही नहीं होगा या फीड डाग (सुई के पास स्थित दांते जो कपड़े को आगे बढ़ाने का काम करते हैं) के अंदर कुछ गंदगी होगी जिस के कारण दांते पूरी तरह से कपड़े की आगे बढ़ने की गति पर नियंत्रण रख पाने में असमर्थ होंगे. इन दो बातों के साथसाथ ऊपरी तथा निचले धागों के तनाव का भी ध्यान रखना आवश्यक है.

फीड डाग की गंदगी किसी पुराने टूथ-ब्रश से साफ की जा सकती है. ऊपर का धागा सुई में आने से पहले दो छोटी गोल प्लेटों के बीच से हो कर आता है. ऊपर के धागे का तनाव कई बार इन दोनों प्लेटों के बीच जमा गर्द या जंग के कारण भी बढ़ जाता है. इन दोनों प्लेटों के बीच की दूरी एक स्क्रू द्वारा घटाई या बढ़ाई जा सकती है. ये प्लेटें जितना ही अधिक निकट होंगी, धागे का तनाव उतना ही अधिक होगा. अतः ऊपरी धागे का तनाव इस स्क्रू की सहायता से घटायाबढ़ाया जा सकता है.

नीचे के धागे का तनाव शटल में लगे एक छोटे स्क्रू की सहायता से बदला जा सकता है. यदि तनाव बढ़ाना हो तो किसी छोटे पेचकस की सहायता से उस पेच को बाएं से दाएं घुमाना चाहिए. सामान्यतः नीचे के धागे के तनाव में परिवर्तन की आवश्यकता कढ़ाई कार्यों में ही पड़ती है, शेष सिलाइयों में ऊपरी धागे का तनाव ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

सुई टूटना

सिलाई मशीन के साधारण दोषों में अंतिम है—सुई टूटना. सुई तभी टूटती है जब या तो वह अपने स्थान पर बैठी नहीं होती है या मशीन पर रखा कपड़ा उस के अनुकूल नहीं होता. अतिरिक्त घिसी हुई या मुड़ी सुई भी टूट जाती है.

मशीन की सुई को टूटने से बचाने के लिए सर्वप्रथम इस बात पर ध्यान दें कि सुई क्लैंप के भीतरी भाग तक पहुंच दी जाए और फिर क्लैंप स्क्रू पूरी तरह कस दिया जाए. यदि सुई थोड़ी भी बाहर रह गई तो कुछ देर बाद निश्चित टूट जाएगी. इस के अलावा कपड़े की मोटाई का भी सुई के साथ सीधा संबंध है.

इन सब बातों के साथसाथ कुछ अन्य छोटी बातों का भी ध्यान रखा जाना चाहिए.

- मशीन का पहिया सदा अपनी ओर घुमाएं और पूरी सिलाई मशीन को एक रफ्तार पर करें. कभी तेज कभी धीमी रफ्तार से मशीन चलाने पर टांकों पर असर पड़ेगा.
- मशीन के साथ मिली निर्देशिका में कपड़े की किस्म, सुई और मशीन में प्रयुक्त धागे के विषय में जानकारी प्राप्त कर लीजिए.
- तेल लगाने के तुरंत बाद सिलाई प्रारंभ न कीजिए. शुरू के आठदस टांके किसी गंदे कपड़े पर ले लीजिए, ताकि असली कपड़े पर तेल के धब्बे न पड़ें.
- सीते समय कपड़े को खींचिए नहीं इस से सुई के टूटने का भी संभावना है.
- मशीन में मोटी या महीन सिलाई के लिए एक 'रेगुलेटर' पहिए के पास लगा होता है जिस पर 0, 1, 2, 3, 4 अंक लिखे होते हैं. सीते समय उसे हमेशा को 0 पर कभी मत रखिए.
- यदि नीचे का धागा ऊपर के धागे की तुलना में कुछ महीन होगा तो टांके बहुत अच्छे आएंगे.

यदि मशीन से काफी समय तक काम न लेना है तो उसे कपड़े में लपेट कर रख दीजिए. संभव हो तो महीने में एक बार हलका तेल जरूर लगा दीजिए.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मँहगी मरम्मतों का ख़र्च बचाइए

नियमित रूप से तिहरे असर वाला श्री-इन-वन आयल इस्तेमाल कीजिए

3 IN

श्री-इन-वन* आयल

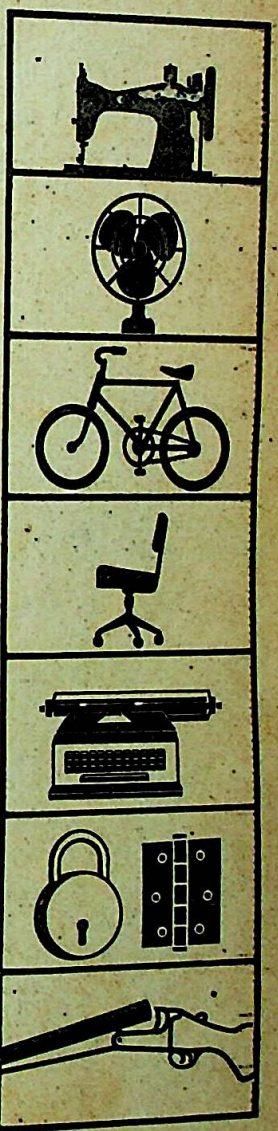

सिलाई की मशीनों, साइकिलों, पंखों, तालों, कब्जों और दूसरी कई घरेलू चीज़ों को नियमित रूप से तेल देने की ज़रूरत होती है। नहीं तो वे जंग से ख़राब हो जाती हैं, या मैल जम जाने से ठीक तरह से काम नहीं करतीं।

सभी तेल अच्छी तरह से काम नहीं करते। श्री-इन-वन आयल बहुत बढ़िया तेल है, क्योंकि यह तीन तरह से असर करता है—

- चिकनाई —कल-पुर्ज़े ठीक तरह से काम करते रहते हैं
- सफ़ाई —ख़ास तौर से पतला होने के कारण यह पुर्ज़ों में अच्छी तरह फैलता है और धूल या मैल से उन्हें जाम नहीं होने देता
- ज़ंग से बचाव —केवल इसी तेल में एक विशेष जंग-रोधक पदार्थ है

अपनी क़ीमती घरेलू चीज़ों को बचाने के लिए नियमित रूप से सही तेल दीजिए। श्री-इन-वन आयल।

श्री-इन-वन आयल

कल-पुर्ज़ों का बेजोड़ रक्षक

* Licenced user of TM : Geoffrey Manners & Co. Ltd.

GM.T/IA/75

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

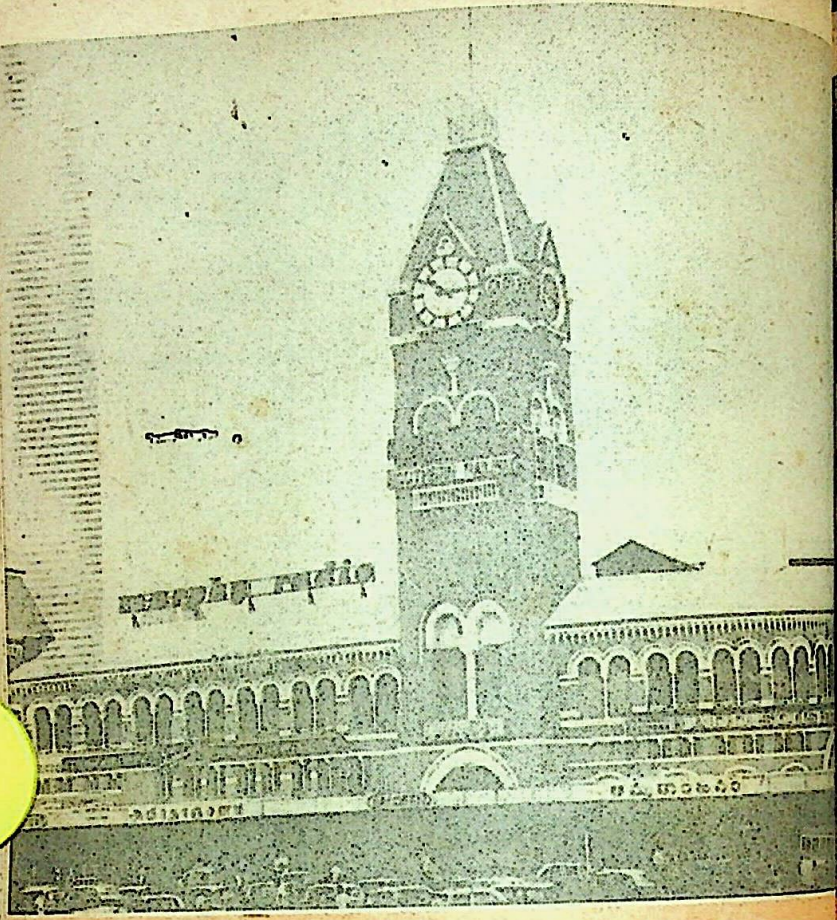

मद्रास सेंट्रल स्टेशन : दक्षिण यात्रा का केंद्र द्वार

लेख • लक्ष्मीकांत 'सरस'

मद्रास

धर्मभीरू लोगों की महानगरी पर फिर भी आधुनिकता से अछूती नहीं है.

देश के चार महानगरों में एक
भी है. लगभग 28 लाख की
वाले इस महानगर को मद्रा
नाम से भी जाना जाता है. यह
का एक दर्शनीय, धार्मिक और
नगर है. यहां प्रति वर्ष हजारों
में पर्यटक, तीर्थयात्री आते हैं. वि
यात्रा पर आने वाले पर्यटक अव
यात्रियों का सामना किसी न
में मद्रास से पड़ता ही है. आजकल
से उत्तर की ओर और उत्तर
की ओर कुछ रेलगाड़ियां मद्रा
के स्थान पर मद्रास बीच
आनेजाने लगी हैं फिर भी मद्रा
ही दक्षिण रेलवे का मुख्य स्टेशन
तंजौर, पांडिचेरी, चिदंबरम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

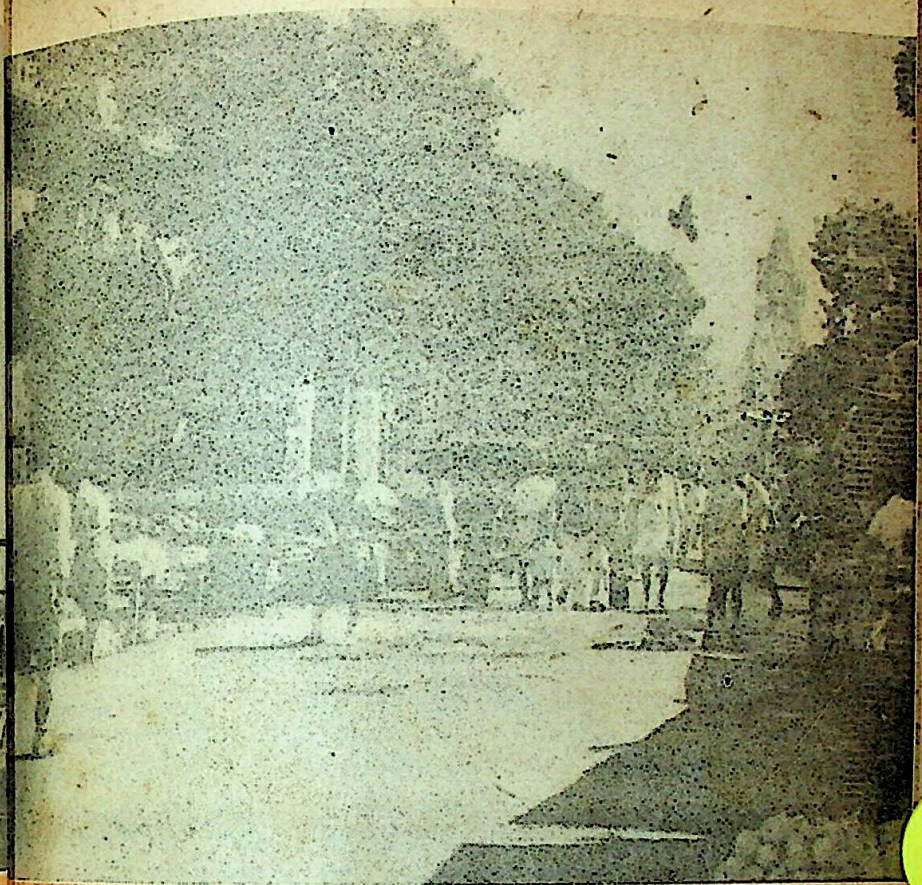

मद्रास का एक और महत्त्वपूर्ण शापिंग सेंटर—मूर मार्केट.

श्रीरंगम, रामेश्वरम, कन्याकुमारी आदि स्थलों की यात्रा करने के लिए अगर रेल से जाना हो तो इस के लिए मद्रास एग्मोर स्टेशन है, जहां से गाड़ियां जाती हैं. वैसे रेल के अलावा बस, टैक्सी से भी पूरे दक्षिण की यात्रा की जा सकती है. इस प्रकार तमिलनाडु की राजधानी मद्रास में तीन प्रमुख रेलवे स्टेशन हैं. देश का संभवतः तमिलनाडु पहला राज्य है, जिस के प्रत्येक गांव में बिजली है और प्रायः सभी गांव सड़कों से जुड़े हुए हैं. राज्य के किसी भी भाग में जाने के लिए पल्लवा ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन की बसों की सुविधा है.

चाहे दिल्ली, कलकत्ता व बंबई हो अथवा हैदराबाद, लखनऊ, वाराणसी,

मेरीना बीच पर स्थित तमिल भाषा के प्रसिद्ध कवि सुब्रह्मण्यम भारती की प्रतिमा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

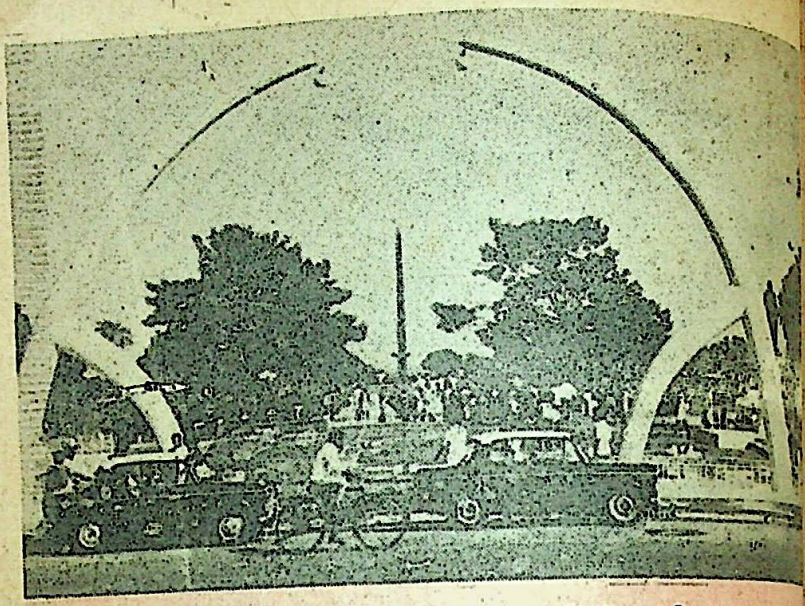

मद्रास मेरीना बीच पर अन्नादुराई की समाधि

कानपुर, मथुरा, नागपुर, झांसी और आगरा हो, कहने का मतलब यह कि देश के जितने भी नगर रेलवे स्टेशनों से प्रमुख रूप से जुड़े हैं और पर्यटकों के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं, वहां के कुली तथा रिक्शा, टैक्सी, आटो चालकों की मानसिकता एक सी ही होती है. किसी भी नए यात्री को देख कर उस से अधिक कमाने की मानसिकता वाले ये लोग भरभरा से उठते हैं. नए यात्रियों के नएपन का जितना नाजायज लाभ ये लोग उठाते हैं, उतना अन्य कोई नहीं.

मद्रास एक अहिंदी भाषाभाषी प्रदेश की राजधानी होने के साथसाथ हिंदी विरोध का गढ़ भी रहा है. इस वजह से हर हिंदी भाषाभाषी के मन में भाषा को ले कर एक अजीब सी हिचक सी रहती है. राजनीतिक भाषा विरोध को यहां के चालक तबके के लोग अच्छी तरह समझते हैं और हिंदी जानते हुए भी अर्थ के लोभ में अपनी खनकती हुई भाषा का उपयोग अधिक करते हैं. सरकार और रेल विभाग द्वारा कुली और चालकों की दर निर्धारित है, फिर भी इन लोगों के पास अधिक किराया लेने के [illegible] बहाने और कारण होते हैं. तमिलनाडु इन लोगों द्वारा तकरारपूर्ण नाटक [illegible] रोज ही मद्रास सेंट्रल, एगमोर, [illegible] बीच स्टेशनों पर देखा जा सकता है.

मद्रास महानगर 130 वर्ग कि[illegible] मीटर के क्षेत्र में बसा हुआ है. 1971 [illegible] जनगणना के अनुसार इस महानगर [illegible] आबादी 24,70,288 थी. बंगाल की [illegible] के किनारे बसा हुआ मद्रास महान[illegible] प्राचीन अधिक, आधुनिक बहुत कम. [illegible] नवंबर, दिसंबर और मार्च में यहां [illegible] होती है. यहां औसतन प्रति वर्ष [illegible] इंच वर्षा होती है. इस महानगर [illegible] अधिकतम तापमान 37° सेंटीग्रेड [illegible] न्यूनतम 21.1° सेंटीग्रेड रहता है. [illegible] से मध्य जनवरी तक यहां हलकी ठंड [illegible] रहती है. ठंड के नाम पर इतनी ठंड [illegible] नहीं पड़ती कि गरम कपड़ों का [illegible] अनिवार्य हो जाए. हां, मद्रास से [illegible] के क्षेत्रों में जाने वालों के लिए थोड़े [illegible] गरम कपड़ों की आवश्यकता इस [illegible] में अवश्य पड़ती है.

मद्रास एक ऐसा महानगर है [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गरीब व्यक्ति आज भी 25 पैसे में अपना पेट भर लेता है. अमूमन अधिकांश होटलों में एकडेढ़ रुपए में एक आदमी के लिए भरपूर भोजन मिल जाता है, जिसे यहां के लोग सांपड़ कहते हैं. इतना होने के बाद भी कल्याण मंडपों अथवा होटलों के कमरों से डिब्बों में फेंके गए जूठे चावल के दानों को बटोर कर खाने वालों की जितनी संख्या इस महानगर में मिलेगी, उतनी अन्यत्र नहीं.

अधिकांश तमिलों का महानगर मद्रास राजनीति और धर्म के अधिक निकट है. समाचारपत्रों को लोग खरीद कर पढ़ते हैं और राजनीति पर बहस करते हैं. अन्य महानगरों की अपेक्षा इस महानगर में चोरी, गुंडागर्दी, बलात्कार जैसी घटनाएं कम ही घटती हैं.

किसी भी अनजान अथवा नए स्थान में आने वाले के लिए सब से पहली समस्या आवास की होती है. मद्रास एक ऐसा महानगर है, जहां किसी के लिए भी आवास की समस्या उतनी कठिन नहीं, जितनी कि अन्य महानगरों में होती है. अगर आप तीन से छः माह तक मकान का अग्रिम किराया देने में समर्थ हैं तो आप को मकान के लिए भटकने की आवश्यकता नहीं है. दोतीन दिनों में ही आप की इस समस्या का समाधान हो जाएगा.

अगर आप यात्रा पर निकले हैं और मद्रास में दोतीन दिनों तक रुकना चाहते हैं तो आप को होटलों, धर्मशालाओं में आसानी से कमरे मिल जाएंगे. मद्रास सेंट्रल स्टेशन हो अथवा एग्मोर स्टेशन, स्टेशन से बाहर निकलते ही आप को उच्च श्रेणी से ले कर मध्यम श्रेणी तक के होटल दिखाई देंगे. मद्रास सेंट्रल स्टेशन के बगल से बालटैक्स रोड जाती है, जिस के किनारे कतार में ऐसे छोटेबड़े होटल हैं, जिन में पांच रुपए प्रतिदिन से ले कर 25 रुपए प्रतिदिन तक एक बिस्तर वाले कमरे मिल जाएंगे. श्रीनिवास भवन, होटल सोरनम इंटरनेशनल, सेंट्रल लाज आदि होटल मध्यम श्रेणी के यात्रियों के लिए सुविधा और आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं.

इस महानगर में पांच सितारे और तीन सितारे वाले होटलों की भी कमी

तमिलनाडु सरकार का हस्तकला एंपोरियम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

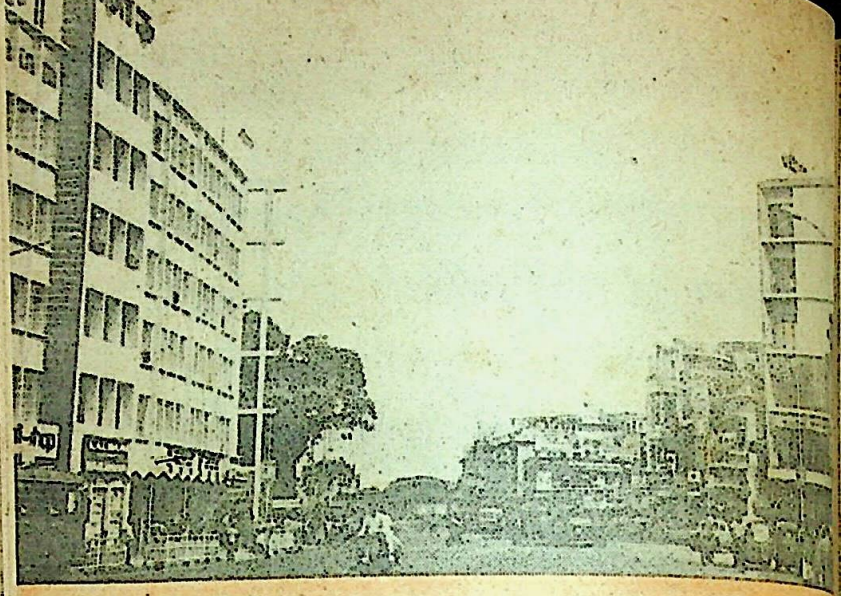

मद्रास की सब से व्यस्त और खूबसूरत माउंट रोड.

नहीं है. ताज कोरोमंडल, होटल एटलांटिक, होटल कैनमेरा, होटल अशोका आदि दरजनों ऐसे होटल हैं, जिन में 35 रुपए से ले कर 225 रुपए प्रति दिन के हिसाब से कमरे उपलब्ध हैं.

दक्षिण की यात्रा पर विशेषकर मध्यम श्रेणी के लोग ही देश के कोनेकोने से तीर्थयात्रा के मंतव्य से आते हैं. ऐसे यात्रियों के लिए मध्यम श्रेणी के होटलों की उपयोगिता अधिक होती है. मद्रास सेंट्रल स्टेशन से लगभग डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर पार्क टाउन क्षेत्र में राजस्थानियों तथा गैर तमिल भाषाभाषियों का महल्ला है, जिसे साहूकार पेट कहते हैं. इस क्षेत्र में भी होटलों के अलावा दरजनों ऐसी धर्मशालाएं हैं, जिन में आसानी से कमरे मिल जाते हैं. देश के राजस्थानी सेठों में यह बात विशेष रूप से पाई जाती है कि वे अपनी कमाई का एक खास भाग मंदिर, धर्मशाला, स्कूल आदि का निर्माण करने में लगाते हैं. सिंधी, पंजाबी, मारवाड़ी कहे जाने वाले इस क्षेत्र के लोग आपसी सौहार्द के बल पर अपनी संस्कृति और रस्मोरिवाज को कायम रखे हुए हैं, इन्हीं लोगों के कारण सेठ शब्द तमिलों में इतना प्रचलित गया है कि हर हिंदी अथवा गैरतमि भाषाभाषी को यहां की अधिकांश जन सेठ कह कर संबोधित करती है.

मद्रास के साहूकार पेट का नि निराला रंगढंग है. आदियप्पा न स्ट्रीट, गोडाउन स्ट्रीट, गोविंदप्पा न स्ट्रीट, मिंट स्ट्रीट, एलिफेंट गेट, नेत सुभाषचंद्र बोस रोड, अन्नापिल्ले स्ट्री यह सारा का सारा क्षेत्र साहूकार पे शामिल है. चूनरी से ले कर नथनी पापड़ से ले कर रसगुल्ला तक, क ले कर पान तक, हीरे से ले कर तक सब कुछ इस साहूकार पेट में मि है. ताजे फुलके से ले कर कुल्फी सब का जायका इडलीडोसा वाले नगर के इस इलाके में आप ले स हैं.

ठहरने के लिए इस साहूकार पे धर्मशालाओं की भी कमी नहीं है अग्रवाल सभा, श्री माहेश्वरी सभा, सीताराम कडेल धर्मशाला, जैन सिंधी धर्मशाला ऐसे हैं, जिन में जैन धर्मशाला की छोड़ कर बिना किसी जातीय भेदभाव के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यात्री ठहर सकता है. माहेश्वरी और जैन भवन में, जो मद्रास के एकांबरेश्वर अग्रहारम में हैं. सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं, यात्रियों से व्यवस्था आदि के लिए 8 रुपए प्रति कमरा लिया जाता है. सीता भवन, कडेल धर्मशाला, सिंधी धर्मशाला आदि में बिजली और पानी का शुल्क लिया जाता है. अपवाद के रूप में मद्रास की सब से व्यस्त धर्मशाला है श्री अग्रवाल धर्मशाला, जिस में ठहरने वालों को किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं देना पड़ता. श्री अग्रवाल भवन द्वारा निःशुल्क वाचनालय और पुस्तकालय भी चलाया जाता है.

मद्रास का यह एकमात्र भवन है, जिस के पुस्तकालय में हिंदी की हजारों पुस्तकें हैं, जिस का लाभ प्रति वर्ष देश के विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले शोध छात्र भी उठाते हैं. यह भवन 28, आदियप्पा नायक स्ट्रीट, मद्रास-1 में स्थित है. इस भवन में प्रत्येक यात्री को तीन दिन से पांच दिनों तक निःशुल्क ठहरने के लिए सभी सुविधाओं से युक्त कमरे दिए जाते हैं.

दर्शनीय स्थल

मद्रास की तीन चौथाई जनता गंदी बस्तियों में रहती है. धार्मिक धर्मकांड और रस्मोरिवाज तमिलों के संस्कार में शामिल हैं, इसलिए इस महानगर की गलियों और फुटपाथों पर भी आप को मंदिरों के दर्शन हो जाएंगे. वैसे मद्रास में धार्मिक और आधुनिक दृष्टि से देखने लायक बहुत कुछ है. मद्रास महानगर को खूबसूरती का मनमोहक जामा पहनाने वाला विश्व का दूसरा बीच मेरीना बीच है. यह बीच मद्रास फोर्ट से सेंट टामस तक लगभग पांच किलोमीटर की लंबाई में फैला हुआ है. इसी सड़क के दूसरे किनारे पर मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास फोर्ट, आकाशवाणी आदि की ऐतिहासिक और आधुनिक इमारतों की एक लंबी कतार है. एक कतार पर नए भगवान बनने और व्यक्तिपूजा की प्रक्रिया से

पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र—वल्लुवरकोट्टम.

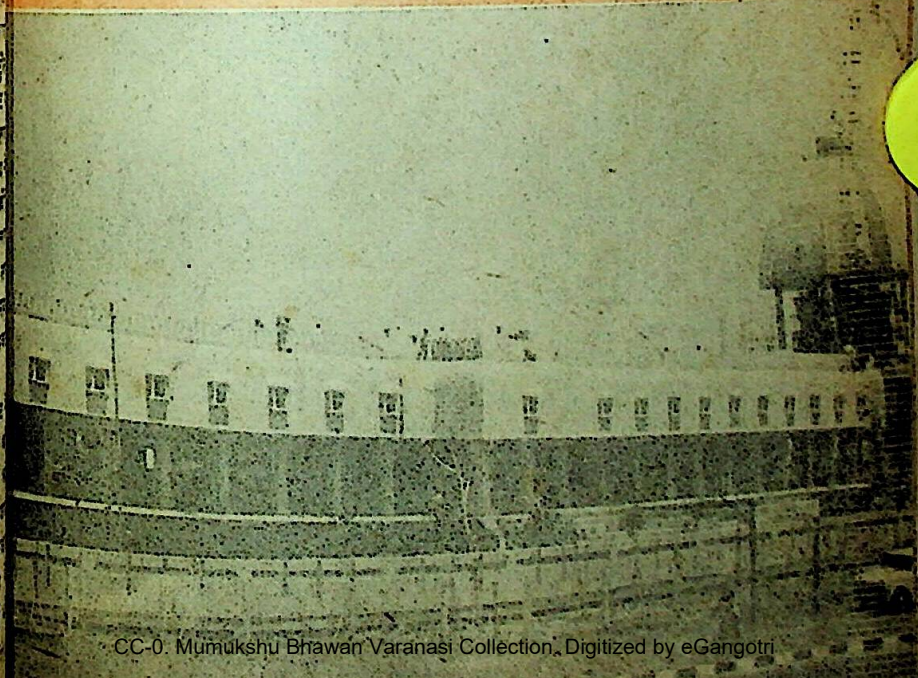

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुजरते या गुजरे हुए द्रमुक, द्रक और अन्नाद्रमुक के लोगों द्वारा स्थापित दर्जनों नेताओं की प्रतिमाएं हैं तो दूसरे किनारे पर कई क्रीड़ा केंद्र हैं. नवनिर्मित लाइट हाउस ने इस बीच को और अधिक दर्शनीय बना दिया है.

शाम ढलते ही इस बीच पर हजारों की संख्या में हवाखोरी करने यहां की जनता एकत्र हो जाती है और कुछ देर के लिए तनावों से मुक्ति पाती है.

इस बीच पर द्रमुक सरकार के प्रथम मुख्य मंत्री सी. एन. अन्नादुराई की समाधि है. लाखों की राशि से निर्मित इस संगमरमरी समाधि को देखने के लिए प्रतिदिन दूरदराज से हजारों यात्री आते हैं और तमिल गृहिणियां समाधि पर मन्नतें मांगती हैं, फूल चढ़ाती हैं.

अंगरेजों द्वारा निर्मित चार मैमोरियल और सेंट जार्ज किला तथा सेंट जार्ज फोर्ट म्यूजियम साउथ बीच रोड पर स्थित हैं. इसी किले में तमिलनाडु सरकार का संसद भवन और सचिवालय है. रिजर्व बैंक आफ इंडिया की भव्य इमारत, मद्रास बंदरगाह, मद्रास हाई कोर्ट सभी इसी बीच रोड के किनारे स्थित हैं. फोर्ट म्यूजियम में मद्रास का चित्रात्मक इतिहास, तोपें, गोले, बंदूकें, तलवारें, अंगरेज हुक्मरानों की पोशाकें, खाने के बरतन तथा दुर्लभ पांडुलिपियां संग्रहीत हैं.

अन्य दर्शनीय स्थलों में मद्रास सेंट्रल का चिड़ियाघर, एग्मोर का संग्रहालय और कला संग्रहालय, गिंडी का सर्प उद्यान, अडयार की थियोसोफिकल सोसाइटी, सेंट टामस चर्च, राज भवन के क्षेत्र में स्थित चिड़ियाघर और माउंट रोड आदि प्रमुख हैं. मद्रास का सर्प उद्यान गिंडी के बाल क्रीड़ा केंद्र में स्थित है. विभिन्न नस्लों और किस्मों के पाले गए सैकड़ों सांपों का यह उद्यान यात्रियों में आकर्षण का केंद्र सा बन गया है.

मद्रास तमिलनाडु के हस्तशिल्प, हैंडलूम के कपड़ों, सिल्क की साड़ियों आदि का केंद्र है. नकली हीरे और हीरे के गहनों के लिए मद्रास विशेष रू प्रसिद्ध है. न केवल देश में बल्कि वि में भी नकली हीरों का करोड़ों रुप व्यापार प्रति वर्ष होता है. पर्यटन रियम, खादी भवन, राधा सिल्क आदि के अतिरिक्त माउंट रोड सैकड़ों ऐसे आधुनिक एंपोरियम हैं यात्रियों के लिए हर आवश्यक मिल जाती है. मद्रास की सब से और खूबसूरत रोड माउंट रोड को का मुख्य केंद्र माना जाता है. के प्रायः सभी आधुनिकतम रोड पर स्थित हैं.

शापिंग सेंटर

मद्रास का दूसरा और शापिंग सेंटर है—मूर मार्केट, जहां पुराने सभी तरह के सामान खरीद सकते हैं. चौकोर अहाते में बनी यह मूर मार्केट मद्रास नगर निगम मद्रास सेंट्रल स्टेशन के बीच में स्थि अंगरेजों के शासनकाल की यह अपनी सानी नहीं रखती. मद्रास के बाजार में, जो मद्रास बीच स्टेशन बंदरगाह के क्षेत्र में स्थित है, सामान की अधिकता देखने को मिलत

जैसा कहा जा चुका है, मद्रास भीरू लोगों की महानगरी है. यहां सुबह मंत्रों के साथ शुरू होती है शाम मंदिर की आरती के साथ में परिणत होती है. मद्रास में कपाल तथा पार्थसारथी, चेन्ना मालीश्वर, वंडा आलीश्वर नामक मंदिरों में आदि के लिए टिकट व्यवस्था है. शताब्दी का छोटा सा गांवनुमा बंदरगाह आज दक्षिण का औद्यो महानगर ही नहीं दक्षिणी संस्कृति, आदि का केंद्र भी है. मद्रास का क्षेत्र आजकल आधुनिक मंडप के प्रसिद्ध है, कामराज, राजाजी, की स्मृति में बनाए गए मंडपों में और पुरातन कला दोनों का दर्शन है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्टैंडर्ड

कहानी · साधना चतुर्वेदी

स्टैंडर्ड बनाने के चक्कर में सविता घर में पार्टियां देती और नवीन बेबस देखता रह जाता. लेकिन अंत में सविता को ही बेबस होना पड़ा...

"देखो, नवीन, मैं अभी से कहे देती हूं कि मैं किसी भी सूरत में राजू के जन्मदिन की पार्टी में कोई कमी नहीं रहने दे सकती."

"मैं यह कब कहता हूं कि कोई कमी रखी जाए? लेकिन हमें अपना बजट भी तो देख कर चलना चाहिए. तुम्हीं देखो न, इस महीने कितना खर्च एक साथ आ गया है. फिर क्या मैं राजू को प्यार नहीं करता या उसे खुश देख कर मुझे खुशी नहीं होती? खैर, तुम स्वयं समझदार हो,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोचसमझ कर घर चलाओ. मैं तुम्हारे बीच में कुछ नहीं बोलूंगा."

"अरे, तुम भी कमाल करते हो. इतनी सी बात पर इतना लंबा लेक्चर दे डाला. अच्छा, तुम्हीं बताओ, आज यदि राजू के मन में कुछ कमी देख कर कोई बात आए या कालोनी के दूसरे बच्चों को देख कर अभी से हीन भावना आ जाए और वह अपने को दूसरे बच्चों से नीचा समझने लगे तो. . .नवीन, हम ऐसे सर्किल में रहते हैं कि अगर इन सब चीजों में कमी करनी शुरू कर दी तो हमारी क्या इज्जत रह जाएगी?"

"क्या इज्जत बनाने के लिए ये ही सहारे जरूरी हैं? क्या रखा है इन बेकार की चीजों में?"

"हां...हां अभी परसों ही साधना के लड़के का जन्मदिन था. क्या शानदार पार्टी दी थी और सब बच्चों को गिफ्ट अलग दी. अच्छा, मैं चलती हूं. केक लेने बाजार जाना है, फिर और भी इंतजाम करने होंगे. राजू के लिए प्रेजेंट लाना है, एक नया सूट भी. अई, बातों में बहुत देर हो गई. अच्छा, मैं चली. . ."

सविता तो चली गई पर नवीन सोचता रहा, वह कैसे ज्यादा कमा सकता है जिस से सविता और राजू की हर इच्छा पूरी कर सके. वह एक फर्म का बहुत बड़ा आफिसर है, फिर भी. . .

कुछ देर बाद सविता आई. हाथों में इतना कुछ लिए थी कि राजू और कुछ देर के लिए नवीन भी उस में रम गया. घर की सजावट शुरू हुई, फिर खुशबूदार पकवान बने. मेज पर जहाज के आकार का केक सजाया गया. धीरेधीरे बच्चों की भीड़ लगने लगी. पार्टी ने जोर पकड़ लिया. सुंदर और नए कपड़ों में सजा राजू किसी राजकुमार से कम नहीं लग रहा था और सविता तो उसे देख कर उस पर बलिहारी हुई जा रही थी.

पार्टी समाप्त हुई और नवीन खयालों में खो गया. हां, खुशी तो उसे भी मिलती थी सभी को खुश देख कर. लेकिन सब में आखिर वास्तविकता छिपी उसे इन पार्टियों में बनावटीपन लगती थी, जो उस की बर्दाश्त थी.

इतने में ही सविता ने उस अपनी ओर आकृष्ट किया, "अभी तक बैठेबैठे क्या सोच कितनी अच्छी पार्टी रही न! बहुत खुश है. अच्छा, आज चेहरा देखा? भीतर ही भीतर थी. कितनी बेकार मेंटेनेंस है यहां, कोई भी काम ढंग से और पार्टियों के मामले में तो कंजूस. . ."

एक ओर राजू की सविता को झूठा नकाब फेंकने को मजबूर कर तो दूसरी ओर स्टेंडर्ड पांवों में मनमन भर बेड़ियां जकड़े हुए था.

अब नवीन और अधिक सुन वह कह उठा, "क्यों हमेशा तुम दूसरों की तुलना करती हो? बेकार की बातों को."

पर सविता पर इस का नहीं पड़ा. दोतीन दिन बाद ही जैसेसविता को कुछ याद आया. से बोली, "अच्छा, नवीन, बार अपनी शादी की सालगिरह मनाई जाए?"

नवीन को जैसे एक जोरदार लगा हो. वह उठ कर बैठ गया.

"क्या कहा, इसी महीने अपनी की सालगिरह भी है? तब तो छुट्टी. क्या बुढ़ापे तक ऐसे ही मनाती रहोगी?"

"वाह! खूब कही, अभी से बूढ़े होने लगे. हमेशा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवीन सविता को एक कोने में ले गया. अपनी आर्थिक स्थिति समझाते हुए बोला, "देखो, मेरा बैग बिलकुल खाली है. तुम्हारे पास डाक्टर की फीस और दवाई के पैसे तो होंगे न!"

है और तुम सोचते हो, इन सब में भी कटौती की जाए. आखिर वर्ष में एक ही दिन तो आता है..."

नवीन ने उस की बात काटते हुए कहा, "और यह एक दिन पूरे वर्ष की बचत को उड़ा देता है, समझीं? फिर तुम पार्टी का आयोजन करोगी और फिर साड़ी शर्ट... नहीं, नहीं, अब मुझ से और ज्यादा यह सब नहीं देखा जाता. अरे, आराम से रहो, जरूरत की चीजों पर खर्च के लिए मैं मना नहीं करता. लेकिन क्या रखा है इन पार्टीवार्टियों में?"

"हां... हां, अगर मैं पार्टी नहीं दूंगी तो सभी न जाने क्या सोचने लगेंगे मन में? आखिर इतनी औरतों के बीच में बैठना पड़ता है. फिर उन के सामने मैं अपनी बेइज्जती बर्दाश्त नहीं कर सकती."

और फिर सविता बेमन से घर के काम करने लगी. नवीन को लगा कि अगर ऐसे ही सविता खर्च करती रही तो घर की स्थिति डांवांडोल हुए बिना नहीं रहेगी.

सविता थी भी जिद्दी और उस के सामने नवीन की एक न चली. सविता ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी शादी की वर्षगांठ भी उसी तरह मनाई जैसे राजू का जन्मदिन. नवीन बेचारा बैठेबैठे देखता रहा. सविता अपने लिए बनारसी साड़ी, नवीन के लिए महंगी शर्टपैंट और घर की सजावट के लिए न जाने क्याक्या लाई. नवीन मौन स्वीकृति के अतिरिक्त और कर भी क्या सकता था? पार्टी में शामिल औरतें तो सविता को देख कर दंग रह गईं. उस की एकएक चीज से रईसी टपक रही थी. सविता सभी पर अपना रोब देख कर मन ही मन प्रसन्न हो रही थी. वहां दूसरी ओर नवीन भीतर ही भीतर घुट रहा था.

खैर, फिर धीरेधीरे एकदो दिनों में सभी कुछ सामान्य हो गया. पर भीतर ही भीतर दोनों एकदूसरे से उखड़े रहे. एक दिन नवीन ने कुछ मूड बना कर सविता को समझाना चाहा.

"पता है, सविता, इस महीने अपने बैंक एकाउंट में से दो हजार रुपए निकल चुके हैं? फिर मेरी तनख्वाह अलग. अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊं, सविता, कि इतना खर्च, ये दोदो पार्टियां, फिर कपड़ों और सजावट पर यह फिजूलखर्च, सचमुच बर्दाश्त के बाहर है."

अब अंदर ही अंदर सविता भी घुटने लगी थी क्योंकि नवीन को तनख्वाह मिलने में अभी चार दिनों की देर थी और सविता का हाथ खाली हो चला था. पर नवीन की बातें सुन कर वह उस से कुछ कह भी नहीं सकती थी. नवीन तो शुरू से ही उसे समझाता रहा है. उस का चेहरा बुझ सा गया था. जैसेतैसे ये चार दिन और निकल जाएं. उस दिन शनिवार था. अब वह शायद दिन के घंटे भी गिनने लगी थी. नवीन की तनख्वाह बुधवार की रात को आएगी.

इसी उधेड़बुन में बैठी थी कि अचानक ही कालबेल बजी और सविता की तंद्रा भंग हुई. उस ने देखा कि घर के अंदर नवीन के एक पुराने मित्र तथा उन की पत्नी प्रवेश कर रहे हैं. अंदर सविता को एक झटका सा पर उस ने अपनेआप को संयत रखा औपचारिकता के दोचार शब्द उन्हें ड्राइंगरूम में बैठाया. वह बातें तो करती रही पर उस मस्तिष्क दूरदूर तक उड़ रहा था. तो वह इतनी बड़ीबड़ी पार्टियां है और आज मेहमानों के लिए न में खाने को है, न पर्स ही बाहर मंगाने की अनुमति दे रहा है.

नवीन को बातें करता छोड़ कर रसोईघर की ओर चाय के लिए चल दी.

एकाएक किसी की कराह ने को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया. राजू था. सविता, नवीन तथा दंपती सभी दौड़ेदौड़े राजू के गए. राजू के पेट में अचानक ही दर्द उठा था और वह दर्द से करा था. सविता तो उसे देख कर हतप्रभ गई. समझ नहीं पा रही थी कि सांत्वना कैसे दे और क्या करे. चेहरा पीला पड़ गया था.

करीब आधा घंटा तक की ऐसी स्थिति देख कर सविता आप को और नहीं रोक सकी और से बोली, "जाओ, नवीन, जल्दी अच्छे डाक्टर को बुलाओ. बेचारे राजू की क्या स्थिति हो नवीन के मित्र व उन की पत्नी को सहानुभूतिपूर्ण नजरों से देख ही किसी डाक्टर को बुलाने की रहे थे.

नवीन सविता को एक कोने गया. अपनी आर्थिक स्थिति समझा बोला, "देखो, मेरा बैंग तो खाली है. तुम्हारे पास डाक्टर और दवाई के लिए रुपए तो होंगे

सविता को ऐसा लगा, जैसे ने ऊंची इमारत से नीचे धकेल

"क्या कहा, तुम्हारे पास 40-50 रुपए भी नहीं हैं? मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न सकती. तुम झूठ बोल रहे हो. हाय, क्या होगा? मेरे पास भी सब पैसे प्त हो गए हैं. मैं तो स्वयं ही आज ह से परेशान हूं."

दोनों की बातों के बीच ही राजू की ख और कराह सुनाई दे रही थी. राजू तड़प ने मानो सविता को भीतर तक घ दिया.

"नवीन, जल्दी कोई इंतजाम करो. ारा रोजू..."

"कहां से करूं इंतजाम? तुम्हें पहले कुछ सूझता नहीं. जब पैसे रहते हैं तो ल खोल कर खर्च करोगी. तब तो ऐसा ता है, जैसे किसी राजा की बेटी हो. क्या तुम्हारा दुश्मन हूं जो तुम्हें इतना र्च करने से रोकता हूं. अब मैं क्या ूं? क्या अब राजू में हीन भावना नहीं एगी? क्या सोच रहा होगा वह कि तो तड़प रहा हूं और मम्मीडैडी को जरा भी परवा नहीं."

"क्या सब कुछ अभी कह लोगे? बाद लिए कुछ भी नहीं छोड़ोगे? मेहमान र में बैठे हैं. हाय, यह कैसी कठिन रीक्षा की घड़ी आ गई. कुछ समझ हीं आ रहा. वैसे बैंक में भी तो कुछ ए हैं. होंगे न?"

"पर बैंक क्या तुम्हारे लिए अब तक ला होगा."

"हे भगवान, तुम्हीं कोई राह दिखाओ ,,

"भगवान क्या राह दिखाएंगे ऊपर रुपयों की थैली तो फेंकने से रहे. जाओ, हीं पड़ोसियों या सहेलियों के पास, जिन्हें किसी न किसी बहाने अकसर पार्टियां दिया करती हो. क्या समय पर वे तुम्हारे इतने भी काम नहीं आएंगी? यही हो सकता है और कोई रास्ता नहीं है."

"क्या कहा, सहेलियों और पड़ोसियों के समक्ष 50 रुपए के लिए हाथ फैलाऊं? क्या सोचेंगे सब, यही स्टैंडर्ड है इन के यहां का. घर में लड़का बीमार है और डाक्टर की फीस और दवाई के पैसे नहीं हैं. नहीं, नवीन, तुम्हीं किसी मित्र से मांग लाओ, मुझे शर्म आती है."

नवीन से अब नहीं रहा गया. वह बोल उठा, "भाड़ में जाए तुम्हारी शर्म और तुम्हारा स्टैंडर्ड. झूठी शान के पीछे पड़ी हो और लड़का दर्द से चीख रहा है. वही लड़का, जिस की खुशी के लिए तुम शानदार पार्टियां दिया करती हो. इतना खर्च करती हो. क्या यही है तुम्हारा मातृत्व, यही है राजू के प्रति तुम्हारी ममता? भगवान करे ऐसी ममता किसी भी मां को अपने बेटे से न हो. सच, सविता, अब तो मुझे तुम से नफरत होने लगी है."

इतने में ही नवीन के मित्र ने उस कमरे में प्रवेश किया.

"वाह, भई नवीन, तुम ने और भाभीजी ने तो कमाल कर दिया. उधर बेचारा राजू तड़प रहा है और तुम हो कि डाक्टर को बुलाने के बजाए पता नहीं यहां क्या खिचड़ी पका रहे हो?"

नवीन और सविता को तो जैसे काठ मार गया हो पर बेशर्म बन कर कहना पड़ा, "प्लीज तुम दोचार मिनट और उस के पास बैठो, हम अभी आए." बेचारे मित्र महोदय सिर हिलाते हुए फिर राजू के पास जा कर बैठ गए.

सविता आंखों में आंसू भरे सावित्री के घर की ओर चल दी और नवीन डाक्टर के क्लिनिक की ओर. मित्र महोदय और उन की पत्नी राजू का सिर सहला रहे थे और नवीन और सविता रास्ते में आपस में घर की समस्या व स्टैंडर्ड पर बातें करते जा रहे थे. •

क्या देखा आप ने?

देखी होंठों की हंसी
जख्म न देखे दिल के,
आप दुनिया की तरह
खा गए धोखा कैसे.
—कृष्ण बिहारी 'नूर'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैमल

क्रायलिन®
फ़ैब्रिक
पेण्टिंग प्रतियोगिता

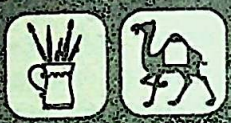

कपड़े के एक चौकोर (३५ सें.मी. × ३५ सें.मी.) टुकड़े पर, जिसके किनारे सफ़ाई के साथ सिले हुए हों, दिये हुए डिज़ाइन खाका उतारकर उसे कैमल क्राइलिन कलर्स से पेंट कीजिये। कलर्स को जितना भी संभव हो सके उतना पतला रखें। कलर्स को पतला करने के लिए उनमें कैमल क्राइलिन मीडियम मिलायें। प्रतियोगी अधिक से अधिक ३ प्रविष्टियां भेज सकता है।

पुरस्कार: रु. १००/-, रु. ७५/-, रु. ५०/- और १० सम्मानपत्र।

अपनी पेंट की हुई प्रविष्टियां निम्नलिखित पते पर भेजिये:

जन सम्पर्क अधिकारी (पब्लिक रिलेशन ऑफ़िसर),
कैम्लिन प्राइवेट लिमिटेड,
आर्ट मटीरियल डिवीज़ल, जे. बी. नगर, बम्बई-४०० ०५९

प्रविष्टि के साथ नाम व पता लिखा तथा
टिकट लगा लिफ़ाफ़ा भेजने पर हर उपयोगी को 'ट्रान्सफर्स' दिये जायेंगे।
कृपया एक चिट पर अपना नाम और पता अंग्रेजी में लिखकर
उसे अपने प्रवेश पत्र के साथ नत्थी कर दीजिये। आपके प्रवेश पत्र वापस नहीं

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तारीख: 25, जुलाई, 1978.

CONTEST NO.1

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माहौल में रह कर पढ़ाई पूरी की थी. परेशानी क्या होती है, दोनों में से किसी को पता ही नहीं था. इस के बावजूद आनंद व्यावहारिक आदमी था. वह जानता था कि व्यक्ति की जिंदगी में सभी तरह के दिन आते हैं. दूसरी ओर रानी किसी भी तरह ये दिन बिताने को तैयार नहीं थी. वह बातबात में बिगड़ती, आनंद को ताने देती और जोर देती कि वह विदेश चले. यहां कुछ भी तो नहीं धरा है.

आनंद ने सोचा था कि विदेश में पैसा कमा कर मैं रानी को खुश कर दूंगा पर अपने लोगों से दूर होते ही मानो उन की खुशियां भी उन से दूर हो गई थीं...

आनंद को शायद ये दिन कभी न देखने पड़ते, पर जब उस ने रानी से शादी की तो अचानक उसे अपने माता-पिता से अलग हो कर घर बसाना पड़ा. दोनों के घर वालों ने इस संबंध में उन की कोई मदद तो क्या करनी थी, हां, दोनों को तुरंत अपने से दूर हो जाने का आदेश अवश्य दे दिया था. फिर आनंद अपने कुछ दोस्तों के साथ रानी को ब्याह लाया था.

तब वह रानी नहीं, आयशा थी. शुरू-शुरू में तो आयशा के ब्याह को हिंदू-मुसलिम रंग देने की कोशिश हुई थी, पर कुछ डरानेधमकाने के बाद वह बात आई-गई हो गई. फिर भी उन की जिंदगी में अकेलापन पैठ चुका था और दोनों ही लाख तरह से खुश रहने की कोशिशों के बावजूद कभी न कभी, कहीं न कहीं आकटदर्वातियों का, संपन्नता का और निश्चिंतता का अभाव महसूस कर रहे थे.

आनंद जानता था कि घर का यह द्वंद माहौल रानी को अच्छा नहीं लगता. ऊपर से घरगृहस्थी की एक साथ आई परेशानियों ने रानी को और भी चिड़चिड़ा कर दिया था. अभी कुछ माह पहले तक वह तितली सी सहेलियों के बीच इतराया करती थी. कभी कोई टोकता भी तो रानी कह देती, "अपनी फिक्र करो, मुझे कौन यहां रहना है. एम. एस. किया और यह चिड़िया फुर्र..." फिर वह सचमुच चिड़ियों की तरह फुदक उठती और सारी सहेलियां हंसी में खो जातीं.

यहां तक कि वह आनंद को भी अकसर चिढ़ाया करती. सीधासाधा आनंद—उस की जिंदगी में इस से पहले कभी कोई लड़की नहीं आई थी. वह उन क्षणों में पूरी तरह डूब जाता और रानी के प्यार, सुंदरता और कहकहों को एक साथ ही महसूस करने की कोशिश करने लगता था.

आनंद एम. डी. करने के बाद जब सरकारी सेवा में लगा, तब भी उन दोनों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की शादी की जल्दी नहीं थी. अचानक कुछ ऐसी परिस्थितियां आईं की शादी करना जरूरी हो गया. रानी के पिता उस के लिए कहीं और लड़का देख आए थे. अगर दोनों समय पर कदम न उठाते तो निश्चित था कि रानी एक दिन किसी दूसरे की हो जाती.

फिर वही हुआ, जिस का दोनों बरसों से सपना देख रहे थे. दोनों एकदूसरे की जिंदगी में डूब गए. शादी के बाद भी इस में कोई फर्क नहीं आया. फिर भी क्षणक्षण की जिंदगी में ऐसे जीना संभव नहीं था और अंगीठी जलाते हुए रानी जो बड़बड़ा रही थी. वह इसी की प्रतिक्रिया थी.

आनंद ने यह सब सुना और रानी की बातें उस के मन में कहीं गहरे उतरती गईं. रानी के अलावा अब उस का इतने निकट था ही कौन? हर दुखदर्द की अकेली साथी. वह सोचने लगा, 'चाहे जैसे भी हो, विदेश निकलना जरूरी है. जो यहां बरसों में नहीं कमा सकूंगा, वहां साल में ही कमा लूंगा. ऊपर से रानी भी खुश हो जाएगी?'

आखिर वह दिन भी आया, जब आनंद का विदेश जाना लगभग तय हो गया. डाक्टर के रूप में उस की नियुक्ति इंगलैंड में हो गई थी और अब उन के निकलने में केवल उतने ही दिन बाकी थे, जितने दिन उन की तैयारी के लिए जरूरी थे. जाने कितने दिन वहां लग जाएं? जाने कब लौटना हो? हो भी या नहीं? तैयारी के छोटे से छोटे काम से ले कर मिलने-जुलने वालों को अलविदा कहने तक, सभी काम उन्हें इस समय में निपटाने थे.

रानी की कड़वाहट अब गायब हो चुकी थी. आनंद अब देर से लौटता तो भी वह कुछ न कहती, जब कि कुछ महीनों पहले आनंद के देर से लौटने पर उस की खूब खिंचाई होती थी.

अधरात को सोने से पहले अधिकतर समय इंगलैंड की चर्चा में ही कैसा होगा इंगलैंड? चर्चा करते की आंखों में एकदूसरे के जगह ढेर सारे पैसे और वैभव की चमक तैरने लगती जाने कब दोनों सो जाते.

चाहे आनंद के मित्र हों

की सहेलियां, सभी उन का
से महसूस करने लगे थे. एक
जो उन के दूर जाने की
हुआ था. आनंद का तो
आनंद को घर के फाटक पर
वाला चौकीदार तक
लगता. नुक्कड़ पर बैठने वाले
लाख झगड़ने के बावजूद
अकसर उसे याद दिलाते
जितना चाहे लड़ लो. अब
ही दिनों का है.'

और फिर वह दिन भी
उन्हें अपना, महल्ला, अपना
देश छोड़ना था. जैसेजैसे
रेल पकड़ने का समय नजदीक
था, आनंद की तो जैसे जान
जा रही थी. किसी तरह से
को कड़ा किया और फिर
महल्ले, शहर और देश को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक छोड़ता हुआ उस धरती पर जा पहुंचा, जो बरसों से रानी के लिए ही नहीं, उस के जीने का लक्ष्य बनी हुई थी.

लंदन का हीथ्रो हवाई अड्डा. यांत्रिक जिंदगी का दूर से परिचय देता विशाल शहर. जिंदगी कुछ इस कदर तेज कि हर दो मिनट बाद कोई हवाई जहाज फुर्र से उड़ जाता. चारों ओर एक चमकदमक, हंसी के मुकाबले लोगों के उतरे या फिर कृत्रिम मुसकराहट भरे चेहरे.

जहाज से उतरते ही आनंद को लगा कि उस ने बाहर का कुछ पाया जरूर है, पर साथ ही अंदर का कुछ ऐसा अपनापन खो दिया है, जो जीने की पहली शर्त हुआ करती है. रानी उस से बेखबर इंग-लैंड की धरती पर अपने पहले कदमों को चलती हुई सी लग रही थी और उस की खुशी का ठिकाना न था. कई बार बहक कर उस ने आनंद का भी ध्यान बंटाना चाहा, पर फिर उस के चेहरे को देख अकेले ही उस नई जिंदगी को महसूस करने में खो जाती.

अब उन्हें इंगलैंड में आए एक माह से ऊपर हो रहा था. दिन भर जानवरों की सी भागदौड़. हर जगह बनावटी संबंध. कोई भी ऐसा नहीं, जिस से दो पल बैठ कर वे अपना दुखदर्द कह सकें. खानेपीने की कोई कमी नहीं थी, पर अपनेपन का बुरी तरह अभाव. यहां तक कि वे भारतीय भी दोएक बार लंच पर बुलाने के अलावा अधिक नहीं मिलते जुलते, जिन के पते वह अपने साथ लाया था. जब भारतीयों की यह हालत थी, तो अंगरेजों से क्या अपेक्षा की जा सकती थी. ये भारतीय भी अंगरेजों की तरह हो रहे थे. सारे व्यवहार में वे उन्हीं की नकल करते.

ऐसे में आनंद अपने शहर की उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

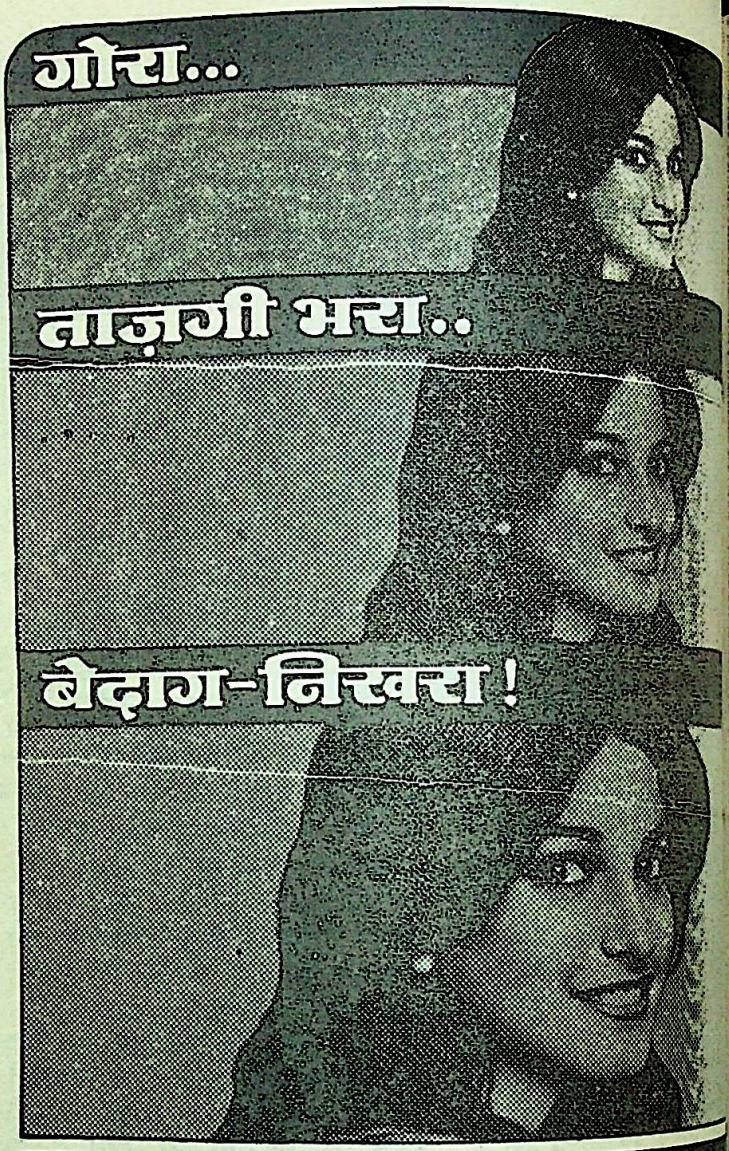

लॅक्मे
वैनिशिंग क्रीम
कितनी मृदु, कितनी स्वाभाविक...
मेकअप के लिए आदर्श बेस...
लॅक्मे वैनिशिंग क्रीम

लॅक्मे - जिन्हें मालूम है, त्वचाको क्या चाहिये

daCunha/L-V-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यादों में खो जाता, जब यारदोस्तों के कहकहों के बीच घड़ियों का अस्तित्व खत्म हो जाया करता था. वे लंबीचौड़ी बहसें अब उसे काल्पनिक सी लगतीं. यहां तो सब कुछ बंधाबंधा सा था. ठहाकों का सवाल ही नहीं, हंसना भी धीमे से होता, गोया उस की भी राशनिंग हो. बातबात में अंगरेजी शिष्टाचार हावी. आनंद लगातार इस से आजिज आता जा रहा था. रानी कुछ पलों को तो यह महसूस करती, पर थोड़ी देर बाद ही अंगरेजी चमकदमक में खो जाती. आखिर, जो इतनी मुश्किल से मिला है, उस में रुचि न लेने का उसे कोई कारण ही समझ में न आता.

पर कुछ दिनों से वह भी परेशान थी. बंटी आने के कुछ दिनों बाद तक तो चौकीदार के लड़के रामू की याद कर के काफी परेशान रहा था. नए बच्चों से दोस्ती आगे नहीं बढ़ सकी थी. बंटी कुछ कहता तो वे कुछ कहते और फिर वे एकदूसरे का मुंह ताकते. फिर बंटी अकेला ही गुमसुम रहने लगा था. रानी ने कई तरह के खिलौने ला दिए, वे भी उसे अच्छे न लगते. आखिर बंटी कितनी देर उन से मन बहलाता.

और आज तो बंटी बुखार में तप रहा था. आनंद अभी तक अस्पताल से नहीं लौटा था. आसपास याद करने से भी कोई उसे ऐसा नजर नहीं आया, जिसे वह बुला ले और जो उसे ढाढ़स बंधाए. अचानक इस सूनेपन में उसे लखनऊ में फाटक पर बैठने वाले रघू चौकीदार की याद आई, जो कई बार ऐसे मौकों पर डाक्टर को बुला लाता था. उसे ताज्जुब हुआ कि उसे उस की याद क्यों आई. उसे कुंजड़िन की याद भी आई, जो अकसर आनंद के न होने पर घर में सब्जी पहुंचा जाती थी. उसे उन पड़ोसियों की भी याद आई, जो ऐसे अवसरों पर चारपाई घेरे बैठे रहते थे और इस तरह उदास हो उठते थे, जैसे उन का ही कोई अपना बीमार हो.

आज पहली बार रानी को उन की कमी अखरी. पहली बार उसे लगा कि वह यहां हजारों आदमियों के होने के बावजूद किसी जंगल में पहुंच गई है, जहां कोई भी उन्हें पूछने वाला नहीं है. आनंद अभी तक नहीं लौटा था. उसे रोना आ गया.

तभी बाहर कार का हार्न बजा. रानी ने नजर उठा कर देखा, आनंद ही था. वह लगभग दौड़ सी पड़ी, बिना कुछ कहे आनंद से जा चिपटी और फफक पड़ी. तभी रानी ने सुबकते हुए कहा, "कितने अकेले हैं हम लोग यहां, मर भी जाएं तो कोई पूछने वाला नहीं. बंटी की तबीयत ठीक नहीं है और एकएक पल मुझे काटने को दौड़ रहा था."

आनंद ने धीरे से बिना कुछ कहे उसे अलग किया और अंदर के कमरे की ओर बढ़ा, जहां बंटी आंखें बंद किए लेटा था. उस ने उस के माथे पर हाथ रखा, वह तप रहा था. उस ने कुछ दवाएं खोजीं और फिर बंटी को पिलाईं. बंटी थोड़ा आराम पा कर सो गया.

थका हुआ आनंद एक सोफे पर लुढ़क गया. दूसरी ओर, आरामकुरसी पर रानी निढाल पड़ी थी. आनंद ने देखा, उस की आंखों में एक गलती का एहसास था, गोया वह कह रही हो :

'यहां सब कुछ तो है, पर वह लखनऊ जैसा, अपने देश जैसा अपनापन नहीं है. चाहे वस्तुएं हों या आदमी, यहां केवल ऊपरी चमक है. यह मरीमरी सी कार, टेलीविजन और बंगले की चमक मुझे नहीं चाहिए.

तभी रानी थके कदमों से उठी. एक बार फिर बंटी को देखा. उस का बुखार कुछ कम हो गया था. आनंद वैसे ही आंखें बंद किए हजारों मील दूर छूट गए अपने लोगों की याद में खोया हुआ था. रानी निकट आई और चुपचाप उस के कंधों पर अपना सिर टिका दिया, जैसे अपनी गलती को स्वीकार रही हो.●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मैं तीस वर्षीया युवती हूं. दस साल पहले मुझ से जबरदस्ती तलाक ले लिया गया था. मेरा दस साल का एक बेटा भी है. मेरी मजबूरी को लोग मेरा दोष मानते हैं. हम बेसहारा हैं. मैं पढ़ीलिखी और देखने में अच्छी हूं. मैं क्या करूं, जिस से हम मांबेटे इज्जत की जिंदगी जी सकें?

जब आप पढ़ीलिखी और देखने में अच्छी हैं तो नौकरी कर लें. आजकल तो स्त्रियां आगे बढ़ कर नौकरी कर रही हैं. इस के अतिरिक्त आप के पास कोई उपाय भी नहीं है. कोई भी व्यक्ति आप की वैसे ही सहायता न देगा. आप के साथ तो आप के पुत्र की जिंदगी का प्रश्न है. आप स्वयं पैरों पर खड़ी हो कर पुत्र को भी सही दिशा दिखाएं.

✦

मैं ग्यारहवीं कक्षा का विज्ञान का छात्र हूं. दसवीं में 58 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे. मैं फौजी अफसर बनना चाहता हूं. मुझे क्या करना चाहिए?

फौज में प्रवेश के लिए संघीय लोक सेवा आयोग (यू. पी. एस. सी.) की परीक्षाएं साल में दो बार होती हैं. आप हायर सेकेंडरी के बाद उस परीक्षा में बैठ सकते हैं. यू. पी. एस. सी. से इस के लिए फार्म मिल जाते हैं. परीक्षा में पास होने पर डाक्टरी जांच और फिर इंटरव्यू होता है. आप ध्यान रखिए.

✦

मेरी आयु साढ़े सोलह वर्ष है और मैं 29 वर्ष के विवाहित पुरुष से प्रेम करती हूं. वह मेरे लिए अपनी पत्नी को छोड़ने के लिए तैयार है. मैं उस से विवाह करूं या नहीं?

आप की अवस्था अभी अपरिपक्व है. जिसे आप प्रेम समझती हैं, वह इस नाजुक उमर का विपरीत सैक्स के प्रति आकर्षण मात्र ही है. आप का यह कदम उस व्यक्ति के परिवार को दुखी बना सकता है. सोचिए, जो पुरुष आप के लिए अपनी पत्नी को छोड़ने को तैयार है, वह कल आप के साथ भी ऐसा ही कर सकता है. आप उस से मिलनाजुलना तुरंत छोड़ दें.

✦

मैं 31 वर्षीया विवाहिता हूं और नौकरी करती हूं. शादी को आठ साल हो गए पर अभी तक मेरे कोई संतान नहीं हुई है. डाक्टर का कहना है कि संतान हो सकती है. इलाज करवा रही हूं, पर मेरे पति दूसरी शादी करना चाहते हैं. मुझे यह बर्दाश्त नहीं है. क्या मैं उन से तलाक ले लूं? क्या मैं उन की दूसरी शादी होने पर सुखी रह सकूंगी?

अगर आप के पति संतान के लिए दूसरा विवाह करना चाहते हैं तो यह कमी तो गोद ले कर भी पूरी की जा सकती है. दूसरी शादी तलाक लिए बगैर तो हो नहीं सकती. आप पति को समझाएं. परिवार सामाजिक बुराई है.

✦

मैं 42 वर्ष की हूं और मेरे तीन बच्चे विवाह को 19 वर्ष हो चुके हैं पर कुछ भी सुख से नहीं बीता. पति मनमानी करते हैं. दूसरी स्त्रियों से संबंध रखते हैं. समझाने का पहले तो कुछ प्रभाव हुआ भी पर अब वही हाल है. तीन वर्ष से घर भी नहीं खर्चा देते हैं. सब खर्चा मेरे मायके वाले करते हैं. मैं अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूं. मैट्रिक पास हूं. मानसिक शांति के लिए सेवा भी करने को तैयार हूं पर पति त्रास और नहीं सह सकती.

आप जीवन के जिस दौर से गुजर रही उस में आप को कोई भी ऐसा कदम नहीं चाहिए जो आप के बच्चों के जीवन पर प्रभाव डाले. भ्रमर प्रवृत्ति वाले पुरुष ठोकर पर घर ही लौटते हैं. अभी तो आप यह कि आप के बच्चे पढ़लिख कर योग्य आप का संबल बन सकते हैं. कोई काम बुराई नहीं है. बच्चों या दुखियों की सेवा का अवसर आप के शहर में मदर टैरेसा आश्रम प्रदान कर सकता है, वहां जा कीजिए.

✦

(क) मैं विदेशी भाषाएं सीखना चाहती किसी अच्छी संस्था का नाम और पता बता

(ख) मैं सोलह वर्षीया कन्या हूं. मैं अलग भाषाएं सीखना चाहती हूं. किसी केंद्र का पता बताएं.

विभिन्न भाषाएं सीखने के लिए यों तो स्थान हैं. एक ही स्थान पर अनेक भाषाएं की सुविधा जिस संस्थान में है, उस का नीचे दिया जा रहा है—

जवाहर लाल नेहरू एकेडमी आफ
भारतीय विद्या भवन,
कस्तूरबा गांधी मार्ग
नई दिल्ली-110001

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • कुलजीतसिंह कोचर

सफर के दौरान सावधान

अगर आप कुछ बातें ध्यान में रख कर चलें तो अकसर सफर के दौरान होने वाली घटनाओं से आप बच सकते हैं. इस से आप का समय तो बचेगा ही, नुकसान भी नहीं होगा. जब आप रेल से सफर करें तो निम्नलिखित बातें अवश्य ध्यान में रखें—

आप टिकट लेते समय उतने ही पैसे जित.. .. का टिकट हो. अगर ज्यादा ले रहे हों तो यह हिसाब लगा कर दीजिए कि आप को वापस कितने चाहिए. अगर आप बिना हिसाब पैसे देंगे तो हो सकता है कि वह आप से ज्यादा पैसे काट ले. खिड़की से एक बार हट जाने के बाद अगर आप को पता भी चल जाए तो आप टिकट बाबू से कुछ नहीं कह सकते. . . . .

खिड़की छोड़ने से पहले अपना टिकट चैक कीजिए. यह तसल्ली कर लीजिए कि जिस जगह का आप ने टिकट मांगा था आप को उसी स्थान का टिकट दिया गया है, कहीं और का तो नहीं दे दिया. अकसर लोगों को यह शिकायत रहती है कि पैसे तो निश्चित जगह के ले लिए और टिकट किसी पिछले स्टेशन का दे दिया. उन मुसाफिरों को इस का पता

सफर के दौरान आप कितने खतरों से घिरे होते हैं, इस का सही अनुमान शायद ही आप को हो...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब चलता है जब स्टेशन से बाहर निकलते समय, जरा सी असावधानी के कारण, दोगुने या तिगुने पैसों का भुगतान करना पड़ता है.

सफर के लिए आप जितना कम सामान ले जाएंगे, उतनी ही आप को सुविधा होगी क्योंकि छोटे स्टेशनों पर गाड़ी कुछ मिनट ही रुकती है जिस से आप को चढ़ने में असुविधा का सामना करना पड़ सकता है.

अगर किसी कारणवश आप को ज्यादा सामान ले जाना है तो उस सामान की पैकिंग ऐसी होनी चाहिए, जिस से कम से कम नग बनें और आप जब चाहें अपने सामान की गिनती कर सकें.

अपना सामान खुद ले कर चढ़ें

आप को अकेला सफर करते देख कर हो सकता है कोई व्यक्ति आप के पास आए और पूछे, "आप कहां जा रहे हैं?"

सफर में आप जितना कम सामान ले जाएंगे उतना ही आप के लिए सुविधाजनक होगा.

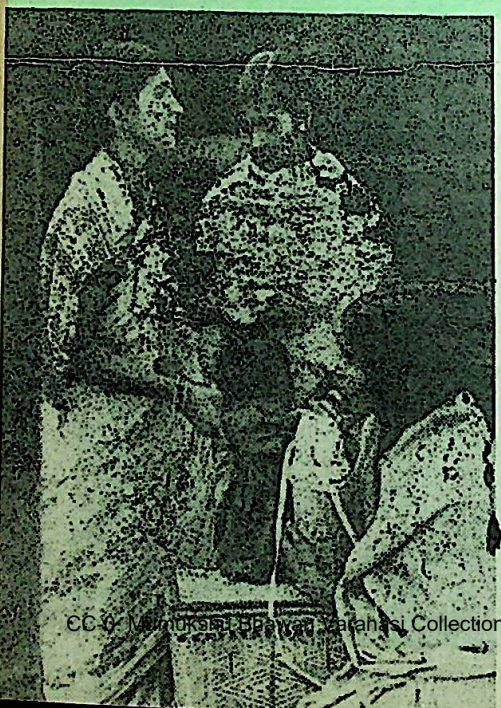

और फिर आप से बातचीत करे
थोड़ी देर बाद जब गाड़ी आए और
में चढ़ने वालों की भीड़ अधिक
वह आप का हितैषी बन कर यह
सकता है, "आप जल्दी से किसी
चढ़ कर सीट संभालिए. आप का
बाद में मैं पकड़ा दूंगा." आप
चक्कर में धक्कामुक्की कर के
चढ़ने का प्रयत्न करेंगे और वह
आप का सामान ले कर नौ दो
जाएंगे. उधर गाड़ी सीटी दे
और इधर आप को अपने
चिंता होगी. उस समय आप
पीटने के अलावा कुछ नहीं कर

ज्यादातर खुले पैसों का इंतजाम

सफर के दौरान आप चाय
पीते हैं. इन की खरीद के लिए
का उपयोग कीजिए. अगर न हो
अथवा दो रुपए का नोट हो
यदि आप ने चाय लाने वाले को
रुपए का नोट दे दिया तो वह
चाय तो दे जाएगा पर बाकी के
की बात कह कर चला जाएगा
सकता है कि रेल चलने तक वापस
आए. ऐसी स्थिति में आप या तो
पैसे वापस लेने उतरें या फिर गाड़
पकड़ सकते हैं.

सफर के दौरान अकसर
डब्बे में बोली लगवाने वाले आ
इन के पास घड़ी की चेन, चांदी
छल्ले, कंघे, मोतियों के हार
बोली लगवाने वाले के अलावा
उस के अन्य साथी भी होते हैं, जो
बोली बोलते जाते हैं. यह
आकर्षित करने के लिए हर बोली
एक छोटी कंघी मुफ्त में देते हैं,
कीमत लगभग 10 पैसे होती है.
पैसे की कंघी के लिए ऊंची बोली
हैं, यह सोच कर कि शायद आप
भी कोई बोली बोलेगा इसलिए
मिल ही जाएगी. इसी चक्कर
बोली बोली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाल में. देखने में वह अच्छी चीज दिखाई देगी पर जब आप उस का उपयोग करेंगे तो आप को पता चलेगा कि आप बुरी तरह लुट गए.

बोली की ओर आप का ध्यान खींच कर इन के साथी आप का सामान भी गोल कर सकते हैं. आप इस का पूरा ध्यान रखें. जहां आप बैठे हैं, उसी जगह आप अपना सामान रखिए.

अन्य व्यक्तियों से कुछ खाएंपीएं नहीं

जिस व्यक्ति से आप की जानपहचान नहीं, यदि वह आप को सफर के दौरान कुछ खाने को दे तो खाइए मत. सफर के दौरान मित्रता हो जाना आसान बात है. जब खाने का समय होगा तो वह यह कहेगा, "लीजिए, घर की बनी है. खा कर बताइए कैसी लगी." आप ने वह खाई नहीं कि आप को नींद आनी चालू, क्योंकि अगर वह चीज खिलाने वाला व्यक्ति कोई लुच्चा बदमाश है तो उस में नींद आने वाली दवाई मिली होती है. इधर आप बेहोशी के कारण सोए पड़े होते हैं और उधर आप का सारा सामान साफ. आप ने समाचारपत्रों में अकसर ऐसी घटनाएं पढ़ी होंगी.

कई व्यक्तियों की आदत होती है कि हर स्टेशन आने पर प्लेटफार्म पर उतर जाते हैं, कभी चाय पीने तो कभी कुछ और करने. अगर आप अकेले ही सफर कर रहे हैं, हर स्टेशन पर उतर रहे हैं तो हो सकता है कि आप की इस आदत का लाभ उठा कर कोई आप का सामान ही गोल कर दे.

अगर आप का स्टेशन आने वाला है और आप के पास अधिक सामान है तो आप अपने सामान समेत डब्बे के दरवाजे तक पहुंचें. कई ऐसे स्टेशन होते हैं जहां गाड़ी बहुत थोड़ी देर ही रुकती है. आप ऐसा नहीं करेंगे तो हो सकता है कि आप के उतरने से पहले ही गाड़ी चल दे और आप को अगले स्टेशन पर ही उतरना पड़े. आप की [illegible] सावधानी से

अकेले सफर करते समय किसी भी व्यक्ति पर विश्वास न करें, चाहे वह कितना ही अपनापन जताए.

पैसे और समय दोनों का नुकसान होगा.

कुली का टोकन इत्यादि देखें

जब आप किसी स्टेशन पर उतरते हैं तो कुली के सिर पर अपना सामान लदवाने से पहले उस का टोकन नंबर अवश्य देख लें. कुली कुछ ज्यादा चाल से ही चलते हैं. इस से आप उन से बिछड़ जाएंगे. अगर आप के पास उस का टोकन नंबर होगा तो आप उसे आसानी से ढूंढ़ सकते हैं. यदि आप के पास टोकन नंबर नहीं होगा तो आप रेलवे पुलिस को क्या रिपोर्ट करेंगे?

अगर आप सामान उठाने से पहले कुली से पैसे भी तय कर लें तो उचित रहेगा. हो सकता है, बाद में वह आप से ज्यादा पैसे लेने के लिए झगड़ा करे.

हो सकता है, इन में से कोई घटना आप के साथ भी घट चुकी हो. पर आगे से ध्यान रख कर सफर करेंगे तो भविष्य में ऐसी घटनाओं से बचा जा सकता है. ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सैक्स पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गई विशेष पुस्तकें

कामकला

पहला भाग : विवाहित युवतियों के लिए
दूसरा भाग : विवाहित युवकों के लिए

पारिवारिक कलह, असंतोष, तलाक आदि अनेक बुराइयों का बहुत बड़ा कारण स्त्रीपुरुषों की काम के प्रति अनभिज्ञता है.

प्रस्तुत पुस्तक सैक्स जीवन पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गई है. इस में सैक्स के विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार किया गया है. साथ ही आदर्श पारिवारिक जीवन के बारे में भी महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं.

विवाहित युवकों और युवतियों को इस पुस्तक के अध्ययन से स्वाभाविक-जीवन निभाने में सहायता मिलेगी.

मूल्य प्रति भाग : 5.00 रुपए

स्त्री और पुरुष

आधुनिक काम विज्ञान

प्राचीन भारतीय काम शास्त्र और आधुनिक पश्चिमी काम विज्ञान का निचोड़. तथ्यपूर्ण और व्यावहारिक ज्ञान के आधार पर लिखी गई एक अपूर्व पुस्तक. विषय को सरल--सुबोध बनाने वाले आवश्यक चित्रों से सुसज्जित. वैवाहिक जीवन को सुखी और आनंदपूर्ण बनाने में यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण योग देगी.

मूल्य : 6 रुपए

विश्व विजय प्रकाशन

एम, 12 कनाट सरकस नई दिल्ली-110001

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यंग्य • सरल जैन

सलाह लीजिए

पति को छोड़ कर पीहर आने के बाद मुझे चिंता थी कि वह मेरी देखभाल के अभाव में बेहद दुबले ही गए होंगे पर पीहर से लौट कर जब मैं ने उन्हें खासा तंदुरुस्त पाया तो हैरान रह गई...

गरमियों की छुट्टियां अपने पीहर में व्यतीत कर जब मैं अपनी ससुराल जा रही थी तो एक ही विचार बारबार दिल को झकझोर रहा था कि मेरे पतिदेव का मेरे बिना क्या हाल रहा होगा. होटल के खाने से ले कर सोने तक न जाने कितनी परेशानियां उन्होंने झेली होंगी. हो सकता है कुछ दुबले भी हो गए हों, लेकिन जब मैं घर पहुंची तो उन्हें पहले से ज्यादा तंदुरुस्त देख कर आश्चर्य-चकित रह गई. जब मैं ने उन से उन की तंदुरुस्ती का राज पूछा तो उन्होंने कहा कि यह सब दोस्तों की सलाह का नतीजा है.

मेरी समझ में नहीं आया कि ऐसी कौन सी सलाह हो सकती है जिस से उन की सेहत घर के खाने, मेरी देखभाल के बिना और भी अच्छी हो गई. अतः मैं ने उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से सारी जानकारी चाही. यकीन मानिए, उन की कारगुजारी सुन कर मैं घंटो हंसती रही. उन्होंने अपनी सेहत का राज कुछ इस तरह बताया—

"तुम्हारे घर से जाने के बाद मैं बहुत परेशान हो गया. कई सालों बाद यह पहला अवसर था जब तुम एक माह के लिए मुझ से दूर चली गई थीं. यह सोचसोच कर मैं परेशान था कि खाना मुझे होटल में खाना पड़ेगा. पानी खुद ले कर पीना होगा, बिस्तर खुद लगाना होगा, दरवाजा स्वयं खोलना एवं बंद करना होगा. वक्त काटना भी एक मुसीबत थी. सो इन सब मुसीबतों से बचने के लिए मैं ने एक तरीका खोज निकाला. उसी दिन शाम को आफिस से आ कर मैं सीधे राम बाबू के घर पहुंच गया.

"तुम जानती ही हो, राम बाबू को पिक्चरें देखने और अपनेआप को हीरो समझने के अलावा किसी बात में कोई दिलचस्पी नहीं. मैं ने उन के घर जा कर कहा, 'राम बाबू, मुझे कुछ सलाह की जरूरत है.' मेरी बात सुन कर राम बाबू ने किसी फिल्मी हीरो के समान विल्स सिगरेट हाथ में ले कर कहा, 'अरे, आप ठीक जगह आ गए, मैं आप को इतनी अच्छी सलाह दूंगा कि दिलीप कुमार, राज कपूर, देव आनंद किसी ने भी न दी होगी. एक ही कोशिश में आप टाप के हीरो बन जाएंगे. वह न जाने कब तक धाराप्रवाह में बोलते रहे और मैं सुनता रहा. इतने में खाने का वक्त हो गया. मेरे मना करने पर भी उन्होंने बड़े प्रेम से खाना खिलाया. रात काफी हो गई थी अतः मैं बिना सलाह मांगे घर आ गया. थकावट बहुत हो गई थी. रात कब गुजरी पता ही न चला.

"दूसरे दिन सवेरे फिर चायनाश्ते की समस्या थी. पड़ोसी का लड़का कई दिनों से बीमार चल रहा था. अतः मैं सहानुभूति प्रकट करने उन के यहां चला गया. वह बड़े खुश हुए. मैं ने उन से भी सलाह की बात कही. वह समझे मैं उन से डाक्टर के बारे में सलाह लेना चाहता हूं. वह भी बोले, 'जिस डाक्टर से मैं अपने का इलाज करवा रहा हूं उस से अच्छा डाक्टर दुनिया में और कोई हो ही नहीं सकता.' इतने में मुन्ने के लिए नाश्ता आया. साथ में मेरे लिए भी. इसी बीच आफिस जाने का समय हो गया और मैं सलाह न ले पाया. फिर आने का वादा कर मैं ने वहां से विदा ली.

"दोपहर को लंच से पहले मैं कार्यालय अधीक्षक के पास पहुंचा और बड़े अनुनय से बोला, 'सर, मुझे आप की सलाह चाहिए.' वह सरदार हैं. घर पास उन का आफिस के सामने है. बस फिर क्या था. वह बड़े प्रेम से हाथ पकड़ कर बोले, 'पुत्तर घर चलो. वहां तुम्हारी भाभी खाने पर इंतजार कर रही होंगी. खाना भी खाएंगे और सलाह भी दूंगा.'

"रात्रि में मैं एक वकील दोस्त के यहां पहुंच गया सलाह लेने. वह बोले, 'कत्ल का केस हो या बलवे का, इनकम टैक्स का मामला हो या हेराफेरी, उन से अच्छा वकील मुझे दूसरा कोई मिल ही नहीं सकता.' फिर उन्होंने अपने केसों के संस्मरण सुनाए. यहां भी रात के खाने का वक्त हो गया था. मैं उठूं इस से पहले ही उन्होंने गले में प्यार से हाथ डाल बोले, 'यार बहुत दिन बाद आए हो, अपनी भाभी के हाथ का खाना तो खा के जाओ.' मैं तो चाहता भी यही था. बढ़िया मारवाड़ी खाने के बाद घर की बनी एस्प्रेसो काफी के दौरान वह बोले, 'देखो, मेरे सिवा दूसरे के पास न जाना.' मैं ने भी वादा किया कि आज तो देर हो ही गई, दूसरे दिन सलाह लेने अवश्य आऊंगा.

"इस प्रकार मेरी सुबह कहीं, और शाम कहीं कटती रही. घूमघूम कर मैं कभी डाक्टर दोस्त के पास सलाह लेने पहुंच जाता तो कभी मास्टर दोस्त के पास. सभी मुझे सलाह देते रहे. मैं सुनता रहा, वे बोलते रहे. वे खिलाते रहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं खाता रहा. घर लौटता तो आते ही बिस्तर पर आराम से पड़ जाता. दूसरे दिन कब सुबह होती पता ही न चलता. सलाह का यह नुस्खा बहुत ही कारगर रहा. पैसे तो बचे ही, परेशानियों से भी बचा. और विभिन्न प्रकार के लोगों को उन की बातें सुन कर जो धन्य किया वह अलग. इस से मेरे ज्ञान का खजाना भी इतना बढ़ गया है कि तुम चाहो तो रोज तुम्हें एक थीम दे कर धन्य कर सकता हूं. अब बताओ, इस से अच्छा सेहत सुधारने का नुस्खा भला दूसरा और क्या हो सकता है."

मैं ने बड़े अदब से कहा, "बिलकुल नहीं."

अब आप ही बताइए कि यह कितना अच्छा फार्मूला है. आज के व्यस्तता भरे युग में भी लोगों के पास इतना अतिरिक्त समय रहता है और उस समय उन की समझ में नहीं आता कि क्या करें. सिनेमा रोज जाया नहीं जा सकता. छोटे शहरों में इतने भ्रमण करने योग्य स्थल नहीं होते कि रोज घूम लिया जाए. ऐसी स्थिति में अगर आप अच्छे श्रोता हैं तो फिर आप को कोई कठिनाई नहीं. आप से ज्यादा भाग्यवान और कोई नहीं हो सकता. कहीं भी सलाह लेने पहुंच जाएं. इस से आप लोगों को कृतज्ञ तो करेंगे ही, मुफ्त में चायनाश्ता, भोजन कर अपने पैसे भी बचाएंगे. साथ ही अपने ज्ञान कोष को जो विकसित करेंगे वह अलग.

कहिए कई तरह से काम आने वाला यह सलाह फार्मूला ठीक है न? अगर ठीक है तो आज से ही खाली वक्त में इस का प्रयोग प्रारंभ कर दीजिए और सेहत बनाइए. ●

विचित्र शीशे

न्यूयार्क की एक कंपनी 'कोर्निंग ग्लास वर्क्स' के वैज्ञानिकों ने फोटोग्राफी के क्षेत्र में अभूतपूर्व खोज की है. वैज्ञानिकों ने ऐसे विशेष शीशों का निर्माण किया है जिन्हें फोटोग्राफी के माध्यम से रंगा जा सकता है. इन विशेष शीशों का नाम 'पोलीक्रोमेटिक ग्लासिस' रखा गया है. परीक्षणात्मक 'पालीक्रोमेटिक ग्लासिस' को अल्ट्रावायलेट किरणें अथवा गरमी पहुंचा कर सतह अथवा शीशे की भीतरी तहों पर रंग चढ़ाया जा सकता है. इस क्रिया के लिए फोटो नेगेटिव अथवा अपारदर्शी वस्तु 'ग्लासिस' के अनुपात के बराबर ले कर उस पर रखी जा सकती है. इस क्रिया से मनमरजी का नमूना अथवा रूपरेखा 'ग्लासिस' पर एक अथवा विभिन्न रंगों के साथ अंकित की जा सकती है. यह नमूने पारदर्शी अथवा अपारदर्शी भी अंकित किए जा सकते हैं. यद्यपि 'पोलो क्रोमोटिक ग्लासिस' अभी निर्माणाधीन हैं पर वैज्ञानिकों का कहना है कि इन 'ग्लासिस' को अधिक उपयोगी बना पाने में वे सफल हो सकेंगे.

अपनी विशेषता के कारण 'पोलीक्रोमेटिक ग्लासिस' अजायबघर के पुरातत्व प्रलेख का विवरण सुरक्षित हूबहू उतारने के काम आ सकेंगे. मूल नमूनों का सृजन कर सकने के योग्य होने के कारण फोटोग्राफी के क्षेत्र में माडलों, मूर्तियों का चित्रांकन करने में विशेष लाभप्रद प्रमाणित होंगे.

फ्रांस में नवनिर्मित भवनों को कलात्मक रूप देने का विचार किया जा रहा है और उन भवनों की खिड़कियों पर 'पोलीक्रोमेटिक ग्लासिस' लगाने का विचार हो रहा है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • सत्यकुमार

विचित्र धंधा

शाम को दफ्तर से लौटा तो कॉलो
के सभी व्यक्ति गेट पर खड़े
खड़े थे. जब तक स्कूटर रो
गुड्डी चीख पड़ी, "पापाजी, सांप."
मैं ने स्कूटर का इंजन बंद क
चारों तरफ निगाह डाली. बदहवास
पत्नी बोली, "यहां नहीं, उधर पीछे
(बाड़) में एक सांप था. अब पता
कहां छिप गया है."
मैं ने चाबी हाथ में उछालते
कहा, "पहले चाय पिलाओ, फिर देखेंगे."
तभी पप्पू बोल पड़ा, "हम
पाइस खेल रहे थे. वीणा उधर
गई तो किलकारी मार कर बोली,

थोड़ी देर में सांप
आ गया और कटोरे
पीने लगा. सपेरा
हो कर वीन बजा

CC-0. Mumukshu Bha
gitized by eGangotri

कितना लंबा जानवर.' हम लोग गए तो उसे बताया कि यह तो सांप है."

पत्नी बोली, "मैं शाम के लिए सब्जी काट रही थी कि सब बच्चे आंगन में आ कर चिल्लाने लगे, 'मम्मी सांप,' हड़बड़ा कर उठी तो उंगली में चाकू लग गया. बाहर आई तो वह नाली में खिसक गया था. थोड़ी सी पूंछ दिखाई पड़ रही रही थी, मटमैले रंग का था."

पप्पू बेसब्री से बोला, "एक मीटर से कुछ ही छोटा होगा, पापा."

मैं भीतर आया. पीछेपीछे सहमे हुए बच्चे. मैं ने दिलासा देने को कहा, "घबराने की कोई बात नहीं, सभी सांप जहरीले नहीं होते. फिर, हो सकता है सांप न हो, दोमुंही हो. चाय पी कर देखेंगे."

वीणा बोल पड़ी, "दोमुंही क्या, पापा?"

मैं ने कहा, "दोमुंही सांप जैसी ही होती है पर वह काटती नहीं. वह आगे-पीछे दोनों तरफ चल सकती है, इसी लिए उसे दोमुंही कहते हैं."

पत्नी कुछ सोचती हुई बोली, "पूंछ तो सांप जैसी ही थी."

चाय पी कर देखने के खयाल से उठने लगा तो पत्नी बोली, "कोई डंडा-लाठी तो ले लो. उधर वैसे ही अंधेरा रहता है."

पप्पू अपनी हाकी ले आया. पत्नी से मैं ने टार्च लाने को कहा.

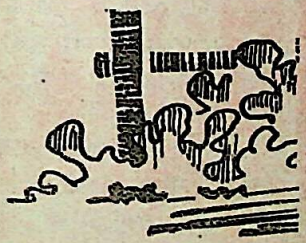

हाकी ठकठकाता हुआ मैं हैज की ओर बढ़ा, कुछ नहीं दीखा. मैं ने हैज को हाकी से कुरेदना प्रारंभ किया. पत्नी और बच्चे पीछे सहमे खड़े थे. कुछ हाथ नहीं लगा. पत्नी ने नाली के उस हिस्से की ओर इशारा किया जिधर उस ने पूंछ देखी थी. वहां पहुंच कर टार्च का प्रकाश डाला, हाकी खटखटाई, कहीं कोई फुंकार सुनाई नहीं पड़ी. हाकी थोड़ी नाली के भीतर भी डाली. कुछ समझ में नहीं आया, क्या करें.

पड़ोसियों से पूछा कि क्या उन्हें किसी सांप पकड़ने वाले का पता मालूम है, पर चंडीगढ़ में महल्ले तो हैं नहीं, सेक्टर हैं, जहां अड़ोसपड़ोस का तो थोड़ाबहुत पता रहता है, पर लोगों को यह भी मालूम नहीं होता कि अपने सेक्टर में ही कौनकौन लोग रहते हैं तथा क्या करते हैं. बाजार भी ऐसा नहीं कि दुकानदारों से ही कुछ सहायता मिल सके.

सारा घर चिंताग्रस्त था. जैसेतैसे खाना पका और बेमन से खाया. घर में मुहर्रम छाया रहा. तभी पत्नी ने चिंता-ग्रस्त मुद्रा में कहा, "वह नाली तो बाथ-रूम की नाली से मिलती है. कहीं..."

उठा, बाथरूम में हाकी ले कर गया. बत्ती जलाई. नाली में हाकी खटखटाई. ध्यान आया कि रात में कोई बाथरूम में आया तो...बाहर से एक ईंट ला कर बाथरूम की नाली में लगा दी.

ग्यारह बज गए, किसी को नींद

जब हमारी कालोनी में अचानक सांपों ने धावा बोलना शुरू कर दिया तो मुझे दाल में काला नजर आने लगा. जब मैं ने अपना शक मिटाना चाहा तो सांपों का रहस्य खुल गया.

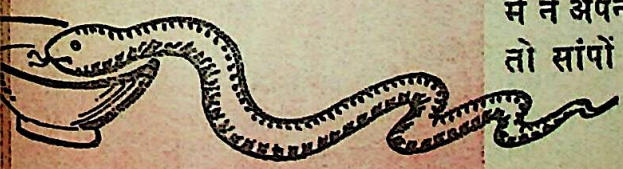

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं आ रही थी. बाहर जरा कहीं आहट होती या चिमगादड़ फड़फड़ाता तो सब चौकन्ने हो जाते. एक बार बाहर हलकी सी सीटी की आवाज हुई. पत्नी गंभीर मुद्रा में कहने लगी, "मेरी मां कहा करतीं थीं कि सांप ऐसी ही आवाज करता है."

थोड़ी देर में वह आवाज कमरे में से ही आती लगी. अलमारी के पीछे टार्च से देखा, चारपाइयों के नीचे देखा, पर कहीं कुछ नहीं था. संभवतः वह झींगुरों की ध्वनि थी.

रामराम कर के रात काटी. सुबह दूध वाले से पूछा पर उसे किसी सांप पकड़ने वाले का पता नहीं था.

चाय पी कर स्कूटर ले कर निकला. इधरउधर कई सेक्टरों के चक्कर लगाए. चौदह नंबर सेक्टर के पास से निकला तो एक जगह मजमा लगा था. रुक कर देखा, लगा, जैसे कुबेर का खजाना हाथ लग गया हो. एक सपेरा कई पिटारियां रखे अपने करतब दिखाने की भूमिका बांध रहा था.

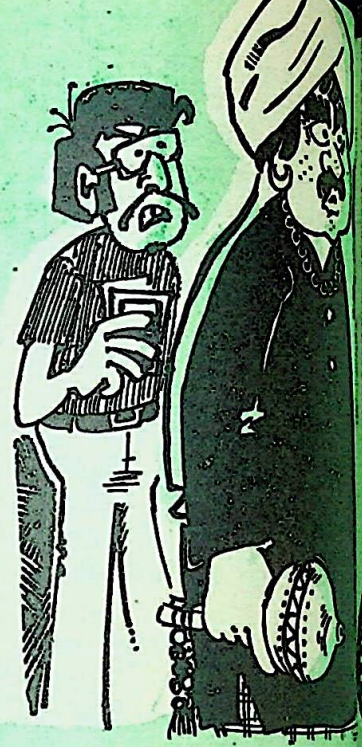

उसे एक ओर बुला कर बात की. वह इधरउधर की बातें पूछता रहा, "कैसा है? कितना बड़ा है? धारी वाला है? पीठ पर धब्बे हैं क्या?"

फिर काम की बात पर आया. बोला, "जोखिम का काम है, क्या मिल जाएगा?"

इस प्रकार के काम का अनुभव नहीं था. मैं ने उसी से कहा, "तुम बताओ, क्या लेते हो?"

वह बोला, "सुबह की बात है, इक्कीस रुपए दे देना."

मैं ने कहा, "भाई, यह तो बहुत ज्यादा हैं. तुम्हें एक सांप भी तो मिल जाएगा. वैसे भी तो तुम जंगलों में जा कर पकड़ते रहते हो? दस रुपए ले लेना."

उस ने जिरह की, "लो, साहब, जान हथेली पर रख कर आप का काम करेंगे घंटा लगे, दो घंटे लगे. कुछ पता

मैं ने टोकरी पलट दी. सांप अनमाना पड़ा था. सांप न तो फुंकारा और न भागा. मैं ने उस की पूंछ पकड़ कर उठा लिया और हिलाते हुए कहा, "जहरीला है ही नहीं."

नहीं. चूक हो गई तो ऊपर का कट जाएगा."

वह लापरवाही से मजमे की चलने लगा. मुझे समझ में नहीं आ था कि क्या करूं, उसे चलता देख कहा, "चलना है तो चलो, पंद्रह मिल जाएंगे." और मैं स्कूटर को बढ़ गया.

वह कहने लगा, "बाबूजी, हमारे पेट है. अच्छा, एक काम करना, देवता के लिए आधा किलो दूध मुझे रोटी खिला देना. पंद्रह लूंगा."

मैं ने हामी भर दी. उसे पता दिया, रास्ता समझा दिया और कर दी कि जल्दी आ जाना.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"मेरा साथी चाय पीने गया है, उस के आते ही यह मजमा उस पर छोड़ कर मैं आ जाऊंगा."

लौट कर पत्नी से चारछः मोटीमोटी रोटियां बनाने को कहा. आधे घंटे बाद वह आ गया. कहने लगा, "पहले रोटी खा लूं, पता नहीं देवता कितनी देर में कृपा करें. कभीकभी तो स्तुति करतेकरते सारा दिन बीत जाता है."

रोटी खा कर उस ने सामने लान में एक बड़े कटोरे में दूध भरवा कर रख लिया. सांप को कब, कहां देखा था आदि पूरी पूछताछ की, फिर हैज (बाड़) में और नाली के पास चक्कर लगाया. कुछ मंत्र सा बुदबुदाता जा रहा था, क्यारियों की मिट्टी उठाउठा कर सूंघता था.

पंदरह मिनट बाद उस ने अपनी पिटारी खोली. उसे ठीक से झाड़ापोंछा, फिर बीन बजाने लगा. चारों ओर वह बीन बजाता घूम रहा था. सब घर वालों को उस ने सामने बरामदे में सतर्क खड़े रहने का आदेश दे दिया था. बीचबीच में वह रुक कर इधरउधर कानों से कुछ आहट लेता था. बाहर सड़क पर आसपास के लोग इकट्ठे हो गए थे. उस का लंबा सा जोगिया रंग का कुरता, ऊंचाऊंचा तहमद, बेतरतीबी से लपेटा साफा और उस में से लटकती बालों की बड़ी सी लड़ी, कानों में कुंडल, गले में मोटे से दानों की माला और गाल फुला कर झूमझूम कर बीन बजाना बड़ा नाटकीय लग रहा था.

थोड़ी देर बाद उस ने हाथ के इशारे से सब को परे हट जाने का संकेत किया. पीछे हैज की ओर से सांप चला आ रहा था. थोड़ी देर में वह लान में आ गया और इधरउधर सशंकित दृष्टि से देख कर कटोरे से दूध पीने लगा.

सपेरा तन्मय हो कर बीन बजा रहा था. मुझे शंका हुई कि कहीं सांप दूध पी कर खिसक न जाए और यह बीन ही बजाता रहे. पर नहीं, दूध समाप्त होने से पहले ही वह झूमता हुआ आया. पिटारी के पास पड़ा एक गंदा सा कपड़ा उस ने बाएं हाथ पर लपेटा और कटोरे पर झुक सांप की गरदन दबोच ली.

सब लोग सांस खींच कर खड़े हो गए. प्रत्येक व्यक्ति का दिल धकधक कर रहा था. सांप ने तेजी से पूंछ इधरउधर फेंकी पर तबतक सपेरे ने उसे ऊपर उठा लिया और बीन बंद कर दी. कोई ढाई फुट लंबा मटमैले रंग का सांप था. उस पर न धारी थी, न धब्बा.

वह सांप को उठाए हुए पिटारी तक ले गया और बड़ी सावधानी से उस में सांप को डाल कर बिजली की सी फुरती से ढक्कन लगा दिया. पिटारी को फिर उस ने रस्सी से बांध दिया. माथे पर आ गए पसीने को पोंछता हुआ बोला, "बड़ा जहरीला नाग था. इस का काटा पानी नहीं मांगता. देखने में तो मरियल सा है पर बड़ा कड़ियल है. ऊपर वाले का शुक्र है कि उस ने लाज रख ली."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सभी लोग उस से प्रभावित थे. पानी पी कर और पंदरह रुपए ले कर वह चला गया.

परिवार के लोगों ने चैन की सांस ली कि काम जल्दी निबट गया, दफ्तर से छुट्टी नहीं लेनी पड़ी.

तीन दिन बाद दोपहर ग्यारह बजे मैं दफ्तर में काम कर रहा था कि रवि घबराया हुआ आया. उस के घर से फोन आया था, बरामदे में बच्चों ने सांप देखा था, जो पुराने स्टोर में घुस गया था. उस स्टोर में घर में काम न आने वाली चीजें, कबाड़ भरा रहता था. रवि को चिंता यह थी कि उस कबाड़ में सांप को खोजना बड़ा कठिन है. रवि जब मुझे छुट्टी की अरजी देने लगा तो मैं ने उस से कहा कि घबराने की कोई बात नहीं. किसी सपेरे को ले आओ और तीन दिन पहले की अपने घर की घटना सुना दी.

संयोग से रवि को सपेरा एक सेक्टर पहले ही मिल गया. पैसों के मामले में भी रवि ग्यारह रुपए पर ही अड़ा रहा दूध और रोटी की बात तय के सपेरा उस के साथ चला गया वहां भी उस ने एक घंटे में कार्यवाही पूरी कर दी.

अगले दिन रवि ने दफ्तर में सारी कहानी सुनाई. उत्सुकतावश मैं ने रवि से सांप का रंग और लंबाई पूछी. वह बोला, "दोढाई फुट का मटमैले से रंग का सांप था." ऐसा ही सांप मेरे घर से निकला था. मन में प्रश्न उठने लगा, क्या किसी जाति या रंग विशेष के सांपों ने एक साथ नगर पर धावा बोल दिया है.

चार दिन बाद रात को टी. वी. पर पिक्चर देख रहे थे कि सुरेश बदहवास सा मेरे घर आया. उस के घर में भी मटमैला सांप देखा गया था और बीवी-बच्चे रोचीख रहे थे. दफ्तर में उस ने मेरी और रवि की बात सुनी थी, रवि का घर दूर था, इसलिए वह मेरे ही घर दौड़ा आया था.

पर सपेरे का घर तो मैं जानता था. उस से पहले दिन बातचीत में भी था तो वह बड़े सूफियाना अंदाज बोला था, "रमते जोगी और बहते का क्या ठिकाना. हमारे मुकद्दर में बस्तीबस्ती जंगलजंगल भटकना ही है."

सुरेश को मैं उस का पता बताता? तभी पता नहीं मुझे क्या कि मैं उस से बोला, "घबराओ फिकर नहीं करो. आराम से सोओ. मैले रंग का सांप जहरीला नहीं बीवीबच्चों से कह दो कि कतई न करें. सवेरे तुम भी तलाश करना भी स्कूटर ले कर निकलूंगा. का जवान सा सपेरा है. कहीं लगाए मिल जाएगा. दसपंदरह रुपए काम हो जाएगा."

पर मैं देख रहा था कि सुरेश चेहरे पर हवाइयां उड़ रही हैं, वह को क्या तसल्ली देगा?

सवेरे मैं चाय पी कर निकला. में चक्कर लगा लिया पर सपेरा कहीं नहीं आया. लाचार हो कर सेक्टर में सुरेश के घर पहुंचा. दूर से ही की आवाज सुनाई पड़ रही थी. पहुंचने से पहले ही सुरेश को सपेरा गया था और उस ने कार्यवाही शुरू दी थी.

मैं सुरेश के घर नहीं रुका स्कूटर पुलिस स्टेशन ले गया. वहां अफसर से बात कर के एक सिपाही पीछे बिठाया.

जब हम पहुंचे तो सपेरा समाप्त कर चुका था. सांप उस के में था. वही सांप था, मटमैले रंग जो मेरे घर से निकला था, लगभग फुट का.

हम भीड़ में खड़े हो गए. अपना घिसापिटा संवाद बोल रहा "बड़ा जहरीला नाग था. इस का पानी नहीं मांगता..."

सुरेश जब उसे इकक्रीस रुपए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह है आपके परिवार के लिए चुस्ती फुर्ती से भरपूर स्वास्थ्य और अधिक शक्ति!

वॉटरबरीज़ विटामिन टॉनिक महत्वपूर्ण तत्वों का एक संतुलित फ़ार्मूला है। जिसमें वृद्धि और शक्ति के लिए विटामिन और खनिज़ पदार्थ, स्वस्थ रक्त के निर्माण के लिए लोहा, तथा भूख बढ़ाने के लिए भूख-उत्तेजक तत्व मिले हैं। और स्वाद लाजवाब।

अपने परिवार के लिए वॉटरबरिज़ विटामिन टॉनिक खरीदिये— आज ही।

पीला लेबल देख कर लीजिये।

वॉटरबरीज़ विटामिन टॉनिक

पूरे परिवार के लिए सर्वथा परिपूर्ण टॉनिक

Grant.11.HN (R)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मसूड़ों में तकलीफ़ की पहली निशानी

प्लाक (Plaque)
दाँतों और मसूड़ों पर हमेशा जमती रहनेवाली अदृश्य परत, जिसे साफ़ न किया जाय तो प्लाक के कारण टारटार जम जाता है।

टारटार (पपड़ी)
दाँतों की जड़ की ओर जमी हुई पपड़ी से मसूड़ों में सूजन और तकलीफ़... बाद में मसूड़ों व हड्डियों के सिकुड़ने से दाँत गिर भी सकते हैं।

मसूड़ों से खून
कमज़ोर और खोखले मसूड़ों को ब्रश से साफ़ करते समय खून निकल सकता है। इससे दर्द भले ही न हो फिर भी कई गंभीर समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

दाँतों के डॉक्टर कहते हैं:

नियमित रूप से, ब्रश से दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश कीजिए, मसूड़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न से दूर रहिए.

दाँतों की सही देखभाल के लिए हर रात और सवेरे अपने दाँतों की सही ढंग से सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश के लिये फ़ोरहॅन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल कीजिये। साथ ही फ़ोरहॅन्स डबल-एक्शन टूथब्रश इस्तेमाल कीजिये क्योंकि यह दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश के लिये ख़ास तौर से बनाया गया है।

मसूड़े ख़राब तो तन्दुरुस्ती ख़राब

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूड़ों की रक्षा" दाँतों की देखभाल सम्बन्धी रंगीन सूचना पुस्तिका। डाक-खर्च के लिये २० पैसे के टिकट साथ भेजकर इस पते पर लिखिये: फ़ोरहॅन्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बॅग नं. ११४६३, डिपार्टमेंट P-121-180 बम्बई-४०० ०२० अपनी पसंद की भाषा अवश्य लिखिये।

फ़ोरहॅन्

दाँतों के डॉक्टर बनाया हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगा तो मैं ने चिल्ला कर रुकने का इशारा किया. सपेरे ने मेरी तरफ देखा. उस ने मुझे पहचान लिया था. वह प्रश्नसूचक दृष्टि से मेरी ओर देख रहा था. मैं ने कड़क कर कहा, "अब तुम्हारा धंधा नहीं चलने का. बहुत लोगों को बेवकूफ बना कर ठग चुके हो, पहले दिन किसी भले आदमी के घर के पिछवाड़े चुपके से सांप छोड़ जाते हो और दूसरे दिन कमाई कर के ले जाते हो. रात भर बेचारा डर से अलग परेशान रहता है."

सिपाही से मैं ने कहा, "इसे थाने ले चलो."

सपेरे के चेहरे पर एक भी शिकन नहीं. बड़े साधु भाव से बोला, "भलमनसाहत का जमाना ही नहीं रह गया है. जान जोखिम में डाल कर सांप पकड़ते हैं और उलटा हम को ही बेईमान ठहराया जाता है. जरा में चूक हो जाए तो गए काम से. हम सांप छोड़ने क्यों आएंगे? देखा था आप ने कल शाम को हमें यहां?"

मुझे जवाब नहीं सूझा. मैं ने प्रश्न किया, "यह सांप क्या वही नहीं है जो एक सप्ताह पहले तुम ने मेरे घर के पिछवाड़े मे निकाला था?"

वह कड़क कर बोला, "कतई नहीं, वह तो हमारे डेरे पर पिटारी में बंद पड़ा है. अभी तो उस के जहर के दांत भी नहीं उखाड़ पाया. ढक्कन उठाते ही ऐसी फुंकार मारता है कि उसे छेड़ने की हिम्मत ही नहीं होती."

मैं ने कहा, "और वह चौदह सेक्टर में से उस दिन रवि के घर से जो निकला था?"

अब उस ने गौर से मुझे देखा और बोला, "वह तो काले रंग का था."

मैं ने कहा, "झूठ बोलते हो, अभी रवि को बुलाता हूं. सुरेश, फोन तो करो जरा, वह अभी आ कर पहचान लेगा कि यही मटमैले रंग का सांप था या काले रंग का."

वह अकड़ कर बोला, "बुला लीजिए, साहब, पर पिटारी का ढक्कन कौन खोलेगा? हम तो तीन दिन से पहले ऐसे जहरीले नाग से खिलवाड़ करने की हिम्मत नहीं करते."

मुझ पर भूत सवार था. जाने किस जोश में आगे बढ़ कर टोकरी को ठोकर मार कर मैं ने ढक्कन पलट दिया. सांप अलसाया सा पड़ा था. पेट भरा था, आराम कर रहा था. मैं ने टोकरी पलट दी. सांप न तो फुंकारा और न ही भागा. मैं ने उसकी पूंछ पकड़ कर उठा कर हिलाते हुए कहा, "यह जहरीला है ही नहीं. इस के जहर के दांत तो तुम ने पहले ही निकाल रखे हैं."

गेहूं के अंकुर खाइए और स्वस्थ रहिए

अमरीकी प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ डा. एन. बिगमोर का दावा है कि गेहूं के अंकुर खाने से कैंसर सहित सभी रोग दूर हो जाते हैं. डा. बिगमोर के अनुसार, "गेहूं के अंकुर अमृत हैं क्योंकि उन में शरीर की रक्षा के लिए आवश्यक सभी विटामिन प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं."

यही नहीं, गेहूं का शर्बत शारीरिक स्फूर्ति और ताकत प्रदान करता है. इस के लिए फार्म का गेहूं साफ कर एक बर्तन में डालिए और उस से दो गुनी मात्रा में पानी डाल कर लगभग 12 घंटे तक भीगने दीजिए और उस पानी में शहद मिला कर उस का सेवन कीजिए. इस प्रकार गेहूं का पानी रोज पीने से कोई रोग पास नहीं आएगा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह टुकुरटुकुर
था. सिपाही ने उस के चार बेंत लगाए
और गालियां सुना कर थाने चलने को
कहा. वह कभी सिपाही के और कभी
मेरे पांव पकड़ रहा था, दुहाई दे रहा
था. फिर कभी इस प्रकार की कमीनी
हरकत न करने की सौगंध खा रहा था.
उस का कहना था कि बीन बजा कर
सांप का तमाशा दिखाने में पेट भरने
लायक पैसे भी नहीं जुटते.

तमाशाइयों की भीड़ बढ़ती जा रही
थी. बहुत से कह रहे थे, "छोड़ दो
बेचारे को." कुछ खुसरपुसर कर शंका
प्रकट कर रहे थे, "कहीं कल को जह-
रीला नाग महल्ले में छोड़ गया तो...?"

देर होती देख पुलिस इंस्पेक्टर वहीं
आ गया. उस ने भी मरम्मत की.
उस के डेरे का पता पूछा, शाम तक
चंडीगढ़ छोड़ देने का नोटिस दिया और
आगे फिर कभी भी, कहीं से शिकायत

धमकी दी.

उस के चले जाने के बाद
वह इक्कीस रुपए चायपानी के
दिए. उस ने जल्दी में गिनती
की थी और मुंहमांगे इक्कीस
देने को तैयार हो गया था. उस
को रात भर भय के कारण नींद
पाई थी, इसलिए वह बहुत थक

इंस्पेक्टर ने कहा, "बंद
कर देते पर इस के सांप कह
पता नहीं इस के डेरे पर कितने
सांप हैं और कितने पालतू. फिर
में यह सिद्ध करना कि यह कौन
बड़ा मुश्किल था. उतने दिन
की भी देखरेख करनी पड़ती.
को भी तारीख पर पेश होने
गवाह जुटाने पड़ते, दस झंझट

रास्ते में घर लौटते हुए
रहा था कि कहीं वह सांप
जहरीला होता तो.

बच्चों के मुख से

उस दिन मेरे यहां कुछ मेहमान आए हुए थे. हम आपस में बात कर रहे थे और बच्चे वहीं पर शोर कर रहे थे जिस के कारण बातचीत में विघ्न पड़ रहा था. मैं ने अपने बेटे पिंटू से कहा कि सब बच्चों को बाहर ले जाओ और वहीं पर खेलो.

कुछ देर बाद एक बच्चा आया और बोला, "पिंटू ने मुझे मारा है." इस पर मैं ने पिंटू को बुलाया और डांटने लगी.

इतने में बरामदे से एक बच्चे की आवाज आई, "पिंटू, डांट खा कर बाहर आना, फिर खेलेंगे." —संध्या मिश्रा

✦

एक दिन शाम के समय वर्षा हो चुकी थी. मैं अपने पांच वर्षीय भाई के साथ बाहर बरामदे में बैठी थी. पास ही गैराज के लिए ढलवां जगह थी जिस का फर्श सीमेंट का बना था. हमारे देखते ही देखते वह ढलवां जगह सूख
सामने वाली सड़क पूर्णतया

यह देख कर मेरा छोटा
बोला, "दीदी, क्या यह फर्श
है जो इतनी जल्दी सूख गया
अभी गीली है?" —

✦

दादाजी को एक गाना
था. जब भी वह गाना आता
काम छोड़ कर रेडियो के पास
थे.

एक दिन दादाजी
मालिश कर रहे थे. तभी वह
तो मुन्नू झटपट सीढ़ियां चढ़
पहुंचा और हांफते हुए बोला,
दादाजी, आप का गाना आ रहा
नीचे चलिए."

"फिर कभी सुन लेंगे, बेटे
हम नीचे जाएंगे तब तक तो
चुका होगा," दादाजी ने उसे

"गाना कैसे निकलेगा, दादा
रेडियो का स्विच बंद कर
मुन्नू बड़ी चतुराई से बोला.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वास्थ्य के लिए सोना

Lasona

विशेषरूप से तैयार किया हुआ
लहसन का विशुद्ध सत्व

भारत में सबसे ज्यादा बिकने वाली

टॉमस फार्मेस्यूटिकल्स
२३ हमाम स्ट्रीट बम्बई-४०० ०२३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • छाया श्रीवास्तव

पप्स फार सेल

अर, आज यह दरवाजे पर बोर्ड कैसा लगा हुआ है? उत्सुकतावश जरा आगे बढ़ी तो श्रीमती हालदार फव्वारा लिए फूलों की सिंचाई करती दिखीं. मुझे देखते ही उन का संपूर्ण मुखमंडल फूलों की क्यारी जैसा ही खिल पड़ा, "कहां जाता था इतने भोर में?"

"ऐसे ही, मौसम अच्छा लगा तो टहलने निकल पड़ी. अभी तक तो ठंड के मारे उठा नहीं जाता था सवेरेसवेरे," कहतेकहते मेरी निगाहें पुनः उस बोर्ड पर टिक गईं, जो आज पहले दिन उन के गेट पर दिख रहा था. शायद उन्होंने भी मेरी नेत्र दिशा लक्ष्य कर ली थी, बोलीं, "वह बोर्ड आप देखता है. मालूम, तीन दिन पहले हमारा जिनी ने तीन बच्चा दिया?"

"अच्छा? मुझे तो नहीं मालूम. गुडलक." मेरी समझ में नहीं आया कि जच्चा का हाल पूछूं कि बच्चे का. ऐसी खुशखबरी इतने उत्साह से जीवन में पहली बार ही सुनी थी. जिनी उन की छोटी सी प्यारी सी सफेद रंग की कुतिया है, जो हर समय बगीचे के बीच बने सीमेंट के चबूतरे पर पैर फैलाए पड़ी रहती थी. झबरेझबरे बाल, चमकती आंखें, लच्छेदार पूंछ. कुल मिला कर सुंदरी ही कही जाएगी. उसी के प्रसव का शुभ संवाद सुन कर क्षण भर को मेरे मस्तिष्क की भीतरी परतें तक झनझना उठीं.

आह! कुत्ते के बच्चे होने से इतनी खुशी हो सकती है, और वह भी प्रकट की जा सकती है, आज पहली बार जाना.

एक ओर दुर्गाप्रसादजी दहेज लेने की ललक थी दूसरी ओर श्रीमती हाल को पिल्ले बेच कर मोटी कमाने की पड़ी थी. आ क्या वजह थी कि दोनों ही वह न मिल पाया जि उन्हें आशा थी?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं ने तो अपने जीवन में मानव शिशु के जन्म में भी ऐसा उत्साह नहीं देखा था.

एकाएक ही तो मेरी आंखों के आगे अपने घर का वह आंगन घूम गया, जहां लोग चेहरे पर अजीब से भाव लिए बैठे हैं, वातावरण में एक सस्पेंस सा महसूस हो रहा है, रहरह कर डिटौल की गंध नाकों में भर रही है, सब चुपचुप मशीन की सी फुरती से अपनेअपने कामों में व्यस्त हैं. मुझे उधर आते देख कोई चिल्लाया 'भागो, भागो यहां से, ऊपर जाओ...?' और भीतर किसी कमरे से मां के कराहने की आवाज...डर कर ऊपर भाग जाती हूं, किंतु मुंडेर की झिरी में से झांकती रहती हूं, जहां से आंगन साफ दिख रहा है.

तभी नर्स बाहर आ कर कुछ कहती है, और वहां बैठे प्रत्येक प्राणी के चेहरे पर दर्द, घृणा, और भय की एक मिश्रित सी कालिमा छा जाती है. सब का सिर झुक जाता है और पिताजी का सिर तो झुकते-झुकते दोनों घुटनों के मध्य फंस जाता है.

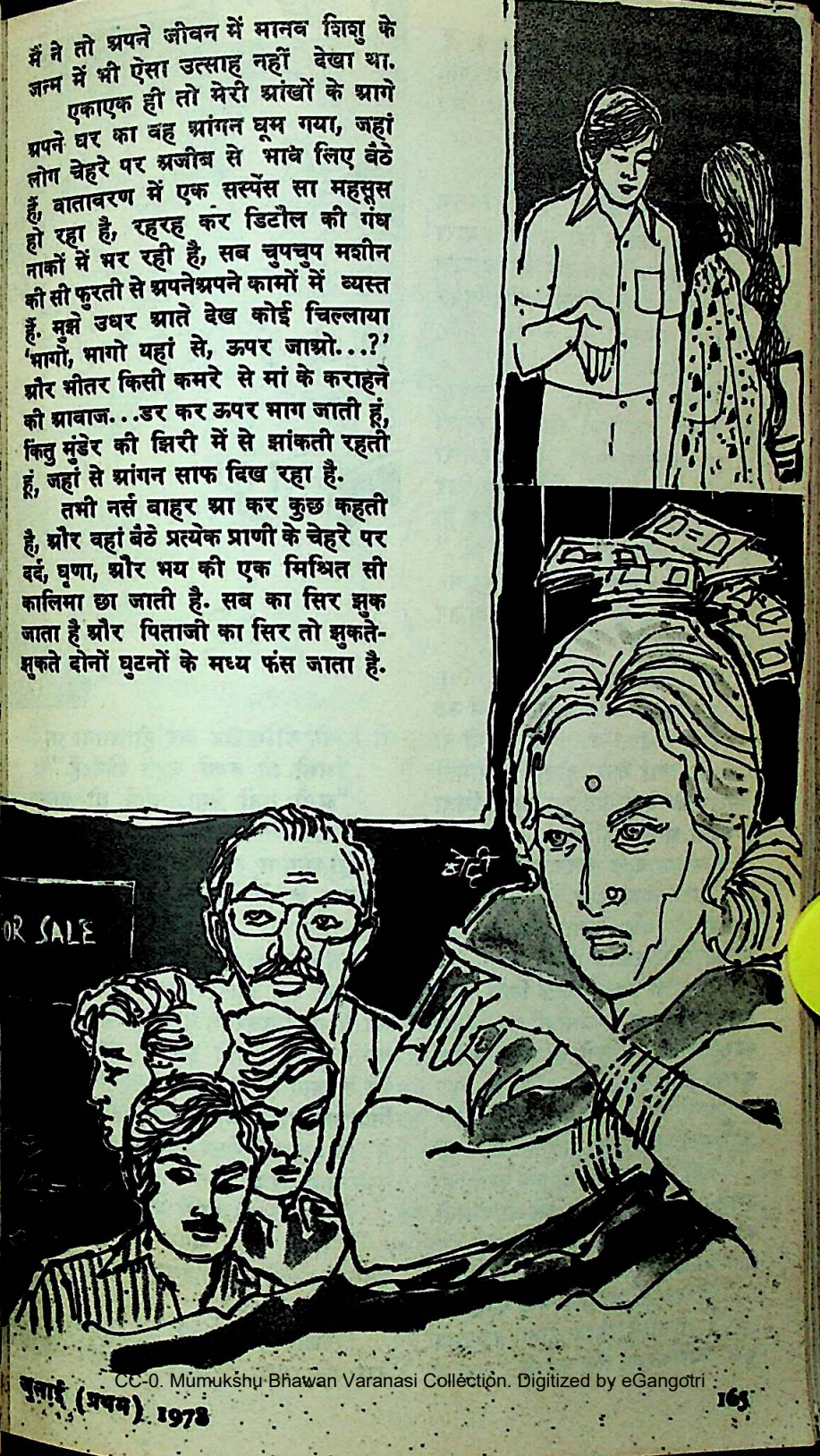

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षण भर में आंगन खाली हो जाता है. उत्साह से दौड़ने वाली चाची के पांव लड़खड़ा जाते हैं...और यह सब इसलिए कि लड़की का जन्म हुआ था. हां, पांचवी लड़की का.

"आप क्या सोचने लगा, मिसेज नीता? आइए, देखिए कितना प्याराप्यारा बच्चा है," श्रीमती हालदार की आवाज से मेरी तंद्रा भंग हुई. "जिनी की तबियत कैसी है?" अचकचा कर मैं पूछ बैठी, जच्चा का हाल.

"जिनी का तो हाल बहुत खराब होता कितना कष्ट हुआ उस को. हमारा नौकरानी ने बहुत मदद किया. हमारा तो जी कैसाकैसा होने को लगता था. आखिर डाक्टर बुलाना पड़ा. अभी तो ठीक है, सब बच्चा लोग भी और मां भी," और मैं ने देखा खूब गद्देदार बिस्तर पर जिनी सोई हुई है. तीनों पिल्ले उस के भीतर ही दुबके हुए हैं.

"आप नहीं जानता, मिसेज नीता, कितना काम बढ़ गया है, रातरात में उठ कर कंबल ओढ़ाना पड़ता है. अभी तो चारों को दवाई देना होता," श्रीमती हालदार के चेहरे पर इस समय चिंता ही चिंता झलक रही थी.

"अच्छा, बहुत सेवाभाव है आप के अंदर, इतनी ज्यादा केयर लेती हैं आप?" जानवर के प्रति इतनी देखभाल की भावना से मैं हतप्रभ थी.

"हम तो अपना ड्यूटी किया, करने वाला तो भगवान है. अभी तो कम से कम पंदरह दिनों तक जिनी को बहुत बढ़िया खुराक देना होगा."

श्रीमती हालदार कहती जा रही थीं, किंतु यहां तो एक परत फिर उखड़ गई, लड़की हुई थी, वह भी पांचवीं. कौन पूछता है खुराक वगैरा. बारह दिन बीतते न बीतते फिर वही गृहस्थी के धंधे...

"देखिए जी, वह बोर्ड 'पप्स फार सेल' हम ने इस वास्ते लगाया होता, हम इतना कुत्ता क्या करेगा, सेल कर देगा. हम भी

तो जिनी को खरीद कर ही लाया चमन

"अभी तो बच्चे बहुत छोटे हैं, गई

"अभी नहीं देगा, बोर्ड तो कल

आने के वास्ते लगाया होता. अभी

बड़ा हो जाएगा, तब देगा," और

हालदार के चेहरे पर एक उत्साह

व्यावसायिकता उभर आई. उन

उत्फुल्ल चेहरे के पीछे कहीं मां का

बुझाबुझा सा चेहरा कौंध उठा. तो

भेद है, ये जानवर के बच्चे हो कर

लाएंगे और लड़की इनसान हो कर

पैसे ले जाएगी. समाज के कानून

नियामक नारी और पुरुष रूपी दो

में से एक को कैसा विवेचना और

युक्त बना दिया है.

"हैलो राज, पेपर्स कैसे हुए?"

"अच्छे हुए, अपना हाल सु

इस वर्ष तो बी. ए. फाइनल है तुम्हारा

"हां, है तो."

"फिर, क्या करने का इरादा

राज की आंखों में प्रश्न से ज्यादा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चमक रहा था था, जिसे देख मैं सकपका गई थी. "अच्छे नंबर आए तो एम. ए. करूंगी," मैं ने संभलते हुए कहा था.

"बस...बस, रहने दो, क्या करोगी अधिक पढ़ कर? जानती हो, कल तुम्हारे पिता मेरे घर आए थे."

"किस लिए?"

"किस लिए' एक लड़की का पिता एक लड़के के पिता के पास किस लिए आता है, नहीं मालूम तुम्हें?" राज के होंठ मुसकरा रहे थे.

"मुझे तो कुछ नहीं मालूम," कहते-कहते मेरे कपोल जिस प्रकार लाल हो उठे थे उस ने मानो सरे आम कह दिया था कि मुझे सब मालूम है. तभी सामने आए रास्ते के मोड़ ने मानो इस परिस्थिति से मुझे उबार लिया.

"देखो, मेरे घर का मोड़ आ गया, मैं चली...गुडबाय," कहतेकहते मैं घर की ओर जल्दीजल्दी चल पड़ी. राज वहीं खड़ा देखता रहा...उस की निगाहों की चुभन मेरी पीठ में बड़ी देर तक महसूस होती रही थी.

राज की शादी का निमंत्रण पत्र देख कर मैं ने मां से पूछा, "तो क्या उन्हें पचास हजार देने वाला कोई मिल गया?"

आज कदम सीधे नहीं पड़ रहे थे. तन-मन में मानो बसंत का प्रथम प्रस्फुटन हुआ हो. उमंग में झूमती सी बेडरूम के सामने से निकली तो पिता के चेहरे पर छाई घोर उदासी से मुझे मानो सांप सूंघ गया. मां की आंखों में अश्रु थे, वह कह रही थीं, "राज की मां तो जहां भी मिलती हैं मेरी लड़कियों की तारीफ करते नहीं थकतीं. अरे, रिश्ता तय कर लेते, लड़का जब सर्विस में आता तब शादी करते."

"तुम तो समझती नहीं...," पिता गरज उठे, "यह सब टालने के बहाने हैं. लड़का पी. सी. एस. में बैठ रहा है, आई. ए. एस. में बैठ रहा है, आदि बहाने हैं. असल बात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह जानते हैं कि मैं अधिक पैसा नहीं दे सकता हूं."

समय का चक्र चलता रहता है. इस की क्रूर गति किसी की प्रतीक्षा नहीं करती है. मानवजीवन इस चक्र तले रौंदा जा कर ही अपनी मंजिल की ओर अग्रसर होता आया है. छः वर्ष बीत गए थे. मुझे वह दिन याद आया, जब सिनेमा देख कर बाहर निकली तो भीड़ में राज पर निगाह पड़ी. तभी राज ने मुड़ कर देखा, "अरे, नीता, तुम? कब आईं? कैसी हो?"

"दोचार दिन ही हुए, आई हूं. ठीक हूं." मैं ने बबलू का हाथ पकड़ते हुए कहा.

"बड़ा प्यारा बच्चा है," राज ने बबलू को गोद में उठा लिया, मैं हंस पड़ी. "अपनी सुनाओ राज, अकेले ही आए हो क्या सिनेमा देखने?"

"अकेला हूं तो अकेले ही आना पड़ेगा."

"तो क्या अभी तक तुम परीक्षाओं में ही बैठ रहे हो?" मैं ने कुछ व्यंग्य-मिश्रित आश्चर्य से कहा.

"नहीं, अब तो अच्छाखासा आफिसर हूं. इन्हीं छुट्टियों में घर आया हूं. पोस्टिंग दिल्ली में हुई है."

"फिर?" मेरी तमाम जिज्ञासाएं मानो इस एक शब्द में सिमट आई थीं.

"फिर क्या, पिता का आज्ञाकारी पुत्र हूं," और राज के होंठों पर एक विद्रूप सी मुसकान खिंच कर रह गई और तब राज ने बबलू को नीचे उतारा, बोला, "बड़ी खुशी हुई तुम से मिल कर, नीता. अच्छा...गुडबाय," और राज जल्दीजल्दी आगे की भीड़ में मिल गया.

मैं खड़ी देखती रह गई. छः वर्षों में ही राज कैसा बुजुर्ग सा दिखने लगा है. तो राज अब तक अकेला है. मन में दूर कहीं कुछ फिरक गया. घर पहुंची तो किसी काम में मन नहीं लगा. कितने दिनों बाद इस वर्ष होली पर मां के घर आ सकी थी, मन उत्साह से भरा हुआ था. किंतु इस समय उमंग के फूले गुब्बारे में जैसे किसी ने कांटा चुभा दिया हो. जब नहीं रहा गया तो झिझक परे ढकेलती हुई पूछ ही "मां, वह जो राज की मां तुम्हारी आदि जाया करती थीं, याद है न

"हां...हां, अच्छी तरह याद तो छूटते ही बोलीं, "अब तो उसे ही नहीं हैं. तीन बेटे ही बेटे हैं से उन का सिर हर वक्त तना है. जब से तेरी शादी की बात पिता गए थे, तब से राज की पहचानना ही छोड़ दिया."

"और राज की शादी का

"राज की शादी क्या होगी, बाप कहीं तय करेंगे तब जैसा लड़का बूढ़ा होता जा रहा हजार से कम की शादी नहीं करते हैं. लड़का जब से गया है बाप तो धरती पर रखते हैं. तेरी बुआ की है न, उस के लिए बात करने गए थे. ड्राइंग रूम में घुसते ही 'कहिए साहब, कैसे आना हुआ' न बंदगी. बैठने तक को नहीं फूफा ने जैसे ही बात शुरू की पूछा, 'कितना खर्च कर सकते हैं फूफा बेचारे सीधेसादे आदमी कोई दसबारह हजार के करते ही राज के पिता दुर्गाप्रसादजी सा मुंह बनाया और बोले, क्लर्कवलर्क का दरवाजा यहां क्या करने आए हैं,' सुन से तेरे फूफा का चेहरा काला यह सब सुन कर मैं खूब पछताई ही उन्हें वहां जाने को कहा."

"राज के दूसरे दोनों भाई अब बड़े हो गए होंगे," मैं ने पूछा, क्योंकि इधरउधर जाते उन्हें भी देखा करती थी. सात का ही अंतर था.

"हां, बड़े क्यों नहीं होंगे, अपना काम कहीं रोकती है. मैं होशियार, दूसरा तो तीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में फेल हुआ, तब जा कर डिग्री मिली. सुना है ए. जी. आफिस में क्लर्क हो गया है."

"क्लर्क?"

"हां, रे...और क्या होगा, अच्छेअच्छे डिग्री वाले आजकल नौकरी बिना घूमते रहते हैं. यह तो दुर्गाप्रसादजी की तमाम जोड़तोड़ लगाने के बाद उसे क्लर्की मिल पाई है."

"आज तो दो ही बच्चे दिख रहे हैं, श्रीमती हालदार...तीसरा कहां गया?"

"क्या बताऊं, मिसेज नीता...एक तो मर गिया. जिनी ने ही काट दिया..."

"जिनी ने, उस की मां ने ही...?" मैं ने आश्चर्य से पूछा.

"हांजी, कैसे क्या हुआ, मालूम नहीं. रात को नींद के वास्ते लाया तब तो तीनों ठीकठाक था. सबेरे में देखा तो एक को काटा हुआ था, जगहजगह से खाल निकला होता."

"श्रीमती हालदार का फूलों की क्यारी सा खिला चेहरा आज दुख के कारण पतझड़ का मैदान हो रहा था? "इतने कष्ट से जन्म देने वाली मां कैसे काट सकती है, कोई दूसरा जानवर होगा," मैं ने अपनी अनाड़ी बुद्धि द्वारा बहुत सोचसमझ कर कहा.

"नहीं जी, हम तो रातरात भर देखभाल करता. मां होने से क्या होता, जानवर तो जानवर ही होता न?" श्रीमती हालदार उदासी भरी मुसकराहट से बोलीं.

जानवर...इनसान...जानवर...मांबाप...बस, मेरा मस्तिष्क क्षण भर को फिर भटक गया, पिछली बार घर गई तो मां ने बताया था कि राज के छोटे भाई ने सिविल मैरिज कर ली है. आखिर कब तक बड़े भाई की शादी के इंतजार में बैठा रहता. उस के पिता तो लड़कियों की फोटो का एलबम बनाए बैठे थे, पर कभी फोटो नोटों पर फिट नहीं बैठती थी तो कभी नोट फोटो पर फिट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बस स्टैंड पर खड़ी एक युवती से बातचीत करने की गरज से एक युवक ने उस से कहा, "माफ कीजिएगा, मैं ने आप को कहीं देखा है और आप से बातें भी की हैं."

युवती मुसकराई और बोली, "आप का अनुमान ठीक ही है क्योंकि मैं यहां के पागलखाने में नर्स हूं."

नहीं बैठते थे.

"लीजिए, चा पीजिए, मिसेज नीता. आप को इतना दुख होता तो हमारा हाल तो आप जान सकता. पूरे पांच सौ का नुकसान हो गिया."

"पांच सौ?" मैं चौंक पड़ी.

"हांजी, इस से कम में तो नहीं देता. तीन साल पहले हम जिनी को पांच सौ में लिया था, अब क्या उतने में भी नहीं देता." श्रीमती हालदार उदास थीं, बेहद उदास. चलते समय देखा, गेट पर जो बोर्ड लगा था 'पप्स फार फाइव हंड्रेड ओनली.' 500 रुपए का नुकसान...राज के भाई की सिविल मैरिज...पचास नहीं तो पच्चीस हजार का नुकसान अवश्य ही पहुंचा था दुर्गाप्रसादजी को. घर आ कर मन विचारों की आंधी से झनझना उठा था, बेचारी श्रीमती हालदार. मनुष्य जानवर से इतनी आशा कर सकता है तो अपने रक्त से क्यों नहीं करेगा. किंतु आशा अलग है, प्रेम अलग. क्या आशा ही सब कुछ है? राज कब तक पिता की आशाओं का शिकार रहेगा? पुत्र के प्रति प्रेम भी तो कुछ महत्व रखता है, प्रेम जो सदैव त्याग मांगता है. प्रेम में निस्वार्थता की खुशबू बसी होती है और आशा में संचय की गंध मात्र.

घर आई तो दरवाजा खोलते ही एक निमंत्रण पत्र पैरों के पास गिर पड़ा जो अब तक दरवाजे में अटका हुआ था. शायद डाकिया खोंस कर चला गया था. लिफाफे से भीनीभीनी खुशबू आ रही थी, फिलीशिया की शादी का. फिलीशिया कौन? स्मृति के तारों को बड़ी देर तक झनकारती रही. अरे हां, अब याद आया, बी. ए. में वह हमारे साथ पढ़ती थी. होस्टल की सब से ज्यादा अराजक लड़की थी. पक्के सांवले रंग की पर छोटी दामिनी सी दमकती दंतपंक्तियां बड़ी ही मोहक लगती थीं. साफ, चुस्त पोशाक में वह सदैव भागती सी ही दिखाई देती थी. पैंतालीस मिनट के पीरियड में शांति और स्थिरता से बैठ सकना उस के लिए असंभव था. पढ़ने में अच्छी थी. अंगरेजी बोलने का उस का अपना ही स्टाइल था.

मुझे याद आया, कभीकभी जब दो पीरियड मिलता तो हम सब दूर बातों के झुरमुट में जा बैठते. जाड़े की मीठी धूप में सोंधीसोंधी मूंगफली खाना और छिलके एकदूसरे पर फेंकना...क्या दिन थे, स्मृति मात्र से रोमरोम में पुलकन सी छा जाती है. ऐसे में ही घरबाहर की, भूतभविष्य की कुछ चर्चाएं भी होती रहा करती थीं. फिलीशिया इन में जम कर भाग लेती. एक बार ऐसे ही जातिप्रथा, धर्म, समाज आदि पर विवाद हुआ था जब कि वह बोल पड़ी, "मैं तो अंतर्जातीय विवाह करूंगी. मैं किसी ईसाई से कभी शादी नहीं करूंगी. ये कितने रूढ़िवादी होते हैं और सचमुच हैं अपने को बहुत फारवर्ड."

"क्या कहती हो तुम," हम में से कई एक साथ चौंक पड़ी थीं.

"क्या मैं गलत कहती हूं? आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रविवार को चर्च जाना आवश्यक है. कितना मन होता है, छः दिनों के बाद एक दिन मिलता है, आराम से सोती रहूं. जब मन हो तब उठूं, खूब गागा कर घंटे भर तक नहाती रहूं, चाय पी कर कोई बढ़िया सा उपन्यास ले कर फिर रजाई में घुस जाऊं. अहा! कैसा मजा रहे. लेकिन यहां तो रविवार को साढ़े आठ बजे से ही सब दरवाजा खुलवाने लगती हैं कि चर्च चलना है, जल्दी उठो. बस, फिर वही सब दिन की तरह रविवार का दिन भी...सच कहती हूं, मैं तो बोर हो जाती हूं. अरे, चर्च न जाऊंगी तो...तो क्या धर्म चला जाएगा? तुम लोग क्या रोज मंदिर में जाती हो?" वह बड़े ही भोलेपन से पूछती.

"नहीं तो."

"हर रविवार को?"

"नहीं, ऐसा कोई नियम नहीं है. जब जिस की श्रद्धा हो, जा सकता है. कितने ही तो कभीकभी जाते हैं."

"अहा! तुम सब कितने स्वतंत्र हो."

"स्वतंत्र? क्या बकती हो तुम?"

"हां, और क्या. ईश्वर पर विश्वास और धर्म के नियम सच्चाई, ईमानदारी, दया, करुणा आदि तो हृदय के अंदर से पैदा होने वाली सच्चाइयां हैं, उन्हें बिना किसी आडंबर के भी अपने अंदर लाया जा सकता है. मैं तो सच कहती हूं, जब होली फादर प्रेयर करते होते हैं, और सब सिर झुका दोहरा रहे होते है तो मैं सारे हाल का चुपकेचुपके निरीक्षण करती रहती हूं. सब के चेहरे पर दौड़ने वाला शून्य सा भाव, मुझे तो कभीकभी बड़ी जोर की हंसी आने लगती है. बड़ी मुश्किल से रोकती हूं...तुम लोग इन बंधनों से मुक्त हो, इसी लिए स्वतंत्र कहा था." और उस समय मुझे लगता दुनिया में बंधन भी कितने प्रकार होते हैं. हम जिन्हें मुक्त समझते थे, वे कितने बंधन में पड़े हैं.

'जरा देखूं तो, किस के साथ शादी हो रही है इस की.' निमंत्रण पत्र उलटपलट कर देखा, विनयकुमार. नाम तो ईसाई ढंग का नहीं है. तो क्या फिलीशिया

आपके ट्रांज़िस्टर के लिए
सबसे बुलंद आवाज़
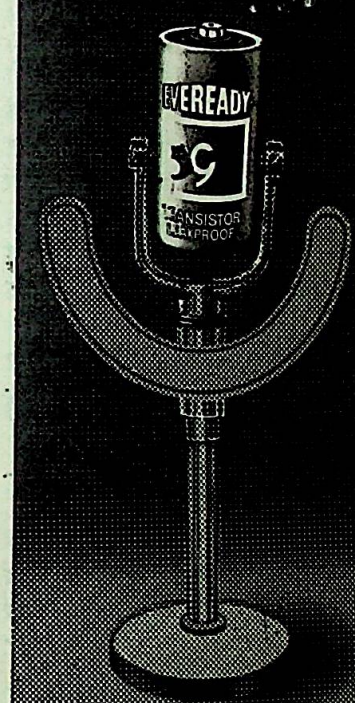

लाल एवरेडी
Rediffusion/uc/692-b HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने अपनी जिद पूरी कर ली है? और शादी के मामले में ऐसा साहस भरा कदम उठाने की बात से, संस्कारों से पिटापिटा सा मेरा व्यक्तित्व एकबारगी सिहर सा उठा. न जाने कितनी देर निमंत्रण पत्र उलटती-पलटती रही थी. सहसा स्कूटर की आवाज से चौंकी. पतिदेव आफिस से आ गए थे और यंत्रचालित सी मैं अपने कर्त्तव्य-पालन में व्यस्त हो गई.

निश्चित समय पर हम पार्टी में पहुंचे. जिस स्कूल में फिलीशिया पढ़ाती थी, उसी के मैदान में छोटा—सलोना सा, किंतु भव्य आयोजन था. शामियाना लगा था, मेजकुरसी पर आधुनिक ढंग से क्राकरी सजी थी, होटल के बैरे कलफदार साफे और चमकदार पोशाक में इधर से उधर भागते नजर आ रहे थे. शामियाने के द्वार पर ही वरवधू अपनी मुसकान से हर एक का स्वागत कर रहे थे. स्टीरियो की मधुर गूंज वातावरण को और भी रोमांटिक बनाए दे रही थी.

फिलीशिया के हाथों में उपहार का डब्बा पकड़ाने के बाद जैसे ही मैं ने वर की ओर देखा, ठगी सी खड़ी रह गई. "विनय," अनायास ही मुंह से निकल गया.

"नीता दीदी, आप? आइए...आइए." विनय ने आगे बढ़ कर मेरा हाथ पकड़ लिया, और मुझे लगा जैसे विनय के डूबते हुए हृदय को अचानक ही मेरा सहारा मिल गया है क्योंकि उस के घर का और कोई इस शादी में शरीक नहीं हुआ था.

विनय के चुनाव पर मुझे बहुत गर्व हुआ. झूठे रूप की माया के पीछे न भाग, अपनी जीवनसंगिनी बनाने के लिए इस ने अत्यंत ही कुशल, कुशाग्र और मेहनती लड़की का चुनाव किया था. बीच में मौका लगा तो मैं ने पूछा, "विनय, यह सब कैसे, क्या देख रही हूं मैं? घर के सब लोग कहां हैं?"

"दीदी, कोई नहीं आया है. विवाह के मेरे निर्णय के विरुद्ध पिताजी ने इस कदर बुराभला कहा कि आखिर मुझे घर छोड़ कर आना पड़ा. यही हाल फिलीशिया का हुआ है. तुम्हीं बताओ दीदी, फिलीशिया ने आज हमारे घर की बहुओं जैसी सज्जा अपनी खुशी से की है, क्या वह हमारे घर में एडजस्ट करने योग्य नहीं है?" विनय की दीन आंखों का दर्द समझते हुए भी मैं कुछ न कह सकी.

अब कौन कहे उस से कि यह लड़की ऐसे घर के लिए तरसती रही है, एडजेस्ट ही नहीं, वह तो घर को स्वर्ग बना देने वाली है. पार्टी में संगीत था, भीड़ थी, हंसी और कहकहे भी थे, लेकिन इन सब के पीछे फिलीशिया और विनय की आंखों में उमड़ती वह घटा भी थी जो भीड़ के छंटते ही बरसने के लिए बेचैन थी. आह, कितना बड़ा अन्याय है. कब्र में पैर लटकाए बैठे बुजुर्ग लोग इन खिलती कलियों के उल्लास को अपना आशीर्वाद भी न दे सके, जब कि इस के अतिरिक्त वे और इन्हें दे ही क्या सकते हैं.

पार्टी से लौटतेलौटते रात के ग्यारह बज गए. बसंत का मौसम था. हवा में मंद-मंद ठंडक थी. बसंती हवा स्पर्श मात्र से प्रफुल्लित कर रही थी. स्कूटर घर के समीप पहुंचा, घर के सामने एक बहुत बड़ा

पति का पुराना मित्र

रोहित : मीना, तुम्हारा वकील तुम्हें तलाक दिलवाने की कितनी फीस ले रहा है?

मीना : अरे, वह एक भी पैसा नहीं ले रहा है, क्योंकि वह मेरे पति का मित्र है. वह मेरी भलाई के लिए ही ऐसा काम कर रहा है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खड्ड है, खड्ड के पास दो व्यक्ति दूर से दीखे, चोर की संभावना से मन आतंकित हो उठा पर पास आते ही पहचान गई, मिस्टर हालदार. स्कूटर रोक दिया, इतनी रात गए इस खड्ड में क्या हो रहा है? उत्सुकता सहज ही वहां तक घसीट ले गई. देखा, साथ में उन का बड़ा लड़का और नौकरानी भी थे. लड़का फावड़े से मिट्टी खोद रहा था और हालदार महोदय टार्च दिखा रहे थे. चारों ओर गहरा अंधेरा और रहस्यमय सन्नाटा छाया था.

"अरे...हालदार साहब, क्या बात है?" पतिदेव ने पूछा, "कुछ खो गया है क्या?"

"आइए...आइए, भाईसाहब, बात यह है कि अभीअभी हमारा दूसरा कुत्ता का बच्चा भी मर गिया. वह देखिए न," और टार्च की रोशनी नौकरानी की ओर फेंकी. तो दिखाई दिया. नौकरानी के हाथों में रुई का गोलगोल सा ढेर टार्च की रोशनी में चमक उठा, "ओह, कितना प्यारा पिल्ला है, कैसे मर गया?"

"अब तो बड़ा हो गया था न, अपनी मां के साथसाथ घूमता था. स्ट्रीट डाग ने झटक कर दिया...हर समय देखना तो बड़ा मुश्किल होता..." हालदार साहब की आवाज में दर्द था.

"बड़े अफसोस की बात है, कैसे प्यारे बच्चे थे."

"हां, भाभीजी, हम सब को बहुत दुख है, पर क्या करेगा? इतना केयर किया, रुपयापैसा भी खर्चा किया, पर सब बेकार हो गिया.

गड्ढा खुद चुका था. नौकरानी ने रुई के गाले को गड्ढे में रखा और लड़के ने फावड़े से मिट्टी चढ़ा दी.

रात घंटों में सो नहीं सकी. विनय की शादी...दुर्गाप्रसादजी का फिर पच्चीस हजार का नुकसान हो गया...पप्स... हालदार...गड्ढा...नुकसान... फायदा...

घर में चहलपहल थी. इस बार दशहरे की छुट्टियों में सब बहनें

आपके ट्रांज़िस्टर के लिए
अधिक समय तक साथ निभानेवाली संगिनी
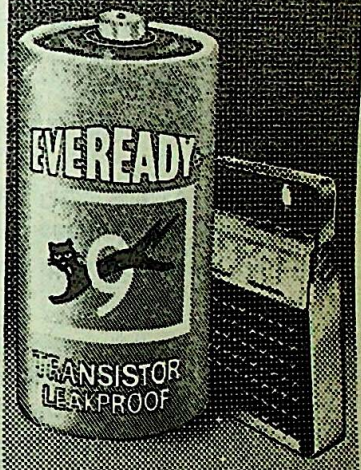

लाल एवरेडी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
Rediffusion/uc/693-6 HN

इकट्ठी हुई थीं. पिता अपने दामादों के बीच बैठे बातों में मशगूल थे. सब उन का आदर करते थे. मां रसोई में व्यस्त थीं. सब लड़कियां उन का हाथ बंटा रही थीं. रिश्ते में जो जिस की साली लगती थी, अपने जीजा से हंसीमजाक भी करती जाती थी. घर क्या था खुशबू से गमकता गुलदस्ता लग रहा था. बड़े फूल थे, छोटे फूल थे, कठोर फूल थे, नरम फूल थे, लाल थे, पीले थे पर सब गुलदस्ते की मर्यादा के भीतर थे, तभी तो सब विहंस रहे थे, महक रहे थे.

तभी राज का मझला भाई, जो ए. जी. आफिस में क्लर्क था, अचानक आ पहुंचा. उस के अप्रत्याशित आगमन से वातावरण एकाएक गंभीर हो उठा. हम सब उस की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखने लगे. उस ने पिताजी की ओर लिफाफा बढ़ाते हुए कहा, "चाचीजी, यह निमंत्रण पत्र है, बड़े भइया की शादी में आप सब लोग आइएगा."

"बैठो, बेटा, चाय पियो," मां ने रसोई से आते हुए कहा.

"नहीं, चाचीजी, बहुत जल्दी में हूं. सारा काम पड़ा है और समय बहुत कम है...अच्छा...नमस्ते..." और वह चला गया.

कुछ देर को घर में निस्तब्धता सी छा गई. मां, पिताजी, मैं, बहनें सभी भीतर ही भीतर मानो किसी 'जोड़-घटाने' के सवाल में उलझ गए थे. आखिरकार मां बोलीं, "देखा, हवा में उड़ने वाले सदा मुंह के बल ही धरती पर गिरते हैं. अब यह हालत हो गई है कि कोई लड़की वाला उन के दरवाजे जाता ही नहीं. जो कुछ रिश्ते आते भी थे वे ऐसी लड़कियों के, पढ़ाई करतेकरते या प्रतीक्षा करतेकरते, जिन की उमर अधिक हो गई थी."

"तो क्या मां उन्हें पचास हजार देने वाला कोई मिल गया?" मैं ने पूछा.

"कौन देगा पचास हजार? नौकरी-पेशे वाला तो नहीं दे सकता. कोई बिज़नेस मैन ही दे सकता है या फिर कोई काला धंधा करने वाला. अब तो दुर्गाप्रसाद के बोलने का ढंग ही बदल गया है. कितने दबंग बाप ने तो कह दिया, 'साहब, झट-पट कर डालिए शादी, नहीं तो यह लड़का भी हाथ से निकल जाएगा. जमाना बदल गया है, अब आप का लड़का ही नहीं, एक बड़ा आफिसर है.' अब घरघर पढ़ीलिखी डाक्टर इंजीनियर बनने लगे हैं," मां मानो अपनेआप में ही बड़बड़ा रही थीं.

निमंत्रण पत्र उलटपलट कर देख रही थी. मैं लड़की का नाम देख कर चौंक पड़ी, नलिनी...पिता का नाम विनय प्रसाद...अरे, यह तो मेरे से सीनियर ग्रुप में थी. मुझे याद आया, स्कूल में रोज प्रार्थना में चार लड़कियां पहले आती थीं फिर सारी लड़कियां उसे दोहराती थीं. उन चारों में वह भी हुआ करती थी. उस की आवाज बड़ी सुरीली थी.

"तू जानती है इसे?" मां ने पूछा.

"हां मां, यह तो कितने साल से अध्यापिका का कार्य कर रही है. हम लोगों से बहुत सीनियर थी. वक्तृत्व में एडमीशन के लिए गई थी, वहीं मुलाकात हुई थी."

"कैसी है, देखने में बहुत सुंदर? क्या?" मां ने कुछकुछ ईर्ष्यामिश्रित वाणी में पूछा.

"बस, साधारण है. अब तो सिर में सफेद बाल चमकने लगे थे, मेकअप के बावजूद से गालों की शिकन झांकझांक जाती है."

"देखा...लड़की ने इतने साल नौकरी कमा कर जमा किया, तब जा कर विवाह हो रहा है. सुना था, अब दुर्गाप्रसाद पचास हजार से उतर कर पंद्रह हजार पर आ गए हैं और सुनते हैं वह एलबम जो में बंद कर दी है क्योंकि उस में जिन फोटो हैं वे सब दोदो बच्चों की मां बन चुकी हैं," मां कहती जा रही थीं और मैं आंखों में दूर कहीं हलवाई साहू टार्च कौंध रही थी, जिस में रुई का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके ट्रांज़िस्टर के लिए

अरताज

लाल एवरेडी

लाल एवरेडी बैटरियों में सरताज है, क्योंकि :

यह आपके ट्रांज़िस्टर के लिए सूक्ष्म ग्रहण शक्ति है

लाल एवरेडी से आप दिन प्रति दिन अपने ट्रांज़िस्टर पर शार्टवेव स्टेशनों को भी ऊंची और बिल्कुल साफ आवाज में सुन सकते हैं। क्योंकि सिर्फ एवरेडी में ही एक विशेष रासायनिक मिश्रण ई एम डी होता है जो आपके ट्रांज़िस्टर को ऐसी संवेदनशीलता देता है।

यह आपके ट्रांज़िस्टर के लिये सबसे बुलंद आवाज है

यह आपके ट्रांज़िस्टर को बेजोड़ बुलंद आवाज देती है—ज़ोरदार, शानदार, गरजदार आवाज। दरअसल लाल एवरेडी इतनी शक्तिशाली है कि आपके ट्रांज़िस्टर को 'वाल्यूम' स्थिति समान होने पर भी दूसरी किसी भी बैटरी से अधिक बुलंद आवाज देती है।

यह आपके ट्रांज़िस्टर के लिये गारंटी है

भारत की एकमात्र गारंटीशुदा बैटरी। आपके ट्रांज़िस्टर को उस नुकसान से बचाती है जो एक लीक करनेवाली बैटरी कर सकती है। क्योंकि इस पर एक विशेष रूप से बनायी गयी वरण-अवरोधक जैकेट लगी रहती है। इसलिये आप जब भी बैटरी बदलें, यह गारंटी देलना न भूलें।

यह आपके ट्रांज़िस्टर की अधिक समय तक साथ निभाने वाली संगिनी है

बैटरी जो ज़्यादा चलती है। अधिक समयतक काम देने के लिये शक्ति से भरपूर। लाल एवरेडी से आप दिन प्रति दिन, अधिक समय तक संगीत का आनंद उठा सकते हैं। इसका मतलब है बिना अतिरिक्त खर्च के बिक्री मारती पर आपके लिये अधिक समय तक संगीत का आनंद।

इसलिए अपने ट्रांज़िस्टर को सरताज की ही शक्ति दीजिये—लाल एवरेडी की।

UNION CARBIDE

Rediffusion/uc/689-b HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्हें भी आजमाइए

जब बाजार में टमाटर नहीं मिलता या बहुत महंगा मिलता है उस समय भी आप अपने घर में बनने वाली सब्जियों तथा व्यंजनों में टमाटर डाल कर उस का लुत्फ उठा सकती हैं. आप को बस, इतना करना होगा कि जिस समय बाजार में टमाटर सस्ता हो उस समय बाजार से ला कर टमाटर के छोटेछोटे टुकड़े कर लें और इन टुकड़ों को धूप में सुखाने के लिए फैला दें. अच्छी तरह सूखने के बाद उन्हें कूट लें और एक साफ शीशी में भर लें. वक्त जरूरत इस का प्रयोग करें. आप की सब्जी में वही स्वाद आएगा जो टमाटर के प्रयोग से आता है. यह प्रयोग आप अन्य सब्जियों मटर, गोभी, मूली आदि के साथ भी कर सकती हैं.

—कंचन

टमाटर (पके हुए) ज्यादा दिन रखने से सड़ने का डर रहता है. अगर आप टमाटर अधिक दिन तक ताजे रखना चाहें तो टमाटर के मुंह पर (डंठल अलग कर के) एकएक बूंद मोम गिरा दें. इस से टमाटर अधिक दिन तक ठीक बन रहेंगे.

काले गुलाब जामुन बनाने में अधिकांश व्यक्ति मैदा और मावा का मिश्रण बनाते हैं. यदि आप मैदा के स्थान पर गीले चावल बारीक पीस कर मिलाएं तो एक नया ही स्वाद आ जाएगा.

कुछ लोग खाने में तेल अधिक इस्तेमाल करते हैं. अगर आप तेल को घी का रूप देना चाहें तो आम के मौसम में कच्चे आम की तीनचार गुठलियां तेल चढ़ा कर डाल दें या फिर इमली में नमक लगा कर डाल दें. इस से तेल का पीलापन एकदम खत्म हो जाएगा.

—अलका अग्रवाल

मटोल ढेर खड्ढ के अंदर चमक रहा था.

दसबारह दिन की छुट्टियां बिता कर मैं लौट आई थी. अभी सवेरे की धुंध सी छाई हुई थी कि ट्रेन अपने मुकाम पर पहुंच गई. रिक्शे में सामान और बच्चों के साथ चल पड़ी घर की ओर, किंतु अभी भी दशहरे के मेले और रामदल की चौकियां आदि आंखों के सामने घूम रही थीं. ये त्यौहार एकरस बहती जीवनधारा में कैसा जीवन फूंक देते हैं. रिक्शा मंथर गति से चल रहा था. मेरे घर के थोड़ी देर पहले ही हालदार साहब का घर पड़ता था. देखा, सवेरेसवेरे अपने बगीचे के बाहर श्रीमती हालदार जिनी की चेन पकड़े चहलकदमी कर रही हैं.

"नमस्कार जी," वह पुकारती हुई बोलीं, "अभीअभी ट्रेन आया जान पड़ता, हम लोग भी कल रात ही कलकत्ता से आया."

"पूजा कैसी रही?" मैं ने ही पूछा.

"बहुत मजा किया हम सब लोग. कलकत्ता का दुर्गा पूजा तो बस पूछिए मत, हिंदुस्तान भर में एक ही होता."

"यह क्या, जिनी को अकेले घुमा रही हैं, उस का बच्चा...कहां गया?"

"वो तो दे दिया छुट्टी पर जाने से पहिले ही. आप तो जानता, मिसेज नीता, दो बच्चा तो मर गिया. हमारा कितना नुकसान हो गिया. हम तो उसे बहुत सस्ता में दे दिया. खाली पच्चीस रुपए में. हालदार साहब बोला, दे डालो जितना में भी कोई ले, नहीं तो यह भी मर जाएगा तो क्या होगा. कलकत्ता जिस दिन गिया न, उसी दिन दे दिया था."

मैं ने देखा, गेट पर वह बोर्ड अब नहीं था, किंतु मुझे एकाएक लगा कि वह बोर्ड किसी के गले में लटका हुआ है...हां बोर्ड के ऊपर से झांकता चेहरा...यह तो दुर्गाप्रसादजी का चेहरा है, जिन के गले से लटकता बोर्ड सीने तक बिछ गया है और उस पर के अक्षर नियोन लाइट से चमकते हुए दीख रहे हैं, 'पप्स फार सेल.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • बद्रीप्रसाद जोशी

हिंदी फिल्मों को अपना कहने वाला कोई नहीं

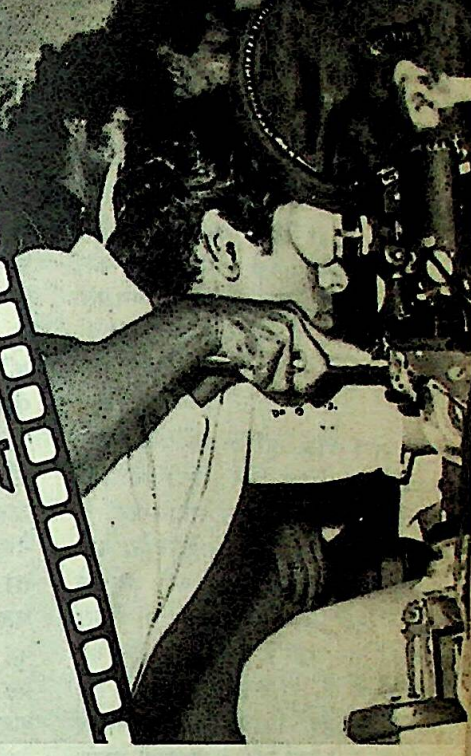

भारतीय सिनेमा का विकास बड़ी मामूली स्थिति में हुआ था. दादा साहब फालके की तरह कई कलाप्रेमियों ने घर के बरतन, जेवर बेच कर इस के विकास में योगदान दिया था. सरकारी संरक्षण से तो फिल्म उद्योग सदैव अछूता ही रहा. जैसेजैसे सिनेमा उद्योग का विकास होता गया, सरकार के लिए सोने का अंडा देने वाली मुर्गी बन कर सिनेमा उद्योग सदैव सेवा में प्रस्तुत रहा. मनोरंजन कर के नाम से लगाया गया कर प्रति वर्ष बढ़ता ही गया. फिर एक्साइज लेवी (उत्पादन शुल्क) के नाम से कर लगाया गया. जिस तरह से हर बजट में तंबाकू, बीड़ी, सिगरेट और शराब पर कर का प्रतिशत बढ़ता जाता है, वैसे ही फिल्मों पर भी प्रयत्यक्ष अप्रत्यक्ष कर बढ़ते ही गए. केंद्रीय सरकार ने एक्साइज और न्यूजरील हायर के नाम पर तो राज्य सरकारों ने मनोरंजन कर के नाम पर और नगरपालिकाओं ने तो टैक्स और औक्ट्राय (चुंगी) के नाम पर कर लगाते समय कभी भी उद्योग के विकास पर ध्यान नहीं दिया.

आजकल प्रादेशिक सरकारों ने स्थानीय फिल्म उद्योग के विकास के लिए कुछ कदम उठा कर हिंदी फिल्म जगत को किसी भी क्षेत्र का उद्योग न कहलाने के योग्य बना दिया है. बंगला, गुजराती, पंजाबी, मराठी फिल्मों को आर्थिक सहायता मिल रही है और हिंदी फिल्में इन्हीं क्षेत्रीय भाषाओं के फिल्म प्रांगणों में

> भारतीय फिल्म उद्योग सरकार के लिए सोने का अंडा देने वाली मुर्गी है. फिर भी सरकार उस की उपेक्षा क्यों करती है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकसित हुई. फिर भी आज हिंदी फिल्मों के लिए हालीवुड समझी जाने वाली बंबई नगरी में हिंदी फिल्में विदेशी हैं. कलकत्ता भी हिंदी फिल्मों का गढ़ रहा है और मद्रास भी. सभी अहिंदी भाषी प्रदेशों में हिंदी फिल्मों का विकास हुआ. लेकिन आज वहां हिंदी फिल्में पराई हो गई हैं और हिंदी क्षेत्रों में तो न आज उन्हें कोई अपना समझता है न कल कोई समझता था.

हिंदी फिल्मों से लगाव नहीं

उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार जैसे हिंदी प्रदेशों में हिंदी फिल्मों के लिए कोई लगाव नहीं है. इन प्रदेशों की सरकारें इन्हें अपना नहीं समझतीं फिर दूसरे प्रदेश क्यों समझने लगें? हिंदी भाषाभाषियों का तो केवल एक ही नारा रहा है कि हिंदी उन की राष्ट्रभाषा है. दूसरे प्रदेशों की तरह इन राज्यों का हिंदी फिल्मों से कोई लगाव नहीं है, इसी लिए हिंदी भाषाभाषी राज्य हिंदी फिल्मों को बंबईया फिल्में कहते हैं. दूसरे प्रदेशों में अपनी भाषा की फिल्मों के लिए अलग विभाग खोल दिए गए हैं. उन के निर्माण के लिए ऋण की सुवधाएं दी जा रही हैं और प्रादेशिक भाषा में बनी फिल्मों को सब तरह से प्रोत्साहन दिया जा रहा है.

आंध्र प्रदेश में वहां बनी फिल्म पर 1,50,000 रुपए तक की आर्थिक सहायता दी जाती है. गुजराती फिल्मों को छः सप्ताह तक कर मुक्त रहने की सुविधा प्राप्त है.

महाराष्ट्र सरकार मनोरंजन कर का एक भाग वापस निर्माता को दे देती है इस से वह दूसरी फिल्म प्रारंभ कर सकता है. पश्चिमी बंगाल की सरकार रंगीन हिंदी फिल्मों पर 25 पैसा प्रति टिकट सरचार्ज लगा कर 5 करोड़ की कलर लैब स्थानीय फिल्मों के लाभार्थ लगाने वाली है. साथ ही बंगला फिल्मों को ऋण सुविधा भी दी जा रही है.

भारत सरकार का फिल्म्स डिवीजन 1948 में बना था. तब से सरकारी फिल्में अनिवार्य रूप से मुफ्त दिखानी पड़ती हैं और न्यूजरील का तो किराया भी देना पड़ता है. फिल्म्स डिवीजन सरकार के प्रचार तंत्र का एक भाग है और उस की फिल्मों का किराया देता है फिल्म उद्योग. जिस छविगृह में फिल्म चलती है और जो वितरक फिल्म प्रदर्शित करता है, उसे न्यूजरील हायर के नाम से फिल्म की आवक में से फिल्म्स डिविजन को पैसा देना होता है.

फिल्म वित्त निगम की स्थापना 1960 में हुई थी. निगम की स्थापना का उद्देश्य अच्छी और सुरुचिपूर्ण फिल्मों को ऋण देना रखा गया था. अब निगम स्वयं न तो फिल्म बनाता है और न ऋण देता है. वह केवल विदेशी फिल्में आयात करने का लाइसेंस प्राप्त कर के बाक्स आफिस पर खरी उतरने वाली फिल्मों का आयात करता है और वितरण भी स्वयं कर के देशी फिल्मों से प्रतिस्पर्धा करता है. जिस उद्योग से निगम जिंदा है, उसी उद्योग की वह जड़ें खोदता है. फिल्म मेलों का आयोजन करता है और फिल्म उद्योग को ही उस से बाहर रखता है.

निगम को उद्योग में कच्चे माल की खपत पर 2.5 प्रतिशत मिलता है, जो 30 लाख के करीब बैठता है. इस के अलावा निगम 15 लाख रुपए के करीब हमारी फिल्मों के निर्यात पर भी वसूल करता है.

फिल्म वित्त निगम के बाद फिल्म उद्योग का उद्धार करने के लिए हिंदुस्तान फोटो कंपनी आ गई, जिस ने कच्चे माल की दरों को विदेशी माल से भी महंगा कर दिया.

हिंदुस्तान फोटो कंपनी ने जंबोओरो रोल को काट कर देना प्रारंभ किया. इस का उलटा परिणाम निकला. ओरो स्टाक का मूल्य अधिक हो गया. सोचा यह गया था कि उद्योग को कच्चा माल सस्ती दर पर मिलेगा. परफोरेशन में भी हिंदुस्तान फोटो कंपनी ने कोई सुधार नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

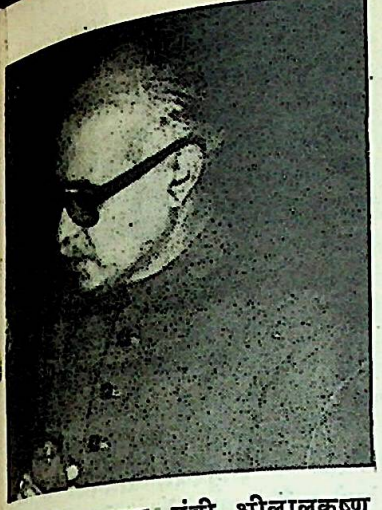

सूचना और प्रसारण मंत्री श्रीलालकृष्ण अडवाणी : कोरे आश्वासन

किया और समाचारपत्रों के माध्यम से अपना घुआंधार प्रचार शुरू कर दिया. उसे प्रचार करने की क्या आवश्यकता थी? माल तो मिलता नहीं. फिर खपत केवल फिल्म उद्योग में ही होती है और माल भी परमिट पर ही मिलता है. इस फिजूलखर्ची का असर भी फिल्म उद्योग पर ही पड़ता है.

1963 में चलचित्र निर्यात निगम की स्थापना की गई. भूतपूर्व मंत्री श्री मनुभाई शाह ने आश्वासन दिया था कि निगम विदेशों में फिल्म के निर्यात के नए क्षेत्रों की खोज करेगा और उद्योग की सहायता करेगा. तब यह आशा की गई थी कि यह निगम विदेशी मुद्रा कमाने में तो सहायक होगा ही, साथ ही विदेशों से नए उपकरणों का आयात कर के हमारे फिल्म निर्माण के स्तर को भी विश्व के समकक्ष खड़ा कर देगा.

फिल्म उद्योग के साथ कंधे से कंधा लगा कर उस की मदद करने का दावा करने वाले फिल्म वित्त निगम इंपेक और हिंदुस्तान फोटो कंपनी आज फिल्म उद्योग के सिर पर मूंग दल रहे हैं. उन के भरणपोषण का सारा दायित्व अब फिल्म उद्योग के सिर आ गया है.

फिल्म उद्योग को 20 हजार फिल्म रोल की हर महीने आवश्यकता होती है लेकिन आज तक कभी निर्माताओं को कच्चा माल समय पर नहीं मिला. फिल्म के रोल केवल फिल्में बनाने के ही काम आते हैं, दूसरे किसी व्यापार में उन का कोई उपयोग नहीं है. फिल्म निर्माता स्वयं एक्सपोर्टर भी हैं और उन्हें विदेशी मुद्रा कमा कर देनी होती है. फिर उन्हें ही क्यों नहीं आयात का लाइसेंस दे कर फिल्म रोल मंगवाने दिया जाता?

फिल्म के कच्चे माल के कंट्रोल की आवश्यकता बिलकुल समझ में नहीं आती. एक्सपोर्ट की गारंटी निर्माता को बैंक में बौंड भर कर देनी होती है. फिर भी उसे कच्ची फिल्म के लिए महीनों इंतजार करना होता है. परमिट लेना होता है. रिलीज आर्डर लेना होता है. चीफ कंट्रोलर फिल्म, वित्त निगम और इंपेक के चक्कर लगाने पड़ते हैं. न तो निर्माता किसी को कच्ची फिल्म बेच सकता है और न उसे अधिक इस्तेमाल कर सकता है. न उसे छिपा कर ही रख सकता है, क्योंकि स्टोरेज सुविधा के बिना कच्ची फिल्म रखी भी नहीं जा सकती. फिर भी निर्माता को पांच डिब्बों के लिए पांच चक्कर लगाने पड़ते हैं और उन की शूटिंग कर लेने के बाद यह सर्टिफिकेट देना होता है कि वह कच्ची फिल्म समाप्त हो गई. तब दूसरे डिब्बे मिलते हैं. अगर यह सब न हो तो फिल्म वित्त निगम के लिए कुछ काम करने के लिए रहता ही नहीं है.

इस तरह विश्व में फिल्म निर्माण में अद्वितीय स्थान प्राप्त भारतीय फिल्म उद्योग नौकरशाही के चंद नुमाइंदों के हाथों की कठपुतली बना हुआ है.

हमारा विदेश व्यापार

इंपेक विदेशों से व्यापार में सहायक बन कर आया था. लेकिन आज स्थिति यह है कि वह स्वयं तो कुछ करता नहीं लेकिन जो निर्माता निर्यात के लिए विदेशी व्यापारी से संबंध करता है, उसे रद्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करने का उस को अधिकार है. उस अनुबंध को रद्द करने और उसी कीमत में उस फिल्म को खरीद लेने का अधिकार भी उसे प्राप्त हैं. अब देखिए, क्या इंपेक उस समय सो रहा था, जब निर्माता ने फिल्म बेची? जब फिल्म बिक गई और निर्माता ने इंपेक को सूचना दी, तब इंपेक की ओर से कहा गया, "इसे तो मैं खरीदूंगा और खरीद कर बेचूंगा." किस को? शायद उसी व्यापारी को. इस से तो यही अच्छा है कि विदेशी व्यापार का सरकारीकरण ही कर दिया जाए.

मान लीजिए, आप ने किसी विदेशी व्यापारी को अपनी फिल्म बेची. फिर क्या आप उसी फिल्म को दूसरे व्यापारी को आफर कर सकते हैं? लेकिन इंपेक करता है और केवल यह दिखाने के लिए कि निर्माता अपनी चीज को कम भाव पर बेचता है और इंपेक उस का हमदर्द है, उस को अधिक दाम दिलवाता है.

होता यह है कि इंपेक उसी व्यापारी को वही फिल्म अपने माध्यम से आफर करता है और कहता है कि थोड़ी सी कीमत बढ़ा देने से वह फिल्म उसे मिल सकती है. इस सौदेबाजी में निर्माता को इंपेक को 15 प्रतिशत कमीशन देना पड़ता है. कमीशन के साथ कई बार ग्राहक को गंवाना भी पड़ता है क्योंकि इतने में भारत में फिल्म प्रदर्शित हो कर पिट जाती है और विदेशी व्यापारी डिलीवरी लेने से इनकार कर देता है. इस में इंपेक का तो कुछ बिगड़ता नहीं लेकिन निर्माता का एक लाख का बैंक में भरा गारंटी बौंड विदेशी मुद्रा नहीं कमा पाने के अपराध में जब्तहो जाता है.

बैंक रिक्शा वालों को कर्ज देते हैं. लेकिन फिल्म निर्माता को कर्ज नहीं देते. क्योंकि स्वयं कर्ज देने के लिए बनाया गया फिल्म वित्त निगम ही आजकल पैसे कमाने का निगम बन कर बैंक बैलेंस बढ़ाने के चक्कर में है. फिर बाहर के लोग क्यों फिल्म वालों पर भरोसा करें? आश्चर्य है कि आज तक बिना सर-

कारी संरक्षण के फिल्म उद्योग कैसे निर नए करों को गधे की भांति ढोए चला जा रहा है? इतनी शक्ति और साहस उस में कहां से आ गया? फिल्म उद्यो में हर वर्ष देश के कोनेकोने से नएनए कलाकारों, पूंजी लगाने वालों तथा फिल्म माध्यम से अपनी बात कहने वालों का नियमित नया प्रवाह पुराने थकेहारे लोगों को प्रेरणा देने के लिए आता ही रहता है. यह नया खून कुछ कर दिखाने के लिए अपना सर्वस्व उद्योग में लगा कर फिर नए खून को ग्लैमर की दुनिया की चकाचौंध के जादू से अपनी तरफ आकर्षित करता है. शापुरजी, पालनजी जैसे नई करोड़पति आए और चले गए लेकिन उद्योग आज भी अपनी जगह खड़ा है. आज आवश्यकता है मिलजुल कर एक सम्मिलित स्वर में आवाज उठाने की. और यदि फिल्म के महारथियों ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठ कर एक हो कर सोचना शुरू किया तो सरकार को आवाज सुननी ही पड़ेगी.

टैक्सों की भरमार

फिल्म उद्योग में टैक्स माल के आयात से शुरू होता है---कस्टम ड्यूटी, सेल्स टैक्स, लेवी, मनोरंजन कर, ऑक्ट्रॉय और कारपोरेशन शो टैक्स और साथ में फिल्म्स डिवीजन का न्यूजरील किराया. इन सब करों के बाद भी सोने का अंडा देने वाली फिल्म उद्योग रूपी मुर्गी अभागिन एवं अनाथ है. जो वित्त निगम समानांतर सिनेमा को जन्म देने का दम भरता है, उस ने कुछ नवयुवकों को फिल्म निर्माण कार्य सिखाना प्रारंभ किया और सब पैसे डुबा दिए. इंपेक ने निर्यात व्यापार सिखाने का अधिकार प्राप्त किया और स्वयं तो डूबी ही साथ ही साथ कई निर्माताओं को भी ले डूबी. महबूब खां ने सच ही कहा था कि "फिल्म व्यापार कोई फली का व्यापार नहीं है. हम तो उम्मीद बेचते हैं और न बनने से पहले ही मर बेचते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सबसे अलग हैं-

विश्व सुलभ साहित्य

खूनें के बीच
चीनी शासकों द्वारा संपत्ति हड़प लिए जाने के भय से लु हांग भारत चला आया. मगर चीनियों ने उसे यहां भी आ दबोचा. तभी भारतीय छापामार दल ने उस की रक्षा की...एक निरीह नागरिक के विरुद्ध चीनी शासकों की निर्ममतापूर्ण कहानी.

मौत के आंसू
राजन मृदुला के साथ रंगरलियां मनाने अलकापुरी पहुंचा मगर वहां उस की मुलाकात मृदुला की बजाए उस की लाश से हुई. हालात राजन को ही हत्यारा साबित करते थे मगर हत्यारा कौन था?

कलंक रेखा
पतिपत्नी की मुसकराती जिंदगी में लीला ने अविश्वास की दलदल पैदा कर दी और राजेश रानी से नफरत करने लगा. क्या सचमुच ही रानी के डा० घोष के साथ अनैतिक संबन्ध थे ? या राजेश ही लीला के गदराए जिस्म का प्यासा हो गया था?

हंसने की बारी
रंगीन चुटकुलों का एक अभूतपूर्व संकलन जिसे पढ़ कर आप हंसतेहंसते लोटपोट हो जाएंगे जिसे आप बारबार पढ़ना चाहेंगे.

प्रतिशोध
एक जरमन सैनिक की सच्ची कहानी जिस ने अपनी सेना के विरुद्ध जिहाद कर दिया.

आंख मिचौनी
एक ही स्थिति से जूझते विभिन्न लोग...निर्लिप्त से मम्मीपापा, जीवन से कटीकटी रीता भाभी, जिंदगी की घनीभूत पीड़ा की शिकार पल्लवीजी, जीने की अदम्य लालसा से प्रेरित सुधीर बाबू और राज?— शायद इन सब का योगफल.

—प्रत्येक रु. 4

पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व सुरुचिपूर्ण पुस्तकें
आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या लिखें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पोर्ट तथा मनिआर्डर भेजें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्माता भी नहीं जानता कि उस की फिल्म कैसी रहेगी. वह तो हर फिल्म को हिट समझ कर ही बेचता है. लेकिन अगर फिल्म बाक्स आफिस पर पिट जाती है तो उस का कोई ग्राहक नहीं होता. तब वह केवल चूड़ियां बनाने के के लिए 20 रुपए किलो के भाव पर ही बिकती है.

जिस फिल्म को बनाने में तीन माह लगते हैं, उस को रजिस्टर करने में सर कार एक माह लगाती है और अप निर्णय देने में इंस्पेक्टर एक माह लेती फिल्मों के कच्चे माल पर नियंत्रण कोई तुक नहीं है और फिल्मों के कच्चे माल पर अंकुश लगाना ही है तो विदेश में हमारे दूतावास को फिल्म व्यापार अधिकार दे कर उन के माध्यम से निर्यात की संभावना खोजी जा सकती है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

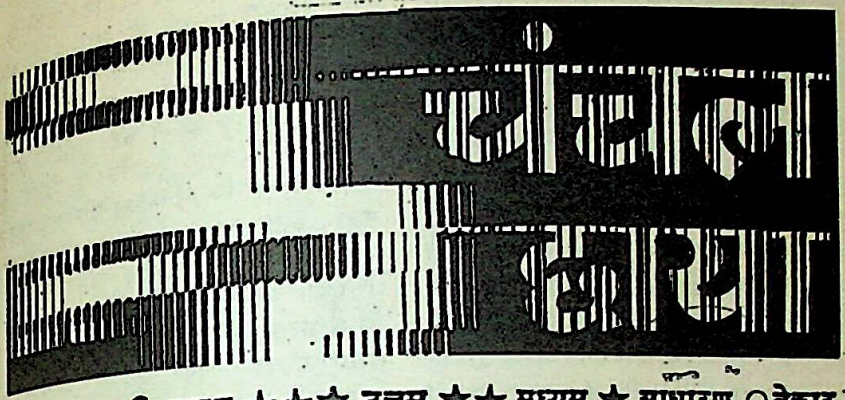

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

○ सत्यम शिवम सुंदरम

निर्माता : आर. के. फिल्म्स :
निर्देशक : राज कपूर
मुख्य कलाकार : शशि कपूर, जीनत अमान, कन्हैयालाल, डेविड, अवतार कृष्ण हंगल, हरि शिवदासानी, लीला चिटनिस.

राज कपूर ने अपना फिल्म निर्माण का जीवन 'आग' से शुरू किया था. 'सत्यम शिवम सुंदरम' में राज कपूर एक बार फिर पुराने फार्मूले के साथ आया है, लेकिन जरा परिवर्तन के साथ. 'आग' में नायक जल जाता है और प्रेम में घृणा का शिकार बनता है, और 'सत्यम शिवम सुंदरम' में नायक का स्थान नायिका को दे दिया गया है. लेकिन जहां 'आग' कहानी के पक्ष से सुगठित थी, वहां 'सत्यम शिवम सुंदरम' में विभिन्न घटनाओं को बड़े ही कच्चे धागे से जोड़ा गया है, बल्कि कई घटनाएं तो जबरदस्ती जोड़ी गई हैं, फिर भी आपस में नहीं जुड़तीं.

जलता हुआ घी पड़ने से रूपा (जीनत) का चेहरा एक तरफ से जल जाता है. कोशिश करने पर भी इस कुरूप लड़की से कोई युवक शादी करने को तैयार नहीं होता. बाहर से आया एक युवक इंजीनियर राजीव (शशि कपूर) रूपा की आवाज पर मुग्ध हो जाता है और रूपा से प्यार करने लगता है. रूपा उस से अपने चेहरे का जला भाग छिपाए रखती है और उसे इस कुरूपता का पता नहीं चलने देती.

राजीव रूपा से शादी कर लेता है और जब उसे सच्चाई का पता चलता है तो पत्नी से घृणा करने लगता है. वह यही समझता है कि उस से धोखा हुआ है और उस की शादी असली रूपा से नहीं हुई. रूपा भी प्रेमिका बन कर शशि से जंगलों में मिलती है. अंत में रहस्य खुलता है और शशि रूपा को स्वीकार करता है.

फिल्म देख कर आश्चर्य होता है कि राज कपूर जैसे कुशल एवं प्रतिभाशाली निर्मातानिर्देशक ने एक ऐसी कहानी कैसे स्वीकार कर ली, जिस में कहीं भी तर्क या बुद्धि से काम नहीं लिया गया. शायद वह अपनेआप को प्रेमकथाओं का कुशल चितेरा समझता है और यह भी समझता है कि प्रेम में बुद्धि से काम नहीं लिया जाता.

पहले तो यह देखिए कि सारा गांव जानता है कि रूपा कुरूप है, और सभी जानते हैं कि राजीव रूपा से प्यार करता है, पर सभी लोग राजीव को अंधेरे में रखते हैं. मानो निर्देशक ने पूरे गांव को मना कर दिया हो कि राजीव को रूपा की कुरूपता का पता न चले, वरना कहानी आगे नहीं बढ़ेगी.

फिल्म में पांचछः लड़कियां दिखाई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं, जो राजीव को देखते ही उस पर मरने लगती हैं. इन में से एक तो उसे खेत में जबरदस्ती ले जाती दिखाई देती है ताकि वह उस की 'आग' बुझा दे! यह पता चलने पर भी कि राजीव उन में से किसी से भी नहीं बल्कि रूपा से प्यार करता है कोई लड़की राजीव को रूपा की कुरूपता के बारे में नहीं बताती, जब कि यह बात मनोविज्ञान के विरुद्ध है. इस प्रकार कहानी की बुनियाद ही जब इतनी कच्ची रखी गई थी, तो उस पर रखी घटनाओं की ईंटें एक अच्छी कहानी कैसे बना सकती थीं. यही कारण है फिल्म की सभी घटनाएं राज कपूर की ठूंसठांस बन कर रह गई हैं. फिल्म में जो गांव दिखाया गया है, वह आधुनिक है, लेकिन वहां लड़कियां केवल मिनी साड़ी पहन कर अपनी टांगें, पेट, पीठ व वक्ष दिखाती फिरती हैं. आजकल तो आदिवासी स्त्रियां भी अपना शरीर ढक कर चलती हैं.

फिल्मों का नायक दर्शकों की सहानुभूति का पात्र होना चाहिए. रूपा या परिस्थितियां जब नायक को अंधेरे में रख कर बेवकूफ बनाती हैं तो दर्शक यही समझता है अपरोक्ष रूप में निर्देशक उसे ही बेवकूफ बना रहा है, लेकिन 'सत्यम शिवम सुंदरम' का नायक इतना बेवकूफ बनता चला जाता है कि दर्शकों की सहानुभूति ही खो बैठता है. उधर कुरूपता के कारण दर्शक नायिका को भी स्वीकार नहीं करते तो दर्शकों का फिल्म के प्रति उदासीन हो जाना स्वाभाविक है.

फिल्म के दूसरे भाग में तो राज कपूर ने तर्क को पूर्णतः कहानी से बाहर कर दिया है. राजीव एक ओर घर में पत्नी रूपा से घृणा करता है और उधर जंगलों में उसी से प्रेम करता है. किसी भी हिंदी फिल्म में नायक को शायद ही इतना मूर्ख दिखाया गया हो कि वह एक ही स्त्री को दो समझने लगे.

फिल्म में परंपरागत खलनायक नहीं है लेकिन यह भूमिका भाग या विजेंद्र ने निभाई है.

लगभग 40 वर्ष के बाद पहली बार हिंदी परदे पर चुंबन के दृश्य फिल्माने का श्रेय राज कपूर को जाता है और शशि कपूर व जीनत को ले कर चुंबनों के भरपूर दृश्य दिखाए हैं. फिल्म यद्यपि प्रेम प्रधान है, पर फिल्म को शृंगार रस प्रधान नहीं कहा जा सकता. आरंभ में ही नायिका का चेहरा जल जाने से कहानी में घृणा की पुट आ जाती है और फिल्म में बीभत्स रस प्रधान हो जाता है. इसी लिए भरपूर सैक्सी दृश्यों, चुंबनों और जीनत के बारबार शरीर प्रदर्शन के बावजूद फिल्म में सैक्स नहीं उभर पाता बल्कि घृणा भाव जाग जाता है.

जीनत कुरूप लड़की की भूमिका निभा कर दर्शकों की दृष्टि में घृणा की पात्र बन गई है, जिस से उभरने में उसे समय लगेगा. शशि कपूर अभिनय में साधारण रहा है. इस में उस का नहीं, भूमिका का दोष है. फिल्म में अन्य सभी भूमिकाएं महत्त्वहीन हैं.

संगीत पक्ष से भी फिल्म बेकार है. आनंद बख्शी, नरेंद्र शर्मा और विट्ठलभाई पटेल न तो कोई अच्छा गीत दे सके हैं और न ही लक्ष्मीकांत प्यारेलाल कोई सरस धुन दे सके हैं. संवाद अस्वाभाविक हैं. तर्कहीन घटनाओं को तर्कहीन पटकथा में बांध दिया गया है. फिल्म में फोटोग्राफी भी साधारण है. अंत में बाढ़ का दृश्य बड़े विस्तार से दिखाया गया है, जिस में कुछ कैमरे ने भी करामात दिखाई है.

फिल्म का अंत विशेष रूप से अस्वाभाविक है और निम्न स्तर का नाटक सा बन कर रह गया है. कुरूप रूपा को राजीव का बिना किसी विशेष कारण के स्वीकार कर लेना उपयुक्त नहीं लगता. अच्छा होता अगर अंत कुछ बदल दिया जाता. राजीव की जानकारी के बिना रूपा का चेहरा प्लास्टिक सर्जरी से ठीक कर दिया जाता तो कहानी अपने ही रंग में समाप्त होती.

फिल्म के शीर्षक के आधार पर लिखें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

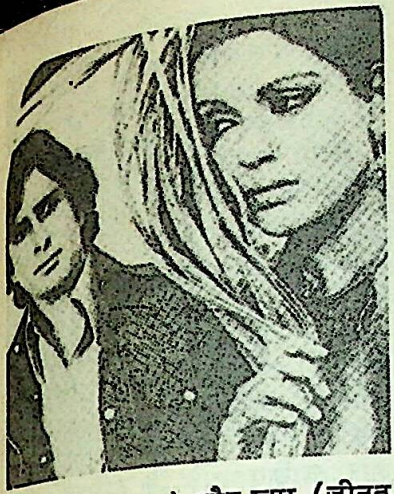

राजीव (शशि कपूर) और रूपा (जीनत अमान): वही पुरानी जोड़ी—शहर का बाबू और गांव की गोरी.

गए केंद्रीय गीत में एक उक्ति बारबार आई है—ईश्वर सत्य है, सत्य ही शिव है, शिव ही सुंदर है. लगता है 'सत्यम शिवम सुंदरम' की पुरानी उक्ति के विषय में भी राज कपूर भ्रम में रहा है. इस उक्ति का वास्तविक अर्थ यह है कि वही वस्तु ग्राह्य है जिस में सत्यम शिवम सुंदरम का संगम हो अर्थात जो सत्य हो, शिव यानी कल्याणकारी हो और सुंदर हो. लेकिन इन में राज कपूर केवल सत्य को पकड़ कर बैठ गया है. पर दुख तो यह है कि कहानी में सत्य भी नहीं है. फिल्म में जो कुछ दिखाया गया है वह असुंदर है, अशिव है और असत्य है. इसलिए इसे 'असत्यम अशिवम असुंदरम' कहना ही उपयुक्त होगा.

○ मृगया

निर्माता : उदय भास्कर इंटरनेशनल
निर्देशक : मृणाल सेन
मुख्य कलाकार : मिठुन चक्रवर्ती, ममता शंकर, साधु मेहर.

'मृगया' में अंगरेजी काल में संथाल कबीले का चित्रण किया गया है और तथाकथित कला फिल्मों की तरह वास्तविकता एवं यथार्थ के नाम पर नीरस लंबे दृश्य, अरोचक घटनाओं का व्यर्थ का विस्तार है. उद्देश्य पक्ष से भी फिल्म बेकार है.

युवा घिनवा (मिठुन चक्रवर्ती) एक कुशल शिकारी है और अनेक बार शिकार मार कर अंगरेज साहब को भेंट करता है. कबीले में एक सरकार विरोधी युवक शल्पू (स्मित भंज) है जो सरकारी खजाना लूट लेता है. सरकार उस को जिंदा या मुरदा पकड़ने का 500 रुपए इनाम रखती है और वह एक मुखबिर (साधु मेहर) की गोली का शिकार होता है. एक अत्याचारी महाजन गोविंद सरकार है जो जब चाहे कबीले की लड़कियां उठवा ले जाता है. महाजन की घिनवा की नवविवाहित पत्नी मुंगरी (ममता शंकर) पर भी कुदृष्टि है और वह उसे उठवा ले जाता है. पता लगने पर क्रुद्ध घिनवा महाजन की हत्या कर देता है और हत्या के आरोप में घिनवा को फांसी पर लटका दिया जाता है.

फिल्म में यही सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि एक ओर शल्पू है और दूसरी ओर महाजन. शल्पू को कबीले का हर व्यक्ति प्यार करता है लेकिन उस की हत्या करने वाले को 500 रुपए इनाम मिलता है. दूसरी ओर कबीले पर अत्याचार करने वाले अत्याचारी महाजन को मारने वाले घिनवा को फांसी की सजा. यह विरोधाभास बेचारा घिनवा समझ नहीं पाता. वह यह भी नहीं समझ पाता कि जंगली जानवरों का शिकार भेंट करने पर अंगरेज साहब से उसे बख्शीश मिलती थी, पर जब उस ने सब से खतरनाक जानवर यानी महाजन का शिकार किया तो उसे बड़ी बख्शीश मिलने के स्थान पर फांसी की सजा मिल रही है. मृगया का अर्थ ही शिकार है.

निर्देशक ने उपरोक्त दो घटनाओं की जिस प्रकार तुलना की है, उस से फिल्म की कहानी बीजगणित का एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समीकरण मात्र सा बन कर रह गई हैं. फिल्म में अंगरेजी काल दिखा कर भी अंगरेजों के विरुद्ध लड़ाई दिखाने की बजाए कहानी को एक साधारण महाजन पर केंद्रित कर दिया गया है और उस के हत्यारे को इतना ऊंचा उठाने की कोशिश की गई है कि मानो वह कोई शहीद हो. उस की फांसी का दृश्य इतने विस्तार में दिखाया गया है जैसे शहीद भगतसिंह को फांसी दी जा रही हो. समाज में रोजाना गुंडे स्त्रियों को भगा या उठा ले-जाते हैं और उन की हत्याएं भी हो जाती हैं लेकिन आज तक उन हत्यारों को कभी समाज में नायक का स्थान नहीं मिला. अगर घिनवा महाजन की बजाए शल्पू के हत्यारे और अंगरेजों के पिट्ठू मुखबिर (साधु मेहर) की भी हत्या कर देता, तो भी उसे फांसी लगने पर एक शहीद की संज्ञा दी जा सकती थी, पर एक आम हत्यारे को इतना ऊंचा उठाना कहां की समझदारी है?

फिल्म के पहले भाग में कहानी नाम मात्र को भी नहीं है. केवल नीरस लंबे दृश्य हैं. दूसरे भाग में भी केवल अंत में जा कर कहानी तत्त्व का समावेश होता है. फिल्म का उबाऊ सीमा तक धीमी गति से चित्रण किया गया है. जैसे घिनवा अपनी नवविवाहित पत्नी मुंगरी (ममता शंकर) के साथ अंगरेज साहब से मिलने के लिए उस की कोठी की ओर जाता है. इस में कौन सी कला है?

निर्देशन पक्ष से तो फिल्म त्रुटियों से भरी पड़ी है. घिनवा जंगल में हिरण के शिकार के लिए जाता है और धीरेधीरे झाड़ियां टटोलता फिरता है. हिरण को कैसे पकड़ता है या मारता है, यह कहीं नहीं दिखाया जाता. एक अन्य दृश्य देखिए. महाजन के आदमी मुंगरी को उठाने गए हैं और महाजन एक कार में बैठा उस का इंतजार कर रहा है. अंधेरी रात का सन्नाटा है और जंगल का स्थान. कार की हैड लाइट सामने पड़ रही है. पर अंधेरी रात में न जाने महाजन पर कहां से तेज लाइट पड़ती दिखा दी गई है जब कि हैड लाइट सामने पड़ रही थी.

अभिनय में भी सभी कलाकार कठपुतलियां लगते हैं. गांव के सभी पात्र मिट्टी के माधो बना कर बैठा दिए गए हैं. केवल मिठुन चक्रवर्ती और साधु मेहर कुछ भावों को अभिव्यक्त कर सके हैं.

फिल्म में अंगरेज साहब की सार्थकता समझ में नहीं आई. उस की घिनवा के हक में गवाही के बावजूद घिनवा को फांसी की सजा दे दी जाती है जब कि उस की गवाही का कुछ सम्मान तो रखा जाना चाहिए था.

फिल्म में दिखाई घिनवा की फांसी की सजा भी गलत है. जिन परिस्थितियों में वह महाजन की हत्या करता है इस में कुछ वर्षों की कैद या अधिक से अधिक उमर कैद हो सकती है, फांसी नहीं. क्योंकि फांसी केवल वहीं दी जाती है जहां जानबूझ कर बिना किसी उत्तेजना के हत्या की जाती है. यहां तो हत्या का काफी आधार है. लगता है यह फांसी लेखक, निर्देशक ने जबरदस्ती डाली है, वरना उस की कहानी का समीकरण ही ठीक नहीं बैठता. अगर घिनवा को रिहा कर दिया जाए या उमर कैद की सजा दे दी जाए तो निर्देशक अपने उद्देश्य में ही असफल रहता.

महाजन की भूमिका ही ठीक नहीं है. आयु और शारीरिक दृष्टि से वह धन का तो लालची लगता है, पर वह युवा आदिवासी लड़कियों से अपनी कामवासना की भूख मिटा सकेगा, ऐसा नहीं लगता.

संवाद बेतुके हैं. अंगरेज पात्र होने से अंगरेजी संवाद भर दिए हैं. यदि जो बोली असली जीवन के पात्र बोलते हों वही दिखाना हो तो संथाल पात्रों को हिंदी बोलते कैसे दिखाया गया है—सारा वार्तालाप उन की अपनी भाषा में होना चाहिए था.

अकुशल संपादन के कारण कई दृश्य अनावश्यक रूप से लंबे खिंच गए हैं तो कुछ जरूरत से पहले काट दिए गए हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरकारी मुखबिर की भूमिका में साधु मेहर (दाएं) महाजन की खुशामद करते हुए.

मृणाल सेन की 'भुवन शोम' उद्देश्य पक्ष से अच्छी न हो कर भी कला पक्ष से उत्तम थी, पर 'मृगया' हर दृष्टि से बेकार है—मनोरंजन के नाम पर तो शून्य है ही. इस का प्रमाण यही है कि इस फिल्म को 1976 में सर्वश्रेष्ठ हिंदी फिल्म का पुरस्कार मिला तब भी यह दो साल तक डिब्बों में बंद रही, कोई वितरक इसे उठाने को तैयार नहीं हुआ.

'मृगया' में लगता है मृणाल सेन वास्तविकता के चित्रण की सनक में बुरी तरह फंस गया है. पर वहां भी कोई सफलता प्राप्त नहीं हुई लगती. सत्यजीत रे की फिल्मों की तरह 'मृगया' में देशी दर्शकों की अपेक्षा विदेशी दर्शकों की रुचि का अधिक ध्यान रखा गया है. अजीब समानता है कि सत्यजीत रे ने 'शतरंज के खिलाड़ी' में अवध के नवाब की तुलना में अंगरेजों को योग्य एवं ऊंचा दिखाया, उधर 'मृगया' में भी अंगरेजों को पूरा सम्मान दे कर यहां के एक मामूली महाजन को समाज का शत्रु दिखाया गया. जब कि महाजन सेवा तो करता है कि जब लोग भूखे मरते हों तो उन्हें कर्ज दे कर मरने से तो बचा लेता है, चाहे ब्याज अधिक हो. आज सरकारी बैंक क्या कम सूद वसूल करते हैं? क्या वे आवश्यकता के समय बिना कोई जमानत लिए रुपया उधार दे देते हैं? और कर्जा वसूल करने में वे महाजन को भी पीछे नहीं छोड़ देते? और उस समय जब की यह कहानी है, महाजन का कोई विकल्प भी नहीं था. न सरकार कोई कर्ज देती थी न कोई बैंक.

○ खून की पुकार

निर्माता : टी. वी. फिल्म्स
निर्देशक : रमेश आहूजा
मुख्य कलाकार : विनोद खन्ना, शबाना आजमी, प्राण, अमजद खान, रीता भादुड़ी, इफ्तिखार, अरुणा ईरानी, रूपेशकुमार

बुराई को बुराई से नहीं बल्कि नेकी से ही सुधारा जा सकता है. निर्माता ताहिर हुसेन ने 'खून की पुकार' में कहानी को इसी बुनियाद पर खड़ा किया है. कहानी को रोचक बनाने के लिए वह संयोगों का सहारा ले कर अनेक नाटकीय मोड़ लाता चला गया है, लेकिन उद्देश्य पक्ष में और घटनाओं में नयापन न होने से ऐसा लगता है कि पुरानी फिल्मों के ही दृश्यों को काट कर जोड़ दिया गया है.

'डाकू शेरू (विनोद खन्ना) के नाम से ही लोग कांपते हैं. शानू (शबाना आजमी) के विवाह के अवसर पर शेरू का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिरोह विवाह मंडप को लूट लेता है और डाकुओं की गोली लगने से शानू का पिता मारा जाता है. गांव वालों की गोली से शेरू जख्मी हो कर एक मंदिर में शरण लेता है, जहां बाबा विद्याभूषण (प्राण) उस की गोली निकालता है. बाबा के पास रहते हुए शेरू का हृदय बदल जाता है और वह अमृत नाम से अच्छा आदमी बन जाता है.

डाकू जालिम सिंह (अमजद खान) उसे अपने गिरोह में वापस ले जाने के अनेक प्रयत्न करता है, पर अंत में मारा जाता है. यह भी रहस्य खुलता है कि शेरू उर्फ अमृत बाबा विद्याभूषण का ही बेटा था, जिसे बचपन में डाकू उठा कर ले गए थे. पितापुत्र के मिलन के साथ अमृत और शानू का प्रेम भी सफल होता है.

हिंदी फिल्मों में मुख्यतः कहानी का आधार खजाने की खोज, पितापुत्र या भाईभाई का बचपन में बिछुड़ना, डाकुओं की कहानी आदि विषय रहते हैं. 'खून की पुकार' में ये सभी एक साथ ही ले लिए गए हैं और सभी आजमाए हुए फार्मूलों का खुल कर प्रयोग किया गया है. फिल्म पूरी तरह घिसीपिटी लकीर पर दौड़ती रहती है.

फिल्म में कोई भी कलाकार प्रभावशाली रूप में परदे पर नहीं आया. बाबा के रूप में प्राण का संवादों का उच्चारण दोषपूर्ण है. फिल्म को कुछ 'मेरा गांव मेरा देश' के नमूने पर चलाया गया है. उस में विनोद खन्ना केवल डाकू बना था, इस में वह फिल्म का नायक भी है, पर बेजान रहा है. बिजली की भूमिका में अरुणा ईरानी ने लक्ष्मी छाया की नकल की है लेकिन लक्ष्मी छाया की छाया तक भी नहीं पहुंच पाई. अमजद खान साधारण है. शबाना आजमी भरपूर सैक्सी दृश्य दे कर भी अनाकर्षक ही रही है.

फिल्म के संवाद चुस्त हैं. गीत व संगीत साधारण स्तर के हैं.

शिथिल पटकथा को कुशल संपादन ने बचा लिया है. फोटोग्राफी अच्छी है.

कुल मिला कर 'खून की पुकार' में से शीर्षक की दृष्टि से आगा हश्र कशमीरी के नाटकों की बू आती है तो

पिछले बारह महीनों में

★★★आंदोलन, दुलहन वही जो पिया मन भाए, घरौंदा.

★★यही है जिंदगी, एक ही रास्ता, शक, स्वामी, किस्सा कुरसी का, मंथन, आनंद-आश्रम, अपनापन.

★मामा भानजा, अमर अकबर एंथोनी, हत्यारा, ड्रीम गर्ल, कर्म, कसम खून की, आदमी सड़क का, आप की खातिर, दूसरा आदमी, प्रियतमा, चला मुरारी हीरो बनने, परवरिश, चरणदास, टिंकू, मस्तान दादा, भूमिका, बंदी, खट्टामीठा, तुम्हारी कसम, फांसी, पलकों की छांव में, त्रिशूल, पहेली, कसमे वादे.

○जागृति, चांदी सोना, चोर सिपाही, आखिरी गोली, खेल खिलाड़ी का, मजदूर जिंदाबाद, हीरा और पत्थर, सज्जोरानी, विश्वासघात, ईमान धर्म, जमानत, टैक्सीटैक्सी, धूपछांव, चालू मेरा नाम, कोतवाल साहब, चक्कर पे चक्कर, कलाबाज, डार्लिंगडार्लिंग, आदि मानव, पंडित और पठान, थीफ आफ बगदाद, गुमराह, फरिश्ता या कातिल, जयविजय, एजेंट विनोद, इनकार, छैला बाबू, ढोंगी, महाबदमाश, आशिक हूं बहारों का, डिंपल, आधा दिन आधी रात, दुनियादारी, दरिंदा, विश्वनाथ, डाकू और महात्मा, नसबंदी, आखिरी डाकू, फिर जन्म लेंगे हम, शतरंज के खिलाड़ी, खेल किस्मत का, कालिज गर्ल, बेशरम, अलीबाबा मरजीना, सिक्का, दरवाजा, आहुति, अगर, काला आदमी, चोर हो तो ऐसा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रस्तुतीकरण के पक्ष से फार्मूला फिल्मों की भोंडी नकल मात्र है.

○ प्रेमी गंगाराम

निर्माता : एस. के. कपूर फिल्म्स
निर्देशक : जगदीश नरूला
कहानी : एस. के. कपूर
मुख्य कलाकार : योगिता बाली, सतीश कौल, इंद्रसेन जौहर, मेहर मित्तल, बीरबल, अशोककुमार, टुनटुन, विम्मी

पंजाबी में बनने वाली फिल्मों में पता नहीं क्यों हमेशा ही ऊलजलूल हरकतें, फूहड़ हास्य और घिसेपिटे प्रेमप्रसंग ही दिखाए जाते हैं. फिर उन्हें पंजाबी नाटकों की तरह द्विअर्थक (दोहरे अर्थ वाले) संवादों से इतना अश्लील बना दिया जाता है कि फिल्म देखते हुए ऐसा लगता है, जैसे तांगेरिक्शे वालों के बीच फंस गए हों. 'प्रेमी गंगाराम' हिंदी और पंजाबी में बनने वाली ऐसी ही एक फिल्म है, जिसे परिवार के साथ देखने की गलती शायद ही कोई करे.

गंगाराम (इंद्रसेन जौहर) गांव में गाता फिरता है और गांव की सभी लड़कियां उस के पीछे दीवानी हुई फिरती हैं. गंगाराम का रायबहादुर की लड़की जमना (योगिता बाली) से प्यार हो जाता है. रायबहादुर गंगाराम से पीछा छुड़वाने के लिए बारबार उसे पिटवाते हैं लेकिन गंगाराम पीछा नहीं छोड़ता. अंत में अनेक ऊलजलूल घटनाएं डाल कर गंगाराम और जमना का विवाह करा दिया जाता है.

इंद्रसेन जौहर अपने फूहड़ हास्य और ऊलजलूल हरकतों के लिए फिल्मी दुनिया में पहले ही बड़ा मशहूर रहा है. उसे यदि किसी फिल्म में और वह भी पंजाबी फिल्म में नायक बना दिया जाए तो उस फिल्म का क्या हाल होगा, अधिकांश दर्शक बिना फिल्म देखे ही इस का अंदाजा लगा सकते हैं. 'प्रेमी गंगाराम' में इंद्रसेन जौहर ने नायक की भूमिका निबाही है.

इस फिल्म की कहानी 'छूमंतर' फिल्म से बहुत अधिक मिलती है. इस में निर्माता ने केवल लूटमार, अनाज की कालाबाजारी और दहेज की घटनाएं डाल कर 'छूमंतर' से अलग करने की कोशिश की है और इस से फिल्म अधिक बकवास हो गई है. मनोरंजन के नाम पर निर्माता ने फूहड़ हास्य ही ठूंसा है. टुनटुन को ले कर निर्माता द्विअर्थक संवादों के सहारे एकदम निम्न स्तर पर ही उतर आया है.

इंद्रसेन जौहर ने फिल्म में नवयुवक प्रेमी की भूमिका निभाई है लेकिन शरीर और चेहरे से बूढ़ा नजर आता है. योगिता बाली कहीं आकर्षित नहीं कर पाती. सतीश कौल, विम्मी, अनवर हुसेन भी बस, खानापूरी करते हैं.

सोनिकओमी के संगीत में कोई नयापन नहीं है. छायांकन साधारण है. फिल्म में संपादन पर भी कोई ध्यान दिया गया नहीं लगता. निर्देशक जगदीश नरूला ने शायद हर कलाकार को अपनी मर्जी से ऊलजलूल हरकतें करने की पूरी छूट दे रखी थी क्योंकि वह जानते हैं कि पंजाबी फिल्म में हास्य के नाम पर शिष्टअशिष्ट कुछ भी दिखाया जा सकता है. ●

यह अंक

आप को कैसा लगा?

सरिता आप ही के लिए प्रकाशित की जाती है. हम पूरीपूरी कोशिश करते हैं कि सरिता का प्रत्येक अंक आप की रुचि के अनुसार रहे और उस से आप को अधिक से अधिक संतोष हो और वह आप की प्रिय पत्रिका बनी रहे.

कृपया हर अंक पर अपनी राय भेजिए. कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई. आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना पसंद करेंगे. हम आप की आलोचना और सुझावों का स्वागत करेंगे. —संपादक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

35 वर्षीय, अविवाहित, कद 170 सें. मी., उत्तर प्रदेशीय गौड़ ब्राह्मण, एम. ए., कोठी मालिक, फर्मों के प्रोप्राइटर, मासिक आय चार अंकों में, हेतु अति सुंदर, केवल ब्राह्मण वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 5951, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बी. ए., अति सुंदर, निःसंतान विधवा हेतु 26-27 या अधिकतम 30 वर्षीय, निःसंतान अधिकारी वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. ब्राह्मण को प्राथमिकता. बहेज नहीं. सिविल या वैदिक रीति के अनुसार विवाह. लिखें : वि. नं. 5984, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, मलहोत्रा खत्री, शिक्षित, 153 सें. मी., सिलाई, कढ़ाई, बुनाई तथा गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें : वि. नं. 6174, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, गुप्ता (वार्ष्णेय) बी. ए., 160 सें. मी., नई दिल्ली के प्रतिष्ठित परिवार की सुंदर, सुशील, गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु योग्य, कार्यरत वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 6175, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, कहार, हायर सेकेंडरी, सुंदर, स्वस्थ, गृहकार्य दक्ष बाल विधवा कन्या हेतु शासकीय सेवारत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6176, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीया, ब्राह्मण सुंदर, शिक्षित परित्यक्ता, (10 वर्षीया 1 कन्या) हेतु अच्छी आय वाला, मधुर स्वभाव का, सुंदर, विधुर वर चाहिए. बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6177, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, एम. ए. बी. एड., संगीत प्रभाकर, कद 155 सें. मी., सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य, खत्री वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6178, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, माथुर कायस्थ, पोस्ट ग्रेजुएट, सुंदर, कन्या हेतु आधुनिक, उदार विचारों वाला डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक अधिकारी, माथुर वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6179, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, हायर सेकेंडरी अध्ययनरत रंग सांवला, कद 140 सें. मी., गृहकार्य दक्ष, (दाहिनी आंख कुछ कम खुलती है) कन्या हेतु पूर्ण शाकाहारी, स्वावलंबी, दहेज विरोधी वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6180, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, पंजाबी, सारोया, बी. ए., बी. एड., 160 सें. मी., आकर्षक, गौरवर्ण, राजस्थान में द्वितीय ग्रेड अध्यापिका हेतु सजातीय, सुयोग्य वर को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 6181, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, पंजाबी सारस्वत ब्राह्मण, 182 सें. मी., आंध्रप्रदेश में फैक्ट्री सुपरवाइजर युवक हेतु दसवीं तक शिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. दहेज नहीं. पिता उसी फैक्ट्री में मैनेजर तथा मिल्ट्री पेंशनर. आय चार अंकों में. लिखें : वि. नं. 6182, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, लुहार, मध्यप्रदेशीय, सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्य में दक्ष, शिक्षिका हेतु सुंदर मासिक आय 1000 तक प्राप्त, सजातीय अथवा उपजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6183, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, जायसवाल, एम. ए. (फाइनल) अध्ययनरत, 150 सें. मी., सुंदर, सुशील, गृहकार्य में निपुण कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर अथवा राजपत्रित अधिकारी वर चाहिए. दहेजाकांक्षी अथवा करें. लिखें : वि. नं. 6184, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीया, राजपूत, ट्रेंड ग्रेजुएट, शासकीय सेवारत, सुंदर, कद 160 सें. मी. कन्या हेतु सुयोग्य, डाक्टर, इंजीनियर, राजपूत वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6185, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21½ वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, एम. ए., प्रथम श्रेणी, गेहुंआ रंग, पतली, सुंदर, 167 सें. मी. संवी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 6186, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½ वर्षीया, श्रीवास्तव खरे कायस्थ, एम. ए., इकहरा शरीर, गेहुंआ रंग, सुशील, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु योग्य कायस्थ वर चाहिए. शीघ्र एवं उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 6187, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, सम्मानित वैश्य, बी. ए. द्वितीय में (अध्ययनरत) कद 147 सें. मी., गृहकार्य में निपुण, पतली, सुंदर, आकर्षक कन्या के लिए डाक्टर, इंजीनियर, उच्च पद पर कार्यरत अथवा उच्च व्यापार में कार्यरत, सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 6188, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25½ वर्षीया, क्रिश्चियन, एम. ए. बी. एड., एलएल. बी., कद 160 सें. मी., सुंदर, सुशील कन्या हेतु आकर्षक व्यक्तित्व वाला, सुयोग्य वर चाहिए. विवरण सहित लिखें : वि. नं. 6189, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, ब्राह्मण, संक्रांत, एम. बी. बी. एस., मध्य प्रदेश शासकीय सेवा में कार्यरत, सुंदर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6190, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, अग्रवाल, पीएच. डी. कर रही कन्या हेतु वर चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. शीघ्र शादी विवाह. लिखें : वि. नं. 6191, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 155 सें. मी., डबल स्नातकोत्तर, रेलवे कलाकार. 22 वर्षीया (मांगलिक), 147 सें. मी., स्नातकोत्तर, सुंदर, सुसंस्कृत ब्राह्मण कन्याओं हेतु सुंदर, उच्च पदस्थ, ब्राह्मण वर चाहिए. विज्ञापन उच्चाधिकारी. शीघ्र उत्तम विवाह. सविवरण लिखें : वि. नं. 6192, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, एम. बी. बी. एस., सुंदर, गौरवर्ण, 165 सें. मी., हिंदू कन्या हेतु सुंदर, डाक्टर वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6193, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, चौहान, ठाकुर कन्या के लिए सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. दहेज नहीं. सविवरण लिखें : वि. नं. 6194, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, कान्यकुब्ज, एम. ए. बी. एड. पास कन्या हेतु उपयुक्त वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 6195, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, ब्राह्मण, एम. एससी. (गणित), सुंदर, सुशील, कद 152 सें. मी., गृहकार्य में दक्ष, कन्या हेतु चार अंकीय आय वाला, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 6196, सरिता, नई दिल्ली-110055.

17½ वर्षीया, प्रजापति, बी. ए. अध्ययनरत, गौरवर्णीय, अति सुंदर, कला, संगीत, गृहकार्यों में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 6197, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, राजपूत, ग्रेजुएट, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6198, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, पंजाबी, एम. बी. बी. एस., मासिक आय 1,400, 167 सें. मी., शासकीय सेवारत, सुंदर डाक्टर हेतु सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यों में दक्ष, सजातीय वधू चाहिए. एम. बी. बी. एस. को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 6199, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, एम. ए. कर रही, सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष, मांगलिक कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6200, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, निगम कायस्थ, बैंक कार्यरत कन्या हेतु सुयोग्य, कायस्थ वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6201, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 एवं 19 वर्षीया, अग्रवाल (गर्ग), मध्यम वर्गीय, एम. ए. एवं बी. एससी., 154 सें. मी., तथा 147 सें. मी., कन्याओं हेतु सुयोग्य, सुशिक्षित वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6202, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, हिंदू, पंजाबी, बी. ए., कद 145 सें. मी., साफ रंग, गृहकार्य में दक्ष, व्यापारिक घराने की कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. विज्ञापन सुंदर चुनाव हेतु. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 6203, सरिता, नई दिल्ली-110055.

39 वर्षीय, कायस्थ, उत्तर प्रदेश निवासी, राजपत्रित अधिकारी, आय 1700 रुपए, विधूर (दो संतानें) के लिए स्वस्थ, सुंदर, स्नेहमयी, बच्चों की इच्छा न रखने वाली अविवाहित अथवा निःसंतान विधवा की आवश्यकता है. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6204, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, माहेश्वरी, बी. ए., साफ गेहुंआ रंग, गृहकार्य में दक्ष, युवती के लिए सजातीय, बारोजगार वर चाहिए. शीघ्र शादी. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 6205, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, मैथिल ब्राह्मण, बी. ए., 162 सें. मी., सुंदर, सुशील, गृहकार्य में निपुण, कन्या हेतु सुयोग्य, कार्यरत वर की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 6206, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23½ वर्षीया, माहेश्वरी, एम. एससी. बी. एड., कद 157 सें. मी., गौरवर्ण, सुंदर, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6207, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, मैथिल ब्राह्मण, बी. ई. मैकेनिकल, सहायक अभियंता (विद्युत विभाग), मासिक आय 1000 रुपए, हेतु उच्च शिक्षित परिवार की सुंदर, सुशील, सुशिक्षित, योग्य, सजातीय वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 6208, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, कुमायूं क्षत्रिय, एम. ए., सुशील, गेहुंआ रंग, निजी स्कूल संचालिका हेतु दहेज विरोधी, सजातीय वर चाहिए. अच्छी शादी. लिखें : वि. नं. 6209, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, जाटव, प्रथम श्रेणी अफसर हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6210, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीय, संभ्रांत राजपूत, 177 सें. मी., आकर्षक व्यक्तित्व, निजी कृषिफार्म, इलैक्ट्रिकल इंजीनियर हेतु सजातीय, अत्यंत सुंदर, भारतीय संस्कृति प्रिय, धार्मिक, दहेजरहित, मृदुभाषी गृहिणी चाहिए. लिखें : वि. नं. 6211, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, पंजाबी युवक के लिए योग्य वधू

Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 6212, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीय, कास्ट एकाउंटेंसी अध्ययनरत, नौकरीशुदा युवक हेतु संपन्न परिवार की कन्या चाहिए. उम्र, जाति, विधवा, परित्यक्ता बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6213, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, एम. ए. संस्कृत, साहित्याचार्य बी. एड. राजकीय संस्कृत कालिज में सेवारत, नेत्रहीन युवक के लिए वधू चाहिए. जाति, प्रांत, दहेज बंधन नहीं. परित्यक्ता, विधवा एवं विकलांग भी स्वीकार्य. लिखें : वि. नं. 6214, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, खत्री (स्वर्णकार) इंटर पास, आय 1,500 व्यवसायी हेतु सुंदर, सुशिक्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 6215, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38 वर्षीय ग्रेजुएट, मासिक आय चार अंकों में तथा निजी मकान, जमीन आदि, विधुर (ससंतान) हेतु 25 से 32 वर्षीया सुशील, सुंदर, कम से कम मैट्रिक, गृहकार्य में दक्ष, निस्संतान, विधवा, परित्यक्ता जीवनसंगिनी चाहिए, जो बच्चों को अपना सके. कोई बंधन नहीं. बांझ को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 6216, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40 वर्षीय, अविवाहित, निजी कार्यरत युवक के लिए गरीब परिवार की 30 वर्ष तक की क्षत्रिय, मैट्रिक पास या ग्रेजुएट, सुंदर कन्या चाहिए. शीघ्र शादी. लिखें : वि. नं. 6217, सरिता, नई दिल्ली-110055.

48 वर्षीय, राजपूत, लेक्चरर, मासिक आय 1,000 रुपए, विधुर के लिए योग्य जीवनसंगिनी अपेक्षित, विधवा एवं अंतर्जातीय स्वीकार्य. लिखें : वि. नं. 6218, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, अग्रवाल, एम. काम., मासिक आय 600, अपंग किंतु स्वस्थ युवक के लिए सजातीय/उपजातीय वधू चाहिए. कम उम्र की विधवा अथवा परित्यक्ता भी मान्य. कृपया लिखें : वि. नं. 6219, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, मेरठ निवासी, मित्तल प्रतिष्ठित परिवार, एम. ए. मनोविज्ञान, 158 सें. मी., गौरवर्ण, अति सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. दहेज, उपजाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6220, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, मेरठ निवासी, मित्तल प्रतिष्ठित परिवार 177 सें. मी., सरकारी सेवा में सब इंजीनियर, मासिक वेतन 1000, युवक हेतु अति सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 6221, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, वैश्य (कश्यप) कद 168 सें. मी., सुंदर, मासिक आय 600 युवक हेतु वैश्य कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 6222, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, कुलीन, एम. ए., बी. एड., बेरोजगार, 350 रुपए प्रति मास ब्याज की आमदनी युवक के लिए ऐसी शिक्षित एवं कुशल कन्या की आवश्यकता है, जिस के मातापिता युवक को अपने पास रख सकें या व्यवसाय में लगा सकें. शीघ्र विवाह हेतु इच्छुक संपर्क करें. दहेज तथा जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6223, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम. ए. (इंगलिश) युवक हेतु कन्या चाहिए. जाति एवं दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6224, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीय, 157 सें. मी., 50 कि. गौरवर्ण, सेवारत, आय 550 रुपए युवक के लिए सुयोग्य वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6225, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, बिहारी, सांडिल्य गोत्रीय, सरयूपारीण ब्राह्मण, आई. एससी., 172 सें. मी., वार्षिक आय 30,000 रुपए, एकाकी, कृषक युवक विधुर (दो संतानें, 8, 6,) हेतु शिक्षित, गौरांग, सुंदर, स्मार्ट, अति सुंदर, अविवाहित, 20 वर्ष तक की सब्राह्मण कन्या चाहिए. दहेज नहीं. उत्तम विवाह. लिखें : वि. नं. 6226, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, संपन्न परिवार, अग्रवाल, होम्योपैथिक डाक्टर, आय चार अंकों में, युवक हेतु सुंदर, शिक्षित एवं सुशील कन्या चाहिए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 6227, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, पंजाबी, संभ्रांत परिवार, पोस्ट ग्रेजुएट, कांवेंट शिक्षित, 150 सें. मी., अध्यापिका, निर्दोष तलाकशुदा हेतु दिल्ली निवासी वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6228, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, ब्राह्मण, मैथिल प्रवासी, सुंदर डाक्टर कन्या हेतु मध्य प्रदेश में कार्यरत योग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6229, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, सैनी, कांवेंट शिक्षित, एम. ए. (सोशेलाजी) हिंदी भाषी, 160 सें. मी., इकहरा, गौरवर्ण, सुंदर, सुशील गृहकार्य में निपुण, प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6230, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, अग्रवाल, सिंगल गोत्र, 155 सें. मी., मंगली, इंटर, उच्च व्यवसायी वार्षिक आय 20,000 इकहरा बदन, स्वस्थ, गौरवर्ण, सुंदर युवक हेतु सुशील, सुंदर, मंगली कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहित लिखें : वि. नं. 6231, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, गोयल, सी. ए., इंटरमीडिएट पास, फ़रीदाबाद में कार्यरत, संपन्न व्यावसायिक परिवार हेतु सुंदर वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 6232, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, मध्यम परिवार, बंसल गोत्र, बी. ए., फ़ाइनल की परीक्षा दी है, 155 सें. मी., साफ रंग, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु स्वावलंबी वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6233, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीय, अविवाहित, सिख अरोड़ा, शिक्षित, निजी व्यापार, वार्षिक आय 10,000 के लिए कन्या चाहिए, दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 6234, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, माहेश्वरी, सुंदर, स्लिम, गृहकार्य में दक्ष, ग्राइंस ग्रेजुएट के लिए उचित वर एवं 26 वर्षीय, ग्राइंस ग्रेजुएट, व्यवसाय में संलग्न वर के लिए सुंदर, कन्या की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 6235, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, माहेश्वरी, संपन्न परिवार की सुशील, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष विधवा (संतान एक, आयु सुंदर 5 वर्षीया कन्या) जिस का पहला पति 3 साल गृहस्थ जीवन भोग कर अचानक हृदय गति रुकने से स्वर्गवास हो गया के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है. विधुर वर भी स्वीकार्य. लिखें : वि. नं. 6236, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, दिगंबर जैन, म. प्र. में शासकीय सेवारत, प्रतिष्ठित, सुशिक्षित परिवार के डाक्टर वर हेतु सुंदर, डाक्टर अथवा उच्चशिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 6237, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, यादव, मिलिट्री अफसर के लिए शिक्षित, सुंदर एवं गृहकार्य में दक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 6238, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, अग्रवाल, ग्रेजुएट, निजी प्रिंटिंग प्रेस, आय चार अंकों में, बाएं पैर में पोलियो युवक हेतु गृहकार्य में दक्ष, सुंदर, गरीब कन्या की आवश्यकता है. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6239, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, ग्रेजुएट युवक हेतु सजातीय (बढ़ई), ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 6240, सरिता, नई दिल्ली-110055.

39 वर्षीय, राजपूत (चौहान), स्नातकोत्तर शैक्षिक सेवारत, मासिक आय 750 विधुर (एक कन्या) हेतु सजातीय, शिक्षित, गौरवर्ण, जीवन-संगिनी चाहिए. निसंतान विधवा/परित्यक्ता भी स्वीकार्य. लिखें : वि. नं. 6241, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 एवं 21 वर्षीया, उच्च वर्ग परिवार की, सुंदर, ग्रेजुएट कन्याओं हेतु वर चाहिए. विजातीय, बेरोजगार परंतु उच्चशिक्षित स्वीकार्य. लिखें : वि. नं. 6242, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, अग्रवाल, विज्ञान स्नातिका, 160 सें. मी., सुंदर, गोरी, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सेवारत वर चाहिए. अच्छी शादी. लिखें : वि. नं. 6243, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, माहेश्वरी, इंजीनियर, सरकारी सेवारत, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व युवक हेतु सुंदर, स्वस्थ, एवं सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 6244, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीय, गुप्ता, मध्यम परिवार, निजी व्यवसाय, युवक हेतु सुशील, शिक्षित कन्या चाहिए. दहेज बंधन नहीं. पिता ठेकेदार. लिखें : वि. नं. 6245, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, गोयल गोत्र, एम. ए. (द्वितीय वर्ष), सिलाई/बुनाई एवं गृहकार्य में दक्ष, 150 सें. मी., साफ रंग कन्या हेतु वर चाहिए. अधिक दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 6246, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, 35, अविवाहित, केंद्रीय सरकार गजटेड अफसर, गोरा रंग, आकर्षक व्यक्तित्व, 'भारतश्री' सितार वादक हेतु वधू चाहिए. हिंदुस्तानी क्लासीकल डांसर अथवा संगीतज्ञ कन्या को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 6247, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, प्रतिष्ठित, वैश्य (गोयल) परिवार की एम. ए. (अध्ययनरत), 150 सें. मी., गौरवर्ण, स्लिम, सुंदर, सुशील कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, लैक्चरर, बैंक अफसर अथवा उच्च अधिकारी वर चाहिए एवं उस के 24 वर्षीय, भाई एम. एससी., एलएल. बी. (अध्ययनरत), 175 सें. मी., गौरवर्ण राष्ट्रीयकृत बैंक में सेवारत, मासिक आय 800 रुपए युवक हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित कन्या की आवश्यकता है. उत्तम एवं शीघ्र विवाह. लिखें : वि. नं. 6248, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, संभ्रांत, शिक्षित, जायसवाल परिवार की बी. एड. की छात्रा, कद 165 सें. मी., गौरवर्ण, आकर्षक कन्या हेतु शिक्षित, सुंदर, आत्मनिर्भर एवं सजातीय वर चाहिए. सिकंदराबाद, हैदराबाद निवासी को प्राथमिकता. पिता असिस्टेंट इंजीनियर. दहेज मांग करने वाले पत्राचार न करें. लिखें : वि. नं. 6249, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संभ्रांत एवं संपन्न माहेश्वरी परिवार की दो सुंदर, सुशील, गृहकार्य दक्ष, 21 वर्षीया, एम. एससी. प्रथम श्रेणी तथा पीएच. डी. कर रही, कद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

160 स. मी. तथा 23 वर्षीया, एम. काम. एवं इंडस्ट्री ला में डिप्लोमा, स्टेट बैंक में स्थायी रूप से सेवारत, कद 155 सें. मी., कन्याओं हेतु संपन्न परिवार के डाक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड एकाउंटेंट, उच्च पद पर सेवारत, अथवा निजी व्यवसायरत, सुंदर, सुशील, सजातीय वरों की आवश्यकता है, दो भाई डाक्टर. एक विदेश में सेवारत. पिता राजकीय उच्चतर प्रशासनिक सेवानिवृत अधिकारी. लिखें : वि. नं.6250, सरिता, नई दिल्ली 110055.

24 वर्षीय, सिंधी, एम. ए. एलएल. बी., उद्योग व्यवसायरत दो युवकों हेतु, सुंदर, सुशिक्षित वधूएं चाहिए. लिखें : वि. नं., 6251, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, ग्रेजुएट, सुंदर, उच्च व्यवसाय में संलग्न तलाकशुदा युवक हेतु सुशिक्षित, सुशील, अति सुंदर, अग्रवाल वधू चाहिए. दहेज बंधन नहीं लिखें : वि. नं. 6252, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीय, मुस्लिम, अविवाहित, सैट्रिक, व्यवसाय में सुव्यवस्थित, मासिक आय 2000 रुपए, नेत्रहीन युवक हेतु वधू चाहिए. जाति एवं धर्म बंधन नहीं. पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 6094, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीय, अविवाहित, व्यक्तिगत आय 700 प्रतिष्ठित परिवार, घुटने से 4" नीचे बायां पैर कृत्रिम, विशाल प्रतिष्ठान में कार्यरत, स्वस्थ, सक्षम युवक हेतु निःसंतान विधवा, परित्यक्ता वांछनीय. लिखें : वि. नं. 6269, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली सुस्थापित, स्नातकोत्तर, स्मार्ट, स्नेही, संपन्न, एकाकी, परित्यक्त, पंजाबी, 49, हेतु वधू चाहिए. संतान स्वीकार्य. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6270, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, प्रतिष्ठित अग्रवाल (गर्ग गोत्र) परिवार की मैडिको, गौरवर्ण, सुंदर, स्लिम, गृहकार्य, संगीत जानने वाली कन्या हेतु संभ्रांत परिवार का एम. डी./एम. एस. पास या अध्ययनरत डाक्टर, सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6280, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुपरिचित लेखक एवं केंद्रीय सेवारत उच्चाधिकारी की 23 वर्षीया, तायल गोत्र, बी. ए. आनर्स, 163 सें. मी., गौरवर्ण कन्या के लिए आदर्शवादी सुयोग्य वर चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 6281, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

निःसंतान दंपती 1 वर्ष तक का बालक गोद लेने के इच्छुक. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6262, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

4 बच्चों की देखभाल एवं पढ़ाई के लिए 35 वर्षीया, कम से कम बी. ए. पास महिला व्यवसाय की भी देखभाल करने वालों को मिकता. खाने, कपड़े तथा रहने की सुविधा अच्छा तथा उचित वेतन. लिखें : वि. नं. 6 सरिता, नई दिल्ली-110055.

घर एवं बच्चे की देखभाल हेतु चाहिए. सुविधाएं लब्ध. विवरण सहित वि. नं. 6274, नई दिल्ली-110055.

विज्ञापनदाताओं के लिए

सरिता में वैवाहिक, गोद व अन्य विज्ञापनों की दर 1 रुपया 25 पैसे प्रति अंगरेज़ी पाक्षिक कैरेवान में 25 पैसे प्रति शब्द वूमंसईरा में 25 पैसे प्रति शब्द साथसाथ वही विज्ञापन कैरेवान अथवा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए 15 पैसे प्रति शब्द अतिरिक्त देना होगा यानी 1 रुपया 40 पैसे प्रति शब्द. सरिता के यदि वही विज्ञापन कैरेवान और वूमंसईरा प्रकाशित कराया जाए तो 10 पैसे प्रति शब्द रियत देना होगा यानी 1 रुपया 50 पैसे प्रति

मूल विज्ञापन के साथ "लिखें : वि. नं. सरिता, नई दिल्ली-110055" 6 शब्दों का आवश्यक है. विज्ञापनदाता के "निजी पते वाले" "फोटो सहित" शब्द वाले विज्ञापन स्वीकार किए जाते.

विज्ञापन के उत्तर में प्राप्त पत्र विज्ञापनदाता के पास भेजने के लिए 4 रुपए अतिरिक्त भेजे जाएंगे. वि. नं. के उत्तर में पत्र लिखने वालों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता.

विधवाओं, परित्यक्ताओं और जाति बंधन तोड़ कर विवाह करने वालों के विज्ञापन केवल में आधे शुल्क पर प्रकाशित किए जाते हैं। विज्ञापनों में विज्ञापनदाता की निजी जाति का उल्लेख विज्ञापन में नहीं होना चाहिए.

विज्ञापन शुल्क मनीआर्डर, पोस्टल आर्डर चैक ड्राफ द्वारा अग्रिम भेजें. मनीआर्डर कूपन पर "विज्ञापन विभाग" अवश्य लिखें. चैक स्वीकार नहीं किए जाते. विज्ञापन का विवरण साफसाफ लिख कर इस पते पर भेजें :

विज्ञापन विभाग, सरिता,
3-ई, रानी झांसी रोड, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

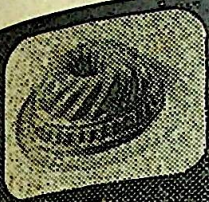

इसे जमाइए...

फलों और
जेली पर डालिए...

इससे खीर रबड़ी
गाढ़ी बनाइए...

अब लीजिए स्वास्थ्यप्रद, स्वादिष्ट तरह तरह की चीज़ों के लिए ब्राउन एण्ड पोल्सन कस्टर्ड पाउडर.

झटपट तैयार होनेवाली चीज़ें हर रोज़ बनाइए...
सबसे पूछिए, तब कहीं बताइए!

इसे जमाइए. ब्राउन एण्ड पोल्सन कस्टर्ड पाउडर जमाइए और बड़ा मज़ेदार ब्लामांज तैयार. काजू, फलों या और किसी चीज से सजाइए!

ऊपर से डालिए. गाढ़ा···बढ़िया···पूरी तरह मिलाया हुआ. फलों या जेली पर ठण्डा डालिए. सादे स्पंज केक पर गर्मागर्म उड़ेलिए. मज़ा आ जाएगा.

चीज़ों को इससे गाढ़ी बनाइए. जब भी आप फालूदा, खीर, रबड़ी, आइस-क्रीम या पूरी और लड्डू भी बनाइए, थोड़ा ब्राउन एण्ड पोल्सन कस्टर्ड पाउडर मिलाइए—इन्हें ज़्यादा गाढ़ा, ज़्यादा मज़ेदार बनाइए!

ब्राउन एण्ड पोल्सन कस्टर्ड पाउडर अब २०० ग्राम के पैक में भी मिलता है
इसमें अण्डा बिल्कुल नहीं है.

कस्टर्ड पाउडर

ज़्यादा क्रीमभरा, ज़्यादा मुलायम, ज़्यादा स्वादिष्ट

कार्न प्राडक्ट्स कं. (इण्डिया) प्रा. लि.

OBM-8549 R/HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूप-रंग के नशीले बादल उमड़े

नारी सौन्दर्य की प्रतिमा है और एमामी सौन्दर्य-प्रसाधन उस मोहक सौन्दर्य को चिरस्थायी बनाये रखते हैं।

एमामी टैल्क
रेशम की तरह स्निग्ध व मुलायम एमामी टैल्क की जादुई फ्रेंच सुगन्ध आप को देर तक तरोताज़ा रखती है।

एमामी क्रीनिशिंग क्रीम
में एक विशेष रसायन है जिसको आर्द्रता आप की त्वचा को मखमल को कोमलता प्रदान करती है और इसकी मोहक सुवास वातावरण को एक भीनी-भीनी सुगन्ध से भर देती है।

एमामी क्रीम सैशे
में तो जैसे उपवन के सारे फूलों की सुगन्ध ही समा गई है। इसके प्रयोग से आपकी त्वचा देर तक महकती रहेगी।

एमामी निखरते सौन्दर्य का मधुर संगीत

निर्माता : केमको केमिकल्स पोस्ट बाक्स नं० ६९१२ कलकत्ता-७०० ००७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथा साहित्य

शराब विरोधी अभियान	राजेंद्र जगोत्ता	33
एक और भूल	लीला रूपायन	36
रुपया और नारियल	सत्यकुमार	62
हड़ताल	रमेशशेकर सक्सेना	94
डूबती पतवार	शारदा छाबड़ा	99
आधा चित्र	देवीलाल माथुर	116
उपाय	परमात्मा स्वरूप	125
हवेली	विमल वेद	164

अंक : 552 अप्रैल (द्वितीय) 1978

सरिता

सामाजिक, पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक

संपादक व प्रकाशक

विश्वनाथ

धारावाही उपन्यास

तुंगभद्रा के आंसू	प्रभात त्यागी	147

कविताएं

लहरों सा मन	राजेंद्र सोनी	83
हो गए पूरे सपन	पूरन सरमा	93
छुईमुई हो गई	तेजनारायण	114

लेख

भ्रष्टाचार के गढ़	अजेयकुमार गोयल	23
बहुरूपिए शब्द	शरदचंद्र पेंढारकर	45
अयोध्यानाथ चतुर्वेदी	मृदुला हालन	53
आत्मा और पुनर्जन्म	सोमा सबलोक	67
खूबसूरत बैग	उषा भूनेंद्र	84
तीर्थयात्रा	बालकृष्ण श्रीवास्तव	86
बच्चों का अपहरण	हृदयेश सक्सेना	135
स्वागत और शिष्टाचार	सत्या जैन	140
शंका	पुखराज बाफना	145
फिल्मों के बेतुके दृश्य	श्रीशचंद्र मिश्र	173

स्तंभ

आप के पत्र	13
सरित प्रवाह	19
पासा पलट गया	34
ये पति	66
बच्चों के मुख से	89
श्रीमतीजी	90
नए पकवान	92
चंचल छाया	181
जीवन की मुसकान	189

आवरण : रामगोपाल सुंगर

सरिता शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है. सरिता में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार दिल्ली प्रेस समाचार पत्र द्वारा सुरक्षित हैं. इसलिए बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरिता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, स्थानों, घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रेस समाचार पत्र के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस प्र. प्रा. लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

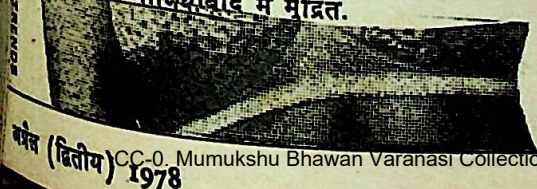

नई दिल्ली-110006

फोन : 569192

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया ओरिएन्ट डीलक्स

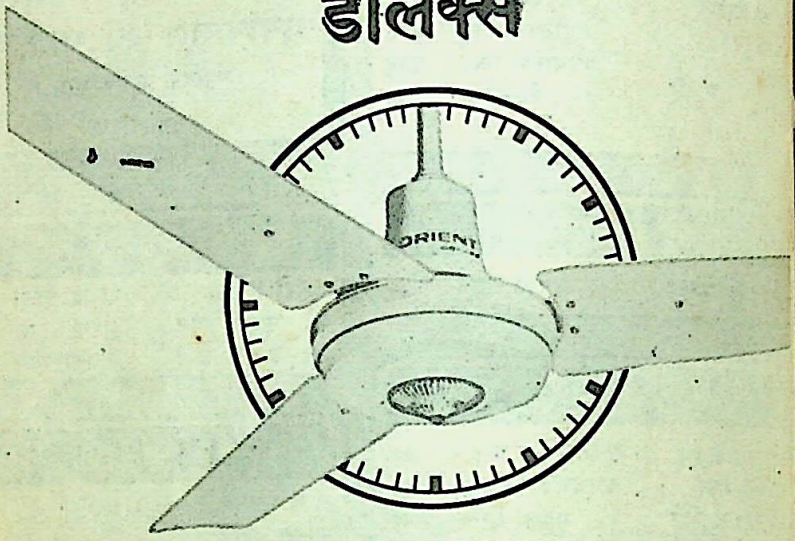

समय के अनुरूप नया रूप!

ओरिएन्ट शृंखला में एक और योगदान

- वर्षों से सर्वप्रिय अब नये डिजाइन में नया सजावटी डेकोरेटिंग कप व केनोपी.
- पूर्णतया डाई-कास्ट और वज़न में हल्का.
- झूलती अवस्था में आसानी से खोला व सर्विस किया जा सकता है, रंग भी नहीं बिगड़ता.

नया चोक-टाई
रेगुलेटर!
विद्युत खपत में बचत.
गर्म भी नहीं होता.

ओरिएन्ट

उन्नत पंखे

निर्माता: केमको केमिकल्स पोस्ट बाक्स न० ६६१२ कलकत्ता-७०० ००७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पैरिस ब्यूटी

चोली ब्रा

केवल आप ही जानती हैं, आपने ब्रा पहनी है।

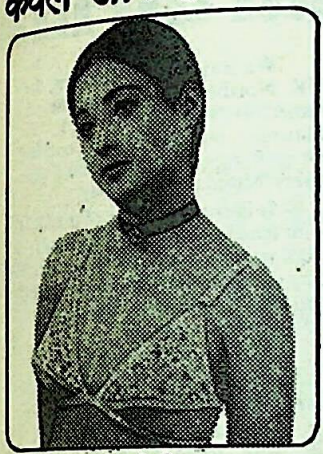

रोज़ी चोली ब्रा

कामिनी चोली ब्रा

निशा चोली ब्रा

निर्माता:
पैरिस ब्यूटी
ब्रेसियर्ज़ कं० (रजि०)
नई दिल्ली-110005
फोन : 569192

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"KLM is a major international airline."

We leave for Amsterdam, the UK, Northern Europe and the Americas every Tuesday and Saturday, with Boeing 747 comfort. Or to Bangkok, Manila and Tokyo every Monday and Friday.

It is characteristic of the Dutch that from a comparatively small country like the Netherlands, KLM has grown to be a big international carrier of passengers and cargo, of worldwide repute.

KLM is typically Dutch. Efficient and warm of character, and fond of doing things well.

If you have some major travelling to do, and expect to do it well, ask what KLM can do to help you on your way.

And don't forget that when you buy KLM you can secure your full foreign currency allowances.

Call Bombay 297233,
Calcutta 44122*,
Delhi 343998, Madras 86356.
Or contact your travel agent.

Says Dinesh Kumar
Father works for KLM in Delhi.

KLM

"The reliable airline of those surprising Dutch"

CAS-315-1-2

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शबनम में नहाये महकते फूलों की ताज़ी महक
आपका मन चुरा लेगी

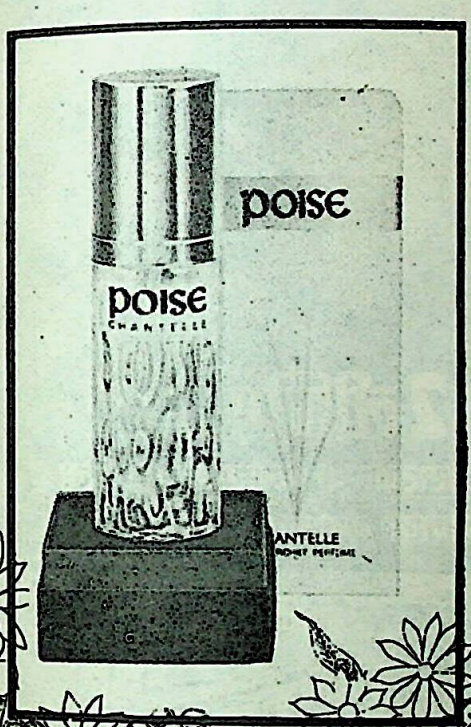

पॉयज़
शॅन्टॅल
प र फ़्यू म

विक्रेता : रैलीज इण्डिया लिमिटेड

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब आप इसके दांतों को पीड़ादायक
दंतछिद्रों से बचा सकती हैं

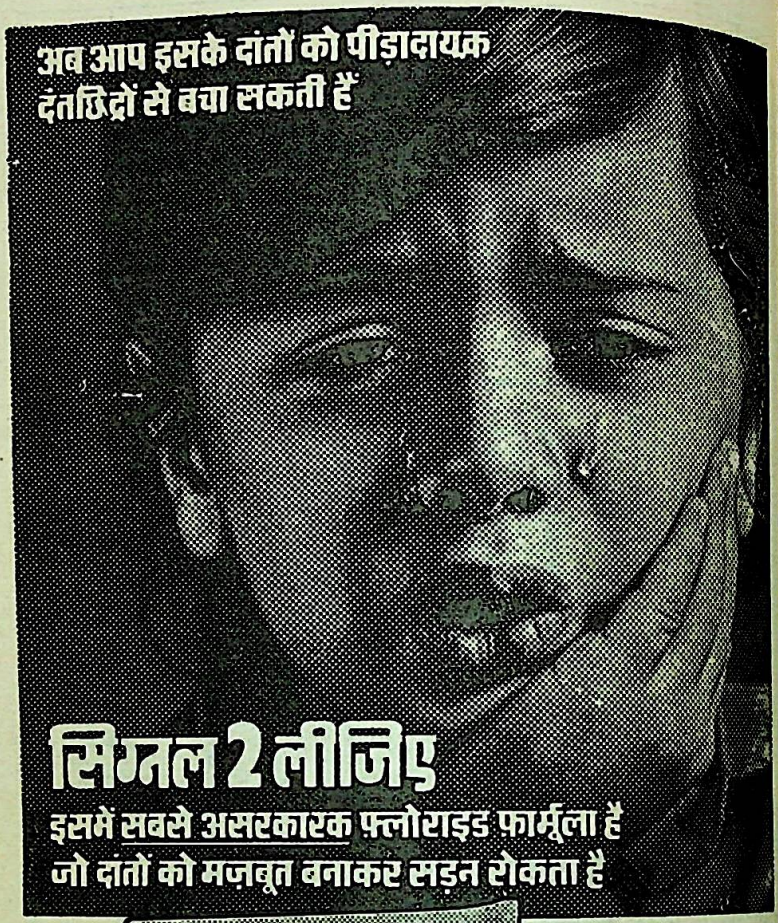

सिग्नल 2 लीजिए
इसमें सबसे असरकारक फ़्लोराइड फ़ार्मूला है
जो दांतों को मज़बूत बनाकर सड़न रोकता है

सिग्नल 2
हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

फ़्लोराइडयुक्त आपके परिवार के
दंतछिद्र रोकनेवाली
लिंटास - SG2.1-172

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वाद में निराले
एग्रो

डिब्बाबन्द फल और सब्ज़ियां;
जैम, जूस और जेली;
चटनी, शरबत और
शोरबा (प्युअरे);
अचार, मसाले और
करी पाउडर।

शुद्ध, ताज़े और स्वादिष्ट।

यू.पी.स्टेट एग्रो इंडस्ट्रियल
कॉर्पोरेशन लिमिटेड
२२, विधान सभा मार्ग,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri
FDS/UPA-16C

केवल ओडोमॉस ही दो तरह से आपकी निश्चित सुरक्षा करता है, मच्छरों को दूर भगाकर...

रातभर चैन की नींद सुलाता है!

ओडोमॉस जैसी सुरक्षा आपको अन्य किसी मच्छर-प्रतिरोधक से नहीं मिल सकती:

१

इसकी गंध मच्छरों को पास नहीं फटकने देती।

२

इसमें मिला अद्भुत तत्व रात भर आपकी त्वचा पे एक आवरण देकर मच्छरों को दूर रखता है।

इसीलिए ओडोमॉस आज भारत में सर्वाधिक बिकने वाला मच्छर-प्रतिरोधक है।

मच्छरों के हमले से बचिये

ओडोमॉस
की सुरक्षा पाइये!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप के पत्र

फरवरी (द्वितीय) अंक के 'सरित प्रवाह' की सभी टिप्पणियां पसंद आईं. निरस्त्रीकरण के संबंध में श्री मोरारजी देसाई का रूस और अमरीका के बीच मध्यस्थता का प्रस्ताव बिना लावपानी के बीज को अंकुरित करने का एक प्रयास है.

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी एक बार ऐसा ही प्रयास किया था और वह इस शांति-सूत्र में इतने अधिक उलझ गए थे कि 1962 में भारत को ही हिमालय का एक बहुत बड़ा भाग खो देना पड़ा.

—कुंवर अंजान

✦

फरवरी (द्वितीय) अंक में 'सरित प्रवाह' के अंतर्गत आप ने देश के विश्वविद्यालयों की सही वस्तुस्थिति का बोध करवाया है. मैं आप के सुझावों से सहमत हूं. लेकिन मैं विश्वविद्यालयों में फीस बढ़ाने के पक्ष में नहीं हूं, क्योंकि इस का आंदोलनकारी छात्रों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा.

ऐसे छात्रों की संख्या सीमित होती है तथा उन के सिर पर कोई न कोई राजनीतिक वरदहस्त होता है जिस की छत्रछाया में ये सनमानी करते हैं. इस के अतिरिक्त ऐसे छात्रों की या तो फीस माफ होती है या उन्हें सहायतार्थ छात्रवृत्ति मिलती है.

आंदोलनों में जो अन्य छात्र भाग लेते हैं वे आंदोलनकारी छात्रों से डर कर ही उन का साथ देते हैं, अतः आवश्यकता इस बात की है कि आंदोलनकारी छात्रों पर अंकुश लगाया जाए तथा कालिजों में उन के प्रवेश पर रोक लगाई जाए. तभी हमारे विश्वविद्यालयों की स्थिति संतोषप्रद हो सकती है.

—प्रमोदकुमार

✦

सरिता वास्तव में समाज में फैले अंधविश्वासों एवं बुराइयों को दूर करने तथा व्यक्तिगत चरित्र को निखारने में सहायक है. समाज में व्याप्त बुराइयों को इस पत्रिका द्वारा बहुत रूप से प्रस्तुत किया जाता है.

—आत्मादास गुप्ता

✦

मार्च (प्रथम) अंक में 'सरिता से बचिए' (लेख : सुधा अग्रवाल) वास्तव में मुझे बहुत पसंद आया. अभी भी ब्राह्मण वर्ग सरिता द्वारा उन के पाखंडों का परदाफाश करने के कारण इस का विरोधी बना हुआ है. सरिता में प्रकाशित लेखों से समाज का सचमुच पुनर्जागरण हो रहा है.

—देवीशरण अहिरवार

✦

मार्च (प्रथम) अंक में 'रबड़ की मुहर' (लेख : जनमित्र) पढ़ कर दुख हुआ. भारत को एक निर्धन देश कैसे न कहा जाए, जहां एक व्यक्ति (राष्ट्रपति ही क्यों न हो) पर इतना अधिक व्यय होता है. ऐसे देश में निर्धनता का वास नहीं होगा तो क्या होगा? बादशाहों को मात कर देने वाला अनावश्यक वैभव निर्धन वर्ग का शोषण तथा उन के अधिकारों का हनन है. ऐसे में समाजवाद के प्रति भिन्न धारणाएं उत्पन्न होना स्वाभाविक है.

—क. क. चौहान 'किशु'

✦

'रबड़ की मुहर' लेख के अंत में एक प्रश्न है "कि क्या वास्तव में इस देश के लिए राष्ट्रपति पद की आवश्यकता है?" इस गहन विषय पर विचार करने से पहले राज्यों के राज्यपालों के पदों की आवश्यकता के बारे में विचार किया जाना अधिक श्रेयस्कर होगा.

—रतनसिंह राठौर

✦

मार्च (प्रथम) अंक में 'सत्यकथाएं' (लेख : बलरामदत्त शर्मा) बहुत ही तर्कपूर्ण और सामाजिक है. लेखक को इतना सुंदर लेख लिखने पर बधाई. इस लेख को पढ़ने से पहले मैं ने कभी नहीं सोचा था कि सत्यकथाएं समाज को हानि पहुंचा रही हैं. मेरा एक युवा पुत्र इन को बड़े चाव से पढ़ता है. मैं ने उसे भी यह लेख पढ़वाया. इस लेख को पढ़ कर स्वयं मेरी भी बहुत सी रूढ़िवादी भावनाएं बदल गई हैं.

लेखक ने ठीक ही कहा है कि यदि आप को किसी से बदला लेना है, उसे बिगाड़ना है, उसे नष्ट करना है तो उसे सत्यकथाओं का सैट भेंट करते रहिए जिस के लिए वह आप का आभारी भी रहेगा.

—देवकीनंदन 'भंगेड़ी'

✦

फरवरी (द्वितीय) अंक में 'नशाबंदी' (लेख : सरल जैन) पढ़ा. लेखक ने एकपक्षीय विचार प्रस्तुत किए हैं. नशाबंदी के पश्चात भावी परिणामों के विषय में विचार करना उन्होंने उचित नहीं समझा. यदि आप मद्यपान करने वाले किसी व्यक्ति पर नशाबंदी से पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करें तो पाएंगे कि आरंभ में शौक में आ कर किया गया मद्यपान उस व्यक्ति की आदतों में परिणत हो जाता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया

एच एम वी का दो ख़ूबसूरत मज़बूत सेट

सुहाना है रूप अनोखा है रंग और कीमत इतनी कम कि सुनकर होंगे दंग!

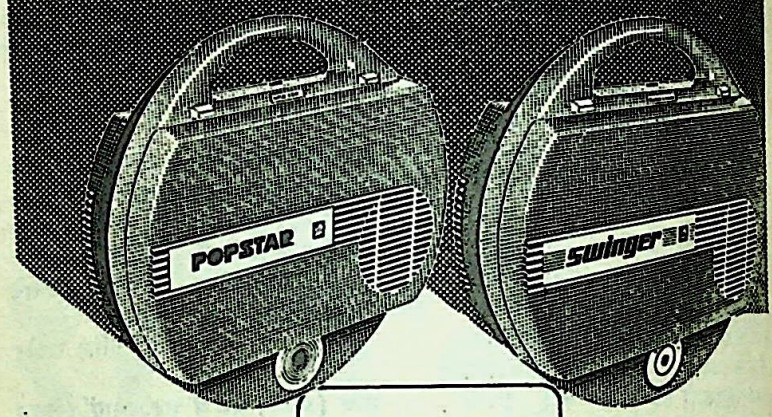

पॉपस्टार

ट्रान्समेन्स रेकार्ड प्लेयर

सुडौल, मज़बूत खूबसूरत। कई तरह के मनमोहक रंगों में। इसकी शानदार बनावट आपको मोह लेगी। जी हाँ, यही है पॉपस्टार रेकार्ड प्लेयर। इसमें दो स्पीड हैं—यह बैटरी और एसी मेन्स, दोनों पर चलता है। अचानक बिजली बन्द हो जाने या बिजली कनेक्शन कट जाने पर, यह अपने आप बिजली के बदले बैटरी से चलने लगता है। सुविधाजनक हैण्डल के कारण आप इसे कहीं भी आसानी से ले जा सकते हैं! इसकी सबसे बड़ी खूबी है इसकी बेहतरीन आवाज़ और लाजवाब काम।

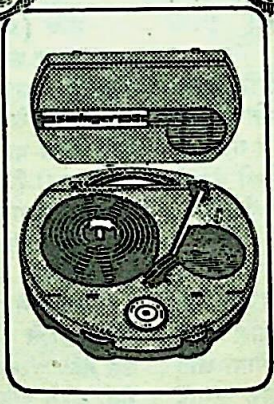

स्विंगर

ट्रान्समेन्स रेडियोग्राम

स्विंगर एक कदम और आगे है। इसमें एक मीडियम वेव रेडियो भी है, तभी तो इस सुन्दर सेट ने रेडियोग्राम पर आपको मिलता है संगीत का भरपूर मज़ा। अपने लोकल रेडियो स्टेशन के प्रोग्राम और अपने मनपसन्द रेकार्ड सुनिये ज़ोरदार, जानदार आवाज़ में। इस प्रकार के मोहक रंगों में—स्विंगर बैटरी और एसी मेन्स दोनों पर चलता है। बजा कर देखिये!

बहुत ही सुन्दर उपहार-सेट में! हर मौके के लिये एक आदर्श उपहार!

HMV 75 YEARS

हिज मास्टर्स वायस

अपने क्षेत्र के एच एम वी डीलर के यहाँ पधारिये

उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है. मद्यपान मनुष्य की दृढ़ इच्छाशक्ति को लग-भग समाप्त कर देता है और इस प्रकार दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव में मद्यपान का त्याग करना असंभव हो जाता है.

यदि नशाबंदी लागू कर दी गई तो नशाबंदी का परिणाम शीघ्र ही समाचारपत्रों में उभर कर पुनः सरकार के लिए एक सिरदर्द बन जाएगा और इस से घरघर शराब तैयार की जाने लगेगी. इस से न केवल अपराध एवं भ्रष्टाचार बढ़ेगा, वरन अनेक व्यक्ति जहरीली शराब पीने के कारण मर भी जाएंगे.

नशाबंदी तभी सफल हो सकती है जब मद्यपान करने वाले व्यक्ति को समझाबुझाकर शराब के त्याग के लिए प्रेरित किया जाए और उस की सोई हुई दृढ़ इच्छाशक्ति पुनः जाग्रत की जाए. इस के पश्चात ही उस के भीतर मद्यपान त्यागने की भावना जाग्रत हो सकती है. इस प्रकार सरकार तथा समाज के सम्मिलित प्रयास से ही नशाबंदी संभव है.

—नरेशचंद्र शुक्ल

✦

फरवरी (द्वितीय) अंक में प्रकाशित कहानी 'मनोहर बाबू' (कहानी : दिनेश पालीवाल) बहुत पसंद आई. कहानी के पात्र मनोहर बाबू के स्वभाव का चित्रण पसंद आया. प्रायः देखा जाता है कि वृद्धावस्था में लोगों की मनोवृत्ति एकदम बदल जाती है. स्वभाव एकाकी एवं चिड़चिड़ा हो जाता है. यदि वृद्धावस्था में सभी मनोहर बाबू की तरह अपना स्वभाव रखें तो परिवार में किसी प्रकार का मतभेद अथवा परेशानी नहीं होगी और न ही वृद्ध व्यक्ति उपेक्षा के पात्र बनेंगे.

—शकुंतला हुरकुटे

✦

फरवरी (द्वितीय) अंक में 'नियोग' (कहानी : रामप्रकाश) ने इस सत्य को उद्घाटित कर नए मूल्यों की स्थापना को बल दिया है कि मातृत्व स्त्री का जन्मसिद्ध अधिकार है और सतीत्व पुरुष द्वारा उस पर थोपा हुआ एक ढोंगा प्रपंच है. सतीत्व ने हजारों वर्षों के प्रचार-प्रसार के कारण हमारे समाज में कुछ नारियों को मातृत्व से वंचित कर रखा है.

लेखक को कहानी के लिए व संपादक को चयन के लिए बधाई.

—विमला अरोरा

✦

विभिन्न पत्रिकाओं में ऐसी कहानियां अक्सर पढ़ने को मिल जाती हैं, जिन में यह बतलाया जाता है कि पुरुष के संबंध किसी अन्य स्त्री से थे और बाद में पत्नी ने अपने पति को माफ कर दिया. भारतीय समाज के लिए यह कोई नई बात नहीं है, किंतु सरिता ही नए व प्रगतिशील विचार को बढ़ावा देती आई है, उस ने अपने फरवरी अंक में 'नियोग' कहानी प्रकाशित कर पाठकों को नए ढंग से सोचने को बाध्य किया. काश, भारतीय पुरुष वर्ग इस कहानी से कुछ शिक्षा ले. लेखक व संपादक को मेरी व मेरे परिवार की ओर से बधाई.

—सरोज अग्रवाल

✦

हमारे समाज में पुरुषों के व्यभिचार को अभी तक स्त्रियों ने माफ किया है, पुरुषों ने कदापि नहीं. स्त्रियों को तो सैदव ही सतीत्व का पाठ पढ़ाया जाता है. किंतु 'नियोग' में लेखक ने बड़ी सूझबूझ से पुरुष को यह सोचने को मजबूर किया है कि माफ करने का कर्त्तव्य केवल स्त्रियों का ही नहीं है.

—विभा गुप्त

✦

फरवरी (द्वितीय) अंक में 'बनजारे बहुरूपिए शब्द' (लेख : शरद्चंद्र पेंडारकर) हिंदी साहित्य प्रेमियों के लिए बहुत ही लाभप्रद है. मैं स्वयं हिंदी की एम. ए. होने के नाते इन शब्दों में बहुत रुचि रखती हूं व अपने ज्ञान का विस्तार करती हूं. लेखक के ये शब्द ऋग्वेद (5-73-4), अथर्ववेद (10.10.23) इत्यादि मेरी समझ के बाहर थे. इन अंकों का क्या अभिप्राय है यह हमें नहीं मालूम. लेखक को इस का प्रथम परिचय देना चाहिए था.

—निर्मल दर्शन बेदी

अथर्ववेद (10.10.23) का अभिप्राय है अथर्ववेद का दसवां कांड, दसवां सूक्त और तेईसवां श्लोक.

—संपादक

✦

फरवरी (द्वितीय) अंक में 'तलाक' (कहानी : कमररजा हैदरी) पढ़ कर लगा कि हमारे धर्म में बहुत सी कमियां हैं जिन को दूर करने के लिए ऐसे लेख और हैदरी जैसे लेखकों का होना आवश्यक है. मैं सरिता के प्रबंधकों का शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने इस कहानी को प्रकाशित कर के इस विषय को प्रकट किया.

—मुहम्मद अली खां 'चांद'

✦

फरवरी द्वितीय अक में '1977 का फिल्मी संगीत' (लेख : दिलीप गुप्ते) पढ़ा. लेखक की कुछ बातों से सहमत नहीं हूं. उन्होंने किसी न किसी कारणवश प्रत्येक संगीतकार व गीतकार के प्रति घोर निराशा व्यक्त की है. एक ओर तो लेखक ने फिल्मों में शास्त्रीय संगीत के प्रयोग को संगीतकारों द्वारा 'उस्तादी दिखाना' कहा है, दूसरी ओर लोकप्रिय धुनों को लोकसंगीत की नकल व बेसिरपैर की बतला कर टाला है. इसी प्रकार इस वर्ष की जिन अच्छी धुनों को लेखक ने स्वयं स्वीकारा है, उन्हें लोकप्रियता न मिलने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर असंतोष प्रकट किया है. पता नहीं, लेखक फिल्म संगीत में किस प्रकार की श्रेष्ठता चाहते हैं. सभी श्रोता तो उन जैसे संगीत कला के अच्छे पारखी नहीं होते. अतः फिल्म संगीत भी आम आदमी की रुचि के अनुकूल ही सफल हो सकता है. यही कारण है कि इस वर्ष की श्रेष्ठ धुनें उतनी लोकप्रिय नहीं हो सकीं.

लेदे कर अपने पूरे लेख में लेखक ने सिर्फ भप्पी लाहिड़ी को इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ संगीतकार स्वीकार किया भी तो किसी कारणवश उन से असंतुष्ट भी रहे. तभी उन्होंने 'बंबई से आया मेरा दोस्त' गीत में भप्पी लाहिड़ी को 'आराम' को 'अरम' और 'सलाम' को 'सलम' कहने पर उन्हें मुंह खोल कर गाने की सलाह दी है.

—वामाक्षी स्वामीनाथन

✦

1977 का 'फिल्मी संगीत' में लेखक का यह कहना कि गायक मुहम्मद रफी इस साल महज कव्वाल बन गए, ठीक नहीं लगता. मुहम्मद रफी ने इस साल तीन ही कव्वालियां गाई हैं और बाकी गीत.

जिस तरह गायिकाओं में लता सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है उसी प्रकार मुहम्मद रफी गायकों में सर्वश्रेष्ठ हैं. उन का गाया प्रत्येक गीत लाजवाब है. उन की आवाज में इस कदर मिठास है कि वह धीरे से धीरे और ऊंचे से ऊंचा गा लें, मगर उन की आवाज का माधुर्य वैसा ही रहेगा.

—सुखविंदर

✦

फरवरी (प्रथम) अंक में 'आफिसर कालोनी' (लेख : मधुचंद जैन) पढ़ा. यह सही है कि आफिसर कालोनी में एक बंगले की पत्नी दूसरे बंगले की पत्नी को अपने से छोटा समझती है. पति लोग तो आपस में मिलजुल कर रहना चाहते हैं. उन में छोटेबड़े की भावना भी नहीं होती पर अफसरों की बीवियां एकदूसरे से मिलना पसंद नहीं करतीं. —दुर्गाचंद जैन

✦

जनवरी (द्वितीय) अंक में 'धर्म' (लेख : सखा बोरड़) में धर्म संबंधी बातों की चर्चा विस्तृत रूप से की गई है पर उस से उठने वाली समस्याओं की चर्चा आंशिक रूप से ही हुई है. आधुनिक भारतीय समाज में धर्म का आडंबर एक ज्वलंत समस्या है और इस के परिणामस्वरूप समाज में मानसिक तनाव का वातावरण व्याप्त है. यद्यपि समय के साथसाथ धर्म की कट्टरता में भी कमी हुई है, पर फिर भी समस्याओं तथा अंधविश्वासों का अंत नहीं हुआ है. आज भी 'अंतिम संस्कार' करते समय लोग इस बात को मानते हैं कि मृत्यु के बाद मृत आत्मा को शांति के लिए जितनी दानदक्षिणा ब्राह्मणों को दी जाएगी वह सभी उन (मृत आत्माओं) के पास पहुंच जाएगी. बहुत जगह तो यह भी देखने को मिलता है कि लोग भगवान के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित करने के लिए बकरों की बलि देते हैं और कुकर्म तथा पाप करने के बाद गंगा में नहा कर अपने को पवित्र मान लेते हैं मानो उन्हें उन पापों से मुक्ति मिल गई और फिर पाप को प्रश्रय देने लगते हैं.

—दुर्गा मित्तू

✦

जनवरी (द्वितीय) अंक में 'दांपत्य जीवन' (लेख : संतोष बजाज) में लेखिका ने यह सच विवरण दिया है कि पति या पत्नी की जराजरा सी गलतियों व लापरवाहियों से जीवन में कितनी कटुताएं उत्पन्न हो जाती हैं.

मेरी एक सहेली है. उस की शादी को पंद्रह वर्ष हो गए हैं. शादी के बाद जब वह पहली बार मायके गई तो उस ने पति से कुछ रुपए मनीआर्डर द्वारा मंगवाए. पति ने यह सोच कर पैसे नहीं भेजे कि वह मायके में तो है ही, जरूरत होगी तो मांबाप से ले लेगी. बाद में जब यह उसे लेने जाएगा तो दे देगा.

पैसे न भेजने व पत्र न लिखने पर पत्नी का मन ऐसा खट्टा हुआ कि उस दिन के बाद से आज तक उस ने फिर कभी पति से पैसे नहीं मांगे. अब चाहे वह उस पर हजारों रुपए ही क्यों न निछावर कर दे, पर उस के मन पर यह घटना अपनी गहरी छाप छोड़ गई है.

—अनूप

सरिता के लेखक

रमेशशंकर सक्सेना

कहानी 'हड़ताल' के लेखक रमेशशंकर सक्सेना का शौक गांव के पुनरुत्थान के लिए सेवा कार्य करना है. इस कार्य को वह लेखनी के माध्यम से भी करते हैं. सामाजिक और धार्मिक विषयों पर लिखना इन्हें विशेष रूप से पसंद है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

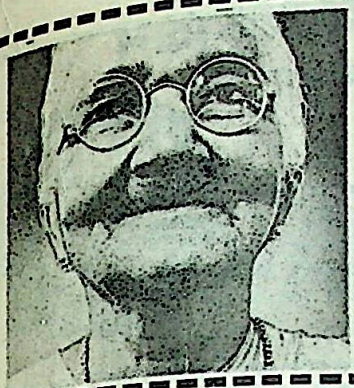

दादी माँ कहती है—

**"एक दिन में केप्स्यूल एक
दूर रखे रोग अनेक!"**

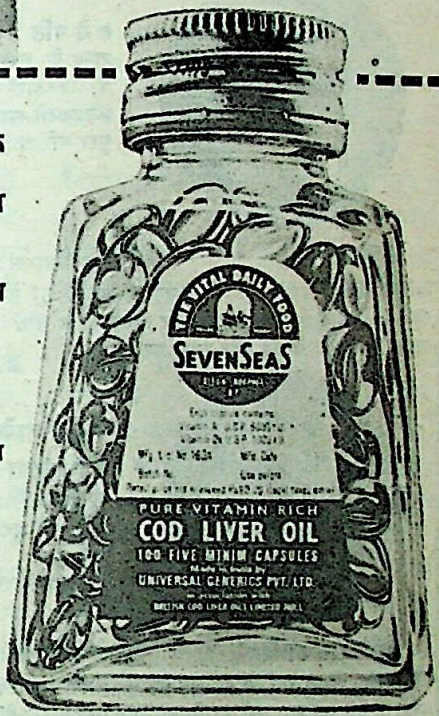

प्राकृतिक विटामिन :
'सेवन सीज़ कॉड्लीवर ऑईल' प्राकृतिक विटामिन 'ए' और 'डी' से परिपूर्ण है। प्राकृतिक और कृत्रिम विटामिनों में क्या अंतर है? शरीर द्वारा प्राकृतिक विटामिन सरलता से संपूर्णतया सोख लिये जाते हैं। शरीर और हड्डियों के विकास के लिए प्राकृतिक विटामिन 'ए' और 'डी' अनिवार्य हैं।

प्राकृतिक शक्ति :
जीवशास्त्र व चिकित्सक शोधों से यह प्रमाणित हुआ है कि कॉड्लीवर ऑईल का पौष्टिक मूल्य उसके प्राकृतिक विटामिन के तत्त्वों से भी अत्यधिक है। इस तेल में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध 'पोलिअनसेच्युरेट्स' तत्त्व हैं जो रक्त के 'कोलेस्टेरोल' की मात्रा को कम करते हैं, जिसके कारण शरीर की अनावश्यक चरबी नष्ट होकर शक्ति की वृद्धि होती है।

प्राकृतिक पारिवारिक टॉनिक :
पीढ़ियों से माँ-बापने अपने बच्चों के जीवन का शुभारंभ 'सेवन सीज़' देकर किया है। जी हाँ, यह उगते बच्चों के लिए और साथ ही बड़ों के लिए भी उत्तम है।

निस्संदेह...
'एक दिन में केप्स्यूल एक दूर रखे रोग अनेक...'

T-PAS/UG/26 H

सेवन सीज़ कॉडलीवर ऑईल केप्स्यूल्स

प्राकृतिक पारिवारिक टॉनिक —पीढ़ियों से विश्वसनीय।

सेलींग एजन्ट्स : इ. मर्क सर्विसिस एन्ड एजन्सीज़ प्रा. लिमिटेड
पोस्ट बॉक्स नंबर १६५६६, बम्बई ४०० ०१८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्व विजय प्रकाशन
का एक और नया सेट

विश्व सुलभ साहित्य

● खाई — कुसुम गुप्ता

यौन स्वच्छंदता के मुलम्मे के नीचे छिपी जिंदगी की तस्वीर और एक नारी का अंतर्द्वंद्व प्रस्तुत करने वाला मनोवैज्ञानिक व सामाजिक उपन्यास.

2.50

● ये पति

हास्य के मूल स्त्रोत आप खुद भी हैं. आप व आप की पत्नी व रिश्तेदारों की कई बातें व्यंग्य के रूप में पतियों पर छींटाकशी करती हैं जिन्हें सुन कर पति महोदय के अतिरिक्त पूरा परिवार हंसने लगता है.

2.50

● मेहंदी का पौधा — रा. श्यामसुंदर

दांपत्य जीवन कैक्टस की तरह नहीं है जो कि हर हाल में बिना कुछ पाए भी जीवित रहे. यह तो मेहंदी के पौधे की तरह है—बेहद नाजुक और स्नेह का प्यासा.

2.50

विश्व पाकेट बुक्स

● प्रतिहिंसा — जनमित्र

प्रतिहिंसा की आग में जलते हुए लोगों की एक ऐसी कहानी जिस की शुरुआत रहस्यों से होती है और अंत भी चौंका देता है.

2.50

हर कदम पर एक नया रहस्य, एक नई उलझन.

● आधी रात को दिन — सुनील नाथ चक्रवर्ती

सुनामिका समझ रही थी कि वह सेठ हिरजी के खिलौने ढो रही है पर उसे पता नहीं था कि वह स्वयं एक गिरोह के हाथ का खिलौना बन रही है: क्या था उन खिलौने में जो सेठ हिरजी इतनी गोपनीयता बरत रहा था.

2.50

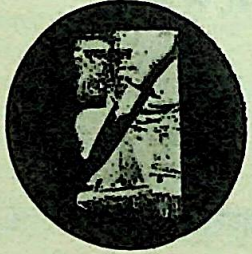

● एक भूल — मदन मसीह

प्रकाश की हत्या कर दी गई. संदेह में किशनसिंह गिरफ्तार. कुसुम व भूपेंद्र से कागजातों की मांग व अपहरण! बोस जांच करते खुद ही जाल में जा फसा. लेकिन जब कोहरा छंटा तो किशनसिंह की भूल का पता चला. वह क्या भूल थी? रहस्य, रोमांच व मनोरंजन से भरपूर रोचक उपन्यास.

2.00

पूरा सेट लेने एवं पूरा धन अग्रिम भेजने पर 10% छूट एवं डाक व्यय केवल पचास पैसे वी. पी. द्वारा.

सभी पुस्तक विक्रेताओं से प्राप्य या

44.-VV

विश्वविजय प्रकाशन प्रेस 12, कनाट सरकस नई दिल्ली-110001

संपादकीय

भारत प्रवाह

अप्रैल (प्रथम) अंक में इन पंक्तियों में भारतीय विदेश मंत्री व उन के मंत्रालय की अरब, नीग्रो व रूसी चरण-चुंबन की प्रवृत्ति पर कुछ प्रकाश डाला गया था.

भारत के स्वतंत्र होने के बाद से आज तक पहले श्री जवाहर लाल नेहरू, फिर श्रीमती इंदिरा नेहरू गांधी और अब श्री अटलबिहारी वाजपेयी की अध्यक्षता में, भारत के विदेश मंत्रालय ने कभी भी इन तीन वर्गों की किसी भी मामले में कोई आलोचना नहीं की है— चाहे वह मामला हंगरी, पोलैंड, चैकोस्लोवाकिया पर रूस द्वारा जोरजबरदस्ती, गैरकानूनी व अनैतिक ढंग से कब्जा करने का हो या नीग्रो लोगों द्वारा भारतीयों की संपत्ति जब्त कर के उन्हें अपने देश से निकालने का हो या अरबों के आतंकवाद, राहजनी या तेल की घोर मुनाफाखोरी का हो. अब इस प्रवृत्ति की सब से ताजा मिसाल है इजरायल द्वारा छापामार आतंकवादियों के अड्डे समाप्त करने के लिए दक्षिणी लेबनान पर किए गए हमले की वाजपेयीजी द्वारा एकपक्षीय तीव्र धमाकेदार भर्त्सना.

यद्यपि इस 'दहाड़' में इजरायल को खूब कोसा गया, लेकिन फिलिस्तीनी आतंकवादियों के लिए, जिन्होंने अनेक निर्दोष व्यक्तियों की योजना के अनुसार निर्मम हत्या की, कुछ भी नहीं कहा गया.

यह तो ठीक है कि इजरायल को यह अधिकार नहीं है कि वह दूसरे देश में अपनी सेनाएं उतार दे. पर जब वह दूसरा देश ऐसे आतंकवादियों को पनाह दे और उन की सहायता करे या उन्हें रोकने में असमर्थ हो जो इजरायल में घुस कर निर्दोष बच्चों, स्त्रियों और नागरिकों को बिना कारण मौत के घाट उतार दें तो क्या किया जाए? ऐसी ही स्थिति में भारत ने बंगला देश में क्या किया था? वहां 1971 में अपनी फौजें भेज कर उस पर अधिकार जमा लेने का क्या औचित्य था? यह ठीक है कि भारत ने वह क्षेत्र खाली कर दिया. पर इजरायल भी तो लेबनान से संयुक्त राष्ट्र संघ की शांति सेना के आते ही लौट रहा है.

सारे अरब इस बात पर कटिबद्ध हैं कि इजरायल को पूर्णतया नष्ट कर के उस के वासियों को भूमध्य सागर में खदेड़ दें. वे इजरायल का अस्तित्व ही स्वीकार नहीं करते. (इस विषय में यह बात दिलचस्प है कि स्वयं भारत ने इजरायल की स्थापना करने वाले संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्ताव का खुल कर अनुमोदन किया था.)

अब इजरायल क्या करे? आत्म-हत्या? आतंकवादियों या आक्रमणकारियों के आगे पूर्ण समर्पण? कल यदि पाकिस्तान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

या बंगलादेश इसी प्रकार कश्मीर या पश्चिमी बंगाल में आतंकवादी छापेमार भेजने लगें, तो वाजपेयीजी क्या करेंगे?

✦

जनता सरकार ने निवारक नजरबंदी विधेयक को, जिस के द्वारा मीसा को दूसरे रूप में फिर लाया जा रहा था, संसद से लौटा लिया है. जिस कानून के विरुद्ध जनआक्रोश के बल पर जनता पार्टी सत्तारूढ़ हुई उसी कानून को अनिवार्य बता कर जनता पार्टी न केवल स्वयं को धोखा दे रही थी बल्कि जनसाधारण को भी बेवकूफ बना रही थी. गनीमत है श्री मोरारजी देसाई व श्री चरणसिंह ने इस विषय में विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की विदेश नीति के संबंध में दी यह दलील नहीं दोहराई कि जो बातें वह (श्री वाजपेयी) विपक्ष में रह कर कह रहे थे वे मंत्री की कुरसी पर बैठने के बाद लागू नहीं होतीं.

✦

भारत सरकार विभिन्न राज्य सरकारों के सहयोग से 1 अप्रैल से नशाबंदी कर रही है. यह सराहनीय है. पर इस के साथसाथ राज्य सरकारें इसी तरह का, जो एक और गलत धंधा कर रही हैं, उसे भी समाप्त करने की आवश्यकता है. वह धंधा है लाटरी का.

पहले लाटरियां कोई भी चला सकता था. अब यह राज्यों का एकाधिकार है. स्पष्ट रूप से यह जुआ है—चाहे इस के लिए कुछ भी तर्क दिए जाएं.

कहा जाता है इस से जो धन आता है उसे लोगों के विकास पर खर्च किया जाता है.

प्रथम तो राज्य सरकारों को इस काले धंधे से कोई विशेष लाभ नहीं होता. अधिकांश धन तो सरकारी अमला व एजेंट खा जाते हैं. अनेक राज्य सरकारें तो इस धंधे में घाटा यानी अपने पल्ले से रुपया दे चुकी हैं.

दूसरे, यह तथाकथित विकास कार्य किस के लिए किया जाता है? लाटरी के टिकट अधिकतर गरीब जनता खरीदती है जिन्हें भड़कदार, ऊंचीऊंची आशाएं बंधाने वाले या यों कहिए भ्रम में डालने वाले लुभावने विज्ञापनों से प्रभावित किया जाता है.

ये लोग अपने बीवीबच्चों का गला काट कर, रातोंरात लखपति बनने के स्वप्न को पूरा करने के लिए इस में पैसा लगाते हैं पर इनाम लाखों में से एकदो को मिलता है और जो मिलता है उस पर 30 प्रतिशत भारत सरकार टैक्स के रूप में वसूल कर लेती है. यह भी कोई निश्चित नहीं है कि जो इनाम घोषित किए जाते हैं वे वास्तविक टिकट वाले को मिल भी जाते हैं.

वैसे संभावना यही है कि असली टिकट वाला सरकारी दफ्तरों के चक्कर खाता रहता है. शायद कभीकभी मुश्किल से 'नवग्रह की पूजा' के बाद इनाम का कुछ अंश उसे मिल पाता हो.

इस प्रकार लाखों लोगों को भ्रम में डाल कर, भाग्यवादी व बेवकूफ बना कर उन की जेबों से रुपया निकाल कर उस का एक छोटा सा भाग यदि वास्तव में तथाकथित विकास कार्यों पर खर्च कर भी दिया गया तो जनसाधारण को इस से क्या राहत मिली? उतना रुपया तो वे लोग स्वयं अपने व अपने परिवार पर खर्च कर के अपना विकास कर लेते.

लाटरी के पक्ष में दूसरी दलील यह है कि लोग तो जुआ खेलेंगे ही, तो राज्य सरकारें ही उन्हें क्यों न जुआ खिलाएं और कुछ धन अपने लिए कमा लें? एक यही तर्क तो शराब की खुले आम बिक्री के लिए दिया जाता है—लोग तो शराब पिएंगे ही. वैध शराब नहीं मिलेगी तो गैरकानूनी शराब पिएंगे. तब राज्य सरकार ही शराब के ठेके दे कर कुछ धंधा क्यों न कमा ले? जब शराब के संबंध में सरकार यह तर्क नहीं मानती तो लाटरी के पक्ष में क्यों मानती है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेश्यावृत्ति हमेशा से चलती आई है और कानून द्वारा बंद कर दिए जाने पर भी चलती है. तब सरकार भी गलीगली और गांवगांव वेश्यालय क्यों न खोल दे ताकि आमदनी का सिलसिला बन जाए? और यदि सरकार द्वारा इन शराबखानों व वेश्यालयों का लाटरियों की तरह बकायदा विज्ञापन भी किया जाए, तब तो निःसंदेह सरकार के हाथ मोटी रकम लग सकती है.

हजारों व्यक्तियों को जुआ खिला कर, शराब पिला कर, वेश्यालय पहुंचा कर यदि कुछ रुपया कमा के उस से एक छोटामोटा स्कूल या अस्पताल खोल दिया जाए तो क्या वह वास्तव में विकास कहा जा सकता है?

✦

राज्यों को अधिक अधिकार दिए जाने के बारे में आजकल बहुत विवाद चल रहा है, वैसे तो इस दिशा में पहले भी यदाकदा कानों में शोर पड़ जाता था, पर लगभग सभी राज्यों और केंद्र में कांग्रेसी सरकारें होने के कारण किसी प्रकार के विरोध की गुंजाइश नहीं होती थी. प्रथम तो केंद्रीय सरकार किसी विरोधी पार्टी की राज्य सरकार को पनपने ही नहीं देती थी, अगर कहीं भूलेभटके ऐसा हो भी जाता था तो तुरंत उसे गिराने की साजिशें शुरू हो जाती थीं जिस में राज्यों के राज्यपाल भी केंद्रीय सरकार की पूरी मदद करते थे. ये राज्यपाल अधिकतर घिसेपिटे खूंट कांग्रेसी राजनीतिबाज ही होते थे.

अब जब कि देश में फिर जनतंत्र की स्थापना हुई है और लोगों को उन के अधिकार वापस लौटा दिए गए हैं, ऐसे सुनहरे अवसर का लाभ उठाने के लिए राज्य सरकारें भी आगे आ गई हैं. इस समय कश्मीर, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल आदि में जनता पार्टी से भिन्न अलग-अलग पार्टियों की सरकारें हैं.

राज्यों को अधिक अधिकार दिए जाने की आवाज सब से पहले पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री श्री ज्योति बसु ने उठाई. उस के बाद शेख अब्दुल्ला ने भी उन की हां में हां मिलाई. शेख साहब का कहना है कि उन के राज्य को तो पहले ही भारतीय संविधान में विशेष दर्जा प्राप्त है. इसलिए इस मांग से उन्हें तो कोई फर्क नहीं पड़ता, पर वह चाहते हैं कि अन्य राज्यों को भी वे सब अधिकार दिए जाएं जो जम्मू व कश्मीर को प्राप्त हैं.

अब प्रश्न उठता है कि यही दो राज्य अधिक अधिकारों की मांग क्यों कर रहे हैं. अन्य राज्य भी तो ऐसे हैं जहां गैर जनता सरकारें हैं, पर उन से ऐसी कोई आवाज नहीं आ रही. अगर कभीकभार आती भी है तो बड़े धीमे स्वर में.

इस का सीधासादा सा कारण यह है कि अन्य गैर जनता सरकारों में वही लोग हैं जिन का जनता पार्टी के नेताओं के विचारों से अधिक मतभेद नहीं है और उन की नीतियां भी लगभग एक हैं. ये सभी अपना आदर्श महात्मा गांधी को मानते हैं.

पश्चिम बंगाल में कम्यूनिस्ट पार्टी की सरकार है और यह जनता पार्टी से बुनियादी तौर पर भिन्न विचारधारा रखती है. पश्चिम बंगाल में उस का शासन कायम हो गया है और अब वह और अधिकार प्राप्त कर के अपने पांव मजबूत करना चाहती है, ताकि यहां से देश के अन्य भागों में पांव फैला सके. कम्यूनिस्ट इस समय बड़ी कूटनीति से काम ले रहे हैं. एक ओर वे केंद्र सरकार से बिगाड़ना भी नहीं चाहते, दूसरी ओर पश्चिम बंगाल में अपनी जकड़ मजबूत करते जा रहे हैं.

कम्यूनिस्टों की कार्य प्रणाली से सभी परिचित हैं. अगर उन्हें कुछ और अधिकार दिए गए तो वे रूस और चीन से भी सहायता लेने में नहीं चूकेंगे और एक दिन पूरे देश को निगल जाएंगे. इसलिए अधिक अधिकार मांगने के पीछे कम्यूनिस्टों की असली नीयत साफ देखी जा सकती है. वे गैर कम्यूनिस्ट केंद्रीय सरकार से अधिक से अधिक स्वतंत्रता चाहते हैं ताकि अपने इरादों को पूरा कर सकें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे शोर मचाने वाले शेख अब्दुल्ला हैं. उन के बारे में कौन नहीं जानता कि वह कभी कशमीर का सुलतान बनने के सपने देखा करते थे. वह तो यहां तक कह रहे हैं कि भारत पाकिस्तान की कशमीर विवाद वार्ता में कशमीर के प्रतिनिधियों को भी भाग लेने दिया जाए. चोरचोर मौसरे भाई की कहावत के अनुसार दोनों एकदूसरे का समर्थन कर रहे हैं. लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि आज इन दोनों राज्य सरकारों के इरादों को देखते हुए देश की एकता खतरे में नजर आ रही है. अभी तक केंद्रीय सरकार इस दिशा में बढ़ रही है. आशा है भविष्य में भी वह किसी राज्य सरकार को ऐसा कदम नहीं उठाने देगी जो देश की एकता के लिए खतरा साबित हो.

✦

शिक्षा के क्षेत्र में राजनीति मुख्यतः छात्र संघों द्वारा घुसती व पनपती है. आजकल छात्र संघों की सदस्यता हर विद्यार्थी के लिए अनिवार्य है, और इस प्रकार राजनीतिबाजों को न केवल बैठे-बिठाए सदस्यता शुल्क के रूप में जमा की हुई मोटी रकम मिल जाती है, शक्ति व सत्ता की सीढ़ियां चढ़ने के लिए लाखों विद्यार्थियों के कंधे भी मुफ्त में ही मिल जाते हैं.

वर्तमान केंद्रीय गृह मंत्री श्री चरण सिंह जब उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री थे तब उन्होंने यह अनिवार्य सदस्यता समाप्त कर दी थी, और परिणामस्वरूप विश्वविद्यालयों में काफी शांति हो गई थी. पर उन के बाद आए 'इंदिरा दास' श्री कमलापति त्रिपाठी ने अपनी शक्ति बनाए रखने के लिए अनिवार्य सदस्यता फिर स्थापित कर दी.

व्यापारी संघ हो, मजदूर संघ हो या विद्यार्थी संघ, इन में अनिवार्यता का सिद्धांत बिलकुल गलत और हानिकारक है. हर व्यक्ति को स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह अपनी मर्जी से, देखभाल कर इन संघों का सदस्य बने. यदि इन संघों के पदाधिकारी बदले में कुछ दे सकेंगे तो कोई कारण नहीं कि अधिकांश व्यक्ति संघों के सदस्य न बने रहें. पर आज तो राजनीतिबाज और दादा लोग देते कुछ नहीं, लेते ही लेते हैं—धन, समय, शांति, कानून व व्यवस्था सब को नष्ट कर के.

देश की उन्नति के लिए, शांति के लिए, यह आवश्यक है कि इन व्यापारिक, मजदूर व छात्र संघों के दादाओं की इजारेदारी समाप्त की जाए. और यह काम वर्तमान जनता सरकार ही कर सकती है क्योंकि स्वयं इस के अभी तक कोई व्यापारिक, मजदूर या छात्र संघ नहीं हैं, चाहे इस के घटकों के अलबत्ता हों. क्योंकि अभी तक कोई एक घटक पूरी जनता पार्टी पर हावी नहीं है, इसलिए समय रहते इन संघों की अनिवार्यता आसानी से हटाई जा सकती है.

✦

भारत हाकी विश्व कप चैंपियनशिप में बुरी तरह हार गया है—यहां तक कि इस की टीम सेमीफाइनल तक भी नहीं पहुंच सकी.

जो देश पिछली बार चैंपियन रहा हो, उस के लिए यह हार लज्जाजनक तो है ही, इस से खेलकूद के प्रसार में भी बहुत बाधा पहुंचने की आशंका है.

इस हार का कारण वही लगता है जो आज देश के हर क्षेत्र में घुन का काम कर रहा है—राजनीति और राजनीतिबाज. खिलाड़ियों का चुनाव उन की प्रतिभा देख कर नहीं, सिफारिश, स्वार्थ और दांवपेंचों के आधार पर ही किया जाता है. जिस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र से जब तक राजनीतिबाजों का बहिष्कार नहीं होगा, वहां न शांति रहेगी न कोई भूतभूत उन्नति होगी, उसी प्रकार खेलकूद के क्षेत्र में भी जब तक सरकार व सरकारी अधिकारियों तथा राजनीतिबाजों का हस्तक्षेप रहेगा, इस प्रकार की दुर्घटनाएं होती ही रहेंगी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नई दिल्ली स्थित उच्चतम न्याया-लय का भवन

भ्रष्टाचार के गढ़

लेख • अजेयकुमार गोयल

इंसाफ के प्रतीक कहे जाने वाले हमारे न्यायालय भ्रष्टाचार की दलदल में इतने अधिक फंस चुके हैं कि उन से न्याय की उम्मीद करना अन्याय है...

न्याय के क्षेत्र में जनपद स्तर के न्यायालयों को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अधिकार प्राप्त हैं. जहां एक सिविल जज असीमित धनराशि के मुकदमे का निर्णय कर सकता है वहां एक उप न्यायाधीश अपनी कलम से मौत की सजा तक का दंड लिख सकता है.

न्यायालय वह स्थान है जहां दो व्यक्ति या दल किसी आपसी झगड़े को ले कर इस आशा से आते हैं कि न्याय के मंदिर से जो कानूनन उचित होगा वह ज्ञात हो जाएगा. इनसान इंसाफ की उम्मीद

इलाहबाद उच्च न्यायालय का भवन, जिस में 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी को भ्रष्ट घोषित किया गया.

में मुकदमे की धनराशि का एक काफी बड़ा भाग खर्च करने को तैयार रहता है.

पर वास्तव में कचहरियां और अदालतें भ्रष्टाचार का गढ़ बन चुके हैं. आज हालत यह है कि कचहरी की ईंटईंट पैसा मांगती है. अदालतों में दसियों स्थानों पर लिखा रहता है—रिश्वत लेना व देना अपराध है. पर कचहरी से निकलने वाला हर व्यक्ति जानता है कि यह चेतावनी कम अपराध करने का सुझाव ज्यादा है.

यहां रिश्वतबाजी भी एक प्रकार का टोल टैक्स है. आप जहांजहां से गुजरें भेंट चढ़ा दें, वरना? वरना आप आगे बढ़ ही नहीं पाएंगे.

मामले का शुभारंभ नंबरी बाबू यानी सूट्स क्लर्क करते हैं जो किसी दावे को क्रमानुसार लगाते हैं एवं सम्मन जारी करते हैं. महज सम्मन जारी करने के लिए ही पांचदस रुपए ले लिए जाते हैं वरना यह भी संभावना रहती है कि सम्मन ठीक जगह पर पहुंचे ही न या उस में कोई तथ्य संबंधी त्रुटि निकाल दी जाए और मामला पूरे का पूरा ही खटाई में पड़ जाए.

भेंट या सरकारी फीस?

प्रायः यह भेंट सरकारी फीस के रूप में मांगी जाती है और यही समझ के दी जाती है.

क्या आप ने कचहरी के दरवाजे के पास पहुंच कर सफेद वरदी पहने, चपरास लगाए किसी आदमी को गला फाड़फाड़ कर 'फलानाफलाना हाजिर हों' की आवाज लगाते देखा है?

इस महानुभाव को चपरासी कहते हैं. कचहरी के अन्य कर्मचारियों की तरह यह प्राणी भी दोनों पार्टियों से समान रूप से खाता है.

प्रायः प्रत्येक पेशी पर ही प्रत्येक पार्टी इन्हें दो रुपए से पांच रुपए तक की बख्शीश देती है. यदि कोई यह घूस देने में आनाकानी करे तो हो सकता है कि आवाज इतनी धीमे से लगाई जाए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि पार्टी सुन ही न पाए. पर यह ट्रिक बहुत चुस्त और चालाक चपरासियों के बस की है.

रिश्वत न देने पर चपरासी पार्टी को तंग कर सकता है. 'सीधे खड़े होइए' या 'हाथ नीचे रखिए' आदि शब्दों से उसे उपस्थित लोगों में शर्मिंदगी और हंसी का पात्र बना सकता है.

अभियुक्त जब कत्ल, डकैती, वगैरा के संगीन मामलों से छूट जाते हैं तो ये चपरासी सौ रुपए तक का दान पा जाते हैं.

मजे की बात तो यह है कि न्याय के समर्थक वकील लोग ही अपने मुवक्किलों को इन सरकारी मुलाजिमों को रिश्वत देने को कहते हैं.

अकसर हीं इस खुली लूट के खिलाफ आवाज उठाई गई है. साथ ही न्यायाधीश भी यह जानते हैं कि यह सब हो रहा हैं. तो आखिर वे इसे रोकते क्यों नहीं?

रोकते यों नहीं कि सरकार से तनख्वाह लेने वाले ये चपरासी अपने जज साहब के घर में घरेलू नौकरों की तरह काम करते हैं. उत्तर प्रदेश में एक न्यायाधीश को दो चपरासी मिलते हैं. घर पर एक की ड्यूटी सुबह छः से बारह बजे तक लगती है और दूसरे की शाम को चार बजे से ले कर रात को साहब के सोने तक.

सुबह वाला बिस्तरे समेटता है, अंगीठी सुलगाता है, बाजार से सब्जी-सौदा लाता है, बच्चों को स्कूल छोड़ कर आता है, साहब को खाना परोसता है, जूतों पर पालिश करता है, कपड़े धोता है, घर में झाड़ू पोंछा लगाता है.

शाम वाला चपरासी कुछ ऊंचे स्तर के काम भी करता है. जैसे सिनेमा के पास लाना, आनेजाने वालों को बिठाना, बिस्तरे बिछाना, बच्चों को पार्क या

वकील और मुवक्किल में एक बार रिश्ता कायम हो जाए तो फिर टूटना मुश्किल है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

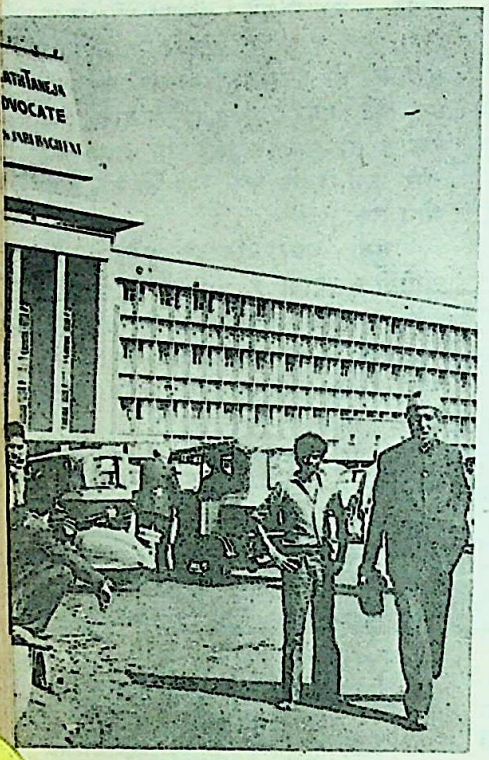

पेशियों का अंतहीन सिलसिला : दिल्ली स्थित तीस हजारी कोर्ट का एक बाहरी दृश्य.

बाजार में टहलाना, साहब को रात की गाड़ी में बिठा कर आना व घर पर सोना, आदि.

ये व्यक्तिगत कार्य लेने के बाद किस अफसर में इतना नैतिक बल रह जाता है कि वह चपरासी को अदालतों का दरवाजा खटखटाने वालों से रुपया लेने से रोक सके?

यदि एक दीवानी अदालत में एक दिन में करीब पचीस मुकदमे लगे हों तो चपरासी पचास से पचहत्तर तक जरूर कमा लेगा. इस में एक तिहाई हिस्सा पेशकार का होता है.

क्या जज साहब को इस से ज्यादा तनख्वाह मिलती है?

पर इस मामले में हराम की खाने वाला पेशकार वैसे बड़े हलाल की खाता है. न्यायाधीश के साथ ऊंचे स्थान पर बैठ कर वह मामले पेश करता है और शाम को मुकदमों में प्रायः तारीखें भी लगाता है.

तारीखों का बंटवारा

पेशकार की दूसरी शक्ति है—तारीखों का बंटवारा. शाम को जब जब साहब तशरीफ ले जाते हैं तब प्रसाद के तरीके से ये बंटती हैं. दस रुपए में आप एक माह की जगह मामले को अगले चार माह के लिए टाल सकते हैं. कौन बदमाश कहता है कि भारत में न्याय महंगा है?

केवल बड़े शहरों को छोड़ कर अन्य कहीं भी न्यायालय के लिए भवनों का निर्माण नियमित रूप से नहीं हुआ. नतीजा यह है कि न्याय प्राप्त करने आए लोगों के बैठने, इंतजार करने आदि का कोई उचित बंदोबस्त कहीं भी नजर नहीं आता. मईजून की भयंकर लू में कचहरी के तपते बरामदे पसीने से तर लोगों से भरे रहते हैं. साथ ही न पानी का इंतजाम दिखता है, न शौच का. दिन भर अपने नाम का इंतजार करने वाला कितना अन्याय सहता है?

क्या इन परिस्थितियों में कोई सभ्य इनसान गवाही देने आना पसंद करेगा?

भारत के संविधान में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि भारत धर्मनिरपेक्ष देश है. पर अदालतों में प्रत्येक गवाह को गीता या दूसरे धर्मग्रंथ पर हाथ रख कर यह शपथ खानी पड़ती है कि 'जो कुछ कहूंगा सच

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहूंगा, सच के सिवा कुछ नहीं कहूंगा.' अंगरेजों के जमाने का यह चलन, इस प्रकार, संविधान विरोधी भी है. मैं ने एक बार एक मित्र को सुझाव दिया कि अगर शपथ आवश्यक ही है तो न्याय की शपथ दिलाई जानी चाहिए. पहले तो मित्र खूब हंसा. फिर बोला, "जिंदा मछली का निगलना जरा मुश्किल होता है."

यदि दीवानी मुकदमा जीत भी गए तो अदालत के हुक्म की तामील भी पूरी सिरदर्दी होती है.

इस में जायदाद इत्यादि का नक्शा व विवरण मुनसरिम के मार्फत जाता है. इजरा बाबू आगे का बंदोबस्त संभालते हैं. फिर जीत की खुशी में अगर ये लोग पांच-सात प्रतिशत का खर्च करवा भी देते हैं तो यह तो वे अपना हक समझते हैं.

पर फौजदारी का मामला जरा ज्यादा संगीन है. कचहरियों में बड़े से बड़ा कातिल भी डरता है.

समाजवादी सिलसिला

जरा सा जमानत का हुक्म हासिल करने में ही वकील, पेशकार, अर्दली वगैरा पर तीनचार सौ रुपए लुटा देने पड़ते हैं. और हुक्म जारी हो जाने पर भी उसे आर्डर की कापी क्लर्क तब तक नहीं देगा जब तक मुलजिम 10-15 रुपए अपनी जेब से नहीं निकाल देगा. दो लाइन का यह आर्डर जब सैशन क्लर्क के पास पहुंचेगा तो वह भी खुशी जाहिर करेगा. कैसा समाजवादी है खानेपीने का यह सिलसिला!

पर यह सैशन क्लर्क सीनियर आदमी होता है, अतः उस के खर्चे भी सीनियर ही होते हैं. फौजदारी मुकदमों की पूरी फेहरिस्त जिला सत्र न्यायाधीश के पास जा जाती है, जहां से ये मुकदमे विभिन्न अतिरिक्त अदालतों को भेजे जाते हैं.

मुकदमे वाले गुनाह के दिन से ही जुगाड़ बिठाते रहते हैं कि किस जज पर सिफारिश चल जाएगी या कौन जज लक्ष्मी की कद्र कर सकता है या कौन जज किस वकील का कुछ खास खयाल रखता है.

अब जिस न्यायाधीश से न्याय लेना है उसी की लिस्ट में अपना मुकदमा इस सैशन क्लर्क से कह कर चढ़वा लिया जाता है. चढ़ावा कुल चारपांच बड़े नोट. इस से ज्यादा रुपए तो लोग एक मन्नत का धागा बांधने में खर्च कर देते हैं, जनाब.

अब एक नजर नकल विभाग पर भी. यह विभाग विभिन्न आदेशों की नकल स्टांपयुक्त प्रार्थनापत्र पेश करने पर देता है. सामान्य दरख्वास्त चारपांच दिन में निपटा देनी चाहिए और अर्जेंट चौबीस घंटे के अंदर. प्रार्थी की जरूरत को देखते हुए दो रुपए से बीस रुपए तक ले लिए जाते हैं. प्रत्येक दिन 30-40 कापियां दी जाती हैं.

नकल विभाग के एक दयालु वृद्ध महाशय ने बताया कि वह जनता की

आप चाहे पढ़ेलिखे हों या अनपढ़ अदालतों की पेचीदा कार्य प्रणाली समझने के लिए आप केवल वकीलों के ही नहीं, अरजीनवीसों और तरहतरह से अदालती दलालों के भी मुहताज हैं.

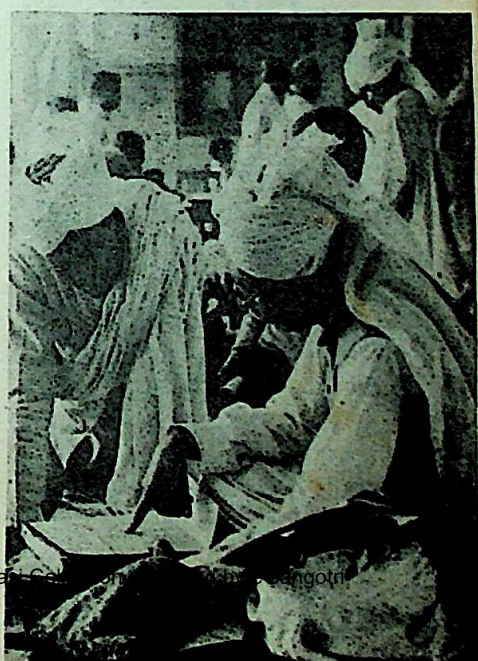

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

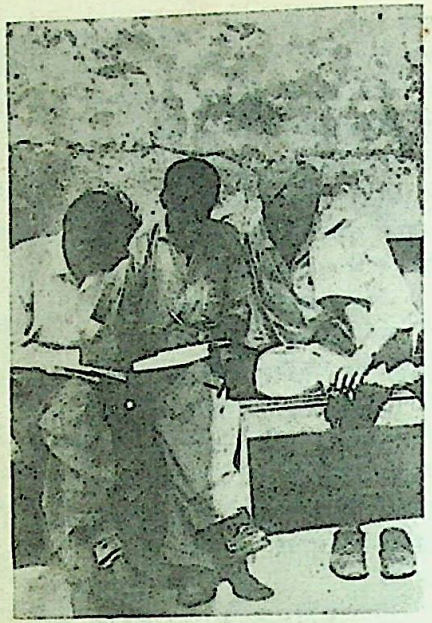

अदालतों का चक्कर उस समय और भी असह्य हो जाता है, जब वहां अपनी बारी का इंतजार करने के लिए बैठने की जगह तक नहीं होती.

परेशानी व महंगाई को देखते हुए कुछ कम में भी काम कर सकते हैं पर समस्या तो यह है कि इसी राशि में रिकार्ड रूम वालों का भी हिस्सा है, जिन के यहां से मुख्य प्रति नकल के लिए आती है. कितना ध्यान रखते हैं ये समाजसेवी एक-दूसरे का?

यदि निर्णय के टाइप होते समय पार्टियों की संख्या को ध्यान में रखते हुए कापियां निकाल ली जाएं तो बहुत सा खर्च बच सकता है, समय की भी बचत हो सकती है.

बिलकुल यही हाल वरनाक्युलर आफिस का है. उच्च न्यायालय के सर-क्युलर्स और सरकारी आदेशों का काम संभालने वाला इंगलिश आफिस वकीलों व मुवक्किलों से क्यों भरा रहता है, इसे हर कोई जानता है.

पर हम एहसानमंद हैं उन कचहरी कर्मचारियों के जो इन सरकारी चोट्टों से भी रिश्वत खा जाते हैं. आखिर हर शेर को सवा सेर मिलना ही चाहिए.

इन में सदर मुनसरिम के क्या कहने? यह सभी चतुर्थ व तृतीय श्रेणी के कर्मचारियों का प्रशासक होता है, लिपिकों का तबादला कर सकता है, यात्रा भत्तों के बिल चैक करता है, कर्मचारियों की चरित्र पंजिका व व्यक्तिगत फाइलें रखता है, कर्मचारियों की शिकायत का रजिस्टर भी इन्हीं के पास रहता है.

हर मोड़ पर भ्रष्टाचार

कोई लिपिक या उस का कारनामा मुनसरिम की अनुभवी निगाह से बच कर नहीं जाता. उसे हर सीट की कीमत मालूम है. बट्टा आना ही चाहिए वरना देने वालों की कमी नहीं. आखिर बुढ़ापे में यह सहारा भी न मिला तो क्या उसे भूखों मरना है?

दूसरा सेहरा सेंट्रल नाजिर के सिर बंधता है. उस की सब से तगड़ी आमदनी उन खोमचे, ठेले वालों व दुकानदारों से होती है जिन्हें कचहरी कंपाउंड में वह ठेका देता है. इस का असर यह पड़ता है कि चीजें जनता को दोगुने दामों में मिलती हैं.

कचहरी कंपाउंड में बैठने के लिए टाइपिस्ट लोगों की लाइसेंस फीस में भी सुना है कि कुछ धंधा हो जाता है, पर इस तथ्य की पुष्टि नहीं हो पाई.

चपरासियों को आमदनी वाली जगह पर लगाना इसी महारथी के हाथ में होता है. नजारत में सम्मन के काम पर रहने वाले चपरासी सम्मन को गलत तरीके से लौटाने की आमदनी में से इस का हिस्सा बिना चूक पहुंचाते हैं.

यह कचहरी के फर्नीचर इत्यादि का ठेका भी देता है. पर वहां यह जनता को न सता कर सप्लायर से सीधा खा जाता है और इस प्रकार चलता व मामूली फर्नीचर मजबूत व टिकाऊ घोषित हो जाता है.

पर आज यह हेराफेरी न करे तो सरिता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या करे? एक जिला जज की लड़की को डिलीवरी हुई, नाजिर को हुक्म हुआ कि एक कच्चे कोयले की अंगीठी, तीन किलो कच्चा कोयला, एक हीटर और 40 वाट का बिजली का एक बल्ब ले आओ. और देखो, आनेजाने वाले के चायनाश्ते का भी ध्यान रखना. नाजिर दो दिनों में पचास-साठ के नीचे आ गया. आखिर तेल तो तिलों में से ही निकलेगा.

खर्चा ए पानदान

आप ने मुसलिम समाज में 'खर्चा ए पानदान' सुना होगा. कार्यकारी अदालतों में दो खर्चे होते हैं—एक 'खर्चा ए चौक' कहलाता है, दूसरा 'खर्चा ए बैठक.'

पहला खर्च अफसर के घर के राशन, बिजली, अखबार के बिल, बच्चों की फीस, मेहतरानी वगैरा का होता है, जो पांच सौ से सात सौ रुपए माहवार का होता है.

'खर्चा ए बैठक' मजिस्ट्रेट के चैंबर में ठंडागरम का खर्चा होता है, जो कुल 10-15 रुपए रोज का होता है.

मजिस्ट्रेट का स्टाफ खुली रिश्वत लेने के बदले में यह हजार रुपए का गैरअदालती खर्च मिलजुल कर उठाता है. जो करेगा सेवा, उसे मिलेगा मेवा. क्यों, ठीक है न?

अब न्याय बांटने का दावा करने वाले की महानता का एक किस्सा सुनिए.

भयंकर गरमियों के दिन, साहब ने चपरासी को बुला कर कहा, "जाओ, सब्जी बाजार (कुल डेढ़ कि० मी० दूर) से एक बड़ा, बढ़िया, ठोस, पतले छिलके का मीठा और रसदार संतरा ले आओ. लो, पकड़ो बीस पैसे."

एक बजे लू में चपरासी तौलिया सिर पर बांधे साइकिल घसीटता हुआ सब्जी बाजार गया. घटिया से घटिया संतरा भी चालीस पैसे का था. उस ने वही खरीदा और लौट आया. पसीना पोंछते हुए साहब को पेश कर दिया. बोला, "हुजूर, चालीस का मिला है."

साहब ने तोला, दबा कर संतरे का रेशा निकाल दिया, फिर चालीस गालियां चपरासी को सुना कर बोले, "क्या हमारा पैसा हराम का समझ लिया है? संतरा लौटा कर आओ और दूसरा आंख खोल कर लाओ, भाग कर जाओ."

चपरासी बाहर आया. संतरे को नाली में फेंक दिया. पास में खड़े ठेले वाले से साठ पैसे का बढ़िया संतरा खरीदा. दस मिनट बाद जा कर साहब को संतरा व बीस पैसे लौटा दिए. साहब और चपरासी दोनों ने ही मन ही मन सोचा, "सीधी उंगली से घी नहीं निकलता."

न्यायाधीशों के पद की गरिमा व महत्ता को अब तक प्रत्येक सरकार ने नजरअंदाज किया है.

सेवा नियमों के अनुसार न्यायाधीशों को जनता से अलग रहना चाहिए.

सरकार एक जज का तबादला एक बिलकुल नए स्थान पर कर देती है. वहां

> कचहरी का कंपाउंड सब के लिए खुला होने से असुविधा होती है. यहां सिवा पार्टियों, वकीलों व कर्मचारियों के किसी और को आने की अनुमति नहीं होनी चाहिए.

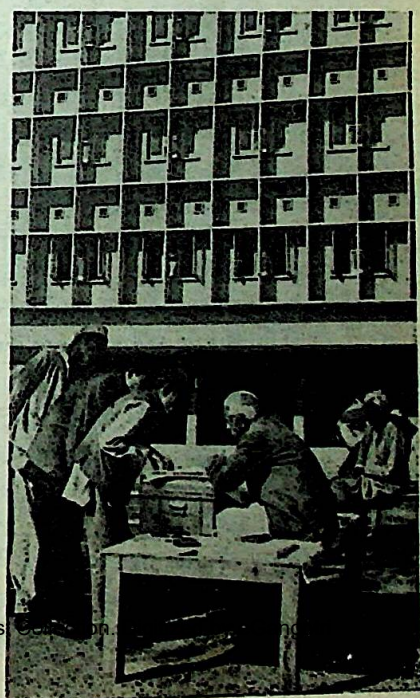

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वकीलों, टाइपिस्टों और अरजीनवीसों के मिलेजुले कक्ष : हर जगह पैसा बटोरने की अफरातफरी.

जज को मकान ढूंढ़ना है. वह स्वयं तो नया है, अतः वकील व संबंधित लोग ही मकान ढुंढ़वाएंगे. इस सेवा के बदले में वे क्या कुछ भी उम्मीद न करें? मैं ऐसे जज को भी जानता हूं जो सपरिवार 6 फुट × 5 फुट के कमरे में रहे, कोर्ट रूम में पड़े रहे, पर यह कुर्बानी कितनों के बस की है?

कार्यपालिका में क्षेत्र विकास अधिकारी को भी जीप मिली होती है, पर कत्ल व डकैती के खतरनाक मुकदमे तय करने वालों को मैं ने रोज खचड़ा साइकलों पर घूमते देखा है.

जिला स्तर पर एक न्यायाधीश को इतनी तनख्वाह नहीं मिलती कि वह एक नौकर का भी खर्च बर्दाश्त कर सके. साथ ही यदि वह बाजार में सब्जी खरीदता या आटा पिसवाता डोले तो वह जरूर अपनी स्वतंत्रता व निष्पक्षता खो बैठेगा. अब उस के पास क्या चारा है सिवा इस के कि वह चपरासी से काम कराए, चपरासी छूट के रूप में जनता से रिश्वत ले, कुछ हिस्सा पेशकार को दे और यह दलाल बढ़ती ही जाए?

जजों को एक खास राशि सस्ते कपड़े पहनने, कोट, गाउन व बैंड पर खर्च करनी पड़ती है. आखिर वह आए कहां से आए?

लगता है, न्यायाधीशों के काम के कोटे आंख मीच कर तय किए गए हैं. ये इतने ज्यादा हैं कि उन्हें पूरा करना प्रायः असंभव है. नतीजा यह होता है कि जज को कोटा पूरा करने की जल्दी व चिंता होती है और काम का स्तर गिरता है.

इन परिस्थितियों में न्याय की उम्मीद करना अन्याय है.

सरकार संसद व विधान सभाओं के सदस्यों, मंत्रियों, उन के सचिवों आदि को जब कोठी, कार, टेलीफोन, यात्रा आदि की सुविधाएं दे सकती है तो उन लोगों को क्यों नहीं देती जिन की निष्पक्षता पर एक अन्यायी सरकार तक को फख्र हो सकती है!

अकसर न्यायाधीशों के लड़के सक्षि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वकालत करते पाए जाते हैं, चाहे वे अपनी विद्वत्ता के बल पर ही केस जीतें, पर जब उन्हें दस जिले पार कर के मुवक्किल अपना वकील करता है एवं अदालत उन्हें विशेष आदर व सुविधा देती है तो निगाहों का उठना स्वाभाविक ही है. न्याय केवल होना ही नहीं चाहिए, अपितु ऐसा प्रतीत भी होना चाहिए कि न्याय हो रहा है.

इतिहास गवाह है कि चारचार सौ किलोमीटर दूरी पर जाजा कर मुकदमे करने वाले वकील बेटों की प्रैक्टिस जज बाप के रिटायर होने के साथ ही रिटायर हो गई.

दुनिया की हजामत करने वाले पुलिस कर्मचारी भी इन कचहरियों के रवैए से परेशान हैं.

चूंकि गवाही के वक्त का कुछ पता नहीं होता, इस वजह से पुलिस अधिकारियों का सारासारा दिन कचहरी में खड़े-खड़े गुजर जाता है.

एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि कुछ मजिस्ट्रेट अपनी अदालत में पुलिस वालों को खड़ा रखने में रोब और शान समझते हैं एवं उन की व्यस्तता व जनहित में महत्ता का कोई ध्यान नहीं रखते.

अंत में प्रश्न उठता है कि क्या प्रत्येक कचहरी भ्रष्ट है?

ऐसा क़दापि नहीं है. न्यायाधीशों में से आज भी ज्यादातर जहां ऐसे हैं जो अपनी मुफलिसी पर फख्र करते हैं, अपने फाकों को रोजा समझते हैं वहां ऐसे भी हैं जो भ्रष्टाचार की हदों को पार करने

कचहरी के आसपास बैठे हर आदमी को आप संदेह की नजर से देखने पर मजबूर हो जाते हैं क्योंकि जिस से भी आप कुछ पूछेंगे वह जवाब के बदले में 'कैश' की उम्मीद पहले करेगा.

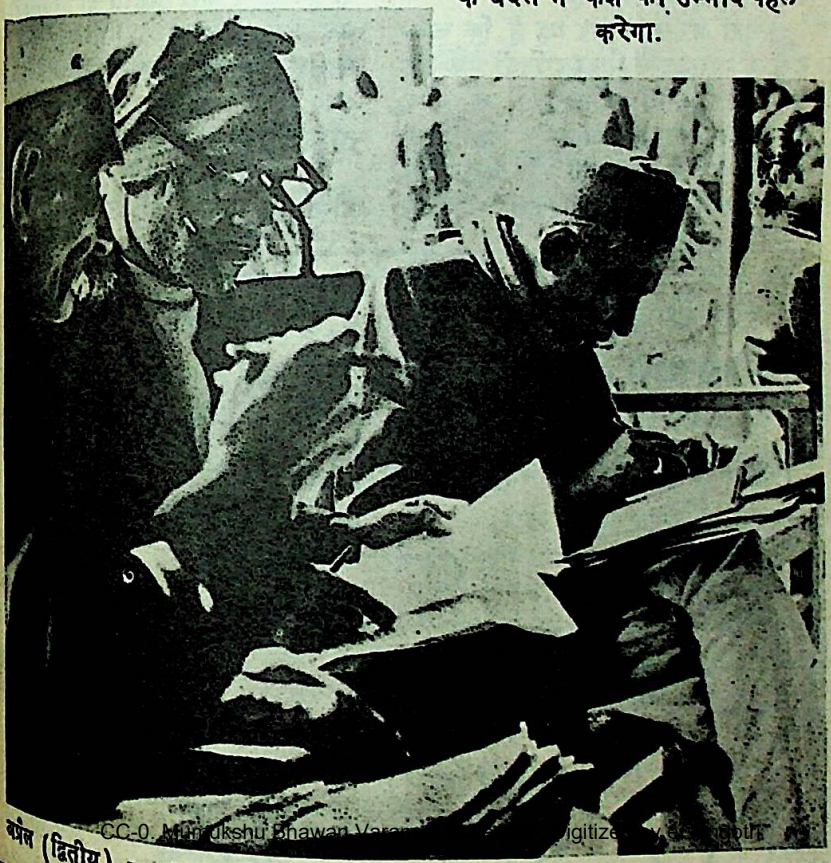

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में जरा भी शर्म महसूस नहीं करते. न्यायाधीशों के पीने के बारे में बहुत चर्चा रहती है, और यह काफी हद तक सही भी है क्योंकि वकील इस 'चुल्लू में उल्लू' वाली विधि का खूब प्रयोग करते हैं. जजों की वकीलों एवं उद्योगपतियों से कार (पेट्रोल सहित) मांगने की चर्चा में भी बहुत दम है. अपने पद का दुरुपयोग कर के दाम कम करवाते हुए न्यायाधीशों व उन के चपरासियों को बाजार में देखा जा सकता है.

वीच की दलाली

पर जहां तक 'केस' में लेने का सवाल है, वहां वकील व कचहरी के दलाल जज साहब के नाम से खा जाते हैं. अगर काम हो जाता है तो जज बदनाम हो ही जाता है, साथ ही पैसा दलाल हजम कर जाता है. अगर काम नहीं हुआ तो चुपके से पैसा लौटा दिया जाता है.

मेरा अपना विचार यह है कि कचहरी के कंपाउंड में सिवा पार्टियों एवं उन के वकीलों तथा कर्मचारियों के और किसी को जाने की अनुमति नहीं होनी चाहिए. इस से व्यर्थ की भीड़ कम होगी तथा फिजूल बातों व मुवक्किलों को झूठा रोब दिखाने का मौका कम मिलेगा.

सरकारी कार्य में दलाली एक अपराध घोषित किया जाना चाहिए और की सजा भी सख्त होनी चाहिए.

न्यायाधीशों के समुचित वेतन, सुविधा व सुरक्षा का सरकार को ज्यादा ध्यान रखना चाहिए.

जहां तक कर्मचारियों के लंबे प्रश्न है, सच तो यह है कि रिश्वत बाजार गरम ही नहीं है, उबल रहा खौल रहा है. मैं इसे दिखा सकता हूं.

पेशकारों व महत्त्वपूर्ण लिपिकों अपनी बीवियों के नाम से व्यापार रखे हैं. किसी का भट्ठा है, किसी क्रैशर.

यदि सरकार वास्तव में न्याय सुलभ कराना चाहती है तो उसे इस नगरी पर बहुत तीखी नजर रखनी होगी. [लोग अदालत की मानहानि के डर से न कुछ बोलते हैं, न लिखते पर जब भ्रष्टाचार विशिष्ट न हो सामान्य हो जाए, रोजमर्रा की बात जाए, भ्रष्टाचार का राष्ट्रीयकरण हो तो उसे सहन करना अपराध है, अन्याय

क्या सरकार न्याय की जड़ों की दीमक को हटाने को तैयार है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यंग्य • राजेंद्र जगोत्ता

शराब विरोधी अभियान

शराबियों को बंदी बनाते ही दारोगाजी को नशा हो गया...

शराब विरोधी अभियान के दारोगा ने नाजायज शराब के अड्डे के सामने अपनी जीप रोक दी और सिपाहियों ने बड़ी मुस्तैदी से अड्डे को घेर लिया.

दारोगाजी धड़धड़ाते हुए अंदर घुसे और अड्डे के मालिक चोखेलाल को दोनों तगड़े हाथ जमा दिए.

"साला...नाजायज शराब निकालता है."

सिपाहियों ने बड़ी फुरती से शराब से भरी रबड़ की कुछ ट्यूबें और कुछ बोतलें बरामद कर लीं.

"हजूर, दिल्ली में नाजायज शराब से जो पचास आदमी मरे थे, उस में भी इस का हाथ था...स्साला...स्पिरिट में पानी मिला कर शराब बनाता है," दीवानजी ने कहा.

"नहीं हजूर..." चोखेलाल गिड़गिड़ाया, "रोजी की कसम, कोई मिलावट नहीं...निकालता जरूर हूं, लेकिन खालिस महुए की...और आप लोगों के लिए तो स्पेशल केसर कस्तूरी...बेशक पुराने दारोगाजी से पूछ लीजिए...चाहे चख कर देख लीजिए...मैं...मैं तो आप लोगों का बहुत पुराना सेवक हूं, हजूर..."

आधे घंटे बाद दारोगाजी चोखेलाल को बंदी बना कर झूमते हुए बाहर निकले. उन के सभी सिपाही भी मस्त हंसते हुए जा रहे थे.

चोखेलाल का एक नौकर स्पेशल केसरकस्तूरी से भरी एक ट्यूब और कुछ 'माल' ले कर चुपचाप दारोगाजी के घर की ओर रवाना हो चुका था. बाकी बरामद माल का कहीं पता न था...और चोखेलाल जीप में पुलिस दल के साथ ऐसे बैठा था जैसे वह थाने में बंद होने नहीं, यारदोस्तों के साथ कहीं पिकनिक मनाने जा रहा हो. ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पासा पलट गया

मेरे एक मित्र की मूंछें काफी बड़ी थीं. वह अपनी मूंछों पर दो अंडे रखने का दावा भी करते थे. पहले तो मैं ने सोचा कि वह मजाक कर रहे हैं लेकिन एक दिन उन्होंने मेरे साथ शर्त लगाई कि अगर उन्होंने अंडे रख लिए तो मुझे उन को 25 रुपए देने पड़ेंगे और अगर नहीं रख पाए तो मैं उन से 25 रुपए लूंगा.

दूसरे ही दिन मैं उन के घर पहुंचा. वहां महाशयजी ने पहले से ही मेज पर अंडे रखे हुए थे और मेरे लिए आमलेट भी तैयार था. उन्होंने बहुत आसानी से दोनों अंडे अपनी मूंछों पर रख लिए. मैं हैरान हो गया और अपनी जेब से पैसे निकाल ही रहा था कि इतने में उन का छोटा लड़का आ गया और कहने लगा, "पिताजी, आप मुझे एक रुपया दे दीजिए वरना मैं इन से बोल दूंगा कि ये अंडे अंदर से खाली हैं." इतना सुनना था कि कमरे में हंसी का फव्वारा छूट गया पर उन महाशयजी का मुंह देखने लायक था.

—राजेंद्रकुमार शर्मा

✦

हम कुछ मित्र रोज स्टेशन पर टहलने जाया करते थे. अकसर जब यात्री गाड़ी के आने का वक्त होता तो हमारे साथ कुछ शरारती लड़के भी आ जाते और उस गाड़ी में बैठे यात्रियों से छेड़खानी करते.

एक दिन जब गाड़ी चलने लगी तो एक शरारती लड़के ने उन व्यक्तियों को मारने की सोची जो खिड़की से सिर बाहर निकाले हुए थे. पीछे के डिब्बे में बैठे हुए सज्जन यह सब देख रहे थे. जैसे ही वह डिब्बा उस शरारती लड़के के पास पहुंचा इस से पहले कि वह लड़का उस सज्जन को मारता उन का एक चांटा उस लड़के के गाल पर पड़ा और वह सज्जन हाथ हिलाते हुए पीछे सरक गए. उस लड़के का चेहरा देखने लायक था. —राकेश चौबे

मेरे बड़े भाई साहब की साइकिल रिपेयर की दुकान है. इमरजेंसी के दिनों में एक सिपाही अपनी साइकिल रिपेयर के लिए दे गया. अगले दिन वह अपनी वर्दी में आया और पूछने लगा, "मेरी साइकिल ठीक हो गई?" संयोगवश पिछले दिन उस की साइकिल पूरी तरह न बन पाई थी. भाई साहब नम्रता से बोले, "कुछ करवा दी कुछ आज करवा देंगे. इस पर वह बड़े गुस्से में बोला, "अभी तक हमारा काम नहीं हुआ हम पैसे नहीं दे क्या?" उस समय आपातस्थिति लगी हुई थी. सिपाही अपनेआप को थानेदार से कम न समझते थे. बिना बात के बंद कर दो तो भी कोई पूछने वाला नहीं था. भाई साहब चुप रह गए. वह पुलिसवाला फिर आने की बात कह कर चला गया.

इस के अगले ही दिन चुनाव की घोषणा हो गई और दसपांच दिन में जनता की जीत के आसार स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगे.

कुछ दिन बाद वह सिपाही फिर आया और चुपचाप पैसे दे कर अपनी साइकिल ले कर चला गया. मेरे भाई साहब मुझ से बोले, "देखा उस दिन कैसे गरज रहा था. यदि चुनावों की घोषणा न होनी तो एक पैसा भी न मिलता."

—कौशलेंद्रनाथ ओझा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिंदी में रोज हजारों पाकेट बुक्स प्रकाशित होती हैं, उन सब में अलग हैं-
विश्व पाकेट बुक्स

एक लहर टूटी हुई:
जीवन से निराश विनोद अपने संक्षिप्त जीवन को और संक्षिप्त बना देना चाहता था. ऐसे में नीला ने निस्वार्थ भाव से विनोद को नई जिंदगी दी. स्त्री और पुरुष के सात्विक प्रेम संबंधों की कहानी.

डाल से बिछुड़े:
रीता की शादी इंगलैंड में बसे राम के साथ तय हुई तो उसे लगा जैसे वह भावना के स्वप्नलोक में जा रही है. मगर... ब्रिटेन में बसने वाले भारतीयों की अपमान-जनक जिंदगी की सच्ची तस्वीर.

दिल्ली के आंसू:
तैमूर लंग ने एक दिन में एकएक लाख हिंदुओं को कत्ल कर के भारत की धरती को खून से लाल कर दिया. फिर भी कई हिंदू उस के पैर चूमने में अपना सौभाग्य समझते थे....आखिर क्यों?

समय के उस पार:
अनार्य राजा करंज और आर्य कन्या अंजसि का प्रेम?—असंभव. परिणाम क्या हुआ?... ईसा से तीन हजार वर्ष पूर्व की भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रोमांचक कहानी.

उत्तरदान:
रहस्य, रोमांस व रोमांच का पुट लिए स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले उन वीरों की कहानी जो स्वयं स्वतंत्रता पाने में असफल होने के बावजूद भी अपने बच्चों के उत्तरदान में स्वतंत्रता पाने की आशा दे गए.

एक और पराजय:
टिशांग कसबे के भोले-भाले नागरिकों को चीनी गुलाम बनाना चाहते थे. क्या वे इस में सफल हो सके?

—प्रत्येक रु. 4

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या लिखें.

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.

पूरा सेट लेने पर 5% व डाकखर्च की छूट. आदेश के साथ पांच रुपए अग्रिम भेजें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक और भूल

कहानी • लीला रूपायन

लगता था आरती बड़े तेज कदम रखती हुई रमा के घर आई है. उस की सांस फूली हुई थी. चेहरा बदहवास सा था. उसे बोलने में तकलीफ हो रही थी. जब भी उस ने रमा से कुछ कहना चाहा तभी रमा ने कहा, "पहले सांस तो ले लो, बात बाद में कर लेंगे," और फिर रमा ने अपनी बेटी को पानी का गिलास लाने को कहा.

"हां, अब बता, क्या बात है? क्या मां से झगड़ा कर के आई है?" रमा ने प्यार से पूछा.

"झगड़ा न करूं तो क्या करूं? मेरे सुखों में आग लगा कर तमाशा देखने में उन्हें मजा आता है, दीदी. अब मैं ने पक्का फैसला कर लिया है कि मैं उन से शादी करूंगी. आप पत्र लिख दो, दीदी, मैं शादी के लिए तैयार हूं," आरती उत्साह भरे स्वर में बोली.

रमा विस्फारित नेत्रों से उसे देखती रही और फिर बोली, "कहां थी तू इतने

आरती ने अपने जीवन साथी के रूप में जिस लड़के को पसंद किया था, उसे अपने से दूर जाते देख उस के दिल पर क्या न गुजरी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिनों से? हां भी करने आई तो उस समय, जब सब कुछ हाथ से निकल चुका है. ले देख, पढ़ इसे, आज ही आया है." और रमा ने आरती की ओर एक लिफाफा बढ़ा दिया.

पत्र पढ़ते ही आरती को लगा, उस की सांस रुक जाएगी. आज ही तो पहली बार उस ने अपने लिए खुद फैसला किया था कि वह अपने सामने रमा दीदी से पत्र लिखवाएगी और यह भी कहेगी कि शादी भी तुम्हीं कर देना, दीदी. जो थोड़ीबहुत तैयारी करनी है, कर लो. बस, इन्हीं दृष्टियों में ही सब काम निबट जाए तो अच्छा है. अब इस नरक में इस से अधिक नहीं जिया जाएगा."

पर यह क्या, वामन ने तो रमा को अपनी शादी हो जाने की सूचना दी थी. और लिखा था, "अब जिस लड़की से मेरी शादी हुई है, आप उसे देख कर खुश हों या न हों, लेकिन उस के व्यवहार को देख कर आप सराहे बिना नहीं रहेंगी. सुंदर तो बिलकुल नहीं पर गुणी बहुत है.

मुझे इस बात का दुख तो बहुत है कि आरती ने हां नहीं की, लेकिन इस में मेरा दोष तो है नहीं. वह आए तो उसे समझा देना कि फिर कभी कहीं उस की शादी की बात चले तो हर बात का स्वयं फैसला करे, दूसरों पर भरोसा न करे. अपने किए फैसले तो कुछ दे भी जाते हैं, लेकिन दूसरों पर छोड़े फैसले तो सब कुछ छीन लेते हैं."

आरती ने कभी अपना फैसला आप नहीं किया. उस ने जब से होश संभाला है, तब से दूसरों की दया पर ही उस के काम हुए हैं. साथसाथ 'अभागी' का विशेषण भी सुनने को मिला है. तरस तो उस पर सभी को आया है, पर किसी ने कभी हिम्मत न बंधाई. कोई प्रोत्साहन न देता तो शायद वह अपने फैसले आप कर लिया करती. अब रमा दीदी ने दया कर के जिंदगी संवारनी चाही तो दूसरों के फैसलों का इंतजार करती रही. तभी अपना फैसला स्वयं कर लिया होता तो यह ढलती उमर की खुशी उसे कभी इस तरह न तड़पाती.

आरती जब मां के पेट में ही आई थी तो उस की दादी उस की मां को आदेश देने लगी थीं, "इस घर को लड़के की जरूरत है, लड़की की नहीं. लड़की पैदा करोगी तो अपनी कद्र आप खो बैठोगी."

जैसे लड़का या लड़की पैदा करना गौरी के हाथ में था. आरती के पैदा होते ही जब दाई ने कहा था कि पोती आई है तब दादी माथे पर हाथ मार कर बोली थीं, "पहले क्या कमी थी घर में लड़कियों की, जो और एक सुना दी?"

दाई भी कम नहीं थी. उस ने मुंहतोड़ जवाब दिया था, "तुम ने तो बुढ़ापे में तीनतीन पैदा कर लीं तो भी किसी ने माथा न पीटा. और वह बेचारी तो अपनी मां की पहली ही है. काहे के लिए हायहाय करती हो? सास हो न. तुम्हारी सास नहीं थी, जो माथा पीटती."

आरती मां की पहली बेटी थी तो बाप की भी पहली बेटी थी. बेटी होने की बात सुनते ही बाप भड़क कर बोला था,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"सोचा था कि कंधे का बोझ हलका करने वाला भाई नहीं है तो चलो, बेटा हो जाएगा. अभी न सही, बुढ़ापे में तो सहारा बनेगा. अब सुसरी यह आ गई. तीनतीन बहनें पहले से ही छाती पर सवार हैं."

आरती को मां का प्यार भी कभी नहीं मिला. जब उसे गोद में ले कर दूध पिलाने लगती तो हमेशा कोसती, "अभागी, लड़का ही बन कर पैदा हो जाती, तुझे भी सब का प्यार मिलता और मेरी भी इज्जत हो जाती."

अभागी शब्द तो उसे पैदा होते ही मिल गया था. दो साल की हुई तो बुआ का डोला उठा. तीन साल पूरे भी नहीं हुए थे कि एक और बहन आ गई. लड़की का नाम सुनते ही दादी ने इतनी छाती पीटी थी कि पति के मरने पर क्या पीटी होगी. गौरी के अगलेपिछलों का तर्पण करती हुई बोली थीं, "यह तो मेरे बेटे की दुश्मन है. अरे, एक बेटे को पैदा कर देती तो मेरे बेटे का वंश तो चलता. कैसी बेल है तेरे पेट की, जहां लड़कियां ही लड़कियां होती हैं, लड़का कोई नहीं? मेरा बेटा तो सब की शादियां करताकरता ही अधमरा हो जाएगा."

रामदास को दूसरी बेटी का इतना सदमा लगा था कि सारी रात शराब पीता रहा था. सुबह जब घर आया तो कैसी डरावनी शक्ल हो रही थी उस की. गौरी कांप गई थी. उस दिन वह फिर काम पर नहीं गया था. दिन भर गालियां देता रहा था. वह तो गौरी को मारने भी दौड़ा था, लेकिन उसी समय सामने वाली गोमती बुआ ने आ कर रामदास का हाथ पकड़ लिया था और बोली थीं, "शर्म नहीं आती औरत पर हाथ उठाते. सारा दोष क्या उसी का है, तेरा नहीं?"

फिर गौरी की सास से बोली थीं, "तेरी जाइयों की तो गौरी सेवा करे, डोले में बिठाए और तू उस की जाई का गला घोंट दे. सामने बैठ कर देखती रही, इतना न हुआ उठ कर बेटे का हाथ पकड़ ले. उलटीसीधी मार बैठता तो क्या वह वह? क्या हालत कर डाली है तुम ने उस की."

आरती उमर से पहले ही सयानी गई थी. गौरी काम करती तो छोटे कामों में उसे भी लगा लेती. वह भी करती और छोटी बहन को भी में उठाएउठाए फिरती. छोटी सी पर मार तो मिल जाती, पर किसी प्यार कभी न मिलता. एक गोमती थीं, जो उसे अंदर बुला कर ले जाती प्यार के साथसाथ कुछ खिला भी और यह गोमती बुआ की जिद ही जिस ने गौरी को समझाया था कि को पाठशाला में डाल दे. पढ़ जिंदगी में तेरी तरह ससुराल जूते नहीं खाएगी. अपने पांव पर गई तो तेरा भी सहारा बनेगी."

शायद गौरी को अपने स्वयं का खयाल आया था, जो उस ने आरती सरकारी स्कूल में डाल दिया था.

गौरी ने तीसरी बार भी लड़की जन्म दिया था. रामदास बौखला गया तीन बेटियां, दो बहनें, एक पत्नी एक मां. एक घर में सात औरतें और कमाने वाला मैं अकेला मर्द. दूसरा सहारा नहीं, कोई बोझ बांटने वाला सब के लिए करना ही करना. बस बुढ़ापे में मेरे लिए बेटियों का बोझ गया.

रामदास अब बातबात पर लगा था. उसे सब अपने ऊपर बोझ गौरी की तो मुसीबत ही आ गई गुस्से में उसे न जाने क्याक्या कहा वह कभी पास आती तो दुत्कार "दूर हट, तेरा क्या, तेरे पर तो परछाईं भी पड़ गई तो तू बेटी देगी."

अब वह घर की ओर से हो गया था. सास का सारा गुस्सा पर उतरता, "न तू तीनतीन बेटियां करती न वह सब को भूखों देता."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गौरी बड़ी परेशान थी. बच्चे भूख से बिलबिलाते. पति खबर नहीं लेता. जब भी घर में आता नशे में धुत. गौरी कुछ कहती तो गालियों की बौछार उस पर पड़ जाती. गौरी कहती, "पहले भी तो तुम ही घर का खर्चा चलाते थे. अब क्या हो गया? अगर सारा दोष मेरा ही है तो मेरा गला घोंट दो, पर इन मासूम बच्चों का क्या कसूर है?"

रामदास आंखें लाल कर के कहता, "मुझ से कहती हो तुम्हारा, क्या दोष है? तुम ने बेटियां पैदा की हैं यही दोष है. बाप की बेटियां मेरी जान के लिए छोड़ गया है, यह मां का दोष है. सारा घर औरतों से भर गया है. कोई मर्द नहीं जो मेरा दुख बांटे. अब मेरा पैसा मेरा दुख बांटता है— शराब पी कर. समझीं तुम, मैं शराब पी कर यह सब कुछ भूल जाता हूं कि इन सब का बोझ मुझे ढोना है. बोझ ढोतेढोते तो मर जाऊंगा. मैं कमाऊं और मैं ही बिना फिक्र के खाना न खाऊं? अब मुझे किसी की कोई चिंता नहीं, मैं पीता हूं. भूख लगती है तो खाता हूं. तुम लोग भी कमाओ और खाओ. बाहर देखो, सब औरतें कमाती हैं."

यह बात सुन कर गौरी डरी नहीं थी. पहली बार उसी तरह लाल आंखें कर के रामदास से बोली थी, "तुम्हारे सहारे न मैं खुद भूखी मरूंगी, न बच्चों को मरने दूंगी. कमाऊंगी, जरूर कमाऊंगी, चाहे लोगों के बरतन ही क्यों न मांजने पड़ें. अपनी मांबहनों को भी कह दो. वे भी अपने लिए आप कमाएं. सुना तुम ने?" और गौरी जोर से ऐसे हंस दी थी, जैसे पागल हो गई हो.

गोमती बुआ ने गौरी की बहुत सहायता की थी. वह उसे रेडीमेड के कपड़ों की दुकानों पर ले गई थी और तुरपाई करने का काम दिला दिया था. कहींकहीं वह बीननातुनना भी करती थीं. उस में खुद काम कर के हिम्मत आ गई थी, "चलो, किसी तरह पेट तो भरेगा बच्चों का."

मां के साथ जाजा कर आरती बहुत चुस्त हो गई थी. वह स्वेटर बुन लेती, कढ़ाई और क्रोशिए का काम भी सीख गई थी. गोमती बुआ ने ही उसे

त्वचा का रंग बदलना संभव

लोगों को प्रायः अपनी त्वचा का रंग देख कर बहुत अफसोस होता है श्याम वर्ण सोचता है, काश मेरा गेहुआं रंग होता तो गेहुआं वर्ण गौरवर्ण की चाह करता है. इतना ही नहीं, कुछ लोग इसी हीन भावना का शिकार हो जाते हैं. लेकिन आप की यह चिंता हिंदुस्तान लीवर रिसर्च सेंटर के एक वैज्ञानिक डा. डी. पी. माथुर ने दूर कर दी है. उन्होंने मनुष्य के शरीर के रंग बदलने का रसायन (बायोकेमिकल) तरीका मालूम कर लिया है.

डा. माथुर पिछले दस वर्षों से मानव त्वचा के रंगों का अध्ययन और अनुसंधान कर रहे हैं. वह अपने प्रयोगों द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि किस हद तक मनुष्य का रंग बदला जा सकता है. श्यामवर्ण के व्यक्ति को गेहुआं रंग और गेहुआं रंग वाले को गौरवर्ण प्राप्त हो सकता है. यह त्वचा के रंगद्रव्य के फैलाव को नियंत्रित कर के किया जा सकता है. वैज्ञानिकों की भाषा में यह रंगद्रव्य 'मेलानिन' कहा जाता है, 'मेलानिन' नामक यह तत्त्व उन कोषों द्वारा उत्पन्न होता है जो त्वचा के नीचे रहते हैं. वैज्ञानिक इन कोषों को 'मेलानोसाइट' कहते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिकायत

पड़ोसी के बच्चे की शिकायत करते हुए उस के बाप से कहा, "तुम्हारा छोटा बच्चा बहुत गंदी-गंदी गालियां बकता है."

"अजी, छोड़िए भी, वह अभी बच्चा है, बड़ा हो जाएगा तो अच्छी-अच्छी गालियां भी देने लगेगा."

समझाया था, "सीख ले, अभागी, दूसरों का काम कर दिया करना, चार पैसे मिल जाएंगे."

आरती की और भी दो बहनें थीं—मस्त और सुस्त, लेकिन आरती कभी निठल्ली नहीं बैठी थी. आरती की समझ में यह बात कभी नहीं आई कि सुधा और निशा कोई भी काम नहीं करतीं तो मां तब भी उन्हें कुछ क्यों नहीं कहती और वह एक मिनट भी सुस्ताने बैठती है तो मां चिल्लाने लगती है कि "सारा काम पड़ा है, आरती, और तू निश्चिंत हो कर बैठ गई है? खाली बैठो तो मन में शैतान घर कर लेता है."

यह बात तब से गौरी कहने लगी थी, जब से उस की एक बुआ घर से भाग गई थी. पक्का पंता तो नहीं, वह किस के साथ भागी थी पर लोगों ने कहा था, "अकसर वह एक स्कूटर रिक्शा वाले के साथ घूमती थी. शायद उसी के साथ भाग गई होगी."

गौरी ने तो इस बात की ओर बिलकुल ध्यान भी नहीं दिया था. जब रामदास और सास ने कहा था "जाने किस के साथ मुंह काला कर गई है." तब गौरी ने कहा था, "तुम ने अपने हाथ से बड़ी की शादी की तो तुम्हारे माथे पर केसर का टीका लग गया और उस ने अपनी पसंद से शादी कर ली तो मुंह कैसे काला हो गया? जहां लोग शराब के घूंट के साथ अपना दुख बांटते हैं उन के साथ इसी तरह होता है, सासजी. घर की लड़कियां भाग कर ही अपने बनाती हैं, डोले में बैठ कर नहीं."

आरती जवान हुई तो गौरी ने मोटी कमीज बनवा दी और ऊपर दुपट्टा डाल कर कह दिया, "अच्छी तरह ओढ़ा कर." आरती का मन करता मां से कहे, "मेरे स्कूल में लड़कियां नरमनरम कपड़े पहन कर आती हैं, वही बनवा दे." पर उस की कुछ कहने कभी हिम्मत नहीं हुई, क्योंकि उस ने सदा वही किया है जो गौरी ने कहा है.

वह पांचवीं में पढ़ती थी तो गोमती बुआ ने समझाया था, "आरती, तू कितना ही मां के साथ काम कर, लेकिन पढ़ना मत छोड़ना. देखा न को. आज पढ़ीलिखी होती तो इज्जत दो रोटी कमाती. यह घर पर बीनना-चुनना न करती. कपड़े ला कर पाइयां न करती. यह समझ, तेरा भाई नहीं, तू ही इस घर का बेटा अब तू कमाएगी फिर सुधा पढ़ जाए वह कमाएगी. फिर तेरी शादी करने सुविधा रहेगी, बेटी."

आरती इस बात को कभी नहीं भूली थी. अब तो वह दसवीं में पहुंच गई छोटीछोटी ट्यूशनें भी करती थी. रुपए मिल जाते थे.

रामदास को शराब खा गई. बहुत बीमार रहने लगा था वह. गौरी भी अब बहुत कम काम करती थी. साथ नहीं देती थीं. गौरी और रामदास की तकरार कितनी भी होती रहे, लेकिन इस मामले में दोनों सचेत थे कि आरती पढ़लिख जाए तो घर का सहारा बने.

आरती स्नातिका हुई तो उसे नौकरी भी जल्दी मिल गई. उसी सरकारी स्कूल वालों ने उसे ले लिया था. यह तो बाद में पता में चला था, इस में भी गोमती बुआ ने अपने भाई से सिफारिश करवाई थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों छोटी बहनें दसवीं के आगे पढ़ी ही नहीं थीं, उस ने कितना कहा था और गौरी ने भी कहने में कसर नहीं छोड़ी थी, लेकिन उन दोनों पर कोई असर नहीं हुआ था. गौरी को बहुत बुरा लगा था कि दोनों पढ़ेंगी नहीं तो आरती की शादी कैसे होगी. गोमती बुआ ने यही तो कहा था कि सुधा कमाने लगेगी तो आरती की शादी सहूलियत से हो जाएगी. यदि आरती की शादी नहीं होगी तो वे दोनों भी कुंवारी बैठी रहेंगी.

मां को पता चला, स्कूल में कोई लड़का आता है, जिस से आरती हंसहंस कर बातें करती है.

गौरी ने जब आरती से पूछा था तो वह बहुत घबरा गई थी. उसी घबराहट में बोली थी, "मैं जिस लड़की की ट्यूशन करती हूं न, मां, उस लड़की का वह भाई है. अपनी बहन के बारे में वह जानने चला आता है और कोई बात नहीं."

मां को आरती की बात पर विश्वास आ गया था और उस से उस ने पूछताछ करनी शुरू कर दी, "क्यों, आरती, दिखने में वह लड़का कैसा है?"

"अच्छा है, मां. नौकरी करता है." आरती ने खुशीखुशी में जवाब दिया था.

"उस से शादी की बात चलाई जाए तो क्या वह मान जाएगा?" मां ने संशय को दूर करना चाहा था.

"पता नहीं, मां. मेरी तो इस बारे में उस से कभी कोई बात नहीं हुई. तुम ने मैं इस बारे में पूछने ही वाली थी. तब उस से बात करती." आरती लजा गई थी.

"बात करें तो वे लोग मान जाएंगे, बेटी?" गौरी को फिर शायद अनिश्चय ने आ घेरा था.

"तुम्हारे कहने पर तो शायद वे मान जाएंगे. तुम उन का स्वभाव देखोगी तो निहाल हो जाओगी. कितने हंसमुख हैं. उन को दहेज लेने की भी कोई इच्छा नहीं. उन के घर वाले बहुत अच्छे हैं. मैं पढ़ाने जाती हूं तो बहुत प्यार से बोलते हैं. कुछ खिलाएपिलाए बिना तो आने ही नहीं देते." आरती की आंखों में खुशियों के दीए जल उठे थे.

"सुधा जवान हो गई है, बेटी. सोचती हूं उस के हाथ पीले कर दूं. न पढ़ती है, न कोई कामधंधा. खाली बैठा मन तो शैतान का हो जाता है. तुम भी उस लड़के से बात करना, फिर मैं उन के घर जा कर भी बात कर आऊंगी." गौरी भावुकता में बोलती जा रही थी.

आरती का मन हुआ कि वह चिल्लाचिल्ला कर कहे, 'क्यों इतनी बेरहमी से फूंक मारमार कर मेरी खुशियों के दीए बुझा रही हो? सुधा जवान हो गई है तो वह क्या बचपन की दहलीज पर खड़ी है.'

उसे अपने ऊपर गुस्सा आया, "उस ने ही क्यों नहीं मां को बता दिया कि वह लड़का उसे बहुत अच्छा लगता है. वह उस से शादी करना चाहती है."

याद

बैठे हैं तेरी याद में
पलकों को झुकाए,
ओ भूलने वाले
तुझे हम भूल न पाए.
अपना रूठे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस ने तो बड़ेबड़े सपने देख रखे थे. मां से पूछ कर वह उस से शादी की बात करेगी. एक दिन वह बातोंबातों में कह भी तो रहा था, "मेरी शादी अगर नौकरी वाली लड़की से हुई तो मैं उस की नौकरी नहीं छुड़वाऊंगा, दोनों नौकरी करेंगे तो जिंदगी में किसी चीज का अभाव नहीं रहेगा. मैं अपनी पत्नी को खूब खुश रखूंगा."

तब आरती ने शरमा कर पूछा था, "आप अपनी मर्जी से शादी करेंगे?"

"हांहां. मेरे मातापिता तो राजी हैं. तुम आज हां कर दो तो मैं अभी तुम से कर लूं. मैं दहेज लेने के भी पक्ष में नहीं हूं," वह शरारत से हंसा था और वह शरमा गई थी.

इस के बाद उस ने रोज यही बात सोची थी कि मां से पूछ कर वह भी उस से यह कह देगी, "मैं तुम्हारे साथ शादी करूंगी." लेकिन झिझक ने उस में हिम्मत नहीं आने दी और फिर फैसला तो मां को करना था. अपने मन से वह क्या कहती.

आरती टूट गई थी, लेकिन मुंह नहीं खोला. वह एकदम चुप लगा गई थी. मां जब भी पूछती, "लड़के से बात की?" तो वह कह देती, "अब वह आता ही नहीं."

वह तो स्कूल में आता था. आरती ही नहीं मिलती थी. उसे डर लगा रहता अगर मैं मिली और मां को पता चला तो वह फिर कहेगी, "उस से सुधा की बात की?" लेकिन आरती यह कैसे कर सकती थी?

गौरी स्वयं ही उन के घर चली गई थी. चक्कर पर चक्कर काटे थे. लड़के से भी मिली थी. लड़के ने आरती के लिए जब कहा तो गौरी बोली थी, "उसी ने सुधा के लिए मुझे तुम्हारे पास भेजा है. वह शादी कैसे कर सकती है? हमारा तो सहारा ही वही है. वह शादी करेगी तो सब की बलि हो जाएगी."

अपनी दुनिया पर दूसरों को कुर्बान करते आरती देखती रही. कर्तव्य की डोरी ने उस के हाथपांव बांध कर उसे अपाहिज कर दिया. उसे स्कूल की टीचरों ने भी समझाया था, "तू क्यों नहीं पूछती बात मां को बता देती?" लेकिन उस ने अपनी उमंगों का गला घोंट दिया था.

दो साल निकलते न निकलते गौरी फिर आरती के पीछे पड़ गई थी, "निशा हाथ से निकली जा रही है. उस के पर निकलने लगे हैं. घर तो बैठती ही नहीं. इस से पहले कि वह कुछ कर बैठे, उस के हाथ पीले कर दूं तो चैन मिले."

आरती का मन विद्रोह कर उठा. 'क्या अब भी मां को उस का ध्यान नहीं आया. वह यह क्यों नहीं सोचती वह भी कुछ कर सकती है? उस ने क्या सब के जिंदा रहने का ठेका ले लिया है. कल को भागती निशा आज भाग जाए, उस की बला से. अब वह क्यों किसी के लिए सोचे? जब उस के लिए ही कोई नहीं सोचता.'

उस ने एक दिन निशा से कहा था, "दिनभर इधरउधर घूमती रहती हो. चलो, तुम्हें तीनचार ट्यूशनें दिलवा देती हूं. समय भी कट जाएगा, चार पैसे घर में आ जाएंगे." इस पर निशा तपाक से बोली थी, "सभी घर के लिए कमाने लगे न तो यह बाबूजी चार पैसे लाते हैं वह भी लाना छोड़ देंगे. और शराब की लत जो बढ़ेगी तो अलग, मेरी समझ में तो यह नहीं आता. जिन बाबूजी ने जवानी में मां की चिंता नहीं की, इस बुढ़ापे में उसी बाबूजी की मां क्यों चिंता करती हैं? अपने बस का यह रोग नहीं. इस घर को पालने के लिए तुम्हीं काफी हो."

उस ने इन लोगों को सजा देने की सोची. ये लोग उसे समझते क्या हैं? वह भी दिखा देगी कि वह उन्हें पालने वाली मशीन नहीं है.

उस ने कभी किसी से अपने मन की बात नहीं की थी. वह सोचती जब कोई कुछ कर ही नहीं सकता तो क्यों अपना मजाक बनवाया जाए. लेकिन हमेशा चुप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहने वाली आरती अब चीखने लगी थी. वह बातबात पर झगड़ा कर लेती. उस के मन की बात तो कोई समझता नहीं था, उलटे उसे ही जलभुन कर कहते, "इसी लिए झगड़ा करती है न कि हम तेरे मुहताज हैं." तब उसे गोमती बुआ की बहुत याद आती, जो उस की बिना कहे हर बात जान लेती थी. वह सोचती 'काश, गोमती बुआ आज जिंदा होतीं'

एक दिन रमा ने ही कुरेदकुरेद कर सब कुछ उस ने जान लिया था आरती का रोका हुआ बंध सीमा तोड़ कर वह निकला था. रोरो कर उस ने अपनी सारी कथा सुना दी थी और कहा था, "मुझे अब पति चाहिए. घर चाहिए. मेरी शादी न हुई तो मैं पागल हो जाऊंगी. सुधा की गोद में बच्चा देखती हूं तो जी चाहता है सुधा का गला घोंट दूं. वह बच्चा तो मेरी होता. यह क्यों इस की मां बन गई.

अनजाने में ही रमा न जाने उसे क्यों इतना प्यार करने लग गई थी. बड़ी बहन बन बैठी थी उस की. जहां से लड़के का पता चलता वह बात कर बैठती. विज्ञापन देखती. आरती के उम्र के अनुसार उसे कोई लड़का पसंद आता तो घर नहीं जंचता. रमा यही सोचती, 'चार दिन सुख तो देखे. जब से होश संभाला है सुख जाना नहीं, कैसा होता है.'

और एक दिन घर बैठे बड़ा अच्छा वर मिल गया था. पहली बीवी मर गई थी. दो बच्चे थे. दोनों इतने बड़े कि उन्हें संभालने की बात ही नहीं उठती थी. अच्छा पैसा, अच्छा घर. रमा को आरती की उमर के लिहाज से वर जंच गया था. जहां आरती ने वामन को देखा था तो यह कहीं गहरे तक खुशी से भीग गई थी.

आरती की उमर ढलाव पर नहीं थी तो जवानी पर भी नहीं थी. फिर वह आकर्षक लगती थी. वामन ने उसे देखते ही पसंद कर लिया था. उस ने कहा था. "इन के नौकरी करने की मुझे तो कोई जरूरत नहीं पर यह चाहें तो मातापिता की सहायता के लिए कर सकती हैं. मैं अपने ही शहर में उन की ट्रांसफर करवा लूंगा. ऐसा मत समझिएगा कि मैं यह शादी इसलिए कर रहा हूं कि बच्चों को मां चाहिए. बच्चे बड़े हैं. वे अपने दादादादी के पास रहते हैं, जहां हमारे खेतजमीनें हैं. मेरे पास वे रहते ही नहीं हैं.

"सोचा था, शादी नहीं करूंगा, लेकिन समय गुजरने के साथसाथ महसूस किया कि जीवन की गाड़ी अकेले नहीं चलेगी. जब शाम को घर आता हूं तो घर में छाया सन्नाटा मेरा एक पल भी यहां चैन से नहीं गुजरने देता. नौकर सेवा कर सकते हैं, खुशी की पूर्ति तो नहीं कर सकते. रात को जब साथी की जरूरत होती है, उस समय का क्या किया जाए? कोई तो हो जो पल भर बातें कर प्यार से सराबोर कर दे बहुत खुलीखुली बातें कर रहा हूं. बुरा मत मानिएगा. बस, अपने अकेलेपन को भरने के लिए ही

हमें जीवन चाहिए

मतभेद के आधार पर दलों के बन जाने से हमें भय नहीं आता बल्कि इस से हमारा साहस बढ़ता है. गर्मी ही जीवन का चिह्न है और रगड़ हर अवस्था में बुरी नहीं. हर कीमत पर शांति को अपनाना भी अच्छा नहीं. हमें जीवन चाहिए न कि शांति. हमें जीवन की अपेक्षा शांति से अधिक प्रेम करना सिखाया गया है और यही हमारी दुर्गति का कारण है. —लाला लाजपत राय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शादी कर रहा हूं. अपने जीने की जरूरत के लिए."

आरती बड़ी खुश थी. उस ने यों ही पूछ लिया था, "दीदी से मेरा इतिहास सुन कर मुझ पर दया तो नहीं कर रहे?'

वामन ठहाका मार कर हंस पड़ा था. बोला था. "आरतीजी, जो स्वयं दया का पात्र है, वह दूसरे पर क्या दया करेगा? हम दोनों को ही किसी साथी की जरूरत है. क्यों न हम दोनों साथ चलने लगें. वादा करता हूं कभी किसी शिकायत का मौका नहीं दूंगा."

वे दोनों तीनचार दिन साथसाथ घूमे थे. वामन ने शादी जल्दी करने का आग्रह किया था. उस ने आरती से कहा था, "कल मैं वापस जाना चाहता हूं. जाने से पहले आप के मातापिता से मिल लेता तो अच्छा रहता. मैं तो आते ही मिलना चाहता था, लेकिन रमा दीदी ने कहा था, "पहले एकदूसरे को समझ लीजिए. फिर मिल लेना."

आरती ने रमा से बात की थी. रमा ने भी कहा था, "तुम दोनों की जब मरजी हो ही गई है तो मिलवा दो उन से."

"पर मैं ने तो अभी तक उन से कुछ बात ही नहीं की," आरती ने घबरा कर कहा था.

रमा हैरान हो कर बोली थी, "तीन दिन से तुम उस के साथ घूम रही हो. अभी तक उन से कुछ नहीं कहा, खैर, तुम कहो तो मैं जा कर बात कर लेती हूं."

"नहीं. . .नहीं. मैं स्वयं कर लूंगी. कल इन्हें ले चलूंगी तो आप को साथ जाना पड़ेगा. मेरी बात सुन कर यह हड़बड़ाएंगे तो सही. लेकिन मैं मना लूंगी. मैं सुबह नौ बजे आऊंगी, दीदी. वामनजी जल्दी शादी करने के लिए कह रहे हैं. मैं ने भी सोचा है गरमी की छुट्टियों में हो जाए तो अच्छा है."

दूसरे दिन नौ बजे क्या शाम के चार बज गए थे पर आरती नहीं आई थी. रमा और वामन बड़े परेशान थे. क्या हो गया उसे? आदमी भेज कर उसे बुलवाया गया था. जब वह आई थी तो रमा देखती रह गई थी. ऐसा लगा था जैसे एक ही दिन में आरती के जिस्म से किसी ने सारा खून निचोड़ लिया हो. रोरो कर बोली थी, कल से घर में कोहराम मचा है जैसे कोई मर गया हो. मां कहती है, "शादी करने की आग खाए जा रही है. यह नहीं सोचा बूढ़े मांबाप और जवान बहन का क्या होगा. तेरे जैसी तो स्वार्थी औलाद कहीं नहीं देखी? पिताजी तो मरनेमारने पर आमादा हो गए हैं. मैं सचमुच में अभागी हूं, दीदी. जब भी सुख को पकड़ने लगती हूं वह मेरे हाथ से निकल जाता है. ऐसे भी किसी के मांबाप होते हैं जो खुद जिंदा रहने के लिए औलाद की खुशियों को चूसचूस कर हड्डियों की तरह छोड़ते हैं?" और यह फफकफफक कर रो पड़ी थी.

वामन उसे तसल्ली देते हुए बोला था, "घबराओ मत, आरती. शायद तुम ने अपने फैसलों के लिए हमेशा दूसरों का मुंह देखा है, इसी लिए भाग्य ने तुम्हारा साथ नहीं दिया. इतनी बड़ी बात को तुम ने दृढ़ता से क्यों नहीं कहा? अपना फैसला क्यों नहीं सुनाया? यह भी कोई रो कर कहने की बात थी, जिस के साथ तुम्हारे सारे जीवन का फैसला बंधा हो? खैर, तुम निराश मत होओ. सोच लो, हो सकता है तुम्हारे मातापिता मान जाएं."

वामन के दो पत्र आए थे, जिस में उस ने आरती का फैसला जानना चाहा था. तीसरा पत्र ठीक पंदरह दिन बाद उस ने रमा को भेजा था. जिस में उस ने दूसरी लड़की से शादी करने की सूचना दी थी और सारा विवरण लिखा था कि मैं ने आरती से पहले इसी लड़की को देखा था. लेकिन हां या ना का जवाब नहीं दिया था. आरती का कोई जवाब नहीं मिला तो इसी लड़की से शादी कर रहा हूं. आरती से मेरी ओर से माफी मांग लीजिएगा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • शरदचंद्र पेंढारकर

बनजारे बहुरूपिए शब्द

भारत एक कृषि प्रधान देश है और खेती तथा आर्थिक जीवन में पशुओं की बड़ी आवश्यकता पड़ती है. उन से खेती के अलावा भार ढोने या सवारी का काम भी लिया जाता है. कुछ पशुओं का दूध पीने के काम आता है, कुछ के मांस को खाया जाता है.

वैदिक काल में मनुष्य की पशुओं के अंतर्गत ही गणना की जाती थी. तब यज्ञ के लिए पांच पशु उपयोगी माने जाते थे. ये थे---घोड़ा, गाय, बकरा, भेड़, और मनुष्य. मनुष्य, हाथी और बंदर 'हस्तादाना :' (हाथ से खाने वाले) पशु माने जाते थे, जब कि अन्य 'मुखादाना :', (मुख से खाने वाले). पशुओं का वर्गीकरण और भी कई प्रकार से किया जा सकता है; जैसे---

1. पालतू : गाय, कुत्ता, बिल्ली
जंगली : सिंह, बाघ आदि.

2. थलचर : सियार, भेड़िया ऊंट
जलचर : मछली, कछुआ, मगर आदि.

नभचर : चमगादड़.

3. दो पैर वाले : बंदर और वनमानुष.

चौपाए : घोड़ा, भैंस, गधा, आदि.

4. बिड़ाल वर्ग : बिल्ली, सिंह, बाघ, आदि.

कूकर वर्ग : कुत्ता, लोमड़ी, भेड़िया, आदि.

ऋक्ष वर्ग : रीछ.

मृग वर्ग : हिरन, बारहसिंगा आदि.

वानर वर्ग : बंदर और वनमानुष आदि.

5. खुर वाले : घोड़ा, गधा, ऊंट, आदि.

रेंगने वाले : छिपकली, सांप, मगर, आदि.

कुतर कर खाने वाले : चूहा, गिलहरी, खरगोश, आदि.

पशु शब्द का अर्थ---'पशु का कोशगत अर्थ है---'जानवर' या 'प्राणी'. इस का शाब्दिक अर्थ है---जो देख सकता है

'पशु' शब्द का अर्थ, पशुओं का वर्गीकरण, और उन के नामों का विवरण.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

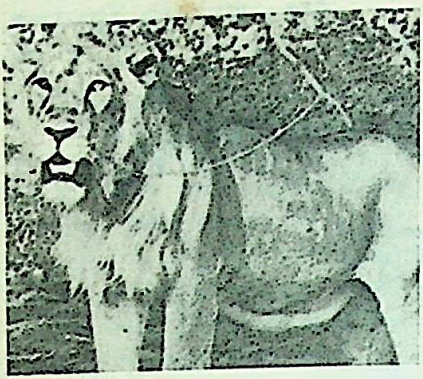

(पश्यति यः सः) क्योंकि पशुओं को देखने के लिए आंखें होती हैं. जानवर शब्द मूल रूप से फारसी का है, 'जान' (प्राण) में 'वर' प्रत्यय लग कर जानवर शब्द बना. इस का अंगरेजी पर्याय एनीमल है, जो उन के द्वारा सांस ले सकने का सूचक है. इस का मूल लैटिन का एनीमा (सांस लेना) शब्द है. विभिन्न पशुओं के नामों की व्युत्पत्ति की खोज करने पर दिखाई देता है कि अधिकांश के नाम उन के द्वारा चलने या वध (हिंसा) करने के द्योतक हैं. कुछ का नामकरण उन के स्वभाव व गुणदोषों पर किया गया है.

विड़ाल वर्ग

सिंह : इस शब्द की व्युत्पत्ति कई प्रकार से मानी जाती है. एक तो हिंसावाची 'हिंस्' धातु को उलटा करने से सिंह बना (हिंसे : विपरीतस्य) दूसरे 'हन' धातु (हिंसा करना), में 'सम्' (भलीभांति) उपसर्ग लग कर यह शब्द बना. तीसरे, अन्य पशुओं को दबाने के कारण 'सिंह' कहलाने लगा (सहनात् सिंहः) और चौथे यह दूसरों को मारते समय अपने को संकुचित करता है (संहाय हंतीति).

इस की गरदन पर बड़ेबड़े बाल (केसर) होने के कारण इसे 'केसरी' भी कहा जाता है.

बाघ : इस के शरीर पर धारियां होती हैं तथा इस की मूंछें होती हैं. 'बाघ' शब्द संस्कृत के व्याघ्र का विकसित रूप है, पहले 'व्याघ्र' से 'बग्घ' बना और बाद में 'बाघ'. इस की मूल धातु है 'घृ' (सूंघना) जिस में 'वि' 'आ' उपसर्ग तथा स्वार्थे 'क' प्रत्यय लग कर व्याघ्र शब्द बनता है. इस की व्याख्याएं हैं 'व्याघ्रो व्याघ्रणात्' (जिस की सूंघने की शक्ति तीव्र है), 'व्यादाय हंतीति' (जो अपने शिकार को पकड़ कर खींचता है और फिर मारता है तथा 'व्याजिघ्रतीति' (शिकार को चालाकी या छलकपट से मारता है).

बाघ को शेर भी कहते हैं. इस शब्द का संबंध संस्कृत के 'दशेर' से माना जाता है. वैसे हिंदी में यह फारसी से हो कर आया है. मूल फारसी शब्द है 'शेर' जिस का अर्थ सिंह है, किंतु हिंदी ने इसे 'बाघ' अर्थ में ग्रहण किया और यह 'शेर' रूप में उच्चरित होने लगा. बाघवाची 'शार्दूल' शब्द 'शृ' (हिंसा करना) धातु में 'उलंच' प्रत्यय लग कर तैयार हुआ है.

चीता : इस हिंसक पशु की विशेषता यह है कि इस के शरीर पर काली चित्तियां होती हैं, इसी कारण इस के लिए संस्कृत में 'चित्रक' (चितकबरा) शब्द बना जो 'चित्र' में 'अच्' प्रत्यय लग कर तैयार हुआ है. 'चित्रक' के अंत्य तथा मध्य व्यंजन का लोप हो कर एवं आद्य स्वर दीर्घ हो कर 'चीता' शब्द तैयार हुआ. कहा जाता है कि ग्रीक लोगों ने इसे जब पहली बार देखा तो उन्हें यह सिंह और शेर का मिश्रण मालूम पड़ा इसलिए उन्होंने इस का नाम रखा 'लिओपार्डि' जो कि 'लिआन' (सिंह) और 'पार्डस' (शेर) के संक्षिप्त रूपों का योग है.

बिल्ली 'बिड' (आक्रोश करना या जोर से चिल्लाना) धातु से 'बिडाल' शब्द बना और उस से बिल्ली. इस के लिए संस्कृत में एक और शब्द है मार्जार जिस का संबंध 'मृज' (मांजना या धोना) धातु से है. बिल्ली अपने पंजे से मुंह को साफ करती है. इस कारण इस के लिए मार्जार शब्द लागू हुआ. मराठी के 'मांजर' शब्द का इसी से विकास हुआ है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुक्कुर वर्ग

कुत्ता : इस का संबंध संस्कृत के 'कुक्कुर' से है, जिस से पहले 'कुक्कुर' बना और फिर कुत्ता. 'कुक्कुर' का अर्थ होता है बिलखना. कुत्ता जब भौंकता है, तब भों भों या 'आंओआंओ' शब्द करता है, इसलिए पशुओं के निवासियों द्वारा उसे 'बोवो' कहा जाने लगा. मैक्समूलर ने इसी को आधार बना कर अनुकरणात्मक शब्दों की प्रणाली का नाम 'बौवो' प्रणाली रखा है. कुत्ते के लिए संस्कृत में अधिक प्रचलित शब्द हैं, 'श्वान', जो 'श्वान्' (जाना) धातु से संबद्ध है. इस की व्याख्या है—'शुनाति' या 'श्वयतीति' (जो शीघ्र जाता है).

लोमड़ी : 'लोमड़ी' शब्द संस्कृत के 'लोमश' से व्युत्पन्न माना जाता है. 'लोम' का अर्थ 'बाल' होने से लोमड़ी का अर्थ हुआ—बालों वाली.

सियार : यह शब्द संस्कृत के 'शृगाल' से संबद्ध है. इसी से फारसी में 'शगाल' बना है. 'सृ' (भागना या जाना) धातु में 'गालन' प्रत्यय लग कर 'शृगाल' शब्द तैयार हुआ. कोईकोई इसे 'गीदड़' कहते हैं, जिस की व्युत्पत्ति फारसी के 'गीदी' शब्द से मानी जाती है. कुछ विद्वान इस का संबंध संस्कृत के 'गृध्र' (लालची) से भी लगाते हैं.

भेड़िया : यह बहुत खूंखार और निर्दयी होता है. गांव से भेड़बकरियों और छोटे बच्चों तक को यह उठा ले जाता है. भेड़िया शब्द का विकास संस्कृत में 'भैरुंड' (भयंकर) से मान सकते हैं. कुछ विद्वानों का मत है कि भेड़ें खाने के कारण इस का नाम भेड़िया पड़ा. इस के लिए प्राचीन ग्रंथों में 'वृक' शब्द प्रयुक्त है जो 'वृक' (पकड़ना) धातु से समुत्पन्न है.

ऋक्ष वर्ग

रीछ : वैदिक ग्रंथों में इस के लिए 'ऋक्ष' शब्द का प्रयोग हुआ है. रीछ इसी का अर्धतत्सम रूप है. 'ऋक्ष' शब्द 'ऋष' (मार डालना) धातु से बना है. इसी से अवेस्ता में रीछ, लैटिन में उर्सुक और यूनानी में इर्कोस शब्द बने हैं.

रीछ के लिए हिंदी में 'भालू' शब्द प्रचलित है. इस का मूल संस्कृत शब्द 'भल्लुक' है, जिस का विकासक्रम इस प्रकार है—भल्लुक, भल्लुआ, भालू, भल्लू' (घायल करना) धातु में 'अक' प्रत्यय लग कर 'भालू' शब्द बना. यह जानवर बड़ा ही क्रोधी और चिड़चिड़ा होता है. नाराज हो जाने पर यह व्यक्ति या दूसरे जानवर को घायल कर के (या मार कर) ही छोड़ता है, इसी कारण इस का नाम भल्लुक रखा गया होगा.

कुछ विद्वान इस के विपरीत इसे बड़ा ही सीधा जानवर मानते हैं क्योंकि इसे पाले जाने पर यह अपने मालिक के सिखाने के अनुसार चलता है. वे इस की व्युत्पत्ति संस्कृत के ही 'भद्र' शब्द से मानते हैं, जिस का अर्थ भला या सीधासादा होता है.

मृग वर्ग

मृग : यह शब्द पहले पशु अर्थ में प्रयुक्त होता था (शायद इसी कारण सिंह को मृगेंद्र या मृगराज कहा जाता है) किंतु अर्थ संकोच से यह हिरन अर्थ में प्रयुक्त होने लगा. अंगरेजी के 'डियर' तथा जरमन के 'टियर' शब्द के साथ भी यही बात दिखाई देती है. पहले ये भी पशुवाची शब्द थे, मगर अब हिरनवाची हो गए हैं.

'मृग' शब्द की व्युत्पत्ति 'मृग्' (जाना) धातु से मानी जाती है. कुछ विद्वानों का अनुमान है कि शिकारी इस का शिकार करने के लिए इसे जंगल में

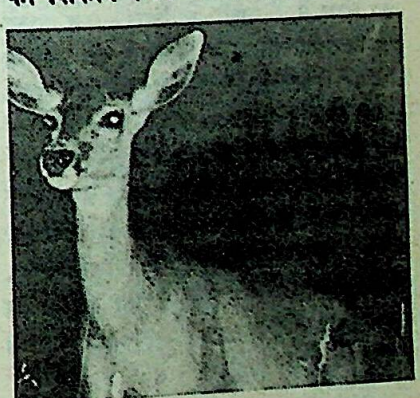

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

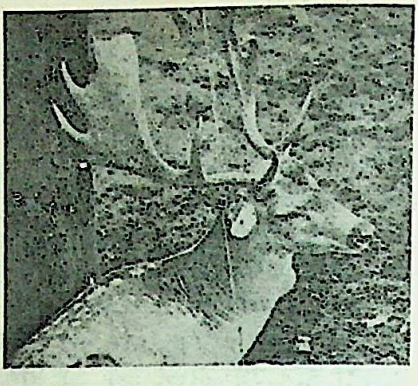

खोजते हैं. इस कारण वे इस का संबंध 'मृग' (खोजना) धातु से लगाते हैं.

'हिरन' शब्द हरिण शब्द से स्वर विपर्यय हो जाने से बना है. यह शब्द 'हृ' (हरण करना) धातु में 'इनन्' प्रत्यय लग कर तैयार हुआ है. इस का अर्थ हुआ—जिस का हरण किया जाता है.

बारहसिंगा : इस के (नर के) सिर पर छःछः सींग होने के कारण इस का नाम बारहसिंगा पड़ा. इस की खाल चित्तीदार (सफेद चित्तियां) होने के कारण इसे 'चीतल' भी कहा जाता है.

खुर वाले

हाथी : 'हाथी' शब्द का मूल संस्कृत का 'हस्तिन्' (हाथ) है. इस की सूंड रूपी लंबी नाक होती है, जो हाथ जैसा काम देती है. जिस प्रकार मनुष्य हाथ से कोई चीज उठाता है, उसी प्रकार हाथी सूंड से उठाता है. इस कारण इस के लिए 'हस्तिन्' शब्द लागू हुआ. इस की व्याख्या है—'हस्तः शुंडः अस्यास्ति' (सूंड़ जिस का हाथ है.) हाथी के लिए 'गज' शब्द भी उपयोग में लाया जाता है, जो उस के गरजने (चिंघाड़ने) का सूचक है. मत्त हो कर गरजने के कारण इस का नाम 'गज' पड़ा (गर्जति मदेन मत्तो भवति).

भैंडा : इस के लिए संस्कृत में 'गंडक' शब्द है, जिस से पालि में गंडको व प्राकृत में 'गंडअ' हो कर हिंदी में 'गैंडा' बना. 'गंडक' शब्द 'गंड' (मुख का एक भाग या कनपटी) में स्वार्थे 'कन्' प्रत्यय लग कर तैयार हुआ है.

दरियाई घोड़ा : यह अफ्रीका के जंगलों में पाया जाता है. हाथी के बाद भारी शरीर इसी का होता है. इस का मुंह सब से बड़ा होता है. इस के नाम में घोड़ा शब्द आता है, पर यह घोड़े की जाति का नहीं है. इस के पैर का आकार घोड़े का सा होने के कारण इस के नाम में 'घोड़ा' शब्द जुड़ गया. 'दरियाई' शब्द उस के दरिया में रहने का द्योतक है. थलचर होते हुए भी यह हमेशा जलाशयों में रहना पंसद करता है. इस के लिए अंगरेजी में 'हिप्पोपोटेमस' शब्द है, जो ग्रीक शब्द 'हिपोस' (घोड़ा) और 'पोटेमास' (नदी) के संयोग से बना है. दरियाई घोड़ा इस का हिंदी रूपांतर है.

सूअर : सूसू ध्वनि करने के कारण पहले यह 'सूकर' कहलाया जो बाद में सूअर हो गया. कुछ विद्वान इस का संबंध लैटिन के 'सुकुलस' से मानते हैं, जिस का अर्थ 'छोटा सूअर' होता है.

प्राचीन ग्रंथों में इस के लिए 'वराह' शब्द काम में लाया गया है. इस की निम्न व्याख्याएं है—'वराय आहंति' (जो अर्थात वस्तु को खोदता है), वरं वरं मूलं वृणति (जो उत्तम जड़ों को उखाड़ता रहता है.) 'हन्' (खोदना) धातु में 'वर' व 'आ' उपसर्ग तथा 'ड' प्रत्यय लग कर वराह शब्द बना है.

घोड़ा : इस शब्द का विकास संस्कृत के 'घोटक' से हुआ है. इस का मूल है 'घुट' शब्द जिस का अर्थ है—टखना या एड़ी. इस के पैरों में एड़ियां होने के कारण यह 'घोटक' कहलाया.

'अश्व' शब्द से भी घोड़े का बोध होता है. यह शब्द 'अश' (चलना या तय करना) धातु से बना है. सभी प्राणी चलते हैं या रास्ता तय करते हैं. किंतु अर्थ संकोच से यह घोड़े के लिए ही रूढ़ हो गया.

ऊंट : यह शब्द 'उष्ट्र' से विकसित हुआ है. वैसे वैदिक ग्रंथों में उष्ट्र का प्रयोग एक प्रकार के भैंसे के लिए दिखाई देता है, जिस का रंग काला भूरा होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था. उष्ट्र का अभिधेयार्थ है जला या भूरा. अनुमान है कि आर्यों ने जब इसे पहले-पहल देखा होगा तब इस का भूरा रंग देख कर उन्होंने इस का नामकरण 'उष्ट्र' कर दिया होगा. वैसे इस के मूल में 'उष' (जलाना) धातु है. जिस में 'ष्ट्रन्' प्रत्यय लग कर 'उष्ट्र' शब्द की सिद्धि होती है. इसी से फारसी में 'उश्तर' तथा जेंद में 'उस्र' शब्द बने हैं.

संस्कृत में इस के लिए 'क्रमेलक' शब्द भी प्रयुक्त है. 'इल्' (फेंकना या प्रेरित करना) में 'क्रम' (चाल) लगा कर इस की निष्पत्ति होती है. इस की व्याख्या है—'क्रममालम्ब्य इलत्ति' अथवा 'यद्वा क्रामतीति' (जो अपनी चाल को प्रेरित करता है.) यूनानी का 'क्रमेल' तथा अंगरेजी 'केमल, शब्द 'क्रमेलक' से ही संबद्ध है.

गाय : 'गाय, शब्द का विकास 'गो' से हुआ है और 'गो' 'गम्' (जाना) धातु में 'डो' प्रत्यय लग कर बना है. कुछ भाषाशास्त्रियों का मत है कि यह शब्द मूल रूप से सुमेरी भाषा का है. 'गो' से ही जेंद व फारसी में 'गाओ' तथा ग्रीक में 'ब्राउस' शब्द भी बने हैं.

गाय का पर्यायवाची शब्द है—'धेनु' जिस का अर्थ है—दुधारु या हाल ही में ब्याई हुई. यह शब्द 'धे' (पीना) धातु में 'नु' प्रत्यय लग कर बना है. इस की व्याख्या है—धेनुः धयति लेढि सुतान्, या धीयते वत्सैः' (जो बछड़ों को दूध पिलाती है).

बैल : संस्कृत के 'बलीवर्द' (बलिवर्दः) से एक ही अर्थ वाले दो शब्द बने-बैल तथा बरधा (बरध). 'बैल' शब्द का विकास निम्न रूप में हुआ है—बलिवर्ध, बलिवद्दो, बलिअद्दो, बइल्ल, बैल. इस की व्याख्या इस प्रकार है—'बलम् अस्यास्तीति बली ई वर्दश्च इति' (जो बलवान या ताकतवार है).

भैंस : मूल शब्द है 'महिष', जिस का अर्थ है—शक्तिशाली. विशाल शरीर होने के कारण इस का नाम 'महिष' रखा गया, जो बाद में भैंस हो गया.

गधा : मराठी में यद्यपि इस के लिए स्वतंत्र शब्द 'गाढव' है, मगर मूर्ख के प्रतीक के रूप में लघुतावाची 'डा' प्रत्यय लगा कर 'गधडा' शब्द का प्रयोग किया जाता है.

मूल शब्द 'गर्दभ' है जिस की रचना 'गर्द' (आवाज करना) में 'अभच्' प्रत्यय लग कर हुई है. इस की व्याख्या है—'गर्दति गर्दयति' (जो कर्कश आवाज करता है.) इस से पालि में 'गद्दभ' और प्राकृत में 'गद्दह' हो कर हिंदी में 'गदहा' या 'गधा' बना.

खच्चर : यह 'गधे' तथा 'घोड़ी' का या 'गधी' तथा 'घोड़े' का संकर माना जाता है. वाल्मीकि रामायण (2.70.23, 7.6.47) में इस के लिए 'खर' शब्द प्रयुक्त है. 'खर' में मध्य वर्ण 'च्च' के आगम से खच्चर शब्द बना होगा. कुछ भाषाशास्त्रियों का मत है कि मूल रूप से यह तुर्की का शब्द है, जहां से इसे हिंदी में ग्रहण किया गया है.

जिराफ : जानवरों में सब से ऊंचा होता है. इस की गरदन और जीभ भी लंबी होती है. यह प्राणी अफ्रीका व अमरीका में बहुतायत से पाया जाता है. इस का रंग पीला भूरा होता है और शरीर पर बदामी नारंगी रंग की चित्तियां होती हैं. इस की विशेषता यह है कि यह आवाज नहीं करता. जिराफ शब्द अफ्रीकी भाषा का है, जो हिंदी में अरबी से हो कर आया. इटालियन में यही 'जिराफा' हो गया है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जेबरा : अफ्रीका के जंगलों में पाया जाने वाला यह एक खच्चरनुमा जानवर है. इस के शरीर पर चौड़ी काली सफेद पट्टियां होती हैं. 'जेबरा' मूल रूप से स्पेनी शब्द माना जाता है, जिस का अर्थ जंगली गधा है. हिंदी ने इसे पुर्तगाली भाषा से ग्रहण किया है.

बकरी : वैदिक काल में संभवतः इस का आकार बड़ा होता था तथा इस से रथ खींचने का काम लिया जाता था. तब इस के लिए 'अज' शब्द का उपयोग होता होता था. 'जन्' (जन्म होना) धातु में 'ड' प्रत्यय लग इस की उत्पत्ति की कल्पना की जाती है.

'बकरी' शब्द का संबंध अरबी 'बकर' से माना जाता है, जो आकारांत हो कर 'बकरा' बना जिस का स्त्रीलिंग 'बकरी' है.

भेड़ : मूल शब्द 'मेष' का सरलीकरण हो कर 'भेड़' शब्द बना. इस की व्युत्पत्ति 'मिष' (देखना) धातु से मानी जाती है. अपने पोषक की ओर देखते रहने के कारण इस के लिए 'मेष' शब्द रूढ़ हुआ.

रेंगने वाले

सांप : सर्प के मध्य व्यंजन 'र' का लोप हो कर तथा ह्रस्व 'अ' दीर्घ एवं सानुनासिक हो कर सांप बना. 'सृप' (रेंगना) धातु में 'अच्' प्रत्यय लग कर 'सर्प' शब्द बना, जिस का अर्थ हुआ—रेंगने वाला.

बीन की आवाज पर फन निकालने वाला एवं डोलने वालासांप 'नाग' कहलाता है. इस की व्याख्या है—'न अगः' यानी जो जा नहीं सकता. इस में निषेधवाचक 'न' उपसर्ग और जुड़ कर इस का अर्थ हुआ—जो जा सकता है.

'भुजंग' शब्द उस की टेढ़ीमेढ़ी (भुज) चाल को बतलाता है. इस के नुकीले दांतों के पास थैलीनुमा ग्रंथियों में विष भरा रहता है. इस कारण इसे 'विषधर' भी कहते हैं.

सब से भयंकर लंबे (सोलह हाथ तक) व बड़े सांप को 'अजगर' की संज्ञा दी जाती है. क्योंकि यह अज (बकरे) तक को निगल (गर) जाता है. 'गर' 'शब्द' 'गृ' (निगलना) धातु से बना है.

छिपकली : इस का नीचे का भाग कोमल होता है तथा उंगलियां चिपकने वालीं, इस कारण यह दीवारों या छतों में एकदम चिपकी सी रहती है. इस की इसी विशेषता के कारण 'चिपकना' से 'छिपकली' शब्द का विकास माना जाता है. वैसे यह देशज शब्द है.

गिरगिट : 'गिरगिट' शब्द संस्कृत के 'कृकलास' से व्युत्पन्न माना जाता है, जो 'लस्' (शोभित होना) धातु में 'कृक' (गला) व 'अणादिक' प्रत्यय लग कर बना है. कोईकोई विद्वान इसे गलगति का विकसित रूप मानते हैं. 'गल' शब्द गले का सूचक है जब कि गति उस के जाने का. इस तरह इस का अर्थ हुआ—जाने वाला सुंदर गले वाला प्राणी.

मगर : इस का विकास 'मकर' शब्द से हुआ है, जो मुख+कृ+क से बना है. इस की व्याख्या है—'यद्वा मुख करोतीति (जो मुख या जबड़ा फैलाता है).

कछुआ : इस का संबंध संस्कृत के 'कच्छप' या 'कश्यप' से है. इस की व्याख्याएं हैं—'कूपमुच्छतीति' (जो कूएं से बाहर जाना पसंद नहीं करता), 'कच्छेन पाति' (जो मुख संपुट से अपनी रक्षा करता है, 'कच्छेन पिबति' (जो मुख-संपुट से पीता है.)

कछुए को कूर्म भी कहते हैं, जिस

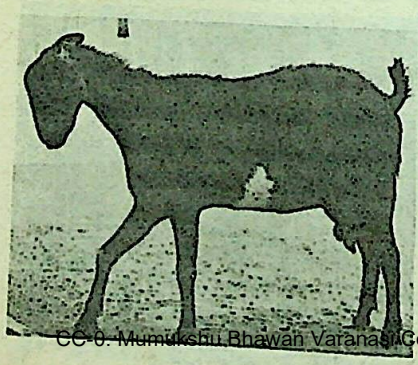

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय वाराणसी।

की व्याख्या है—कुं ईषत् ऊर्मि : वेगोयम्
(जो थोड़ी सी जलधारा में रहता है) मछली

कुतर कर खाने वाले

चूहा : यह शब्द अनुकरणात्मक है अर्थात् 'चूंचूं' शब्द करने के कारण यह चूहा कहलाया. इस के लिए प्रयुक्त 'मूषक' शब्द काफी पुराना मालूम पड़ता है, क्योंकि इस से बने शब्द यूरोपीय भाषाओं में दिखाई देते हैं. जैसे यूनानी व लैटिन में 'मूस' ग्रीक में 'मीस', जरमन में 'मौस' और अंगरेजी में 'माउस'. 'मूषक' शब्द की मूल धातु है—'मुष' जिस का अर्थ है चुराना. चूहे खाद्यान्न चुराते हैं. इस कारण 'मुष' धातु में स्वार्थे 'क' प्रत्यय लग कर 'मूषक' शब्द प्रचलित हुआ.

छछूंदर : यह रात को 'छूछू' करती हुई भोजन की तलाश में निकलती है. इस का संबंध संस्कृत के 'छुच्छुंदर' से है. 'छूछू' करने के कारण इस का नाम 'छूंछूंदर' पड़ा. इस की व्याख्या है—छुछुती-त्यव्यक्तशब्दोदीर्यति·

गिलहरी : संस्कृत में चुहियावाची शब्द है 'गिरी', जिस के मध्य में 'लह' आगम हो कर 'गिलहरी' शब्द तैयार हुआ होगा. वैसे इसे देशज माना जाता है.

खरगोश : इस की पिछली टांगें बड़ी होने के कारण यह तेजी से दौड़ सकता है. इस के लिए संस्कृत में 'शश' (या शशक) शब्द है जो 'शश' (उछल कर जाना) धातु से बना है. मगर 'खरगोश' शब्द इस से संबद्ध नहीं है. यह शब्द फारसी से ग्रहण किया गया है, 'खर' का अर्थ है गधा तथा 'गोश' का कान. इस के गधे जैसे कान होने के कारण इस के लिए 'खरगोश' शब्द रूढ़ हुआ.

नेवला : संस्कृत के 'नकुल' शब्द के मध्य वर्ण 'क' का लोप हो कर 'उ' के 'व' में परिवर्तित हो जाने तथा 'न' के एकारांत होने से 'नेवला' शब्द तैयार हुआ.

जलचर

मछली : मूल शब्द है मत्स्य जो 'स्यंद (घूमना) धातु में 'मधुं' (जल) जुड़ कर बना. इस की व्याख्या है—'मधौ उदके स्यंदते' (जो जल में विचरती रहती है).

मछली के लिए 'मीन' शब्द भी प्रचलित है. 'मी' (हत्या करना) में 'नक' प्रत्यय लग कर 'मीन' शब्द बना. इस की व्याख्या है 'मीयते हिंस्यते यः' (जो हत्या करती है). जल में यह कीड़ेमकोड़े खाती है, इस कारण इस के लिए 'मीन' शब्द रूढ़ हुआ.

मेंढक : यह शब्द संस्कृत के 'मंडूक' से व्युत्पन्न है, जो 'मंडू' (भूषित करना) धातु में 'ऊकण' प्रत्यय लग कर बना है. इस की व्याख्या है 'मंडयति जलाशय-मिति' (जो जलाशय में शोभायमान है.)

इसे 'दादुर' भी कहा जाता है. यह शब्द संस्कृत के 'दर्दुर' का सरल रूप है, जो उस के आवाज करने का सूचक है. मूल धातु 'दृ' है जिस का अर्थ आवाज करना होता है.)

उड़ने वाले

चमगादड़ : यद्यपि यह पंख होने के कारण उड़ सकता है तथापि स्तनपोषी होने के कारण इस की गणना पक्षियों में नहीं की जाती. इस के हाथपैर झिल्लीदार खाल से चिपके होते हैं. यह दिन भर तो पेड़ों या खंडहरों में उलटा सोता रहता है, किंतु रात को अंधेरे में बाहर निकलता है. 'चमगादड़' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'चर्मचटक' से मानी जाती है, जिस का शब्दार्थ है चमड़े वाली चिड़िया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वानर वर्ग

बंदर : यह शब्द 'वानर' का विकसित रूप है, जिस का शाब्दिक अर्थ है--- जो मनुष्य का विकल्प है (वा विकल्पितो नरः). कुछ विद्वानों का मत है कि इस के द्वारा बागबगीचों में फल खाते रहने के कारण इस का नाम वानर पड़ा (वा नंदने फलादिकं राति).

इस के लिए कई शब्द व्यवहृत हैं. हमेशा घूमतेफिरते रहने के कारण इसे 'कपि' कहा जाता है. (कंपते यः सदा) 'कम्प' (चलना या घूमते रहना) धातु के मध्य व्यंजन 'म्' का लोप हो कर एवं 'व' के इकारांत हो जाने से 'कपि' शब्द तैयार हुआ. 'मर्कट' शब्द भी इसी विशेषता को बतलाता है. इस की व्याख्या है 'मर्कति यः' (जो जाता रहता है). पूंछ (लांगूल) होने के कारण यह 'लंगूर' कहलाता है.

वनमानुस : यह बंदर की जाति का होता है, जो जंगलों में पाया जाता है. इस की पूंछ नहीं होती. यह मनुष्य की तरह बिना झुके खड़ा रह सकता है. मनुष्य के बाद सब से बड़ा मस्तिष्क इसी का होता है. 'मनुष्य' (मानुस) से मिलताजुलता होने तथा 'बन' (जंगल) में रहने के कारण इस का नाम 'बनमानुस' पड़ा. बनमानुस के दो प्रमुख प्रकार माने जाते हैं--- गोरिल्ला तथा चिंपैंजी.

गोरिल्ला : यह बड़ा ही डरावना होता है. इस का रंग एकदम काला व आंखें काफी छोटी होती हैं. यह अफ्रीका तथा बेल्जियम कांगो के जंगलों में पाया जाता है. 'गोरिल्ला' शब्द को अंगरेजी ने लैटिन से ग्रहण किया. वैसे यह शब्द मूल रूप से अफ्रीका की भाषा का है. वहां गोरिल्ला नामक एक जाति है, जिस के स्त्रीपुरुषों के बाल एकदम काले होते हैं. इसी कारण काले बालों वाले बनमानुस का नाम 'गोरिल्ला' पड़ गया.

चिंपैंजी : यह भी अफ्रीका का जंगली प्राणी है. इस के शरीर पर काले घने मोटे बाल होते हैं. मनुष्य के बाद सब से चतुर प्राणी इसे ही माना गया है.

'चिंपैंजी' शब्द मूल रूप से अफ्रीकी भाषा का है. उसी की देखादेखी यह सभी भाषाओं में प्रचलित हो गया. वैसे कहा जाता है कि एक अफ्रीकी व्यक्ति ने दो बनमानुस पाले थे जिन के नाम उस ने 'चिम' और 'पैंजी' रखे थे. वह इन को बुलाते समय संयुक्त रूप से 'चिंपैंजी' कह कर पुकारता था. इसी पर से इस जाति के बनमानुस का नाम 'चिंपैंजी' पड़ गया.

अन्य जानवर :

कंगारू : यह आस्ट्रेलिया का प्राणी है, जो स्तन वाले प्राणियों में अपनी किस्म का निराला है. इस के (मादा के) पेट में एक छोटी जेबनुमा थैली होती है, जिस में वह अपने बच्चे रखती है. इस के सामने के पैर लंबे होते हैं तथा पूंछ मोटी व लंबी होती है. बैठते समय यह पूंछ के सहारे बैठता है. इस से संतुलन बना रहता है. छलांग मारने में यह बड़ा माहिर है.

इस के नामकरण के बारे में किंवदंती है कि 1773 ईसवी में प्रसिद्ध यात्री कैप्टन कुक का जहाज जब आस्ट्रेलिया के समुद्र में रुका था, तब कुछ खलासी एक कंगारू पकड़ लाए. उन्होंने इस विचित्र जीव को इस से पहले कभी नहीं देखा था, इसलिए उन्होंने वहां के एक निवासी से इस का नाम पूछा. उसे इस का नाम मालूम न होने के कारण उस ने अपनी भाषा में जवाब दिया 'कंगारू' (मुझे नहीं मालूम). मगर खलासियों ने समझा कि 'कंगारू' इस का नाम है और तब से इस का नाम 'कंगारू' पड़ गया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिल्ली पुलिस महानिरीक्षक जयेंद्रनाथ चतुर्वेदी

पुलिस का नाम सुनते ही आम आदमी में आतंक की लहर क्यों दौड़ जाती है? पुलिस के विवादास्पद स्वरूप पर दिल्ली पुलिस के महा निरीक्षक से बातचीत.

भेंटवार्ता • मृदुला हालन

शाम के सवा चार बज रहे हैं. स्कूटर रुकवा कर बाहर झांकती हूं तो सामने ही काले बोर्ड पर बड़ेबड़े अक्षर चमकते दिखाई देते हैं— दिल्ली पुलिस मुख्य कार्यालय. उतर कर मैं अंदर प्रवेश करती हूं. जी नहीं, कोई अपराध नहीं किया मैं ने. न मुझे कोई रिपोर्ट ही दर्ज करानी है. मेरे यहां आने का कारण यह है कि शाम साढ़े चार बजे दिल्ली पुलिस के इंस्पेक्टर जनरल से भेंट का समय निश्चित हुआ है.

श्री जयेंद्रनाथ चतुर्वेदी दिल्ली के नए आई. जी. हैं. निकट भविष्य में वह ही यहां के पुलिस कमिश्नर होंगे, ऐसा निर्णय लिया जा चुका है. वह यह कार्यभार संभाल भी चुके होते यदि कुछ कानूनी उलझनें सामने न आ गई होतीं.

मैं सीढ़ियां चढ़ रही हूं, चारों ओर खाकी वर्दी के लोग दीख रहे हैं... कोई ऊपर से नीचे आ रहा है... कोई नीचे से ऊपर जा रहा है... सटाक... बाजू वाला दरवाजा खुल कर बंद हो जाता है. अत्यंत व्यस्त भाव से कोई उधर से निकल कर दूसरी तरफ के बड़े से कमरे में समा जाता है... तेज कदमों की आहटें, पास से गुजरते लोगों को खनाखन हंसी... बातों की अस्फुट सी आवाजें— इन्हीं सब में से गुजरती हुई मैं दूसरी मंजिल पर पहुंच जाती हूं. ठीक सामने दो सिपाही ड्यूटी पर मुस्तैद खड़े हैं. अपना कार्ड अंदर भिजवाती हूं तो आई. जी. के पी. आर. ओ. लपकते हुए आते हैं. पता लगा कि अभी आई. जी. जरा व्यस्त हैं. कोई बात नहीं. निश्चित किए गए समय में भी तो अभी दस मिनट बाकी हैं. मैं शर्माजी के कमरे में रखे सोफे पर बैठ कर सामने रखी पत्रिकाओं से उलझने लगती हूं.

मारपीट... क्रूर अत्याचार... यह सब पुलिस शब्द के साथ जुड़ से गए हैं. पुलिस के कारनामे पढ़सुन कर एक शीत लहर सी बदन में दौड़ जाती है. और ऐसी पुलिस का शीर्षस्थ! उफ्, न जाने कैसा भयावह होगा? शायद बड़ीबड़ी नुकीली ठसकेदार मूंछें हों... रोबदार चेहरा... जलती हुई आंखें... आंखों के आगे पत्रिका खोले मैं मन ही मन पुलिस के विषय में सुनी बातों से उलझने लगती हूं. पुलिस का काम है दुखियों की रक्षा करना, अपराधी को दंड दिलवाना, समाज में शांति व्यवस्था को बनाए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रखना. पर आज स्थिति एकदम विपरीत है. अपराधी निशंक घूमते हैं. सामाजिक व्यवस्था बिगड़ रही है. भले लोग पुलिस से दूर भागते हैं. पर क्यों? क्यों है यह सब? इन्हीं सवालों का जवाब पाने के लिए ही तो आई. जी. से बातचीत का समय लिया है.

प्रभावशाली व्यक्तित्व

"चलिए मैडम." सुन कर विचारों का क्रम टूटा. सामने शर्माजी खड़े साथ चलने के लिए कह रहे हैं. कमरे से निकल कर गलियारा... गलियारे के अंत में बाएं मुड़ कर ठीक सामने एक दरवाजा. दरवाजा खोल कर शर्माजी खड़े हैं. उड़ती निगाह से देखा, दरवाजे पर आई. जी. की नेमप्लेट है. और मैं कमरे में आ जाती हूं. मेरे सामने लंबी सी मेज के दूसरी तरफ बैठे हैं श्री चतुर्वेदी. देख कर सहसा मस्तिष्क में खलबली सी हुई... यह तो पुलिस की काल्पनिक तसवीर से एकदम भिन्न हैं. न पुलिस की वरदी न तमगेमैडल और... और न क्रूर व्यक्तित्व ही. गहरे ग्रे रंग का सूट, सुगठित देहयष्टि, लंबा कद और मुंह पर खेलती शांत मुसकान. देख कर एक राहत की सांस ली. पारस्परिक अभिवादन के साथ मैं सामने रखी चार कुरसियों में से एक पर बैठ जाती हूं.

कमरा काफी बड़ा है. गहरे हरे रंग का कालीन एक दीवाल से दूसरी दीवाल तक फैला हुआ है. कमरे के बाईं ओर के छोर पर एक सोफा और सेंटर टेबल रखी है. चतुर्वेदी के बाएं हाथ की तरफ चारपांच टेलीफोन रखे हैं..- काला... सफेद... लाल... मैरून.

बैठते ही श्री चतुर्वेदी ने कहा, "आप को इस से पहले समय नहीं दे सका. कारण है समय की अनिश्चितता. हमारा काम ही ऐसा है कि अगले पल क्या हो जाए कुछ भरोसा नहीं." कहते हुए जयेंद्रनाथजी मुसकरा दिए, "खैर, यह सब तो चलता ही रहता है. यह तो जिंदगी का एक हिस्सा है. आप कहिए, आप के प्रश्नों के पिटारे में कौनकौन से प्रश्न हैं?"

उन के यह कहते ही प्रश्नोत्तरों का सिलसिला आरंभ हो जाता है.

"दिल्ली में पहली बार पुलिस कमिश्नर की नियुक्ति होने जा रही है. नए पद के साथ नए अधिकार भी दिए जा रहे हैं या यह नाम का अलंकरण मात्र है?"

"नाम का अलंकरण मात्र है, मैं ऐसा तो नहीं कहूंगा. क्योंकि पुलिस कमिश्नर के हाथ निश्चित रूप से कुछ और मजबूत हो जाएंगे. तो भी हमारे प्रशासन का जो ढांचा है वह बहुत पेचीदा किस्म का है. समाज में शांति और व्यवस्था बनाए रखना पुलिस का दायित्व है. पर प्रशासन के हिसाब से शांति बनाए रखने की जिम्मेदारी बहुत बंटी हुई है. जब स्थिति बेकाबू हो जाती है तब पुलिस की जरूरत महसूस होती है. उदाहरण के लिए, मान लीजिए किसी भीड़ भरी सड़क पर एक जानवर मरा पड़ा है. रास्ते में रुकावट के कारण यातायात रुक जाता है. संभव है ट्रेफिकजैम हो जाए. यह भी संभव है कि कोई दुर्घटना हो जाए, झगड़ा हो जाए, मारपीट हो जाए और स्थिति गंभीर हो जाए.

"समस्या का आसान सा उपाय है कि मृत जानवर को जल्दी से जल्दी वहां से हटा दिया जाए. पर वह काम पुलिस के अधिकारों में नहीं है. काम है म्यूनिसिपैलिटी का. वह भी अलगअलग खंडों में बंटी हुई है. हो सकता है कि जिस जगह मृत जानवर पड़ा है वह खंड 'अ' में हो, जहां ट्रेफिक जैम या झगड़ा हो रहा है वह खंड 'ब' में हो. 'अ' खंड 'ब' खंड की सीमा का काम नहीं करेगा और इसी तरह राई जब पहाड़ बन जाती है तो जरूरत पड़ती है पुलिस की.

"पुलिस किसी को गिरफ्तार तो कर सकती है पर दंड विधान किसी और अर्थात मजिस्ट्रेट के हाथ में है और वह वहां उपस्थित भी नहीं है, उस को वहां बुलाया भी नहीं जा सकता. स्थिति यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह एक दुखद स्थिति रही है कि पुलिस को अपने ही देशवासियों के विरुद्ध हथियार उठाना पड़ा.

हो जाती है कि उस एक क्षण की गलती की सजा अनिश्चित काल के लिए टल जाती है. देखा आप ने, व्यवस्था बनाए रखना अकेली पुलिस की ही जिम्मेदारी नहीं रही, कितनी ही संस्थाएं इस के साथ जुड़ी हुई हैं.

"इसी तरह शहर या कालोनी की योजना बनाना पुलिस का काम नहीं है, पर किसी गलत योजना के फलस्वरूप अगर सड़क पर अधिक दुर्घटनाएं होतीं हैं तो उस को पुलिस संभालेगी. सड़क कितनी चौड़ी है, उस पर एक समय में कितनी गाड़ियां चल सकती हैं, यह देखना किसी और का काम है. पर अगर सीमा से अधिक गाड़ियां आने से दुर्घटना होती है तब पुलिस का काम शुरू होता है. इस तरह के हालात में अधिकार किस का और कैसा? तो भी गांवों या छोटे शहरों में बात आसानी से संभल जाती है. पर मैट्रोपालिटन शहरों की बात ही कुछ और है. जरा सी बात गंभीर झगड़े में बदल सकती है. हो सकता है एक साधारण जलूस सांप्रदायिक झगड़े, लूटमार, तोड़-फोड़ की शक्ल अख्तियार कर ले.

"स्वाभाविक है, जलूस के साथ की पुलिस इस अचानक उठ खड़े हुए झगड़े को संभालने के लिए नाकाफी हो. दंगा शुरू होने के बाद हमें खबर मिलेगी. हम मजिस्ट्रेट से संबंध स्थापित करेंगे. आपस में सलाहमशवरा करेंगे. इतनी देर में तो कुछ का कुछ हो सकता है... तो यह है हमारी प्रशासन प्रणाली. खैर, फिर भी, पुलिस कमिश्नर के पास आई. जी. से ज्यादा अधिकार होंगे. बुराई और गुंडा-गर्दी की समस्या से सुलझने के लिए वह स्वतः समर्थ होगा."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

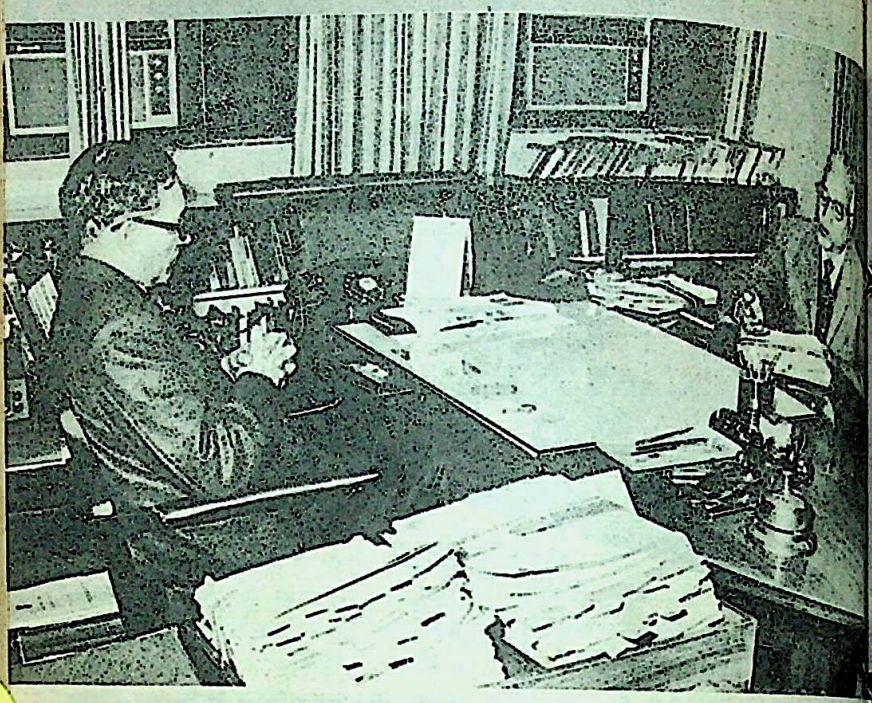

'पुलिस के जवानों और अफसरों के बीच की दूरी को कम करना होगा.': कार्यालय में विचारविमर्श करते हुए पुलिस महानिरीक्षक.

"पिछले तीस वर्षों में पुलिस की कार्य प्रणाली में कोई विशेष अंतर नहीं आया है जब कि परिस्थितियां बहुत बदल गई हैं. बदलने की जरूरत ही महसूस नहीं की गई या उन को बदला नहीं जा सका?"

"जरूरत तो बहुत महसूस होती रही है पर न बदले जाने का कारण भी हमारी परिस्थितियां ही रही हैं. 1947 से पहले पुलिस शासक वर्ग की संस्था थी. शासित लोगों को 'कस कर' रखने के लिए पुलिस का इस्तेमाल होता था. आजादी के बाद इस में मूलभूत परिवर्तन आ गया. स्वतंत्र देश की पुलिस अपने ही देशवासियों के विरुद्ध प्रयुक्त नहीं की जानी चाहिए थी. पर ऐसा नहीं हो सका. क्योंकि आजादी के फौरन बाद ही समाज में कुछ नई समस्याओं ने जन्म ले लिया. घेराव और धरना, ये दोनों तरीके शुद्ध रूप से 1947 के बाद की देन हैं. छोटी से छोटी बात के लिए जलूस निकालना, सविनय अवज्ञा आंदोलन करना, हड़तालें करना, ये सभी बातें बहुत बड़े पैमाने पर होने लगीं.

"इस तरह की वारदातों में जान-माल को खतरा होता है, अतः स्थिति पर काबू पाने के लिए यहां भी पुलिस शक्ति लगा दी गई. वास्तव में जो समय पुलिस संस्था के नव निर्माण और नव शिक्षा का था, वह उस को मिला ही नहीं शासक बदले थे पर प्रणाली वही थी."

"भारत में पुलिस आतंक और क्रूरता की पर्याय बन गई है. समाज के साथ उस का सहानुभूतिपूर्ण संबंध क्यों नहीं बन सकता?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"यह एक दुखद स्थिति रही है कि पुलिस को अपने ही देशवासियों के विरुद्ध हथियार उठाने पड़े. हथियार की नोक पर मैत्री संबंध नहीं जुड़ा करते. पर क्या करें? देशव्यापी आंदोलनों ने हमें इतनी फुरसत ही नहीं दी कि उन से निबटने के सिवा हम कुछ और सोच सकें. इसी लिए पुलिस धीरेधीरे आतंक की चीज बन गई. पर इस का यह मतलब नहीं कि हम स्थिति से अवगत नहीं थे. समय-समय पर इस बारे में कोशिशें होती रही हैं. समाज और पुलिस के बीच एक आत्मीयता स्थापित हो जाए तो पुलिस का काम बहुत आसान हो जाए. अभी तक हम इस में असफल रहे हैं. मेरी पूरी कोशिश होगी, बल्कि मेरा सब से पहला ध्येय ही यह होगा कि मैं यह स्नेह संबंध स्थापित कर सकूं.'

इस पर मैं ने अपना और 'सरिता' के लाखों पाठकों की ओर से उन्हें इस के लिए शुभकामनाएं प्रकट कीं. इस के बाद मेरा अगला प्रश्न था—

"पर समाज और पुलिस के मध्य आत्मीयता स्थापित हो जाने से पुलिस का काम आसान कैसे हो जाएगा?"

"बहुत ताजा किस्सा है, आप ने भी पढ़ा होगा. श्रीमती साहनी के घर में हुई डकैती और खून. वारदात हो जाने के काफी देर बाद पुलिस को खबर हुई और उस ने अपनी छानबीन आरंभ की. साहनी परिवार और उस की गतिविधियों को पुलिस नहीं जानती पर उन के पड़ोसी जानते हैं, संबंधी जानते हैं. उन के घर में कौनकौन आताजाता है, इस की जानकारी भी कुछकुछ आसपास वालों को होगी. हो सकता है, इसी जानकारी से

'मैं अपने चरित्र को आदर्श बनाना चाहता हूं:' कार्यालय में कार्यव्यस्त श्री चतुर्वेदी.

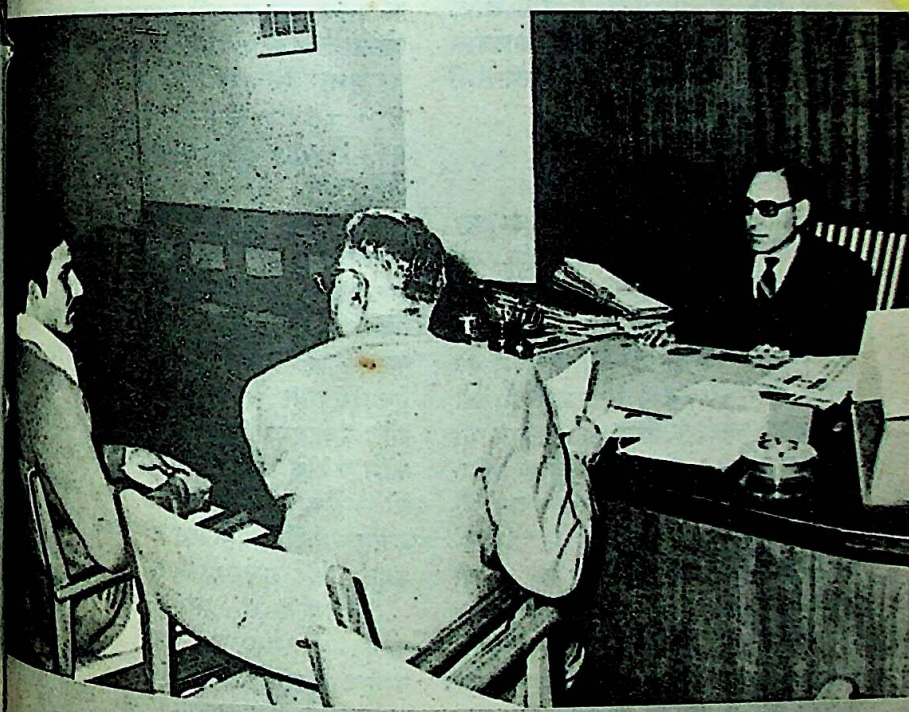

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपराधी का सुराग मिल जाए और पुलिस का काम आसान हो जाए. पर पुलिस के मामले में कोई फंसना नहीं चाहता. कारण वही परस्पर विश्वास की कमी.

"देखिए, हम ने विश्वस्त तथ्य बताने वाले के लिए पांच हजार रुपयों की घोषणा की. यह स्थिति इंगलैंड में होती तो पुलिस दफ्तर सूचनाओं से भर गया होता और यहां यह हाल है कि कोई सामने आना ही नहीं चाहता. कुछेक गुमनाम पत्र और अज्ञात फोन आए, बस."

"पुलिस के प्रति समाज के इस उदासीन व्यवहार के लिए क्या पुलिस स्वयं जिम्मेदार नहीं है?"

"कैसे?"

"प्रायः देखा गया है कि बाजार में, बस में, सड़क पर अचानक हो जाने वाली छेड़छाड़, मारपीट आदि के वक्त आसपास उपस्थित पुलिस का सिपाही उदासीन खड़ा रहता है. ऐसे क्षणों में लोग खाकी वरदी वाले की उपस्थिति से आश्वस्त होना चाहते हैं. पर जब नहीं होता तभी लोग भी उदासीन हो जाते हैं."

खाकी वरदी वाले की मजबूरी

सुन कर श्री चतुर्वेदी के मुख पर अवसाद की कुछ ऐसी रेखाएं खिंच गईं जैसे किसी पिता के सामने उस के निर्दोष बच्चे पर कोई इलजाम लगा दिया गया हो. "खाकी वरदी वाले के कर्त्तव्यों की लिस्ट तो सभी जेब में लिए रहते हैं पर उस खाकी वरदी के अंदर एक इनसान भी जी रहा है इसे कोई जानना नहीं चाहता. पुलिस के सिपाही को भी एक इनसान की तरह जीने का अधिकार है. . .मानवीय भावनाओं और इच्छाओं से वह भी परिपूर्ण है. . .सुख और दुख, श्रम और थकान उसे भी महसूस होते हैं. पर नहीं. इस के बारे में कोई नहीं सोचता. सोचते हैं सिर्फ उस के कर्त्तव्यों को.

"हमारे सिपाही किन हालात में जीते और काम करते हैं, मैं आप को बताता हूं, आज दिल्ली के लंबेचौड़े क्षेत्र और उस की जनसंख्या के हिसाब से कम से हजार सिपाहियों की जरूरत है. पर सिर्फ 22 हजार. 1967 में श्री खोसला की अध्यक्षता में एक कमीशन बैठा था, यह आंकने के लिए कि पुलिस की जरूरतें क्या हैं? खोसला कमिश्नर की रिपोर्ट आज तक की सर्वोत्तम रिपोर्टों में से एक थी. उस के अनुसार अगर हमारी जरूरतें पूरी हो गई होतीं तो आज आप को यह सवाल न पूछना पड़ता. आज दस साल बाद भी हमें उस रिपोर्ट में की गई सिफारिशों के अनुसार नहीं मिल पाया है. . .और आज की जरूरतें तो 1990 तक भी पूरी हो जाएं तो समझो बहुत कुछ पाया.

"अब जरा देखें कि सिपाही किन हालात में काम करते हैं. एक प्रसिद्ध मनोविश्लेषक ने कहा था, जो व्यक्ति परिवार से दो माह अलग रह कर काम कर ले वह सामान्य नहीं रहता. चलिए, हम दो माह को चारपांच माह कर लेते हैं पर हमारे सिपाही तो परिवार से सालों अलग रह कर काम करते हैं. परिवारों के लिए आवास व्यवस्था नहीं है तो वे उन्हें कैसे लाएं?

"सिपाही बैरकों में रहते हैं. एक चारपाई और एक बक्सा रख लेने भर की जगह उन्हें मयस्सर होती है. पुलिस फोर्स कम है अतः एक आदमी को डेढ़ आदमी का काम करना पड़ता है. औसतन एक सिपाही चौबीस घंटे में तेरहचौदह और पंदरह घंटे तक काम करता है. इतना काम कर के जब वह बैरक में लौटता है तो मैस में बना रखा ठंडा खाना खा कर कमर सीधी भर करता होगा कि उस की ड्यूटी फिर शुरू हो जाती है.

"इस के अलावा लोगों को खाकी वरदी की याद कब आती है? जब कोई नार्मल (सामान्य) हालत बिगड़ कर एबनार्मल (असामान्य) हो जाती है अर्थात एबनार्मल हालत में रहने वाला इनसान एबनार्मल स्थिति से जूझता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई सोचे जरा. कैसी मनःस्थिति में जीता होगा पुलिस का सिपाही? इतना सब करने पर भी उसे मिलती है समाज की उपेक्षा. अब जरा सोचिए. इन हालात में जीने वाला वह सिपाही तेरहचौदह घंटे काम कर के वापस जा रहा है और कहीं गड़बड़ हो जाती है. उस समय अगर वह उस ओर ध्यान नहीं देता (हालांकि उसे देना चाहिए) तो मैं समझता हूं वह दोषी नहीं है."

कहतेकहते जयेंद्रनाथ एकदम रुक गए और हलकी सी हंसी हंसते हुए कहने लगे, "मेरी इतनी लंबी तकरीर से आप यह मत समझ लीजिए कि मैं पुलिस के दोषों को ढंक रहा हूं. यह तो समूची बात का एक पहलू था.

"पुलिस संस्था में एक नहीं अनेक कमियां और दोष हैं और मैं उन्हें जानता हूं.

"वास्तव में समाज और पुलिस के संबंध अच्छे हों इस के लिए पुलिस को विशेष प्रशिक्षण की जरूरत है. अब तक की असामान्य परिस्थितियों के फलस्वरूप वह प्रशिक्षण उन्हें मिल नहीं पाया है. हम ने समयसमय पर सरकार के सामने अपनी मांगें रखी भी हैं पर उन पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया."

"क्यों?"

जवाब में श्री चतुर्वेदी हंस पड़ते हैं, "मां भी बच्चे को दूध तब देती है जब वह रोता है. वह चुप रहे, रोए न तो मां उसे दूध देना शायद भूल ही जाए. पुलिस सब से अधिक चुप रहने वाला बच्चा है, पूर्ण अनुशासन में बंधा हुआ. उस की मांगों की तरफ ध्यान ही नहीं दिया जाता. जो रोने वाले बच्चे हैं. . .इंजीनियर, डाक्टर, प्राध्यापक, बैंक, इनशोरेंस आदि के कर्मचारी वे हड़ताल आदि कर के अपनी मांगें पूरी करते रहते हैं. पुलिस अनुशासन में हड़ताल आदि वर्जित है."

"भारतीय पुलिस पर भ्रष्ट होने का लेबल लगा हुआ है. इस मान्यता के विषय में आप क्या कहेंगे?"

"पुलिस ही क्यों, सारी व्यवस्था ही भ्रष्ट है. अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए जिम्मेदार लोग पुलिस से ऊंचनीच करवाते हैं. राजनीति के मोहरे इधरउधर करने के लिए कुछ दादा किस्म के लोगों

कर्त्तव्यपालन

एक बार गांधीजी रेल से कहीं जा रहे थे. तब तक वह महात्मा नहीं बने थे. उन के डिब्बे में एक ऐसा व्यक्ति बैठा था, जो बारबार फर्श पर थूक रहा था. गांधीजी ने उस से कुछ नहीं कहा. कागज के टुकड़े से थूक को पोंछ कर फर्श को साफ कर दिया. उस व्यक्ति ने यह सब देखा और समझा कि यह सफाई पसंद आदमी है. मुझे नीचा दिखाना चाहता है. ऊस ने फिर थूक दिया. गांधीजी ने पहले की तरह फिर साफ कर दिया. अब तो वह व्यक्ति बारबार थूकने लगा लेकिन गांधीजी तनिक भी विचलित नहीं हुए. जैसे ही वह थूकता, वह बिना बोले फर्श को साफ कर देते. अंत में स्टेशन आ गया. उस थूकने वाले व्यक्ति ने पाया कि प्लेटफार्म पर जनता की अपार भीड़ है और सारा वातावरण 'गांधीजी की जय' के नारे से गूंज रहा है. गाड़ी रुकते ही सब लोग उस डिब्बे की ओर दौड़े. थूक पोंछने वाले व्यक्ति ने हंसतेहंसते भीड़ को नमस्कार स्वीकार किया.

यह सब देख वह व्यक्ति बड़ा शर्मिंदा हुआ. उस ने लपक कर गांधीजी के चरण पकड़ लिए और बारबार क्षमा मांगने लगा. गांधीजी ने इतना ही कहा, "क्षमा की कोई बात नहीं. मैं ने अपना कर्त्तव्यपालन किया है. ऐसा अवसर आने पर तुम भी ऐसा ही करना."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की जरूरत पड़ती है. उन दादाओं के सिर पर ऊंचे लोगों का वरदहस्त रहता है. असामाजिक काम करने पर अगर उन्हें पकड़ लिया जाता है तो ऊपरी दबाव पड़ने शुरू हो जाते हैं. यहां कौन भ्रष्ट हुआ?"

"उन दबावों को मानना क्या अनिवार्य है?"

"अनिवार्य है, मैं ऐसा तो नहीं कहूंगा. लेकिन यह भी सच है कि हमारा जो ढांचा है उस में शतप्रतिशत दबावों को नकारा भी नहीं जा सकता. मैं नहीं करूंगा तो उन लोगों के पास और बहुत से तरीके हैं. वास्तव में आज एक सशक्त नेतृत्व की हमें जरूरत है. जनता और सरकार दोनों ही कर्त्तव्यच्युत हो चुकी है. स्वार्थ लाभ की होड़ में कर्त्तव्यों को सभी भूलते जा रहे हैं. एक शक्तिशाली नेतृत्व के अभाव में सभी भटक रहे हैं. पुलिस भी उसी का एक अंग है."

"पिछले नौदस महीनों में सामाजिक व्यवस्था टूट कर रह गई है, अपराध बढ़ गए हैं, जानमाल की सरक्षा समाप्त हो गई है, लड़कियों से छेड़छाड़ बहुत बढ़ गई है. आपात स्थिति के दौरान ये सब बातें समाप्तप्रायः हो गई थीं. आज ऐसा क्यों संभव नहीं है?"

"आपातस्थिति की शांति तो मरघट की शांति थी. वैसी शांति तो मैं दोबारा नहीं चाहूंगा. और सामान्य स्थिति में वह संभव भी नहीं है. जहां तक महिलाओं से छेड़छाड़ का सवाल है, अकेली पुलिस उस में कुछ नहीं कर सकती. सामाजिक चेतना इस के लिए बहुत जरूरी है. खचाखच भरी बस में किसी लड़की से कोई अभद्र व्यवहार करता है तो सब लोग मूक बने बैठे रहेंगे. किसी में इतनी हिम्मत नहीं कि अभद्र व्यक्ति को रोक सके. सब हाथों में चूड़ियां पहन लेते हैं. संभव नहीं है कि प्रत्येक बस में पुलिस तैनात रहे."

"जहां तक सामाजिक व्यवस्था के छिन्नभिन्न होने का सवाल है, मेरे खयाल में तो स्थिति चिंताजनक नहीं है. जो है उसे दूर करने की कोशिश जारी है."

"ट्रैफिक नियमों की अवहेलना करने में मिनी बसें सब से आगे हैं. कंडक्टर का अभद्र व्यवहार, जरूरत से कहीं ज्यादा सवारियां भर लेना, तेज रफ्तार, दुर्घटनाएं आदि के बावजूद उन पर कोई नियंत्रण क्यों नही है?"

"नियंत्रण किस प्रकार का?"

"चालान हो जाने पर पचास रुपया जुर्माना दे देने मात्र से वे छूट जाते हैं और फिर वही तब करने लगते हैं. एक या दो चेतावनियों के बाद अगर उन का लाइसेंस रद्द कर दिया जाए तो उन पर असर पड़े.

"लाइसेंस रद्द कर देने की बात आप ने ठीक कही. यह व्यावहारिक की है.

"चतुर्वेदीजी, अभी तक आप ने जो कुछ बताया वह था प्रचलित प्रणाली के आधार पर किया गया एक आकलन. इस चुनौतीपूर्ण पद पर नियुक्ति के समय आप ने कुछ लक्ष्य अवश्य निर्धारित किए होंगे. अब जरा उस दृष्टिकोण पर बातचीत हो जाए?"

"मैं ने हमेशा महसूस किया है कि पुलिस के जवानों और अफसरों के बीच बहुत दूरी रहती है. अफसर स्वयं कुछ भी करे पर मातहत की कोई कमजोरी उन्हें सहन नहीं. इस दूरी को खत्म करना होगा."

"कैसे?"

अपना उदाहरण प्रस्तुत कर के. मैं यही चाहता हूं कि मेरा चरित्र, मेरे क्रियाकलाप मेरे जवानों के लिए उदाहरण बन जाएं. इस के अतिरिक्त कुछ और बातों पर ध्यान देना होगा. मैं ने जो रास्ता चुना है वह है प्रांमट रिस्पांस, प्रापर रिसपांस तथा पोलाइट रिस्पांस (तुरंत कार्यवाही करने का, सही कार्यवाही करने का और शिष्टतापूर्ण कार्यवाही करने का) मेरा विश्वास है कि ये तीन 'पी' सशक्त होंगे.

"अपने यहां पर सुलती करने पर सजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो तुरंत दे दी जाती है पर अच्छा काम करने का प्रतिफल जल्दी नहीं मिलता. कुशल प्रशासन के लिए अगर अचानक चैक करना तथा गंभीर सजा देना जरूरी है तो तत्काल प्रतिफल देना भी उतना ही जरूरी है. प्रतिफल तो एक तरह का प्रोत्साहन है. मैं इसी पद्धति से कार्य करना चाहूंगा. हां, एक बात और, लोगों के सुझावों का भी स्वागत है. हमारी कोशिश रहेगी कि लोगों के सुझावों पर ध्यान दिया जाए."

"अति व्यस्त जिंदगी के साथ तालमेल बिठाना प्रायः कठिन हो जाता है. आप कैसा अनुभव करते हैं?"

"व्यस्त जिंदगी भी एक बहुत बड़ा सवाल बन जाता है. लेकिन तालमेल तो बिठाना ही पड़ता है. परिवार के साथ बिताने का समय तो बहुत ही कम निकाल पाता हूं. उन लोगों का भी ध्यान रखना पड़ता है. तो भी कितनी ही देर से लौटूं, परिवार के साथ बिताए क्षण सारी थकान दूर कर देते हैं."

'ऐ हेल्दी साइन' मेरे मुंह से बेसाख्ता निकल गया, सुन कर श्री चतुर्वेदी हंस दिए.

बातचीत के दौरान पता लगा कि श्रीमती चतुर्वेदी गाना अच्छा गाती हैं. मैं ने कहा, "कभी सुनने का मौका मिले शायद..."

"गाना तो हम भी अच्छा गाते हैं, मैडम," श्री चतुर्वेदी ने मुक्त हास्य के बीच बताया.

"वाह...वाह, कभी सुनेंगे."

"अवश्य, पर अभी, यहां दफ्तर में इस का अनुरोध मत कर बैठिएगा."

"जी...नहीं, फिर कभी...अच्छा धन्यवाद."

अनौपचारिक सामूहिक गोष्ठियां

श्री चतुर्वेदी की योजना है कि निकट भविष्य में वे अनौपचारिक गोष्ठियां प्रारंभ करेंगे. बस्तियों, महल्लों में जा कर स्थानीय लोगों से बातचीत कर के उन लोगों की समस्याओं को जानने का प्रयास किया जाएगा. ये गोष्ठियां बिना टीपटाप, बिना सरकारी रोबदाब के किसी भी कमरे, हाल आदि में होंगी. सभी वर्गों के भिन्नभिन्न पेशे वाले लोगों में से कोई की इस में आ कर अपनी बात कह सकेगा. श्री चतुर्वेदी का विश्वास है कि ये गोष्ठियां सामाजिक बुराइयां दूर करने में सहायक होंगी.

आई. जी. तक सब की पहुंच.

क्या अमीर क्या गरीब. क्या छोटा क्या बड़ा, अब कोई भी व्यक्ति पुलिस के इंस्पेक्टर जनरल के पास फरियाद ले कर जा सकता है. जरूरी नहीं कि इस के लिए पहले से समय निश्चित किया जाए. श्री चतुर्वेदी का मत यह है कि इस से पुलिस और समाज के बीच की दूरियां तो टूटेंगी ही, असामाजिक तत्वों का मनोबल तोड़ने में भी सफलता मिलेगी.

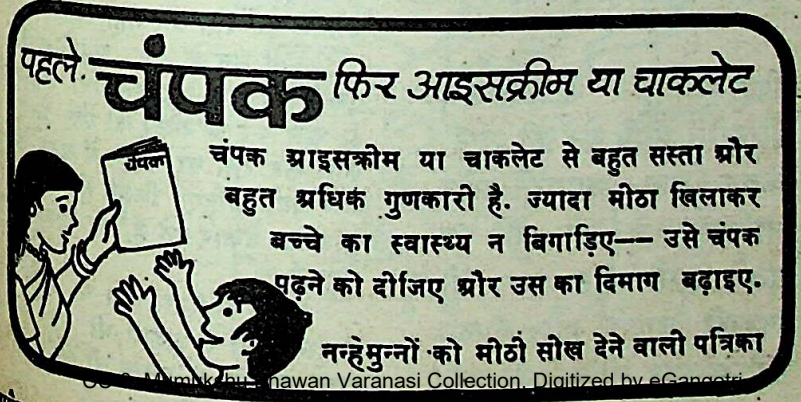

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • सत्यकुमार

रुपया और नारियल

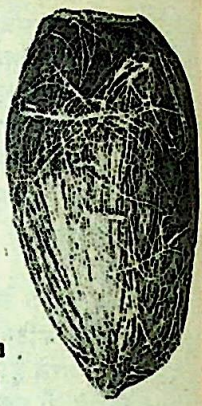

उमाशंकर ने सचिवालय में क्लर्क के पद से नौकरी प्रारंभ की थी और अंडर सेक्रेटरी के पद से रिटायर हुए थे. सीधेसादे व्यक्ति, अपने काम से मतलब रखते. बड़ा लड़का महेश डाक्टरी पास कर के जो आगे पढ़ने अमरीका गया तो फिर वहीं बस गया. उस ने वहीं एक अमरीकी लड़की से शादी कर ली और वहीं मकान बना लिया. उस के बाद तीन लड़कियां थीं— सुविधा, समता और सारंगा. सुविधा ने दो साल पूर्व एम. ए. कर लिया था और सुयोग्य वर की प्राप्ति की आशा में बीच का समय शोध कार्य में बिता रही थी. समता एम. ए. कर रही थी और सारंगा बी. ए. में थी. सब से छोटा लड़का सुरेश हायर सैकंडरी में था.

कितने महान थे नेताजी, जिन्होंने अपने बेटे की शादी केवल एक रुपया और नारियल ले कर की पर इतने सस्ते छूट कर भी लड़की वालों की हालत सांपछछूंदर सी क्यों हो गई?

अवकाश प्राप्त करने के बाद उमाशंकर के पास सारे जीवन की जमा पूंजी एक लाख रुपया थी. आय का एकमात्र साधन अब चार सौ रुपया महावार पेंशन रह गया था. मोटे तौर से वह सोचते थे कि प्रत्येक लड़की की शादी में पचीस-तीस हजार रुपया खर्च कर देंगे. तब तक सुरेश की पढ़ाई भी पूरी हो जाएगी.

सुविधा के एम. ए. पास करने के बाद से ही उन्होंने वर की तलाश शुरू कर दी थी पर जहां वर पसंद आता था वहां पचीस हजार तो नकद ही मांगा जाता था. अवकाश प्राप्त करने के बाद उमाशंकर के पास पत्रव्यवहार और भागदौड़ करने के लिए पर्याप्त समय था. वह जल्दी से जल्दी सुविधा की शादी करने को उतावले थे पर बात बन नहीं रही थी.

तभी उन के एक संबंधी वकील ने एक इंजीनियर वर बतलाया. लड़का बी. ई. पास कर के कोटा की एक फैक्टरी में काम कर रहा था. देखने में सुंदर, स्वस्थ और क्या चाहिए? कितने ही बी. ई. पास आजकल बेकार बैठे हैं, वह ठिकाने से लगा है.

लड़के के पिता नेता थे. बहुत वर्षों विधान सभा के सदस्य भी रह चुके थे इधर बरसों से चुनाव तो नहीं लड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर स्थानीय राजनीति में सक्रिय रहते थे. फलस्वरूप प्रदेश की राजधानी में भी तालमेल बिठाए रखना पड़ता था. कोठी थी, कार थी, सभी साधन थे.

उमाशंकर का नेता किस्म के लोगों से कभी काम नहीं पड़ा था. सचिवालय की नौकरी में आपाधापी के लिए अधिक समय और क्षेत्र नहीं होता. फिर उन का स्वभाव भी ऐसा नहीं था. आराम से रहने लायक काफी मिल जाता था.

लड़के को वह कोटा जा कर देख आए. ठीक था, आयु में सुविधा से दो वर्ष और कद में चार इंच बड़ा. पर लड़के के पिता दीनबंधुजी से तीन चक्कर लगाने के बाद ही भेंट हो सकी. जब भी वह उन से मिलने गए वह कहीं बाहर गए हुए थे. बिचौलिए के रूप में उमाशंकर हर बार अपने वकील संबंधी को ले जाते थे. एक तो प्रत्यक्ष परिचय नहीं था, दूसरे वकील लोग जरा ढंग से बात कर लेते हैं. उमाशंकर तो बस आवश्यकता भर की ही बातें करने के अभ्यस्त थे. फाइल देखी, टिप्पणी की और आगे बढ़ा दी. सारी जिंदगी यही तो किया था.

चौथी बार गए तो नेताजी से भेंट हुई. तपाक से मिले. शादी की बात छिड़ी तो वह दो टूक बोले, "मुझे क्या लेनादेना? जमाना बहुत आगे बढ़ गया है. मियांबीवी राजी तो क्या करेगा काजी? आजकल तो शादी कर लेने के बाद ही लड़के घर वालों को खबर देते हैं."

वकील संबंधी ने उन के परिवार की प्रशंसा के पुल बांध दिए. बच्चों की शालीनता, संस्कार और सद्गुणों की भूरिभूरि प्रशंसा की.

नेताजी ने साफ कह दिया, "लेनादेना हमें कुछ नहीं है. लड़की के बारे में भी हमारी कुछ पूर्व मान्यताएं नहीं हैं. वकील साहब बीच में पड़े हैं तो हमें छानबीन की भी आवश्कता नहीं है. लड़कालड़की यदि एकदूसरे को पसंद कर लेते हैं तो हमें कोई आपत्ति नहीं है."

एक तिथि तय हो गई. सातआठ लोगों का लड़की देखने आना निश्चित हो गया.

शादी की बात पर नेताजी ने अपने दो टूक विचार व्यक्त किए, "मुझे क्या लेनादेना..."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वकील साहब ने कहा, "एक गाड़ी आप की है ही, एक हम भेज देंगे. आप लोग आराम से आ जाएं."

उमाशंकर को क्या आपत्ति होती? वह तो नेताजी की सादगी से, स्पष्ट वार्ता से बहुत प्रभावित हुआ था.

महल्ले में व्यर्थ विज्ञापन न हो या लड़की पसंद न आने या बात न बनने पर उलटीसीधी चर्चा न हो, इसलिए उमाशंकर ने एक अच्छे होटल में नेताजी के लिए दो कमरे बुक करा दिए. खानेपीने की भी वहीं व्यवस्था की तथा वहीं लड़की दिखाने का प्रोग्राम था.

सुविधा के पसंद न आने का कोई सवाल ही नहीं था. वह पढ़ीलिखी, सुंदर, व स्वस्थ थी. नेताजी आवभगत से काफी प्रभावित हुए. एक पखवाड़े के बाद पक्के की रस्म की तिथि तय हो गई.

वकील साहब इस बीच एक बार जा कर नेताजी का दिल टटोल आए. लेनदेन के मामले में उन्होंने साफ कह दिया, "नकद मुझे कुछ नहीं लेना. एक रुपया और नारियल से सारी रस्में कर दीजिए. रही सामान की बात, सो अपनी लड़की के लिए आप चाहे कुछ दीजिए. अभी मना भी करूंगा तो उन की सारी उमर पड़ी है. आप जो चाहे देते रहेंगे."

उमाशंकर प्रसन्न हो गए. अब से पहले जहां भी गए थे, घुमाफिरा कर नकदी की ही बात होती थी. पहली शादी करनी थी. गृहस्थी का सभी सामान देना था. कुछ छोटीमोटी चीजें जाने कब से सहेज कर रखी थीं, फिर पहली शादी के स्तर से शेष लड़कियों की शादी करने में सुगमता रहेगी. सब जगह वाहवाह होगी.

वकील ने कहा, "अंगरेजी कहावत है कि 'फर्स्ट इंप्रेशन इज दा लास्ट इंप्रेशन' (प्रथम प्रभाव अमिट होता है) अतः पक्की का प्रदर्शन श्रेष्ठ होना चाहिए. फिर जब वह नकद कुछ नहीं ले रहे तो सामान उत्तम होना चाहिए. पूरे परिवार के लिए बहुमूल्य कपड़े, चांदी के बरतन, स्वचालित घड़ी, टेलीविजन आदि की सूची तैयार की गई. फल, मिठाई, मेवा तो होंगे ही है. नारियल तो चांदी से मढ़वाया ही जाता है.

सामान आदि सब को पसंद आया. सुविधा की सास ने अवश्य किसी से कहा, "फ्रिज देते तो गरमी भर ठंडा पानी तो पीते. टेलीविजन से तो घर पर पहले वालों की भीड़ लगी रहा करेगी."

सगाई पर फ्रिज भी पहुंच गया. ट्रांजिस्टर, गरम कपड़े, अंगूठी, फल, मिठाई, मेवों से भरे स्टील के दस बड़े थाल तथा अनेक छोटीमोटी वस्तुएं भी. शादी की तिथि तय हो गई.

उमाशंकरजी का अब तक बीस हजार के लगभग खर्च हो गया था. उन्हें लग रहा था कि शादी का खर्चा बजट से ऊपर निकल जाएगा. पर सोचा कोई बात नहीं, पहली शादी है.

सुविधा की मां ने जिद कर के अपने कुछ आभूषण तुड़वा कर और कुछ नया सोना ले कर लगभग दस तोले के आभूषण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनवा दिए थे. उस का तर्क था कि जब वह लेंगे नहीं तो कुछ देंगे भी नहीं. मैं अपनी लड़की को नंगी तो भेजूंगी नहीं. बस तोला होता ही कितना है? चार चूड़ियां, अंगूठी, गले का हार और कानों के कुंडल. हिसाब लगाएं तो यह भी आठ हजार से ऊपर का बैठता है

सगाई पर सुविधा के छोटे भाई से उस के होने वाले जीजाजी ने हंसते हुए कहा, "भाई यह टी. वी. और फ्रिज तो मेरे लिए बेकार हैं. मेरी फैक्टरी शहर से दस मील दूर है. स्कूटर होता तो कुछ काम तो आता."

फलस्वरूप ब्लैक से स्कूटर की व्यवस्था की गई.

विवाह के कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए नेताजी ने वकील साहब को बुलवा कर साफ कह दिया था, "भाई, अब एक भी पैसा नहीं लेंगे तो खर्च भी कुछ नहीं करेंगे. तेल तो तिलों में से ही निकलता है न? बरात के लिए एक बस और एक कार शादी वाले दिन सुबह ही यहां पहुंच जाए. बरात की व्यवस्था किसी होटल में कर दें. बरातियों के दस नखरे होते हैं. आप कहां उन की खुशामद करते फिरोगे? खाने आदि का प्रबंध भी होटल वालों के जिम्मे कर दें. नहीं तो सारा घर और महल्ला बरात के खिलानेपिलाने में ही लगा रहता है. इस में मितव्ययिता भी होगी. पेट से ऊपर तो कोई खाता नहीं. घर पर खिलाने में लो जी, लो जी कर के बहुत व्यर्थ जाता है. होटल में जो जिस की तबीयत हो खाएपीए. चाहे जिस समय, कोई असुविधा नहीं.

चलतेचलते उन्होंने कहा, आतिशबाजी, बाजे, घोड़ी आदि पुरानी बातों में हमारा तनिक भी विश्वास नहीं. आप जो

"फ्रिज देते तो गरमी में ठंडा पानी तो पीते," सुविधा की सास ने इतना ही कहा था कि सगाई पर फ्रिज, ट्रांजिस्टर, गरम कपड़े, अंगूठी, फल, मिठाई मेवों से भरे स्टील के थाल पहुंच गए.

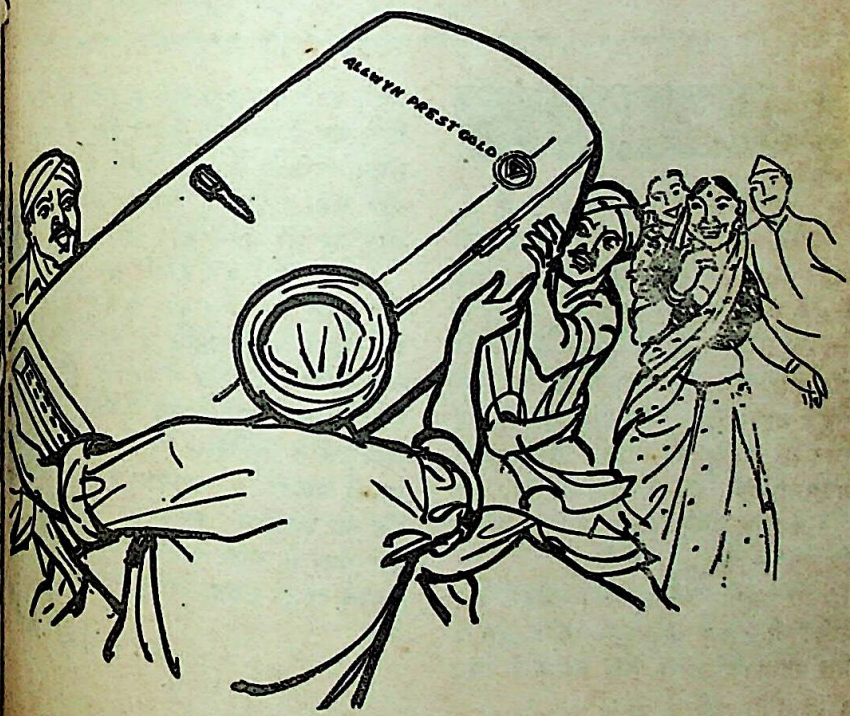

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठीक समझें कर लें. हम किसी मद में कोई पैसा खर्च नहीं करेंगे. आप हमें यहां से ले जाएं और यहीं छोड़ जाएं. हमारे बराती गणमान्य व्यक्ति होंगे. लड़की देखने आए थे तब जिस होटल में ठहराया था, वैसे ही किसी होटल में इंतजाम कर दें. 'फाइव स्टार' हम नहीं कहते पर 'थ्री स्टार' तो हो ही. दोचार पुराने साथी-मंत्री, उपमंत्री भी आएंगे ही."

उमाशंकर की हालत सांपछछूंदर जैसी हो गई. न खा सकें न थूक सकें. पैंतीस हजार के चक्कर में अब तक आ गए थे. सौलह सौ रुपए में बस हुई, चार सौ रुपए में एक टैक्सी. बाजा वह आठ सौ रुपए का पहले ही बुक करा चुके थे, तीन सौ रुपए की आतिशबाजी तय कर चुके थे. घोड़ी, फुलवाड़ी, सजावट, बिजली, शामियाने आदि का एक हजार से ऊपर का खर्चा था.

जब ओखली में सिर दिया तो फिर मूसलों से क्या डरना? फिर चारा भी क्या था. बरातियों के लिए राशन पानी, कपड़ा आदि तथा संबंधियों को नेगचार आदि का आठदस का तो विविध खर्च ही था. पचास हजार की तो बात यों ही पहुंच रही थी.

पर होटल के बिल ने तो कमर ही तोड़ दी. उमाशंकर ने मोटे तौर से खाने का अनुमान किया था, पीने का नहीं. रहने का, खाने का, पीने का, पानसिगरेट और टेलीफोन का सत्तर आदमियों का बीस हजार रुपए से ऊपर का बिल था. नाले मुफ्त दिले बेरहम.

शादी में सत्तर हजार रुपए से ऊपर खर्च हुआ.

लड़के वालों को सब तरफ से साधुवाद मिला. शादी में नकद कुछ भी नहीं लिया. नेताजी बड़े आदर्शवादी हैं. केवल एक रुपए और नारियल से सारी रस्में हुईं. चोरीछिपे भी नकदी नहीं ली. मित्र और संबंधी उमाशंकर से कह रहे थे, "बड़े सस्ते छूट गए." पर वह सोच रहे थे कि समता और सारंगा की शादियां किस प्रकार करेंगे. ●

ये पति

मेरे बड़े भाई लखनऊ में रहते थे. एक बार मेरी भाभी अपने बच्चों के साथ मायके गई हुई थीं. घर में भाई साहब और उन के मित्र थे. भाभी के घर पर रहते हुए तो भाई साहब को रसोई में जाने की कभी नौबत ही नहीं आती थी. लेकिन जिस दिन भाभी गईं तो भाई साहब को नाश्ता स्वयं बनाना पड़ा. घर में गैस वाला चूल्हा था. पर उन से गैस नहीं जली. उन्होंने सोचा शायद गैस खत्म हो गई है.

उस दिन उन्होंने अपना नाश्ता और भोजन होटल में ही किया और गैस के लिए फोन कर दिया. भाई साहब के मित्र अपने काम पर जरा देरी से जाते थे. इसलिए वह देरी से ही तैयार होते थे. भाई साहब के जाने के बाद उन्होंने गैस जलाई और चाय बना कर नाश्ता आदि किया और वह भी अपने काम चले गए.

शाम को जब दोनों घर आए तो गैस वाला भी गैस का सिलेंडर ले कर आ पहुंचा. भाई साहब का दोस्त यह देख कर हैरान था. उस ने बताया कि अभी गैस है मगर भाई साहब न माने. इस पर जब उस ने गैस जला कर दिखाई तो उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ. उन्होंने गैस का सिलेंडर खोला ही नहीं था तो गैस कहां से जल पाती. उधर सिलेंडर लगाने वाला बड़बड़ाता हुआ वापस चला गया.

—चंद्रकांता शर्मा ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आलोचनाओं और आपत्तियों के उत्तर

आत्मा और पुनर्जन्म

सरिता के जुलाई (प्रथम) अंक में छपे मेरे लेख 'आत्मा और पुनर्जन्म' पर बहुत से ऐसे लोगों ने आक्षेप किया है, जिन को दर्शन का थोड़ा सा भी ज्ञान नहीं और जिन की प्रायः प्रत्येक पंक्ति में कम से कम दोतीन शाब्दिक गलतियां भी थीं. ऐसे लोगों के आक्षेपों को पढ़ कर यह सोचने पर मजबूर होना पड़ता है कि जो लोग अपनी बात को ही सही शब्दों में नहीं लिख सकते, वे किस आधार पर इस विषय पर कोई आपत्ति उठा सकते हैं.

मैं ने लिखा था कि आत्मा सर्वत्र व्यापक नहीं हो सकती, क्योंकि हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि सभी इनसानों को एक समय और एक समान भूखप्यास नहीं लगती और एक साथ दुखसुख का भी अनुभव नहीं होता.

इस पर एक पाठक ने लिखा है कि भूखप्यास आदि तो शारीरिक कर्म हैं. आत्मा उन में लिप्त नहीं होती अर्थात सब प्रकार के कर्म प्रकृति के सत्व, रज और तम गुणों के कारण होते हैं. इन से आत्मा का कोई वास्ता नहीं.

यह बात बिलकुल असंगत और आत्मा के सिद्धांत का प्रचार करने वाले शास्त्रों के विरुद्ध है. यदि आत्मा का शरीर द्वारा किए कामों से कोई संबंध नहीं तो शरीर द्वारा किए गए बुरे कर्मों के फलस्वरूप आत्मा नीच योनियों में कैसे जाएगी? हिंदू शास्त्रों का मत है कि नीच कर्म करने वाला नीच योनियों में जन्म लेता है और अच्छे कर्म करने वाला ऊंची योनियों में. जब सारे ही कर्म शरीर द्वारा होते हैं और शरीर मृत्यु के बाद नष्ट हो जाता है तो फिर पुनर्जन्म किस का? शास्त्रों के मुताबिक तो इस जन्ममरण के चक्र में आत्मा घूमती है. यदि आत्मा का शरीर द्वारा किए अच्छेबुरे कर्मों से कोई संबंध नहीं तो फिर आत्मा को शरीर द्वारा किए गए अच्छेबुरे कर्मों के परिणामस्वरूप ऊंचीनीची योनियों में जन्म क्यों

लेख • सोमा सबलोक

आत्मा और पुनर्जन्म के सिद्धांतों के पक्ष में खड़े किए गए तर्क कितने निराधार और हास्यापद हैं!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेना पड़ता है?

यदि आत्मा का किसी शारीरिक काम से कोई वास्ता नहीं, कोई लेनदेन नहीं तो फिर इस वृथा चीज की जरूरत ही क्या है? और इस का अस्तित्व सिद्ध भी कैसे किया जा सकता है?

गीता में (13/33) में लिखा है कि जैसे एक ही सूर्य सारे जगत को प्रकाशित करता है वैसे एक ही आत्मा सारे शरीरों को प्रकाशित करती है.

एक ही आत्मा

इस पर मैं ने लिखा था कि गीता का यह कथन बिलकुल गलत है, क्योंकि सभी इनसानों की क्रियाएं, रुचियां और इच्छाएं समान नहीं होतीं.

इस पर आक्षेप करते हुए एक पाठक ने लिखा है कि जिस तरह छोटी से छोटी वस्तु से ले कर बड़ी से बड़ी वस्तु में आकाश का अस्तित्व होने पर भी आकाश (जिसे सभी नीला आकाश कहते हैं) की अनेकता व इस का खंडित होना सिद्ध नहीं होता, उसी तरह सब छोटेबड़े प्राणियों में आत्मा के होने पर भी उस की अनेकता और उस का खंडित होना सिद्ध नहीं होता, अतः गीता का कथन बिलकुल ठीक है.

पाठक महोदय का उपर्युक्त कथन आत्मा के एक होने को सिद्ध नहीं करता, बल्कि इस बात को सिद्ध करता है कि उन को दर्शन शास्त्र का प्रारंभिक ज्ञान भी नहीं है. उन्होंने नीले रंग के आकाश के सब चीजों में व्याप्त होने की जो बात कही है, उस का सब जगहों पर व्याप्त रहने वाले दार्शनिकों के आकाश से दूर का भी संबंध नहीं है. उन्हें शायद यह मालूम नहीं कि दार्शनिकों का आकाश एक बहुत सूक्ष्म पदार्थ है, जिसे पाठक महोदय ने अपने अज्ञान के कारण आम बोलचाल वाला आकाश समझ लिया है.

दूसरे, कोई बात सिर्फ कह देने से या सिर्फ उदाहरण दे देने से सिद्ध नहीं होती. जब तक आत्मा का अस्तित्व ही सिद्ध नहीं होता, तब तक उस की सर्वव्यापकता की तुलना सूर्य के प्रकाश से की जाए या आकाश के अस्तित्व से, इस से कुछ सिद्ध नहीं होता. किस आधार पर यह कहा जा रहा है कि एक ही आत्मा सर्वत्र व्याप्त है? इस के लिए क्या प्रमाण है? सिर्फ उदाहरण दे कर ही यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया जा रहा है कि एक ही आत्मा सर्वत्र व्याप्त है. फिर तो सिर्फ यह उदाहरण दे कर कि 'जैसे एक कुम्हार दुनिया के सारे घड़ों में व्याप्त नहीं हो सकता, वैसे एक ही आत्मा सब में व्याप्त नहीं हो सकती,' यह सिद्ध किया जा सकता है कि एक ही आत्मा सर्वत्र व्याप्त नहीं है.

एक ही तत्त्व सर्वव्यापक

एक बात और, सर्वव्यापक को अर्थ है सब स्थानों पर व्याप्त अर्थात ऐसी कोई भी जगह नहीं, जहां वह न हो. दुनिया में यदि कोई सर्वव्यापक तत्त्व मान लिया जाए तो भी एक ही तत्त्व सर्वव्यापक हो सकता है. प्रायः परमात्मा को सर्वव्यापक कहा गया है. अगर वास्तव में वह सर्वव्यापक है तो और कोई दूसरा तत्त्व सर्वव्यापक नहीं हो सकता. दूसरा कोई तत्त्व तो तब सर्वव्यापक हो सकता है यदि कोई जगह खाली हो. ऐसे में आत्मा के सर्वव्यापक होने का प्रश्न ही नहीं पैदा होता. आत्मा को सर्वव्यापक मानने वाले लोगों को या तो यह मानना होगा कि परमात्मा सर्वव्यापक नहीं है या फिर आत्मा सर्वव्यापक नहीं है. दोनों सर्वव्यापक नहीं रह सकते.

यदि आत्मा को सर्वव्यापक माना जाए तो फिर आत्मा किसी शरीर से निकल कर दूसरी जगह नहीं जा सकती. तब उसे लाश में भी रहना होगा, क्योंकि सर्व में लाश भी आती है. ऐसे में आत्मा के मुर्दा व्यक्ति में भी रहने के कारण किसी की 'मौत' नहीं हो सकती. लेकिन वास्तविकता यह है कि व्यक्ति की मृत्यु होती है और शास्त्र यह भी चिल्लाते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि आत्मा एक शरीर से निकल कर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है. ऐसे में आत्मा अगर हो भी तो वह सर्वव्यापक सिद्ध नहीं होती.

मैं ने लिखा था कि गीता में जीव और ब्रह्म को एक ही चीज बताया गया है, लेकिन जीव में वे गुण नहीं मिलते जो परमात्मा में बताए जाते हैं.

इस पर एक पाठक ने लिखा है कि गीता के 9/19 और 7/12 श्लोक इस आक्षेप का जवाब देते हैं. मैं ने ये दोनों श्लोक पढ़े हैं, लेकिन उन में ऐसा कुछ भी नहीं जो हमारे पूर्वोक्त कथन का समाधान कर सके. वहां तो केवल यह लिखा है कि "मैं ही तपता हुआ सूर्य हूं, मैं ही वर्षा को आकर्षित करता हूं, मैं ही अमृत, मृत्यु, सत और असत हूं." क्या इस परस्पर विरोधी कथन से यह सिद्ध हो सकता है कि जीव और ब्रह्म एक ही हैं? क्या वर्षा कोई जीव लाता है? जिन प्रदेशों में बहुत समय तक वर्षा नहीं होती और लोग पानी व अनाज की कमी के कारण तड़प-तड़प कर मरते हैं, क्या वहां वह आत्मा नहीं होती जो वर्षा को आकर्षित करती है?

'तपता हुआ सूर्य मैं हूं—' यह कहने का क्या अर्थ है? जिन बर्फानी इलाकों में हफ्तों बर्फ पड़ती रहती है और लोग सूर्य की किरण देखने को तरस जाते हैं, क्या वहां रहने वाले जीव में वह सर्वव्यापक आत्मा नहीं होती, जो यह कहती है कि तपता हुआ सूर्य मैं ही हूं? आत्मा और परमात्मा को अमृत, मृत्यु, सत और असत कहना निरा पागलपन है. जो वस्तु सत है, जिस का भाव है, जिस का अस्तित्व है, वह असत नहीं हो सकती. उस का अभाव नहीं हो सकता. यदि आत्मा और परमात्मा सत हैं तो वे असत नहीं हो सकते. फिर पाठक महोदय द्वारा उद्धृत गीता के श्लोकों का क्या करें जो एक ही सांस में एक ही चीज को सत और असत एवं अमृत और मृत कहे जा रहे हैं?

बड़ी हैरानी की बात है कि आत्मा में परमात्मा के गुणों को सिद्ध करने की कोशिश में पाठक महोदय आत्मा और परमात्मा को असत कह कर स्वयं उन के अस्तित्व को ही नकार गए हैं.

मैं ने लिखा था कि मरते समय हिंदू को 'ईश्वर' और मुसलमान को 'खुदा' ही क्यों दिखाई देता है. यदि परमात्मा नामक कोई तत्त्व है तो भिन्नभिन्न मतावलंबियों को वह एक सा क्यों नहीं दिखाई देता?

कंकालों का व्यापार

कंकालों की कीमत दुनिया भर में बढ़ रही है जिस में भारत कंकालों के निर्यात में सब से आगे है. ब्रिटेन में एक स्वस्थ कंकाल की कीमत 250 पौंड (लगभग 4087 रुपए 50 पैसे) है. जब कि दो वर्ष पूर्व 100 पौंड (1635 रुपए थी.)

सारे दांतों सहित जबड़े की हड्डी का मूल्य अब 74 पौंड है जब कि 1975 में 45 पौंड था और हाथ या पैर की हड्डी का मूल्य 14 पौंड है.

पिछले वर्ष भारत में कंकालों की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया गया था और जब यह प्रतिबंध हटाया गया तो कंकाल खरीदने की होड़ लग गई. इस लाभदायक व्यवसाय में भारत का प्रभुत्व सर्वविदित है. लेकिन भारतीय तथा ब्रिटिश अधिकारी यह बताने में असमर्थ हैं कि अधिकांश कंकाल भारत से ही क्यों आते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस पर एक पाठक ने लिखा है कि जिस की जैसी श्रद्धा व भावना होती है, उस को वैसा ही ईश्वर दिखाई देता है. उस ने मुझ पर दोष लगाया है कि मैं ने ईश्वर को सांप्रदायिक बना दिया है.

मैं ने न तो मुसलमानों के खुदा को सांप्रदायिक बनाया है और न हिंदुओं के ईश्वर को. इन को तो पहले ही लोगों ने सांप्रदायिक बना रखा है. यदि ईश्वर है तो वह अपने भक्त को ही क्यों सांप्रदायिक विचार देता है? जब यह माना जाता है कि सब कुछ परमात्मा (?) की देन है, तब वह हिंदू को खुदा की पूजा करना क्यों नहीं सिखाता? आयु भर जो परमात्मा को पाने का ढोंग रचते रहते हैं, वे भी कोरे के कोरे ही मर जाते हैं और यह कहा भी जाता है कि उस को किसी ने नहीं पाया. फिर भावना और ज्ञान की यहां क्या तुक?

ईश्वर और भावना

एक पाठक ने तुलसी की पंक्तियां उधृत करते हुए लिखा है कि जिस की जैसी भावना होती है, उसे वैसे ही ईश्वर के दर्शन होते हैं. मुसलमान को उस की भावना के मुताबिक खुदा के और हिंदू को उस की भावना के मुताबिक परमात्मा के दर्शन होते हैं.

यह बात सही नहीं. इस से तो यह सिद्ध होता है कि ईश्वर नाम का कोई निश्चित तत्त्व नहीं. इसलिए वह हरेक को अलगअलग रूप में दिखाई देता है. जो वास्तविक चीज होती है, वह भावना के मुताबिक परिवर्तित रूपों में दिखाई नहीं देती. यह नहीं होता कि पत्थर का टुकड़ा किसी को उस की भावना के मुताबिक साइकिल का टायर दिखाई दे और किसी को टेरामाइसीन का कैप्सूल. अतः यह मानना ही होगा कि हिंदू को दिखाई देने वाला ईश्वर, मुसलमान को दिखाई देने वाला खुदा और ईसाई को दिखाई देने वाला गाड मन की कल्पना के सिवा और कुछ नहीं.

एक पाठक महोदय की यह दलील है कि जब हम 'मैं', 'मेरी', 'मेरा' आदि कहते हैं तो यह 'मैं' और 'मेरा' आत्मा ही होती है.

आध्यात्मिक हथकंडा

आत्मा का अस्तित्व सिद्ध करने की यह कोई दलील नहीं है. यह तो हमारी भाषा का एक साधारण सा प्रयोग है. यदि 'मैं', 'मेरी' से आत्मा का होना सिद्ध होता है तो 'मेरी आत्मा' आदि में 'मेरी' से क्या सिद्ध होता है? कहा जाता है कि 'मेरी आत्मा नहीं मानती' या 'मेरी आत्मा ऐसा करने की इजाजत नहीं देती.' इस वाक्य का यह अर्थ नहीं कि इस कथन के पीछे कोई 'आत्मा' काम कर रही है, बल्कि यह कहने का एक तरीका है जिस से दर्शन विशेष को सिद्ध नहीं किया जा सकता.

एक आक्षेपकर्त्ता का कथन है कि "आत्मा सर्वत्र व्याप्त है. उस के सन्निधान में आया हुआ प्रत्येक तत्त्व उस से भासित होता है व जीवित हुआ प्रतीत होता है." मेरा निवेदन है कि अगर आत्मा सर्वत्र व्याप्त है तो फिर मृतक के शरीर में भी जरूर होनी चाहिए और उसे चलतेफिरते दिखना चाहिए, पर ऐसा होता नहीं. मृतक में चेतना समाप्त हो जाती है, उस की मशीनरी काम करना बंद कर देती है और वह मर जाता है. यह एक वैज्ञानिक तथ्य है. शरीर में आत्मा को मानना कुछ अध्यात्मवादियों का लोगों को ठगने का एक आध्यात्मिक हथकंडा मात्र है.

आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए कुछेक ग्रंथों के उद्धरण उस के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर सकते. इन ग्रंथों में तो और भी बहुत सा कूड़ाकरकट लिखा हुआ है जो आत्मा और पुनर्जन्म के चक्र की तरह लोगों को और भी बहुत से चक्रों में डाल देता है. इन चक्रों के जाल से मुक्त होने वाला ही बुद्धिजीवी की संज्ञा प्राप्त करता है न कि इन चक्रों में फंसा व भेड़चाल अपनाने वाला.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

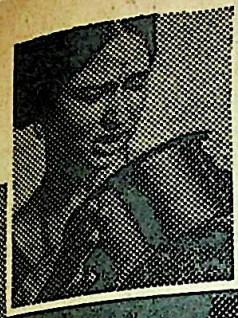

सफ़ाई के साधारण पाउडरों से
मद्धी स्वरोंचें बची रह सकती हैं

विम से हर चीज़ चमक उठती है.

इसमें ५०% अधिक सफ़ाई की शक्ति है.

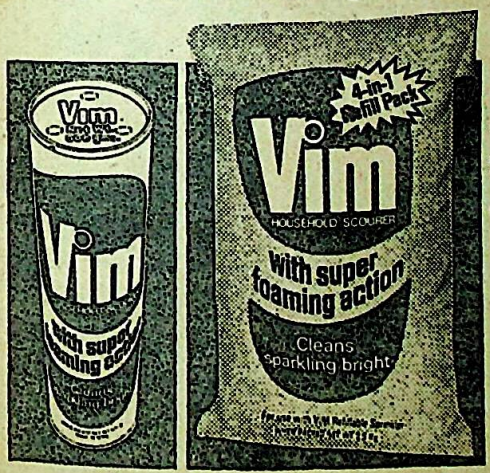

२५% से
अधिक
की बचत
ये पैक
खरीदने पर

हिन्दुस्तान लीवर का यह उत्कृष्ट उत्पादन केवल ६०० ग्राम और २.५ किलोग्राम के पैक में मिलता है और कभी खुला नहीं बिकता.

लिंटास - V.56-172 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके दुलारे बच्चे – खूब मज़े में

इन्क्रेमिन* टॉनिक से बढ़ते

Lederle का उत्पादन
* अमेरीकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

Sista's-INC-915B/77 HIN.

पेट की तकलीफों से तुरन्त आराम

पुदीन हरा

आपका घरेलू डाक्टर

पुदीन हरा - बदहज़मी, पेट दर्द और गैस तथा वायु की तकलीफ़ों से आपकी रक्षा करता है, तथा शरीर को नियमित और निरोग रखता है। इसके अलावा, गरमी के प्रकोप से उत्पन्न पेट की गड़बड़ियों जैसे पेट फूलने, पेट में गुड़गुड़ाहट होने, खट्टे डकार, गले की जलन एवं जी मिचलाने आदि में विशेष उपयोगी है। पुदीन हरा को अपने घर में हमेशा रखिये।

डाबर उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक आलोचक का कहना है कि "अगर सोमा सबलोक नास्तिक है तो उन का यह लेख पूर्णतया ठीक है."

कैसा आश्चर्य है कि जो सत्य में विश्वास रखता है उसे ये भेड़चाल अपनाने वाले लोग नास्तिक कह कर घृणा की दृष्टि से देखते हैं. वास्तव में इन्हें आस्तिक का अर्थ ही नहीं मालूम. आस्तिक का अर्थ है जो अस्ति (जो है) में विश्वास करे. दूसरे शब्दों में प्रत्यक्ष दिखने वाली चीज में जो विश्वास करे, वह आस्तिक है. नास्तिक वह है जो न† अस्ति (जो नहीं है) में विश्वास करे. इस प्रकार भौतिक चीज में विश्वास करने वाला आस्तिक हुआ और आत्मा जैसी अस्तित्व-हीन चीज में विश्वास करने वाला नास्तिक.

एक आक्षेपकर्त्ता का कहना है कि जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश को पकड़ कर नहीं दिखाया जा सकता, उसी प्रकार आत्मा को भी नहीं दिखाया जा सकता.

यह कैसी तर्कहीन बात है. सूर्य एक भौतिक पदार्थ है और वह प्रत्यक्ष रूप में दिखता है. उस का प्रकाश किसी चीज पर पड़े या न पड़े, उस के बिना ही वह

"कल सुंदर कांड सुनने जरूर आना. मैं अपनी पड़ोसन के बारे में कुछ मजेदार बातें बताऊंगी."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिख जाता है. जब सूर्य उदय होता है वह लाली में होता है, दोपहर के वक्त स्वर्ण रंग का होता है और अस्त होने के वक्त फिर लाल रंग का. इस प्रकार यह भौतिक पदार्थ तो विभिन्न रूपों में दिखाई देता है. क्या आत्मा कही जाने वाली अभौतिक चीज इस प्रकार प्रत्यक्ष दिखाई देती है? नहीं, तो फिर यह मानना मूर्खतापूर्ण हठ है कि सूर्य का प्रकाश और आत्मा एक ही कोटि की वस्तुएं हैं.

कर्मों का फल

एक अन्य आक्षेपकर्त्ता का कहना है कि मनुष्य जिंदगी में उत्तरोत्तर जैसेजैसे और जिस प्रकार के काम करता जाता है, उसी प्रकार उन का फल जीवन में भोग लेता है और जो काम जीवन के अंतिम पहर में करता है वह मृत्यु के उपरांत भोगने के लिए दोबारा जन्म लेता है.

यह बात सही नहीं. जीवन में यह जरूरी नहीं कि प्रत्येक को उस के कर्मों का फल मिलता ही हो. धनी सेठ अपने विरोधियों को किराए के गुंडों के हाथों मरवा देते हैं और उन को अपने इस जघन्य कुकर्म के फलस्वरूप न कैद होती है और न जुरमाना. वे किराए के गुंडे भी बहुत बार सजा से बच निकलते हैं. जिस तरह इन लोगों को अपने कर्मों का फल नहीं मिलता ऐसे और भी बहुत से अवसर होते हैं, जहां कर्मफल का सिद्धांत फेल हो जाता है. ऐसे ही यदि मृत्यु के समय किए किसी कर्म का फल किसी को नहीं मिलता तो कोई आश्चर्य की बात नहीं. मृत्यु के समय किए कर्मों के फलों के लिए मृत्यु के बाद दोबारा जन्म लेने की बात बिलकुल बेबुनियाद कल्पना है. जब तक ठोस प्रमाणों से पुनर्जन्म का अस्तित्व सिद्ध नहीं हो जाता तब तक यह कहना कि मृत्यु के बाद कर्मों का फल भोगना पड़ता है, बिलकुल थोथी बात है.

एक आक्षेपकर्त्ता का कहना है कि यदि पुनर्जन्म न होता तो कभी भी पाप करने से कोई भी न डरता.

उक्त तर्क को गलत और बेबुनियाद सिद्ध करने के लिए आधुनिक समाज एक ज्वलंत प्रमाण है. भारत में 85 प्रतिशत हिंदू जनसंख्या पुनर्जन्म को मानती है लेकिन इस पुनर्जन्म ने कितने लोगों को पापों से बचाया है? चोरियां, डाके, आर्थिक अपराध, बलात्कार, हरिजनों पर योजनाबद्ध आक्रमण, बनावटी दवाइयां, खाद्य पदार्थों में मिलावट और रिश्वत-खोरी—ये सब अपराध क्या भारत में नहीं हो रहे? यदि अदालतों, पुलिस (जैसी भी है) और जेल का डर न हो तो ये पुनर्जन्म को मानने वाले तथाकथित भय के बावजूद दुनिया का कोई भी संभव अपराध और जघन्य काम करने से बाज न आते, अतः यह कहना सरासर गलत है कि पुनर्जन्म न होता तो लोग पाप करने से न डरते.

पूर्वजन्म की घटनाओं का स्मरण

पुनर्जन्म को सिद्ध करने के लिए कहते हैं कि आजकल बहुत से बच्चों ने अपने पूर्वजन्म की घटनाओं को बताया है.

पर यह भी पुनर्जन्म होने की बात को सिद्ध नहीं करता. पूर्वजन्म (यदि है) की बातों को बताने का फ्राड हमेशा पांच वर्ष से ऊपर के बच्चे द्वारा ही करवाया जाता है, इस से कम की उमर वाले द्वारा नहीं. यदि पूर्वजन्म की घटनाओं के याद होने की बात मान भी ली जाए तो जो स्मृति पांच साल के बाद वाले बच्चे में होगी, वही पहले में भी होगी. यदि पूर्वजन्म की बातों को बताने का कोई अलौकिक चमत्कार बाद में होता है तो वह पांच वर्ष से पहले भी होना चाहिए. बच्चों द्वारा पूर्वजन्म की बताई जाने वाली कहानियों का जितने वैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक ढंग से परीक्षण किया, उन सब को निराशा ही हाथ लगी और उन्हें कहना पड़ा कि ऐसी कहानियां मिथ्या और निरा धोखा हैं.

पटना के एक पाठक श्री अरविंद ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया रसना

साफ़्ट ड्रिंक कान्सेन्ट्रेट

हर बार बस मज़ेदार—

और इसका हर दूसरा गिलास जैसे मुफ़्त

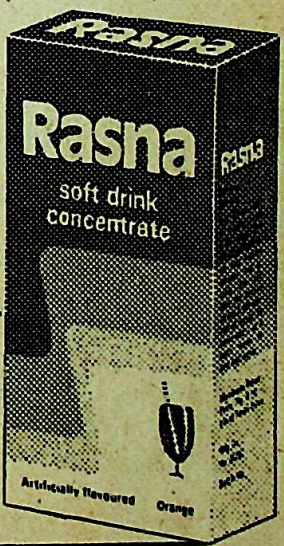

नया रसना कान्सेन्ट्रेट के हर छोटे पैक से आपको ३२ गिलास स्वादिष्ट पेय मिलता है. स्क्वाश की एक बोतल के मुक़ाबले—नया रसना आपको आधी क़ीमत पर पड़ता है. इसलिए जहां एक गिलास स्क्वाश का बनेगा वहां नया रसना के दो गिलास तैयार होंगे... दोनों मज़ेदार—लेकिन एक जैसे मुफ़्त!

तैयार करना आसान

१ रुपया (१०० मि. ली.) पानी में नया रसना के सभी तत्व मिला दीजिए, फिर ७५० ग्राम शक्कर इसमें डालिए. मिलाइए. महीन कपड़े से छान लीजिए. दो बोतलों में भर लीजिए. इन स्वादों में से अपनी पसंद का स्वाद चुनिए.

निर्माता : पायोनियर इण्डस्ट्रीज़, असारवा, अहमदाबाद ३८० ०१६

OBM 1263 HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सैक्स पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गई विशेष पुस्तकें

कामकला

पहला भाग : विवाहित युवतियों के लिए
दूसरा भाग : विवाहित युवकों के लिए

पारिवारिक कलह, असंतोष, तलाक आदि अनेक बुराइयों का बहुत बड़ा कारण स्त्रीपुरुषों की काम के प्रति अनभिज्ञता है.

प्रस्तुत पुस्तक सैक्स जीवन पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी गई है. इस में सैक्स के विभिन्न पहलुओं पर गहराई से विचार किया गया है. साथ ही आदर्श पारिवारिक जीवन के बारे में भी महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए गए हैं.

विवाहित युवकों और युवतियों को इस पुस्तक के अध्ययन से स्वाभाविक-जीवन निभाने में सहायता मिलेगी.

मूल्य प्रति भाग : 5.00 रुपए

स्त्री और पुरुष

प्राचीन भारतीय काम शास्त्र और आधुनिक पश्चिमी काम विज्ञान का निचोड़. तथ्यपूर्ण और व्यावहारिक ज्ञान के आधार पर लिखी गई एक अपूर्व पुस्तक. विषय को सरल--सुबोध बनाने वाले आवश्यक चित्रों से सुसज्जित. वैवाहिक जीवन को सुखी और आनंदपूर्ण बनाने में यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण योग देगी.

मूल्य : ८ रुपए

विश्व विजय प्रकाशन

एफ-12 कनाट सरकस नई दिल्ली-110001

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिखा था कि वह एक ऐसे बालक को स्वयं जानते हैं, जो पिछले जन्म का सही-सही हाल बताता है. जब सरिता कार्यालय से उस बालक का नाम, पूरा पता इत्यादि मांगा गया तो उत्तर मिला कि "मैं ने इस बालक को स्वयं नहीं देखा है, इस के बारे में 'कल्याण' में पढ़ा था. वहीं से इस बारे में पता कर लें."

अब 'कल्याण' तो यह भी छापता है कि खेत में हल चलाकर बीज बोने की आवश्यकता नहीं है, केवल खेत में विश्वकर्मा की मूर्ति स्थापित कर दो फसल अपने आप पैदा हो जाएगी. 'कल्याण' की बातों पर कैसे विश्वास किया जा सकता है?

इसी प्रकार पिछले जन्म की कहानियां कहने वाले बच्चों के सभी किस्से केवल काल्पनिक और धन कमाने के साधन मात्र हैं.

फिर इस प्रकार के किस्सों में बालक का पूर्वजन्म हमेशा भारत में किसी हिंदू परिवार में ही बताया जाता है, जब कि शास्त्रों के अनुसार मनुष्य चौरासी लाख योनियों में जन्ममरण के बाद मानव शरीर धारण करता है. किसी इस प्रकार के बालक ने आज तक यह नहीं कहा कि पिछले जन्म में वह घोड़ा, गधा, सांप, मच्छर, मछली या कौआ था. कारण साफ है. इस से कोई धन की प्राप्ति नहीं होगी, बल्कि लोग मजाक उड़ाएंगे.

यदि यह मान भी लिया जाए कि मनुष्य का पुनर्जन्म मनुष्य शरीर से ही होता है तो क्या यह आवश्यक है कि एक हिंदू का जन्म भारत में अपने आसपास के हिंदू परिवार ही में हो. अमरीका, यूरोप, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया की कोई आत्मा भारत में क्यों नहीं जन्म लेती? किसी अन्य भाषा बोलने वाले मुसलमान, क्रिश्चियन या यहूदी के घर में कोई आत्मा क्यों नहीं आती?

अमरीका के एक खोजी ने अपनी किताब 'स्पिरिट्स, स्टार्स एंड स्पैल्स' (246-249) में कुछ अंधविश्वासपूर्ण उदाहरणों की पोल खोल कर पूर्वजन्म को

धन का नशा

एक छोटा सा गांव था. वहां लगभग 50 घर होंगे. उसी गांव का एक व्यक्ति औरों की अपेक्षा अधिक धन सम्पन्न था. धन से अधिक उस को धन का नशा था. जब गांव में किसी के घर मृत्यु होती, तब भी वह घोड़े पर बैठ कर ही अंतिम यात्रा में सम्मिलित होता. लोग कहते, "यह कोई खुशी का समय नहीं. ऐसे समय इस तरह घोड़े पर बैठ कर जाना अच्छा नहीं लगता." पर उस पर कुछ असर न पड़ता. वह कहता, "मेरे पास घोड़ा है, मैं क्यों न घोड़े पर सवार हो कर जाऊं?"

एक दिन उक्त सज्जन के पिता चल बसे. गांव वालों ने सोचा आज इसे सबक सिखाया जाए. जिन के पास घोड़े थे, वे घोड़े पर सवार हो कर आए और जिन के पास घोड़े न थे वे किराए के घोड़ों पर सवार हो कर उस के घर आए. वह बाहर आया और बोला, "क्या मजाक करते हैं आप, क्या बरात सजाई है? पिताजी को कौन कंधा देगा?" लोग बोले, "हम तो घोड़े पर ही जाएंगे."

उसे अपनी गलती समझ में आ गई. लोगों से क्षमा मांगता हुआ बोला, "अब भविष्य में ऐसा न होगा."

सभी लोग घोड़ों से उतर आए और उस को आवश्यक सहयोग देने लगे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक छल और धोखा सिद्ध किया है.

एक आक्षेपकर्त्ता का कहना है कि आत्मा तो एक ज्योति है. उस के समक्ष जितने भी शरीर अव्यवहित रूप से आते हैं. उन सभी में आत्मा प्रतिबिंबित हो कर उन्हें जीवन प्रदान करती है.

शरीर का निर्माण कैसे?

परंतु यह भी आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने वाला कोई ठोस प्रमाण नहीं है. शरीर किसी प्रकार की ज्योति का बना हुआ नहीं है, यह तो छोटेछोटे सैलों (कोशिकाओं) का बना हुआ है और ये सैल आक्सीजन की रासायनिक कार्य-प्रणाली की सहायता से सांस लेने और छोड़ने तथा रक्त संचार द्वारा काम करते हैं. सैलों से बने इस शरीर में कोई ज्योति बाहर से नहीं आती, बल्कि इस में जीवनोपयोगी तत्व हर समय उसी प्रकार विद्यमान रहते हैं, जिस प्रकार जलती हुई मोमबत्ती में हाइड्रोकार्बन के जलने से पैदा होने वाली तत्प और प्रकाश ऊर्जाएं विद्यमान रहती हैं. जब मोमबत्ती जलती है, तब हाइड्रोकार्बन के जलने से ताप और प्रकाश ऊर्जाए पैदा होती हैं. जब मोमबत्ती बुझ जाती है तो ताप और प्रकाश उस से निकल कर कहीं चले नहीं जाते और न ही ऐसा होता है कि मोम-बत्ती को दोबारा जलाने पर वे उस में वापस आ जाते हैं. होता सिर्फ यह है कि मोमबत्ती के बुझने पर रासायनिक प्रक्रिया और ऊर्जा उत्पादन का क्रम टूट जाता है. इसी तरह जब श्वासप्रश्वास और रक्त संचार की प्रक्रिया टूट जाती है तो आदमी मर जाता है. उस से निकल कर जाता कुछ नहीं.

अगर शरीर बन जाने के बाद उस में कोई तथाकथित आत्मा नामक ज्योति आती है तो उस समय वह उक्त ज्योति कहां थी, जबकि धरती पर मनुष्य शरीर का निर्माण नहीं हुआ था ? कैसी बेतुकी सी बात है कि कोई ज्योति अपने आप में अलग चीज है और वह शरीर निर्माण के बाद इस में आती है. क्या किसी विचार के बिना कोई विचार होता है ? या चेतन व्यक्ति के बिना कोई चेतना होती है ? तो फिर यह कैसे हो सकता है कि शरीर के बनने से पहले ही कोई ज्योति विद्यमान हो, जो शरीर बन जाने पर उस में आ घुसती हो ?

अगर कोई आत्मा नामक ज्योति जो शरीर में आती है तो उस समय वह ज्योति कहां भाग जाती है जब पर्वतारोहियों को आक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है और वे पर्वतों पर अपने साथ आक्सीजन बैग ले कर जाते हैं? यदि सचमुच कोई आत्मा नाम की ज्योति है तो फिर मनुष्य केवल उसी ज्योति के सहारे क्यों नहीं जीता ? वह आक्सीजन के सहारे क्यों जीता है?

आत्मा नामक ज्योति

दूसरे, जब आदमी को क्लोरोफार्म सुंघाया जाता है तो फिर वह आत्मा नामक तथाकथित ज्योति के विद्यमान रहने पर भी बेहोश क्यों हो जाता है? पोटाशियम साइयोनाइड जीभ पर छुआने मात्र से ही वह तथाकथित आत्मा नामक ज्योति क्यों और कहां गायब हो जाती है? इन प्रयोगों से तो यही प्रमाणित होता है कि आत्मा नामक ज्योति की बात बिलकुल आधारहीन और कल्पित है.

एक आक्षेपकर्त्ता का कहना है कि उपनिषदों में कहीं भी आत्मा का प्रमाण नहीं दिया गया है.

इस बात से ऐसा लगता है कि आक्षेपकर्त्ता ने उपनिषदों को कभी पढ़ा भी नहीं लगाथा और अंधविश्वास के कारण सत्य को ऐसे ही व्यर्थ ही नकारना चाहते हैं, पर सचाई को झुठलाया नहीं जा सकता. कठ उपनिषद (2/6/17) में साफ लिखा है कि आत्मा अंगुष्ठ मात्र है. श्वेताश्वतर उपनिषद (5/9) में आत्मा को बाल के सौवें हिस्से के बराबर बताया गया है. छांदोग्य उपनिषद (3/14/3) में आत्मा जौ के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मा के बराबर कही गई है. कैसी बेतुकी सी बातें हैं. इन्हें जौ के दाने में, बाल के सौवें हिस्से में और अंगूठे में कोई भिन्नता नजर नहीं आती. इस प्रकार के परिमाण बताने के बाद आत्मा को अमर और निर्विकार आदि वाहियात विशेषणों से व्यर्थ बताने लगे हैं.

यदि आत्मा घटबढ़ कर कभी अंगूठे के बराबर, कभी जौ के दाने के बराबर तथा कभी बाल के सौवें हिस्से के बराबर हो जाती है तो फिर वह निर्विकार कैसी? इन विभिन्न परिमाणों को बताने से तो उस में (यदि है तो) विकार आ जाता है. इस प्रकार के परस्पर विरोधी मत भी आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करने देते.

एक आक्षेप है कि आत्मा कभी नहीं मरती. वह तो शरीर को इस तरह बदलती रहती है, जिस तरह हम अपना वस्त्र बदलते हैं.

इस कथन से आत्मा का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता. साथ ही कहते हैं कि आत्मा देह में निवास करती है. जब देह नष्ट हो जाती है तो देह में रहने वाली चीज कैसे नष्ट नहीं होती? यह भी कितनी बेतुकी सी बात है कि देह के मर जाने के बाद आत्मा उड़ जाती है, वह एक शरीर रूपी वस्त्र को छोड़ कर दूसरा वस्त्र धारण कर लेती है.

सचाई तो यह है कि मनुष्य शरीर करोड़ों कोशिकाओं से बना हुआ है. ये कोशिकाएं बनती और नष्ट होती रहती हैं. हर रोज जितनी बार ये कोशिकाएं मरती हैं, उतनी बार आदमी मरता रहता है और वह तब तक मरता रहता है जब तक कि सारी की सारी कोशिकाएं मर नहीं जातीं. तब क्या यह माना जाए कि आत्मा तब वस्त्र बदलती है जब शरीर में कोई भी कोशिका नहीं रहती या शरीर में बारबार और नित्य कोशिकाओं के नष्ट होने पर वस्त्र धारण करती रहती है? परंतु नहीं. आत्मा की बात तो एक भ्रम है जो व्यर्थ में मनुष्य को अपने में उलझाए हुए है. इस भ्रम से आत्मा का

बेटे की बलि

शिवपुरी जिले के थाना करैरा क्षेत्र के ग्राम गनेशखेरा के निवासियों में उस समय सनसनी फैल गई जब उसी ग्राम के उदू नामक एक व्यक्ति ने अपने सात माह के पुत्र पप्पू उर्फ रामचरण का सिर काट कर दुर्गामाता के मंदिर पर चढ़ा दिया.

पता चला है कि उदू धन प्राप्ति के लिए दुर्गा माता को प्रसन्न करना चाहता था एवं उस के दिमाग में यह बात घर कर गई थी कि अपनी कोई प्रिय वस्तु भेंट करने के बाद ही दुर्गा माता प्रसन्न हो सकती है. फलस्वरूप अंधविश्वासी पिता ने अपने ही पुत्र को मंदिर में ले जा कर किसी तेज धार वाले हथियार से उस को गरदन धड़ से अलग कर दी और उस का रक्तरंजित सिर माता की मूर्ति के आगे रख दिया.

जैसे ही उक्त घटना का पता ग्रामीणों को लगा, भारी संख्या में लोग मंदिर में एकत्र हो गए एवं तुरंत पुलिस को सूचना दी गई. पुलिस ने शिशु के शव को अपने कब्जे में कर उस के पिता के विरुद्ध हत्या का मामला दर्ज कर लिया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्तित्व स्वीकार नहीं किया जा सकता.

यदि सचमुच ही कोई आत्मा है तो उस का अधिकांश उस समय जरूर बच जाता होगा, जिस समय कोशिकाएं नष्ट होती रहती हैं और कोशिकाओं के नष्ट होने तथा नई बनने में उत्तरोत्तर आत्मा घटती और बढ़ती रहती होगी. इस प्रकार इस के घटने और बढ़ने के कारण इसे अजर, अमर और निर्विकार नहीं कहा जा सकता.

क्या आत्माएं करोड़ों हैं?

मानव या किसी भी जीवधारी की कोशिकाएं उस के शरीर के बाहर भी कुछ समय तक जीवित रखी जा सकती हैं, क्योंकि हर प्राणी में आत्मा का व्याप्त होना माना जाता है और ये कोशिकाएं अलगअलग हैं तो क्या एक शरीर में करोड़ों आत्माएं हैं? या इन में से कोई संपूर्ण शरीर की आत्मा है?

प्राणियों का जन्म मादा के अंडे और नर के वीर्य के शुक्राणु के मिलने से होता है. वीर्य की एक बूंद में करोड़ों शुक्राणु होते हैं और जब इन में कोई एक मादा के अंडे में घुस जाता है तो गर्भाधान हो जाता है. जहां एक से अधिक शुक्राणु घुसते हैं वहां जुड़वां बच्चे होते हैं शुक्राणुओं की संख्या के अनुसार.

इस बात से यह भी साबित होता है कि बच्चे की आत्मा तो पिता के शरीर में गर्भाधान से पहले ही शुक्राणु के रूप में होती है. बच्चे की आत्मा का अन्यत्र कोई अस्तित्व नहीं होता. इस प्रकार यदि एक प्राणी की एक आत्मा मानी जाए तो वह विभाजित कैसे हो गई? और अगर हर शुक्राणु की अलग आत्मा है तो एक शरीर में करोड़ों आत्माएं कैसे?

एक आक्षेपकर्त्ता का कहना है कि आत्मा के समान पुनर्जन्म का सिद्धांत भी सत्य है. उस ने लिखा है कि स्थूल देह का नाश हो जाता है, किंतु सूक्ष्म देह फिर भी नष्ट नहीं होती. यह सक्ष्म शरीर मन, बुद्धि व ज्ञानेंद्रियां आदि का समूह होता है जिस में कर्मों के संस्कार रूप से निहित होते हैं तथा इन्हीं के आधार पर दूसरा जन्म होता है.

क्या सुंदर प्रत्ययवादी रटेरटाए का जाल है, जिस में पाठक को कर यह सिद्ध करने की नाकाम की गई है कि कर्मों के आधार पुनर्जन्म होता है.

पुनर्जन्म के घिसेपिटे सिद्धांत मानने वाले क्या इस बात का युक्ति उत्तर दे सकते हैं कि मनुष्य, आदि के चेतन शरीर तो अपनेअपने से बनते हैं और जैसे उन के शारीरिक मानसिक गुण होते हैं वैसे ही उन वंशपरंपरानुक्रम से स्वयं ही आ जाते फिर इस के लिए एक अलग आत्मा कल्पना करने की क्या जरूरत है? आत्मा अलग कहीं से आ कर उन प्रवेश करती है तो फिर लकड़ी, आदि की बनी हुई चीजों में भी क्यों आती?

चौरासी लाख योनियों में भ्रमण

यदि यह कहा जाए कि पूर्व सं सार उन में आ कर उन का पुनर्ज करती है तो क्या कारण है कि सृष्टि की कथित चौरासी लाख यौनि तो भ्रमण करने का उस से कर्म बन परंतु लोहे आदि की बनी वस्तुओं में करने का उस से कोई कर्म न बन साथ ही आदिम कर्म का भी वे कारण नहीं बता सकते कि सब से कर्म जिस से उत्तरोत्तर कर्मों की शृंख बनी, कब, क्यों और कैसे पैदा हु कर्म को आत्मा की तरह अनादि भी कहा जा सकता, क्योंकि ऐसे ही की परिभाषानुसार 'कर्म वह है जो जाए.' जब समयसमय पर कर्म किया तो वह अनादि कैसा?

दूसरे, सूक्ष्म शरीर जो नाश होता, एक कल्पनात्मक शरीर है. आत्मा की ही तरह सिद्ध नहीं सकता. जब आत्मा ही सिद्ध नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

a beautiful YOU

पामिला
मेडीकेटिड क्रीम

कील, मुहासे,
स्याईयां दूर करके
चेहरे की रंगत
निखारती है।

सभी दवाईयों की दुकानों पर मिलती है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तब उस की तरह के एक और काल्पनिक तत्त्व से किसी किनारे कैसे पहुंचा जा सकता हैं? एक काल्पनिक तत्त्व को सिद्ध करने में दूसरा एक और काल्पनिक तत्त्व कैसे सहायक सिद्ध हो सकता है?

कुछ लोगों ने अथर्ववेद (5/1/1/2) और ऋग्वेद (1/164/20) के हवाले से लिखा है कि आत्मा नाम का तत्त्व है और पुनर्जन्म होता है, इसलिए ये दोनों चीजें माननी चाहिए.

शास्त्रों की दासता

किसी बात को किसी वेद या शास्त्र में लिखी होने मात्र से सिर्फ वे ही लोग सही स्वीकार कर सकते हैं, जो शास्त्रों की दासता से मुक्त नहीं हैं और जिन्हें यह भ्रम है कि इन शास्त्रों को ईश्वर ने बना कर भारत के लोगों के लिए ऊपर से फेंका है. जब तक कोई बात वैज्ञानिक ढंग से सही सिद्ध नहीं होती, तब तक केवल शास्त्रों में लिखी मात्र होने से उसे हम सही मानने को तैयार नहीं. ऐसे शास्त्रों में और बहुत सा कूड़ाकरकट भरा पड़ा है, जिस सब को अर्धसभ्य और असभ्य लोग ही स्वीकार कर सकते हैं.

कुछ लोगों ने लिखा है कि आत्मा को न मानने से भौतिकवाद के कारण यौन संबंधों के क्षेत्र में अराजकता फैल जाएगी.

यह बात केवल वही व्यक्ति कह और स्वीकार कर सकता है, जिसे आत्मा का अस्तित्व मानने वालों का इतिहास ज्ञात न हो. ऋग्वेद के यमयमी सूक्त में आत्मा का अस्तित्व मानने वाले भाईबहन का संवाद मिलता है, जिस में बहन भाई को संभोग के लिए आग्रहपूर्वक तैयार कर रही है. पुराणों में आता है कि शिवजी ने अपनी माता से विवाह किया. ऋग्वेद में आता है कि पिता ने पुत्री को गर्भवती कर दिया. पुराणों में आता है कि चंद्रमा ने अपने गुरू की पत्नी से व्यभिचार किया. दशरथ जातक का राम अपनी बहन सीता से विवाह करता है. स्वामी दयानंद ने बताया कि वेदों की आज्ञा है कि एक स्त्री संतान उत्पत्ति के लिए ग्यारह के पास जा सकती है और प्रत्येक से अन्य ग्यारह पुरुषों के पास जा आज्ञा ले सकती है.

अतः यह कहना कि आत्मा अस्तित्व को न मानने से अव्यवस्था जाएगी, बिलकुल गलत बात है. भौ वादी लोग इतने नीचे स्तर पर नहीं जितने नीचे स्तर पर आत्मा को दि और अमर मानने वाले उतर आते

एक आक्षेपकर्त्ता ने कहा 'सव्वासकसुत्त' का जो उद्धरण मैं है, उस के द्वारा तो आत्मा का अ सिद्ध होता है, क्योंकि उस में आत्मा आत्मा को मानने वाला व्यक्ति के चक्र से नहीं छूटता.

मनोवैज्ञानिक पुनर्जन्म

यह आक्षेप निराधार और सिद्धांत को न समझने का परिण आत्मा को मानने वाला व्यक्ति मरण के चक्र से नहीं छूटता' का अ नहीं कि एक व्यक्ति जन्म ले कर मरता है और दोबारा जन्मता है इस का अर्थ यह है कि ऐसा व्यक्ति वैज्ञानिक तौर पर बारबार जन्मने मरने के विचार से तंग रहता है अशांति से जीवन बसर करता है का मतलब यह नहीं था कि आत्मा वाले व्यक्ति का बारबार जन्म हो और बारबार मृत्यु. बुद्ध ने छुटकारा लिए निर्वाण शब्द का प्रयोग किया और वह निर्वाण मृत्यु के बाद प्राप्त वाली कोई चीज नहीं. निर्वाण का सिर्फ अष्टांगिक मार्ग पर चलते हुए द्वेष से ऊपर उठना है. यह सब जीवित व्यक्ति से संबंधित है न कि के उपरांत कल्पित आत्मा से. (डि बुद्ध एंड हिज रिलीजन,' लेखक डा. राव अंबेडकर).

स्पष्ट है कि आत्मा और पुनर्जन्म अस्तित्व को किसी प्रकार से सिद्ध किया जा सकता.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लहरों सा मन

मचलमचल आता है लहरों सा मन
[illegible]रा की आंचल से हो गई अनबन.
[illegible]ने कब नयनों की
[illegible]नारी कोर हुई
[illegible]वन-सांस, देह—
[illegible]नारी भोर हुई.

[illegible]रों पर इंद्रधनुष करता नर्तन
मचलमचल जाता है लहरों सा मन.
[illegible]नाए छंदो की
[illegible]ंतुरी बजी है

लजवंती सपनों की
पालकी सजी है.

सहमी सकुचाई सी कामना दुलहन
मचलमचल जाता है लहरों सा मन.
सूरज के हाथों में
किरणों का सूप
पिघल रही पारे सी
फूलों पर धूप.

दरपन भी करता है रूप को नमन
मचलमचल जाता है लहरों सा मन.

—राजेंद्र सोनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

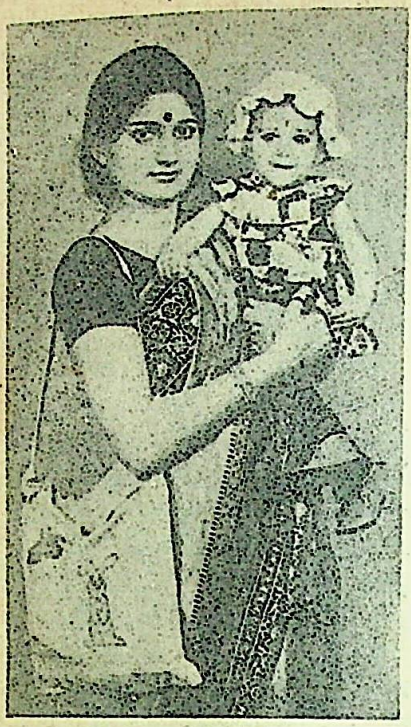

खूबसूरत बैग

बच्चे के साथ सफर करने वाली महिलाओं के लिए उपयोगी और सुविधाजनक

दूध पीते बच्चे वाली मां के लिए कहीं बाहर जाना भी कम मुश्किल काम नहीं. साथ में दूध की बोतल चाहिए तो पांचसात नैपकिस भी. एक दो फ्राक भी चाहिए. बच्चे का क्या भरोसा कब गंदा कर दे और आप भी अपनी बुनाई वगैरा रखना चाहेंगी. समस्या यह होती है कि इतना सब सामान बच्चे के साथ कैसे ले जाएं? तो आइए एक बैग बनाते हैं जो आप की सारी समस्या सुलझा देगा. उस में आप अपना पूरा सामान भी ले जा सकेंगी और वह उठाने में भी आसान रहेगा.

सामग्री : 1 मीटर लंबा, 43 सें. मी. चौड़ा खद्दर या कैसमेंट, 15 सें. मी. लंबा, 10 सें. मी. चौड़ा कोई भी गहरे रंग का पापलीन या रूबिया का टुकड़ा, थोड़ा सा लाल, काला तथा पैचवर्क के रंग का कढ़ाई वाला धागा, 3 बटन, एक पौलिथीन की थैली, 82 सें. मी./70 सें. मी. पुराना कपड़ा (अंदर की तह के लिए),

विधि : सब से पहले कुल कपड़े [illegible] लंबाई में से 8 सें. मी. चौड़ी पट्टी [illegible] लीजिए. यह स्ट्रेप बनाने के काम आए[illegible] अब 37 सें. मी. लंबा एक टुकड़ा काट [illegible] शेष टुकड़ों में से 15 सें. मी. का [illegible] टुकड़ा जेब के लिए अलग करें. अब [illegible] कपड़ा 45 सें. मी. रह गया. 37 सें. मी. [illegible] वाला टुकड़ा बैग का आगे का भाग [illegible] इस में सब से पहले एक किनारे [illegible] लगभग 7 सें. मी. छोड़ कर पैचवर्क [illegible] लगाएं. पैचवर्क को पहले कच्चे टांके [illegible] टांक लें उस के बाद कपड़े के रंग [illegible] धागे से काज स्टिच बनाएं. इस से कुछ [illegible] पर जेब लगाएं. जेब 17 सें. मी. लंबी, [illegible] सें. मी. चौड़ी हो. इस की सिलाई [illegible] ऊपर रंगीन धागे से क्रास डिजाइन बना[illegible]

अब पुराने कपड़े को भी 37 सें. [illegible] लंबा, 35 सें. मी. चौड़ा तथा 45 सें. [illegible] लंबा, 35 सें. मी. चौड़ा दो भाग [illegible] बांट लें. 37 सें. मी. वाले भाग [illegible] किनारे से 5 सें. मी. छोड़ कर [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मशीन की थैली मशीन से सिल दें. यह
थैली गीले तथा गंदे नेपकिन रखने के
लिए है. गील नेपकिन बैग में रखने से
बैग कपड़े भी गीले हो जाएंगे. इसलिए
पोलिथीन की थैली लगाएं. अब इसे आगे
वाले भाग के साथ इस प्रकार जोड़ें कि
थैली पैचवर्क की ओर आएं तथा बैग के
अंदर की ओर रहें. इसे पैचवर्क की ओर
इसलिए लगाते हैं क्योंकि जेब में बोतल
का भी उभार होता है और अंदर की
ओर थैले में नेपकिन डालने से यह उभार
छिपा हो जाएगा.

अब इसी प्रकार पीछे वाले भाग के
साथ भी पुराने कपड़े की तह लगा दें.
पीछे वाले भाग का एक किनारा एक इंच
मोड़ लें तथा इस पर एक बीच में और
दो दोनों किनारों पर काज कर लें. यह
भाग बैग का ढक्कन बनेगा. अब आगेपीछे
के दोनों भागों को इस प्रकार सी लें कि
काज वाला भाग अलग रहे. यह पीछे से
आगे की ओर आ कर आगे वाले भाग के
ऊपर आएगा. आगे के हिस्से में काजों की
बराबर दूरी पर तीन बटन लगा लें.

आपने जो 8 सें. मी. की पट्टी काटी
थी उसे दोहरा कर के सिल लें तथा
उसे सीधा कर के आप को जितनी लंबाई
की आवश्यकता हो उतनी लंबाई रख कर
बैग में स्ट्रैप लगा लें.

लीजिए आप का बैग तैयार हो गया
अब आप सुविधा से कहीं भी अपने पूरे
सामान के साथ आ जा सकती हैं. ●

—उषा भूनेंद्र

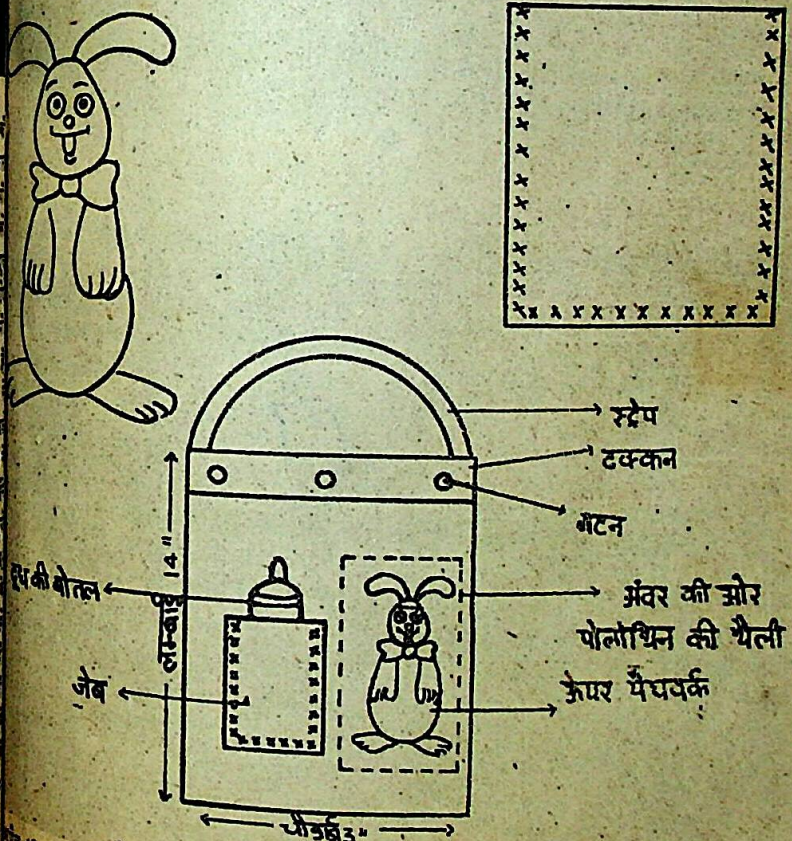

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

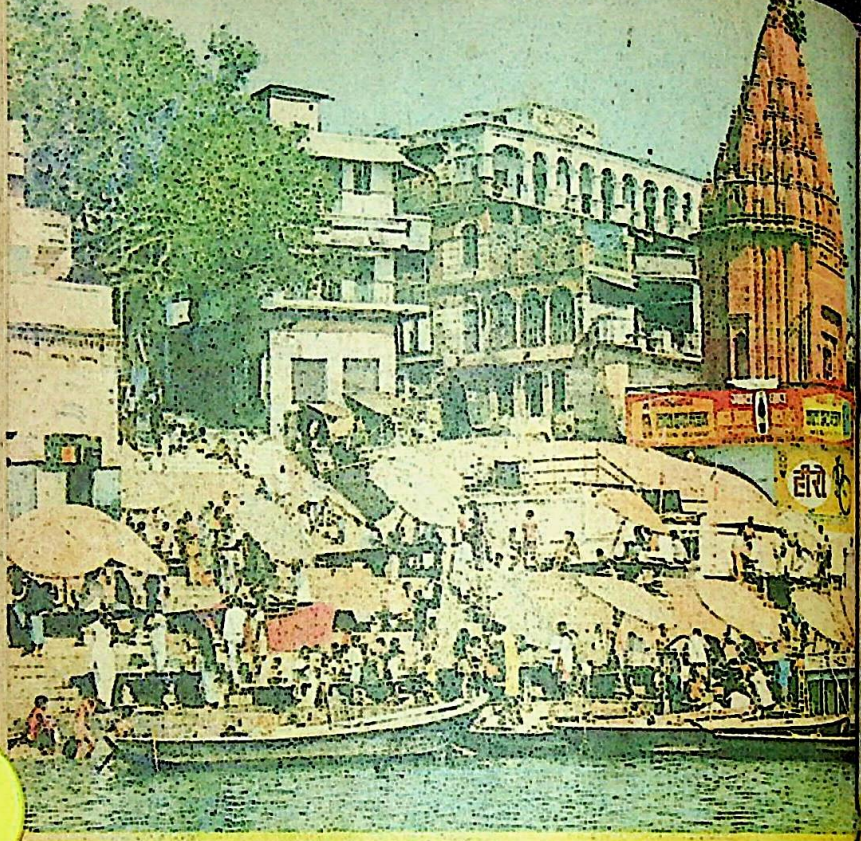

बनारस के घाट

लेख • बालकृष्ण श्रीवास्तव

तीर्थयात्रा

कितना सुनियोजित है लोगों को लूटने का यह ढंग, जिस में अच्छेभले समझदार लोग भी फंस जाते हैं?

लोग तीर्थयात्रा क्यों करते हैं? इस के दो ही प्रयोजन हो सकते हैं. एक तो यह कि मनुष्य धर्म, रूढ़ियों और संस्कारों से बंधा हुआ है. वह समझता है कि इस सृष्टि की रचना किसी महादेव ने की है, जिसे वह ईश्वर के नाम से पुकारता है. वह यह भी समझता है कि ईश्वर ही उन के कर्मों का फल देता है और यदि वह उस की पूजा करे, उस का नाम जपे तो ईश्वर उस के कुकर्मों को माफ कर देता है. ईश्वर की इसी कल्पना के कारण वह परलोक का सुख पाने के लिए तीर्थयात्रा करता है. दूसरे, यह कि तीर्थों के धर्म पर बल न देते हुए वह सिर्फ भ्रमण के प्रति रुचि रख कर देशप्रदेश के स्थान देखने एवं जानने को उत्सुक है. इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाता है कि तीर्थयात्रा करने वाला आस्तिक विचारधारा का है, ईश्वरवादी है.

हमारे देश में तीर्थयात्रा करने वाले व्यक्तियों में 90 प्रतिशत वे लोग ही होते हैं जो ईश्वर में आस्था रखते हैं. इस लोक के पापों का प्रायश्चित्त करने और सुख-संपन्न को पाने की इच्छा एवं मरने के बाद परलोक यानी स्वर्ग की प्राप्ति ही उन का उद्देश्य रहता है, जब कि स्वर्ग नाम की जगह न तो इस धरती पर है और न ही अन्यत्र.

तीर्थयात्रा का यह प्रचलन सिर्फ हिंदू जाति में ही नहीं, प्रायः सभी जातियों में है. जहां तक हिंदू जाति का प्रश्न है उस में तो तेंतीस करोड़ देवीदेवता हैं. धार्मिक ग्रंथों ने उन की महिमा का इतना वर्णन कर रखा है कि प्रत्येक धर्मभीरु हिंदू इन तेंतीस करोड़ देवीदेवताओं से संबद्ध स्थलों को देखने के लिए बराबर उत्सुक रहता है. इन तीर्थयात्राओं के पीछे छिपे पंडितों एवं पुरोहितों के स्वार्थ को जानने के बाद ही उसे यह महसूस होता है कि इस के कारण धन और समय की कितनी बरबादी होती है.

हमारे देश में तीर्थयात्रा का चलन ब्राह्मणों और पुरोहितों की दूरगामी बुद्धि का परिणाम है. जब कभी हिंदू जाति ने चेतना की अंगड़ाई ली और ढकोसलों तथा अंधविश्वासों के घेरे से बाहर निकलने का प्रयत्न किया, तब ही ब्राह्मणों ने अपनी रोजीरोटी के छिन जाने के डर से पुराणों और अन्य धर्मग्रंथों का सहारा ले कर स्थानस्थान पर देवीदेवताओं के मंदिर स्थापित कर दिए और उन को सभी कष्टों को हरने वाले तीर्थस्थान का रूप दे दिया, ताकि लोग वहां आ कर अपने पाप धो सकें और पंडेपुजारियों के पेट भर सकें.

इस उद्देश्य से पंडेपुजारियों ने इन स्थानों पर अपनेअपने मठ स्थापित कर के रोजीरोटी के साधन सदैव के लिए सुर-

बद्रीनाथ के मंदिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षित कर लिए. उन के इस षड्यंत्र का आभास धर्मभीरु भोलीभाली जनता को लेशमात्र भी नहीं हो पाता और यदि हो भी जाता है तो रूढ़ियों, संस्कारों तथा ईश्वर के भय के कारण वह कुछ कह नहीं पाती.

यात्राओं के विज्ञापन

अब तो लोगों को तीर्थयात्रा की प्रेरणा देने के लिए एक और आकर्षक ढंग अपनाया जाने लगा है. समाचारपत्रों में सामूहिक यात्राओं के बड़ेबड़े विज्ञापन दिए जाते हैं. उन्हें बतलाया जाता है कि विशेष ट्रेन या बस से तीर्थयात्रा करने से उन का खर्चा कम पड़ेगा. ये विज्ञापन अधिकतर विशेष अवसरों के आसपास प्रकाशित किए जाते हैं. ऐसे विज्ञापनों से पढ़ेलिखे लोग भी काफी प्रभावित होते हैं और वे अपने घर के बुजुर्गों को ऐसी यात्राओं पर भेज देते हैं.

विशेष अवसरों से पहले दूरदराज के ग्रामीण अंचलों में अपने एजेंट भेज कर भी लोगों को तीर्थयात्रा करने के लिए प्रेरित किया जाता है. ये एजेंट इन क्षेत्रों में पहुंच कर कथाकीर्तन अथवा प्रवचनों द्वारा जनता को तीर्थयात्राओं के लिए उत्साहित करते हैं और फिर ग्राम के मुखिया चौधरियों अथवा किसी वृद्ध की अगवानी में आदिवासियों अथवा ग्रामीणों की एक बहुत बड़ी संख्या तीर्थयात्रा के लिए चल पड़ती है. ऐसी तीर्थयात्राओं में जाने वाले वृद्धों, अधेड़ों के कारण परिवार के कर्त्ताधर्त्ता को कितने ही कष्ट उठाने पड़ते हैं. महाजनों से कर्ज ले कर भी उसे अपने कर्त्तव्य का पालन करना पड़ता है.

और यदि वह इनकार करता है और अपनी मजबूरी बताता है तो धर्मशास्त्र आड़े आ जाते हैं. साथ ही तीर्थयात्रा की इच्छा रखने वाले बुजुर्ग द्वारा उस की कर्त्तव्य विमुखता पर उसे प्रताड़ित किया जाता है. फिर वह दुख उठा कर भी अपने बूढ़ेबुजुर्गों को इन तीर्थयात्राओं पर भेज देता है.

यहां से मठाधीशों एवं धर्मगुरु के संचालकों की भूमिका प्रारंभ हो इन के स्थानीय एजेंट तीर्थयात्रियों तीर्थस्थानों के दर्शनों के लिए ले प्रत्येक मंदिर और देवालय के भक्त दर्शन एवं भेंटपूजा के विशेष नियम इन्हीं मठाधीशों, पंडितों, पुजारियों ही बनाए गए हैं. उदाहरण के वृंदावन का रंगनाथ मंदिर लीजि के विशेष नियम के अनुसार सिर्फ अथवा धोती धारण करने वाला ही पूजा एवं प्रसाद चढ़ाने का है और प्रसाद भी विशेष रूप मक्खनमिसरी.

सुनियोजित ढंग

ऐसे मौके पर तीर्थयात्रियों के एक धर्म संकट आ उपस्थित हो क्योंकि सभी तीर्थयात्री अंगोछा या तो धारण किए नहीं होते. फिर इस स्या का समाधान भी पंडित और पुरो ही करते हैं. वे अपनी विशेष दुकान इन तीर्थयात्रियों को छोटेछोटे अंगोछे लुंगी सरीखी धोतियां खरीदवा जिन में उन का प्रचुर मात्रा में बंधा होता है. प्रसाद भी उन की दुकानों से ही खरीदा जाता है. बाद अंगोछे और धोतियां पंडेपुजारी पर ले जा कर फिर दान में वापस हैं. प्रसाद तो मंदिरों में चढ़ कर बाहर आ कर दुकानों में बिकता है

यह तो एक छोटा सा उदाहरण हमारे देश में जितने भी मंदिर हैं में विशेष नियम हैं और प्रसाद की प्रथा है. इस के साथ ही दानपुण्य चलता रहता है.

रेजगारी की कमी की समस्या पुरोहितों की भूमिका रहती है. तीन पंडे या पुरोहितों के एजेंट तीर्थयात्रियों की टोलियों के लगे रहते हैं. अगला अवगाई करते पंडा अथवा पुरोहित विभिन्न स्थान धार्मिक महत्त्व का वर्णन करता हुआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गारी चढ़वाता जाता है और पीछे वाला उस रेजगारी को उठा कर अपने झोले में रखता जाता है. फिर अगले स्थानों पर तीर्थयात्री के पास रेजगारी की कमी पड़ जाने पर वह यही रेजगारी उसे एक रुपए में नब्बे के हिसाब से दे देता है.

कितना सरल और सुनियोजित ढंग है लूटने का. और इस के बाद की कमी बाद के घाटिए पंडे पूरी करते हैं जो नंबर तीन पर इन के एजेंट होते हैं. यदि उन्हें कानून का डर न हो तो शायद यह मार-काट कर सब कुछ छीन लें. जब ये भोले-भाले यात्री अंतिम सीढ़ी पार कर घरों की ओर वापस चलते हैं तो उन के पास की एकएक पाई खर्च हो चुकी होती है. शेष बचता है तो सिर्फ प्रसाद के रूप में बताशे अथवा चीने के दाने, जिसे प्राप्त कर के और नदियों के जल को ले कर ही तीर्थयात्री यह समझ लेता है कि उस का और उस के पूरे परिवार का लोकपरलोक सब सुधर गया है.

तीर्थयात्रा के नाम पर हो रहे पाखंडों और बरबादी को रोकने के लिए यह आवश्यक है कि लोगों को यह बतलाया और समझाया जाए कि इस से उन का परलोक या भविष्य तो क्या सुधरेगा, हां मानसिक और आर्थिक कष्टों से वर्तमान अवश्य पीड़ादायक हो जाएगा. ●

बच्चों के मुख से

हाल ही के चुनावों की बात है. मेरे एक मित्र के पिताजी भी प्रत्याशी थे. चुनावों की भागदौड़ चल रही थी. एक दिन खाने के समय मैं भी उन के घर पर ही था. पापा को जल्दी-जल्दी खाना खाते देख उन की सब से छोटी बेटी पूछने लगी, "पापा, हमारी तो छुट्टियां चल रही हैं. आप को छुट्टियां नहीं क्या?"

पापा कुछ जवाब देते उस से पहले ही उन का साढ़े चार वर्षीय बेटा बड़े भोलेपन से बोला, "चुनावों के बाद तो छुट्टियां ही छुट्टियां हैं, क्यों पापा?"

—जगदीश ईनाणी

दीदी का पत्र आया कि वह अपने संजय को ले कर आ रही हैं. जब दीदी आईं तो पूछने पर दीदी ने बताया कि उस की आंखें आ गई थीं इसलिए उस को साथ नहीं लाई.

मेरी छः वर्षीया बहन अनिता तुरंत बोली, "भैया, संजय के पहले आंखें नहीं थीं क्या जो अब आ रही हैं? उस के इस भोले प्रश्न पर परिवार के सभी उपस्थित लोग हंस पड़े. —अशोक श्री श्रीमाल

मेरे मित्र का दो साल का बेटा बड़ा शरारती था और खूब जोरजोर से बोलता था. एक दिन उस को बुखार चढ़ गया तो मैं ने उस से कहा, "देखा, तुम जोरजोर से बोलते थे इसलिए तुम्हें बुखार हो गया. अब कभी शोर मत करना."

कुछ दिन बाद पड़ोस में लड़ाई हो गई. वे लोग जोरजोर से बोल रहे थे. वह भागाभागा मेरे पास आया और बोला, "अंकल, उन को बोलो जोरजोर से न बोलें, नहीं तो बुखार हो जाएगा."

—राकेश चोपड़ा

एक दिन हमारे मौसाजी हमारे घर आए. हम ने अपने पांच वर्षीय छोटे भाई को समझाते हुए कहा कि मौसाजी आए हैं, इन को प्रणाम करो. हमारे इतना कहने पर वह घूरघूर कर मौसीजी की तरफ देखने लगा तथा बोला, "मौसाजी के साथ बिल्ली मौसी तो है नहीं."

—प्रेमनाथ केशरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

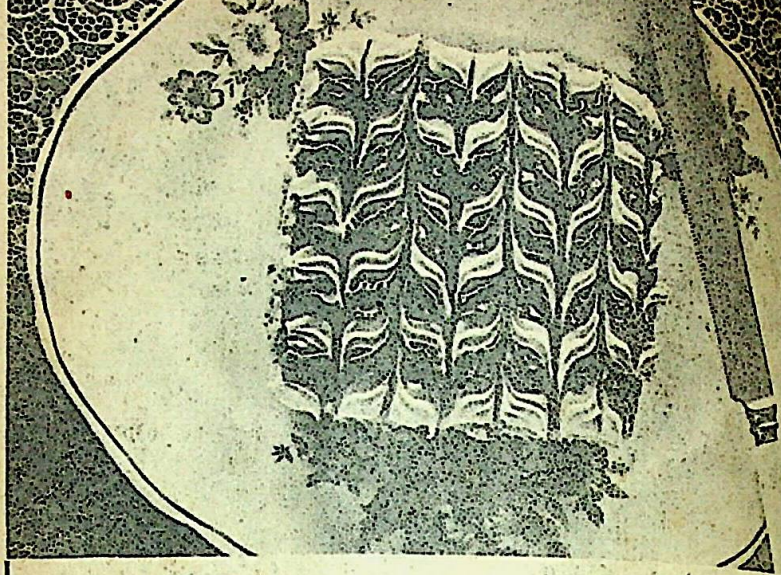

नए पकवान

बिना अंडे का फ्रूट केक

सामग्री : 2 कप मैदा, 3/4 कप घी या मक्खन, एक कप बूरा या पिसी चीनी, एक कप दूध, 3/4 कप केक फ्रूट्स (बाजार में तैयार मिलते हैं), आधा कप मेवा, एक छोटा चम्मच बेकिंग पाउडर, आधा छोटा चम्मच वेनिला एसेंस, 2 बड़े चम्मच दानेदार चीनी, 4 बड़े चम्मच पानी.

विधि : ओवन को गर्म होने के लिए रख दीजिए. केक टीन में घी लगा कर व हलका सा मैदा छिड़क कर रख लीजिए. अब एक छोटे से भगौने में दो बड़े चम्मच दानेदार चीनी डाल कर हलकी आंच पर रख दीजिए और चम्मच से चलाती रहिए. गर्म होने पर पहले तो चीनी पिघल जाएगी फिर धीरेधीरे भूरे रंग की होने लगेगी. जब यह काफी के रंग की हो जाए तो 4 बड़े चम्मच पानी डाल कर चलाती रहिए, उबलने पर आंच से उतार ठंडा होने के लिए रख दीजिए. इस प्रकार यह कार्मलाइज्ड सिरप बन जाएगा. अब एक बर्तन में पिसी चीनी व घी (जमा हुआ) डाल कर खूब फेंटें. कुछ ही देर में यह मिश्रण फूल कर हलका हो जाएगा. इस मिश्रण में केक फ्रूट्स व मेवा मिला दीजिए. फिर इस में वेनिला एसेंस व चीनी व पानी का बनाया हुआ कार्मलाइज्ड सिरप डालिए. अब बेकिंग पाउडर मिला हुआ थोड़ाथोड़ा मैदा डाल कर मिश्रण को हलके हाथ से चलाती जाएं. बीचबीच में आवश्यकतानुसार दूध भी डालती जाएं. पूरा मैदा मिल जाने के बाद इन सब चीजों का गाढ़ा सा घोल तैयार हो जाएगा. अब इस घोल को पहले से तैयार किए हुए केक टीन में डाल कर (300° फा. हा.) ओवन में सेंकें. एक या डेढ़ घंटे में केक तैयार हो जाएगा. यह केक अंडा डाले हुए केक के समान ही स्वादिष्ट बनता है.

—श्रीमती मधुर मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गए पूरे सपन

महका मन
ज्यों चंदनवन
तुम हंसे हंसा यौवन.

हर गली
पुरवा चली
खिल गई कलीकली
हौले हौले
बोल बोले
तुम लगीं कितनी भली.

दहका तन
ज्यों बांसवन
जल गया बस तन बदन.

पास आओ
मुसकराओ
गीत कोई गुनगुनाओ
छोड़ कल को
एक पल को
बांह में आ कसमसाओ.

हंसा गगन
हंसी पवन
हो गए पूरे सपन.

—पूरन सरमा

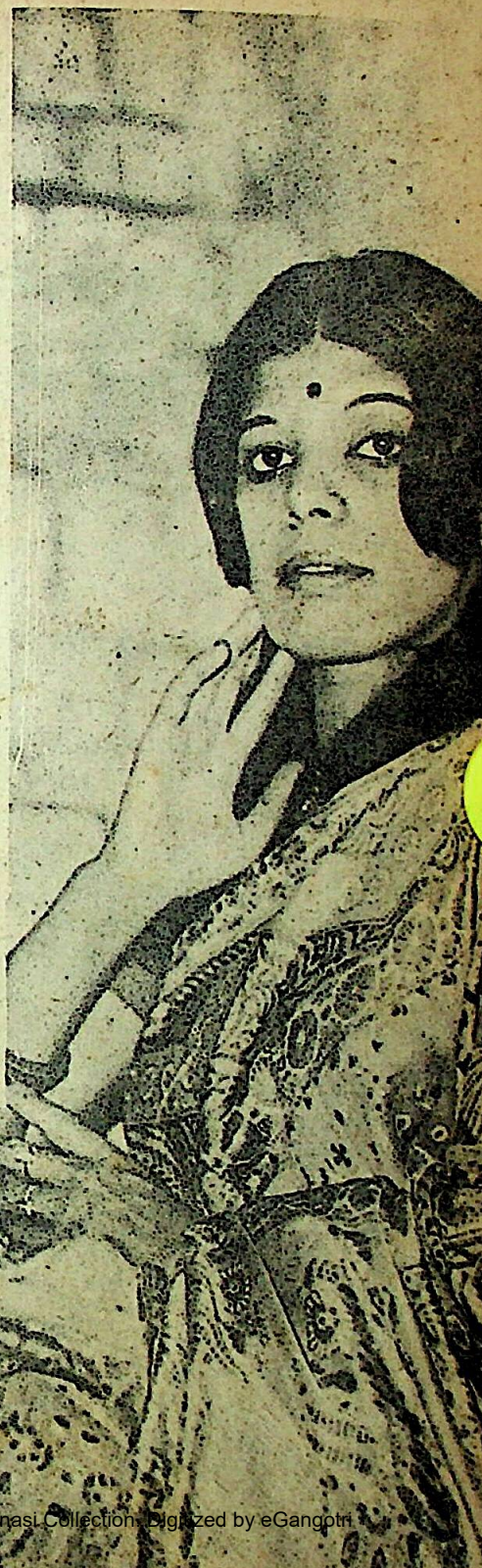

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हड़ताल

पूरे पांच दिन बरामदे में काटने के बाद जब हिर्रा को पलंग नसीब हुआ तो नई मुसीबत खड़ी हो गई...

बड़े अस्पताल का सरजिकल वार्ड. हिर्रा अपने पलंग पर लेटा है. दर्द के कारण वह बेचैन है. वह उठता और फिर लेट जाता. दर्द ज्यादा बढ़ गया है. दर्द की लहर उठती तो वह आंखें मूंद लेता, फिर खोलता. वही पलंग, वे ही नर्सें और वे ही सब मरीज. सब कुछ वही, ठीक वैसा ही. दुनिया में पैसा बहुत बड़ी चीज है. पैसे के बिना हिर्रा के सामने अंधेरा ही अंधेरा है. उस का पांव सूज कर हाथी के पांव जैसा हो गया है. मवाद अंदर ही अंदर जख्म को काटता है तो उस की तकलीफ बढ़ जाती है. दर्द की एक लहर उठी और उस के मुंह से चीख निकल गई. नर्स दौड़ी, "क्यों चीखता है? दूसरे मरीजों की नींद 'डिस्टर्ब' करता है," कह कर उस ने डांटा. हिर्रा की आंखों से आंसू टपक पड़े. जालिम कराहने भी नहीं देती. प्रत्यक्षतः बोला, "बाई, इतना दर्द हो रहा है कि क्या बताएं?" नर्स कुछ बड़बड़ाती हुई, एक गोली खिला कर चली गई. दर्द से उस का बुरा हाल हो रहा था. मानो कोई हथौड़े से चोट कर रहा हो. ठुक ठुक, ठुक ठुक.

वर्षों से हिर्रा का पैतृक पेशा बंद था. बुंदेलखंडी शब्बादार जूतों का प्रचलन कम हो गया और जो नई डिजाइन के 'दतिया-शाही' जूते वह बनाता था उन की कीमत प्लास्टिक और रबड़ के जूतों से अधिक होती, फलतः उन्हें कोई नहीं खरीदता. मजदूरी से ही अब पेट भरता था. फिर मजदूरी भी कैसी? बाप रे! उस का कोई

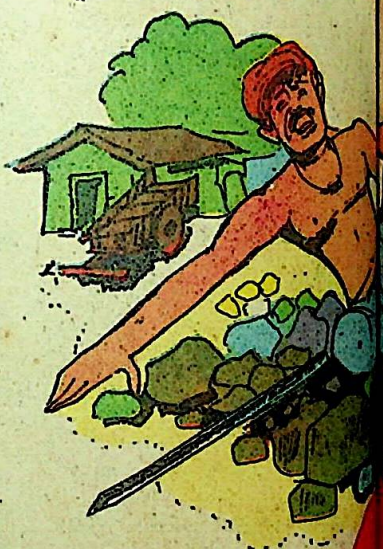

कहानी : रमेश शंकर सक्सेना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नियम नहीं. लोग जो दे दें, सो चुपचाप लो. थोड़ी चूंचपड़ की, मीन मेख निकाली तो कल से काम नहीं. जितना जो मिलता है, वह भी बंद.

घर की दो बीघा जमीन थी, बाप-दादों की मिल्कियत. उसी से वर्षा ऋतु की फसल में जो मिल जाता, वही सब कुछ था. रबी की फसल के लिए सिंचाई का साधन नहीं था. हिर्रा ने कुआं खोदने का निश्चय किया. कुआं तकावी के लिए अरजी दे दी. लेकिन तकावी बाबू, पटवारी और गांव सरपंच के हाथों से छन-छन कर तकावी की चौथाई रकम ही उसे मिल पाई. कुआं नहीं खुद पाया. शरीर पर फोड़े के निशान की तरह उस की जमीन पर भी एक धब्बा बन गया था जो कुएं जैसा लगता था.

पांव का दर्द फिर कसकने लगा. दर्द ने टंकार मारी और वह पांव से सिर तक सरसरा गया. कांप उठा वह. उस के दिल और दिमाग के तार झनझना उठे. दर्द की टीस से हलक सूख गया. होंठ पपड़ा गए. ऐसे लगा मानो छाती पर से दर्द की रेल-गाड़ी खटरपटर करती चली जा रही हो. उद्‌वेग कुछ रुका तो वह बोला, "बेटा, पानी पिला." पलंग के पास ही सहमा-सहमा सा खड़ा लड़का, तुरंत पानी लेने चला गया. पानी पी कर उसे कुछ शांति मिली तो वह आंखें फाड़फाड़ कर देखने लगा. वह दर्द से बिलबिला गया था, उस की समझ में कुछ नहीं आ रहा था. सिर चकराने लगा. अतीत की स्मृतियां मानस पटल पर उभरने लगीं. आंख बंद कर वह पलंग के सिरहाने टिक कर बैठ गया.

जिस वर्ष कुआं तकावी ली थी, उसी साल उस की पत्नी धनियां बीमार हो गई थी. देशी इलाज कराया, पर रोग शांत न हुआ. शहर के अस्पताल ले जाना पड़ा था. दवादारु के खर्च और पथ्य पर-

पांव में दर्द उठते ही हिर्रा की आंखों के सामने फिर वही दृश्य घूम गया जब बड़ी सी चट्टान उस के पैर पर आ पड़ी थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेज के लिए कर्ज लेना पड़ा. पर खुशी हुई कि धनियां की जान बच गई. एक साल सूखा पड़ गया. कैसे दिन थे वे? खाने को तो पूरा नहीं पड़ता था, फिर कर्ज कैसे चुकता? साहूकार अपने कर्ज का तगादा करने लगा. हिर्रा टूट चुका था. वह बेईमान नहीं है. लिया है तो देगा. देरसवेर देगा. पर साहूकार क्यों मानने लगा? हार कर उस ने जमीन साहूकार के हक में लिख दी. हिर्रा बेरोजगार हो गया.

सरकार के हुक्म से सड़क बनवाई गई. सैकड़ों मजदूर काम पर लगे. हिर्रा और उस की धनियां को भी काम मिल गया, लेकिन सड़क भी कब तक बनती. सड़क बन चुकी तो एक बार फिर उस के सामने अंधेरा छा गया. ठेकेदार ने उसे गिट्टी तोड़ने का काम बतला दिया. गिट्टी तोड़ो, हम खरीदेंगे. हिर्रा और धनियां ठेकेदार की गिट्टी तोड़ने लगे. पत्थर की गिट्टी तोड़ना भी कितना कठिन काम है? लोहे के हथोड़े से पत्थर कूटना. अब तो उस का पेशा ही गिट्टी तोड़ना हो गया है.

सवेरे से शाम तक वह पत्थर तोड़ता और दिन ढलते ही धनियां को घर भेज देता, ताकि वह रोटी बना ले. सूर्यास्त के साथ ही साथ उस के काम की गति बढ़ जाती. वह एकएक पल का उपयोग करना चाहता. दिन भर की मेहनत और थकान से हाथ ऊपर नहीं उठते थे. हथेलियों में छाले पड़ जाते और फूट जाते, लेकिन एक मजबूरी थी धन की. प्रत्येक चोट के साथ उस के मुंह से हम्म...हुम्म... निकलती. पसीने से सराबोर हो जाता. आंखों के आगे चिनगारियां निकलने लगतीं. पेट थरथराने लगता, पर इतना काम निबटाए बिना वह नहीं जाएगा, वरना कल के भोजन का जुगाड़ न हो पाएगा. वह एक लंबी सांस छोड़ता और फेफड़ों के अंदर भरी सारी हवा साइकिल के ट्यूब की तरह फुस से निकल जाती. इस समय वह बड़ीबड़ी चट्टानों को तोड़ कर छोटा करता. पहले दोदो क्विंटल के पत्थर, फिर एक क्विंटल, पचास किलो... बीस किलो...और फिर एकएक दोदो किलो के वजनी टुकड़े कर के छोड़ता जाता. इन पत्थरों के टुकड़ों को वह और धनियां कल तोड़ेंगे. छोटीछोटी गिट्टी बनाएंगे.

पत्थर की एक बड़ी चट्टान में उस ने लोहे का डंडा फंसाया और जोर लगा कर उसे तोड़ना, खिसकाना चाहा, पर वह चट्टान टस से मस न हुई. वह पसीने से भीग गया. उसे एक युक्ति सूझी—गैंती से चट्टान के नीचे एक गड्ढा बनाया और फिर लोहे के डंडे को दरार में फंसा कर जोर लगाया. ताकत लगते ही पत्थर अर्र...र...र से धसक गया, लेकिन उस का पांव पत्थर के नीचे आ गया.

दूसरे दिन उसे होश आया तो वह गांव के अस्पताल में पड़ा था. दर्द से छटपटाता. मजबूरियों और अभावों के बोझ से बिलबिलाता. गांव के डाक्टर का कहना था, "कि हड्डी टूट गई है. एक्सरे कराना होगा. यहां कुछ नहीं हो सकता. शहर के बड़े अस्पताल में ले जाओ." वह सब सुनता. शहर के अस्पताल का खर्चा वह जानता था. जब धनियां बीमार हुई थी और उसे वह अस्पताल ले गया था तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी सूरत

दुश्मनों ने उन्हें क्याक्या न सिखाया होगा,
देखते हो मेरी सूरत वो बिफर जाते हैं.

—राजेंद्रनाथ 'रहबर'

पूरे बीस बिसी (400) रुपए लगे थे. तब तो जमीन थी, सो इंतजाम हो गया था, पर अब किस के भरोसे कर्ज मिलेगा और कौन देगा कर्जा? यहीं पड़ा है शायद ठीक हो जाए. टालमटोल करता है. जैसा है, वैसा चलने दो.

तीन दिन हो गए. सूजन बढ़ती ही गई और पांव में प्राण लेवा दर्द होने लगा. पांव का डाक्टर चिल्ला पड़ा, "क्यों यहीं मारे डालते हो? शहर के अस्पताल ले जाओ."

हिर्रा एक लंबी सांस ले कर चुप साध जाता. कैसे जाए वह शहर के अस्पताल?

पता नहीं, कहां से कैसे धनियां तीन बिसी (60 रुपयों) का इंतजाम कर लाई. ढारढार आंसू बहाती उस ने हिर्रा को शहर के अस्पताल इलाज कराने भेज दिया. साथ में बड़ा लड़का दीना गया. अब तक घाव पक चुका था और मवाद के साथ खून भी बहने लगा था. शहर के बड़े अस्पताल में भरती होना भी मुश्किल था. बाहर बरामदे में पूरे पांच रोज पड़ा रहा. तब कहीं उसे पलंग मिला. पर वाह री विडंबना? अगले दिन से ही डाक्टरों की हड़ताल थी. पता नहीं किस बात पर डाक्टरों ने हड़ताल कर दी. उस के पांव में मवाद कुलबुलाता तो दर्द से सिहर उठता वह. असहनीय वेदना से उस का रोयांरोयां कांप जाता. उस का पांव सड़ रहा था और डाक्टर हड़ताल पर थे.

नर्सें कहतीं, "हिर्रा, तेरा आपरेशन होगा. जल्दी आपरेशन हो जाए तो ठीक, नहीं तो मवाद खून के साथ मिल कर पेट में पहुंच कर खतरा पैदा कर देगा. किसी प्राइवेट अस्पताल में जा कर आपरेशन करा ले. यहां तो कोई ठीक नहीं. कब डाक्टर काम पर लौटें."

कुछ समझदार, पढ़ेलिखे मरीज कहते, "सरकार डाक्टरों से बात कर रही है. हड़ताल जल्दी ही टूटेगी. आप देखना दो चार दिनों में ही सारे के सारे डाक्टर फिर काम पर आ जाएंगे."

पर कुछ लोग कहते, "अरे, नहीं, सरकार झुकने वाली नहीं है. यह कोई तरीका है, अपनी शर्त मनवाने का?"

दूसरा कहता, "हां, भई, यह तो सच है. हमें हड़तालें और काम बंद नहीं करना चाहिए. हम तो जैसे हैं सो हैं, पर उसे देखो कितनी तकलीफ है? बेचारा मर रहा है," और हिर्रा के पलंग की ओर उंगली से इशारा करता.

हिर्रा सब कुछ सुनता, देखता, पर कुछ भी न समझ पाता. सरकार क्या होती है? हड़ताल क्यों हुई? डाक्टर क्या चाहते हैं और सरकार क्या कहती है? उसे कुछ भी मालूम नहीं. वह कुछ नहीं जानता. जानने की जरूरत भी नहीं. वह तो सिर्फ इतना जानता है कि पांव में सूजन बढ़ रही है. दर्द असह्य होता जा रहा है. इस का जल्द ही कोई इलाज हो जाए, जिस से उसे आराम मिल जाए. पिछले पंदरह दिन से सोया नहीं था वह. सरकार... डाक्टर... कंपाउंडर...नर्सें... नेता...कोई तो गरीब की पुकार सुने.

रात का अंधकार घना होता जा रहा था और हिर्रा का दर्द फिर कसकने लगा. एकाएक वार्ड की बिजली बुझ गई. शायद लाइट चली गई थी. कमरे में अंधेरा भर गया. कुछ मरीज सो रहे थे और कुछ को झपकी आ रही थी, लेकिन हिर्रा का दर्द फिर बढ़ने लगा. उस की आंखों में नींद नहीं थी. वह कराहने लगा, तभी उस के पलंग के पास से नर्स निकली. मन का बोझ कम करने के लिए उस ने पूछा, 'बहनजी, हड़ताल कब खतम होगी?'

नर्स तमक उठी, आंखें तरेर कर बोली, "क्यों क्या करना है, तुझे हड़ताल से?"

वह सिहर गया. नर्स की भावभंगिमा से भयभीत हो गया. हिम्मत कर के बोला, "पांव का आपरेशन जल्दी हो जाता. अब दर्द नहीं सहा जाता."

"हूं, इतनी फिक्र है तो किसी प्राइ-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

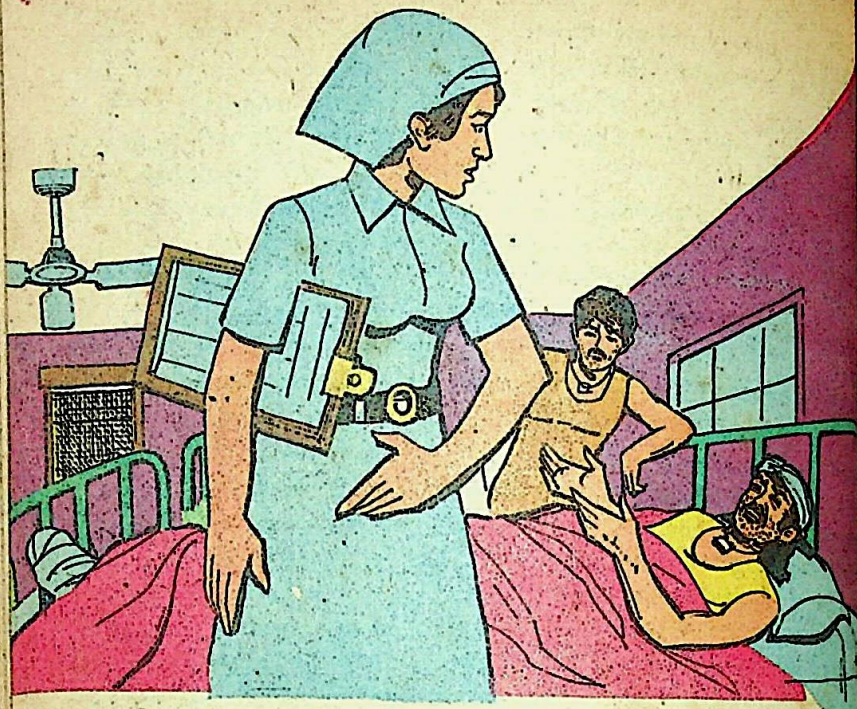

वेट में जा कर इलाज कराओ. कितनी बार कहा, कौन जानता है, कब हड़ताल खत्म होगी, पर तू सुनता ही नहीं. मरना है तो मरो. हम क्या करें? जख्म सड़ रहा है."

हिर्रा सन्न हो कर रह गया. इतने पैसे होते तो आज यह हालत न होती. प्राइवेट में रुपया लगेगा और वही उस के पास नहीं है.

दर्द ने ठोकर मारी. उस का मनप्राण टनटना गया. दर्द के कसकते ही बिच्छुओं के डंक जैसी पीड़ा से वह तिलमिला उठा. दर्द के कसकते ही उस के शरीर का रोम-रोम, दिल और दिमाग का तारतार झनझना उठा. पीड़ा की असहनीय वेदना का उद्वेग संभाले नहीं संभल रहा था. अब बड़ी विचित्र स्थिति थी—दर्द अधिक होने के कारण सहन नहीं हो रहा था. नर्सें रोने नहीं देती थीं. वह सोचने लगा, 'मैं...मैं मर क्यों नहीं जाता? इस असहनीय पीड़ा से तो मरना अच्छा.' लेकिन क्या बुलाने से मौत आती है?

"हूं इतनी फिक्र है तो किसी प्राइवेट अस्पताल में जा कर इलाज कराओ. कौन जानता है, कब हड़ताल खत्म होगी," नर्स तमक कर बोली.

कहावत है, 'मांगने से मौत भी नहीं मिलती.'

हिर्रा आंखें मींच कर गुड़ीमुड़ी हो गया और असह्य पीड़ा से बिलखने लगा. उस की चीखें बढ़ने लगीं. दूसरे मरीज जाग गए. नर्सें दौड़ पड़ीं. अब उस का हाथ काबू से बाहर हो चुका था. वह दर्द से छटपटाता हुआ हाथ फटकारफटकार कर चिल्ला रहा था. उस का लड़का दीन झारझार आंसू बहाता, "बापू, धीरज रख सबेरे दूसरे अस्पताल ले चलूंगा. किसी तरह रात कटे." पर कौन नहीं जानता उस का यह कथन कितना खोखला था और हिर्रा कितना धीरज रखे? अब उस के धैर्य का बांध टूट चुका था और दर्द का रुका सैलाब बहने लगा था, बहता जा रहा था.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनीता बहुत चाहते हुए भी अपने पति से निबाह न कर सकी. पर अपनी सहेली रंजना की हालत देख कर उस की आंखें तो खुली की खुली रह गईं...

पलकों को जबरदस्ती बंद कर लिया मैं ने. पर नींद कहां? बिस्तर पर करवटें बदलतेबदलते न जाने कितनी रात गुजर गई. बंद आंखों में जाने कितने दृश्य अजीबोगरीब से दिखने लगे. मन और भी बेचैन हो गया. कहां चले गए आखिर सुमित?

इतनी रात गए तक तो वह कभी बाहर नहीं रहते. क्या इस तरीके से मुझे मेरी लापरवाहियां जतलाना चाह रहे हैं? पिछले तीनचार दिनों से बात भी तो नहीं कर रहे बिलकुल. क्या मुझ से बहुत ज्यादा गलती हो गई है? सुमित पहले तो ऐसे नहीं थे. सिर्फ दो साल ही तो हुए हैं हमारी शादी को. पर इस बीच हम दोनों में कितना बदलाव आ गया है. और आज जब मैं अपनी गलतियों के लिए क्षमा मांगने को बेताब हो रही हूं तो सुमित साथ से ही घर से गायब हैं.

...और मैं सुमित के खयालों में खो न जाने क्यों अब तक की घटनाओं को सिलसिलेवार जोड़ने लगी.

सुमित और मैं प्रेम विवाह के बंधन में बंधे थे. सुमित हमारे पड़ोस में ही रहते थे अकेले. स्वयं खाना पकाते, स्वयं कपड़े धोते, सभी काम स्वयं ही करते. न जाने कब उन की किस अदा पर मैं फिदा हो गई. परिचय प्रगाढ़ मैत्री में बदल गया और उन से विवाह करने की बात विचार में आ गई.

पर सुमित से मेरे विवाह की अड़चन थी उन की गरीबी यानी आठ सौ रुपए की नौकरी...मेरे पिता व्यापारी थे और उन के सिर्फ दो संतानें थीं. एक मैं और एक मुझ से सात साल छोटा भाई सुनील. ढेरों पैसा था पिता के पास.

और मां का ख्वाब था कि मैं किसी ऊंचे घर में ब्याही जाऊं, किंतु मैं ने जिद की, "मुझे तो सुमित से ही विवाह करना है, नहीं तो नहीं करना है." इस के आगे मांबाप की एक न चली और जैसेतैसे मेरा विवाह सुमित से हो गया और मुझे दहेज भी बहुत मिला.

पर शादी के बाद मां का जो रवैया सुमित के प्रति रहा वह कुल मिला कर ठीक नहीं था. शादी से एक हफ्ते पहले ही सुमित ने दो कमरे का फ्लैट किराए पर ले लिया था और मुझे भी उस छोटे से फ्लैट में पहले दिन कोई बुराई नजर नहीं आई थी. नन्हा सा घर बसाने की अपनी कल्पना को मैं चरितार्थ करना चाहती थी.

कहानी • शारदा छाबड़ा

डूबती पतवार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किंतु हनीमून के लिए सुमित मुझे कहीं नहीं ले जा सके थे. शादी के लिए सुमित ने एक हफ्ते की छुट्टी ली थी. पर कहीं बाहर जा कर सिर्फ आपस में एक एकदूसरे को समझने के लिए इतना पैसा बरबाद करना सुमित को पसंद नहीं आया था.

वह बोले थे, "हमारी तुम्हारी जान-पहचान तो काफी पुरानी है. रही अकेले-पन की बात, तो भई, मेरा तो इस दुनिया में सिवा तुम्हारे कोई है नहीं. अकेले फ्लैट में हमतुम होंगे, दिल खोल कर बातें करेंगे, एकदूसरे को अच्छी तरह समझ लेंगे. बाहर जा कर भी क्या होगा?" और लपक कर उन्होंने मुझे अपनी बांहों में भर लिया तो मैं चुप्पी लगा गई.

प्रेमविवाह अकसर असफल हो जाते हैं, इस को मैं गलत सिद्ध करना चाहती थी. यदि मैं इस जरा सी बात को बढ़ा देती तो हमारी जिंदगी की शुरुआत ही ठीक न हो पाती. पति की इच्छा में ही अपनी खुशी है यह सोच कर अपने दिल को समझा लिया था मैं ने.

किंतु शादी के तीसरे ही दिन मां आ गईं हमारे घर. उस समय हम दोनों बेतहाशा हंस रहे थे किसी बात पर. मां आते ही बोलीं, "अरे, कहीं बाहर नहीं गए हनीमून मनाने तुम लोग? इस कबूतर खाने में बैठेबैठे क्या हंस रहे हो?" और बात समाप्त कर के वह अपनेआप ही सोफे पर बैठ गई थीं. साथ लाई फलों की टोकरी और मिठाई के डब्बे तब तक ड्राइवर ऊपर छोड़ गया था.

उन की कही गई बात मुझे भी बुरी लगी थी. किंतु सुमित का मुंह न जाने कैसा हो गया था. कुछ बोलते नहीं बना था उन से. मैं ही बोली थी, "ओह मां, तुम तो बस... अब इतनी ठंड पड़ रही है तो क्या हिल स्टेशन पर बीमार होने जाएंगे?" और मैं बात समाप्त कर के सुमित का चेहरा देखने लगी थी.

मां की निरीक्षण करती हुई
कमरे के चारों ओर घूम रहीं
लगा कि सुमित को मां का
का ढंग शायद पसंद नहीं आ
बात कहीं बढ़ न जाएं, इसलिए
से मैं ने कहा था, "आओ मां,
में चलते हैं, इकट्ठे चाय बनाएंगे,
भी होती रहेंगी." और मैं मां का
पकड़ कर जबरन उठा ले गई थी

रसोई में आते ही मैं ने स्टोव
चाय का पानी चढ़ा दिया था. मां
तक रसोई को भी देखपरख चुकी
बोलीं, "कैसे क्या होगा, अनीता!
गुजर होगी तुम्हारी? अपने घर में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक गिलास पानी भी उठा कर न पीती थी. गैस पर कभीकभार चाय जरूर बना लेती थी. यहां स्टोव से कैसे हाथमुंह काला करती रहोगी? क्याक्या सोचा था तेरे लिए. . . " और यह कह कर वह अपने आंसू पोंछने लगी थीं.

मां की इस बेवक्त की रुलाई मुझे बिलकुल अच्छी नहीं लग रही थी. डर था कि कहीं सुमित हमारी बातचीत सुन न रहे हों, इसलिए मैं ने कहा था, "मां, सब तुम यह क्या ले बैठीं? मैं बिलकुल ठीक हूं. पैसा ही सब कुछ नहीं होता. सुमित कितना प्यार करते हैं मुझे. अब, प्लीज, कुछ मत कहना."

और मैं मुड़ कर उबलते पानी में चीनी और पत्ती डालने लगी थी. चाय छान कर बाहर लाई तो देखा सुमित अभी तक सोफे पर अधलेटे से पड़े छत की ओर घूर रहे हैं. न जाने वह क्या सोच रहे थे? शर्मिंदा सी होती हुई मैं ने चाय का कप उन्हें पकड़ाया. मां भी चाय चुपचाप पीती रही थीं.

कुछ बात करने की गरज से मैं अनचाही बातें ही करने लगी थी, "सुनील और पापा कैसे हैं? मुझे याद करते हैं?".

मां "हां, हूं" में जवाब देती रही थीं. अटपटेपन को कम करने के लिए मैं नौकरों के बारे में पूछने लगी थी, "दौलतराम कैसा है? सुनिया कैसी है? ठीक काम करते हैं या नहीं?"

नौकरों के हालचाल पूछते समय मां ने एक बात और कह डाली थी, "अब न हो तो एक आया पूरे समय के लिए रख लो. कहो तो सुनिया को ही भेज दूं कल. सारा काम कर दिया करेगी, तेरे बस का तो यह सब है नहीं."

और मां उपदेश सुना कर चाय पी कर चली गई थीं. मैं चुपचाप उन्हें दरवाजे तक छोड़ आई थी. सुमित लेटे ही रहे थे.

बोझिल हो आए इस वातावरण को कैसे हलका किया जाए, यह सोचती हुई मैं कपप्लेट उठा कर रसोईघर में चली गई थी.

रसोई के स्लैब पर डोंगे के नीचे सौसौ के पांच नोट पड़े थे. देख कर कुछ अजीब सा लगा था. पर पता नहीं क्यों मां की इस बात पर मुझे गुस्सा नहीं आया था. मन का कोई कमजोर कोना अभाव महसूस करने लगा था शायद. पैसे उठा कर मैं ने पर्स में डाल लिए थे.

फिर कमरे में आ कर सुमित के

अनीता उत्तेजित हो कर कह उठी, "हांहां, हो आया करूंगी. मायका पास ही है तो मन बहलाव के लिए जाने में क्या हर्ज है. . . "

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालों में हाथ फेर कर बोली, "ऐसे चुपचाप क्यों लेटे हो? मां ममतावश कुछ बोल गई हैं तो बुरा मत मानो. मुझे तो इस घर में बहुत अच्छा लगता है. चलो, उठो, कहीं घूम आएं."

और सुमित पता नहीं क्यों मुसकरा पड़े थे. मेरे दिल पर से बोझ उतर गया था. तैयार हो कर हम लोग घूमने चले गए थे, किंतु पता नहीं क्यों उस दिन हम लोग जी खोल कर बातें नहीं कर सके थे.

लौटने लगे तो मैं ने कहा था, "अब घर जा कर खाना बनाने का मन नहीं है. चलो, किसी होटल में खा कर चलते हैं." सुमित अपना मत व्यक्त किए बिना चुपचाप सड़क पार कर के एक रेस्तोरां में घुस गए थे. न जाने फिर उन्होंने चुप्पी क्यों साध ली थी.

बैरे को आर्डर मैं ने ही दिया था. खापी कर जब बिल चुकाने लगे तो देखा कि बिल पंद्रह रुपए कुछ पैसे का है. सुमित ने जेब में हाथ डालना चाहा, इसी बीच मैं ने पर्स से निकाल कर सौ का नोट प्लेट में डाल दिया था.

बैरा चला गया तो सुमित प्रश्न भरी निगाहों से मुझे घूरने लगे थे. उन का इतना चुप रहना मुझे पहले ही खल रहा था. बोली, "मां दे गई हैं."

पर कह कर मैं स्वयं ही पछताने लगी थी. जब पहले ही इन रुपयों का जिक्र नहीं किया था तो इस समय बिल

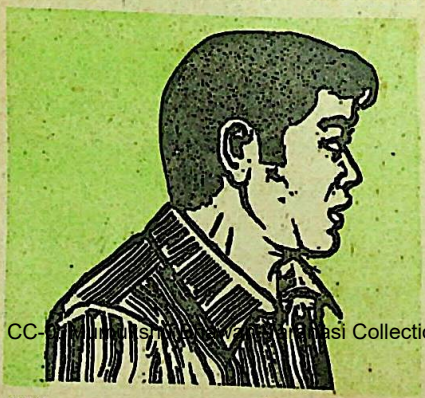

अदा करने की उतावली क्यों दिखा दी ने?

पर अब क्या हो सकता था? पैसे वापस ले आया था. सहमी सी 80 रुपए प्लेट से उठा लिए. इतने टिप पर बैरे ने जोरदार सलाम था.

मर्माहत से सुमित रेस्तोरां के आ गए थे. पैदल चलतेचलते मैं ने फिर कहा था, "क्या अब फिर बुरा गए?"

सुमित बोले थे, "नहीं, बुरा मानना है? अपनी अमीर पत्नी के करतब देख रहा हूं, और क्या?"

सुमित की यह बात मुझे थी. किंतु इस बात को हंसी में के लिए मैं ने चुप रहना ही ठीक था.

दूसरे दिन जिस काम वाली महरी मैं ने बुलाया था, वह जब नहीं तो काम की थकान और जूठे बरतनों हुजूम देख कर मुझे उबकाई सी लगी थी. अब तक का संजोया जवाब देने लगा था. सुमित थोड़ी देर लिए किसी काम से बाहर गए थे. की घंटी बजी तो देखा मुनिया खड़ी थी.

मेरा उसे देखने का कोई इरादा था क्योंकि सुमित के अहं को इन से बहुत ठेस लगती है, यह मैं देख थी. किंतु मैं ने सोचा कि आज नहीं आई है, इसलिए सिर्फ आज का इस से करवा लेती हूं और मैं ने के लौट आने से पहले ही सब काम लेने की गरज से जल्दी से मुनिया रसोई में भेज दिया था. किंतु बरतन मांज कर कमरे में पोंछा रही थी कि सुमित आ गए. मेरी कटघरे में खड़े कैदी जैसी हो गई सफाई सी देती हुई बोली थी, महरी नहीं आई है इसलिए करना हूं. रखूंगी नहीं..." और अधूरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कह कर सुमित का मुंह देखने लगी थी तो मुनिया भी काम रोक कर हमारा वार्तालाप सुनने लगी थी.

मेरे उड़े हुए चेहरे को देख कर सुमित बोले थे, "अरे, तो मैं ने कुछ कहा है क्या? हां, रोजरोज यह चक्कर नहीं चलना चाहिए."

मैं चुप्पी लगा गई थी. मुनिया ने जाते समय कहा था, "अरे, दीदीजी, आप तो बहुत डरती हैं साहब से. एक तो आप इतने पैसे वाले घर से आई हैं. दूसरे साहब का रोब सहती हैं. यह कहां का तरीका है?"

और मुझे लगा था कि मुनिया जाते समय जो बात कह गई है उस में कुछ दम है. मुझे इस तरह सहम कर नहीं रहना है. अब जो चाहूंगी करूंगी. देखूं, क्या कर लेंगे? शादी की है, कोई नौकरानी तो हूं नहीं जो इतना काम भी करूं और..."

और इस विचार के साथ न जाने कैसा परिवर्तन मुझ में आया कि मैं बदलने लगी थी. न जाने क्यों सुमित का दो कमरे का फ्लैट अब मुझे भी बहुत छोटा लगने लगा था. सामान की अधिकता की वजह से वे कमरे मानो सिकुड़ कर और भी छोटे हो गए थे.

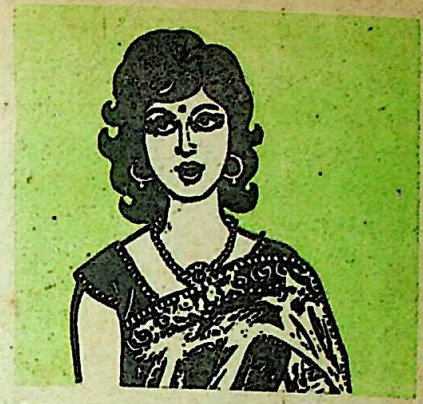

मुहरी काम के लिए लगा ली थी, किंतु सुबह उठते ही खाना, चाय, नाश्ता आदि बनाने तथा छोटेमोटे कपड़े धोने और ऊपर के ढेरों काम करने में मुझे थकावट होने लगी थी.

कल्पना की उड़ान और वास्तविकता की कठोरता अब मुझे समझ आने लगी थी.

आठ दिन बाद जब सुमित फैक्टरी चले गए तो मैं एकाएक अपनेआप को बहुत अकेली महसूस करने लगी थी.

सुमित दोपहर का खाना फैक्टरी की कैंटीन में खाते थे. इसलिए खाना बनाने का झंझट नहीं था. न जाने क्यों अपने घर की याद आने लगी थी और मैं तैयार हो कर अपने मायके पहुंच गई थी.

सारा दिन पता ही नहीं चला कैसे गुजर गया था. सुनील तो मुझ से चिपट कर रोने ही लगा था.

मां अपनी पुरानी बातें फिर दोहराती रही थीं. किंतु आज उन की बातें मुझे उतनी बुरी नहीं लग रही थीं. शायद इसलिए कि सुमित इन बातों को नहीं सुन रहे थे या मैं ही इन आठ दिनों में बहुत बुजुर्ग हो गई थी गृहस्थी चला कर.

दिन भर मां के साथ बिता कर शाम को सुमित के आने से पहले ही मैं स्कूटर कर के अपने घर लौट आई थी.

उस दिन मैं बहुत खुश थी. लौटते समय मां ने एक बहुत खूबसूरत साड़ी मुझे दी थी. सुमित जब लौटे तो मैं ने उन्हें बताया था, "आज मैं मां के पास गई थी. देखो, उन्होंने कितनी सुंदर साड़ी मुझे दी है. शायद आठनौ सौ की होगी..."

और मैं ने बात अधूरी ही छोड़ दी थी. सुमित ने साड़ी को अनदेखा सा करते हुए कहा था, "अच्छा. फिर तो रोज हो आया करो वहां...इतनी भारी साड़ियां मैं तो इस तनख्वाह से ले कर दे नहीं पाऊंगा. मेरी तो एक महीने की तनख्वाह ही इतनी है."

इस पर मुझे लगा था सुमित यह बात मुझे चिढ़ाने के लिए कह रहे हैं. मैं भी न जाने क्यों उत्तेजित हो गई थी. बोली थी, "हांहां, हो आया करूंगी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुमित ने अनीता को एक जोरदार थप्पड़ रसीद करते हुए कहा, "सुना नहीं तुम ने, मैं ने क्या कहा था?"

मायका पास ही तो है मनबहलाव के लिए जाने में क्या हर्ज है? और फिर मां अपनी खुशी से देती हैं, मैं मांगती तो नहीं. तुम से तो शायद मांगने पर भी ऐसी साड़ी न मिले."

और मैं सुमित को अवाक सा छोड़ कर दूसरे कमरे में चली गई थीं. कुछ देर बाद सुमित ने स्वयं ही आ कर मुझे मनाया था. खुद बना कर चाय पिलाई थी. मैं भी पिघल गई थी. आंखों की उमस गहरी हो कर बरसने लगी तो सुमित पीठ पर हाथ फेर कर मुझे शांत करते रहे थे.

इसी प्रकार हलकेफुलके मनमुटाव में दिन कटते गए थे.

मां ने दहेज में सुमित को स्कूटर दिया था. एक दिन हलके मूड में मैं सुमित को अपने मायके ले गई थी.

कुछ देर बैठ कर और चाय पी कर जब हम वापस आने के लिए बाहर निकले तो सुमित से स्कूटर स्टार्ट ही न हो रहा था. बहुत देर बाद स्टार्ट हुआ तो थोड़ी दूर जा कर फिर रुक गया था.

मुझे झुंझलाहट सी होने लगी थी. सुमित ने झुक कर, टंकी खोल कर देखा तो पता चला पेट्रोल ही नहीं है. मातापिता तब तक नजदीक आ गए थे. मारे शर्म के मेरा मुंह लाल हो गया था.

सुमित बोले थे, "आज वेद भांप कर ले गया था स्कूटर. उस ने मुझे बताया ही नहीं, और मैं ने भी नहीं देखा. पर पूछूंगा बेशर्म से."

पर मां उन की बात को अनसुना कर के बोल उठी थीं, "अरे, कहो तो पेट्रोल भी हर हफ्ते भिजवा दिया करें कम से कम बीच रास्ते में खड़ा तो न होना पड़ेगा."

सुमित का मुंह शर्म से काला हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

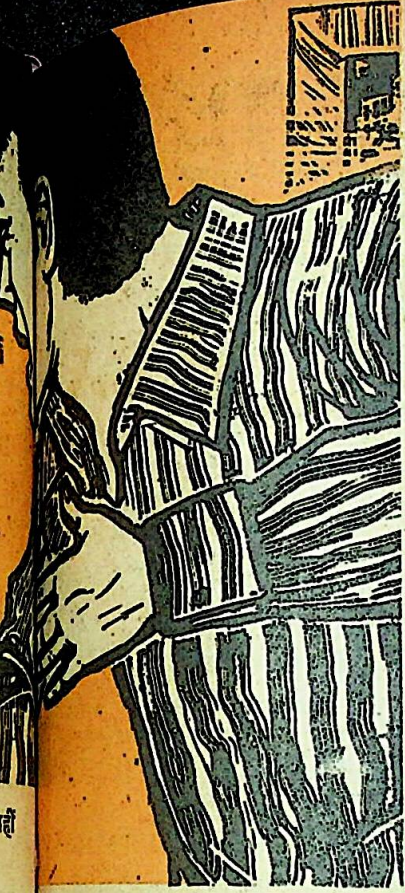

लिया था. पूरी रात जाग कर सुमित भी न जाने क्याक्या सोच रहे थे. जल्दी ही हम दोनों में फिर सुलह हो गई थी.

सुमित बोले थे, "जब धनवान की बेटी से शादी की है तो बहुत कुछ सुनने के लिए हाजमा तैयार करना पड़ेगा."

मैं ने भी तब लाड़ में आ कर कह दिया था, "तुम भी खूब हो. बस एक ही रट अकसर लगाए रहते हो कि मैं धनवान की बेटी हूं और यह नहीं समझते कि जब तक तुम मेरे साथ हो तभी तक मुझे अपने पर बड़प्पन है. नहीं तो अकेले यह जिंदगी कट सकती है भला? पैसा ही सब कुछ नहीं होता."

और यह सब सुन कर सुमित हलके मन से विदा ले कर काम पर चले गए थे. उन के जाते ही अकेले कमरे में मैं फिर मायूस होने लगी थी. एकांत घड़ियां मुझे कमजोर बना जाती थीं, क्योंकि ये एकांत क्षण मुझे अपने अभाव की छटपटाहट महसूस कराते थे.

इसी तरह दिन बीतते गए थे. और हमारी शादी की पहली सालगिरह आ गई थी. मैं चाहती थी कि उस दिन एक छोटीमोटी पार्टी हो जाए. आसपड़ोस की महिलाओं और कुछ सहेलियों को बुला कर उन पर रोब गालिब किया जाए.

मां ने मुझे एक दिन पहले ही सालगिरह की साड़ी के लिए नकद एक हजार रुपए दिए थे. मैं ने सोचा, दोतीन सौ पार्टी पर खर्च कर के बाकी की एक साड़ी और सुमित के लिए एक पैंट का कपड़ा खरीद लूंगी.

किंतु मैं ने यह बात जब सुमित से कही तो सुमित तैयार नहीं हुए थे. प्यार से बोले थे, "देखो, अनी, दिखावे में मैं बिलकुल विश्वास नहीं करता. तुम्हारे पास रुपए हैं तो किसी वक्त जरूरत पर खर्च करना. आज मैं ने छुट्टी ले ली है. दिन भर इकट्ठे घूमेंगे, एक पिक्चर देखेंगे और रात का खाना भी बाहर ही

क्या था. चुपचाप स्कूटर को वहीं खड़ा कर के गेट से बाहर निकल गए थे.

हम सब देखते रह गए थे. मुझे लगा था अब सुमित बहुत नाराज होंगे.

मैं मां से बोली थी, "मां, तुम तो बिना समझे ही हर बात कह देती हो. उन की बात तो तुम ने सुनी नहीं, अब पता नहीं कहां गए हैं?"

पिताजी भी मां पर बिगड़ रहे थे. तभी सुमित हाथ में पेट्रोल का एक डब्बा ले कर आते नजर आए. मुझे कुछ तसल्ली हुई. किंतु सुमित पेट्रोल डाल कर स्कूटर स्टार्ट करने और घर तक आने तक एक शब्द भी नहीं बोले थे.

उस रात मैं चाहते हुए भी सुमित से कुछ न कह पाई. सुमित भी चुपचाप बिस्तर पर पड़े रहे थे. रात का पहर जैसेतैसे ही गुजर गया था.

दूसरे दिन सुमित को मैं ने मना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बदला और प्रेम

बदला लेने में और प्रेम में स्त्री पुरुष से अधिक निर्दयी होती है.

—नीत्शे

विकार रूपी मैल को दूर करने से प्रेम बढ़ता है.

—मो. क. गांधी

खाएंगे. लोगों की चहलपहल में आज का दिन क्यों खराब कर देना चाहती हो?"

मैं सुमित की दलील पर न जाने क्यों चुप हो गई थी. वह दिन वास्तव में ही लड़नेझगड़ने के लिए नहीं था. और फिर कितने दिन बाद सुमित बेहद प्यार से बोले हैं, यह सोच कर सुमित के साथ बाहर जाने के लिए मैं झटपट तैयार हो गई थी.

बाजार में सब से पहले सुमित ने मुझे एक वेणी खरीद दी थी. फिर एक साड़ी की दुकान पर ले गए थे. मेरे पर्स में मां के दिए रुपए उछल रहे थे. इसलिए मैं भी जल्दीजल्दी साड़ियां देखने लगी थी.

एक बनारसी साड़ी को बंधवाने के लिए कह कर मैं ने पास बैठे सुमित को देखना चाहा तो पाया सुमित वहां हैं ही नहीं. घूम कर देखा सुमित काउंटर पर एक साड़ी के पैसे चुका रहे थे. मुझे खुशी हुई कि सुमित ने भी मेरे लिए एक साड़ी खरीदी है.

पैसे चुका कर जब हम बाहर आए तो सुमित ने साड़ी का लिफाफा मेरी तरफ बढ़ा दिया था. मेरी साड़ी एक डब्बे में बंद थी. मैं ने देखा सुमित लिफाफा पकड़ाते समय डब्बे और लिफाफे का फर्क महसूस कर रहे थे.

उस के बाद खापी कर हम ने मैटिनी शो देखा था. पिक्चर के बाद होटल से खाना खा कर आते हुए थकान सी महसूस होने लगी थी. किंतु दिन भर के कार्यक्रम में मुझे बहुत मजा आया था.

शादी के बाद के सुख की कल्पना मैं ने इसी प्रकार तो की थी.

घर आ कर सुमित तो पलंग पर लेट गए थे. मैं ने अपने कपड़े बदलते अनचाहे ही गुनगुनाते हुए डब्बा खोल कर बनारसी साड़ी बांध ली थी.

सुमित को दिखाने गई तो खुशी सिर्फ एक पल मुझे निहार कर कहा था "आखिर अपनी लाई साड़ी ही पसंद आई तुम्हें." और करवट बदल कर सो गए थे. मैं अवाक सी खड़ी रही थी. दिन भर की सारी प्रसन्नता काफूर हो गई थी.

गलती मुझ से ही हुई थी. सुमित ने लाई साड़ी तो अब तक लिफाफे में ही पड़ी थी. चुपचाप मैं कमरे से बाहर आ गई थी. साड़ी उतार कर रात के कपड़े पहन कर सुमित के पास आ लेटी थी. किंतु सुमित को पता नहीं क्या हो गया था. शायद मेरी इस बात पर उन्हें बहुत गुस्सा आया था. क्योंकि मेरे पास लेटने के बावजूद उन्होंने पलट कर मुझ से बात नहीं की थी.

सोचतेसोचते पता नहीं कब मुझे नींद आ गई थी.

दूसरे दिन से फिर वही बंधीबंधाई जिंदगी शुरू हो गई थी.

फैक्टरी जाते समय तक हम ने आपस में बात नहीं की थी. सुबह के खयाल से मैं ही सुमित से बोली थी, "कल तुम्हारे लिए जल्दी में पैंट का कपड़ा नहीं खरीद सकी. आज जरा जल्दी आ जाना, बाजार चलेंगे."

सुन कर सुमित कुछ देर मुझे देखते रहे थे, फिर बोले थे, "मेरे पास कपड़े बहुत हैं. तुम ही एक साड़ी और ले लेना. वैसे मैं जल्दी आ जाऊंगा." और मुड़ कर चले गए थे.

मुझे न जाने क्यों बड़ी जोर की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डालडा की शुद्धता आपके भोजन का स्वाभाविक स्वाद उभारती है.

प्रकृति हर भोजन को अपना खास स्वाद देती है – ऐसा स्वाद, जो पकाने के घटिया माध्यम से छिप जाता है. जब आप अपने परिवार के लिए पकाती हैं तो अपने भोजन का स्वाद उभारना चाहती हैं. इसके लिए आपको डालडा की ज़रूरत है. डालडा उच्चल-रिफ़ाइन्ड है जिससे आपको सही शुद्धता मिलती है. डालडा आपके भोजन का स्वाभाविक स्वाद उभारता है.

ममता की कसौटी पर खरा डालडा छाप वनस्पति

याद रखिए: डालडा कभी खुला नहीं बिकता

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

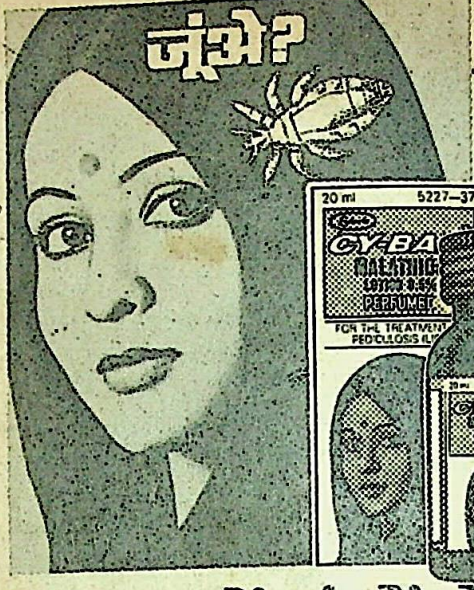

दवा! साय-बैन लोशन लगाइये

- प्रभावशाली
- सुरक्षित
- खुशबूदार
- चिपचिपाहट रहित

रात भर में जूंओं से छुटकारा पाइये!

Lederle

* अमेरीकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क

Sista's-CY-80C/Hin/78

जगमग

धुलाई के लिए

555 स्पैशल साबुन
—:—
डिटरजेंट पाउडर

निर्माता : गोरामल हरीराम

39, नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-15 फोन : 585715, 583235 टेलेक्स 39

रुलाई आने लगी थी और मैं पलंग पर लेट कर खूब रोई थी. 'सुमित तो जरा-जरा सी बात का बतंगड़ बना लेते हैं. मैं ने सब कुछ छोड़ कर इन से शादी की है. दुखतकलीफ के सिवा मुझे मिला ही क्या है? एक साल के अंदर मैं क्या से क्या बन गई, पर यह जनाब अपने को बिलकुल नहीं बदलते.' न जाने कब तक मन ही मन मैं भुनभुनाती रही.

दोपहर के बारह बजे मैं उठी थी. नहाधो कर खाना खाया और अपनी एक सहेली रंजना के घर वक्त बिताने की गरज से चली गई थी.

रंजना मुझे देख कर बहुत खुश हुई थी. जब मैं पहुंची रंजना अपने पति की कमीज में बटन टांक रही थी. मुझे बैठाने के बाद वह उसी काम में व्यस्त रही थी. फिर बोली थी, "बुरा न मानना, जरा पहले इन का काम निपटा दूं. फिर बैठ कर बातें करेंगे. आज शाम इन्हें एक पार्टी में जाना है. जूते में पालिश न होगी तो बहुत चिल्लाएंगे."

और वह अपने पति के जूतों में पालिश करने लगी थी.

फिर वह पालिश करतेकरते बोली थी, "यार, बात यह है कि शादी के बाद यह सब तो चलता ही रहता है. काम न होने पर चिल्लाते हैं तो कभी प्यार भी तो करते हैं. मेरे बिना उन की देखभाल भला कौन करेगा, बताओ तो?" इतना कह कर वह हंसने लगी थी.

मैं मुंह फाड़े उसे देखती रही थी. कितनी खुश है. कभीकभार प्यार कर लेने में ही रंजना खुश है और उस के लिए कुरबानी दे रही है. और एक मैं हूं.

चाय पी कर जब मैं घर लौटी तो सुमित से प्यार भरे समझौते के लिए बेताब हो रही थी. सुमित जल्दी आने को भी कह गए थे. मना कर उन्हें पैंट ले ही दूंगी.

मैं ने गुनगुनाते हुए सुमित की लाई साड़ी पहन ली थी. रंजना के पति और सुमित की तुलना करती हुई न जाने कितनी देर मैं सोफे पर अधलेटी सी पड़ी रही थी.

सुमित शाम के सात बजे घर लौटे थे. आते ही बोले थे, "अनी, माफ करना. आज जल्दी नहीं आ सका. अब फटाफट मेरा सूट निकाल दो. मुझे एक जरूरी काम से फिर जाना है. तुम इंतजार मत करना. खापी लेना, मुझे देर हो जाएगी."

और कह कर भागतेदौड़ते तैयार हो कर सुमित फिर चले गए थे. दिन भर का मेरा उत्साह फीका पड़ गया था. फिर न जाने क्यों सुमित पर मुझे गुस्सा आने लगा था.

इसी प्रकार रोज सुमित काम पर जाते, लौटते और इधरउधर की बातें कर के सो जाते थे. मनोरंजन के नाम पर कहीं घूमने या जाने को कहती तो थके होने का बहाना कर देते थे. मुझे लगता था सुमित अब मुझ से उकता गए हैं.

पहले सुमित घर का खर्च भी स्वयं चलाते थे किंतु मेरी कुछ महंगी फरमाइशों से तंग आ कर उन्होंने महीने की

सरिता के स्थायी ग्राहकों से

यदि आप अपना पता बदल रहे हैं तो सरिता कार्यालय को अपना नया पता (ग्राहक नंबर पुराने पते सहित) सूचित करना न भूलिए. यह सूचना कम से कम एक मास पूर्व दी जानी चाहिए, नहीं तो सरिता की प्रतियां डाक में खो जाने की पूरी संभावना है. इस तरह खोई हुई प्रतियों के लिए कार्यालय उत्तरदायी न होगा.

—संपादक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पहली तारीख को सात सौ रुपए मेरी हथेली पर टिकाने शुरू कर दिए थे.

घर का किराया, पेपर वाले, महरी, दूध, चौकीदार और जमादार सब के बिल चुकाने के बाद और महीने का इकट्ठा राशन ले आने के बाद दस तारीख तक ही तनख्वाह का अधिकांश हिस्सा साफ हो जाता था. फिर महीने के आखिरी हफ्ते तक किस कदर खींच-तान करनी पड़ेगी, यह सोच कर ही मेरा सिर भन्ना जाता था.

पहले पिक्चर की फरमाइश भी करती थी किंतु अब उस की भी हिम्मत नहीं होती थी. कपड़ा तो कोई खरीद ही न सकती थी. शादी से पहले के अपने बेहिसाब खर्चे सोचसोच कर ही दिल में टीस सी उठने लगती थी.

न जाने अपनी किस अतृप्त इच्छा को पूरी करने के लिए अब मैं सुमित के जाने के बाद रोज मायके जाने लगी थी. दिन भर खूब अच्छा खाना खाती, फलों को फ्रिज से अपनेआप निकाल कर खा लेती. बैठेबैठे मुनिया और दौलतराम से ढेरों काम करवाती. मां या सुनील को ले कर दोपहर वाले शो में पिक्चर भी देख आतीं. किंतु घर लौटने पर सुमित से न कहती कि दिन में कहां गई थी.

ऐसे ही एक छुट्टी के दिन मां आ गईं. सुमित घर में ही थे. मां ने पानी पीने के बहाने स्वयं ही फ्रिज खोल लिया. महीने का आखिरी हफ्ता था. फल नदारद थे. मुझे बहुत शर्म आई.

तभी मां अपनी आदत से मजबूर हो कर बोली थीं, "अरे अनीता, फ्रिज तो तुम ने बिलकुल साफ रखा है."

उन के इस वाक्य में छिपे व्यंग्य को सुमित समझ गए थे. हर समय चुप रह कर सह जाने वाले सुमित बोले थे, "जी हां, घर का कूड़ाकरकट महरी बाहर ही डाल आती है, इसलिए साफ ही रहता है."

इतना कह कर सुमित बाहर चले गए तो मां कुछ बोल न पाई थीं. अ मानित सी होती हुई बोली थीं, "कुछ हमारा ही दिया हुआ है, फिर अकड़ दिखा रहा है."

इतना कह कर वह भी सीढ़ि उतर कर कार में जा बैठी थीं. हालत अजीब सी हो गई थी. पता क्यों गुस्सा सुमित पर ही आया था मैं विद्रोह में भर कर सुमित से लड़ने लिए उतारू हो गई थी.

शाम को सुमित न जाने कहां घूम कर आए तो स्वयं ही बोले "देखो अनिता, तुम ने मुझ से शादी है तो तुम्हें हर हालत में मेरे साथ रहना चाहिए. मांबाप के घर का ऐश अब भूल जाओ. अपनी मां से भी कि हमारे घर की हर बात में टांग अड़ाया करें. अपनी तरफ से मैं तुम्हें खुश रखने के लिए क्या कोई कसर छोड़ता हूं? पर जब तुम भी अपनी की कही बातों में आ जाती हो तो सह नहीं पाता."

इतना कह कर सुमित मुंह पर चद्दर डाल कर पलंग पर लेट गए थे. सुमित से लड़ने के लिए भरी बैठी थी पर सुमित को इतना उदास देख कर रह गई थी.

सोचने लगी थी कि सुमित शायद ठीक ही कहते हैं. मां को अब टोक-टोक हर समय हमारी बातों में न उलझा करूं.

इस विचार के आते ही मैं हलकी हो गई थी. रसोई में जा कर चाय बना सुमित को प्याला पकड़ाते समय मुसकरा दी तो सुमित ने चाय को मेज पर रख कर मुझे बाहों में भर लिया था न जाने क्यों मैं सहानुभूति पा कर रोने लगी थी. सुमित मुझे बहुत देर तक प्यार करते रहे थे.

रात को सोते समय सुमित बोले थे "मेरी बात को तुम ठीक से समझ सको हो, यह मैं तब समझूंगा जब मेरे काम से लौटने पर तुम घर पर रह कर हंस कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरा स्वागत किया करोगी. सच, अनीता, काम से लौटने पर दरवाजे पर ताला देख कर पता नहीं क्यों मुझे बहुत गुस्सा आ जाता है."

और इस समझौते के बाद हम सो गए थे.

दूसरे दिन जब सुमित काम पर चले गए तो मैं ने सुमित के कपड़े सहेज कर रखे, बिस्तर ठीक किया, सब बिखरा सामान समेटा, मैले कपड़े धो डाले, और भी कई छोटेमोटे काम किए, किंतु महरी के चले जाने के बाद जब वक्त काटे न कटा तो मैं अपनी पड़ोसन के घर चली गई थी.

बातों में पता ही न चला कि कब शाम हुई. घर लौटी तो देखा सुमित के हाथ की लिखी हुई एक चिट ताले से लगी हुई थी, "तुम अपना रवैया बदलने को तैयार नहीं हो. मैं भी मजबूर हो कर कहीं घूमने जा रहा हूं. लौटने में देर हो जाएगी. इंतजार न करना."

चिट पढ़ कर ताला खोलने का साहस जाता रहा था. किसी तरह कांपते हाथों से ताला खोला था.

'पता नहीं क्यों सुमित को यह वहम लगा रहता है कि हर रोज मैं अपने मायके ही गई रहती हूं? क्या हर समय घर में ही बंद रहूं? न जाने सुमित को क्या होता जा रहा है? जितना ही मैं झुकने की कोशिश करती हूं, वह अकड़ते जाते हैं.

'अब मैं भी नहीं बोलूंगी आज. यह भी कोई बात हुई भला? जहां सहज विश्वास न हो वहां संबंध भी सहज कैसे रह सकते हैं?'

रात काफी देर बाद सुमित घर लौटे थे. मैं ने दरवाजा खोला किंतु दोनों में से किसी ने भी कोई बात न की थी. मैं ने उड़ती निगाह से देखा कि सुमित के हाथ में एक जलती हुई सिगरेट दबी थी. 'तो क्या सुमित सिगरेट भी पीने लगे?'

एक बार मन किया कि सुमित से पूछूं, "क्यों चले गए थे? कहां चले गए थे? सिगरेट क्यों पी रहे हो?" किंतु सब सवाल अहं की झाड़ी में फंस कर रह गए थे?

जब सुमित कपड़े बदल कर बिस्तर पर जा लेटे तो मैं भी चुपचाप लेट गई थी. मारे गुस्से के उस दिन मैं ने खाना भी नहीं बनाया था. करवट बदल कर लेटने से दूरी और बढ़ गई थी.

उस के बाद सुमित अनजाने ही मुझ से कटते गए थे. मैं भी सुमित से वह प्यार भरी बातें न कर पाती जो शादी से पहले किया करती थी. बचपन की जिद्दी मैं और जिद्दी हो गई थी.

अब मैं चाहती थी कि कोई ऐसी बात की जाए जिस से सुमित चिढ़ें. उन्हें चिढ़ाने में मुझे न जाने कैसी तृप्ति मिलती थी. और इस का सब से बढ़िया तरीका था शाम को सुमित के काम पर से लौटने

जेबतराशी

पिता ने अपने बेटे के गाल पर चांटा मारा तो वह रोता हुआ मां के पास गया. मां ने उसे चुप कराते हुए पति से मारने का कारण पूछा, तो पति ने कहा, "इस ने मेरी जेब से पैसे निकाले हैं."

पत्नी बोली, "हो सकता है, पैसे मैं ने निकाले हों?"

पति (दोबारा जेब में हाथ डालते हुए) : "नहीं, यह तुम्हारा काम नहीं हो सकता क्योंकि मेरी जेब में नोट अभी बाकी हैं."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर मैं घर में न होऊं.

कभी अपनी किसी सहेली के यहां चली जाती थी, कभी पड़ोसियों के यहां और कभी मां के यहां हो आती थी. जब शाम के छः बज जाते तो सुमित को चिढ़ाती सी मैं घर में दाखिल होती थी.

सुमित बाहर के ताले की चाबी अपने पास रखते थे, इसलिए मुझे कोई चिंता नहीं थी. देर से लौटने पर मैं कोई कैफियत न देती. हम दोनों के बीच की दरार बढ़ती ही गई थी. कभीकभी मेरा जी चाहता कि मेरे देर से लौटने पर मुझे डांटें, फटकारें, दिन भर की कैफियत पूछें कि कहां गई थी, क्यों गई थी, आज दिन भर क्या किया, क्या बनाया और क्या खाया?

किंतु सुमित कुछ न पूछते थे तो मैं और चिढ़ जाती थी. पहले खाना परोसते, नहाते, तैयार होते, कभी बात हो जाती थी. पर इधर तीनचार रोज से सुमित मुझ से बिलकुल नहीं बोले थे. अब जब मैं लौटती तो सुमित घर में नहीं मिलते थे, रात देर से वापस आते और तब तक मैं सो चुकी होती थी.

इसी प्रकार बंधाबंधाया क्रम चल रहा था कि आज की घटना से तो मानो सोते से जाग गई.

शाम को काम निपटा कर मैं सोचने लगी कि आज कहां जाया जाए. क्योंकि अब मेरा मन मायके जाने का भी नहीं करता था. रोजरोज पड़ोस और सहेलियों के यहां भी मन उकताने लगा था. वैसे तो वक्त काटने के लिए ढेरों काम किए जा सकते थे, पर उन में मेरा मन न लगता था.

अभी मैं अपने जाने के बारे में सोच ही रही थी कि मेरी वही पुरानी सहेली रंजना आ गई उसे देखते ही मेरा मुंह खुला का खुला ही रह गया. कई दिनों बाद उस से मिल रही थी किंतु सदा का खिला रहने वाला चेहरा आज बिलकुल उखड़ा सा था. बाल भी बिखर रहे थे, माथे पर छोटी सी पट्टी बंधी थी. मैं ने उसे प्या से बैठक में बिठाया और उड़े सहमे चे पर निगाह टिकाई तो पाया कि रंज बिलकुल रोने ही वाली है.

मेरी सहानुभूति पा कर वह बिल उठी, बहुत देर तक वह रोती रही. हैरान सी उसे देखे जा रही थी.

कुछ हलके होने पर हिचकियों बीच उस ने बताया, "अनीता, मैं कहीं न रही. मेरे पति बहुत दिनों से मुझ कटेकटे रहते थे. काम पूरा न होने मुझे डांटतेडपटते भी थे, मैं समझती रही कि डांटते हैं तो प्यार भी करते हैं, किंतु अंदर ही अंदर उन की क्या खिचड़ी पक रही थी, मैं समझ न सकी.

"अब एक लड़की को घर पर लाने लगे हैं. मैं कुछ कहने के लिए मुंह खोलती हूं तो मारने को दौड़ते हैं. मुझे कल बहुत मारा. अब तू ही मुझे कोई रास्ता दिखा, अनीता, मैं क्या करूं?"

कह कर रंजना फिर रोने लगी. उस की बात सुन कर मेरे होश ही उड़ गए. मैं उसे क्या रास्ता दिखा सकती थी जब कि रंजना स्वयं ही इतनी सहनशील और पतिव्रता थी और मैं स्वयं रास्ता भूली हुई थी.

मुझे लगने लगा कि मेरी लापरवाहियों का भी यही अंजाम होने वाला है. मैं ने जैसेतैसे समझाबुझा कर चाय पिला कर रंजना को विदा किया और अपनी गृहस्थी की डूबती नाव को संभालने के लिए मन प्राण से तैयार होने लगी.

रुख्सत

जाने तुम ने कैसा दिल पाया है हुजूर
सुना है मुहब्बत में पत्थर पिघलते हैं
कोई तो बता दे यह माजरा क्या है
वादे रुख्सत वो खुद ही मचलते हैं

—मजबूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घड़ी में देखा तो रात के दो बज रहे थे. ओह! तो सुमित अभी तक नहीं आए. कहां चले गए आखिर?

आज जब से रंजना गई है मैं किस कदर सुमित का इंतजार कर रही हूं. पर लगता है फैक्टरी से सीधे ही कहीं चले गए हैं.

तो क्या रोज ऐसे ही करते हैं? सुमित भी मेरी लापरवाहियों के कारण कहीं और तो नहीं उलझ गए?

ओह नहीं. यह विचार ही कितना बुरा लगता है. मेरे सुमित ऐसे नहीं. मैं ही उन से कटती रही. उन्होंने तो कई बार मुझे प्यार से समझाया.

रंजना के पति और सुमित की तुलना करतेकरते सुमित पर मुझे प्यार आने लगा. मेरे सुमित क्या पहले वाले सुमित रह गए हैं. गोरा गुलाबी चेहरा कैसा सांवला सा हो गया है? अपनी उदासीनता पर मुझे गुस्सा आने लगा.

अब जो मायके की धनदौलत है उस पर मेरा अधिकार कहां? क्या उसी के बूते पर मैं सोने से पति की अवहेलना करती रही?

बेचारे मेरी ही उदासीनता से उद्विग्न रहते थे. तीनचार रोज से तो बिल्कुल बोलते ही न थे.

किंतु अब मैं अपने को बदलूंगी, बदलना ही होगा. सुमित के बगैर मैं रह भी तो नहीं सकती. मन का एक कोना अभी सुमित को कितना प्यार करता है.

आज सुमित ठीकठाक घर आए तो

मैं अब तक की अपनी सारी गलतियों के लिए क्षमा मांग लूंगी. बगैर बताए घर से चले जाने की आदत तो मैं ने ही उन्हें डाली है. यह सोच कर मेरे रोएं खड़े हो गए कि कहीं सुमित किसी दुर्घटना के शिकार तो नहीं हो गए? और मैं उतावली सी हो बिस्तर छोड़ कर उठ खड़ी हुई.

तभी घर के आगे एक रिक्शा आ कर रुका. सुमित ही थे. आंखों के लाल डोरे देख मैं सहम गई. तो क्या सुमित पीने भी लगे?

सहारा दे कर सुमित को मैं ने उतारा. बिस्तर पर ला कर लिटाया. जूते खोले.

मेरा बदला सा रूप देख कर सुमित आंखें झपका कर बोले, "कौन हो तुम? यहां क्या कर रही हो? अनीता तो कहीं घूमने गई होगी?"

सुमित की बहकीबहकी बातें सुन कर मुझे रुलाई छूटने लगी. बोली, "सुमित, मैं ही हूं तुम्हारी अनीता, सिर्फ तुम्हारी ही."

इतना कह कर मैं सुमित का चेहरा देखने लगी. सुमित मुझे कुछ पहचानते हुए से देखने लगे.

फिर मुंह फेर कर बोले, "नहीं, इस दुनिया में मेरी कभी कोई अनीता नहीं रही. मेरी कोई अनीता नहीं रही... कोई अनीता नहीं है."

नशे में उन्हें जिद सी चढ़ गई थी और यही बात बारबार बोले जा रहे थे. मैं ने देखा कि इस हालत में उन से बात करना बेकार है. इसलिए विषय बदलने के लिए मैं ने उन के पास जा कर कहा, "चलिए, खाना खा कर आराम कर लीजिए."

तभी तेजी से एक झन्नाटेदार थप्पड़ आ कर मेरे मुंह पर पड़ा. फिर लगातार अपने दोनों हाथों से सुमित मुझे पीटने लगे, "तुम ने सुना नहीं, मैं ने क्या कहा था! तुम ने सुना नहीं..." पिटतेपिटते अचानक उन के धक्के से मैं गिर पड़ी. मुझे पिटने का कोई शोक नहीं हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा था, बल्कि मुझ से सुमित के मन का दुख नहीं देखा जा रहा था जो मैं ने ही उस को दिया था. मैं ने आगे बढ़ कर उन के पांव कस कर पकड़ लिए. "चाहे मुझे जान से मार डालो, सुमित, लेकिन तुम शांत हो जाओ. अब अपनेआप को और मत जलाओ."

सचमुच सुमित का उठा हुआ हाथ रुक गया. उन्होंने मुझे एक बार देखा और एकदम मुंह दूसरी ओर फेर लिया. मैं पांव छोड़ कर उन के सामने आई तो... यह क्या? सुमित एकटक दीवार को देख रहे थे और आंखों से आंसू झर रहे थे. मेरा कलेजा मुंह को आने लगा. मैं ने कहा, "यदि आप मुझे माफ नहीं कर सकते तो मेरा गला घोंट दीजिए. मुझे अपने कसूर की सजा मिलनी ही चाहिए."

जैसे ही मैं ने सुमित के हाथों को थामा उन्होंने आवेग से मुझे अपने से लगा लिया और रुंधे हुए गले से "क्या तुम सिर्फ मेरी बन कर नहीं रह सकती? क्यों मुझ से दूरदूर रहती हो मुझे यह सब..."

अचानक उन की आवाज भरे गले में फंस गई.

और मैं उमड़ आए आंसुओं को रोकने की कोशिश करती हुई बोली, "नहीं, सुमित, अब तक जो हुआ सो हुआ. इस के लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूं. आज कल से हम नए सिरे से अपनी जिंदगी शुरू करेंगे. उस में तुम सिर्फ मेरे रहना और मैं नई जिंदगी के आने वाले कल की मधुर कल्पनाओं में खोती हुई सुमित के बालों में हाथ फेरने लगी.

छुईमुई हो गई...

एक दुलहन नई
लाज से
छुईमुई हो गई.

छिपी थी घूंघट में
कमल की कलियों सी आंखें.
प्यार से
प्रियतम की अंगुली
चिबुक छू गई,
सिहरन हुई
सुधबुध सब
खो गई.

कितना पास खींचा
अधरों में मधु सींचा.
किंतु खुली नहीं पलक पांखें
सिमटी सकुचाई वह

बिसुध हो रह गई.
एक दुलहन नई.

—तेजनारायण काक

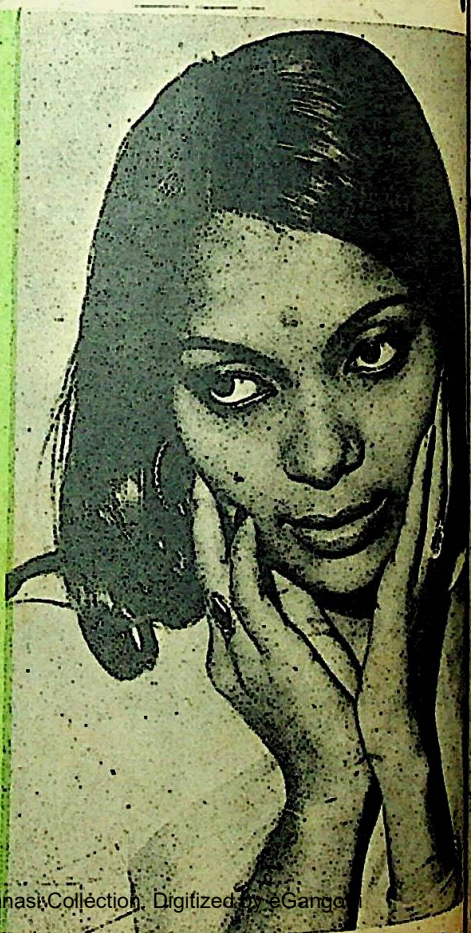

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शीला सिंह,
सेक्टर २१,
चंडीगढ़

प्रिय बिनाका,

मेरा रंग गोरा है। लेकिन जबसे मुझे यह नयी नौकरी मिली है जिसकी वजह से मुझे दिन में ज्यादा तर बाहर रहना पड़ता है, मैंने गौर किया है कि मेरी त्वचा सांवली पड़ती जा रही है और मेरे असली गोरे रंग के मुकाबले अंतर साफ़ दिखाई पड़ता है। क्या आप एक आसान और प्रभावशाली सुलाज बता सकती है ?

भवदीय,
शीला सिंह
(शीला सिंह)

सुन्दरता का इतना खूबसूरत राज़ जिसमें आप अपनी बेटी को भी हमराज़ बनाना चाहेंगी।

आपकी त्वचा की कड़ी धूप और शहर की धूल मिट्टी से बचाव की आवश्यकता है। घर से बाहर निकलने के पहले अपने चेहरे पर बिनाका वैनिशिंग क्रीम लगाइये। यह तेज़ धूप तथा धूल-मिट्टी से आपकी त्वचा की रक्षा करती है और दिन-भर उसे मुलायम रखती है।

जब आप अपना काम करती रहती हैं, यह भी अपना कमाल दिखाती रहती है। और आपका असली साफ़ रंग बनाये रखने में सहायक है। बिनाका वैनिशिंग क्रीम एक आदर्श मेक-अप बेस भी है और चिकनाहटवाली त्वचा को भी एक मुलायम, चिकनाहट-रहित रंगत में बदल देती है। आप ज़्यादा ताज़ी, ज्यादा जवान दिखती हैं। इसलिये बिनाका वैनिशिंग क्रीम रोज इस्तेमाल करने की आदत डालिये, विशेषरूप से जब आपको बाहर जाना हो।

बिनाका® वैनिशिंग क्रीम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Rediffusion/CV/520HN

आधा चित्र

भैया के लिए चंपा के मन में जो शक बैठ गया उसे वह जीवन भर हटा न सकी. मन की अदालत में भी वह उन्हें माफ न कर सकी...

वह दरवाजे के पास आ कर रुक गई थी. एक क्षण उन बंद किवाड़ों को देखा. महसूस किया कि हृदय की धड़कन कुछ तेज हो गई है. चेहरे पर शायद कोई भाव हलकी छाया ले कर आया. एक विषाद की रेखा खिंची और आंखें कुछ नम हो गईं. साड़ी का पल्लू संभालते हुए हाथ घंटी के बटन पर गया तो उस में थोड़ा कंपन स्पष्ट झलक रहा था. जब तक रीता ने आ कर द्वार खोला, उसे कुछ क्षण मिल गए अपने को संभालने के लिए, "अरे चंपा दीदी आप!" आश्चर्य से रीता की आंखें खुली रह गईं.

"हां, मैं ही हूं. क्यों यकीन नहीं हो रहा?"

"यह बात नहीं, पर आप के इधर आने की आशा नहीं थी."

"आशा. . ." चंपा आगे नहीं बोली.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • देवीलाल माथुर

जैसे शब्द अटक गए हैं.
रीतों चल कर ड्राइंग रूम में आ गईं.
में कालीन में उस का पांव उलझा.
रीता ने सहारा दे दिया. उस से लगे
के से स्मृति की एक खिड़की सहसा
गई. उस दिन भी इसी तरह सूने
में घंटी पर रवि ने दरवाजा
था और अपनी बांहों का सहारा
कर वह जब उसे ड्राइंग रूम में
या तो चंपा का पांव कालीन में
गया था. वह गिर ही पड़ती कि
ने उसे संभाल लिया था. 'बस,
रह संभाले रहना.' उस के यही
दे जिस पर रवि ने गरदन हिला-
कर स्वीकृति दी थी और उसे
बल किया था. उसे सोफे पर बैठा
रवि ने अपलक निःशब्द उसे कितनी
र तक निहार कर कहा था, "तुम्हें
र देखने की इच्छा कई बार हुई
न में एक विचित्र से आनंद
नुभव होता है, सच."

चंपा को लगा बीसबाईस वर्ष बाद रीता उसी घटना को दोहरा रही है और वह उस की चुप्पी और सूनी खाली नजरों को सहन नहीं कर पा रही है. "क्या बात है, रीता? इतनी अजनबी तो मत बनो कि मुझे डर लगे."

"नहीं दीदी, यह बात नहीं. बहुत दिनों से आप को देखा नहीं न, वही कसर पूरी कर रही थी." फिर थोड़ा हंस कर बोली, "वैसे बीसबाईस वर्ष अजनबी बनने के लिए काफी होते हैं. लोग सब कुछ भूल जाते हैं और दुनिया भी बदल जाती है."

"नहीं, रीता, कोई कुछ नहीं भूलता. सिर्फ याद का एहसास नहीं करा पाता और इस विवशता से सब जीते हैं. उस से

"वे कौन से संस्कार होते हैं जो दो प्राणियों को इस तरह जोड़ देते हैं?" चंपा रवि के कंधे पर सिर रखे उस की धड़कनें महसूस करती रही.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ लाभ नहीं मिलता सिवा मानसिक अशांति के," चंपा बोली.

"अच्छा, दीदी, घर पर सब कैसे हैं?"

"पहले चाय या काफी तो पिलाओ, बातें फिर कर लेंगे." वह हंसी.

"ओह सारी, यह तो मुझे ध्यान ही नहीं रहा." और रीता हंसती हुई उठ कर चली गई.

चंपा थोड़ी राहत महसूस करने लगी. जाने क्यों वातावरण में उसे एक बोझिलपन महसूस होने लगा था. वह उठ कर सामने के कमरे की ओर बढ़ने लगी. विचारों की कड़ियां जुड़ती चलीं गईं. बीस वर्ष बाद वह इस घर में आई है. जीवन का सारा काम ही तब से जाने कैसा हो गया था. ऐसा लगता कि मन की भीतरी तहों में दबी सारी कोमल भावनाएं समाप्त सी हो गई हैं. वर्तमान की चढ़ती परत अतीत को धीरेधीरे दबा गई थीं. रवि संसार से उठ गया था और भैया भी. केवल उन से छुई स्मृतियां ही शेष रह गई थीं.

रवि के साथ जीवन को जोड़ने का सपना सहसा टूट गया था. घटनाएं रहस्य के आवरण में धुंधलाती गई थीं. प्रभात के साथ जीवन चलने लगा---इच्छा-अनिच्छा से अभी भी चल ही रहा है. उन एकदो वर्षों में जो जीवन उसे जीना था उस की मीठी महक को संजो कर रखने की कामना के बावजूद उस ने उसे भूलना चाहा था. वह अपनेआप से लड़ती भी रही कि बीते हुए उन क्षणों से अपना नाता तोड़ ले और नए तानेबाने में अपने को खपा कर सब कुछ भुला दे, पर वह ऊपरी तौर पर ही अपने को समर्थ बना सकी थी, भीतर की आग बुझी नहीं. बीस बरस के अंतराल के बाद भी नहीं.

आज ज्वालामुखी की तरह धधक उठने की प्रतीति से ही वह आश्चर्यचकित हो सिहर उठी थी. क्या बीस वर्ष बाद भी ऐसा लग सकता है कि घटनाएं अभीअभी बीती हैं—जैसे वह [illegible] में कलपरसों ही आ कर गई है. [illegible] रवि कमरे का दरवाजा खोल कर [illegible] जाएगा. उस की आंखें भर [illegible] भारी कदमों से कमरे की ओर [illegible]

कोई खास परिवर्तन नहीं [illegible] छोटी मेज पर वह तसवीर उसी [illegible] वैसी ही थी. कागज पुराना हो [illegible] पर रवि का चेहरा उतनी ही [illegible] पूर्ण था. जनता पार्क के फव्वारे [illegible] उस ने रवि के साथ यह फोटो [illegible] था. रवि की बांह उस की बांह [illegible] गई थी और चंपा की साड़ी [illegible] उस की पेंट पर गया था. ठीक बीच [illegible] रवि ने तसवीर को काटा था [illegible] उस की बांह का भाग रह गया [illegible] उस की साड़ी का आंचल रह गया [illegible] वाक्य कमरे में फिर प्रतिध्वनित [illegible] "तुम्हारा आंचल थामा है चंपा [illegible] बाहों का सहारा दिया है. अपने [illegible] दिन इसे फिर जोड़ कर एक [illegible] वह कितनी देर तक रवि के [illegible] दिए सपनों की दुनिया में [illegible] उस दिन.

उन्होंने एम. ए. में साथ [illegible] किया था भाषा विज्ञान के [illegible] प्रोफेसर के कमरे में अकसर [illegible] चंपा साथ बैठते. कभी उन [illegible] कुहनी छू जाती और कभी [illegible] की प्रतिक्रिया दोनों ओर [illegible] फिर धीरेधीरे यह अच्छा [illegible] तभी रवि चंपा के बड़े भैया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर तो उस का चंपा के घर में आनाजाना होने लगा. सुंदर से ...ता बढ़ने के साथसाथ चंपा से भी ...से संबंध विकसित होते चले गए. ...पहले से अधिक भावुक और गंभीर ...लगी. अधिक एकांत प्रिय और खोई-...सी दिखाई देने लगी.

...अपने में आए इस परिवर्तन से चंपा ...भी असुविधा महसूस करने लगी ...कि उस का संपर्क का दायरा सिमट कर ...पर और रवि पर केंद्रित हो गया था. ...में रवि के वाक्य ही प्रतिध्वनित होते ...थे, जिन्होंने सपनों की एक दुनिया ...दी थी. "वे कौन से संस्कार होते ...जो दो प्राणियों को इस तरह जोड़ देते ...दूसरे के बिना जीवन निरर्थक लगने ...है—तुम्हें मेरे साथ देख कर तो ...की नजर न लगेगी, सच, इसी लिए ...उस चित्र के दो भाग कर दिए. नजर ...जाएगी—" रवि के कंधे पर सिर ...घंटों उस के हृदय की धड़कन को ...करती रही—उस की धड़कन ...एक ही आवाज निकलती रही—...चंपा...चंपा.

...क्षण उसे आज भी याद हैं जैसे ...सामने बालसमंद झील का नीला ...बुड़ी पहाड़ियों की युवा चट्टानों से ...लियां कर रहा था. रहरह कर मछ-...छपाक से छलांग लगातीं और पेट ...शनी में चमक कर विलीन हो जातीं. ...की सारी सतह पर चलने वाला यह दृश्य किसी नव वधू की चुनरी में चमकने वाले सितारों की झिलमिल सा लग रहा था. बांध पर बने महल के सामने बड़े प्लेट फार्म पर बेंचें लगी हुई थीं. चंपा का हाथ रवि के हाथ में था. उसे सहलातेसहलाते ही उस ने कहा था, "चंपा, समय ठहर क्यों नहीं जाता है?"

चंपा ने एक बहुत ही मधुर दृष्टि से उसे देख कर दूसरे हाथ की अंगुली उस के होंठों पर रख दी थी, "नहीं, रवि, समय के ठहरने की कामना मत करो. ठहराव में जीवन नहीं होता शून्य होता है और शून्य—नहीं, वहां कुछ नहीं होता."

रवि हंस पड़ा था, "साहित्य का अध्ययन करतेकरते तुम दार्शनिक भी हो गई हो."

न जाने ऐसे कितने दृश्य खंड समय की भित्ती पर बनते गए और अपनी स्मृतियां मानस पटल पर छोड़ते गए. बीते हुए एकएक क्षण की स्मृति में जीने में इतना ही समय फिर बीत जाएगा और जब इन क्षणों का अंत आएगा तब—? क्या फिर से उस अंत को झेला जा सकता है? क्या कभी कोई ऐसी सामर्थ्य जुटा पाएगा—जीवन के कटु और यथार्थ सत्य को फिर से जी सकने की, उस का सामना करने की? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता—इसी लिए जीवन की नियति ऐसी नहीं हुई. चलते-चलते ही जीवन की दिशा और धारा मुड़ जाती हैं या अवरुद्ध हो जाती हैं. हम कल्पना भी नहीं कर पाते कि सत्य घटित होने लगता है.

चंपा के जीवन के सामने कब प्रश्न चिह्न लग गया, उसे भान भी नहीं हुआ. घर के वातावरण में एक सरसराहट होने लगी. कुछ सामान्य से हट कर हो रहा है जो चंपा की जानकारी से दूर है. मां, बाबूजी और भैया की मंत्रणाएं होने लगीं. तब आशय उस की समझ में आ गया. मां ने उस की जिज्ञासा अधिक नहीं रखी. उदयपुर का एक इंजीनियर लड़का उस के लिए देखा जा रहा है. उस ने मां से रोष

समझ

...ते थे जहां में हैं हमीं हम,
...आई तो समझे, कुछ नहीं हम.
...आंख से देखो तो समझो,
...हैं तुम्हें कितना हसीं हम.
—जैमिनी 'सरशार'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भरे आश्चर्य से कहा, "मेरी शादी और मुझ से कुछ कहा तक नहीं."

"कुछ निश्चित होता तभी तो कहती."

"तो निश्चित होने के बाद कहा जा रहा है. पर मां, सिर्फ कहना ही तो काफी नहीं, पूछना भी तो होता है."

"चंपा, इस घर की यह परंपरा नहीं रही है."

"जानती हूं, परंपरा तो नई अब होगी. मैं उस से शादी नहीं करूंगी."

"चंपा."

"हां, मां, मैं उस से शादी नहीं करूंगी." जब उस ने दोहराया तो मां का गुस्सा भड़क उठा.

"फिर किस से करेगी? मैं भी तो सुनूं."

"शायद घर में सब को इस का अंदाज हो गया होगा."

"चंपा." मां ने सिर्फ उस का हाथ कस कर पकड़ लिया, "तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है. जातपांत, समाज का कोई खयाल ही नहीं है?"

पर चंपा हाथ छुड़ा कर कमरे में चली गई.

घर में सहसा ही ताव व्याप्त गया. शाम को सुंदर के सामने रोरो कर मां ने अपने मन की व्यथा कह सुनाई. बाबूजी को सब कुछ नहीं बताया गया. सुंदर इस समस्या को हल करने की चेष्टा करने लगा. उसे विश्वास था वह चंपा को समझा देगा और नहीं मानेगी तो थोड़ी डांटफटकार भी कर लेगा. मन से वह भी इसे स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि चंपा पराई जाति के लड़के रवि से ब्याह करे. वह जानता था, कालिज के जीवन में प्रेम प्यार के प्रसंग बन ही जाते हैं पर...

"भैया, क्या तुम भी मेरी स्थिति को नहीं समझ सकते? मां और बाबूजी पुराने संस्कारों से बंधे हैं पर अब तो सारा जमाना नई हवा में नई परंपराएं स्थापित कर रहा है. हम पढ़ेलिखे कर भी क्या नए विचार नहीं अपनाएंगे?

"चंपा." सुंदर ने समझाना "मैं बिना तुम्हारे कहे सब जानता भी मानता हूं कि रवि के सिवा कोई पसंद नहीं हो सकती. पर संभव है? वह हमारी जाति का

"क्या उस के दूसरी जाति जैसी छोटी सी बात ही

"तुम इसे छोटी बात मानती

"भैया, इस बाधा का जमाना रहा. उस में कोई कमी नहीं है."

"चंपा..." सुंदर ने फिर

"आज समाज में इस घर की है वह इस रिश्ते के होते ही जाएगी, यह तुम ने सोचा है? होगा भी तो प्रेमविवाह अंतर्जातीय कम. मैं सच कहता तालमेल बैठाना तुम्हारे लिए होगा. तुम एक साथ दोनों कट जाओगी. मां और बाबूजी तुम्हें कितना स्नेह दे सकेंगे? में तुम कितना प्यार पा सकोगी? कल्पना कर के देखो तो सही."

चंपा ने सिर्फ भैया को कुछ नहीं. सुंदर ही आगे बोला "व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के सारे ही पहलुओं पर दिल से सोचने की जरूरत है, में कुछ भी निर्णय ठीक से नहीं सकता. फिर सभी महापुरुषों ने है कि प्रेम अमर होता है—किसी अमर होने की बात नहीं उस का महत्त्व नहीं है." शब्दों पर जोर दे कर वह कमरे चला गया.

चंपा सब कुछ सोच कर बात नहीं मान सकती. किसी ब्याह करने की कल्पना तक उस में नहीं आ पाती थी. घर के में उसे एक अजीब सा खिंचाव का भाव महसूस होता जा एहसास करा रहा था मानो घर की इच्छा के विरुद्ध बहुत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डोरा ब्रा

पूर्ण नारीत्व के लिये

डोरा ब्रा। सुखद स्पर्श और बढ़िया बनावट। आपको अत्याधिक आकर्षक बनाने के लिए डोरा ब्रा। बेहतरीन मर्सराइज्ड कपड़े व इम्पोर्टिड रबर इलास्टिक से तैयार की जाती है। इसकी सिलाई आयातित मशीनों पर की जाती है। डोरा ब्रा आपको पूर्ण संतोष देने के लिए वचनबद्ध है।

एच० पी० टेक्सटाइल मिल्स

IMPACT

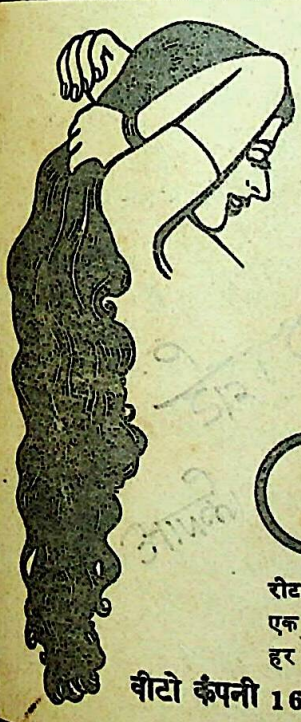

आपके बालों को जरूरत है "रीटा" द्वारा देखभाल की

रीटा बालों को सँवारने का एक उत्तम साधन है, जो बहुत ही गाढ़ा और मोहक सुगंधवाला है। इससे बाल नैसर्गिक रूप से घने बढ़ते हैं और यह दिमाग को ठंडक पहुँचाता है।

"रीटा" स्त्री व पुरुष दोनों के लिए श्रेष्ठ तेल है।

रीटा

रीटा से बाल सुंदर बढ़ते हैं।
एक शीशी आज ही खरीदिये।
हर जगह मिलता है।

वीटो कैंपनी 16, जोन्स स्ट्रीट, मद्रास 600001

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना

मौलिक उपन्यास प्रतियोगिता

सर्वश्रेष्ठ उपन्यास पर 10,000 रुपए का पुरस्कार

सरिता ने सदैव ही प्रेरक और सार्थक साहित्य को नई दिशा दी है और प्रतिभाशाली कथाकारों को अपना स्थान बनाने का अवसर दिया है. इसी अभियान के अंतर्गत मौलिक हिंदी उपन्यास आमंत्रित हैं.

नियम एवं शर्तें :

1. उपन्यास सर्वथा मौलिक, अप्रकाशित और अप्रसारित होने चाहिए. प्रकाशित उपन्यासों पर विचार नहीं किया जाएगा.

2. उपन्यास राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति की प्रगति व चरित्र निर्माण में सहायक होना चाहिए. कथानक उद्देश्यपूर्ण हो, मनोरंजक हो और प्रेरणादायक हो तथा पाठकों को कुछ सोचनेसमझने तथा अपने परिवार, समाज व देश के प्रति कर्त्तव्य निभाने की प्रेरणा दे सके. असफल प्रेम, जासूसी, तस्करी, मारधाड़, वेश्यावृत्ति आदि पर आधारित उपन्यासों पर विचार नहीं किया जाएगा.

3. पांडुलिपि फुलस्केप आकार के कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर टाइप की हुई होनी चाहिए. शब्द संख्या पर कोई प्रतिबंध नहीं है, पर अनावश्यक रूप से लंबे विवरण नहीं होने चाहिए.

4. पुरस्कार योजना के लिए भेजे गए उपन्यास को निर्णय घोषित होने तक कहीं और विचारार्थ नहीं भेजा जाना चाहिए.

5. सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार को 10,000 रुपए के पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा.

6. अन्य उपन्यासों को भी उन के स्तर के अनुसार उपयुक्त पुरस्कार/पारिश्रमिक दिया जा सकता है.

7. पुरस्कृत उपन्यासों के सर्वाधिकार (कापी राइट) सरिता के पास सुरक्षित रहेंगे.

8. रचनाओं के संबंध में सरिता संपादक मंडल का निर्णय अंतिम और मान्य होगा.

9. यद्यपि पांडुलिपि की यथासंभव देखभाल की जाएगी, फिर भी कार्यालय किसी रचना के खो जाने, फट जाने या नष्ट हो जाने अथवा लेखक या उस की कृति को किसी तरह की हानि पहुंचाने के लिए उत्तरदायी नहीं होगा.

10. असफल पांडुलिपियों की वापसी के लिए पांडुलिपि के साथ ही पर्याप्त डाक टिकट आने आवश्यक हैं अन्यथा उन्हें वापस नहीं किया जाएगा.

11. प्रतियोगिता के लिए भेजे गए उपन्यासों के संबंध में पत्रव्यवहार करना संभव नहीं होगा.

12. प्रत्येक पांडुलिपि के साथ यह प्रमाणपत्र आना आवश्यक है कि वह लेखक की मौलिक रचना है, किसी अन्य रचना पर आधारित नहीं है और पहले कहीं किसी भी रूप में प्रकाशित, प्रसारित नहीं हुई है तथा लेखक को रचना के विषय में सरिता संपादक मंडल का निर्णय स्वीकार होगा. पांडुलिपि के साथ पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ सहित उपन्यासकार का संक्षिप्त परिचय आना भी आवश्यक है.

अपनी पांडुलिपियां 30 जून 1978 तक निम्न पते पर भेजें :

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना,
दिल्ली प्रेस भवन, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

कर डाला हो. भैया से अगली बहस में उस ने जीवन का अंत करना अधिक उपयुक्त मान लिया था. उसे इस सीमा तक हठी देख सुंदर को बहुत क्रोध आया था, पर उस ने हंस कर इतना ही कहा, "नहीं, चंपा, तुम्हें जान देने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी."

घर के तनाव में थोड़ी ढील महसूस होने लगी, जैसे प्रसंग टल गया हो. सुंदर भी पहले की अपेक्षा कम खिंचा हुआ सा रहने लगा. पर न अब रवि आता और न चंपा ही बाहर जाती थी. चंपा कोई जिद

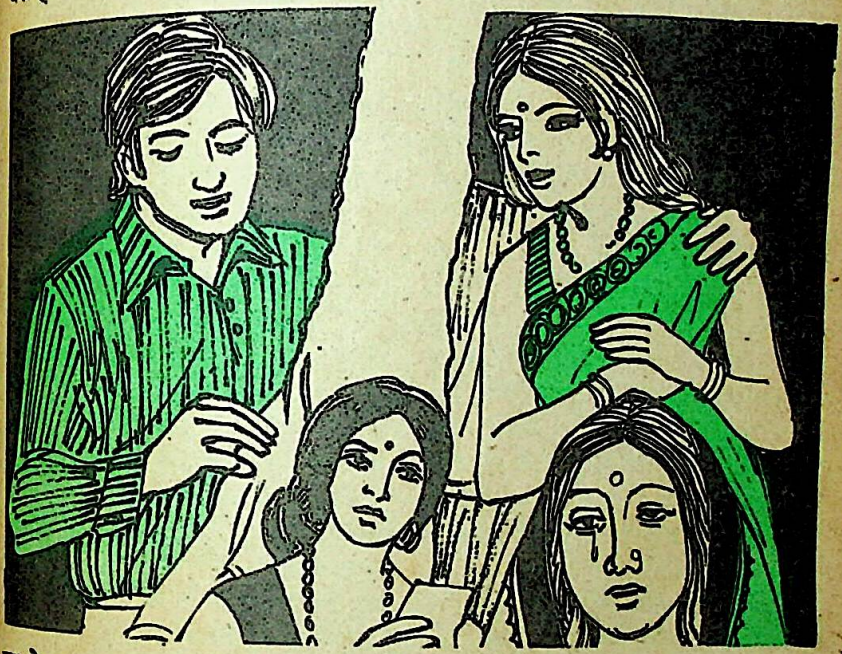

कर के तनाव बढ़ाना नहीं चाहती थी. फिर भी एक बहुत ही उच्च स्तरीय कूटनीति के सहारे घर के सभी सदस्य एकदूसरे के साथ जी रहे थे. रहस्य की एक परत चारों ओर छाई रहती.

तभी सहसा एक दिन संध्या को समाचार मिला कि रवि सख्त बीमार है और उसे अस्पताल में भरती किया गया है. मां-बाप के मनाह करने पर भी चंपा सीधे अस्पताल पहुंची. देखा इमरजेंसी वार्ड में उसे आक्सीजन और ग्लूकोज दिया जा रहा है. रवि का रंग नीला पड़ गया है. होश में आने के लिए छटपटा रहा है. चारों ओर भीड़ में विचित्र सी चर्चा थी. मामला जहर का माना जा रहा था. रवि किसी डिनर पार्टी में गया था. सुबह उठा तब ठीक था. नित्य कर्मों से निपटा और दस बजे के आसपास पेट में मरोड़ उठी और उल्टीदस्त शुरू हो गए. जब बंद नहीं हुए तो अस्पताल लाया गया.

नाखूनों का रंग बदल गया था. डाक्टरों ने पुलिस को इत्तला करनी चाही पर सुंदर ने समय पर पहुंच कर अपने मित्र विकटर प्राणनाथ की सहायता से केस बनाने का मामला रुकवा दिया. यह पता नहीं चल

"जब सुनो कि चंपा दीदी नहीं रहीं तो इस आधी तसवीर से उसे जोड़ देना..." चंपा ने रुंधे हुए गले से रीता से कहा.

पा रहा था कि जहर उसे किसी दूसरे ने दिया या उस ने स्वयं लिया था. रवि बेहोश था और हालत नाजुक थी.

चंपा के पांव तले से धरती खिसकती जा रही थी. एकएक क्षण काटे नहीं कट रहा था. वह समझ नहीं पा रही थी कि ऐसा क्यों और कैसे हो गया. फिर सहसा बिजली की तरह मस्तिष्क में विचार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कौंधा. कल संध्या को सुंदर भी तो उस पार्टी में गया था. फिर तबीयत इन्हीं की क्यों खराब हुई ? बहुत रात गए वह लौट आई. डाक्टर पूरी रात रवि को बचाने का प्रयत्न करते रहे पर सुबह होतेहोते वे हार गए. दाहसंस्कार बिना किसी विलंब के तुरंत कर दिया गया. चंपा गुमसुम सी कमरे में बैठी रही. न बोल सकी और न रो सकी. रहरह कर कुछ बातें मस्तिष्क की सूनी दीवारों से टकरा जातीं और उन के केंद्र में सुंदर भैया आ जाते.

"तुम्हें जान देने की जरूरत नहीं पड़ेगी." कोई महीने भर पहले उन्होंने कहा था—फिर पार्टी में सुंदर के साथ रवि का होना उस की उलझन बढ़ा रहा था. वहां क्या हुआ ? क्या भैया से कोई बहस हुई ? क्या भैया ने उसे मेरा ख्याल छोड़ने की धमकी दी ? क्या इसी लिए उस ने आत्महत्या कर ली कि मुझे नहीं पा सकता था ? एक बार उस ने कहा भी था, "तुम्हारे बिना नहीं जी सकता, चंपा." क्या यह स्थिति उस ने मान ली थी कि बिना उस से पूछे ? या...उसे...नहीं... नहीं... कौन कर सकता है यह काम.... क्या भैया..."नहीं...नहीं..." वह जोर से चीखी. मां हड़बड़ा कर कमरे में आई. देखा वह बेहोश हो गई है. थोड़ीथोड़ी देर में होश लौटता तो वह कुछ बड़बड़ाने लगती.

तीन दिन और तीन रातें चंपा ने अपने कमरे में ही काटीं. पर धीरेधीरे सामान्य होने लगी. उस ने महसूस किया, भैया उस से कतरा रहे हैं और इसी आधार पर उन के प्रति संदेह का जो सांप कुंडली मार कर उस के मन में बैठा वह भैया के जीवन पर्यंत वैसा ही रहा. उन की मृत्यु के बाद भी मन की अदालत में वह उन्हें निर्दोष घोषित नहीं कर सकी.

दुनिया और जीवन का चक्र जैसा चलना था चला. प्रभात से ही उस का ब्याह हुआ. बच्चे हुए और अब उन का भी ब्याह आ गया.

न जाने आंखों से कितने आंसू बह गए.

रीता दरवाजे पर ही खड़ी रही. चंपा ने ही मुड़ कर देखा तो उस के गले लग कर फिर रो पड़ी. रवि की मृत्यु के बाद वह आज पहली बार रोई है. रीता कुछ समझ नहीं पा रही थी. हम सचमुच जीवन में कितना कुछ बोझ लिए जीते हैं और उसे लिए ही मर भी जाते हैं. यह रहस्य कोई कभी नहीं जान पाता है. केवल उस की झलक मात्र ही कोई घटना कभी दे जाती है.

वे दोनों ड्राइंग रूम में आ कर बैठ गईं. चंपा ने स्थिर हो काफी पी और अपने लड़के की शादी का कार्ड रीता की ओर बढ़ा दिया. वह बेहद प्रसन्न हुई यह देख कर कि लड़की दूसरी जाति की है. जिज्ञासा फूट पड़ी, "दीदी, जो आप जीवन में नहीं कर सकीं उसे बेटे के जीवन में करने समय कोई दिक्कत तो नहीं हो रही है ?"

"हुई थी...भैया ने जैसे सामाजिक स्तर की बातचीत की थी वैसा तो अब भी पूरी तरह नहीं फिर भी हम इतना आगे तो बढ़े ही हैं कि इतना कर सकें... प्रभात नहीं चाहते थे. बड़ेबूढ़े भी नाराज हैं, पर मैं ने मनीष और दीपा के संबंध में संतोषजनक ढंग से सब जाना तो फिर मान गई. मैं बेटा खोना चाहती नहीं थी. किसी तरह का खतरा नहीं उठाने की ठान ली. सोच लिया अपनी जान दे दूंगी पर इसे बचा लूंगी...मन का बोझ इस से हलका हो जाएगा." उस के चेहरे पर हंसी की रेखा उभर कर विलीन हो गई.

घर परिवार की कितनी ही बातें कर चंपा चलने को उद्यत हुई तो बैग से एक कागज का पैकेट सा रीता के हाथ में थमा कर कहा, "इसे भी रख लो."

"यह क्या है दीदी ?"

"आधी तसवीर, जिसे तुम्हारे साथ जोड़ना चाहते थे. जब सुनो कि चंपा नहीं रही तो उस तसवीर से इसे जोड़ लेना ताकि वह पूरी हो जाए. यह जिम्मेदारी तुम्हें ही सौंप सकती हूं." वह कृतज्ञ आंखों के साथ दरवाजे से बाहर निकल गई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपाय

कहानी • परमात्मा स्वरूप

गोविंद ने अपनी पूरी जिंदगी कामरेड के छलना भरे नारे पर काट दी पर जब उस का बेटा बिरजू भी उसी राह पर चलने लगा तो उसे होश आया...

"कल सुबह ही गोविंद पर धावा बोला जाएगा. अब की बार सारा गांव एक जुट है. गोविंद के पाप का घड़ा भर गया है," कामरेड ने सारे गांव को समझाया, "युगोंयुगों से तुम लोग इन भूमिपतियों की जालिमाना हरकतें सहते आ रहे हो. जरा सोचो तो तुम लोगों ने कितनी मनौतियां मानीं. पर फल क्या मिला? तुम लोग अब भी दबे पड़े हो और तब तक दबे रहोगे, जब तक मुक्ति के लिए खुद नहीं उठोगे."

कामरेड की इस ललकार पर सारा गांव हुंकार उठा, "अब तो हद ही हो गई है. अब और नहीं सह सकते."

सारे गांव को रणनीति समझाते हुए कामरेड ने कहा, "कल गोविंद के पहुंचने से पहले ही उस के कुएं पर कब्जा कर लो. सब के हाथों में लाल झंडा और मोटा डंडा रहना चाहिए. यदि गोविंद मुकाबले पर आने की हिम्मत करे तो उसे अपनी ताकत का एहसास करा दो."

गठिया से ऐंठती देह की पीड़ा घूंटते

भीड़ आगे बढ़ती गई. 'मारोमारो' के शोर के साथ लाठियां चलने लगीं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ए सरजू ने जब यह खबर अपने पौत्र से नी तो उस के सूखे और भद्दे होंठों में छ हरकत सी हुई, पर वह खामोश ही ह गया. कहता भी किस से, जब कोई स की बात सुनने को ही तैयार नहीं. अब ो वह एक बेकार डोकरा है मौत की ोर तेजी से बढ़ता हुआ एक अस्थिपंजर ात्र. उस की बातों में निराशा ही नराशा है. और फिर जिस बात को कोई ानने को तैयार ही नहीं तो उसे कहने े भी क्या लाभ? पर आज तो फिर वही घटने जा रहा है, सोच कर उस का दर्द और बढ़ गया. देह शिथिल होने लगी, दर्द आंखों पर चढ़ने लगा और अगले दिन होने वाली घटना की कल्पना मात्र से एक भयानक झुरझुरी सी उस की आंखों पर तैरने लगी. उस की आंखों के सामने सहसा उस का एक भयावह अतीत उठ कर नाचने लगा.

गूंजते नारों के बीच बजते ढोल पर लड़ाकू तराने, सैकड़ों पैरों से उड़ती धूल. सब बानपुर की ओर बढ़े जा रहे हैं. कामरेड रणबहादुरसिंह माइक पर भीड़ को लगातार सचेत करते हुए लालच पर लालच लुटा रहा है, "जमीन मिलेगी. धन और धरती बंट के रहेगी."

भीड़ आगे बढ़ती है और एकदूसरी भीड़ से टकराती है. 'मारो...मारो' के शोर के साथ लाठियां चलने लगती हैं. तेज बरछे लपलपा उठते हैं. पीछे से आवाज उठती है 'मारो...मारो.' सहसा उस का लट्ठ सामने के एक व्यक्ति के सिर पर पड़ता है और वह धड़ाम से नीचे गिर जाता है, पर सामान्य समय में जरा से खून को देख कर चीत्कार कर उठने वाले मानव हृदय पर इस का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, वह उत्साह से भर कर लाठी चलाने लगता है. सहसा दूर कहीं सीटी बजती है और भारीभारी बूटों से ठकठक करते पुलिस के सिपाही दौड़े चले आते हैं और उसे पकड़ लेते हैं.

उस के हाथ जंजीरों से बंधे हैं...वह खूनी है...उस के लट्ठ ने एक आदमी

पास आओ...

मुहब्बत अगर है जरा पास आओ,
पास आ गई हो जरा और आओ.
पलकें उठाओ निगाहें मिलाओ,
शर्मो हया के ये परदे हटाओ.
—मजबूर

की जिंदगी ली है...तमाम चेहरे उस से सवाल करते हैं, 'तुम ने खून क्यों किया? उस से तुम्हें क्या मिला?' वह असह्य यातना सहते हुए भी खामोश रहता है. वह खुद नहीं जानता कि उस ने खून क्यों किया और इस से उसे क्या मिला. वह जेल की ऊंचीऊंची दीवारों के बीच कैद हो जाता है.

जेल में रहते हुए उस के भीतर बारबार यह सवाल उठता है, 'सरजू, तुम ने कत्ल क्यों किया? उस से तुम्हारी क्या दुश्मनी थी?' यह सवाल उसे परेशान कर देता है और वह उसी जेल में बंद कामरेड रणबहादुर से मिलने का फैसला करता है. सोचता है, 'उसी से पूछूं. मैं ने यह कत्ल क्यों किया?'

अगले दिन वह कामरेड से मिलने जाता है और यह देख कर दंग रह जाता है कि जेल में रहते हुए भी कामरेड रईसी ठाट में है. सरजू जैसे दस कैदी उस की ताबेदारी में हैं. सरजू कामरेड को घूरता है. उस के भीतर ही भीतर लावा फूट पड़ता है, 'धनधरती बांटने वाले कामरेड, क्या तुम अपना ऐशोआराम भी बांटने की जहमत उठाओगे?' पर बहुत चाह कर भी वह बोल नहीं पाता. उस की जबान से कई दिनों से रटा जा रहा केवल यही सवाल निकलता है, "हम ने उस का कत्ल क्यों किया, कामरेड? इस से हमें क्या मिला?"

कामरेड उस का सवाल सुन कर खिलखिला कर हंस पड़ता है. फिर मार्क्स,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेनिन जैसे न जाने कितने नामों का हवाला दे कर समझाने लगता है, "सरजू, यह सवाल तुम नहीं, तुम्हारे भीतर बैठी कायरता कर रही है. यह कायरता जिसे धैर्य, सहनशीलता एवं उचितअनुचित जैसे न जाने कितने लच्छेदार शब्दों में गढ़गढ़ कर सरमायादारों और शोषकों ने तुम्हारे दिमाग में भर रखी है ताकि तुम दो कदम चल कर ही डगमगा उठो," कहतेकहते कामरेड यकायक बात का रुख बदलते हुए कहता है, "सरजू, अब की बार होने वाला संघर्ष तुम्हारे अपने गांव के भूमिपति गंगा के खिलाफ होगा और उस का नेतृत्व तुम्हें ही संभालना होगा. पार्टी ने फैसला किया है कि हर गांव को तेलंगाना बना दिया जाए. पुलिस व फौज की नाक में दम कर के मजदूर राज्य कायम किया जाए."

सरजू जिस सवाल को ले कर कामरेड के पास आया है वह जाने कहां खो जाता है और अब सरजू की आंखों में तैरने लगते हैं गंगा के लहलहाते बड़ेबड़े खेत. जमानत पर छूटते ही वह वानपुर वाला कांड दोहराता है. पर इस बार नतीजा उस के पक्ष में नहीं, गंगा के खेत पर खुली डकैती करने पर गांव वाले उस का प्रबल प्रतिरोध करते हैं और सरजू को अपनी दाहिनी टांग गंवानी पड़ती है. लाठियों की मार से उस की नसनस ढीली हो जाती है. पुलिस उसे घायल अवस्था में ही डकैती के जुर्म में जेल में ठूंस देती है और सरजू जबजब अपनी लंगड़ी टांग देखता है तबतब उस के हृदय में कामरेड रणबहादुर और गंगा दोनों से ही बदला लेने की आग भड़कने लगती है. प्रतिशोध की यही आग लिए जब वह फिर गांव लौटता है तब तक कामरेड ,रणबहादुर उस की पहुंच से बहुत दूर जा कर विधायक बन चुका होता है.

पर गंगा तो अब भी जहां का तहां है. गंगा का बोलनाजीना उसे कांटे की तरह खटकता है. वह गंगा को दबाने का हर मौका ढूंढ़ता है. गंगा की कहीं भी किसी से ठनती है तो वह गंगा के दुश्मन का साथ देता है. वह सरकार को दरख्वास्त भेजता है—'गंगा की बड़ी जोत बांटो.' पर उसे कोई जवाब नहीं मिलता. आखिर साल बाद उसे बताया जाता है कि गंगा की जमीन खुद गंगा के ही जीने भर की है और यह जानकारी उसे नश्तर की तरह भीतर ही भीतर छेद डालती है.

सरजू सोचता है, 'यह सत्य बताने में सरकार ने इतने साल क्यों लगा दिए? क्या सरकार में भी कामरेड रणबहादुर जैसे ही व्यक्ति भरे बैठे हैं?'

वह आहत हो कर टूट सा जाता है. गांव में चकबंदी होती है और गंगा का उत्तराधिकारी गोविंद सरजू का खेत जो उस के खेत की हद में पड़ता है, अपने चक में समेट लेने की तिकड़म रचता है और जब इस में असफल रहता है तो अपने खेत पर से सरजू के खेत को जाने वाला सिंचाई का पानी रोक देता है. उस के कुएं से सरजू को सिंचाई के लिए पानी मिलना बंद हो जाता है.

जल जैसी प्राकृतिक संपदा पर रोक लगा कर किसी किसान की खेती सुखाने और उसे भूखे मरने को मजबूर करने के गोविंद के कृत्य से सारे गांव में गुस्से की लहर दौड़ जाती है और बरसों से दम तोड़ती किसान सभा फिर हरकत में आ जाती है. जिस नारे ने सरजू को खींच कर वानपुर कांड में शरीक किया था, वही नारा अब सरजू के बेटे बिरजू के जीवन मरण का प्रश्न बन जाता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

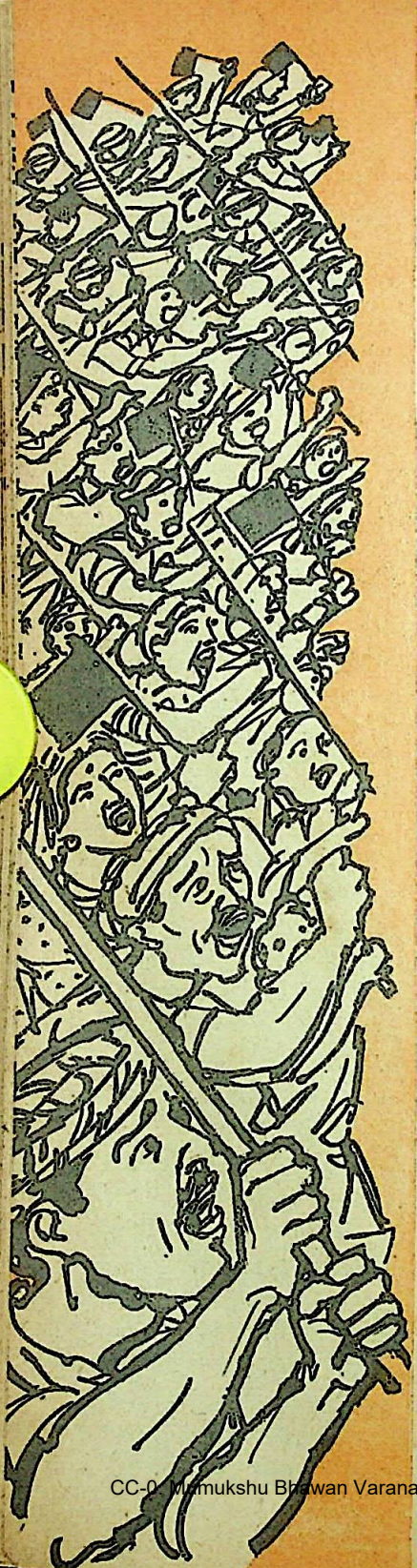

बाहर से कई लोगों के एक साथ आने की आहट हुई. सरजू ने एक आह ले कर फिर करवट बदली. कामरेड लोग जीमने आ रहे थे. भीतर पूरियां तलने की छनछनाहट और घी की महक से सरजू के होंठों पर एक विद्रूप हंसी भड़क उठी. मजदूर नेता पूरियां खाएंगे और किसानों की गरीबी पर लेक्चर देंगे. वह बड़ी देर तक कसमसाता रहा और जब कामरेड लोग जीम कर लौटने लगे, तब अपने को दबाते हुए भी वह रोक न सका और पूछ ही बैठा, "नेताजी, कल की लड़ाई में क्या आप लोग भी बिरजू के कंधे से कंधा मिला कर लड़ेंगे?"

नेता लोग पल भर को स्तब्ध हो कर अपनेअपने मुंह का थूक निगलते हुए एक-दूसरे का मुंह निहारने लगे. कुछ देर की खामोशी के बाद उन में से एक बोला, "दद्दा, हमारी तो जिंदगी ही आप के कंधे

कुएं पर एक तरफ बिरजू के पीछे गांव गोविंद भी अपने गुट के साथ मोर्चे

से कंधा मिला कर लड़ने के लिए समर्पित है. हम तो आप से दस कदम और आगे बढ़ कर आप के हितों के लिए अपनी कुर्बानी देने को तैयार हैं. पर देश में आप जैसे लाखों सरजूबिरजू और भी हैं. और यदि हम किसी एक सरजू के मामले में ही अपने को उलझा देंगे तब और लाखों सरजुओं के बीच वर्ग चेतना क्रांति का संदेश कौन फूंकेगा?"

सरजू ने एक टक बोलने वाले के चेहरे की ओर देखा. दर्द से अपने को संभालना उस के लिए कठिन हो रहा था और अपनी टांगें पसारते हुए वह स्वतः बुदबुदा उठा, "वही बात...ठीक यही बात बरसों पहले कामरेड रणबहादुर ने मुझ से कही थी. नेताजी, क्या तुम्हारा नाम भी रणबहादुर है?"

"डोकरा सठिया गया है," कहते हुए नेता लोग बाहर खिसक गए. सरजू ने एक आह भर कर फिर करवट बदली. गुजरा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुआ अतीत फिर उस की आंखों के सामने घूमने लगा.

वह सोचने लगा, 'कुछ भी नहीं बदला इन बरसों में. मुल्क जैसे जहां का तहां ठहरा हुआ है. आज बिरजू जिस राह पर चलने को तैयार है, मैं ने खुद उसी राह पर अपनी जिंदगी नापी है. इन बरसों में इस नारे को ओढ़ कर कितने ही इस राह पर चले हैं और चलतेचलते कितनी ही जिंदगियां बरबाद हो चुकी हैं. पर कहीं से भी यह सत्य मुखर नहीं होता कि यह कोई राह ही नहीं है.'

अतीत का पश्चाताप उसे सालने लगा. आत्मग्लानि से भर वह अपने आप को कोसने लगा, 'मैं ने अपनी पूरी जिंदगी एक छलना भरे नारे में गंवा दी. छलना मृगमरीचिका की तरह कदमकदम पर झिलमिलाती रही और मैं दुख, चोट अपमान समेटते हुए उस के पीछेपीछे

के लोगों की भीड़ थी तो दूसरी ओर पर डटा था.

दौड़ता रहा. दूर की चीज पाने के लालच में पड़ोस को ढहाता रहा और इसी तरह अपनी जिंदगी लुटा दी. मेरी जिंदगी तो अब खत्म होने को है, पर मेरी रोपी विषबेल अब और रंगबिरंगी कोपलें ले कर फूट रही है. बिरजू की राह में आने वाली इन मुसीबतों का जिम्मेदार मैं खुद हूं.'

सोचतेसोचते एक विद्रूप हंसी उस के होंठों पर फैल गई. उस ने और जमीन हासिल करने की इच्छा के पीछे अपनी जिंदगी को दौड़ाया था. और उस की संतान अब पानी के लिए मौत की ओर बढ़ने को विवश है.

सुबह दिन निकलने से पहले ही गांव के एक छोर पर गगनभेदी नारों और गालियों के साथ मारने और स्वयं मर-मिटने की धमकियां दी जाने लगीं. सरजू आवेश में सारी ताकत बटोर कर कांपती देह को लाठी के सहारे टेकते हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रंगरूप जिससे बचपन झांके

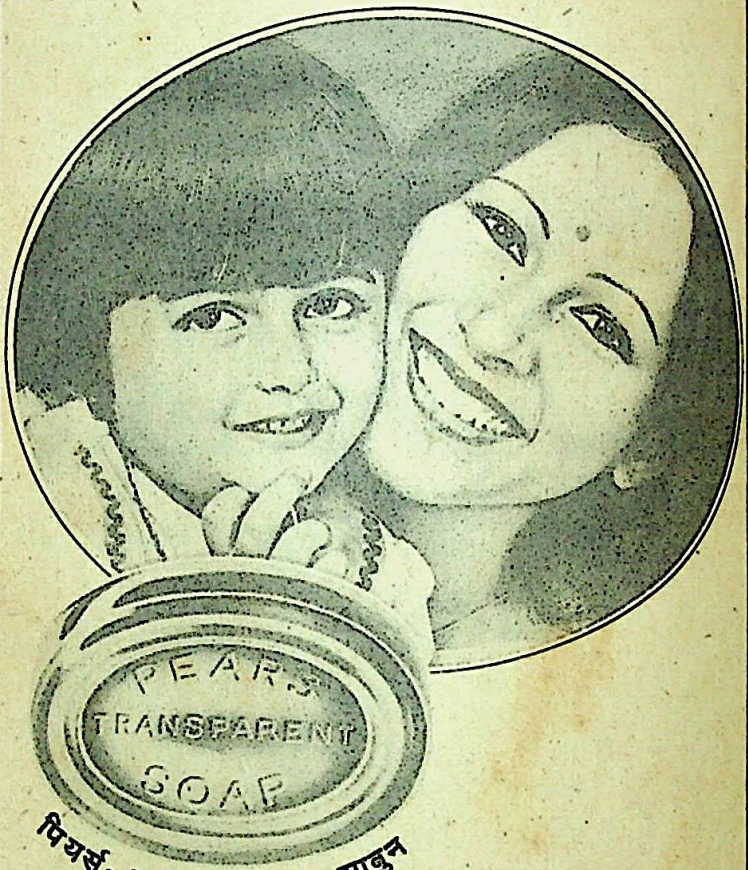

पियर्स—असली ग्लिसरीन साबुन

अपनी त्वचा को पियर्स की कोमल देखभाल में रखिए. हर पारदर्शक टिकिया—साबुन बनाने में सौ बरसों के अनुभव का सबूत. पियर्स कोमल है—और कितना शुद्ध: आप वास्तव में इसके आरपार देख सकते हैं.

पियर्स से आप की त्वचा में भोला लड़कपन झलकता है

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिंटास-PS.57.1810HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आहिस्ताआहिस्ता उधर ही चल पड़ा.

गोविंद के कुएं पर आगेआगे विरजू और उस के पीछे गांव के बच्चे, जवान, बूढ़े मर्द औरतों की पूरी एक भीड़ खड़ी थी. कई एक झंडे हवा में लहरा रहे थे और इन सब के बीच विरजू एक सेनापति की तरह गोविंद ललकार रहा था, "आओ. आज हम अकेले नहीं. हम हटने वाले नहीं. पूरी दो पीढ़ियों का ब्याज आज चुकता कर के छोड़ेंगे."

गोविंद का गुट भी चीते की तरह भीड़ की ओर झपट पड़ा. विरजू के पीछे खड़ी भीड़ चीखचीख कर कहने लगी, "खबरदार, गोविंद आगे कदम मत बढ़ाना. वरना हम तुम्हें खत्म कर देंगे."

पर गोविंद और उस के आदमियों के कदम आगे बढ़ने लगे. दोनों ओर से लाठियां चलने लगीं. मारोमारो की चीखों से आसमान गूंज उठा. इतने में किसी ने विरजू पर लाठी से ऐसा भरपूर वार किया कि वह जमीन पर लोटता नजर आने लगा. उस के सब कपड़े खून से सन गए. विरजू के घर की औरतें हायहाय करते हुए उसे कंधों पर लाद कर ले गईं. विरजू के पीछे खड़े दूसरे लोग इधरउधर भाग खड़े हुए.

गांव के एक छोर पर अब भी जोरों का हल्ला उठ रहा था. गोविंद विजयोल्लास में फिर सामने आने वालों की दुर्गति बना देने की धमकी दे रहा था. इधर विरजू के घर के लोग गोविंद को इस दुनिया से ही उठा देने की सौगंध खाते हुए विरजू की हालत पर कलप रहे थे और इन सब के बीच वृद्ध सरजू खामोश बैठा घायल विरजू को निहार रहा था. सरजू से कुछ दूर खड़े कामरेड लोग सरजू को सुनासुना कर दिलासा दे रहे थे.

"चोट बहुत गहरी नहीं. घबराने की बात नहीं. यकीन रखो सर्वहारा का खून रंग अवश्य लाएगा."

"घाव पर अभी पट्टी मत बांधना, न कोई दवा ही लगाना. ताजा घाव देख कर मामला जोरदार बनता है."

"सीधे 320 दफा बनेगी. गोविंद के एकएक जने को कम से कम तीनतीन साल की कैद तो हो ही सकती है."

"सरजू को समझाओ, वर्ग युद्ध में आंसू बहाने से काम नहीं चलेगा. आगे की कार्यवाही के लिए खर्चपानी का इंतजाम करे."

"विरजू को इसी हालत में ले कर थाने जाना चाहिए. दवादारू बाद में."

सरजू सब कुछ सुनता हुआ भी खामोश रहा. अंत में आजिज आ कर गांव के एक पुराने किसान भाई सरजू को समझाते हुए बोले, "अरे, सरजू दद्दा, तुम तो पुराने लड़ाकू कामरेड हो. जिंदगी में तुम ने ऐसे कितने ही घाव सहे हैं. और आज विरजू के इस छोटे से घाव को देख कर ही होशहवास गंवा बैठे? उठो, धीरज धरो. सरमायादारों और शोषकों से तो जूझना ही हम सर्वहारा का लक्ष्य है. कुछ खर्चपानी का प्रबंध कर के थाने चलने की तैयारी करो. ताजा घाव देख कर मामला जोर पकड़ेगा."

सरजू खामोश रहा. उस के हाथ विरजू के सिर से बहते हुए खून को समेटते रहे. कामरेड ने फिर सरजू को कोचा. आखिर सरजू से रहा न गया. वह विरजू के रक्त से सने अपने हाथ को कामरेड की ओर बढ़ाते हुए पागलों की तरह चीख पड़ा, "लो, यही है सरजू की जमापूंजी. इस से जितना मामला बना सको, बना लो. सरजू ने जिंदगी भर अपने खून से जाने कितने मामलों को रंगा है और अब मामले रंगने के लिए तुम ने मेरे बेटे का खून भी निचोड़ना शुरू कर दिया है. लो खून...रंग लो अपनी क्रांति, वर्गसंघर्ष को इस से."

सरजू को इस तरह बकते सुना तो कामरेड लोग बौखला कर खिसकने लगे.

घर में अब भी हाहाकार मचा हुआ था. गोविंद को कोसतेकोसते लोग थक गए थे. अब आगे क्या हो इसी पर सब विचार कर रहे थे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरजू अब भी खामोश बैठा रहा था. अतीत की एकएक घटना उस के दिल पर हथौड़े की तरह चोट कर रही थी.

उस की सारी जिंदगी का ध्येय क्या रहा? क्रांति? संपन्न लोगों से छीनाझपटी कर के अभावग्रस्त लोगों के अभाव को बिना उन की मेहनतमशक्कत के रातोंरात दूर कर देने का मोहक नारा? 'उस ने अपनी संतान के लिए क्या छोड़ा? संघर्ष...संघर्ष...एक अंतहीन संघर्ष. और रात की कालिमा की तरह उसे अपने चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखाई पड़ने लगा. कहीं कोई रोशनी नहीं. कोई पगडंडी नहीं, कोई दिशा नहीं. आकुलता से सरजू अपना सिर धुनने लगा. घर वालों की ठंडीठंडी उसांसे उसे छेदने लगीं. उस ने सोचा, 'वह इस से छुटकारा पाने के लिए कहीं भाग जाए. पर भागे भी कैसे? उस के शरीर में अब भागने की शक्ति भी तो नहीं रही.'

घोर पश्चाताप, विवशता एवं असहायता से घिरा सरजू रात भर छटपटाता रहा. जब भोर हुई और किसान अपने बैलों को ले खेतों की ओर जाने लगे तो रात भर के जागरण के कारण सरजू का अंगअंग दुख रहा था. फिर भी उस के चेहरे पर एक नई चमक दिखाई दे रहा था. बीमार शरीर के बावजूद वह धीरे से खाट से उठा और घर के किसी भी सदस्य को कुछ कहे बिना ही बाहर निकल गया.

वह सीधे अपने खेत में पहुंचा और जमीन से निकल रहे छोटेछोटे पौधों को निहारने लगा. बिना पानी के ये नन्हे पौधे और कितने दिन जीएंगे? यह सोच कर उस के मन में यह विचार बवंडर की तरह उठने लगा, लेकिन जमीन से फसल लेनी है तो कुछ करना ही होगा. पानी के लिए इंद्र देवता से लड़नेझगड़ने के बजाए क्यों न खुद कुआं खोद कर देखा जाए?

मन में यह विचार आते ही सरजू ने फावड़ा उठाया और अपने कमजोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने वह जमीन खोदने लगा. अभी खुदाई एक हाथ भी गहरी नहीं पहुंची थी कि उसे जमीन काफी गीली दिखाई दी. उस का चेहरा आशा से खिल उठा. वह सोचने लगा, मेरे खेत के गर्भ में तो मिट्टी की छोटी सी परत के बाद ही पानी का अटूट भंडार दिखाई देता है. कुछ हाथ और खोदने से ही पानी निकल आएगा तो फिर उसे पानी की कोई कमी नहीं होगी.'

"सरजू अकेले ही अपने खेत में कुआं खोद रहा है," लोग सुनते और दूसरों को बताते. फिर विस्मय और हर्ष से भर कर एकदूसरे से कहते, "चलो भाई, चलो, कुआं खोदना तो गांव भर के लिए पुण्य का काम है. इस में हम भी सरजू का हाथ बंटाएं." और लोग सरजू का हाथ बंटाने के लिए दौड़दौड़ कर उस के पास जा पहुंचे. सरजू के घर की औरतें रोना बंद कर के बिरजू को जगा कर बोलीं, "उठ बेटा, हम जीत गए. जिस पानी को ले कर तू कल खूनकत्ल की ठान रहा था वह पानी की धार तो अब अपने खेत से ही निकलेगी. हम गोविंद के मुहताज नहीं. हमारे खेत अब किसी का मुंह तकने को विवश नहीं."

दूर से कंकरीली और गीली मिट्टी के ढूह दिखाई पड़ रहे हैं. इन्हीं ढूहों के साये में धरती के भीतर घुसे लोग कुआं खोद रहे हैं. सर्वत्र इसी की चर्चा है. कल यहीं 'जिंदाबाद मुर्दाबाद' और 'मारोमारो' के नारे गूंज रहे थे और आज लोग मिल कर सूखी धरती का कलेजा ठंडा करने के लिए मिलजुल कर पानी का सोता खोज रहे हैं.

दूर से पूजा के थाल सजाए ग्रामीण नारियों के मंगल गीत की ध्वनि उठ रही है, मानो कह रही हो, 'उठोउठो, धरती मां, अपनी कोख खोलो और इस धरती पर पानी की, धारा उंडेल दो, जिस से सूखे खेतों, तालतलैया और थकेप्यासे राहगीरों की प्यास बुझे. सर्वत्र शांति, मंगल और समृद्धि हो.'

सरिता

के विज्ञापन और पाठकों का हित

सरिता में सब विज्ञापन काफी देखभाल कर लिए जाते हैं. जिस सामान से पाठकों को हानि होने की संभावना होती है उस का विज्ञापन किसी भी मूल्य पर सरिता में स्वीकार नहीं किया जाता. शराब, सिगरेटों, लाटरियों, नीम हकीमों और डाक्टरों, ताकत की दवाइयों, कद या वक्ष बढ़ाने आदि के विज्ञापनों का बहिष्कार कर के भारी आर्थिक हानि उठा कर भी सरिता ने सदा पाठकों का ही हित सामने रखा है.

सरिता में प्रकाशित विज्ञापनों में प्रदर्शित/प्रचारित सामान के विषय में यदि आप को कोई शिकायत हो तो सामान का विवरण, उस की खरीद की तारीख, विक्रेता का नामपता, केशमेमो नंबर और अपनी शिकायत हमारे पास लिख भेजिए. हम पूरा प्रयत्न करेंगे कि उत्पादक/विज्ञापनदाता आप की शिकायत दूर करे. यदि आप की शिकायत उचित और सही होगी और संबंधित उत्पादक/विज्ञापनदाता उसे दूर नहीं करेगा तो हम वह विज्ञापन प्रकाशित करना बंद कर देंगे और आप की शिकायत को पूरी तरह प्रचारित भी करेंगे.

पत्र व्यवहार इस पते पर करें:

पाठक सेवा कक्ष
सरिता, नई दिल्ली-55

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनचाहे बालों को मनचाहे क्रीम एन् फ़्रेंच हेयर रिमूवर से हटाइये

'शेविंग' ? ना, यह लड़कियों के लिये नहीं। लड़कियों की कोमल त्वचा ब्लेड से छिल सकती है, कट सकती है। इसके अलावा, कुछ अरसे बाद बाल खूंटे-से उग आते हैं।

तो फिर ? एन् फ़्रेंच हेयर रिमूवर इस्तेमाल कीजिए। यही तो अनचाहे बालों को हटाने का मनचाहा क्रीम है।

एन् फ़्रेंच त्वचा के नीचे जाकर कार्य करता है। परिणाम—आपकी त्वचा हफ़्तों मुलायम!

एन् फ़्रेंच हेयर रिमूवर नींबू की सुगंध और फूलों की सुगंध में मिलता है। अपनी पसन्द का चुन लीजिये।

एन् फ़्रेंच* हेयर रिमूवर

अनचाहे बालों को हटाने का मनचाहा क्रीम

*Licensed User of TM : Geoffrey Manners & Co. Ltd.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख : हृदयेश सक्सेना 'दिव्येश'

बच्चों का अपहरण

बच्चों को अपहरण से बचाने के लिए उन्हें क्याक्या सिखाना जरूरी है?

विदेशों की तरह बच्चों के अपहरण की घटनाएं भारत के लिए भी कोई नई बात नहीं हैं. आए दिन यहां भी इस के बारे में पढ़नेसुनने को मिलता रहता है. किंतु बहुत सी घटनाएं तो प्रकाश में आ ही नहीं पातीं क्योंकि उन की सूचनाएं न तो पुलिस को दी जाती हैं और न ही समाचार एजेंसियों को उन की जानकारी मिल पाती है.

यह एक ऐसा सामाजिक अपराध है जिस की जितनी भी निंदा की जाए, उतनी ही कम है. धन की लालसा या आपसी रंजिश के कारण बच्चों का अपहरण कर उन को मानसिक, शारीरिक पीड़ा पहुंचाने जैसे बुरे कर्मों को कोई भी सभ्य समाज स्वीकार नहीं करना चाहेगा.

प्रायः देखा गया है कि अपहरण की

कोई घटना होते ही लोग पुलिस की आलोचना करना आरंभ कर देते हैं, किंतु इन घटनाओं के लिए अकेली पुलिस ही जिम्मेदार हो, ऐसी बात नहीं. उन बच्चों के मातापिता अथवा संरक्षक कहीं अधिक जिम्मेदार होते हैं और ज्यादातर मामलों में पुलिस को या तो सूचना ही नहीं दी जाती या फिर तब दी जाती है जब बात काफी बढ़ चुकी होती है. वास्तव में यदि अभिभावक अपेक्षित सावधानी व सतर्कता बरतें और अपहरण की प्रारंभिक जानकारी या चेतावनी मिलते ही पुलिस का सहयोग प्राप्त कर लें तो अपहरण की अधिकांश योजनाओं को न सिर्फ असफल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनाया जा सकता है, बल्कि अपराधियों को भी सुगमता से कानूनी शिकंजे में जकड़वाया जा सकता है.

संरक्षकों को चाहिए कि वे अपहरण की प्रारंभिक सूचना पाते ही उसे गंभीरतापूर्वक लें और बिना इधरउधर खबर फैलाए सीधे उच्च पुलिस अधिकारियों से मिल कर उन्हें पूरी जानकारी दें. याद रखें कि सूचना यदि पत्र के रूप में हो तो वह लिफाफा जिस में पत्र आया हो फाड़ें नहीं, क्योंकि कभीकभी वही महत्त्वपूर्ण सूत्र बन सकता है.

अपहरण की सूचना पाने पर मानसिक संतुलन न खो कर धैर्य और विवेक से काम लें. सूचना यदि आप को टेलीफोन के जरिए से दी गई है तो शांत रहते हुए सूचना देने वाले की बातों को ध्यान से सुनें. किसी भी प्रकार की घबराहट अथवा भय न जाहिर होने दें. ऐसी सूचना देते समय अपहरण करने वालों की ओर से मुख्य मांग, जो अधिकांश मामलों में धन की होती है, प्रस्तुत की जाती है. ऐसी

स्थिति में मांग को एकदम नामंजूर कर दें और आवेश में पुलिस बुलाने धमकी भी न दें, क्योंकि संभव है किए जाने पर वे अपहृत बच्चे के बुरा व्यवहार करें या फिर सारे मिटाने के इरादे से उस का जीवन नष्ट कर डालें. उचित यही है कि उस की हर बात स्वीकार करने का रचते हुए अधिक से अधिक जानकारी पाने की कोशिश करते रहें, साथ ही व्यवहार को भी कोमल बनाए रखें.

अपहरणकर्त्ताओं की ओर से निश्चित धन किसी स्थान पर पहुंचाने मांग की जा रही हो तो ध्यान में कि स्थान अधिक भीड़भाड़ वाला न क्योंकि ऐसे स्थानों पर अपहरण वालों को संकट के समय गायब होने आसानी रहती है और उन्हें ठीक पहचान कर पकड़ने में भी परेशानी है. आवश्यकता पड़ने पर ऐसे स्थानों गोली भी नहीं चलाई जा सकती दूसरे निर्दोष व्यक्तियों के चपेट में की आशंका रहती है. अतः कोशिश करें कि कोई निर्जन स्थान तय हो यह भी अच्छी तरह पूछ लें कि नोट से, किस चीज में (थैले में, ब्रीफकेस या अन्य किसी तरह) देने हैं. व्यक्ति को नोट सौंपने का आदेश जा रहा हो उस का हुलिया बहुत से पूछ लें ताकि पहचानने में रहे.

अपहरण करने वालों को के लिए राजी करने की कोशिश वे धन देनेलेने के समय अपहृत बच्चे साथ ले कर आएं क्योंकि ऐसी एक ही प्रयास में बच्चे को निकालने में पुलिस को आसानी आप की योजना में यदि जरा कमी रह गई और उन में से कोई व्यक्ति बच कर निकल गया तो वह से पहले बच्चे को मार कर करने का प्रयास करेगा.

एक अन्य महत्त्वपूर्ण तथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताज़गी महसूस कीजिये सुबूत अपनी आँखों से देखिये

पानी से भरी तश्तरी में थोड़ा सा कोयले का चूरा छिड़किये। अब थोड़ा सा बिनाका टॉप पानी में मिला लीजिये और इस घोल की एक बूँद तश्तरी के बीचों-बीच टपकाइये। अब देखिये बिनाका टॉप कितनी तेज़ी से चारों तरफ फैलता है.... मैल को दूर करता है और पानी की सतह को बिल्कुल साफ़ कर देता है।

बिल्कुल इसी तरह बिनाका टॉप का विशेष फैलने वाला तत्व आपके मुँह के हर कोने में फैल कर दातों में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणुओं का नाश करता है और साँस की दुर्गन्ध को रोकता है। बिनाका टॉप आपके मुँह की पूरी रक्षा करते हुए उसे ताज़गी से भर देता है।

बिनाका टॉप टूथपेस्ट

मुँह की पूरी रक्षा के लिए

सिबाका-गायगी

ARMS-CBT-1-78-HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फ्लो डिटर्जेंट बार का वरदान घरेलू धुलाई में नया तुलादान

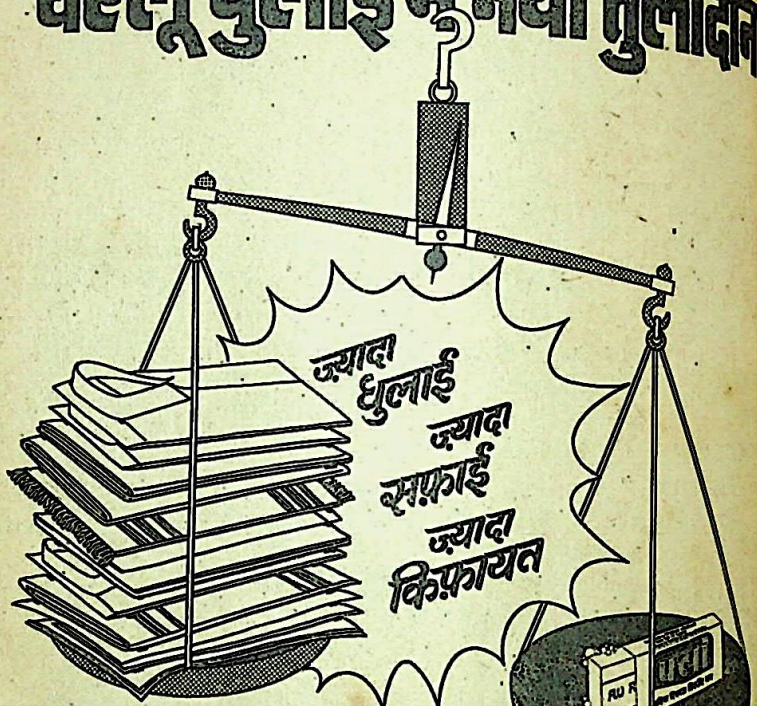

ज़्यादा झाग— ज़्यादा सफ़ाई
फ्लो का झाग आम साबुनों और डिटर्जेंट बारों से कहीं ज़्यादा गाढ़ा और फलकारी होता है। इसी लिए यह कपड़े के तार-तार में जा कर सारा मैल काट देता है। और कपड़ा पूरी तरह निखर उठता है।

ज़्यादा धुलाई— ज़्यादा किफ़ायत
फ्लो हर प्रकार के साबुनों और डिटर्जेंट बारों से कहीं ज़्यादा चलती है। क्योंकि यह ऐसे ख़ास फ़ार्मूले से तैयार की जाती है कि इस्तेमाल के बाद झट सूख जाती है। इसी लिए फ्लो से कहीं ज़्यादा धुलाई होती है और धुलाई कहीं ज़्यादा सस्ती पड़ती है।

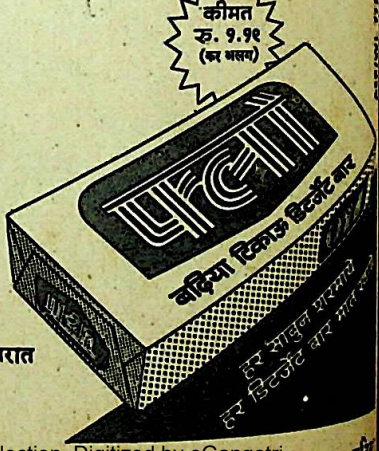

निर्माता: विटको लिमिटेड, कालोल ३८९३३०, गुजरात

केवल दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में प्राप्य।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह है कि पुलिस को सूचनाएं इतने गुप्त रूप से पहुंचाएं कि दूसरे किसी को जरा भी खबर न हो पाए. हो सकता है कि आप के घर के आसपास अपहरण करने वालों का कोई व्यक्ति आप की गतिविधियों पर निगरानी रख रहा हो, अतः सावधान रहें.

एक बात और कि यदि आप के मस्तिष्क में बच्चे को निकालने की कोई अच्छी योजना है तो उसे पुलिस को सुझाव के रूप में बताएं किंतु पुलिस के काम में दखल देने की भूल न करें बल्कि उस के निर्देशों के अनुसार कार्यवाही करें.

इस प्रकार यदि आप बुद्धि और विवेक से काम लेंगे तो न सिर्फ आप अपने बच्चों को ही उन के जाल से निकाल पाएंगे बल्कि उस गिरोह को भी पकड़वा सकेंगे.

इन सब के अतिरिक्त प्रत्येक अभिभावक को चाहिए कि वह अपने बच्चों की सुरक्षा के प्रति सदैव सावधान रहें. ज्यादातर मामलों में अपहरण प्रायः अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को इस बारे में पहले से न समझाए जाने या फिर उस ओर विशेष ध्यान ही न दिए जाने के कारण होता है. उन को चाहिए कि वे समयसमय पर अपने बच्चों को निम्नलिखित बातें समझाते रहें :

● कभी भी अनजान व्यक्ति के कहने पर उस के साथ इधरउधर मत जाओ और न ही ऐसे व्यक्तियों द्वारा दी गई कोई वस्तु खाओ.

● यदि कभी कोई व्यक्ति, जो तुम्हारे लिए अपरिचित हो, राह में 'लिफ्ट' देने का प्रस्ताव करे तो स्वीकार मत करो और उस के वाहन के निकट मत जाओ. यदि कोई व्यक्ति ऐसा करने के लिए बारबार परेशान करे तो तुरंत जोरजोर से शोर मचाने लगो ताकि लोग सहायता के लिए पहुंच सकें.

● कभी भी निर्जन स्थानों पर खेलने न जाओ.

● यदि कभी कोई अनजाने व्यक्ति तुम्हारे स्कूल या कालिज से निकलने पर जातेआते समय यह कहे कि तुम्हारे मातापिता या अन्य कोई संबंधी अमुक स्थान पर बुला रहा है तो उस की बातों पर विश्वास मत करो.

● स्कूल जा कालिज से लौटने पर भी अकेले घर से दूर मत घूमो.

● अपहरण के पश्चात न तो अधिक रोओ और न अधिक उपद्रव मचाओ, क्योंकि इस प्रकार तंग होने पर अपहरण करने वाले कोई अप्रिय कदम उठा सकते हैं.

● घर वालों की अनुमति अथवा उन्हें सूचित किए बिना किसी मित्र के यहां मत जाओ.

● दूसरों के यहां से सदैव रात होने से पहले लौटने की कोशिश करो. यदि किसी कारणवश रात हो जाए तो किसी वयस्क को साथ ले कर ही घर लौटो. ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • डा. पुखराज बाफना

स्वागत और शिष्टाचार

हमारे देश में प्रायः ही त्योहारों पर, नव वर्ष पर, बच्चों के जन्मोत्सव पर, या परिवार में किसी भी खुशी के अवसर पर मिष्ठान व पकवान बना कर उसे पासपड़ोस में या मित्रों व संबंधियों के घर भेज कर अपनी खुशी व्यक्त की जाती है. आजकल कुछ तो महंगाई, कुछ जगह की कमी और कुछ में काम की अधिकता के कारण प्रायः एक-एक परिवार को ही आमंत्रित किया जाता है. त्योहार वाले दिन तो परिवार के सदस्य अपने ही घर के काम में लगे रहते हैं और आपस में ही त्योहार का आनंद मनाते हैं, इसलिए अगले दि मित्रों को बुला कर फुरसत से बातचीत व जलपान कराया जा सकता है. पिछली दीपावली के अगले दिन हमें भी किसी

मेहमाननबाजी का मतलब केवल खिलानापिलाना ही नहीं है, उस के साथसाथ शिष्ट व्यवहार भी जरूरी है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहन ने अपने यहां शाम की चाय पर आमंत्रित किया. हम ठीक समय पर उस के यहां पहुंचे. ठीक उसी समय एक और दंपती उस के यहां बिना सूचना दिए आ गए. वह महिला हम सब को ड्राइंग रूम में बैठा कर अंदर चली गई.

आधे घंटे बाद एकएक कप चाय हम सब को वहीं दे कर वह फिर ऊपर चली गई.

इस प्रकार सात बज गए. हम उठ कर चलने लगे तो वह अंदर से भागी हुई आई और बोली, "बस, पांच मिनट रुक जाइए, अब सब काम हो गया है." पांच मिनट बाद जब वह खाने के कमरे में ले गई तो हम यह देख कर हैरान रह गए कि चाय के स्थान पर उस ने खाना मेज पर सजाया हुआ था. हम खाना खा कर लौटे तो मुझे इस बात पर बारबार दुख हो रहा था कि वह बहन क्यों नहीं एक पल को भी पास आ कर बैठी. उस ने चाय पर बुला कर खाना क्यों बनाया? दोतीन दिन बाद जब वह फ़िर मिली तो मेरे पूछने पर कि उस ने चाय पर बुला कर खाना क्यों खिलाया तो उस ने झट से कहा, "नहीं, मैं ने खाने पर ही आने को कहा था."

मैं उस की बात सुन कर हैरान रह गई. यदि उस ने सचमुच ही रात के खाने पर बुलाया होता तो हम शाम पांच बजे क्यों उस के घर पहुंच कर अपना व उस का समय नष्ट करते. वास्तविक बात का पता मुझे बाद में चला कि वह बहन उस दूसरे दंपती के सामने हम से बात नहीं करना चाहती थीं, इसलिए अंदर ही काम में लगी रहीं और अपनी बात रखने के लिए झूठ बोल गईं.

मेहमानों से प्रतीक्षा न कराएं

कुछ महिलाओं की यह आदत होती है कि किसी के भी मिलने आने पर वे अपने घर के कामों में लगी रहती हैं और उन सब से निबट कर अपना बनाव शृंगार कर तब सामने आएंगी जब आने वाले खिन्न हो कर उठने वाले हों. आजकल तो प्रायः मिलने के लिए आने वाले पहले से ही बता कर आते हैं या आमंत्रित करने पर ही आते हैं. फिर उन से ऐसा व्यवहार करना शिष्टता नहीं कहलाता. किसी के आने पर घबरा उठना या अपने ही कामों में लगे रहना आने वाले को अपमानजनक प्रतीत हो सकता है.

एक महिला स्वयं तो हर किसी के घर किसी भी समय पहुंच जाती थी पर जब कोई दूसरा उस के घर पहुंच जाता तो वह घबरा उठती थी. तब या तो वह ढेर सारा नाश्ता परोसने में लग जाती या ढेर सारी चाय बना लाती. घबराहट में उस के हाथ से प्याला या प्लेट छूट जाती या वह उस समय किसी फालतू काम में लग जाती. उस के ऐसे व्यवहार से कोई भी उस के घर से प्रसन्नचित्त नहीं लौटता था.

अनपेक्षित व्यवहार

मेरी एक परिचित महिला कुछ दिनों से बीमार थी. एक दिन शाम को मैं उस का हालचाल पूछने चली गई. द्वार उस ने स्वयं खोला और मुझे कमरे में बैठा कर वह 'अभी आई' कह कर अंदर चल गई. थोड़ी देर में वह चाय ले कर आई और चाय मेरे हाथ में दे कर फिर अंदर चली गई. मैं बैठीबैठी तंग आ गई और लौटने के विचार से उठ कर उसे कहने अंदर चली गई तो क्या देखती हूं कि वह अपनी पड़ोसन के साथ मशीन पर सिलाई कर रही है. मुझे यह बात बहुत बुरी लगी और अब मैं उस के बुलाने पर भी उस के घर नहीं जाना चाहती. वह कई बार अपने व्यवहार के लिए क्षमा मांग चुकी है. पर जहां जाने पर अपनापन व मृदुल व्यवहार न मिले वहां जाने का मन नहीं करता.

कुछ दिनों पहले की बात है. हमारे एक मित्र यहां घूमने के लिए आए पर अपने एक संबंधी के यहां ठहरे. वह अपने संबंधी के साथ हमारे यहां कई बार आए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

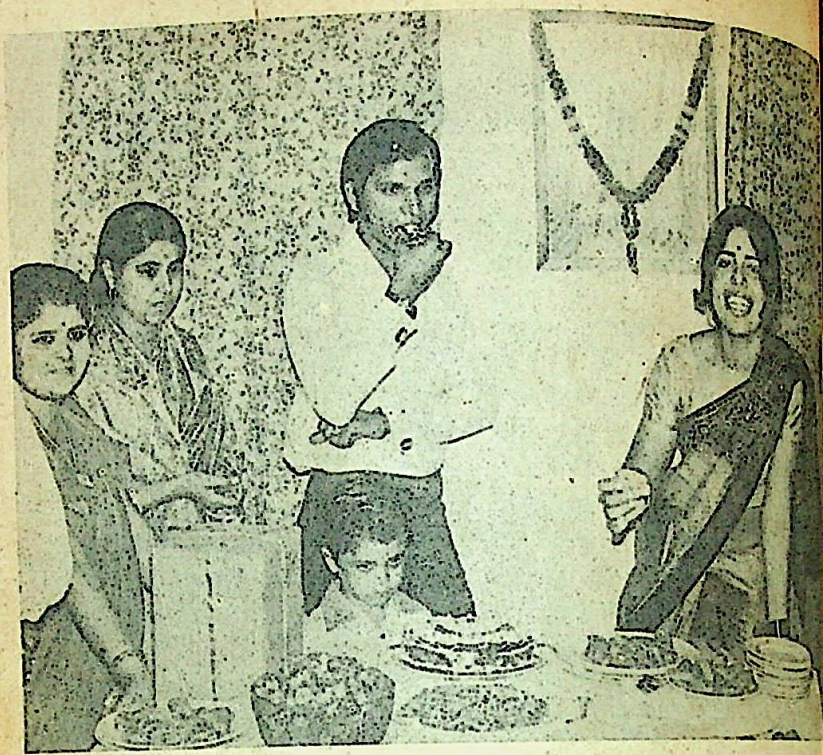

और खानापीना, घूमनाफिरना साथसाथ हुआ. एक दिन उन्होंने हमें रात्रिभोज पर बुलाया. उन का घर शहर से जरा दूर है और आठ बजे के बाद वहां बस या टैक्सी भी नहीं मिलती. हम ने निमंत्रण स्वीकार करने से पहले ही कह दिया कि हम सात बजे खाना खा कर आठ बजे वाली बस से वापस चल देंगे. वे मान गए. अगले दिन जब हम उन के यहां साढ़े छः बजे पहुंचे तो वह मैटिनी शो देख कर और सब्जियां खरीद कर लौट रहे थे. सात बजे तो चाय बनी, फिर खाना और हमें रात को नौ बजे खापी कर पैदल ही घर लौटना पड़ा. अकेली सुनसान सड़क पर दूरदूर तक कोई नजर नहीं आ रहा था. ठंड के दिनों में वैसे ही सड़कें जल्दी सुनसान हो जाती हैं. उस दिन हम बहुत परेशान हुए.

पिछले सप्ताह एक मध्यवर्गीय परिवार में बच्चे के जन्मदिन पर जलपान के लिए निमंत्रण मिला. हमारे पहुंचने से

बेटे के जन्मदिन पर अपने मित्रों को अवश्य बुलाइए पर उन की सुखसुविधा का खयाल जरूर रखें.

पहले सारा घर साफसुथरा कर के रखा हुआ था. मेज पर सलीके से खानेपीने की सब चीजें भी ठीक कर रखी थीं. गृहिणी ने बड़े प्यार से अंदर बैठाया और हमारे व हमारे परिवार के बारे में बातचीत की. फिर अपने विषय में बताया. वे भी बड़े प्यारे व तमीजदार थे. उन से मिल कर मन बहुत प्रसन्न हुआ.

तो ये हैं कुछ चित्र उस स्वागत शिष्टाचार के जो समयसमय पर विभिन्न परिवारों में पहुंचने पर मेरे मनमस्तिष्क पर अंकित हुए हैं. इन विविध अनुभवों के कारण कोई भी नया निमंत्रण मिलने पर हमेशा ही मन में यह संशय रहता है कि 'पता नहीं, वहां पहुंचने पर हमारा स्वागत हो'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे खुशी है कि मैंने मुन्ने को फ़ैरेक्स® देना शुरू किया.

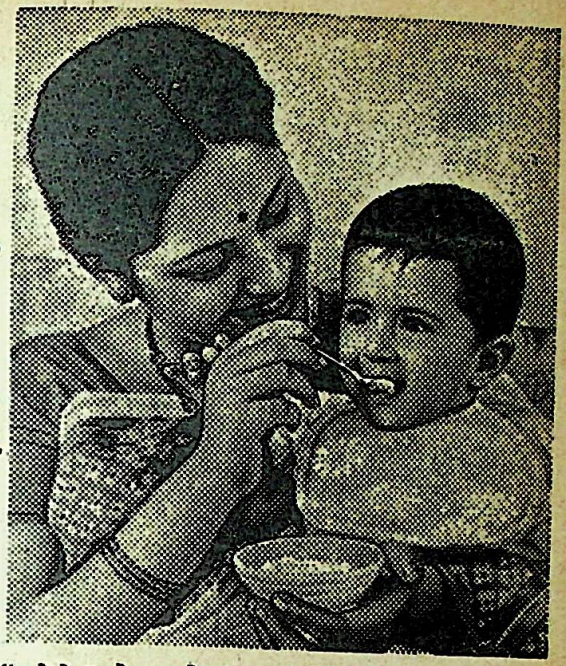

मेरा डॉक्टर कहता है: "तीसरे महीने से बच्चे को सिर्फ़ दूध पूरा नहीं पड़ता. इसे फ़ैरेक्स की ज़रूरत है."

डॉक्टर क्यों फ़ैरेक्स की सिफ़ारिश करते हैं?
यह मुन्ने की कोमल पाचनशक्ति के लिए संतुलित और उचित आहार है.

किस तरह फ़ैरेक्स मुन्ने की ज़रूरत के लिए पूर्णतया संतुलित है?
फ़ैरेक्स में आपके मुन्ने के दिमाग़ और शरीर के विकास के लिए पचने में आसान प्रोटीन तथा शक्ति के लिए कार्बोहाइड्रेट है.
फ़ैरेक्स में पर्याप्त आयरन है. जिससे आपके मुन्ने का खून स्वस्थ रहता है. साथ ही फ़ैरेक्स में इतना कैल्शियम, फ़ॉस्फ़ोरस और विटामिन डी2 है जो मुन्ने की हड्डियों तथा दांतों को मज़बूत बनाने के लिए पर्याप्त है.

तीसरे महीने से ही क्यों?
अगर आप इसे अभी से फ़ैरेक्स देती है तो बाद में यह "बड़ों के" भोजन को ठीक तरह से चबाकर पचा सकेगा.

क्या उबले आलू मसलकर देना ठीक रहेगा?
आप अपने मुन्ने को कोई ठोस आहार देने से पहले सोच लें: तीन महीने का होने पर भी उसकी पाचन शक्ति कोमल रहती है. इसीलिए उसे ऐसा ठोस शिशु आहार चाहिए, जिसे वह आसानी से पचा सके. इसके अलावा, प्रचलित आहार हमेशा संतुलित नहीं होते, जो आपके मुन्ने की कैल्शियम, फ़ॉस्फ़ोरस और विटामिन डी2 की महत्वपूर्ण आवश्यकताएं पूरी कर सकें.

इसे कब बड़ों का भोजन देना चाहिए?
जब ये डगमगाते कदम रखना शुरू करे. लेकिन फ़ैरेक्स देना बंद मत कीजिए. जब तक आपका मुन्ना ३ साल का न हो जाए, उसके भोजन में ज़रासी तरकीब और ढेर सारे प्यार के साथ फ़ैरेक्स मिलाइए.

मुन्ने का पहला ठोस आहार: अंग अंग जल्द विकास के लिए.

लिंटास-GF.57-1710 HI(R)

ग्लैक्सो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्व बाल साहित्य

आप के बच्चों के लिए आधुनिक युग की आधुनिक पुस्तकें

चीकू (चित्र कथा) चीकू खरगोश के दिलचस्प कारनामों की इंद्रधनुषी रंगों में मनोरंजक चित्र कथा.

मंगल की सैर मंगल पर जाना था उमेश चाचा को, लेकिन चला गया दीपू. क्या वह धरती पर लौटा?

योगीराज जब भालू ने कपटी बंदर की भक्ति की पोल खोली तब...

वीरान टापू बच्चों का अपहरण करने वाले डाकू लाखन के गिरोह को मोहन द्वारा पकड़वाने की रोमांचक कहानी.

प्रत्येक 2.00

राजा की अंतरिक्ष यात्रा खेलखेल में ही राजा एक नए लोक में पहुंच गया जहां की हर चीज इस दुनिया से अलग थी.

अज्ञात द्वीप तूफान में विमान के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण कुछ बच्चे एक ऐसे द्वीप पर उतरे जहां खजाना छिपा था. इस खजाने के लिए डाकुओं से उन की मुठभेड़ की रोचक कथा.

शुक्र की खोज प्रसिद्ध वैज्ञानिक उमेश अपने विमान के साथ अंतरिक्ष में खो गए थे. दीपू ने अपने मित्र मिक के साथ उन्हें कैसे ढूंढ़ा? प्रत्येक 2.75

पंचतंत्र बच्चों के लिए रोचक व सरल भाषा में दो भागों में प्राप्य.

आदमी की कहानी आदमी की आदि काल से ले कर वर्तमान तक की उन्नति की सारी कहानी.

प्रत्येक 2.50

मनोरंजन के साथसाथ मानसिक विकास भी

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें

विश्वविजय प्रकाशन

एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

पूरे रुपये अग्रिम आने पर डाक खर्च 50 पैसे (वी. पी. पी. द्वारा)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • सत्या जैन

शंका

जो स्वयं एक रोग है

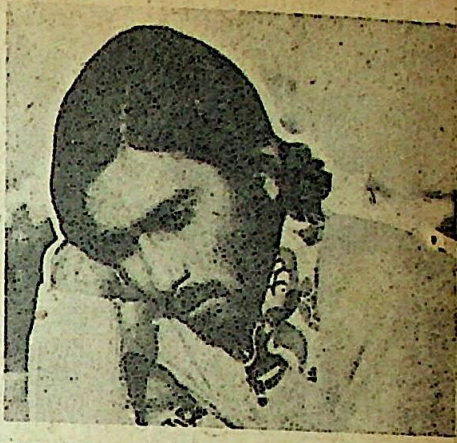

शंका मन की एक प्रकार की भावना है, जो सामान्य रूप से किसी व्यक्ति की प्रकृति में हो सकती है या वातावरण एवं परिस्थितियोंवश पैदा होती है.

शंकाओं के रोगी अथवा शंकालु लोग वे हुआ करते हैं, जिन्हें मानसिक कुंठाएं घेरे रहती हैं और जिन्हें बातबात पर शंका हुआ करती है. शंकालु प्रकृति के लोग अधिकांशतः एकांतप्रिय, अविश्वासी, कुछ हद तक स्वार्थी, चिढ़चिढ़े, कंजूस और सनकी लोग हुआ करते हैं. इन्हें अपने परिवारों के लोगों, संबंधियों या मित्रों में से किसी पर भी विश्वास नहीं

कुछ लोगों को महज शंका के कारण डाक्टर के यहां लाइन लगाने का शौक होता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आलस्य

परिश्रम ऋण को चुकाता और आलस्य उसे बढ़ाता है.

—विनोबा

होता, ये 'लकीर के फकीर' लोग स्वास्थ्य की दृष्टि से भी प्रायः दुर्बल ही हुआ करते हैं. आप इन्हें टनों दवाइयां और मनों टानिक पिला दीजिए, इन के शरीर पर मांस या चर्बी की परत नहीं चढ़ेगी. अपने स्वभाव के कारण ये किसी को अपना हमदर्द या मित्र तो बना ही नहीं सकते. किंतु ये उड़ती चिड़िया के पंख अवश्य पहचान सकते हैं और ऐसे लोगों को सामान्य ज्ञान भी अधिक हुआ करता है. शंकाओं की अपनी आदत पालतेपालते ये लोग अंततः रोगी ही हो जाते हैं.

जहां तक शंका और रोग का संबंध है, शंका रोग के निदान की पहली सीढ़ी होती है जिस का निवारण किया जाना चाहिए. शरीर में जब तकलीफ हो तो किसी रोग की शंका होना स्वाभाविक है किंतु जब निरोगी व्यक्ति व्यर्थ ही अपने शरीर में रोग की शंका व्यक्त करे तो ऐसी स्थिति को मनःचिकित्सकों ने 'न्यूरोसिस' का नाम दिया है.

रोगों की शंका से ग्रस्त लोग दो तरह के होते हैं. एक वे, जो बिना चिकित्सक को दिखाए या परीक्षण आदि कराए ही अपने रोगी होने की रट लगाए बैठे रहते हैं और जांच भी नहीं कराते. दूसरे प्रकार के वे लोग होते हैं जो एक नहीं, सैकड़ों चिकित्सकों से जांच कराने के बाद निरोगी करार दिए जाने के बावजूद रोगों की शंका से ग्रसित होते हैं. इन में से कइयों को चिकित्सकों पर तो विश्वास होता ही नहीं, साथ ही इन में आत्मविश्वास की भी कमी होती है.

कुछ लोग तो इस बात पर तुले रहते हैं कि डाक्टर कहीं से भी इन के शरीर में बीमारी ढूंढ़ कर निकाले अथवा ये उस की योग्यता पर भी शंका करते हैं. ऐसे लोगों के पास शारीरिक शिकायतों की एक लंबी सूची हुआ करती है, नख से ले कर शिख तक. साथ ही क्षेत्र के प्रसिद्ध चिकित्सकों की सूची, उन के नुस्खे और शरीर के सभी प्रकार के परीक्षणों की तारीख सहित क्रमानुसार रिपोर्ट भी इन के पास रहती है जिन में सभी में 'नारमल' की सील लगी होती है किंतु "कुछ तो है" का संदेहमय वाक्य ही इन के दिमाग में "एबनारमल" हुआ करता है.

वयस्कों में हृदय रोग और कैंसर तथा बच्चों में लिवर रोग के नाम मात्र से हमारे समाज के लोगों में सनसनी फैल जाती है. आजकल शहरी समाज का हर तीसराचौथा व्यक्ति अपनी बाईं छाती पर हाथ रख कर अपने चिकित्सक से पूछता है, "डाक्टर मुझे हार्ट की बीमारी तो नहीं?" लोगों की इस जागरूकता ने एक्सरे और इलैक्ट्रोकार्डियोग्राम का प्रचलन आवश्यकता से अधिक बढ़ा दिया है.

हर दूसरीतीसरी महिला अपने बच्चे का पेट दिखाते हुए पूछती है, "डाक्टर, मेरे बच्चे का पेट कुछ बढ़ा सा दिख रहा है. इस का लीवर देख लिजिए." और हम यह देख रहे हैं कि सामान्य लिवर को लिवर का रोग बता कर कई नीमहकीम लोगों की शंका का फायदा उठा रहे हैं. मेरी क्लीनिक में कम से कम दस बच्चे प्रतिदिन ऐसे लाए जाते हैं जो लिवर के नाम पर हजारों रुपयों की दवा खा चुके होते हैं और उन्हें लिवर रोग रहता ही नहीं.

इस तरह के कई उदाहरण हमारे समाज में मिल जाएंगे जिन्होंने रोगों की शंकाओं के पीछे अपना घर फूंक दिया. किसी भी प्रकार के रोग की शंका होने पर विश्वासपूर्वक अपने चिकित्सक से जांच करवा कर सही समाधान करना ही इस का इलाज है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुंगभद्रा के आंसू

पूर्वकथा : कृष्णदेव राय के विजयनगर साम्राज्य का सम्राट बनने के बाद उन की प्रेमिका महारानी नंगल ने अपनी दासी वत्सला के सहयोग से राज्य के षड्यंत्रकारियों का सफाया किया. उदयगिरि व कोंडविद जीतने के बाद सम्राट ने रायचूर को लक्ष्य बनाया. इस विजय अभियान के सेनापति पैमासनी रामलिंग से वत्सला का विवाह हुआ. पैमासनी के मारे जाने पर वत्सला को पति के साथ सती होना पड़ा... इन्हीं दिनों पुर्तगाली यात्री डोमिनगोज का आगमन हुआ. राजकीय सम्मान के साथ उसे ठहराया गया. देवदासी रुक्मिणी अम्मा ने अर्थलाभ के लालच से युवा देवदासी राजमणि को डोमिनगोज के पास भेजा. राजमणि डोमिनगोज के अच्छे व्यवहार से प्रभावित हो कर उसे प्रेम करने लगी. वह हर रात उस के कक्ष में आने लगी. एक दिन अचानक महानवमी के अभ्यास के लिए उस ने नौ दिन तक न आने की बात कही तो डोमिनगोज उदास हो गया...

"प्रिय," सहसा राजमणि की आंखों में करुणापूर्ण व्यथा झलक उठी. असमंजस में वह कुछ न बोल सकी.

"बोलो न, क्या बात है? तुम्हारी अम्मा ने अधिक धन की मांग की है न?"

"ओह, पर तुम कैसे समझ गए?" वह हर्ष मिश्रित थी.

"मुझे इस स्थिति का पहले ही भय था. इसी लिए मैं ने एक व्यापारी के द्वारा पुर्तगाल के सम्राट को अधिक धन भेजने के लिए संदेश भेजा है. किंतु जब तक धन न मिले, तब तक कैसे होगा? वह लालची बुढ़िया तुम्हें खूब तंग करेगी. है न?"

"तंग! हां, हो सकता है वह मुझे अपने पूजालय के गर्भगृह में ही बंदी बना दे. तुम उसे जानते नहीं हो."

"ऐसी दुष्टाओं से मैं पूर्णतया परिचित हूं. कह रही होगी कि विदेशी यात्री प्रति रात्रि को निश्चित राशि ही क्यों देता है. उस से अधिक धन ऐंठ कर क्यों नहीं लाती. क्यों, यही कहती है न!"

"अरे, तुम तो ऐसे बोल रहे हो जैसे उस की सारी बातें सुन रहे थे."

"कोई बात नहीं. जब तक पुर्तगाल से धन नहीं आ जाता मैं यह हार तुम्हें देता हूं. तुम उस लालची बुढ़िया को दे देना."

सरिता साहित्य पुरस्कार योजना के अंतर्गत
10,000 रुपए का पुरस्कार प्राप्त उपन्यास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रुक्मिणी अम्मा ने अपने ही हाथ से अपनी जीभ काट डाली. . .सारे फर्श पर रक्त बिखर गया. . .नंगल यह देख कर आश्चर्य चकित रह गई. . .

"अरे. . .रे, अपने गले में से निकाल कर हार दे रहे हो! यह तो बहुत अधिक मूल्यवान होगा!"

"इस का मूल्य मुद्रा में नहीं, भावनाओं में है. मेरी मँगनी के भारत के लिए रवाना होने से पूर्व यह हार मुझे इसलिए भेजा था कि मैं कभी कठिनाई में पड़ जाऊं तो इस का प्रयोग कर लूं. तुम मेरे लिए इस हार से कहीं अधिक मूल्यवान हो, प्रिय."

"ओह, मेरे परदेशी मित्र." डेभिनगोज पाइस को राजमणि ने बांहों में कस लिया. दृढ़ आलिंगन में पाइस ने भी उसी समय राजमणि को कसा किंतु सच्चे मित्रों की भांति दोनों ने अपनी सीमा का अतिक्रमण नहीं किया.

महानवमी का पर्व विजयनगर में हर्ष व उल्लास की लहर उत्पन्न कर देता था. क्या छोटे क्या बड़े सभी व्यक्ति दुर्गा पूजा अथवा अस्त्रशस्त्रों की पूजा के प्रतीक इस महोत्सव में सक्रिय भाग लेते. व्यक्तिगत आधार पर धार्मिक उपासना व रागरंग के अतिरिक्त महानवमी वास्तव में एक राजकीय उत्सव था. सम्राट के तत्त्वावधान में विशाल पैमाने पर आयोजित इस उत्सव में नगर की संपूर्ण जनता अपना पूर्ण सहयोग देती थी.

नौ अस्थायी महलों के अतिरिक्त प्रमुख सैन्याधिकारियों तथा प्रधानों के महल भी इस अवसर पर विजय मंदिर के सम्मुख निर्मित होते थे. प्रत्येक महल की छतों व दीवारों को कशीदाकारीयुक्त सुंदर वस्त्रों से सज्जित किया जाता था.

पाइस ने देखा कि प्रथम दिन विजय मंदिर के ही एक प्रकोष्ठ में दुर्गा की एक सुंदर प्रतिमा प्रतिष्ठित थी, जिस के सम्राट परमभक्त थे. ठोस सोने की प्रतिमा के सम्मुख मंच का निर्माण किया गया था जिस पर सुंदर सिंहासन पर सम्राट ने आ कर चावल, रोली धूप आदि से प्रतिमा की पूजा की. जब तक सम्राट पूजा में लीन रहे, बाहर संगीत व नृत्य का सामूहिक कार्यक्रम चलता रहा. लाखों व्यक्ति दर्शक के रूप में चारों ओर खड़े रहते थे. इस समय सम्राट के सैनिक जनसाधारण को अनुशासनबद्ध रखने का प्रयत्न करते थे. पूजा के समय ही नौ भैंसों, नौ भेड़ों व नौ बकरों की बलि दी गई जिन के रक्त से [illegible] ने दुर्गा की उपासना प्रारंभ की. जैसे ही उत्सव का प्रारंभ हुआ. बलि से हुआ. बलि के पशुओं की संख्या दोगुनी होती रही.

बलि के समय सम्राट के अपने नौ [illegible] घोड़े व अन्य नौनौ पशु सुंदर वेश में सज्जित पंक्ति में खड़े रहते. बलि व पूजा की [illegible] पर राजपुरोहित नरोत्तम श्वेत गुलाबों की [illegible] भर कर पूजागृह से बाहर लाए. [illegible] ने पूजालय के परदे हटा कर, पूजागृह के [illegible] कर उन पुष्पों को हाथीघोड़ों पर छिड़क [illegible] ने आगे बढ़ कर प्रत्येक हाथी, घोड़े व [illegible] पर दुर्गा के एकएक पुष्प को टांग दिया. [illegible] सूंड उठा कर तथा मस्तक धरती में छुआ कर पशुओं ने सम्राट को नमस्कार किया.

बलि व पशुओं द्वारा अभ्यर्थना के [illegible] विजय मंदिर के ही एक प्रकोष्ठ में सम्राट उन पर पुजारियों व सभासदों आदि ने [illegible] की. सम्राट ने तब राजमहल की छत पर [illegible] सूर्य को नमस्कार किया. जैसे ही सम्राट [illegible] नमस्कार कर लौटे, समस्त उपस्थित [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विकारियों ने एकएक कर सम्राट के सम्मुख उपस्थित हो कर उन को अपनी भेंट प्रस्तुत की. भेंट प्राप्ति के पश्चात कृष्णदेव राय विजय मंदिर के एक ऊंचे मंच पर आ कर बैठ गए. इस मंच पर सम्राट का सिंहासन इतना सुंदर था कि पाइस की आंखें फटी रह गईं. वह अपनेआप को इस के दर्शन मात्र से ही धन्य मानने लगा.

स्वर्ण सिंहासन बड़ा लंबाचौड़ा था. तीन ओर उस में तकिए बने हुए थे जो श्रेष्ठ रत्नों व हीरों से जड़े हुए थे. सिंहासन की छत में हीरे, मोती व रत्नों की बहुतायत थी जिन से आंखें चौंधियां रही थीं. तलवार की मोटाई के बराबर स्वर्ण पत्तर सिंहासन के भीतर तथा बाहर सोने की कीलों से ही जड़ा हुआ था. स्वयं सम्राट इस अवसर पर अपना जड़ाऊ मुकुट, कशीदाकारी-युक्त गुलाब के पुष्पों का श्वेत उत्तरीय तथा गले में अपने जग प्रसिद्ध नौ रत्नों का कंठा पहने हुए थे. उन की बाजू में अनंत की चमकदमक अत्यंत निराली थी. सिर पर छत्र, इधरउधर चंवर डुलाते सेवकों व बंदनवार तथा रंगबिरंगी स्मारिकाओं से सज्जित उत्सवस्थल की सुंदरता को डोमिंगोज ने आंखों ही आंखों में पीने की चेष्टा की. अपने ग्रंथ में उसे इस महोत्सव की प्रत्येक वस्तु का विस्तृत वर्णन जो करना था.

सिंहासन पर सम्राट के प्रतिष्ठित होते ही विजयमंदिर के बीच द्वार से उन की रानियों व दासियों ने उसी स्थल पर आ कर अपने आसन ग्रहण किए. पर चारों मुख्य रानियों को महल के भीतर से ही झरोखों में से उत्सव देखना होता था. रानी नंगल को इस बात का बड़ा खेद था. कभीकभी वह सोचती थी कि कहां विशाल बंदीगृह में आ कर वह बैठ गई. विजय मंदिर में भीतर ऐसे चौंतीस छोटेबड़े मार्ग थे जिन से एकएक कर हजारों रानियों ने उत्सव स्थल पर आ कर अपने स्थान ग्रहण किए. राज्य प्रधानी सलुव तिम्म अचानक विजय मंदिर के द्वार पर शोभित हुआ. सुंदर वेश में उस ने आ कर, हाथ उठा कर मानो आज्ञा प्रदान की. उत्सव प्रारंभ हो गया.

मुख्य द्वार से दो गोले बनाती हुई लगभग एक हजार नृत्यांगनाएं नखशिख शृंगार कर, बाजूबंद, कड़े, टीका, मंगल सूत्र, करधनी तथा रेशम की पटली, कंचुकी व आकर्षक परिधानों में घुंघरू के स्वर निकालती व धरती चूमती, फूलों से सज्जित वेणियां लहरातीं, नृत्य करतीं उस स्थल पर उपस्थित हुईं. प्रत्येक नृत्यांगना मंडली की एकएक सिरमौर साथ चल रही थी. उन के रूप शृंगार व आकर्षण की कल्पना इसी तथ्य से हो सकती है कि प्रत्येक सिरमौर हजारों नर्तकियों की स्वामिनी होती थी. उस के पास बहुत अधिक धनसंपत्ति व जमीनजायदाद होती थी. महानवमी के इस उत्सव में प्रत्येक नृत्य सिरमौर की एकदूसरी के साथ प्रतियोगिता रहती थी. अतः सभी अपनी मंडली का सर्वश्रेष्ठ नृत्य प्रस्तुत करना चाहती थीं.

डोमिंगोज ने सब से आगे की मंडली का नेतृत्व करती हुई राजमणि को पहचान लिया. राजमणि की आंखें भी उसी क्षण उस से चार हुईं. नजरें झुका कर, बिजुरी की भांति लहराती राजमणि सम्राट की नृत्य में ही अभ्यर्थना कर जनता के अभिवादन के लिए नतमस्तक खड़ी हो गई. अब नृत्य प्रारंभ हो गया. नृत्य की सब

जैसे ही राजमणि मंच से नीचे आई
पाइस ने उसे बधाई दी...

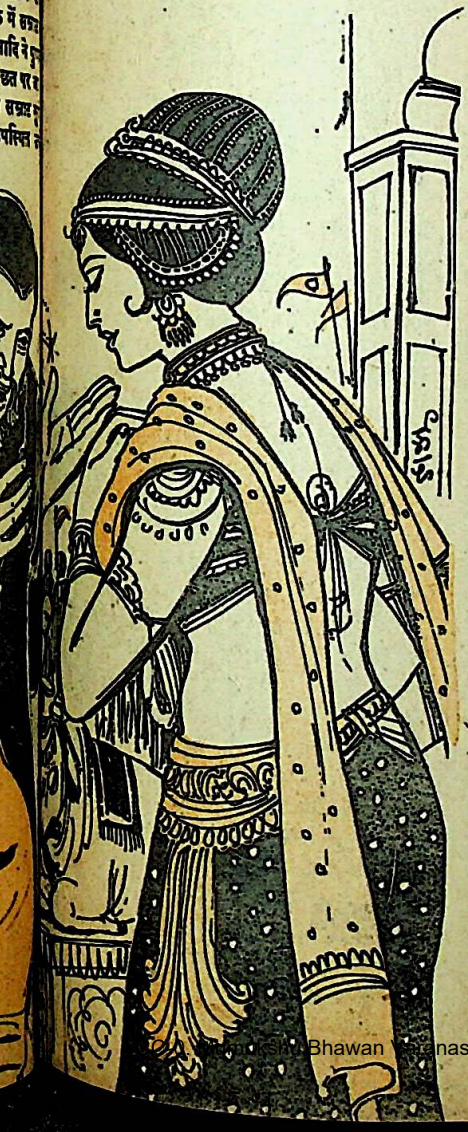

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की मुखमुद्राओं व वेशभूषाओं से ऐसा प्रतीत होता था जैसे हजारों सूर्य किरणें नयनाभिराम परिधान धारण कर धरती पर उतर आई हों. नृत्यांगनाओं ने अपनी मंडली द्वारा कभी कमल पुष्प का तो कभी विभिन्न पत्तियों व पान आदि के रूप निर्मित किए. पाइस ने नृत्य का इतना सुंदर कार्यक्रम जीवन में पहली बार ही देखा था.

नृत्य के इस कार्यक्रम के पश्चात, जो दिन के दोपहर तक चलता रहा, सम्राट व अधिकारियों के साथसाथ जनता भी थोड़े विश्राम के लिए लौट गई. तीसरे पहर में उसी स्थल पर सब फिर आ कर एकत्र हो गए.

अब कुश्तियों का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ जिस में लगभग एक हजार पहलवानों ने बारी-बारी से कुश्तियां लड़ीं. कुश्तियां इतनी भयानक थीं कि खंब ठोंक कर पहलवान एकदूसरे से पहाड़ों की भांति टकरा जाते, मुक्कों का आघात करते. पाइस ने देखा कि एक पहलवान ने तो

"तू अपने विषैले दांतों से लोगों को डसना नहीं छोड़ना चाहती...मैं तेरे दांत ही तोड़ दूंगी." नंगल ने क्रोध से रुक्मिणी से कहा.

दूसरे की आंखें ही बाहर निकाल दीं. पा
सोच रहा था, उस के अपने देश में भी
ऐसी ही होती हैं. स्पष्टतया मानव की
हिंसक वृत्तियां दोनों ही शाश्वत हैं. सब
समान हैं. पूरे तीसरे पहर कुश्तियां होती

संध्या काल में सारा नगर एक नवव
भांति सज्जित हो गया था. सारी
लिकाओं में मोमबत्तियां व दीपक जल
उत्सव स्थल की तो इस समय छटा ही नि
थी. चारों ओर कंडीलों, मशालों, दीपों
मोमबत्तियों के कारण भवनों पर टंगे
व मलमल के सुनहरी परदों से दर्शकों की
चौंधिया रही थीं. चांदनी रात्रि न होते
भी प्रकाश की झिलमिलाती आभा के
अत्यंत सुंदर नृत्य, नाटक, मूकाभिनय, हु
भिनय आदि प्रस्तुत किए गए. उस के पश्
लगभग एक पहर तक चौक में पटाखे छोड़े
जिन से आसमान द्विगुणित प्रकाशवान
उठता था.

इस के पश्चात विजय रथों का आ
हुआ, जिन के पीछे विजयनगर की सांस्कृति
सामाजिक व आर्थिक झांकियां प्रस्तुत की
सांस्कृतिक झांकियों का नेतृत्व सलुव
द्वारा सज्जित राजसी घोड़े पर किया
सम्राट का अपना घोड़ा इन के पीछेपीछे
चल रहा था. पाइस ने उस के शृंगार
को आंका तो उस के अपने देश के राज्य
वार्षिक आय से उस का मूल्य अधिक हो
पुर्तगालियों से प्रति वर्ष तेरह हजार घोड़े
जाते थे. यह घोड़ा उन में सर्वश्रेष्ठ था
पर सम्राट का राज्याभिषेक हुआ था.

मनोरम झांकियों के पीछे राजमहल
रानियों, उपरानियों व दासियों की लंबी
को देखने के लिए जनता बड़ी उत्सुक रही
प्रत्येक रानी व उपरानी अपने सर्वश्रेष्ठ
भूषणों में सजीसंवरी आई. उन के पीछे
हीजड़ों की कतार थी. तत्पश्चात पच्चीस
परिचारिकाएं चांदी के डंडे बजाती हुई
उन्होंने केवल पुष्पों से अपना शृंगार
था. इन के पीछे लंबी पंक्ति में सिर पर
धारण किए कुछ और परिचारिकाएं
हुईं. घड़े सोने के थे तथा उन में कई छिद्र
हुए थे. इन छिद्रों में से प्रकाश छनछन कर
आ रहा था, क्योंकि भीतर दीपक या
जलती रहती थी. लालल वेशभूषा में
घड़े रखे ऐसा प्रतीत होता था मानो
नहीं अग्निपुंज ही चल रहे हों.

प्रत्येक युवती व परिचारिका
आभूषण धारण कर रखे थे कि किसी
तो खाली ही नहीं था. प्रत्येक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपरानी को नौ रात्रियों तक लगातार अपनी समृद्धि व श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए इस प्रकार अपनी-अपनी दासियों को प्रस्तुत करना होता था. अंत में मशालची समूह में एकत्र हो कर निकलते थे. मशालचियों के विषय में भी नियम थे कि सम्राट डेढ़ सौ तथा जागीरदार व सामंत आदि केवल 12-12 मशालची रख सकते थे. अर्द्धरात्रि तक कार्यक्रम चलते रहे. दूसरे पहर में सम्राट फिर भीतर गए. एक बार फिर बलि चढ़ाई गई, जिस के पश्चात सम्राट व अन्य व्यक्तियों ने खाना खाया. नौ दिनों तक ऐसा ही व्यस्त कार्यक्रम चलता रहा.

अंतिम दिन सम्राट देवी की उपासना कर जैसे ही बाहर आए, वे सिंहासन पर न बैठ कर अपने राजसी अश्व पर आ कर आसीन हो गए. उन के अश्वासीन होते ही सेनाओं का निरीक्षण प्रारंभ हुआ. धनुर्धारी व अश्वों सहित सैनिक वेशभूषा में सजे योद्धा सामने से निकले. अनेगुंदी नगर की ओर से आती हुई सेनाओं की पंक्ति पर्वत श्रेणियों सी बड़ी सुंदर दृष्टिगोचर हो रही थी. समस्त सेना सम्राट को नमस्कार करती हुई चौक में से गुजरी. इस के पश्चात सम्राट राजमहल की ओर मुड़े. उन्हें छोड़ने के लिए सारे सेनापति उन के साथ गए. सम्राट के महल में पदार्पण करते ही सेनापति वापस मुड़ गए और उन के साथ ही सेना भी निर्दिष्ट स्थान की ओर चली गई.

अंतिम दिन उत्सव में श्रेष्ठ नृत्यांगना व खेलवानों को पुरस्कार प्रदान किए गए. पाइस ने यह देख कर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि राजमणि को श्रेष्ठ नृत्यांगना का पुरस्कार मिला. सम्राट के हाथों से पुरस्कार प्राप्त कर जैसे ही राजमणि मंच के नीचे आई, पाइस ने उसे जा कर बधाई दी. मुसकरा कर उस ने अपनी दृष्टि नीचे झुका ली. लाज से उस का मुख रक्तिम हो उठा था. बधाई स्वीकार करने का यह शालीन ढंग देख कर डोभिनगोज पूरी तरह लुट ही तो गया.

रुक्मिणी अम्मा तो राजमणि पर पूर्ण रूप से न्योछावर हो चुकी थी. उत्सव की समाप्ति पर उस ने राजमणि की प्रशंसा में पुल बांध दिए. हर्ष में विभोर, आनंदित हो कर जब राजमणि रात्रि को पाइस के पास जाने लगी तो अम्मा बोली, "अरे बेटी, छोड़ उस व्यापारी को. वह कोई तेरा पति थोड़े ही है. अब तेरा मूल्य बहुत अधिक बढ़ गया है. स्वयं सम्राट ने नगरी को आमंत्रित किया है. उत्सव की समाप्ति के बाद ही सम्राट की ओर से संदेश प्राप्त हो सका."

राजमणि के काटो तो खून नहीं था. तो क्या सचमुच उसे वेश्या बनना पड़ेगा? क्या देश के नियमों को तोड़ कर विदेश भाग जाने के स्वप्न मिट्टी में ही मिल जाएंगे. सम्राट की आज्ञा की अवहेलना वह तो क्या, विजयनगर में कोई भी नहीं कर सकता. उस की स्थिति बिलकुल ऐसी हो गई जैसे भेड़ को कसाई ने बांध लिया हो. भेड़ को ज्ञात होता है कि उस की बलि दी जाने वाली है पर बेचारी जानते-बूझते भी कुछ कर सकने में असमर्थ रहती है. तो क्या वह सामाजिक परंपरा पर अपनी बलि चढ़ा देगी? राजमणि मन ही मन चिंतित हो उठी. उसे ज्ञात था कि पाइस भी उसे बचाने में असमर्थ है. तो क्या वह...

नंगलपुर के राजमहलों में जब अपनी अम्मा के साथ वह पालकी में से उतरी तो भय के कारण राजमणि अधमरी हो चुकी थी. इस के विपरीत मुंहमांगा मूल्य मिलने की आशा में रुक्मिणी का मुख कमल सा खिल उठा था. जब से सम्राट ने राजमणि को बुलवाया था तभी से वह नभ में उड़ने लगी थी.

"इधर अम्मा," परिचारिका के मुख से अपने लिए एक कक्ष विशेष में जाने की बात सुन कर रुक्मिणी अम्मा आगे बढ़ गई. किंतु राजमणि भी जब उस के पीछेपीछे जाने लगी तो परिचारिका ने उसे रोक दिया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"आप इधर, महादेवी." शीघ्र सम्राट के सम्मुख पहुंचने की कल्पना ने ही उसे पसीना-पसीना कर दिया. धरती में आंखें गड़ाए कांपती हुई वह कक्ष में प्रविष्ट हुई व चुपचाप एक सुनहरी तख्त पर जा कर बैठ गई. पीछे से किसी भी क्षण सम्राट के आ जाने तथा उस को बांहों में बांध लिए जाने की कल्पना ने उस के रोंगटे खड़े कर दिए. भय ने उस के तन को हिला डाला. उस के सम्मान की क्या आज हत्या हो कर ही रहेगी? कक्ष में सरसरी दृष्टि डालने के लिए जैसे ही धीरे से उस ने अपना सिर ऊपर उठाया, पीठ दूसरी ओर किए एक पुरुष को कक्ष में बैठा देख कर वह चौंक उठी. उसी समय चिंता में मग्न उस पुरुष ने भी अचानक अपने पीछे की ओर ताका. वह उठा, "अरे राजमणि!"

राजमणि तब तक हर्षातिरेक में चीख कर उस के पास पहुंच चुकी थी.

"ओह, मेरे प्रिय पाइस, तुम और यहां?" वह उस के कंधे पर सिर रखती हुई बोली.

"और तुम? तुम यहां कैसे?" उस के सिर पर स्नेह से हाथ का स्पर्श करते हुए पाइस ने पूछा.

"मुझे सम्राट ने बुलाया है."

"ऐं, मुझे भी उन का आमंत्रण मिला है."

"तो क्या हमारे मिलन की योजना उन्हीं की है? पर उन्हें हमारे एकदूसरे को चाहने का ज्ञान कैसे हुआ?"

"यही तो आश्चर्य है."

"ओह, मैं समझ गई. हमें रानी नंगल का कृतज्ञ होना चाहिए," अचानक राजमणि चौंक कर बोली.

किंतु रानी नंगल उस समय एक अन्य उधेड़बुन में व्यस्त थी.

"आओ, रुक्मिणी अम्मा, इस वर्ष के नृत्य पुरस्कार के लिए मेरी बधाई स्वीकार करो."

"आप की कृपा है, सम्राज्ञी." रुक्मिणी नतमस्तक थी.

"सती के चौराहे पर उस दिन जरूरत से ज्यादा सती होने पर तुम खूब नाची थीं." नंगल अचानक व्यंग्य से बोली.

"सम्राज्ञी, परंपरा का पालन तो देवदासी का कर्त्तव्य है."

"बहुत सुंदर. देवदासी का कर्त्तव्य तो तुम ने तब भी अत्यधिक निभाया था जब कैद हो कर मुझे चिदंबरम के देवालय में नाचना पड़ा था."

"जी, मैं कुछ समझी नहीं." रुक्मिणी सचमुच बौखला उठी थी.

"स्मृति पर थोड़ा जोर डाल कर आज से दस वर्ष पूर्व की घटना याद करो. एक बालक चिन्ना नामक बच्ची, जिस का पूरा नाम फिर द्वे वेदी था और जिस से तुम ने वेश्यावृत्ति कराने चाही थी, एक रात्रि को देवालय से भाग गए

'मैं हार गया, नंगल, तुम विजयी रहीं. मैं अपनी पराजय स्वीकार करता हूं.' नृप मन ही मन सोच रहा था.

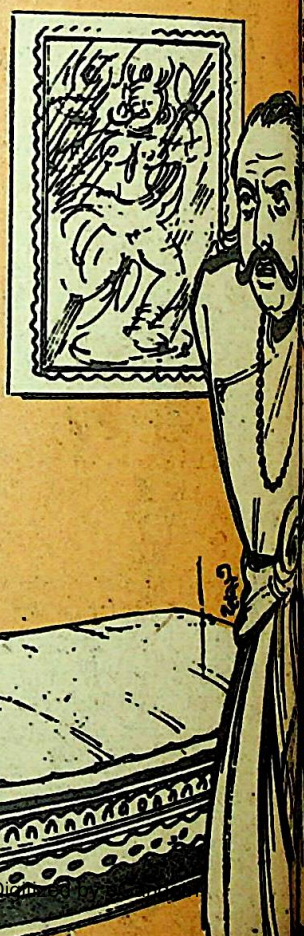

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर आप निकली. आज वही समय के थपेड़ों
के साथ डूबती-उतराती तुम्हारे सामने विजय
नगर की महारानी के रूप में बैठी हुई है."

"क्षमा, महारानी, क्षमा. देवदासी के लिए
देवार्पित का विधान तो समाज की ओर से
मान्य है. तभी मेरी ओर से आप को कष्ट उठाना
पड़ा. मुझे ज्ञात न था कि..."

"परिस्थितियां मुझे यहां पहुंचा देंगी,
क्या उसी समय मुझे ढूंढ़वा कर समाप्त करा
देतीं...क्यों, यही न? धर्म के नाम पर पापाचार
समाज द्वारा कभी मान्य नहीं हो सकता.
देवदासी देवालय की पवित्र संपत्ति होती है.
देवदेवताओं की सेवा उस के जीवन का प्रधान
कर्तव्य होता है. पर तुम ने समाज के शक्ति-
शाली, मुट्ठी भर व्यक्तियों के इंगित पर
देवताओं को भी अनाचार का अड्डा बना दिया.
क्यों न तुम्हें राज्य के कानूनों के अंतर्गत दंड
दिया जाए?"

उस क्रोध भरे शब्दों को सुन कर रुक्मिणी
को अपनी मृत्यु दृष्टिगोचर होने लगी.
राज्य के कानूनों के अंतर्गत दंड का अर्थ था—
अंगभंगों व नाककान का काटा जाना अथवा
जीवन भर कई मन का पत्थर कमर पर रख कर
धूप में खड़े रहना, लकड़ी के सींखचों में कसा
जाना, पेट में कीलें गाड़ा जाना या हाथी के
पैरों में फेंका जाना, आदि. इन सब की कल्पना
मात्र से वह कांप उठी.

"महादेवी, मैं आप की शरणागत हूं." आंसू
भरी आंखों से बहने लगे थे.

"अम्मा, मैं भी इसी प्रकार तुम्हारे सम्मुख
रोई थी. इसी प्रकार बेचारी राजमणि आज
तुम्हारे सम्मुख हाथ जोड़ कर कुछ निवेदन कर
रही थी. पर तुम ने उस के साथ क्या
व्यवहार किया? बताऊं?"

"नहींनहीं, मैं आप को वचन देती हूं,
सम्राज्ञी, कि यदि आप मुझे एक अवसर प्रदान
करेंगी तो मैं अपना काला मुख विजयनगर में
नहीं दिखाऊंगी. मैं यहां से कहीं अन्यत्र चली
जाऊंगी."

"और फिर वहां जा कर भी अपनी नारी
विरोधी गतिविधियां प्रारंभ कर दोगी. क्यों?"

"नहीं. मैं आप को सम्राटप्रिय विठोबा की
साक्षी दे कर वचन देती हूं."

"ठीक है, तो लिखो इस ताम्रपत्र पर कि तुम
अपनी इच्छा से चिदंबरम के देवालय
को छोड़ कर विजयनगर से अन्यत्र जा रही हो."

"जी, मैं अपनी इच्छा से?"

"अच्छा, तो हमारी अथवा राज्य की आज्ञा
से जाना चाहती हो? तो कल तुम्हें विजयनगर
से निष्कासित किए जाने की आज्ञा प्राप्त हो
जाएगी. पर ऐसा होने पर तुम्हें अपनी नाक या
जिह्वा से हाथ धोना पड़ेगा. चलो, यही ठीक
रहेगा."

"नहींनहीं, सम्राज्ञी, मैं आप के पैर पड़ती
हूं. लीजिए, मैं आप की आज्ञा का पालन कर
हस्ताक्षर किए देती हूं."

"तो यह भी लिखो कि मैं अपनी उत्तराधि-
कारिणी राजमणि को देवालय की प्रमुख देवदासी
नियुक्त करती हूं."

"पर मैं तो..."

"क्यों राजाज्ञा का अर्थ तुम्हें फिर स्पष्ट
करूं?"

"ओह, लाइए, लिख देती हूं."

"अंत में लिखो कि विदेशी यात्री पाइस
व राजमणि यदि विदेश जाना चाहें तो मैं
पूर्णतया सहमत हूं. उन के विवाह की इच्छा में
मैं कोई बाधा नहीं डालूंगी क्योंकि मैं सामाजिक
बंधन से उन्हें मुक्त करती हूं."

"किंतु राजमहिषी. जब मैं यहां से जा रही
हूं तो मेरी बला से राजमणि विवाहिता रहे
अथवा अविवाहिता, विधवा हो या सधवा, मुझे
इस से क्या?"

"अम्मा," रानी नंगल क्रोध में चिल्ला कर
बोली, "तू बाहरभीतर दोनों से ही निकृष्ट है.
एक अविवाहिता युवती को विधवा होने की बात
कहते तुझे लाज नहीं आई? मैं तुझे दूध पिला
कर तेरी आदत बदलना चाह रही थी और तू
अपने विषैले दांतों से लोगों को डसना नहीं
छोड़ना चाहती? ठीक है, अब मैं तेरे विषैले दांत
ही तोड़ूंगी. देखती हूं तू नागिन कैसे बनी
रहती है?"

"अरे, कोई है? इस बुढ़िया को नीचे तह-

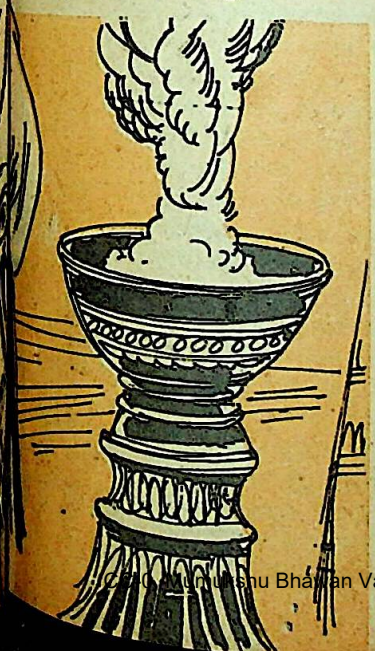

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जुदाई

कभी तो आप मेरे पास
आने की तरह आएं,
कोई आना है आते ही
चले जाना जुदा हो कर?
—'रहबर'

खाने में ले जा कर डाल दो."

"नहीं महारानी, मैं सचमुच क्षमाप्रार्थी हूं." रुक्मिणी डकराई, "मेरी जिह्वा इतनी कटु है जो मुझे सब का शत्रु बना देती है. लीजिए." कहतेकहते पास में पड़ी फल काटने की छुरी उस ने उठा ली. अपने एक हाथ से पकड़ कर उस ने दूसरे से नंगल रानी के रोकतेरोकते जीभ पर छुरी चला दी. जीभ कट कर उस के हाथ में आ गई. वह बिलबिलाने लगी. सारे कक्ष में रक्त की धारा बह गई. वह बेसुध हो कर गिर पड़ी.

"यह तू ने क्या किया, बुद्धिहीना? पश्चाताप की भावना तेरे हृदय में है ही नहीं, केवल क्रोध के वशीभूत हो कर तू ने स्वयं को कष्ट पहुंचाया है, जिस से सारा पाप मुझ पर पड़े. पर कोई चिंता नहीं. तुझे तेरे पापों का ही दंड मिला है, मेरे पापों का मुझे मिलेगा. पर मैं नहीं सोचती कि मैं ने कोई पाप किया है. तू ने समाज में अस्वस्थ वातावरण उत्पन्न किया, मैं ने उस अस्वस्थता को, समर्थ होने के कारण, मिटाने का संकल्प किया, बस तेरीमेरी यही लड़ाई है."

नंगल ने रुक्मिणी को उसी अवस्था में देवालय पहुंचवा दिया. उस से पूर्व राजमणि को सम्राज्ञी ने अपने प्रकोष्ठ में बुलाया. सम्राज्ञी की दयालुता, बुद्धिमानी व सुंदर स्वभाव की प्रशंसा वह पहले ही सुन चुकी थी. इसी लिए उन के प्रकोष्ठ में जाते हुए वह भयभीत थी, विशेषकर डोभिनगोज से आज की भेंट की उन की योजना के पश्चात वह हृदय से उन की कृतज्ञ थी. उसे प्रसन्नता थी कि आज उन्होंने उसे मानसिक द्वंद्व से बचा लिया, अन्यथा वह आत्महत्या ही कर बैठती. रुक्मिणी अम्मा के प्रति उन की भावना उसे स्पष्ट हो चुकी थी. इसलिए कक्ष में जाते ही वह जा कर उन के चरणों में झुक गई.

"मणि," उस के बालों पर अपना स्नेहसिक्त हाथ रख कर नंगल बोली, "आज की तुम्हारी नृत्यविद्या देख कर हमें अत्यधिक प्रसन्नता है कि तुम ने अपनी स्थिति को शीघ्र पहचान लिया है. तुम्हें ज्ञात नहीं है कि देवालय में मेरी भी स्थिति कभी तुम्हारी जैसी थी. केवल इतना है कि तुम जिन बातों को ले आज जूझ रही हो मैं उन्हें पार कर चुकी हूं. अकेली असहाय थी केवल सम्राट को छोड़ कोई मेरा साथी न था. तुम्हें पाइस जैसा मिला है और अब एक मार्गदर्शिका भी गई है जो तुम्हें नष्ट नहीं होने देगी."

"सम्राज्ञी, मैं किन शब्दों में कृतज्ञता करूं? विश्वास कीजिए, सम्राट की ओर आने का आमंत्रण पा कर मुझे लगा था मेरे जीवन का विराम आ गया."

"सम्राट न सही, कोई और तुम्हारे की हत्या कर देता. रुक्मिणी अधिक तुम्हें पाइस के पास न छोड़ती, यह निश्चित महानवमी के पर्व के पश्चात एक रात्रि व रुक्मिणी को पाइस के आवास के बाहर में से उतरते देख इसी लिए मेरा माथा गया था. तुम रुक्मिणी को जानती नहीं. मेरा सर्वनाश करने में कोई कसर नहीं यह भी सच है कि मैं भाग कर बच गई तो यह भागने भी नहीं देती."

"ओह, तो इस दुष्टा ने आप को भी पहुंचाया था?"

"पर अब चिंता मत करो. उस ने आ कर अपनी जीभ स्वयं काट डाली है, अपना दंड अपने ही हाथों मिल गया है, वह उधर बेसुध पड़ी है."

"सच?" अम्मा की रक्त में प्लावित कर भी राजमणि को प्रसन्नता ही हुई. में वह अपने ही हाथों से उसे इसी दंड का बनाना चाहती थी.

"उस ने तुम्हें विजयनगर के विसंवर लय की उत्तराधिकारिणी घोषित किया है. से विवाह की तो अनुमति उस ने नहीं वह अब विजयनगर छोड़ देगी. और यदि विजयनगर नहीं भी छोड़े तो कोई बात नहीं की विषैली जीभ तो कट ही गई है. केवल तन की खोल नागिन की बची है.

"मैं जानती हूं, महादेवी, कि यह इच्छा से कभी पश्चाताप नहीं कर सकती. आप ने इस के लिए प्रेरणा दी होगी. मैं ओर से आप से प्रार्थना करती हूं कि देश निकाला न दें. वैसे भी आप के यह इतनी भयंकर नहीं रही है."

पर दोनों ने उसे समझाने में भूल घायल नागिन ने ऐसा रूप दिखाया कि को उस की कल्पना तक न थी. रुक्मिणी जीभ काटने की बात नगर में आग की फैल गई. अपनी दुष्टता के लिए चाहे की निंदा न मिली हो पर जीभ कट जाने की सहानुभूति की वह पात्र अवश्य बन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्थिति का उस ने भरपूर लाभ उठाया.

विडंबरम देवालय पहुंच कर उस ने सुध आने पर 'गोंगों' करते हुए तथा मुंह बिचका कर राजमणि को जी भर गालियां दीं. यहां तक कि उसे मारने के लिए भी दौड़ी. पर उसे ज्ञात न था कि ताम्रपत्र पर हस्ताक्षर कर उस ने अपनी गरदन स्वयं कटा ली थी. सारे देवालय के कर्मचारी व अधिकारी अब राजमणि के अधीन हो चुके थे. राजमणि पर झपटने पर कर्मचारियों ने उसे पकड़ लिया व तहखाने में डालने के लिए उसे ले चले, पर इस समय दया दिखा कर राजमणि ने ही उसे क्षमा कर दिया. ऐसा कर उस ने अपने सिर पर एक भयंकर संकट को आमंत्रित कर लिया.

रात्रि को सब के सो जाने पर रुक्मिणी चुपचाप सब की आंख बचा कर उठी. उस ने देवालय छोड़ दिया व छिपतीछिपाती वह सलुव तिम्म के प्रवास की ओर बढ़ गई. किसी ने उसे नहीं टोका. व्यक्तिगत जानपहचान के अतिरिक्त देवदासी कभी भी कहीं जा सकती थी. अपनी हठी जीभ, करुणापूर्ण अभिनय व आंसुओं से बिना बोले ही उस ने अपनी कहानी राजप्रधानी को स्पष्ट कर दी.

"रुक्मिणी अम्मा, अभी तो मैं नंगल के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकता क्योंकि वह बहुत शक्तिशाली बन बैठी है. मैं राजमणि से अवश्य तुम्हारा प्रतिशोध लूंगा. मुझे ज्ञात न था कि नंगल को राजमहल में ला कर मैं अपनी ही जड़ खोद रहा हूं. तुम कहीं न जाओ और मेरे गुप्तगृह में रह कर शांति से समय की प्रतीक्षा करो."

शीघ्र ही शिवरात्रि आ गई. प्रति वर्ष की भांति धार्मिक परंपरा के रूप में रथयात्रा का उस दिन आयोजन किया गया. रथयात्रा के रूप में नगर की वीथिकाओं व राजमार्गों से संगमरमर का भारी रथ सोलह व्यक्तियों द्वारा रस्सों से खींचा जाता था. देवदासियां आगेपीछे व रथ पर सुंदर नृत्य करती थीं. महानवमी से प्रथम पुरस्कार प्राप्त राजमणि का नर्तकियों का दल रथ पर आरूढ़ होने के लिए चुना गया.

कार्यक्रम के अनुसार राजमणि विद्युत गति की भी लजाती नृत्य करने में मग्न थी. लोग उसे देख कर दांतों तले उंगली दबा रहे थे. राजमहल के सिंहद्वार पर पहुंचते ही सम्राट ने भी ताली बजा कर राजमणि के नृत्य की प्रशंसा की. पसीने से नहाई हुई राजमणि अभी नृत्य की समाप्ति पर रथ के किनारे खड़ी हो कर धौंकनी की तरह चलती सांसों को नियंत्रित करने का प्रयत्न कर विश्राम की मुद्रा में थी कि पास खड़ी एक अन्य देवदासी के हाथ का हलका सा धक्का लगते ही वह संतुलन न रख सकने के कारण दोनों हाथ भय से ऊपर उठाए पहले रथ के पहिए पर और फिर चलते हुए रथ के पहिए के नीचे गिर कर सुध खो बैठी. रथ के भारी पहिए ने उस के तन व आकर्षक मुख को कुचल कर कुरूप बना दिया था. केवल एक मांसपिंड वहां पड़ा रह गया था. सामने बैठा पाइस राजमणि के नृत्य की प्रशंसा में ही खोया बैठा था. अचानक अपने सम्मुख राजमणि को संभलने का निष्फल प्रयास करते तथा फिर नीचे गिरते देख कर वह भय से कांप उठा. उस का मुख श्वेत पड़ गया. आंखों में दुख, पीड़ा व वेदना जम कर बैठ गई. उस के सारे स्वप्न एक ही झटके में टूट चुके थे. मुंह बाए वह स्पंदनहीन बैठा रह गया.

किंतु उस की आशा के विपरीत राजमणि के गिरते ही लोग दुख व सहानुभूति के प्रदर्शन के स्थान पर हर्ष से नाच उठे. प्रसन्नता से पुरोहितों और पंडितों ने चीखचिल्ला कर आसमान सिर पर उठा लिया. "धार्मिक मोक्ष प्राप्त कर राजमणि अमर हो गई," "राजमणि ने अपना बलिदान धर्म के लिए कर दिया," "राजमणि स्वर्गवासिनी हो गई," जैसे शब्द पाइस के कानों में पड़े. वह यह देख कर स्तंभित हो गया कि लोगों ने अब बड़ी संख्या में नृत्य शुरू कर दिया था. विजयनगर की परिपाटी ही ऐसी थी. प्रति वर्ष रथयात्रा पर कोई न कोई व्यक्ति अपनी बलि दे कर धर्म के प्रति अपनी अमर आस्था प्रकट करता था. विजयनगर में वैष्णव धर्म की यही पवित्र श्रेष्ठ प्रथा मानी जाती थी.

अर्धरात्रि को राजप्रधानी ने जा कर गुप्तगृह में यह सुसंवाद रुक्मिणी अम्मा को सुनाया. "अम्मा लो, तुम्हारा प्रतिशोध पूर्ण हुआ. राजमणि की मृत्यु नंगल को बड़ी कष्टकर लगेगी. मुझे तो आज वास्तविक शांति मिली है. कल की छोकरी मुझ से लड़ने चली थी."

"कैसे?" हाथ की हथेली उठा कर गूंगी ने पूछा.

"बस, एक देवदासी को कुछ स्वर्ण मुद्राएं देनी पड़ीं." वह खिलखिलाया. गूंगी ने भी अट्टहास किया.

कक्ष के बाहर कान लगाए खड़ी एक पुरुष

खामोशी

आप के दिल में घर बनाएं हम
इतनी हिम्मत कहां से लाएं हम?
यह खामोशी तो मार डालेगी
कोई तूफां नया उठाएं हम.
—जैमिनी 'सरशार'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हार

निर्लज्ज हार कर भी नहीं हारता, मर कर भी नहीं मरता.

—जयशंकर प्रसाद

मूर्ति सहसा वहां से हट गई. उस दिन के पश्चात विजयनगर में नंदिता नामक देवदासी दिखाई न दी.

"राजकुमार तिरुमल्ल को?" कृष्णदेव राय ने आश्चर्य से पूछा.

"जी, सम्राट," नंगल का उत्तर था.

"छः वर्षीय राजकुमार को इतना विशाल साम्राज्य. . .? तुम हास्य की मनःस्थिति में तो नहीं हो?"

"सम्राट, मैं आप से ऐसा दुःसाहस करूंगी? राजकुमार तो नाम मात्र के लिए रहेंगे, वास्तविक शासक तो आप ही रहेंगे, राजप्रधानी के रूप में."

"किंतु ऐसा क्यों?"

"राजप्रधानी सलुव तिम्म की बढ़ती हुई शक्ति व शासन पर बढ़ता हुआ उन का प्रभाव देख कर यही उचित है कि उन्हें उपप्रधानी बना दिया जाए."

"तो क्या प्रधानी अपनी सीमा का उल्लंघन कर गया है?"

"जी, अभी तो नहीं, किंतु कभी भी सीमोल्लंघन कर सकता है, आप के पिता नरसिंह नायक तथा उस से पूर्व नरसिंह जैसे प्रधानियों से उसे प्रेरणा तो मिल ही सकती है."

"तो हम उसे पदमुक्त ही क्यों न कर दें?"

"नहीं, सम्राट, शत्रु पर आघात तब होना चाहिए जब वह असावधान हो. फन ऊंचा किए क्रोध से कांपते सर्प पर आप का तनिक सा वार उसे आप पर आक्रमण की क्षमता प्रदान कर देगा. फिर किस आधार पर आप उसे पदमुक्त करेंगे? हमारे पास उस की द्रोहिता का कोई प्रमाण तो है ही नहीं."

"हम तुम्हारा प्रस्ताव तो स्वीकार कर लेते हैं किंतु. . ."

"बोलिए न, सम्राट, चुप क्यों हो गए?"

"रानी नंगल, तुम्हें याद है बीस वर्ष पूर्व जब तुम पहली बार इस राजमहल में प्रविष्ट हुई थीं तो इसी मंत्रणाकक्ष में हम ने परामर्श दिया था कि प्रधानी अथवा कोई भी व्यक्ति शासनविरोधी षडयंत्र कर हमें पदच्युत कर सकता है. ऐसी स्थिति में शासक के लिए यह पता लगाना कठिन है कि कौन सा परामर्श अधि लाभ का है, कौन सा उस के विरुद्ध."

"सम्राट. . ." नंगल अपने स्थान पर से कांपती हुई उठ खड़ी हुई, "आप मुझ पर अविश्वास कर रहे हैं?"

"ऐसा करने से पूर्व हम जीवित भी नहीं रहना चाहेंगे."

"तो इस अनोखे प्रस्ताव के कारण क्या आप मुझे समझने में भूल कर रहे हैं. किंतु असंभव तो नहीं है. ऐसा आप के राज्य में कभी से होता आया है कि सम्राट अपने सम्मुख अपने उत्तराधिकारी को शासन सत्ता सौंप दे."

"असंभव तो हमें प्रतीत हो रहा है, नंगल क्षमा करना, नारी हो कर तुम ने अपने पुत्र को सिंहासनारूढ़ कराने का प्रस्ताव क्यों नहीं रखा? सम्राज्ञी चिन्नादेवी के पुत्र तिरुमल्ल को तुम ने क्यों चुना?

"तो सुनिए, सम्राट, मैं भी आप से स्पष्ट ही बोलूंगी," अपने स्थान पर बैठते हुए नंगल बोली, "नारी अपने पुत्र को ममतामयी दृष्टि से ताक कर संसार में उसे सर्वश्रेष्ठ समझती है, किंतु नंगल को राजमहल में पदार्पण करते ही सम्राट के वे शब्द याद हैं, 'राज्य का सम्राट कोई भी हो पर हृदय सम्राज्ञी केवल नंगल की रहेगी.' स्पष्ट था, मेरा पुत्र कभी भी सिंहासनारूढ़ नहीं हो सकता. फिर व्यर्थ ही पहाड़ खोद कर पानी ढूंढने से क्या लाभ?"

"ओह, तुम सचमुच महान हो, नंगल रानी, हम अपने अविश्वास के लिए तुम से क्षमाप्रार्थी हैं," कहतेकहते सम्राट ने नंगल को भुजपाश में बांध लिया.

"हम कल ही दोनों घोषणाएं कर दें, नंगल."

"जी," कक्ष से बाहर जाते हुए सम्राट को देख कर नंगल बोली, 'अब देखती हूं प्रधानी की बाजी किस के हाथ में रहती है. तुम बहुत भोले हो, सम्राट. न तुम नंगल और न ही अपने प्रधानी का खेल समझ पाए. मेरे प्रस्ताव पर यह चुप बैठने वाला नहीं है. फिर भी मैं विश्वास दिलाती हूं कि मैं जो कुछ कर रही हूं विजयनगर राज्य की सुरक्षा के लिए कर रही हूं.'

घोषणा होते ही सचमुच साम्राज्य में हलचल मच गई. सम्राट को अचानक यह क्या हो गया? शक्ति व समृद्धि के श्रेष्ठ काल में उन्हों ने अपनी सत्ता राजकुमार को क्यों सौंप दी? इस शासन प्राप्ति के संघर्ष का नया दौर प्रारंभ हो गया? प्रधानी की गुप्त गतिविधियां क्या रानी को ज्ञात हो गईं और इसी लिए उन्होंने यह कदम उठा लिया? जितने मुंह उतनी ही बातें. घोषणा को सुन प्रधानी सलुव तिम्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हतप्रभ-सा रह गया. उसे स्वप्न में भी आशा न थी कि उसे इस प्रकार दूध में से मक्खी की तरह निकाल फेंक दिया जाएगा. पिंजरे में विचलित सिंह की भांति वह कक्ष में चक्कर लगा रहा था. प्रतिहिंसा व क्रोध के भाव रहरह कर उस के मुख पर आते-जाते थे. कुछ न कर पाने की असमर्थता उसे और अधिक पागल बना रही थी. तो इस पर यह बार नंगल ने किया है? प्रधानी से स्वप्रधानी बनाए जाने का यह अपमान सह कर वह विजयनगर में जनता को अपना मुख कैसे दिखाएगा? क्या वह एक नारी से पराजित हो जाएगा? पुरुष अहं ने उसे हिला डाला.

'मैं हार गया, नंगल, तुम विजयी रहीं. अच्छे खिलाड़ी की भांति मैं साहसपूर्वक अपनी पराजय स्वीकार करता हूं पर एक कूटनीतिज्ञ की भांति मैं अपना अवसर अंत तक नहीं छोड़ूंगा,' सलुव ने मन ही मन बोला.

'मैं जानती हूं, सलुव, तुम्हारी राजनीतिक बुद्धि का चमत्कार मैं कई बार देख चुकी हूं. इसी लिए तो मैं तुम्हारे प्रति बिलकुल असावधान नहीं हो सकती. जिस अवसर की तुम प्रतीक्षा कर रहे हो, कम से कम अपने हाथों से उसे नहीं आने दूंगी. हां, यह मैं चाहती हूं कि खेल तुम ईमानदारी से खेलना, हार या जीत किसी की भी हो,' अपने राजमहल में नंगल भी मन ही मन सोच रही थी. सभी संभावित परिस्थितियों पर विचार कर उस ने अपने विरोधी को अच्छीखासी पटकनी दे दी थी. दर्शक प्रधानी की पराजय पर तालियां पीट रहे थे पर नंगल अब अपने प्रतियोगी के अगले दांव की प्रतीक्षा कर रही थी.

दो समान शक्तिशाली शत्रुओं के बीच बेचारे सम्राट की स्थिति बड़ी दयनीय थी. डरते-डरते नंगल के प्रस्ताव पर उन्होंने कदम तो उठा लिया था क्योंकि अपनी रानी की योग्यता में विश्वास होते हुए भी सलुव से वह पूर्णतया परिचित थे. जिस महान साम्राज्य के पौधे को उन्होंने अपने रक्त से सींचसींच कर बड़ा किया था उस के भविष्य के प्रति न जाने क्यों वह विशेष आत्मवान नहीं थे. सब कालों में कृष्णदेव राय जैसे व्यक्ति उत्पन्न नहीं होते, किंतु सलुव तिम्म जैसे व्यक्ति तो हर काल में उपस्थित रहते हैं. ऐसी स्थिति में अपनी आंखों के सम्मुख राजकुमार तिरुमल को शासन का प्रशिक्षण देना किसी भी दृष्टि से उचित नहीं था. किंतु उन का विरोध किस दिशा से हुआ जिस की उन्होंने कल्पना तक नहीं की थी.

"महाराजाधिराज, राज्य के छोटे आलया (दामाद) राजा तिरुमल शिवराय पधारे हुए हैं. आज्ञा हो तो भीतर ले आऊं." प्रतिहारी ने एक पर्ची उन्हें आ कर थमाई थी.

"अवश्य, उन्हें ससम्मान ले आओ," सम्राट ने मसनद के सहारे बैठेबैठे कहा. "आइए, आलयाजी, आइए. कहिए कुशलमंगल तो हैं? हमारी बेटी तो कुशल है?"

"जी, सम्राट, सब कुशलमंगल हैं, किंतु गोलकुंडा पर कुछकुछ संकट के बादल मंडराने लगे हैं. आप की अनोखी घोषणा के उपरांत हमारे शांत बैठे मुसलिम शत्रुओं में उत्साह की नई लहर उत्पन्न हो गई है."

"तो क्या जमशेद कुतुबशाह फिर सिर उठाने लगा? उसे क्या अपने पिता सुलतान हुसैनशाह का अंत ज्ञात नहीं है जब तुम ने बड़े साहस से, ताकत के नशे में चूर सुलतान का चेहरा कुरूप किया था?"

"जी, यह सब कुछ है. यह भी सही है कि मेरे वहां रहते हुए जमशेद को सिर उठाने का साहस नहीं हो सकता. पर आप यह भूल जाते हैं कि उस के पिता ने पराजय से पूर्व राजकोंड, देवरकोंड, कोविलकोंड, धनपुरा, वारंगल, वैलयकोंड सब को आंधी की भांति आ कर जीत लिया था. पंजल के युद्ध में हमें पराजित कर उस ने कंबनपेट, कोंडमिल, यहां तक कि राजमुंदरी तक अपनी मुसलिम ध्वजा फहरा दी थी. मुनिमेर नदी पर राजा सीतापति को उस ने किस प्रकार भाग कर कोंडमिल में शरण लेने के लिए बाध्य किया था, क्या ये सब बातें कुतुबशाह के वंशधर इतनी शीघ्रता से भूल जाएंगे?"

"तुम ठीक कहते हो. अब तो बीजापुर का आदिलशाह भी हमारे कहने पर कुतुबशाह से कोंडमिल में लड़ने के लिए तैयार नहीं होगा क्योंकि स्वयं उस ने हम से रायचूर के युद्ध में भयंकर पराजय का मुंह देखा है. किंतु हम तो अभी जीवित बैठे हैं. राजा तिरुमल को बना दिया गया तो क्या, प्रधानी तो हम ही हैं. यदि उस ने युद्ध करने की मूर्खता की तो हम जमशेद को युद्धक्षेत्र से जीवित नहीं लौटने देंगे."

"किंतु, सम्राट, सिंहासन पर आप ही बने रहते तो क्या बुराई थी? ऐसी अचानक क्या आवश्यकता आन पड़ी?"

"केवल व्यक्ति बदले हैं. सिंहासन तो हमारा ही है, तिरुमल शिवराय?"

"व्यक्तियों के बदलने से तो राज्य बदल

जीवन

मनुष्य का जीवन इस लिए है कि वह अत्याचार के खिलाफ लड़े.

—सुभाषचंद्र बोस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाते हैं, सम्राट? आप यह क्यों नहीं समझते कि प्रत्येक कार्य के पीछे कारण छिपा रहता है. हमारे शत्रुओं की दृष्टि में इस घोषणा का कारण आप की शारीरिक असमर्थता व शक्तिहीनता ही है."

"वे मूर्ख हैं यदि ऐसा सोचते हैं. हम उन्हें अपनी समर्थता व क्षमता का परिचय युद्ध के मैदान में प्रदर्शित करेंगे. तुम भूले न होगे कि कुछ दिन पूर्व बिहार के सुलतान महमूद ने जब हम पर चढ़ाई की तो हम ने उसे बुरी तरह पराजित किया. हम ने उसे घोड़े से उठा कर फेंक दिया. तब उस ने हम पर कभी आक्रमण न करने की कसम खा कर जान बचाई. वास्तविक कारण कुछ और ही है. तुम राज्य से दूर रहते हो. आंतरिक सुरक्षा व अनावश्यक व्यक्तियों के हाथों में शक्ति बढ़ जाने से रोकना ही हमारी घोषणा का उद्देश्य है."

"ओह, यह बात है. आप अपनी स्थिति को अच्छी तरह समझ सकते हैं, सम्राट. फिर भी मैं इतना अवश्य कहूंगा कि आप की घोषणा की पड़ोसी राष्ट्रों पर अच्छी प्रतिक्रिया नहीं हुई है. वे धीरेधीरे शक्तिशाली हो उठे तो कोई आश्चर्य नहीं. मेरा कर्त्तव्य आप को नई स्थिति से अवगत कराना था, वह मैं ने कर दिया. हां, आप को युद्ध में मेरी कभी भी, किसी भी समय आवश्यकता पड़े तो मैं हमेशा तत्पर हूं."

"आप पर ही तो भरोसा है, शिवरायजी. पर आप चल कहां दिए? नए शासक सम्राट तिरुमलराय से नहीं मिलेंगे?"

"वहीं जा रहा हूं, सम्राट. सब लोगों से नमस्कार कर तभी जाऊंगा. आज्ञा दीजिए. नमस्कार."

"जुगजुग जीओ."

तो राज्य के प्रदेशों में उन की घोषणा की यह प्रतिक्रिया रही? लगता है शिवराय तिरुमल अपनी आंखों से स्थिति का अवलोकन करने आए थे. उन्होंने सोचा होगा कि छः वर्षीय राजकुमार से तो कोई भी सत्ता हथिया सकता है. उन्होंने मन ही मन अपने क्षुद्र विचारों के लिए अपने आप को टोका किंतु वास्तविकता तो यही थी कि उन की घोषणा का चिरपरिचित व्यक्तियों ने भी गलत ही अर्थ लगाया है. न जाने कैसे सब ने सोच लिया कि कृष्णदेव राय शक्तिहीन हो गए. चलो, अच्छा ही है, यह सोच कर किसी ने आक्रमण करने की धृष्टता की तो उसे अच्छा पाठ पढ़ा दिया जाएगा. सम्राट मन ही मन मुसकराए. योजना वास्तव में बड़ी सुंदर थी. नंगल की बुद्धि की उन्होंने जी भर कर प्रशंसा की. कितनी शीघ्रता से राज्य के शत्रु व मित्रों का ज्ञान हो जाएगा? नए विकास से नंगल को परिचित कराने के लिए वह स्वयं नंगलपुर की ओर रवाना हो गए.

अंतःपुर में अपनी पत्नी कृष्णदेव राय से सुपुत्री वेंगल से यह तथ्य जान कर कि वास्तविक शक्ति परीक्षण रानी नंगल व राजा अच्युत सलुव तिम्म के बीच है, जिस में नंगल को विजय मिली है, शिवराय तिरुमल उलटे पांव गोलकुंडा की ओर चल दिए. रानी नंगल से वह अत्यधिक भयभीत थे. रायचूर के युद्ध में उस का प्रताप वह देख चुके थे. वैसे भी उन्हें समाचार मिलते रहता था कि रानी नंगल कितनी अद्भुत महिला है. यदि उसे भनक भी लग गई कि वह विजयनगर क्यों आया था तो शीघ्र ही गोलकुंडा से उस का पत्ता साफ हो सकता है. न जाने कौन सी मिट्टी, किस बुद्धि की बनी है वह, कि राज्य की छोटी से छोटी गतिविधि का भी ज्ञान रखती है. उस के जीवित रहते, सिंहासन पर सम्राट कृष्णदेव हो या तिरुमल, कोई आंख उठा की ओर आंख उठा कर भी नहीं देख सकता.

सम्राट से सारा वृत्तांत सुन कर रानी नंगल खूब हंसी.

"आप ने ठीक सोचा, सम्राट. राजा तिरुमल शिवराय अवश्य ही विजयनगर की वास्तविक स्थिति परखने आए थे. पर मैं आप को विश्वास दिलाती हूं कि वह अब कभी विजयनगर की ओर बिना बुलाए मुंह भी नहीं करेंगे. योजना विजय का श्रेय न जाने क्यों आप उन्हें दें किंतु आप यदि क्षमा करें तो बताऊं कि राजा के युद्ध में मैं ने उन्हें लड़ते देखा था. सच तो मैं ही कहीं अच्छा युद्ध लड़ सकती हूं."

"तुम्हारी कौन समानता कर सकता नंगल? तुम तो प्रत्येक क्षेत्र में ही अद्वितीय हो बेचारा शिवराय क्या, तुम तो हमें भी युद्ध में पराजित कर सकती हो."

"जी नहीं, सम्राट. आप की युद्ध प्रवीणता तो विश्वविख्यात है. मैं तो आप के पासंग में नहीं हूं. रायचूर के युद्ध में आप की अद्भुत युद्धकला मैं ने अपनी आंखों से देखी है. एक क्षेत्र और भी है जहां मैं ने आप से पराजय स्वीकार की है."

"कौन सा, प्रेम का क्षेत्र?"

"उस क्षेत्र की तो बात करना ही व्यर्थ है, सम्राट." लजा कर नंगल बोली, "वहां आप का एकाधिकार है, पर मैं साहित्य के क्षेत्र में आप की अद्भुत प्रतिभा की बात कर रही हूं. कलम व तलवार का इतना सुंदर समागम अन्यत्र नहीं दिखाई पड़ता. युद्धों में विजय प्राप्त के साथ आप ने जंबूतिकाल्पनम, मदालसा चरित, रसमंजरी, सत्यमधु प्रणानम, अमुक्तम आदि सुंदर ग्रंथों की रचना कर ली. वास्तव यह तथ्य स्तुत्य है, आश्चर्यजनक है. इसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से सुपर रिन की चमकार ज़्यादा सफ़ेद

सुपर रिन नियमित इस्तेमाल कीजिए—
अपनी आंखों देखिए सचमुच कितना ज़्यादा सफ़ेद—सुपर रिन से आपके कपड़े किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से ज़्यादा सफ़ेद धुलते हैं, क्योंकि सुपर रिन में सफ़ेदी लाने वाला बेजोड़ फार्मूला है.
सच तो जो आंखों से दिखे.

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से अधिक सफ़ेदी की शक्ति से भरपूर

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिंटास-RIN. 28-1810 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाँतों के डॉक्टर कहते हैं
नियमित रूप से, ब्रश से दाँतों की सफ़ाई
और मसूड़ों की मालिश कीजिए;
मसूड़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न से दूर रहिए.

फोरहॅन्स टूथब्रश इस्तेमाल कीजिए.
ख़ास तौर से बनाया गया
फोरहॅन्स डबल-एक्शन टूथब्रश आपके दाँतों की
सफ़ाई के साथ-साथ मसूड़ों की
मालिश भी करता है.

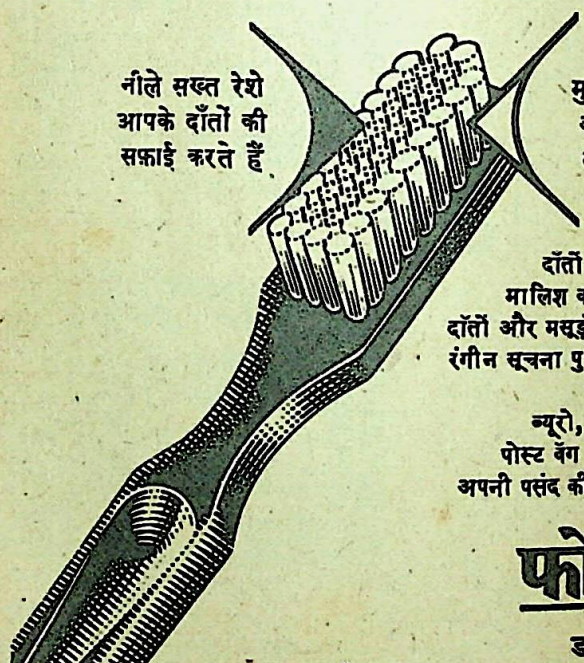

दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की
मालिश करना फोरहॅन्स से सीखिए.
दाँतों और मसूड़ों की देखभाल संबंधी मुफ़्त
रंगीन सूचना पुस्तिका के लिए लिखिए—
फोरहॅन्स डेंटल एडवाइज़री
ब्यूरो, डिपार्टमेंट नं. B 10-15
पोस्ट बॅग ११४६३, बम्बई ४०००२०
अपनी पसंद की भाषा अवश्य ही लिखिए.

फोरहॅन्स

डबल-एक्शन टूथब्रश
दाँतों के डॉक्टर द्वारा बनाये गये फोरहॅन्स
टूथपेस्ट का जिगरी दोस्त.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतिहास में आप का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा, सम्राट."

"और हम अपनी संपूर्ण सफलता व राज्य की समृद्धि का श्रेय अपनी रानी नंगल को देंगे. तुम्हारा सहयोग न रहता, तुम्हारा बौद्धिक व कूटनीतिक योगदान न मिलता तो हम राज्य प्रशासन के मोर्चे पर, विशेषकर मुसलिम आक्रमणकारियों व सुलतानों के आगे मात खा जाते. तब हमारा कोई नाम लेवा भी नहीं बचता. अभी देख लो न, सलुव तिम्म केवल तुम्हारे कारण नियंत्रण में है नहीं तो. . ."

"बसबस सम्राट. आप मेरी आवश्यकता से अधिक प्रशंसा कर रहे हैं. मुझे इतना ऊपर प्रशंसा के आकाश में मत चढ़ाइए कि धरातल ही न मिले और मैं चारों खाने चित गिर पड़ूं."

"हमारे जीवित रहते ऐसा नहीं हो सकता, नंगल रानी. हमारे बाद भी तुम इतनी ही योग्यता से साम्राज्य का संचालन करोगी. राजमहिषी, हमें विश्वास है. अरे, तुम्हारी आंखों में आंसू छलछला आए! तो, अब हम ऐसी बात नहीं करेंगे. बस? हां, हम अपने पूरे राज्य में एक वर्ष तक उत्सव मनाएंगे. संसार भी देख ले कि सम्राट ने अपने बेटे को सिंहासनरूढ़ किस शान से किया."

वास्तव में राज्यभर में अनवरत आठ महीने तक रंगारंग कार्यक्रम, दानदक्षिणा, मनोरंजन वीरों को मुफ्त भोजन, अपराधियों को क्षमादान, पशुबलि, सांस्कृतिक कार्यक्रम व हर्ष उल्लास की सरिताएं प्रवाहित होती रहीं. लेखकों, कवियों, संगीतकारों, नाटककारों व अन्य गुणी व्यक्तियों को इस काल में भरपूर पुरस्कृत किया गया. विजयनगर की कीर्ति दिगदिगांतरों तक फैल गई.

बालक सम्राट तिरुमल एक दिन राजमहलों में ही कहीं से खेलकूद कर आए. उन्हें भयंकर भूख लगी हुई थी. सम्राट का आदेश था कि बालक सम्राट के भोजन का विशेष ध्यान रखा जाए, उन के भोजन को किसी को चखा कर ही तब उन्हें खिलाया जाए. किंतु बालक शासक को उस दिन तीव्र भूख के कारण रसोइए ने तुरंत भोजन परोस दिया. बालक ने आव देखा न ताव, वह भोजन पर टूट पड़ा. परिणामतः भोजन करतेकरते बालक सम्राट का मन मिचलाया. वह खाना खाते ही अपनी स्वर्णिम तिपाई पर उलटा हो कर गिर पड़ा. गिरते ही उस के प्राण पखेरू उड़ गए.

सम्राट कृष्णदेव राय को जब यह सूचना मिली तो वह भी बेसुध हो कर गिर पड़े. महारानी नंगल समाचार सुन कर नंगलपुर से दौड़ीदौड़ी आईं. सम्राट की उस ने सेवाशुश्रूषा की. रानी के आदेश से रसोइए को तुरंत बंदी बना कर उस का मस्तक काट कर सिंहद्वार पर लटका दिया गया. तिरुमलराय की ममतामयी मां सम्राज्ञी चिन्नादेवी तो इस घटना के पश्चात पलंग से ही लग गईं. पर नंगल की दृष्टि से वास्तविक अपराधी बच नहीं सका. अपने गुप्तचरों की सहायता से उस ने राज्य प्रधानी सलुव तिम्म के बड़े पुत्र दन्नायक को तुरंत बंदी बना लिया.

सम्राट कृष्णदेव राय इस आघात से बिलकुल टूट गए. भविष्य की चिंता उन्हें आठों पहर सताती रहती. रानी नंगल का सान्निध्य ही उन्हें जीवित बनाए हुआ था.

"सम्राट, मैं ने वास्तविक अपराधी का पता लगा कर उसे बंदीगृह में डाल दिया है. वह है सलुव तिम्मा का बड़ा पुत्र दन्नायक. किंतु. . ."

"दन्नायक! हां, हां, बोलो न, रुक क्यों गईं?" सम्राट ने उसे कुछ बोलते हुए अचानक रुकने पर प्रश्न किया.

"मैं सोचती हूं, सम्राट कि अकेला दन्नायक इतना वीभत्स व देशद्रोहिता का कार्य करने में असमर्थ है. आप को एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लेना

यह भी सच है. . .

तीन सदियों में जीने वाला

स्काटलैंड के ग्लीनम्यूक का निवासी जान मिशेल 16वीं, 17वीं और 18वीं तीनों शताब्दियों में जिया. उस का जन्म 1596 में हुआ और मृत्यु 1722 में.

एक हाथ

जर्मनी के बोइजनबर्ग में एक पट पर एक हाथ की आकृति उकेरी गई है. यह चित्र उस राह से गुजरने वाले हर व्यक्ति को याद दिलाता है कि 1729 में एक मां ने अपने बच्चे को इतना मारा कि बच्चा मर गया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है. सलुव तिम्म की अप्रत्यक्ष सहायता के बिना दन्नायक कुछ नहीं कर सकता. अतः सलुव तिम्म को भी बंदी बनाने की आप को आज्ञा प्रदान करनी है."

"केवल सलुव तिम्म को ही नहीं अपितु हमारी आज्ञा से, उस के दोनों भाइयों गोंडराज व गोविंदराज को भी बंदीगृह में डाल दो," सम्राट क्रोध में बोले.

"उस आस्तीन के सांप को तुरंत बंदी बना कर हमारे सम्मुख उपस्थित किया जाए."

"जैसी आप की आज्ञा, सम्राट."

सारा नगर इस समाचार को सुन कर स्तंभित रह गया. जिस के मुंह पर देखो यही समाचार था 'प्रधानी सलुव तिम्म व उस के सारे परिवार वालों को बंदी बना लिया गया है.'

महारानी नंगल उस समय सम्राट के कक्ष में जानबूझ कर उपस्थित नहीं रही, जब खनखनाती बेड़ियों में जकड़े, नीची दृष्टि किए, सलुव तिम्म को उन के सम्मुख प्रस्तुत किया गया, वह बाहर कान लगाए, कक्ष के भीतर का एकएक वार्तालाप सुन रही थी.

"सलुव तिम्म, अविश्वासी पशु..." सम्राट क्रोध में कांपते हुए पलंग से उठ खड़े हुए, "तू ने जिस थाली में खाया, उसी में छेद कर दिया? अरे मित्रद्रोही, राजशत्रु, तुझे कुछ शिकायत थी, शत्रुता थी तो जवांमर्द की तरह मुझ से लड़ता, मुझ पर अपना विषैला वार करता. उस मासूम बच्चे ने तेरा क्या बिगाड़ा था? दुष्ट, हम ने तेरे साथ जो भी भला किया क्या उसी का तू ने हमें यह प्रतिफल दिया है? तू भूल गया कि हमारे सम्राट बनने से पहले तू एक साधारण सभासद था.

"हमें पता न था कि जिस कीटाणु को हम भूल से उठा कर उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित कर रहे हैं वह हम पर ही अपनी विषैली डंक से वार करेगा. तू ने हमें जीवन की सब से बड़ी चोट पहुंचाई है. महापातकी, हम सब कुछ सह सकते हैं कि तू ने हमारे हृदय को छलनी बना डाला है. हमें लगता है कि हम अब इस पलंग से कभी भी नहीं उठ सकेंगे." कहतेकहते सम्राट क्रोध में पलंग पर बैठ गए. उन के हृदय में जाने कैसी पीड़ा प्रारंभ हो गई थी.

"सम्राट, क्षमा करें. दोष मेरा नहीं, मेरे बड़े पुत्र का है..."

"इसलिए हम उसे दंडित कर दें? हे ब्रह्म, तू अपने अंत समय में अपने बेटे को भी हत्या की वेदी पर चढ़ा देना चाहता है?" सम्राट हृदय पकड़ कर पलंग पर बैठ गए. उन की सांस तेजी से चल रही थी. लंबे समय तक कक्ष में मौन रहा.

"हमारा माथा तो तभी ठनक गया था जब हमें हमारे पिता नरसा नायक ने कैद से निकाल कर मार डालने की आज्ञा दे दी थी. तू ने हमारे गिड़गिड़ाने पर हमें जीवित छोड़ दिया था तथा पिताजी को झूठ बोल कर यों बहाना बना दिया था. क्या तेरा यह कृत्य अपने शासक के प्रति विश्वासघाती नहीं था? हमें बचा कर क्या तू ने अपने स्वामी को धोखा नहीं दिया? हमारा दोष यही रहा कि हम ने फिर भी तुझे क्षमा कर दिया और तेरी बातों में आ कर जो नैतिक होने की अपेक्षा व्यापारिक अधिक थीं, हम ने तुझे प्रधानी नियुक्त कर दिया. अच्छा होता यदि हम तुझे उसी क्षण समझ जाते. जो व्यक्ति अपने स्वामी का नहीं हुआ वह किसी अन्य के साथ क्या वफ़ा कर सकता?

"मुझे आशंका तो थी कि प्रधानी का पद छिन जाने पर तुझे बुरा लगेगा और तू षड्यंत्र हमारे विरुद्ध रचेगा. रानी नंगल ने हमें सावधान भी कर दिया था, पर तू इतना निम्न स्तर पर उतर आएगा. हमें कभी स्वप्न में भी खयाल नहीं था. बच्चे की हत्या जैसा जघन्य कार्य कर बैठेगा, यह बात हम ने कभी नहीं सोची थी. राजद्रोही, तू ईश्वर का धन्यवाद दे कि तू ब्राह्मण है. मैं वैष्णव धर्म का कट्टर समर्थक व विठोबा का पूजक हो ब्राह्मणों के पद व सम्मान को समाप्त करना चाहता. तू ने अवश्य ही इस स्थिति का दुरुपयोग किया, पापी, ओ हत्यारे, तिरुमल राज्य की राजनीति खा गई." सम्राट की आंखों में तिरुमल की स्मृति से पीड़ा के भाव [illegible] गए.

मंत्री और बादशाह

एक दिन एक बादशाह ने मंत्री से पूछा, "कहो मंत्रीजी, शतरंज खेलना जानते हो?

मंत्री ने उत्तर दिया, "हजूर कुछ-कुछ तो जानता हूं."

बादशाह ने पूछा, "कुछकुछ का क्या मतलब है?"

मंत्री ने जवाब दिया, "हजूर, कभी-कभी बादशाह को मंत्री और मंत्री को बादशाह समझ बैठता हूं."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

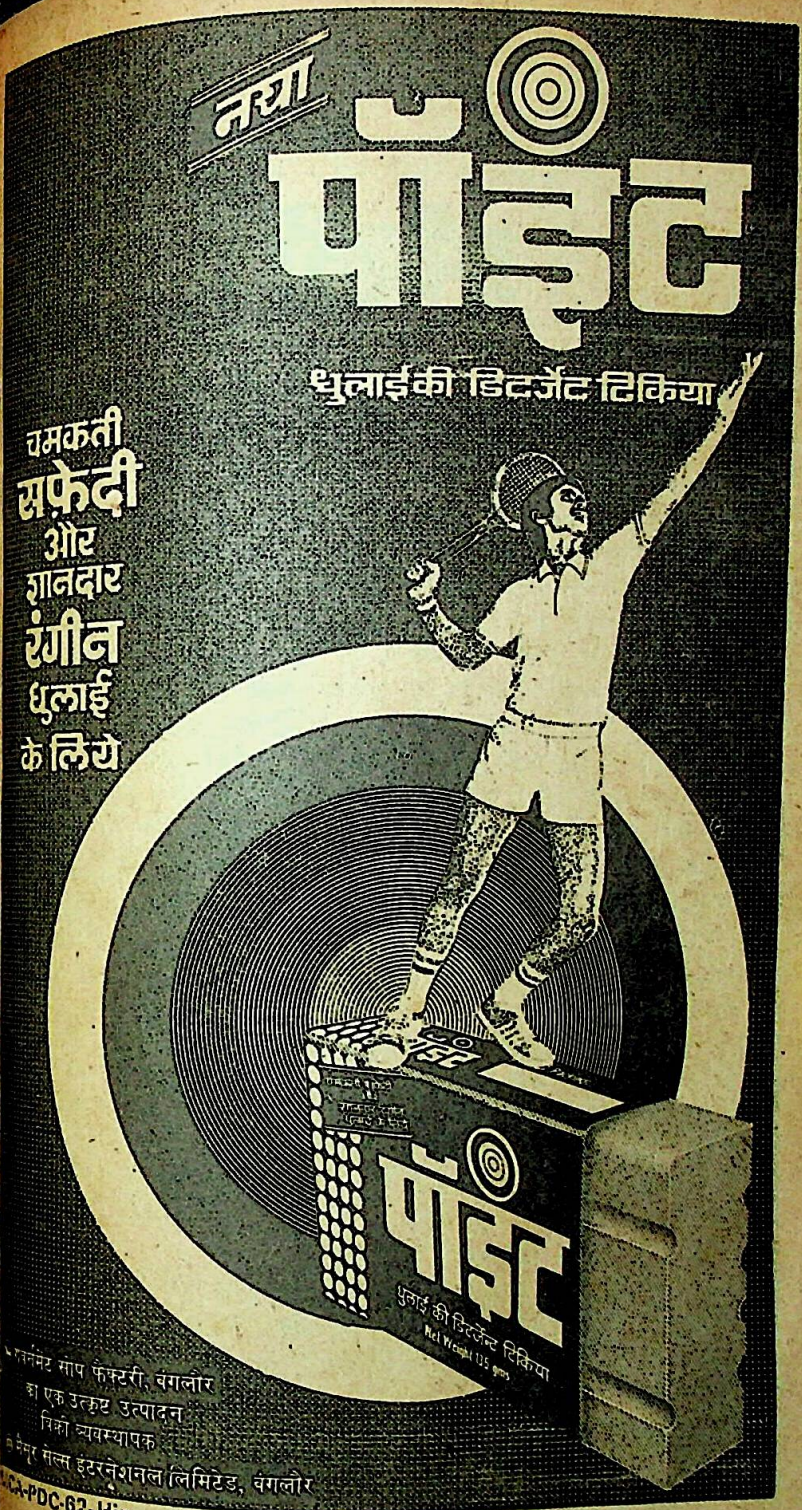

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हवेली

कहानी • विमल

बड़ी हवेली के बड़े सेठ के बड़े दामाद श्रीधर का तार आया था—आज मेल से आ रहा हूं. समाचार मिलते ही हवेली में हलचल मच गई. धनवान सेठ का धनवान दामाद आ रहा था, कोई मजाक तो था नहीं. पिछले साल रुई के सट्टे में उस ने यानी उस की तरफ से उस के पिता ने लाखों कमाए थे, तो बच्चों से ले कर बड़ों तक को आदेश दे दिया गया : "कंवर साहब के स्वागत में कोई कमी न रहने पाए."

तीन महीने पहले श्रीधर के पिता सेठ रामदास का देहांत हो गया था. छहों भाइयों में सब से ज्यादा वह श्री को ही दे गए थे. कारण, एक तो सेठानी उसे बहुत छोटा छोड़ कर मर गई थीं. दूसरे, वह अपने स्वभाव से एक व्यापारी का नहीं, बाबू का लड़का नजर आता था.

सेठजी उसे बहुत चाहते थे. यह कहना तो शायद सच नहीं होगा कि सेठानी की मृत्यु के बाद उन्होंने परस्त्री की तरफ आंख उठा कर भी नहीं देखा. हां, यह जरूर सच था कि सेठजी ने दूसरा विवाह नहीं किया था. रुई के सट्टे में उन्होंने लाखों बनाए थे. श्री के दूसरे भाइयों को वह पक्का व्यापारी बना गए थे. किसी को नहीं बना सके तो वह था श्री, जिस में पिता व बड़े भाइयों [illegible] एक भी गुण नहीं आ पाया. ठोकरें [illegible] पर भी उसे अक्ल नहीं आई. [illegible] संपत्ति का एक बड़ा भाग उस के नाम [illegible] गए व अपने एक निकट के संबंधी को [illegible] का मुनीम बना गए. पिता से उस ने [illegible] प्यार पाया था. उन्हीं के सहारे वह [illegible] तक उठा था. पिता द्वारा किए गए [illegible] पात के कारण दूसरे भाइयों को [illegible] क्रोध आया कि उन की मृत्यु के [illegible] उस के सिर पर हाथ रखने की [illegible] उन्होंने श्री का एकदम सामाजिक [illegible] ष्कार कर दिया. बड़े भाइयों के [illegible] हुए भी वह अनाथ हो गया. इधर [illegible] भर से ऊपर हो गया था और [illegible] पिता के घर नहीं आई थी. सेठजी [illegible] बार बुला रहे थे. श्री का मन भी [illegible] था. इस कारण मुनीमजी पर सारा [illegible] छोड़ कर श्री ने परिवार सहित [illegible] आने का कार्यक्रम बनाया था.

स्टेशन पर श्री को लेने [illegible] बड़ा भाई अजय पहुंचा. बड़े [illegible] उस ने श्री को नमस्कार किया. [illegible] सिर पर हाथ फेरा और नन्हे [illegible] का हाथ पकड़ कर बाहर आ [illegible] बिंदासिंह चौकीदार सामान ले [illegible] में आ रहा था. इन लोगों के [illegible]

श्री को व्यापार में घाटा हुआ तो सेठजी की आंखें बदल [illegible] फिर एक दिन चुपके से उस ने वह हवेली छोड़ दी...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दौड़ी-दौड़ी कार हवेली की ओर दौड़ पड़ी. दामाद के स्वागत में सारी हवेली को पोंछ कर साफ किया गया था. नए कपड़े पहने नईहवेली दुलहन जैसी चमक रही थी. श्री के दरवाजे में घुसते ही सालेसालियों की सेना ने उसे घेर लिया. "जीजाजी, नमस्ते. जीजाजी, नमस्ते."

इतने में छोटी साली ने पीछे से कहा, "हम नहीं समझते."

विजय ने जोड़ दिया. "जाओ अपने रास्ते."

फिर तो उस टोली में वह ठहाका लगा कि सारी हवेली कांप उठी. अजय ने डांट कर सब को भगाया. तब कहीं इस वानर सेना से श्री का पीछा छूटा. आराम की सांस ले कर उस ने ससुर के पैर छुए.

अजय सामान रखवाने के लिए चला गया. किरण मां के पास चली गई. सुभाष तो दो ही मिनट में मामामामी श्री और किरण के आने पर सेठजी ने स्वागत में आंखें बिछा दीं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की इस टोली में ऐसा घुलमिल गया जैसे हमेशा से उन्हें जानता हो. इधर नौकर-चाकर हाथ बांधे खड़े थे कि कब कंवर साहब हुक्म दें और वे कब उसे बुला लाएं. लेकिन कंवर साहब में साहबी का इतना ज्यादा अभाव था कि किसी को हुक्म देने के लिए उन की जबान ही नहीं खुली. सेठजी के पास से श्रीधर सेठानीजी के पास गया और पैर छू कर बैठ गया. सास ने बड़े स्नेह से इधरउधर की बातें पूछीं कि सेठजी भी वहीं आ गए. बोले, "जाइए, कंवर साहब. स्नान कर लीजिए. रास्ते के थकेमांदे आए हैं. स्नान भोजन के बाद थोड़ी देर सो लीजिएगा."

"जी." कह कर वह उठ गया.

नहातेधोते बारह बज गए. खाने में तरहतरह के व्यंजन थे और उन से भी बढ़ कर था सेठजी का स्नेहभरा अनुरोध. श्री को अपने मृत पिता का स्मरण हो आया. वह भी उसे इतने ही स्नेह से अपने सामने बैठा कर खिलाते थे. अचानक ही उस की आंखें भर आईं. अजय की दृष्टि पड़ी तो हक्काबक्का सा रह गया. बोला, "क्या हुआ?"

श्री ने चटपट आंखें पोंछ डालीं. हंसने की कोशिश करता हुआ बोला, "कुछ नहीं. आंख में कुछ गिर गया था."

सेठजी उठ कर उस के पास आए. सिर पर हाथ रख कर बोले, "न सही सेठ साहब, मैं तो हूं अभी. आप मुझे उन्हीं की जगह समझें."

आंसुओं से भरी मुसकराहट श्री के मुंह पर खेल गई. घर में पिता के सिवा और किसी का स्नेह उसे नहीं मिला था. बड़े भाई और भाभियां सीधे मुंह उस से बात तक नहीं करते थे. इसी वजह से हीनता की एक ऐसी भावना उस के मन में घर कर गई थी कि वह बालबच्चेदार हो कर भी अभी तक अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व ले कर उभर नहीं पाया था. पहले पिता रक्षा करते थे, अब किरण करने लगी. उसी किरण के पिता का इतना स्नेहमृदुल, सम्मान भरा व्यव देख कर वह अंदर ही अंदर हुलस भर उठा.

सेठजी से बहुत कह कर भी किरण की छोटी बहन नीला के पति हर को आने के लिए तार करवा तिल के व्यापार में मनोहर के इतना घाटा लगा था कि उन्हें निकालना पड़ा और हालत यहां बिगड़ी कि आखिर पिछले पांच महीने मनोहर कलकत्ता की एक कंपनी में कर के गुजर कर रहा था. सेठजी बिलकुल इच्छा नहीं थी कि मनोहर बुलाया जाए. घुमाफिरा कर उन्होंने भी, "नई नौकरी है, छुट्टी कैसे मिलेगी पर श्री बच्चों जैसी जिद करता बोला, "दस दिन की छुट्टी तो मिल जाएगी. फिर कब साथ रहने का आएगा. ब्याह के वक्त ही मिला उस से. देखिए न, इस एक साल में क्या से क्या हो गया. उन्हें दूसरी नौकरी करनी पड़ी. मेरा बहुत उन्हें देखने का."

धनवान दामाद के अनुरोध को टाल नहीं सके. अपनी इच्छा के उन्हें नीला और मनोहर को ही पड़ा. जिस दिन मनोहर आने था, सेठजी ने बच्चों को चेतावनी थी कि कोई उस से हंसीमजाक श्री की बात और थी. वह बराबर मनोहर की बात और है.

गाड़ी के समय सेठजी ने ड्राइवर कार स्टेशन ले जाने का कह दिया. ने जब देखा कि उसे लेने के लिए कोई भी आदमी नहीं जा रहा है, ने धीरे से स्वयं जाने के लिए आज्ञा लेकिन सेठजी ने इधरउधर कर तरह उसे लपेटा कि वह नहीं जा "क्यों इतनी दूर जाने की जहमत लेता है, आने वाले आएंगे तो सेठजी के स्वर में अवज्ञा थी आत्मीयता का भाव, ग्रह श्री को में नहीं आया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार मनोहर और नीला को ले कर ई तो श्री ने बड़े स्नेह से मनोहर को ले लगा लिया. सेठजी किसी काम में त थे, अतः एकदम बाहर आ कर नोहर का स्वागत नहीं कर सके. मनोहर स्वयं ही अंदर जाना पड़ा. सेठजी के छू कर वह खड़ा रहा. श्री भी साथ था. सेठजी बोले, "अच्छे तो हो, नोहर."

मनोहर ने नम्रता से कहा, "जी, ."

"अच्छा किया जो आ गए. कंवर हब का मन भी नहीं लग रहा था. चार दिन साथ रहोगे, मन बहलेगा. ओ, अंदर जा कर हाथमुंह धोओ."

मनोहर की आंखों ने अपने व श्री के गत के अंतर को ताड़ लिया. श्री कंवर हब और वह मनोहर! अपमान को मन ही मन पी गया और श्री के साथ के कमरे में चला गया. किरण और ला देखते ही एकदूसरे से लिपट गई.

मनोहर और नीला आए तो सेठजी काम में व्यस्त रहे. सेठजी उन्हें लेने तक नहीं आए.

लेकिन मां के व्यवहार में जमीनआसमान का अंतर था. किरणकिरण करते मां का गला सूखता था और नीला? वह तो जैसे बिनबुलाई मेहमान थी. नीला का मन बुझ गया. पीहर आने की जो उमंग थी, उस पर पानी फिर गया. जाने किस जादू से घर के सभी लोगों का व्यवहार बदल गया था. क्या गरीब हो जाने से नीला और मनोहर इन के लिए पराए हो गए थे? इन सब के बीच केवल श्री और किरण ही अपनत्व से पूर्ण थे.

रात में मनोहर ने नीला से पूछा, "कुछ कहने की तो शायद जरूरत नहीं होगी मुझे. बोलो, क्या इरादा है?"

नीला ने उस के मुख की ओर देखते हुए कहा, "जो तुम्हारा..."

मनोहर कठोर भाव से बोला, "मैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो कल ही यहां से जाना चाहता हूं. तुम चाहो तो यहीं रुक जाओ. डिलीवरी हो जाने के बाद आ जाना."

नीला ने मुख झुका कर केवल न ही कहा और फिर औंधी हो कर पलंग पर पड़ रही. यह उस ने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि सेठजी उस के और मनोहर के साथ इतना रूखा व्यवहार करेंगे. इधर श्री और किरण थे, जिन के एक-एक इशारे पर घर नाचता था. साल भर पहले इसी घर में मनोहर का कितना सम्मान था! आज यह हाल था कि उस के साथ वह भी इस घर के लिए एकदम अपरिचित बन गई थी. अपनी उपेक्षा उसे इतनी नहीं चुभी जितनी मनोहर की. हाथों में मुंह छिपाए वह चुपकेचुपके रोती रही. आई इस आशा से थी कि तंग हालत में प्रथम प्रसव यहीं निपट जाए तो अच्छा, और हुआ यह कि वह स्वयं ही धकेल कर दूसरे ही दिन मनोहर को वापस ले गई.

किरण और श्री ने बहुत अनुरोध किया लेकिन उन को वे रोक नहीं सके.

जाते समय श्री नहीं माना. मनोहर और नीला को विदा करने स्टेशन तक गया. उन का इतनी जल्दी [illegible] उसे अखर रहा था. फिर काम [illegible] को हो सकता था, इस हालत में [illegible] को क्यों घसीट ले जा रहा था. [illegible] के आतेआते उस ने पूछ ही लिया, [illegible] जिद्दी हो, भैया. सब ने इतना [illegible] फिर भी चल ही दिए. आखिर कोई [illegible] भी हो."

मनोहर की दृष्टि बड़ी पैनी थी. [illegible] के व्यवहार से वह समझ गया कि [illegible] भोलेनाथ को दुनियादारी का [illegible] अनुभव नहीं है और शायद कभी [illegible] भी नहीं. बोला, "तुम सीधे महात्मा [illegible] मेरे भाई. कभी मौका आया तो [illegible] जवाब दूंगा."

ट्रेन आने पर मनोहर और [illegible] थर्ड क्लास के एक डब्बे में [illegible] गए. श्री उन्हें छोड़ कर उदास [illegible] लौट आया. रात को उस ने किरण [illegible] कहा, "मनोहर नीला को ले कर [illegible] इस तरह चला क्यों गया?"

किरण को यह घटना जरा भी [illegible] नहीं लगी थी. वह कुछ चिढ़ी हुई [illegible] बोली, "जाते नहीं तो क्या करते, [illegible] भी स्वाभिमानी व्यक्ति इस तरह [illegible] नहीं सह सकता."

श्री की बुद्धि ने फिर इस [illegible] तह तक पहुंचने से इनकार कर दिया. [illegible] दोतीन दिन बाद इस घटना को [illegible] भी गया. हवेली में उस के आने [illegible] सीमा नहीं थी. इतना लाड़प्यार [illegible] के जीवित रहते उस ने अपने घर [illegible] नहीं पाया था. कैसे चुटकी बजाते [illegible] दिन निकल गए, वह जान भी नहीं [illegible] आखिर एक दिन उस ने कहा, "[illegible] जाऊंगा, काम में बड़ा हरज हो [illegible]

सुनते ही सास तो रुआंसी हो [illegible] सेठजी ने वर्जना के स्वर में कहा, [illegible] भी क्या जल्दी है, कंवर साहब [illegible] आए और अभी चल दिए. नहीं [illegible] आप नहीं जा सकते."

उस ने बहुत कहा पर एक [illegible] हार कर वह रह गया, लेकिन [illegible]

गम

गम तो तनहा सहे और
खुशियां बांट लीं,
हम से दीवाने तो बस
यूं ही जिया करते हैं.

—इंदर कानपुरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुराना हमेशा सुहाना

हिन्दी फिल्मों के सदाबहार 'हिट' गानों के एल पी रेकार्ड

दो एल पी खरीदिये और १०% की नकद छूट हासिल कीजिये

एचएमवी की ऐसी भेंट जो आपको बरबस घर खींच ले जाये ! हिन्दी फिल्मों के वे हिट गाने जो हमारे दिलों में हमेशा जवान हैं— वे मधुर धुनें, जिन्हें हम बड़े प्यार से गुनगुनाते हैं—वे मोहक बोल, जो हमें आज भी लुभाते हैं। और ऐसे संगीत जो हमेशा मधुरस बरसाते हैं। बस अपनी पसन्द के चुन लीजिये— सब के सब मौजूद हैं....

मदर इण्डिया . जिस देश में गंगा बहती है . दि म्युज़िक मूवीज़ एण्ड मेमरीज़ ऑफ राज कपूर . प्रोफेसर/असली नकली . मेरे महबूब . लीडर . संगम . जहानआरा . दो बदन . जब जब फूल खिले . काजल . तीसरी कसम . तीसरी मंज़िल . मिलन . दीवाना . राम और श्याम . ज्यूएल थीफ़ . नील कमल . एक फूल दो माली . पहचान . दो रास्ते . मेरा नाम जोकर . दोस्ती . जंगली . आन मिलो सजना . अनारकली . नागिन . लव इन टोकियो . वक्त . आदमी . हमराज़ . कश्मीर की कली . अलबेला . मिस्टर एण्ड मिसेज़ ५५ . दुलारी . सीमा . मधुमती . दि म्युज़िक ऑफ अनिल विश्वास . आह . आज़ाद . रतन . पतंगा . दर्द . अमर . व्हेन मेलॉडी वाज़ क्वीन—ओल्ड फिल्म हिट्स . राजकुमार . कटी पतंग . जब प्यार किसी से होता है . साहब बीबी और गुलाम . जल बिन मछली नृत्य बिन बिजली . अंदाज़ . पाकीज़ा . शबाब . मुगल-ए-आज़म (३ एलबम—कहानी व गाने) तथा और भी बहुत से।

जल्दी कीजिये। यह सुविधा १५ अप्रैल, १९७८ तक दी जायेगी।

HMV 25 YEARS

GC 9649A

HMV हिज़ मास्टर्स वायस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कंज्यूमर काउंसिल ऑफ इंडिया के हाल ही के एक सर्वेक्षण रिपोर्ट में प्रकाशित :

एकमात्र जड़ीबूटी के भेषजगुण ही दाँतों को क्षय से बचाते हैं

एकमात्र नीम

टूथपेस्ट

में नीम के तमाम भेषज और औषधीय गुण हैं

इस सर्वेक्षण से संबंधित कुछ प्रख्यात दत चिकित्सकों के विचार से बाज़ार में प्रचलित टूथपेस्ट, दाँतों को सिर्फ स्वच्छ ही रखते हैं लेकिन, दाँत की बीमारी को रोक नहीं सकते। क्योंकि अधिकांश टूथपेस्ट में भेषज पदार्थ रहता ही नहीं जिससे कि दाँत या मसूड़ों को रोग से बचाया जा सके। सर्वेक्षण में यह बताया गया है कि नीम के प्राकृतिक गुण दाँतों को दंत-रोग या दंत-क्षय से बचाने में पूरी तरह समर्थ है।

चूँकि, नीम टूथपेस्ट असली 'नीम बीज' तेल से बनता है इसलिये इसमें नीम के सभी भेषज व कीटाणुनाशक गुण मौजूद हैं जिससे मुंह की दुर्गन्ध दूर होता है और मसूड़े सुरक्षित रहते हैं।

अनुरोध पर विवरण दिया जाएगा

दाँत और मसूड़ों को स्वस्थ रखने के लिये लाजवाब टूथपेस्ट—नीम

कैलकटा केमिकल की एक उत्पाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन मुनीम का तार आया—पहली गाड़ी से आइए.

इस बार किसी ने उसे नहीं रोका. नीला के जाने के समय किसी की आंख से आंसू नहीं गिरे थे, किरण की विदाई पर सारा घर शोकातुर हो गया.

पत्नी और पुत्र के साथ श्री लौट आया. घर आ कर पता चला कि रुई की गोदाम में आग लग गई है. श्री के हाथों के तोते उड़ गए. उस का सब कुछ इसी दांव पर लगा था. देखतेदेखते वह राजा से रंक हो गया.

व्यापार में भाग्य का पलड़ा इधर से उधर होते देर नहीं लगती. इधर श्री चौपट हुआ और उधर मनोहर ने फिर अपनी स्थिति सुधार ली. भाई श्री से पहले ही जलते थे. उस की बरबादी देख कर भी किसी ने उस की सहायता नहीं की. श्री ने उन के पैर तक पकड़ लिए, पर कोई टस से मस न हुआ. चिंता के मारे वह सूख कर आधा हो गया था. बाप ने लाड़ के मारे बेटे को अधिक पढ़ाया भी नहीं था कि कहीं नौकरी कर के ही गुजरबसर कर लेता. बड़े कष्ट में दिन बीत रहे थे.

इसी हालत में एक दिन मनोहर नीला के साथ वहां पहुंचा. श्री और किरण की हालत देख कर दोनों को बहुत दुख हुआ. लेकिन मुंह से कुछ भी न कह कर मनोहर ने समुर का पत्र सामने रख दिया. उस में मनोहर से अजय के विवाह में आने की प्रार्थना थी. श्री को जानबूझ कर नहीं बुलाया गया था. मनोहर ने पूछा, "चलोगे?"

श्री निराश भाव से बोला, "लेकिन मुझे तो बुलाया नहीं है."

"इसी लिए तो चलने को कहता हूं."

किरण भी जाना नहीं चाहती थी. किंतु मनोहर और नीला की जिद के कारण उन्हें जाना ही पड़ा. चलते समय यह देख कर किरण को रोना आ गया कि भाई को विवाह के अवसर पर भेंट देने के लिए उस के पास कौड़ी भी नहीं.

बुला लो...

मेहरबां हो के बुला लो मुझे,
चाहो जिस वक्त
मैं गया वक्त नहीं हूं
कि फिर आ भी न सकूं.
—गालिब

हवेली जगमगा रही थी. सेठ के बड़े पुत्र का विवाह था और आज उन के दामाद आ रहे थे, हवेली की रौनक बढ़नी ही थी. सेठजी को देख श्री की आंखों में आंसू आ गए. उसे आशा थी कि इस दुख में वह बेटे की तरह अपनी छाती से लगा लेंगे. लेकिन सुना, "रोओ मत, श्री. व्यापार में तो ऐसा होता ही है." मनोहर ने परखा—पहले कंवर साहब, अब श्री!

तभी सेठजी मनोहर से बोले, "चलिए, कंवर साहब, आप के ठहरने का प्रबंध ऊपरी खंड में किया है. श्री, तुम इसी कमरे में ठहर जाओ. काम के दिन हैं, कहां बारबार उतरोगेचढ़ोगे."

मुसकराता हुआ मनोहर सेठजी के पीछेपीछे चल दिया. श्री की छाती पर जैसे किसी ने हथौड़ा मार दिया. उस की समझ में आ गया कि इस हवेली में उस की इज्जत नौकर से अधिक नहीं है. एक दिन यही व्यवहार मनोहर के साथ हुआ था. घायल मन लिए, सिर झुकाए वह कमरे में चला गया. आज सारा घर साले-सालियों की वानर सेना, मनोहर, नीला और उस के लड़के के पीछे घूम रही थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस के सुभाव से कोई बोला तक नहीं. वह बारबार उन लोगों के पास जाता और निराश हो कर लौट आता. श्री का मन अंदर ही अंदर रो पड़ा. तभी सेठजी ने पुकारा, "श्री, तुम खाली हो न?"

'जी' कह कर वह बाहर निकल आया. सेठजी ने एक फेहरिस्त उस के हाथ में दे कर कहा, "यह सामान बाजार से ले आओ. मुनीमजी को लेते जाना."

श्री धीरे से बोला, "मनोहर को भेज दीजिए. वह इन बातों में मुझ से ज्यादा समझदार है."

सेठजी चिढ़ गए. "अरे भई, वह थकेथकाए आए हैं. सो रहे हैं. तुम बच्चे नहीं हो, जो इन बातों को न समझो. देर मत करो, जाओ."

श्री ने कहना चाहा कि थका हुआ तो मैं भी हूं, लेकिन उस ने कहा नहीं. विवाह का घर था, काम के लिए इनकार नहीं कर सकता था और उस पर जब कि वह बिनबुलाए चुपचाप चला आया था.

रात तक वह काम में उलझा रहा. मनोहर एक बार भी नीचे नहीं उतरा. सेठजी बारबार उस से पूछ जाते, "किसी चीज की जरूरत तो नहीं है?"

नीला भी मां के पास बैठी बातें करती रही. किरण साड़ी का पल्ला कमर में खोंसे काम कर रही थी.

रात को खूब थकथका कर श्री पलंग पर आ कर पड़ रहा. तभी किरण आई. वह भी बहुत थकी हुई थी. सुभाष श्री के पास सोया पड़ा था. श्री भरा हुआ था ही, बोला, "अपने पिताजी का व्यवहार देखा?"

किरण धीरे से बोली, "देख लिया."

"क्या कहती हो?"

किरण ने उस के सीने में मुंह छिपा कर कहा, "सब सोए हुए हैं, चुपके से चले चलो. मैं जानती हूं क्यों हम लोगों को नहीं बुलाया गया था. लेकिन यह नहीं सोचा था कि मनोहर हमारा अपमान कराने के लिए यों जबरदस्ती हमें यहां ले आएंगे." किरण के आंसू निकल पड़े.

"सब किस्मत की बात है. कहीं क्यों व्यापार में घाटा होता है और..."

तभी धीरे से किवाड़ खोल कर मनोहर और नीला अंदर आए. श्री की बात पूरी करते हुए मनोहर बोला, "सेठजी का असली रूप देखने को मिला. उस दिन तुम ने मुझ से पूछा था कि क्यों जा रहा हूं और मैं ने कहा था मौका आया तो इस का जवाब दूंगा. जवाब मिला?"

"मिल गया, भाई." कह कर श्री मनोहर से लिपट गया.

मनोहर किरण की तरफ हाथ जोड़ कर बोला, "आप मुझ पर बहुत नाराज हैं. क्यों मैं आप लोगों को यहां ला था. यह आप भी समझ गई हैं, इसलिए अब माफी चाहता हूं."

किरण और नीला दोनों ने एकदूसरे के कंधों में मुंह छिपा लिया. श्री बोला "मैं अभी जा रहा हूं."

मनोहर ने कहा, "मैं भी चल रहा हूं. सामान बाहर रख आया हूं, लेकिन एक बात मानोगे?"

"क्या?"

"बंबई न जा कर तुम मेरे साथ चलो. एक से दो हो जाएंगे तो मन ठीक रहेगा. क्या कहते हो?"

श्री ने मिनट भर सिर झुका कर कुछ सोचा, फिर सीधा हो कर बोला "अच्छी बात है, चलूंगा." कह कर मनोहर के पीछे सूटकेस हाथ में लिए निकल आया. पीछेपीछे नीला और किरण अपने लड़कों को गोद में उठाए आ रही थीं.

बाहर आ कर श्री ने पलट कर हवेली की ओर देखा और फिर दोनों हाथ जोड़ सिर से लगा कर प्रणाम कर दिया. हवेली को या उस में रहने वालों को कौन जाने, अमावस के अंधकार में हवेली अवश्य बड़ी विकृत, बड़ी बीभत्स दिख दे रही थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • श्रीशचंद्र मिश्र

हिंदी फिल्मों के बेतुके दृश्य

क्या भारतीय फिल्म दर्शक यही चाहता है?

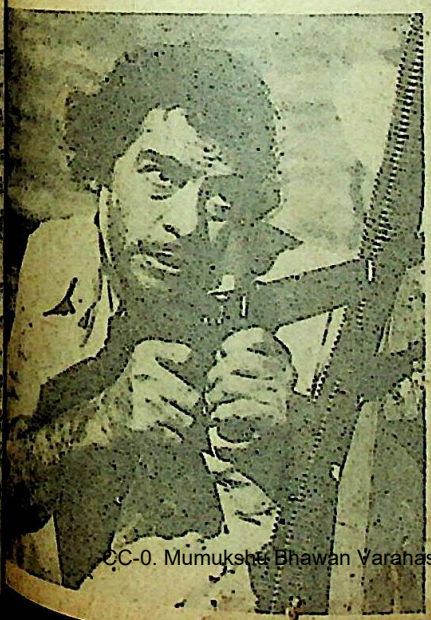

फिल्म का क्लाइमैक्स. सभी अच्छे-बुरे पात्र किसी तहखाने या ऊंची पहाड़ी पर एकत्र हो चुके हैं. नायक का पलड़ा भारी है. लेकिन तभी खलनायक अपनी अंतिम चाल चलता है. झपट कर वह एक छलांग लगाता है और नायिका के गले पर रिवाल्वर या चाकू रख कर गुर्राता है, "खबरदार, कोई आगे बढ़ा तो इस का भेजा उड़ा दूंगा." अच्छी-भली बाजी पलट जाती है. खलनायक नायिका को पकड़ कर जीप में डाल देता है और भाग निकलता है.

जाहिर है कि नायक उस का पीछा करेगा ही. लेकिन कैसे? अकसर ऐसे में कोई न कोई व्यक्ति नायक को ऐसा अवश्य मिल जाता है जो मोटर साइकिल खड़ी कर के उस बियाबान जगह में लघु-शंका कर रहा होगा. यदि ऐसा कोई आकस्मिक प्रबंध नहीं हो पाता तो नायक हताश नहीं होता. (भला जब तक वह नायिका को दुष्ट खलनायक के पंजे से छुड़वा नहीं लेगा तब तक एक आदर्श नायक की कसौटी पर वह कैसे खरा उतर सकेगा?). वह तुरंत खलनायक की जीप के पीछे दौड़ना शुरू कर देता है. यही नहीं, उस तक पहुंच भी जाता है. तर्क की दृष्टि से आप को यह प्रसंग अविश्वसनीय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगता है तो लगा करे. फिल्म का निर्माता तो अच्छी तरह जानता है कि दर्शकों का एक बहुत बड़ा वर्ग इस दृश्य विशेष पर तालियां पीटेगा.

हिंदी फिल्मों में बेतुके दृश्यों की अधिकता की जिम्मेदार दर्शकों की ये तालियां हैं या निर्देशक की कल्पनाहीनता, यह एक ऐसा प्रश्न है जिस का समाधान समयसमय पर विभिन्न परिस्थितियों में ढूंढ़ने का प्रयत्न किया गया है.

दौड़ती हुई जीप का पीछा ही नहीं करना बल्कि उस से आगे भी निकल जाना, सैकड़ों मीटर ऊंची पहाड़ी से चलती जीप में कूदना, घोड़ों सहित चलती रेलगाड़ी के आरपार छलांग लगा देना, आग की लपटों में मनचाही हरकतें करना, कई गोलियां लगने के बाद भी दसदस मिनट तक संवाद बोलना, बहुमंजिली इमारतों को छलांग द्वारा पार करना जैसे अविश्वसनीय से लगने वाले दृश्यों को अधिकांश हिंदी फिल्मों में देखा जा सकता है. मोटे तौर पर हिंदी फिल्मों में इन दृश्यों को इतनी बार दोहराया जा चुका है कि औसत फिल्म दर्शक के लिए अब इन में अविश्वसनीयता जैसी कोई चीज

अस्वाभाविक दृश्यों से भरपूर फिल्म 'धर्मवीर' का एक दृश्य. (ऊपर).

आप विश्वास करें या न करें हीरो को जीतना ही है : फिल्म-अपराधी (नीचे).

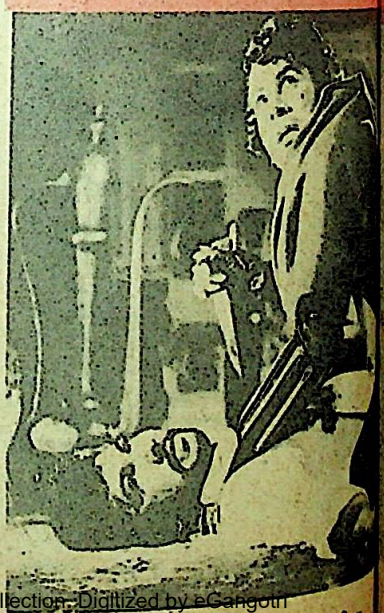

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभीकभी सहनायक भी दांतों तले उंगली दबाने पर मजबूर कर देता है: 'बेईमान' का एक दृश्य (ऊपर).

दृश्य को और भी चमत्कारपूर्ण बनाने में कैमरे का सहारा : फिल्म 'धर्मात्मा' (नीचे).

बिल्कुल बाकी नहीं रह गई है.

सिनेमा कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम तो है लेकिन उस के साथ कला से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण पहलू भी जुड़ा हुआ है और वह है व्यावसायिक पहलू. यही व्यावसायिक पहलू अब तक फिल्म निर्माताओं की ढाल बना हुआ है. हर आलोचना के लिए उन के पास यही उत्तर है, "दर्शक यही चाहते हैं, हम क्या करें?" व्यावहारिक तौर पर इस संबंध में यह कहा जा सकता है कि सभी दर्शक तो नहीं लेकिन उन का एक बड़ा वर्ग ऐसे दृश्यों को काफी पसंद करता है. इस का प्रमाण है बेतुके, औचित्यहीन दृश्यों से भरी फिल्मों की बाक्स आफिस पर व्यापक सफलता.

फिल्म जैसे माध्यम के सामने सब से बड़ी समस्या यह है कि उसे एक ही समय में विभिन्न रुचियों वाले दर्शकों को संतुष्ट करना होता है. एक सीमित समय में फिल्मकार को एक सीधे सपाट कथानक में विविधताएं लानी होती हैं. इस के लिए वह अपनी कल्पनाशक्ति का सहारा लेता है. लेकिन इस के लिए भी वह पूरी तरह स्वतंत्र नहीं होता. उसे सोचना होता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कि विभिन्न प्रदेशों में फैले दर्शकों की अपनी कल्पनाशीलता क्या है? उसे यह भी ध्यान रखना होता है कि उस की कल्पनाशीलता अधिकांश दर्शकों की कल्पनाशीलता से मेल खा जाए. उस की सफलता इसी में है.

फिल्म को वास्तविक जिंदगी से जोड़ना काफी गलत होगा. फिल्म क्षणिक मनोरंजन का एक माध्यम है और फिर उस की अपनी कुछ सीमाएं भी हैं इसलिए जाहिर है कि फिल्मों में थोड़ीबहुत अविश्वसनीयता तो स्वीकार करनी ही होगी. लेकिन जब यह अविश्वसनीयता बेतुके अंदाज में सामने आती है तो निर्देशक की बुद्धि पर तरस आने लगता है.

कई बार फिल्मों में रोमांचकता पैदा करने की झोंक में निर्देशक ऐसे दृश्य भर देता है कि वातावरण की सारी गंभीरता ही समाप्त हो जाती है और पूरा दृश्य हास्यास्पद बन कर रह जाता है. कुछ उदाहरण देखिए—

कुछ वर्षों पहले खलनायक अभिनेता प्रेम चोपड़ा के भाई ने एक फिल्म का निर्माण किया. 'लगन' नाम की इस फिल्म में अच्छे और बुरे का वही पारंपरिक संघर्ष था. क्लाईमैक्स में अच्छा भाई बुरे भाई को सलाह देता है कि वह अपने आप को पुलिस के हवाले कर दे. एक लड़की का अपहरण कर उसे अपनी कैद में रखने वाला बुरा भाई रिवाल्वर निकाल कर अच्छाई की मूर्ति बने नायक पर गोलियों की बौछार कर देता है. एक गोली उस की बाईं हथेली में लगती है तो दूसरी दाईं में. लेकिन जवाब नहीं नायक का. उस के चेहरे पर शिकन तक नहीं आती.

इस बीच बुरे भाई की आंख खुल जाती है और वह सामूहिक माफी मांगना शुरू कर देता है. बस, नायक सहित सभी कलाकारों के चेहरों पर मुसकान आ जाती है. न तो नायक को अपने घायल हाथों की चिंता होती है और न ही उस के चेहरे पर पीड़ा का कोई भाव उतरता है.

'रोटी कपड़ा और मकान' में जीनत अमान के गोली लग जाती है, लेकिन पूरे आधे घंटे तक वह भाषण दे कर ही तोड़ती है. उस के आसपास खड़ी कारों की भीड़ में से कोई भी उसे डाक्टर के पास ले जाने की चेष्टा नहीं करता. आखिर निर्देशक का इशारा न हो तो किया भी क्या जा सकता है?

'अमर अकबर एंथोनी' में तो कमाल ही कर दिया गया. मां को खून की कै करते है. बस, उस के बिछुड़े हुए तीनों पुत्र न जाने कहां से आ टपकते हैं. फिर फिल्मी डाक्टर तीनों पुत्रों का खून एक समय में निकाल कर एक ही नली से मां को देना शुरू कर देता है, चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से भले ही यह असंभव हो, हिंदी फिल्म का निर्देशक तो यह करिश्मा कर ही चुका है.

भयंकर चोटें भी बेअसर

इसी फिल्म में विनोद खन्ना अमिताभ बच्चन की जबरदस्त पिटाई करता है लेकिन अगले ही दृश्य में चोट के तमाम निशान गायब हो जाते हैं. वैसे इस तरह की घटनाएं फिल्मों में आम हो गई हैं. मारपीट चाहे कितनी भी भयंकर क्यों न हुई हो, अगले दृश्य तक चोट का निशान पूरी तरह गायब हो जाता है. शायद फिल्मी कलाकार ही अपने ग्लैमर की रक्षा के लिए यह निशान हटवा देते हों. 'चाचा' में शांताराम जैसे फिल्मकार भी यह गलती करने से नहीं चूके. फिल्म में नायिका को बुरी तरह पीटा जाता है लेकिन घाव का या खून का कोई चिह्न तक उस के शरीर पर नजर नहीं आता. 'टिकू' में बाल कलाकार के गोली लगती है लेकिन कहां? कोई नहीं जान पाता.

'हिमालय से ऊंचा' में काठमांडू से कलकत्ता जाने वाला हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो कर शिमला में गिरता है जबकि इन दोनों जगहों को जोड़ने वाली ऐसी कोई उड़ान ही नहीं है, जिस में शिमला बीच में पड़े. चलिए, एक बार के लिए यह माना जा सकता है कि निर्देशक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शेर से लड़ाई और इस के तुरंत बाद प्यार! 'खून पसीना' का दृश्य.

ने एक विशेष उड़ान का इंतजाम कर लिया होगा. शिमला में दुर्घटना की खबर पा कर सुनील दत्त बचाव के लिए पूरे 500 किलोमीटर दूर से अकेले पैदल ही चल देता है. अब इस अविश्वसनीयता के लिए निर्देशक के पास क्या तर्क है?

'हरफनमौला' में अशोककुमार दो करोड़ रुपए के नोट एक छोटे से ब्रीफकेस में रख कर खलनायक के अड्डे पर पहुंचता है. इस ब्रीफकेस में सौसौ रुपए की गड्डियां हैं. अगर मामली गणित से भी देखा जाए तो भी उस में इतनी रकम समाना बिलकुल असंभव लगता है. एक गड्डी में सौ नोट होते हैं. यदि गड्डी सौसौ रुपए के नोटों की है तो एक गड्डी में हुए कुल 10,000 रुपए के नोट यानी दो करोड़ रुपए की कुल गड्डियां होंगी—दो हजार. दो हजार गड्डियां एक छोटे से ब्रीफकेस में कैसे समा सकती हैं? इस के लिए तो एक बड़ा सा बक्स चाहिए और फिर एक व्यक्ति के लिए तो उसे उठा पाना भी संभव नहीं है.

'हत्यारा' में डाकू (विनोद खन्ना) घोड़े पर भाग रहा है. पीछे से इंस्पेक्टर (राकेश रोशन) जीप दौड़ाए चला आ रहा है. ऊबड़खाबड़ सड़क ही नहीं बल्कि चलती गाड़ी को भी पार कर दोनों एक छोटी पहाड़ी के पास पहुंच जाते हैं. एक तीसरा व्यक्ति (प्राण) भी इन दोनों व्यक्तियों का पीछा करता है लेकिन पैदल ही भागते हुए. आश्चर्य की बात यह है कि हिंदी फिल्मों का यह सुपरमैन जीप या घोड़े के मुकाबले पिछड़ता नहीं है.

चलती रेलगाड़ी पर से घोड़ों को कुदाने का करिश्मा 'चाचाभतीजा' में भी इस्तेमाल किया गया. 'धर्मवीर' में क्योंकि सारा माहौल ही राजसी था, इसलिए यहां घोड़ों को राजमहल के परकोटे से कुदाया गया. 'ड्रीम-गर्ल' में तो अविश्वसनीयता की तमाम सीमाएं ही तोड़ दी गईं. फिल्म के क्लाइमैक्स में खलनायक (प्रेम चोपड़ा) नायिका (हेमा मालिनी) व कुछ बच्चों को एक बहुमंजिली इमारत में कैद कर लेता है. इमारत में चारों ओर उस के गुंडे बिखरे हुए हैं. तभी जेम्सबांडीय प्रतिभा का प्रतीक नायक मोटर साइकिल पर आता है, पास वाली एक इमारत की छत पर जीने पर मोटर साइकिल चला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर पहुंच जाता है और वहां से एक सीधी छलांग लगाता है. मोटर साइकिल सहित वह उस इमारत की दीवार तोड़ कर जा पहुंचता है जहां खलनायक रिवाल्वर ताने खड़ा है.

'कसम खून की' के क्लाइमैक्स में खलनायक मोटर बोट में भाग रहा है. तेज रफ्तार के साथ मोटर बोट तट से रवाना होती है. कुछ समय तक नायक मोटर बोट के साथसाथ भागता रहता है और फिर एकाएक पचासों फुट ऊंची हवाई छलांग लगा कर सीधा मोटर बोट में जा कूदता है. उस के बाद वही होता है जो शत प्रतिशत फिल्मों में अब तक होता आया है यानी नायक द्वारा खलनायक का अंत.

'ढोंगी' का नायक तो 'कसम खून की' के नायक से भी चार हाथ आगे है. खलनायक (प्रेमनाथ) बेहोश नायिका (नीतू सिंह) को स्टार्ट हुए हैलीकाप्टर में बैठा देता है. हैलीकाप्टर अकेली नायिका को ले कर हवा में कुलांचें भरता है कि तभी नायक लपक कर हैलीकाप्टर में पहुंच जाता है. यही नहीं, बीमा एजेंट नायक हैलीकाप्टर को सफलतापूर्वक चलाने भी लगता है.

'आशिक हूं बहारों का' का क्लाइमैक्स तो कई दौर में पूरा होता है. पहले खलनायक नायिका को ले कर पाइपर विमान में भागता है. जाहिर है कि नायक उस का पीछा करेगा ही. कुछ समय बाद विमान छोड़ कर कार में, फिर मोटर बोट में और उस के बाद हैलीकाप्टर में यह लुकाछिपी का खेल शुरू हो जाता है. हैलीकाप्टर से लटकते रस्से से नायक, नायिका व खलनायक जमीन पर आ गिरते हैं. तुरंत नायक व खलनायक आपस में मारामारी करने लगते हैं. इस समूचे तामझाम में सभी कलाकारों को बिना किसी मकान के मारामारी में उलझे देख यह मानना पड़ जाता है कि फिल्मी कलाकार किसी दूसरे ही ग्रह के वासी होते हैं.

अभी हाल ही में प्रदर्शित 'दुनियादारी' में तो बड़ी खूबसूरती से जेंट यू की सार्थकता को फिल्मांकित किया गया नायक (परीक्षित साहनी) अपने खेतों में हल चला रहा है, तभी गांव का परंपरागत सूदखोर महाजन (कन्हैयालाल) उसे अपने कब्जे की अदायगी के लिए बुलाता है. महाजन द्वारा जल्दी कर्जा चुकाए जाने की बात सुन नायक दो दिन में फसल काट कर पाईपाई चुका देने का वादा कर आता है. एक दिन पहले जिस जमीन पर वह हल चला रहा था उसी खेत में वह दो दिन बाद फसल काटने भी पहुंच जाता है. सरकार को चाहिए कि वह ऐसी चमत्कारी भूमि प्राप्त करने के लिए फिल्म के निर्देशक का सहयोग ले.

यह तो हुई कुछ फिल्मों की खास गलतियों की बात. कई बार फिल्मों में ऐसी मामूली गलतियां रह जाती हैं जो सरसरी तौर पर नजर नहीं आतीं, लेकिन जागरूक दर्शक उन्हें पकड़ पाने में भूल नहीं करते. वैसे इस तरह की मामूली गलतियां भी फिल्म को हास्यास्पद बनाने के साथसाथ कमजोर निर्देशन को भी स्पष्ट कर देती हैं. 'तूफान और बिजली' में पुलिस और स्मगलर दोनों ही एक ही नंबर की गाड़ी एम. आर. ए. 6463 का प्रयोग करते हैं. हो सकता है कि कम बजट की फिल्म होने की वजह से निर्देशक को एक ही जीप से काम चलाना पड़ा हो लेकिन बड़े बजट की फिल्म 'चरस' में माल्टा की पुलिस माल्टा के ही हवाई अड्डे पर खलनायक (अजीत) को गिरफ्तार करने महाराष्ट्र पुलिस की जीप में पहुंचती है. 'जानेमन' में नायक (देव आनंद) टैक्सी मालिक को बदल लेता है लेकिन तब भी उस की टैक्सी का नंबर एक ही रहता है—2424.

'कभीकभी' में मैदान तो बर्फ से ढका दिखाया जाता है लेकिन उस के पास की खानों में केवल लाल रेत उड़ती दिखाई देती है. यही गलती 'काला सोना' में भी दिखाई गई. वहां बर्फ से लदे पहाड़ों और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...स्तान को एक साथ प्रस्तुत किया गया ...दोनों में बस एक सुरंग का फासला ...

'चरस' में वायरलैस से की गई बात ...टेलीफोन पर सुन लिया जाता है. ...तेचलते' में सिमी नाजनन की रसोई ...में पैर घुसती है लेकिन जब वह उस ...पीछा करती है तो उस के पैरों में ...पल आ जाती है. 'चित्तचोर' में जरीना ...बाद दोपहर बाद अमोल पालेकर को ...की चाय के लिए आमंत्रित करने ...है लेकिन अमोल 'गुड मार्निंग' कह ...उस का अभिवादन करता है.

'चारंट' में ललिता पवार की पीठ पर वार किया जाता है लेकिन चोट सिर में लगती है. अशोककुमार 'उलझन' में हाई कोर्ट का जज हो कर सेशन कोर्ट में वकालत करता है, जो कानूनन संभव ही नहीं है. 'शोले' में हेमा मालिनी के तांगे का दायां पहिया पत्थर से टकराता है और टूट कर गिरता है बायां पहिया. 'छोटी सी बात' में अमोल वृष राशि का राशिफल खरीदता है लेकिन पढ़ते समय वह मकर राशि का राशिफल हो जाता है. पुलिस और सेना की वरदी के साथ तो अकसर फिल्मों में खिलवाड़ किया जाता है. पद कोई और होता है और वरदी व संकेत कुछ और. ●

"आप मुझे घर पर अकेली छोड़ कर सिनेमा देखने कैसे चले गए? मैं ने आज आप को आप के मित्रों के साथ सिनेमाहाल की बालकनी में बैठे हुए देखा था."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुक्ता

युवकयुवतियों की पाक्षिक पत्रिका

अप्रैल (द्वितीय) 78 अंक के मुख्य आकर्षण

- **संविधान का 42 वां संशोधन**

  आपातकाल में अपने स्वार्थों के लिए बेरहमी से संविधान को नष्ट करने के लिए जिम्मेदार कौन थे? सनसनीखेज जानकारी.

- **भारत की उपेक्षा**

  दुनिया के अन्य 'सभ्य' देश भारत को बाघ, भालू, मदारियों का देश कह कर भारत की उपेक्षा क्यों करते रहे?

- **हिंसा को रोको**

  हिंसक गतिविधियों के जिम्मेदार कौन—पुलिस या असामाजिक तत्व?

- **एक सूरज 35 चांद**

  चौंकिए नहीं, चांद एक नहीं पूरे पैंतीस हैं. वैज्ञानिक जानकारी से भरा विशेष लेख.

- **गुड़ियां बोलती हैं**

  जी हां, आप देखिए तो सही, आप को यकीन हो जाएगा. गुड़ियों में जान फूंकने वाले कलाकार से भेंट और साथ में गुड़ियों के रंगीन चित्र भी.

- **ओसियां**

  जोधपुर के रेगिस्तान में मंदिरों का एक छोटा सा गांव जो अपने हृदय में प्राचीन कलाकृतियां छिपाए हुए है. ऐतिहासिक जानकारी से भरपूर लेख.

इन के अतिरिक्त युवाओं का सही मार्गदर्शन करने वाली आठ कहानियां, राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक विषयों पर विशेष लेख, मर्मस्पर्शी कविताएं तथा सभी स्थायी स्तंभ.
अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें.

अपनी प्रति आज ही खरीदिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

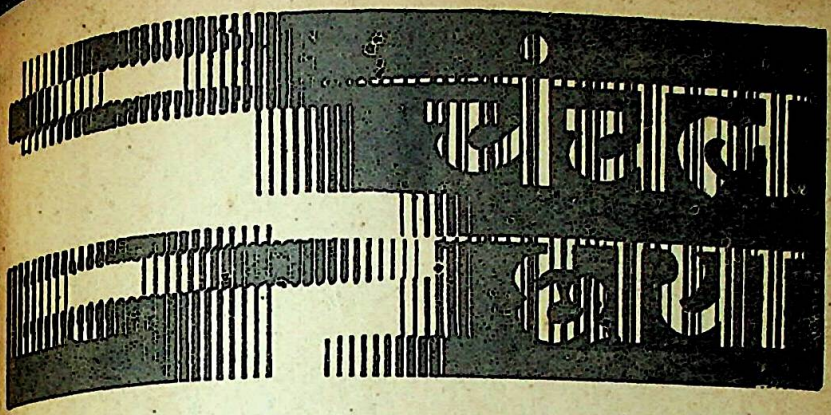

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ खट्टामीठा

निर्माता : इंद्रा फिल्म्स
निर्देशक : बासु चटर्जी
मुख्य कलाकार : अशोककुमार, राकेश रोशन, पर्ल पदमसी, बिंदिया गोस्वामी, प्रदीपकुमार, डेविड, इफ्तिखार, प्रीति गांगुली, देवेन वर्मा, मास्टर राजू, रणजीत चौधरी.

'खट्टामीठा' में पारसी समाज के जीवन के चित्रण व एक अधेड़ विधुर व अधेड़ विधवा की समस्या उठाने के दावे किए गए हैं, जो युवा बेटेबेटियों के होते हुए भी शादी कर लेते हैं. लेकिन उन की शादी होते ही कहानी अपनी लीक से हट जाती है और हमारी आम बंबइया पारिवारिक फिल्मों के प्रवाह में बहने लगती है. फिल्म में एक युवा युगल का प्रेम उभर आता है या दर्शकों को हंसाने के लिए एक मोटी लड़की की भूमिका बार-बार परदे पर उभरने लगती है.

विधुर होमी मिस्त्री (अशोककुमार) एक कारखाने में फोरमैन है. उस के चार बेटे हैं. सब से बड़ा बेटा लगभग पच्चीस-तीस साल का है और छोटा (मास्टर राजू) दसबारह साल का है. होमी मिस्त्री बच्चों की इच्छा के विरुद्ध एक अधेड़ विधवा सेठना (पर्ल पदमसी) से शादी कर लेता है. सेठना के भी तीन बच्चे—दो जवान बेटे व एक बेटी फ्रेनी (प्रीति गांगुली) हैं. ये भी मां की शादी पसंद नहीं करते. होमी अपने बेटों को ले कर सेठना के घर में रहने लगता है. पहले तो दोनों के बच्चे एकदूसरे को पसंद नहीं करते, पर कुछ समस्याएं सामने आने से दोनों परिवार घुलमिल जाते हैं.

सेठना का बेटा फिरोज (राकेश रोशन) एक अमीर केरावाला (प्रदीप कुमार) की बेटी जरीना (बिंदिया गोस्वामी) से प्यार करता है और जरीना पिता की इच्छा के विरुद्ध फिरोज से शादी कर लेती है. अंत में पिता अपनी भूल महसूस करता है और बेटी को पतिगृह में जाने की आज्ञा दे देता है. दूसरी तरफ सेठना की मोटी बेटी फ्रेनी (प्रीति गांगुली) है जिस का मोटापा उस की शादी में बाधक बना हुआ है. अंत में उस की शादी भी एक युवक (देवेन वर्मा) से हो जाती है.

निर्देशक बासु चटर्जी ने फिल्म की कहानी ही गलत स्थान से उठाई है. उस ने होमी व सेठना की शादी का आधार यह दिया है कि होमी पत्नी के अभाव में घर के कामकाज से तंग आ चुका है और सेठना आर्थिक रूप से टूट चुकी है और वह बच्चों को पालने के लिए कोई सहारा चाहती है. लेकिन निर्देशक चटर्जी यहां यह महसूस नहीं कर सका कि उपर्युक्त दोनों समस्याएं तब होती हैं जब बच्चे छोटे हों. होमी अपने किसी भी बच्चे की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शादी कर के पुत्रवधू ला सकता था और घर के कामकाज से छुटकारा हासिल कर सकता था. फिर जवान बेटे भी उस का हाथ बटा सकते थे. उधर सेठना के बेटे जवान हैं. जो बेटा प्रेम करता फिरता है और बाद में प्रेमविवाह भी कर लेता है, क्या वह घर का आर्थिक बोझ नहीं बांट सकता? वास्तव में उपर्युक्त दोनों समस्याएं वास्तविक न हो कर नकली थीं. इन समस्याओं को आधार बना कर कहानी आगे नहीं बढ़ सकती थी, इसलिए बासु चटर्जी को कहानी को आम बंबइया मोड़ देना पड़ा. यदि अधेड़ आयु के विवाह को दर्शाना ही था तो उस से उत्पन्न होने वाली सभी समस्याओं का जिक्र करना था. बच्चों की आपस में खींचातानी की समस्याओं को व्यावहारिक रूप में हल करना था. आसपड़ोस वालों द्वारा मजाक भी दिखाना चाहिए था.

वास्तव में निर्देशक बासु चटर्जी ने होमी और सेठना का विवाह तो दिखा दिया है, पर यह बात वह स्वयं भी नहीं जानता कि वे विवाह क्यों कर रहे हैं. उसे भी आम दर्शकों की तरह केवल इतना ही पता है कि होमी और सेठना शादी कर रहे हैं. यहां तक कि होमी और सेठना के बच्चे भी इस विवाह का कारण नहीं समझ पाते.

कहानी में आगे चल कर होमी की नौकरी छूट जाती है. उस स्थल पर उन के निकम्मे बेटे कमाकमा कर रुपए ला कर बाप को देने लगते हैं. इस से स्पष्ट प्रतीत होता है कि पात्र निर्देशक के हाथ की कठपुतली मात्र बन गए हैं, जो उन्हें जैसे चाहे नाच नचा रहा है.

फिल्म में पारसी जीवन, सभ्यता व संस्कृति की पूरी झलक नहीं मिलती है. कहींकहीं पारसी लिबास मात्र दिखा दिया गया है. एक बात बुरी तरह खटकती है कि पूरी फिल्म में पारसियों के अतिरिक्त अन्य किसी जाति का कोई पात्र नहीं ला पाया है.

फिल्म 'खट्टामीठा' में होमी मिस्त्री (अशोककुमार) और सेठना (पर्ल पदमसी) विवाह के बाद.

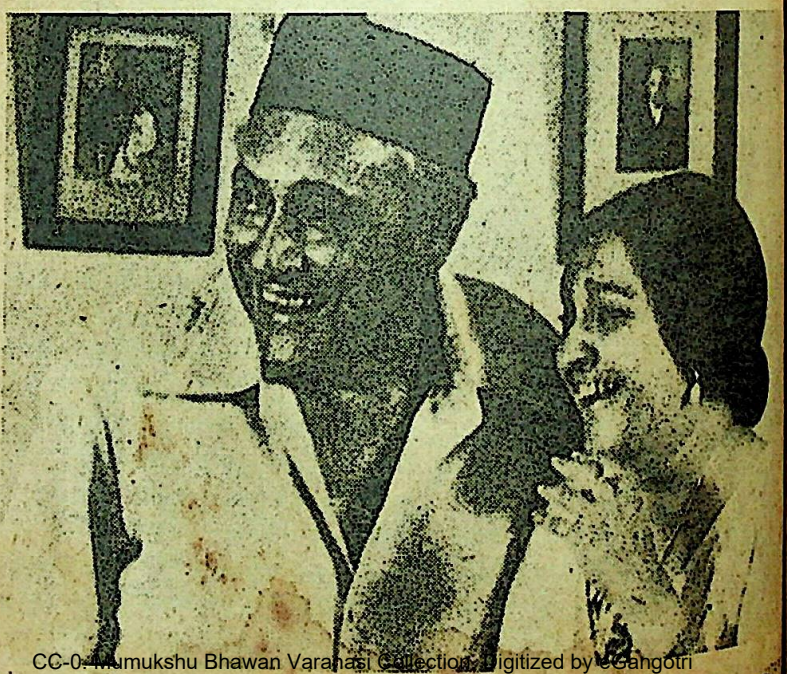

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिनय में भी कोई कलाकार प्रभावित नहीं करता. पर्ल पदमसी मंझी हुई रंगमंच की अभिनेत्री है. फिल्म में भी उस ने रंगमंचीय रूप त्यागा नहीं है. फिल्म में बस इतनी ही ताजगी कही जा सकती है कि बहुत से नए चेहरे देखने को मिलते हैं. प्रीति गांगुली पहले से कहीं मोटी हो गई है. बिंदिया गोस्वामी भी साधारण ही रही है.

गुलजार के गीत अपने रंग में हैं, पर राजेश रोशन की धुनें बेकार हैं. फोटोग्राफी अच्छी नहीं है. बासु चटर्जी के संवादों और कुशल निर्देशन के कारण फिल्म के कुछ प्रसंग जरूर रोचक हैं, वरना फिल्म का एक बहुत बड़ा भाग सेठना के घर में खाने की मेज पर ही फिल्माए जाने के कारण 'खट्टा मीठा' एक फिल्म प्रतीत न हो कर एक रंगमंचीय नाटक सा बन कर रह गई है और इस का खट्टामीठा मजा कुछ कसैला हो गया है.

★ तुम्हारी कसम

निर्माता : एसोसिएटेड फिल्म्स
निर्देशक : रवि चोपड़ा
कहानी : टीकम
मुख्य कलाकार : जीतेंद्र, नवीन निश्चल, मौसमी, पद्मिनी कपिला, मास्टर राजू, अचला सचदेव, जगदीश राज, कोमिला विर्क, रूपेशकुमार, अलका.

शराब मनुष्य को पशु बना देती है, और उसे अच्छे बुरे का ज्ञान नहीं रहता. निर्देशक रवि चोपड़ा कुछ ऐसा ही उद्देश्य ले कर 'तुम्हारी कसम' बनाने चला था, पर बहुत कुछ भरने के चक्कर में कहानी फैलती चली गई और मुख्य भूमिकाएं रचने के साथ गौण भूमिकाएं उभरती चली गईं. फिल्म में संयोगों का खूब सहारा लिया गया है, लेकिन ये सभी संयोग ऐसे हैं, जिन का अंदाजा दर्शक पहले ही लगा लेते हैं.

पिता (मनमोहन कृष्ण) की मृत्यु के बाद विद्या (मौसमी) अपने छोटे भाई राजा (मास्टर राजू) के साथ बंबई जाती है. राजा एक गिरोह के हाथ पड़ जाता है जो उस से भीख मंगवाता है. पर शीघ्र ही एक संतानहीन वकील दंपति (नवीन निश्चल और पद्मिनी कपिला) उसे गोद ले लेते हैं. उधर विद्या आनंद (जीतेंद्र) के घर में नौकरानी बन जाती है. एक रात शराबी आनंद उस की इज्जत लूटने लगता है. वह भाग कर अपनी इज्जत बचाती है पर वकील की मोटर से टकरा कर आंखें खो बैठती है. यह घटना आनंद की जिंदगी बदल देती है और वह आवारा जिंदगी छोड़ कर विद्या से शादी कर लेता है. उधर वकील के घर में भाई व बहन का मिलन भी होता है.

फिल्म में राजा की भूमिका को बहुत बढ़ा दिया गया है और एक प्रकार से यह नन्हा कलाकार फिल्म में छा भी गया है. इसी अनुपात में जीतेंद्र की भूमिका न केवल छोटी हो गई है बल्कि दब भी गई है. वह फिल्म का एक व्यर्थ सा पात्र बन कर रह गया है. केवल अंतिम भाग में वह मारपीट के दृश्य में कुछ उभरता है.

फिल्म की एक और खूबी है. इस में कोई खलनायक नहीं है. मेहमान कलाकार रूपेशकुमार ने थोड़ीबहुत खल पात्र की कमी पूरी की है. जीतेंद्र से ही खलनायक का काम भी ले लिया गया है और विद्या के साथ बलात्कार का दृश्य उसी पर फिल्मा लिया गया है. उसे एक अय्याश शराबी युवक दिखाया है (इस बहाने निर्देशक कुछ नग्नतापूर्ण सैक्सी दृश्य भरने में सफल हो गया है.) अंत में सुधर जाने पर वही नायक बन जाता है.

फिल्म के आरंभ में राजू को बहुत शरारती दिखाया है. यहां तक कि चोरी और भीख मांगने जैसे काम भी करने लगता है. उस की शरारतों से परेशान पिता की एक दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है. राजू पिता की मृत्यु पर कसम खाता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुक्ता

युवा पीढ़ी की एक मात्र अपनी पत्रिका.

केवल मुक्ता में आप को पढ़ने को मिलेगा :

- युवा पीढ़ी की समस्याओं को संजोए हुए सुरुचिपूर्ण एवं रोचक कम से कम सात कहानियां.
- विभिन्न विषयों पर विचारोत्तेजक और सूचनापरक अनेक लेख.

आज ही अपने समाचार-पत्र विक्रेता से मुक्ता खरीदिए.

बवासीर

शुरू होते ही इलाज़ कीजिये विश्वसनीय

हडेन्सा मरहम

लगाइये -ऑपरेशन की नौबत न आने दीजिये !

पहेली

श्याम आनंद प्रभात

मरतेमरते मौसी ने रमानाथ को अपनी वसीयत व गुप्त धन आदि कें बारे में बताना चाहा पर गला रुंध जाने कें कारण बात अधूरी रह गई.....और वसीयत एक पहेली बन कर रह गई.....

पर कुछ बातें ऐसी थीं जिन्होंने गीता व राजू को सोचने पर मजबूर कर दिया और वे अपने ढंग से पहेली हल करने में लग गए.

क्या वे पहेली हल करने में सफल हुए?

मूल्य : 2 रु.

राशि अग्रिम भेजने पर डाकखर्च केवल 50 पैसे वी. पी. वी. द्वारा

विश्वविजय प्रकाशन

एम-1 2 कनाट सरकस, नई दिल्ली-1

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि वह कभी भीख नहीं मांगेगा और न ही कभी चोरी करेगा. यहां लेखक ने विडंबना दिखाई है. उसे बंबई में वही काम करने पड़ते हैं जिन्हें न करने की उस ने कसम खाई थी. इस के बाद की कहानी पूर्णतः संयोगों पर आधारित है. बहन भाई को खोजती है, पर कई बार पास से निकल जाती है और दोनों का मिलन नहीं हो पाता. राजा वकील के घर में है. उधर विद्या भी वकील की कार से टकरा जाती है और वह उसे अपनी बहन मान लेता है. यहां पर भी अनेक ऐसे संयोग दिखाए हैं कि भाईबहन मिल नहीं पाते.

जीतेंद्र अभिनय और भूमिका दोनों दृष्टियों से बेजान है. नवीन निश्चल की भूमिका साधारण होते हुए भी प्रभावित करता है. मास्टर राजू के कारनामे उस की आयु से मेल नहीं खाते पर निःसंदेह अपनी कठिन भूमिका को इस नन्हे कलाकार ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है. मौसमी साधारण है.

आनंद बख्शी के गीत व राजेश रोशन की धुनें सामान्य स्तर की हैं. कमलेश्वर के संवाद फीके हैं और पटकथा शिथिल है, लेकिन संपादक प्राण मेहरा की सूझबूझ ने उसे बेजान होने से बचा लिया है. नारायण राव की फोटोग्राफी सुंदर है. 'तुम्हारी कसम' एक आम पारिवारिक फिल्म है जिसे मनोरंजक बनाने की धुन में निर्देशक रवि चोपड़ा लगभग सभी मसाले डाल गया है.

★ फांसी

निर्माता : ईस्टर्न फिल्म्स
निर्देशक : हरमेश मल्होत्रा
कहानी : रवि कपूर, राही मासूम रजा
मुख्य कलाकार : शशि कपूर, मुमताज
पंडित, प्राण, रणजीत, उर्मिला भट्ट.

आत्मसमर्पण के बाद डाकुओं को कहां रखा जाए? जेल तो सुधार की सब से गलत जगह है. यदि डाकुओं को किसी गांव में बसा दिया जाए तो बहुत सी कठिनाइयां आ सकती हैं. निर्माता-निर्देशक हरमेश मल्होत्रा ने अपनी फिल्म 'फांसी'

पिछले बारह महीनों में

★★★ आंदोलन, दुलहन वही जो पिया मन भाए.

★★यही है जिंदगी, एक ही रास्ता, शक, स्वामी, किस्सा कुरसी का, मंथन, आनंद आश्रम, अपनापन.

★जिंदगी, अब क्या होगा, मुक्ति, धर्मवीर, दिलदार, चाचा भतीजा, मामाभानजा, अमर अकबर एंथोनी, हत्यारा, ड्रीम गर्ल, कर्म, कसम खून की, आदमी सड़क का, आप की खातिर, दूसरा आदमी, प्रियतमा, चला मुरारी हीरो बनने, परवरिश, त्रिरणदास, टिंकू, मस्ताना दादा, भूमिका, बंदी.

○छोटे सरकार, आफत, बंडलबाज, नामी चोर, जागृति, चांदी सोना, चोर सिपाही, आखिरी गोली, खेल खिलाड़ी का, मजदूर जिंदाबाद, हीरा और पत्थर, सज्जोरानी, विश्वासघात, ईमान धर्म, जमानत, टैक्सीटैक्सी, धूपछांव, चालू मेरा नाम, कोतवाल साब, चक्कर पे चक्कर, कलाबाज, डार्लिगडार्लिग, आदि मानव, पंडित और पठान, शीफ आफ बगदाद, गुमराह, फरिश्ता या कातिल, जयविजय, एजेंट विनोद, इनकार, छैला बाबू, डाँगी, महाबदमाश, आशिक हूं बहारों का, डिंपल, आधा दिन आधी रात, दुनियादारी, दरिंदा, विश्वनाथ, डाकू और महात्मा, नसबंदी, आखिरी डाकू. फिर जन्म लेंगे हम.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेलो शैम्पू आपकी तरह के बालों की देखरेख करे

अपने बालों को स्वस्थ, आकर्षक और लचीले बनाइये- प्रोटीन से भरपूर हेलो एग शैम्पू से

हेलो एग शैम्पू का एग प्रोटीन से भरपूर फ़ार्मूला आपके सिर की त्वचा को पोषण देता है और आपके बालों को कंडीशन भी करता है। और आपके बाल एक स्वाभाविक लचक, एक स्वाभाविक चमक के साथ लहराने लगते हैं।

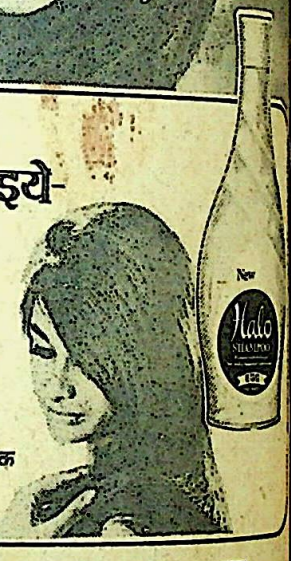

हेलो की देखरेख—
बालों के स्वाभाविक स्वास्थ्य के लिये

हेलो कॉस्मेटिक शैम्पू : इस्तेमाल कीजिये और देखिये इसके विशेष रूप से संतुलित फ़ार्मूले से आपके बाल कितने रेशमी, कितने मुलायम हो जाते हैं।

हेलो लेमन-फ्रेश शैम्पू : आपके तेलिया बालों को साफ़ करके उनमें स्वाभाविक चमक भर देता है।

हेलो कॉन्सेन्ट्रेट शैम्पू : थोड़ा-सा ही लगाने से ढेरों झाग निकलता है जो आपके बालों को मुलायम और संवारने योग्य बनाता है।

सिर्फ़ हेलो शैम्पुओं में ही पूर्णरूप से संतुलित फ़ार्मूला है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में इन समस्याओं को सामने रखा है. वास्तव में डाकुओं के आत्मसमर्पण के बाद बसाने की समस्या अच्छी थी लेकिन निर्माता ने उस का समाधान भी कुछ फिल्मी तरीके से ही किया है और इसी लिए फिल्म डाकू और नायक के एकदूसरे से बदला लेने के जाल में ही उलझ कर रह गई.

घर लौटते हुए राजू (शशि कपूर) रेल में डाका डालते डाकू को मार देता है. डाकू तिलकसिंह (रणजीत) अपने साथी का बदला लेने के लिए राजू को खोजता है और फिर राजू के पिता महेंद्र-प्रताप (इफ्तिखार) को मार कर पेड़ पर लटका देता है. राजू एक आत्मसमर्पण किए डाकू हिम्मतसिंह (प्राण) की सहायता से तिलकसिंह के अनेक साथियों को मार देता है. अंत में तिलकसिंह नाटकीय ढंग से मारा जाता है.

'फांसी' डाकुओं की फिल्मों की लीक से अलग हो सकती थी पर निर्माता बाक्स आफिस के चक्कर में बारबार फिर उसी लीक पर लौट आता है. यही नहीं, अंत में तिलकसिंह को फांसी लगाने के लिए फिल्म को नाटकीय मोड़ देता चला गया है.

फिल्म के प्रारंभ में भी उस ने दूसरी फिल्मों की तरह घोड़े पर सवार डाकुओं द्वारा रेल को पकड़ने की गलती की है. आखिर किसी दूसरे तरीके से भी तो डाकू रेल को रोक सकते थे.

पुलिस सुपरिंटेंडेंट राजू का अकेला ही तिलकसिंह से बदला लेने के लिए कंधे पर बंदूक उठाए पहाड़ों और जंगलों में घूमना भी नहीं जंचता. कहींकहीं पुलिस को बिलकुल निष्क्रिय बना दिया है.

हिम्मतसिंह किसी को मार नहीं सकता था पर पुलिस अधिकारियों को सूचित तो कर सकता था. लेकिन दर्शकों की सहानुभूति का पात्र बनाने के लिए उसे अकेले ही लड़ता, पिटता दिखाया है.

आत्मसमर्पण के समय गोलीबारी दिखा कर निर्माता ने 'मुझे जीने दो' की नकल की है. ऐसे ही कुछ दृश्य 'जिस देश में गंगा बहती है' में भी मिलते हैं. निर्माता ने अंधविश्वास का खूब सहारा लिया है. राजू की सगाई के लिए जाते समय घोड़े का अड़ना और रास्ते में घड़े के फूटने के अपशकुन भी दिखाए हैं. अब्दुल (असरानी) को ले कर निर्माता ने दोनों संप्रदायों के दर्शकों को आकर्षित करने की कोशिश की है.

शशि कपूर कहींकहीं ही आकर्षित करता है. सुलक्षणा पंडित की भूमिका में एकदो नाचगानों के अलावा कुछ नहीं था, इसलिए वह अधिक प्रभावित नहीं कर पाती. प्राण अपने अभिनय से अधिक आकर्षित करता है. रणजीत भी काम चला गया है.

लक्ष्मीकांत प्यारेलाल ने गीतों को कोई नई धुन नहीं दी. राही मासूम रजा के संवाद चुस्त हैं. व. दुर्गाप्रसाद का छायांकन भी अच्छा है. ●

14 वर्षीय बालक 43 घंटे समुद्र में तैरता रहा

चीन से गोआ आते हुए जहाज से एक 14 वर्षीय बालक समुद्र में गिर पड़ा और दो दिन तक पानी में तैरते रहने के पश्चात श्री लंका से 200 समुद्री मील दूर मिला. इस बालक को नार्वे के जहाज ने बचा लिया. डी. निटो नामक यह बालक रक्षक पेटी के सहारे तैरता रहा. दो दिन तैरने के बाद उसे बचा लिया गया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूभारती

ग्रामीण नवजागरण की पत्रिका

अप्रैल, 1978 के कुछ मुख्य आकर्षण

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,

- **गांव में सुधार**

क्या सिर्फ कागजी योजनाओं के सहारे संभव हो सकेगा?।

- **स्वचिकित्सा**

अपना इलाज खुद कर के अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ न करें. स्वास्थ्य संबंधी एक उपयोगी लेख.

- **जेबकतरे**

यदि आप इन की सांकेतिक भाषा समझ लें तो इन की लूट से काफी हद तक बच सकते हैं.

- **मेंथा**

मेंथा हमारे दैनिक जीवन का अंग बन चुका है, फिर भी हम मेंथा के बारे में कुछ नहीं जानते. इस नई उपज की संपूर्ण जानकारी.

- **सोन मक्खी**

लौकी जाति की सब्जियों को नष्ट करने वाली इस खतरनाक मक्खी से फसल को बचाने के कुछ उपाय.

- **मूंग और उड़द**

अधिक उपज देने वाली उन्नत किस्मों की बोआई की वैज्ञानिक विधियां.

- **बेर**

हर मौसम और हर किस्म की जमीन में उग सकने वाला यह उपेक्षित फल थोड़ी सी मेहनत से आप को भरपूर आमदनी दे सकता है.

- **सूरजमुखी**

इस पौष्टिक व उपयोगी तिलहन की अधिक उपज कैसे लें?

- **रासायनिक खाद**

प्रयोग करने से पहले कुछ उपयोगी बातें जान लें.

- **आप के प्रश्न : विशेषज्ञ के उत्तर**

[illegible] खेतीबाड़ी संबंधी समस्याओं के समाधान.

[illegible] के अतिरिक्त 6 रोचक कहानियां, ज्ञानवर्धक लेख तथा हंसो [illegible] हंसाओं, कढ़ियों के चक्कर, नई फिल्में आदि सभी स्थायी स्तंभ.

[illegible] : एक रुपया

अपनी प्रति आज ही खरीदिए.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
अस्सी, वाराणसी।

सरिता

नवंबर (प्रथम) 1978

दीपावली विशेषांक

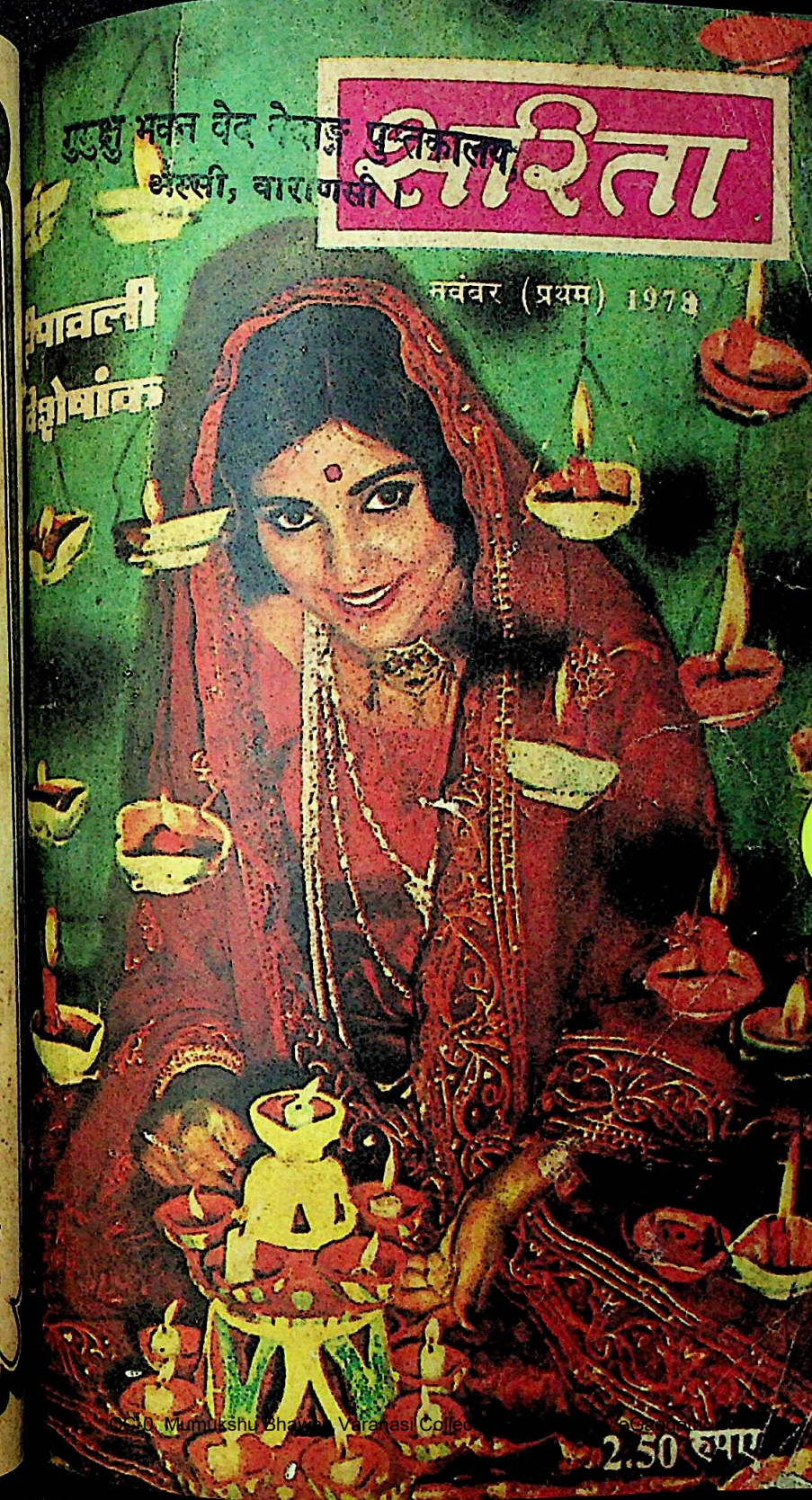

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. eGangotri

2.50 रुपए

एक्ज़ूबरॅन्स है आनन्द
एक्ज़ूबरॅन्स है उमंग
एक्ज़ूबरॅन्स है सुगन्ध

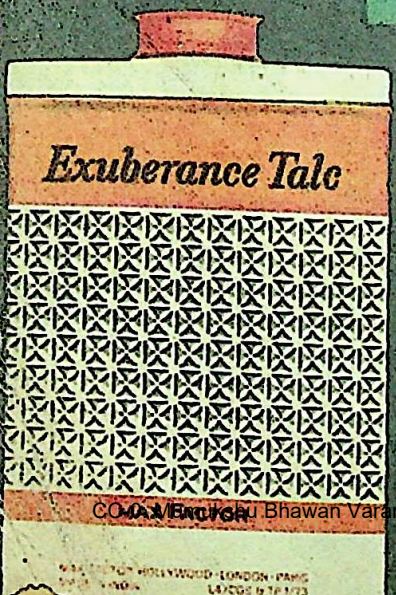

अब
एक्ज़ूबरॅन्स है
एक
मैक्स फ़ैक्टर टॅल्क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगातार तीन बार कौंसिल पुरस्कार के बाद

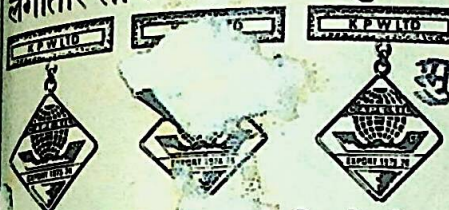

खोडियार ने सेनिट[illegible] उद्योग के लिए पहलीबार जीता है

विशेष निर्यात पुरस्कार

श्रेष्ठता का सबूत

यह अपना मौका है जब सेनिटरीवेयर उद्योग के लिए विशेष इनामों के रूप में ट्रॉफी प्रदान की गयी है. और इस अनोखे कॅपेसिसल सर्टिफिकेट को सबसे पहले प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है—खोडियार को।

अन्तर्राष्ट्रीय सेनिटरीवेयर की उपलब्धियों में दोहरे रूप से प्रथम ये विशेष पुरस्कार-ट्राफ़ल और आकार में खोडियार सेनिटरीवेयर की उत्कृष्टता का प्रतीक है जो फ्रांस के पोर्चर के सहयोग से हासिल हुई है।

खोडियार की सफलता के ये कीर्तिमान, खोडियार को दूसरों से श्रेष्ठ साबित करते हैं। ये सिर्फ कीर्तिमान ही नहीं, बल्कि हमारे देश से सेनिटरीवेयर के निर्यात की नयी परम्परा का प्रारंभ है, जिसपर हमें गर्व है।

श्रेष्ठता का सबूत

Khodiyar

खोडियार

खोडियार पॉटरी वर्क्स लिमिटेड सिहोर (गुजरात) ३६४२४० भारत फोन : ३ तार : 'पॉटरी'

national - 449

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या आपकी त्वचा आपकी परेशानी का कारण है?

बोरोलीन

ऐन्टिसेप्टिक सुगन्धित क्रीम इस परेशानी को दूर करने
आपकी मदद करेगी। बोरोलीन जाड़े में त्वचा की रू
और गर्मी में सुखी-तपी त्वचा का सुरक्षा करती है। छोटे
घावों और फोड़े-फुन्सियों को ठीक करने में सहायता पहु
है। नियमित इस्तेमाल से बोरोलीन आपकी त्वचा को
और हर तरह की परेशानी से मुक्त रखती है। त्वचा की
सुरक्षा के लिये हर मौसम में इस्तेमाल कीजिये बोरोलीन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जी.डी. फार्मास्यूटिकल्स लि०, बोरोलीन हाउस, कलकत्ता-

व्यंगात्मक पेय की अलौकिक अनुभूति...

मोहन्ज़

गोल्ड कॉयन

एप्पल जूस

६५० मि.ली. व २०० मि.ली. की बोतलों में प्राप्य.

मोहन मीकिन ब्रुअरीज़ लिमिटेड (स्थापित १८५५)

वितरक : ट्रेड लिंक्स लिमिटेड, 'प्रभात किरन', २७ राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-११०००८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरी पसन्द का केश तेल!

लोगों से मुलाकात, ढेर सारी चिट्ठियां लिखना, हर मामले का झटपट निबटारा ... दफ्तर में मुझे कितने काम रहते हैं!
पर ऐसा होते हुए भी मुझे शान्त रहना पड़ता है और यह भी ज़रूरी है कि मेरे केश सजे-संवारे रहें। इसीलिये मुझे पसन्द है भीनी सुगन्धयुक्त

केयो-कार्पिन

केयो-कार्पिन से केश चिपचिपाते नहीं

Dey's
दे'ज़ मेडिकल का उत्पादन

O/KH-7A/23

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्डन

हाथों में हाथ
खुशियों के साथ

HINDON RIVER MILLS

साड़ियाँ
सूटिंग्स
शर्टिंग्स
ड्रैस मैटिरियल्स

डी सी एम
टैक्सटाइल्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया अपार आपके कपड़ों के
तानेबाने में उतर कर वहाँ जमा
सारा मैल सचमुच निकाल देता है। इससे आपके सफ़ेद कपड़े नये-जैसे
चमकदार सफ़ेद और रंगीन कपड़े नये-जैसे चमकदार रंगीन बने रहते हैं।
बस, एक बार अपार आज़मा कर देखिए...फिर आप किसी और
डिटर्जेण्ट का सोचेंगे तक नहीं !

अपार से कपड़े नये-जैसे
सफ़ेद बनते हैं

*स्थानीय कर अतिरिक्त

स्वदेशी डिटर्जेण्ट्स लिमिटेड का
एक उत्तम उत्पादन।
उत्तर भारत में बिक्री-प्रबंधक : डालमिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सितंबर (प्रथम) अंक में 'सरित प्रवाह' के अंतर्गत सरिता के विरुद्ध आंदोलन करने वालों के बारे में व्यक्त आप के विचारों से मैं बिलकुल सहमत हूं. दिल्ली में जगहजगह पोस्टर लगा कर सरिता व उस के संपादक को बदनाम करने का असफल प्रयास किया जा रहा है. पर मजे की बात तो यह है कि इस पोस्टरबाजी से उलटे सरिता को ही फायदा हो रहा है.

मेरी एक मित्र ने सिर्फ इसलिए सरिता की प्रतियां खरीद कर पढ़ीं क्योंकि वह जानना चाहती थी कि इन पोस्टरों में सरिता के बारे में जो कुछ लिखा है क्या वह सही है. पर इन प्रतियों को पढ़ने के बाद उसे उन में ऐसा-वैसा कुछ नहीं मिला. इस के विपरीत इस पत्रिका से निष्पक्ष नीति से प्रभावित हो कर वह इस की नियमित पाठिका बन गई है. —याद सुगंध

✦

सितंबर (प्रथम) अंक में सरिता का रचनात्मक आंदोलन—'राष्ट्र की सुखसमृद्धि के लिए तालाबंदियों और हड़तालों पर रोक लगाओ' शीर्षक के अंतर्गत आप के विचार बहुत पसंद आए.

मेरे विचार में सर्वोच्च न्यायालय व उच्च न्यायालयों में ऐसे विवादों के निपटारे के लिए अतिरिक्त विशेष कक्षों की स्थापना की जानी चाहिए. इस से समय की बरबादी व जनधन की हानि तो रुकेगी ही, साथ ही राष्ट्र भी समृद्धि की ओर शीघ्रता से बढ़ सकेगा.

साथ ही समयसमय पर आधुनिक श्रम कानूनों पर वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए पुनर्विचार भी होते रहना चाहिए और उन में आवश्यक संशोधन किए जाने चाहिए. इस सब प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य कम समय में अधिक से अधिक समाधान होना चाहिए. —राजेंद्रप्रसाद

✦

अगस्त (द्वितीय) अंक में 'सरित प्रवाह' के अंतर्गत सभी टिप्पणियां प्रशंसनीय हैं, विशेष रूप से लाटरी संबंधी विचार. लाटरी वास्तव में सरकार द्वारा चलाया जाने वाला जुआ ही है. सरकार भी जानती है कि भारतवासी भाग्यवादी हैं इसी लिए वह एक ओर तो लाटरी चला कर प्रोत्साहन देती है और दूसरी ओर मनोरंजन के साथसाथ ताश के पत्तों से भाग्य आजमाने वाले लोगों को जुआ खेलने के जुर्म में गिरफ्तार कर लेती है. यदि सरकार लाटरी चला सकती है तो प्रत्येक नागरिक को जुआ खेलने का भी अधिकार होना चाहिए. यदि जनता पार्टी वास्तव में जुआ रोकना चाहती है तो उसे सब से पहले लाटरी पर रोक लगानी होगी. —श्रीश ढोंडियाल

✦

अगस्त (द्वितीय) अंक के 'सरित प्रवाह' में आप ने आयकर के रिफंड तथा भविष्य निधि के क्लेमों को निबटाने के संबंध में जो विचार व्यक्त किए हैं वे सराहनीय हैं. आप एक महत्त्वपूर्ण तथ्य को प्रकाश में लाए हैं. सरकार अपनी वसूली करने में तो नियमों के तहत अंतिम सीमा तक शक्ति का प्रयोग करती है पर जो रकम उसे स्वयं देनी होती है, उस के संबंध में सरकार को उस के नियमों की याद स्वयं लेनदार को करानी पड़ती है.

बीसियों चक्कर लगाने के बाद भी क्लेम की रकम मिलने की आशा नहीं होती. इस का परिणाम यह होता है कि हर तरफ असंतोष और अविश्वास की भावना फैलती जाती है.

—शिवनारायण दशोरे

✦

अगस्त (द्वितीय) के 'सरित प्रवाह' में वेश्याओं को बड़ा धार्मिक बताया गया है, जो स्वाभाविक है. प्रायः बड़ेबड़े तिलकधारी व माला-धारी पंडे, पुजारी आदि दिखावे के धार्मिक व्यक्तियों का बारीकी से अध्ययन किया जाए तो वे भी अति अनैतिक सिद्ध होंगे. वास्तविक मानव धर्म से पूजाअर्चना, तिलक, माला आदि का कोई संबंध नहीं. समाज में पाखंड को ही धार्मिकता मान लिया गया है, जो नैतिक मूल्यों से कोसों दूर है. दुनिया में धार्मिक पाखंड जितना बढ़ता जा रहा है उतनी ही समाज में विकृति आती जा रही है और बेचारी वेश्याएं भी इसी विकृत समाज की ही देन हैं. —सुरेश दुबे

✦

जुलाई (द्वितीय) अंक के 'सरित प्रवाह' में आप ने जीवन बीमा निगम की दूषित कार्यप्रणाली विषयक टिप्पणी में एक अत्यंत विकट परंतु ज्वलंत समस्या को उठाया है. आप ने पालिसी होल्डरों की दुखती रग को पहचाना है.

जीवन बीमा निगम बनने से पहले जीवन बीमा कंपनियां अलगअलग नामों से स्वतंत्र रूप से कार्य करती थीं. उन्हें अपने व्यवसाय को चलाने की पूर्ण स्वतंत्रता थी. तत्कालीन बैंकों की तरह लाभ अर्जित कर वे अपने कर्मचारियों को पुरस्कारस्वरूप बोनस भी देती थीं, जिस का उन के व्यवसाय पर अनुकूल प्रभाव पड़ता था.

लेकिन जब से इन बीमा कंपनियों का सरकारीकरण हुआ है तब से उन के काम और अनुशासन में ढीलापन आ गया है. इस का प्रत्यक्ष प्रभाव पालिसी होल्डरों पर पड़ता है. हम स्वयं इस के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भुक्तभोगी हैं. मेरे पति बिहार राज्य में सरकारी अधिकारी हैं. सन 1958 में उन्होंने जीवन बीमा निगम के आगरा कार्यालय में बीमा करवाया था. तत्पश्चात नियमित रूप से प्रीमियम की अदायगी मनीआर्डरों अथवा चैकों द्वारा की जाती रही. उन की पहुंच की सूचना एवं रसीदें भी आती रहीं, क्योंकि पतिदेव का स्थानांतरण समयसमय पर होता रहता था, इसलिए वह बराबर आगरा कार्यालय को अपने नए पते की सूचना देते रहे.

हमें आश्चर्य तब हुआ जब 16 वर्ष पश्चात एक चैक इस सूचना के साथ लौट आया कि आप की पालिसी पटना कार्यालय में स्थानांतरित की जा चुकी है, जब कि पटना कार्यालय में पालिसी को स्थानांतरित करने के संबंध में मेरे पति ने आगरा कार्यालय को कभी कोई पत्र नहीं लिखा था और न ही कभी आगरा कार्यालय से पहले इस बात की कोई सूचना ही मिली थी. इस से पहले आगरा कार्यालय बराबर प्रीमियम की रकम वसूल करता रहा था.

काफी दौड़धूप के बाद जीवन बीमा निगम के पटना स्थित कार्यालय से आगरा कार्यालय को पत्र लिखवाए गए, पर उन का कोई उत्तर नहीं मिला. प्रश्न है, आखिर वे कौन थे जो [illegible] हड़पते रहे? रुपया तो डूबा ही, साथ ही [illegible] फरियाद सुनने वाला भी नहीं है. लालफीताशाही का शिकार पालिसी होल्डर ही होता है.

जीवन बीमा निगम के चिह्न पर [illegible] होता है—'भविष्य के हाथों में सुरक्षा'. [illegible] प्रश्न यह है कि यह सुरक्षा ज्योति है किस के लिए, पालिसी होल्डरों के लिए या निगम के कर्मचारियों के लिए?

—उमिला [illegible]

✦

अगस्त (द्वितीय) अंक में प्रकाशित लेख 'स्वतंत्रता बनाम धर्म' (लेख : ओशो) वर्तमान जनजागरण की दशा में लिखा होने के कारण बहुत ही पसंद आया.

कुछ स्वार्थी तत्त्व अपने स्वार्थ के वशीभूत हो कर हमारे समाज में धर्म के ठेकेदार बन बैठे हैं. यदि हम चाहते हैं कि हम इन के चंगुल से मुक्त हों तो हमें इन की दुकानदारी को समाप्त करने के लिए साहस के साथ कदम उठाना चाहिए.

—महेंद्रकुमार [illegible]

✦

अगस्त (द्वितीय) अंक में 'बरबादी रोकिए' (लेख : सत्यकुमार) पढ़ा. कहने को तो भारत एक निर्धन देश है पर यहां जिस प्रकार [illegible] एवं शादीविवाह व अन्य सामाजिक अवसरों पर धन एवं वस्तुओं की बरबादी होती है उस को देख कर तो ऐसा लगता है कि यहां न तो किसी के पास पैसे की कमी है और न किसी प्रकार का अन्न.

इस फिजूलखर्ची का मुख्य कारण झूठे प्रदर्शन की भावना तथा हमारे सामाजिक व धार्मिक रीतिरिवाज हैं, जिन के वशीभूत हो कर प्रत्येक नागरिक को न चाहते हुए भी इन रस्म और रिवाज के आगे घुटने टेकने पड़ते हैं.

—मृदुला [illegible]

✦

अगस्त (प्रथम) अंक में 'अल्पसंख्यक शब्द' लेख में जो वस्तुपरक विचार व्यक्त किया गया वह बड़ा ही व्यावहारिक एवं सत्य पर आधारित है. इस संबंध में अधिक परिपक्व राष्ट्रीय [illegible] की आवश्यकता है.

हमारे संविधान के अनुच्छेद 15 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि राज्य किसी नागरिक के प्रति केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्मस्थान अथवा इन में से किसी एक के आधार पर भेदभाव नहीं करेगा.

कथित मजहबी मुसलिम अल्पसंख्यक उपर्युक्त अनुच्छेदों से परे हैं? उन्हें भी उतना ही अधिकार प्राप्त है जितना अन्य मजहबों के मानने वालों को.

लेखक का यह कहना कि सरकार को अल्पसंख्यक आयोग के स्थान पर नागरिक [illegible] आयोग की नियुक्ति करनी चाहिए, [illegible] विष्णुप्रसाद [illegible] एवं न्यायसंगत है.

सरिता के लेखक

अंजिला आनंद

इस अंक में प्रकाशित लेख 'बच्चों को बिगाड़ने के कुछ अचूक नुस्खे' की लेखिका श्रीमती अंजिला आनंद प्राध्यापिका हैं. सामाजिक समस्याओं, महिला तथा शिक्षा संबंधी विषयों पर लिखने में आप की विशेष रुचि है. आप [illegible] लेख लिखती रही हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शानदार
नया
उपहार

कॉम्फ़िट

पेश करते हैं एक नया किफ़ायती पैक और आपके लिए

एक बेल्ट मुफ़्त!
साथ ही २ रुपयों की बचत भी!

कॉम्फ़िट... बहुत हल्का है और इसमें सोखने की ज़्यादा क्षमता है. साथ ही मुलायम भी इतना कि मालूम ही नहीं होता. कॉम्फ़िट [illegible] की साफ़-सफ़ाई के साथ [illegible] वातावरण में भारत के [illegible] आधुनिक व ऑटोमेटिक [illegible] द्वारा बनाये जाते हैं, ताकि आपको पूरी सुरक्षा दी जा सके. [illegible] बैक्टीरिया से दूषित अन्य [illegible] नहीं दे पाते हैं. ये टॉवेल [illegible] द्वारा बहाये भी जा सकते हैं.

कॉम्फ़िट अपनाइये.
[illegible] के किस्टीन होडन का [illegible] ब्राण्ड नाम है.
कॉम्फ़िट को अपनी पसंद बनाइये [illegible] अपनी तकलीफ़ों को भूल [illegible]. [illegible], सुरक्षा कॉम्फ़िट की ज़िम्मेदारी है.

कॉम्फ़िट आपकी हिफाज़त करे.

Dazzal/CH/2/78

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक चिंगारी से
निकलनेवाली ज्योति
जिसतरह जलती है और
रोशनी देती है... उसी तरह
ज्योतिर्मय त्यौहारों का यह
मौसम भी हर घर को
हँसी-खुशी और उमंगों से
भर दे.

इलेक्ट्रॉनिक

अमर गॅसलाइटर

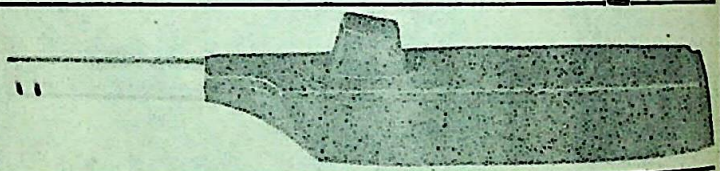

- ☐ न बिजली का खर्च
- ☐ न चकमक पत्थर का
- ☐ न पेट्रोल
- ☐ न बैटरी
- ☐ न वायर और
- ☐ न रिचार्जिंग की झंझट

...बटन दबाते ही एक इलेक्ट्रॉनिक सेट से लगातार चिंगारियाँ निकलने लगेंगी.

अमर गैसलाइटर एक अति आधुनिक, विश्वसनीय, सुविधाजनक और किफ़ायती गैसलाइटर है. ऐसा गैसलाइटर पहले कभी नहीं बना. यह पूरी तरह सुरक्षित है इसमें बिजली के झटके नहीं लगते. इसकी अनोखी चिंगारियों से आपका गैस का चूल्हा मिनटों में जल जाता है... न समय की बरबादी और न गैस की.

एक बार सलीजिये... हमेशा साथ निभायेगा.

गॅरंटी
२ वर्षों तक-मुफ्त बदलने की गॅरंटी. सभी प्रमुख दुकानों में विविध रंग-श्रेणियों में उपलब्ध

जर्मनी की अति-आधुनिक तकनीकी जानकारी से बना

निर्माता:
अमर एण्टरप्राइजेस
९९/१०१ केशवजी नायक रोड बम्बई ४०० ००९

दिल्ली, हरयाना, जम्मू, कश्मीर और एच. पी. के लिए स्टोकिस्ट

डिस्ट्रीब्युटर्स इंडिया,
इ-१/१६ दर्यागंज, नई दिल्ली-११० ००२
फोन: २७८८१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हर चुस्की में ताज़ा चुस्ती

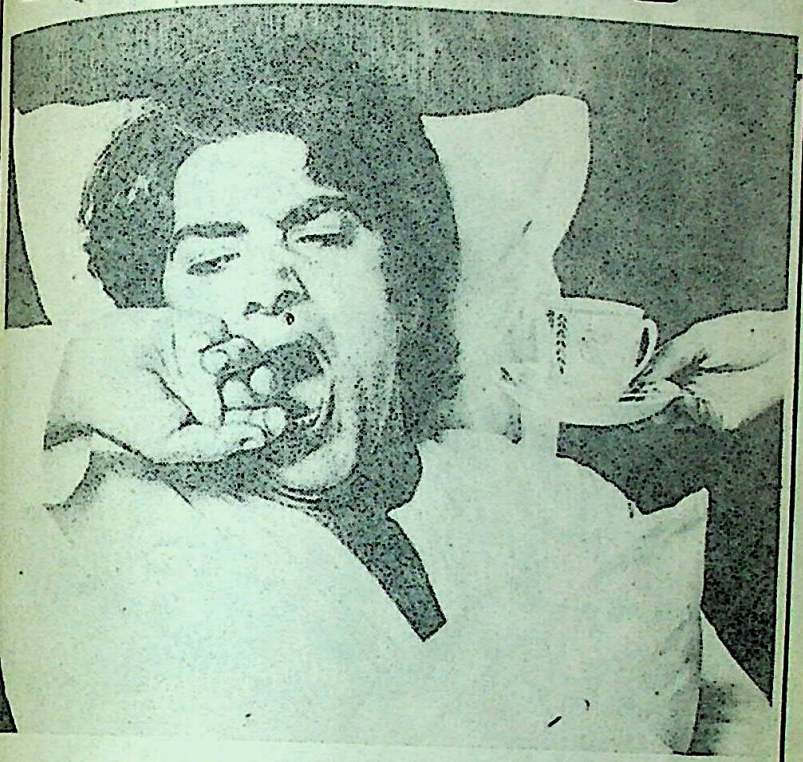

लिपटन रिचब्रू चाय से ताज़गी मिले, तबीयत खिले

तन जगाए. मन खिलाए ... लिपटन रिचब्रू.
गहरा गाढ़ा रंग, जानदार शानदार स्वाद.
मन आगे आगे. तन में ताज़गी जागे...
जैसे आपको उमंगों में बहा ले जाय!

रिचब्रू... 'जग जगाता' स्वाद

विज्ञाप्त-LRS. 7-1810 HI (R)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके अमर प्रेम का प्रतीक

क्लिअरटोन

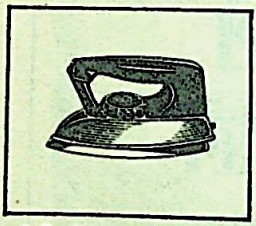

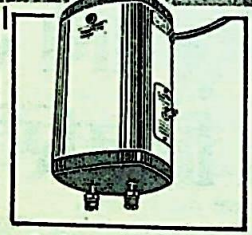

देश के कोने-कोने में हर घर में क्लिअरटोन का नाम एक ऐसी गॅरंटी है जो कभी खत्म ही नहीं होती.

आपकी हर ज़रूरत के मुताबिक़, तरह-तरह के घरेलू उपकरण बनाकर और अपने हज़ार से भी अधिक विक्रताओं के ज़रिये बिक्री के बाद भी शीघ्र एवं कार्यक्षम सेवाएं प्रदानकर, पिछले २५ वर्षों में हमने लोगों का विश्वास प्राप्त करने में कामयाबी हासिल की है.

कई किस्में...चाहे जो भी पसन्द कीजिए!

आपकी ज़रूरत के मुताबिक़ और जितनी क़ीमत आप अदा कर सकें, उसके अनुसार क्लिअरटोन की कई ऑटोमेटिक एवं नॉन-ऑटोमेटिक इस्त्रीयाँ उपलब्ध हैं. इतनी अधिक किस्में किसी और के पास नहीं। ये आइ एस आइ विवरणों के अनुरूप हैं और सबसे ज़्यादा बिकतीं हैं. इसके कई ख़ूबसूरत रंगों में से, चाहे जिसे चुनिये.

समी की पसन्द!

क्लिअरटोन वॉटर हीटर की पानी गर्म करने की क्षमता निराली है. इसका हर मॉडेल आइ एस आइ विवरणों के अनुरूप है. चाहे वर्टिकल लीजिए या हॉरीजेन्टल या फिर नया एलीगेन्ट मॉडेल या मिजेट. बहरहाल आपको गरम पानी लगातार मिलता ही रहेगा...जब भी आप चाहें. अधिक सुरक्षा के लिए एक फ़्यूज़ प्लग, कम बिजली-खर्च और उच्च तापीय क्षमता— ये हैं इसकी कुछ और खासियतें.

क्लिअरटोन के घरेलू उपकरण

Klearfone

CC-0. Bhavya Vasandi Collection. Digitized by eGangotri

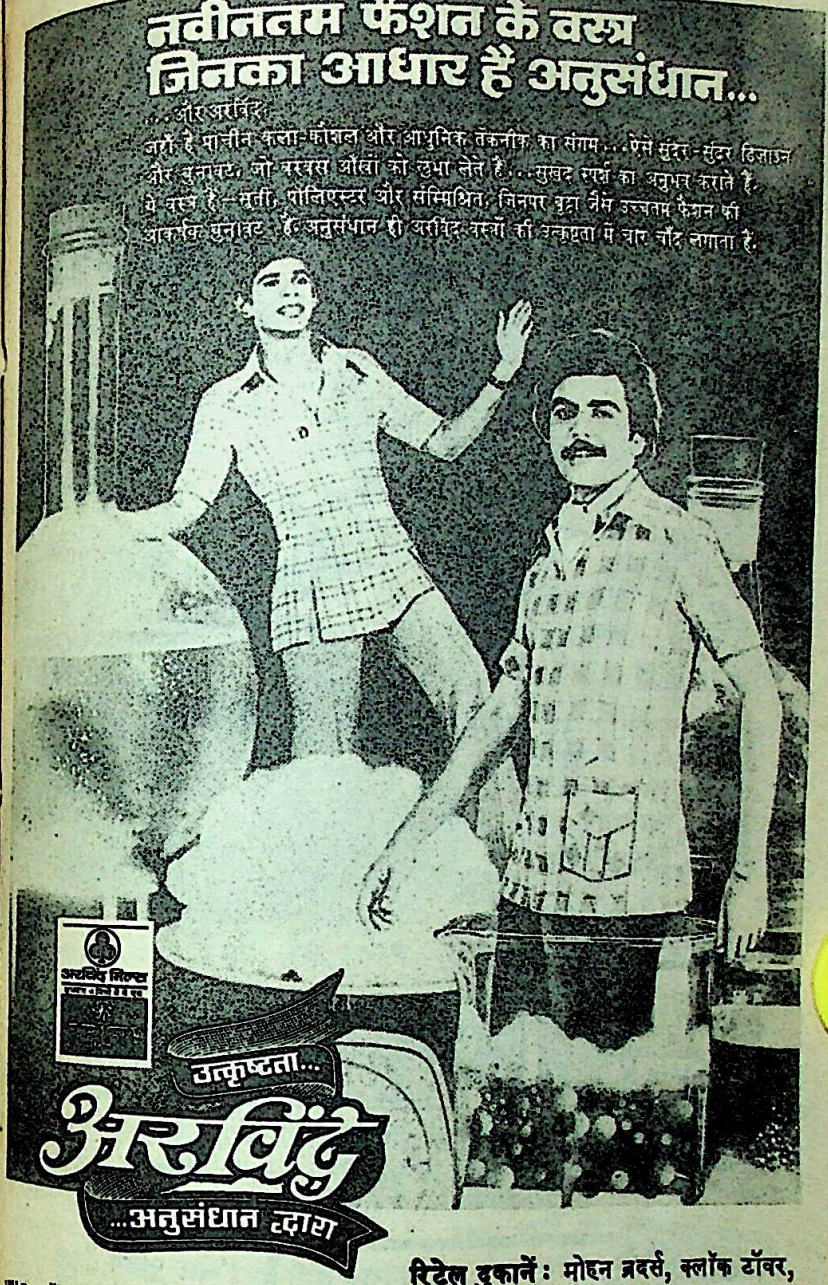

रिटेल दुकानें: मोहन ब्रदर्स, क्लॉक टॉवर, ७२ चाँदनी चौक, **दिल्ली** भँवरलाल मूठा एण्ड सन्स, एस. एम. एस. हाइवे, **जयपुर** बन्सल ब्रदर्स, जी. टी. रोड, नाकोदर चौक, **जालंधर सिटी. थोक विक्रेता:** दिल्ली अमर टेक्सटाइल कंपनी, १६६/२००, क्लॉथ मार्केट, **अमृतसर** पी. एच. मेहरा, **जयपुर** सरेन्द्रकुमार अनिलकुमार, कत्रा पुरोहितजीका, **जोधपुर** शिवराज जैन, टोवॅको बाजार, **अलवर** किरणचंद पलावत, बजाजा बजार **बीकानेर** नवरतन सिपानी, कत्रा लाभूजीका.

Interoub/AM/5/78 HN.
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके राजा बेटे के लिए शाही पुडिंग-रेक्स जेली

आपका राजा बेटा रेक्स जेली खाएगा,
तो रेक्स जेली भूल न पाएगा.
ये मज़ेदार पुडिंग उसे प्यार से
खिलाइए... फिर उसे
खिलखिलाता देखते जाइए!

बनाना कितना आसान!

"एक कप उबलते पानी में रेक्स जेली का एक पैकेट घोलिए!

"इतना ठण्डा पानी मिलाइए कि यह घोल लगभग २½ कप हो जाय!

"इस घोल को किसी सांचे में ढालिए और बर्फ़ पर या रेफ्रिजरेटर में इसे जमने दीजिए.
"और पुडिंग तैयार... छह मज़ेदार स्वादों में से चुनिए!

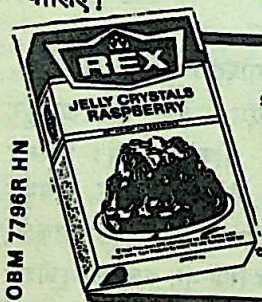

फल के साथ जेली

१. पैक पर दिए गए निर्देशों के अनुसार रेक्स जेली का एक पैकेट घोलिए.
२. बर्फ़ पर या फ्रिज में जमाइए.
३. जब जेली गाढ़ी और चिपचिपी होजाय लेकिन जमी न हो, तो ताज़े अन्नानास को छोड़कर कोई भी १½ कप फल इसमें डालिए और मिलाइए.
४. फ़ौरन जमाइए.

कॉर्न प्रॉडक्ट्स कंपनी (इंडिया) लिमिटेड

OBM 7796R HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अश्रित प्रवाह

इस वर्ष देश में असाधारण वर्षा हुई और फलस्वरूप लगभग सारा उत्तरी भारत भंयकर बाढ़ का शिकार हुआ. कहा जा रहा है कि हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार व बंगाल में बाढ़ ने पिछले सभी रिकार्ड तोड़ दिए. एक समय तो यह सारा का सारा प्रदेश एक सरोवर सा बन गया था, जिस में यहांवहां केवल मकानों व पेड़ों के ऊपरी भाग तैरते हुए दिखाई देते थे.

बंगाल में कोयले की खानों व इसपात व बिजली के कारखानों में पानी घुस गया, जिस से कोयला, इसपात और बिजली के उत्पादन और उपलब्धि पर बहुत बुरा असर पड़ेगा. अरबों रुपए की फसल और माल, सामान नष्ट हो गया, रेल, डाक व तार व्यवस्था लड़खड़ा गई.

ऐसे संकट के समय दीपावली बहुत उल्लास का मौका तो नहीं रहा, पर फिर भी यह त्योहार इस बात की प्रेरणा तो देता ही है कि जो हानि हो गई, वह तो हो गई, अब नए वर्ष के लिए उठ कर फिर संघर्ष करो, फिर फसलें और सामान पैदा करो. फिर समृद्धि के लिए प्रयत्न करो.

दीपावली का समय इसी लिए जानबूझ कर सोचसमझ कर बाढ़ों और सूखों के बाद रखा गया है कि मनुष्य बीती को बिसार दे और सुहवाने मौसम से प्रेरणा ले कर मेहनत में जुट जाए.

यद्यपि दीपावली पर लक्ष्मी की पूजा की जाती है, पर लक्ष्मी पूजा से किसी को प्राप्त नहीं होती. धन और समृद्धि न पूजा से आती है न जुए या लाटरी से. उस के लिए तो खून पसीना एक करना पड़ता है.

हमारी अपने पाठकों के लिए कठोर परिश्रम और सुखद समृद्धि के लिए शुभकामनाएं.

✦

अक्तूबर के पहले सप्ताह में अलीगढ़ में सांप्रदायिक झगड़ा हो गया, जिस में जानमाल का काफी नुकसान हुआ. झगड़े की शुरुआत एक मामूली कुश्ती से हुई और फिर मारकाट और आगजनी सारे शहर में फैल गई.

अभी पिछले दिनों हैदराबाद में भी भीषण हिंदूमुस्लिम दंगा हो चुका है, और फिर थोड़े दिन बाद कानपुर में निरंकारी और अकाली सिख दंगा हुआ. अगले महीने मुहर्रम के मौके पर लखनऊ में शियासुन्नी वारदातें हो जाएं तो कोई आश्चय नहीं होना चाहिए.

इन दंगों का प्रारंभ, इन का आठदस

सरिता के पाठकों को दीवाली की शुभकामनाएं!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन तक चलना, कर्फ्यू, गोली चलना, कुछ लोगों की धरपकड़, मंत्रियों का स्थिति के मुआइने के लिए दौरा और प्रधान मंत्री का रोबदाबपूर्ण बयान कि दोषी कर्मचारियों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाएगी और अंत में न्यायिक जांच बैठाना—यह सब अब एक रूढ़ि बन गया है. सिनेमा में जिस प्रकार फिल्म प्रारंभ होती है, नाम निर्देशिका आती है, नायक-नायिका मिलते हैं, खलनायक बीच में आ कूदता है और अंत में सब समाप्त हो कर खाली परदा रह जाता है, उसी प्रकार ये दंगे भी प्रारंभ होते हैं और फिर उन का अंत हो जाता है. पर फिल्म की तरह ये भी अपना प्रभाव छोड़े बिना नहीं रहते.

इन झगड़ों को समाप्त करने के लिए जितने प्रयत्न किए जाते हैं, उतने ही ये झगड़े बढ़ते जाते हैं. पहले कहा जाता था कि इन्हें अंगरेज कराते हैं, अपना राज्य कायम रखने के लिए. फिर कांग्रेस पर इन का उत्तरदायित्व रखा गया—वह सत्ता में बने रहना चाहती है और इसी लिए मुसलमान वोटों को अपने पक्ष में रखने के लिए दंगे कराती है—यह जतलाने के लिए कि अल्पसंख्यकों की रक्षक केवल वही हो सकती है. पर अब तो जनता पार्टी का राज है. फिर ये दंगे क्यों ?

जैसा पहले भी इन पंक्तियों में कहा जा चुका है, ये दंगे पुलिस काररवाई से नहीं दबाए जा सकते. इन दंगों का मूल कारण धर्म या मजहब है, जो एक समुदाय को दूसरे समुदाय से घृणा करना सिखाता है. हिंदू धर्म के धंधेबाज कहते हैं कि मुसलमान म्लेच्छ हैं, इन्होंने हमारी पवित्र भूमि पर कब्जा कर रखा है. मुसिलम धर्म के धंधेबाज कहते हैं कि हिंदू काफिर हैं. इन को मुसलमान बना कर सही रास्ता दिखाना हर सच्चे मुसलमान का कर्त्तव्य है. आज तक किसी धर्म के धंधेबाज को यह कहते नहीं सुना गया कि दूसरा धर्म भी उतना ही अच्छा है जितना कि स्वयं उस का. सब अपने धर्म या मजहब को ही सच्चा सही रास्ता बताते हैं. उन की राय में केवल उन का ही धर्म है जो व्यक्ति को स्वर्ग, बहिश्त, हेवन ले जाएगा. बाकी सब तो नरक, दोजख या हेल ले जाने वाले हैं.

जब तक धर्म के धंधेबाज जनसाधारण के दिलदिमाग पर छाए रहेंगे, सांप्रदायिक झगड़े कभी नहीं मिट सकते, चाहे आप हर व्यक्ति के पीछे एक पुलिस या फौज का सिपाही लगा दें. कारण ? क्योंकि स्वयं उस फौज या पुलिस के सिपाही का दिमाग भी इन धंधेबाजों के प्रचार द्वारा रंग दिया गया होगा!

✦

भारत सरकार इस वर्ष सौ करोड़ रुपए से अधिक की लागत से दिल्ली में अपने कर्मचारियों के लिए फ्लैट बना रही है.

इस का क्या औचित्य है?

सरकारी कर्मचारियों को बाजार भाव से अधिक वेतन मिलता है, अधिक सुविधाएं मिलती हैं. उन का रोबदाब होता है, काम वे आधे से कम करते हैं, छुट्टियां (सिवा कालिजों के आध्यापकों के) वे सब से अधिक उड़ाते हैं. वास्तविकता तो यह है कि हर एक सरकारी नौकरी के लिए सरकार को आधी कीमत पर नौकरों के हजारों इच्छुक मिल सकते हैं.

सरकारी मकान सरकारी जमीन पर बनाए जाते हैं, जो किसानों व अन्य नागरिकों से जबरदस्ती, मनमानी कर के कम कीमत पर छीन ली जाती है. सरकार को कर्ज भी बाजार भाव से आधी कीमत पर मिल जाता है—सरकार बकों व अनेक निधियों को मजबूर करती है कि वे सरकारी कर्ज में रुपया लगाएं चाहे ब्याज आधा ही हो. सरकार को इमारती सामान भी लागत पर मिलता है—कट्टौतों के कारण. इस प्रकार बाजार की लागत से कहीं कम कीमत पर ये मकान बनाए जाते हैं, और फिर भी इन पर जो लागत आती है, उस पर जो ब्याज, बटटा और छीजत होती है उस के भी आधे चौथाई पर सरकारी कर्मचारियों को ये मकान दिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाते हैं.

आखिर देश में करोड़ों अन्य नागरिक भी हैं जिन्हें सिर छिपाने के लिए फूस की झोंपड़ी भी उपलब्ध नहीं है. पीने का पानी नहीं है. दो वक्त की रोटी नहीं है. फिर वह रुपया उन के लिए न खर्च कर के इन सरकारी कर्मचारियों को अतिरिक्त सुविधाएं देने के लिए क्यों खर्च किया जाता है?

यदि इन कर्मचारियों को सुविधाएं देनी ही हैं तो सीधे दीजिए—वेतन के रूप में, अनेक तरीकों से छिपा कर, गोलमोल तरीके से नहीं. सरकारी कर्मचारी, जिसे 500 रुपए और सरकारी मकान मिलता है उस की वास्तविक आमदनी 1000 से अधिक होती है—500 रुपए के किराए के मकान का किराया उस से केवल 50 रुपए लिया जाता है.

सरकार को यदि मकान बना कर देने हैं तो वह सभी को बारी से दे—चाहे कोई सरकारी नौकर हो या गैर सरकारी. सरकार का रुपया सरकारी कर्मचारियों द्वारा नहीं पैदा किया जाता—वह तो गरीब जनता से बंदूक के बल पर टैक्स के रूप में वसूल किया होता है. उस पर पहला अधिकार गरीब, भूखी, नंगी जनता का है.

✦

बैंकों के सरकारीकरण से पहले ब्याज की साधारण दर छः प्रतिशत वार्षिक थी. बैंक चार या पांच प्रतिशत पर रुपया जमा करते थे और आठ या नौ प्रतिशत पर उधार देते थे. बाजार में व्यापारियों के ब्याज की दर नौ से बारह प्रतिशत थी. बारह प्रतिशत से अधिक का ब्याज साहूकारी न हो कर सूदखोरी कहा जाता था.

परंतु बैंकों पर सरकारी कब्जा होते ही वहां कामकाज में ढील शुरू हो गई. राजनीतिबाजों के इशारे पर इधरउधर अनापशनाप कर्ज दिए जाने लगे. कर्मचारियों को काम करने के लिए कोई डर नहीं रह गया—उन की नौकरी पक्की और आय बढ़वाने के लिए हड़ताल, प्रदर्शन की खुली छूट. इस प्रकार बैंकों के खर्च बढ़ गए तो आमदनी बढ़ानी आवश्यक हो गई.

बैंकों ने अपने कर्ज देने की दर बढ़ा दी जो बढ़तेबढ़ते 20-22 प्रतिशत प्रति वर्ष पहुंच गई. रिजर्व बैंक और सरकारी अर्थशास्त्रियों ने इस दर वृद्धि के लिए बहाने ढूंढ़े और कहा कि मूल्यवृद्धि रोकने के लिए ब्याज की दर बढ़ाना आवश्यक है ताकि सटोरिए, मुनाफाखोर व जमाखोर सस्ते रुपए से अधिक मुनाफाखोरी या जमाखोरी न कर सकें.

परंतु जमाखोरी, मुनाफाखोरी बराबर बढ़ती रही. इस ब्याज दर में अप्रत्याशित बढ़ोतरी से जहां फायदा कुछ नहीं हुआ वहां हानि अवश्य हुई—कर्ज लिए हुए रुपए का मूल्य बढ़ जाने के कारण उत्पादन व्यय बढ़ गया और कीमतें और अधिक बढ़ गईं, क्योंकि उत्पादन लागत से कम कोई भी वस्तु अधिक समय तक नहीं बेच सकता.

सरकार ने इस बढ़ी हुई ब्याज दर को कुछ कर्जदारों के लिए कम भी रखा जैसे किसान इत्यादि. पर वहां कर्ज दिलाने वाले बिचौलिए व अधिकारी अपना हक वसूल करने लगे, जिस से किसान को कोई विशेष राहत नहीं मिली.

पिछले महीने नई दिल्ली में हुई बैंक अधिकारियों की एक सभा में प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई ने बैंकों को इतनी ऊंची ब्याज दरें रखने के लिए बहुत लताड़ा—इतनी ऊंची ब्याज दर पर कौन साधारण उद्योगपति उद्योग लगा कर चला सकता है?

पर बैंक अधिकारी भी क्या करें? सरकार की श्रम नीतियों के कारण कर्मचारी पूरा काम नहीं करते, उन को वेतन व सुविधाएं जनसाधारण से बहुत अधिक देनी पड़ती हैं. किसान व पिछड़े वर्गों को बिना जमानत धरोहर के नाममात्र ब्याज पर कर्ज देना पड़ता है. इस कर्ज में से लगभग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आधा डूब जाता है. आखिर यह घाटा कहां से पूरा होगा—सिवा ब्याज और सेवाओं की कीमतें बढ़ा कर ही तो.

✦

समाचार है कि दक्षिण अमरीका के चिली देश ने भारत से 100 पुराने हंटर लड़ाकू हवाई जहाज खरीदने की इच्छा प्रकट की है. भारत ये विमान अब रद्दी कर रहा है और ब्रिटेन से 'जेगुआर' नामक अधिक शक्तिशाली और दूरगामी लड़ाकू बमवर्षक जहाज खरीदने की बात कर रहा है. हंटर की लागत तीन करोड़ रुपए है, और 'जेगुआर' हवाई जहाज की छः करोड़. भारत ने 1957 से 1961 तक 82 हंटर खरीदे थे.

चिली ये पुराने जहाज भारत से क्यों खरीद रहा है? क्या ब्रिटेन व अमरीका की इस में कोई चाल है? चिली की सरकार फौजी तानाशाही है और नागरिक स्वतंत्रता को कुचलने के लिए कुख्यात है. क्या ब्रिटेन व अमरीका बजाए स्वयं उसे शस्त्र देने के भारत से दिलवा रहे हैं ताकि वे अंतर्राष्ट्रीय बदनामी से बच सकें?

✦

जनसाधारण तो सरकार के विरुद्ध उच्च न्यायालयों में याचिकाएं (रिट पेटीशन) ले कर जाते ही हैं, पांडिचेरी में अगस्त में मुख्य मंत्री रामास्वामी अपने उप राज्यपाल श्री कुलकर्णी के विरुद्ध याचिका ले कर मद्रास हाई कोर्ट पहुंचे. कारण : उप राज्यपाल विधान सभा का सत्र 26 सितंबर से प्रारंभ करना चाहते थे, जब कि मुख्य मंत्री 5 अक्तूबर से.

संविधान में याचिकाओं का प्रावधान नागरिक को सरकार के शिकंजे से राहत दिलाने के लिए है, न कि सरकार के दो अंगों को एकदूसरे का सिर धुनने के लिए. गरीब जनता का खूनपसीने से सना टैक्स का रुपया इस प्रकार के खिलवाड़ में नष्ट करने के लिए नहीं है.

भारत की अनेक बड़ी नदियों का अधिकांश पानी मानव को बिना कुछ दिए ही समुद्र में जा गिरता है. इस पानी से बिजली उत्पन्न की जा सकती है और खेती के लिए सिंचाई की जा सकती है. पर क्योंकि ये नदियां कई राज्यों में से हो कर बहती हैं, हर राज्य इन का सारा पानी केवल अपने ही क्षेत्र में इकट्ठा कर के इस्तेमाल करना चाहता है, मानो दूसरे राज्यों की जनता उस के लिए जैसे विदेशी हो.

अभी पिछले दिनों नर्मदा नदी पर पंच फैसला प्रकाशित हुआ था. यह पंचाट इसलिए करना पड़ा था क्योंकि मध्यप्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र तीनों ही नर्मदा के पानी पर अपना अधिकार जता रहे थे और पिछले दसियों वर्षों से आपस में कोई समझौता नहीं होने दे रहे थे.

अब जब नर्मदा पंचाधिकरण ने अपना फैसला सुना दिया तो हर राज्य में राजनीतिबाज अपना महत्त्व जताने के लिए और अगले चुनाव में वोट प्राप्त करने के लिए इस पंचाट का विरोध कर रहे हैं, जनता को उभार रहे हैं.

इन राज्यों के निवासियों को इन राजनीतिबाजों के हथकंडों से सावधान रहना चाहिए. क्या नर्मदा पर बांध व बिजलीघर कतई न बनने देना बेहतर है बजाए थोड़ा पानी बिजली कम मिलने के?

इसी प्रकार दक्षिण की कावेरी नदी का विवाद है. यहां तीन राज्य आपस में सिर फोड़ रहे हैं—तमिलनाडु, कर्नाटक केरल.

इन राज्यों के मुख्य मंत्रियों का एक सम्मेलन पिछले महीने हुआ और बिना किसी समझौते के समाप्त हो गया.

केंद्र सरकार को चाहिए कि वह इन तीनों राज्यों को चेतावनी दे कि या तो छः महीनों में कोई फैसला कर लो अन्यथा इस का भी पंचाट कराया जाएगा जो सभी को मानना पड़ेगा. इस प्रकार के विवादों को वर्षों तक लटकने नहीं देना चाहिए.●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • संन्नी अशेष

दीवाली कैसे मनाएं?

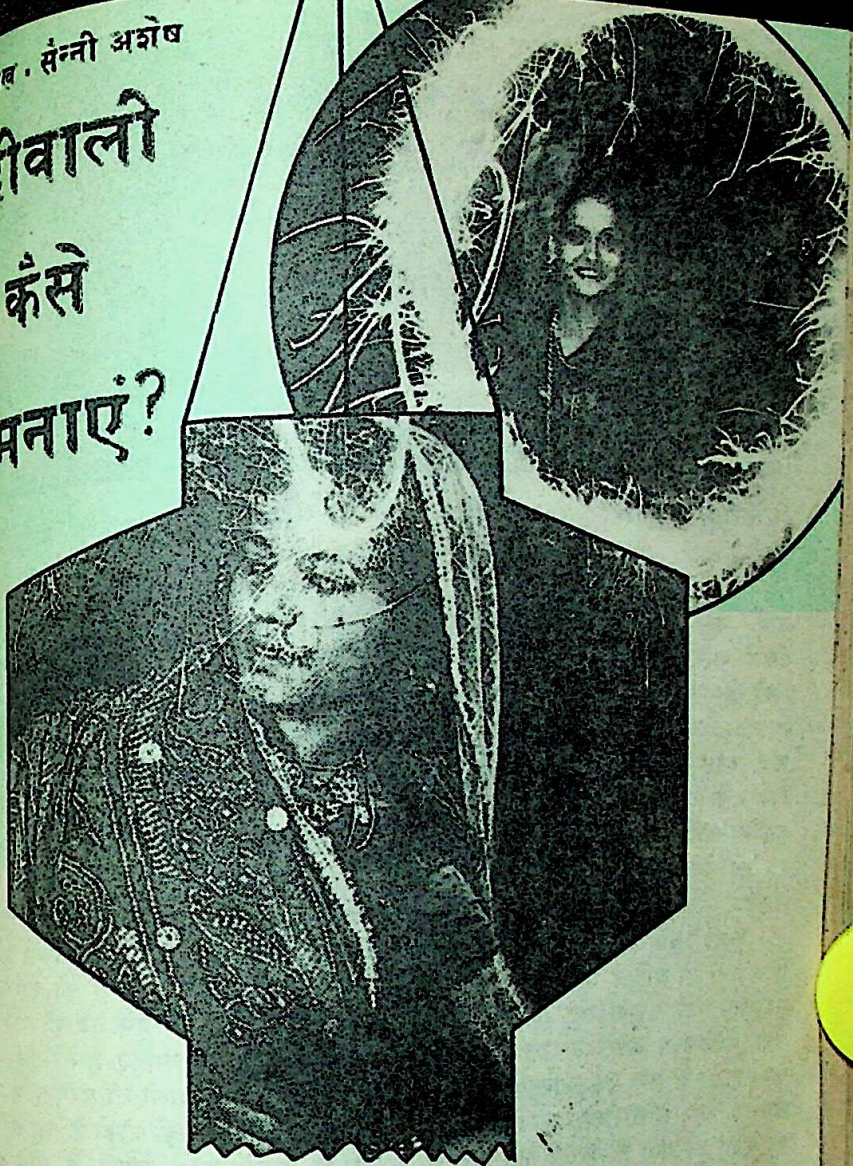

दीवाली कब तक उसी परंपरागत रूप से मनाई जाती रहेगी जिस में बच्चे आतिशबाजी चला कर खुश होते रहेंगे और बड़े जुए और शराब में डूबे रहेंगे?

मानव स्वभावतः अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ता है. मानव की इसी प्रवृत्ति ने 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का गंभीर घोष किया. दीपावली को आधुनिक और स्वस्थ संदर्भ में मानव के इसी स्वभाव का प्रतीक कहा जा कता है. पर प्रश्न यह है कि इस हर्षोल्लासमयी दीवाली को कैसे मनाया जाए.

सर्वप्रथम, जहां तक हो सके हम दीपावली को इतना महंगा त्योहार न बनने दें कि सतरंगे प्रकाश में भी हम लेनदेन और उधार की समस्याओं के कारण उदास हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

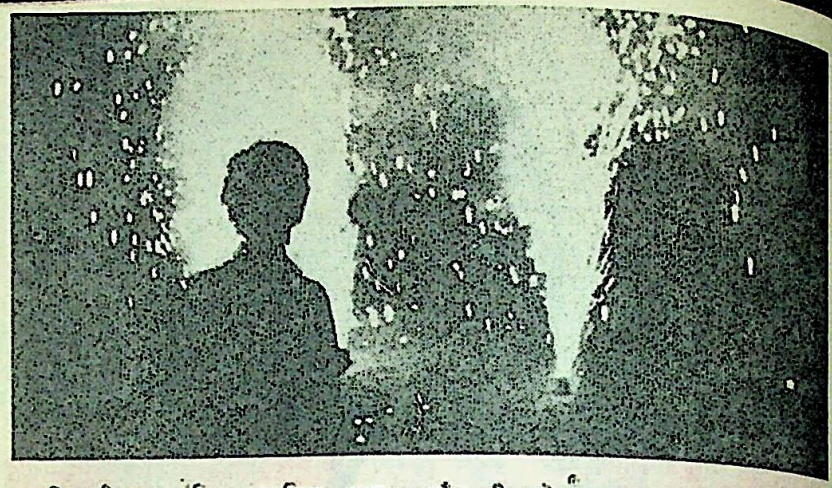

दीवाली पर हंसिए, नाचिए, गाइए, और जी खोल कर फुलझड़ियां छोड़िए पर आडंबर बिलकुल न कीजिए.

जाएं. जहां चिंता और उदासी है, वहां पर्व कैसा? और याद रखिए, पर्व में व्यस्तता होती है—चहलपहल और उमंग भरी व्यस्तता. तो फिर क्यों न घर सजाने में हाथ बटाएं? क्यों न मिठाई बनाने में बाजार के हलवाई को मात कर जाएं? सब कुछ तो आप कर नहीं सकते, पर कुछ तो कर ही लेंगे. तो फिर अभी से कमर कस लीजिए.

कहते हैं दीवाली के मौके पर कई गिले-शिकवे दूर हो जाते हैं. लेकिन कहने भर से तो होगा नहीं. इस के लिए विशाल हृदय, नया दृष्टिकोण और उन्मुक्त मुसकान चाहिए. कुछ पल उन व्यक्तियों के नाम सोचिए, जिन से छोटीछोटी बातों पर आप का नाता टूट गया है. क्या वे लोग सचमुच बुरे हैं? बुरे हैं भी तो कितने? आप से जरा ज्यादा ही होंगे. या फिर आप जैसे अच्छे, बल्कि ज्यादा अच्छे भी हो सकते हैं.

जरा ठहर कर सोचिए. तो क्यों न एक कदम आप ही की तरफ से उठे उन की तरफ? विश्वास के साथ एक बार बोलिए. दीवाली की सुखद परंपरा अवश्य उन्हें आप के निकट ले जाएगी. हंस कर बोलने में किसी का आज तक कुछ नहीं गया. प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष में मिला ही मिला है. उस पर दीवाली के मौके पर अपनी नई-नवेली उमंग किसी को अजीब लगेगी भी नहीं. यह पर्व है ही ऐसा. अंधेरे में एक दम से सौसौ दीए जला देता है. ईर्ष्याद्वेष की दीवारें इन्हीं दीपकों से ढही हैं. ये दीए स्नेह और सद्भाव की मुंडेरों पर जगमगाते हैं.

दीवाली पर हंसिए, नाचिए, गाइए और खुल कर फुलझड़ियां छोड़िए, पर आडंबर बिलकुल न कीजिए. हम समाज में रहते हैं. कौन जाने हमारे किस हाव-भाव से किसी भले आदमी को ठेस लग जाए. जितना बन पड़े हमें सब को साथ ले कर खुशियां मनानी चाहिए. हमारे एक मित्र ने पिछले वर्ष से दीवाली की परंपरा में एक नई और शानदार कड़ी जोड़ी है. वह महल्ले भर के बच्चों को दीवाली के मौके पर बालोपयोगी पुस्तकें भेंट करते हैं. प्रकाश पर्व के महत्त्व को आंकने का कितना अनूठा तरीका है. यह. साहित्य ही तो युगों को नई राह देता है. पर्वों तक से जुड़ जाने वाले अनेक दुर्व्यसन आज समाज में मौजूद हैं. इसलिए कि समाज तक बालोपयोगी साहित्य न के बराबर पहुंचता है. यह बात हम इसलिए कह रहे हैं क्योंकि बाल्यकाल ही संस्कारों की छाप के लिए मुख्य अवस्था होती है. यहीं से प्रकाशमान दिशाएं निर्धारित हो सकती हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीप जल गए

मीठी मुसकानों के फूल खिल गए,
घर आंगन द्वारद्वार दीप जल गए.

वक्त ने बिखेरे थे ढेर से अंधेरे,
दीप के उजालों में मीत मिल गए.

छायी थी मन के हर छोर पर उदासियां,
मदमाए मौसम में होंठ हिल गए.

आंधियां बवंडर उठाए अफवाहों ने,
मिलने पर तुम से सब भ्रम विफल गए.

प्रश्न जो बटोरते थे अनुत्तरित चिट्ठियां,
उलझी पहेलियों के हल निकल गए.

कजरारे नयनों की झील सी गहराइयां,
वादों ही वादों में हम बहल गए.

गदराए तन की नशीली अंगड़ाइयां,
डूबने से पहले ही हम संभल गए.

अपनों ने अपनों को बांटा विश्वास यों,
पल भर में ही संबोधन बदल गए.

—अर्जुन 'अरविंद'

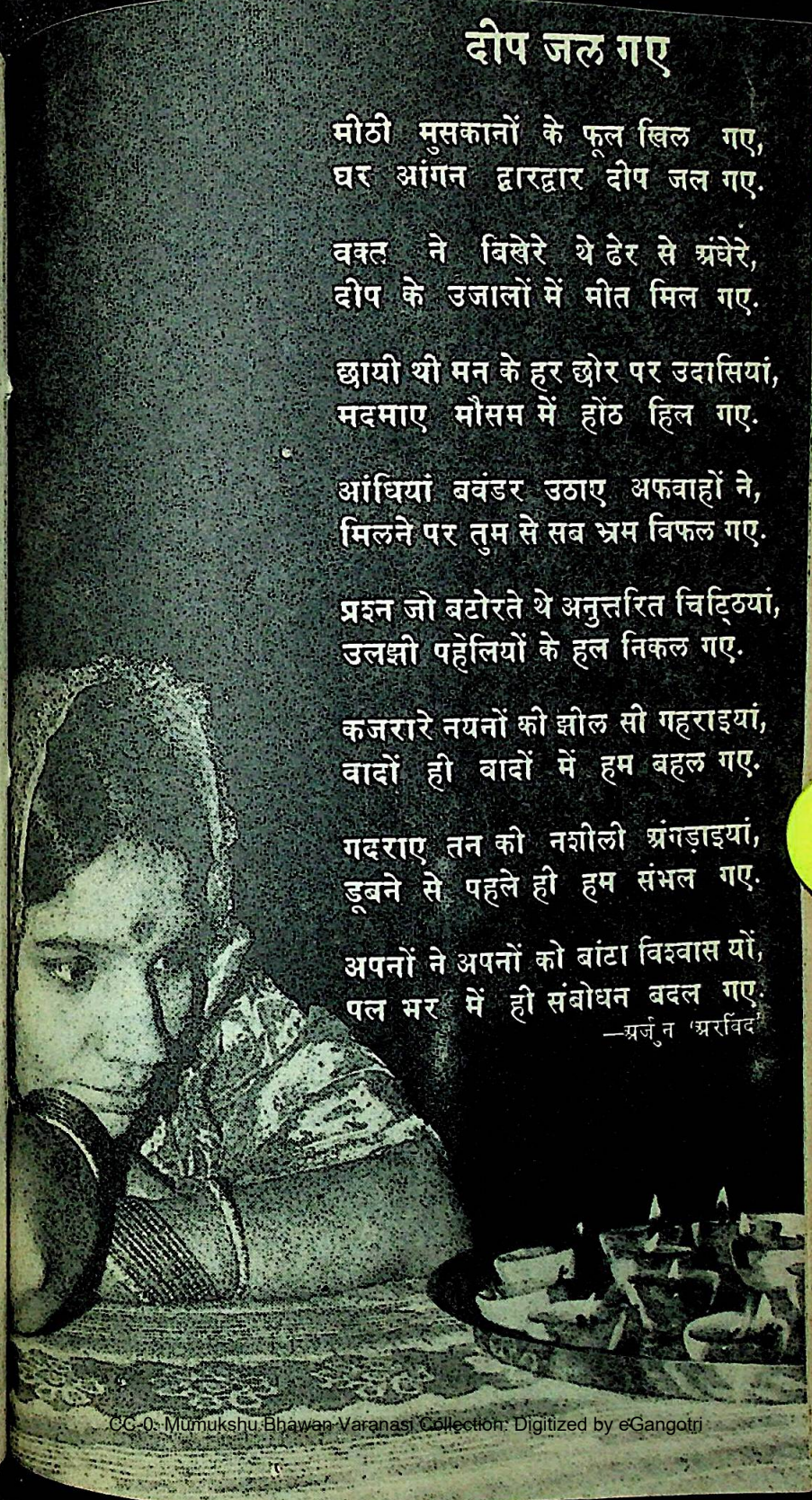

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तले दीपावली

कहानी • आशा अय्यर

पद्मा लड़ियों के छूटने की आवाज सुन कर हड़बड़ा कर उठ बैठी. आंखें मलतेमलते उस ने पास के पलंग पर नजर डाली. उस के पति गायब थे. "हाय राम!" क्रोध व भय से उस की भौंहें तन गईं.

उस के लाख मना करने पर भी उस के भानजों, भतीजों ने उस की बात नहीं मानी थी. रात को वह अपनी मां से यह कह कर सोई थी कि "मां, हमारा रिवाज है, तो ठीक है. पर मुंहअंधेरे पटाखे फोड़ कर उन की नींद मत खराब करना. उन्हें ऐसी बातों की आदत नहीं है."

मां ने कहा था, "यह कोई आदत होती है क्या? दीपावली साल में एक बार आती है और तले दीपावली जीवन में एक बार."

राजाराम पूरे तौरतरीके और शौक के साथ दीपावली मनाना चाहता था पर न जाने क्यों पद्मा अपने पति की पहली दीपावली का मजा किरकिरा करने पर तुली हुई थी...

(तले दीपावली दक्षिण भारतीय नवविवाहित दंपती की विवाह के बाद की पहली दीपावली होती है, जो वधू के मायके में मनाई जाती है.)

"मां, अब तुम यह सब तर्क मत दो."

मां ने हलके से मुसकरा कर पूछा, "और जो अपने पड़ोसी सुबह सवेरे पटाखे फोड़ेंगे, उन्हें कौन मना करेगा?"

पद्मा को गुस्सा आ गया, "मां, तुम जानती हो कि मैं क्या कहना चाहती हूं, फिर भी बहस कर रही हो. हम दूसरों को मना नहीं कर सकते, पर जो कुछ अपने हाथ में है उसे तो कर सकते हैं."

मां फिर हंसीं, "वह तो हम करेंगे."

पिताजी सुन रहे थे. वह भी हंस पड़े. पद्मा ने गुस्से से पैर पटकते हुए कहा, "नहीं, मां, नहीं."

उस का गुस्सा देख कर पिताजी ने हंसी रोक कर कहा, "पद्मा, तू चिंता मत कर. दामाद को कोई असुविधा न हो, इस की फिक्र हमें भी उतनी ही है, जितनी तुम्हें."

पिता की बात पर पद्मा को पूरा विश्वास था. अतः वह आश्वस्त हो गई थी. पर सुबह पटाखों के धमाकों ने उस को फिर बेचैन कर दिया.

पद्मा के पति राजाराम का जन्म व पालनपोषण यूरोप के भिन्नभिन्न देशों में हुआ था. इसी वर्ष यानी 28 वर्ष की उम्र में वह भारत आया था.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजाराम के पिता की मृत्यु पिछले वर्ष एक दुर्घटना में हो गई थी. उस के बाद अपनी मां की इच्छानुसार राजाराम ने भारत में नौकरी के लिए आवेदन भेजे और एक जगह उसे नौकरी मिल गई. भारत पहुंचते ही उस के लिए विवाह का विज्ञापन निकला, जिस में लिखा था—

"शिक्षित, सुयोग्य एवं उदार विचारों वाली ब्राह्मण कन्या चाहिए, जो पाश्चात्य वातावरण में पले युवक के स्वभाव के अनुकूल स्वयं को ढाल सके."

पद्मा में वे सभी गुण थे. वह सुंदर भी थी. उस के प्रगतिशील विचार मायके में स्थान नहीं पा रहे थे. राजाराम से विवाह के पश्चात मिले अवसर का पद्मा ने खूब फायदा उठाया. मायके से उठने वाले विरोधों के लिए पति कवच का काम देने लगा. जो भी बात उसे पसंद न होती, वह बस, यह कह देती, "उन्हें पसंद नहीं है." मायके वाले झट अपने प्रयास रोक देते.

तभी दीपावली की प्रथा और माता-पिता से आया प्रेमभरा निमंत्रण पद्मा और राजाराम को पद्मा के मायके में खींच लाए थे. जो भाईबहन के समय शादी में न आ सके थे वे सब अपने परिवारों के साथ इस मौके पर आ गए थे. पद्मा नौ भाईबहनों में सब से छोटी थी, इसलिए सभी की लाड़ली थी. पद्मा सब को देख कर धक से रह गई. "मां, यह तुम ने क्या किया? अब जो हुड़दंग मचेगा, उस में यह परेशान हो जाएंगे."

मां ने यही कहा, "तुम चिंता मत करो."

बस, पद्मा बिदक गई. वह जानती थी कि सब भाइयों की लाड़ली बहन होने के

"मां, हम दूसरों को मना नहीं कर सकते, पर जो कुछ अपने हाथ में है उसे तो कर सकते हैं," पद्मा ने गुस्से से पैर पटकते हुए कहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण उस को पति भी सब के लिए लाड़ला होगा और उसे सब खास तरीके से तंग भी करेंगे. वह बोली, "मां, तुम सब समझते हुए भी ऐसा कह रही हो? वह मेरे व्यवहार से बड़े खुश रहते हैं. कहते हैं कि मेरे मातापिता भी अच्छे प्रगतिशील विचारों के होंगे, पर अब तुम लोग उन के सारे अच्छे विचार मिट्टी में मिला दोगे."

मां उसे देखती रह गई थी. यह सब उन की पद्दू बोल रही है, इस पर उन्हें विश्वास ही नहीं हो पा रहा था. इस के बाद पद्मा ने अपने भाईबहनों के बच्चों को भी इकट्ठा कर सब को धमकी दे डाली थी, "अगर जीजाजी से किसी ने कोई शरारत की तो फिर उस की खैर नहीं."

सब जानते थे कि पद्मा उन लोगों को कड़ी से कड़ी सजा दे सकती है. मनपसंद मिठाई या खिलौनों से छोटे बच्चों को वंचित रखना पदमा के लिए छोटी सी बात थी. बच्चों ने समवेत स्वर में कहा, "हम कुछ नहीं करेंगे."

और इस के बावजूद लड़ियों की धमक से राजाराम की नींद खुल गई थी और वह उठ कर नीचे चला गया था. वह घबराती हुई कमरे से बाहर निकल रही थी कि किसी से टकरा गई.

"दीदी...दीदी, जल्दी चलो. मां तुम्हें आंगन में बुला रही हैं," रंजन ने कहा रंजन मौसी को दीदी कहता था. डरते-डरते वह आंगन में गई. अभी अंधेरा था, इसी लिए बत्ती जल रही थी. रिश्तेदारों के जमघट के बीच रखे दो पटरों में से एक पर राजाराम बैठा हुआ था. पद्मा को देखते ही उस की मां ने उसे पकड़ कर उस की चोटी खोलनी शुरू कर दी. बोलीं, "तुम्हें पहले उठना चाहिए, सब के बाद उठती हो. तुम से तो दामाद ही अच्छे हैं. सब से पहले उतर कर नीचे आ गए."

पद्मा क्रोध से भरी कहने वाली थी कि "और नहीं तो क्या, पटाखों के शोर में वह सो सकते थे?" पर बोली नहीं, दादी और दादा पास बैठे में खड़े थे. वह चुपचाप पति के बगल में बैठ गई.

दादी ने घर की सब से बूढ़ी महिला होने के नाते एक कटोरे में अदरक, काली मिर्च डाल कर गरम किए तेल को चुल्लू में भर कर उसे पोती और उस के पति के सिर पर थोड़ाथोड़ा रख कर उन्हें आशीर्वाद दिया. राजाराम बोला, "मुझे तो शैंपू से बाल धोने की आदत है."

पद्मा ने यह सुन कर अपनी मां की ऐसे घूरा मानो कह रही हो, "देखा. और तुम हो कि इन पर तेल थोपे जा रही हो."

तभी राजाराम ने कहा, "मेरी बात का मतलब आप नहीं समझीं क्या, दादीजी? मैं ने कहा, मुझे तेल मालिश करने की आदत नहीं है. जरा आप ही अपने हाथों से मालिश कर दीजिए."

"तुम अभी कह रही थीं न कि मैं गुस्से में हूं. मैं किसी और से नहीं, बल्कि तुम से नाराज हूं." राजाराम गुस्से से बोले.

दादी मस्त जीव थीं. उन्होंने ऐसे जोश से दामाद के सिर की मालिश की कि बस. सब ताली बजा कर मजा लेने लगे. पद्मा ने पति के भाव को समझ लिया. बेचारे मजाक में चिढ़ को छिपाना चाह रहे हैं. उस ने सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि पति पर डाली और पति की आंखों में क्रोध का भाव देख वह सहम गई. अभी तो दिन शुरू भी नहीं हुआ था.

हंसीमजाक के बीच उस के पति ने स्नान किया. दादी ने दोनों को नए रेशमी वस्त्र ला कर दिए. फिर जब तक एकएक कर सब ने तेल स्नान किया, तब तक सूर्योदय हो चुका था. एक साथ सब नाश्ता करने बैठे. राजाराम के पास बैठने के लिए बच्चों में झगड़ा हो गया था. राजाराम ने कहा, "मैं और पद्मा बीच में बैठते हैं, बच्चे चारों ओर बैठ जाएं."

पद्मा को लगा पति का स्वर व्यंग्यपूर्ण है. उस ने दादी से प्यार से, रोष से, सभी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरीकों से कहा था, "दादी, इस बार परंपरा से हट कर कुछ पकवान बनाना. हरदम वही चीजें खातेखाते मैं ऊब गई हूं."

दादी ने तुरंत जवाब दिया. "हम तुम्हारे लिए कुछ नहीं बना रहे हैं, हम तो राजाराम के लिए बना रहे हैं."

पद्मा अपनी गलती पर झुंझला कर बोली, "नहीं, दादी, मैं उन्हीं के लिए कह रही हूं. वह कह रहे थे कि तुम्हारे घर के नमकीन पकवान खातेखाते मुंह भले ही दुखने लगे, पर पेट नहीं भरता है. हां, इडली खाने का तो आजकल फैशन है, मैसूरपाक, नमकीन चकरी और बाकी पकवानों को छोड़ कर तुम दोतीन तरह के केक और पेस्ट्री वगैरा मंगा लेना."

मां ने कहा, "पर, बेटी, दामाद हैं तो दक्षिण भारतीय ही. इतने बरस तो केक ही खाते रहे हैं वह. अब तो उन्हें पता चलना चाहिए कि हमारे यहां कौन सा त्योहार कैसा होता है, किस त्योहार के लिए क्या पकवान होते हैं. ये सबह मीं तो इन्हें बता सकते हैं."

दादी बोलीं, "मैं पंद्रह दिन पहले से क्या इसी लिए लगी हूं पकवान बनाने में कि सब मेहनत बेकार जाए?"

पद्मा ने जब मां और दादी का विरोध देखा तो उस ने खुद दुकान से नईनई तरह के पकवान, विभिन्न प्रकार के केक मंगवा कर रख लिए. पर दादी ने जब पकवान देने शुरू किए तो परंपरागत पकवान ही पहले दिए. केक को वह 'क्रिस्तानों का भोजन' कह हाथ तक नहीं लगाती थीं. मां ने ही केक उठाया. जब वह दामाद को केक देने लगीं तो राजाराम बोला," यह सब तो मैं विदेशों में खाता ही रहा हूं, बच्चों को दीजिए यह सब! मैं तो दादी के हाथ के बने पकवान खाऊंगा."

पद्मा हक्काबक्का रह गई. उस ने पति की ओर देखा और फिर मां से बोली, "मां, यह नाराजगी के कारण ही ऐसा कह रहे हैं. तुम दो इन्हें."

पर पति ने जिस दृष्टि से उसे देखा उस से वह घबरा गई. फिर भी उस ने सोचा, मां और दादी का मन रखने के लिए वह यह सब पकवान खा रहे हैं, बाद में गुस्सा शाम पर उतारेंगे. राजाराम इतनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अधिक मात्रा में खा रहा था कि पद्मा चिढ़ गई. बोली, "मन नहीं है तो ठूंसठूंस कर खाने की क्या जरूरत है?"

दिन भर कैसे बीता, अब पद्मा को याद नहीं. मिलने वाले आते रहे. सभी बड़ेबूढ़ों को दंडवत प्रणाम करतेकरते पद्मा तो थकी ही, वह यह सोचसोच कर अधिक चिंतित थी राजाराम जाने क्या कहेगा. सब के जाने पर राजाराम अंदर आए. पिताजी ने पूछा—"कहिए दामादजी आप का दीपावली का पहला अनुभव कैसा रहा? ससुराल में रहने का मजा तो किरकिरा नहीं हो गया. पटाखों की आवाज से या अतिथियों के आने से."

राजाराम ने पत्नी की ओर देखते हुए कहा, "नहीं, पर लगता है कि एक व्यक्ति मजा किरकिरा करने में लगा हुआ है."

पद्मा समझ गई कि राजाराम का इशारा दादी की ओर है. क्योंकि राजाराम आगे बोला, "मुश्किल यह है कि मैं उस का नाम नहीं बता सकता."

पद्मा ने ठान लिया कि अब चाहे जो कुछ हो वह दादी को पति की तरफ पटकने भी नहीं देगी. उन के हाथों में एक तरफ भी फुलझड़ी या चकरी नहीं देने देगी.

वह दादी से कुछ कहती, इस से पहले ही नए मौसाजी से पटाखों की मांग करती हुई बच्चों की टोली आ गई.

"मौसाजी, हम तो आप कम से कम दस रुपए के पटाखे लेंगे." रंजन कह रहा था.

नालिनी बोली, "मैं तो दो दरजन चकरी लूंगी."

"मैं भी कुछ रुपए के पाटखे लूंगा," सब से छोटा नितिन बोला.

रामन, जो कि सब से बड़ा था, बोला, "दस रुपए में तो आजकल कोई पटाखे नहीं आते. अपन सब अलगअलग दसदस रुपए के पटाखे लेंगे."

पद्मा ने सोचा कि कितनी बेशर्मी से पटाखों की मांग की जा रही है. दीदी और भैया अपने बच्चों को पटाखे ले कर नहीं दे सकते क्या? मां शायद पद्मा के मन की बात समझ गईं. बोलीं, "बच्चो, देखो, तुम्हारे दादा तुम लोगों के लिए पटाखे लाने जा रहे हैं."

पर राजाराम ने बीच में ही कह दिया, "मांजी, इस दीपावली के लिए पटाखे मैं ही लाऊंगा."

पद्मा जानती थी कि बच्चों द्वारा मांगे जाने पर भी पटाखे न लाने से पति का अपमान होगा, अतः अब वह खुद खर्च कर के ही रहेंगे.

बच्चों को ले कर राजाराम रवाना हो गया. जब लौटा तो लगा कि ये लोग पटाखों की दुकान ही उठा लाए हैं. पद्मा का पारा चढ़ने लगा. यह ठीक है कि वह घर वालों के स्वभाव से रुष्ट है, पर उसे प्रकट करने के लिए इतना खर्चीला रास्ता अपनाना कोई जरूरी नहीं है. उस ने पति से पूछ ही लिया, "देखिए, आप को इतने पटाखे ले कर नहीं देने थे इन्हें."

राजाराम ने जवाब दिया, "वाह, मैं ने तो सुना है कि पति मायके वालों के लिए कुछ करे तो पत्नी प्रसन्न होती है, तुम हो कि नाराज हो रही हो."

पति का व्यंग्यपूर्ण स्वर सुन पद्मा ने सिर झुका लिया. "मुझे मालूम है कि आप मेरे मायके वालों से रुष्ट हैं," वह बोली.

राजाराम ने उसी व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा, "रुष्ट हूं न? तुम ने सही पहचाना है. मैं क्रोध से पागल हो रहा हूं..."

पद्मा ने सफाई देते हुए कहा, "मैं ने इन लोगों को पहले ही मना किया था कि आप को हुड़दंग पसंद नहीं."

इस पर राजाराम बोला, "तुम हर काम में जल्दी करती हो." वह आगे कुछ कहता पर तभी दादी वहां आ गईं. उन के हाथ में एक डलिया और एक पटा था. पटा उलटा रख कर वह बोलीं, "चलो, राजाराम, हम दोनों बैठ कर दीए की बत्तियां बनाएं. यह भी तो तुम्हें पता होना चाहिए."

पद्मा को अब सहन नहीं हो सका. वह चिल्लाई "दादी, मैं सुबह से देख रही हूं कि मैं जितना आप लोगों को मना कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही हूं, उतना ही आप लोग इन्हें तंग कर रहे हैं. बस्तियां बनाने के लिए क्या घर में जगह नहीं है?"

राजाराम ने उसे टोका, "फिर अल्हड़बाजी. तुम अभी कह रही थीं न कि मैं तुम्हारा हूं, मैं किसी और से नहीं बल्कि तुम से नाराज हूं."

"क्या!" पद्मा को विश्वास नहीं हुआ.

"हां तुम से. जब से आया हूं देख रहा हूं कि तुम मेरी दीपावली का, वह भी पहली दीपावली का मजा किरकिरा करना चाह रही हो. इतने वर्षों बाद अपने देश के तीज त्योहारों को नजदीक से देखने का अवसर मिला है मुझे. जितना अधिक मैं चाह रहा था कि अपनी 'तले दीपावली' की सारी आयोजनाओं का मुख्य पात्र बन कर दीपावली का मजा लूटूंगा उतना ही तुम रास्ते में रोड़ा अटकाती रहीं."

पद्मा ने स्वयं को अपमानित सा महसूस किया. "मैं ने रोड़े अटकाए? आप ने ही तो कहा था कि आप को दकियानूसी पसंद नहीं, पुरातनपंथी से चिढ़ है."

"त्योहार मनाना दकियानूसीपन नहीं है, पद्मा," शांत स्वर में उस के पति ने कहा, "उदार विचारों वाली पत्नी मुझे चाहिए थी, इसलिए कि वह मेरे खुले व्यवहार व 'ब्लंट' बातों से घबराए नहीं, सब से समान व्यवहार करूं तो संकोच का अनुभव न करे और..." वह शरारत भरे स्वर में बोला, "दूसरी स्त्रियों से 'फ्लर्ट' बात करूं तो जले नहीं."

पद्मा स्तंभित थी. "पर...पर..."

"पद्मा, मैं देख रहा हूं कि मेरे विदेश में जन्म लेने और वहां पलने का तुम दूसरा ही अर्थ लेती हो. आज जान लो कि विदेशी माहौल में रह कर भी मैं एक भारतीय हूं और भारतीय संस्कृति का आदर करता हूं, बच्चों का यह अपनापन, बड़ों का अधिकार भरा स्नेह, दीयों की झिलमिलाती पवित्र ज्योति और पटाखों का रंग भरा खेल—यह सब देखे बिना मैं सचमुच कुछ खो रहा था. यह मुझे अब मालूम हुआ. कितने लोगों का मैं क्या क्या लगता हूं, मैं अकेला व्यक्ति कितनों का प्रेम भरा रिश्तेदार हूं, सोच कर ही फूल उठता हूं."

पद्मा शर्मिंदा हो गई. ओफ! कितना गलत समझा था उस ने पति को. अपने विचार, अपनी अनिच्छा अभिव्यक्त करने के लिए वह पति की लालसा को पूरा होने से रोक रही थी.

तभी दादी की आवाज आई, "पद्दू, राजाराम ने तेरे पिता को लिखा था कि वह एक सच्चे भारतीय की तरह दीपावली मनाना चाहता है. कोई भी उसे अनूठा या अलग समझ कर दीपावली की रस्में न बदले. इसी लिए हम ने इस बार जरूरत से ज्यादा सावधानी से 'तले दीपावली' की रस्मों को बारीकी से पूरा किया है."

पद्मा को पति पर गुस्सा आया. जो बात वह सब से कह सकता था वह पत्नी को नहीं बता सकता था क्या? वह बोली, "इस का अर्थ यह है कि तुम लोगों ने मिल कर मुझे तंग करने को सोच रखा था? ठीक है. मैं भी आज किसी से बात नहीं करूंगी."

राजाराम ने ताली बजा कर कहा, "चलो भई, यह हुई न कोई बात. हम जो दुकान भर के पटाखे छोड़ेंगे, तो उस की आवाज में तुम्हारी आज वैसे भी नहीं सुन पाएंगे. तुम अपनी 'एनर्जी' खराब मत करना."

सब हंसने लगे और पद्मा होंठ बिदका कर रह गई.

"हड्डियां ही तोड़ना है तो मुझ को ले लिया होता."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पारिवारिक दीवाली

आज इस फुलझड़ी को
हाथ में पकड़े हैं
कल उस फुलझड़ी का
हाथ थामे हैं.

कभी इस को जलाते हैं,
कभी उस को जलाते हैं
दोस्तो, ये तो
पूरे साल दीवाली मनाते हैं!

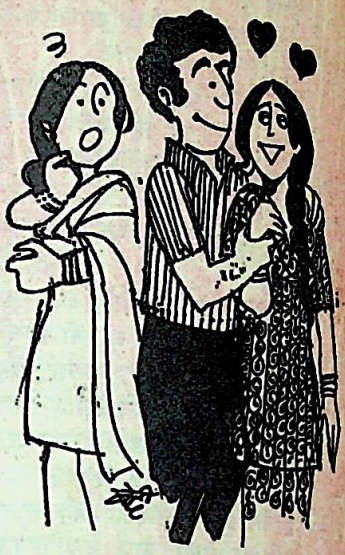

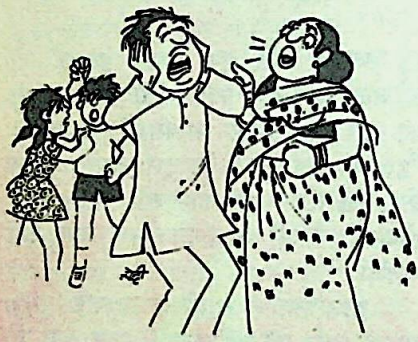

फुलझड़ी और हथगोलों जैसे
बच्ची—बच्चे
और एटम बम सी बीवी का धमाका,
अपने घर तो रोज ही रहता है
दीवाली के पटाखों का
धूम धड़ाका!

पहली बात तो कि
बाजार में तेल नहीं है,
और है भी तो इतना महंगा
कि उस को खरीद पाना
हंसी खेल नहीं है
इसलिए, अरी भागवान
नई तरकीब लगाओ,
"बच्चे घर की रोशनी होते हैं"
यह सब को बतला दो
अपने लाड़लों को बुलाओ
और उन्हें अलगअलग
कमरों में बिठा दो.

— सूर्यकुमार पांडेय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख. मंजु नागोरी

बोलचाल में जरा सी चूक हुई नहीं कि बात बिगड़ी...

बोलने से पहले सोचिए

कई शब्द बड़े मारक होते हैं. उन का किया घाव समय बीतने पर भी भर नहीं पाता. जबतब टीसता ही रहता है. ठीक ही कहा है—"तीरबरछी कालगा घाव तो समय पा कर भर भी जाता है, पर शब्दों के वार संबंध तोड़ कर ही दम लेते हैं." इसी लिए तो कहते हैं—"कम बोलो और बोलने से पहले तोलो."

नित्यप्रति न जाने हम कितनों के संपर्क में आते हैं. जरा बोलचाल में चूके नहीं कि बात बिगड़ जाती है. अब देखिए, जरा इस 'हमेशा' शब्द का ही कमाल. पतिदेव को नहाने के बाद बाथरूम में तौलिया टंगा हुआ नहीं मिला तो रात को पहनी लुंगी ही लपेट कर बड़बड़ाते हुए बाहर निकले. पत्नी ने पूछा, "क्या बात है?"

पतिदेव तो जैसे भरे बैठे थे. झल्ला कर, त्योरियां चढ़ा कर बोले, "बात क्या होनी है, बाथरूम में तौलिया तक नहीं रखा जाता."

पत्नी अपराधिन भाव से बोली, "ओहो, मैं तो भूल ही गई."

"भूल नहीं गईं, तुम्हारी तो यह हमेशा की आदत है," पतिदेव ने गुस्से में कहा. बेचारी पत्नी रुआंसी हो आई. एकआध बार की भूल हमेशा की भूल बन गई.

जरा सोचिए, एक दिन सब्जी में नमक तेज हो जाए या पति कभीकभार रात देर से आए तो बात आईगई करने के बजाए यह सर्टिफिकेट देना कहां तक उचित है कि तुम से तो रोज ही सब्जी में नमक तेज हो जाता है या तुम तो हमेशा ही बहाने बनाते हो. इस से तो पिछला सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कियाधरा मिट्टी हो जाता है...

अतः जहां तक हो सके, झगड़े व मन-मुटाव की जड़ 'हमेशा' शब्द से जरा संभल कर ही रहिए.

इसी तरह दैनिक व्यवहार का एक दूसरा शब्द है—'मूड', अच्छा भला माहौल हो, हंसीमजाक चल रहा हो. जरा किसी ने व्यंग्य किया नहीं बस कि आप का मूड बिगड़ जाता है. मानो मूड न हुआ, बिजली का स्विच हो गया. एक का मिजाज बिगड़ा नहीं कि महफिल में उदासी छा जाती है. कहकहे लगने बंद हो जाते हैं. भारीपन छा जाता है.

'मूड' से ही मिलताजुलता शब्द है—'बोर'. प्रायः इस का व्यवहार करते हुए कहा जाता है—"अरे, हम तो बोर हो गए." या "बेकार में गए बोर होने को." जरा सोचिए, यही वाक्य संबंधित व्यक्ति सुने तो वह अपने को कितना अपराधी मानेगा.

बात अभी हाल ही की है. एक बच्चे का जन्मदिन था. पार्टी का आयोजन शाम को चार बजे था. पर कुछ तो मुख्य अतिथि के आने में विलंब हो जाने और कुछ केक व फोटोग्राफर के पहुंचने में देरी हो जाने से पार्टी शाम को चार बजे के बजाए रात आठ बजे शुरू हुई. मेहमान तो परेशान थे ही, बेचारे मेजबान भी दुखी हो रहे थे, पर मजबूरी थी. केक आया नहीं था. शायद बन नहीं पाया था और फोटोग्राफर किसी दूसरी शादी में चला गया था. हालांकि सब तैयारी थी व मेहमानों को दोतीन बार चाय भी दी जा चुकी थी, पर कुछ मेहमान 'बेकार आए, मूड खराब कर दिया, 'बोर हो गए', 'फंस गए' कह कर जहां अपना जायका बिगाड़ रहे थे, वहीं बेचारे मेजबान को भी ग्लानि व अपराध भाव से भर रहे थे. मेजबान को लग रहा था, उस की सारी तैयारी बेकार गई. ऐसे में यदि मेहमान मेजबान की मजबूरी को समझ तत्काल्ली से काम लेते तो ज्यादा अच्छा रहता. ज्यादा से ज्यादा यह हो सकता था कि मेहमान "बोर हो गए," कहने के बजाए ऐसे मौके पर कहीं आवश्यक काम होने की बात कह कर घर जा सकते थे. ऐसे में मेजबान उन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन तो करता ही, उन्हें भूखा भी न जाने देता.

वैवाहिक जीवन हो या कुंआरेपन की जिंदगी, कभी किसी से कुछ काम कर देने के आग्रह पर "क्या है, भाई" या तुरंत "मुझ से न होगा" न कहें. धैर्य से बात सुनें व फिर स्वयं को तोलें. यदि वह काम आप से हो सकता हो तो अवश्य करें. क्या पता, आप को भी कभी उन की जरूरत पड़ जाए.

रेस्तोरां के लिए सर्विस केबिनेट

फ्रांस में एक ऐसी केबिनेट विकसित की गई है जिस में खाना परोसने से पहले उचित तापक्रम पर ठंडा या गरम किया जा सकता है. यह रेस्तोरां के लिए बहुत उपयोगी केबिनेट है, जिस में विभिन्न प्रकार के व्यंजनों को गरम या ठंडा करने वाली तीस ट्रेओं की व्यवस्था है.

इस केबिनेट में खाद्य पदार्थों को 65 डिगरी सेंटीग्रेड तक गरम और 3 डिगरी सेंटीग्रेड तक ठंडा रखा जा सकता है. तापक्रम अपने आप नियंत्रित रखने के लिए इस में एक केंद्रीय घड़ी की व्यवस्था होती है जो खाना परोसने के अपेक्षित समय अनुसार व्यवस्थित होती है.

नई सर्विस केबिनेट की एक नई विशेषता यह है कि ट्रेओं पर रखा खाना धीरेधीरे गरम होता रहता है जिसे बगैर दोबारा गरम किए या पकाए वह अधिक स्वादिष्ट हो जाता है. इस के लिए इस में ताप के नियमित रूप से बारबार कम अधिक करने की व्यवस्था है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूज्य तो गृहलक्ष्मी है

लेख - कैलाश भारद्वाज

लक्ष्मी को पहचानने में कहीं आप गलती तो नहीं कर रहे?

सुखसंपन्नता की इच्छा मनुष्य में उतनी ही पुरानी है, जितना कि स्वयं मनुष्य. लगता है, दीवाली का उत्सव इसी इच्छा का साकार रूप है.

आरंभ में आदमी के दुखदर्द का मुख्य कारण प्रकाश का अभाव था. प्रकाश था तो किंतु केवल आकाश में. भूमि को तो वह अस्थायी तौर पर ही प्राप्त होता था. दिन में सूरज चमकता था और रात को चांद. कुछ रातों में चांद भी गायब हो जाता था. तब केवल सितारों की मद्धिम ज्योति ही उस का सहारा होती थी.

कहने की आवश्यकता नहीं कि रोशनी उस जमाने में एक अलौकिक चीज थी. आदमी की पहुंच उस तक नहीं थी. इसी लिए रोशनी पूज्य थी और इसलिए मनुष्य उस के पीछे पागल था.

आखिर यह पागलपन रंग ले ही आया. सतत संघर्ष, अदम्य लगन और अथक प्रयत्न के परिणामस्वरूप प्रकाश उस की मुट्ठी में आ गया—माचिस की डिबिया में बंद हो गया.

जिस दिन उस ने पहली बार स्वयं ज्योति जलाई, वह दिन एक उत्सव बन गया, क्योंकि वह मनुष्य के लिए एक अद्भुत दिन था. उस ने सब से पहले उस की पूजा की— ज्योति आकाशीय जो थी. यही ज्योति उस के लिए लक्ष्मी बन गई. हालांकि मानव निर्मित प्रकाश की पहली किरण से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जिस घर में नारी को उचित स्नेह व सम्मान मिलता है, वहां सुख व संपन्नता का विकास होता है.

किसी जमाने में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' जैसी सूक्तियों के द्वारा इस तथ्य की ओर जनसमाज का ध्यान खींचा गया था कि जिस घर में नारी को उचित स्नेह व सम्मान मिलता है, वहां सुख व संपन्नता का निवास होता है. पर दासता के युग में इस कथन के अर्थ का अनर्थ कर के नारी को विलासिता की सामग्री मात्र बना लिया गया.

किंतु अब वह समय आ गया है, जब लक्ष्मी की अर्चनाआराधना छोड़ कर गृहलक्ष्मी के प्रति पूज्यभावना का विकास किया जाए, ताकि उस में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की भावना जागे तथा राष्ट्रनिर्माण के कार्य में वह पुरुष के कंधे से कंधा मिला कर सहर्ष सहयोग दे.

अब यदि हम अपने चारों ओर गौर करें तो निश्चय ही ऐसे उदाहरण मिल जाएंगे, जहां स्त्रियां आत्मनिर्भर हैं तथा इसी कारण उन घरों में धनधान्य की बहुतायत है. बल्कि ऐसे एक परिवार को तो मैं भी जानता हूं, मुझे अच्छी तरह मालूम है कि उस घर के वृद्ध पत्नी को तो पांव की जूती के बराबर मानते थे, किंतु उन्होंने लक्ष्मी की सात तोले की सोने की मूर्ति बनवाई हुई थी, जिस की पूजा वे बड़े मनोयोग से किया करते थे.

और तब वह दिन आया, जब उन की आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ गई कि उन्हें मजबूरन लक्ष्मी की वह स्वर्णप्रतिमा तक बेच देनी पड़ी. उन्हीं के बेटा, बहू आज कालिज में प्रोफेसर हैं. हर महीने घर में लगभग तीन हजार रुपए आ रहे हैं. कहना न होगा कि उन का प्रत्येक दिन दीवाली के उत्सव की तरह बीत रहा है.

एक बार मैं ने यों ही दिल्लगी में उन सज्जन से पूछा भी था, "प्रोफेसर साहब, आप दीवाली को लक्ष्मीपूजा नहीं करते?"

सुन कर वह मुसकरा पड़े, बोले, "अजी साहब, आप तो जानते ही हैं, हमारी लक्ष्मी तो यह हैं." और उन्होंने अपनी पत्नी की ओर देखा, "इस घर में जो कुछ आप देख रहे हैं, यह सब इन्हीं की कृपा है."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सलाह

सलाह देना और सलाह लेना आदिकाल से चला आया है. आदम बेचारा धरती पर आया तो बेहद बोर होने लगा. कोई और न मिला तो हव्वा से सुलाह लेने लगा. यह दोनों की सलाह का ही परिणाम है कि आज दुनिया में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति पैदा हो गई है.

प्रजातंत्र में तो सब कुछ सलाह पर ही आधारित है. जनता के चुने हुए प्रतिनिधि मंत्रिमंडल को सलाह देते हैं. मंत्रिमंडल राज्यपाल या राष्ट्रपति को सलाह देता है. सर्वाधिकार एवं सर्वसाधन संपन्न हो कर भी ये महानुभाव बिना सलाह कुछ कर ही नहीं सकते, यद्यपि वे बहुत योग्य एवं अनुभवी होते हैं. यही नहीं, राज्यतंत्र में राजा भी सलाह लेता था. कबीलों के सरदार भी मौका पड़ने पर अपने योद्धाओं और समझदार लोगों से सलाह ले लेते

राघवदास अपने बाग पर अपना कब्जा देखने के लिए पेड़ों की डालियां काटने पहुंच जाते और दूसरों को भी यही करने की सलाह देते.

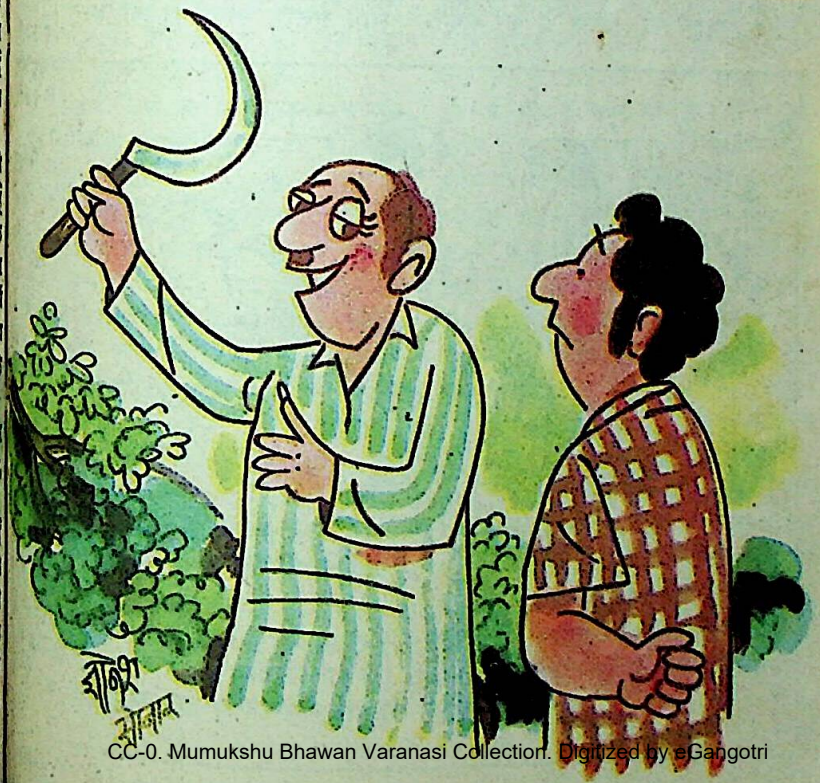

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना मांगे सलाह देने वालों की कोई कमी नहीं और ऐसी सलाह को मानना या न मानना आप की इच्छा पर निर्भर है. तो फिर आप सलाह मांगने की गलती क्यों करते हैं?

थे. यह और बात है कि सलाह मानना या न मानना उन का अपनी इच्छा पर निर्भर था. प्रजातंत्र में ऐसा नहीं है.

कुछ लोग सलाह लेने के आदी होते हैं. जैसे ही कोई बात आड़े आई कि पहुंच गए सलाह लेने. एकदो से नहीं, जितने भी मिलते हैं, उन सब से सलाह लेते हैं. यही वजह है कि अंतिम निर्णय तक यह निश्चय ही नहीं कर पाते हैं कि उन को करना क्या है. वैसे रोग में डाक्टरों की, मुकदमे में वकीलों की सलाह हर आम व खास को लेनी पड़ती है. वे इन मामलों के विशेषज्ञ होते हैं.

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं कि हर ऐरेगैरे नत्थूखैरे की सलाह ले कर अपने दिमाग को सरसों पेरने वाला कोल्हू बना देते हैं. स्वयं आंखों पर पट्टी बंधे बैल की तरह चक्कर काटा करते हैं. उन को आदत ही सलाह लेने की पड़ जाती है. आसानी से निर्णय ले सकते हैं, पर आदत के अनुसार सलाह लेने जरूर दौड़ पड़ेंगे. उस के उपरांत एकएक बात का पांचपांच अथवा अनेक बार जिक्र कर के उस व्यक्ति के भेजे को गोबर बना देंगे, जिस से सलाह लेने गए हैं. होशियार लोग बड़े प्रेम से सिर्फ 'हां' या 'हूं' में उत्तर देते हैं. गौर से सुनने की भी जरूरत नहीं समझते हैं.

बहुत से लोग सलाह देने में माहिर होते हैं. ये इतने योग्य होते हैं कि इन से लोग सलाह मांगने से भी डरते हैं ताकि

अपने पतियों को दीवाली के अवसर पर जुआ खेलने से रोकने के लिए हम ने इस 'पटाखा बिग्रेड' का गठन किया है. इस का उद्देश्य जुआ स्थल पर पटाखे चला कर इन जुआरी पतियों को जुआ खेलने से रोकना है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन का अपना दिमाग काबू में रहे. ये किसी विषय में विशेषज्ञ नहीं होते. इन में अधिक संख्या अवकाशप्राप्त बूढ़ों की होती है. बहुत से प्रौढ़ लोग भी उमर के पक्कपन का साथ उठा कर सलाह विशेषज्ञ बन जाते हैं. वे मौका तलाशा करते हैं, पूछताछ किया करते हैं ताकि किसी को सलाह देने जा पहुंचें. कोई इन से सलाह मांगे या न मांगे, पर ये जा ही पहुंचते हैं. आदमी को भैंसा या बैल समझ कर उस के कानों से अपने सलाह रूपी भूसे को मस्तिष्क में भरने लगते हैं. भैंस और बैल के मुंह से पेट में भूसा भरा जाता है जो गोबर बन कर निकलता है. सलाह रूपी भूसा कानों से दिमाग में भरा जाता है जो किसी भी प्रकार निकलता नहीं है, वरन अंदर ही अंदर सड़ांध पैदा किया करता है.

हंसी तो तब आती है जब बिना किसी समस्या के और बिना किसी जरूरत के लोग सलाह देने पहुंच जाते हैं. वे इतनी गंभीरता से सलाह देने का कार्य पूरा करते हैं कि आदमी को अवाक हो कर मुख खुला कर सुनना ही पड़ता है.

"भैयाजी," आदत के अनुसार सलाह लेने के शौकीन कालिकाप्रसादजी ने कहा, "एक सलाह लेनी है."

"हुक्म कीजिए," कह कर मैं ने सोचा कि कोई कानूनी मामला होगा.

"लड़के की शादी तय हो रही है," वह बोले, "सोचा आप से सलाह कर लूं."

"जरूर, जरूर." मैं ने हर्षित स्वर में उत्तर दिया, "अति सुंदर संबंध है. तुरंत कर लो."

मुझे मालूम था कि तिलक हो चुका है. अगले सप्ताह बरात जाएगी. सब कुछ तय है पर कालिकाप्रसादजी की आदत थी सलाह लेने की? मैं ने भी सोच लिया कि सातवीं भांवर तक कन्या बाप की ही रहती है. तब तक तो सलाह लेने का इन्हें अधिकार है ही.

राघवदासजी एक दिन बांका लिए अपने बाग में टहल रहे थे. हरा पेड़ बिना वजह एकआध बांका चला कर डाल को घायल कर रहे थे. मैं ने सोचा, कुछ लकड़ी काटनी होगी.

"बाबाजी," मैं ने कहा, "लकड़ी काटने नौकर को भेज दिया होता."

"नहीं, लकड़ी की जरूरत नहीं है." उन्होंने उत्तर दिया और दूसरे पेड़ की डाल पर आघात कर दिया.

"तो यह आप क्या कर रहे हैं?" मुझे पूछना ही पड़ा.

"अपना कब्जा देख रहा हूं." राघवदासजी ने फूले मुंह से गंभीर स्वर में उत्तर दिया.

अब मेरा मुंह देखने लायक था.

"तुम भी ऐसा ही किया करो," वह बोले, "मेरी यही सलाह है ताकि कब्जे का पता चलता रहे."

इस बार मेरा चेहरा पूर्णरूपेण त्रिभंगी लाल हो कर प्रश्नचिह्न बन गया.

ज्ञात हुआ कि राघवदासजी कभीकभी बांका ले कर अपने बाग की हर डाल पर आघात कर आते थे और खेत में आ कर दो-चार कुदालें चला जाते थे. अगर कोई मना करे तो समझते कि उन का कब्जा झंझट में पड़ गया है. अगर कोई न रोके तो पूर्णरूपेण अपना कब्जा मान कर खुशी से फूल जाते थे. उन के पास कोई काम तो था नहीं, क्योंकि खेतीबारी लड़के संभाले हुए थे, अतः कब्जा देखना ही उन का काम रह गया था. स्वयं अपना कब्जा देखते थे और दूसरों को कब्जा देखने की सलाह भी देते रहते थे. उन के पास ऐसी सलाहों का खजाना था.

संसद सदस्य, विधायक एवं मंत्रिगण सलाह देने का काम सवेतन करते हैं. स्थानीय निकायों के सदस्यगण अवैतनिक सलाहकार होते हैं, पर येनकेनप्रकारेण कीमत वसूल लेते हैं. विशेषज्ञ अपनी योग्यता की कीमत लेते हैं. पर उन के अतिरिक्त सभी सलाहकार मुफ्त सलाह देते हैं. उन की सलाह की कीमत बहुधा वही होती है, जो बिना मूल्य वाली वस्तुओं की होती है. वैसे सब से अधिक सलाह देने का शौक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन बिना मांगे सलाह देने की आदत वालों को होता है.

वेतन के रूप में सलाह की कीमत वसूलने वाले व येनकेनप्रकारेण कुछ पैदा करने वाले बुलाने पर व मांगने पर ही सलाह देते हैं. पर बिना मूल्य सलाह देने वाले ये बेचारे स्वयं दौड़े जाते हैं और बिना मांगे अपनी बिना मूल्य की अमूल्य सलाह की पिचकारी से लोगों को भिगो देते हैं.

एक और बिना मांगे देने वाली सलाह होती है. इसे पत्नी कहा जाता है. इस की मुख्य विशेषता यह है कि यह बिना समझे-बूझे उसी तरह सलाह दाग देती है, जैसे कोई अनाड़ी बंदूक दागता है. अगर कहीं पुरखिन टाइप की हुई तो अपनी सलाहों से पूरे परिवार एवं पड़ोसियों की नाक में दम कर देती है. पति से यह ब्याह में हीं यानी वामांग में आने से पूर्व ही प्रतिज्ञा करवा लेती है कि वह सलाह देगी और उस को यानी/पति को सुननी पड़ेगी.

यही नहीं, यह यहां तक प्रतिज्ञा करा लेती है कि वह कुछ भी उस की सलाह के बगैर नहीं करेगा. उस के बाद यह जकड़ कर, रो कर, सिसक कर, झगड़ा कर के और मुंह फुला कर सलाह देती है. उस के बाद मानने वाले तो काम से चले ही जाते हैं, न मानने वाले भी काम से चले जाते हैं.

एक संपादकजी ने एक स्वनामधन्य लेखक को बड़ी अच्छी सलाह भेजी थी. उन्होंने लिखा था :

"चीड़ का पेड़ काट कर कागज बनता है. उस को अपने कुत्सित वमन से नष्ट न कीजिए. उसे किसी अच्छे काम के लिए प्रयोग में आने दीजिए."

पूरा पत्र तो याद नहीं, पर काम की बात याद रह गई. पता नहीं रचनाकारों को सलाह पसंद आई या नहीं. वैसे अच्छी सलाह लोगों को कम ही पसंद आती है.

बिना मांगे सलाह देने वालों में पत्नी की भी गिनती होती है और वह जो भी सलाह देगी, पति को माननी पड़ेगी.

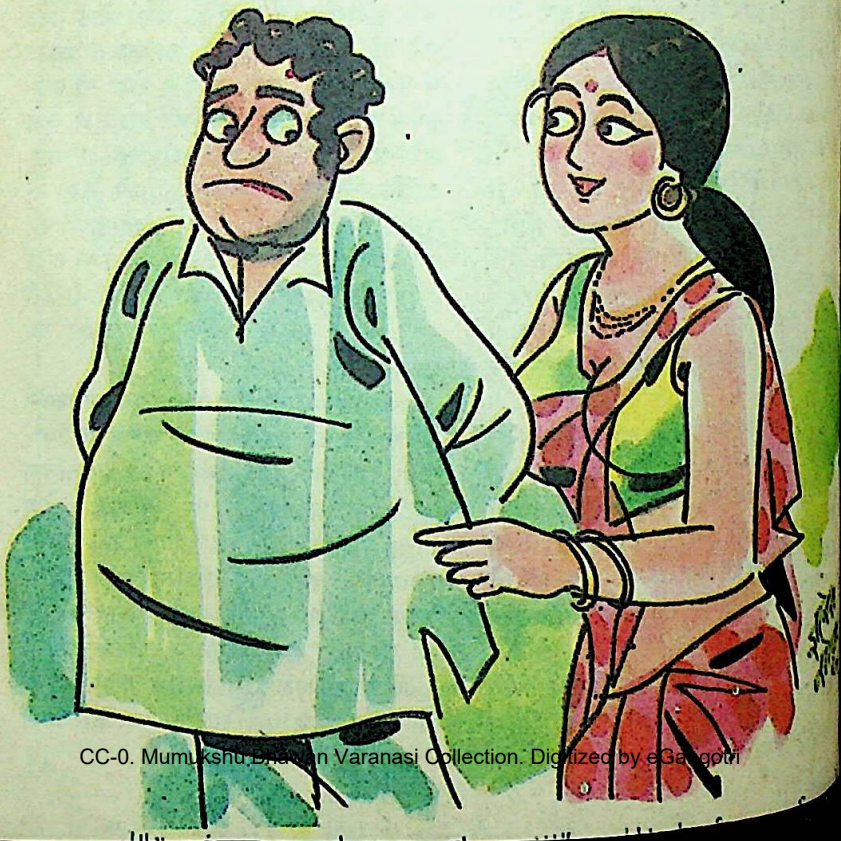

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठकुरसुहाती सलाह पर ही लोग प्रसन्न होते हैं

किसी ऊंचे पद पर पहुंचने के बाद अधिकांश लोग ठकुरसुहाती सलाह ही पसंद करते हैं. यह सलाह का यज्ञ उन के चमचों द्वारा संपन्न होता है. चमचों का पेट इसी से चलता है. पद वाले चमचों की ही सलाह मानते हैं. रामचंद्र भी जब मुसीबतों में घिरे रहे तो उन के सलाहकार जांबवान जैसे मंत्री थे. राजा बन गए तो एक मामूली धोबी सलाहकार हो गया. उस की सलाह मान कर निर्दोष पत्नी को घर से निकाल दिया. पद पर पहुंचने के पूर्व व्यक्ति चमचों की आलोचना करता है. योग्य व्यक्तियों का साथ करता है. पद पर पहुंचते ही योग्य व्यक्तियों को दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर करता है और चमचों को अपने चारों ओर नवरत्न बना कर बिठा लेता है. उन की सलाह पर सफेद को स्याह करने लगता है.

ऐसे लोग भी होते हैं जो नौजवानों एवं नवयुवतियों को सलाह देने पर उतारू हो जाते हैं. अधिकांशतः यह सलाह बिना मांगे ही दी जाती है. पीठ पीछे ऐसे लोगों को मूर्खानंद की उपाधि दे कर उन पर हंसा जाता है. अपने से बड़ेबूढ़ों को सलाह देनी बिना मांगे सलाह देने वाला तुरंत रफूचक्कर हो जाता है. बेअदब की उपाधि के साथसाथ 'छोटे मुंह बड़ी बात' का विशेषण जुड़ जाता है. पुत्रपुत्रियों को किसी भी प्रकार की सलाह देने वाला अहमक नाम से संबोधित होता है. पत्नी को सलाह देने वाला निहायत बेवकूफ हो जाता है. पत्नी को सलाह दे कर पति अपनी और अपनी उन की जिंदगी की घड़ियों को पूर्णरूपेण मनहूस बना देता है. पत्नी को सलाह न दी जाए तो जमाने की मनहूसियत बरदाश्त करनी पड़ती है अगर सलाह दे दी जाए तो स्वयं का जीवन मनहूस हो जाता है.

वैसे सच्ची और स्पष्ट सलाह शायद ही किसी को अच्छी लगती हो. जिस को लग जाती है उस का जन्म सुधर जाता है. अन्यथा जीवन प्रयोग बन कर रह जाता है

राजनीति और समाज में सलाह देने वाले नेता नाम से पुकारे जाते हैं. ये सिर्फ दूसरों को सलाह देते हैं, उन से पालन करने की उम्मीद रखते हैं. स्वयं दी गई सलाह पर अमल करना या पालन करना नियम, विरुद्ध, धर्म विरुद्ध और नैतिकता विरुद्ध समझते हैं. यही हालत धर्मगुरुओं की भी रहती है.

अन्य सलाह केवल विशेषज्ञ देते हैं. वे पेट के लिए सलाह देने के लिए विवश होते हैं. और तो और, बड़े से बड़ा हाकिम भी फाइल पर अपने मातहतों की सलाह लेता है. मौखिक नहीं, लिखित लेता है. मातहत अपनी सलाह की कीमत वसूल कर लेता है. हाकिम से नहीं, गर्जमंदों से. अपनी सलाह मनवाने के लिए मातहत हाकिम को भी कुछ टुकड़े डाल देता है. हाकिम में एक यही गुण होता है कि वह टुकड़ों से ही प्रसन्न हो कर स्वीकारोक्ति पर अपने हस्ताक्षर की मुहर अंकित कर देता है.

शायर और कवि सब को सलाह देने के आदी हो जाते हैं. वे इस काम के लिए बीड़ा उठा लेते हैं. एक शायर मियां लपक कर पहुंच गए अपने माशूक के पास और बोले :

"इस जज्बए दिल के बारे में,
इक मशवरा तुम से लेता हूं.
उस वक्त मुझे क्या लाजिम है,
जब तुम पे मेरा दिल आ जाए."

माशूक नंबर वन यानी प्रथम श्रेणी के मक्कार थे. वह जानते थे कि सलाह को उर्दू में मशवरा कहते हैं. उन्हें बड़ी खुशी हुई कि दुनिया, समाज एवं प्राणिमात्र को सलाह यानी मशवरा देने वाले अशिक शायर ने उस को महत्त्व दे कर उस की सलाह मांगी. उस ने तुरंत तुर्कीबतुर्की उत्तर में कलेजा निकाल कर फेंक दिया :

"इस जज्बए दिल के बारे में,
मशवरा यह तुम को देता हूं.
उस वक्त खुदकुशी लाजिम है,
जब मुझ पे तेरा दिल आ जाए." ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन बिना मांगे सलाह देने की आदत वालों को होता है.

वेतन के रूप में सलाह की कीमत वसूलने वाले व येनकेनप्रकारेण कुछ पैदा करने वाले बुलाने पर व मांगने पर ही सलाह देते हैं. पर बिना मूल्य सलाह देने वाले ये बेचारे स्वयं दौड़े जाते हैं और बिना मांगे अपनी बिना मूल्य की अमूल्य सलाह की पिचकारी से लोगों को भिगो देते हैं.

एक और बिना मांगे देने वाली सलाह होती है. इसे पत्नी कहा जाता है. इस की मुख्य विशेषता यह है कि यह बिना समझे-बूझे उसी तरह सलाह दाग देती है, जैसे कोई अनाड़ी बंदूक दागता है. अगर कहीं पुरखिन टाइप की हुई तो अपनी सलाहों से पूरे परिवार एवं पड़ोसियों की नाक में दम कर देती है. पति से यह ब्याह में हीं यानी वामांग में आने से पूर्व ही प्रतिज्ञा करवा लेती है कि वह सलाह देगी और उस को यानी पति को सुननी पड़ेगी.

यही नहीं, यह यहां तक प्रतिज्ञा करा लेती है कि वह कुछ भी उस की सलाह के बगैर नहीं करेगा. उस के बाद यह जबर्, कर, रो कर, सिसक कर, झगड़ा कर के और मुंह फुला कर सलाह देती है. उस के बाद मानने वाले तो काम से चले ही जाते हैं, न मानने वाले भी काम से चले जाते हैं.

एक संपादकजी ने एक स्वनामधन्य लेखक को बड़ी अच्छी सलाह भेजी थी. उन्होंने लिखा था :

"चौड़ का पेड़ काट कर कागज बनता है. उस को अपने कुत्सित वमन से नष्ट न कीजिए. उसे किसी अच्छे काम के लिए प्रयोग में आने दीजिए."

पूरा पत्र तो याद नहीं, पर काम की बात याद रह गई. पता नहीं रचनाकारों को सलाह पसंद आई या नहीं. वैसे अच्छी सलाह लोगों को कम ही पसंद आती है.

बिना मांगे सलाह देने वालों में पत्नी की भी गिनती होती है और वह जो भी सलाह देगी, पति को माननी पड़ेगी.

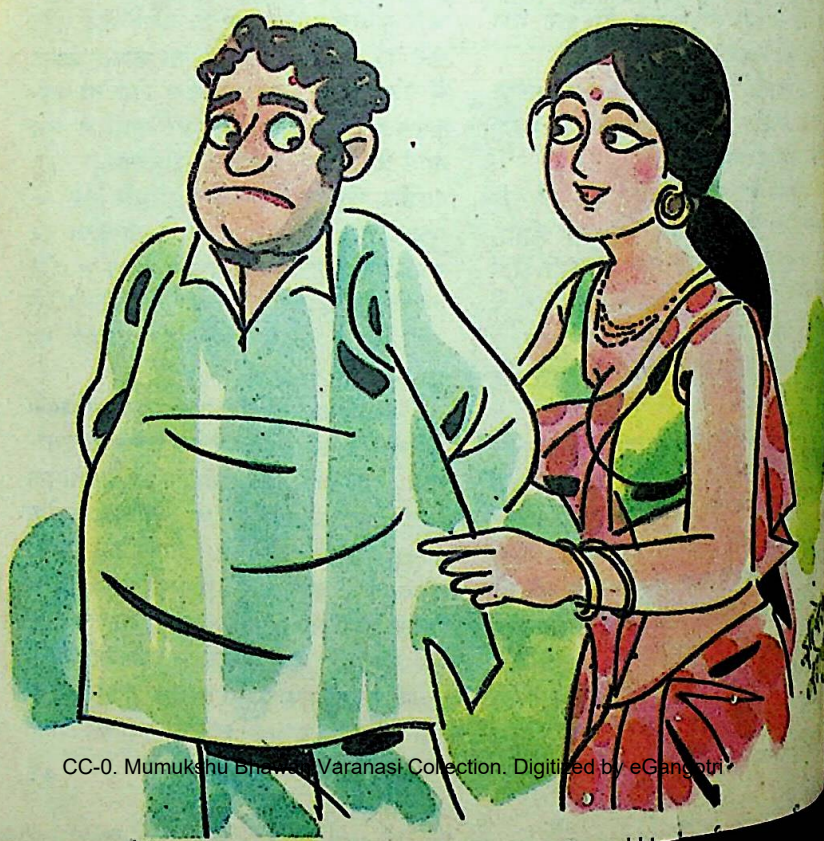

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ठकुरसुहाती सलाह पर ही लोग प्रसन्न होते हैं

किसी ऊंचे पद पर पहुंचने के बाद अधिकांश लोग ठकुरसुहाती सलाह ही पसंद करते हैं. यह सलाह का यज्ञ उन के चमचों द्वारा संपन्न होता है. चमचों का पेट इसी से चलता है. पद वाले चमचों की ही सलाह मानते हैं. रामचंद्र भी जब मुसीबतों में घिरे रहे तो उन के सलाहकार जांबवान वगैरा मंत्री थे. राजा बन गए तो एक मामूली धोबी सलाहकार हो गया. उस की सलाह मान कर निर्दोष पत्नी को घर से निकाल दिया. पद पर पहुंचने के पूर्व व्यक्ति चमचों की आलोचना करता है. योग्य व्यक्तियों का साथ करता है. पद पर पहुंचते ही योग्य व्यक्तियों को दूध की मक्खी की तरह निकाल बाहर करता है और चमचों को अपने चारों ओर नवरत्न बना कर बिठा लेता है. उन की सलाह पर सफेद को स्याह करने लगता है.

ऐसे लोग भी होते हैं जो नौजवानों एवं नवयुवतियों को सलाह देने पर उतारू हो जाते हैं. अधिकांशतः यह सलाह बिना मांगे ही दी जाती है. पीठ पीछे ऐसे लोगों को मूर्खानंद की उपाधि दे कर उन पर हंसा जाता है. अपने से बड़ेबूढ़ों को सलाह यानी बिना मांगे सलाह देने वाला तुरंत नक्कू हो जाता है. बेअदब की उपाधि के साथसाथ 'छोटे मुंह बड़ी बात' का विशेषण जुड़ जाता है. पुत्रपुत्रियों को किसी भी प्रकार की सलाह देने वाला अहमक नाम से संबोधित होता है. पत्नी को सलाह देने वाला निहायत बेवकूफ हो जाता है. पत्नी को सलाह दे कर पति अपनी और अपनी उन की जिंदगी की घड़ियों को पूर्णरूपेण मनहूस बना देता है. पत्नी को सलाह न दी जाए तो जमाने की मनहूसियत बरदाश्त करनी पड़ती है अगर सलाह दे दी जाए तो स्वयं का जीवन मनहूस हो जाता है.

वैसे सच्ची और स्पष्ट सलाह शायद ही किसी को अच्छी लगती हो. जिस को लग जाती है उस का जन्म सुधर जाता है. अन्यथा जीवन प्रयोग बन कर रह जाता है.

राजनीति और समाज में सलाह देने वाले नेता नाम से पुकारे जाते हैं. ये सिर्फ दूसरों को सलाह देते हैं, उन से पालन करने की उम्मीद रखते हैं. स्वयं दी गई सलाह पर अमल करना या पालन करना नियम, विरुद्ध, धर्म विरुद्ध और नैतिकता विरुद्ध समझते हैं. यही हालत धर्मगुरुओं की भी रहती है.

अन्य सलाह केवल विशेषज्ञ देते हैं. वे पेट के लिए सलाह देने के लिए विवश होते हैं. और तो और, बड़े से बड़ा हाकिम भी फाइल पर अपने मातहतों को सलाह लेता है. मौखिक नहीं, लिखित लेता है. मातहत अपनी सलाह की कीमत वसूल कर लेता है. हाकिम से नहीं, गर्जमंदों से. अपनी सलाह मनवाने के लिए मातहत हाकिम को भी कुछ टुकड़े डाल देता है. हाकिम में एक यही गुण होता है कि वह टुकड़ों से ही प्रसन्न हो कर स्वीकारोक्ति पर अपने हस्ताक्षर की मुहर अंकित कर देता है.

शायर और कवि सब को सलाह देने के आदी हो जाते हैं. वे इस काम के लिए बीड़ा उठा लेते हैं. एक शायर मियां लपक कर पहुंच गए अपने माशूक के पास और बोले :

"इस जज्बए दिल के बारे में,
इक मशवरा तुम से लेता हूं.
उस वक्त मुझे क्या लाजिम है,
जब तुम पे मेरा दिल आ जाए."

माशूक नंबर वन यानी प्रथम श्रेणी के मक्कार थे. वह जानते थे कि सलाह को उर्दू में मशवरा कहते हैं. उन्हें बड़ी खुशी हुई कि दुनिया, समाज एवं प्राणिमात्र को सलाह यानी मशवरा देने वाले आशिक शायर ने उस को महत्त्व दे कर उस की सलाह मांगी. उस ने तुरंत तुर्कीबतुर्की उत्तर में कलेजा निकाल कर फेंक दिया :

"इस जज्बए दिल के बारे में,
मशवरा यह तुम को देता हूं.
उस वक्त खुदकुशी लाजिम है,
जब मुझ पे तेरा दिल आ जाए." ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओस्वाल
निर्मित मेंग्नावूल
शिंक-रेंज़िस्ट स्वेटर...
न आकार बिगड़े, न सिकुड़ें.
हमेशा नये के नये रहें.

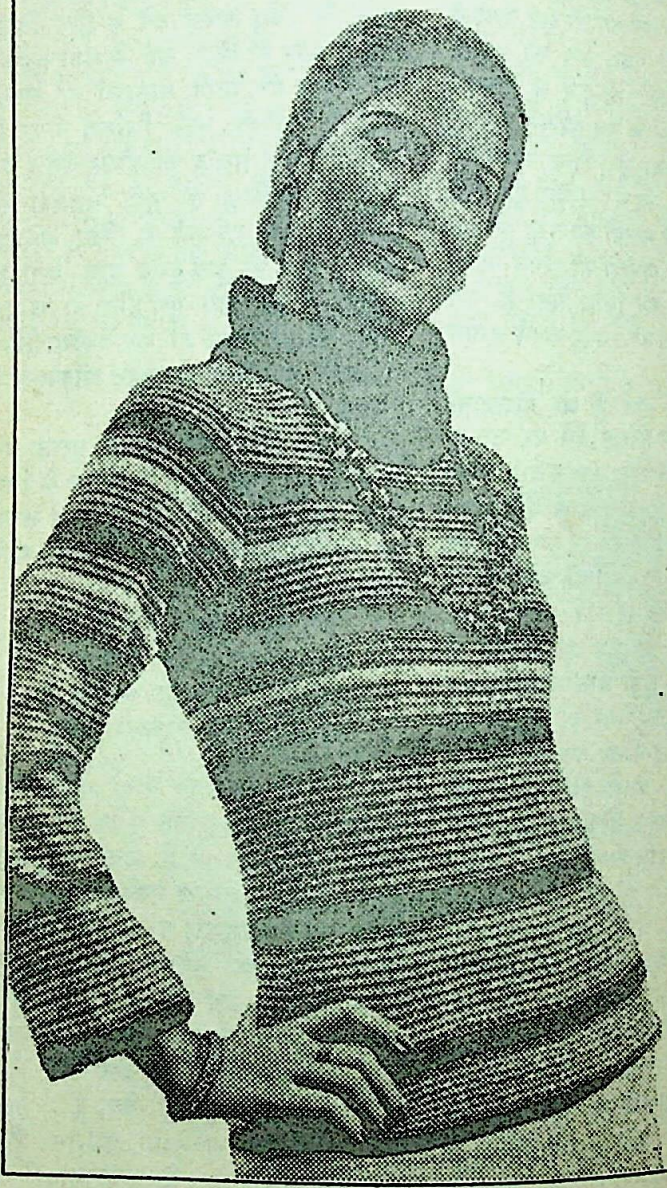

शक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'शिंक-रॅज़िस्ट' लेबल: यानी घर में इन्हें अपने हाथों सुरक्षित धोइए.

आती सर्दियों का स्वागत ओस्वाल के मॅग्नावूल स्वेटर की गर्मी से कीजिए···
पहनिए ओस्वाल के मॅग्नावूल स्वेटर,
शुद्ध, नयी ऊन के बड़े सुंदर,
गहरे रंगों में!

ऊंचे फैशन के स्वेटर···फिर भी
इनकी देखभाल अब जितनी
आसान है, पहले कभी नहीं थी.

मॅग्नावूल स्वेटरों को विशेष तरीके से 'शिंक-रॅज़िस्ट' करने लायक बनाया जाता है. इसलिए ये घर में धोए जाने में बड़े सुरक्षित हैं.
धुलाई और धूप में भी इनका पक्का रंग नहीं छूटता.

MAGNA WOOL
SHRINK RESIST
PURE NEW WOOL

वूलमार्क. शुद्ध, मिलावटरहित
ऊन का विश्वास.

owm
ओस्वाल के शानदार मॅग्नावूल स्वेटर.

ORM 2220-HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कढ़ाई वाली जैकेट

(कढ़ाई संबंधी जानकारी पृष्ठ 48 पर देखें)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोरंगा कार्डीगन

(बुनाई संबंधी सामग्री पृष्ठ 48 पर देखें.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कढ़ाई वाली जैकेट

सामग्री : बड़े अर्ज की मैटी 1 मीटर, काले और सफेद रंग की कैशमीलान ऊन, एक मोटी सुई और अस्तर के लिए गरम कपड़ा.

विधि : अपने नाप के अनुसार जैकेट की कटाई कीजिए. कपड़े को इस प्रकार तह कर के काटिए जिस से बगलों में सलाई न करनी पड़े. पहले मुड्ढों की कटाई कर लीजिए. फिर सिर्फ अगले हिस्से में गला वी आकार में काटिए. आगे के खुले हिस्से में पट्टियों के लिए 5 सें. मी., कंधों पर सिलाई के लिए 2 सें.मी. और नीचे मोड़ के लिए भी लंबाई के अतिरिक्त 5 सें. मी. कपड़ा ज्यादा रखें.

कढ़ाई के लिए आप ग्राफ की सहायता लें. पहले आगे की पट्टियों और नीचे के किनारों के बराबर बार्डर के डिजाइन की कढ़ाई करें. उस के बाद बीच के फूलों को काढ़िए. पूरी कढ़ाई क्रास स्टिच तथा लांग स्टिच में की गई है.

जैकेट के नाप के बराबर अस्तर भी काट लीजिए. अस्तर के लिए किसी पुरानी शाल का भी सदुपयोग किया जा सकता है. अब अस्तर को जैकेट की उलटी तरफ रख कर किनारों पर कच्चे टांके लगा लें. अब सफाई से आगेपीछे के हिस्सों के कंधे को सिलाई कर के जोड़ लें. नीचे की तरफ जितना भी अतिरिक्त कपड़ा रखा था उसे सफाई से अंदर की तरफ मोड़ कर दोहरे धागे

बार्डर के डिजाइन का ग्राफ

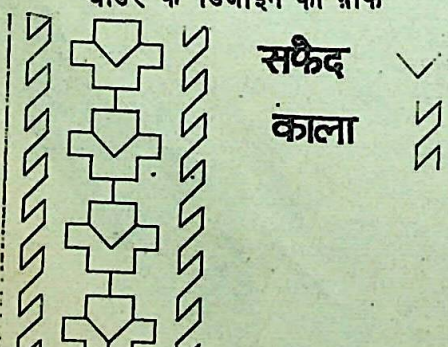

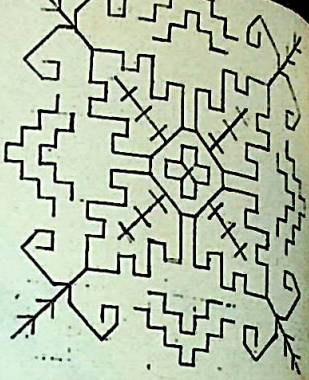

फूलों के डिजाइन का ग्राफ

से तुरपाई कर दें. मुड्ढों और गले पर पाइपिंग सिल कर अंदर की ओर मोड़ कर तुरपाई कर दें. आगे की पट्टियां भी अंदर मोड़ कर तुरपाई कर दें.

दोरंगा कार्डीगन

सामग्री : लाल और सफेद ऊन, 10 व 12 नं. की सलाइयां.

विधि : आगे से खुले इस कार्डीगन को सामान्य कार्डीगन की तरह ही बुनिए. पीछे के हिस्से को सफेद रंग से बुनते हुए 2 फंदे सीधा और 2 फंदे उलटे का बार्डर बुन लीजिए. इस के बाद 10 नं. की सलाइयां लगा कर एक सलाई सीधी और एक सलाई उलटी बुनते हुए अपने नाप के अनुसार लंबाई पूरी कर लें. बांहें भी इसी रंग की ऊन से बुनी जाएंगी.

आगे के हिस्से में दोरंगा डिजाइन डाला गया है, जिसे बनाने के लिए आप चित्र की सहायता ले सकती हैं. इस डिजाइन में 16 फंदे लाल रंग से और 2 फंदे सफेद रंग से बुनिए. एक टुकड़ी पूरी हो जाने पर टुकड़ी का क्रम बदल दीजिए. बस, इसी तरह टुकड़ियों का क्रम बदलते हुए आगे के हिस्से में डिजाइन पूरा कर लीजिए. बाद में आगे के हिस्से की पट्टियां सफेद रंग से बुन लीजिए. अब आगेपीछे के हिस्सों को जोड़ कर गले के फंदे उठा कर सफेद ऊन से पट्टी बुन लें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

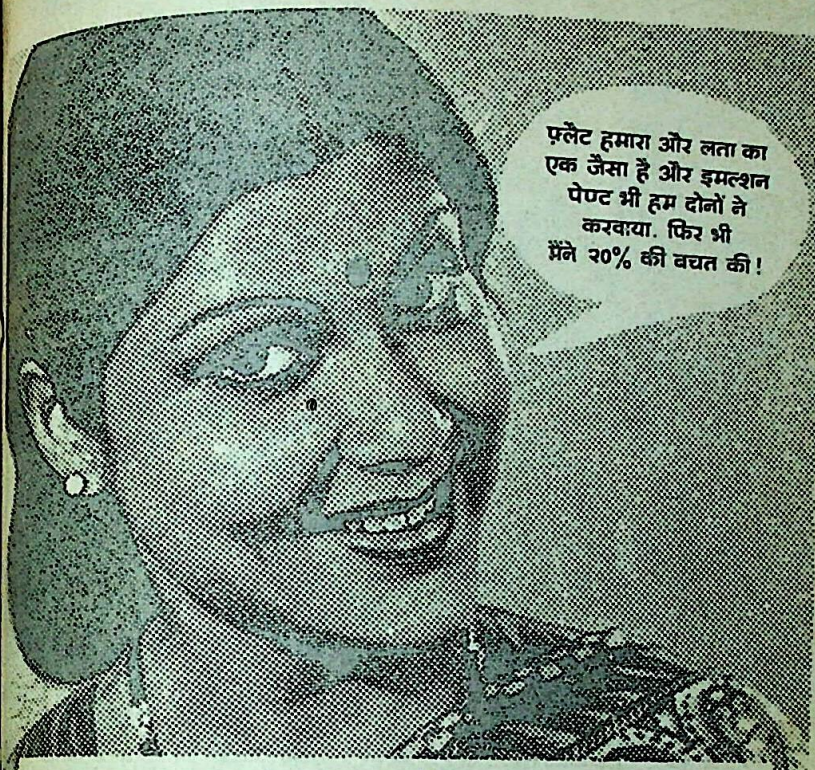

इमल्शन फ़िनिश
की शान
सुपर डेकोप्लास्ट!

"लता ने अपने फ़्लैट में जो इमल्शन पेण्ट कराया था उस पर काफ़ी शान थी उस. में भी उससे पीछे रहना नहीं चाहती थी. मैंने सुपर डेकोप्लास्ट से पेण्ट कराया. फिर ... मेरा फ़्लैट उतना ही जगमग करने लगा और साथ ही साथ २०% से ज़्यादा की बचत भी हो गई. काश! लता मुझसे पूछती तो उसका भी फ़ायदा होता."

एशियन पेण्ट्स

सुपर
डेकोप्लास्ट

CASAP-38-173 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीप जल उठे!

हंस पड़ो प्यार से इंद्रधनु खिल उठे.
दीप माटी के सौसौ स्वयं जल उठे.

आज शृंगार अपनी धरा कर रही
मोद मुसकान से गोद भर रही.
तारिकाएं सजा कर चलीं आरती,
गंध चंदन की अंबर से है झर रही.

तुम जो घूंघट उठाओ नयन मिलन के,
औ' महावर से रंजित चरन चल उठे.

पास रह कर के इतना न घबराओ तुम,
जीवन अपना उठाओ न शरमाओ तुम.
प्राण! दर्पण जरा देख लो एक पल,
बात छोटी सी मेरी न ठुकराओ तुम.

तुम जो मुसका दो रक्तिम अधर खिल उठें,
तम का वातावरण ज्योति से धुल उठे.

—शिवप्रसाद कपूर

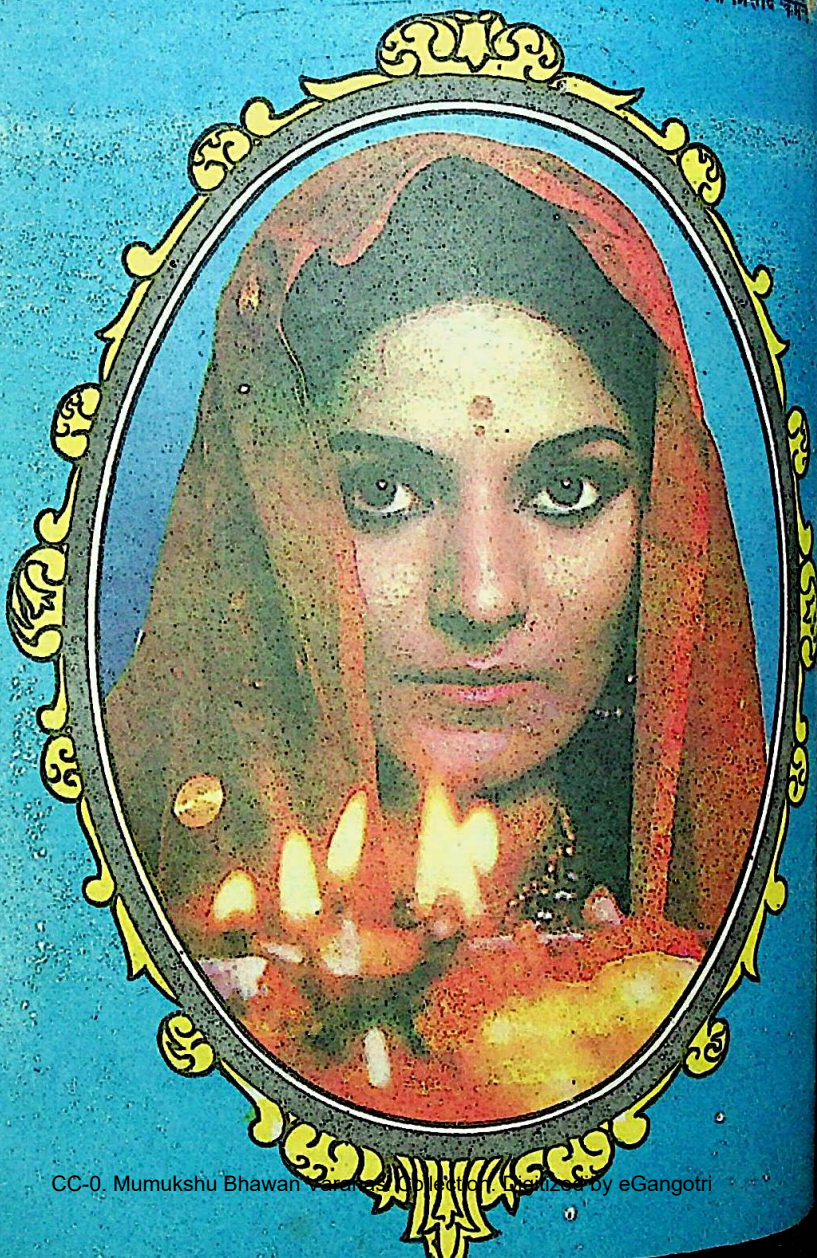

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • विजया बापट

खाद्य पदार्थों में विषैले रंग

हलके किस्म की होती हैं, उन्हें कृत्रिम रंगों से रंग कर ज्यादा अच्छा दिखाने की कोशिश की जाती है.

मिलावट के कई ढंग प्रचलित हैं. जैसे किसी वस्तु में उस से मिलतीजुलती सस्ती चीज मिलाना या किसी मशहूर कंपनी के किसी पदार्थ के खाली खरीदे हुए डब्बों को नकली चीज से भर कर उपभोक्ताओं को धोखा देना.

आप बाजार से अरहर की दाल, पिसेपिसाए मसाले, बेसन, चाय, शरबत आइसक्रीम या अपने लाड़ले के लिए गोलियां, टाफियां खरीदती हैं. हो सकता है, आप अनजाने में जहर खरीद रही हों, क्योंकि बहुत से ऐसे रंग हैं जो आप के शरीर

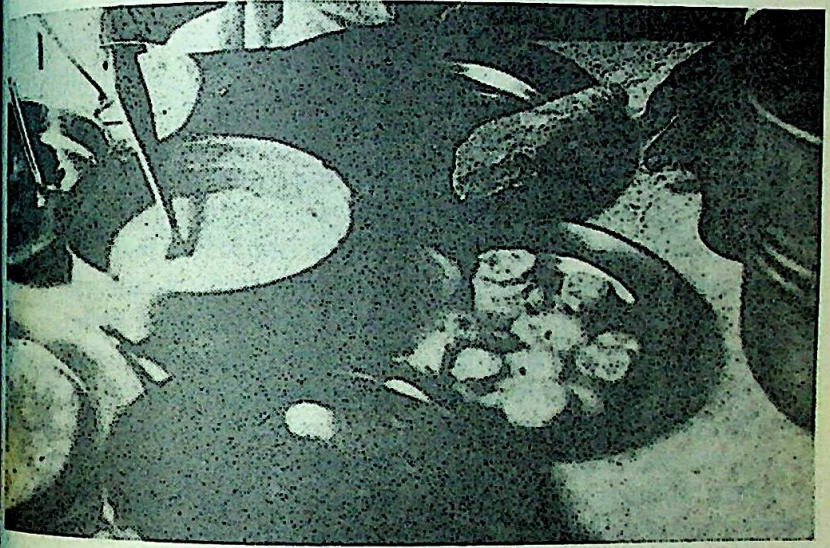

खाद्य पदार्थों को अधिक आकर्षक तथा मोहक बनाने के लिए आदमी रंगों का उपयोग सदियों से करता आ रहा है तथा करता रहेगा. पहले कृत्रिम रंगों के प्रयोग की आवश्यकता ताजे आहार के उपयोग के कारण कम थी, लेकिन आजकल किसी जलवायु में एक ही तरह की वस्तु के जरूरत से ज्यादा पैदा होने के कारण कृत्रिम रंगों का उपयोग बढ़ गया है तथा यातायात के साधन भी सुलभ हो गए हैं.

दूसरा कारण यह भी है कि जो वस्तुएं

क्या आप जानते हैं कि जिन रंगों का प्रयोग हम अपने खानपान में कर रहे हैं, वे हमें मौत के मुंह में धकेल रहे हैं?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के लिए हानिकारक हैं. खाद्य पदार्थों में जिन रंगों का प्रयोग होता है, वे खास तौर पर दो प्रकार के होते हैं—प्राकृतिक रंग और कोलतार के रंग.

प्राकृतिक रंग पौधों, फूलपत्तियों तथा फलों से बनाए जाते हैं. जो प्राकृतिक रंग खाद्य पदार्थों को रंगने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं, वे हैं कैरोटीन, क्लोरोफिल, कैरोमल, लैक्टाफ्लोवीन, अनाटो (नारंगी रंग), केसर तथा हलदी. इन रंगों में से कैरोटीन तथा अनाटो पीले रंग के लिए, क्लोरोफिल हरे रंग के लिए, कैरोमल हलके कत्थई रंग के लिए तथा लेक्टाफ्लोवीन, केसर तथा हलदी नारंगी तथा पीले रंग के लिए उपयोग में लाए जाते हैं.

यह देखा गया है कि प्राकृतिक रंग का उपयोग खाद्य पदार्थ में रंग करने के लिए महंगा पड़ता है. इसलिए आजकल ज्यादातर कोलतार के रंगों का उपयोग किया जाता है. कोलतार के रंगों के भी दो वर्ग हैं—

वैध रंग : जिन के प्रयोग पर सरकार द्वारा कोई प्रतिबंध नहीं है, पर इन का मूल्य अवैध रंगों की अपेक्षा अधिक होता है.

अवैध रंग: जिन के प्रयोग पर सरकार ने प्रतिबंध लगा रखा है, क्योंकि ये रंग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं.

कोलतार के जो रंग वैध हैं, वे निस्संदेह हानिकारक नहीं हैं. उन के नाम इस प्रकार हैं. इन में अमरंथ, कारमोसीन, पोक्यू-फोरआर, फारस्टेरड, तथा इरिथ्रोसीन लाल रंग के लिए हैं. टारट्राजोन, सनसेट यलो पीले रंग के लिए, इंडियोकारमाइन ब्रिलियंट ब्लू, जामुनी रंग के लिए तथा ग्रीन-एस-फास्ट, ग्रीन एफ सी एफ हरे रंग के लिए हैं.

ये सब पानी में घुल जाते हैं तथा थोड़े से ही रंग में से काम बन जाता है. इसलिए ये प्राकृतिक रंगों से सस्ते पड़ते हैं तथा हानिकारक भी नहीं हैं.

अवैध रंगों के प्रयोग पर सरकार ने प्रतिबंध लगा रखा है, क्योंकि ये रंग हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं. इन की संख्या अठारह है, जिन में मैटनिला यलो भी आता है जिसे हम मीठा पीला रंग कहते हैं. इस रंग का उपयोग सब से अधिक होता है. यह रंग अत्यंत हानिकारक होता है.

भारत सरकार ने खाद्य पदार्थों में मिलावट रोकने के लिए कानून बनाया है, जिस का नाम है प्रिवेंशन आफ फूड अडल्ट्रेशन एक्ट 1954. इस के अंतर्गत नियम बनाए गए हैं जिन को 'प्रिवेंशन आफ फूड अडल्ट्रेशन रूल्स 1955' कहते हैं.

इन नियमों से पता चलता है कि खाद्य पदार्थों में कौनकौन से रंग मिलाए जा सकते हैं और कौनकौन से खाद्य पदार्थ रंगे जा सकते हैं. दूध, घी, मक्खन, खोआ, दही, बेसन, दालें, चाय, सुपारी तथा विभिन्न मसालों में कोलतार के रंगों का उपयोग करना अपराध है. कोलतार के रंग का उपयोग बिस्कुट, गोली, मिठाइयों, केक, नमकीन चीजें, कारबोनेटेड वाटर, आइसक्रीम, आदि में रंगने के लिए किया जा सकता है.

खाद्य पदार्थ में कोलतार के रंग कितनी मात्रा में मिलाने चाहिए, इस का भी परिमाण है. एक किलो वस्तु में केवल 2 ग्राम कोलतार रंग मिलाया जा सकता है.

कुछ लोग अवैध रंगों को कभीकभी खाद्य पदार्थों में भी डाल देते हैं. ऐसा करना हानिकारक है. इन्हें कोलतार के मूल रंग कहते हैं. इन रंगों का मुख्य उपयोग कपड़े रंगने तथा मोमबत्ती और वार्निश बनाने के काम में ही लाना चाहिए.

मैं आप को कुछ नुस्खे बताऊंगी जिन्हें आप आसानी से घर पर आजमा सकती हैं तथा अवैध रंग के उपयोग से बच सकती हैं. यदि पीले रंग को मिठाई में आप को मैटानिला यलो यानी मीठे पीले रंग की शंका है तो आप उस मिठाई या अन्य किसी खाद्य पदार्थ को आधा या एक चम्मच भर कर एक कटोरी में लें. उस में चार चम्मच गरम पानी डालें. उसे खूब हिलाएं तथा उसे दोतीन मिनट तक रहने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चटपटा जायकेदार भोजन तो कर लिया, अब उन रंगों का असर भी देखिए

रें. बाद में ऊपर का घोल दूसरी कटोरी में लें. अब उस घोल में दो या तीन बूंदें हाइड्रोक्लोरिक एसिड डालें. यदि घोल का रंग गुलाबी हो जाए तो समझ लीजिए कि उस में मेटलिना यलो रंग है.

दूसरे रंग के मूल कोलतार रंगों को पहचानना भी कठिन नहीं है.

एक कटोरी में आधा औंस पानी लें तथा उस में थोड़ा सा यानी शक्कर के चार दाने के बराबर खाने का सोडा मिलाएं. बाद में उस में थोड़ा सा वह रंग मिलाइए जिस का आप परीक्षण करना चाहती हैं. उसे हिलाइए ताकि रंग और सोडा पानी में अच्छी तरह से घुल जाएं. अब उस में शुद्ध (नाइलोन नहीं) सफेद ऊन के छोटेछोटे तीनचार टुकड़े डालें. इस मिश्रण को तीनचार मिनट तक उबालें. ठंडा कर के ऊन को बाहर निकालें तथा ठंडे पानी से धोइए. यदि ठंडे पानी से धोने के बाद भी ऊन के टुकड़े का रंग रंगीन रहे तो वह मूल कोलतार रंग है तथा हानिकारक है.

इन सब बातों को ध्यान में रख कर यदि अच्छे तथा उपयोग किए जाने लायक रंग खरीदना हो तो खुले डब्बों में से या बिना नाम के पैकिंग डब्बों में से कभी भी रंग न खरीदें. रंग का नाम डब्बे पर पढ़ कर ही रंग खरीदें. कानून की दृष्टि से डब्बों में जो रंग है, उस पर उस का नाम होना आवश्यक है. यदि रंगों का मिश्रण होगा तो कौनकौन से रंगों का मिश्रण, है, यह भी लिखा होना आवश्यक है.

सब से अच्छा यही रहेगा कि खाने में किसी प्रकार के रंग का प्रयोग ही न किया जाए और जहां तक संभव हो, बिना रंग वाले खाद्य पदार्थ ही खाए जाएं.

वैध रंगों से भी कोई लाभ नहीं होता और बस, केवल आप को अच्छा दिखाई देने के लिए डाले जाते हैं. इन से जहां तक हो सके, बचना ही चाहिए. ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों की त्वचा कोमल होती है। जॉन्सन्स यह कोमलता बनाये रखती है।

जॉन्सन्स बेबी क्रीम यहाँ सबसे ज़्यादा असरदार है—कैसे?
हवा के झोंके, बदलता मौसम, ज़ुकाम से बहती नाक और टपकते आँसू भी बच्चे की त्वचा को हानि पहुँचाते हैं। सुकोमल **जॉन्सन्स** त्वचा द्वारा तुरंत सोख ली जाती है और रूखापन हटाकर आराम पहुँचाती है।

जॉन्सन्स बेबी क्रीम यहाँ सबसे ज़्यादा असरदार है—कैसे?
कोमल-संस्पर्श **जॉन्सन्स** कंधों को धूप में झुलसने नहीं देती, सूखी त्वचा को मुलायम बनाती है। लैनोलिन से भरपूर इसमें तैलयुक्त चिकनाई नहीं है, जिससे कपड़ों में दाग़ नहीं लगता।

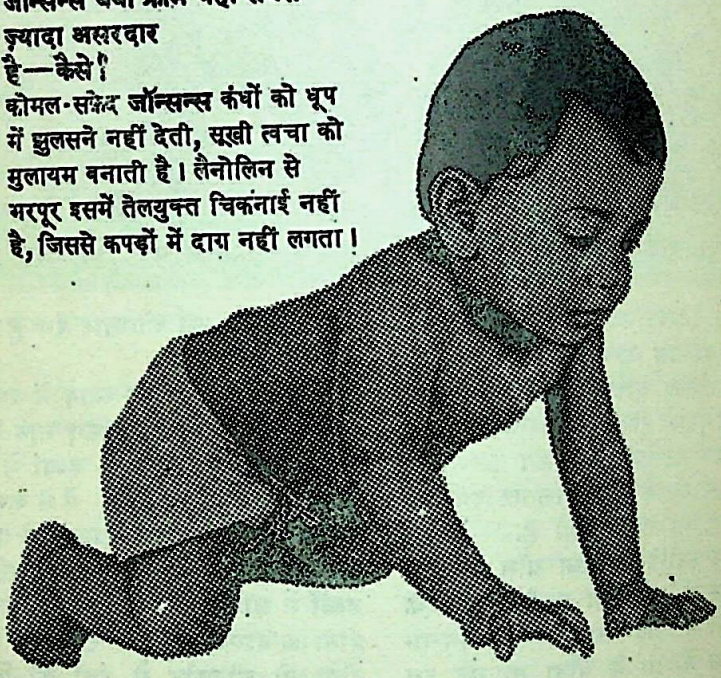

जॉन्सन्स बेबी क्रीम यहाँ सबसे ज़्यादा असरदार है—कैसे?
गीले कपड़ों को बदलने में अगर थोड़ी-सी भी देर लग जाये, तो **जॉन्सन्स** नमी को रोकती है, बच्चे का बदन सूखा रखती है; लेकिन रोम-छिद्रों को बन्द नहीं होने देती।

जॉन्सन्स बेबी क्रीम यहाँ सबसे ज़्यादा असरदार है—कैसे?
रेंगने पर बच्चे के घुटने और कुहनियाँ जब रगड़ खाकर छिलने लगते हैं तो झटपट असरदार **जॉन्सन्स** रूखेपन को मिटाती है, त्वचा को रेशम-सा मुलायम बनाये रखती है।

OBM/7190 R HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जॉन्सन्स* बेबी क्रीम

दुनिया भर की माताएँ इसपर भरोसा करती हैं!

*Trade Mark © J&J 78

Johnson & Johnson*

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ख़बर गर्म है ज़ीनत की चाहत की

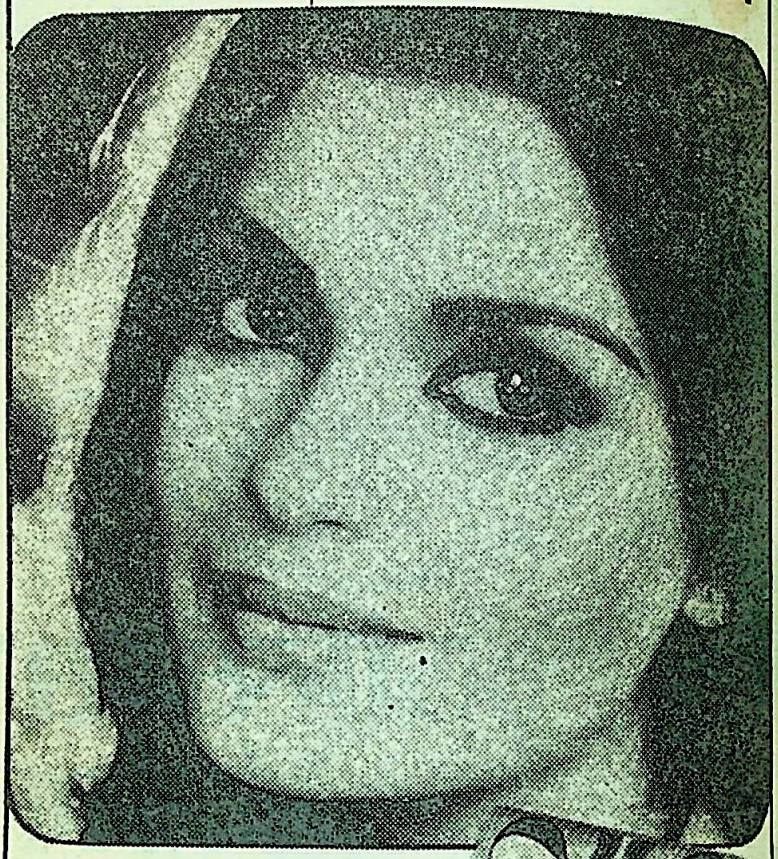

रुमानी पार्टियों में खो जाना चाहती है.
जज़बाती गीत लिखना चाहती है.
पुराने-पुराने टेलीफ़ोन जमा
करना चाहती है.
सबको बताना चाहती है
अपनी खूबसूरती का राज़—लक्स.

"लक्स...आपके रंगरूप को कोमल
और खूबसूरत बनाये रखने का एक
ही उपाय", ज़ीनत अमान कहती है.

शुद्ध, सौम्य लक्स-
फ़िल्मी सितारों का सौंदर्य साबुन

Zeenat Aman

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का एक उत्कृष्ट उत्पादन

HLL. 3068

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीपावली का पुण्य पर्व था. पास-पड़ोस के घर प्रकाश से जगमगा रहे थे, पर अरविंद ने अपने कमरे में भी रोशनी नहीं की थी. वह पति की प्रतीक्षा में खिड़की के पास आ बैठी थी. अपने विचारों में वह इतना खो सी गई थी कि उसे इस बात की भी सुधि न रही कि अंधेरा घिर आया है और आसपास के घर दीपों से जगमगा उठे हैं.

वह इस समय अपने पितृगृह के बारे में सोच रही थी. कितने उत्साह और उमंगों से भरा होगा वह घर. दो दिन पहले से मां

पासपड़ोस के घरों में जगमगाते दीए देख कर अरविंदा का मन गम के अंधेरों में डूबने लगा था. पर तभी रशीद ने आ कर उस की दीवाली को जगमगा दिया.

कहानी • सुषमा माथुर

उपहार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

का कमरा ही रसोईघर बना हुआ होगा. प्रति वर्ष की तरह इस साल भी मां ने ढेर सारे पकवान बनाए होंगे. उसे मां के हाथ की बनी बादाम की बरफी बड़ी स्वादिष्ट लगती थी और मां भी उस का खयाल कर हमेशा इसे बनाती थीं. छोटे बहनभाई ऐसे अवसरों पर मां पर पक्षपात का दोषारोपण करने से नहीं चूकते थे और मां हंस कर रह जाती थीं. कभी उन के आक्षेपों का विरोध नहीं करती थीं और आज उसी मां ने उसे अपने हृदय से इतना दूर कर दिया है. उस का अपराध क्या है? यही न कि उस ने रशीद से विवाह कर लिया है.

उस के मुंह से एक उसांस निकल गई. उसे स्मरण हो आया कि जब उस ने रशीद से विवाह करने की इच्छा व्यक्त की थी तो घर में कैसा कोहराम मचा था. मां कुछ देर सन्न सी रह गई थीं. फिर जोर-जोर से रो कर उन्होंने अपने को ही कोसना आरंभ कर दिया था. उन्हें स्वप्न में भी यह खयाल नहीं आया था कि जिस पुत्री को उन्होंने इतने लाड़प्यार से पाला वही एक दिन उन के मुख पर इस प्रकार कालिख लगाने को तत्पर हो जाएगी.

यद्यपि पिता की आय बहुत नहीं थी, फिर भी उन्होंने अपनी सुखसुविधा का खयाल न कर उस की प्रत्येक इच्छा को पूर्ण करतें का प्रयत्न किया था. पिताजी उस समय क्रोध से आग बबूला हो गए थे. स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि वह अपने जीवित रहते यह विवाह नहीं होने देंगे.

एक बार मां को कुछ अच्छे मूड में देख कर उस ने उन्हें अपनी भावनाओं से अवगत कराने का प्रयत्न किया था. उस ने उन्हें समझाना चाहा था कि जाति और धर्म को ले कर उस के विवाह में रुकावट डाल कर वह उस पर ही नहीं, समूचे देश पर अन्याय कर रही हैं. उस ने दलील दी थी कि वे लोग दो वर्ष से उस के लिए वर की खोज कर रहे हैं, पर अभी तक सफल नहीं हो पाए. किसी को उन की पुत्री में रूप की कमी प्रतीत होती है तो किसी को मांग

"चलो रशीद, मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूं. ससुराल से बेटी क्या बिना बुलाए आएगी," विपिन बाबू दृढ़ स्वर में बोले.

और पिता की देने की शक्ति में तालमेल नहीं बैठता.

उस ने मां से रो कर पूछा था कि क्या वह रशीद में एक भी ऐसी कमी बता सकती हैं जिस के कारण वह उन का दामाद बनने के अयोग्य सिद्ध होता है. या केवल विधर्मी होना ही उस का इतना बड़ा अपराध है, जिस की सजा उसे उस का प्रेम छीन कर दी जाएगी? किंतु मां पर इन सब तर्कों का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा था. इस के जवाब में मां ने रोरो कर उसे याद दिलाना आरंभ कर दिया था कि उन्होंने उस के लिए क्या कुछ नहीं किया है.

इस पर अरविंदा ने निश्चय कर लिया था कि वह आजीवन अविवाहित ही रह जाएगी. मातापिता को अप्रसन्न कर वह अपनी गृहस्थी बसाए, उस के हृदय ने यह गवारा नहीं किया था. रशीद भी उस के इस निर्णय से सहमत था. वह नहीं चाहता था कि उस से विवाह कर अरविंदा आजन्म अपराध भावना की शिकार बनी रहे. अरविंदा ने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया. क्योंकि वह जानती थी कि रशीद के सामने रह कर वह अपने निश्चय पर नहीं टिकी रह सकेगी. पर वहां उस से दूर रह कर भी उसे भुला नहीं सकी.

घर में बैठेबैठे उसे प्रति पल रशीद का ही ध्यान आता रहता. उस का व्यक्तित्व भी सामान्य न हो पाया. उस के और मातापिता के बीच जो दीवार खड़ी हो गई थी वह रशीद से अलग हो कर गिरी नहीं बल्कि ऊंची ही उठती गई. वह अपने हृदय में मातापिता को अब वह मान न दे पाती जो अब तक देती आई थी. अनचाहे ही यह विचार व्यथित कर जाता कि मातापिता को उस की खुशी से अधिक अपनी मान्यताएं प्यारी हैं. यदि सचमुच ही उन को उस से स्नेह था तो क्या वे उस के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

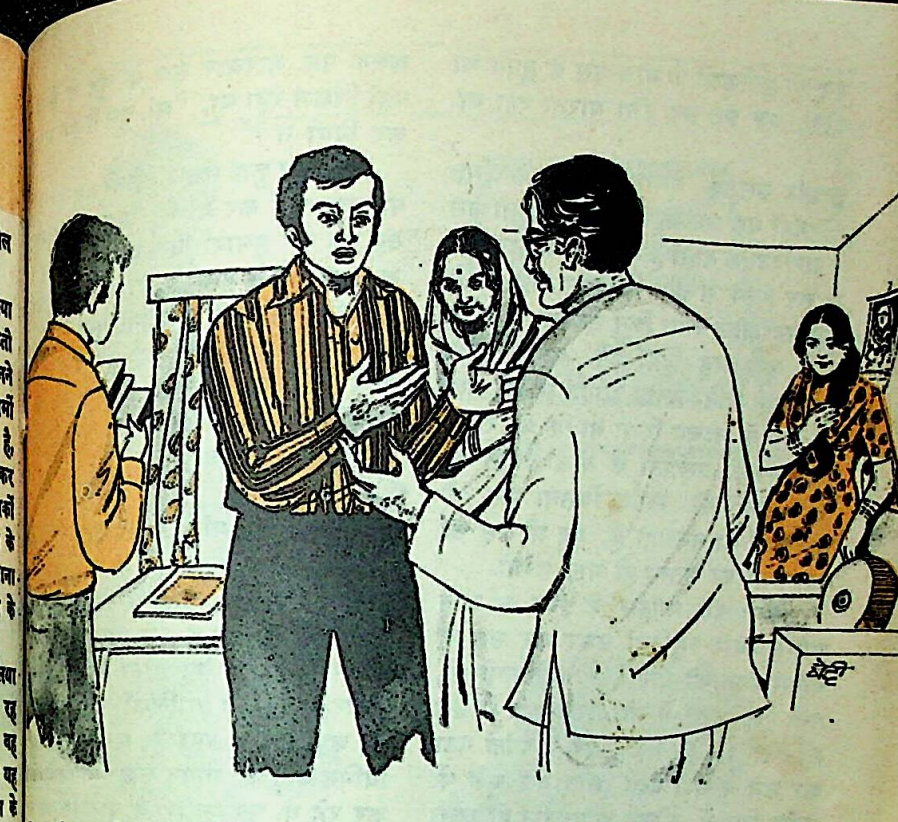

की आडंबरवादी धारणाओं का मुकाबला नहीं कर सकते थे?

फिर एक दिन उसे समाचार मिला कि रशीद का एक्सीडेंट हो गया है और वह गंभीरावस्था में एक स्थानीय हस्पताल में भर्ती है. वह अपने पर नियंत्रण न रख सकी. उस ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वह रशीद के पास जा रही है. मांबाप भी उस समय उस का रुख देख कर उसे रोक न सके थे.

हस्पताल में उसे देख रशीद कितना प्रसन्न हो उठा था, क्या वह कभी भूल सकती है. डाक्टर का कहना था कि उस की परिस्थिति रशीद के लिए संजीवनी सिद्ध होगी. उस के हृदय में मातापिता का हृदय दुखाने की जो थोड़ीबहुत अपराध भावना थी, डाक्टर के इस कथन से दूर हो गई. रशीद को जब यह ज्ञात हुआ कि वह अपने मातापिता की इच्छा के विरुद्ध चली आई है तो वह अप्रसन्न हो उठा था. उस ने उसे सलाह दी थी कि वह घर लौट जाए पर वह अपने निश्चय पर दृढ़ रही थी. उस का कहना था कि लड़की जब एक बार मातापिता का घर छोड़ देती है तो फिर उस का वहां कोई स्थान नहीं रह जाता.

विवाह के दिन मातापिता से आशीर्वाद पाने की कामना संजो कर उस ने घर पर टेलीफोन किया था, किंतु मां ने यह कह कर टेलीफोन रख दिया था कि उन से अब उस का कोई संबंध नहीं रहा. शाम को जब उन के द्वारा आयोजित पार्टी में उन की मित्रमंडली उन्हें शुभकामनाएं दे रही थी और यह आशा व्यक्त कर रही थी कि भविष्य में भारत में ऐसे विवाह आम हो जाएंगे तब मातापिता की अनुपस्थिति के कारण याद कर वह बहुत रोई थी. उस की दृष्टि बारबार हाल के दरवाजे पर चली जाती थी. उसे तब भी आशा थी कि शायद मांबाप का क्रोध शांत हो जाए और वे आ जाएं. यदि वे अपने स्वाभिमान के कारण न भी आएं तो शायद बहन सुमि और भाई विराज को ही भेज दें. परंतु उसे निराशा ही हाथ लगी थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस की हंसीखुशी के बीच उस के हृदय का कोना एक अंत तक टीस मारता रहा था.

रशीद उस के मनोभावों से अनभिज्ञ नहीं था. जब मेहमान चले गए तो उस ने अरविंदा के दोनों हाथों को अपने हाथों में ले कर हलके से दबा दिया था. वह मुंह से कुछ नहीं बोल पाया किंतु उस की आंखों ने बहुत कुछ कह दिया था. अरविंदा का हृदय एक अनिर्वचनीय आनंद से भर गया था. उस ने निश्चय किया था कि वह रशीद और अपनी प्रसन्नता के बीच अतीत को नहीं आने देगी. रशीद जितना उस की भावनाओं को समझता है, वह भी उस की भावनाओं का उतना ही मान करेगी.

आज इस त्योहार के दिन न जाने क्यों बारबार स्मृतियां उभर कर उस के मानस पटल को आंदोलित करने लगी थीं, तभी एक पटाखे के जोरदार धमाके से उस की तंद्रा भंग हो गई. अंधेरे में आंखें गड़ा कर उस ने घड़ी देखी, सात बज चुके थे. रशीद दिन में भोजन के पश्चात ही चला गया था. यद्यपि वह कारण बता कर नहीं गया था, पर अरविंदा उस के स्वभाव से परिचित थी. जानती थी कि वह उस के लिए मिठाइयां, आतिशबाजी का सामान और मोमबत्ती इत्यादि ले कर ही लौटेगा. पर इन सब चीजों को लाने में इतनी देर तो नहीं लगनी चाहिए. एक अज्ञात आशंका से उस का हृदय कांप उठा. वह अपने हृदय को तरहतरह से समझाने का प्रयत्न करने लगी. तभी घंटी की आवाज सुन कर उस ने दौड़ कर दरवाजा खोला. सामने रशीद खड़ा था. वह कुछ कहे, इस से पहले ही उसे सुमि का स्वर सुनाई पड़ा.

"यह क्या जीजाजी, जीजी, दीवाली के दिन घर में अंधेरा किए बैठी हैं ?"

"अरे सुमि, तू !" उस के मुख से विस्मय भरी चीख सी निकल गई. विराज उस से आ कर चिपट गया था. सामने उस के मातापिता खड़े थे. भाई के सिर पर प्यार से हाथ फेर कर वह मां से जा कर लिपट गई. हर्षातिरेक से उस की आंखों से आंसू छलक पड़े. बारबार उस के मुंह से केवल यही निकल रहा था, "मां, तुम ने मुझे क्षमा कर दिया न ?"

मां जब कुछ स्वस्थ हुईं तो उस की पीठ पर हाथ फेर कर बोलीं, "पगली, बारबार यह कह कर हमारा दिल क्यों दुखाती है? चल, जल्दी से हाथमुंह धो कर तैयार हो जा. दीवाली नहीं मनाएगी क्या ?"

खुशी से नाचती हुई अरविंदा अंदर चली गई. रशीद बोला, "जब तक आप तैयार हो रही हैं, चलिए, आप हमारा घर ही देख लीजिए."

o

अरविंदा की मां का मत था कि मकान कभी निर्जीव नहीं होता. वह अपने आगोश में बसने वालों के बारे में कुछ न कुछ बोलता रहता है. इस समय वह अनुभव कर रही थीं कि वह छोटा सा घर पुकार-पुकार कर अपने मालिकों की सुखानुभूति की कहानी कह रहा है. अरविंदा के पिता विपिन बाबू भी शायद कुछ ऐसा ही अनुभव कर रहे थे. वह माधुरी के पास खिसक कर धीमे स्वर में बोले, "माधुरी, देखो घर की प्रत्येक वस्तु से आभास मिलता है कि रशीद अरविंदा की सुखसुविधा का बहुत खयाल रखता है. अब तुम अपने मन में किसी प्रकार का मलाल न रखो. जातिधर्म और धर्म यदि मिल भी जाएं, पर हृदय न मिलें तो मन का सही सुख कभी नहीं मिलता. हृदय का मिलन ही वास्तविक गठबंधन है."

"आप ठीक कह रहे हैं. मैं ने कई ऐसे देखे हैं जहां मातापिता ने बहुत खोजबीन कर बड़ीबड़ी आशाएं ले कर अपने बच्चों का विवाह किया, परंतु संतान को सुखी और प्रसन्न देखने का संतोष नहीं पा सके. और देखिए न, बातचीत, व्यवहार और रहनसहन से ऐसा नहीं लगता है कि ये हमारे बच्चों से भिन्न हैं?"

"नहीं, बल्कि मैं तो सोचता हूं कि हम से अधिक हमारे त्योहार का महत्व समझता है. हम अपने स्वजनों को त्योहार पर भौतिक वस्तुएं ही उपहार में दे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

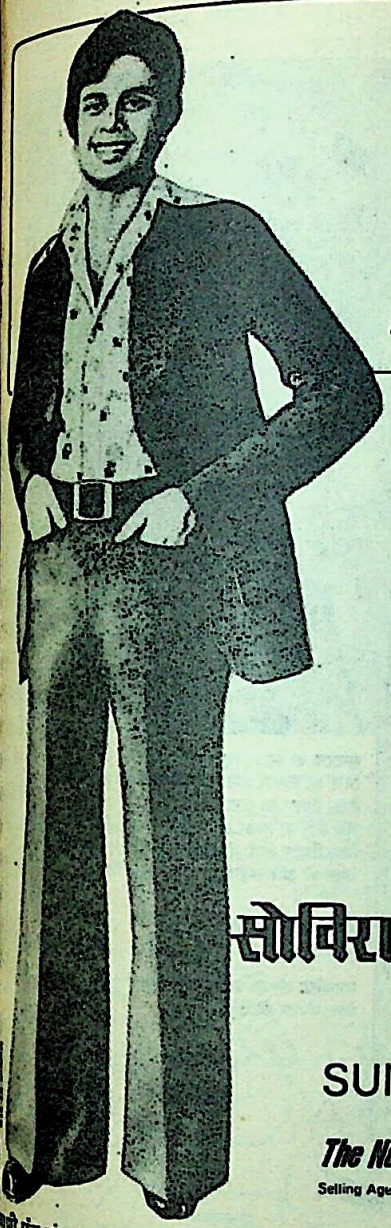

Kimatrai's

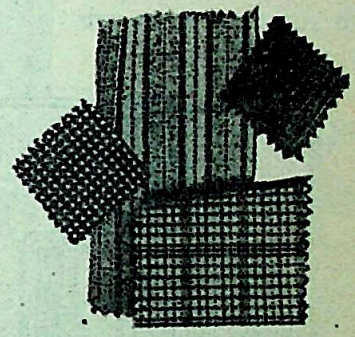

सोविराना सुटिंग्स और शर्टिंग्स

Sovirana®

SUITINGS & SHIRTINGS

The Nanikram Sobhraj Mills Pvt. Ltd., Ahmedabad.

Selling Agents: J. KIMATRAI & CO., BOMBAY-AHMEDABAD-DELHI.

...ी एंड कं., कानपुर ✦अमृत टैक्सटाइल्स, पटना ✦शाह हरीलाल भीखाभाई, बंगलौर ✦बंबई सिल्क ..., बंगलौर ✦लिबर्टी एजेंसीज, जयपुर ✦के. सी. मेहरा, गया ✦किशनचंद एंड संस, मद्रास ✦डूगर ...टाइल्स, रायपुर ✦के. एन. परमशिवन, मदुराई ✦माधवी एंटरप्राइज, अमृतसर ✦हरीप्रसाद सोहनलाल, कलकत्ता ✦खन्ना सिल्क, दिल्ली ✦सतीश टैक्सटाइल्स, नागपुर ✦

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैक्स फ़ैक्टर की देन

ब्यूटी प्लस

मुफ़्त
आई-ब्रो पेन्सिल—
जब भी आप ख़रीदें
क्रीम पफ़
रीफ़िल

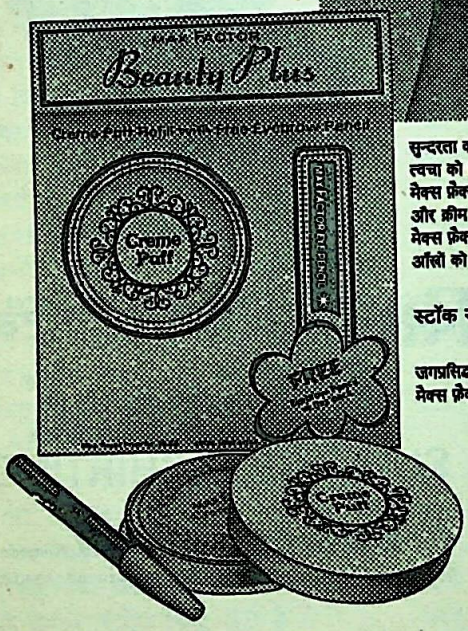

सुन्दरता का साधन ब्यूटी प्लस। इस पैक में है त्वचा को दिनभर चमकती-दमकती रखने का मेक-अप, मैक्स फ़ैक्टर का जगप्रसिद्ध क्रीम पफ़—पाउडर और क्रीम का हल्का और मनोरम मिश्रण और साथ में मूल्य मैक्स फ़ैक्टर आई-ब्रो पेन्सिल ...आपकी सुन्दर आँखों को और अधिक सुन्दर बनाने के लिए।

स्टॉक सीमित है.

जगप्रसिद्ध सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माता
मैक्स फ़ैक्टर की देन।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संतुष्ट हो जाते हैं, परंतु आज उस ने हमारे सारे परिवार में कितनी उदारता से खुशियों का उपहार बांटा है."

"हां, यदि वह हमारे घर न आता तो क्या इस समय हम इतने प्रसन्न होते?"

रशीद जब घर से निकला तब उस के मन में द्वंद्व मचा हुआ था. वह जानता था कि अरविंदा ने उस से अपनी इच्छा से विवाह किया है, इसलिए अपने मातापिता और भाईबहन से स्नेह करते हुए भी वह उस के सामने उन की कभी चर्चा नहीं करती. किंतु दीवाली के इस त्योहार ने उस की इस भावना को फिर उजागर कर दिया है. वह चाह कर भी अपने पितृगृह को नहीं भूल सकी है. उस का रहरह कर उदास होता चेहरा यह साफ बतला रहा है कि रशीद से विवाह कर के भी वह एक अभाव का अनुभव कर रही है.

रशीद सोचने लगा, 'क्या मुझे इस अभाव को दूर करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए? मगर...मगर मैं ऐसा करूं तो कैसे?' सोचतेसोचते उस के कदम अरविंदा के मातापिता के घर की ओर बढ़ चले. उस ने निश्चय कर लिया कि भले ही अरविंदा के मातापिता उस का अपमान करें, पर वह अरविंदा की खुशी के लिए उन के घर अवश्य जाएगा और उन से अरविंदा को अपनाने का अनुनय करेगा.

रशीद ने जैसे ही विपिन बाबू के घर पहुंच कर कालबेल बजाई, विराज ने दरवाजा खोला. वह रशीद को देख कर हक्काबक्का रह गया. रशीद हंस कर बोला, "कहो दोस्त, क्या पहचाना नहीं? मैं तुम्हारा जीजा हूं."

"हैलो जीजाजी, कैसे आना हुआ?" विराज कहने को तो कह गया लेकिन साथ ही इस दुविधा में भी उलझ गया कि रशीद को अंदर आने के लिए कहे या नहीं.

उस के मन का संशय दूर करते हुए रशीद ने कहा, "दीवाली के दिन कोई किसी के घर क्यों आता है? देखो, मैं तुम्हारे लिए क्या लाया हूं."

रशीद उस के हाथों में पटाखे और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिठाई के डब्बे थमाते हुए प्यार से उस का कंधा थपथपाते हुए अंदर प्रवेश कर गया. विराज में एकाएक गति आ गई. उस ने घर के अंदर जा कर रशीद के आने की सूचना दी, लेकिन वह इस बात से डर रहा था कि उस के पिता उस पर इस बात से कहीं नाराज न हो जाएं कि उस ने रशीद को घर में क्यों घुसने दिया. परंतु इस खबर से पिता के मुंह पर क्रोध के भाव न पा कर विराज ने कुछ संतोष की सांस ली.

हाथ का समाचारपत्र मेज पर रखते हुए वह बोले, "क्या कह रहे हो, विराज, रशीद आया है? अरे, वह क्यों आएगा."

मां बैठी दोयों के लिए बत्तियां बट रही थीं. वह भी स्तब्ध सी पुत्र की ओर देखती रह गईं. फिर पति के समीप आ कर बोलीं, "त्योहार का दिन है, घर आए मेहमान का अपमान नहीं करना चाहिए."

विपिन बाबू खड़े होते हुए बोले, "भला मैं क्यों किसी का अपमान करने लगा. इस अवसर पर तो पराए भी अपने होते हैं. आओ, उस के पास चलें."

ड्राइंग रूम में घुसे तो रशीद को फ्रेम में लगे अरविंदा के चित्र के सामने खड़ा पाया. विपिन बाबू को अपनी ओर आते देख कर रशीद शीघ्रता से उन के पास पहुंच कर बोला, "आप सब को दीवाली मुबारक हो." और मुसकरा कर उस ने अपना हाथ श्वसुर की ओर बढ़ा दिया. उस का हाथ हवा में ही लटका रह गया. उसे श्वसुर के हाथ का सहारा न मिला. रशीद के होंठों की मुसकराहट बुझ सी गई. वह आगे बढ़ा हाथ धीरे से अपनी ओर खींचने लगा, तभी विपिन बाबू ने लपक कर उस का हाथ अपने हाथों में थाम लिया. रशीद के मुंह पर घिर आए निराशा के बादल तुरंत साफ हो गए. श्वसुर की आत्मीयता पा कर उस की आंखों में आया पानी भाप बन कर उड़ गया. उस ने सास के आगे हाथ जोड़ विनीत भाव से कहा, "मैं आप सब को अरविंदा और अपनी ओर से दीवाली की शुभ कामनाएं देने आया हूं."

माधुरी देवी ने नमस्कार का उत्तर तो दिया, परंतु संकोचवश आशीर्वाद न दे पाईं.

रशीद बोला, "मेरा विचार ठीक ही था. मैं यही सोच कर आया था कि आज के शुभ दिन आप लोग मुझे अवश्य ही स्वीकार कर लेंगे.

"मैं अरु से भी कहता रहता हूं कि जो होना था वह तो हो ही गया, अब चल कर पिताजी से क्षमा मांग लो. वह उदास हो चुप रह जाती है. पगली नहीं जानती कि मातापिता का हृदय कितना कोमल होता है. संतान रुष्ट हो सकती है परंतु माता-पिता उन से कभी द्वेष नहीं रख सकते. अपने नेत्रों से भले ही संतान को दूर कर दें, लेकिन हृदय से नहीं निकाल सकते."

फिर वह अरविंदा के चित्र की ओर संकेत करते हुए बोला, "अब देखिए न, इतना सब होते हुए भी आप लोग इस चित्र को इस स्थान से नहीं हटा पाए. जब इस निर्जीव चित्र को आप लोग स्थानच्युत नहीं कर पाए तो क्या उस पुत्री को, जिसे बीस साल तक इतना लाड़प्यार से पाला है, आप लोग भुला सकते हैं? मैं आप के अंतर्द्वंद्व को भली भांति समझ सकता हूं. एक ओर आप अपनी बेटी के सामने झुकना नहीं चाहते क्योंकि आप का स्वाभिमान और बड़प्पन आड़े आता है, दूसरी ओर उसे खो कर भी आप दुखी हैं. आप का यह सोचना उचित भी है. हम छोटे हैं, गलती हम ने की है, तब क्षमा भी हमें ही मांगनी चाहिए."

रशीद रटे हुए सबक की तरह बोलता जा रहा था. दोनों पतिपत्नी उसे विस्फारित नेत्रों से देख रहे थे. माधुरी की आंखें गीली हो आई थीं. गले में कुछ अटकने लगा था. बोलने के लिए मुंह खोला, लेकिन शब्द नहीं निकले. रशीद को आभास मिला, वह निरर्थक ही नहीं बक रहा है. बोला, "मांजी, पतिपत्नी एकदूसरे के कार्यों के लिए उत्तरदायी होते हैं. इसी लिए अरविंदा की ओर से मैं क्षमा मांगने आया हूं."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीन महीनों बाद- सिर्फ़ दूध काफ़ी नहीं है.

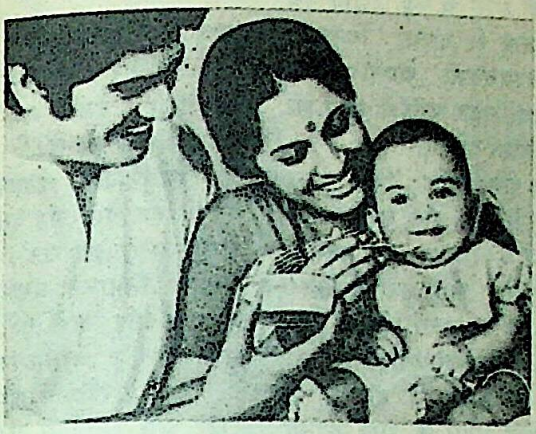

डॉक्टरों की सिफ़ारिश है

फ़ैरेक्स®

आपके मुन्ने का
आदर्श ठोस आहार

डाक्टर फ़ैरेक्स की सिफ़ारिश क्यों करते हैं? क्योंकि यह आपके मुन्ने की पहले ठोस आहार की जरूरत पूरी करने वाला पूर्णतया संतुलित आहार है. फ़ैरेक्स में आपके मुन्ने के दिमाग़ और शरीर के विकास के लिए पचने में आसान सही प्रोटीन है, शक्ति देने वाले कार्बोहाइड्रेट्स हैं और दांतों तथा हड्डियों को मज़बूत बनाने के लिए पर्याप्त केल्शियम, फ़ास्फ़ोरस और विटामिन डी हैं. साथ ही फ़ैरेक्स में सबसे अधिक महत्व की चीज़ है सही मात्रा में आयरन, जो आपके मुन्ने के ख़ून को स्वस्थ बनाये रखता है.

फ़ैरेक्स विशेष रूप से मुन्ने की पाचन शक्ति के अनुरूप बनाया जाता है क्योंकि तीन महीने का होने पर भी मुन्ने की कोमल पाचन शक्ति प्रचलित आहारों को पचा नहीं सकती. साथ ही फ़ैरेक्स आपके मुन्नेमें सही तरीके से चबाने की आदत डालने और भोजन को ठीक से पचाने में मदद देता है.

और अब, फ़ैरेक्स का नया २०० ग्राम का पैक भी उपलब्ध है, ख़ासी बचत... और गुणों का भंडार!

मुन्ने का आदर्श ठोस आहार जल्द और सर्वांगीण विकास के लिए

विटाम - GLF 40-1810 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भावातिरेक से उस का गला भर्रा गया था.

उस के मां संबोधन में न जाने क्या बात थी कि माधुरी के आंसू चू पड़े. रशीद रुंधे गले से विपिन बाबू से बोला, "पिताजी, आज के दिन रामचंद्रजी अपना प्रवास समाप्त कर अयोध्या लौट आए थे. आप भी अपनी पुत्री को लौटा लाइए."

रशीद द्वारा अपने प्रति 'पिता' शब्द के संबोधन पर विपिन बाबू चौंके. उन्हें अपने कर्त्तव्य का बोध हुआ. वह हड़बड़ा कर बोले, "अरे, तुम अभी तक खड़े हो? बैठो न." कहते हुए वह स्वयं भी बैठ गए.

रशीद बैठते हुए बोला, "मैं ही जानता हूं अरु के हृदय की पीड़ा को. वह मुंह से नहीं बोलती, किंतु हृदय के भाव जबतब उस की आंखों से आंसू बन कर ढलकने लगते हैं."

विपिन बाबू को कुछ देर अपने को संयत करने में लगा. फिर वह दृढ़ स्वर से बोले, "याद है, माधुरी, जब अरविंदा का जन्म हुआ था, तब सब ने यही कहा था कि घर में लक्ष्मी का आगमन हुआ है. आज भी हम लक्ष्मी के आगमन का ही तो आयोजन कर रहे हैं. दीवाली के उपलक्ष्य में हम घर से ही नहीं हृदय से भी मैल निकाल देते हैं," फिर रशीद से बोले, "चलो रशीद, मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूं. ससुराल से बेटी क्या बिना बुलाए आएगी?" और वह अपने स्थान से खड़े हो गए.

माधुरीदेवी अपने नेत्रों से आंसू पोंछते हुए बोलीं, "कैसी बातें करते हो जी. आज पहली बार दामाद हमारे घर आए हैं. क्या उस का मुंह भी मीठा नहीं कराओगे? और अकेले आप ही क्यों हम सभी वहां चलेंगे." और रशीद के स्वागतसत्कार के बाद विपिन बाबू का पूरा परिवार उस के घर आ गया था.

मां के आदेश पर अरविंदा तैयार हो कर उन के सामने आ कर इठलाती हुई बोली, "देखो, मां, मैं तैयार हो गई. अब तो खुश हो न?"

माधुरीदेवी अपलक पुत्री को देखती रह गईं. वह आंतरिक प्रसन्नता से आत्मविभोर हो उठीं. मां को अपनी ओर एकटक निहारते देख अरविंदा संकुचित हो उस ओर चली गई, जहां विराज और सुमि दीए व मोमबत्तियां जला रहे थे.

वहां अरविंदा को देख कर बोला, "अरे, तुम रसोई में जा कर कुछ खानेपीने की व्यवस्था करो. सब लोग यहीं भोजन करेंगे."

माधुरीदेवी ने रशीद की आवाज सुन कर कहा, "कैसी बातें करते हो, बेटा आज तो तुम लोग हमारे साथ चलो. घर पर मैं सब तैयार कर आई हूं."

विपिन ने देखा रशीद का मुख फीका पड़ गया है. उन्हें शंका हुई कि वह सास की बातों का कोई गलत अर्थ न लगा ले. अतः अरविंदा से बोले, "अरविंदा, कैसी लड़की है तू. मैं कब से सोच रहा हूं, तू मिठाई नहीं तो कम से कम चाय तो पिलाएगी. पर तुझे तो फुरसत ही नहीं है."

अरविंदा, "ओह, सारी पापा." कह कर वह रसोई की ओर भागी. सैकड़ों दीपक उस की आंखों में झिलमिला उठे थे. वह सोच रही थी, यह दीवाली उस के लिए कितनी शुभ है. क्या कोई और पति इतना अच्छा उपहार अपनी पत्नी को दे सकता है ?

मीत की बांहों में

प्रीत की उमड़ी घटा,
जुल्फ की छाओं में आ,
रखा है आहों में क्या,
मीत की बांहों में आ.

—मजबूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घर में नयी चहल-पहल लाने के लिये बिछाइये

लिनोलियम

सुन्दर फर्श बिछावन

अपनी पंसद व चाहत के अनुरूप विभिन्न डिजाइन व रंगों में से चुन लीजिये.

- ★ बिछाने व साफ करने में आसान
- ★ स्वस्थ-परिवेश की शान
- ★ शोर-शराबे का हो न गुमान
- ★ अग्नि अवरोधी
- ★ मजबूत व दीर्घोपयोगी
- ★ चार मनोरम किस्मों में उपलब्ध : प्लेन, जैस्पी, मोयरलेक्स व प्रिंटेड लिनोटाइल्स भी प्राप्य हैं.

अपने निकटतम लिनोलियम डीलर से परामर्श करें.

ये क्वालिटी उत्पादन प्रस्तुत करते हैं :

इण्डिया लिनोलियम्स लिमिटेड

९/१, आर० एन० मुखर्जी रोड,
कलकत्ता ७०००० १
फोन : २२-३४९५

CC/IL-3/78 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

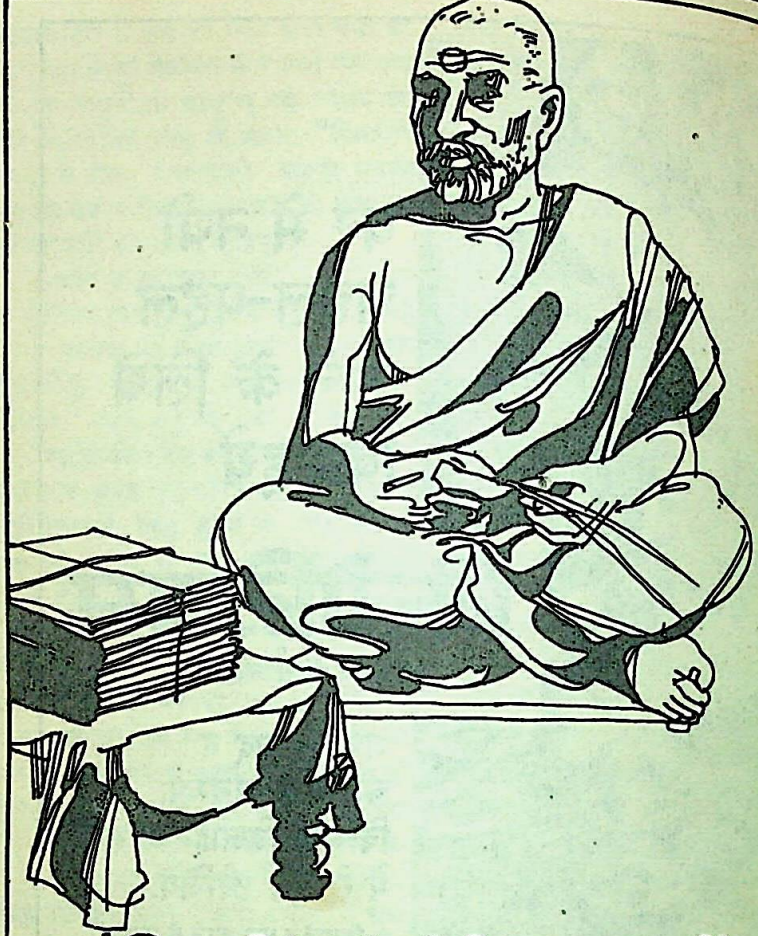

पंडित जी! खांसी के चक्कर में शादी का मुहूर्त न निकल जाए!

वोकासिल

हमेशा पास रखिए.

खराश-खांसी से झट
आराम के लिए,
छः आवश्यक तत्त्वों से बनी–
हरी, चौकोर टिकिया.

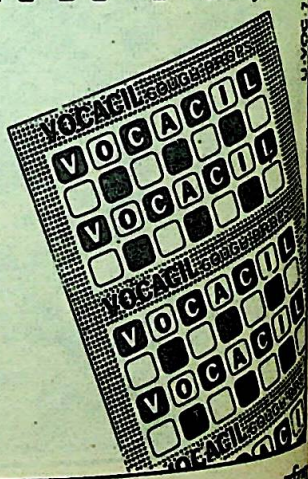

वो का सि ल

स्वाद भी दे, आराम भी दे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारा दर्द के मारे बुरा हाल था और डाक्टर हनुमान चालीसा ढूंढ़ने में लगे थे. आखिर तंग आ कर हम ने भी एक निर्णय ले लिया...

हनुमान चालीसा और मेरा ऑपरेशन

वह मैं समाचारपत्र पढ़ रहा था कि अचानक मेरे पेट में दर्द शुरू हो गया. दर्द इतना भयंकर था कि मुझ से खा नहीं जा रहा था. ऐसा लग रहा था कि र्द के मारे मैं बेहोश हो जाऊंगा. तभी मेरी ली सलमा आ गई. उस ने मेरी हालत खी तो वह एकदम घबरा गई. घर में ोई था नहीं. अतः वह जल्दी से पड़ोसी को ला कर ले आई. बेचारे बहुत शरीफ आदमी हैं. उन्होंने मेरी हालत देखी तो तुरंत तांगा मंगवाया और मुझे हस्पताल ले गए.

वहां मरीजों की लंबी लाइन देख कर मेरी हालत और भी खराब हो गई. डाक्टर नियम का पक्का था. वह नंबर आने पर ही रोगी को देखता था. एक जगह ढूंढ़ कर मैं बैठ गया. काफी देर के बाद एक रोगी बाहर निकला. उस के बाद दूसरा रोगी गया. उसे भी काफी समय लग गया. मेरी पत्नी से रहा न गया. उस ने एक सज्जन से पूछा, "क्यों, भाई साहब, यह डाक्टर हर मरीज को इतनी देर क्यों लगाता है?"

वह बेचारे भी काफी देर से खड़े थे. वह बोले, "मुझे क्या मालूम, चपरासी से पूछिए."

सलमा चपरासी के पास गई. पूछने पर उस ने बताया, "डाक्टर साहब हर पेचीदा केस को हनुमान चालीसा पढ़ने के बाद देखते हैं."

सलमा को हंसी आ गई. उसे हंसता देख कर चपरासी ने कहा, "देखिए, हंसिए

व्यंग्य • कमलजीत सिंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं. हनुमान चालीसा अब मेडिकल कोड में आ चुका है. स्वास्थ्य मंत्री का हुक्म है कि हर डाक्टर आपरेशन करने से पहले हनुमान चौलीसा पढ़े."

सलमा को और हंसी आ गई. उस ने हंसी रोकते हुए कहा, "आखिर क्यों?"

"ऊपर से आदेश आए हैं." वह झल्ला कर बोला, "और अगर आप अब हंसीं तो आप के मरीज को नहीं देखा जाएगा."

सलमा ने मुझे आ कर बताया. मुझे विश्वास न हुआ. मैं ने कहा, "चपरासी मजाक कर रहा होगा."

"नहीं, वह तो बहुत संजीदा था." कह कर वह फिर हंसने लगी.

मेरा नंबर आ ही गया. डाक्टर के चैंबर में घुसा. उन्होंने पूछा, "सीरियस केस है या ऐसे ही..."

"पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा है," मैं ने कहा. इतना कहना था कि उन्होंने मेज पर रखे हनुमान चालीसा को उठाया और लगे पढ़ने—"जै हनुमान ज्ञान..."

मेरे आश्चर्य की सीमा न रही. मैं ने उन्हें बीच में ही टोकना चाहा, "यह आप क्या कर रहे हैं?"

उन्होंने हनुमान चालीसा पढ़ते हुए इशारे से उंगली मुंह पर ले जा कर चुप रहने के लिए कहा. वह एक ही सांस में पूरा हनुमान चालीसा पढ़ गए. ऐसा लग रहा था कि उन्होंने पूरा हनुमान चालीसा रेट रखा है. उस के बाद उन्होंने मेरी ओर दृष्टिपात कर पूछा, "क्या कष्ट है, आप को?"

"पेट में दर्द है."

"वह तो मैं सुन चुका हूं. समय खराब न करिए. यह बताइए कि कहां पर कैसा दर्द है?"

मैं ने सोचा, अभी तो यह हनुमान चालीसा पढ़ रहे थे, तब समय नष्ट नहीं हुआ. फिर भी मैं ने कहा, "पेट में दाईं ओर नीचे की तरफ काफी तेज दर्द हो रहा है."

"यह तो सर्जरी का केस है. आप को यहां किस ने भेजा है?"

"डाक्टर साहब, मैं काफी देर से यहां बैठा हूं. कृपया कुछ तो दवाई दे दें. फिर मैं सर्जरी विभाग में चला जाता हूं."

"जब मेरा केस हो नहीं है तो मैं क्या कर सकता हूं? आप सर्जरी आउटडोर में जाइए." फिर वह चपरासी से बोले, "चपरासी, इन्हें रास्ता बता दो."

मैं झल्लाता हुआ चला गया. सर्जरी आउटडोर तीसरी मंजिल पर था. अब तक वहां काफी भीड़ छंट चुकी थी. मेरा नंबर शीघ्र ही आ गया. मैं सोच रहा था कि डाक्टर साहब पहले हनुमान चालीसा पढ़ेंगे फिर मुझे देखेंगे. लेकिन इन डाक्टर साहब ने हनुमान चालीसा नहीं पढ़ा. बिना पढ़े ही पूरा चेकअप कर लिया और कहा, "आप को एपेंडिसाइटिस का दर्द है. आप को दाखिल होना पड़ेगा."

मेरे दिमाग में काफी देर से यह बात घूम रही थी कि डाक्टर साहब ने हनुमान चालीसा नहीं पढ़ा. मुझ से रहा न गया. मैं ने पूछ लिया, "डाक्टर साब, एक बात बताइए. आप ने मेरे केस में हनुमान चालीसा नहीं पढ़ा, जब कि नीचे मेडिसिन विभाग के डाक्टर ने पढ़ा था."

"सर्जरी के हिसाब से आप का केस बहुत साधारण है. इसी लिए मैं ने हनुमान चालीसा नहीं पढ़ा." डाक्टर साहब ने काफी गंभीर स्वर में उत्तर दिया.

यह सुन कर पेट में काफी तेज दर्द होते हुए भी मैं अपनी हंसी न रोक सका.

डाक्टर साहब ने मुझे नुस्खा लिख कर दिया. दवाइयों के नीचे 'हनुमान चालीसा...' लिखा हुआ था.

मैं ने कहा, "डाक्टर साहब, यह हनुमान चालीसा किस लिए?"

"आप को नहीं मालूम. यहां पर यह नियम है कि जितने दिन मरीज हस्पताल में रहेगा, उसे रोज सुबह हनुमान चालीसा का पाठ करना होगा."

"लेकिन डाक्टर साहब..."

"अब ज्यादा बात न करो. मुझे और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

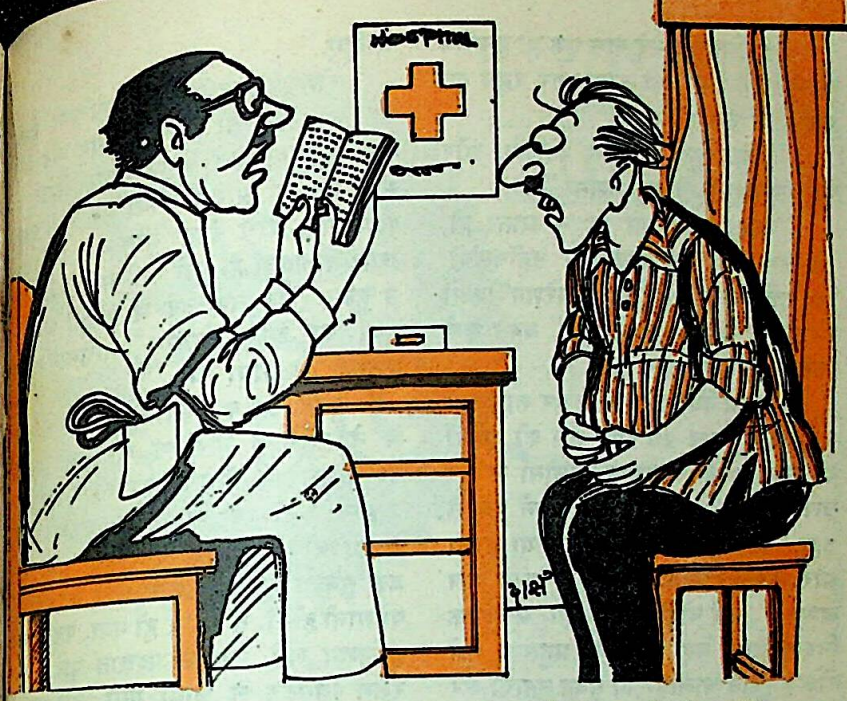

जब मैं ने डाक्टर को बताया कि पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा है तो उन्होंने मेज पर रखे हनुमान चालीसा को उठा कर पढ़ना शुरू कर दिया.

मरीजों को भी देखना है."

मैं चुपचाप चला आया. दो रुपए जमा कराने के बाद मुझे हस्पताल में दाखिल कर लिया गया. तब तक मेरा पुत्र भी आ गया. उस को मैं ने दवाई और हनुमान चालीसा लाने के लिए कहा. पहले तो वह हनुमान चालीसा को नुस्खे में पढ़ कर हंसा, किंतु बाद में स्थिति की गंभीरता को देखते हुए वह जाने लगा. तभी नर्स आ गई. उस ने डाक्टर साहब का आदेश सुनाया, "देखिए, हनुमान चालीसा यदि दो घंटे में न आया तो आप को बेड छोड़ना पड़ जाएगा."

मुझे कोई खास आश्चर्य न हुआ. लड़के को मैं ने जल्दी से हनुमान चालीसा लाने के लिए कहा.

सलीम लगभग एकडेढ़ घंटे के बाद लौट कर आया. उस ने बताया, "पापा, हनुमान चालीसा तो मिला ही नहीं. दवाइयां सब मिल गई हैं."

"क्यों?" मैं ने पूछा.

"बाहर गया तो पता चला कि हनुमान चालीसा मिलना बहुत मुश्किल है. आजकल तो हनुमान चालीसा ब्लैक में मिल रहा है."

"क्या बकवास कर रहे हो? इतनी पवित्र पुस्तक की कहीं ब्लैक हो सकती है?"

"हां पापा, वह कहीं भी नहीं मिली. मैं पूरा शहर खोज कर आ रहा हूं."

मैं अब परेशान हो उठा, क्योंकि नर्स चेतावनी दे गई थी कि दो घंटे के अंदर ही हनुमान चालीसा आ जाना चाहिए. मुझे एक बात सूझी. दर्द इन सब उलझनों से कम हो ही गया था, मैं उठा और नर्स के पास गया. उसे अपनी तकलीफ बताते हुए मैं ने कहा, "आप कृपया कहीं से हनुमान चालीसा दिला दीजिए. नहीं तो मुझे दाखिल नहीं किया जाएगा."

पहले तो उस ने थोड़ी आनाकानी की लेकिन बाद में कहने लगी, "आप ऐसा कीजिए, 20 रुपए दे दीजिए, आप को हनुमान चालीसा मिल जाएगा. लेकिन बाद में वापस करना पड़ेगा."

"इतने अधिक दाम!"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"इसलिए कि मेरे पास एक ही हनुमान चालीसा है. आप की हालत पर रहम खा कर मैं दे रही हूं."

"लेकिन कुछ तो कम कीजिए. और मुझे पढ़ना भी तो नहीं आता."

"पढ़ना आता हो या न आता हो, 20 रुपए से एक पैसा कम नहीं लूंगी. इसे रखे बिना आप का आपरेशन किसी भी हालत में नहीं हो सकता." बहुत रूखे स्वर में उस ने उत्तर दिया.

मैं समझ गया, इस से कम पर काम नहीं चलेगा. चुपचाप 20 रुपए उस की हथेली पर रख दिए और हनुमान चालीसा ले कर चला आया. मैं ने लौट कर अपने पुत्र से कहा, "बेटा, तुम मुझे पढ़ कर सुनाया करना और मैं दोहराऊंगा. इस प्रकार काम चल जाएगा." मुझे थोड़ी देर बाद ही आवश्यक निर्देश मिल गए, जिस के अनुसार मुझे रोज हनुमान चालीसा का सुबह नहाधो कर पाठ करना था तथा यह भी कि हनुमान चालीसा किसी भी कीमत पर खोना नहीं चाहिए.

तीसरे दिन मेरा आपरेशन होना था. दो दिन तो किसी प्रकार कट गए. रात में आपरेशन के आवश्यक आदेश के साथ यह भी आदेश आया कि मुझे सुबह आपरेशन वाले दिन तीन बार हनुमान चालीसा पढ़ना है. मुझे रत्ती भर भी आनाकानी न हुआ. अब तक दर्द भी काफी कम हो गया था और हनुमान चालीसा काफी कंठस्थ हो गया था.

सुबह उठ कर स्नान करने के पश्चात मैं ने हनुमान चालीसा का पाठ किया. दर्द के बारे में मैं ने डाक्टर को बताया तो उन्होंने कहा कि आपरेशन करवा लेना अच्छा होगा, क्योंकि एपेंडिक्स कभी भी बढ़ सकता है और तब आप को काफी परेशानी होगी. मैं तैयार हो गया. पहले कुछ इंजेक्शन लगे. उस के पश्चात मुझे आपरेशन थिएटर ले जाया गया. मुझे आपरेशन टेबल पर लिटा दिया गया. मेरे मन में काफी घबराहट हो रही थी. थोड़ी ही

"असल में आपरेशन थिएटर वाला हनुमान चालीसा कहीं खो गया है, उसी की खोज में सब लोग परेशान हैं," डाक्टर साहब ने बताया.

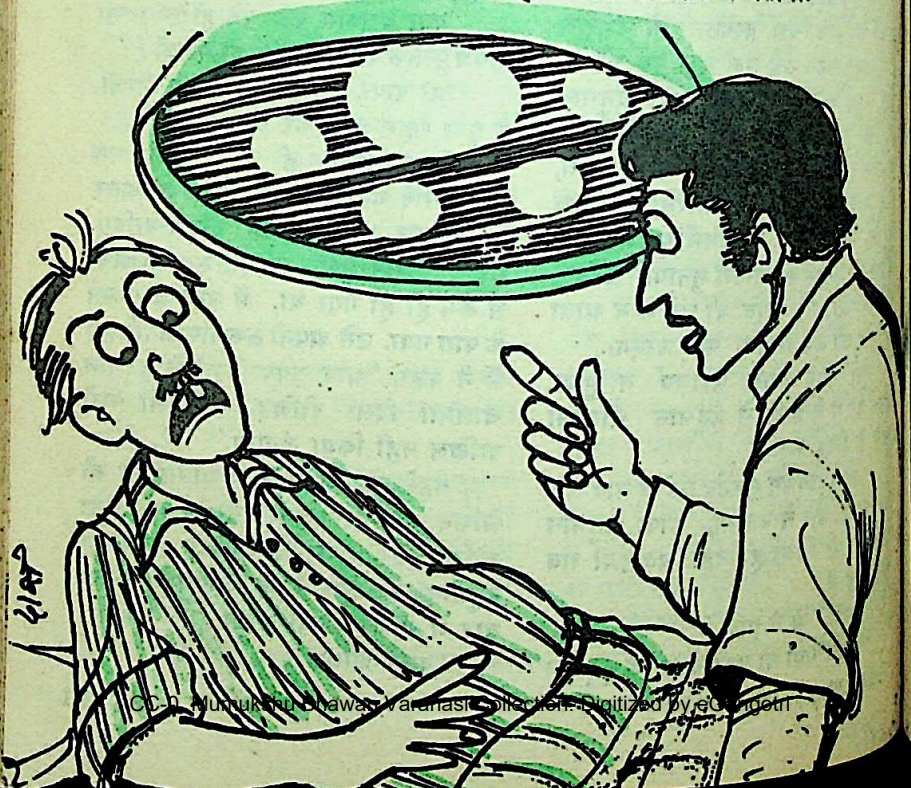

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमृतांजन प्रतियोगिता

१ लाख रुपये के इनाम जीतिए

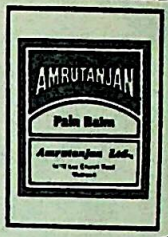

१ ला इनाम
प्रीमियर पद्मिनी कार या
नक़द रु. ४०,०००

२ रा इनाम
सोने के जेवर या
नक़द रु. १५,०००

६५० अन्य इनाम—
रु. ४५,००० के

आकर्षक इनाम जीतने के लिए आपको बस यही करना है : निम्न विभिन्न तकलीफ़ों का मुकाबला करने के लिए अमृतांजन के उपयोग का महत्वक्रम लिखिए :

अ. जोड़ों का दर्द	☐	द. मांसपेशियों का दर्द	☐
ब. खाँसी/ज़ुकाम	☐	इ. मोच	☐
स. सरदर्द	☐	फ. सूजन	☐
ग. दाँत में दर्द	☐		
ह......	☐		

मान लीजिए आपकी राय में अमृतांजन मांसपेशियों के दर्द में सबसे असरकारक है तो आपको 'द' के सामने 'I' का निशान लगाना है। अगर आप और किसी तकलीफ़ का नाम, जो इस तालिका में नहीं है, लिखना चाहें तो 'ह' के अंतर्गत लिख सकते हैं।

फिर अमृतांजन पर कोई आकर्षक वाक्य (अधिक से अधिक १५ शब्दों में) लिखिए :

नाम (बड़े व साफ़ अक्षरों में) _____

पता (बड़े व साफ़ अक्षरों में) _____

आप जितने चाहें उतने प्रवेश-पत्र भेज सकते हैं। मगर हर प्रवेश-पत्र के साथ अमृतांजन की १२ ग्रामवाली बोतल का कागज़ का डिब्बा साथ होना ज़रूरी है।

नियम और शर्तें

१. इस प्रतियोगिता में अमृतांजन लिमिटेड तथा उनकी विज्ञापन एजेंसियों के कर्मचारियों व उनके रिश्तेदारों को छोड़ कर भारत के सभी नागरिक भाग ले सकेंगे।

२. पेंसिल से लिखे, मिटाने के निशान या काट पीट किये गये, अस्पष्ट या स्टाम्प लगाये बिना या कम स्टाम्प लगाये गये प्रवेशपत्रों पर विचार नहीं किया जाएगा।

३. रास्ते में खो गये या देर से आये प्रवेशपत्रों की ज़िम्मेदारी नहीं ली जायगी।

४. प्रवेश-पत्र अंग्रेजी या अन्य किसी भारतीय भाषा में भरा जा सकता है।

५. प्रवेश-पत्रों की जांच एक निर्णायक-मंडल द्वारा की जायगी, जिनका निर्णय अंतिम और बाध्य होगा।

६. प्रतियोगिता के संबंध में किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार नहीं किया जा सकेगा।

७. आपके भेजे गये प्रवेश-पत्र और आकर्षक वाक्य (स्लोगन्स) अमृतांजन लिमिटेड की सम्पत्ति होंगे।

८. इनामों की देयगी, उससे संबंधित नियमों के अनुसार की जाएगी।

९. पूर्ण किये गये प्रवेश-पत्र के साथ अमृतांजन की १२ ग्राम की बोतल का खोखा 'अमृतांजन प्रतियोगिता' लिखे लिफ़ाफ़े में निम्न पते पर ३० नवम्बर १९७८ को या उससे पहले पहुँचने चाहिए :

अमृतांजन लिमिटेड
१४-२५, सर्च चर्च रोड, मयलापुर, मद्रास-४.

AM-1989

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देर में मुझे सब लोग छोड़ कर चले गए. काफी देर तक लेटे रहने पर भी जब कोई न आया तो मैं ने उधर से गुजरते हुए एक आर्डरबाय को बुलवाया और उस से कहा, "भई, किसी डाक्टर को बुलाओ."

"बस, थोड़ी देर बाद डाक्टर साहब आते हैं." यह कह कर वह चला गया. कुछ देर और प्रतीक्षा करने के बाद भी जब कोई न आया तो मैं घबराहट के मारे चिल्ला उठा, "कोई है."

थोड़ी देर बाद एक डाक्टर साहब आए और बोले, "क्यों चिल्ला रहे हो?"

"डाक्टर साहब, मेरी हालत बहुत खराब है. कृपया बड़े डाक्टर साहब को बुलवा लें," मैं ने झल्ला कर कहा.

"थोड़ी देर में आते हैं," वह कुछ परेशान से थे.

"आखिर इतनी देर क्यों हो रही है."

"असल में आपरेशन थिएटर वाला हनुमान चालीसा कहीं खो गया है. उसी की खोज में सब लोग परेशान हैं."

"डाक्टर साहब, आप मजाक कर रहे हैं क्या?" मैं ने कहा, "यहां मेरी जान पर बनी हुई है और उधर हनुमान चालीसा की खोज हो रही है."

"हम कुछ नहीं कर सकते. ऊपर से ऐसा ही आदेश आया है," वह बोले.

"लेकिन फिर भी आप को कुछ तो सोचना चाहिए," मैं धीरे से बोला, क्योंकि मुझे उन की मजबूरी समझ में आ गई थी.

"जैसे ही हनुमान चालीसा मिलेगा वैसे ही आप को बेहोशी की दवा का इंजेक्शन दे दिया जाएगा. हम लोग बिना पढ़े कुछ कर भी तो नहीं सकते. जासूस लगे हुए हैं." वह बोले और फिर चले गए.

यह सुनना था कि मेरी घबराहट में और वृद्धि हो गई. मैं ने एकदम एक निर्णय लिया. मैं उठा और बाहर की ओर भागा. एक डाक्टर ने मुझे रोकने की कोशिश की. मैं ने उसे धक्का दिया और भागता गया. पीछे से आवाज आती रही, "रुकिए तो, आप कहां जा रहे हैं. हनुमान चालीसा मिल गया है."

रेशम सी
कोमल और मुलायम
नाइट एंजिल

चाहे जैसे देखें,
परखें,
रीझ उठे दिल..

BRASSIERES
Bridal Form
Regd.

निर्माता के. आर. विट्ठल

13, त्रिकमजी घिया मार्ग, मंगलदास मार्केट के नुजदीक, बंबई-400002 • फोन : 317919

थोक स्टाकिस्ट्स :

मेसर्स चंद्रा होजरी, कमरा नं. 50 ए, पहली मंजिल, गफ्फार मार्केट, करोलबाग, नई दिल्ली-110005 फोन : 563818

मेसर्स चंद्रा होजरी, 203 1 एम. जी. रोड, तीसरी मंजिल, कमरा नं. डी 14/15, कलकत्ता-7. फोन : 338446

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आएटेक्स - सौंदर्य प्रसाधन

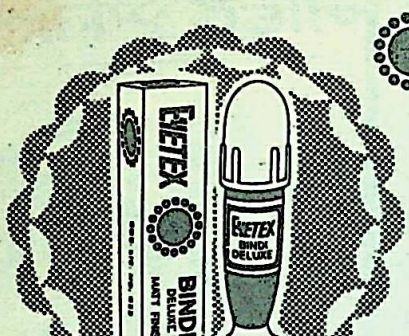

EYETEX
KAJAL

ARAVIND LABORATORIES MADRAS-600 033

AL-H20

जगमग

धुलाई के लिए

555

स्पैशल साबुन —•— डिटरजेंट पाउडर

निर्माता : गोरामल हरीराम

39, नजफगढ़ रोड, नई दिल्ली-15 फोन 585715, 583235 टेलेक्स 3934

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टिदोष को दूर करने के लिए एक नई विधि—

आर्थो-कैरेटोलोजी

आंखों में दोष किसी भी वजह से क्यों न हो, आम व्यक्ति के लिए तो यह एक आफत ही है. पिछले सैकड़ों वर्षों से दृष्टिदोष के इलाज के लिए चश्मे का प्रयोग किया जाता रहा है. लेकिन अब अमरीका में एक ऐसी विधि ढूंढ़ निकाली गई है जिस की सहायता से दृष्टिदोष स्थायी रूप से समाप्त किया जा सकता है. डाक्टरी शब्दों में इस विधि का नाम है—आर्थोकैरेटोलोजी. इस समय अमरीका में कम से कम तीन सौ ऐसे नेत्र विशेषज्ञ हैं जिन्हें आर्थोकैरेटोलोजी (आर्थो–के) का विशेषज्ञ भी माना जाता है. लाखों अमरीकी तेजी से लोकप्रिय होती जा रही नेत्र-चिकित्सा की इस विधि को अपना रहे हैं.

आर्थो-के में कोर्निया यानी पुतली के मोड़ को बदल दिया जाता है. आंखों तक रोशनी पहुंचाने में पुतली की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है. नेत्र चिकित्सा की इस विधि को हालांकि अभी तक पूरी तरह वैज्ञानिक मान्यता नहीं मिली है, लेकिन अधिकांश विशेषज्ञों ने यह स्वीकार किया है कि इस विधि में भविष्य के लिए अनंत संभावनाएं छिपी हुई हैं.

आर्थो-के विधि की खोज संयोगवश ही हो गई. बात 1960 की है. दक्षिणी कैलिफोर्निया के दो नेत्र विशेषज्ञों—स्टुअर्ट हेट व चार्ल्स मे ने अपने उन मरीजों में विचित्र सा परिवर्तन पाया जिन्हें वे कुछ दिन पहले ही कांटेक्ट लेंस लगा चुके थे. इन मरीजों के कांटेक्ट लेंस दृष्टिदोष दूर करने के लिए लगाए गए थे. इन में से अधिकांश मरीजों ने कुछ महीने कांटेक्ट लेंस नियमित रूप से इस्तेमाल किए. इस के बाद उन्हें पता चला कि उन की दृष्टि आश्चर्यजनक रूप से ठीक हो गई है और अब वे बिना किसी कृत्रिम की सहायता के भलीभांति देख सकते हैं. हेट के अनुसार, "मेरे कुछ मरीजों की तो यह हालत हो गई कि घर से निकलने

के बाद जब वे आधा रास्ता पार कर लेते तो उन्हें पता लगता कि उन्होंने कांटेक्ट लेंस तो पहने ही नहीं हैं."

अठारह वर्ष पहले की इस आकस्मिक खोज ने दृष्टिदोष दूर करने के लिए एक नई व बेहद विवादास्पद विधि दी—आर्थो-कैरेटोलोजी यानी आर्थो-के के नाम से. मायोपिया आंखों की एक ऐसी बीमारी होती है जिस में रोगी दूर की चीजें ठीक तरह से नहीं देख सकता. इस रोग का यदि जल्दी इलाज न करवाया जाए तो रोगी की आंख की रोशनी धुंधली होतेहोते हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है. मायोपिया की वजह से बाहरी वस्तुओं की छाया रैटिना पर सीधे नहीं पड़ पाती, बल्कि उस के सामने पड़ती है. इस की कई वजहें हो सकती हैं. या तो अक्षिगोला (आईबाल) अधिक लंबा होता है या फिर पुतली व लैंस रोशनी की किरणों को सीमा से अधिक मोड़ देते हैं.

लेख • श्रीशचंद्र मिश्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'आर्थो के' का सिद्धांत

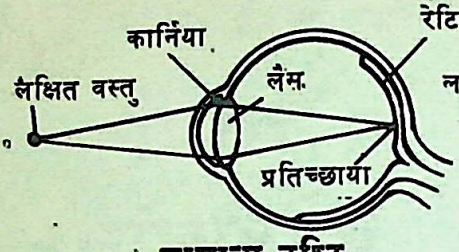

सामान्य दृष्टि

प्रतिच्छाया रेटिना पर पड़ रही है.

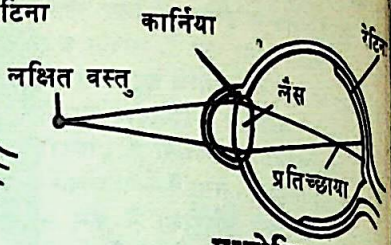

मायोपिया

प्रतिच्छाया रेटिना के सामने पड़ रही

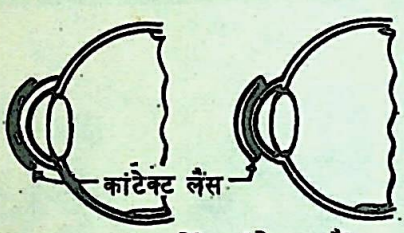

दोषग्रस्त आंख में कांटेक्ट लैंस

कार्निया धीरेधीरे चपटा हो रहा है.

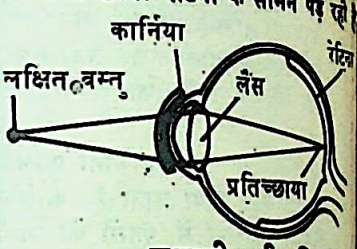

सुधारी गई दृष्टि

प्रतिच्छाया रेटिना पर पड़ने लगी

पुतली के मोड़ या घुमाव को संतुलित रखने के लिए ही आर्थो-के विधि का प्रयोग किया जाता है. जिस तरह दंत विशेषज्ञ टूटे हुए दांतों की स्थिति को ठीक करने के लिए जोड़ लगाता है, उसी तरह आर्थो-के विशेषज्ञ दृष्टि को सुधारने के लिए पुतली के घुमाव को बदलने के वास्ते मजूबत कांटेक्ट लैंस का प्रयोग करते हैं.

यह विधि कुछ मामलों में काफी लाभकारी रही लेकिन तब भी आर्थो-के के कट्टर समर्थक भी यह मानते हैं कि आर्थो-के विधि के संबंध में उन्होंने जो दावे किए हैं, उन की वैज्ञानिक पुष्टि के लिए उन के पास कोई प्रमाण नहीं है.

फिर भी इस विधि से जो अच्छे परिणाम सामने आए हैं उन से एक बात तो स्पष्ट हो गई है और वह यह कि मायोपिया के नए शिकारों को इस विधि से जल्दी ठीक किया जा सकता है.

आम तौर पर शुरू में मरीज को विशेष कांटेक्ट लैंस लगाए जाते हैं जिन्हें दिन में 16 घंटे लगाना मरीज के लिए जरूरी होता है. उस समय मरीज को यह लगता है मानो उस की पुतली बाहर निकल रही हो. इस का कारण दबाव भी हो सकता है या फिर कोई अनछिपा कारण, लेकिन ये कोरे अनुमान मात्र ही हैं. शुरू में ही मरीज की इस बेचैनी के सही कारणों का पता नहीं लगाया जा सका है.

लगभग छः सप्ताह बाद पुतली का नया मोड़ नापा जाता है और फिर मरीज को उसी मोड़ के कांटेक्ट लैंस लगा दिए जाते हैं. पूरा इलाज लगभग दो वर्ष तक चलता है और इस पर कुल व्यय आता है 1500 डालर या इस से अधिक. इस दौरान मरीज को आधा दर्जन से अधिक कांटेक्ट लैंस इस्तेमाल करने होते हैं. जब पुतली उपयुक्त मोड़ पर आ जाती है तो मरीज को सावधानी के तौर पर एक ऐसा कांटेक्ट लैंस लगाया जाता है जिसे या तो रात में या फिर दिन में कुछ समय के लिए लगाते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पीएनबी में आपके भावी हित सुरक्षित हैं

आपकी आवश्यकताओं के लिए हमारे पास अनेक बचत योजनाएँ हैं।
हमारे साथ बचत कीजिए और अपने भविष्य को सुरक्षित बनाइए।

खुलाभकारी तथा वृद्धावस्था जमा योजना—इस योजना के अंतर्गत 10 वर्ष के लिए जमा किये गये 5000 रु० भुगतान के समय 12,177 रुपये 50 पैसे हो जायेंगे।

आवर्ती जमा योजना—63 महीने तक हर महीने 100 रुपये जमा कराइए। मियाद पूरी होने पर आपको 8061 रुपये मिलेंगे।

विशेष सावधि जमा योजना—63 महीने के लिए 10,000/- रुपये जमा करा कर हर तीन महीने बाद 225 रुपये ब्याज लेते जाइए। ब्याज हर महीने भी मिल सकता है।

एक वर्ष में एक व्यक्ति को बैंक से ब्याज तथा निर्दिष्ट पूंजी निवेश से प्राप्त होने वाले ब्याज के रूप में प्राप्त होने वाली 3000/- रुपये की आय पर आय कर से छूट है। 1,50,000/- रुपये तक की जमा राशि पर, जिसमें अन्य निर्दिष्ट पूंजी निवेश भी शामिल हैं, धन कर की छूट है। साथ ही आपकी जमा राशि भी पूरी तरह से सुरक्षित रहती है। आवर्ती जमा खाते और खुलाभकारी वृद्धावस्था जमा योजना पर अर्जित ब्याज पर कर भी वार्षिक रूप से जोड़ा जाता है चाहे जमा राशि की अवधि समाप्त होने पर।

अधिक जानकारी के लिये कृपया हमारी निकटतम शाखा से सम्पर्क करें।

पंजाब नैशनल बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
भरोसे का प्रतीक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे शिकायत है

मुझे शिकायत है सिनेमा हाल के साइकिल स्टैंड वालों से जो दर्शकों की साइकिलों का उपयोग करते हैं.

—रोशन व्यास 'त्यागी'

✧

मुझे शिकायत है ऐसे पड़ोसियों से जो गैस खत्म होने पर भागेभागे आते हैं और तेल का भरा हुआ स्टोव मांग कर ले जाते हैं, किंतु काम खत्म होने पर बिना तेल के स्टोव छोड़ जाते हैं.

मुझे शिकायत है ऐसे फल बेचने वालों से जो अच्छे फल दिखा कर और ऊंचे दाम ले कर भी सड़े अथवा कच्चे फल पैक कर देते हैं.

—बसंती दुबे

✧

मुझे शिकायत है उन पोस्टर चिपकाने वालों से जो बस के नंबर लिखे बोर्डों, मार्गदर्शक चित्रों और जनोपयोगी बोर्डों पर अपने पोस्टर चिपका देते हैं.

—सुरेशकुमार भाटिया

✧

मुझे शिकायत है ऐसी सरकारी व गैरसरकारी महिला अफसरों से जिन का न तो कार्यालय में आने का कोई समय है और न जाने का. सर्दी के दिनों में कार्यालय लान में कुरसी डाल कर स्वेटर बुनना, समकक्ष अफसरों से बातें करना या फिर कोई पुस्तक पढ़ना उन की आदत में शामिल है.

—के. के. सिंह

✧

मुझे शिकायत है उन वाहनचालकों से जो रात्रि में चलते हुए अपने वाहन की केवल एक ही बत्ती जलाते हैं. इस से कई बार भंयकर दुर्घटना हो जाती है.

—विनोदकुमार अरिजरिया

✧

मुझे शिकायत है उन व्यक्तियों से जो पत्र व्यवहार में अपना पता अधूरा लिखते हैं, जिस से डाकिए को बहुत परेशानी होती है.

—मोहन सिंह

'आर्थो-के' के विशेषज्ञों का कहना है कि जिन लोगों की दृष्टि किसी समय 20/200 या इस से भी ज्यादा खराब थी, वे इस विधि से इलाज के बाद बिना लेंस व चश्मे के अपने दैनिक काम कुशलता से करने लगे. 32 वर्षीया गायिका व अभिनेत्री गेल डिक्सन की दृष्टि समय 20/800 थी यानी वह लगभग अंधी हो चुकी थी. उस का कहना है—"जब मैं ने अपना इलाज शुरू करवाया उस समय दुनिया मेरे लिए बिलकुल अंधेरी थी. अब मैं सुबह उठती हूं तो सभी चीजों को आसानी से देख लेती हूं. इस में मैं अपनेआप को काफी स्वतंत्र महसूस करने लगी हूं."

आर्थो-के के आलोचकों ने हालांकि इस चिकित्सा विधि के कुछ अच्छे परिणामों को मानने से इनकार नहीं किया है, लेकिन उन का कहना है कि इस विधि का अस्थायी महत्त्व है. पुतली की स्थिति को एक बार बदला तो जा सकता है लेकिन बाद में वह पुरानी स्थिति पर भी वापस लौट सकती है.

आलोचकों ने यह आशंका भी व्यक्त की है कि यदि उपचार में नौसिखिए डाक्टर ने कर दिया तो आंख की रोशनी हमेशा के लिए भी समाप्त हो सकती है.

न्ययार्क के सेंट विंसेंट हस्पताल के नेत्रविशेषज्ञ व कांटेक्ट लेंसों के पुराने जानकार डा. जी. पीटर हाल्बर्ग का कहना है—"यदि ठीक ढंग से काम किया जाए तो भविष्य में आर्थोकेरेटोलोजी नेत्र चिकित्सा में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है. इस समय हालत तो यह है कि हमारे पास भूसा अधिक है और अनाज के दाने कम. हम भूसे में से अनाज के दाने निकालने की कोशिश कर रहे हैं."

इस कोशिश को अंधेरे में तीर चलाना भी कहा जा सकता है. लेकिन 'आर्थो-के' ने जो संभावनाएं पैदा की हैं उन के महत्त्व को पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता. इतना निश्चित है कि भविष्य में इस विधि से काफी अपेक्षाएं की जा सकती हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • महेशचंद्र 'स्वदेशी'

दीप जल उठे

मनीषा ऐसे अंधेरों से घिरी थी जहां से निकल पाना उसे कठिन लग रहा था. तभी मधुकर की प्रेरणा से उसे इतना बल मिला कि उस की जिंदगी खुशियों की रोशनी से जगमगा उठी. . .

प्रोफैसर मधुकर लखनऊ से मनीषा को देख कर लौटा. मातापिता और बहन को पूरी आशा थी कि मनीषा जैसी अनिंद्य सुंदरी को देख कर उस से इनकार करते न बन पड़ेगा. सब को बड़ी उत्सुकता थी. आते ही मां ने पूछा, "बेटा, पसंद आ गई न मनीषा?"

तभी उस के उत्तर देने से पूर्व ही उस की छोटी बहन रश्मि हंसते हुए बोली, "पसंद क्यों न आई होगी. मनीषा को देखते ही भैया तो लट्टू हो गए होंगे. अब जल्दी से शादी की तारीख तय कर दो." यह कहते हुए उस ने शरारत में मधुकर की ओर देखा.

रश्मि की बात सुन कर मधुकर मुसकरा कर बोला, "ऐसी बात नहीं है. मैं ने इनकार तो नहीं किया, किंतु मैं सारा मामला मनीषा पर ही छोड़ आया हूं. आखिर उस की पसंद भी तो होनी चाहिए."

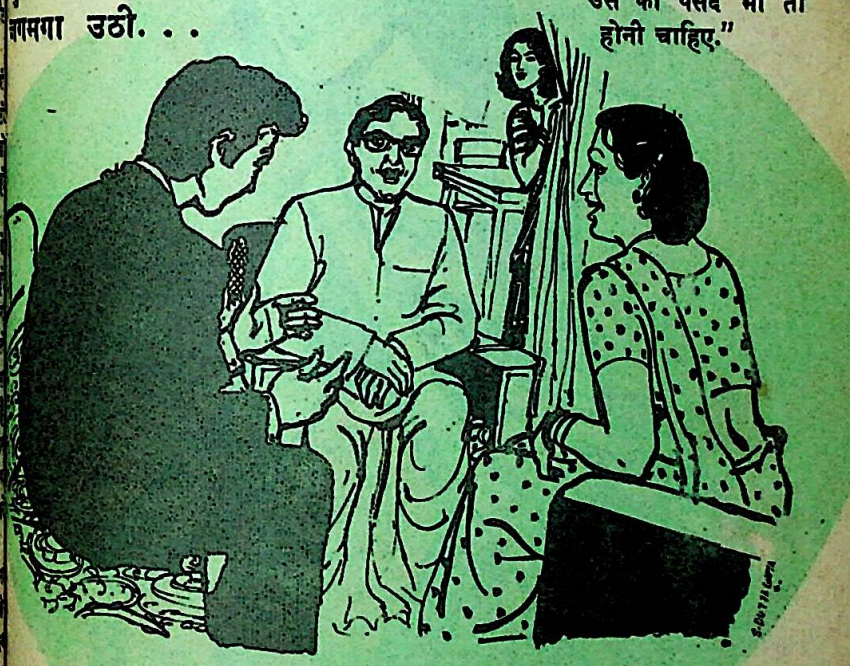

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"अरे, लड़कियों का क्या. तू बता, तुझे भी मनीषा पसंद आई कि नहीं?" मां ने पूछा.

"मां, लड़कियों का अच्छाबुरा क्या होता है, वह जैसी है ठीक है. अपनी स्वीकृति अभी इसलिए नहीं दी कि पता नहीं, मनीषा को मैं भी पसंद हूं कि नहीं. मैं अपनी स्वीकृति दे देता और वह किसी कारणवश मुझे नापसंद कर देती तो व्यर्थ ही अपमान न होता? आजकल समानाधिकार का जमाना है. विवाह कोई गुड्डेगुड़िया का खेल तो है नहीं. दोनों को खूब सोचने-समझने का मौका दिया जाना चाहिए. उस का पत्र आएगा. जैसी सूचना मिलेगी, आप सब को बता दूंगा." यह कह कर वह बाथरूम की ओर चल दिया.

रश्मि ने नाक चढ़ाते हुए कहा, "भैया, आप तो हमेशा ऐसी ही बातें किया करते हैं. पसंद आ गई थी तो अपनी 'हां' कह आते. भला लड़कियों से भी कुछ पूछा जाता है?" मधुकर ने सुना तो पीठ फेर कर केवल मुसकरा पड़ा.

रात को पलंग पर लेटते ही मधुकर की आंखों में मनीषा का सुंदर किंतु किसी अव्यक्त चिंता से ग्रसित चेहरा उभर आया. उस ने उसे कुछ क्षणों के लिए नहीं देखा

मधुकर का पत्र पढ़ने के बाद मनीषा ने शराब की बोतल और शीशे के गिलास फर्श पर दे मारे

CC-0. Mu... Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था. पूरे दो दिन दोनों साथसाथ रहे थे. एकदूसरे को समझने का पूर्ण अवसर मिला था उन्हें. मनीषा ने उसे सारा लखनऊ घुमाया था. उस के साथ रेस्तोराओं में भी गई थी. साथसाथ बैठ कर पिक्चर देखी थी. साहित्य, कला, संस्कृति, समाज, राजनीति और बदलते युग में पुरुष और नारी के अधिकारों और कर्त्तव्यों पर खुल कर बातें हुई थीं. सब कुछ सुंदर था.

मधुकर को निश्चय ही मनीषा पसंद आ गई थी. किंतु मनीषा की ओर से कोई उत्साहवर्धक संकेत या आभास उसे नहीं मिला था. उस ने अपने और मनीषा के मध्य एक अदृश्य रेखा खिंची हुई महसूस की थी. वह जब तक साथ रहती थी सौंफ और इलायची मुंह में चबाती रहती थी तथा अपना मुंह उस से दूर रखने का भरसक प्रयत्न करती रहती थी. एक अजीब सा भय, चिंता और कुंठाजनित भाव हर समय उस के मुख पर छाया रहता था.

लखनऊ से चलते समय उस से मनीषा के मातापिता ने उस के निर्णय के बारे में पूछा था. मनीषा तब ड्राइंग रूम के दरवाजे पर खड़ी थी. कुछ कहने के लिए उस ने जैसे ही अपने होंठ खोले थे, अनायास ही उस की दृष्टि मधुकर की दृष्टि से जा टकराई थी. दृष्टि मिलते ही मनीषा का चेहरा विवर्ण हो गया था. वह सहम गई थी और तत्क्षण ही उस ने अपनी नजरें नीची कर ली थीं.

इसी समय उस ने मुसकरा कर मनीषा के पिता की ओर उन्मुख हो कर कहा था, "मनीषाजी का निर्णय ज्ञात होने पर ही मैं अपना निर्णय दे पाऊंगा." यह कह कर उस ने पुनः मनीषा की ओर देखा था. मनीषा उत्सुकता से उसी की ओर देख रही थी. उस का उत्तर सुन कर वह अंदर चली गई थी.

मधुकर को दिल्ली आए तीन दिन ही हुए थे कि उसे मनीषा का पत्र मिला. उस ने धड़कते दिल से पत्र को खोला. पत्र में लिखा था:

आदरणीय मधुकरजी,

सादर नमस्कार. निश्चय ही आप को मेरे पत्र की प्रतीक्षा रही होगी. मेरा निर्णय जानने की भी आप को उत्सुकता होगी.

हम दोनों दो दिन साथसाथ रहे. एकदूसरे को समझनेबूझने का पर्याप्त अवसर मिला. आप के सुदर्शन व्यक्तित्व और बौद्धिक स्तर को देख कर कौन लड़की होगी जो आप की सहधर्मिणी बनने में अपने को गौरवान्वित अनुभव न करेगी? निःसंदेह मैं भी आप को पा कर अपने को सौभाग्यशालिनी समझती, किंतु...

मुझे खेद है कि मैं आप को अपना कह पाने का सौभाग्य न पा सकूंगी. इस का अर्थ अन्यथा न लेना. मैं 'असफल प्रेम' की नायिका नहीं हूं. न कोई दुश्चरित्रा या गंभीर रोगी ही हूं. मैं स्पष्टवादी हूं. मुझे विश्वास है, कि यदि मैं अपने दोषों को, जो मेरी आदत बन गए हैं, बता दूं तो आप स्वयं ही मुझे अपनाना न चाहेंगे. मैं नहीं चाहती कि धोखा दे कर मैं आप के और आप के मातापिता के लिए समस्या बन जाऊं और बाद में आप का और अपना जीवन बोझ बना दूं.

अपने दोषों को आप के सामने रखना अप्रासंगिक न होगा. बात यह है कि आर्थिक संपन्नता, मातपिता के अत्यधिक लाड़प्यार, आधुनिकता और फैशन तथा कालिज जीवन में गलत सोसाइटी के कारण मुझे सिगरेट और शराब पीने की लत लग गई थी. पहले नासमझी और माडर्न कहलाने के जोश में इन के दुष्परिणामों पर ध्यान न दिया था. जब विवाह की बात चलने लगी और लड़के मुझे देखने आने लगे तो यह याद कर मुझे बड़ी ग्लानि और लज्जा महसूस होने लगी कि शादी के बाद जब ससुराल जाऊंगी तो कितनी निंदा और अशोभनीय स्थिति होगी. अतः जबजब लड़के देखने आते हैं, मेरा हृदय अजीब भय, ग्लानि और हीनभावना से ग्रस्त हो जाता है. मैं बुरी तरह परेशान हो उठती हूं.

जो भी लड़का देखने आता है, वह मुझे देखते ही पसंद कर लेता है, किंतु जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं भविष्य की दुखद स्थिति से बचने के लिए अपनी शराब और सिगरेट पीने की दूषित आदत के बारे में बताती हूं तो वह नए बैल की तरह बिदक जाता है. वह, चाहे स्वयं खूब सिगरेट और शराब पीता हो, किंतु 'मुझ जैसी लड़की' से विवाह करने से साफ इनकार कर देता है.

आप को भी इस विषय में स्पष्ट रूप से बताना मैं ने अपना नैतिक कर्त्तव्य समझा. इसलिए यह सब लिख दिया. मैं जानती हूं, मेरे ऊपर 'निर्णय' छोड़ कर आप ने अपनी स्वीकृति की मोहर लगा दी थी. किंतु मैं आप को अंधकार में रखना नहीं चाहती थी. अतः आप के समक्ष भी सब कुछ सचसच लिख दिया है. कृपया मुझे इस धृष्टता के लिए क्षमा करना और किसी अन्य सुशील व सुसंस्कृत लड़की को अपनी जीवनसंगिनी बनाने का सौभाग्य प्रदान करना.

वैसे अपनी असमर्थता और विवशता लिखते हुए मेरी आंखें भर आई हैं. काश, मैं ने धूम्रपान और शराब की बुरी लत न पाली होती. धन्यवाद. —मनीषा.

पत्र पढ़ कर मधुकर चकित रह गया. यह ठीक था कि मनीषा ने अपनी अस्वीकृति की सूचना दे दी थी. किंतु जिस निश्छलता से इस की सूचना दी थी, उस के कारण उस के हृदय में मनीषा के लिए एक प्रकार का आदर भाव उत्पन्न हो गया था. धूम्रपान और मद्यपान से उसे और उस के परिवार को घोर घृणा थी. सोचा, अच्छा ही हुआ जो मनीषा ने अपनी इन लतों के बारे में पहले ही लिख दिया. अन्यथा विवाह हो जाता और मनीषा यहां सिगरेट और शराब पीती तो गजब हो जाता. घर में तो जैसे भूचाल ही आ जाता. उस ने पत्र को तह कर के लिफाफे में रख दिया और गहरे सोच में पड़ गया.

घर में सभी को जल्दी से जल्दी निर्णय सुनने की उत्कंठा थी. वह चाहता तो उसी समय मनीषा की अस्वीकृति से सब को सूचित कर सकता था. किंतु कुछ सोच कर वह मौन रह गया और उसे भूलने का प्रयत्न करने लगा. उस ने उसे जितना भूलने का प्रयत्न किया, उतना ही वह उस के मन-मंदिर में मूर्ति बन कर प्रतिष्ठित होने लगी.

उस के हृदय में हमेशा कितने ही विचार आते रहते. वह सोचता, क्या मनीषा को साफगोई का यही कुपरिणाम भुगतना होगा? क्या वह इसी प्रकार कुंठाओं की दलदल में फंसी रहेगी? क्या उस के हृदय में आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय का मंत्र फूंक कर उसे सिगरेट और शराब की लत से विमुक्त नहीं कराया जा सकता? उस के पत्र से स्पष्ट रूप से ग्लानि और पश्चात्ताप प्रकट होता है. यदि उसे अपनत्व दिखा कर जरा भी प्रेरित किया जाए तो प्रेरणा और प्रोत्साहन पा कर वह शराब और सिगरेट का त्याग कर सकती है. उस का जीवन संवर सकता है. उसे इस प्रकार असहाय और दिग्भ्रमित छोड़ देना उस के साथ अन्याय होगा. एक बार उस को इन लतों से मुक्त करने का प्रयास तो करना ही चाहिए.

पत्र लिखने के निर्णयअनिर्णय के द्वंद्वयुद्ध में आखिर उस ने यही फैसला किया कि मनीषा को अपनी ओर से एक ऐसा पत्र अवश्य लिखे जिसे पढ़ कर वह सिगरेट और शराब छोड़ने का दृढ़ संकल्प कर ले.

एक नया गुर

एक आवारा व्यक्ति सेठ से भीख मांगते हुए बोला, "वास्तव में मैं एक लेखक हूं और मैं ने एक पुस्तक भी लिखी है—पैसा कमाने के सौ गुर."

सेठ: तो फिर तुम भीख क्यों मांग रहे हो?

आवारा व्यक्ति: उन में से एक गुर यह भी है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

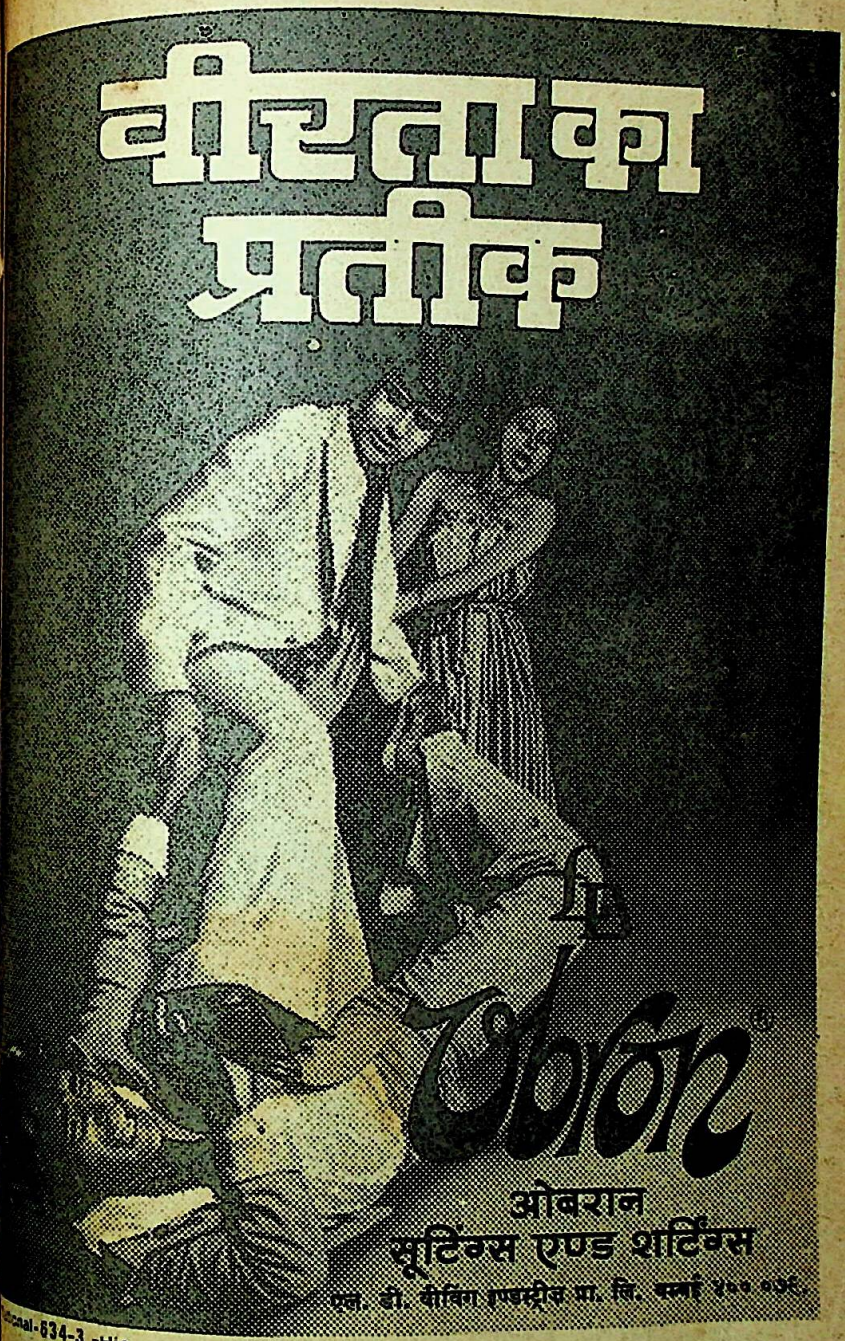

Personal-634-3 -Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरीरदर्द?
तो लीजिए
एक गिलास
पानी

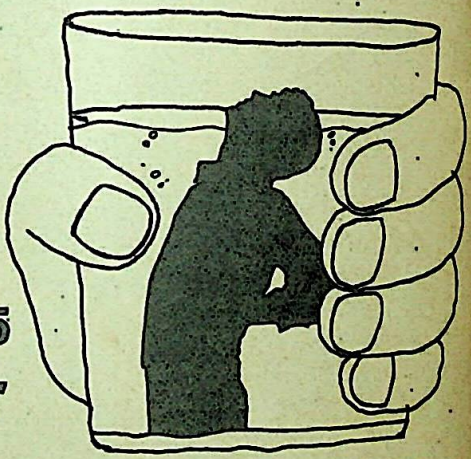

Sporidon

और सिर्फ़ एक
स्पोरिडॉन

ट्रेडमार्क 'रोज'

RP.2159A

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सब कुछ निश्चित करने के बाद उस ने लिखा :

श्रद्धेयाजी,

आप का पत्र पा कर अवर्णनीय प्रसन्नता हुई. आप की साफगोई, साहस और सहृदयता साधुवाद के योग्य हैं. इस प्रकार के लोगों का मैं हार्दिक सम्मान करता हूं. पहली ही दृष्टि में जब मैं ने आप को देखा था तो हृदय में आप की छवि अंकित हो गई थी. लगा था, आप ही मेरी जीवन-संगिनी हो सकती हैं. मैं चाहता था, चलते समय आप के मातापिता को अपनी स्वीकृति से अवगत करा दूं. किंतु मैं नहीं चाहता था कि आप को कुछ कहने का अवसर न दिया जाए. आप की पसंदगी और नापसंदगी को न पूछा जाए. अतः मैं सारा निर्णय आप पर ही छोड़ आया था.

आप ने धूम्रपान और शराब की बुरी आदत पड़ जाने के कारण विवाह करने में अपनी असमर्थता प्रकट की है. मुझे आप की इन लतों को जान कर बड़ा दुख और चिंता हुई है, किंतु साथ ही यह जान कर प्रसन्नता भी हुई है कि आप को स्वयं अपनी इन बुरी आदतों से घृणा करती हैं.

भूलें किस से नहीं होती हैं. भूल करना मानवीय दुर्बलता है, किंतु भूलें जान कर उन को सुधारना मनुष्य की शक्ति है. प्रसंगवश अपने विषय में बताते हुए मुझे रंचमात्र भी संकोच नहीं हो रहा है. कालिज जीवन में बुरी कुसंगति में पड़ कर मैं ने भी क्या नहीं किया था. सिगरेट, शराब, सुलफा, गांजा, एल. एस. डी. और ब्राउन शुगर कुछ भी तो नहीं छोड़ा था. मेरी इस आदत से मेरे मातापिता, भाईबहन और रिश्तेदार सभी दुखी और परेशान थे. एक दिन नशे की हालत में जब अपने अभिन्न मित्र लोकेंद्र को एक कार दुर्घटना में मरते देखा और मां ने रोरो कर मुझ से सभी लतों को छोड़ने का आग्रह किया तो मेरा मन मुझे धिक्कार उठा. मैं ने उसी समय सभी दुर्गुणों को त्यागने की प्रतिज्ञा की. उस दिन से मैं ने आज तक सिगरेट को तो छुआ नहीं, सच कहूं, उन्हें छोड़ते ही मैं पशु से इनसान बन गया था.

आप के बारे में जब ध्यान करता हूं तो पता नहीं, क्यों मुझे यहां बैठेबैठे यह विश्वास हो रहा है कि आप के लिए सिगरेट और शराब छोड़ना भी कठिन नहीं है.

आप निश्चय ही इन बुरी आदतों से छुटकारा पा सकती हैं और मुझे आप का जीवनसाथी बनने का सौभाग्य प्रदान कर सकती हैं. आवश्यकता सिर्फ आप के आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय की है. आप ये पंक्तियां पढ़ते ही अपने मन में यह दृढ़ निश्चय कर लीजिए कि मैं इसी क्षण से सिगरेट और शराब का सदैव के लिए परित्याग करती हूं. सच मानिए, यदि संसार में कोई अलौकिक शक्ति है तो वह है मनुष्य का दृढ़ आत्म-विश्वास, जो पहाड़ों को हिला सकता है, बड़ेबड़े समुद्रों को लांघ सकता है. कालिदास ने कहा है, "दृढ़ निश्चय वाले मन को तथा नीचे की ओर बहते जल की गति को रोक पाना बहुत कठिन है."

बहुत अधिक नहीं लिखूंगा. आप स्वयं समझदार हैं. अपनी ओर से इतना ही कहूंगा कि मैं आप के अतिरिक्त किसी अन्य लड़की से विवाह नहीं करूंगा. मुझे उस शुभ दिन की प्रतीक्षा रहेगी जब आप का यह पत्र प्राप्त होगा कि मैं ने सिगरेट और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा कर ली है.

आशा है, आप मुझे जीवन भर अविवाहित रखने का अक्षम्य अपराध न करेंगी.

धन्यवाद.

आप के प्रति पूर्ण आशावान

—मधुकर.

मनीषा ने मधुकर का पत्र पढ़ा तो उसे लगा जैसे वह कुछ क्षणों में ही एक नवीन संसार में आ पहुंची है. उस के नेत्रों से अविरल जलधारा बहने लगी. उस ने उस पत्र को बारबार चूमा और फिर हृदय से लगाया. वह देर तक आंखें मूंद मधुकर की मूर्ति को अपनी पलकों में बंद किए रही.

उस ने अपने नेत्र खोले. पत्र को दोबारा पढ़ा. उस की दृष्टि पत्र के उस स्थल पर जम गई जहां लिखा था, "यदि संसार में कोई अलौकिक शक्ति है तो वह है मनुष्य का दृढ़ आत्मविश्वास, जो पहाड़ों को हिला सकता है, बड़ेबड़े समुद्रों को लांघ सकता है." उस का चेहरा किसी दृढ़ निश्चय की भावना से कठोर हो उठा. उस की मुट्ठियां तन गईं, समय जैसे थम कर, सांस रोक कर खड़ा हो गया. उस ने सन्नाटे को चीरते हुए दृढ़ शब्दों में कहा, "मधुकर, मैं प्रतिज्ञा करती हूं, अब मैं कभी सिगरेट और शराब न पीऊंगी."

यह कह कर वह उठी. सामने की अलमारी खोली. ह्विस्की की बोतल और शीशे के कीमती गिलास उठाउठा कर फर्श पर दे मारे. इस के बाद उस ने ऊपर के खाने में रखे सिगरेट के पैकेट उठा कर पैरों से मसल दिए: सब को कूड़ेदान में फेंक आने पर ही उस के हृदय को शांति मिली.

कमरे की घुटन दूर करने और स्वच्छ हवा के झोंकों में मुक्ति की सांस लेने के लिए उस ने अपने कमरे की सभी खिड़कियां और रोशनदान खोल दिए. उस का चेहरा गुलाब की तरह खिल उठा. उस ने मन ही मन अनोखे गर्व की अनुभूति की.

छः महीने तक मधुकर को मनीषा का कोई पत्र नहीं मिला था. वह उस की ओर से बड़ा चिंतित, और उदास था. अचानक 'दीपावली' के दिन अप्रत्याशित रूप से उसे मनीषा का लिफाफा मिला. जैसे कोई चिरपिपासु जलपात्र को देख कर तत्क्षण ही उसे अपने होंठों से लगा लेता है, ऐसे ही उस ने जल्दीजल्दी धड़कते हृदय और कांपते हाथों से चिरप्रतीक्षित लिफाफा खोला. लिखा था—

हृदयेश्वर,

छः महीने बाद पत्र लिख रही हूं. विलंब के लिए क्षमाप्रार्थी हूं. आप का प्रेरणास्पद पत्र पाते ही इस उद्भ्रांता ने उसी क्षण सिगरेट और शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा कर ली थी. आप के आशीर्वाद से मैं अपनी प्रतिज्ञा में सफल हो गई हूं. उन्हें त्यागे छः महीने बीत गए हैं. अब मुंह से भी उन की ओर ध्यान नहीं जाता. आप की अमूल्य प्रेरणा का, जिस के कारण मेरे जीवन से अमावस्या की काली रात का अवसान हुआ, मैं अकिंचन अपने मुख से धन्यवाद व्यक्त करने में भी असमर्थ हूं. मैं बस, इतना ही कह सकती हूं कि अब मेरा तनमन आप को समर्पित है.

इस अंतराल में आप को जो भी मानसिक कष्ट हुए हैं, उन के लिए मैं पुनः क्षमाप्रार्थी हूं.

कृपया अब इस दासी को शीघ्र से शीघ्र अपने चरणों की सेवा करने का शुभ अवसर प्रदान करें.

आप की,

मनीषा.

पत्र पढ़ कर मधुकर के नेत्रों में जैसे सोना ज़ल उठे, चेहरे पर मथुर मुसकान के फूल खिल उठे. पास ही मां और रश्मि खड़ी थीं. पत्र पढ़ कर उसे मुसकराते देख कर दोनों ने चकित स्वर में पूछा, "किस का पत्र है? इतनी हंसी क्यों आ रही है?"

प्रसन्नता के अतिरेक के कारण मधुकर स्वयं कुछ न कह सका. उस ने अपने हाथ का खुला पत्र रश्मि के हाथ पर रख दिया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्चों के बढ़ने के दिन

कैल्शियम-सैंडोज़®

देने के दिन

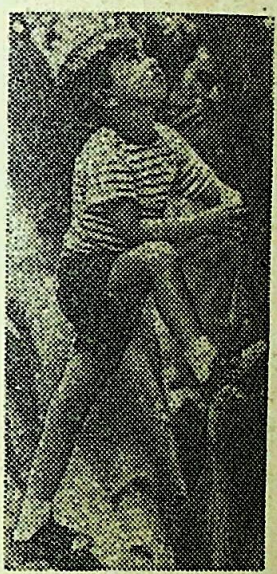

बच्चों के दाँत और हड्डियाँ उनके जन्म होने से पहले (माँ के पेट में) ही बनने लगते हैं। जन्म से बड़े होने तक के वर्षों में कैल्शियम-सैंडोज़ देना अत्यंत आवश्यक है।

अगर आपके बच्चों को, विकास की किसी भी अवस्था में, उपयुक्त मात्रा में कैल्शियम न मिले, तो संभव है कि बाद में यह कमी पूरी न हो। इसलिए उन्हें कैल्शियम-सैंडोज़ देना शुरू कीजिए —आज ही।

एक अनुपम पैक में मिलता है— लेकिन दाम पुराना है।

विकास के इन वर्षों में मज़बूत दाँत और स्वस्थ हड्डियों के निर्माण के लिए हर रोज कैल्शियम-सैंडोज़ की चार गोलियाँ खिलाने से आवश्यक मात्रा में कैल्शियम मिल जाता है। कैल्शियम-सैंडोज़ में विटामिन सी, डी और बी१२ भरपूर मात्रा में हैं और इसका वनीला का स्वादिष्ट जायक़ा बच्चों को बहुत पसंद है।

कैल्शियम सैंडोज़—स्विट्ज़रलैंड में सैंडोज़ द्वारा विकसित, विश्व का सर्वोत्तम कैल्शियम

कैल्शियम-सैंडोज़®

मज़बूत दाँतों और स्वस्थ हड्डियों के लिए

SANDOZ

daCunha/CS/26 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब आप एक जवान लड़की हैं. आपको ज़रूरत है तो सिर्फ़ केयरफ्री* की सुरक्षा की

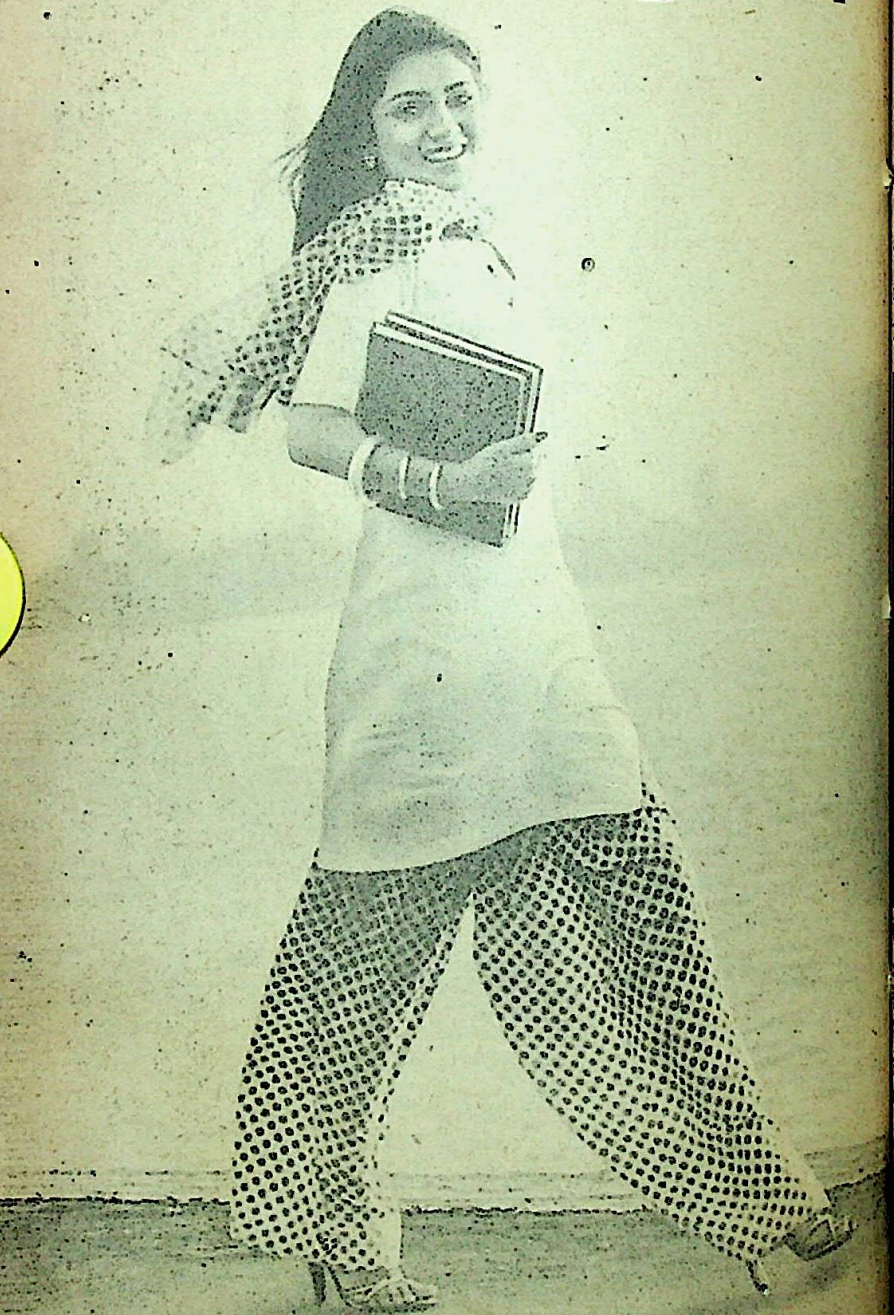

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केयरफ्री आप जैसी आज की हर जवान लड़की को ख्याल में रखकर बनाई
है. केयरफ्री आपको महीने के उन ५ दिनों में आराम और सुविधा
देती है और ज़रूरी सुरक्षा का भरोसा भी.
उस बोझ जैसी पोटली के दिन गए. केयरफ्री विशेष रूप से सोखनेवाली
लेकिन है. सिर्फ़ एक केयरफ्री आपके मासिक का आधा बहाव तक सोख रह
सकती है. लेकिन ताज़गी महसूस करने के लिए आप जब जब चाहें
केयरफ्री बदलिए.
सिर्फ़ केयरफ्री में नीचे और अगल बगल एक प्लास्टिक-शील्ड होता है. इस
अतिरिक्त रुकावट के कारण आपके कपड़ों पर दाग़ नहीं लगता.
केयरफ्री की सुविधा और केयरफ्री के आराम का जवाब नहीं. इसलिए
आपको ये याद तक नहीं रहता कि आपके लिए महीने का कौन सा दिन
निश्चित रहा है. इससे बहाव बाहर नहीं निकल पाता और धोने सुखाने की झंझट
से भी छुटकारा.
केयरफ्री इस्तेमाल के लिए तैयार. बदलने में बहुत आसान, फेंकने में कोई
परेशानी नहीं और कितनी साफ़सुथरी.
ज़माने के साथ चलिए. केयरफ्री पहनिए और सभी समय विश्वास से भरी रहिए.

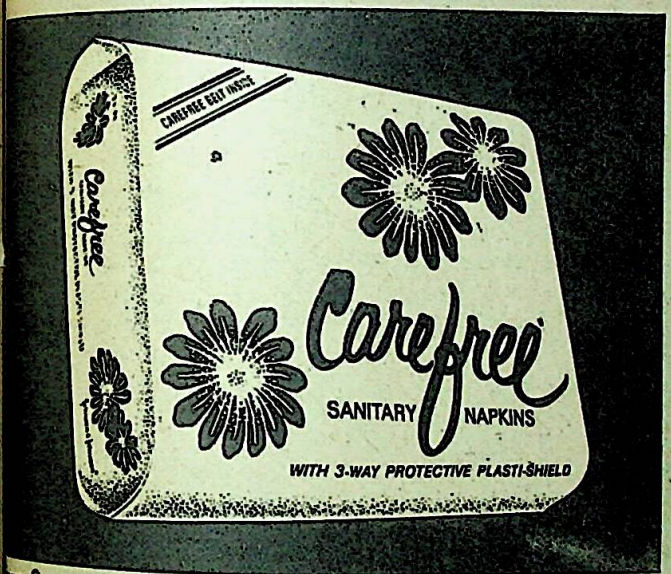

केयरफ्री १० और २० नैपकिनों के पैक में मिलती है.

मासिक से संबंधित स्वास्थ्यविज्ञान पर मुफ़्त पुस्तिका पाने
के लिए डाकखर्च के रूप में ४० पैसे के डाकटिकट के साथ
नीचे पते पर लिखिए :

जॉन्सन एण्ड जॉन्सन लिमिटेड
बम्बई ४०० ०३६.

Johnson & Johnson

केयरफ्री जॉन्सन एण्ड जॉन्सन यू.एस.ए. का ट्रेडमार्क है © J&J 78

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साफ़ सुन्दर त्वचा, दुल्हन सा रूप रचा

क्लियरेसिल आपके मुंहासों को साफ़ करती है और उन्हें काबू में रखती है.

जब मुंहासे निकल जाएं तो आपको मिलती है बस ढेर सारी सलाहें.

लेकिन इस बारे में असली सलाह तो सारी दुनिया के उन करोड़ों जवान लड़के लड़कियों की हैं, जिन्हें क्लियरेसिल से मदद मिली. क्लियरेसिल सुरक्षित व सुविधापूर्ण दवा है जो मुंहासों की समस्या से निबटने के लिए खास तौर पर बनाई गई है.

ये अब आपके हाथ में है कि क्लियरेसिल से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाएं...अपने मुंहासों को साफ़ करने और काबू में रखने में उसकी मदद आज़माएं, ऐसे—

- क्लियरेसिल हर रोज़ लगाइए.
- क्लियरेसिल पूरे चेहरे पर लगाइए... मुंहासों पर थोड़ी ज़्यादा.

जवानी आती है तो मुंहासे साथ लाती है. मुंहासे इसकी बहार लूट न ले जाएं. इसलिए क्लियरेसिल लगाइए.

क्लियरेसिल ३ तरह से असर दिखाती है.

१. मुंहासों को खोलती है— इसकी खास दवा मुंहासों के मुंह खोलने में मदद करती है.

२. मुंहासों को साफ़ करती है— मुंहासों के भीतर की गंदगी बाहर निकालने में मदद करती है, बिना उन्हें निचोड़े. निचोड़ना नुकसान पहुंचाता है.

३. मुंहासों को सुखा देती है— ज़रूरत से ज़्यादा तेल को सुखाकर मुंहासे मिटाने में मदद करती है.

क्लियरेसिल—दुनिया की नं. १ कील-मुंहासों की दवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • ब्रह्मदेव गुप्त

शरद के फूल

वसंत में फूलों की बहार होती है. इस समय शरद के फूलों की रंग-बिरंगी छटा बाग में समा बांध देती है. ये फूल क्यारियों में हों अथवा गमलों में, सभी स्थानों पर सुंदर दिखाई देते हैं.

वास्तव में इस की तैयारियां वसंत से बहुत पहले से करनी पड़ती हैं. अधिकतर स्थानों पर हेमंत के आते ही बीजों की बोआई शुरू हो जाती है. कुछ फूलों के बीज तो हेमंत के शुरू होने से पहले ही बोने पड़ते हैं.

भारत एक विशाल देश है. इस के विभिन्न स्थानों की जलवायु में काफी अंतर पाया जाता है, अतः स्थान की भिन्नता के कारण बीज बोने के समय में अंतर हो जाता है. अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका में नीचे बताया गया है कि विभिन्न प्रकार के फूलों के बीजों को विभिन्न स्थानों पर कब बोना चाहिए.

पौधघर में तैयारी

नरसरी (पौधशाला) में बीज बोने के लिए क्यारियां जमीन से 15-20 सेंटीमीटर ऊंची बनानी चाहिए. दो क्यारियों के बीच में एक नाली भी छोड़ना जरूरी है. इस प्रकार वर्षा का अधिक पानी क्यारियों में नहीं रह सकेगा. क्यारियों की चौड़ाई 45 से 60 सेंटी मीटर तक रखी जा सकती है.

क्यारियों को खोद कर मिट्टी को बारीक व भुरभुरा कर लेते हैं. इस के बाद उस में गोबर अथवा पत्ती की बारीक व छनी खाद मिलाते हैं. स्लज का प्रयोग भी खाद के रूप में किया जा सकता है लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि यह भी कुछ पुरानी हो जिस से उस की गरमी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निकल चुकी हो.

खाद डालने के बाद क्यारियों को समतल कर के उन्हें तर कर देना चाहिए.

थोड़े बीज बोने के लिए गमलों का भी प्रयोग किया जा सकता है.

बीज की बोआई

जब क्यारियों में केवल नमी रह जाए तो उन में बीज बो देने चाहिए. बीज छितरा कर बोने चाहिए. इस के बाद उन्हें मिट्टी की परत से ढक दें. आमतौर पर बीजों के ऊपर मिट्टी की परत की मोटाई बीजों की मोटाई से अधिक नहीं होनी चाहिए. बीजों के अधिक गहराई पर बोने से उन का अंकुरण बहुत कम हो पाता है.

बीज बोने के बाद क्यारियों में छिड़काव कर दें, आवश्यकता के अनुसार यह छिड़काव रोज भी किया जा सकता है.

बारीक बीजों को अंकुरित होने तक बारीक जाली अथवा शीशे अथवा खाकी कागज से ढक देना चाहिए. शीशे अथवा कागज को हर रोज उठा कर उस पर जमी भाप तथा मिट्टी को साफ करना जरूरी है. अंकुरण के बाद उन्हें हटा देना चाहिए.

पौधशाला में जब पौधे डेढ़ से दो सेंटी मीटर ऊंचे हो जाएं तो उन्हें उठा कर क्यारियों अथवा गमलों में लगाना चाहिए. उठाते समय इस बात का ध्यान रहे कि पौधा उठाते समय क्यारियों में न तो बहुत अधिक पानी हो और न वह बिलकुल सूखी हो.

क्यारियों या गमलों में पौध लगाने से पहले उन्हें खाद डाल कर तैयार कर लेना जरूरी है. समतल कर के उन्हें पानी से तर कर देना भी जरूरी है. जब उन का पानी सूख कर मिट्टी में केवल नमी रह जाए तभी पौध लगाए.

तालिका

फूल का नाम	बीज बोने का समय					
	असम, बंगाल, उड़ीसा	बंगलौर, पुणे	बंबई, मद्रास	हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, दिल्ली	उत्तर भारत के पहाड़ी स्थान	क्यारियों में पौधे से पौधे की दूरी
एक्रोक्लायनम	सितंबर, अक्तूबर	मई अक्तूबर	अक्तूबर	सितंबर अक्तूबर	मार्च, अप्रैल	30 सें. मी. X 30 सें. मी.
एलाईसम	"	मई, सितंबर	सितंबर	"	"	"
ब्रेचीकोम	सितंबर अक्तूबर	"	"	अगस्त सितंबर	"	15 सें. मी. X 30 सें. मी. 30 सें. मी. X
कैंडीटफ्ट	"	"	"	"	"	30 सें. मी.
कैलेंड्ला	"	"	"	अगस्त से अक्तूबर	"	"
कार्नेशन	"	अक्तूबर	अक्तूबर	अगस्त से सितंबर	"	सखि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुपर ७७७

मैल की शामत, सफ़ेदी की ताक़त

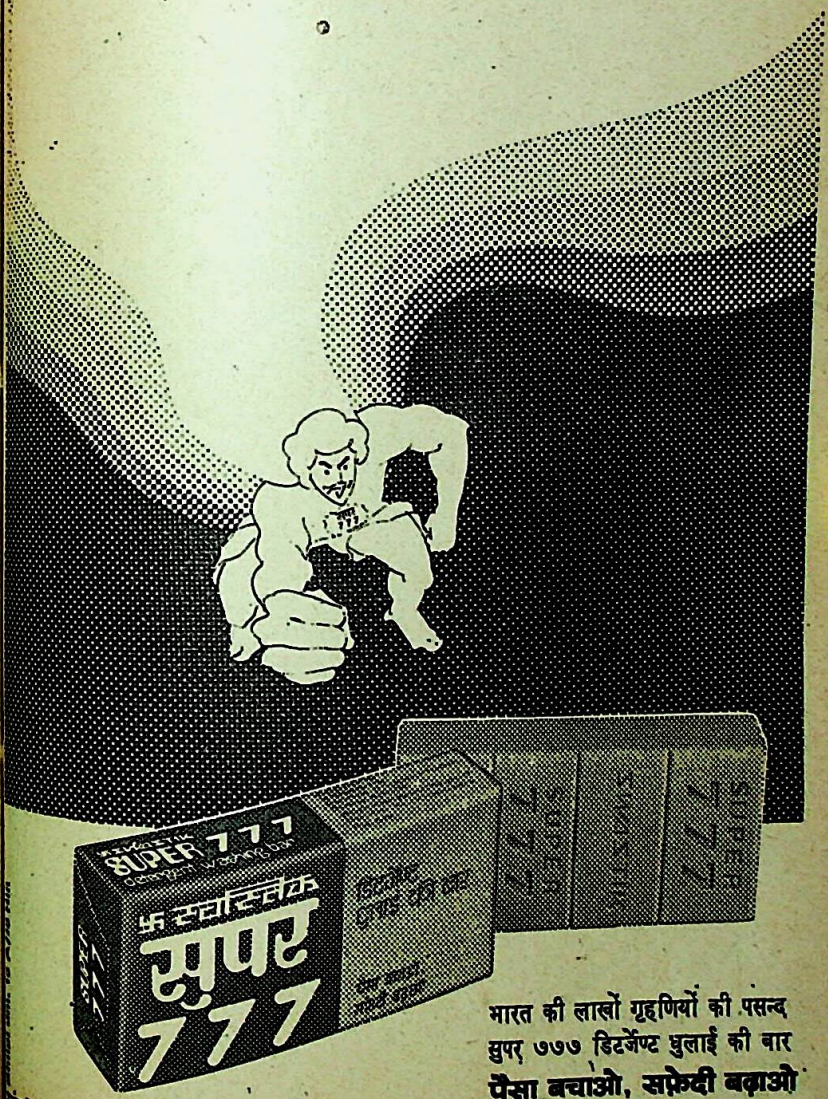

भारत की लाखों गृहणियों की पसन्द
सुपर ७७७ डिटर्जेण्ट धुलाई की बार
पैसा बचाओ, सफ़ेदी बढ़ाओ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है कोई ऐसा तेल जो स्वादिष्ट भोजन पकाए और अच्छा स्वास्थ्य भी बनाए?

जीहां, मार्वो

गुडहेल्थ रिफ़ाइन्ड तेल

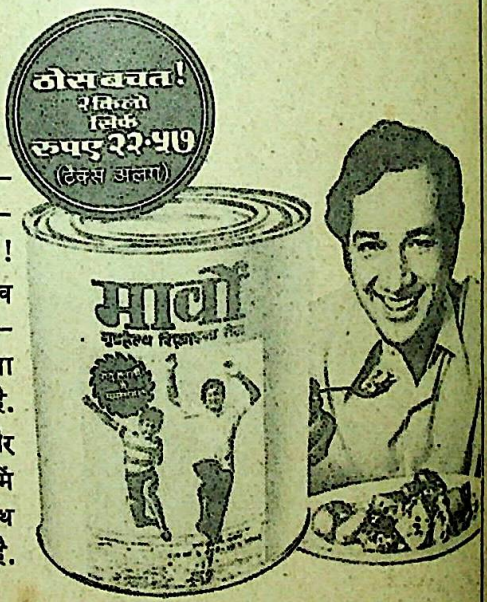

कैसे? मार्वो पूर्णतया शुद्ध है—
इसमें पके खाने में सही स्वाद है—
यानी ज़ायकेदार!

सिर्फ़ यही नहीं, इसमें प्राकृतिक तत्व पॉलिअनसेचुरेट्स है—
जो नर्सों में चर्बी का जमाव घटाता है; खून के प्रवाह को बनाए रखता है.

याद रखिए: रोज़ाना कसरत और मार्वो गुडहेल्थ रिफ़ाइन्ड तेल में पका खाना पूरे परिवार को स्वस्थ और चुस्त रखता है.

विश्वसनीय हिन्दुस्तान लीवर की गारंटी के साथ.

लिंटास-MGO. 8-1810 HI (HA)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फूल का नाम	बीज बोने का समय					
	"	मई, सितंबर	"	सितंबर अक्तूबर	"	45 सें. मी. × 45 सें. मी.
	"	अक्तूबर	"	अगस्त से सितंबर	"	30 सें.मी. × 30 सें. मी.
	फरवरी से जून सितंबर से अक्तूबर	अप्रैल, सितंबर	जनवरी और मई	मार्च और सितंबर	"	25 सें. मी. × 45 सें. मी.
	अगस्त सितंबर	"	सितंबर	अगस्त, सितंबर	मार्च अप्रैल और अगस्त, सितंबर	30 सें. मी. × 30 सें. मी.
	सितंबर अक्तूबर	मई, सितंबर	अक्तूबर	"	मार्च, अप्रैल,	"
	"	अक्तूबर	अक्तूबर	"	मार्च, अप्रैल अगस्त सितंबर	"
	जून, सितंबर, अक्तूबर	"	सितंबर	जून से सितंबर	अप्रैल, मई	"
	सितंबर अक्तूबर	मई, सितंबर	"	अगस्त सितंबर	मार्च, अप्रैल	"
	"	"	"	"	"	15 सें. मी.
	फरवरी से जून, सितंबर अक्तूबर	जनवरी, मई और सितंबर	जनवरी, मई और सितंबर	फरवरी, से जून, अगस्त सितंबर	मार्च, अप्रैल,	30 सें. मी. × 30 सें. मी.
	सितंबर अक्तूबर	सितंबर	अक्तूबर	अगस्त, सितंबर	"	"
	"	मई, सितंबर	सितंबर	"	मार्च, अप्रैल सितंबर	25 सें. मी. × 60 सें. मी.
	"	सितंबर	"	"	"	30 सें. मी. × 30 सें. मी.
	"	मई, सितंबर	"	"	"	"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फूल का नाम	बीज बोने का समय					
वर्बीना हाईब्रिडा	सितंबर, अक्तूबर	"	"	अगस्त, सितंबर	"	"
वर्बीना एरिनोइडिस	फरवरी से जून, सितंबर अक्तूबर	"	जनवरी और सितंबर	मार्च से जून अगस्त, सितंबर	"	"
विंका	सितंबर अक्तूबर	"	जनवरी और मई	"	"	"
जिप्सोफिला	"	"	अक्तूबर	अगस्त, सितंबर	अप्रैल	"
हेलिक्रिसम	"	"	सितंबर	"	मार्च, अप्रैल	45 सें.मी. x 45 सें. मी.
हालीहाक	"	"	"	"	मार्च अप्रैल सितंबर	45 सें. मी. x 90 सें. मी.
इपोमिया	"	"	अक्तूबर	सितंबर	मार्च से मई	30 सें. मी. x 30 सें. मी.
लार्कस्पर	"	"	"	अगस्त, सितंबर	मार्च, अप्रैल और सितंबर	"
लाईनेरिया	"	"	सितंबर	"	मार्च, अप्रैल	15 सें. मी. x 15 सें. मी.
लाईनम	"	"	"	"	"	"
ल्यूपन	"	"	अक्तूबर	"	"	25 सें. मी. x 30 सें. मी.
मेरी गोल्ड	"	"	"	"	"	30 सें. मी. x 45 सें. मी.
मिसेंबरी एंथम	"	सितंबर	"	"	"	15 सें. मी. x 15 सें. मी.
म्युलस	"	मई, सितंबर	सितंबर	"	"	30 सें. मी. x 30 सें. मी.
नरसियस	"	"	अक्तूबर	"	अप्रैल, मई	30 सें. मी. x 60 सें. मी.
निमेसिया	"	"	"	"	"	30 सें. मी. x 30 सें. मी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोशनी की चाह में

मन के द्वार पर जले
दीप एक प्यार का.

ये उम्र जगमगा सके
रूप झिलमिला सके,
गीत कोई आस का
ये होंठ गुनगुना सके.

तार झनझना उठे
सांस के सितार का.

थिरकने लगे किरण
महकने लगे चमन,
सिंगार इस तरह करो
लहक उठे धरा गगन.

इक हंसी में खिल उठे
फूल हरसिंगार का.

दूरियां सिमट चलें
समीपता की बांह में,
जिंदगी जिएं तो सिर्फ
रोशनी की चाह में.

हर घड़ी हो आगमन
मद भरी बहार का.

—राजेंद्र सोनी

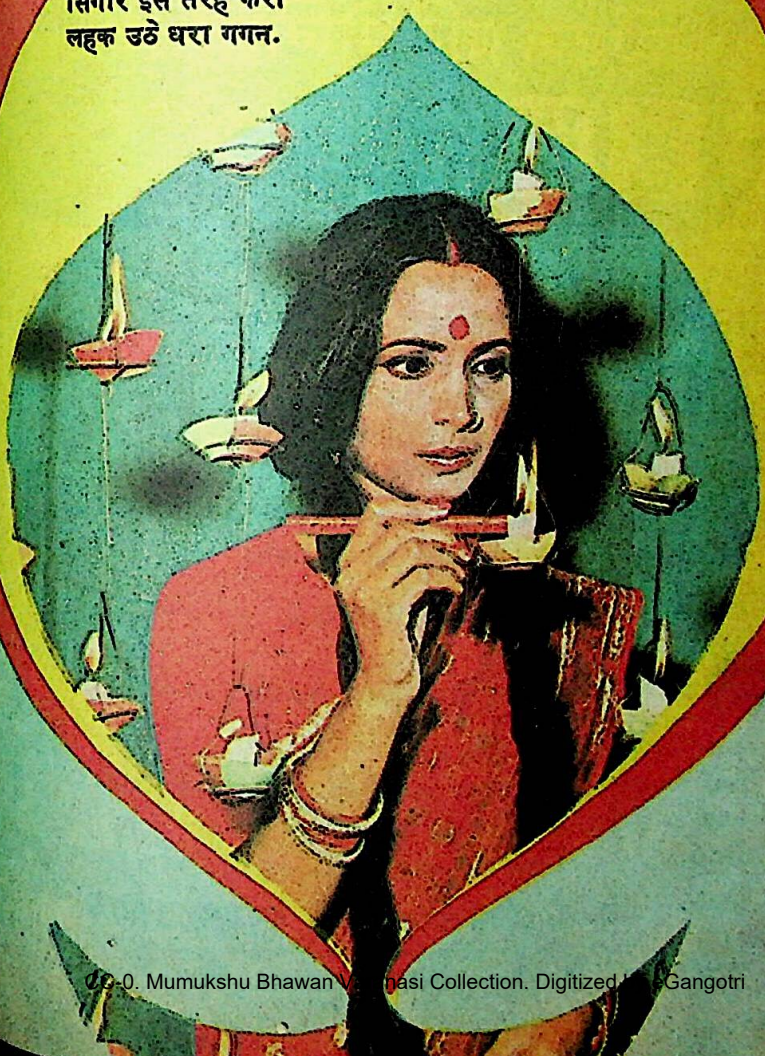

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कैमल

क्रायलिन®
फ़ैब्रिक पेण्टिंग प्रतियोगिता

कपड़े के एक चौकोर (३५ सें.मी. × ३५ सें.मी.) टुकड़े पर, जिसके किनारे सफ़ाई के साथ सिले हुए हों, दिये हुए डिज़ाइन खाका उतारकर उसे कैमल क्राइलिन कलर्स से पेंट कीजिये। कलर्स को जितना भी संभव हो सके उतना पतला रखें। कलर्स को पतला करने के लिए उनमें कैमल क्राइलिन मीडियम मिलायें। हर प्रतियोगी अधिक से अधिक ३ प्रविष्टियां भेज सकता है।

पुरस्कार: रु. १००/-, रु. ७५/-, रु. ५०/- और १० सम्मानपत्र।

अपनी पेंट की हुई प्रविष्टियां निम्नलिखित पते पर भेजिये:

जन सम्पर्क अधिकारी (पब्लिक रिलेशन ऑफ़िसर),

कैम्लिन प्राइवेट लिमिटेड,
आर्ट मटीरियल डिवीज़न, जे. बी. नगर, बम्बई-४०० ०५९

प्रविष्टि के साथ नाम व पता लिखा तथा टिकट लगा लिफ़ाफ़ा भेजने पर हर उपयोगी को 'ट्रान्सफर्स' दिये जायेंगे। कृपया एक चिट पर अपना नाम और पता अंग्रेजी में लिखकर उसे अपने प्रवेश पत्र के साथ नत्थी कर दीजिये। आपके प्रवेश पत्र वापस नहीं किये जायेंगे।

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तारीख: 25, नवंबर, 1978

CONTEST NO 2

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

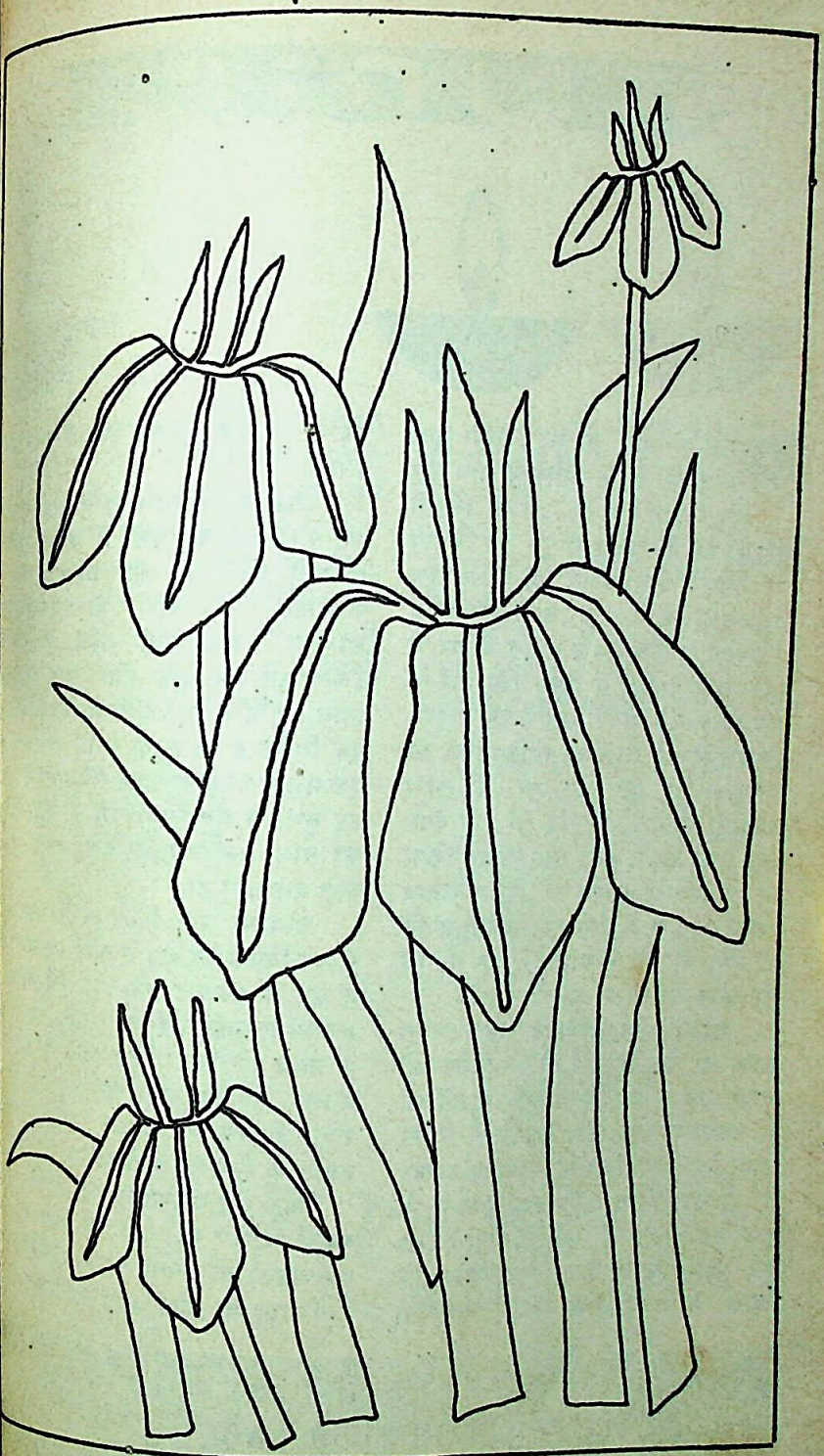

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जलतरंग

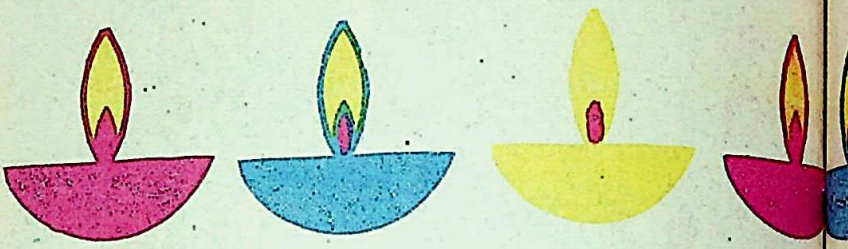

अंजलि को यहां आ कर कितना सूना लगता है. जब से विवेक के साथ उस का विवाह हुआ है, उस की जिंदगी सूनी हो गई है. विवाह से पूर्व की जितनी भी कल्पनाएं व आकांक्षाएं थीं वे सब धूल में मिल गई हैं. उस ने कितने स्वप्न देखे थे विवेक के साथ आनंद मनाने के पर वे सब एकदम मिट्टी में मिला दिए उस ने. उसे क्या मालूम था कि ऊपर से इतना खुश-मिजाज दिखाई देने वाला व्यक्ति दिल का इतना कंजूस होगा कि उस की सारी आशाओं को पैरों तले रौंद कर रख देगा. उफ, क्या उस ने इसी लिए विवाह किया था कि दिनरात पैसेपैसे का हिसाबकिताब रखती रहे, दिन में तीन बार खाना बनाने की चिंता को सिर से बांधे रहे, उस पर भी हर समय बचतबचत का रोना सुने?

कई बार स्वयं उसे अपने किए पर रोना आता था. उस ने स्वयं ही तो विवेक को चाहा, उस से प्रेम किया और मातापिता की इच्छा के विरुद्ध उस से विवाह भी कर लिया. उस ने तो सोचा था कि विवेक डाक्टर है. बारह सौ रुपए प्रति माह कमाता है. कुछ ऊपर की भी कमाई होगी. दोनों खूब मजे से रहेंगे. यदि यह पता होता कि विवेक के साथ ऐसी जिंदगी गुजारनी पड़ेगी? तो वह कदापि उस से विवाह न करती.

आज उसे पश्चात्ताप हो रहा है कि उस ने पिताजी की पसंद के लड़के विवेक से शादी क्यों नहीं की, जो उस की हर फरमाइश पूरी करने के योग्य था. आभूषण, अच्छेअच्छे वस्त्र, कार व टेलीविजन सब कुछ होता उस के पास. नित्य नई और मनचाही साड़ियां मिलतीं. एक विवेक है कि शादी के दो वर्ष बाद भी एक मीटर कपड़ा तक ला कर नहीं दे सका. वह घृणा से मुंह बना लेती है. जैसे विवेक का नाम अब उस के लिए कोई कड़वी वस्तु बन गया हो.

दीवाली आने में केवल दस दिन बाकी हैं. पर विवेक को इस से कोई मतलब नहीं. न घर में संजावट की कोई नई चीज, न घर की लिपाईपुताई का खयाल, न रोशनी के प्रबंध की चिंता. बस, अपनी ड्यूटी से मतलब है. दिनरात मरीजों से जूझता रहता है. जैसे घर में बस, उसे खानापीना बनाने के लिए ही रख छोड़ा हो.

ऊंह, ऐसे व्यक्ति को तो शादी ही नहीं करनी चाहिए थी. प्रेम का ढोंग रचाते एक लड़की को अपनी महरी बनाने के लिए न विवाह का कोई उत्साह, न जवानी का

अंजलि चाहती थी कि विवेक भी दीवाली को उसी तरह पूरी चमक दमक और शोरशराबे के साथ मनाए जैसा कि उस के पिता के घर में होता आया है. पर विवेक इस के लिए राजी नहीं हुआ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीप जले

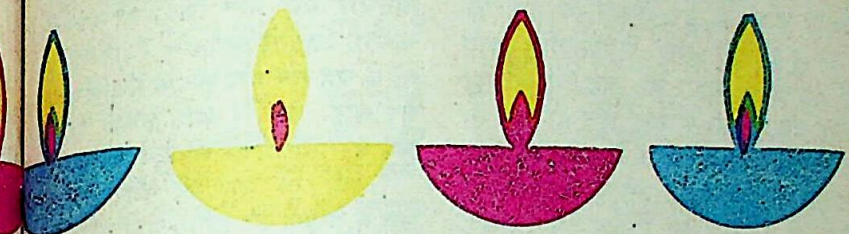

रमंग. और तो और शादी के बाद पिताजी ने हनीमून के लिए जो पैसा दिया था उसे भी गांठ में बांध कर रख लिया और मुझे टका सा जवाब पकड़ा दिया, "डाक्टरों के पास हनीमून मनाने का समय नहीं होता, अंजलि. इन दिनों मेरे कई मरीजों की हालत गंभीर है. उन्हें मरता हुआ छोड़ कर मैं हनीमून मनाने चला जाऊं तो कुछ भी आनंद नहीं आएगा. क्षमा करना मुझे."

एकएक दिन कठिनाई से गुजर रही है वह विवेक के साथ. पिछली दीवाली को पापा के घर की कितनी याद आई थी. बहुत जिद की थी उस ने कि दीवाली पर या तो वे दोनों ही चलें या केवल उसे ही भेज दिया जाए.

पर विवेक ने उस की एक न सुनी. "वाह, विवाह के पश्चात हमारी पहली दीवाली है. हम इकट्ठे मनाएंगे यहीं अपने

"अंजलि, यदि तुम चाहो कि मैं भी तुम्हारे पापा की तरह अपने घर में शराब और जुए का दौर चलाऊं तो यह मुझ से कभी नहीं होगा," विवेक ने कहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घर में. हां, तुम चाहो तो कुछ घंटों के लिए तुम्हें वहां ले जाऊंगा."

अंजलि ने ज्यादा जिद फिर इसी आशा से नहीं की कि विवेक वास्तव में ही उस के साथ दीवाली बहुत अच्छे ढंग से मनाने वाला है. पर दीवाली के नाम पर हुआ कुछ नहीं. थोड़े से दसबारह रुपए के पटाखे ले आया था. कुछ मोमबत्तियां और दीए. उन्हीं में ऐसा खुश हो रहा था मानो सौ रुपए के पटाखे ले आया हो. फिर न तो कोई उपहार ही उसे ला कर दिया, न घर को बिजली की फिटिंग से सजाया. 'थोड़े से दीयों और मोमबत्तियों से भी कोई दीवाली मनाई जाती है? जब तक आसपास के सब मकानों में अपना मकान सब से अधिक न जगमगाए तब तक दीवाली ही कैसी?' वह दिल ही दिल में जल उठी थी विवेक की कंजूसी पर.

अब की बार तो चाहे कुछ भी हो, वह अपने घर की सजावट पर चारपांच सौ रुपए अवश्य खर्च करेगी. कम से कम सौ डेढ़ सौ रुपए के पटाखे और मोमबत्तियां लाएगी. आखिर वह हर महीने पांच सौ रुपए किस लिए बचाती है. बस, विवेक को तो यही धुन सवार है कि अपनी आमदनी में से इतना तो हर महीने बचना ही चाहिए. पर दीवाली के आने पर तो वह पूरा वेतन खर्च करेगी. आखिर साल में एक ही बार तो आती है दीवाली. यदि विवेक उसे ऐसा नहीं करने देगा तो वह अपना रास्ता अलग अपनाएगी, वह अपनी इच्छाओं को और अधिक नहीं मार सकती.

पलंग पर लेटेलेटे उसे उन दिनों की याद हो आई जब दीवाली से महीना पहले ही घर में मेला लगने लगता था. एक ओर तो मां घर की सजावट व सफाई के लिए नौकरों को निर्देश देती रहतीं, दूसरी ओर मिठाई के लिए घर में हलवाई बैठ जाता. दिन भर कोई न कोई सामान के लिए बाजार दौड़ता रहता. नित्य नई खरीदी वस्तुओं से घर भर जाता. घर के सभी व्यक्तियों के लिए अपनीअपनी पसंद के कपड़े बनते, रात के समय पिताजी के मित्रों का जमघट शुरू हो जाता. घर के सामने कारों की लाइन लग जाती. जुआ जमता, साथ ही शराब भी चलती. हंसी के कहकहों के साथ कब रात ढल जाती और सुबह के तीनचार बज जाते किसी को पता भी न चलता. कितनी हसीन व रंगीन रातें होती थीं वे. यह सब याद कर के अंजलि की आंखें भर आईं. उस के आंसू तकिए पर गिरने लगे पर पोंछने की भी सुध उसे नहीं रही.

ज्यों ही उस की नजर ऊपर उठी उस ने विवेक को सामने खड़ा पाया. उस ने झट से अपने आंसू पोंछ लिए. विवेक उसे रोता देख कर मुसकरा उठा. बोला, "मैं जानता हूं तुम क्यों रो रही हो. मुझ से शादी कर के पछता रही हो न?"

अंजलि को भी कहने का अवसर मिल गया, "हां, पछता रही हूं. मैं क्या कोई भी लड़की मेरी जैसी स्थितियों में पल कर

अंजलि ने विवेक से प्रेमविवाह विवेक के साथ दूसरी दीवाली

आप जैसे व्यक्ति के साथ कभी सुखी नहीं रह सकती. यह भी कोई जिंदगी है? हर वक्त रुपएपैसे की चिंता करो, अपनी इच्छाओं को मारो. आखिर व्यक्ति कमाता किस लिए है? खर्च करने के लिए ही तो?"

"तुम मुझे गलत समझ रही हो, अंजलि. मैं ने कभी तुम से अपनी आवश्यक वस्तुएं खरीदने के लिए मना नहीं किया. पर इच्छाओं का नाम ले कर मैं घर फूंक कर तमाशा नहीं देखना चाहता, दीवाली के नाम पर दीवालिया कभी नहीं बनूंगा. इतना याद रखो."

"तुम स्वयं खर्च नहीं कर सकते तो चलो अब की बार अभी से पापा के यहां चलते हैं. वहीं शान से दीवाली मनाएंगे." अंजलि ने अपने मन की बात कह दी.

"पिछले वर्ष ले तो गया था तुम्हें कुछ घंटों के लिए वहां. सच पूछो तो मेरा तो दम ही घुट रहा था, शराब और जुआ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूरी रात का जागरण. अगले दिन ड्यूटी भी नहीं कर पाया ढंग से. मुझे ऐसी अनियमित जिंदगी से नफरत है," अपने एकएक शब्द पर जोर देते हुए विवेक ने कहा.

अंजलि तड़प उठी, "पैसा बचाने की फिक्र में तुम जैसे व्यक्ति उस आनंद को कैसे जान पाएंगे? त्योहार पर भी आनंद न मनाया तो जिंदगी कैसी?"

"जो मेहनत से कमाता है, वह अपनी कमाई को कभी भी यों शराब और जुए में नहीं बहा सकता. न ही काम करने वाला व्यक्ति इस प्रकार अपने समय को बरबाद कर सकता है. इस बार तो मैं बिलकुल कहीं नहीं जाऊंगा," उस ने दृढ़ता से कहा.

"फिर यदि मेरे साथ यहीं दीवाली मनाना चाहते हो तो जैसे मैं चाहूं वही करना होगा. मेरी शर्त नहीं मानोगे तो मैं तुम्हारी एक नहीं सुनूंगी और चली जाऊंगी अपने मायके. मेरा भी यह दृढ़

किया था पर उस के लिए मनाना भी भारी हो गया. . .

निर्णय है," अंजलि रूठे स्वर में बोली.

"मैं तुम्हारी हर उचित शर्त मानने को तैयार हूं, अंजलि, पर यदि तुम चाहो कि मैं भी तुम्हारे पापा की तरह अपने घर में शराब और जुए का दौर चलाऊं, रोशनी के नाम पर हजार पांच सौ रुपए फूंक दूं, तो वह मुझ से कभी नहीं होगा."

"क्या साल में एक बार भी मेरे लिए इतना नहीं कर सकते? क्या तुम्हारे लिए रुपए का महत्व मेरी खुशी से ज्यादा है?" और भी रुष्टता भरे शब्दों में अंजलि ने कहा.

"तुम्हीं सोचो, अंजलि, दीवाली हर साल आएगी और जिंदगी लंबी है. हर वर्ष इतना पैसा फूंकने के बजाए बचाएंगे तो हमारे ही काम आएगा," विवेक ने समझाने के लहजे में कहा.

"पापा के घर में तो कभी रुपया बचाने का नाम ही मैं ने नहीं सुना. पैसा तो आदमी के हाथ का मैल होता है. इसे तो धोने में ही भलाई है.' मैं ने तो मां से यही सुना था."

"जब तक मनुष्य के पास अंधाधुंध पैसा रहता है वह यही सोचता है. मेरे पास तुम्हारे पापा जितनी अंधाधुंध कमाई नहीं है. न ही मैं ऐसे पैसे का कुछ ही महत्त्व समझता हूं अब तुम मेरी पत्नी हो. तुम्हें मेरे साथ जिंदगी गुजारनी है. पैसे के महत्त्व को समझना है. बस, यही मैं तुम से चाहता हूं."

"तो तुम भी कान खोल कर सुन लो. मैं भी ऐसे गिनगिन कर पैसे खर्च करने का आदी नहीं हूं." अंजलि तड़प उठी.

अगले दिन विवेक जब हस्पताल से लौटा तो घर के बाहर ताला लगा देख कर वह जान गया कि अंजलि चली गई है. उस ने पड़ोस के घर से चाबी मांगी. सूने घर में प्रवेश कर के उस का हृदय विदीर्ण हो उठा, पर वह जानता था कि अंजलि को अवश्य ही एक दिन अपनी गलती महसूस होगी और वह उस के पास लौट आएगी. आशा का एक दीप अब भी उस की आंखों के आगे जगमगा रहा था.

ज्योंज्यों दीवाली निकट आती जा रही थी, अंजलि का हृदय अब की बार बाहरी चमकदमक देख कर भी न जाने क्यों खुश नहीं हो रहा था. यद्यपि घर के लोगों ने उस का दीवाली पर भरपूर स्वागत किया था, पर जब भी कोई उस से पूछता कि विवेक क्यों नहीं आया तो उस का मन बुझ जाता. उस ने झूठ बोल कर कि अत्यधिक व्यस्तता के कारण वह नहीं आ पाएंगे, सब को आश्वस्त तो कर दिया पर उस के चेहरे की उदासी से सभी ने स्पष्ट भांप लिया था कि वह कुछ छिपा रही है, दोनों में कुछ अनबन है.

उसे स्वयं ही अपने ऊपर लज्जा आती. उसे लगता कि अब उस घर में उसे पहले वाली खुशी कभी नहीं मिल पाएगी. इसलिए कि यह घर उस के लिए पराया सा है. बाहरी जगमगाहट उस के लिए निरर्थक है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

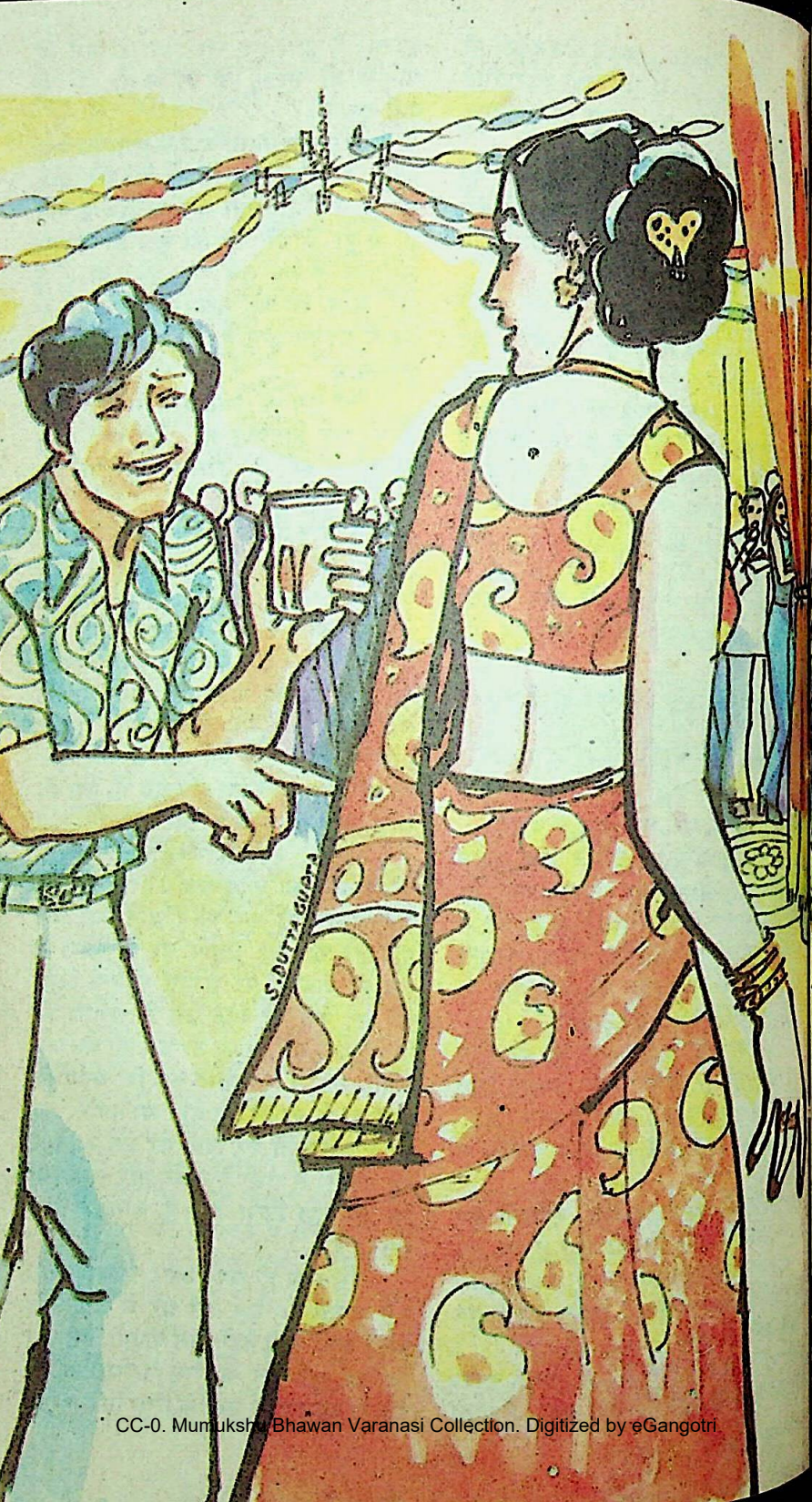

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत प्रयत्न कर के वह अपनी आंतरिक वेदना को छिपाती रहती और हर प्रकार से खुश दिखने का प्रयत्न करती. दीवाली के निकट आने के साथ ही घर की रौनक बढ़ती जा रही थी. रात को कारों की पंक्तियां उस के पापा के घर के बाहर उन की शान का बखान करती दिखाई देतीं. वह भागभाग कर मेहमानों की अगवानी करती. उसे देखते ही लोग उस की खाली बगल में विवेक को ढूंढ़ते और सब की

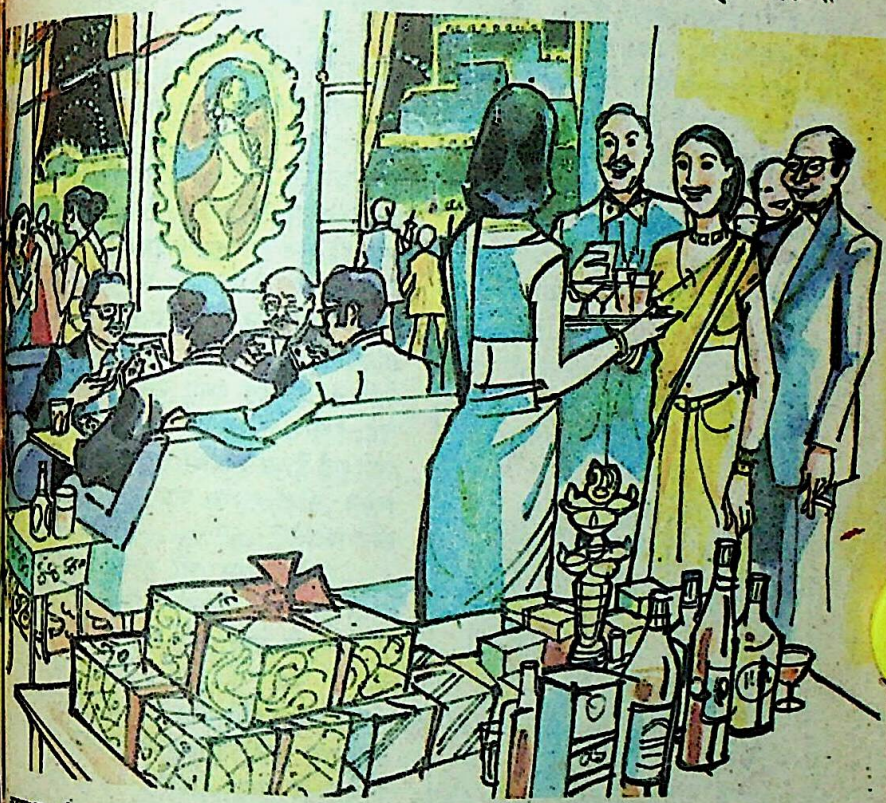

शराब और जुए के नशे में झूमते हुए विक्रांत ने अंजलि पर कटाक्ष करते हुए कहा था, "बारह सौ रुपल्ली पाने वाला वह डाक्टर तो सारी उमर में भी ऐसी साड़ी नहीं पहना पाएगा."

सहेलियों पर वही प्रश्न तैर जाता कि विवेक कहां है?" उस का अंतर्मन रो उठता. ऊपर से वह कितनी ही खुश दिखाई देने का प्रयत्न करती पर उसे लगता उस के दिल का एक कोना टूट कर कहीं अलग छिटक गया है विवेक के पास ही.

फिर आ पहुंची दीवाली की रात, चारों ओर धूमधड़ाका होता रहा, आतिशबाजियां व पटाखे छूटते रहे. उस की मां ने उसे सात सौ की साड़ी उपहार में दी. पर उसे पहनने को उस का मन नहीं हुआ. अनमने मन से पहन कर जब वह शीशे के सम्मुख खड़ी हुई तो उसे लगा उस ने स्वयं विवेक का अपमान किया है. विवेक से विवाह कर के उस की पत्नी बनने के बाद मातापिता के पैसे पर उस का कोई अधिकार नहीं रह जाता है. विवेक से रूठ कर इस घर में आने का उसे कोई हक नहीं था. अब भी यदि मां को पता लग जाए कि वह रूठ कर आई है तो सात सौ रुपए की साड़ी के स्थान पर सात जूते मुंह पर लगाएंगी.

रहीसही कसर भी तब पूरी हो गई जब उस साड़ी में देख कर शराब व जुए के नशे में झूमते हुए विक्रांत ने उस पर कटाक्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया, "बारह सौ रुपल्ली पाने वाला वह डाक्टर तो सारी उमर भी ऐसी साड़ी कभी नहीं पहना पाएगा तुम्हें, अंजु. यह तो तुम्हारी मम्मी की ही मेहरबानी दिखाई देती है."

अंजलि अपमान से तड़प उठी थी. उस ने कमरे में जा कर साड़ी को उतार दिया और अपनी लाई हुई साड़ी पहन कर पलंग पर लेट कर सिसकने लगी. उस समय लोग जुए में व्यस्त थे. शराब के नशे में झूम रहे थे. उसे पूछने वाला था ही कौन? न जाने कब उस की आंख लग गई. स्वप्न में भी वह विवेक के आगे रोती रही. उस से क्षमायाचना करती रही.

करीब तीन बजे पूरी कोठी में भाग-दौड़ और हंगामा सुन कर उस की आंखें खुलीं. सब लोग इधरउधर भाग रहे थे. पकड़ो...पकड़ो, चोर सब माल ले कर भाग रहे हैं." ऊपर की खिड़कियों के सभी

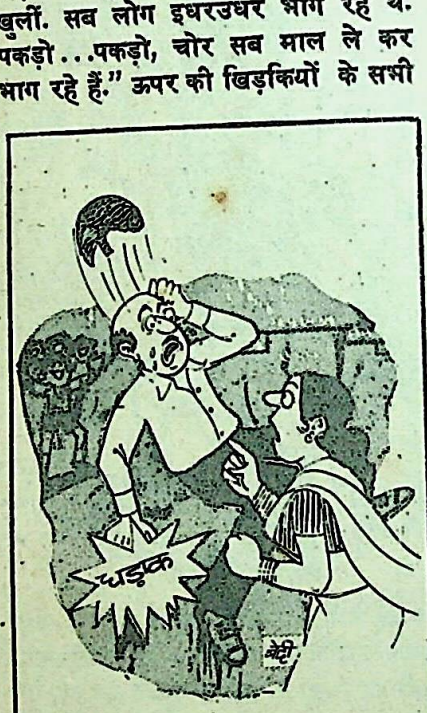

"मैं ने तो पहले ही कहा था कि इतने शक्तिशाली पटाखे मत खरीदो, अब उड़ गई न विग पटाखे के धमाके से. . ."

शीशे तोड़ कर तिजोरी व गोदरेज की अलमारियों में से सारी रकम, गहने व कीमती वस्त्र ले कर चोर न जाने कहां भाग गए थे. लगता था चोरों के किसी बड़े गिरोह ने पहले से ही योजना बना रखी थी. नीचे हाल में जुआ चलता रहा और ऊपर चोर बेफिक्री से अपना काम करते रहे. माल का कहीं पता न चला तो अंजलि के पापा को भारी सदमा पहुंचा. उन्हें हार्ट अटैक हो गया और उसी समय हस्पताल पहुंचाया गया.

दुखभरजेम्मी में विवेक की ड्यूटी थी. उस ने अथक परिश्रम कर के रात भर जाग कर अपने ससुर के प्राणों की रक्षा की. अंजलि भी रात भर वहीं रही. विवेक अपने कार्य में व्यस्त था और अंजलि मन ही मन उस के कदमों पर झुकती जा रही थी. दोनों ही कुछ भी बोल नहीं पाए.

एकांत पा कर अंजलि ने विवेक से कहा, "तुम ने पापा की जिंदगी तो बचा ली, लेकिन उन की आयु भर की कमाई चली गई. दिनेश भैया की अभी पढ़ाई भी पूरी नहीं हुई है. उसे अभी कहीं सर्विस में जाने से पहले तीन साल का खर्च चाहिए. कैसे चलेगा?"

"ओह, तुम भी अब इतना समझने लगी हो? अरे, चिंता क्यों करती हो. अभी तो तुम्हारे पापा की मेहनत की बहुत सी कमाई बैंक में होगी...उस से तुम्हारे भैया की पढ़ाई मजे से हो जाएगी और तुम्हारा मनचाहा खर्च भी चल जाएगा." विवेक ने व्यंग्य किया.

अंजलि ने आंखों में आंसू भर कर कहा, "यह समय ऐसी बातें करने का नहीं है. सच तो यह है कि पापा ने कभी बचाने की सोची ही नहीं. जो कमाया वह सब फूंक दिया या उस का कुछ खरीद लिया. घर भरा हुआ था आभूषणों व कीमती वस्त्रों से... अब कुछ भी नहीं रहा."

"तभी तो मैं तुम से कहता रहा हूं कि जितना कमाओ उस में से बचाओ भी. पैर उतने पसारो जितनी चादर हो."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"तुम वास्तव में ठीक कहते थे. इनसान थोड़ा कमा कर भी उस में से यदि थोड़ाथोड़ा बचाए तो बहुत हो जाता है. दूसरी ओर अंधाधुंध कमा कर अंधाधुंध खर्च करने से तो कुछ भी हाथ में नहीं रहता."

"अब तुम समझदार हो गई हो, अंजलि. तुम्हें एक बात और समझा दूं, मुझे अंधाधुंध कमाई में भी विश्वास नहीं है, क्योंकि अनुचित तरीके से कमाए गए पैसे को इनसान उचित तरीके से संभाल नहीं पाता. उसे चोर या डाकू ही ले जाते हैं." विजय भरी मुसकान से विवेक अंजलि को धनरूपी लक्ष्मी के बारे में बता रहा था.

इतने में अंजलि की मां भी वहीं आ गईं. उन की आंखों की उदासीनता को देख कर विवेक बोला, "मांजी, आप चिंतित न हों. पापा शीघ्र ही ठीक हो कर काम संभालेंगे. यह तो अच्छा हुआ कि उन्हें उचित समय पर उपचार मिल गया और जान बच गई. यदि मैं भी उस समय शराब में डूबा होता तो अनर्थ हो जाता. दिनेश की पढ़ाई का खर्च जब तक पापा ठीक नहीं होते, मैं उठाने को तैयार हूं. आखिर हम बचा कर किस दिन के लिए रख रहे हैं." विवेक ने अंजलि की ओर देख कर कटाक्ष किया.

अंजलि को लगा कि उस का कंजूस पति ही सब से अधिक धनवान है और वह सब से अधिक सुखी है. उसे अपने हृदय में खुशियों के रंगबिरंगे दीए जगमगजगमग करते हुए महसूस हुए. विवेक के कान में जा कर उस ने धीरे से कहा, "मुझे क्षमा कर दो, विवेक...मुझे जल्दी ही लेने के लिए आ जाना ताकि कोई यह न जान पाए कि मैं तुम से रूठ कर आई थी. बोलो, आओगे न? नाराज तो नहीं हो मुझ से?"

विवेक ने शरारत भरी आंखों से कहा, "अब की बार लेने आ जाऊंगा. पर फिर कभी ऐसी गलती की तो..." उस ने गाल पर एक चपत जड़ते हुए कहा, "मार-मार कर सीधा कर दूंगा. समझी?"

"नहीं, बाबा, अब कभी ऐसा नहीं होगा. बारबार माफी तो मांग रही हूं." अब अंजलि अनुभव करने लगी थी कि वास्तविक दीवाली तो मनुष्य की आंतरिक खुशी है. दिल में प्यार की रोशनी है तो घर भी रोशन है. बिना प्यार के ऊपरी जगमगाहट सब व्यर्थ है, दिखावा है. ●

मवाद को सोखने वाला मरहम

स्वीडन के मालमो जनरल हस्पताल के प्लास्टिक शल्य चिकित्सक डाक्टर उल्फ राथमन ने डाक्टर स्टैन जैकबसन के सहयोग से एक ऐसा रसायन तैयार किया है जो घावों से रिसने वाले मवाद को सोखने में सहायक सिद्ध हुआ है. इस नए रसायन का नाम डेब्रिसन रखा गया है.

कुछ रोगियों को, जो वर्षों से बराबर बहने वाले घावों से पीड़ित थे, डेब्रिसन की सहायता से उपचार किया गया. इस रसायन के उपयोग से जलने या दुर्घटना के बाद घावों के ठीक होने में कम समय लगेगा और इस प्रकार प्लास्टिक सर्जरी जल्दी की जा सकेगी.

डेब्रिसन चीनी जैसा दानेदार होता है. इस के छोटे सफेद दाने अपने भार से चार गुना अधिक द्रव को सोख सकते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समाजवाद=सरकारवाद=गुलामवाद

हर समाजवादी देश में समाचारपत्रों पर सरकारी कब्जा होता है. वहां रेडियो, टेलीविजन, पुस्तक प्रकाशन, प्रिंटिंग प्रेस सरकारी हैं. किसी नागरिक को बोलने का, लिखने का, सभाओं में भाग ले कर अपना दुखदर्द, अपने विचार प्रकट करने का मौका नहीं मिलता. अदालतें सरकारी आदेश पर मुकदमों का फैसला करती हैं. बिना आरोप लगाए, बिना मुकदमा चलाए हजारों व्यक्ति जेलों व पागलखानों में बंद रहते हैं या दूर बीहड़ों में निर्वासित कर दिए जाते हैं.

समाजवाद में सरकार अपनी इच्छानुसार व्यक्ति को वेतन देती है—और उस वेतन से खरीदने के लिए अपनी इच्छानुसार सामान मुहैया करती है, और अपनी मर्जी के मुताबिक उस के दाम मुकर्रर करती है. सरकारी नौकरी के सिवा और न कोई नौकरी है, न उद्योगधंधा है. सारे मकान सरकारी, सारी सेवाएं सरकारी. राशन, पानी, बिजली, यातायात सब सरकारी. एक बार नौकरी से अलग तो भूखों मरने के सिवा कोई चारा नहीं.

बेरोजगारी का खातमा समाजवाद की सब से बड़ी उपलब्धि मानी जाती है. परंतु बेरोजगारी हटाने का तरीका? करोड़ों व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दो, शहरों से बेकारों को दूरदराज गांवों में फेंक दो और गांवों से शहरों में किसी को न जाने दो. किसी विदेशी या तटस्थ व्यक्ति को गांवों में न जाने दो, जिस से सही हालत का पता न चल सके. बेकार अपने आप समाप्त हो जाएंगे, बेकारी स्वयं खत्म हो जाएगी.

रूस और चीन में करोड़ों निरपराध व्यक्तियों को मार डाला गया है. वहां न कोई व्यक्ति बिना परमिट/पासपोर्ट के शहर से गांव जा सकता है, न गांव से शहर आ सकता है. बेकारी और भुखमरी की कोई खबर न समाचार-पत्रों में छप सकती है, न रेडियो पर प्रसारित हो सकती है और न सभाओं, जुलूसों, पुस्तकों व पोस्टरों द्वारा प्रचारित की जा सकती हैं. जनता पर शार्टवेव रेडियो रखने पर भी प्रतिबंध है, ताकि वे विदेशों के प्रसारण न सुन सकें. इन समाजवादी देशों से न कोई विदेश जा सकता है न कोई विदेशी वहां आ कर जहां चाहे घूम सकता है.

देश पर, हर नागरिक पर, सारा नियंत्रण सरकार का. पर सरकार पर किस का नियंत्रण? जनता का नहीं, केवल मुट्ठी भर व्यक्तियों का जो एक बार किसी तरह गद्दियों पर कब्जा कर बैठे. वे आपस में चाहे गद्दियां और आसन बदल लें, पर जनता उन्हें नहीं हटा सकती.

सच बात तो यह है कि जनतंत्र और समाजवाद का कोई मेल नहीं है. जहां नागरिक स्वतंत्रता है, वहां समाजवाद चल ही नहीं सकता. जहां समाज-वाद है वहां नागरिक स्वतंत्रता नहीं रह सकती.

आज देश की आवश्यकता—न समाजवाद, न सरकारवाद, बल्कि

नागरिकवाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

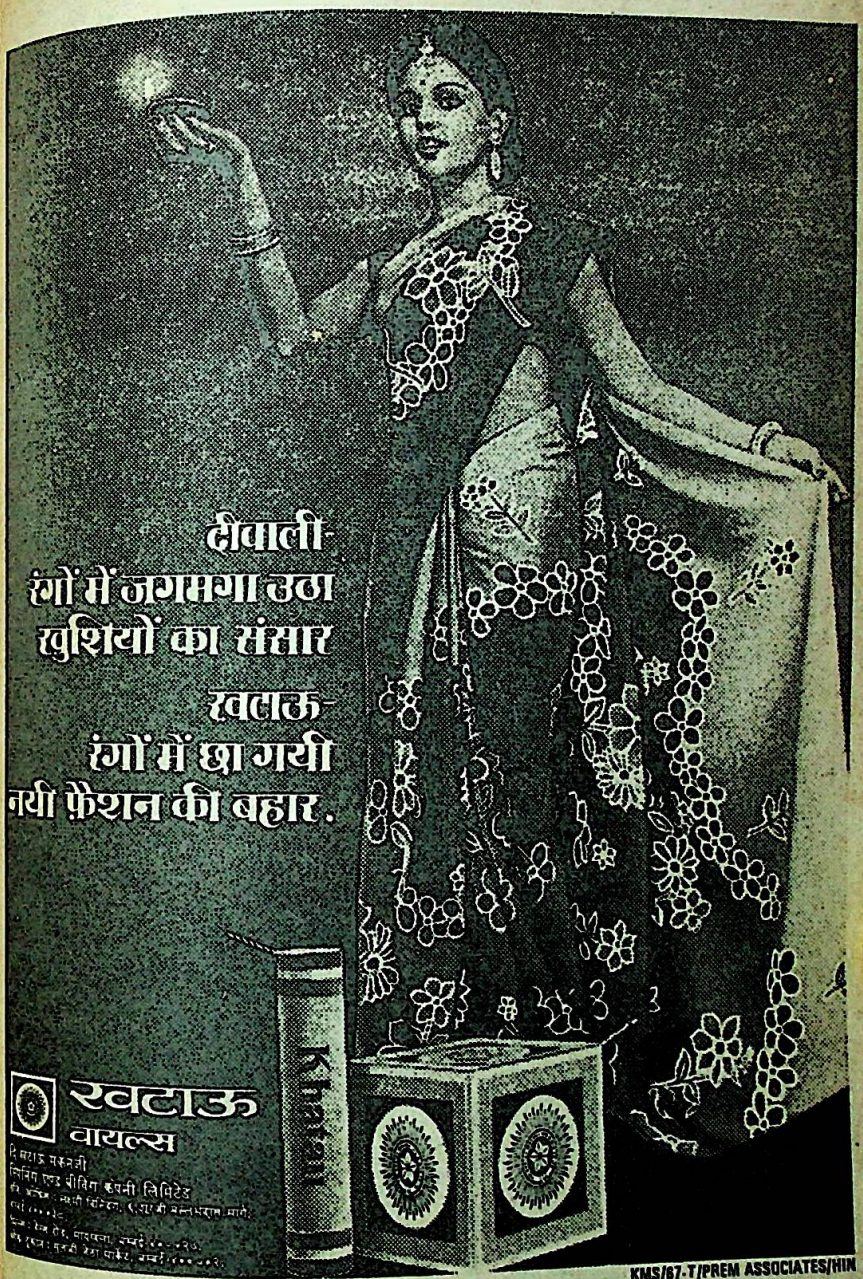

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन की अमा में

मन की अमा में
एक दीप सी
जगमगाती हो तुम.

याद आता है,
रूठने के बाद
एकाएक
तुम्हारा वह
फुलझड़ी हो जाना.

छज्जे पर सजी
दीपों की पांत सा
अकसर,
वह
खिलखिलाना.

आंगन पर मंडी
अल्पना—सा
हथेलियों पर
वह
मेहंदी रचाना.

मन की अमा में
एक दीप सी
जगमगाती हो तुम.

—कृष्णगोपाल 'हृदयंगम'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धन और मान कमाने का अचूक साधन

भगवान बनें

व्यंग्य • जगदीशचंद्र शर्मा

अगर आप बेकार हैं और किसी अच्छे काम की तलाश में हैं या फिर आप संसार में असीमित धन और यश कमाना चाहते हैं तो आप भगवान बनने का ढंग अपनाइए. यह लाखों लोगों का आजमाया हुआ नुसखा है. इस के निष्फल होने का सवाल ही पैदा नहीं होता. इस में मेहनत भी ज्यादा नहीं करनी पड़ती, लेकिन इस का परिणाम इतना अच्छा होता है कि बस, यही कहने को जी चाहता है, "हींग लगे न फिटकरी चोखा आए रंग."

बहुत सारे लोग इस ढंग से शान और वैभव का जीवन जी रहे हैं. आप ने इन के नाम अखबारों में पढ़े ही होंगे. आप भी बड़ी आसानी से मेरी बात पर अमल कर के अवतारी पुरुष, भगवान या फिर योगेश्वर बन सकते हैं. बस, थोड़ी सी बुद्धि की जरूरत है. (क्योंकि ज्यादा बुद्धि वाले तो दूसरे तरीकों से धन कमा ही लेते हैं.)

सब से पहले तो आप अपने लिए कुछ प्रचारक बनाइए. इन प्रचारकों की गिनती जितनी ज्यादा होगी, उतना ही अच्छा रहेगा. ये प्रचारक आप दूरदूर तक भेज दें. अगर आप जालंधर में अवतार बन कर अवतरित होना चाहें तो इन प्रचारकों को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिल्ली, जम्मू, श्रीनगर, शिमला आदि नगरों तक तो भेजना ही पड़ेगा. इन का काम सिर्फ इतना होगा कि ये लोग आम जनता में खुलमिल जाएं. जब आप इन्हें कहें ये लोग यह प्रचार करना शुरू कर दें कि फलां स्थान पर भगवान का अवतार हुआ है. यह अवतारी पुरुष हर दुख तथा रोग का एकदम इलाज कर देता है. हजारों रोगियों को ठीक कर चुका है, आदिआदि.

इन प्रचारकों का प्रबंध करने के बाद आप किसी शुभ दिन यह ऐलान करा दें कि फलां स्थान पर भगवान का अवतार हो गया है. बस, फिर देखिए, किस तरह लोग धड़ाधड़ आप के पास पहुंचते हैं. यही नहीं, अगर आप सोने पर सुहागा चाहें तो दोचार कलाकारों को भी साथ मिला लें. कलाकार जरा जानदार एक्टिंग करने वाले होने चाहिए. ये कलाकार आप के पास अंधे, रोगी, लूलेलंगड़े बन कर आएंगे. आप उन्हें सब के सामने स्पर्श कर देंगे तो वे प्रसन्नता से नाचते हुए प्रदर्शित करेंगे कि वे अब ठीक हो गए हैं.

जब इतना काम हो जाए तो आप को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं. बाकी काम अपनेआप हो जाएगा. थोड़े दिनों के बाद आप चाहें तो प्रचारकों को भी हटा सकते हैं, क्योंकि तब तक आम लोग ही आप का प्रचार करना शुरू कर देंगे.

हां, इस तरीके से निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें तो बहुत अच्छा रहेगा.

अगर भगवान कोई बच्चा बने तो बहुत ठीक रहेगा.

भगवान बनने से पूर्व किसी जादूगर से हाथ की सफाई सीख लें. यह आर्ट इस धंधे में बहुत लाभदायक होता है.

प्रचारकों के साथ कमीशन की बात पहले ही ठीक से तय कर लें. यह न हो कि बाद में किसी बात पर नाराज हो कर वे आप की पोल खोल दें.

अगर कुछ महिलाएं भी भगवान की सेवा में रहें तो जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा.

हो सके तो संस्कृत के कुछ श्लोक भी रट लें.

आप कह सकते हैं कि तू ने इस गुर को 'सरिता' के लाखों पाठकों को बता दिया है. अतः अब यह तरीका कामयाब नहीं हो सकता. नहीं साहब, यह आप का भ्रम है. अगर 'सरिता' के सभी पाठक भी अपनेआप को भगवान घोषित कर दें तो भी कोई अंतर नहीं पड़ता. हमारा यह देश लाखों भगवानों को अच्छी तरह पचा सकता है. मैं भी लिखने का कार्य छोड़ कर यहां धंधा अपनाने जा रहा हूं.

पड़ोसिन : "बहनजी, मैं ने भी कसम खाई है कि जब तक हमारा टी. वी. नहीं आता हम केवल आप के यहां ही टी. वी. देखेंगे, किसी दूसरे के घर नहीं जाएंगे."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

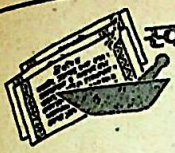

स्वास्थ्य तथा दीर्घ जीवन के लिये ३००० वर्ष पुराना नुसखा

डाबर च्यवनप्राश
पूरे परिवार के लिये ४ सूत्री आयुर्वेदिक टॉनिक

विटामिन सी से भरपूर, स्वादिष्ट खट्टा-मीठा मिश्रण अपने प्राकृतिक रूप में

१. शरीर के तंतुओं को जवान रखता है

डाबर च्यवनप्राश से शरीर के तंतुओं का क्षय धीमा पड़ जाता है।

२. शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति को बढ़ाता है

डाबर च्यवनप्राश शरीर की संपूर्ण प्रतिरोधक शक्ति का विकास करता है तथा सर्दी और जुकाम में भी लाभदायक है।

३. स्फूर्ति प्रदान करता है

डाबर च्यवनप्राश बच्चों में स्फूर्ति बनाए रखता है और वृद्धावस्था में कार्यशक्ति विकसित करता है।

४. इसमें संचय और वृद्धि करने के गुण हैं

डाबर च्यवनप्राश शरीर के विकास में मदद देता है।

देवताओं का नुसखा

च्यवनप्राश का नुसखा ३००० वर्षों से भी पहले का है, जैसाकि कहा जाता है कि देवताओं के चिकित्सकों ने महर्षि च्यवन को उनका यौवन फिर से प्रदान करने के लिए तैयार किया था। यद्यपि च्यवनप्राश सम्भवतः विश्व में प्राचीन स्वास्थ्य-प्रद टानिक है, तथापि डाबर में इसके बनाने का तरीका पूर्ण आधुनिक एवं वैज्ञानिक है।

मुफ्त चम्मच एक किलो डिब्बे के साथ

एक शक्तिदायक आयुर्वेदिक टानिक

डाबर च्यवनप्राश

सभी दवा विक्रेताओं के यहाँ मिलता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुरक्षांत

कहानी • कुसुम गुप्ता

मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूं? दिवाकर ने एक बार फिर आ कर मेरे जीवन में हलचल मचा दी. उस ने मुझे बेहद विचलित और उद्विग्न कर दिया है.

कल दीवाली है. मेरा अंतिम निर्णय सुनने के लिए वह शाम को चार बजे आएगा. यह कैसा धर्मसंकट है? मुझे कितना भयंकर रूप से जोखिम भरा निर्णय करना है.

इस दिवाकर ने तो मुझे एक बहुत ऊंची, पतली दीवार पर खड़ा कर दिया है. मुझे फैसला करना है कि मैं...मैं क्या करूं?

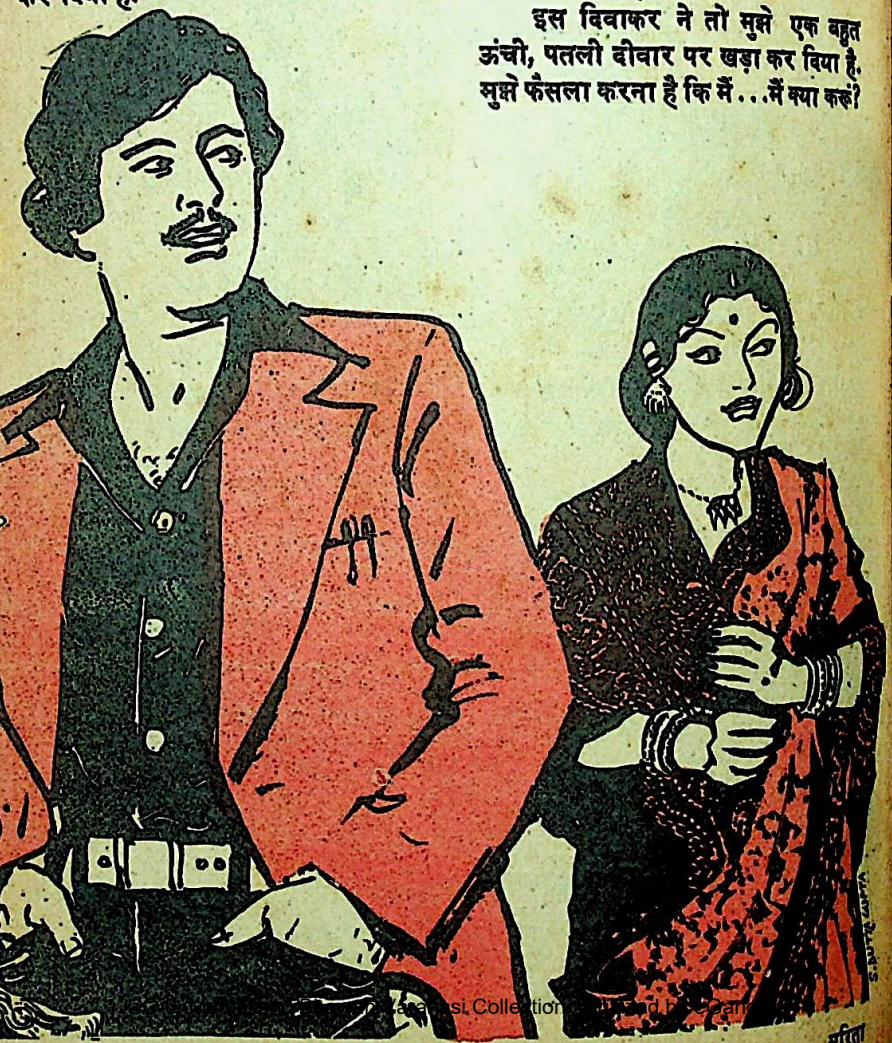

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिवाकर ने सीमा को एक ऐसी दीवार पर खड़ा कर दिया था जिस के एक ओर दीवाली की जगमगाहट थी और दूसरी ओर अमावस का अंधकार...सीमा को इस में से किसी एक को चुनना था...

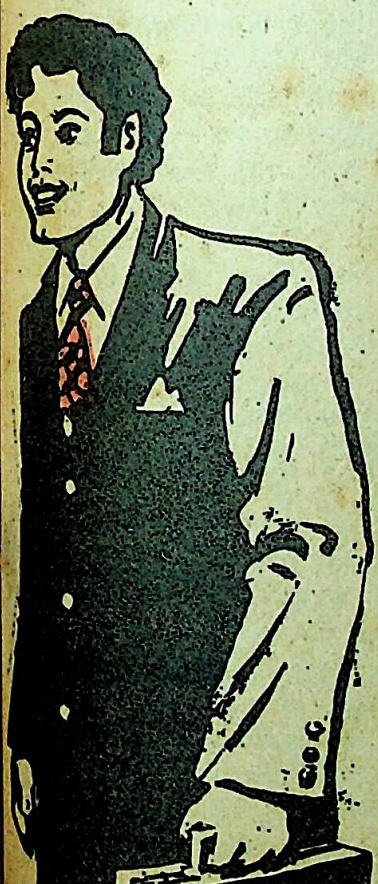

किस का दामन थामूं? दिवाकर का या सुरेश का? एक तरफ दीवाली की जगमगाहट है, दूसरी ओर अमावस का अंधकार.

रात के बारह बज रहे हैं. पर मेरी आंखों में नींद नहीं है. मेरी बगल में सुरेश आराम से सो रहा है. सिरहाने की ओर की खिड़की से सड़क की ट्यूब का प्रकाश कमरे के अंदर आ रहा है. मैं ध्यान से सोते हुए सुरेश के मुख को निहारती हूं. कितनी शांति, निश्चितता, पवित्रता और विश्वास-भरी निर्दोषता व्याप्त है उस के चेहरे पर.

फिर डबल बेड के समीप ही पालने में मेरा दो वर्ष का पप्पू सो रहा है. एकदम जापानी गुड्डे जैसा सुंदर और सुकोमल.

बाहर पूर्ण नीरवता व्याप्त है. कभी-कभार किसी कुत्ते के भौंकने का स्वर या चौकीदार के डंडे की ठकठक की आवाज, सुदूर मुख्य मार्ग से गुजरते किसी वाहन की खटरपटर इस नीरवता को भंग कर जाती है.

मेरे अंतर में कोलाहल मचा हुआ है. जीवन के एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण निर्णय के लिए मैं जूझ रही हूं.

"देखो, सुमी, मैं तुम से अब भी प्यार करता हूं. और तुम्हारे बिना नहीं रह सकता. तुम मेरे पास आ जाओ, मैं तुम्हें अब भी अपनाने को तैयार हूं, यदि तुम ने इनकार किया तो..."

"तो तुम क्या करोगे, दिवाकर?" मैं ने थोड़ा भयभीत हो कर पूछा.

"मैं कुछ भी करूं, तुम्हें इस से क्या?"

"नाराज हो गए?"

"सुमी, यदि तुम ने मुझे अस्वीकार कर दिया तो सचमुच मैं अपनी जान दे दूंगा."

यह सुन कर मैं सचमुच कांप गई. मैं ने उस के मुंह को अपनी हथेली से बंद कर दिया और बोली, "ऐसी अशुभ बात मुंह

दिवाकर का परिचय पा कर सुरेश के चेहरे पर एक शिकन तक नहीं उभरी. उस ने मुसकरा कर कहा, "मुझे आप से मिल कर बड़ी खुशी हुई."

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से नहीं निकालते. मुझे सोचने का मौका तो दो."

"यह ठीक है. तुम परसों तक सोच लो. मैं चार बजे आऊंगा." यह कह कर दिवाकर चला गया.

वह तो चला गया किंतु मेरे जीवन में एक झंझावात की सृष्टि कर गया. कितना कठिन विकल्प छोड़ गया मेरे लिए. उस के विषय में जितना भी सोचती हूं, उतना ही उस पर क्रोध आता है और यह भी एक विचित्र स्थिति है कि जितना अधिक क्रोध आता है, उतना ही प्यार भी उमड़ने लगता है और भूलीबिसरी स्मृतियां फिर से हरी हो जाती हैं.

सच्चे अर्थों में दिवाकर मेरा पहला और अंतिम प्यार था. हम दोनों एक साथ पढ़ते थे. बी. ए. तक साथ रहे. हम दोनों में बड़े घनिष्ठ संबंध थे. उठना, बैठना, घूमना, पिक्चर जाना, काफी हाउस में घंटों बैठ कर गप्पें मारना—सब एक साथ चलता था. हमारे ये संबंध इतनी गहराई तक कब पहुंचे, हमें इस का पता तक न चला.

एकदूसरे के घर आनाजाना. एकदम उन्मुक्त, निर्द्वंद्व व्यवहार. शारीरिक संपर्कों पर भी कोई बंधन नहीं था. तनिक सा उत्तेजित होते ही दिवाकर मुझे अपनी बांहों में भर कर मेरे होंठ या माथे पर प्रणयचिह्न अंकित कर देता. मैं ने कभी भी इस का विरोध नहीं किया. आखिर क्यों ?

शायद मेरे अचेतन मन में एक अटूट विश्वास पैठ गया था कि हम दोनों पतिपत्नी बनने वाले हैं. लेकिन इस विश्वास के मात्र प्रणय की गहनता या शारीरिक मिलन ही महत्त्वपूर्ण साक्षी नहीं थे, वरन समाज ने भी जैसे इन संबंधों पर अपनी मूक मुहर लगा दी थी. हमारे दोनों परिवारों में इन संबंधों पर कोई विरोध नहीं था. सच तो यह था कि हमारे परिवारों ने हमें इतनी स्वतंत्रता तथा उन्मुक्तता प्रदान कर रखी थी, जैसे उन्होंने हमारे विवाह को अपनी मौन सहमति प्रदान कर दी हो. शायद इसी विश्वास के आधार पर मैं ने भी दिवाकर को शारीरिक स्पर्श की स्वतंत्रता दे रखी थी.

किंतु बी. ए. करने के पश्चात मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरे अवचेतन मन का यह एक भ्रम था. हम दोनों ने कालिज छोड़ दिया. दिवाकर ने पत्रकारिता का एक वर्षीय कोर्स ज्वाइन कर लिया और मैं ने बी. ए. फाइनल में क्लर्क ग्रेड की परीक्षा दी. उस में सफल होने पर मुझे एक सरकारी कार्यालय में लोअर डिवीजन क्लर्क की नौकरी मिल गई.

अलगअलग रास्ता होने पर भी हम दोनों परस्पर मिलतेजुलते रहे. वही पुरानी आत्मीयता और वही अंतरंग संबंध. एक दिन मैं ने दबी जबान से दिवाकर से कहा, "दिवाकर, इस तरह कब तक चलेगा?"

"तुम्हारा मतलब शादी से है?"

"हां."

"सुमी, तुम्हारी तो नौकरी लग गई. पर मुझे भी तो अपना कोर्स पूरा कर के किसी स्थायी जाब पर लग जाने दो."

शायद दिवाकर का कहना ठीक ही था. वह अभी पढ़ रहा था. बिना नौकरी लगे विवाह करना मूर्खता होती. फिर मेरी आय में गुजारा होना भी असंभव था. अतः मेरे समक्ष प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था. मैं ने प्रतीक्षा की. दिवाकर का साथ था. उस के प्रेम और रासरंग में डूबतेउतराते प्रतीक्षा की वे घड़ियां भी कट गईं.

दिवाकर ने पत्रकारिता का कोर्स पूरा कर लिया और उस के तुरंत बाद उसे नौकरी भी मिल गई. यद्यपि वेतन पर्याप्त नहीं था, किंतु जिस संस्थान में उसे नौकरी मिली वहां से अनेक महत्त्वपूर्ण पत्रपत्रिकाएं प्रकाशित होती थीं.

मेरे दृष्टिकोण से सब से निराशाजनक बात थी दिवाकर की बंबई में नियुक्ति. इस संस्थान का मुख्य कार्यालय बंबई में था और एक कार्यालय दिल्ली में.

मैं बहुत चिंतित तथा उद्विग्न थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं नहीं चाहती थी कि दिवाकर बंबई जाए. उस ने मुझे बताया था कि अधिक प्रयास करने के बावजूद वह दिल्ली में अपनी नियुक्ति कराने में असमर्थ रहा. दिवाकर का बंबई जाना निश्चित हो गया था. तब मैं ने एक दिन शाम को इंडिया गेट के लान में घूमते हुए कहा था, "दिवाकर, अब क्या होगा?"

"होना क्या है? मैं बंबई जा कर जमता हूं. फिर तुम्हें भी उधर बुला लूंगा."

"पर शादी?"

"सुमी, तुम शादी के बारे में इतनी दीवानी क्यों हो?"

दिवाकर के इन शब्दों ने मुझे मर्माहत किया था: मैं ने उस समय कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की . केवल आंखों में उदासी और निराशा की बदलियां तैर आईं. दिवाकर बहुत चतुर था. वह मेरी मनोदशा ताड़ गया. मेरे सीधे हाथ को अपने दोनों हाथों में थाम उसे दबाता हुआ बोला, "बस, जरा सी बात को ले कर सोचने लगती हो. जरा सोचो, इन परिस्थितियों में शादी कैसे हो सकती है?"

"कैसी परिस्थितियां?"

"यही कि तुम यहां नौकरी करती हो और मैं बंबई में..."

"मैं यह नौकरी छोड़ दूंगी."

"बहुत अच्छे! तो तुम्हारे खयाल से मेरी नौकरी से गुजारा हो जाएगा?"

"यह स्वयं के रहनसहन और अपनी व्यवस्था पर निर्भर करता है. ऐसे अनेक लोग हैं जो सौ दो सौ में भी गुजारा कर लेते हैं. जो नहीं कर सकते, उन के लिए दो हजार भी कम हैं."

"कहती तो तुम ठीक हो. पर दो सौ में गुजारा करने वालों का प्यार दो दिन में भूखानंगा हो जाता है."

मुझे दिवाकर की यह बात बुरी लगी. प्रेम हो तो इनसान नमक से रूखी रोटी खा कर भी संतुष्ट रहता है.

मुझे निराश और उदास देख कर दिवाकर ने कहा था, सुमी, तुम चिंता मत करो. मैं बंबई पहुंच कर पत्रकारिता के क्षेत्र के साथसाथ फिल्म क्षेत्र में भी घुस जाऊंगा. फिर देखना मेरा कमाल."

दिवाकर बंबई चला गया. मैं उसे विदा करने स्टेशन गई थी. वह दृश्य आज भी

"कल दिवाकर आए तो उस से साफ-साफ कह दीजिए कि वह यहां न आया करे," सीमा ने अपने पति के सीने पर सिर टिकाते हुए कहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेरे अंतर पर अंकित है. दिवाकर के कहे वे शब्द आज भी जलतरंग की तरह मेरे मन में गूंजते रहते हैं.

फ्रंटियर मेल ने रेंगना शुरू किया तो मुझे लगा जैसे कोई मेरा कलेजा निकाल कर लिए जा रहा हो और मैं एकदम निष्प्राण सी हो गई हूं. मुझे रेल के डिब्बे के दरवाजे पर खड़े दिवाकर का हाथ छोड़ना पड़ा तो वह बोला था, "सुमी, विश्वास रखो. हाथ छूटा है, साथ नहीं."

"वह तो जन्मजन्मांतर का है, दिवाकर." मेरे होंठों तक आए ये शब्द फ्रंटियर मेल की तेज होती रफ्तार के शोर में गुम हो गए.

मैं अकेली रह गई. अनेक दिनों तक ठीक से न मैं ने भोजन किया और न ठीक से नींद आई. जब तक दिवाकर पास था, मन भराभरा रहता था. किंतु उस के जाने के बाद तो महीनों तक ऐसा लगता रहा जैसे सब कुछ वीरान, बदरंग और फीकाफीका-सा हो गया है. मैं जीवित थी, किंतु मेरे प्राण बंबई में थे. मैं सोती तो बंबई के ही सपने आते. दिवाकर के पत्र आते. पर लिफाफों से शुरू हो कर वह धीरेधीरे पोस्टकार्ड पर आ गया था. पहले सप्ताह में एक पत्र आ जाता था. किंतु कुछ दिन बाद उस के पत्र अनियमित हो गए.

दिवाकर के जाने के चारपांच मास बाद मैं ने उसे विवाह के विषय में लिखा. उस ने यह कह कर फिर टाल दिया था कि अभी मुझे संघर्ष में से गुजरना पड़ रहा है. ऐसी स्थिति में विवाह की बात सोचना भी मूर्खता है.

मुझे क्रोध आया था. यह पढ़ कर मैं ने उस के इस पत्र का उत्तर नहीं दिया. सोचा, वह मेरे मौन का अर्थ समझ कर मुझे मनाने के लिए पत्र डालेगा, किंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ.

मुझे एक हलका सा झटका लगा था और इसी से हमारे वे संबंध टूट गए. उस के बाद दिवाकर का कोई पत्र नहीं आया. न मैं ने ही उसे कोई पत्र लिखा.

मेरी जिंदगी एक विषाक्त, तीखी अनुभूति से भर गई. किंतु तभी एक दिन मुझे एक सुखद अनुभूति गुदगुदा गई.

मैं दफ्तर जाती. मौन रह कर यंत्रवत अपना काम करती और शाम को घर लौट आती.

मेरा सुखचैन, मेरी मुसकराहटें और सपने तो दिवाकर चुरा कर ले गया था. एक शाश्वत मौन, एक वास्तविक तटस्थता तथा परिपक्वता मेरे व्यक्तित्व के अभिन्न अंग बन चुके थे.

लेकिन उस दिन शाम को मेरे सेक्शन अफसर ने सब के चले जाने के बाद एकांत में मुझ से कहा, "मिस सीमा, मैं काफी दिनों से देख रहा हूं, शायद आप की तबीयत कुछ ठीक नहीं रहती. आप का चेहरा पीला पड़ता जा रहा है. आंखें निस्तेज होती जा रही हैं. आप किसी डाक्टर से मशवरा क्यों नहीं लेतीं?"

मित्र की सलाह

एक रूढ़िवादी चित्रकार ने कहा, "मैं अपना एक चित्र किसी संस्था को दान करना चाहता हूं."

"अच्छी बात है," उस का एक मित्र बोला, "अंधों की किसी संस्था को दे डालो."

मैं ने कोई उत्तर नहीं दिया. सिर्फ पहली बार अपने बास के बारे में सोचा. वह चौबीसपच्चीस वर्ष का नवयुवक था. शायद संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण कर कोई तीनचार महीने पहले इस पद पर आया था. पहली बार उस ने मुझ से कोई व्यक्तिगत बात की थी. मैं ने देखा कि उस का व्यक्तित्व आकर्षक है.

वह मधुर और नम्र स्वर में बोला, "शायद आप बुरा मान गईं. यों मुझे आप के व्यक्तिगत जीवन में दखल देने का कोई हक नहीं है, पर इस सेक्शन में होने के कारण

सरिता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने नीचे काम करने वालों के हित को देखना मेरा फर्ज है."

उस के स्वर में ईमानदारी थी, इसलिए मुझे उत्तर देने के लिए बाध्य होना पड़ा. मैं ने विनम्र भाव में कहा, "मुझे कोई बीमारी नहीं है, सर."

"फिर यह काम की थकावट की वजह से होगा. भारत में मध्यम वर्ग की महिलाओं पर बहुत अत्याचार होता है. बेचारियों को घर और दफ्तर दोनों जगह पिसना पड़ता है."

मैं बास की ओर अवाक देखती रह गई.

"मैं तो शादी के बाद अपनी पत्नी से नौकरी नहीं कराऊंगा, चाहे एक जून की ही रोटी क्यों न मिले खाने को."

अपने बास के इन विचारों से मैं बड़ी प्रभावित हुई थी. मुझे यह पता नहीं था कि वह भी मुझ से बहुत ज्यादा प्रभावित

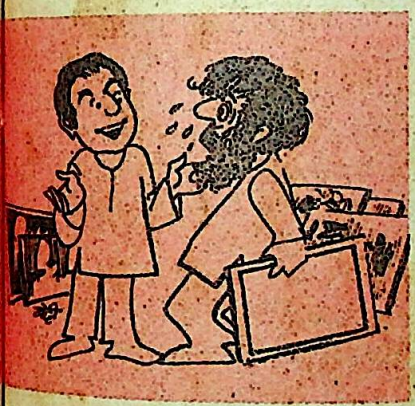

है. मेरे कम बोलने, काम करने की लगन, संस्थान के अन्य व्यक्तियों से सिर्फ काम के मामले में मतलब रखने और मेरे व्यक्तित्व के कारण मेरा बास मुझ से प्रसन्न था. इस प्रसन्नता को उस ने अपने तक ही सीमित रखा था. उस ने कभी सस्तेपन का प्रदर्शन नहीं किया. उस दिन शाम की घटना के पश्चात एक दिन उस ने मुझ से बड़े साफ और सीधे तरीके से मेरे सामने जब विवाह का प्रस्ताव रखा, तो मैं सचमुच चौंक गई.

मुझे चौंकता देख वह मुसकराया और बोला, "मुझे मालूम है तुम क्यों चौंक रही हो? तुम सोच रही हो, बिना प्रेम के विवाह कैसा? पर सीमाजी, मेरी मान्यता है कि यदि स्त्रीपुरुष सामान्य हों तो विवाह के पश्चात प्रेम सहज ही उत्पन्न हो जाता है और विवाहोपरांत का यह प्रेम विवाह पूर्व के प्रेम से कहीं अधिक गंभीर और स्थायी होता है."

बात एकदम खरी थी. किंतु मुझे उस की इस बात से कुछ और ही आभास हुआ. कहीं उसे मेरे और दिवाकर के विषय में पता तो नहीं चल गया? मैं ने फैसला कर लिया कि मैं उसे सब कुछ साफसाफ बता दूंगी.

मैं ने वही किया. सब कुछ सुन कर वह शांत स्वर में बोला, "ठीक है. जो बीत गया है उस से जुड़े रहना कोई बुद्धिमानी नहीं. मुझे तुम्हारे अतीत से कुछ भी लेनादेना नहीं है. हां, तुम्हारा भविष्य पूर्ण रूप से मेरा होगा."

मैं ने सोचने के लिए समय मांगा तो वह बोला, "खुशी से. तुम खूब सोचसमझ कर फैसला करना. साथ ही एक बात याद रखना. विवाह के बाद यह नौकरी छोड़नी होगी."

अगले दोतीन दिन तक मैं उस प्रस्ताव पर विचार करती रही. हर दृष्टिकोण से सुरेश एक उपयुक्त पति सिद्ध हो रहा था. मैं ने घर पर बताया. सब ने इस संबंध के पक्षविपक्ष पर विचार किया और अंत में इसे स्वीकार कर लिया.

मैं ने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया. सुरेश से मेरा विवाह हो गया था. दो वर्ष पश्चात मुझे मातृत्व का वरदान भी मिला. हमारे प्रेम का फल पप्पू हमारे जीवन में खुशियों का इंद्रधनुष ले कर आया.

मैं पूर्ण रूप से खुश थी. मुझे किसी चीज का अभाव नहीं था. एक प्रेमी, संतुलित पति, फूल जैसा पुत्र, समस्त सामान्य भौतिक सुखसुविधाएं और समझबूझ पर आधारित मधुर वैवाहिक संबंध. नारी को और चाहिए भी क्या?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शायद मेरी जीवनकथा का यही सुखद अंत होना चाहिए था. पर नहीं. मेरे जीवन को तो एक नाटकीय मोड़ लेना था. एक दिन शाम को मेरे फ्लैट के दरवाजे पर दस्तक हुई. सुरेश के आने का समय हो गया था. पप्पू को कंधे से लगाए मैं ने दरवाजा खोला तो सामने सुरेश नहीं, दिवाकर खड़ा था. एक सुखद, किंतु अप्रत्याशित आश्चर्य बना. मैं किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ी की खड़ी रह गई. चार वर्ष के पश्चात दिवाकर कहां से प्रकट हो गया?

"अंदर आने के लिए नहीं कहोगी?" दिवाकर ने वही पुरानी आत्मीयता का प्रदर्शन करते हुए कहा.

मैं तो एकदम सकपकाई सी रह गई. कुछ भी नहीं सूझ रहा था कि क्या करूं.

दिवाकर अंदर आ गया. सोफे पर बैठ गया. मुझे ऊपर से नीचे तक घूर कर, ड्राइंगरूम में चारों तरफ नजरें घुमा कर एक दीर्घ निःश्वास छोड़ वह बोला, "खूब गृहस्थी जमा ली है. लड़कियां बड़ी बेसब्र होती हैं. शादी की जल्दी में आगापीछा सब कुछ भूल जाती हैं."

मैं ने कोई भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की.

"शादी कर ली और निमंत्रणपत्र तक नहीं भेजा. सुना है, किसी गजटेड अफसर पर हाथ साफ किया है."

दिवाकर व्यंग्य बाण छोड़ता रहा और मैं यह जानते हुए कि उलटा चोर कोतवाल को डांट रहा है, उस पीड़ा को आत्मसात करती रही.

दिवाकर अपना अधिकार समझ कर ही सब कुछ कह रहा था. तभी सुरेश आ गया, दोनों ने परिचय का आदानप्रदान किया. उसे देख कर सुरेश के चेहरे पर एक शिकन तक नहीं उभरी. उस ने मुसकराते हुए कहा, "मुझे आप से मिल कर बड़ी खुशी हुई.

दिवाकर ने बताया कि उस का बंबई से ट्रांसफर हो गया है और वह दिल्ली आ गया है.

उस दिन के पश्चात दिवाकर नियमित रूप से हमारे यहां आनेजाने लगा. कभी वह सुरेश के सामने आता, तो कभी उस के पीछे.

मैं ने दिवाकर के इस आनेजाने से अपने को कुछ असहाय सा महसूस किया. सुरेश एकदम निश्चिंत, सहज और सामान्य था. शायद उसे मुझ पर अटूट विश्वास था.

दिवाकर ने आ कर अतीत की अनुभूतियों के अंगारों पर जमी राख को हटाना शुरू कर दिया था. सच कहूं तो मुझे भी ऐसा महसूस होने लगा जैसे मेरी स्मृतियां हरी हो गई हैं.

एक दिन दिवाकर ने पिक्चर का प्रोग्राम बनाया. वह तीन टिकटें ले आया. किंतु ऐन वक्त पर सुरेश को दफ्तर में कोई काम पड़ गया. वह नहीं आ सका. मैं दिवाकर के साथ अकेली पिक्चर देखने नहीं जाना चाहती थी. किंतु सुरेश नहीं माना. जिद कर के हम दोनों को भेज दिया. कितना खयाल रहता था उसे मेरी खुशियों और भावनाओं का. जब मैं पिक्चर देख कर लौट रही थी तो दिवाकर ने अतीत को लौटाने का प्रयास किया था. उस ने मेरी बगल में हाथ डाला और चंचल स्वर में बोला, "मैं आज तक तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूं, सुमी."

मैं चाह कर भी उस का हाथ नहीं हटा पाई. मैं ने सिर्फ इतना ही कहा, "अब बहुत देर हो चुकी है, दिवाकर."

"नहीं, सुमी, सच्चा प्रेम समय से परे की अनुभूति होती है."

"वह तो ठीक है, पर—"

"तुम खुश हो, सुमी?" दिवाकर ने मेरे कंधे को दबा कर पूछा.

"हां."

"मैं खाने, कपड़े, मकान, बच्चों पर आधारित खुशी की बात नहीं कर रहा हूं. मैं तो उस खुशी के बारे में पूछ रहा हूं जो सच्चे प्रेम से उपजती है. वही खुशी जिस में हम दोनों सिर से पांव तक डूबे रहते थे."

मैं ने सोचा तो पाया, मेरे पांव [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मज़बूती का दूसरा नाम है हर्क्युलिस साइकिल चेन

ऊंची क्वालिटी के स्टील से बनी हर्क्युलिस साइकिल चेन ज़्यादा समय तक आपका साथ निभाती है. भारत की सबसे मज़बूत इस चेन की हर कड़ी बहुत ही सावधानीपूर्वक बनाई गयी है.

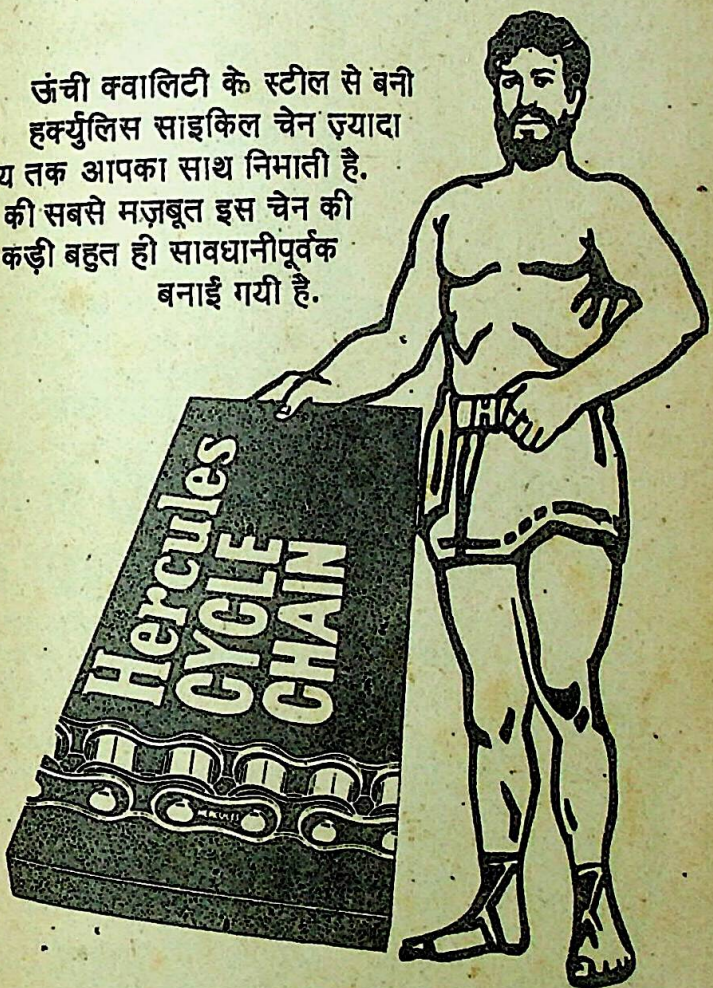

हर्क्युलिस- भारत की सबसे मज़बूत साइकिल चेन

FDS TID 2589 A HIN R

टी आइ डायमंड चेन लि. मद्रास.
ट्यूब इन्वेस्टमेन्टस ऑफ इंडिया लिमिटेड की उप कंपनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

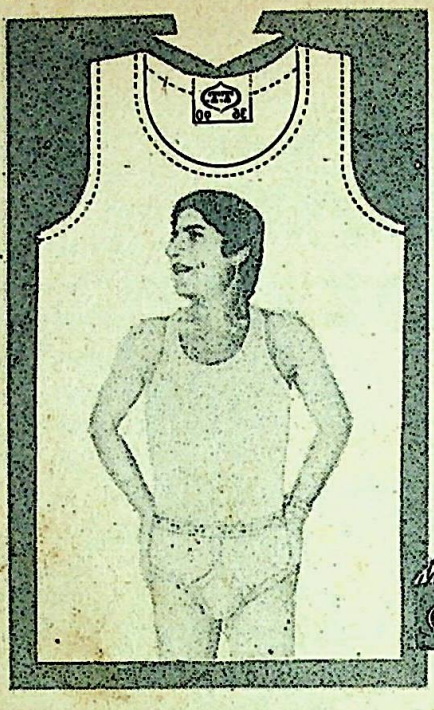

वायदों पर ध्यान न दें...
केवल टी.टी. लेबल देखें

टी.टी.

बनियान
अन्डरवियर

आराम का
दूसरा नाम

टी.टी.

Jupiter/18

सुन्दर काले घने बालों के लिए के एम पी नारियल तेल व्यवहार करें

के एम पी तेल प्राकृतिक गुणों से भरपूर है और इसकी प्रत्येक बूंद आपके बालों की जड़ को पौष्टिकता प्रदान करती है। यह तेल जाड़ों के मौसम में रूसी दूर करता है और गर्मी के मौसम में आपके सिर की त्वचा और बालों की धूप से रक्षा करता है। इस तेल का इस्तेमाल करने से आपके बाल हमेशा स्वस्थ व मुलायम रहते हैं और आसानी से सँवारे जा सकते हैं।

kmp का एक उत्पाद
सन १९०० से
उत्कृष्ट उत्पादनों के निर्माता

CC-0. [illegible] Collection. Digitized [illegible] ngotri

maa KMP 1D HIN

गई हैं. दिवाकर ने मेरी किसी कोमल नस पर अपनी उंगली रख दी थी. उस दिन बात वहीं खत्म हो गई.

हम लोग घर पहुंचे. दिवाकर ने हमारे यहां ही खाना खाया. सुरेश आ चुका था. कितना खुश हुआ हम दोनों को देख कर. देर तक पिक्चर के बारे में पूछता रहा.

उस के बाद दिवाकर नियमित रूप से मुझ से मिलता रहा. मैं ने महसूस किया कि वह अकसर ऐसे समय पर आता है जब सुरेश घर पर नहीं होता. उस की तरफ से मेरे ऊपर कोई बंधन नहीं था. अतः हम दोनों निर्बाध और स्वतंत्र हो घूमते फिरते, पिक्चरें देखते, काफी हाउस जा कर बैठते.

दिवाकर मेरे अतीत को लौटा कर ले आया था.

वह परसों दोपहर को आया था. उसी अतीत की उमंग और चंचलता से ओतप्रोत संबंधों की सीमा को अपने स्पर्श से लांघने का उस ने प्रयास किया. मैं संभल गई. शील और संयमरेखा का अतिक्रमण कैसे करने देती?

मैं ने दिवाकर को सीमारेखा की ओर संकेत किया तो वह उखड़ कर बोला, 'सुमी, मैं ऊब गया हूं इस आंखमिचौली से. प्लीज, एक तरफ करो इस सारे किस्से को. छोड़ो सुरेश को और सदैव के लिए आ जाओ मेरे पास."

मैं छटपटा कर उठ बैठी.

कितनी रात बीत गई है, मुझे नहीं मालूम. मुझे तो सिर्फ यह पता है कि कल दीवाली है और दिवाकर शाम को चार बजे आएगा, मेरा अंतिम निर्णय सुनने.

मैं क्या करूं? छोड़ दूं सुरेश को और अपना लूं अपने प्रथम प्रेम को, जिस का तनिक सा स्पर्श मुझे उन्माद से भर देता है. पहला प्रेम जीवन की आधारभूत सचाई होता है.

मैं अपना अंतर टटोल कर देखती हूं तो अतीत की राख के अंदर प्रेम की चिनगारी की ऊष्मा महसूस होने लगती है. दिवाकर के हाथ उस राख को हटाने में व्यस्त हैं.

मुझे लगता है जैसे मैं पसीने से भीग गई हूं. मैं धीमे से उठती हूं. सुरेश सो रहा है. उस के निर्दोष और पवित्र से लगते मुख की ओर देखती हुई मैं फ्रिज के पास जाती हूं. उस में से एक बोतल निकाल कर ठंडा पानी पीती हूं. अक्तूबर का अंतिम सप्ताह और फ्रिज का ठंडा पानी, मेरे संपूर्ण शरीर में एक ठंडी सी सिरहन दौड़ जाती है.

मैं धीरेधीरे मरी चाल से बरामदे में आ जाती हूं. उस के बाद बालकनी में जा कर खड़ी हो जाती हूं. बाहर देखती हूं. चारों ओर घटाटोप अंधेरा छाया हुआ है.

कल दीवाली है और इस अंधकार को प्रकाश परास्त कर देगा. पर मैं चली गई तो क्या होगा? क्या सुरेश और पप्पू के

रोने से आंखें खूबसूरत होती हैं

क्या आप भी आंखों की खूबसूरती के लिए रोती हैं? वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि रोने से आंखों की खूबसूरती बढ़ती है. पहले मान्यता यह थी कि औरतें अपनी बात मनवाने के लिए रोने के अस्त्र का सब से आखिर में इस्तेमाल करती हैं. लेकिन आधुनिक विज्ञान ने इस धारणा को गलत सिद्ध कर दिया है. वैज्ञानिकों का कहना है कि औरतें अधिक रोती हैं. शायद इसी से मर्दों की तुलना में उन की आंखें ज्यादा खूबसूरत होती हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन में कभी दीवाली के दीप जल पाएंगे? क्या उन के जीवन में अमावस का शाश्वत अंधकार नहीं भर जाएगा?

इस विचार के साथ ही मैं अपने अवचेतन एवं चेतन अस्तित्व को झटक कर सामान्य करने का प्रयास करती हूं.

मैं सहज सा अनुभव करने लगी हूं. मेरी नींद उड़ गई है.

मेरी खुली पलकें अंधकार के आरपार देख पाने में समर्थ हो जाती हैं. मुझे लगता है कि मैं ने अधकचरी भावुकता की केंचुल उतार फेंकी है और मैं पल भर में परिपक्व हो गई हूं. मेरी बौद्धिकता और तर्कशक्ति जैसे लौट आई है.

यदि दिवाकर को सचमुच मुझ से प्रेम था और वह मुझ से विवाह करना चाहता था तो बंबई जा कर उस ने यह सब कुछ क्यों नहीं किया? मैं ने कितनी बार यह प्रश्न पूछा है और हर बार वह इस के उत्तर को टाल गया.

क्या कोई सच्चा प्रेमी अपनी प्रेमिका के सुखी संसार को उजाड़ना चाहेगा? और वह भी स्वार्थवश ? जब प्रेम में स्वार्थ का प्रवेश हो जाए तो क्या वह सच्चा प्रेम रह जाता है?

क्या सुरेश जैसा सुशील, शांत, समझदार, उदार, विश्वासी तथा उपयुक्त पति मिलना एक सुखद तथा दुर्लभ संयोग नहीं? आखिर उस में ऐसी क्या कमी है, जिस के कारण उस को त्याग कर मैं दिवाकर का वरण करूं.

मुझे इस घर में क्या अभाव है? नहीं...नहीं...एक चीख मेरे अंतर में उभरी और गले तक आ कर रुक गई. मैं अपनी सुखांत जीवनकथा को दुखांत बनाने जा रही थी, प्रकाशपर्व के अवसर पर अमावस के अंधकार को अपनाने जा रही थी.

"सुमी, तुम सोई नहीं?"

एक जलतरंगीय स्वर और मेरे रोमांचित कंधों पर पीछे से किसी का कोमल स्पर्श.

चौंक कर मैं पलटती हूं. सुरेश मेरे पीछे खड़ा था.

भयभीत किंतु आश्वस्त सी मैं उस से लिपट जाती हूं. मैं संयत नहीं रह पाती. दो चार हिचकियां बाहर आ ही जाती हैं.

"तुम रो रही हो, सुमी?"

"देखिए, कल दिवाकर आए तो उन से साफसाफ कह दीजिए कि वह यहां न आया करे."

मैं सुरेश के सीने में अपना मुंह छुपा देती हूं, सुरक्षा की खातिर. उस के होंठों पर उभरती अदृश्य मुसकान का आभास मुझे हो जाता है. मैं जानती हूं. मेरी बुद्धिमानी से मेरी जीवनकथा दुखांत होतेहोते बच गई है.

इजरायल में मातृदुग्ध बैंक की स्थापना

इजरायल में औसत से कम वजन के पैदा होने वाले बच्चों के लिए 'मातृदुग्ध बैंक' शुरू किया गया है जो अपने ढंग का अनोखा बैंक है. इस के लिए जेरूसलम में रहने वाली ऐसी माताओं का दूध एक जगह इकट्ठा किया जाता है जिन के स्तनों में भरपूर दूध उतरता है. इस दूध से ऐसे बच्चों को पाला जाता है जिन की माताओं को कम दूध उतरता है.

जेरूसलम स्थित शारे जेडेक हस्पताल में पैदा होने वाले बच्चों का इस बैंक के दूध से पोषण किया जा रहा है. शिशु विभाग के एक प्रमुख डाक्टर का कहना है कि इस बैंक में संकलित दूध कम वजन के बच्चों के पोषण के लिए होता है. इन का कहना है कि इन बच्चों को संक्रामक रोगों से बचाने में मातृदुग्ध काफी मदद करता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

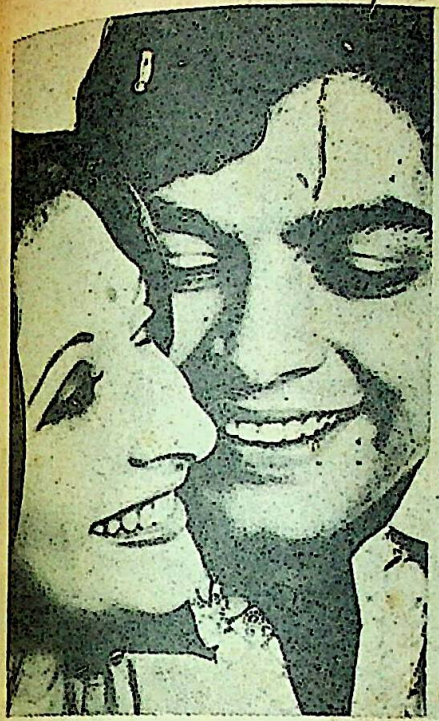

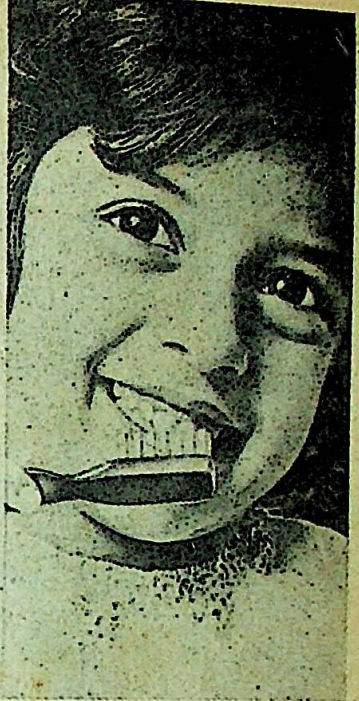

कोलगेट डेन्टल क्रीम से सांस की बदबू रोकिये... दंतक्षय का प्रतिकार कीजिये

हर भोजन के बाद अपने दांत कोलगेट से साफ़ कीजिये। यह ठीक उसी तरह दांतों की रक्षा करता है, जैसे दुनियाभर के दंत विशेषज्ञ कहते हैं।

दांतों में छुपे हुए अन्नकणों में कीटाणू बढ़ते हैं। इनसे सांस में बदबू पैदा होती है, और बाद में दांतों में सड़न।

इसीलिए, हमेशा भोजन के फ़ौरन बाद कोलगेट डेन्टल क्रीम से दांत साफ़ कीजिये। यह सांस को ताज़ा, दांतों को सफ़ेद और दांतों की सड़न रोकने में असरदार साबित हो चुका है।

अधिक तरोताज़ा सांस और अधिक सफ़ेद दांतों के लिये दुनियाभर में ज़्यादा से ज़्यादा लोग दूसरे टूथपेस्टों के बजाय कोलगेट टूथपेस्ट ही खरीदते हैं।

देखिये, कोलगेट के मरोसेमंद फ़ॉर्मूले का काम:

दांतों में छिपे हुए अन्नकणों में सांस में बदबू और दांत में सड़न पैदा करने वाले कीटाणू बढ़ते हैं।

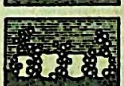

कोलगेट का अनोखा, असरदार झाग दांतों के कोने में छिपे हुए अन्नकणों को और कीटाणुओं को निकाल देता है।

नतीजा: आपके दांत आकर्षक सफ़ेद, आपकी सांस तरोताज़ा और दंतक्षय की रोकथाम।

सिर्फ़ एक दांतोंका डॉक्टर ही इससे बेहतर देखभाल कर सकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इमामी का नया सौन्दर्य सरगम..
अनूठा निराला-बिल्कुल अनुपम

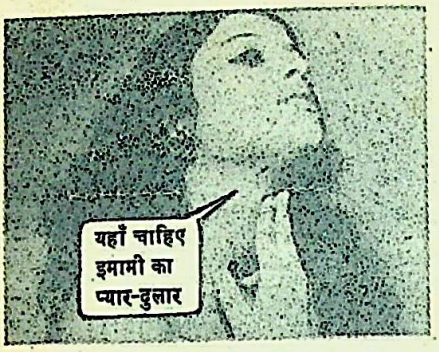

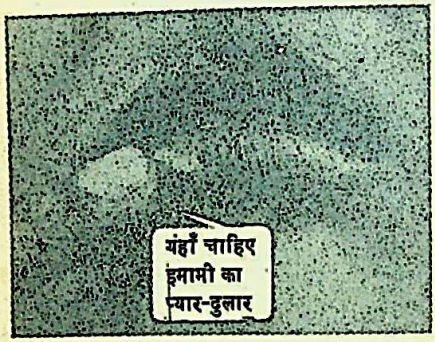

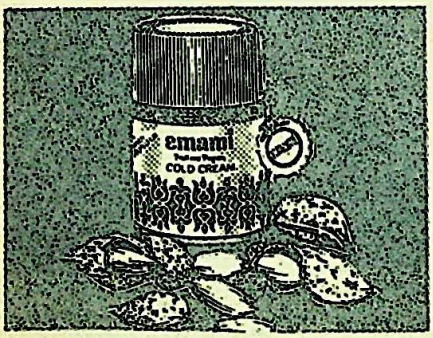

आलमन्ड ऑयल युक्त इमामी कोल्ड क्रीम

अब आपकी त्वचा को मिलेगा एक ऐसा पोषण-तत्व जो उसे पहले कभी नहीं मिला था...हाँ आलमन्ड ऑयल, जो सिर्फ इमामी कोल्ड क्रीम में है।

आलमन्ड ऑयल से भरपूर यह अनूठी क्रीम त्वचा की प्राकृतिक नमी के साथ घुल-मिल जाती है...और उसे जाड़े की शुष्क हवाओं के प्रभाव से सुरक्षित रखती है आपकी त्वचा कोमल, स्वस्थ और मोहक हो उठती है।

केमको केमिकल्स
पोस्ट बॉक्स नं० ६६१२, कलकत्ता-७०० ००७

adlink/dps/ke-4 HIN

इमामी निखरते सौन्दर्य का मधुर संगीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेख • सरोज बजाज

स्वास्थ्य और सौंदर्य

में निखार लाने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव

प्रत्येक मानव सौंदर्य प्रेमी होता है, पर सौंदर्य का मापदंड प्रत्येक व्यक्ति के साथ भिन्न होता है. कुछ लोग शारीरिक सौंदर्य को महत्त्व देते हैं, कुछ मनुष्य के आंतरिक सौंदर्य को अर्थात मन की निर्मलता और सहजता को. बाह्य सौंदर्य मनुष्य को एकदम आकर्षित करता है. मन के सौंदर्य की अनुभूति के लिए थोड़ा समय परस्पर एकदूसरे को समझने के लिए चाहिए.

प्रत्येक नारी अपने शारीरिक सौंदर्य की ओर ध्यान देना आवश्यक समझती है. सौंदर्य और यौवन की रक्षा तथा सौंदर्य के अभिवर्धन के लिए महिलाएं कई प्रसाधनों का उपयोग करती हैं. प्रसाधन का मोह मनुष्य की एक नैसर्गिक और स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है. प्रकृति भी अपने कणकण को सजातीसंवारती है. नारियों में अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को सजानेसंवारने की प्रवृत्ति स्वाभाविक है.

आज के व्यस्त और महंगाई के समय में अधिक समय और अधिक पैसा खर्च करना संभव नहीं होता. आइए, यहां पर सौंदर्य की रक्षा और अभिवृद्धि के लिए कुछ ऐसी सामान्य बातें बता दूं जिन के पालन से आप के सौंदर्य में निखार आएगा.

मोटापे से बचें

अधिकतर महिलाएं बच्चे होने के पश्चात मोटी हो जाती हैं. मोटापे से शरीर का सौंदर्य समाप्त ही नहीं होता, बल्कि तरहतरह की बीमारियां भी साथ लग जाती हैं. मोटापे को पास न फटकने दें. इस के लिए प्रतिदिन कम से कम सुबह शुद्ध वायु में 20-25 मिनट घूमना चाहिए. अगर किसी कारणवश बाहर घूमने न जा सकें तो खुली छत पर चली जाएं. वहीं बैठ कर या खड़ी हो कर सांस को वेग से बाहरभीतर करें. देर तक सांस को भीतर रोकें और देर तक सांस को बाहर की ओर निकालती रहें. इसे ही कुछ लोग "ब्रीदिंग एक्सरसाइज" अथवा सांस का व्यायाम और कुछ लोग प्राणायाम कहते हैं.

स्मरण रहे, इस तरह का व्यायाम कभी बंद कमरे में न किया जाए. व्यायाम करने के समय बहुत तंग कपड़े नहीं पहनना चाहिए. व्यायाम के कुछ तरीके भी यहां प्रस्तुत हैं, जो प्रत्येक नारी बड़ी ही सरलता से कर सकती है.

1. सीधे खड़ी हो जाएं, एड़ियां मिली हुई हों और दोनों हाथ कमर पर. धीरेधीरे घुटने झुकाएं. पंजों के बल बैठ जाएं. फिर खड़ी हो जाएं. इस तरह छः बार करना चाहिए.

2. एक स्टूल पर बैठें. दोनों हाथ कमर पर हों. कमर की हड्डी बिलकुल सीधी होनी चाहिए. हाथों से कमर पर जोर डालना चाहिए. इस बात का ध्यान रखें कि कंधे ऊपर न उठने पाएं. हाथों को कमर से उठा कर दोनों ओर स्टूल पर रख लें. शरीर को ढीला कर फिर इसी क्रिया को दोहराएं.

3. पैरों को फैला कर खड़ी हो जाएं. कमर को दाहिनी ओर नीचे की ओर झुकाएं. एक हाथ की उंगली से फर्श को छूएं और दूसरे को सिर के ऊपर सीधा फैलाएं. अपने ऊपर के हाथ की ओर दृष्टि रहे. अपनी पहली दशा में फिर खड़ी हो जाएं फिर बाईं ओर झुकें. ऐसा छः बार करें.

4. पांव फैला कर खड़ी हो जाएं. दाहिनी ओर कमर झुकाएं. दोनों हाथों से घुटना पकड़ने का उद्योग करें. दूसरी बार दूसरी तरफ झुकें. सिर गिरा हुआ न रहे. इस तरह दस बार करें.

5. पैर मिला कर सीधी खड़ी हो जाएं. हाथ कमर पर हों. कूद कर पैरों को फैलाएं. पंजों के बल खड़ी हों. फिर वापस आ जाएं. इस तरह पांच बार करें.

बहुत से लोग अपनी शक्ति और अभ्यास से अधिक व्यायाम कर बैठते हैं. ऐसा करना ठीक नहीं होता. कुछ लोग पहले ही दिन इतना परिश्रम कर लेते हैं कि चारचार दिन तक थकान नहीं जाती और फिर थकान के डर से व्यायाम करना ही छोड़ देते हैं. आप ऐसा न करें. थोड़ाथोड़ा अभ्यास बढ़ाएं. जिस दिन उपवास रखें अथवा मासिक धर्म में हों, उस दिन व्यायाम न करें. गर्भिणी स्त्रियों को भी व्यायाम नहीं करना चाहिए.

व्यायाम के अतिरिक्त कुछ साधारण बातें और जीवन में अपना लें तो अवश्य ही स्वास्थ्य और सौंदर्य अधिक दिनों तक कायम रहेगा.

प्रतिदिन सुबह और शाम को ठंडे जल से नहाएं. नहाने के पश्चात मुंह और शरीर को कस कर पोंछें. कस कर पोंछने से शरीर के छिद्र खुल जाते हैं.

सर्दी के दिनों में नीबू के रस में ग्लीसरीन मिला कर एक शीशी में रख लें. सोते समय हाथपैर और मुंह पर लगा लें. इस से हाथपैर शुष्क नहीं होते.

प्रतिदिन हाथ पर क्रीम ले कर इस प्रकार मालिश करें जैसे दस्ताने उतार रहीं हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या आप हरदोज़ का कामकाज
फिरसे करने को उत्सुक हैं?

ग्लैक्सोज़-डी® आपको तुरन्त शक्ति
देकर थकान मिटाता है।

ग्लैक्सोज़-डी से आप घर के काम-काज के लिए तैयार हो जाती हैं। क्योंकि ग्लैक्सोज़-डी आप को वह भरपूर शक्ति देता है, जो आप को थकान के बाद फिर से चुस्ती-फुर्ती के लिए चाहिए। डॉक्टरों की सिफारिश पाने वाला ग्लैक्सोज़-डी बहुत उच्च कोटि का ग्लूकोज़ है जो विटामिन-डी, कैल्शियम और फॉस्फरस से युक्त है।
ग्लैक्सोज़-डी आप की थकान मिटाता है और आप को ऐसी शक्ति देता है कि आप मज़े से घर का काम-काज करती रहती हैं।

ग्लैक्सोज़-डी®
सारे परिवार के लिए
तुरन्त शक्ति का साधन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शान ९० रुपये की पर दाम केवल ७० रुपये!

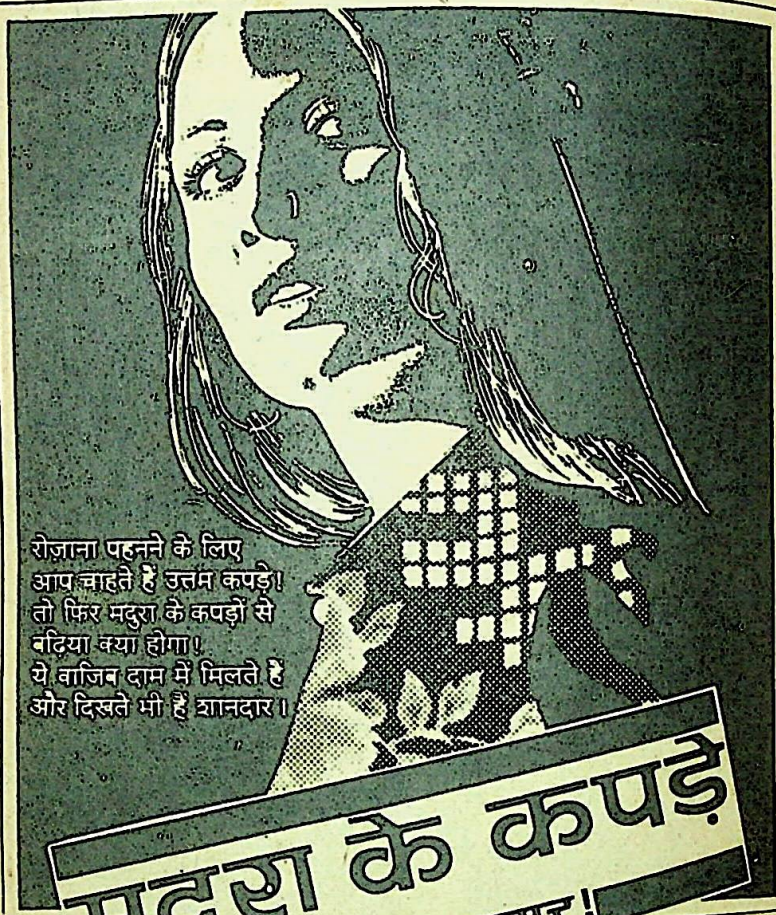
रोज़ाना पहनने के लिए
आप चाहते हैं उत्तम कपड़े!
तो फिर मदुरा के कपड़ों से
बढ़िया क्या होगा!
ये वाजिब दाम में मिलते हैं
और दिखते भी हैं शानदार।

मदुरा के कपड़े

सजीले, शानदार!

पॉलिएस्टर मिश्रित सूटिंग्स और
शर्टिंग्स, १००% कॉटन पॉपलिन,
ड्रिल, गैबर्डीन, टसर, फुल बॉयल, प्रिंट्स आदि।
रंग और डिज़ाइन इतने कि जो चाहें चुन लीजिये—सब वाजिब दाम में।

मदुरा के कपड़े— बनाने वाले:

मदुरा कोट्स

305 HIN

जय चंद एण्ड कंपनी, स्टेशन रोड, मुरादाबाद, नवीन सिल्क स्टोर, गांधी कटरा, बड़ा बाजार, बरेली, साहिब दयाल एण्ड कंपनी, पुतलीघर, अमृतसर १४३ ००१, मदुरा टेक्स्टाइल्स, ५५/१०८, जनरल गंज, कानपुर २०८ ००१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सर्दी के दिनों में घास पर पड़ी ओस में अपना रुमाल भिगो कर चेहरे पर मलने की आदत डालें. इस से चेहरे की चमक बढ़ती है. संतरे एवं नारंगी के छिलकों को सुखा कर रख लें. फिर प्रतिदिन उन का थोड़ा पिसा हुआ पाउडर ले कर और उस में पानी की कुछ बूंदें डाल कर चेहरे पर मलने की आदत डालें.

यदि मुख पर झाइयां, मुंहासे अथवा दाग हों तो साबुत सरसों को बारीक पीस कर पानी के साथ अपने मुख पर मलें अथवा प्रातः स्नान के बाद ताजे नीबू के रस की कुछ बूंदें चेहरे पर लगाएं और 20 मिनट बाद रूई के फाहे से जैतून का तेल मुंह पर लगाएं. थोड़े ही समय में आप का चेहरा चमक उठेगा.

यदि रात को सोने से पहले बेसन से मुंह धो कर कोई क्रीम या लोशन लगा लें तो चेहरे की त्वचा कोमल रहती है.

अधिक तली व भुनी और गरमी करने वाली चीजें न खाएं. खाना नियमित समय पर भूख के अनुसार खाएं. अधिक खाने से शरीर भी बेडौल बनता है. साथ में अपच और पेट की अन्य बीमारियां प्रारंभ हो जाती हैं.

छोटीछोटी बीमारियों या दर्द में अधिक गोलियां नहीं खानी चाहिए. इस से भी स्वास्थ्य बिगड़ता है.

बालों को हफ्ते में दो बार नहाने से पूर्व तेल की मालिश करें. मालिश के दो घंटे बाद रीठा, शिकाकाई या मुलतानी मिट्टी से धो लें.

हफ्ते में एकदो बार उबटन या तेल मालिश कर के नहाएं. बेसन में कच्ची सरसों, अजवायन और थोड़ा कपूर मिला कर उबटन तैयार किया जा सकता है.

जो कपड़े और रंग आप पर फबते हों, उन्हीं का प्रयोग करें.

इन बातों का ध्यान रखने और जीवन में इन का नियमित उपयोग करने से आप का स्वास्थ्य सुदृढ़ और सौंदर्य अक्षुण्ण बना रह सकता है. ●

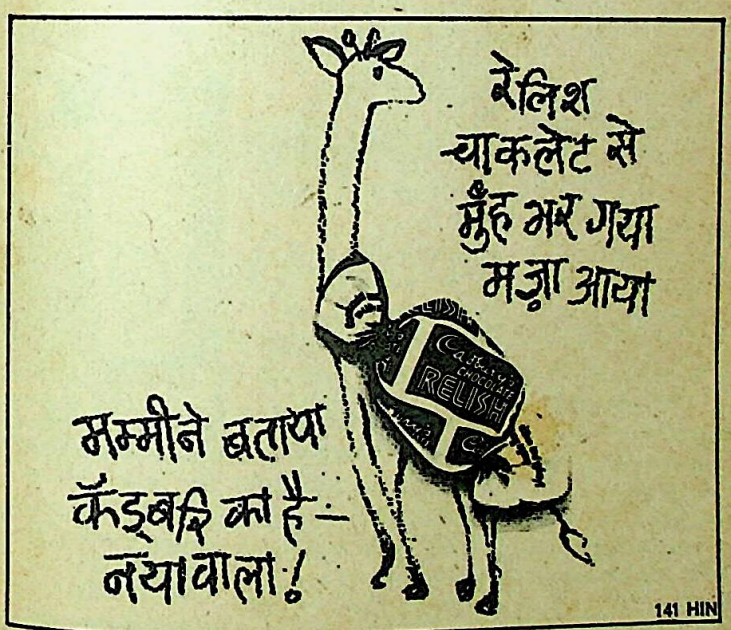

कॅडबरिज़ चॉकलेट रैलिश मुँह भर मज़ा!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेचारा अछूत सण्डास!

भारत में 'सण्डास' शब्द गंदा समझा जाता है लेकिन इसमें सण्डास का क्या दोष!

अधिकांश लोग सण्डास के साथ बड़ा गंदा सलूक करते हैं। घर के सभी अंगों में केवल इसे ही सौतेला व्यवहार मिलता है और यही है वह जगह जहाँ सबसे अधिक ध्यान देने की जरूरत है। जब हमें इसे देखना ही पसन्द नहीं, तो परवाह कैसे होगी। लेकिन हमें परवाह तो करनी ही होगी। क्यों? कैसे? जरा ग़ौर फ़रमाइये:

गंदा सण्डास दिखने में तो गंदा होता है ही, इसकी बदबू भी ग़वारा करना मुश्किल होती है। ऐसा सण्डास आरोग्य और स्वास्थ्य के विरुद्ध तो है ही, निश्चित रूप से ख़तरनाक भी है।

यह बात बिल्कुल सच्ची है। न घटा कर कही गयी, न बढ़ा-चढ़ा कर। अब आप अपने ही दिल को टटोल कर पूछिये...

आपको जैसा साफ़-सुथरा सण्डास चाहिये; वैसा आपका सण्डास है भी?

इसका जवाब एक ही व्यक्ति को मिलना चाहिये और वह व्यक्ति हैं आप!

मेहतर के हर रोज आते रहने से ही तो अच्छी सफ़ाई का यक़ीन नहीं हो जाता। हो सकता है वह बेगार टाल रहा हो।

अगर आप अपने ही जवाब से खुश नहीं तो सुनिये, आपके लिये खुशखबरी लेकर आया है... सैनिफ़्रेश!

सैनिफ़्रेश है क्या?

सैनिफ़्रेश, सण्डास साफ़ करने की चीज है। यह आपके लिये गंदगी मिटाने का बड़ा काम करता है। पहले सण्डास को फ़्लश से खूब सारा पानी डालकर धो डालिये। फिर सण्डास के बर्तन में बहुत सारा सैनिफ़्रेश छिड़किए। ३-४ घंटे तक इसे जमने दीजिये। बेहतर है कि इसे रातभर अपना असर दिखाने दें। सवेरे फिर फ़्लश के बहुत-से पानी से धो लीजिये। फ़्लश खराब हो तो बाल्टी भर कर पानी डालिये। लीजिये, पानी के बहाव के साथ आपकी गंदगी की सारी समस्याएँ भी धुल गयीं।

सैनिफ़्रेश त्रिविध असरकारक है

१. सैनिफ़्रेश से सफ़ाई पूरी तरह होती है

इसमें एक अत्यंत सक्रिय सफ़ाईकारक तत्त्व है जो न छूटनेवाले दाग़-धब्बे भी छुड़ा देता है। सैनिफ़्रेश वहाँ भी सफ़ाई करता है जहाँ ब्रश पहुँच ही नहीं पाता।

२. सैनिफ़्रेश ख़तरनाक जीव-जन्तुओं का नाश करता है

सण्डास एक ऐसी जगह है जहाँ बीमारी फैलानेवाले जीव-जन्तु पनप सकते हैं। सैनिफ़्रेश उन कीड़ों व जन्तुओं का नाश करता है जो आम फ़िनाइल वग़ैरह से नहीं मरते। इसलिये सैनिफ़्रेश के कारण आपको अपना सण्डास ख़तरे से खाली होने की पूरी तसल्ली रहती है।

३. सैनिफ़्रेश है तो बदबू नहीं

सण्डास की बदबू? तौबा, तौबा! बदबू-खास तौर से-बिना खिड़कीवाले सण्डास से तो आती ही रहती है। इससे हालत और भी खराब हो जाती है। सैनिफ़्रेश में एक ऐसा प्रभावशाली दुर्गन्धनाशक तत्त्व है जिससे बदबू मिटती है और हवा में ताजगी छा जाती है।

सैनिफ़्रेश कितनी बार इस्तेमाल करें? सण्डास की सफ़ाई के महत्त्व को देखते हुए इस सवाल का एक ही जवाब है—हर रोज और नियम से!

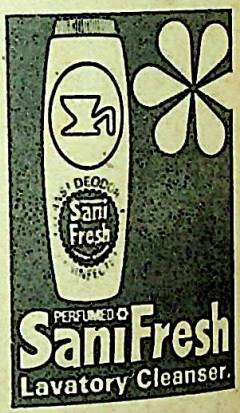

आपकी गंदगी की समस्या दूर करता है ताकि आपका सण्डास साफ़-सुथरा रहे।

बलसारा
—सुखी जीवन के लिए आधुनिक साधन

BALSARA बलसारा एण्ड कं. (प्रा.) लि.
४३, नगिनदास मास्तर रोड, बंबई ४०० ०२३.
CHAITRA-BLS-82 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

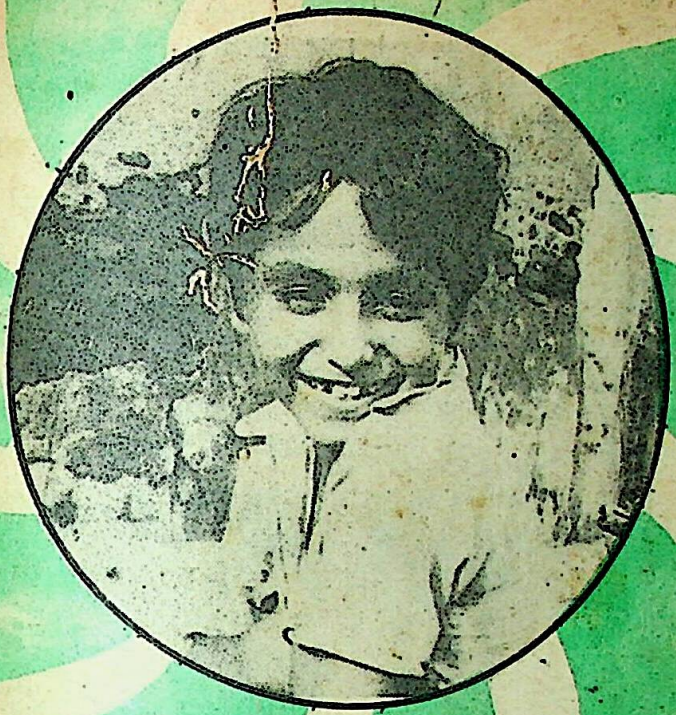

बच्चों को बिगाड़ने के अचूक नुस्खे

लेख • अंजिला आनंद

जी हां, अब भी मौका है, यदि आप ने अब तक अपने बच्चों को बिगाड़ा नहीं. क्षमा कीजिए, बच्चे अपनेआप बिगड़ते हैं, इस सिद्धांत को मानने वालों में हम नहीं हैं. तो लीजिए, उन्हें बिगाड़ने के कुछ गरमागरम 'ओवन फ्रैश क्रिस्प' वाले नुस्खे. फिर से क्षमा चाहती हूं, अपनी भाषा के इस असभ्य शब्द 'बिगाड़ने' के लिए, क्योंकि हाल ही में मुझे इस का एक नया प्रतिरूप सीखने को मिला है.

भला हो आशिमादेवी का, जिन की वाक्चातुरी पर तो मैं पहले ही फिदा थी, अब उन के शब्द भंडार वैचित्र्य पर भी हैरान हूं. हुआ यों कि उन का बच्चा, माफ कीजिए उन का लाड़ला, जरा शरारत के मूड में था. वैसे बड़ा प्यारा बच्चा है वह. यों ही कभीकभी शरारत कर बैठता है. हां तो मैं कह रही थी, गैस वाले रैक के ऊपर चढ़ बारीबारी से उसे जलानेबुझाने का खेल चल रहा था.

हम ने अपनी अक्खड़ता में आ कर

> अधिकांश माताएं तो इन्हीं गुरों से अपने बच्चों को समार्ट बना रही हैं...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कह ही दिया, "लो, आप का बच्चा भी खूब बिगड़ रहा है आजकल."

झट से पप्पू को गोद में खींच पप्पी लेती हुई वह लाड़ से बोलीं, "बिगड़ा नहीं है, जी. स्मार्ट है जरा ज्यादा ही. हाउ इंटेलीजेंट. देखिए न, अभी चार का भी नहीं हुआ और कैसे गैस जला लेता है."

अतएव आप से भी मुझे कहना यही चाहिए था कि क्या आप के बच्चे 'स्मार्ट' हैं. यदि नहीं तो जल्दी से बना डालिए न, और यदि हैं तो फिर 'ओवर स्मार्ट' बनाने की प्रतियोगिता में जुट जाइए. कैसे? गुर हम बताते हैं.

क्या किसी के घर जाने की तैयारी है? अपनी साड़ी का तो चुनाव कर ही लिया है आप ने. अब असली काम है मुन्ना राजा को तैयार करने का. भई, उस का भी तो पूरा वार्डरोब है अलग से और सिलेक्शन भी अपनी ही है. पापा तो चाहे दो कमीजों में महीना गुजार देते हों, पर बेटे राजे को दिन में पांच पोशाकें तो चाहिए ही. सो, खोल दीजिए अलमारी और शुरू कर दें एक अंतहीन संलाप, उस नन्हें तानाशाह की स्वीकृति पाने के लिए. "क्यों, बेटे राजे, यह नीली वाली शर्ट पहनोगे? कितनी बढ़िया है. देखो तो, उड़ती हुई तितलियां बनी हैं इस पर."

"नहीं, मम्मी, हम को तितली नहीं, ऐरोप्लेन वाली शर्ट चाहिए."

"लेट गया की संतान, इस से कम में क्या संतुष्ट होगी भला. बाल मनोविज्ञान के सिद्धांतों को याद कर प्रसन्न हो उठिए कि जिद्दी बच्चे बड़े दिमागी होते हैं और वाह कीजिए, "सो कल ही ऐसी शर्ट ला देंगे हम अपने बेटे को."

खैर, खुदा का शुक्र है, नन्हे मियां का बड़ा सा दिल एक शर्ट पर आ ही गया और वह तैयार होने पर राजी हो गया. उलटा सीधा मेकअप कर जल्दी से ताला लटका कर आप भी रुखसत हो लीं घर से. आज के जमाने में बच्चों को यह सिखाने की तो कतई जरूरत नहीं कि "देखो, बेटे, वहां यह मत मांगना, वह मत

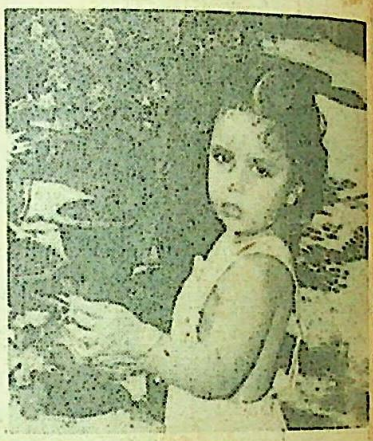

छेड़ना." ऐसा करना उस की स्वतंत्रता का अतिक्रमण है, उस के व्यक्तित्व के विकास में बाधा है.

आ गया सहेली का घर. बस, आप की छुट्टी. "राजू, बंटी, जरा हमारे मुन्ने को भी खिलाना." और बैग से निटिंग निकाल कर निश्चिंत हो धंस जाइए आप तो सोफे में. बातचीत करते कनखियों से देखती रहिए मुन्ने के करतब भी. फ्रिज का स्टिकर निकाल रहा है. कोई बात नहीं, चुप रहिए. लो, अब रैक से नई 'सरिता', 'मुक्ता' निकाल कर तसवीरें फाड़ रहा है. निटिंग में और व्यस्त हो जाइए.

अरे, यह क्या, मुन्ने ने भी बंटी को धक्का दे दिया. सो अब बंटी उसे पीटने को है. निटिंग पटकिए और पहुंच जाइए झट से अखाड़े में. "बंटी भई, तुम तो बहुत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरारती हो गए हो."

"देखिए न, आप का बंटी मुन्ने को मार देता अभी."

"आओ मुन्ने, आंटी अभी चाकलेट देंगी, बेटे."

आप का यह सब कहना स्वाभाविक ही होगा. चाकलेट, बिस्कुट, मिठाई खा कर और चटनी, चीनी, नमक गिरा कर मुन्ना राजा संतुष्ट. यदि वह बढ़िया कांच वाले गिलास में दूध पीने की जिद कर रहा है तो क्या हुआ? भई, उस की भी तो रुचि है. अभी से सौंदर्यानुभूति विकसित होने दीजिए. अरे, गिलास टूट गया.

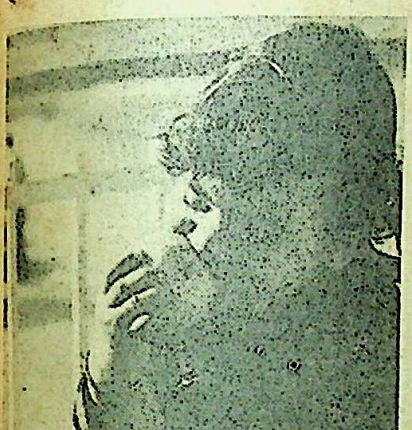

"भई, तू तो आंटी के घर को अपना ही समझता है. उठापटक करता ही रहता है."

"देखिए न, कैसा सहम गया है, बेचारा."

"आओ बेटे, कोई बात नहीं, अभी आंटी कांच समेट देंगी." शाम को विदाई लेते समय पीछे मुड़ कर मत देखिए कि आंटी के अभीअभी 1200 रुपए में खरीदे कारपेट की क्या शान बढ़ाई है आप के लाड़ले ने.

लीजिए, स्थिति एकदम विपरीत हो गई है. आप ही के घर मेहमान आ गए हैं. अब भी बहुत अवसर है बच्चे को अपनी 'स्मार्टनेस' की प्रैक्टिस करने का. आप बस, मस्त रहिए, फ्रेंडस के साथ गपशप में बच्चों पर ध्यान देने से

व्यवधान तो होता ही है. यह शिष्टाचार के भी विरुद्ध है. शिष्टाचार के विरुद्ध हो भई, बच्चे तो बच्चे ही हैं. उन्हें क्या सिखाएं भला? सीख लेंगे अपनेआप, जब समय आएगा. वैसे हमारा मुन्ना बड़े शांत स्वभाव का है. बस 'कंपनी' मिलने पर जरा मस्ती में आ जाता है और मुन्ने महोदय ठाठ से अंकल के ब्रीफकेस पर बैठ, आंटी के पर्स से लिपस्टिक निकाल 'ट्राई' कर रहे हैं.

कभीकभी ऐसा भी होता है कि आप को ढेरों चिट्ठियां लिखनी हैं या कोई जरूरी कार्य करना है. जैसे बिटिया के स्कूल का चार्ट ही बनाना है. इधर छोटे

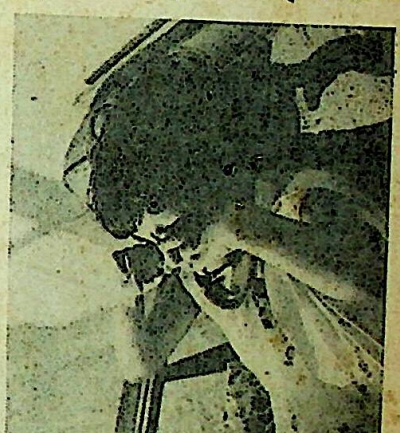

मियां हैं कि सिर पर ही सवार हैं. अब क्या हो? एक पैन पकड़ाइए उसे भी. पतिदेव का है? इंगलैंड वाला? तो क्या हुआ? बच्चे के आगे उस की क्या कीमत? अब आप करिए काम और छोटे साहब को दीवारों या चादरों पर रंगीन चित्र बनाने दीजिए. उन की कार्यनिष्ठा की बीचबीच में दाद भी देती रहिए. हो सकता है, इन्हीं में से कोई चित्र शंकर की चित्र प्रतियोगिता में मुकाबले का निकल आए. बड़ा हो कर यदि बेटा चित्रकार बन गया तो आप की इस प्रारंभिक प्रेरणा को कितना श्रेय देगा.

हाकी खेलने का बेटे को बड़ा शौक है. खूब बढ़ावा दीजिए. यदि बाल खिड़की का कांच फोड़ता हुआ बाहर खड़े लोगों को भी आहत कर दे तो क्या हुआ. विकास के मार्ग में छोटेमोटे नुकसान तो होते ही हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बदलते मौसम में सिर्फ़ आपका चेहरा ही नहीं...

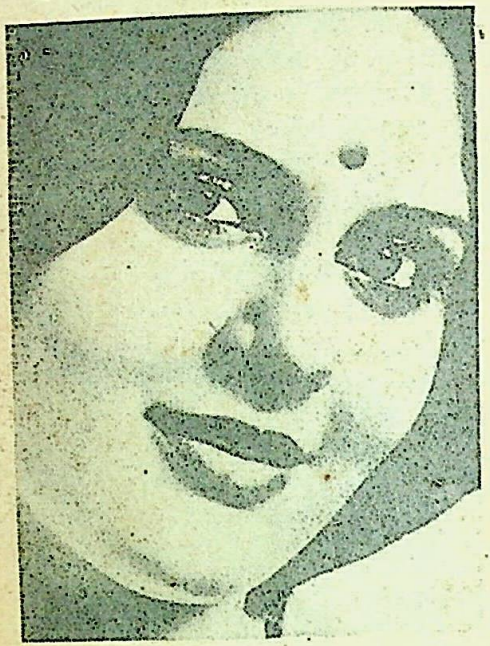

बल्कि सारी त्वचा खुश्क हो जाती है, जैसे...

हाथों की,

कोहनियों की,

घुटनों की,

पाँवों की

अपनी त्वचा को निर्मल और कोमल बनाइये- चार्मिस आल पर्पस क्रीम के खूबसूरती बढ़ाने वाले तत्वों से

सर्दियों की ठंडी खुश्क हवाएँ.... गर्मियों की धूल और कड़ी धूप आपके चेहरे, हाथ, पाँवों, घुटने, कोहनियों की त्वचा को खुश्क बना देते हैं.... और त्वचा फटने लगती है।

आपकी त्वचा की रक्षा के लिए चार्मिस आल पर्पस क्रीम इस्तेमाल कीजिये। चार्मिस के खूबसूरती बढ़ाने वाले तत्व आपकी त्वचा का पोषण भी करते हैं और त्वचा को निर्मल और कोमल भी बनाए रखते हैं।

आपकी त्वचा को चार्मिस की ज़रूरत है.... हर रोज़ हर मौसम में चार्मिस आल पर्पस क्रीम इस्तेमाल कीजिये और आपका रंग-रूप निखर उठेगा।

आज ही चार्मिस आल पर्पस क्रीम खरीदिये।

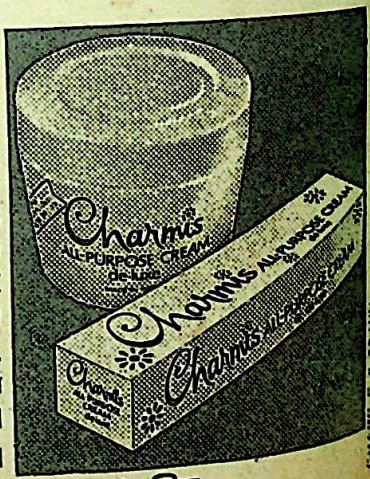

निर्मल और कोमल त्वचा के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खानेपीने की बात पर बच्चों को कुछ कहना क्रूरता है? सुरेंद्र बाला इस संबंध में अपनी नेता हैं. अकसर आधी रात को उठ कर उन के साहबजादे हलवा अथवा पूरीपरांठा मांग बैठते हैं और वह आंखें मलती, किचन में व्यस्त हो जाती हैं. एक बार मेरे टोकने पर उन का उत्तर था, 'क्या हम इतने गए बीतें हैं कि बच्चे की इतनी सी इच्छा भी पूरी न कर सकें."

काश, सभी महिलाएं अपनी सामर्थ्य को इतना बढ़ा सकतीं. बच्चे से पूछिए, उसे कौन सी सब्जी पसंद है. चावल चाहिए या चपाती या फिर पूरी? रोज वैसा ही टीनू बनाइए. इस पर भी यदि बच्चे का मूड बिगड़ जाए तो और एकदो घंटे की मान्नू मिन्नत करवा कर भी वह खाना खाए तो कोई बात नहीं. इधरउधर की चीजें खा कर वह पेट भर ही लेगा. अब बच्चे को क्या मना करना जो. टोकने से नजर लग सकती है.

पेट खराब हो गया है? बदहजमी है? अरे भई, दवाइयां किस के लिए बनी हैं? एक से एक महंगी दवा जुटाइए. और फिर डिस्पेंसरी ही कौन सी दूर है. अपने मुन्ने को डाक्टर धर्मपाल की दवा खूब लगती है, भई. एंबुलेंस के लिए फोन करिए और सब को खबर भी कर दीजिए लगे हाथ कि मुन्ना बीमार है. आखिर आप भी तो सभी के बच्चों की बीमारी में पहुंचती हैं. यदि मिसेज बुलबुल न आईं तो आप भी मत जाइएगा अगर उन की गुड़िया बीमार पड़े तो. पहले ही आप के दो चक्कर हो चुके हैं.

इन सब तरीकों को आजमाने से भी, यदि बच्चे की स्मार्टनेस में कुछ कमी रह जाए तो खबर करिएगा. अगली बार जरा और स्ट्रांग नुस्खे नजर करूंगी. ●

बच्चों के मुख से

एक बार हम सभी बहनभाई फिल्म हाथी मेरे साथी देखने गए. साथ में मेरा पांच वर्षीय भानजा अमित भी था. फिल्म में हाथी की मृत्यु हो जाने पर वह चुपचाप सुबकता रहा लेकिन जब हम लोग सिनेमा हाल से बाहर निकलने लगे तो वह तपाक से बोला, "मौसीजी, हाथी तो मर गया, अब अगला शो कैसे होगा?" इतना सुन कर हम सभी हंस पड़े. —सुमन लता

✦

मेरे भाई की थोड़े समय पहले ही शादी हुई थी. हम कमरे में बैठे गपशप कर रहे थे. कमरे में मेरे बड़े भाई का लड़का भी बैठा था, वह रेडियो सुनने का बहुत शौकीन था.

बातों के बीच में ही वह भाई साहब से बोला, "चाचाजी, चाचीजी रेडियो भी साथ लाएंगी न?"

भाई साहब ने कहा, "हां बेटा, वह रेडियो भी साथ लाएंगी."

यह सुन कर वह बोला, "चाचाजी, आप चाचीजी को रख लेना, मैं रेडियो रख लूंगा?" यह सुन कर हम सब लोग जोर से हंस पड़े. —अनिलकुमार सिंघल

✦

मेरी पांच वर्षीय भांजी विन्नी कोई भी चीज खाते समय तीन से कम नहीं लेती थी, दीदी उसे समझा रही थी कि "बेटी, तुम्हारी जीभ एक है न," विन्नी बोली, "हां."

दीदी बोली, "मुंह एक है न, तो तुम टाफी भी एक ही खाया करो."

इतना कहने की देर थी कि विन्नी तपाक से बोली, "क्यों, मम्मी, मेरे दांत तो इतने सारे हैं?" —नीलम मेहता ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज़माइए और सुबूत पाइए:

किसी भी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से सुपर रिन की चमकार ज़्यादा सफ़ेद

सुपर रिन नियमित इस्तेमाल कीजिए और अपनी आंखों देखिए आपके कपड़े कितने ज़्यादा सफ़ेद नज़र आते हैं; उन कपड़ों से कहीं ज़्यादा सफ़ेद जो आपने किसी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से धोये हैं. यह इसलिए कि सुपर रिन में अधिक सफ़ेदी लाने की शक्ति है. आज़माइए और सुबूत पाइए.

किसी अन्य डिटर्जेंट टिकिया या बार से अधिक सफ़ेदी की शक्ति से भरपूर

लिटास-RIN-34-JBIO-HI(RX) हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीवाली पर

घर पर ही बनाएं !!

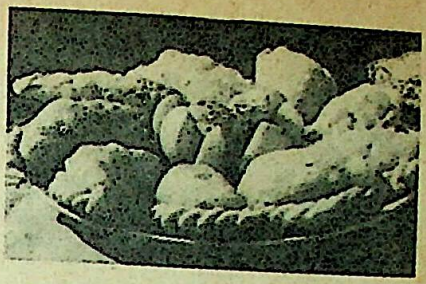

कच्चे केले के गुलाब जामुन

सामग्री :

5 कच्चे केले, घी, चीनी, किशमिश, खाने वाला भूरा रंग. (इच्छानुसार)

विधि :

केलों को छील कर उन के पतले-पतले टुकड़े काट लीजिए और कढ़ाही में थोड़ा सा घी डाल कर उन्हें पकाइए. जब केले का गूदा मावा की तरह तैयार हो जाए तो उसे हाथ से अच्छी तरह मसल कर छोटी गोल या लंबे आकार की गोलियां बना लीजिए. उन के बीच में किशमिश रखना न भूलिए.

अब कढ़ाही में घी डाल कर उन गोलियों को धीमीधीमी आंच पर सेक लें और चाशनी में छोड़ती जाइए. चाशनी में गुलाब जल भी मिला लिया जाए तो अधिक रुचिकर लगेंगे. 20-25 मिनट के बाद जब वह रसीले हो जाएं तो प्लेट में सजा कर परोसिए.

—अर्चना सक्सेना

शाही टोस्ट

सामग्री :

एक किलो दूध, 250 ग्राम खोया, 150 ग्राम घी, चीनी, (स्वादानुसार) डबलरोटी के 6 स्लाइस, इलायची, पिस्ता, बादाम, चांदी के वर्क.

विधि :

दूध को इतना उबालो कि आधा रह जाए. अब इस में चीनी व खोया मिला कर भली प्रकार फेंटें जिस से वह एक हो जाए.

तत्पश्चात डबलरोटी को इच्छानुसार आकार दे कर धीमी आंच पर हलके गुलाबी तल लें और उसे तैयार किए हुए दूध में डाल दें. थोड़ी देर बाद प्लेट में निकाल लें और ऊपर से वर्क लगा कर इलायची, पिस्ता, बादाम आदि से सजा दें. इसे बनाते समय दो बातों का विशेष ध्यान देना चाहिए. डबलरोटी तलते समय आंच धीमी हो और दूध में खोया नीचे उतार कर मिलाएं.

बिना दूध वाले शाही टोस्ट

सामग्री :

300 ग्राम चीनी, पानी, डबलरोटी, 250 ग्राम घी, पिस्ता, बादाम, इलायची, वर्क.

विधि :

पानी में चीनी डाल कर दो तार की चाशनी तैयार कर लें और कढ़ाही में घी गरम कर के डबल रोटी को हलका गुलाबी सेक लें. ध्यान रहे आंच धीमी ही रहे. अब सिकी हुई डबलरोटी को चाशनी में डाल दें और थोड़ी देर बाद उसे प्लेट में निकाल लें. उस पर वर्क लगा कर इलायची, पिस्ता, बादाम आदि से सजा कर मेहमानों के लिए रख लीजिए.

लौकी की बरफी

सामग्री:

250 ग्राम खोया, 150 ग्राम लौकी, चीनी (इच्छानुसार,) किशमिश, बादाम, इलायची, पिस्ता, चांदी के वर्क.

विधि :

लौकी को धो कर छील लें. उसे कद्दूकस से कस लें. इन को भली प्रकार निचोड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर घी में धीमी आंच पर इस प्रकार भूनें कि लच्छे न टूटने पाएं. खोया भी गुलाबीगुलाबी भून लें. चीनी को बारीक पीस कर खोए में मिला दें. अब लच्छों को खोए में इस प्रकार मिलाएं कि लच्छे टूटने न पाएं. फिर एक थाली में थोड़ी सी चिकनाई लगा कर उन्हें उस पर एक सा फैला दें. ऊपर से चांदी के वर्क लगा दें और पिस्ता, बादाम, इलायची, किशमिश आदि छोटेछोटे टुकड़ों में काट कर बुरक दें. जम जाने पर इच्छानुसार बर्फी के आकार में काट लें और प्लेट में सजा दें.

—मृदुला गांधी

नारियल की टाफी

सामग्री :

एक कप चीनी, एक कप बारीक कद्दूकस किया नारियल, एक कप दूध की मलाई.

विधि :

कच्चे दूध को फ्रिज में रखने से जो क्रीम ऊपर आ जाए उसे आप उतार लें या आप बाजार से भी ताजा क्रीम ले सकती हैं. अब फ्राइंग पैन में क्रीम, नारियल पाउडर और चीनी मिला दें और हल्की धीमी आंच पर पकाएं. इसे लगातार हिलाती जाएं. जब मिश्रण फ्राइंग पैन के किनारों को छोड़ने लगे और भूरे रंग का हो जाए तो उसे उतार कर प्लेट में डाल लें. थोड़ी देर बाद ठंडा होने पर इस के छोटेछोटे टुकड़े काट लें. यह टाफी स्वादिष्ट एवं पौष्टिक होगी.

आप ऐसे ही नारियल की बर्फी भी बना सकती हैं, पर तब क्रीम डाले न डालें.

—सवींद्र सहोता

मौसम यह ढीठ

यादों की धूप
फैली है आसपास.

जूड़े में कल्पना
नए फूल खोंच रही.
अधरों पर से पिछले
गीतों को पोंछ रही.

भराभरा मन
बढ़ती जा रही प्यास.

बरजा है बहुत, मगर
चितवन है भटक रही.
खुशबू के आंचल में
हवाएं अटक रहीं.

कभी हंसे स्वप्न
कभी हो गए उदास.

मुट्ठी भर से ज्यादा
नहीं है अकेलापन
आंखें कर देती हैं
पर उस का विज्ञापन.

मौसम यह ढीठ
करता है अट्टहास.

—इंदिरा परमार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मां की प्यारी देखभाल जिसने दिखलाई

हाई पावर सर्फ़ के फार्मूले का बराबरी नहीं

इसके क्रियाशील तत्व ज़बर्दस्त और टिकाऊ झाग के ज़रिये मैल और चिपके दाग-धब्बों को भी निकाल बाहर करते हैं. इससे पूरे परिवार के कपड़े सचमुच साफ़ और सफ़ेद धुलते हैं. सबसे सफ़ेद धुलाई जो देखने में आई!

इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं, अधिकांश मांएं दूसरे किसी पाउडर के मुकाबले में सर्फ़ इस्तेमाल करती हैं, हालांकि इसकी क़ीमत थोड़ी ज़्यादा है.

हाई पावर सर्फ़ हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन है. ये केवल डिब्बों और पुड़िया में मिलता है, कभी खुला या प्लास्टिक की थैलियों में नहीं बिकता.

अधिकांश मांएं दूसरे पाउडर के मुकाबले में सर्फ़ इस्तेमाल करती हैं.

लिंटास-SU. 210-1810 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

SUNDAY STANDARD

Vijayawada, Sunday October 17, 1976

Raw Garlic is anti-bacterial

NABIL TAL Oct 20 (Samachar)

Raw garlic possesses anti-bacterial property against a number of micro-organisms including those which are resistant to commonly used anti-biotics. This is revealed in researches conducted at the Pantnagar University. According to the research findings, anti-bacterial property of garlic is lost on boiling.

हिन्दुस्तान

[illegible]

भारतीय डाक्टरों की खोज

लन्दन, ४ जनवरी (प्रे) मेडिकल साप्ताहिक पत्रिका "द लांसेट" में प्रकाशित एक लेख में दो भारतीय डॉक्टरों (डॉ. लक्ष्मण घोरडिया तथा डॉ. एच. सी. वेलवा) का कहना है कि भारत में हालहि में किये गये उनके अनुसंधान से पता चला है कि लहसुन के प्रयोग से दस हृदय रोगियों को चिकनाई वाला भोजन दिये जाने पर भी हृदय को रक्त पहुंचाने वाले स्नायुओं में रक्त अपेक्षा० कृत धीमी गति से जमा।

इन डॉक्टरों ने लिखा है कि कुछ और ऐसे पदार्थ हैं, जो हृदय को रक्त पहुंचाने वाले स्नायुओं पर चिकनाई के जमाव को रोकते हैं। पर एक तो, वे बहुत मंहगे हैं तथा दूसरे उनका असर थोड़ी देर तक ही रहता है। इसके विपरीत लहसुन आसानी से हर जगह प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और उसके सेवन के बाद में कोई दुखाभाव भी नहीं होता।

नवभारत टाइम्स

लहसुन का महत्व

नयी दिल्ली, ३ दिसंबर (समाचार). एक चिकित्सा-अनुसंधान से पता चला है कि खून में 'कोलेस्ट्रोल' को कम करने में लहसुन बड़ा प्रभावशाली है. लीबिया के बेंगाजी विश्वविद्यालय के खून जांच-विशेषज्ञ (पेथालाजिस्ट) डॉ. आर. सी. जैन ने बताया है कि लहसुन से कोलेस्ट्रोल का स्तर कम किया जा सकता है. उन्होंने खरगोश पर किये गये परीक्षणों के दौरान पाया कि जब खरगोशों को कोलेस्ट्रोलों से युक्त भोजन १६ सप्ताह तक खिलाया गया तो उनके ओरटा (मुख्य खून नली) और जिगर में भारी मात्रा में कोलेस्ट्रोल जमा हो गया. परंतु, इसके बाद उन्हें लहसुन खिलाया गया तो वसा गायब हो गया और कोलेस्ट्रोल का स्तर नीचे गिर गया.

Eve's Weekly

July-17-1976

AYURVEDA IN YOUR HOME

Suresh Chandra Chaturvedi

GARLIC

Regular use of garlic helps the digestive system and removes gas It increases the blood, cures chronic cold and cough. Gastric troubles are cured by taking garlic every day

बिना बू वाला लहसुन

लसोना

सही आकार

निगलने में आसान

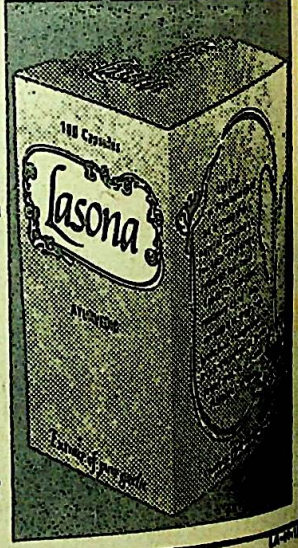

विशेष प्रकार से तैयार की गई लसोना आपके लिये कई तरह से लाभदायक है।

* आपकी पाचन-क्रिया को सुधारती है। * वायु-विकार को दूर करती है।

* रक्त शुद्ध करती है। * पुरानी खाँसी को दूर करने में मदद करती है।

स्वस्थ तथा प्रसन्न जीवन के लिए अचूक, प्राकृतिक तथा निरापद साधन—

Lasona

लसोना—अब आपके शहर में सभी अच्छी दूकानों और औषधि विक्रेताओं के पास मिलती है।

टॉमस फार्मेस्यूटिकल्स, २३ हमाम स्ट्रीट, बम्बई-४०० ०२३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • कुमुद भटनागर

दीप जल गए

"आप अगर अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में चले जाएं तो बेहतर रहेगा. ओसाका का काम नवंबर के अंत तक खत्म कर के वापसी में आप दिसंबर के शुरू में वियना में होने वाली कांफ्रेंस में भाग ले सकते हैं. इस से किसी दूसरे को भेजने की जरूरत नहीं पड़ेगी." चेयरमैन रुस्तमजी सौरभ को देख कर मुसकराए, "पर शायद अक्तूबर के अंतिम सप्ताह में आप के लिए जाना मुमकिन नहीं होगा."

"नहीं सर, अभी दो हफ्ते हैं. मैं हाथ के जरूरी काम आसानी से निपटा सकता हूं."

"मगर नवंबर के शुरू में दीवाली है. वह शायद आप अपने परिवार के साथ ही मनाना चाहेंगे."

"अगले साल मना लेंगे, सर. दीवाली का क्या है यह तो जिंदगी भर ही आती रहेगी. उस के लिए जरूरी काम थोड़े ही छोड़े जा सकते हैं."

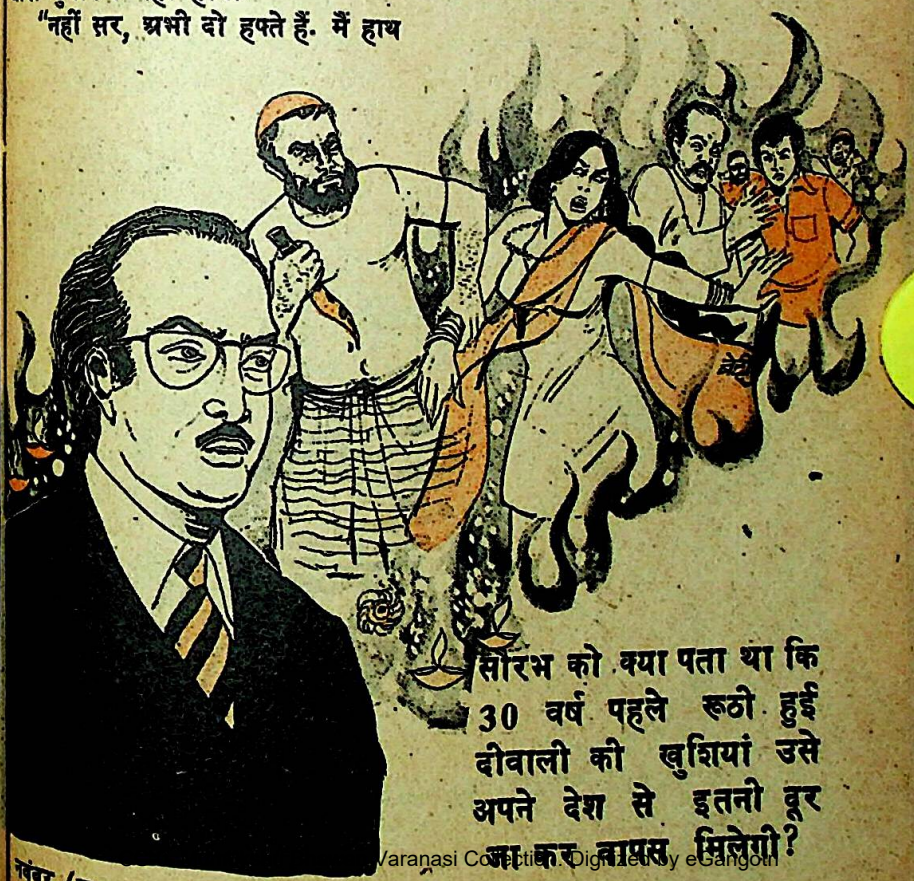

सौरभ को क्या पता था कि 30 वर्ष पहले रूठी हुई दीवाली की खुशियां उसे अपने देश से इतनी दूर जा कर वापस मिलेंगी?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"तो फिर ठीक है. आप अपने जाने की तैयारी कीजिए." रुस्तमजी मुसकराते हुए बोले, "मैं अपनी और कंपनी की तरफ से आप से और आप के परिवार से माफी चाहूंगा कि साल के त्योहार के मौके पर आप को आप के घर और देश से दूर भेज रहा हूं."

सौरभ का जी चाहा कि वह रुस्तमजी को बता दे कि दीवाली के मौके पर उसे भारत से बाहर भेज कर वह उस पर बहुत बड़ा एहसान कर रहे हैं. पिछले तीस वर्ष से वह दीवाली के आसपास के दिन किस आंतरिक व्यथा और पीड़ा में जीता है यह वही जानता है.

पिछले बाईस वर्षों से यानी जब से उस की शादी हुई है, तब से वह इस त्योहार के नाम से और भी सिहर उठता है. अंतर की व्यथा को छिपा कर झूठे कहकहे लगाने और दोस्तों से गले मिल कर दीवाली की मुबारकबाद लेने और देने में वह मानसिक रूप से अंधमरा हो जाता है. फिर भी वह अपने मन के दर्द और संजीदगी को दूसरों पर जाहिर न कर अपने सीने पर पत्थर रखे मुसकराता रहता है ताकि रेणु यह न कह सके कि साल त्योहार के दिन मनहूस शक्ल बनानी बदशगुनी की निशानी है. यों हमेशा हंसते रहोगे, लेकिन दीवाली पर न जाने क्यों तुम्हारी शक्ल पर बारह बजने लगते हैं.

वह रेणु को क्या बताता कि दीवाली पर उसे क्या हो जाता है. उस के कानों में दीवाली की रात को पम्मी की चीखें गूंजने लगती हैं.

उस दिन दीवाली की शाम को महल्ले के सब लड़केलड़कियां अपनेअपने घरों की छत पर दीए सजा रहे थे. फुलझड़ियां, पटाखे छोड़ रहे थे. मकानों की छतें आपस में मिली होने के कारण वे एक घर से दूसरे घर में छलांग लगा कर आजा रहे थे.

"जिंदगी आज का नाम है, गुजरे कल या आने वाले कल का नहीं," पम्मी सौरभ से बोली.

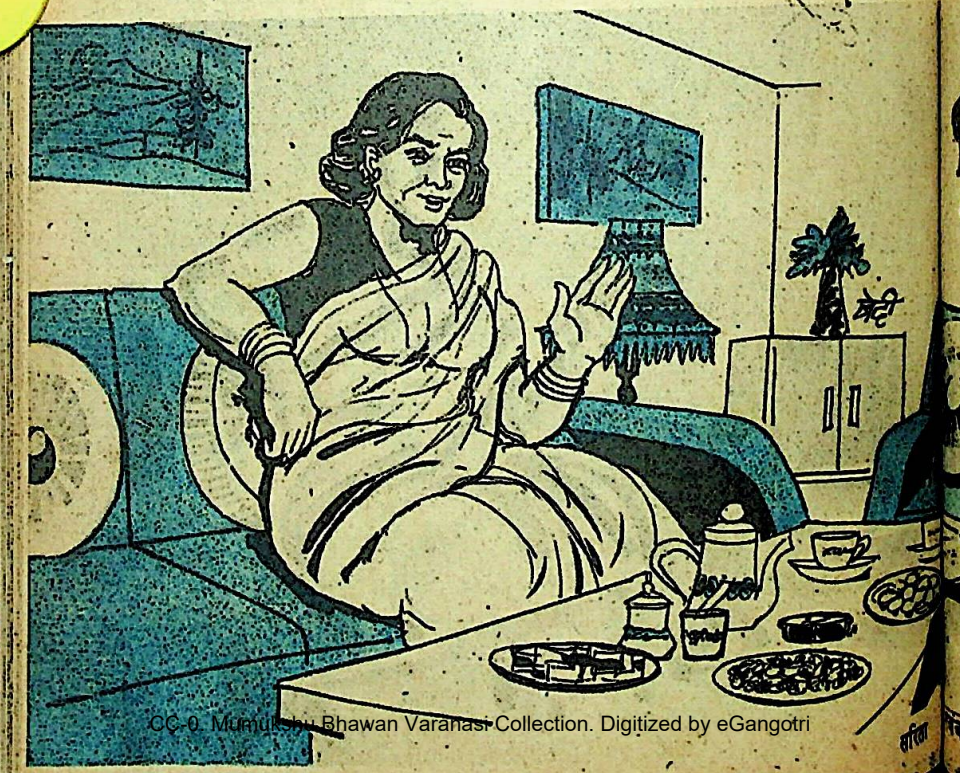

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपस में छेड़छाड़, हंसीमजाक कर रहे थे.

तभी किसी फुलझड़ी की चिनगारी से सेठ सुंदरदास की लड़की प्रमिला की सलवार के पौंचे में आग लग गई और प्राकृतिक की बयार के झोंकों ने उसे लपटों में बदल दिया. पटाखों की ठांएठांए और लड़केलड़कियों के हंसीठहाकों के बीच प्रमिला की चीख उभरी, "बचाओ, सौरभ बचाओ."

प्रमिला की चीख भरी पुकार सुन कर वह हाथ की आतिशबाजी फेंक फौरन लाला सुंदरदास की छत पर कूद गया था. उस ने दोनों हाथों से मल कर उस के कपड़ों में लगी आग बुझा दी थी. पम्मी की जरा सी टांग झुलसी, पर सौरभ के दोनों हाथ और बांहें बुरी तरह जल गई थीं और हफ्तों पट्टी होती रही थी.

"जब आसपास इतने लोग और थे तो तुम ने मुझे ही क्यों पुकारा, पम्मी?" एक रोज अकेले में सौरभ ने उस से पूछा था.

"मालूम नहीं, सौरभ, जाने क्यों उस समय तुम्हीं मुझे अपने से लगे, इसलिए तुम्हें पुकार लिया." फिर वह धीरे से बोली, "और तुम्हें मेरी वजह से बेकार में तकलीफ उठानी पड़ी."

"अभी तक तो नहीं थी, पर अब तुम्हारी बात से जरूर हो रही है? क्या अब मैं अपना सा नहीं लग रहा हूं?"

"कौन कहता है? अब तो तुम और भी ज्यादा अपने से लगने लगे हो."

"ऐसी बात है तो फिर उमर भर को अपना समझ लो, पम्मी. चारपांच बरस की बात है, पढ़ाई खत्म होते ही तुम्हें पूरी तरह अपना बना लूंगा." सौरभ ने पट्टी बंधी हथेलियों से पम्मी के हाथों पर जितना दबाव डाला जा सकता था, डाल दिया.

फिर खुले आम महल्ले के हमउमर लड़केलड़कियों की तरह बातचीत और छेड़छाड़ को छोड़ दोनों एकांत कोनों में छिप कर प्रेमालाप करने लगे. बात और आगे बढ़ती इस से पहले ही देश को दो हिस्सों में बांट देने वाली आग लाहौर में बुरी तरह भड़क उठी. पम्मी और सौरभ का प्यार भी उसी में झुलस गया. एक रात जोरजोर से किवाड़ भड़भड़ाने की आवाज, चीखने-चिल्लाने का शोर और फिर गोली चलने की आवाज सुन कर सौरभ, उस का बड़ा भाई गौरव, छोटे चाचा और नौकर महंगाराम छत की दीवार फांद कर एक साथ दोदो तीनतीन सीढ़ियों से कूदतेफांदते लाला सुंदरदास के आंगन में जा पहुंचे थे.

वहां बर्बर खूंखार किस्म के पंद्रह-बीस लोग छुरे और बंदूकें लिए आंगन में खड़े थे. सुंदरदास और उन के परिवार वाले असहाय से दीवार से टिके खड़े थे. लुटेरे घर में से मनमाना कीमती सामान ढूंढ़ कर ला रहे थे. सौरभ और उस के साथियों की ओर एक लुटेरा बंदूक तान कर खड़ा हो गया था और ये लोग भी लुटेरों को उन के घर का सामान बांधते देखते रहे थे. पर जब तेहरवीं सी रंगी दाढ़ी और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाल आंखों वाले एक वहशी से लगते अधेड़ आदमी ने पम्मी की बांह पकड़ कर उसे अपनी ओर खींचा तो सौरभ तड़प कर आगे बढ़ गया था.

"काके, क्या पागल हो गए हो?" कह कर महंगाराम ने उसे पकड़ लिया था.

"हाय, पापाजी बचा लो." पम्मी चीखी थी.

"चुप," उस दाढ़ी वाले ने उसे घसीटते हुए कहा था.

तभी पम्मी की नजर उस पर पड़ी थी और वह अपनी पूरी ताकत से चिल्ला पड़ी थी, "सौरभ, मुझे बचाओ, मुझे बचा लो, सौरभ."

वह महंगाराम और चाचा को धक्का देते हुए फिर लपका था. पर इस बार पम्मी के बड़े भाई अमर ने उसे जबरन रोकते हुए कहा था, "क्यों जान देने पर तुला हुआ है? उन छुरेबंदूक वाले जंगलियों से तू अकेला निपट सकेगा?"

वह अमर से हाथ छुड़ा कर छत पर जा कर मुंडेर से झांकने लगा था. घर से बाहर निकल कर उस आदमी ने पम्मी का मुंह उस के दुपट्टे से बांध दिया था और अपनी लुंगी खोल कर उस के हाथ बांध दिए थे. फिर छटपटाती पम्मी को गोद में उठा कर बोला था, "मुझे और कुछ नहीं चाहिए. सब तुम लोग बांट लो." और इस से पहले कि सौरभ मुंडेर की ईंट उखाड़ कर उस के सिर पर मारता वह आदमी कहीं अंधेरे में ओझल हो गया था और पीछे छोड़ गया था मछली सी छटपटाती पम्मी की तड़प और वह हृदय विदारक चीख—"सौरभ, मुझे बचाओ. मुझे बचा लो सौरभ."

खून के रिश्ते की दुहाई या आत्मा के प्रेम और जन्मजन्मांतर साथ निभाने के वादे कितने खोखले और बेदम होते हैं और जिंदगी में जो चीज अहमियत रखती है, वह महज इनसान की अपनी जान और अपना अहं है. उसे वह सोलह साल की कच्ची उम्र में ही समझ गया था. दीवाली आने पर नई जगह पर नए सिरे से घर बसाने के संघर्ष और पढ़ाई के बोझ तथा नौकरी की व्यस्तता में भी वह पम्मी की तड़प और उस की वह दर्द भरी पुकार आज तक नहीं भूल सका था. फिर अचानक उसे खयाल आया कि इस सब को भूलने का एक ही उपाय है—शादी. और यही सोच कर उस ने रेणु से शादी कर ली थी. पर पहली रात ही रेणु को बांहों में भरते हुए उसे एकाएक याद आया कि पम्मी को बांहों में भर कर उस नर पशु ने किस तरह उस पर अत्याचार किया होगा. पम्मी की याद आते ही उस का सुहाग रात का मायाजाल टूट गया. मगर रेणु के सपने न बिखरें, इसलिए वह वही सब करता रहा जो शायद रेणु ने अपनी सहेलियों से सुना होगा या किस्से कहानियों में पढ़ा होगा.

धीरे धीरे प्यार और सहवास से रेणु उस का दिल जीत लिया था. वह बदनसीब पम्मी को भूल भी गया था पर न जाने क्यों दीवाली के दीए रात कर उस के कान में पम्मी की हृदय विदारक चीख गूंजा देते थे. इस वर्ष दीवाली भारत से बाहर रहने का मतलब दीपकों की रोशनी, चीखों की गूंज से मानसिक संत्रास से बचाव.

जरमनी के फ्रैंकफर्ट नगर में उस मुलाकात सरवर अली से हुई. जिस से वह आया था वह सरवर अली के विषय से ही संबंधित था. इसलिए रोजरोज मिलनेजुलने से दोनों में दोस्ती हो

उस ने एक दिन सरवर अली से ही स्नेह से पूछा, "आप यहां कितने से हैं, अली साहब."

"यही कोई चारपांच बरस हो. नौकरी का दस साल का कांट्रैक्ट है खत्म होने के बाद अमरीका चला जाऊंगा मेरे दोनों बच्चे वहीं पर हैं. यहां आने पहले मैं भी वहीं था, बच्चों ने वहां के के बारे में बातचीत कर रखी है. इस छुट्टियों में जा कर सब तय कर आऊंगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने दांतों की सब तीन प्रकार से पूरी रक्षा के लिए नया कोलगेट ट्राइगार्ड टूथब्रश इस्तेमाल कीजिये

दांतों के डाक्टर कहते हैं कि एक अच्छे टूथब्रश में ये तीन गुण होने चाहिये...

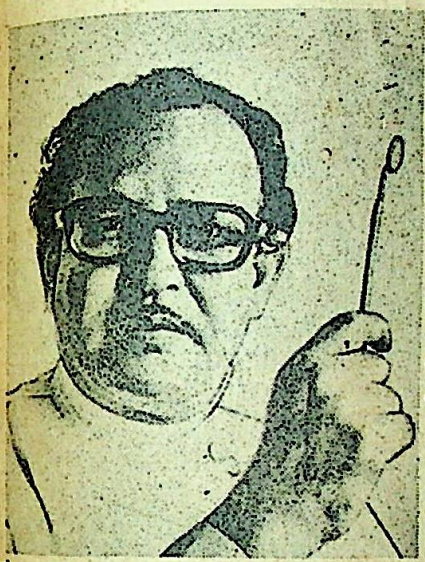

1 दांतों के एनेमल की रक्षा
दंत एनेमल खाद्य अम्ल और कीटाणुओं से आपके दांतों की रक्षा करते हैं। कोलगेट ट्राइगार्ड टूथब्रश बिना नुकसान एनेमल की सतह को साफ करता है।

2 दांतों पर जमी परत से संरक्षण
दांतों पर जमी परत से दंतक्षय व मसूड़ों के रोग हो सकते हैं। कोलगेट ट्राइगार्ड टूथब्रश के सही आकार के नोक दांतों पर जमी परत को पूरी तरह निकालने में मदद करते हैं।

3 मसूड़ों की रक्षा
मसूड़ों को स्वस्थ बनाये रखने के लिए,उनकी सौम्य मालिश की जरूरत पड़ती है। कोलगेट ट्राइगार्ड टूथब्रश के मुलायम नोक आपके मसूड़ों की बिना क्षति मालिश करते है।

कोलगेट
ट्राइगार्ड

आपके दांतों की सब तीन प्रकार से पूरी रक्षा के लिए खास तौर से बनाया गया है

CTB.G.16 HNR

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इन्हें चाहिए

सिंगर सुरक्षा

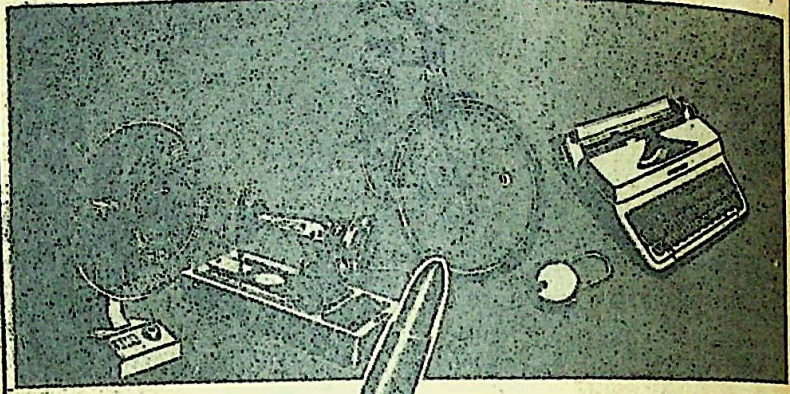

सिंगर ऑयल की हर बूंद में समायी है- सिंगर सुरक्षा। सिंगर ऑल परपज़ ऑयल घरेलू मशीनों का पहरेदार है, क्योंकि यह बना है- विशेष सिंगर फॉर्म्यूले से। घरेलू मशीनों के बिना आवाज़, बिना रोकटोक चलते रहने के लिए जरूरी है- सिंगर ऑयल, जो उनमें मैल नहीं जमने देता, जंग नहीं लगने देता और उनकी उम्र बढ़ाता है।

सिंगर ऑयल के नियमित इस्तेमाल से आपकी घरेलू मशीनें आसानी से चलती हैं।

हमेशा घर में रखें- सिंगर ऑयल।

कई तरह से उपयोगी

हर घर चाहे... हर घरेलू मशीन चाहे... सिंगर सुरक्षा

सिंगर जो पेश करती है वह चीज़ बढ़िया ही होती है

सिंगर सोइंग मशीन कम्पनी
२०७, डी. एन. रोड, बम्बई ४०० ००१.

* सिंगर कम्पनी का ट्रेडमार्क

maa SSM 95 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

"क्यों हिंदुस्तान लौटने का इरादा नहीं है?"

"जिस हिंदुस्तान के टुकड़े में हम लौट सकते हैं, उस का नाम अब पाकिस्तान हो गया है, भाईजान." सरवर एक सूखी सी हंसी हंसा. "खैर, हिंदुस्तान हो या पाकिस्तान, भुखमरी, गरीबी, धर्म के नाम पर इनसानों से नफरत के सिवा वहां है ही क्या?"

"खैर, ऐसी बात तो नहीं है. इन तीसइकतीस सालों में वहां बहुत फर्क पड़ा है."

"पड़ा होगा, यार. हम तो यहीं ठीक हैं. हमारे बचपन के सपनों का लाहौर तो अब रहा नहीं. दूसरे अपनी बेगम यहीं खुश हैं, ने सो जहां बीवीबच्चे खुश वहां बंदा भी खुश."

"आप लाहौर के रहने वाले हैं? हम भी पहले वहीं रहते थे," सौरभ एक आह भर कर बोला.

"अच्छा, कहां पर?"

"डब्बी बाजार में."

"डब्बी बाजार में एक लाला सुंदरदास भी तो रहते थे."

"हां, हां, वह हमारे पड़ोसी थे. क्यों?" सौरभ ने बात काट कर पूछा.

"उन की एक लड़की थी न पम्मी, वही हमारी बेगम साहिबा हैं." सरवर मुसकराया.

"मगर पम्मी को तो एक लुटेरा उठा कर ले गया था." सौरभ का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया.

"हां, वह हमारा ड्राइवर अकबर था. जब वह एक छटपटाती सी गठरी उठाए अपनी कोठरी की तरफ जा रहा था तो हमारे वालिद नींद न आने की वजह से बगीचे में टहल रहे थे. उन्होंने वह गठरी खुलवा कर देखी और पम्मी को घर ले आए."

"सच! अकबर ने एतराज नहीं किया?"

"वालिद साहब उस समय पुलिस

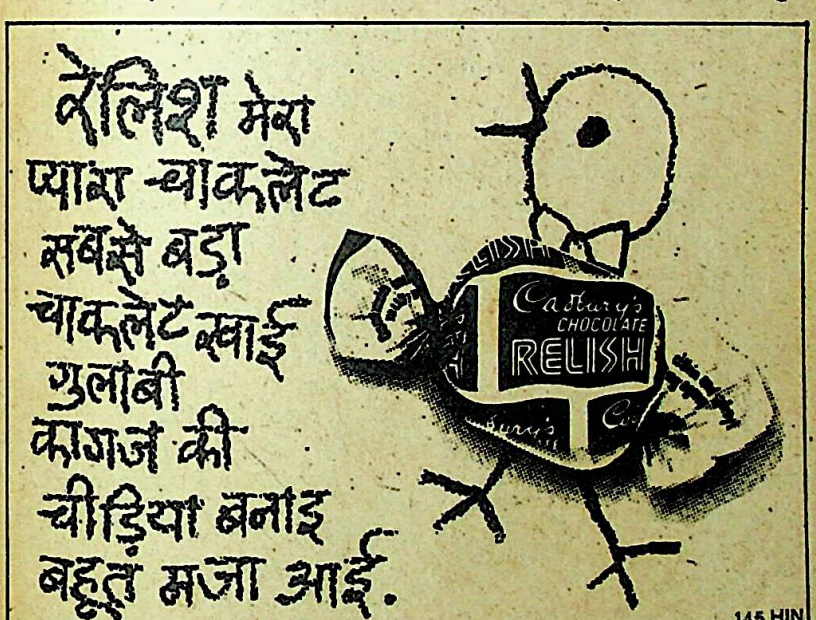

कैडबरिज़ चॉकलेट रैलिश मुँह भर मज़ा!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमिश्नर थे. उन के आगे वह बोलता भी क्या? अगले रोज कुछ हालात सुधरने पर हम पम्मी को ले कर डब्बी बाजार गए, पर वहां अधिकांश घर खाली पड़े थे."

"हां, उस हादसे के बाद सब लोग इतना ज्यादा घबरा गए थे कि अगली सुबह ही वहां से भाग खड़े हुए थे. लेकिन फिर आगे क्या हुआ?"

"पम्मी के दिमाग पर इस घटना का गहरा असर पड़ा. दोतीन महीने के बाद जब हालात सुधरे तो वालिद साहब ने मुझे, पम्मी और मेरे छोटे भाई को चाचाजी के पास इंगलैंड भेज दिया. इस के दोतीन साल बाद हम दोनों ने शादी कर ली. अब पम्मी खुश है या नहीं यह आप उस से मिल कर पूछ लीजिए," सरवर ने जेब से अपना कार्ड निकालते हुए आगे कहा, "आप को यह तो मालूम ही है कि मुझे आज रात यहां देर तक ठहरना है. सो आप इस पते पर जा कर पम्मी से मिल लीजिए. उसे उस के घरवालों की राजीखुशी बता दीजिए. उस का जो दुखसुख है वह सुन लीजिए, मेरे सामने खुल कर शायद वह कोई बात न कर सके."

सरवर की बात से सौरभ असमंजस में पड़ गया. पम्मी के पास जाए या नहीं? जाए तो कौन सा मुंह ले कर? उस की पुकार सुन कर भी वह कुछ न कर सका था. आज सरवर और उस के घर वालों ने उसे जीवन में सब कुछ दिया था. फिर भी वह पम्मी से मिलने का मोह न छोड़ सका.

जब सौरभ सरवर के घर पहुंचा तो पम्मी उसे पहचान न सकी. लेकिन नाम बताने पर वह उसे पहचान गई.

बातचीत आरंभ करते हुए सौरभ ने उस से पूछा, "हां, तो तुम्हारा अब क्या नाम है. यानी कौन बेगम?"

"बेगमवेगम कुछ नहीं, जानपहचान वाले मिसेज अली कहते हैं, दोस्त और घर वाले पम्मी या पैम."

"तो तुम ने अपना नाम नहीं बदला?"

"न नाम न मजहब, वैसे अपना मजहब कोई एक है ही नहीं. यहां के क्रिश्चियन दोस्तों के साथ हम भी क्रिसमस मनाते हैं, मुसलिम लोगों के साथ ईद और हिंदुओं के साथ दीवाली. कल दीवाली है, तुम भी आना. अपने पांचछः हिंदुस्तानी भाई जब कभी एक जगह मिल जाते हैं तो आपस में काफी हंगामा करते हैं."

उस ने पम्मी को बता दिया कि वह किस मानसिक संत्रास में जी रहा है और दीवाली पर उस का वह मजा किस तरह अंसहनीय हो उठता है.

पम्मी समझाते हुए बोली, "पर अब तो तुम ने मुझे देख लिया है न कि मैं कितनी खुशहाल हूं? मुझे किसी से कोई गिलाशिकवा या रंजिश नहीं है. उस वक्त अकबर के गिरोह से मुझे बचाना एक तरह खुदकुशी करना ही था. लोग मर कर जन्म लेते हैं. हम ने एक ही जन्म में दोदो जिंदगियों का मजा देख लिया. शुरूशुरू में कई बार यह सोच कर सिहरन होती थी कि अगर अकबर की कोठरी में घुसने से पहले अब्बा हमें न देखते तो क्या होता, या यह सब लोग कब तक मेरा बोझ उठाएंगे. पर जब मुझे पता चला कि मेरी शादी सरवर से हो जाएगी तो सब ठीक हो गया.

"सीधी बात यह है, सौरभ, कि जिंदगी आज का नाम है, गुजरे कल या आने वाले कल का नहीं. तुम जब पास नहीं रहे तो तुम्हारी याद कर दिल जलाने में या तुम्हारी आस में बैठे रहने में कोई तुक नहीं था."

"अब तो सब को पता चल जाएगा. लखनऊ मिलने जाना चाहोगी?"

"हां, सौरभ, उन्हें तसल्ली देने को कि जिन से हम नफरत करते हैं उन लोगों में भी फरिश्ते बसते हैं. जिन्होंने मेरी अस्मत ही नहीं बचाई, मुझे नई जिंदगी भी दी. खैर, छोड़ो पुरानी बातें. बोलो, कल दीवाली मनाने आ रहे हो न?"

"हां, पम्मी," उसे लगा कि कल इकतीस बरस बाद वह दीवाली मनाएगा. पम्मी की आंखों की चमक से उस के लिए दीवाली के दीप फिर जल उठेंगे. ●

सरिता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताज़गी महसूस कीजिये सुबूत अपनी आँखों से देखिये

पानी से भरी तश्तरी में थोड़ा सा कोयले का चूरा छिड़किये। अब थोड़ा सा बिनाका टॉप पानी में मिला लीजिये और इस घोल की एक बूँद तश्तरी के बीचों-बीच टपकाइये। अब देखिये बिनाका टॉप कितनी तेज़ी से चारों तरफ फैलता है.... मैल को दूर करता है और पानी की सतह को बिल्कुल साफ़ कर देता है।

बिल्कुल इसी तरह बिनाका टॉप का विशेष फैलने वाला तत्व आपके मुँह के हर कोने में फैल कर दातों में सड़न पैदा करनेवाले कीटाणुओं का नाश करता है और साँस की-दुर्गन्ध को रोकता है। बिनाका टॉप आपके मुँह की पूरी रक्षा करते हुए उसे ताज़गी से भर देता है।

सिंवा-गायत्री

ARMS-CBT-1-78-HN

मुँह की पूरी रक्षा के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खांसी खामोश

आ गया
भरोसे का इलाज
नये लिबास में आज

ग्लायकोडिन खांसी की कोई मामूली दवा नहीं है. यह भारत में खांसी का इलाज करने में सबसे आगे है.

ग्लायकोडिन खांसी पैदा करनेवाले सभी चारों केंद्रों पर असर करता है:

- दिमाग में खांसने की इच्छा को यह काबू में करता है.
- गले की खराश से राहत दिलाता है.
- फेफड़ों में बलगम के जमाव को कम करता है और उस बाहर निकालता है.
- खांसी के कारण छाती में होने वाले दर्द से राहत दिलाता है.

ग्लायकोडिन हर तरह की पीड़ादायक खांसी का भरोसेमंद इलाज है. यह खांसी से राहत दिलाता है, आपको सांस लेने में आसानी होती है और चैन की नींद आती है.

Alembic एलेम्बिक—जिनकी दवाओं पर डॉक्टरों को भरोसा है.

ग्लायकोडिन खांसी खामोश करने में भारत में सबसे आगे.

everest/78/ACW/2356

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आस्था की डगर

कहानी

•

सत्यकुमार

अनजाने ही एक बीज नीरू और रामू के मन में आ गिरा था और समय के साथसाथ अंकुरित भी होने लगा. तभी तो नीरू अपनी राह स्वयं चुनने की हिम्मत दिखा सकी...

दीपावली की रात ने घड़ाघड़ छूटते पटाखों, सितारे छिटकाती फुलझड़ियों और झिल-मिल करते दीयों की कतारों में अमावस के घोर अंधकार को उसी प्रकार छिपा लिया था, जैसे धरती गगन को चुनौती दे कर चांदतारों को अपने आंचल में समेट लेती है. नगरों, कसबों और गांवों के गली-कूचों में बच्चे आसमान के तारों सदृश अनार के दाने बिखेरते हुए खुशी में झूम रहे थे.

जिस बम को चलाने में दूसरे बच्चे डरते थे, वही साहस और निर्भीकता की मूर्ति बालक रामू की सहज क्रीड़ा बन जाता था. वह हवाई चलाने के लिए बोतल नहीं खोजता था. डंडी हाथ में पकड़ी और मोमबत्ती की लौ से पलीता छुआ दिया. घर वाले डांटते, शुभचिंतक चेतावनी देते, पर वह ध्यान ही न देता. चकरी चलाता और फिर ठोकरों से उसे लट्टू की तरह घुमाता रहता. फुल-झड़ियां जला कर दोनों हाथों से ले लेता और फिर एक कुशल कलाबाज की तरह उन्हें ऊपर उछाल कर लपकता रहता. बच्चे दांतों तले उंगली दबाए उस के करतब देखते रहते.

छोटे बच्चे बड़े-बड़े पटाखे खरीद लाते, पर चलाने के नाम पर रामू दादा को याद करते. उस रात पूरे महल्ले में रामू दादा की

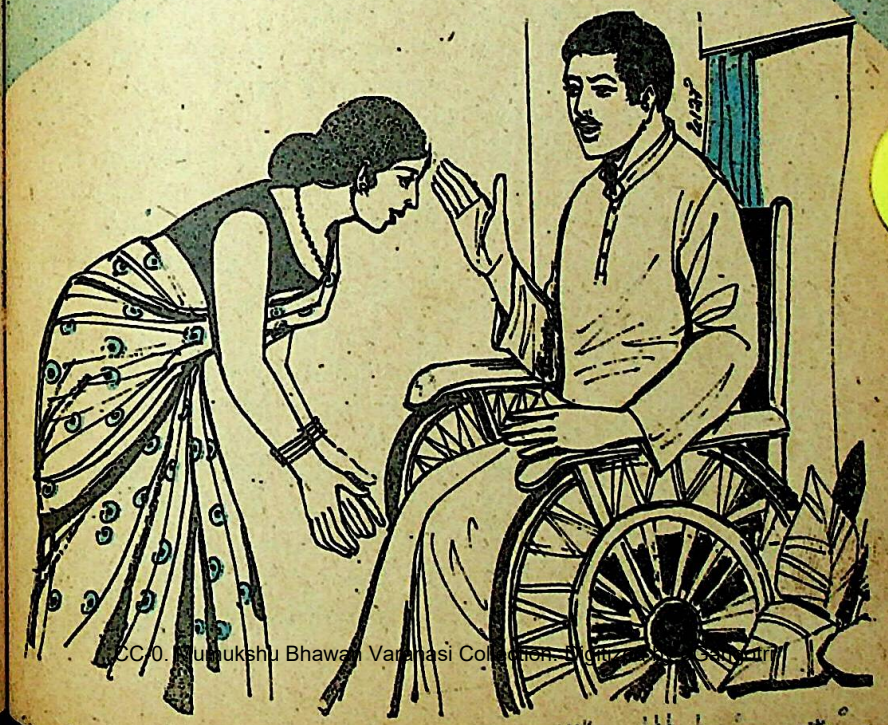

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुहार लगती. "रामू दादा, यह राकेट चला दो. रामू दादा, यह रेल. रामू दादा, यह चिड़िया. रामू दादा, यह एटमबम." मां लक्ष्मी पूजन के लिए उस की प्रतीक्षा कर रही होती, पर रामू को अवकाश कहां.

दस बरस की नीरू अपने मामा के घर आई थी. मामा के दो लड़के थे. दोनों पटाखे चलाने में डरपोक पर खरीद कर जरूर लाते.

नीरू ने पटाखे देख कर पूछा, "तुम्हें डर नहीं लगता?"

आठ साल के राजू ने कहा, "रामू दादा से चलवाएंगे."

नीरू ने पूछा, "कौन रामू दादा?"

राजू ने बताया, "अपने ही महल्ले में रहता है, मुंशी लालताप्रसाद का लड़का. उस से बड़ा पटाखेबाज महल्ले में क्या, पूरे शहर में नहीं होगा."

नीरू ने पूछा, "क्या करता है? कुछ कामधंधा नहीं करता?"

राजू ने खिलखिला कर हंसते हुए कहा, "पढ़ता है सातवीं कक्षा में."

"राजू से एक साल ही तो बड़ा है."

गोरे रंग का चुस्त, दुरुस्त रामू निकर कमीज पहने शाम को आता. महल्ले के अनेक लड़के उसे दादा, रामू दा करते अपने घर ले जाने की जिद करते. सब को अपनेअपने पटाखे छुड़वाने की जल्दी पड़ी होती थी. रामू मुसकरा कर गंभीरता से कहता, "अभी चलते हैं. सारी रात पड़ी है, जल्दी क्या है?"

राजू ने रामू के हाथ में हवाई बम पकड़ा दिया था. नखशिख तक उसे निहार कर, मोमबत्ती के पास खड़े छोटे बच्चों को एक ओर कर के रामू डंडी को कस कर पलीते को लौ तक ले गया. तभी नीरू पीछे से अकस्मात उस का हाथ पकड़ कर चिल्लाई, "पागल हुए हो? इसे ऐसे नहीं चलाते हैं."

हाथ हिलने से बम का कोण बदल गया. घर के बरामदे की ओर हो गया. मोमबत्ती झटके से बुझ गई, पर पलीते ने आग पकड़ ली. वह राकेट की तरह उड़ कर घर के बरामदे या कमरे में जा कर विस्फोट करता, इस से पहले ही रामू ने डंडी छोड़ कर उंगलियों से पलीते को मसल दिया.

बच्चे आश्चर्यचकित खड़े थे. "बाप रे! जलते गरम पलीते को हाथ से मसल दिया! कहीं उंगलियां में फट पड़ता तो?"

रामू जल्दीजल्दी उंगलियों को आपस में और अंगूठे से मसल रहा था. नीरू परिस्थिति की भयंकरता से घबरा गई थी. आवेश में उस ने क्या कर दिया था? उंगलियों के खरपच्चे उड़ जाते तो? सीधा हाथ था! उस ने लपक कर रामू का हाथ अपने हाथ में ले लिया और फिर सहज बाल स्वभाव से उंगलियों को मुंह में ले कर उन पर जीभ फेरने लगी.

रामू ने उस की ओर देखा. आंखें डबडबा आईं. गालों पर ओस कणों की तरह अश्रु ढुलक आए. बाएं हाथ से उस के आंसू पोंछता हुआ वह बोला, "पगली, कुछ भी तो नहीं हुआ."

बच्चे सहम गए थे. पता नहीं, रामू दादा अब हमारे पटाखे चलाएंगे या नहीं? तभी रामू ने राजू, केवल को पुकार कर कहा, "लाओ भई, और क्याक्या माल ला रखा है?" सुन कर बच्चों में खुशी की लहर दौड़ गई थी.

पूत के पांव पालने में ही दीख गए थे. बी. ए. पास कर के रामू डिफेंस अकेडमी की परीक्षा में पहली बार में ही चुन लिया गया. ट्रेनिंग कर के वह सेना में सैकंड लेफ्टिनेंट बन गया. शादी के रिश्ते आने लगे. जब भी रामू छुट्टियों में घर आता, मुंशीजी लड़कियों के फोटो और अन्य विस्तृत विवरण की फाइल उस के सम्मुख रख देते.

बहुत दिनों तक वह टालता रहा. दुर्बल रोगग्रस्त मां ने उलाहना दिया, "मेरे मरने के बाद ही बहू लाएगा जिस से उसे बुढ़िया की सेवा न करनी पड़े." तब रामू न नहीं कर सका.

नीरू के मामा महल्ले में ही रहते थे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वास्तिक शिकाकाई सौन्दर्य साबुन–बालों के लिए

नया रैपर! नया आकार! नयी सुगन्ध!

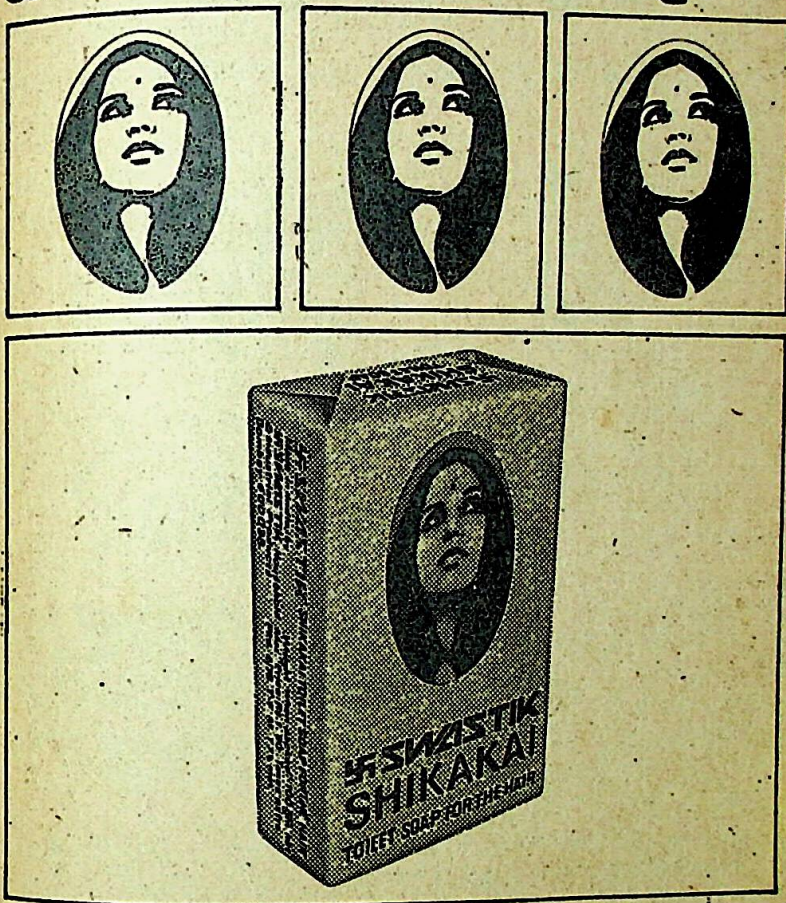

बालों को रेशमी कोमलता प्रदान करने का प्राकृतिक उपाय

Shilpi-dm-18/78 Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नियमित रूप से थोड़ी-थोड़ी बचत कीजिये—और
तब वह हर चीज़ आपकी होगी,
जिसका आप हमेशा सपना देखते हैं।

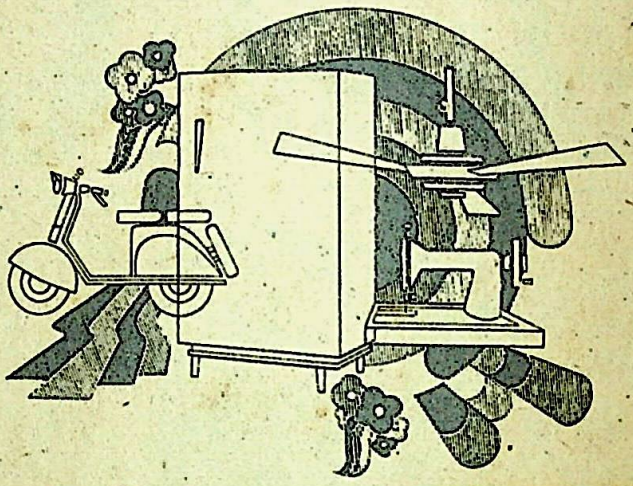

इलाहाबाद बैंक की रेकरिंग डिपॉजिट योजना
आपके सपनों को सच करती है।

इस योजना की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें आप खुद तय करते हैं कि हर माह आपको कितना जमा करना है। कम से कम १० रुपये से लेकर अधिक से अधिक १,००० रुपये तक—१ से १० वर्ष तक की अवधि के लिये।

इस प्रकार आप बगैर किसी परेशानी के आसानी से बचत कर सकते हैं। और अन्त में जो आपको वापस मिलेगा, वह आपके जमा किये हुए पैसों से ५०%···या शायद उससे भी ज्यादा हो सकता है। तब आप बड़े आराम से वह सब कुछ खरीद सकेंगे, जिसका आप हमेशा सपना देखते हैं।

अधिक जानकारी के लिये अपने करीब के इलाहाबाद बैंक की किसी भी शाखा में पधारिये।

इलाहाबाद बैंक
आपका अपना बैंक
(भारत सरकार की एक संस्था)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीरू भी अब बी. ए. बी. एड. कर के दिल्ली के एक स्कूल में अध्यापिका हो गई थी. उस के पिता ने भी अपने साले को लिख रखा था. रामू उन का देखाभाला था. तीसरेचौथे दिन आ कर वह भी नीरू के मामले की पैरवी कर जाते.

रामू के मातापिता ने भी नीरू को देख रखा था. दोतीन साल बाद उस का ननिहाल में एक चक्कर लग जाता था. लड़की सुंदर, सुशील, समझदार और गृह-कार्य में निपुण थी. रामू ने तो उसे बारह साल पहले देखा था. धुंधली सी छवि. एक भयातुर हिरणी सी, जिस की बड़ीबड़ी आंखों से आंसू झर रहे थे.

दहेज का प्रश्न ही नहीं था. मुंशीजी अच्छे खातेपीते संपन्न व्यक्ति थे. रामू से बड़ी एक लड़की थी. उस की शादी वह पहले ही कर चुके थे. नीरू का परिवार भी गयागुजरा नहीं था. उस के पिता किसी मंत्रालय में डिप्टी सेक्रेटरी थे. बड़ी बहन की शादी एक डाक्टर से हुई थी, जो कई बार विदेश हो आया था.

मुंशीजी ने मसला मांबेटे पर छोड़ दिया था. मां को नीरू पसंद थी. किसी दूसरी लड़की को पल दो पल में क्या देखापरखा जा सकता है? रामू ने सैनिक की सी स्पष्टवादिता से कहा, "लड़की से भी पूछ लो, मैं उसे पसंद भी हूं? जिस का एक पैर सदा कब्र में लटका हुआ हो, क्या वह उसे पसंद करेगी? हम तो सिर हथेली पर लिए घूमते हैं."

मां ने उस के मुंह पर हाथ रख दिया. झिड़का, "कैसी बात करता है? ऐसा नहीं कहते."

मामा ने अपने बहनोई को चिट्ठी लिख दी. मामी ने राजू से नीरू को चिट्ठी लिखवा कर उस की राय मांगी. नीरू को तो पता नहीं क्यों, पहली बार ही जब वह केवल दस बरस की थी, तभी रामू पसंद आ गया था. उस समय विवाह के दृष्टिकोण से सोचने का तो सवाल ही नहीं उठता था. पर अनजान वायु से उड़ कर कोई बीज

ये पत्नियां

मेरे एक मित्र महोदय को भूलने की आदत थी. इस आदत से उन की पत्नी बेहद परेशान रहती थी. एक दिन उन की पत्नी ने मित्र महोदय से पाउडर का डब्बा लाने को कहा. इस बात को चारपांच दिन बीत गए, लेकिन पाउडर का डब्बा नहीं आया. वह जब भी पूछती तो जवाब मिलता, "आज भूल गया कल जरूर लेता आऊंगा." मित्र महोदय रोज दोपहर को खाना खाने दफ्तर से घर जाया करते थे.

एक दिन जैसे ही मित्र महोदय दोपहर को खाना खाने घर पहुंचे तो उन की पत्नी ने कहा, "मैं तो आज खाना बनाना ही भूल गई." वह बिना भोजन किए ही आफिस चले गए. लेकिन शाम को जब घर पहुंचे तो उन के हाथ में पाउडर का डिब्बा था. —सज्जनसिंह

✦

एक बार मेरे मित्र को नौकरी में तरक्की मिली और वह इस खुशी में अपनी पत्नी को फिल्म दिखाने ले गया.

फिल्म देखने के बाद, वापस घर आते वक्त उस ने पत्नी से पूछा, "कहो, कैसी लगी फिल्म?"

उस की पत्नी मुंह बनाती हुई बोली, "फिल्म तो अच्छी थी, पर आज पंदरह रुपए खर्च करने के बजाए उस में और पांच रुपए डाल कर पूरे 20 रुपए अपने पोस्ट आफिस के बचत बैंक में जमा करवा देते तो हमारे नाम पूरे 2000 रुपए जमा हो जाते."

यह जवाब सुन कर मेरा मित्र पत्नी का चेहरा ही ताकता रह गया.

—अनंत म. देवतके ●

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुरक्षित स्थान पर आ पड़ा था. बाद में दोनों की फिर कभी भेंट नहीं हुई. नीरू मामा के घर कई बार गई, पर रामू कभी विश्वविद्यालय गया होता या फिर सेना की ट्रेनिंग में. बीज अंकुरित नहीं हो पाया. अब जैसे उसे जल, धूप, वायु, खाद आदि सभी पोषक तत्त्व एक साथ मिल गए. उस ने घुमाफिरा कर, गोलमोल स्वीकृति लिख भेजी, "जैसी आप लोगों की इच्छा."

होली पर जब रामू छुट्टियों में घर आया तो मंगनी हो गई. दीवाली के समय वह लंबी छुट्टी पर आने वाला था. तभी किसी शुभ मुहूर्त में विवाह की बात पक्की हो गई.

दोनों पक्षों ने शादी की तैयारी शुरू कर दी. रामू के सपने भी रंगीन होने लगे. क्या नीरू अब भी पटाखों से डरती होगी? किसी दीवाली पर उस के जूड़े में जलती हुई फुलझड़ी लगा दूंगा. नाचती फिरेगी.

नीरू की सहेलियों ने भी चुटकियां लेनी शुरू कर दीं. वसुधा तो उसे फौजी सलाम करती, कहती, "डाक्टर की पत्नी डाक्टरनी, मास्टर की पत्नी मास्टरनी, पंडित की पत्नी पंडितानी तो फिर सैकंड लेफ्टिनेंट की पत्नी सैकंड लेफ्टिनेंटानी."

रणभेरी बज उठी. बंगला देश में घमासान युद्ध प्रारंभ हो गया. बंगवासी अपनी मुक्ति के लिए पाकिस्तानी सेना से जूझ गए. भारत ने भी अपनी सेना को सहायता के लिए भेजा. रामू की टुकड़ी भी मोर्चे पर जा डटी.

अग्रिम दस्ते में होने के कारण रामू अपने अधीनस्थ तीस जवानों के साथ एक स्थान पर शत्रुओं से घिर गया. वायरलेस से संदेश आ गया था. दस मिनट में कुमुक पहुंचने वाली थी, पर दस मिनट तक दुश्मन से मोर्चा लिए रहना जीवट का काम था.

रामू स्वयं हथगोलों का थैला कमर में लटका कर मशीन की तरह काम कर रहा था. वह एक हाथ से थैले से हथगोला निकालता था, मुंह से उस का 'पिन' खोलता था और दूसरे हाथ से शत्रु पर फेंक देता था. वह यह सब काम इतनी फुरती से कर रहा था कि लगता था जैसे कोई यंत्र चल रहा हो.

कुमुक पहुंचने में दो मिनट शेष रह गए थे और सामने के शत्रुदल का लगभग सफाया हो गया था. रामू शत्रु की टोह लेने को बाएंदाएं. गरदन घुमा रहा था कि उस की बाईं टांग में पीछे से आ कर एक गोली लगी. वह घूमा और दूसरे ही क्षण पीछे से वार करने वाला शत्रु ढेर हो गया था. रामू ने फिर भी सावधानी के तौर पर एक और हथगोला उसी दिशा में फेंक दिया.

भारतीय जीपों की ध्वनि निकट आ गई थी. रामू से अब खड़ा नहीं रहा जा रहा था. हथगोलों का थैला एक ओर सरका कर वह निढाल पड़ गया.

उसे जब होश आया, तब वह हस्पताल में था. नर्स को देखते ही उसे नीरू का ध्यान आया. उस ने स्मरणशक्ति पर जोर दिया. उसे ध्यान आया, वह घायल हो गया था.

तभी मेजर ने हस्पताल के कमरे में प्रवेश कर उसे बधाई देते हुए कहा, "भारतीय सेना को उस पर गर्व है. उस की प्रशस्ति हैडक्वार्टर को भेजी जा चुकी है. अपूर्व शौर्य प्रदर्शित करने के उपलक्ष्य में उसे कोई न कोई चक्र अवश्य मिलेगा."

मेजर इस बात को अच्छी तरह समझा रहा था कि उस की टुकड़ी यदि मोरचा नहीं लेती तो शत्रु पास की नदी के पुल को उड़ा देता और फिर कुमुक पहुंचने का तो सवाल ही नहीं उठता. तब नदी को पार करने में भारतीय सेना को बहुत कठिनाई होती. विलंब होने से युद्ध का पासा ही पलट सकता था.

दिन भर उसे बधाई संदेश मिलते रहे. साथी लोग आआ कर उत्साहपूर्वक करते रहे. उस पर विजय का, गर्व का उन्माद छा गया था. रात को उसे पता चला कि घाव सड़ जाने के कारण उस की टांग काट दी गई है वरना सारे शरीर में जहर फैल जाता.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालों को स्वस्थ, घना और चमकदार बनाने के लिये

स्वस्तिक

परफ़्यूम्ड कैस्टर हेअर ऑइल

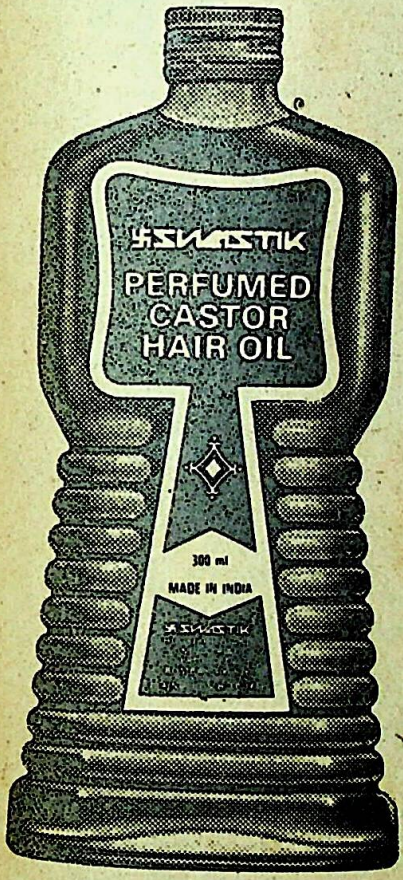

सुन्दर बालों को दिनभर सजा-सँवारा रखने के लिये स्वस्तिक परफ़्यूम्ड कैस्टर हेअर ऑइल जिसे आपके परिवार में सभी पसन्द करेंगे.

स्वस्तिक

हाउसहोल्ड एंड इन्डस्ट्रियल प्रॉडक्ट्स, बम्बई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस रात नींद की गोली दिए जाने पर भी उसे नींद नहीं आई. उसे लग रहा था कि जिंदगी के गुब्बारे में जैसे किसी ने पिन चुभो दी थी. फिर यह कंटकाकीर्ण पथ तो उस ने स्वयं चुना था. सैनिक की नियति तो यही होती है, उसे फूलों की शैया तो मरणोपरांत ही मिलती है.

घर पहुंचा तो बधाई के तारों का ढेर लगा था. स्थानीय समाचारपत्रों ने उस के शौर्य की भूरिभूरि प्रशंसा की थी. महल्ले वालों ने, गणमान्य नागरिकों ने उसे फूलों से लाद दिया. मुंशीजी ने रामू को कलेजे से लगा लिया. मां ने पुत्र का सिर छाती में छिपा लिया.

उन्हें दुख था कि बेटे की टांग जाती रही, पर प्रसन्नता थी कि जानतो बच गई. संकट के उन क्षणों में कुछ भी हो सकता था. घर पहुंच कर रामू जैसे भूल ही गया था कि वह लंगड़ा हो चुका है. प्रतिदिन उसे जो इतने पत्र आते कि सारा दिन यों ही निकल जाता. आनेजाने वालों का भी तांता लगा रहता. विभिन्न स्रोतों ने उस के सामने नौकरी की पेशकश की थी. रेडक्रास से कृत्रिम टांग की व्यवस्था हो रही थी. अपने ही नगर में रसोई की. गैस की एजेंसी बिना मांगे मिल रही थी. कृत्रिम टांग बन जाने पर क्या अंतर रह जाएगा? कौन कह सकेगा कि वह लंगड़ा है? कम से कम यह बैसाखी की खटखट की आवाज में उस की वीरता और त्याग की गाथा तो दोहरा ही देती है. उस का स्वास्थ्य पहले से भी अच्छा हो गया है. मां के पास कितने दिनों बाद इतने दिन तक रहने को मिला है.

पर उसे अपने लंगड़ेपन का बोध उस दिन हुआ जब दिल्ली से नीरू के पिता का उस के पिता के नाम रिश्ता तोड़ लेने से संबंधित एक पत्र मिला. परिवर्तित परिस्थितियों में यह संबंध उन्हें स्वीकार्य नहीं था. मुंशीजी को बहुत गुस्सा आया. मीठामीठा हप्प, कड़वाकड़वा थू. बेटे का मनोबल गिरे नहीं, इसलिए वह बोले कुछ नहीं. केवल ऊपरी तौर पर उन्होंने कहा, "मेरे बेटे के लिए हजारहजार रिश्ते आएंगे."

मां का हृदय कचोट उठा. उन का मन रखने को ही रामू ने शादी करने की हामी भरी थी. अब उन्हें बेटे के रिश्ते के लिए भागदौड़ करनी पड़ेगी. अब तक वह निश्चिंत थी कि दीवाली के बाद नीरू आ कर रामू को संभाल लेगी. वह विवाह की प्रसन्नता में अपनी टांग के जाने का गम भूल जाएगा. पर यह तो जले पर नमक छिड़कने जैसी बात हुई.

रामू ने प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की. पर टांग का टूटना उस ने इतना महसूस नहीं किया था जितना दिल का. दिल के परदे पर सालों पहले खिंची नीरू की छवि पूरी तरह से छा गई थी. वह उसे किस प्रकार भुला सकेगा?

मां ने और मुंशीजी ने नीरू के मामा-मामी से बात की. मामा महल्ले में ही रहते थे और जबतब रामू का हाल पूछने आते रहते थे. उन को भी उसी दिन सूचना मिली थी और वह इन लोगों को अपना मुंह दिखाने के काबिल नहीं समझ रहे थे. उन्होंने तो साफ शब्दों में इसे अपने बहन-बहनोई की नीचता कहा. मंगनी हो चुकी थी. शादी की तैयारी हो रही थी. रिश्ते में अब कमी ही क्या रह गई थी? पर मौके पर रामू को अपंग जान कर नीरू के मातापिता किनारा कर गए.

रामू के घर शादी की तैयारियां ठप

सुबह होते ही...

सुबह होते ही फिजाओं में नए सुर बिखरे
आज हर डाल पे आजाद परिंदे चहके
फूल हंसहंस के लुटाते हैं मुहब्बत अपनी
मेरी धरती मेरे आकाश के आंगन महके.

—इब्राहीम 'अश्क'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो गईं. मां के चेहरे पर उदासीनता की छाप स्पष्ट दीख रही थी. मुंशीजी ने शादी की पुरानी फाइल निकाल कर पलटनी शुरू कर दी थी. रामू ब्राउनिंग की कविता की एक पंक्ति गुनगुनाता रहता था, "मैं सदा सैनिक रहा हूं, एक युद्ध और."

दीवाली आतेआते घर में मनहूसियत छाने लगी. मुंशीजी ने पुताईरंगाई, वार्निश आदि का कार्यक्रम स्थगित कर दिया. महल्ले में चारों ओर गहमागहमी होने लगी.

दीवाली की वह शाम उत्साहहीन सी लग रही थी. अपूर्व उत्साह से दीवाली मनाने वाला रामू पहिएदार कुरसी पर उदास बैठा था. मां बरतन धो रही थी. मुंशीजी बाजार से मिठाई लेने गए हुए थे.

द्वार पर एक रिक्शा रुका. कोई अगवानी को नहीं बढ़ा. किसी की प्रतीक्षा थी ही नहीं. लड़की ने पल्लू ठीक किया और सहमतेसहमते घर के प्रांगण की ओर बढ़ी. बाहर के बरामदे में पहिएदार कुरसी पर बैठा रामू आंखें फाड़फाड़ कर देखने के बाद भी सांझ के झुपपुटे में उस लड़की को पहचान नहीं पा रहा था.

जब वह पास आ कर उस के चरण-स्पर्श को झुकी तो रामू को जैसे बिजली का झटका लगा, "कौन, नीरू!"

उस के स्वीकारात्मक सिर हिलाते ही रामू बच्चों की तरह चीख पड़ा, "मां, जल्दी आओ, देखो, कौन आया है."

मां की समझ में नहीं आया कि सदा शांत रहने वाला रामू कैसे एकाएक चौंखला गया. वह आंचल से हाथ पोंछती बाहर आईं तो गुमसुम खड़ी लड़की को देख कर हतप्रभ रह गईं.

रामू ने चहक कर कहा, "मां, पहचाना नहीं? यह नीरू है, नीरू."

मां भी आश्चर्यचकित रह गईं. बोलीं, "तुम अकेली आई हो? और कोई नहीं आया?"

नीरू ने साहस बटोर कर कहा, "मैं तो सदासदा के लिए आ गई हूं, मां. और किसी की आवश्यकता भी क्या थी?"

मां ने आगे बढ़ कर नीरू को गले से लगा लिया और उन की आंखों में खुशी के आंसू झलक आए.

तभी मुंशीजी मिठाई की टोकरी लिए घर आए. उन के साथ नीरू के मामा भी आए थे. मामा रास्ते में मिल गए थे और उन से मुंशीजी को पता चल गया था कि नीरू घर से झगड़ कर अकेली भाग कर चली आई है. उस का कहना है कि टांग या शरीर का अन्य कोई अंग तो शादी के बाद भी क्षतिग्रस्त हो सकता है. बात जहां हो गई, वहां हो गई. घर वाले नहीं माने तो वह बिना बताए स्कूल से ही स्टेशन पहुंच गई और टिकट ले कर यहां आ गई. एक भी कपड़ा या कोई अन्य सामान साथ नहीं लाई. लड़की बहुत ही साहसी है.

मुंशीजी के पांव तभी से जमीन पर नहीं पड़ रहे थे. आधा किलो की जगह उन्होंने पांच किलो मिठाई ली और लपकतेझपकते घर पहुंचे. घर के द्वार पर पहुंचते ही गुहार लगाई,

"खड़ीखड़ी शक्ल क्या देख रही हो? लक्ष्मी स्वयं घर आई है, वह भी ठीक दीवाली के दिन. दीपक जलाओ, आरती उतारो." फिर मिठाई की टोकरी बढ़ाते हुए बोले, "बहू का मुंह मीठा कराओ, फिर हम सब का."

थोड़ी देर बाद हवेली के प्रांगण में बच्चों का अखाड़ा जम गया था. रामू एक से एक भयंकर बम, राकेट, पटाखे कुरसी पर बैठाबैठा छोड़ रहा था. अब उस के चेहरे पर किसी तरह की उदासी न थी. अब उसे कोई डर नहीं था. अब वह किसी भी युद्ध में लड़ सकता था. अब उसे नीरू मिल गई थी. अब जैसे उसे बैसाखी की आवश्यकता नहीं रह गई थी. उस के मन में उमंग थी, सैकड़ों अनारों, हजारों फुलझड़ियों के फूल झर रहे थे.

रामू के घर आज भी सब लोग नीरू को लक्ष्मी के नाम से ही पुकारते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफ़ेदी ऐसी चकाचौंध
कि
जो भी देखे, वो बोले...

यह है
डेट
डिटर्जेण्ट
टिकिया की
धुलाई

Shilpi DM 35A/78 Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया

लाजवाब

कैम्लिन

पिस्टन पेन्स

न वक्त की बरबादी और न ही स्याही मे गंदे होने की परेशानी. कैम्लिन पिस्टन पेन की कारीगरी ही ऐसी बेमिसाल है. इसे भरकर देखिए...फर्क खुद ही मालूम हो जाएगा.

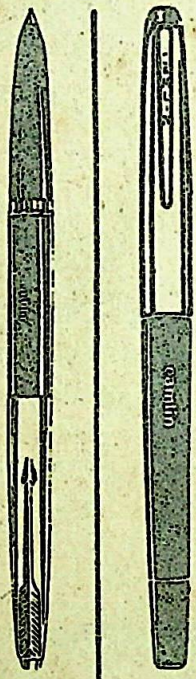

स्याही भरना— बहुत ही आसान! पिस्टन को नीचे दबाइये और पेन को स्याही में डुबोकर पिस्टन ऊपर खींच लीजिए. देखा, भर गयी न स्याही!

इन्जेक्शन पिस्टन पेन ४८

घड़ी की सुइयों के चलने की विपरित दिशा में घुमाइये— हवा बाहर निकल घड़ी की सुइयों के चलने की दिशा में घुमाइये— स्याही उपर तक भर जायेगी.

पिस्टन फिलिंग पेन ४७

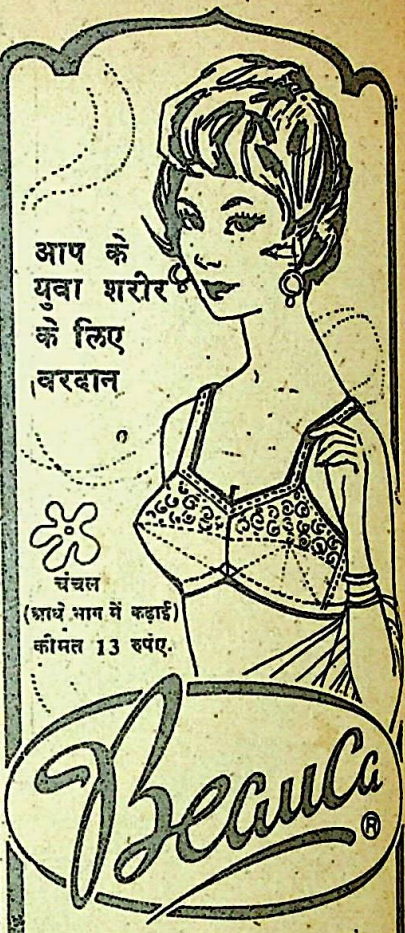

आप के युवा शरीर के लिए वरदान

चंचल

(आधे भाग में कढ़ाई)

कीमत 13 रुपए.

Beauca®

युवा वक्षस्थल को सही रूप देने वाली इस नई ब्रा जैसी और कोई ब्रा नहीं. विशेष प्रकार की कटोरियां (कप्स) दोनों वक्षों को अलगअलग व्यक्तित्व प्रदान करती हैं. अंदर छिपी हुई पट्टी नीचे से आधार का काम करती है. इस से व्यक्तित्व में पूरी तरह निखार आ जाता है.

मुफ्त सूचीपत्र के लिए लिखिए.
वी.पी.पी. द्वारा भी माल भेजा जाता है.
डाकखर्च अतिरिक्त.
पांच रुपए की राशि अग्रिम जमा करवाने पर आर्डर स्वीकार किए जाते हैं.

ब्यूका फाउंडेशन इन्क. (रजि.)
पोस्ट बाक्स नं. 1869,
बंबई- 400001.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठकों की समस्याएं

मेरी शादी छः साल पहले हुई थी. हम पतिपत्नी में काफी प्रेम था. तब वह डाक्टरी पढ़ रहे थे. वह अपने पांच भाइयों में सब से बड़े हैं. दो छोटी बहनें भी हैं. एक दो बार एम. बी. बी. एस. में फेल होने के बाद पिताजी ने खर्चा देने से इनकार कर दिया और उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ी. वह खर्चे के डर से मुझे भी ससुराल नहीं बुलाते हैं. मैं अपने मांबाप के घर में ही रहती हूं. मेरे पति ने निरादर होने के कारण यहां आना भी छोड़ दिया है. मैं मांबाप को भी कुछ नहीं कह सकती हूं. कृपया कोई उपाय सुझाएं, जिस से मैं अपनी ससुराल जा सकूं और अपने पति का प्यार पा सकूं.

—इंदु पांडेय

घर में खाने वाले अधिक हों और कमाने वाला एक ही हो तो अकसर ऐसी परिस्थितियां पैदा हो जाती हैं. इन सब परेशानियों का यही समाधान है कि आप के पति को नौकरी ढूंढ़ लेनी चाहिए. इस से एक ओर उन में आत्मविश्वास पैदा होगा और दूसरी ओर इतने बड़े परिवार का बोझ भी हलका होगा. इस के अतिरिक्त आप को भी अपने परिवार की सहायता के लिए कुछ काम करना शुरू कर देना चाहिए. काम करने में कोई बुराई नहीं है. इस तरह से आप अपनी ससुराल वालों की सहायता कर उन का दिल जीत सकती हैं. घर में यदि सब एकदूसरे का बोझ बांट लेंगे तो आप के घर में शांति का वातावरण बनेगा और आप के पारिवारिक संबंध भी सुधर सकेंगे.

✦

मैं विमान परिचारिका बनना चाहती हूं. कृपया यह बताएं कि मुझे इस का प्रास्पेक्टस किस पते पर मिलेगा और इस की ट्रेनिंग के विषय में भी बतलाएं.

—माधवी श्रीवास्तव

विमान परिचारिका पद के लिए समयसमय पर समाचारपत्रों में एयर इंडिया और इंडियन एयरलाइंस की तरफ से विज्ञापन प्रकाशित किए जाते हैं. इस संबंध में एयर इंडिया बिल्डिंग, प्वाइंट, बंबई-21 और एयरलाइंस हाउस, 113 गुरुद्वारा रकाबगंज रोड, नई दिल्ली के जनसंपर्क अधिकारी से पत्रव्यवहार कर के पूछताछ कर सकती हैं.

एयर हास्टेस बनने के लिए आकर्षक व्यक्तित्व, अंगरेज़ी में बातचीत करने की योग्यता और अविवाहित होना अनिवार्य है. शिक्षा कम से कम सीनियर कैंब्रिज या समकक्ष होनी चाहिए. यदि आप को किसी विदेशी भाषा की जानकारी है तो चयन के समय आप को प्राथमिकता दी जाएगी.

✦

मैं माडल बनना चाहता हूं. कृपया मुझे बताएं कि मैं कहां और किस से संपर्क करूं तथा स्क्रीन टेस्ट कहां और कैसे करवाऊं?

—श्री ओम

यदि आप व्यावसायिक माडल बनना चाहते हैं तो आप को विज्ञापन एजेंसियों से संपर्क करना पड़ेगा, लेकिन इस से पूर्व पत्रिकाओं के "फैशन फीचर्स" के लिए माडलिंग कर के अनुभव प्राप्त कर लेने से आगे चुनाव में सुविधा रहेगी. यदि आप इच्छुक हों तो सरिता, मुक्ता, वूमेंस ईरा पत्रिकाएं भी आप को अवसर दे सकती हैं. इस के लिए आप हमारे संपादकीय विभाग से संपर्क स्थापित कर सकते हैं

—कंचन ●

इस स्तंभ में पाठकों की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जाया है. समस्याएं इस पते पर भेजिए : कंचन, सरिता, झंडेवाला एस्टेट नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब आप इसके दांतों को पीड़ादायक
दंतछिद्रों से बचा सकती हैं

सिग्नल 2 लीजिए

इसमें सबसे असरकारक
फ़्लोराइड फ़ार्मूला है
जो दांतों को मज़बूत बनाकर सड़न रोकता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दांत के दर्द को मतलब सिर्फ़ तकलीफ़ नहीं है, ये दांत की सड़न की निशानी है. लापरवाही बरतने से सड़न और गहराई तक पहुंच जाती है; जिससे पीड़ादायक दंतछिद्र पैदा होते हैं.

साधारण टूथपेस्ट मुंह के तेज़ाबों को दांतों में घुसने और सड़न पैदा करने से नहीं रोक सकती

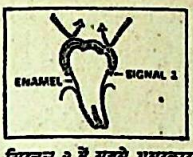

सिग्नल २ में सबसे असरकारक फ़्लोराइड फार्मूला है जो मुंह के तेज़ाबों को दांतों में घुसने और सड़न पैदा करने से रोकता है

दंतछिद्र रोकनेवाली

अब देर मत कीजिए, अपने परिवार को रोज़ाना ऐसी टूथपेस्ट से ब्रश करना सिखाइए जो दंतछिद्र रोकने में सफल सिद्ध हुई है—सिग्नल 2. इसमें विशेष फ़्लोराइड फार्मूला है जो आपके दांतों से जुड़कर उन्हें मज़बूत और मुंह के तेज़ाबों का मुक़ाबला करने के लायक बनाता है. दांतों की सड़न रोकने में इससे बेहतर कोई दूसरी टूथपेस्ट नहीं है.

सिर्फ़ हमारी ही न सुनिए अपने डेंटिस्ट से भी पूछ लीजिए.

सिग्नल 2 फ़्लोराइडयुक्त

आप के परिवार के दंतछिद्र रोकनेवाली

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

लिंटास-SG2. I-1720 HI

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी • प्रभात त्यागी

अभ्यागत

अचानक अरावली की चोटियां एक के बाद एक सुलग उठी थीं. एक से दूसरी चोटी पर जलतीबुझती लपटें मीरदस्ती शाहबाज खां के लिए रहस्य बनी हुई थीं, पर मुगल फौज के दो व्यक्तियों को इन अग्निशिखाओं का मतलब अच्छी तरह मालूम था. आंखों ही आंखों में मुसकरा कर उन्होंने अपनेअपने सिर झुका लिए.

"राणाजी को हमारे आगमन की सूचना भेजी जा रही है, अन्नदाता," राजपूत सामंत गजरा चौहान ने आंबेर के राजा भगवंतदास के पास अपना घोड़ा ले जा कर कान में कहा.

"इसी लिए तो हम जब तक वहां पहुंचेंगे, चूहेबिल्ली तक नदारद हो जाएंगे." जवाब दिया पास में ही घोड़े पर सवार राजा मानसिंह ने.

"मैं ने कई महीनों तक यहां की चप्पाचप्पा जमीन यों ही नहीं खोज डाली थी. पर जब लगता कि मंजिल करीब ही है, तभी राणाजी को सूचना मिल जाती और हम हाथ मलते रह जाते थे."

"पर, अन्नदाता, क्या आप सचमुच चाहते थे कि राणाजी आप के हाथ आ जाएं?"

गजरा चौहान के प्रश्न को सुन कर मानसिंह मौन हो गए.

वास्तव में सारे प्रयत्नों के बाद भी राणाजी को पकड़ कर मुगल बादशाह को सौंप देने की बात उन के गले नहीं उतर रही थी. राजनीति के [illegible] हैं.

कुछ दुश्मन से दूर रह कर या छाती ठोक कर उस का मुकाबला करना चाहते हैं, कुछ उस के घर में घुस कर उसे तोड़ने में विश्वास करते हैं. पर इन दोनों ही राहों पर चलने वाले क्या कभी एकदूसरे को ही समाप्त करना चाहेंगे?

अन्य शत्रु के रहते हुए आपसी झगड़े का प्रश्न ही कहां उठता है? उस ने बदलते रहते हुए भी दूसरा ही रास्ता अपनाया था. हिंदुस्तान के सारे लोग, सारी राजपूत जातियां उस के नाम को कोसती होंगी. पर यदि उस की योजना सफल हो गई तो हिंदुस्तान के तख्त पर एक दिन आंबेर का वंशज ही बैठेगा. लोग तभी असली मानसिंह को

"अच्छा! तो आग जला कर राणा के लोग हमारे पहुंचने की खबर उस तक पहुंचाते हैं." शाहबाज खां ने आपे से बाहर होते हुए कहा.

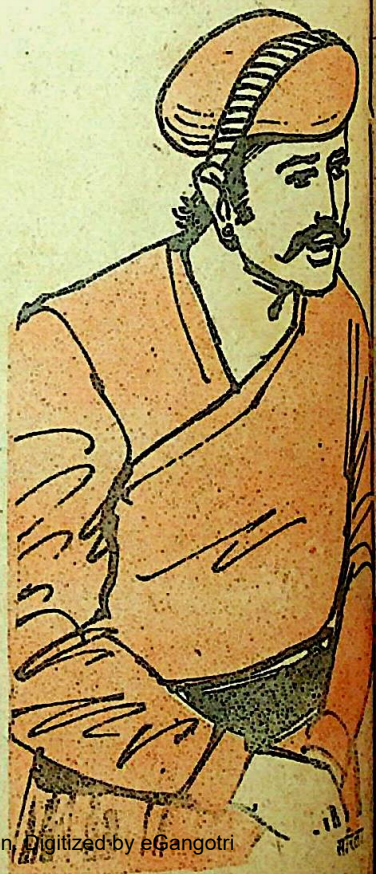

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीरबख्शी शाहबाज खां के भेदिए को पूरा विश्वास था कि दीवाली की रात राणा प्रताप का परिवार उस की नजरों से छिपा नहीं रह सकेगा...

सफल पाएंगे. आलोचकों के मुंह तब अपने-आप बंद हो जाएंगे...

"यार्चिदा खां, सैयद कासिम, आसद कमान," शाहबाज खां इसी समय चीख कर बोला, "सारी फौज को हमारा हुक्म सुना दो कि हमारे रास्ते में जो भी गांव या कसबा पड़े, उस को जला कर राख कर दो. मवेशियों, मरदों, औरतों और बच्चों को खत्म कर डालो. मैं चाहता हूं कि सारा मेवाड़ श्मशान बना दिया जाए. बरा राणा को भी पता चल जाए कि इस वार उन का साबिका किस से पड़ा है."

मानसिंह ने खून का घूंट पी कर अपने-आप को नियंत्रित रखा. कोई और मौका होता तो अब तक वह उस का टेंटुआ दबा डालता.

"राजा मानसिंह, आप तो इस इलाके को पूरी तरह खाक छान चुके हैं."

"मुझ से कहीं ज्यादा आप को छाननी पड़ेगी, देखते रहिएगा." शाहबाज खां की बात बीच में काटते हुए मानसिंह ने जवाब दिया.

"कुंवरजी, आप तो नाराज हो गए."

"मीरबख्शी शाहबाज खां, बादशाह अकबर ने हमें आप के साथ इसलिए भेजा है कि इस अभियान में हम आप की सहायता करें, इसलिए नहीं कि आप हमारा अपमान करें." मानसिंह के पिता राजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भगवंतदास ने क्रोध प्रकट किया.

"मुआफ कीजिए, आंबेर महाराज, मैं तो कुंवरजी से सिर्फ यह जानना चाहता था कि इन पहाड़ियों पर बारबार आग लगने और बुझने का क्या मतलब है?"

"इस का मतलब यह है कि दीवाली की खुशियां मनाई जा रही हैं."

"दीवाली! अच्छा वह का...फि... ...र, मेरा मतलब हिंदू लोग चिराग वगैरा जलाते हैं."

"हां." मानसिंह का चेहरा अब भी लाल था.

"इस बार अगर मैं ने इन के चिरागों की रोशनी बिलकुल गुल न की तो मेरा नाम शाहबाज खां नहीं. थोड़े दिन और खुशियां मना लो मूर्खो." शाहबाज खां ने जलती पहाड़ी को देख कर दांत किटकिटाए.

"मीरबख्शीजी, हमारी लड़ाई तो महाराणा से है. उन्हें हमें जिंदा पकड़ना है. बादशाह अकबर ने भी हमें यही हुक्म दिया है. फिर निहत्थे लोगों की खून-खराबी से क्या फायदा? बादशाह सुनेंगे तो हम पर बहुत नाराज होंगे, इसलिए कत्ले-आम का अपना हुक्म वापस ले लें."

"कुंवरजी, मैं मेवाड़ को जीतने आया हूं, कोई तमाशा करने नहीं. उलूग खां, हमारे हुक्म की तामील बड़ी मुस्तैदी से होनी चाहिए. जिस चौकी पर हमारा कब्जा हो वहां कोई भी धड़कन जिंदा नहीं रहनी चाहिए. समझे? जाओ, सब को हमारा हुक्म सुना दो और सुनो, चारों तरफ हरकारों को दौड़ा दो, जो पता लगाएं कि राणा कहां छिपा हुआ है. इसी के साथ अगर आग जलाने वाला कोई पकड़ में आ जाए तो उस का सिर कलम कर दो."

"शाहबाज खां, अगर तुम्हारे शब्दों में मैं ने यहां रह कर केवल तमाशा दिखाया था तो तुम्हारा तमाशा बिलकुल ही बद-रंग होगा. मैं ने मुगल बादशाह के नाम पर कभी आंच नहीं आने दी जब कि तुम्हारे ये हैवानी हुक्म इनसानी तवारीख में तुम्हें कलंकित कर देंगे. बादशाह अकबर का नाम तुम बदनाम करोगे. दुर्भाग्य यह है कि हमें भी तुम्हारी गैर इनसानी लड़ाई में सहयोग देना पड़ेगा. वैसे बादशाह सलामत से मैं तुम्हारे इन हरकतों की शिकायत जरूर करूंगा."

"इस का मतलब है कि आप मेरी हुक्म उदूली पर आमादा हैं."

"जी नहीं, पर तुम्हारी गलतसलत सभी बातों से हमारा इत्तफाक होना जरूरी नहीं है."

भगवंतदास वैसे तो चुप थे, पर उन के चेहरे के कठोर भावों से क्रोध टपक रहा था. गजरा चौहान और राजपूत राजाओं की आंखों में भी लाली थी. पर उन सब से अलगथलग एक और राजपूत सामंत, चुपचाप चलते हुए, मन ही मन कुछ और ही योजना बना रहा था. छलकपट उस की आंखों में झलक रहा था. अपने रूपरंग की तरह ही उस का हृदय भी भयानक रूप से काला था.

"अच्छा!" रात को पड़ाव में पहुंच कर उसी से सारी बातें सुन कर शाहबाज खां आपे से बाहर हो गया था.

"तो आग जला कर राणा के तोपें हमारे पहुंचने की खबर उस तक पहुंचाते हैं. ठीक पता है तुम्हें?"

"जी बिलकुल."

"वैसे राणा इस समय कहां हो सकता है?"

"उन का असली निवास इस शर्त पर बता सकता हूं कि बादशाह हुजूर से अर्ज कर मेरा रुतबा बढ़ाया जाए."

"हां, हां हम तुम्हें उन से इनाम भी दिलाएंगे."

दोनों में बहुत देर रात तक कुसर-फुसर होती रही.

"तो एक काम और करो. कल यहां से निकल कर तुम चुपचाप बादशाह सलामत तक मेरी जरूरी चिट्ठी जा कर दे दो. बदले में वह जो भी फरमान दें, हम तक जल्दी से पहुंचाना. और यह लो तुम्हारा इनाम." मीरबख्शी ने अपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

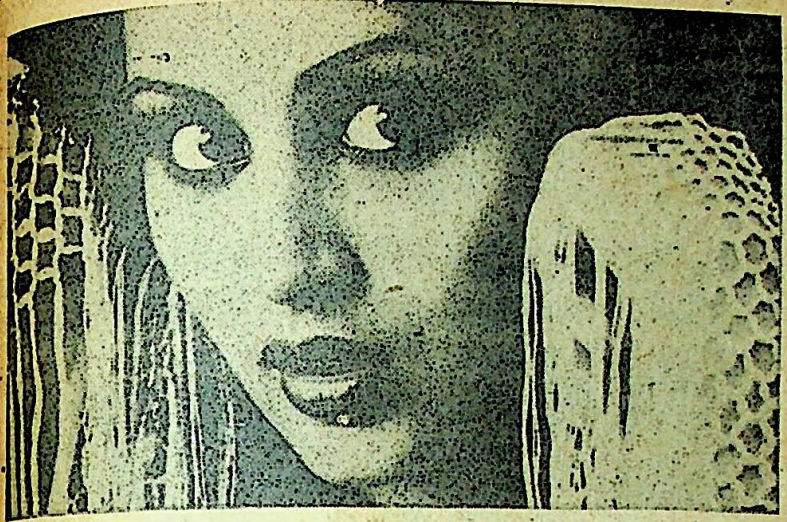

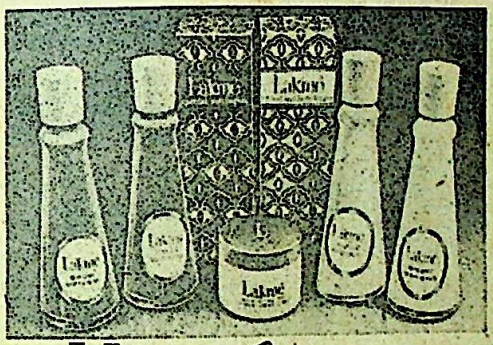

लॅक्मे
जैसे प्यार के वो दिन!

वही चमक जो प्रेमिका के चेहरे पर रहती है! आपकी त्वचा लॅक्मे का प्यार पाकर खिल उठती है।

लॅक्मे डीप पोर क्लींसिंग मिल्क— छुपे हुये मैल को बाहर निकाल कर त्वचा को साफ़ करता है। लॅक्मे ॲस्ट्रिजेन्ट— बढ़े हुये रोमछिद्रों और चिकनी त्वचा के लिये आदर्श। लॅक्मे स्किन टॉनिक ॲन्ड क्रीश्नर— रोमछिद्रों को सुकेड़कर रक्तप्रवाह को प्रबल करता है। रेशम-सी मुलायम त्वचा और देर तक बसी रहनेवाली सुगन्ध के लिये लॅक्मे हैन्ड ॲन्ड बॉडी लोशन। लॅक्मे नरिशिंग ॲन्ड मॉइस्चराइज़िंग क्रीम— त्वचा को रेशम-सा मुलायम, और कोमल बनाती है।

लॅक्मे की रूप-चिकित्सा— मानो प्यार की वर्षा!

लॅक्मे — उत्पादन,
जो बनाते हैं सौंदर्य प्रसाधन

लॅक्मे

daCunha/L/SK/1b/Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ले का एक बेशकीमती हार निकाल कर उसे दे दिया. खेमे में से अपनी गरदन उस ने बाहर निकाली. किसी को आसपास न पा कर वह खुशीखुशी अपने तंबू की ओर चल दिया. यह था आबू का देवराज.

पंद्रहवें दिन बादशाह अकबर का फरमाना आया कि राजा भगवंतदास, कुंवर मानसिंह, गजरा चौहान और सब हिंदू फौजदारों को आगरा भेज दिया जाए. शाहबाज खां की खुशी का पारावार नहीं था, पर मानसिंह के काटो तो खून नहीं रहा. अकबर का असली रूप उसे ज्ञात हो गया था.

'तो तुम्हारा असली चेहरा यह है बादशाह अकबर.' मन ही मन मानसिंह सोच रहा था. 'यह है तुम्हारी धर्मनिरपेक्षता की असली तसवीर?' मैं ने कभी अपनेआप को ईमानदार नहीं माना. पर जब ईमानदारी का ढोंग रचने वाले ही बेईमान निकल गए तो अब मैं खुल कर ही खेलूंगा. अब आगरा या मुगल सल्तनत नहीं, आंबेर की सुख समृद्धि ही मेरी वास्तविक नीति होगी. और शाहबाज खां, तुम अपनी हैवानियत का नंगा नाच करने पर भी राणा को नहीं हरा सकते. हमारी इज्जत तुम ने लूट ली, पर अरावली की इन्हीं घाटियों में तुम्हारी बेइज्जती का तमाशा सारा हिंदुस्तान देखेगा.

उन सब के जाने पर शाहाबाज खां कई दिनों तक जश्न मनाता रहा. नाच व रंग की महफिलें कई दिनों तक पूरे शबाब पर रहीं. इस समय भी देवराज घाटियों में अकेला भटकता हुआ राणा प्रताप की खोज कर रहा था.

आग की लपटों और ढोलमंजीरों से राणा प्रताप को मुगल शिविर की पलपल की बात मालूम होती रही. जैसे ही शाहबाज खां अपनी फौज ले कर आगे बढ़ा, राणा ने अपनी कूटनीति की घोषणा कर दी. मुगल सेना को अरावली की घाटियों में तड़पातड़पा कर मारने के लिए भीलों ने गांवगांव में राणा के आदेश पहुंचा दिए:

"सब लोग अपने खेतखलिहान और गांव उजाड़ कर पहाड़ों में जा छिपें. किसी भी घर में रात को दीपक नहीं जलाया

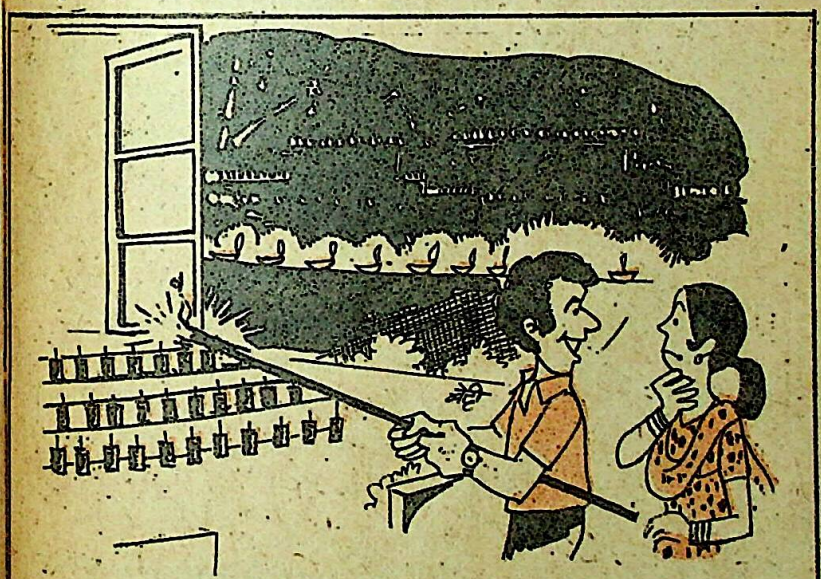

"प्रिय, तुम निश्चिंत हो कर बात करो, मैं ने तुम्हारे दरवाजे के सामने पटाखों की लाइन लगा दी है, हर दो मिनट बाद मैं एक पटाखा चला दूंगा. डर के मारे तुम्हारी मां बाहर नहीं आएगी?"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाए. मुगलों पर गुप्त आक्रमण किए जाएं और मुगल सेना को प्रत्यक्षअप्रत्यक्ष कोई सहायता न दी जाए."

मेवाड़ की घाटी के गांव उजड़ गए. खेतों में आग लगा दी गई. कुओं को पाट दिया गया. थकीहारी मुगल सेना जब भी किसी चौकी पर पहुंचती, विषैले तीरों, पत्थरों और बड़ेबड़े प्रस्तर खंडों से उन का अचानक स्वागत किया जाता. फिर भी शाहबाज खां राणा का हर जगह पीछा करता रहा. पूरी सेना को एक जगह रख कर वह कुछ सैनिकों के साथ राणा प्रताप के पीछे लगा रहा, किंतु हर बार प्रताप उस के हाथ से ठीक समय पर निकल जाते.

कई महीनों तक यह आंखमिचौनी चलती रही. राणा प्रताप को मुगल सेना पकड़ती भी कैसे? चप्पाचप्पा भूमि से वह परिचित थे. उन के लिए सिर कटा देने वाले जांबाज साथी उन्हें मिले थे. उन की तुलना किराए के मुगल सैनिक कैसे करते? पहले तो मुगल सेना के हिंदू सेनापतियों ने प्रताप से मिल जाने की बात कही जाती है. अब तो सारी मुसलिम सेना होते हुए भी राणा को पकड़ा नहीं जा सकता था.

"तुम सब के सब नमकहराम हो. एक अदना सा काफिर तुम्हारी पकड़ में नहीं आ रहा है." अकबर ने शाहबाज को कहलाया. शाहबाज खां अपने साथियों पर बरसा. वे सिर झुकाए सुनते रहे.

"हुजूरे आला, हम क्या करें? जैसे ही हमें उन की खबर मिलती है, उन के नजदीक पहुंचतेपहुंचते वह गायब हो जाते हैं. या जाने उन्हें धरती खा जाती है या आसमान निगल जाता है."

"जफर खां, चुप रहो, यह मौका शायरी या मुहावरों का नहीं है. वक्त का तकाजा है कि जल्द से जल्द राणा को पकड़ा जाए. बादशाह सलामत इस बार हमें बख्शेंगे नहीं."

"तो, हुजूर, इस बार कमर कस लीजिए. मैं उन की पोशीदा जगह का पता

सौंदर्य में निखार के लिए...

सुप्रीम ब्रेजरी

- सुखद स्पर्श और बढ़िया बनावट.
- पहनने दिखने में हर पहलू से उत्कृष्ट.
- आपके अंगों की शोभा पहन कर तो देखिए कितना निखार लाती है आपके सौंदर्य में.
- सुप्रीम ब्रेजरी.

Supreme Hosiery Industries (Regd.)
298, Mahabir Bazar, Teliwara,
Delhi-110006. Ph 524758

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपके बच्चे को ज़्यादा शक्ति देता है,
उसे आगे रखता है...
कोको-समृद्ध बोर्नविटा !

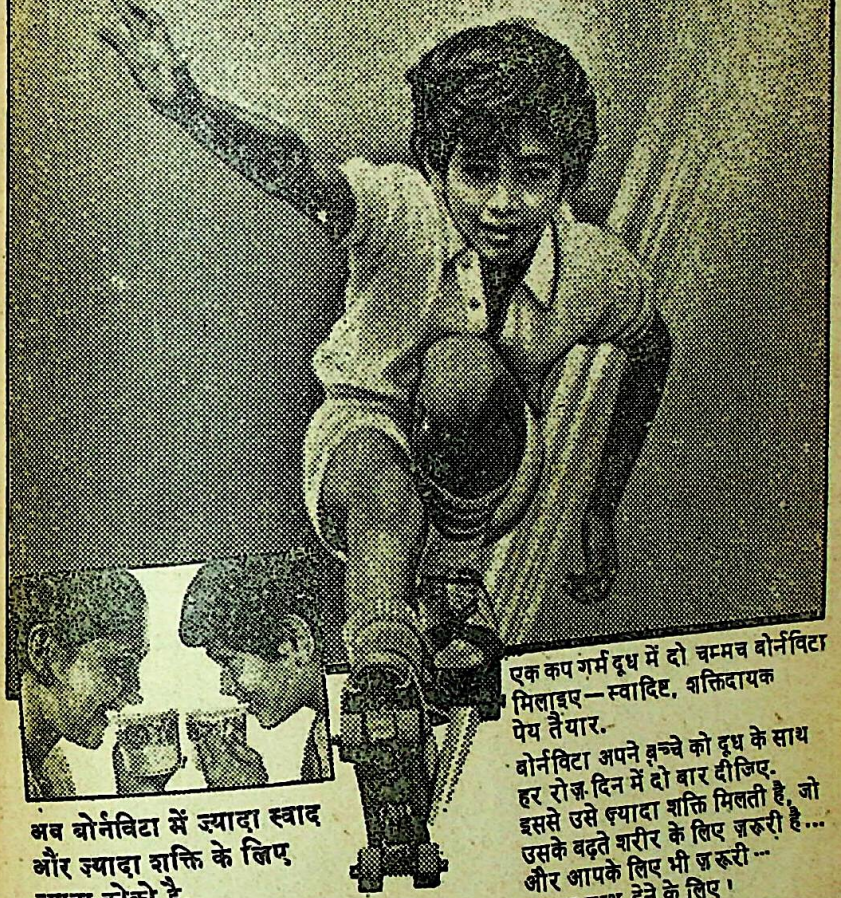

एक कप गर्म दूध में दो चम्मच बोर्नविटा मिलाइए—स्वादिष्ट, शक्तिदायक पेय तैयार.

बोर्नविटा अपने बच्चे को दूध के साथ हर रोज़ दिन में दो बार दीजिए. इससे उसे ज़्यादा शक्ति मिलती है, जो उसके बढ़ते शरीर के लिए ज़रूरी है... और आपके लिए भी ज़रूरी... उसका साथ देने के लिए।

अब बोर्नविटा में ज़्यादा स्वाद और ज़्यादा शक्ति के लिए ज़्यादा कोको है. इसके अलावा बोर्नविटा माल्ट, दूध और शक्कर के पौष्टिक तत्वों से भरपूर है.

कैडबरिज
बोर्नविटा
ज़्यादा कोको, ज़्यादा स्वाद, ज़्यादा शक्ति !

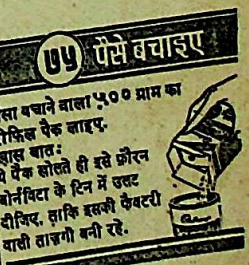

OBM/8376 B/HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिल्म जीवन और जनजीवन के बीच इंद्रधनुषी पुल:

माधुरी

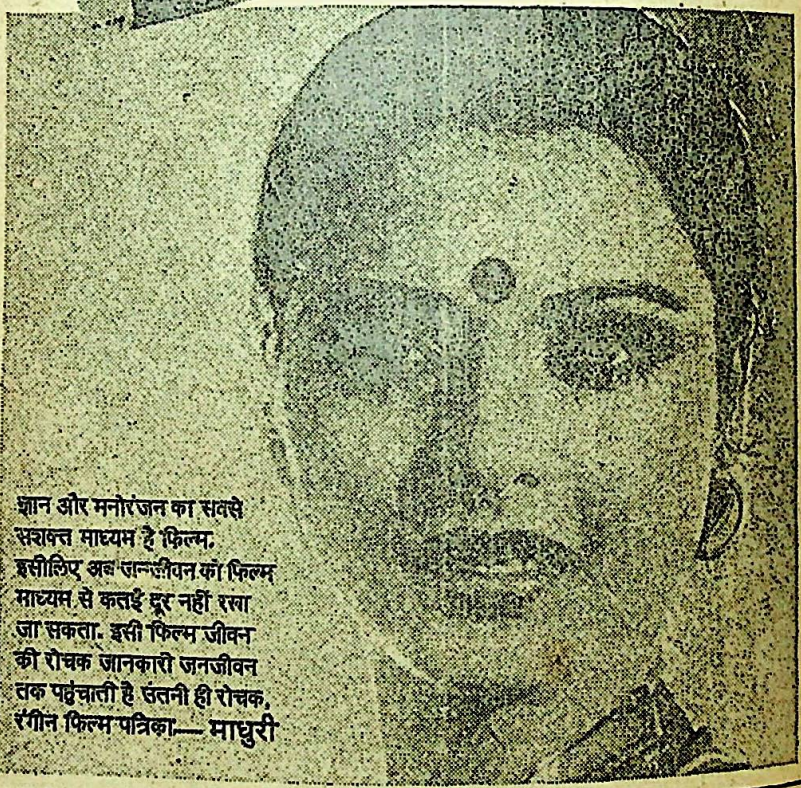

ज्ञान और मनोरंजन का सबसे सशक्त माध्यम है फ़िल्म. इसीलिए अब जनजीवन को फ़िल्म माध्यम से कतई दूर नहीं रखा जा सकता. इसी फ़िल्म जीवन की रोचक जानकारी जनजीवन तक पहुंचाती है उतनी ही रोचक, रंगीन फ़िल्म पत्रिका— माधुरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगा कर आया हूं. आप मेरे साथ चल कर धावा बोल दीजिए."

"ज़फर, हर बार हम बड़ी हसरत से कदम बढ़ाते हैं, पर हमें नाकामी ही मिलती है. चलो, एक बार और सही."

उसी रात को तारों की झिल-मिलाहट में रास्ता तय करते हुए जब मुगल फौजदार हलदीघाटी से छः मील दूर मायरा की गुफा के नजदीक पहुंचने को थे, तभी सिर्फ कुछ पल पहले राणा का परिवार वहां से विदा हुआ था. छोटे बच्चों के रस्सियों और कपड़ों के झोले अभी तक पेड़ों से लटके हुए थे. यहां तक कि चूल्हों की लकड़ियां भी उस समय तक सुलगी पड़ी थीं. गुस्से में शाहबाज खां ने लात मारमार कर उन चूल्हों को तोड़ डाला. जैसे ही वह वापस जाने के लिए गुफा के दरवाज़े पर पहुंचा, उस ने अपना माथा ठोंक लिया. वह गुफा इस तरह की थी कि वहां से 10-12 मील दूर से आने वाला आदमी नजर आ सकता था जब कि गुफा का अस्तित्व बिलकुल सामने पहुंचने पर ही मिल सकता था. शाहबाज खां ने ढूंढ़ढूंढ़ कर मरदों, औरतों का कत्लेआम कराया.

गोगूंदा के दक्षिण में राणा गांव, थोलिया, मचींद, रोहिड़ा, उभयेश्वर, कमलनाथ और आवरगढ़ सब जगहों पर यही कहानी घटी. भीलों और मुगल सेना के कई सैनिक इन मुठभेड़ों में खेत रहे. फिर भी राणा प्रताप का अतापता न था.

मेवाड़ व मारवाड़ की सीमाएं जहां मिलती हैं, अरावली की 3568 फीट ऊंची चोटी पर कुंभलगढ़ नामक शानदार किला खड़ा था. यह पर्वतमाला सीढ़ीनुमा थी और यहां चोटियां एक के बाद एक ऊंची उठती चली गई थीं. बीचबीच में जहां घाटियां बिलकुल संकरी हो गई थीं, वहां दरवाजे लगा कर किले की सीमा को और भी सुरक्षित बना दिया गया था. सभी दृष्टियों से कुंभलगढ़ अजेय था.

दीवाली की शाम थी. एक व्यक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस दुरूह चोटी पर दक्षिण की केलवाड़ा की चौकी की तरफ से धीरेधीरे दुर्ग की ओर चढ़ने लगा. आदमी जीवट का था. वह इस भयानक रास्ते पर सधे हुए पैर रखता हुआ बढ़ रहा था. सूरज की अंतिम किरण पड़ने तक उस ने काफी रास्ता पार कर लिया. उसे आश्चर्य था कि दीवाली की रात होने पर भी उसे किले में कोई दीपक जलता हुआ दृष्टिगोचर नहीं हुआ. वह इसी विश्वास के साथ ऊपर चढ़ रहा था कि आज की रात दीपक जलाने से राणा प्रताप का परिवार उस की नजरों से नहीं छिपेगा.

चलतेचलते थक जाने के कारण वह पहाड़ी के ऊंचे दरवाजे के पास पहुंच कर, अंधेरे में जैसे ही एक डंडे को पकड़ कर सुंस्ताने लगा, अपने ऊपर एक व्यक्ति के कूद पड़ने से वह जमीन पर गिर पड़ा. वह नीचे दबा हुआ बोला, "माईबाप, मुझे माफ कर दें. मैं गलती से इधर चला आया. अब कभी भूल कर भी पैर नहीं रखूंगा. मैं आप के चरणों की सौगंध खाता हूं कि यहां के बारे में किसी को कुछ नहीं बताऊंगा. सच मानिए, मैं आगरा लौट जाऊंगा. आप मेरे प्राण मत लीजिए.

उस के ऊपर वाला व्यक्ति टस से मस नहीं हुआ.

"चामुंडा माता की सौगंध, मैं राजपूत हूं और चामुंडा को साक्षी कर सौगंध खाता हूं कि यहां से जाने के बाद मुगल पड़ाव की तरफ पैर रखे बिना मैं अपने घर लौट जाऊंगा. बस, मुझे आप जाने दें. मैं आप के हाथ जोड़ता हूं."

अचानक नीचे दबा व्यक्ति आश्चर्य से सोचने लगा कि न तो आक्रमणकारी उस के ऊपर से हट रहा है और न ही उसे कोई चोट पहुंचा रहा है. क्यों? पूरा जोर लगा कर उस ने ऊपर वाले व्यक्ति को धक्का दिया और वह भरी हुई किसी बोरी की तरह एक ओर को लुढ़क गया. अपने कपड़े झाड़ते हुए उस ने ध्यान से अपने आक्रमणकारी को देखा तो उसे अपना खून जमता हुआ प्रतीत हुआ. यह तो एक व्यक्ति की विकृत लाश थी जो फूल कर मोटी हो गई थी, जिस की आंख और जीभ बाहर निकली हुई थीं तथा जिस में से बदबू आ रही थी. उस की गरदन में एक तख्ती लटकी हुई थी जिस पर लिखा था :

"राणाजी की आज्ञा की अवहेलना करने वाले का यही अंत होता है. जनसाधारण, गड़रिये की इस लाश को देख कर शिक्षा ले कि राणा का आदेश न मानने वाले के लिए मेवाड़ में कोई स्थान नहीं है.

"यह देशद्रोही मुगल फौज के लिए सब्जी उगाता पाया गया. अतः राणाजी ने स्वयं तलवार से इस का अंत किया. मुगल सेना के सामने पड़ना भी उतना ही खतरनाक देशद्रोह है जितना उसे रसद पहुंचाना या उन्हें अपने मकान में संरक्षण देना. अतः सब अपने गांव, खेत छोड़ कर पहाड़ों में जा छिपें."

डंडे से बंधी लाश की ओर ताके बिना वह व्यक्ति, जिस पर लाश गिर पड़ी थी, भयभीत हो कर उलटे पांव भागा. पीठ मोड़ते हुए उस ने यह नहीं देखा कि केवल कुछ पलों के लिए एक नन्हा सा दीपक दुर्ग में टिमटिमाया और तुरंत ही बुझ गया. दौड़ते हुए उस व्यक्ति की नजर यदि उस दीपक पर पड़ जाती तो शायद उसी रात को मेवाड़ का इतिहास कुछ और ही लिखा जाता.

क्रमशः

इस अदा से...

बरसों खिलेंगे फूल मिरे दिल में प्यार के
इक बार मुसकरा के मुझे देख जाओ तुम!
मेरी तबाहियों पे जमाने को रश्क हो
कुछ इस अदा से 'अश्क' की दुनिया
मिटाओ तुम
—इब्राहीम 'अश्क'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैंक ऑफ इंडियामें
बचत करना आपके लिए
कितना आसान
हो गया है-

चैक की सुविधा
के साथ-साथ
4½% वार्षिक ब्याज,
इसका एक
छोटासा उदाहरण है।

आप बैंक ऑफ़ इंडिया में केवल रु. 5/- की छोटी राशि जमा करके बचत बैंक खाता खोलिए और देखिये कि आप के लिए कितनी लाभप्रद सुविधायें दी गई हैं—

1) आप अपनी बचत पर 4½% वार्षिक दर से ब्याज कमा सकते हैं और अपने खाते में कम से कम रु. 100/- जमा शेष रखकर प्रत्येक छः महीने में चैक बुकों की सुविधाओं द्वारा 50 बार राशि निकाल सकते हैं।

2) इस तरह आपकी रकम सुरक्षित भी रहती है और आवश्यकता पड़ने पर आसानी से निकाली भी जा सकती है।

आज से ही बचत करना
आरम्भ कीजिए।
बूंद-बूंद से ही समुद्र भरता है।

बैंक ऑफ़ इंडिया
(भारत सरकार का उपक्रम)
सेवा में श्रेष्ठता ही हमारी विशेषता है।

CONCEPT-BOI/3421/HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवन की मुसकान

हम कानपुर स्टेशन पर अपनी मौसीजी को लेने कार से पहुंचे. खुशीखुशी मौसी को सामान सहित कार में बिठा कर चिड़िया-घर की सैर करने गए. थोड़ी देर में भूख लगने पर नौकर से कार में से खाने का थैला लाने को कहा तो पता चला कि थैला कार में नहीं है. खाने से अधिक चिंता थैले में रखे कीमती बरतनों की हुई. हम ने सोचा कि थैला स्टेशन पर ही रह गया होगा.

मीलों की दूरी तय कर हम स्टेशन

पहुंचे और पहली वाली जगह पर जा कर कार रोक दी. मगर थैला नहीं मिला. लौटने के लिए जैसे ही कार स्टार्ट की तो देखा थैला एक पांचछः फुट लंबे खंभे पर झूल रहा है. कार रोक कर मौसीजी ने जैसे ही थैला उतारा कि 10-12 वर्ष के दो फटेहाल लड़के आए और बोले कि यह थैला हम ने टांगा था और हम आप का कितनी देर से इंतजार कर रहे हैं. उन बच्चों की ईमानदारी को देख कर हमें बहुत अचरज हुआ.

—मनीषीकुमार

✦

एक दिन मेरी दीदी और जीजाजी फिल्म देखने गए. फिल्म शुरू होने में अभी कुछ देर थी, इसलिए वे लोग हाल के बाहर ही टहल रहे थे. एकाएक दीदी को अपना एक कान कुछ हलका महसूस हुआ. जब उस ने उस कान को छू कर देखा तो उस के होश उड़ गए, क्योंकि सोने का कर्णफूल नदारद था. दीदी और जीजाजी घबरा कर कर्णफूल को इधरउधर खोजते-खोजते जिस रास्ते से आए थे उसी ओर वापस चलते गए.

बहुत खोजने पर भी कर्णफूल नहीं मिला. दीदी और जीजाजी लगभग निराश हो चुके थे कि तभी एक युवक ने दीदी से कहा, "बहनजी, आप की साड़ी में कुछ फंसा हुआ है." और इतना कह कर वह युवक आगे निकल गया. मेरी दीदी ने हड़बड़ा कर पीछे देखा तो साड़ी में वही कर्णफूल अटका हुआ था.

—शोभा सहाय 'पीरो'

✦

हमारे विद्यालय की वार्षिक परीक्षा चल रही थी. शनिवार के दिन जल्दी छुट्टी हो जाने के कारण मैं ने कुछ अन्य अध्यापिकाओं के साथ बाजार जाने का प्रोग्राम बनाया. घर पर जांचने के लिए मैं ने कापियों का एक बंडल भी ले लिया तथा स्कूल से ही हम लोग शॉपिंग के लिए चल पड़े. बहुत देर तक इधरउधर घूम कर सामान खरीदते रहे और रात को लगभग नौ बजे घर पहुंचे. खाना खा कर जब मैं ने थैले में से अपना सामान निकाला तो उस में कापियों का वह बंडल नहीं था. यह देख कर मैं बहुत परेशान हो उठी.

चिंता के कारण मुझे रात भर नींद नहीं आई. दूसरे दिन सुबह जब मैं दुखी मन से स्कूल पहुंची तो गेट पर ही मुझे एक लड़का मिला, जो अपने हाथ में कापियों का वह बंडल पकड़े हुए था.

उस लड़के ने बताया कि वह बंडल उसे अपने झाबे के पास पड़ा मिला था. कापियों पर स्कूल का पता देख कर ही वह उसे देने आया था. मुझे स्मरण आया कि मैं ने बाजार में उस से एक कंघी खरीदी थी. शायद तभी वह बंडल थैले से गिर गया था.

—संतोष नंदवानी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आप सुंदर हैं!

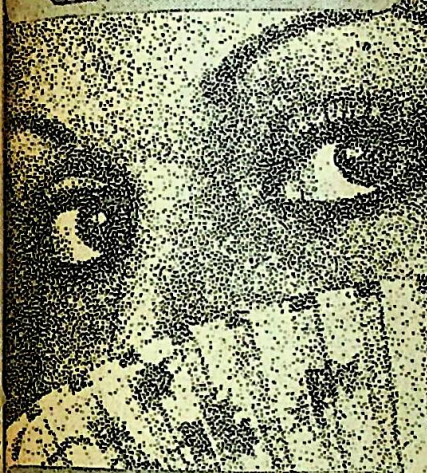

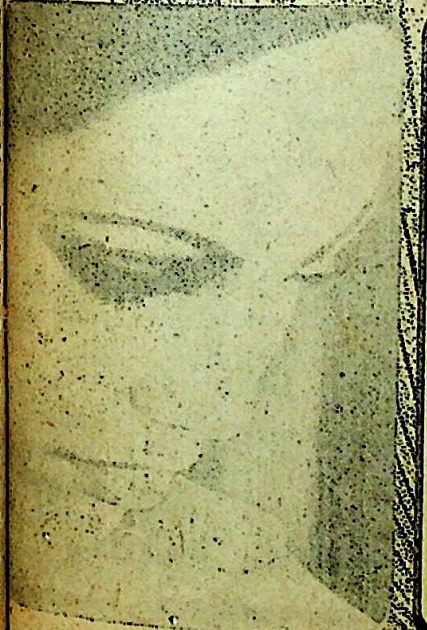

अपार सौन्दर्य
सैटिन ग्लो लिक्विड मेकअप
व हसीन चमकदार शेड्स में

फ़ेस पावडर और कॅम्पेक्ट
व रेशमी शेड—हर अवसर के लिये उपयुक्त

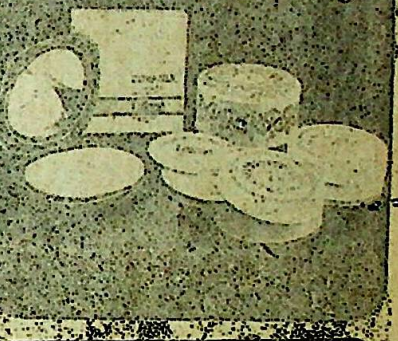

ये लॅक्मे को भी मालूम है। और आपकी इस सुंदरता को चार चांद लगाने के लिए लॅक्मे ने कई सौन्दर्य-प्रदान वस्तुओं का निर्माण किया है

- सैटिन ग्लो लिक्विड मेकअप, जो आपके चेहरे के छोटे मोटे दाग़ धब्बों को छिपा कर आपकी त्वचा में एक नया निखार लाये।
- फ़ेस पावडर और कॅम्पैक्ट—आपके चेहरे को रेशम-सा मुलायम बनाये।
- आई मेकअप : जो आपकी आंखों में एक नई चमक दे दे और नज़र में एक नया नशा—चश्मे-बद्दूर। आप अपनी सुंदरता से खुद प्यार करने लगेंगी, और लॅक्मे से भी।

लॅक्मे
आपकी सुंदरता का राज़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीना ने अपनी सहेली की रक्षा की

दिन में दो बार न्यूट्रामूल लेने से बड़ा लाभ होता है। इसीलिए देशभर के हजारों-लाखों लोग, अमूल का पौष्टिक पेय न्यूट्रामूल लेने लगे हैं।

अमूल के गाढ़े मलाईदार और पौष्टिक तत्वों से भरपूर न्यूट्रामूल में असली कोको, माल्ट और शक्कर हैं।

न्यूट्रामूल के दाम भी तो कम है। ५०० ग्रा. न्यूट्रामूल डिब्बे के दाम— सिर्फ़ १२ रुपये २१ पैसे, स्थानीय कर, सी.एस.टी. और किराया अतिरिक्त. मीना और सहेलियों को न्यूट्रामूल बहुत पसंद है.

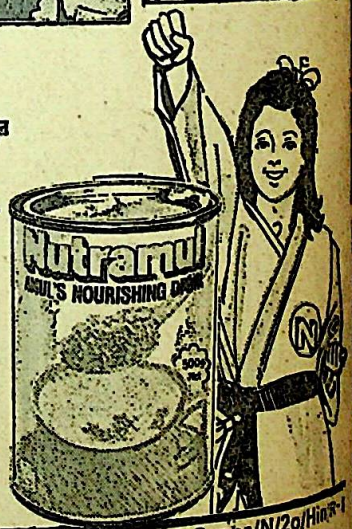

अमूल का

न्यूट्रामूल

हर कप मनभाए, शक्ति बढ़ाए

daCunha/N/20/Hindi-1

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

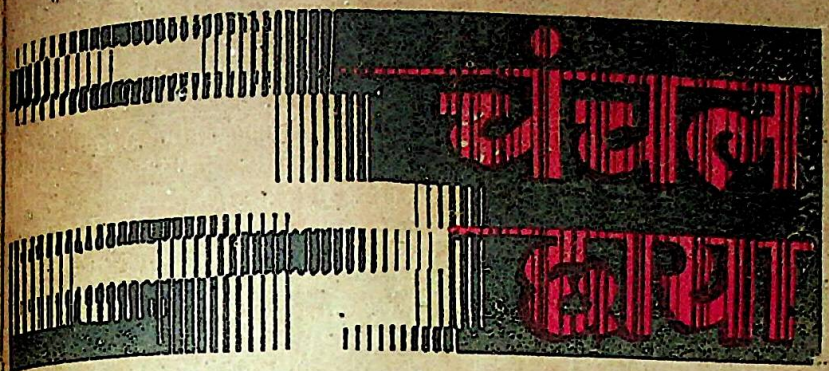

★★★★अति उत्तम ★★★उत्तम ★★मध्यम ★साधारण ○बेकार

★ राहू केतू

निर्माता : वसुधा फिल्म्स

निर्देशक :
कहानी लेखक: } बाबूराम इशारा

मुख्य कलाकार : शशि कपूर, रेखा, प्रेमनाथ, प्राण, कामिनी कौशल, कन्हैयालाल, बिंदु, अरुणा ईरानी

एक उच्च अधिकारी के भ्रष्टाचारी होने से लोगों को कितनी मुसीबतें उठानी पड़ती हैं और कैसे हत्याओं और दूसरे अपराधों की घटनाओं को छिपा दिया जाता है, निर्माता व. द. पांडे की फिल्म 'राहू केतू' में ऐसे प्रशासन और पुलिस के भ्रष्ट अधिकारियों तथा समाज में दोहरी भूमिका निभाने वाले समाज विरोधी नेताओं की अच्छी पोल खोली गई है. कहींकहीं निर्माता, निर्देशक फार्मूले अपनाने और फिल्म में हत्या व अपराध की दूसरी घटनाओं के चक्कर में उद्देश्य से कुछ अलग हटते प्रतीत होते हैं. फिर भी फिल्म में प्रशासनिक ढांचे की शिथिलता का काफी कुछ पता चलता है.

फलक्टर राहू नाथ (प्रेमनाथ) और उस बदमाशों का संरगना केतू वर्मा (प्राण) दोनों आनंदपुर के व्यापारियों के साथ मिल कर जनता को लूटते हैं. आनंदपुर में कुछ हत्याएं होती हैं लेकिन कोई भी बदमाशों के डर से कुछ नहीं कह पाता.

बदमाशों को समाप्त करने के लिए सी. बी. आई. के रवि कपूर (शशि कपूर) को भेजा जाता है और वह आम अपराध फिल्मों की तरह उलटीसीधी हरकतों, मारपीट, गोलीबारी के बाद बदमाशों का सफाया करने में सफल होता है.

निर्माता, निर्देशक ने फार्मूलों के चक्कर में वास्तविकता पर कम ध्यान दिया है. निर्माता के अनुसार एक ही ईमानदार अधिकारी यदि सारे भ्रष्टाचार को समाप्त कर सकता है तो फिर इतने अधिक सरकारी अफसरों की भीड़ पालने से क्या लाभ है? यहां पर निर्माता, निर्देशक ने आम हिंदी फिल्मों की तरह नायक को कुछ अधिक ही शक्तिशाली रूप दे दिया है. एक बात यह भी समझ नहीं आती, ऐसे घातक हत्याओं वाले स्थान पर रवि को अकेला ही क्यों भेजा जाता है? क्या उच्च अधिकारी भी फिल्म निर्माता की तरह पहले ही सोच बैठे थे कि नायकों की तरह रवि अकेला ही सब बदमाशों को समाप्त कर देगा. फिल्म को कुछ सामाजिक रंग देने के लिए निर्माता ने हरिजन समस्या को भी बेकार ही जोड़ दिया है.

निर्माता ने बड़ेबड़े सैटों और रंग-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रवि (शशि कपूर) और अंजना फ़िल्म 'राहूकेतू' में : अंजना के कुछ कहने से पहले ही बदमाशों ने उस की हत्या कर दी.

बिरंगी रोशनी से फिल्म में भय का वातावरण बनाया है. लेकिन निर्माता, निर्देशक को इस में सफलता नहीं मिली और फिल्म समाज विरोधी तत्त्वों, कालेबाजार के व्यापारियों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकी.

लेखकनिर्देशक इशारा ने राहू नाथ को भ्रष्ट दिखाते हुए भी सारा दोष उस की पत्नी (कामिनी कौशल) पर मढ़ने की कोशिश की है. यह ठीक है कि उस की पत्नी लोगों की रिश्वत स्वीकार करती थी लेकिन राहू नाथ को भी तो उस का सब पता था. फिर उस ने स्वयं उसे रोकने की कोशिश क्यों नहीं की? फिर राहू नाथ स्वयं भी तो भ्रष्ट लोगों के पास जा कर नाचगाने और शराब की पार्टियों में शामिल होता था.

शशि कपूर इस बार कुछ गंभीर भूमिका में सामने आया है और कहींकहीं आकर्षित भी करता है. प्रेमनाथ लंबी भूमिका ले कर भी प्रभावित नहीं कर पाता. प्राण दोनों भूमिकाओं में जंचता है. कामिनी कौशल कुछ बदले हुए रूप में सामने आई है और आकर्षित करती है. रेखा को बस, नायिका की खानापूरी के लिए रखा है. उस के करने के लिए कुछ नहीं था फिर भी निर्देशक ने स्वप्नगीत के बहाने नायक के साथ नचाने का अवसर ढूंढ़ ही लिया.

वर्मा मलिक अब पूरी तरह तुकबंदी पर उतर आया है. कल्याणजी आनंदजी भी कोई अच्छी धुन नहीं बना सके. सुरेश नाग का छायांकन आकर्षक है. आई. एस. कुन्नु का संपादन फिल्म में गति बनाए रखने में सफल रहा है.

○ राम कसम

निर्माता : नारंग फिल्म्स कंबाइन
निर्देशक : } चांद
कहानी लेखक : }
मुख्य कलाकार : सुनील दत्त, रेखा, विनोद गोस्वामी, अजीत, निरूपा राय, बिंदु, अमजद

निर्देशक चांद के पास एक बहुत पुराना घिसापिटा फार्मूला है, जिसे वह हर फिल्म में ठूंस देता है. इसी लिए उस की हर फिल्म में बचपन में बच्चों का खोना, पुलिस, डाकू, तस्करी के नएनए कारनामों और अंत में बिछड़े हुए परिवार का मिलन ही होता है. फिल्म 'राम कसम' में भी यही सब कुछ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वस्त्रों को आखरी बार खंगालने से पहले पानी में थोड़ा सा रानीपाल मिलाइए और फिर देखिए...वस्त्रों पर चमकती सफ़ेदी! रानीपाल की सफ़ेदी! सफ़ेद वस्त्र कैसे भी हों—सूती, सिन्थेटिक और ब्लैंडिड— रानीपाल से चमक उठते हैं.

नियमित रानीपाल लगाइए... और सफ़ेदी देखिए, दिखाइए!

सूती वस्त्रों के लिए रानीपाल®
सिन्थेटिक और ब्लैंडिड
वस्त्रों के लिए रानीपाल®-एस

Shilpi SG-2A/78 Hin

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

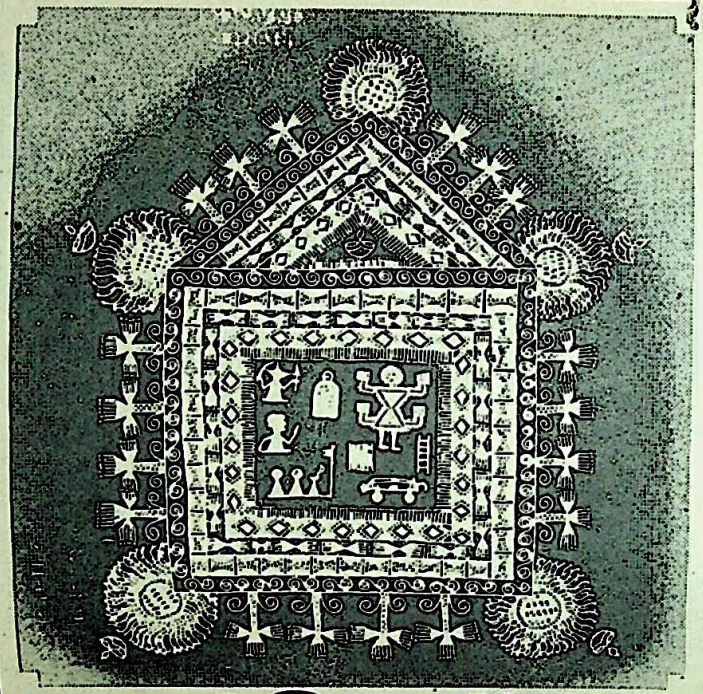

अपने प्रियजनों को
सुख-सुरक्षा का उपहार
देने का समय

त्यौहारों के दिन आ गये...आ गया समय
उपहारों का!
बैंक ऑफ़ बड़ौदा प्रस्तुत करता है अपनी
जमा-योजनाएँ जिन्हें आप चुन सकते हैं
अपने प्रियजनों के लिये... अपनी आवश्यकतानुसार.

- ☆ रेग्यूलर इनकम-कम-रिकरिंग डिपॉज़िट प्लान
- ☆ रेग्यूलर इनकम प्लान
- ☆ मंथली इनकम प्लान
- ☆ जनता कैश सर्टिफ़िकेट्
- ☆ रिकरिंग डिपॉज़िट प्लान
- ☆ फ़ेस्टिवल डिपॉज़िट प्लान

बैंक में जमा राशियों और अन्य स्वीकृत निवेशों द्वारा प्राप्त वार्षिक 3000 रुपयों तक की ब्याज की रकम आयकर से मुक्त है. प्राप्त ब्याज पर वार्षिक कर जोड़ा जाता है.

शुभकामनाओं के साथ

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
(भारत सरकार उपक्रम)

दिखाया है, जिसे देख कर निराशा ही होती है, और अंत तक फिल्म देखना कठिन हो जाता है.

विदेश से लौटते हुए एक पुलिस अधिकारी अजीत (अजीत) की पत्नी लक्ष्मी (निरूपा राय) और दो जुड़वां बच्चे शंकर और भोला (बड़े हो कर सुनील दत्त, दोहरी भूमिका) जलयान डूब जाने से बिछुड़ जाते हैं. शंकर (सुनील दत्त) बड़ा हो कर बदमाशों के गिरोह का मुखिया बन जाता है और दूसरा लड़का भोला (सुनील दत्त) अपनी मां लक्ष्मी के साथ एक गांव में रहता है और गांव के ठाकुर के यहां नौकरी करता है.

बस, इतनी सी कहानी को निर्देशक-लेखक चांद ने आगे ठाकुर के खजाने, उस के बिगड़ैल बेटे छोटे ठाकुर (अमजद) और एक डाकू (देवकुमार) से जोड़ कर फैलाया है. अंत में मारपीट, गोलीबारी और घोड़े पर चढ़ कर जीप और रेल को पकड़ने के करतब दिखा कर बिछुड़े हुए परिवार को मिला दिया है.

फिल्म 'राम कसम' की कहानी भी निर्देशक चांद ने स्वयं लिखी है. इसलिए उसे फिल्म को मनमाने ढंग से चलाने और इधरउधर की बेतुकी घटनाएं जोड़ने की पूरी स्वतंत्रता रही है. यही नहीं, निर्देशक ने फिल्म को संयोगों के सहारे चलाने की पूरी कोशिश की है.

सारे पात्र एकदूसरे के पास होते हुए भी आपस में मिलने नहीं पाते. जब भी अचानक मिलने की स्थिति आती है, निर्देशक सब को अलग कर देता है क्योंकि उन के मिल जाने पर फिल्म बीच में ही समाप्त हो जाती.

फिल्म में मारपीट, गोलीबारी की घटनाओं को इतना अधिक फैला दिया गया है कि इन के सिवा फिल्म में कुछ दिखाई नहीं देता. डाकुओं का किस्सा जोड़ कर फिल्म को और भी बोझिल बना दिया है. दूसरी फिल्मों की तरह यहां भी निर्देशक डाकुओं को शहर में ले जा कर उन के उलटे-सीधे करतब दिखाता.

सुनील दत्त शंकर के रूप में कुछ आकर्षित करता है लेकिन उस के अभिनय में नवीनता नहीं है. दूसरी भूमिका को अलग रखने के लिए भोला के रूप में उसे चुप ही रखा है. अमजद एकदम नाटकीय है. रेखा और विदिया गोस्वामी बस, जगह ही भरती हैं.

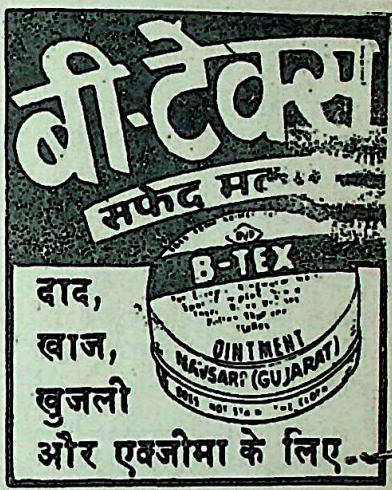

हमें खेद है इस वर्ष का दीपावली विशेषांक हर वर्ष की तरह अधिक पृष्ठों का नहीं दिया जा सका. इस का मुख्य कारण है समय पर कागज उपलब्ध न होना. हमें कागज एकाधिकार वाली सरकारी कंपनी राजकीय व्यापार निगम (स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन) द्वारा दिया जाता है और उन्हीं की 'कृपा' से इस बार समय पर कागज हम तक नहीं पहुंच पाया है. इस बार हम पाठकों की पूरी तरह सेवा नहीं कर पाए, इस का हमें खेद है.—संपादक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिछले बारह महीनों में

★★★दुलहन वही जो पिया मन भाए, घरौंदा.

★★शक, स्वामी, किस्सा कुरसी का, मंथन, आनंद आश्रम, अपनापन, दामाद, पति पत्नी और वह, तृष्णा,

★कर्म, आदमी सड़क का, आप की खातिर, दूसरा आदमी, प्रियतमा, चला मुरारी हीरो बनने, परवरिश, चरणदास, टिंकू, मस्तान दादा, भूमिका, बंदी, खट्टामीठा, तुम्हारी कसम, फांसी, पलकों की छांव में, त्रिशूल, पहेली, कसमें वादे, अखियों के झरोखों से, देस परदेस, आजाद, सफेद झूठ.

○ गुमराह, फरिश्ता या कातिल, जयविजय, एजेंट विनोद, इनकार, छैला बाबू, ढोंगी, महाबदमाश, आशिक हूं बहारों का, डिंपल, आधा दिन आधी रात, दुनियादारी, दरिंदा, विश्वनाथ, डाकू और महात्मा, नसबंदी, आखिरी डाकू, फिर जन्म लेंगे हम, शतरंज के खिलाड़ी, खेल किस्मत का, कालिज गर्ल, बेशरम, अलीबाबा मरजीना, सिक्का, दरवाजा, आहुति, अगर, काला आदमी, चोर हो तो ऐसा, सत्यम शिवम सुंदरम, मृगया, खून की पुकार, प्रेमी गंगाराम, डान, सवा लाख से एक लड़ाऊं, फंदेबाज, मुकद्दर, परमात्मा, अनजाने में, यारों का यार, पुराना पुरुष, नया दौर, शाही लुटेरा, गंगा की सौगंध. मेरा रक्षक, अपना खून, जादूटोना, नवाब साहब.

वर्मा मलिक ने गीतों में तुकबंदी की है, जिन्हें सोनिक ओमी ने भी चालू किस्म की धुनों में ही बांधा है. छायांकन साधारण है. संवादों में फूहड़पन का परिचय मिलता है.

○ चलता पुर्जा

निर्मातानिर्देशक : भप्पी सोनी
संगीत : राहुलदेव बर्मन
मुख्य कलाकार : राजेश खन्ना, परवीन बाबी, असरानी, अजीत, बिंदु, रणधीर, धूमल.

बंबईया फिल्मों का एक फार्मूला है, यदि नायक अपराधी है तो उस ने जरूर अपराध किसी मजबूरी में किया होगा. शुरू की रीलों में उस के चरित्र का बखान किया जाता है बाद में तमाम फिल्म में उसे गुनाहगार के साथसाथ देवता सिद्ध करने की कोशिश की जाती है. 'चलता पुर्जा' में भी यही है.

अमर (राजेश खन्ना) स्टंटमैन है. दुर्घटना में मां की मृत्यु के बाद वह अपनी गरीबी दूर करने की कसम खा लेता है. अब गरीबी हिंदी फिल्मों में तो सिर्फ स्मगलिंग जैसे धंधे से ही दूर हो सकती है. स्मगलर टोली का नेता कैप्टन (अजीत) वही व्यक्ति है जिस ने अमर की मां को कार से कुचला था.

नायक होने के नाते अमर को स्मगलिंग व जुए में बेहताशा सफलता मिलती है, फिर उस की बुराई का एक पक्ष दिखा कर उसे देवता बनाने की कोशिश शुरू हो जाती है और इसी कोशिश में तर्क को ताक पर रख दिया गया है. वह स्मगलिंग करता है, शराब पीता है, आवारा लड़कियों के साथ घूमता है लेकिन वह देवता है, क्योंकि नायक कभी शैतान तो हो नहीं सकता.

अमर कंगाल से लखपति बन जाता है लेकिन उस का दोस्त इंस्पेक्टर सुबीर (राकेश रोशन) यह पता लगाने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब एक बढ़िया आधुनिक शॅम्पू आप के परिवार के हर सदस्य के लिए सचमुच किफायती दाम पर

नया पामऑलिव फॅमिली शॅम्पू

आज का शॅम्पू: बढ़िया और गाढ़ा यह नया-पामऑलिव फॅमिली शॅम्पू न अधिक गाढ़ा है और ना ही ज्यादा पतला, किसी भी प्रकार के पानी में भरपूर झाग पैदा करनेवाला।

हर एक की बालों की सुरक्षा: नया पामऑलिव फॅमिली शॅम्पू आप के परिवार के हर सदस्य के लिये विशेष प्रकार से उपयुक्त बनाया गया है, यह छोटे बच्चों के बालों के लिये कोमल है। आपके बालों को मुलायम और चमकदार बनाता है। बालों को बिना सुखापन दिये साफ करता है। आप के घरवालों के लिये भी योग्य।

सचमुच कम दाम पर: जी हाँ—नया पामऑलिव शॅम्पू आप के सम्पूर्ण परिवार के लिये अति सुखदायक, अच्छा और बढ़िया शॅम्पू—अन्य प्रकार के शॅम्पुओं से कम दाम पर।

पामऑलिव फॅमिली शॅम्पू—उत्तम शॅम्पू आप के परिवार के लिये

PFS-2-HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोशिश ही नहीं करता कि उस के पास इतना पैसा कहां से आया?

नायक के रूप में राजेश खन्ना न तो स्मगलर लगता है और न ही सशक्त व्यक्ति. मारपीट के दृश्यों में भी उस की देवदास जैसी मुद्रा रहती है. नायिका परवीन बाबी है. उसे फिल्म में सिर्फ खूबसूरत दिखाना था. इस में उस ने कोई कमी नहीं आने दी. एक बच्ची (पिंकी) के माध्यम से अमर का हृदय परिवर्तन होता है. लेकिन इस बच्ची द्वारा बोले गए बड़ेबड़े संवाद कहीं भी स्वाभाविक नहीं लगते.

फिल्म में असरानी, घूमल व अपर्णा चौधरी की एक अलग उपकथा भी है, जो सिवा फूहड़ता के और कुछ नहीं है. राकेश रोशन, अजीत, रणजीत, मनमोहन, बिंदु आदि सभी कलाकार अपने जानेमाने रूपों में हैं. सामान्य बंबईया मारपीट को कुंग फू व कराटे के नाम पर प्रस्तुत करने की एक बेकार कोशिश की गई है.

गीतसंगीत व निर्देशन पूरी तरह स्तरहीन है. जाल मिस्त्री का छायांकन ही फिल्म की एकमात्र विशेषता है. इस फिल्म से राजेश खन्ना को अपने फिल्मी पुनर्जन्म की आशा थी लेकिन ऐसी ही उस की दोतीन फिल्में यदि और आ गईं तो उसे हमेशा के लिए डूबने से कोई नहीं बचा सकता.

○ दिल और पत्थर

निर्माता : मीना मूवीज
पटकथा निर्देशक : कनक मिश्रा
मुख्य कलाकार : संजीवकुमार, योगिता बाली, रणजीत, मीना शर्मा, जगदीप, आगा, मुकरी.

एक्शन फिल्मों का एक नया दौर शुरू हो जाने के बाद अधिकांश हिंदी फिल्में प्रतिशोधात्मक विषयों पर बनने लगी हैं. 'दिल और पत्थर' भी इसी परंपरा की एक फिल्म है, जिस में जानेपहचाने फार्मूलों को बेहद उबाऊ ढंग से प्रस्तुत

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

शीप-मालिकाएं झिलमिलाएं··· लोगों के जीवन में प्रकाश और खुशियां फैलाएं··· उनके दिलों में आशाओं की ज्योति जगाएं· सुख-समृद्धि लाएं!

स्टेट बैंक उनकी सुख-समृद्धि के स्वप्न को साकार करने में सहायक बन रहा है

देश के सबसे बृहत् बैंक के रूप में स्टेट बैंक हर कदम पर आपका सहयोगी है

देश-भर में फैले हमारे 4,800 से भी अधिक कार्यालयों में से एक न एक कार्यालय आपके घर के नजदीक भी होगा ही है न सुविधाजनक।

स्टेट बैंक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रेकोल्ड

की श्रेष्ठ उपकरणों की बड़ी श्रृंखला में से अपना मन पसंद चुनाव कीजिये

वाटर हीटर, आटो वोल्टसटेब, आटो आयरन, वाशिंग मशीन, हेयर ड्रायर, मिक्सर—सभी चमकदार और सूक्ष्म अभियांत्रिकी निर्मित हैं।

रेकोल्ड के उत्तम उपकरणों की अनुपस्थिति में आपका घर पूर्ण कैसे हो सकता है।

बेहतर जीवन के लिए रेकोल्ड उपकरणों में से मनपसंद का चुनाव करें।

आज..... सदैव.

बेंकिंग ओवन

आटो वोल्टसटेब

वाशिंग मशीन

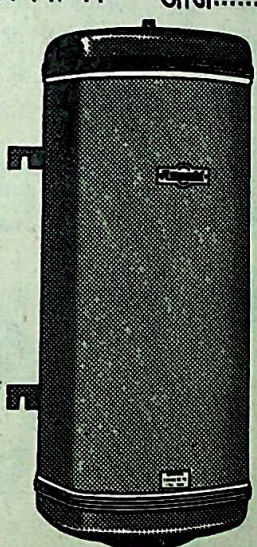

(रजि० डिजा० न० 114832)

हेयर ड्रायर

मिक्सर-कम-ग्राइंडर

प्रिया आटो आयरन

graphisads/R/266

रेकोल्ड एप्लायंसेज प्रा० लि०

वंदना, 11वीं मंजिल, 11 टॉलस्टाय मार्ग,
नयी दिल्ली-110001 फोन : 42377, 40511, 40656
बम्बई आफिस नं० 17 प्रथम पस्ता लेन, कोलाबा, बम्बई-400005
पंजीकृत कार्यालय : रेकोल्ड कंपाउंड, बम्बई-पूना रोड, पिंपरी, पुणे 411018

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया गया है.

सैनिक पृथ्वी सिंह युद्ध में भाग लेने जाता है. पीछे से ठाकुर रणबीर सिंह (रणजीत) उस की पत्नी रोहिणी (योगिता) के साथ बलात्कार कर उस की हत्या कर देता है. गांव लौट कर पृथ्वी सिंह कसम खाता है कि वह अपनी पत्नी के हत्यारे से बदला लेगा. घोड़े पर बैठ कर वह निहत्था ही गांवगांव घूमना शुरू कर देता है. हालांकि उसे यह भी पता नहीं होता कि उस की पत्नी की हत्या किस ने की. विभिन्न तर्कहीन संयोगों की मदद से नायक की कसम 15 रीलों की समाप्ति तक पूरी भी करवा दी जाती है.

फिल्म में डाकू भी हैं और खाना-बदोश कबीले भी. झूठी आन के सहारे जीने वाली ठकुराइन है और बेहद धार्मिक किस्म के ठाकुर भी हैं जो रोज बाकायदा जलूस निकाल कर गांव से गुजरते हैं. लेकिन पूरी फिल्म में कहीं भी तालमेल नजर नहीं आता. कहानी जमुना नदी के किनारे बसे [illegible] की है लेकिन अधिकांश फिल्म राजस्थान के रेगिस्तानी गांवों में ही घूमती रहती है.

फिल्म के रंग कई जगह उड़े हुए हैं. इसी से लगता है कि फिल्म को पूरा होने में एक अरसा लग गया होगा. कहानी का कोई सूत्र न जुड़ पाने की यह भी एक वजह हो सकती है.

फिल्म हर दृष्टि से नीरस है. संजीव-कुमार जैसा कलाकार भी इस फिल्म में बेबस सा हो कर रह गया है. योगिता बाली को तो मौका ही नहीं मिला. मीना शर्मा फिल्म की नायिका है लेकिन अभिनय से उस का दूर तक कोई रिश्ता नजर नहीं आता. रणजीत नाटकीय है. आगा, मुकरी व जगदीप का हास्य बेतुकेपन की वजह से पैबंदनुमा लगता है.

कैफी आजमी का केवल एक गीत 'यही है जमीं आसमां' प्रभावित करता है. शेष सात गीत केवल ऊब पैदा करते हैं. फिल्म के प्रत्येक दृश्य पर निर्देशक की पकड़ ढीली रही है. तकनीकी दृष्टि से तो फिल्म पूरी तरह से शून्य है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मसूड़ों में तकलीफ़ की पहली निशानियाँ

प्लाक (Plaque)
दाँतों और मसूड़ों पर हमेशा जमती रहनेवाली अदृश्य परत, जिसे साफ़ न किया जाय तो प्लाक के कारण टारटार जम जाता है।

टारटार (पपड़ी)
दाँतों की जड़ की ओर जमी हुई पपड़ी से मसूड़ों में सूजन और तकलीफ़... बाद में मसूड़ों व हड्डियों के सिकुड़ने से दाँत गिर भी सकते हैं।

मसूड़ों से ख़ून
कमज़ोर और खोखले मसूड़ों को ब्रश से साफ़ करते समय ख़ून निकल सकता है। इससे दर्द भले ही न हो फिर भी कई गंभीर समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

दाँतों के डॉक्टर कहते हैं:

नियमित रूप से, ब्रश से दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश कीजिए, मसूड़ों की तकलीफ़ और दाँतों की सड़न से दूर रहिए.

दाँतों की सही देखभाल के लिए हर रात और सवेरे अपने दाँतों की सही ढंग से सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश के लिये फोरहॅन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल कीजिये। साथ ही फोरहॅन्स डबल-एक्शन टूथब्रश इस्तेमाल कीजिये क्योंकि यह दाँतों की सफ़ाई और मसूड़ों की मालिश के लिये ख़ास तौर से बनाया गया है।

मसूड़े ख़राब तो तन्दुरुस्ती ख़राब

मुफ़्त! "आपके दाँतों और मसूड़ों की रक्षा" दाँतों की देखभाल सम्बन्धी रंगीन सूचना-पुस्तिका। डाक-ख़र्च के लिये २० पैसे के टिकट साथ भेजकर इस पते पर लिखिये: फोरहॅन्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बॅग नं. ११४६३, डिपार्टमेंट P-121-180 बम्बई-४०० ०२० अपनी पसंद की भाषा अवश्य लिखिये।

फोरहॅन्स
दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

180F-172 R HN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्तिगत विज्ञापन

वैवाहिक विज्ञापन

वधू के लिए

21 वर्षीया, ब्राह्मण, पोस्ट ग्रेजुएट, 157 सें. मी., सुंदर, सुशील, गृहकार्यों में निपुण, उच्च व्यावसायिक संपन्न परिवार की कन्या हेतु उपयुक्त ब्राह्मण वर चाहिए. सनाढ्य अथवा गौड़ ब्राह्मण को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 6946, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 व 25 वर्षीया, सिंधी कन्याओं के लिए उचित, मध्यम वर्गीय, सरकारी कार्यरत या निजी व्यापारी सिंधी वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 6999, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, अग्रवाल सिंघल, बी.ए. (शिक्षारत), सुशील, गौरवर्ण, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष, प्रतिष्ठित परिवार की कन्या हेतु सजातीय, अधिकारी, डाक्टर, इंजीनियर अथवा व्यावसायिक कार्यरत योग्य वर चाहिए. उत्तम व शीघ्र विवाह. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 7000, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, पंजाबी, एम. ए. कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 7001, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, अग्रवाल, एम. ए., सर्वगुण संपन्न, सुंदर कन्या हेतु मध्य प्रदेश निवासी वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 7002, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, क्रिश्चियन, 160 सें. मी. लंबी, जूनियर इंजीनियर, सरकारी सेवारत कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर या अफसर वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7003, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, राजस्थान निवासी, संपन्न ब्राह्मण, हायर सैकंडरी पढ़ रही, सिलाई, गृहकार्य निपुण, सुंदर कन्या हेतु सुयोग्य ब्राह्मण वर चाहिए. पूर्ण विवरण लिखें : वि. नं. 7004, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रीय, एम. बी. बी. एस. डाक्टर, उत्तर प्रदेशीय शासकीय सेवारत, अति सुंदर, 28, गौरवर्ण कन्या हेतु डाक्टर वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7005, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, प्रतिष्ठित परिवार की बी. ए. एलएल. बी., 153 सें. मी., सुंदर, साफ गेहुआं वर्ण, कार्यरत कन्या के लिए सुयोग्य वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7006, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, महाराष्ट्रीयन, स्नातक, स्वस्थ कन्या हेतु 30 वर्षीय, सेना अथवा सिविल अधिकारी वर की आवश्यकता है. महाराष्ट्रीयन को प्राथमिकता.

लिखें: वि. नं. 7007, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, पंजाबी, बी. एससी., 152 सें. मी., गौरवर्ण कन्या के लिए सुयोग्य स्वावलंबी वर की आवश्यकता है. उपजाति नगण्य. दहेज नहीं. लिखें: वि. नं. 7008, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, उच्च क्षत्रीय परिवार, स्नातक, एम. बी. बी. एस. उत्तीर्ण, 158 सें. मी., सुंदर कन्या हेतु क्षत्रीय या समकक्ष परिवार का डाक्टर, राजपत्रित अधिकारी अथवा अन्य कोई उच्च पदस्थ वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 7009, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, राजपूत, शिक्षा हाई स्कूल, बी. टी. सी. राजस्थान में अध्यापिका, मासिक वेतन 400 कन्या हेतु बारोजगार वर की आवश्यकता है. राजस्थान में कार्यरत को प्राथमिकता. जाति एवं दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7010, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, ब्राह्मण, एम. ए. बी. एड., गौरवर्ण, कन्या हेतु वर चाहिए. कान्यकुब्ज ब्राह्मण को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं. 7011, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, हिंदू, एम. ए., शाकाहारी कन्या हेतु योग्य, कार्यरत, हिंदू वर की आवश्यकता है. जाति, प्रांत का बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7012, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, सनाढ्य ब्राह्मण, एम. ए., गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 7013, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम. ए., सुंदर, मिडिल स्कूल अध्यापिका हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7014, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, राजपूत, एम. ए., सुंदर कन्या के लिए योग्य सुशिक्षित वर चाहिए. कोई बंधन नहीं. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 7015, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 व 24 वर्षीया, भारद्वाज गोत्रीय कान्यकुब्ज, एम. ए. बी. टी., एम. ए. शोध छात्रा, सुंदर, सुशील, गृहकार्य में कुशल दो कन्याओं हेतु डाक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, लेक्चरर, गजटेड अफसर वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 7016, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, पंजाबी, (कश्यप राजपूत), शिक्षित परिवार, ग्रेजुएट, अध्यापिका, सांवला रंग, आकर्षक, गृहकार्य में दक्ष अविवाहित कन्या हेतु सुयोग्य, शिक्षित, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7017, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, मौर्य वंशीय, शिक्षित, सुंदर, गृहकार्य में दक्ष कन्या के लिए वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7018, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, कान्यकुब्ज, ब्राह्मण, उच्च कुलीन,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एम. ए. बी. एड., गौरवर्ण, 152 सें. मी., कार्यरत प्रवक्ता कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, कार्यरत वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 7019, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, बी. ए., 162 सें. मी. लंबी, सुंदर, गौरवर्ण, पेंटिंग एवं गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य एवं सजातीय वर चाहिए. शीघ्र एवं उत्तम विवाह. लिखें: वि. नं. 7020, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23½ वर्षीया, विश्वकर्मा (लोहार), एम. ए. द्वितीय वर्ष, कद 147 सें. मी., स्वस्थ, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु शाकाहारी, सुयोग्य वर चाहिए. कृपया प्रथम बार में ही सत्य और संपूर्ण विवरण शीघ्र ही जन्मपत्री सहित लिखें: वि. नं. 7021, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, बंगाली, बी. ए. बी. एड., राजस्थान सरकार सेवारत अध्यापिका, वेतन 600 रुपए हेतु बंगाली, सुयोग्य वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7022, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, एम. ए. इंगलिश बी. एड., कद 155 सें. मी., सुंदर कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7023, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½ वं 25 वर्षीया, कान्यकुब्ज उपमन्यु गोत्र, क्रमश: एम. ए. व एम. ए. (प्रथम वर्ष), कद 157 सें. मी. कन्याओं हेतु योग्य वर चाहिए. पिता केंद्रीय सरकार, पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग में सीनियर एक्जीक्यूटिव. लिखें: वि. नं. 7024, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, पंजाबी क्षत्री, बी. एससी. एम. एड., कद 165 सें. मी., गेहुआं रंग, सुंदर, गुणवती, सरकारी सेवारत, तलाकशुदा कन्या हेतु पढ़ालिखा, अच्छी नौकरी वाला वर चाहिए जो घरजवाई बन सके. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7025, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, कश्यप कहार, एम. ए. बी. एड., अध्यापन कार्यरत, सांवला रंग, आकर्षक, गृहकार्य एवं संगीत में दक्ष, तलाकशुदा कन्या हेतु वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7026, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, अग्रवाल, हायर सैकंडरी, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु योग्य, सुशील एवं कार्यरत वर की आवश्यकता है. लिखें: वि. नं. 7027, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, माहेश्वरी, संपन्न परिवार की, एम. ए. अर्थशास्त्र, 152 सें. मी., सुंदर कन्या हेतु सजातीय, उच्च पदस्थ या व्यवसायरत वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि. नं. 7028, सरिता, नई दिल्ली-110055.

19 वर्षीया, माहेश्वरी, संपन्न परिवार की, बी. ए. अध्ययनरत, 163 सें. मी. सुंदर कन्या हेतु सजातीय, उच्च पदस्थ या व्यवसायरत वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि. नं. 7029, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 तथा 19 वर्षीया, कहार, क्रमशः स्नातिका, गृह विज्ञान डिप्लोमाधारी कन्याओं हेतु सजातीय, सुशिक्षित वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7030, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, गौड़ ब्राह्मण, एम. एससी. एलएल. बी., 162 सें. मी. गौरवर्ण, सुंदर, स्लिम, गृहकार्य दक्ष, मंगली कन्या हेतु उच्च पदस्थ, मंगली, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7031, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 व 18 वर्षीया, सोलंकी राजपूत, क्रमशः बी. ए. व हायर सैकंडरी में पढ़ रही, राजस्थान निवासी कन्याओं हेतु कार्यरत वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 7032, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, गोयल, एम. ए., 157 सें. मी., गेहुआं रंग, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7033, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, प्रतिष्ठित खत्री (खुखरेन) परिवार की बी. ए. बी. एड., कद 160 सें. मी., साफ गेहुआं रंग, घरेलू कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक अथवा व्यावसायिक कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7034, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24½ वर्षीया, स्वर्णकार, एम. ए. बी. एड., गौरवर्ण, सुंदर, सुशील कन्या हेतु योग्य डाक्टर, इंजीनियर अथवा अफसर वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. लिखें: वि. नं. 7035, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, मध्य प्रदेशीय, बी. एससी., 163 सें. मी., सुंदर, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु सजातीय (जैसवाल, शिवहरे, चौकसे राय) डाक्टर, इंजीनियर, व्यापारी वर चाहिए. अच्छी एवं शीघ्र शादी. लिखें: वि. नं. 7036, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, सरयूपारीण ब्राह्मण, एम. ए. बी. एड., शिक्षिका, 170 सें. मी., आकर्षक कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7037, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, बीसा अग्रवाल, डाक्टर, लंबा कद, गौरवर्ण, आकर्षक, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, डाक्टर या गैर डाक्टर वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7038, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, पंजाबी, एम. एससी. बी. एड. कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. लिखें. वि. नं. 7039, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 21 वर्षीया बहनों हेतु कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7040, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल बंसल, 20. स्नातक, विधि स्नातक अध्ययनरत, 160 सें. मी., साफ गेहुआं रंग कन्या के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए सुयोग्य वर चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी. लिखें : वि. नं. 7041, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, दरभंगा जिले के सुप्रतिष्ठित मैथिल ब्राह्मण परिवार की इंटरमीडिएट (फाइनल वर्ष), सुंदर, सुसंस्कृत कन्या के लिए सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7042, सरिता, नई दिल्ली-110055.

18 वर्षीया, जैन, बी. ए. द्वितीय वर्ष अध्ययनरत, गेहुआं साफ रंग, लंबी, अच्छे नाकनक्श, इकहरा बदन कन्या हेतु शिक्षित, विचारवान, बारोजगार, शाकाहारी वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. अच्छा विवाह. प्रथम बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि. नं. 7043, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, पंजाबी, एम. ए. बी. एड., 155 सें. मी. कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7044, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, मध्य प्रदेशीय, साइंस स्नातक, सुंदर कन्या के लिए सुयोग्य, सुशिक्षित वर चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7045, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीया, ब्राह्मण, लेफ्टिनेंट (एम. एन. एस.) भारतीय सेना, गौरवर्ण, गृहकार्य में दक्ष कन्या हेतु सजातीय, सिविलियन या आर्मी अफसर वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 7046, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, अग्रवाल गर्ग गोत्र, एम. एससी., इकहरा बदन, 149 सें. मी., सुंदर कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य, कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7047, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, एम. ए. बी.एड., कार्यरत शिक्षिका कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए लिखें : वि. नं. 7048, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीया, ओसवाल जैन, गौरवर्ण, सौम्य, स्लिम, लेक्चरर कन्या हेतु प्रतिष्ठित योग्य वर चाहिए. सजातीय को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं. 7056, सरिता, नई दिल्ली–110055.

32 वर्षीया, निगम, उत्तर प्रदेशीय, सुशील, गृहकार्य दक्ष कन्या हेतु कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि. नं. 7057, सरिता, नई दिल्ली–110055.

26 वर्षीया कान्यकुब्ज ब्राह्मण, बी. एससी. एम. ए. (इक्नोमिक्स), बी. एड., इंडियन टेलीफोन इंडस्ट्री पर्सनल डिपार्टमेंट में कार्यरत. मासिक 600, सांवली, सुशील, सुंदर नाकनक्श, गृहकार्य, में निपुण कन्या हेतु लखनऊ के आसपास नियुक्त, पूर्णतः आत्म-निर्भर वर चाहिए. दहेज बंधन नहीं. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 7058, सरिता, नई दिल्ली–110055.

25 वर्षीया,पंजाबी अरोरा (मुल्तानी), बी. ए. बी. एड., मांगलिक, गृहकार्य में दक्ष, सुंदर, सुशील कन्या हेतु मांगलिक वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 7059, सरिता, नई दिल्ली–110055.

32 वर्षीया, ब्राह्मण, स्नातकोत्तर, राजस्थान में अध्यापिका हेतु योग्य जीवनसाथी अपेक्षित. सर्वोत्तम विधुर उच्च अधिकारी को प्राथमिकता. लिखें : वि. नं. 7097, सरिता, नई दिल्ली–110055.

वर के लिए

31 वर्षीय, महाराष्ट्रीयन, 164 सें. मी., इकहरा बदन, आकर्षक व स्मार्ट, निजी मकान, बंबई में केंद्रीय प्रथम श्रेणी सेवारत, मासिक आय 1700 इंजीनियर युवक हेतु 25 वर्षीया या कम उमर की, स्लिम, सुंदर कन्या चाहिए. जाति बंधन नहीं. संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 7049, सरिता, नई दिल्ली–110055.

26 वर्षीय, आयुर्वेदिक मेडिकल (बी.ए.एम.एस.) कानपुर यूनिवर्सिटी पांचवें वर्ष के छात्र हेतु राजपूत, गौरवर्ण, सुंदर वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 7050, सरिता, नई दिल्ली–110055.

26 वर्षीय, कान्यकुब्ज, संपन्न परिवार, स्वस्थ, सुंदर, व्यापाररत वर हेतु सजातीय, सुंदर, गृहकार्य निपुण कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 7051, सरिता, नई दिल्ली–110055.

31 वर्षीय, ओसवाल, एम. एससी., निजी फैक्ट्री युवक हेतु वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 7052, सरिता, नई दिल्ली 110055.

31 वर्षीय, प्रतिष्ठित माहेश्वरी परिवार के इंजीनियर, 165 सें.मी., स्लिम, अमरीका में कार्यरत, मासिक आय पांच अंकों में, आत्मनिर्भर, संपन्न युवक हेतु माहेश्वरी अग्रवाल परिवार की 20-29 वर्षीया, सुयोग्य, सुशील, स्वस्थ, सुंदर, सुसंस्कृत, निपुण, शिक्षित (अंगरेजी में बात कर सके व अमरीका शीघ्र जाने को तैयार) कन्या चाहिए. विवाह हिंदुस्तान में जनवरी/फरवरी, 1979 में. दहेज बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7053, सरिता, नई दिल्ली–110055.

34 वर्षीय, गुप्ता वैश्य, जन्मस्थान मध्य प्रदेश, डबल एम.ए., बांबे डाइंग में कार्यरत, बंबई में पर्सेट, मासिक आय 700 रुपए, चार भाषाओं के ज्ञाता, स्वस्थ एवं प्रगतिशील दृष्टिहीन युवक हेतु सलोनी, विनम्र वधू चाहिए. जाति, दहेज बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7054, सरिता, नई दिल्ली–110055.

28 वर्षीय, राजस्थान निवासी, एम. काम., 170 सें. मी., राजकीय सेवारत, मासिक आय 500 रुपए युवक हेतु योग्य, सुशील, ग्रेजुएट कार्यशील, महाराष्ट्रीयन कन्या चाहिए. शीघ्र विवाह. प्रथम बार में संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 7055, सरिता, नई दिल्ली–110055.

25 वर्षीय, ग्वालियर निवासी, प्रतिष्ठित सनाढ्य चतुर्वेदी परिवार के आयुर्वेदाचार्य में पढ़ रहे, निजी व्यापार, मासिक आय 1400 से 1600 तक युवक के लिए शिक्षित, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7060, सरिता, नई दिल्ली–110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

27 वर्षीय, दिगंबर जैन, स्वस्थ, सुंदर, इंजीनियर, म. प्र. सिंचाई विभाग में एस. डी. ओ. के लिए सुंदर कन्या चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 7061 सरिता, नई दिल्ली–110055.

30 वर्षीय, मुसलिम, प्रवक्ता, वेतन 850 युवक हेतु सुंदर, गौरवर्ण वधू चाहिए. पेंटिंग विषय में उच्च शिक्षा प्राप्त कन्या को प्राथमिकता. कोई बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7062, सरिता, नई दिल्ली–110055.

25 वर्षीय, अग्रवाल, साइंटिफिक अफसर (भाभा ट्रांबे), बंबई में निजी निवास, आय चार अंकों में युवक हेतु सजातीय, विज्ञान स्नातक/स्नातकोत्तर, सुंदर, गृहकार्य दक्ष कन्या अपेक्षित. लिखें : वि. नं. 7063, सरिता, नई दिल्ली–110055.

24 वर्षीय, जायसवाल गुप्ता, एम.डी. (अध्ययनरत), 174 सें. मी., मध्यम परिवार के डाक्टर हेतु लंबी, सुंदर, शिक्षित, मैडिको वधू चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7064, सरिता, नई दिल्ली–110055.

27 वर्षीय, राजपूत, 165 सें. मी., मेडिकल अफसर हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 7065, सरिता, नई दिल्ली–110055.

25 वर्षीय, राजपूत चौहान (राजस्थानी), दिल्ली निवासी, ग्रेजुएट, 170 सें. मी., राष्ट्रीयकृत बैंक में कार्यरत, अच्छी आय हेतु सुंदर, शिक्षित, गृहकार्य में निपुण वधू चाहिए. कन्या के गुणों को प्राथमिकता. शीघ्र सविवरण लिखें : वि. नं. 7066, सरिता, नई दिल्ली–110055.

25 वर्षीय, खंडेलवाल (वैश्य), मांगलिक दिल्ली विश्वविद्यालय लेक्चरर हेतु सजातीय, शिक्षित वधू चाहिए. पारिवारिक सदस्य निजी व्यापार में. लिखें : वि. नं. 7067, सरिता, नई दिल्ली–110055.

49 वर्षीय, देहली सुस्थापित, स्नातकोत्तर, स्मार्ट, स्नेही, परित्यक्त, एकाकी, पंजाबी हेतु वधू चाहिए. धर्म, प्रदेश बंधन नहीं. संतान स्वीकार्य. लिखें: वि. नं. 7068, सरिता, नई दिल्ली–110055.

26 वर्षीय, सिख, संपन्न, प्रतिष्ठित, बिजनेसमैन, 162 सें. मी., मासिक आय चार अंकीय युवक हेतु सुंदर, सुशील, शिक्षित कन्या चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7069, सरिता, नई दिल्ली–110055.

32 वर्षीय, पंजाबी अरोड़ा, 164 सें. मी., 75 कि.ग्रा., 1700 रुपए वेतन पाने वाले अविवाहित इंजीनियर हेतु सुंदर कन्या चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 7070, सरिता, नई दिल्ली–110055.

35 वर्षीय, श्रीवास्तव, गजटेड अफसर मध्य प्रदेश, अविवाहित हेतु लेक्चरर, मैडिको, अच्छी सर्विस वाली कायस्थ कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7071, सरिता, नई दिल्ली–110055.

39 वर्षीय, क्षत्रिय राजपूत, आकर्षक व्यक्तित्व, 165 सें. मी., उत्तर प्रदेशीय सेवारत, मासिक आय 600 रुपए, परित्यक्त हेतु शिक्षित, परित्यक्ता, विधवा/कुमारी युवती चाहिए. अंतर्जातीय भी मान्य. लिखें : वि. नं. 7072, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, कुर्मी क्षत्रिय, मेडिकल ग्रेजुएट (बी. ए. एम.एस.), प्राइवेट प्रैक्टिस में संलग्न, अच्छी आय वाले युवक हेतु योग्य कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7073, सरिता, नई दिल्ली–110055.

21 वर्षीया, विश्वकर्मा (बढ़ई), रेलवे में सहायक स्टेशन मास्टर हेतु सुंदर, सुशिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 7074, सरिता, नई दिल्ली–110055.

24 वर्षीय, पंजाबी खत्री, कद 167 सें. मी., निजी व्यवसाय, मासिक आय 2500 रु. तक के लिए सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7075, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, सरयूपारीण ब्राह्मण, स्नातक, शिक्षक मध्य प्रदेश शासन, मासिक 400 हेतु वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 7076, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, सारस्वत ब्राह्मण, एम. ए. बी. एड., शासकीय सेवारत युवक के लिए वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 7077, सरिता, नई दिल्ली–110055.

42 वर्षीय, कीनिया में बसे हुए, स्वस्थ, सुंदर, 172 सें. मी., कलाकार, तलाकशुदा अधिकारी के लिए 30-35 वर्षीया, हिंदू, ललितकला कुशल वधू चाहिए. युवती कला और मानवता के लिए सेवा-परायण व त्यागमयी हो. जाति, प्रांत, दहेज [illegible] नहीं. लिखें : श्री विजय अरुण, पो. बाक्स 44162, नैरोबी, कीनिया.

24 वर्षीय, सौम्य, संपन्न व्यवसायी युवक हेतु सजातीय वधू चाहिए. उपजातीय बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7078, सरिता, नई दिल्ली–110055.

24 वर्षीय, संपन्न एवं प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार के एम. ए., 170 सें. मी., निजी औद्योगिक व्यवसाय में कार्यरत, आकर्षक व्यक्तित्व वाले युवक के लिए सुशिक्षित, अति सुंदर नाकनक्श, गौरवर्ण, सजातीय वधू चाहिए. दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 7079, सरिता, नई दिल्ली–110055.

25 वर्षीय, गौड़ ब्राह्मण, डाक्टर (बी. ए. एम. एस.), आंशिक पोलियो युवक हेतु सुंदर, सुयोग्य वधू चाहिए. दहेज व जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7080, सरिता, नई दिल्ली–110055.

26 वर्षीय, खत्री, गौरवर्ण, आकर्षक, व्यवसायरत, मासिक आय 3000, बचपन की चोट से बायां हाथ, पैर कमजोर अपंग युवक हेतु गृहकार्य में निपुण, सुशील, सुंदर, नर्स, अनाथ, निस्संतान विधवा, परित्यक्ता वधू चाहिए. जाति बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7081, सरिता, नई दिल्ली–110055.

24 वर्षीय, अग्रवाल, सिंघल गोत्र, एम. एससी. पीएच. डी., अंतिम वर्ष, कद 180 सें. मी., सुंदर, स्मार्ट, अपना मोटर व्यवसाय हेतु प्रतिष्ठित परिवार की अति सुंदर, लंबी, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, शिक्षि-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षित कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7082, सरिता, नई दिल्ली–110055.

22 वर्षीय, गुजराती वैश्य पोड़वाल, बी. काम., 162 सें. मी., निजी कास्मेटिक फैक्ट्री कलकत्ता, युवक हेतु गुजराती या अग्रवाल वैश्य, शाकाहारी, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7083, सरिता, नई दिल्ली–110055.

34 वर्षीय, पंजाबी, अपना मकान एवं जमीन, शासकीय सेवारत, मासिक आय 850, निसंतान विधुर के लिए निसंतान विधवा, तलाकशुदा अथवा अविवाहित जीवनसाथी चाहिए. जाति बंधन और दहेज नहीं. लिखें : वि. नं. 7084, सरिता, नई दिल्ली–110055.

25 वर्षीय, श्वेतांबर जैन, ग्रेजुएट इंजीनियर, केंद्रीय सरकार सेवारत, 164 सें. मी., सुंदर, आकर्षक युवक हेतु अति सुंदर, सुशील, सजातीय कन्या चाहिए. शीघ्र परिणाम हेतु संपूर्ण विवरण सहित लिखें : वि. नं. 7085, सरिता, नई दिल्ली–110055.

35 वर्षीय, सिख, दिल्ली निवासी, सरकारी कर्मचारी, मासिक 550 रुपए, कुल मिला कर आय 750 रुपए, सभी कार्य करने में समर्थ (अपंग) युवक हेतु कन्या चाहिए. विधवा, जाति, दहेज बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 7086, सरिता, नई दिल्ली–110055.

22 वर्षीय, संपन्न बीसा अग्रवाल, कांछल गोत्र, 7 सें. मी., इंजीनियर, गौरवर्ण, स्वस्थ, सुंदर, स्मार्ट, सेल्समैन युवक हेतु अति सुंदर, सुशिक्षित, सुशील, गृहकार्य में दक्ष, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 6922, सरिता, नई दिल्ली–110055

26 वर्षीय, संपन्न, जाट परिवार पश्चिमी उत्तर प्रदेश, 178 सें. मी., आकर्षक, एडवोकेट, अच्छी आय, अपना नर्सिंग होम चलाने में इच्छुक नवयुवक हेतु सुंदर, एम. बी. बी. एस. वधू चाहिए. दहेज, जाति प्रांत बंधन नहीं. लिखें : वि. नं. 6970, सरिता, नई दिल्ली–110055.

वधू व वर के लिए

उत्तर प्रदेशीय कायस्थ श्रीवास्तव (दूसरे), 23 वर्षीया, एम. ए. बी. लिब. 157 सें. मी., गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, गृहकार्य दक्ष कन्या तथा 26 वर्षीय, केंद्रीय सरकार में सेवारत (सब इंस्पेक्टर), 165 सें. मी., स्वस्थ गौरवर्ण युवक हेतु सजातीय, सुयोग्य वर-वधू चाहिए. लिखें : वि. नं. 7087, सरिता, नई दिल्ली–110055.

बी.ए. एम. ए., बहुमुखी प्रतिभावान, सितार, सिलाई, कढ़ाई, पेंटिंग, होम्योपैथिक डिप्लोमा प्राप्त, गौरवर्ण, सुंदर, आकर्षक कन्याओं हेतु 30-38 वर्षीय, कार्यरत संभ्रांत कान्यकुब्ज युवकों की आवश्यकता है तथा इन के भाई बी. ए., निजी एयरकंडीशनर रेफ्रिजरेशन का कारखाना, आकर्षक व्यक्तित्व हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. कुंडली सहित लिखें : वि. नं. 7088, सरिता, नई दिल्ली–110055.

21 वर्षीया, बंसल गोत्र, बी. ए., 155 सें. मी., गृहकार्य दक्ष, उच्च परिवार हेतु वर चाहिए. 23 वर्षीय, बी. काम., 168 सें. मी., निजी व्यवसाय आय पांच अंकों में भाई हेतु वधू चाहिए. लिखें वि. नं. 7089, सरिता, नई दिल्ली–110055.

22 वर्षीया, समाढ्य ब्राह्मण, मध्य प्रदेशीय, ग्रेजुएट, योग्य, मांगलिक कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें : वि. नं. 7090, सरिता, नई दिल्ली–110055.

28 वर्षीय, समाढ्य ब्राह्मण, जबलपुर मध्य प्रदेशीय, ग्रेजुएट, सामाजिक कार्यकर्त्ता, व्यवसायी युवक हेतु सजातीय कन्या चाहिए. लिखें : वि. नं. 7091, सरिता, नई दिल्ली–110055.

22 वर्षीय, यादव, बी.एस.सी. डी. एच. बी. युवक के लिए सुंदर, एम. बी. बी. एस. या आयुर्वेदिक रत्न कन्या की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 7092, सरिता, नई दिल्ली–110055.

16 वर्षीया, सुंदर, शिक्षित कन्या के लिए वर की आवश्यकता है. लिखें : वि. नं. 7093, सरिता, नई दिल्ली–110055.

गोद विज्ञापन

संपन्न अग्रवाल डाक्टर दंपती छोटा बालक गोद लेने के इच्छुक हैं. लिखें : वि. नं. 7094, सरिता, नई दिल्ली–110055.

रिक्त स्थान

घर व बच्चों की देखभाल के लिए 35-40 वर्षीया, निसंतान परित्यक्ता, विधवा पंजाबी महिला चाहिए. लिखें : वि. नं. 7096, सरिता नई दिल्ली–110055.

विज्ञापनदाताओं के लिए

सरिता में वैवाहिक, गोद व अन्य व्यक्तिगत विज्ञापनों की दर 1 रुपया 25 पैसे प्रति शब्द है. अंगरेजी पाक्षिक कैरेवान में 25 पैसे प्रति शब्द और वूमंस ईरा में 25 पैसे प्रति शब्द. यदि सरिता के साथसाथ वही विज्ञापन कैरेवान अथवा वूमंस ईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो उस के लिए केवल 15 पैसे प्रति शब्द अतिरिक्त देना होगा यानी केवल 1 रुपया 40 पैसे प्रति शब्द. सरिता के साथसाथ यदि वही विज्ञापन कैरेवान और वूमंसईरा में भी प्रकाशित कराया जाए तो 10 पैसे प्रति शब्द अतिरिक्त देना होगा यानी 1 रुपया 50 पैसे प्रति शब्द.

मूल विज्ञापन के साथ "लिखें : वि. नं.– सरिता, नई दिल्ली-110055" 6 शब्दों का मूल्य आवश्यक है. विज्ञापनदाता के "निजी पते वाले" व "फोटो सहित" शब्द वाले विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते.

पूर्ण विवरण के लिए इस पते पर लिखें : विज्ञापन विभाग, सरिता, 3 ई, नई झांसी रोड, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

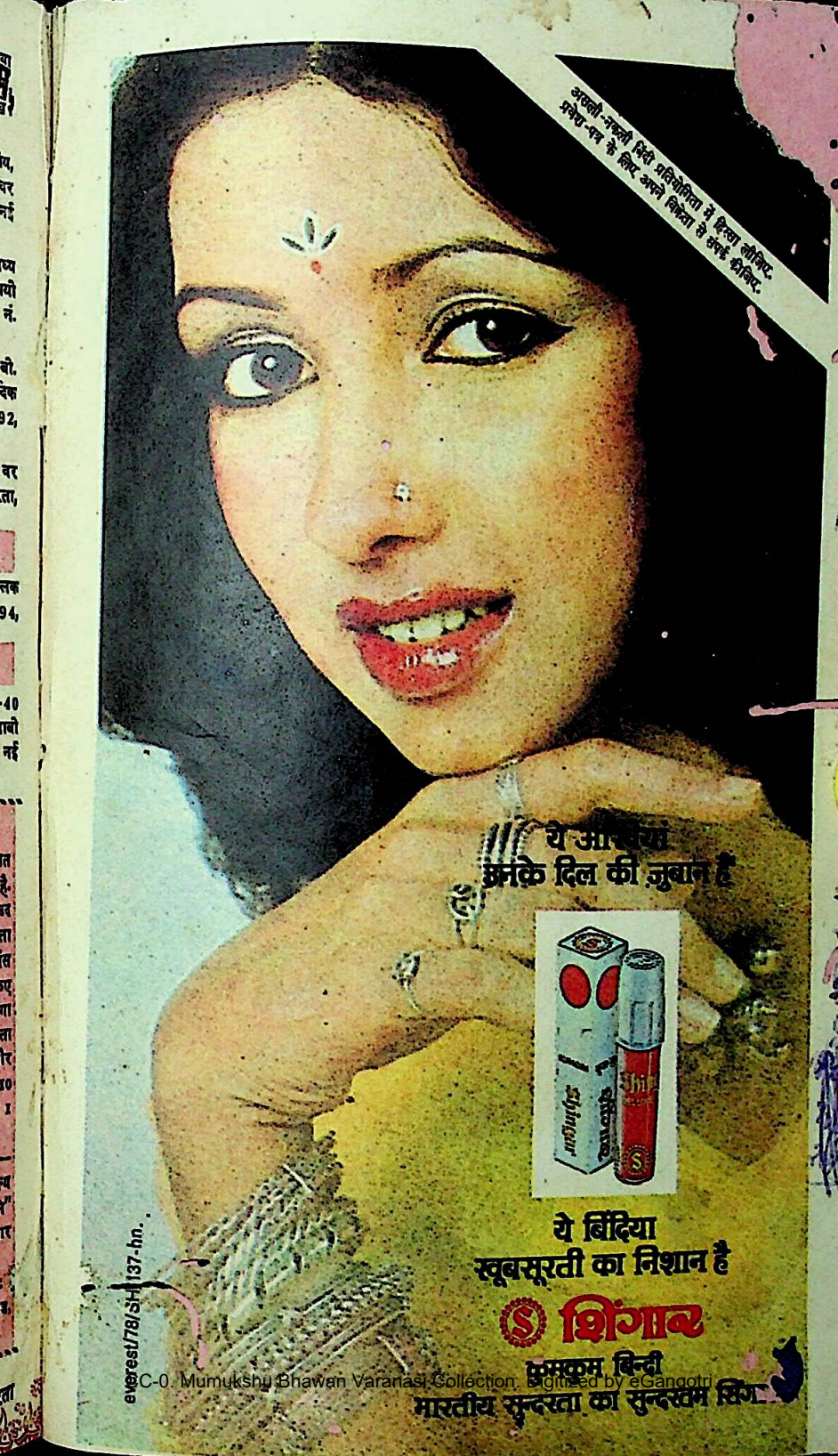

everest/78/sh/137-hn.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

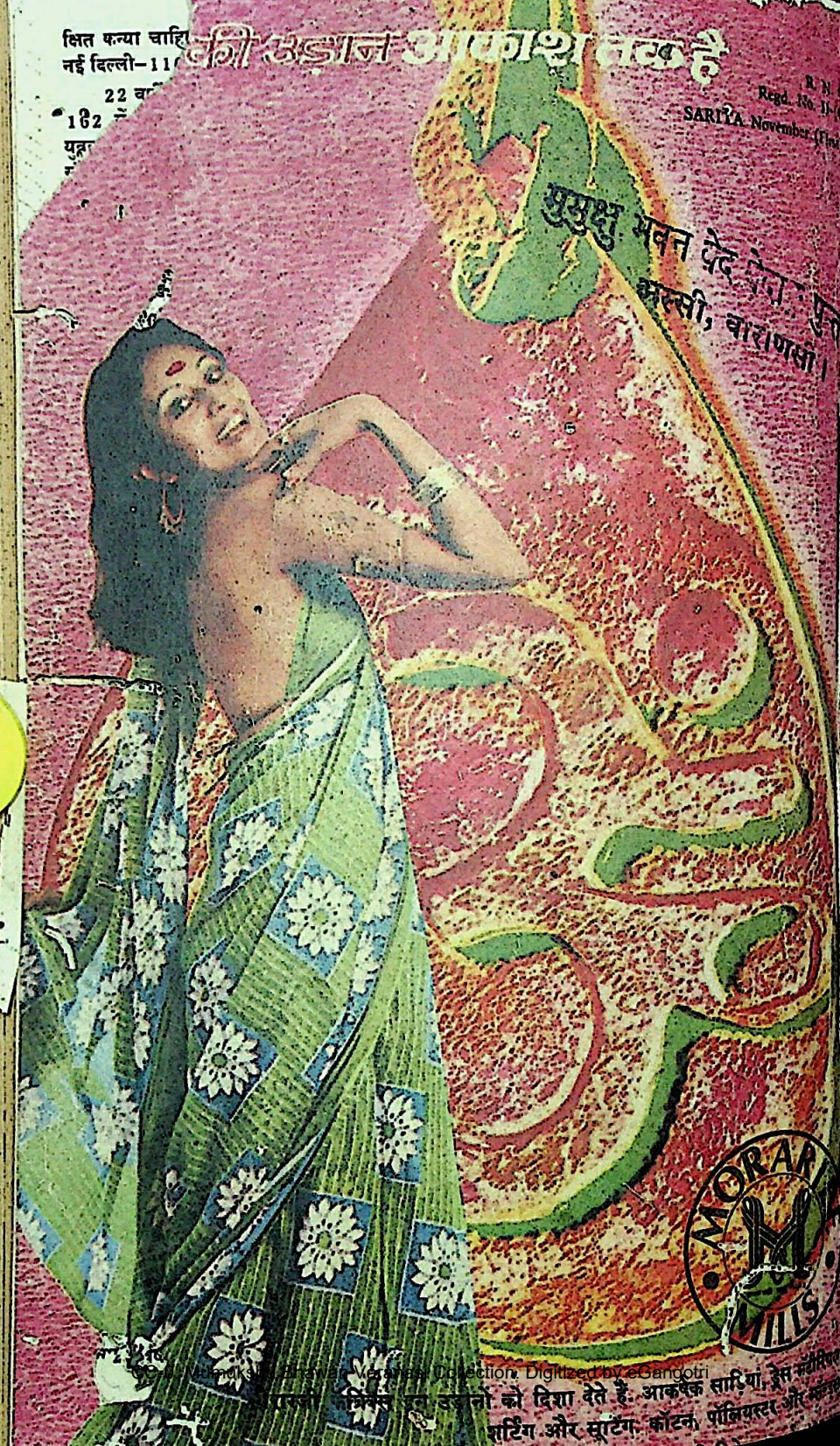

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...रजी फ्रिक्स इन उड़ानों को दिशा देते हैं. आकर्षक साड़ियां, ड्रेस मटीरियल
शर्टिंग और सूटिंग, कॉटन, पॉलियस्टर और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक... २५५०...
दिनांक...

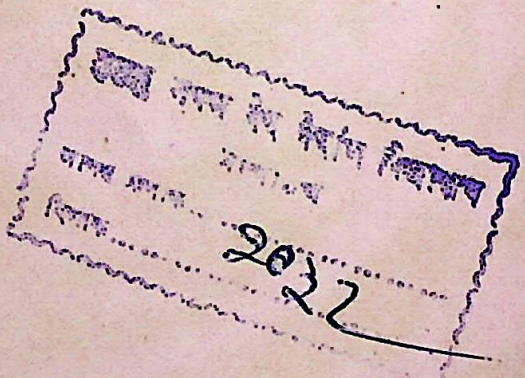

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri